

भगवान् ठेकासु ।
 श्री अक्षय शिव स्थानकेवासी
 जैन शास्त्रोद्धार समिति,
 ठे अरेटिया कुवा रोड,
 राजकोट, (सौराष्ट्र)

Published by
 Shri Akhil Bharat S. S.
 Jain Shastrodhdhara Samiti,
 Garedla kuva Road RAJKOT,
 (Saurashtra) W Ry India



ये नाम केषिदिह नः प्रययन्त्यवर्णा,
 जानन्ति ते किमपि सान् प्रति नैपयन्तः ।
 उत्पत्त्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
 काळोद्धार्य निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतचन्द्रः



करते अवस्था जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
 जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
 खनमेगा सुससा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पापगा ।
 है काम निरवधि विपुलपृथ्वी ध्यान में यह लापगा ॥ १ ॥

मूल्या १ ६५=००

प्रथम आवृत्ति अत १२००
 द्वितीय आवृत्ति २४६२
 तृतीय आवृत्ति २०२२
 चतुर्थी आवृत्ति १६६५

१ मुद्रकः
 भद्रिगुण्ड छजनगाल शाह
 नवप्रसाद प्रिन्टींग प्रिन्ट,
 धीराल रोड अमरावाड.

पंथाव संप्रदायके पू. सोहनलालजी म. सा. की आज्ञामें विचरनेवाले पू.
मयारामजी म. के शिष्यानुशिष्य परम प्रतापी श्री
व्याख्यानवाचस्पति-स्वर्गीय मदनलालजी महाराजको

अष्टक—

(मालिनी छंद)

परिधृतगुणमाल शुद्धधर्मालवालं,
विमलगतिमरालं शुद्धभावैर्विशालम् ।
सकलमनसि दुःखान्मन्यते त्वां वियुक्तं—
सुमुनिमदनलालं शुद्धभालं भजध्वम् ॥ १ ॥

हरिगीत छंद

हिन्दी

गुणगण विमल धारण किये, जो आलवाल सुधर्मके
थे हंस सम जो चाल चलते, मूल थे शुभ कर्मके ।
हम मानते हिय तापसे, दूरस्थ उन मतिमानको,
हे भव्य जन भज भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ १ ॥

अमृतसरससारां शुद्धतत्त्वैकधारां—

प्रशमरसगभीरां भव्यलोका मयूराः ।

मधु-मधुरगिरंते पीतवन्तोऽत्यनृत्यन्,

सुमुनिमदनलालं शुद्धभालं भजध्वम् ॥ २ ॥

हिन्दी

पीयूष सम अतिशय सरस, अरु शान्त रस गभीरकी ।
तात्त्विक मधुर मधुमय विमल वाणी परममति धीरकी ।
भक्तिजन श्रवण कर नाचते, उन दिव्य सन्त सुजानको,
हे भव्यजन भज भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ २ ॥

त्वयि शशि निजगत्यां, निष्फलङ्केऽत्रलोका,

सुखिन इव यदाऽऽसन्, त्वं ह्यकस्मात्कथं हा ।

गुत इत इति खेदै, दुःखिनस्ते जनास्तं—

सुमुनि मदनलालं, शुद्धभालं भजध्वम् ॥ ३ ॥

हिन्दी—

अति निष्कलङ्क सदा उदित, परिपूर्णचन्द्र समानसे,
 सुखिया सकल दुनियां हुई, पीयूष वाणी पानसे ।
 हैं आज सुखिया दीखती वे विरहमें भीमानको,
 हे भग्यजन भग भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ ३ ॥

यदि कमपि मदीय, मन्तु मालोष्य विद्वन्—

त्यजसि सपदि हा-हा ! त्यज्यतां जीव कायाः ।

पठपि निरपराधा, रक्षणीया स्त्वया त,—

सुमुनि मदनलाल शुद्धमाल भजष्यम् ॥ ४ ॥

हिन्दी—

मुनिवर ! हमारे फोड़ भी अपराधसे हा कूटकर
 यदि त्याग हमको कर रहे, पर मोव पदक निकाप पर ।
 करके दया रक्षा करो, करुणानिलय धीमानको,
 हे भग्यजन भग भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ ४ ॥

तस्म्यकरुणधारी शुद्धता पूर्वधारी—

जिनवचनविहारी, सर्व पापपहारी ।

निबिडविमिरहारी ज्ञानशीपात्तदा तं,

सुमुनि मदनलाले, शुद्धमाल भजष्यम् ॥ ५ ॥

हिन्दी -

जो शुद्धता पूर्वक विचरते, तस्म्यकरुणावान थे,
 जो पापहारक सर्वदा, जिनवचनभद्रावान थे ।
 भक्तानहारक ज्ञानसे, उन दिव्य सन्त मुनानको,
 हे भग्यजन भग भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ ५ ॥

सकलधुवनचिन्ता - हारि - चिन्तामर्षिया—

पुनरपि जनपात्रा, पूरणे कल्पयुक्तः ।

मुगतिसरणि नेता, सद्गुरु स्तम्भविध,—

सुमुनि मदनलाले शुद्धमाले भजष्यम् ॥ ६ ॥

हिन्दी—

सधके मनोरथ पूर्ण करते, कल्पयुक्त समानजो,
 चिन्ता हरणमें वे पुनः, चिन्तामणी परमान जो ।

फिर मोक्ष पथ नेता गुरु उन दिव्य सन्त सुजानको,
हे भव्यजन भज भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ ६ ॥
शमदम प्रशमाद्या, ये दुरापा गुणास्त्वा

श्रयितुमिह यतन्ते, नो स्थलं ते लभन्ते ।

कथय पुनरुपायं, नामतस्त्वं स्थितस्तं—

सुमुनि मदनलालं, शुद्धभालं भजध्वम् ॥ ७ ॥

हिन्दी—

दुर्लभ प्रशम शमदमगुणादिक शुद्ध अति गुणवानको
निज वास हित पाते नहीं हैं, योग्य सुखमय धामको ।
कह दो मुने ! वे क्या करें हा छोड़ के श्रीमानको,
हे भव्यजन भज भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ ७ ॥

तव मुनिवर ? शुद्धं दर्शनं स्वप्नमध्ये,—

भवतु करुणदृष्टिर्जायतां सर्व संघे— ।

इति भविजन शुद्धा प्रार्थना यत्कृते तं,

सुमुनि मदनलालं शुद्धभालं भजध्वम् ॥ ८ ॥

हिन्दी—

मुनिराज ! हमको स्वप्नमें भी, आपका दर्शन सदा,
होता रहे हो करुणदृष्टी, संघके ऊपर सदा ।
है भव्य जनकी प्रार्थना, जिनके लिये विद्वानको,
हे भव्यजन भज भावसे, मुनि मदनलाल महानको ॥ ८ ॥

घासीलालकृतं त्वेतदष्टकं भावतः पठेत् ।

यो नरः सततं भक्त्या सत्वरं स सुखी भवेत् ॥ ९ ॥

हिन्दी—

इस अष्टकको जो पढ़े, वरने मंगलमाल

सदाकाल सुखसे रहे, कहते घासीलाल

॥ ९ ॥

प्रातः स्मरणीय, व्याख्यानवाचस्पति, चारित्रचूडामणी, परम प्रतापी पूज्यगुरुदेव श्री मदनलालजी महाराजकी जीवनरेखाएँ

गुणमनुमात्रासे हृदय शोभायमान विशाल था,
जिनका सुनिर्मल चरित पालनसे चमकता माल था;
सयम अवस्रुत 'मदनघुनि' को हृदयपट पर मै धरुं,
जग पाप हर गुरु पद कमलको माधयुत धदन करु

प्रातःस्मरणीय, चारित्र चूडामणी, पूज्य गुरुदेव व्याख्यान-वाचस्पति
श्री मदनलालजी महाराज सिंह की भाँति सयम मार्ग पर आए और सिंहकी
हृदिसेही भव तक ठसका पालन करते रहे। उनके ज्ञान और चारित्रका प्रकाश
आज भी मेरे अन्तर्मनको प्रकाशित करता है।

प्रखलित दीपक जब तेलसे परिपूर्ण होता है, तो स्वयंको प्रकाशित करते
हुए बाहर भी प्रकाश फैलाता है, और अन्यकार पर चिमय पाता है। व्या०
बा० गुरुदेव श्री मदनलालजी महाराजका सयमी जीवन इसी प्रखलित दीपकके
समान था—चारित्र रूपी तेलसे परिपूर्ण और ज्ञानसे प्रकाशित, सबको प्रकाशित
करने वाला था।

रेखाचित्रः—

इन महात्माके दर्शन सन् १०५४में सर्व प्रथम हुए जब आपभीका सचजी
मडी-दिस्तीमें वर्षावास-घातुर्मास था। आपके बारेमें सुन रखा था कि आप
बहुत प्रभावशाली सच हैं, इरेक साधारण व्यक्तिमें तो आपके सामन जानकी
समता ही नहीं। बाल्युद्दिमें य बात समाजानेसे आपभीके निकट जानेमें मन
रिचकोले स्वा रहा था, डर लगता था कहीं छप न दें। माताजीके मापइसे
अन्तमें एक दिन ओ चालीमें पहुँच ही गया—और ठगा सा रह गया, उन
महान कश्यपलका गरिमा देखकर। प्रभावशाली लज्जा ! चमकता, हंसता और
पुर-जलाक चहरा। मस्तक पर भवक केत-राशि। फाँले चक्षों में दूसरे
व्यक्तिके मनकी याह लेनवाले नेत्र। पवल खादीके स्वच्छ बदन। मुख पर
मुख-व्यक्ति और बगल में रजोहरण। गम गामिनी, मस्तानी पास। अद्भुत
ज्ञान और सौम्यता किन्तु प्रतिवादीके भिय मदा अत्रय व्यक्तित्व।

पावन स्मरण—

गुरु धर्म (सम्पत्ति पाठ) देनेके बादक उनके स्नेहाशीर्वादसे छलकते

संदेशके शब्द अब तक कानोंमें गूँज कर एक अनुपम रोमांच प्रस्फुटित कर देते हैं।

“ धर्म पर जो अधिकार कर लेता है वह उसका जीवन भर साथ देता है। धर्मको अपनानेवाला चाहिये। धर्मको अपनानेमें कितना त्याग करना पड़ता है ? पूर्व-पुरुषोंके उदाहरण समक्ष हैं। उन्होंने धर्म पर सब कुछ न्यौछावर कर डाला, उसीके लिये जिये, उसीके लिये मरे। यह छोटी बात नहीं बहुत बड़ी है। धर्म मिलना कठिन नहीं—पालन करना कठिन है। तुम समझदार हो, सुयोग्य हो, जो पाया है उसे संभाल कर रखोगे तो सब तरहसे समुन्नत बनोगे। ईमानदारीसे कदम बढ़ाते रहो तो तुम्हारा जीवन चमके गा, तब क्याही आनंद आयेगा ?”

वास्तवमें उस कल्पवृक्षकी छाया असीम थी, कभी छोटी नहीं हुई, जो आया सभीको उसमें स्थान मिला तथा मिली अद्भुत शांति !

करुणाके सागरः—

गुरुदेवके मनमें करुणाका असीम सागर हिलोरे लेता था। उनके नेत्रोंमें आर्द्रता थी, बाणीमें सान्त्वनाका स्वर तथा हृदयमें दुःख दूर करनेकी लगन। सरल तथा शुद्ध हृदय लेकर जो भी उनके निकट आया, उसे आन्तरिक स्नेहसे सरावोर कर दिया।

जीवन-चित्रणः—

गुरुदेवका जन्म पंजाब प्रान्तके रोहतक जिलेके ग्राम ‘ राजपुर ’ में विक्रम सं० १९५२ में हुआ था। पिताश्री मुरारीलालजी व माता गेन्दोवाई—बड़े तपो-निष्ठ धर्मात्मा एवं सरल स्वभावके थे।

प्रकृतिने जिस पुष्पको एक कोनेमें खिलाया, किसे पता था वह अपने मौरभसे संसारको सुरभित कर डालेगा।

‘ उस नये फूलका नाम रखा मातापिताने “ मौजीराम ” चूंकि उनके आंगनमें मौज—खुशी फुट पड़ी थी। मौजीरामजीका वचन धार्मिक संस्कारोंमें आगे बढ़ा। ७ वर्षकी उम्रमें मां छोड़ गई। अब पिताही जीवन रक्षक थे, गांवमें कुछ पढ़ाई शुरू की। ९ वर्षके होने पर देहली मौसीके (मासी) घर आ गये। पढ़ाई धीरे धीरे बहुत बड़ा प्रसिद्ध जैन घराना था, जहां मौजीरामजीकी शिक्षा सम्पन्न हुई। यौवनमें कदम रखा। मौसाजीकी दुकानका कार्य संभाल लिया। किंतु जिन्हें बहुत ऊँची आध्यात्मिक साधना करनी होती है, वे भौतिकताके रंगीन वातावरणमें घिरे नहीं रह सकते।

दीक्षा —

देहलीमें साधू सत्तोंका आगमन माया सदैव रहा है। चादनी चौक, बारा शिरीमें उस समय परम पूज्य, चारित्र्य चूडामणी, युग भवान मुनिवर श्री मयारामजी महाराजके परम भतापी शिष्य, श्रद्धेय, गंगावच्छेदक, श्री छोटे झालजी महाराज विरानमान थे। उनकी भी घरणोंका आश्रय श्री मौजीरामजीको मिला। विक्रम संवत् १९७१ भाद्रपद कृष्ण दशमीके दिन बामनौली, जिला मेरठ (उ० प्र०) में बड़ी धामधूमसे दीक्षा हुई। उन्हीं श्री छोटेझालजी महाराजके शिष्य बहुभुज श्री नाथूजालजी महाराजका शिष्य बनाया गया। और उसी समय नाम परिवर्तनके साथ २ मौजीरामजीसे बदल कर आप श्री मदनझालजी महाराज बन गये।

विनय-भक्ति तथा बुद्धि-प्रतिभा—

विनय-भक्ति, तप-सयम, तथा स्वाध्याय-ध्यानमें प्राण पणसे जुटे रहते थे। बुद्धिप्रतिभा तथा धारणाशक्ति बड़ी मस्तर थी। ६० गाथाएँ (श्लोक) एक दिनमें याद कर लेते थे। आगमोंका ज्ञान प्राप्त करके बहुभुज बने। माकृत माया पर आपका प्रभुत्व था। सुस्तसे जो शब्दावली निकलती थी, वह बड़ी छद् तथा प्रभावोत्पादक होती थी। उनकी पाणीपें भोज था, मनमें उरसाह तथा आत्मामें भी सयमकी लहर।

स्वाध्याय-संयमकी कुंजी —

लगभग तीन हजार गाथाओंकी स्वाध्याय वे प्रतिदिन किया करते थे। उनका यह विचार रहता था कि प्रतिवर्ष सब आगमोंका भय सहित स्वाध्याय हो। पाय कहा करते कि

“यदि भ्रमण स्वाध्याय-रत रहे तो बहुत सी व्यर्थ बातोंसे बचा रहेगा। उसकी साधुतामें रस पैदा होगा, तप सयममें रुचि बढ़ेगी।”

बाणीके जादूगर-व्याख्यानवाचस्पति

ध्रुवसम्पन्नताके कारण वाचस्पतिजी की बाणीमें अनुभूतिकी स्तिरपता, तर्कका पैनापन और आस्थाकी गभीरता थी। उनके व्यक्तित्वमें अद्भुत आकर्षण थे—बाणीकी मारगर्भिता, मार-प्रणता और मायाका प्रबल प्रभाव। अपने भोताओंके सन और मन पर दृकमत् करना उन्हीं खुब आता था। उनकी बाणीके वेगवान प्रवाहमें बहकर उनके भोता सभी करुण रसकी धारा फुटने पर परबस रो उठते थे, और कभी हर्षकी सज्ज पर गिरकते थे। बाणीके इसी जादूने पनाय सपनी औरसे विक्रम सं० १९०२ में उन्हें ‘व्याख्यानवाचस्पति’ पदमें अभिनन्दित कराया था।

समाजसुधारकः—

अपने युगके समाज सुधारकोंमें वाचस्पतिजी सबके अगुआ थे। युवकों और शिथिलाचारियोंको चेतावनी देनेवाले उनके तीक्ष्ण वचन-वाण, समाज-उत्थान, धर्मप्रचार एवं संयम रक्षाके हितार्थ बजाया गया उनका तेजस्वी विगुल, अनुशासन और साधू समाचारीके गौरवके सार-संभाल करनेवाले उनके नेत्र-युग्म आज एक स्मृतिमात्र बन कर रह गये हैं।

पदकी निर्लाभताः—

गुरुदेव जिस कार्यको हाथमें लेते थे उसके लिये अपनेको अर्पित कर देते थे। साथही आत्माके विरुद्ध दुनियांकी लाख खुशामदोंके बावजूद, उक्त कामको छोड़नेमें भी नहीं हिचकते थे जिसको वे उपयुक्त न समझते। श्रमण संघके निर्माणमें जो कार्य उन्होंने किया, वही उनकी कर्मशीलता एक प्रमाण है। अमृतसरसे अर्थात् हिन्दुस्तानके एक छोरसे चले। मौसम सख्त, मार्ग कठिन, तथा शरीर अस्वस्थ। सादही (मारवाड) पहुँचे। अथक प्रयत्नोंसे साध्यसिद्धिमें जुटे। जब तक मनमें उद्देश्य पूर्ति की आशा रही कभी पीछे न हटे। पर जब ढंग खराब देखा, सुधारकी आशा न रही तो जिस लगन और शानसे जुटे थे, उसी लगन और शानसे पीछे हट गये।

उनके व्यक्तित्व, अनुशासन निष्ठता, संयमकी कड़कता और आगम ज्ञानसे प्रभावित होकर, इन्कार करने पर भी भीनासर साधूसंमेलन के अवसर पर उन्हें प्रधान मंत्री पद दिया गया। किंतु उनकी योग्य देखरेख और यथार्थ पथ प्रदर्शनका लाभ संघ के भाग्यमें बंधा नहीं था। श्रमणसंघकी आन्तरिक स्थिति बिगड़ने लगी। आचार्य आचार्यके अधिकारों का स्पष्टीकरण न हो सका ध्वनियंत्र के मसला सुलझने की बजाय और अधिक उलझने लगा, मन्त्रीमंडलका असंतोषप्रद रुख व कार्य देखा तो उन्होंने प्रधान मंत्री पदसे फौरन त्यागपत्र दे डाला। गुरुदेवका त्यागपत्र इन कार्योंको शीघ्र हल करनेकी प्रेरणा देता, यदि उसे उपेक्षित करके अन्धकारमें फँकन दिया जाता।

गुरुदेव भी और मंत्रियोंकी तरह कागजीकार्यवाहियोंके बल पर अपने पदको बनाये रख सकते थे, किंतु ऊपरी लापापोती करना वे आत्महननके तुल्य समझते थे।

“संतका जीवन मंगल है वहाँ मरण भी ”

गुरुदेवका जीवन जितना महान था उतनीही मृष्ट्यु भी। एक वर्षसे उन्हें

“भार ये चर टके जो सयमके उकटे किए हैं, इसे नौकराने
धरीरके लिए नहीं छुटाऊगा”

संघमुख अन्य धे माप जिहाने सयमरूपी गकोंका समालमें इस बहुमुख
धरीरका बलिदान कर दिया।

अदियाथा गुरु (जिआ मरुनसर) की पावन भूमि गुरुदेव बिराजे धे।
रोग बढ़ता जाता था, आहार घटता गया। मूढ़के जरुम बढ़ते गये। पानी
पीना और सांस लेना कठिन हो गया। अन्तिम दिनोंकी वेदना इतनी भयकर
थी कि बर्षन करन कलमका दिल भी दबल उठता है। दर्शन करके हर आदमी
का दिल भर आता था। किंतु पाहरे उनकी अरुण सदनशीलता, श्रान्ति और
मृदु-सौम्यता। अन्तरात्मा पूर्णतया रोश्न थी। उन्हीं अपनी वृषियों तथा
महृषियोंको संसित कर लिया था। हर समय आत्म समाधि की ही ध्यान रक्ता
था। अन्तरात्माको मासीसे चौरासी लाख बीघवानो और बहुविध थी सयसे
गमित-गमावना करके आरमभुद्धि की ओर अग्रसर हुए। प्रति मलेमना और
सवार की ओर ध्यान गया। शिष्योंसे सवारा करानको कहा। मौसमकी बड़ी
मरमी और रोगकी भयकरताको ज्ञेय कर शिष्य साहस न कर सक। आखिरकार
उस नरविहने अन्तिम दिन ता २७ जून १९५३ को स्वय सवारा धारण कर
लिया और समाधि पूर्वक अपनी महायात्राको सम्पन्न किया।

गुरुदेवके स्मारकः—

गुरुदेवकी सुष्ठ-विश्र, सुचिनीत शिष्य मंडलीमें कितना त्याग-वैराग्य,
कितना आपसी स्नेह-प्रेम, कितनी गुरुभक्ति और आदर है। वास्तवमें सब
मुनिराम पूर्ण समर्थ हैं। सुयोग्य हैं। गुरुदेवकी स्मारक स्वरूप हैं। उनकी
जीवन्त सत्प्राप्ति है। उनकी अनुपम शक्ति है। उनके दर्शन कर हृदय उत्स्रसित
हो जाता है।

श्रद्धा सुमन —

गुरुदेवके जीवनका नडांस साँझ करे बडांस एक मृदु तथा मधुर सकार
सी उत्पत्ती है। सन्देशोंमें किस प्रकार समोये? क्या अथाह सागर कभी बाँधा गया
है? कि भा मनकी भद्रा हो कुछ भक्तिपन सद्सुमनोंमें गुणनका प्रवर्तन किया है।
कोटि २ घटनः—

ऐसा विरम विमल विभूति, शानी-ध्यामी त्यागी और तपस्वी महान
आत्माको घेरे कोटि कोटि बदन हैं। उनके धी पाणोंका प्रजा जम जमान्तरी
तक भाग हो।

—महतापयद् शोरङ्गिया दिव्यी

५०	प्रतिक्रमणके स्वरूपका निरूपण	२७५-२७७
५१	पांच प्रकारके वाचनास्थानका निरूपण	२७९-२८१
५२	नारकादिकोंके यथावस्थित भावोंका निरूपण	२८१-२८२
५३	जम्बूद्वीप आदिके यथावस्थित भावोंका निरूपण	२८३-२८५
५४	भरतक्षेत्रमें स्थित तीर्थंकरोंका निरूपण	२८५-२८६
५५	क्षेत्रभूत चमरचञ्चालिका निरूपण	२८६-२९०

छट्टा स्थान प्रारंभ—

५६	छट्टे स्थानका विषय विवरण	२९१
५७	गणधरोंके गुणका निरूपण	२९२-२९६
५८	जिनाज्ञाका अविराधकपनेका निरूपण	२९७-३००
५९	छन्नस्थोंके स्वरूपका निरूपण	३००-३०४
६०	जीवको अजीव करनेका छह प्रकारताका निरूपण	३०४-३०६
६१	संसारिकजीवका निरूपण	३०६-३११
६२	जीवोंके दुर्लभ पर्याय विशेषका निरूपण	३१३-३१८
६३	इन्द्रियार्थों के छ प्रकारका निरूपण	३१८-३२०
६४	साता और असाताके पञ्चविधताका निरूपण	३२१-३२२
६५	छह प्रकारके प्रायश्चित्तोंका निरूपण	३२२-३२४
६६	छह प्रकारके मनुष्य आदिकोंका निरूपण	३२४-३२५
६७	छह प्रकारके ऋद्धिवालोंका निरूपण	३२६-
६८	उत्सर्पिणी कालमें जम्बूद्वीपके मनुष्यके प्रमाणका निरूपण	३२७-३२९
६९	छह प्रकारके संहननका निरूपण	३२९-३३२
७०	छह प्रकारके संस्थानका निरूपण	३३२-३३६
७१	अनात्मावाले जीवोंको अहित करनेवाले छह स्थानोंका निरूपण	३३६-३३६
७२	छ प्रकारके आर्य मनुष्योंका निरूपण	३३९-३४१
७३	लोकस्थितिका निरूपण	३४१-३४३
७४	जीवोंकी गति और दिशाओंका निरूपण	३४४-३४८
७५	संयत मनुष्योंके आहारग्रहण और आहारका ग्रहण नहीं करनेका निरूपण	३४९-३५२
७६	उन्मादस्थानका निरूपण	३५२-३५५
७७	छह प्रकारके प्रमादका निरूपण	२५५-२६१

२४	भवार्य और उपाध्यायके गजसे बाहर होनेके विषयका निरूपण	१५१-१५५
२५	अदिवाले मनुष्य विशेषका निरूपण	१५६-१५८
	सीसरा उद्देश—	
२६	अस्तिकायके स्वरूपका निरूपण	१५९-१७१
२७	इन्द्रियोंके अर्थोंको और इन्द्रिय सबकी पदार्थोंका निरूपण	१७१-१८७
२८	बादर जीवविशेषका निरूपण	१८७-१९१
२९	सचेदन वायुका विशेष प्रकारसे निरूपण करनेवाले निर्ग्रन्थका निरूपण	१९२-२०५
३०	निर्ग्रन्थोंके अधि विशयका निरूपण	२०५-२१०
३१	कायादिक भर्मोपकरणका निरूपण	२१०-२१८
३२	शौचके स्वरूपका निरूपण	२१८-२२१
३३	छप्रस्य केवलाके मय अथवा पदार्थोंके विषयका कथन	२२१-२२४
३४	ममोन्नोक्तमं रहे हुए एवं ऊर्ध्वोक्तमं रहे हुए अतीन्द्रिय भावोंका निरूपण	२२५-२२८
३५	मत्स्यक दृष्टान्तसे मिथुके स्वरूपका निरूपण	२२८-२३०
३६	वनीपकक स्वरूपका निरूपण	२३०-२३४
३७	अपमरुके मशसास्थानीया निरूपण	२३५-२३७
३८	उत्कटके पांच भेदोंका निरूपण	२३७-२३९
३९	समितिक पांच प्रकारका निरूपण	२३९-२४१
४०	जीवके स्वरूपका निरूपण	२४१-२४४
४१	वनस्पतिजीवके योनिविच्छेदका निरूपण	२४४-२४७
४२	पांच प्रकारके सवस्तरका निरूपण	२४७-२५८
४३	जावका शरीरसे निर्गम (निरुपना)का निरूपण	२५८-२६०
४४	मायुक्त छेदका निरूपण	२६०-२६२
४५	आनंतर्पका निरूपण	२६०-२६२
४६	पांच प्रकारका अनंतरा निरूपण	२६४-२६७
४७	मानक स्वरूपका निरूपण	२६७-२६८
४८	स्वाध्यायक पञ्चविधताका निरूपण	२६९-२७०
४९	मन्याम्यानक स्वरूपका निरूपण	२७१-२७४

५०	प्रतिक्रमणके स्वरूपका निरूपण	२७५-२७७
५१	पांच प्रकारके वाचनास्थानका निरूपण	२७९-२८१
५२	नारकादिकोंके यथावस्थित भावोंका निरूपण	२८१-२८२
५३	जम्बूद्वीप आदिके यथावस्थित भावोंका निरूपण	२८३-२८५
५४	भरतक्षेत्रमें स्थित तीर्थंकरोंका निरूपण	२८५-२८६
५५	क्षेत्रभूत चमरचञ्चादिका निरूपण	२८६-२९०

छठा स्थान प्रारंभ—

५६	छठे स्थानका विषय विवरण	२९१
५७	गणधरोंके गुणका निरूपण	२९२-२९६
५८	जिनाज्ञाका अविराधकपनेका निरूपण	२९७-३००
५९	छद्मस्थोंके स्वरूपका निरूपण	३००-३०४
६०	जीवको अजीव करनेका छह प्रकारताका निरूपण	३०४-३०६
६१	संसारिकजीवका निरूपण	३०६-३११
६२	जीवोंके दुर्लभ पर्याय विशेषका निरूपण	३१३-३१८
६३	इन्द्रियार्थोंके छ प्रकारका निरूपण	३१८-३२०
६४	साता और असाताके पङ्क्तिविधताका निरूपण	३२१-३२२
६५	छह प्रकारके प्रायश्चित्तोंका निरूपण	३२२-३२४
६६	छह प्रकारके मनुष्य आदिकोंका निरूपण	३२४-३२५
६७	छह प्रकारके ऋद्धिवालोंका निरूपण	३२६-
६८	उत्सर्पिणी कालमें जम्बूद्वीपके मनुष्यके प्रमाणका निरूपण	३२७-३२९
६९	छह प्रकारके संहननका निरूपण	३२९-३३२
७०	छह प्रकारके संस्थानका निरूपण	३३२-३३५
७१	अनात्मावाले जीवोंको अहित करनेवाले छह स्थानोंका निरूपण	३३५-३३६
७२	छ प्रकारके आर्य मनुष्योंका निरूपण	३३९-३४१
७३	लोकस्थितिका निरूपण	३४१-३४३
७४	जीवोंकी गति और दिशाओंका निरूपण	३४४-३४८
७५	संयत मनुष्योंके आहारग्रहण और आहारका ग्रहण नहीं करनेका निरूपण	३४९-३५२
७६	उन्मादस्थानका निरूपण	३५२-३५५
७७	छह प्रकारके प्रमादका निरूपण	२५५-२६१

७८	यमादि विभिन्न मत्स्यपक्षणाका निरूपण	३६१-३६७
७९	लेइपाके स्वरूपका कथन	३६७-३६९
८०	देवधूयका कथन	३६९-३७०
८१	दिक्कुमार्यादिकोंका निरूपण	३७०-३७३
८२	घरणेन्द्रादिकोंका सामानिक साहस्रीका निरूपण	३७३-
८३	विभिन्न मतिपाछे देवोंकी गतिके भेदका निरूपण	३७४-३८७
८४	तपके भेदोंका निरूपण	३८७-३९३
८५	विवादके स्वरूपका निरूपण	३९२-३९५
८६	सुइमाषियोंके स्वरूपका निरूपण	३९५-३९७
८७	छह प्रकारकी गावरचर्पाका निरूपण	३९७-४००
८८	असाधुचर्पाके फलभोगनेवालोंकी गतिका निरूपण	४०१-४०२
८९	साधुचर्पाके फल भोगनेवालेका निरूपण	४०२-४०४
९०	नक्षत्रोंके स्वरूपका निरूपण	४०४-४१०
९१	संयम और असंयमके स्वरूपका निरूपण	४१०-४१२
९२	मनुष्य क्षेत्रम रही हुई मनुका निरूपण	४१२-४१८
९३	कालविशेषका निरूपण	४१८-४२१
९४	ज्ञानके स्वरूपका निरूपण	४२१-४२४
९५	अवधिज्ञानके स्वरूपका वर्णन	४२४-४२७
९६	ज्ञानिक अवबन-नही कहने योग्यका निरूपण	४२७-४२९
९७	अवबनमें मायचित्तका कथन	४२९-४५१
९८	कल्य विषयका निरूपण	४५२-४६०
९९	कल्पस्थितिका निरूपण	४६१-४७१
१००	महावीरस्वामी सबधी कथन	४७१-४७२
१०१	देवके सबधी निरूपण	४७३
१०२	अहारका परिणाम और विपरिणामका निरूपण	४७४-४७७
१०३	छह प्रकारके मत्स्यका निरूपण	४७७-४८०
१०४	इन्द्रके मनादिपदका निरूपण	४८१-४८४
१०५	मेद सहित आयुधका निरूपण	४८५-४९४
१०६	भौतिक विगैरह भाषोंका निरूपण	४९५-५११
१०७	छ प्रकारका भतिक्रमणका निरूपण	५११-५१५

१०८	चयादिका कथन	५१६-५१७
	सातवें स्थानका प्रारम्भ—	
१०९	सातवें स्थानका विषयचित्रण	५१८—
११०	सात प्रकारके गणोंके अपक्रमण-निकलनेका निरूपण	५१९-५२६
१११	सात प्रकारके विभङ्गज्ञानका निरूपण	५२६-५४३
११२	सात प्रकारके जीवोंका निरूपण	५४३-५४८
११३	संग्रहके स्थानोंका निरूपण	५४८-५५३
११४	पिंडैषणाका निरूपण	५५४-५६४
११५	सात प्रकारकी पृथ्वीयोंके स्वरूपका कथन	५६४-५६९
११६	वाटर वायुकायके स्वरूपका कथन	५६९-५७०
११७	सात प्रकारके भयस्थानोंका निरूपण	५७१-५७२
११८	छ छद्मस्थोंको जाननेका निरूपण	५७३-५७५
११९	केवलीयोंको जाननेका कथन	५७५
१२०	सात प्रकारके मूलगोत्रका निरूपण	५७६-५७९
१२१	सात प्रकारका मूलनयका निरूपण	५८०-६०३
१२२	सात प्रकारके स्वरोंका निरूपण	६०३-६३६
१२३	लोकोत्तर कायक्लेशोंका निरूपण	६३६-६३८
१२४	मनुष्यलोक और वर्षाधर पर्वतोंका निरूपण	६३९-६४३
१२५	कुलकर आदिका निरूपण	६४३-६४७
१२६	दण्डनीतिका निरूपण	६४८-६५१
१२७	चक्रवर्ती राजाके एकेन्द्रिय पंचेन्द्रियवाले रत्नोंका निरूपण	६५१-६५३
१२८	दुष्पम-सुपम काल ज्ञानका कथन	६५३-६५९
१२९	सात प्रकारके आयुष्यके भेदोंका कथन	६६०-६६१
१३०	मल्लीनाथ भगवान्का वर्णन	६६२-६६५
१३१	दर्शनके स्वरूपका निरूपण	६६६-६६७
१३२	छद्मस्थावस्थासे प्रतिवद्ध सूत्रका कथन	६६७-६७०
१३३	सात प्रकारकी विकृताओ का निरूपण	६७०-६७४
१३४	आचार्यके सातिशयपनेका निरूपण	६७४-६७७

१३८	सयम और असयम आदिके भेदों का निरूपण	६७८-६८१
१३९	अठसी कुसुम आदि बान्धों का योनिकाष्ठ-उत्पादक स्थिति काष्ठका निरूपण	६८२-६८४
१३७	वाटर-अष्टकायिक आदिकों का स्थितिकालका निरूपण	६८४-६८५
१३८	शक्र और ईशानेन्द्रके अग्रमहिषीयोंकी संख्याका और स्थितिका निरूपण	६८६-६८८
१३९	सनस्कृमार आदि कलशोंमें रहे हुए देवोंकी स्थितिका निरूपण	६८९-६९०
१४०	नन्दीश्वरद्वीपके अन्तर्गत द्वीपों का निरूपण	६९१-६९५
१४१	चमरेन्द्रादिकोंके अनीक और उनके अनीकाधि- पतियों का निरूपण	६९५-७०४
१४२	चमरेन्द्रादिकोंके पादातानीक और उनके अनीकाधि- पतियों का निरूपण	७०४-७१२
१४३	सात प्रकारके वचनविधियोंका निरूपण	७१२
१४४	पिनपके स्वरूपका निरूपण	७१३-७२७
१४५	समुरपातके स्वरूपका निरूपण	७२७-७३५
१४६	निहोके स्वरूपका निरूपण	७३५-७३९
१४७	साता और असाताके स्वरूपका निरूपण	७३९-७४०
१४८	ज्योतिष्क देशों का निरूपण	७४१-७४५
१४९	देशोंके निवासघृत कृत्तोंका निरूपण	७४६-७४८
१५०	द्वीन्द्रिय जीवों का निरूपण	७४८-७४९
१५१	अपादिका निरूपण	७४९-७५१

समाप्त

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री घासीलालव्रति-
विरचितया सुधारयया व्याख्यया समलङ्कृतम्

श्री-स्थानाङ्गसूत्रम्

(चतुर्थो भागः)

अथ पञ्चमस्थानस्य द्वितीयोद्देशः प्रारभ्यते—

उक्तः प्रथमोद्देशकः, सम्पति द्वितीयः प्रारभ्यते । अस्य उद्देशकस्य अनन्त-
रोक्तेन उद्देशकेन सह अयमभिसम्बन्धः—अनन्तरे जीववक्तव्यता प्रोक्ता अस्मि-
न्नपि सैव उच्यते, इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्यास्योद्देशकस्येदमादिमं सूत्रम्—

तथा—प्रथमोद्देशकान्त्यसूत्रेण सहास्य द्वितीयोद्देशकप्रथमसूत्रस्यायमभि-
सम्बन्धः, तत् सूत्रं केवलनिर्ग्रन्थापेक्षया प्रोक्तम्, इदं तु छद्मस्थनिर्ग्रन्थापेक्षया
प्रोच्यते—तत्र निर्ग्रन्थनिर्ग्रन्थीनां विहारविषये कल्प्याकल्पविधिमुपदर्शयति—

पांचवें स्थानका दूसरा उद्देशा

प्रथम उद्देश कहा जा चुका है, अब इस पांचवें स्थानका यह द्वितीय
उद्देश प्रारम्भ होता है, इस उद्देशका गत प्रथम उद्देशके साथ इस
प्रकारसे सम्बन्ध है, कि प्रथम उद्देशमें जीव वक्तव्यता कही गई है,
सो इस उद्देशमें भी वही कही जावेगी तथा प्रथम उद्देशके अन्तिम
सूत्रके साथ इस द्वितीय उद्देशके प्रथम सूत्रका सम्बन्ध ऐसा है, कि
वह सूत्र केवलीकी अपेक्षासे कहा गया है, और यह छद्मस्थ निर्ग्रन्थकी
अपेक्षासे कहा जा रहा है, सो इसमें निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थिनीयोंके
विहारके विषयमें कल्पाकल्प विधिको सूत्रकार प्रकट करते हैं—

पांचमा स्थाननो भीजे उद्देशो

પહેલા ઉદ્દેશક પૂરો થયો હવે પાંચમાં સ્થાનનો બીજો ઉદ્દેશક શરૂ
થાય છે આગલા ઉદ્દેશક સાથે આ ઉદ્દેશકનો આ પ્રકારનો સંબંધ છે પહેલા
ઉદ્દેશમાં જીવવક્તવ્યતાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે આ ઉદ્દેશમાં પણ એ જ
વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવશે પહેલા ઉદ્દેશના છેલ્લા સૂત્ર સાથે આ
ઉદ્દેશનો સંબંધ આ પ્રમાણે છે—

પહેલા ઉદ્દેશના છેલ્લા સૂત્રમાં કેવલીના અનુત્તરોનું કથન કરવામાં
આવ્યું છે, ત્યારે આ સૂત્રમાં છદ્મસ્થ નિર્ગ્રન્થના વિહારના વિષયમાં પ્રતિપાદન
કરવામાં આવ્યું છે. તેમને (સાધુ અને સાધ્વીઓને) કેવો વિહાર કરવો છે
અને કેવો વિહાર કરવો નથી, તે સૂત્રકાર અહીં પ્રકટ કરે છે—

मूलम्—नो कल्पइ, निग्गथाण वा निग्गथीण वा इमाओ उरिहाओ गणिपाओ त्रियजियाओ पच महण्णवाओ महा णईओ अंतो मासस्म दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तप वा संतरित्तप वा, तं जहा गगा १ जउणा २ सरउ ३ परावई ४ मही ५। पच्चहिं ठाणेहिं कल्पइ, त जहा—भयासि वा १, दुग्भि कखसि वा २, पव्वहेल्ल वा णं कोई ३, दओवसि वा पच्चमाणसि महपा ४ वा अणारिपहिं ५ ॥ सू० १ ॥

छाया—नो कल्पये निर्गन्थानां वा निर्गन्थीनां वा इमा उरिहा गणिता व्यञ्जिताः पञ्चमहार्णवा महानदीः अन्तर्मासस्य द्विकृत्वो वा त्रिकृत्वो वा उत्तरीतुं वा सत्तरीतुं वा, तद्यथा—गङ्गा १, यमुना २, सरयू ३, ऐरावती ४, मही ५। पञ्चभिः स्थानैः कल्पते, तद्यथा—मये पा १, दुर्मिसे वा २, प्रवपयते वा सल्ल कोऽपि ३, दक्षीणे वा पञ्चमाने महति वा ४, अनार्येषु ५ ॥ सू० १ ॥

टीका—‘नो कल्पइ’ इत्यादि—

निर्गन्थानां वा निर्गन्थीनां वा इमाः=अग्रे वक्ष्यमाणत्वेन भासकतया प्रत्यक्षा उरिहाः=‘महानद्याः’ इति रूपेण सामान्यतोऽभिहितः, गणिता=पञ्चसंस्कृतत्वेन गणनाविषयीकृताः, व्यञ्जिता=आहेत्यादि नाम्ना प्रकटीकृताः, पञ्च=पञ्चसं

‘नो कल्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा’ इत्यादि सूत्र १ ॥

टीका—निर्गन्थ और निर्गन्थिनियों को ये उचित सामान्यतासे कही हुई गणित पाँच संख्यासे गिन के कही हुई व्यञ्जित प्रगट की पाँच महार्णववाली महानदियाँ एक मासके बीचमें दो बार या तीन बार उतरना या नाव आदिमें बैठकर बार करना कल्पित नहीं है, वे नदियाँ ये हैं—गंगा १ जमुना २ सरयू ३ ऐरावती ४ और मही ५।

‘मा कल्पइ निर्गन्थाण वा निर्गन्थीण वा’ इत्यादि—

टीका—अथवा निश्चये अने निर्गन्थिनीयाने वा उचित गणित, अचित, अने पाँच भद्राणववाणी महा नदीयाने जेह भासमां जे बार के त्रय बार तेमां आतीने जेना छोटी आदिमा जेहीने बार करवानु कल्पतुं नहीं ते पाँच नदीयानां नाम नीचे प्रमाणे छे—

(१) गंगा, (२) यमुना, (३) सरयू, (४) ऐरावती अने (५) मही।

રૂપકાઃ મહાર્ણવાઃ=મહારૂઢાઃ મહાનદીઃ માસસ્ય અન્નઃ=મન્થે દ્વિ કૃત્યો=વારદ્યં,
ત્રિઃકૃત્યો=વારત્રયં વા ઉત્તરીતુ=વાતુગૃહાદિના લઙ્ઘ્યગિતુ સનરીતુ=નાવાદિના સમ્ય-
ક્તયા લઙ્ઘ્યગિતું વા નો કલ્યતે । ઉત્તરણમન્તરણયોગકલ્પનીયન્વમ્ આત્મસયન-
યોર્વિધાતસ્ય શવલચારિત્રસ્ય ચ મંમયાત્ ।

ઉક્તં ચ—“ અંતોમાસસ્ય તથો દગલેવે કરેમાણે મવલે ”

છાયા—અન્તર્માસસ્ય ગ્રીન્ ટકલેપાન્ કુર્મન્ શવલ્લ ઇતિ । દકલેપઃ=નલા-

પાંચ કારણોસે હન મહાનદિયોંકે પાર કરના કલ્પન મો હૈ, જૈસે—
મયકે સમયમેં ૧ દુર્ભિક્ષકે સમયમેં ૨ કોઈ નિરન્તર કષ્ટ દેતા હો તો
એસી સ્થિતિમેં ૩ નદિયોંકા પ્રચુર પ્રવાહ ઉન્માર્ગગામી હોનેકે સમયમેં ૪
ઔર અનાયોં દ્વારા આક્રમણ હોનેકે સમયમેં ૫, હન મહાનદિયોંકો જો
ઉદ્દિષ્ટ વિશેષણ દિયા ગયા હૈ, ઉસકા કારણ યહ હૈ, કિ ચે “મહા-
નદિયાં ” હૈં, હસ રૂપસે ચે કહી ગઈ હૈં, તથા ચે પાંચ સંખ્યામેં યહાં
પ્રકટ કી ગઈ હૈ, હસલિયે “ગણિતાઃ” હસ વિશેષણસે હન્હે વિશેષિત
કિયા ગયા હૈ, તથા “ગંગા જમુના ” ઇત્યાદિ નામોં દ્વારા હન્હે અભિ-
હિત કિયા ગયા હૈ, હસલિયે “વ્યંજિતા ” હસ પદસે હન્હે યુક્ત કિયા
ગયા હૈ, મહાર્ણવ શબ્દસે યહ સમજાયા ગયા હૈ, કિ ચે મહાનદિયોં
વહુત પાનીવાલી હોતી હૈં, હનમેં અગાધ જલ રહતા હૈ, હન મહાનદિયોંમેં
ઉતરના યા હન્હે નાવ આદિમેં વૈઠકર પાર કરના હસલિયે નિષિદ્ધ

નીચેના પાંચ કારણોને લીધે તેમને તે મહા નદીઓ પાર કરવાનું
કહેવું છે પણ ખરૂં—(૧) લયતા સમયમા, (૨) દુર્ભિક્ષ (દુષ્કાળના) સમયમા
(૩) કેઈ નિરંતર કષ્ટ દેતું હોય એવી પરિસ્થિતિમાં, (૪) નદીઓનો પ્રચુર
પ્રવાહ ઉન્માર્ગગામી થાય ત્યારે અને (૫) અનાયોં દ્વારા આક્રમણ થાય ત્યારે

આ મહાનદીઓને “ ઉદ્દિષ્ટ ” વિશેષણ લગાડવામાં આવ્યું છે, કારણ
કે તેમને ઉદ્દેશીને એમ કહેવામા આવ્યું છે કે તે મહાનદીઓ છે તેમને
પાંચની સંખ્યામાં અહીં પ્રકટ કરવામાં આવી છે, તેથી તેમને “ ગણિતા ”
આ વિશેષણ લગાડવામા આવ્યું છે. તથા ‘ ગંગા, જમુના ’ આદિ નામો
દ્વારા તેમને અભિહિત કરવામાં આવેલ છે, તેથી તેમને “ વ્યંજિતા ” વિશે-
ષણ લગાડવામાં આવ્યું છે. “ મહાર્ણવ ” આ શબ્દ દ્વારા એ વાત પ્રકટ
કરવામાં આવી છે કે તે મહાનદીઓ ખહુ જ પાણીવાળી છે—તેમાં અગાધ
જળ હોય છે. આ મહાનદીઓમાં ઉતરવાનો અને નાવ આદિ દ્વારા તેમને
પાર કરવાનો, તે કારણે નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે કે એવું કાર્ય કરવાથી

વતરણમ્ । તા પત્ર મહાનદીઃ પ્રોદ-તથા-ગદ્ગા, યમુના इत्यादि । પશ્ચિમસ્થાનકા
નુરોપાદય પ્રસિદ્ધા ગદ્ગાદયો મહાનદીઃ પ્રોક્તા, તનુ ઇત્યોત્તરિકા અપિ વહુદકા
મહાનદી ન કલ્પયતે ઉત્તરીતુ સન્ધરીતુ યેતિ યોગ્યમ્ । इत्य निषेधमुक्त्वा सम्प्रति
उदपवादमाह-‘ पञ्चहिं ठाणेहि ’ इत्यादि । पञ्चभिः स्थानैः साधूनां साध्वीनां वा
इमा वहुदका महानदीः उत्तरीतु सन्धरीतु वा कल्पते । यैः स्थानैः कल्पते तानि
स्थानानि प्राह-तथया-अये=शत्रुघ्नवराज्यादिजनिते धर्मावकरणापहरणविषयके

કહા ગયાહે, કિ એસે કાર્યસે આત્મા ઓર સયમજા ચિરાધના છોતા હૈ,
ઔર ચારિત્ર્યમેં શાયલતા આમીહે। કહા ઓહે “અતો માસસ તમો” इत्यादि

વકલેપ શબ્દકા અર્થ જલમેં ઉતરના જલકો નાવ આદિકે દ્વારા
પાર કરના એસા હૈ, યહાં પશ્ચિમસ્થાનકકે અનુરોધસે પ્રસિદ્ધ ગદ્ગા આદિ
મહાનદિયાંહી પ્રકટ્કી ગઈ હૈ અતઃ। इनसे भी अतिरिक्त जो बहुदकवाली
महानदियां हैं, उनमें भी उतरना और उगहे पार करना भी साधु
साध्वीके लिये कल्प नहीं है।

इस प्रकारसे यह कथन निषेधमुखसे किया है, अथ इस विषयमें
जोअपवाद है, उसे प्रकट करनेके निमित्त सूत्रकार कहते हैं-“पञ्चहिं
ठाणेहि” इत्यादि-हां इन पांच कारणोंके उपस्थित होने पर साधु
और साध्वियोंको ये बहुदकवाली महानदियोंमें उतरना और उगहे
नाव आदि द्वारा पार करना पड़े तो वे कर सकते हैं-वे पांच कारण
इस प्रकारसे हैं-शत्रु मूल किसी राजा आदि द्वारा यदि ऐसा भय

આત્મા અને સયમનો વિષાદ થાય છે, અને ચારિત્ર્યમાં શયલતા, (કમચેરી)
આવે છે તદ્દ પછી છે કે-“ અતો માસસ તમો ” ઇત્યાદિ

“પંચહિં ઠાણેહિ” આ શબ્દનો અર્થ “જળમાં ઉતરવું અથવા જરૂરને નાવ આદિ
દ્વારા પાર કરવું” થાય છે અહીં પાંચ સ્થાનનું પ્રકરણ દેવાથી જગદ્ગિર્વાણ
મખ્યાત મહાનદીઓ જ પ્રકટ કરવામાં આવી છે પછી તે સિધાવની જે પછા
પાણીવાળી મહાનદીઓ છે, તેમાં ઉતરવાનું અને તેમને પાર કરવાનું પછી
સાધુ સાધ્વીઓને કલ્પવું નથી, એમ સમજવું આ પ્રકારે તે પાંચ નદીઓને
પાર કરવાનો નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે છતાં પછી તેના જે અપવાદો છે,
તે કહે પ્રકટ કરવામાં આવે છે-

‘પંચહિં ઠાણેહિ’ ઇત્યાદિ-નીચેના પાંચ કારણો ઉદ્ભવે તો, તેઓ
અમુક જગ્યાની અને ઉપરુંદત નિષેધજ્ઞાવાળી તે મહાનદીઓમાં ઉતરી શકે
છે, અથવા તેમને નાવ આદિ વડે પાર કરી શકે છે-(૧) કેમકે શત્રુ રાજાને

મયે સત્તિ ૨। દુર્મિક્ષે વા=અથવા શિક્ષાયા અમાલે સત્તિ ૩। વા=અથવા કોડપિ શત્રુત્તમાપન્નઃ પુરુષો નિરન્તરં પ્રવ્યથતે=અન્તર્માવિતળ્યર્થત્વાદ્ વ્યથામુત્પાદયતિ ચેત્તદા; અથવા-‘ પ્રગ્રહેદ્ વા સ્વલુ કોડપિ ’ ઇતિચ્છાયા, કોડપિ પુરુષો ગદ્ગામી પ્રગ્રહેત્-પ્રવાહયેત્=અધિપેત્ તદા ૩। અથાપિ અન્તર્માવિતળ્યર્થતા । વા=અથવા દક્ષીણે-ઉન્માર્ગગામિતયા પ્રચુરે ગદ્ગાદીનામ્ જલસમૂહે મહતા વેગેન એનમાને=આગચ્છતિ સત્તિ ૪। વા=અથવા અનાર્યેષુ=મ્લેચ્છેષુ આક્રામન્તુ સન્નુ-મ્લેચ્છેભ્યો જીવનચારિત્રાદીનામપહારસંભવાત્ તદાક્રમણે મતિ ૫। એભિઃ પશ્ચભિઃ કારણૈર્નિર્ગન્થા નિર્ગન્થો વા ગદ્ગાયા મહાનદીરુત્તરીતું સંતરીતું વા શક્નુવન્તિ । તદુક્તમ્-

“ અવાહે દુષ્મિક્ષે, મપ દઓગંસિ વા મહંતંસિ ।

પરિમત્તાલળં વા, જયા પરો વા કરેજ્જાસિ ॥ ૧ ॥

છાયા—આવાધાયામ્ દુર્મિક્ષે મયે દક્ષીણે વા મહતિ ।

પરિમત્તાલળ વા યદા પરો વા કરિણ્યતિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ સુ. ૧ ॥

ઉપસ્થિત ક્રિયા ગયા હો કિ જિસમેં ધર્મોપકરણકે અપહરણ હોનેકી વાત હો, અથવા દુર્મિક્ષ મિશ્ત્રાકી પ્રાપ્તિ જવ નહીં રહી હોં અથવા-શત્રુતાકો ધારણ કરનેવાલા કોઈ પુરુષ નિરન્તર વ્યથાકો-કષ્ટકો દે રહા હો-અથવા કોઈ પુરુષ ગદ્ગા આદિમેં વહા દેતા હૈ, અથવા-ઉન્માર્ગગામી હો જાનેસે ગંગા આદિકા પ્રચુર જલસમૂહ ઘડે વેગસે ઘડ રહા હો અથવા-જવ મ્લેચ્છ અનાર્યજન આક્રમણ કર રહે હોં ઓર એસી સ્થિતિમેં ઉનસે જીવનકી યા ચારિત્રકી અપહતિ(નાશ) હોનેકી સંભાવના હો તો એસે ઇન પાંચ કારણોંકે હોને પર નિર્ગન્થ-સાધુ સાધ્વિયોંકો ગંગા

કારણે એવો ભય ઉપસ્થિત થયો હોય છે કે જેને લીધે ધર્મોપકરણના અપહરણનો ભય ઉત્પન્ન થયો હોય. (૨) દુર્મિક્ષને કારણે જે શિક્ષાની પ્રાપ્તિ અશક્ય બની ગઈ હોય, (૩) અથવા કેઈ શત્રુ નિરન્તર વ્યથા (કષ્ટ) પહોંચાડી રહ્યો હોય, અથવા (૪) ઉન્માર્ગગામી થવ ને કારણે ગંગા આદિને પ્રચુર જલસમૂહ ઘણા જ વેગથી વૃદ્ધિ પ મી રહ્યો હોય અથવા કેઈ વ્યક્તિ પોતાને પરાણે ગંગા આદિમાં ડુબાડી દેશે એવો ભય ઉત્પન્ન થયો હોય, અથવા (૫) મ્લેચ્છોનુ ન્યારે આક્રમણ થઈ રહ્યું હોય અને તે કારણે ન્યારે જીવન નષ્ટ થવાનો સભવ જણાતો હોય. આ પાંચ કારણો ન્યારે ઉપસ્થિત થાય, ત્યારે શ્રમણ નિર્ગન્થો અને નિર્ગન્થીઓને ગંગાદિ મહાનદીઓમાં ઉતરવાનું અને નાવ આદિ દ્વારા તેમને પાર કરવાનું કહેવું છે પણ ખરું

પૂર્વ-જો કપ્પહ ણિગ્ગથાણ વા ણિગ્ગધીણ વા પદમ
પાડસસિ ગામાણુગામ દૂહજ્જિત્તપ્પ । પચહિં ઠાણેહિં કપ્પહ, ત
જહા-ભવસિ વા દુઢિભવ્વસિ વા જાવ મહ્યા વા અણારિ
પહિં । ઘાસાઘાસ પલ્લોસઘિયાણં જો કપ્પહ ણિગ્ગથાણ વા
ણિગ્ગધીણ વા ગામાણુગામ દૂહજ્જિત્તપ્પ । પચહિં ઠાણેહિં કપ્પહ,
ત જહા ણાણટ્ટયાપ્પ ૧ દસણટ્ટયાપ્પ ૨ ચરિત્તટ્ટયાપ્પ ૩ આય
રિયડવજ્જાયા વા સે વિસુમેઝ્જા, ૪ આપરિયડવજ્જાયાણ
વા ઘહિયા વૈયાવચ્ચકરણયાપ્પ ૫॥ સૂ. ૨ ॥

છાયા—જો કરાત નિર્વન્યાનાં વા નિર્વન્યાનીનાં વા મયમમાટ્ટપિ ગ્રામાનુ
ગ્રામ દ્રોતુમ્ । પચ્ચમિ સ્યાનેઃ કરાત, તથા-મયે વા દુર્વિણ્ણ વા યાવત્ મરતા,
વા અનાયેયુ । ચર્પાકાસં પર્યાગિતાનાં જો કરાતે નિર્વન્યાનાં વા નિર્વન્યાનીનાં વા
ગ્રામાનુગ્રામ દ્રોતુમ્ । પચ્ચમિ સ્યાનેઃ કરાતે, તથા-જ્ઞાનાપેતયા
૧, દર્શનાપેતયા ૨, ચારિત્રાયેતયા ૩, આચાર્યોપાધ્યાયા વા તસ્ય વિપ્લવમથેયુઃ
૪, આચાર્યોપાધ્યાયાનાં વા ઘહિઃ વૈયાટ્ટસ્યકરણતયા ૫॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—‘જો કપ્પહ’ ઇત્યાદિ—

મયમમાટ્ટપિ—માટ્ટપિ=ચર્પાકાટ્ટુઃ સા નવન્યમવ્યમોત્કુટ્ટમેદેન મિષિયા । તપ-
અવન્યા ચતુર્માસપ્રમાણા-માસાદ્યર્પણમાયો ચાતુર્માસનિષાસાયે સમાગમનાત્ ૧,
આદિ મહાનવિષોમે ઉત્તરના ઓર નામ આદિ દ્વારા ઠન્હે પાર કરના
કલ્પિત છે । કહા મી છે—“ આઘાદે દુઢિમખ્સે ” ઇત્યાદિ ।

હસ ગાથાકા અથ પૂર્વેક્તાનુસારહી છે ॥ સૂ. ૧ ॥

‘જો કપ્પહ ણિગ્ગથાણ વા ણિગ્ગધીણ વા પદમપાડસસિ’ ઇત્યાદિ ૨ ॥
ટીકાર્થ—ચર્પાકાટ્ટુ જવન્ય મખ્યમ ઓર સસમકે મેદસે ત્રીન પ્રકારકી કહી
ગઈ છે, જનમે ચાતુર્માસ પ્રમાણ જો ચર્પાકાટ્ટુ છે ત્થ જવન્ય ચર્પાકાટ્ટુ

હહુ પહુ જો છે કે આઘાદે દુઢિમખ્સે’ ઇત્યાદિ—આ આઘાદે કોથં ઉપર
સખ્યા અનુસાર જ સમજવેલ ॥ સૂ. ૧ ॥

“જો કપ્પહ ણિગ્ગથાણ વા ણિગ્ગધીણ વા પદમપાડસસિ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—ચર્પાકાટ્ટુને જવન્ય, મખ્યમ અને ઉત્કુટ્ટના સેવથી ત્રણ પ્રકારની હો

૭ તેમાંથી ચતુર્માસ પ્રમાણ જે ચર્પાકાટ્ટુ છે, તેને જવન્ય ચર્પાકાટ્ટુ કહે છે.

મધ્યમા પશ્ચમાસિકી-વૃષ્ટિ વાહુલ્યાદિકારણેનાપાઢકૃષ્ણપ્રતિપદાયામેવ સમા-
ગમનાત્ ૨, ઉત્કૃષ્ટા-પન્માસપ્રમાણા પૂર્વોક્તકારણવશાદાપાઢકૃષ્ણપ્રતિપદાત
આરંભ્યાધિકમાસસદ્ભાવેન કાર્તિકીં યાત્રદ્ ભવતિ । પ્રથમા ચાસૌ પ્રાવૃદ્ ચેતિ
પ્રથમપ્રાવૃદ્ । પ્રાવૃદ્-હેમન્ત-ગ્રીષ્મરૂપાણાં ત્રયાણામ્ ઋતૂનાં મધ્યે પ્રાવૃષઃ પ્રાથ-
મ્યાત્ પ્રાવૃદ્ ઋતુઃ પ્રથમપ્રાવૃદ્ ઇત્યુચ્યતે । તસ્મિન્ નિર્ગ્રન્થાનાં નિર્ગ્રન્થીનાં
વા ગ્રામાનુગ્રામમ્=ગ્રામમનુગતો ગ્રામઃ-ગ્રામાનુગ્રામસ્તત્મ નો કલ્પતે દ્રોતું=ગતું

હૈ, વહ આષાઢકી પૂર્ણિમાસે લેકર ચાર માસ તક નિવાસકે લિયે હોતી
હૈ ૧ મધ્યમ વર્ષાઋતુ પાંચ મહિનેકી હોતી હૈ, વૃષ્ટિકી અધિકતા હોને
પર ચહ આષાઢ કૃષ્ણ પ્રતિપદાસેહી આ જાતી હૈ, ઉત્કૃષ્ટ વર્ષાઋતુ છહ
મહિનેકી હોતી હૈ, પૂર્વોક્ત કારણકે વશસે આપાઢ કૃષ્ણ પ્રતિપદાસે
લેકર અધિક માસકે સદ્ભાવ હો જાનેસે કાર્તિક તક હોતી હૈ, પ્રથમ
જો વર્ષાઋતુ હૈ, વહ પ્રાવૃદ્-વર્ષાઋતુ હૈ, હસે જો પ્રથમ પ્રાવૃદ્ વર્ષાઋતુ
કહા ગયા હૈ, ઉસકા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ પ્રાવૃદ્ હેમન્ત એવ ગ્રીષ્મ इन
ત્રીનમેં इन ત્રીન ઋતુઓંકે મધ્ય મેં વર્ષાઋતુકો પ્રથમ ગિના ગયા હૈ,
હસલિયે ચહાં વર્ષાઋતુકો “ પ્રથમ ” વિશેષણસે વિશેષિત કિયા ગયા
હૈ, તાત્પર્ય હસકા ચહી હૈ, કિ જવ વર્ષાઋતુ પ્રારંભ હો જાતી હૈ, તચ
નિર્ગ્રન્થોં એવં નિર્ગ્રન્થિનિયોંકો એક ગાંવસે દૂસરે ગાંવમેં વિચરણ કરના

તે અપાઢી પૂનમથી શરૂ કરીને કાર્તિકી પૂનમ સુધીના ચાર માસની હોય છે.
મધ્યમ વર્ષાઋતુ પાંચ માસની હોય છે વૃષ્ટિની અધિકતા હોય ત્યારે તે
અપાઢી કૃષ્ણ પ્રતિપદથી શરૂ થઈ જાય છે (ગુજરાતમાં દરેક માસનો શુકલ
પક્ષ પહેલાં અને કૃષ્ણપક્ષ પછી આવે છે જ્યારે મારવાડ વગેરેમાં કૃષ્ણપક્ષ
પહેલાં અને શુકલપક્ષ પછી આવે છે. આ રીતે અપાઢ વદ એકમથી વર્ષા-
ઋતુ શરૂ થાય તો પાંચ માસની વર્ષાઋતુ થાય છે.) ઉત્કૃષ્ટ વર્ષાઋતુ છ
માસની હોય છે. પૂર્વોક્ત કારણે અપાઢ વદી એકમથી વર્ષાઋતુ શરૂ થતી હોય
અને વચ્ચે કોઈ અધિક માસ આવતો હોય ત્યારે વર્ષાઋતુ છ માસની થાય
છે પ્રથમ જે વર્ષાઋતુ છે તેને પ્રાવૃદ્ વર્ષાઋતુ કહે છે પ્રાવૃદ્-વર્ષા, હેમન્ત
અને ગ્રીષ્મ આ ત્રણે ઋતુઓમાં વર્ષાઋતુને પ્રથમ ગણવામાં આવી હોવાથી
વર્ષાઋતુની આગળ “ પ્રથમ ” વિશેષણ વપરાયું છે. આ સૂત્રમાં એવું પ્રકટ
કરવામાં આવ્યું છે કે જ્યારે વર્ષાઋતુનો પ્રારંભ થાય છે, ત્યારે નિર્ગ્રન્થો
અને નિર્ગ્રન્થીઓને એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવાનો નિષેધ કર્યો
છે આગમમાં “ આ પ્રકારનો વિહાર સાધુઓને કલ્પતો નથી ” એવું વિધાન

जीवै र्भूमेऽर्थात्तत्वात् । इत्थ निर्गमननिषेधमुक्त्वा सम्प्रति उदपवादमाह—‘पंचहिं ठाणेहिं’ इत्यादि । सूत्राक्तै र्भयदुर्मित्तादिभि कारणैस्तु गन्तु कल्पते एवेति । ‘वासावास’ इत्यादि—रपाशसं=रपाकारं पर्युविस्तानां स्थितानां निर्गमनानां निर्गमनीनां वा ग्रामानुग्राम गन्तु न कल्पते । शानार्थतादिभि पञ्चभि स्था नैस्तु कल्पते एव । तदेषापदार्थयितुमाह—‘पंचहिं ठाणेहिं’ इत्यादि । तथाहि—

निषिद्धं हि, आगमसे यजिनं हि, ययोकि-उत्त समप द्वीन्द्रियादि जी वीसे भूमि व्याप्त हो जाती है, इस तरहसे एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें जानका निषेध प्रकट कर अथ सूत्रकार इस्में जो अपवाद मार्ग है, उसका कथन करते हैं—“पंचहिं ठाणेहिं कल्पइ” इत्यादि । यद्यपि वर्षाकालमें साधु साध्वियोंको एक स्थानसे दूसरे स्थानमें आनाजाना शास्त्राज्ञानुसार निषिद्ध है, और ऐसाही यह उत्सर्ग मार्ग है, परन्तु फिर भी इस विषयमें अपवाद मार्ग ऐसा है, कि यदि सूत्रोक्त अथ दुर्मित्त आदि कारण उपस्थित हो जाते हैं, तो ऐसी स्थितिमें वर्षा कालमें भी साधु आदिको एक स्थानसे दूसरे स्थान ग्राममें जाना कल्पित कहा गया है । “वासावास पञ्जोसविषाण जो कल्पइ०” इत्यादि— वर्षाकालमें एक स्थान पर ठहरे हुए साधु आदिको एक गाँवसे दूसरे ग्राम विहार करना उचित नहीं है—शास्त्राज्ञासे बिरुद्ध है, परन्तु— प चहिं ठाणेहिं कल्पइ त जहा जाणहुयाए ?’ इत्यादि—इन कारणोंको छेकर ये वर्षाकालमें भी एक स्थानसे दूसरे स्थान पर जा सकते हैं, इनमें सपसे पहिला प्रयोजन रूप कारण ऐसा है, कि यदि य ज्ञान

छे ३१२५ छे ते समये भूमि द्वीन्द्रिय हि लयेथी ज्यत्त डोव छे आ शीते वर्षाकालमां ज्येत्त जाभथी लीजे जाभ विहार करवो ३२५ छे ‘वासावास पञ्जोसविषाण जो कल्पइ’ इत्यादि—वर्षाकालमां डोव ज्येत्त जाभमां रदोवा साधु साध्वीने ते जाभथी लीजे जाभ विहार करवो ते दक्षिण नथी—ज्येत्त ३२५ ते शास्त्रानाथी विरुद्ध छे परन्तु ‘पंचहिं ठाणेहिं कल्पइ त जहा जाणहुयाए?’ इत्यादि नीचे बतायेवा पाँच कारणोंने लीये तेजो वर्षाकालमां पञ्च ज्येत्त जाभथी लीजे

पंच हिं ठाणेहिं कल्पइ” इत्यादि—नीचिना पाँच कारणे मांथी डोव पञ्च ३१२५ उपस्थित थाय तो ज्येत्त सभेजोभा वर्षाकालमां पञ्च स भु साध्वीने ज्येत्त जाभथी लीजे जाभ विहार करवो ३२५ छे ‘वासावास पञ्जोसविषाण जो कल्पइ’ इत्यादि—वर्षाकालमां डोव ज्येत्त जाभमां रदोवा साधु साध्वीने ते जाभथी लीजे जाभ विहार करवो ते दक्षिण नथी—ज्येत्त ३२५ ते शास्त्रानाथी विरुद्ध छे परन्तु ‘पंचहिं ठाणेहिं कल्पइ त जहा जाणहुयाए?’ इत्यादि नीचे बतायेवा पाँच कारणोंने लीये तेजो वर्षाकालमां पञ्च ज्येत्त जाभथी लीजे

જ્ઞાનાર્થતયા-જ્ઞાનમેવ અર્થઃ=પ્રયોજન યસ્ય સ જ્ઞાનાર્થઃ, તસ્ય આવગ્નત્તા તયા-જ્ઞાનપ્રયોજનમુદ્દિશ્ય ગન્તું કલ્પતે । અયં ભાવઃ-કશ્ચિદાચાર્યોઽપૂર્વશ્રુતસ્કન્ધ-ધારકો ભક્તં પ્રત્યાખ્યાતુકામો ભવેત્ । યદિ તત્સપ્તાશાદસાવપૂર્વશ્રુતસ્કન્ધો ન ગૃહેત તદાઽસૌ વિચ્છિદ્યેત, અતસ્તદગ્રહણાર્થ ગન્તું કલ્પતે ઇતિ ૧ । एवं दर्शनार्थ-तया=भक्तं प्रत्याख्यातुकामान् कुनश्चिदाचार्याद् दर्शनप्रभावकशास्त्राध्ययनार्थं गन्तुं कल्पते इति २ । तथा-चारित्रार्थतया=यत्र क्षेत्रे वर्षावासस्थितिः कल्पिता,

પ્રાપ્ત કરનેકે લિયે અભિલાષી છે, તો હસ ઉદ્દેશ્યકોલેકર લે ઉસ કાલમેં વિહાર કર સકતેહેં । નાત્પર્ય હસકા એસાહે-કિ અપૂર્વ શ્રુતસ્કન્ધધારક કોઈ આચાર્ય હો, ઓર લહ ભક્તપ્રત્યાખ્યાન(સથાગ)કરનેકા અભિલાષી હો રહા તો એસી સ્થિતિમેં યદિ ઉસકે પાસ જાકર લહ અપૂર્વ શ્રુતસ્કન્ધ જ્ઞાન પ્રાપ્ત નહીં કિયા જાતા હૈ, તો ઉસકા વિચ્છેદ્ હો જાતા હૈ, અતઃ-લહ અપૂર્વ શ્રુતસ્કન્ધ વિચ્છિન્ન હો જાયે હસ અભિલાષાસે પ્રેરિત હુઆ સાધુ ઉસ જ્ઞાનકો પ્રાપ્ત કરનેકો વર્ષાકાલમેં ભી વિહાર કર સકતા હૈ, દૂસરા કારણ હૈ, એસા હૈ કિ દર્શન પ્રભાવક શાસ્ત્રકા જ્ઞાતા યદિ કોઈ આચાર્ય ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરનેલા હો રહા હો તો ઉસસે ઉસ દર્શન પ્રભાવક શાસ્ત્રકો અધ્યયન કરનેકે લિયે સાધુ વર્ષાકાલમેં ભી ઉસકે પાસ જાનેકે લિયે વિહાર કર સકતા હૈ ૨ । તૃતીય કારણ એસા

(૧) જ્ઞાનાર્થ-કોઈ સાધુ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાની અભિલાષાવાળો હોય, તો તે ઉદ્દેશ્યને લીધે તે વર્ષાકાળમાં પણ વિહાર કરી શકે છે. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

અપૂર્વ શ્રુતસ્કન્ધ ધારક કોઈ આચાર્ય હોય, અને તે આચાર્ય ભક્ત-પ્રત્યાખ્યાન (ચતુર્વિધ આધારના ત્યાગપૂર્વક સથાગે) કરવાની અભિલાષા સેવતો હોય તો એવી પરિસ્થિતિમાં જો તેની પાસે જઈને કોઈ જ્ઞાનપિપાસુ સાધુ તે અપૂર્વ શ્રુતસ્કન્ધ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી ન લે તો તેનો વિચ્છેદ થઈ જવાનો સંભવ રહે છે તેથી તે અપૂર્વ શ્રુતસ્કન્ધ જ્ઞાન વિચ્છિન્ન ન થઈ બાક એવી શુભ અભિલાષાથી પ્રેરિત થયેલો સાધુ વર્ષાકાળમાં પણ તે જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરવા માટે વિહાર કરીને તે શ્રુતસ્કન્ધ ધારક સાધુ પાસે જઈ શકે છે

હવે બીજું કારણ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—દર્શન પ્રભાવક, શાસ્ત્રના જ્ઞાતા એવા કોઈ આચાર્ય ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કરવાને વિચાર કરી રહ્યો હોય તો તે દર્શનપ્રભાવક શાસ્ત્રનો અભ્યાસ કરવા નિમિત્તે સધુ વર્ષાકાળમાં પણ તેમની પાસે જવાને માટે વિહાર કરી શકે છે

सत्क्षेत्रं यदि अनेपगाभ्यादि दोषदृष्टं भवेत्तदा चारिभारक्षणायां कल्पते गन्तुमिति ३। तथा-आचार्यापाण्याया वा 'म' इति तस्य साधोः अत्र मातापेक्षवर्जनं, तेन तेषां साधूनामित्यर्थः, विष्णुमयेयुः=शरीरात् पूयगमययुः-अत्रित्, सत्र गरुछे चेदन्य आचार्य उपाण्याया वा न भवेत् तदा तेषां साधूनां कल्पते गन्तुमिति । अथवा-' विसृमेज्जा ' इत्यस्य विध्वम्भेयुरिति=छाया । आचार्यापाण्यायाः तस्य=त साधु विध्वम्भेयुः-विध्वस्तुः, तदाऽत्यन्तदुःस्वार्थं कर्तुं तस्य साधो गन्तु कल्पत इति ४। तथा-आचार्यापाण्यायानां यदि=वर्षाक्षेत्राद् वहिर्बर्त्तमानानां रोगादिप्रस्थानां पैपाहृण्यकरणतया=वैपाहृण्यकरणार्थं साधो गन्तुं कल्पते ॥ ५ ॥ इति ॥ सू० २ ॥

हे, कि जिस स्थानमें वर्षावाम किया है, वह क्षेत्र यदि अनपणा स्त्री आदिक दोषसे दूषित है, तो अपने चारित्रिकी रक्षाके लिये साधु वर्षा-कालमें भी अ यत्र जा सकता है, चतुर्थ कारण ऐसा है, वर्षाबोस करनेवाले साधुओंका यदि कोई आचार्य अवया उपाण्याय शरीरसे दूषक हो गया हो-मर गया हो और उस गच्छमें अथ आचार्य पा उपाण्याय न हो तो ऐसी स्थितिमें उन साधुओंका वर्षाकालमें भी अन्यत्र विहार करना कठिण कहा गया है-अथवा-" विसृमेज्जा " की सम्झुत छाया ' विध्वम्भेयुः " ऐसी भी होती है, तो इस पक्षमें इसका ऐसा अर्थ होताहै, कि ये आचार्य अथवा उपाण्याय यदि उस साधु का विश्वास करते हैं, तो अत्यन्त दुःस्वप्न (गुप्त) उस कार्यको करनेके लिये उस साधुका वर्षाकालमें भी विहार करना कठिण कहा गया है

श्रीगुरु गुरुण्ण आ प्रभावे छे-—इसमें आतुभासमां वास कथीं होय, ते क्षेत्र जे अनेपगा श्री आदिना दोषधी इति होय, तो पेटना चारि तनी रक्षा निमित्त सधु त्वाधी अन्य स्थले निकर करी शके छे

साधु गुरुण्ण आ प्रभावे छे-—कहाँ क्षेत्रमां आतुभास वर्षावास कथां लाइ जे ते साधुजोना आचार्य जववा उपाण्याय ठाणधम पाभी लाय, जने ते अवधमां अन्य आचार्य जववा उपाण्याय न होय तो जेवी परिस्थितिमां ते साधुजोने वर्षाकाल उरगियान पयु बिदार करवा कथी छे अथवा " विसृ मेज्जा " आ चरनी संस्तुत छया ' विध्वम्भेयुः " आ प्रभावे पयु साथ छे तो ते संस्तुत छायानी अपेक्षाजि आ प्रभावे जय साथ छे-—" जे ते आचार्य जववा उपाण्याय ते साधु उपर भूय ज विश्वास धरावना होय तो कहाँ अत्यन्त दुःस्वप्न भ्रम करवाने भाटे ते सधुने वर्षाकालमां पयु बिदार करवा कथी छे पांजयु गुरुण्ण नीये प्रभावे छे—

છઠ્ઠાસ્થા કેચિત્ અનુદ્વાતિકા મવન્તીતિ અનુદ્વાતિકાનાં પञ્ચ સ્થાનાનિ પ્રાહ-

મૂલમ્-પંચ અણુગ્વાઇયા પળ્લન્તા, તં જહા-હસ્તકર્મ્મ કરે-
માળે ૧, મેહુળં પઢિસેવમાળે ૨, રાઈમોચળં મુંજમાળે ૩, સાગા-
રિયં મુંજમાળે ૪, રાયપિઠં મુંજમાળે ૫ ॥ સૂ ૦ ૩ ॥

છાયા—પञ્ચ અનુદ્વાતિકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-હસ્તકર્મ્મકુર્વાણઃ ૧ મૈથુનં પ્રતિ-
સેવમાનઃ ૨ રાત્રિમોજનં મુજ્જાનઃ ૩ સાગારિકપિઠં મુજ્જાનઃ ૪, રાજપિઠં
મુજ્જાનઃ ૫ ॥ સૂ ૦ ૩ ॥

ટીકા—‘ પંચ અણુગ્વાઇયા ’ ઇત્યાદિ—

અનુદ્વાતિકાઃ—ઉદ્વાતઃ=લઘુકરણં, સ ન વિઘટે यस્ય પ્રાયશ્ચિત્તરૂપતપો-
વિશેષસ્ય તત્ અનુદ્વાતં=ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્તમ્, તદસ્તિ યેવાં પ્રતિસેવનાવિશેષપ્રજ્ઞાતે-
અનુદ્વાતિકાઃ તે ચ પञ્ચસંખ્યકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ । તથા—‘ હસ્તકર્મ્મકુર્વાણઃ ’ ઇત્યાદિ ।

પાંચવાં કારણ એસા હૈ, કિ વર્ષાક્ષેત્રસે વાહર વર્તમાન આચાર્ય યા
ઉપાધ્યાય હૈં ઔર વે રોગગ્રસ્ત હો ગયે હૈં તો એસી સ્થિતિમેં ઉનકી
વૈયાવૃત્તિ કરનેકે લિયે સાધુકા વાહર જાના કલ્પિત કહા ગયા હૈ ૫ । ૨ ।

કિતનેક છઠ્ઠાસ્થ અનુદ્વાતિકા હોતે હૈં । અતઃ અચ સૂત્રકાર ઉન
અનુદ્વાતિકાંકે પાંચ સ્થાનોંકા નિરૂપણ કરતે હૈં—

‘ પંચ અણુગ્વાઇયા પળ્લન્તા ’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૩ ॥

ટીકાર્થ—ઉદ્વાત શબ્દકા અર્થલઘુ કરના હૈ, યહ લઘુકરણ રૂપ ઉદ્વાત
જિસ પ્રાયશ્ચિત્ત રૂપ તપવિશેષકા નહૈં હોતા હૈ, એસા વહ ગુરુ પ્રાય-
શ્ચિત્ત પ્રતિસેવના વિશેષકે વશસે જિનકો હોતા હૈ, વે અનુદ્વાતિકા હૈં ।
વે અનુદ્વાતિકા પાંચ પ્રકારકે હોતે હૈં—૧. હસ્તકર્મ્મકો કરનેવાલે ૧ દ્વમરે

(૫) સાધુઓએ અમુક ક્ષેત્રમા વર્ષાવાસ કર્યો હોય, અને તે ક્ષેત્રની
ખહારના કોઈ ક્ષેત્રમા રહેલા આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય ખીમાર થઈ બન્ય,
તો એવી પરિસ્થિતિમા તેમનુ વૈયાવૃત્ત્ય (સેવા) કરવા માટે સાધુને વિહાર
કરવો કલ્પ્ય ગણાય છે ॥ સૂ ૨ ॥

કેટલાક છઠ્ઠાસ્થ અનુદ્વાતિકા હોય છે. હવે સૂત્રકાર તે અનુદ્વાતિકા કોના
પાંચ સ્થાનોનુ નિરૂપણ કરે છે—“ પંચ અણુગ્વાઇયા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘ ઉદ્વાત ’ એટલે ‘ લઘુ કરવું ’ આ લઘુકરણ રૂપ ઉદ્વાત બે પ્રાયશ્ચિત્ત
રૂપ તપવિશેષનો થતો નથી એવુ તે ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રતિસેવના વિશેષના
પ્રભાવથી બેમને થાય છે, તેમને અનુદ્વાતિકા કહે છે તે અનુદ્વાતિકા નીચે
પ્રમાણે પાંચ પ્રકારના હોય છે—(૧) હસ્ત કર્મ કરનારા, (૨) મૈથુનનુ સેવન

તપ-હસ્તકર્મ=સમયપસિદ્ધ, તત્ કુર્વાણ ૧। મૈથુનમ્=દ્રવ્ય પ્રતિસેવમાન ૨।
રાત્રિમોજનમ્-સુચ્યતે इति મોજન, રાત્રી મોજન રાત્રિમોજન, તથ દ્રવ્યતોડ
શનાદિકમ્ ક્ષેષત સમયચ્છેપે, વામ્વતઃ-દિવા યદીતં (રાત્રિમુલ્લક્ષ્ય) દિવા મુક્ત,
દિવા યદીત રાત્રી મુક્તમ્, રાત્રી યદીત રાત્રી મુક્તમ્, રાત્રી યદીત દિવા મુક્તમ્-
इत्येव चतुर्भङ्गात्मकम्, માવતો રાગદ્વેષાભ્યામ્, તત્ મુજ્જાના। રાત્રિમોજને
દોષા મોક્તાઃ, ઉક્તશ્ચ—

મૈથુનકા સેવન કરનેવાળે ૦ ત્રીસરે રાત્રિમોજન કરનેવાળે ૧ ચૌથે
સાગારિક(શાસ્ત્રાનર)પિન્ડ ત્વાનેવાળે ૪ ગૌર પાંચથે રાત્રિપિન્ડ ત્વાનેવાળે
૫૬નમેં હસ્તકર્મ પ્રસિદ્ધ ૬, હસે હસ્તક્રિયા ની કહતહ ૭। મૈથુનકર્મ ની
પ્રસિદ્ધ ૬ હસે સૈદ્ધાન્તિરપરિભાષામેં અગ્રત્વકા સેવન કરના કહા
ગયા ૬। રાત્રિ મોજન દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર કાલ ઓર માથકી અપેક્ષાસે ચાર
પ્રકારકા કહા ગયા ૬, દ્રવ્યકી અપેક્ષા રાતમેં અગ્રાન આદિકા સ્થાના
યદ દ્રવ્ય રાત્રિ મોજન ૬, મનુષ્ય ક્ષેત્રકે નીતર કિસી ની સ્થાન પર
બેઠકર રાતમેં મોજન કરના યદ ક્ષેત્રકી અપેક્ષા રાત્રિ મોજન ૬, દિવ
સમેં લાવે હુપ મોજનકો રાતમર રણકર દુસરે દિન ત્વાના દિનમેં લાવે
હુપ મોજનકો રાત્રિમેં ત્વાના, રાત્રિમં યદીત મોજનકો રાત્રિમેં ત્વાના
ઓર રાત્રિમેં યદીત મોજનકો દિનમેં ત્વાના હસ તરહસે ફાલકી
અપેક્ષા રાત્રિ મોજન ચાર મદ્દવાલ ૬, તથા-રાગદ્વેષસે મુક્ત હોકર

કરનારા (૩) રાત્રિ ભોજન કરનારા (૪) સામાયિક પિન્ડ ખાનારા અને (૫)
શાશ્વતિ ખાનારા હવે આ પાંચિનુ સ્વચ્છીકરણ કરવામા આવે છે—

હસ્તકર્મ આ રાખકનો અર્થ હસ્તદોષ પશુ થાય છે મૈથુન કર્મ
કો હે અગ્રક્ષત્ર સેવન રાત્રિભોજન દ્રવ્ય કોન, કાળ અને ભાવની અપેક્ષાએ
આર પ્રકારત કહ્યું છે રાત્રે કોઈ પણ પ્રકારના અગ્રાન પાન આદિ ખાવા
તેનું નામ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ રાત્રિભોજન છે મનુષ્ય કોનના કોઈ પણ સ્થાન
પર ભેટીને રાત્રે ભોજન કરવું તેને કોનની અપેક્ષાએ રાત્રિભોજન કહે છે
દિવસે વઢોરી લાવેલા ભોજનને આખી રાત રાખી મૂકીને બીજે દિવસે ખાવું
અથવા દિવસે વઢોરી લાવેલા ભોજનને રાત્રે ખાવું રાત્રે વઢોરી લાવેલા
ભોજનને રાત્રે ખાવું અથવા રાત્રે લાવેલા ભોજનને દિવસે ખાવું, તેનું
નામ રાત્રિભોજન છે આ રીતે કાગની અપેક્ષાએ રાત્રિભોજનના ચાર પ્રકાર
સમજવા રાત્રે દેવધી સુષ્ટ થાને ને ભોજનનો રાત્રે ઉપભોગ કરવામા

“ સંતિ મે સુદુમા પાણા, તસા અદુવ થાવરા ।

જાઓ રાઓ અપાસંતો, કદમેસણિયં ચરે ॥૧॥

ઉદડલ્લં વીયસંસત્તં, પાણા નિવડિયા મહિં ।

દિયા તાર્હિં વિવજ્જિજ્જા, રાઓ તત્થ કદ ચરે ॥૨॥

‘ એયં ચ દોસં દટ્ટહૂણં, નાયપુત્તેણ યાસિયં ।

સવ્વાહારં ન યુજંતિ, નિગંથા રાહ્મોયણં ॥૩॥

છાયા —સન્તી મે સૂક્ષ્માઃ પ્રાણાઃ ત્રસા અથવા સ્થાવરાઃ ।

યાન્ રાત્રૌ અપશ્યન્, કથમેપણીયં ચરેત્ ॥૧॥

ઉદકાર્દ્રાં વીજસંસક્તાં પ્રાણા નિપતિતા મહીમ્ ।

દિવા તાન્ વિવર્જયેત્, રાત્રૌ તત્ર કથં ચરેત્ ॥૨॥

एतं च दोषं दृष्ट्वा ज्ञातपुत्रेण भाषितम् ।

सर्वाहारं न युज्यते निर्ग्रन्था रात्रिभोजनम् ॥૩॥ इति ।

જો ભોજન રાત્રિમેં કિયા જાતા હૈ, વહ ભાવકી અપેક્ષા રાત્રિ ભોજન હૈ, રાત્રિભોજનમેં દોષ હસ પ્રકારસે કહે ગયે હૈ—

“ સતિમેં સુદુમા પાણા ” હત્યાદિ ।

રાત્રિમેં સૂક્ષ્મ ત્રસ જીવ ઓર સ્થાવર જીવ દષ્ટિપથ નહીં હોતે હૈ, અતઃ અહિંસા વ્રતકી રક્ષા કરનેવાલે મુનિજન ઉસમેં ભિક્ષાવૃત્તિ નહીં કરતે હૈં । પાનીસે આર્દ્ર હુઈ એવં વીજસે યુક્ત હુઈ ભૂમિમેં પ્રાણી વહુતસે ગિરતે રહતે હૈં, અતઃ દિનમેં તો ડનકા વચાવ હો જાતા હૈ, પરન્તુ રાત્રિમેં ડનકા વચાવ નહીં હો સકતા હૈ, હસ પ્રકારકે હસ દોષકો દેવકર જ્ઞાતપુત્ર મહાવીરને રાત્રિમેં ભિક્ષાવૃત્તિકા ઓર રાત્રિકે ભોજનકા ત્યાગ કરના કહા હૈ ।

આવે છે, તેને ભાવની અપેક્ષાએ રાત્રિભોજન કહે છે રાત્રિભોજનના આ પ્રમાણે દોષો કહ્યા છે—“ સતિ મે સુદુમા પાણા ” ઇત્યાદિ—

રાત્રે સૂક્ષ્મ ત્રસજીવો અને સ્થાવર જીવો દષ્ટિગોચર થતા નથી તેથી અહિંસા વ્રતની રક્ષા કરનારા મુનિજનો રાત્રે ભિક્ષાવૃત્તિ કરતા નથી પાણીથી ભીની થયેલી અને ખીજથી યુક્ત બનેલી ભૂમિમાં ઘણા જીવો આવી પડતાં હોય છે દિવસે તો સાવધાનીપૂર્વક ચાલવાથી તેમની રક્ષા થઈ જાય છે, પણ રાત્રે તો તેઓ નજરે જ નહીં પડતા હોવાથી તેમની વિરાધના થઈ જાય છે. આ પ્રકારની પરિસ્થિતિનો વિચાર કરીને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે રાત્રે ભિક્ષાવૃત્તિ માટે ફરવાનો અને રાત્રિભોજન કરવાનો નિષેધ કર્યો છે. તથા

तथा—

“अविदुः फाल्गुगदम्ब, कुयू पणगा तद्वावि दुप्यस्त ।
पञ्चकले नाणी विदुः, राईमघ परिहरति ॥१॥

जह वि य पिपीलिंगर, दीसति पर्वजोऽउज्जोण ।
तद्वि सल्ल भाणाइण मूलमपविराहणा जेण ॥२॥

छाया—यद्यपि सल्ल मासुकरव्य कुयव पनकास्तथापि दुर्दशाः ।
प्रत्यक्ष ज्ञानिनोऽपि सल्ल रात्रिमक्त परिहरन्ति ॥१॥

यद्यपि च पिपीलिकादयो हृदयन्ते मदीय व्योतिक्कपोते ।
तथापि सल्ल अनाचीर्ण मूलमवविराहणा येन ॥२॥ इति । १।

तथा—सागारिकपिण्डम्—मगारेण सह पर्वते सागारः, स एव सागारिकः—
वदयातर तस्य पिण्डः=आहारः, सं भुजान । सागारिकपिण्डभोजने हि दीपा
वन्ति । तदुक्तम्—

“तिथयरपडिक्कुठो, आणा अन्नाय उगमे न सुज्ज ।
अविमुचि अलायवणा दुल्लहसेग्मा य वोच्चेभो ॥१॥”

छाया—तीर्थकरप्रतिकुष्ट आणा, अन्नात् उग्रमथ नो हृष्येत् ।
अविमुक्तिरलायवता, दुर्लभस्यया च व्युच्छेदः ॥१॥ इति ।

अय भावः—तीर्थकरै प्रतिपद्योनिपिदः सागारपिण्डः, अतः स न

तथा—“अविदुः फाल्गुगदम्ब ” इत्यादि

इन गाथाओंका अर्थ स्पष्ट है, अगरसे जो युक्त होता है, यह
सागार है, यह सागारही सागारिक है । इसे साग्यातर कहा गया है
इनके घरका आहार जो है, वह सागारिक पिण्ड है, इस सागारिक
पिण्डको इसलिये वर्जित कहा है, कि यह सदीय होता है । जैसे कहा है—
“तिथयरपडिक्कुठो ” इत्यादि ।

साग्यातरपिण्डका लेना तीर्थकरोने निषिद्ध किया है अतः जो

अविदुः फाल्गुगदम्ब ” इत्यादि—

आ गाथाओंको अर्थ स्पष्ट है अगर (दीप) की उज्ज्वलता के डाय के
तेने आहार के छे ते सागार के सागारिक के तेने शम्भातर के छेवर्मा
आवेक के ने साधुके ने अविमुक्तिया घरमा आशय दीपा के ते घरना
आकारने शम्भातर पिण्ड अथवा सागारिक पिण्ड के छे ते सागारिक पिण्डो
निषेध करवाने कारण के छे ते सदीय डाय के अर्थ पण के छे—
“तिथयरपडिक्कुठो ” इत्यादि—
शम्भातर अथवा अश्विनो दीप अश्विनो निषेध करो के, तेदी के साधु

ગ્રાહ્યઃ અથ તં સાધુ ગૃહીયાત, તદા તીર્થકૃતામાજ્ઞા વિરાધિતા ભવેત્ । શય્યા-
તરસ્ય ગૃહે નિવાસવગ્નાત્ત્વમૈશ્વમજ્ઞાતં ન મવતીતિ તદ્વજ્ઞાતત્વં સ્વરૂપતયા ન શુદ્ધ્યેત્ ।
તથા-પ્રત્યાસન્નતયા ભૈક્ષપાનાદિનિમિત્ત શ્રૂયોભૂયસ્તદ્ગૃહે પ્રવિગતઃ સાધોરુદ્ગ-
મોઽપિ ન શુદ્ધ્યેત્ । તથા-સાધોઃ અવિમુક્તિઃ=લોભો ભવેત્=સ્વાધ્યાયશ્રવણાદિના
આવર્જિતઃ શય્યાતમે દધિદુગ્ધાદિકં પ્રણીતં દ્રવ્યં માધવે દદ્યાત્ । સાધુશ્ચ તદગ્ર-
હણલોલુપતયા તદ્ગૃહે ન પરિત્યજેદિતિ । તથા-અલાઘવતા-પ્રચુરવિશિષ્ટાન્નપા-
નાદિ લાભેન શરીરાલાઘવતા પ્રચુરવસ્ત્રાદિલાભેન ઉપાકરણાલાઘવતા ચ ભવેત્ ।
તથા-દુર્લભશય્યા-“યેન ક્લિલ શય્યા દીયતે, તેન આહારાદ્યપિ દેયમ્”-ઇતિ
મયાદ્ ગૃહિણઃ શય્યા ન પ્રયચ્છેયુઃ, તતશ્ચ સાધુનાં દુર્લભા શય્યા ભવેત્ । इत्थ

સાધુ હસે લેતા હૈ, વહ તીર્થ કરોકી આજ્ઞાકા વિરાધક હોતા હૈ ૧, દૂમરા
શય્યાતરકે ગૃહમેં નિવાસકે વશસે ડસઝા ભૈક્ષ અજ્ઞાત નહીં રહતા હૈ,
અતઃ ડસકી અજ્ઞાતતા સ્વરૂપસે શુદ્ધ નહીં હોતીહૈ ૨, તીસરે ડસકે પ્રત્યા-
સન્ન (સમીપ)હોનેસે ભૈક્ષ પાન આદિકે નિમિત્ત વાર ૨ ડસકે ઘરમેં પ્રવેશ
કરનેવાલે સાધુકા ઉદ્ગમ દોષમી શુદ્ધ નહીં હોતાહૈ ૩, ચોથે સાધુકો એસા
લોભ મી હો જાતા હૈ, કિ સ્વાધ્યાય શ્રવણ આદિસે આકૃષ્ટ હુઆ
શય્યાતર મેરે લિયે પ્રણીત પુષ્ટિકર દહિ દુગ્ધ આદિ દ્રવ્ય દેગા । હસ
પ્રકારકે લોભસે આકૃષ્ટ હુઆ સાધુ ડસકે ઘરકો નહીં છોડતા હૈ,
પ્રચુર વિશિષ્ટ અન્ન પાન આદિકે લાભસે ડસકે શરીરમેં અલાઘવતા
એવં પ્રચુર વસ્ત્રાદિકે લાભસે ઉપકરણ નમ્બવધી અલાઘવતા હો સકતી
હૈ ૪, તથા-દુર્લભશય્યા-“જો શય્યા સ્થાન દેતા હૈ, વહ આહાર આદિ

તેને લે છે, તે તીર્થ કરોની આજ્ઞાને વિરાધક બને છે. વળી શય્યાતરના
ઘરમા નિવાસને લીધે તેનો ભૈક્ષ (ભોજનની સામગ્રી) અજ્ઞાત રહેતો નથી,
તેથી તેની અજ્ઞાતતા સ્વરૂપની અપેક્ષાએ શુદ્ધ હોતી નથી વળી તેની સમી-
પમાં જ રહેલા હોવાને કારણે આહારપાણી આદિને માટે વારવાર તેના ઘરમાં
પ્રવેશ કરનાર સાધુનો ઉદ્ગમ પણ શુદ્ધ હોતો નથી વળી સાધુના મનમાં
એવો લોભ થાય છે કે સ્વાધ્યાય શ્રવણ અદિ દ્વારા મારી તરફ આકર્ષિત
થયેલો શય્યાતર મારે માટે ધી, દૂધ, અદિ પુષ્ટિકર દ્રવ્યો આપશે. આ
પ્રકારના લોભથી યુક્ત થયેલો સાધુ તેનું ઘર છોડતો નથી પ્રચુર અન્ન
આદિના લાભથી તેના શરીરમાં અલાઘવતા આવી જાય છે અને પ્રચુર
વસ્ત્રાદિના લાભથી ઉપકરણ સંબંધી અલાઘવતા આવી જવાનો સંભવ રહે છે
તથા “દુર્લભશય્યા” “જે શય્યાસ્થાન દે છે તે આહારાદિ પણ દેશે,”

અર્થાત્તરાત્ પિઠદાને શાળાયા એન બ્યુચ્છેદો મથેદિતિ । તથા-અર્થાત્તરાત્ ત્વ
ક્ષારઙ્ગલશ્ચય્યાસસ્તારપીઠફલયાદીનાં મોષધિક્તય દ્વૈતસ્ય પાદાને નાસ્તિ
દોષ इति ૪। તથા-રાજપિઠ-રાત્રઃ પિઠો રાત્રપિઠસ્ત સુજ્ઞાનઃ । રાત્રાસ્તિ
ચક્રવર્તિચમદેવયાસુદેવાદિ શુદ્ધતે । તદર્થ નિષ્પન્ન પિઠ સુજ્ઞાનઃ ૫। ણૈવ
‘સરોકૈઃ વધમિ કારણૈઃ સાધકો દુર્માયધિવાદો મવન્તીતિ ॥ ૬૦ ૩ ॥

રાત્રોપચિત્તરાત્ સમ્પતિ રામાન્ત પુર્યાધિત્ય મૃગમાહ—

મૂલમ્-પચર્હિ ઠાળેર્હિ સમણે ણિમ્મથે રાપતંતરમણુપધિ
મ્મમાણે નાદિક્કમદ્, ત જહા નગરે સિયા સઘ્ઘો સમતા ગુત્ત

મી દેવા ’ હસ મગસે ગૃહસ્થજન શાળ્યા મી નહોં દેસે અતઃ સાધુજનોંકો
શાળ્યા ફુલમ્મ હો સક્કમી ઈ, હસ મગાર શાળ્યાત્તરસે પિઠકે છેનેમે
શાળ્યાહીકા બ્યુચ્છેદ દો સક્કતા હૈ, શાળ્યાત્તરસે ત્વળ, ક્ષાર ઢગલ (૧)
શાળ્યા સંસ્તાર, પીઠફલક એવ સોપધિક (વન્ન પાપ્ર આદિ
ઉપકરણ સદિત) શિષ્પ કે છેને મેં (૧) કોઈ દોષ
નહોં હૈ । રાજપિઠમેં રાજગદમ્ ચામ્વર્તી, પલદેવ ઓર વાસુદેવ આદિ
શુદ્ધિત હુવ હૈ । इनके लिये निष्पन्न हुए पिण्डको जो छेता है-उसे
अपने आहारके उपयोगमें लाताहै, यह राजपिण्ड भोक्ता है, इस प्रकार
हस्तकर्म करनेवाला, मैथुनका प्रतिसेवन करनेवाला, राजभोजन
करनेवाला, सागारिक पिण्डका भोजन करनेवाला, और राजपिण्डका
भोजन करनेवाला साधुजन हुए प्रायश्चित्तके योग्य होते हैं ॥ ६० ३ ॥

આ પ્રકારની બવના સાધુ સેવકા મઠિ, તેા ચુકરથ દ્વારા સંધ્યાસ્થાન કેવાત
પણ બંધ મધ બલ, આ રીતે સાધુઓને માટે સંધ્યાસ્થાન પણ ફુલલ મધ
બલ આ રીતે સંધ્યાવરની પાસેથી પિંડ લેવામા સંધ્યાનો જ બુચ્છેદ થવાનો
અમ વહે છે સંધ્યાવર પાસેથી તુલ્ય ક્ષાર, સંધ્યાસસ્તાર, પીંડ, દેવક અને
સોપધિક (વન્ન પાપ્ર આદિ ઉપધિ કાથે) શિષ્પ લેવામાં કેઇ દોષ થતો નથી.

રાજપિંડ એન્સે શબ્દને માટે તેવાર થયેલ આકાર રાજપિંડ શબ્દ
શબ્દ કરવામાં પણ સાધુને દોષ લાગે છે । ૧ આ પદથી બહી ચકવર્તી
જળદેવ, વાસુદેવ આદિ શુદ્ધિત થયેલ છે

આ રીતે હસ્તક્રમ કરનાર મૈથુનનુ પ્રતિસેવન કરનાર, રાત્રિભોજન
કરનાર સાગારિક પિંડનો આકાર કરનાર અને રાજપિંડનો આકાર કરનાર
સાધુ શુદ્ધ પ્રાયશ્ચિત્તને પાત્ર બને છે ॥ ૬૦ ૩ ॥

ગુત્તદુઆરે, વહવે સમણમાહણા ણો સંચાણંતિ ભત્તાણવા પાણાણ
વા નિક્ખમિત્તણ વા પવિસિત્તણ વા, તેસિં વિન્નવણદ્વયાણ રાયંતે-
ઝરમણુપવિસિજ્ઞા ૧, પાઠિહારિયં વા પીઠફલગસેઝ્ઞાસંથારગં
પત્તપ્પિણમાણે રાયંતેઝરમણુપવિસિજ્ઞા ૨, હ્યસ્સ વા ગયસ્સ વા
દુદ્ધસ્સ આગચ્છમાણસ્સ મીણ રાયંતેઝરમણુપવિસિજ્ઞા ૩, પરાવ
ણં સહસા વા વલસા વા વાહાણ ગહાય અંતેઝરમણુપવેસેઝ્ઞા
૪, વહિયા વ ણં આરામગયં વા ઉઝ્ઞાણગયં વા રાયંતેઝરજણો
સવ્વઓ સમંતા સંપરિક્ખવિત્તા ણં નિવેસિજ્ઞા ૫। ઇચ્છેણહિં
પંચહિં ઠાણેહિં સમણે ણિગ્ગંથે જાવ ણાઙ્કમઙ્ક ॥ સૂ૦ ૪ ॥

છાયા—પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ શ્રમણો નિર્ગ્રન્થો રાજાન્તઃપુરમનુપવિશન્ નાતિ-
ક્રામતિ, તથા—નગરં સ્યાત્ સર્વતઃ સમન્તાદ્ ગુપ્તં ગુપ્તદ્વારમ્, વહવઃ શ્રમણમાહના
નો શક્તુવન્તિ ભક્તાય વા પાનાય વા નિષ્ક્રમિતું વા પ્રવેષ્ટું વા, તેપાં વિજ્ઞાપના-
ર્થાય રાજાન્તઃપુરમનુપવિશેત્ ૧, પ્રાતિહારિકં વા પીઠફલકશય્યાસંસ્તારકં
પ્રત્યર્પયન્ રાજાન્તઃપુરમનુપવિશેત્ ૨, હયાદ વા ગજાદ વા દુષ્ટાત્ આગ-
ચ્છતો મીતો રાજાન્તઃપુરમનુપવિશેત્ ૩, પરાંવાં ચલુ સહસા વા વલેન વા વાહૌ
ગૃહીત્વા અન્તઃપુરમનુપ્રવેશયેત્ ૪, વહિર્વાં ચલુ આરામગતં વા ઉદ્યાનગતં વા
રાજાન્તઃપુરજનઃ સર્વતઃ સમન્તાત્ સંપરિક્ષિપ્ય ચલુ નિવેશયેત્ ૫. ઇત્યેતૈઃ પશ્ચમિઃ
સ્થાનૈઃ શ્રમણો નિર્ગ્રન્થો યાત્ નાતિક્રામતિ ॥ સૂ૦ ૪॥

ટીકા—‘પંચહિં ઠાણેહિં’ ઇત્યાદિ—

પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ કારણૈઃ શ્રમણો નિર્ગ્રન્થો રાજાન્તઃપુરં અનુપવિશન્ નાતિ-
ક્રામતિ=તીર્થકૃતામ્ આજ્ઞાયા ઉલ્લઙ્ઘનો ન ભવતિ, તાન્યેવ સ્થાનાનિ પ્રાહ-તથા—

રાજાકે અધિકારકો લેકર અવ સૂત્રકાર રાજાકે અન્તઃપુરકો આ-
શ્રિત કરકે સૂત્ર કહતેહે—‘પંચહિં ઠાણેહિં સમણે ણિગ્ગંથે’ ઇત્યાદિસૂત્ર ૪॥

ટીકાર્થ—પાંચ કારણોંકો લેકર રાજાકે અન્તઃપુરમેં પ્રવેશ કરતા હુઆ
મુનિજન તીર્થ કરોંકી આજ્ઞાકા ઉલ્લઙ્ઘન કરનેવાલા નહીં હોતાહે, વે પાંચ

આગલા સૂત્રમાં રાજાનો ઉલ્લેખ થયો છે આ સંબંધને લીધે સૂત્રકાર
હવે રાજાના અન્તઃપુર વિષેના સૂત્રનુ કથન કરે છે

ટીકાર્થ—“પંચહિં ઠાણેહિં સમણે ણિગ્ગંથે” ઇત્યાદિ—

નીચે દર્શાવવામાં આવેલાં પાંચ કારણોને લીધે રાજાના અન્તઃપુરમાં

नगर सर्वः। समतात्=१५ त्रिविधु गुप्त=रक्षित प्राकारपरिवेष्टितत्वोत्, गुप्तद्वारम्-गुपानि=पिहितानि द्वाराणि यस्य तद्यथा स्यात्=मचेत्, ततश्च किम्? इत्याह-तेन हेतुना बहवः भ्रमणमाहना भ्राम्यन्ति=तपस्यन्तीति भ्रमणाः, 'माहन्या' मा मास्य इत्युपदेशपरा माहनाः, भ्रमणाश्च माहनाश्चेति कर्मभारयः, उत्तरगुणमूळ गुणयुक्ता सक्षता इत्यर्थः, अथवा-भ्रमणाः=श्रापयाः माहनाः=यासनाः, भक्ताय वा पानाय वा निर्गन्तु नगराद्विर्गन्तुं वा मचेष्टु वा नो शक्नुवन्ति, तदा तेषां=भ्रमण माहनानां विद्यापनापौय=अथ पुरस्यस्य राज्ञः प्रमाणश्रुतराज्ञया वा सन्निधौ प्रयोजन विद्यापयितुं रोमान्त पुरम् अनुमयिष्येत् । इति प्रथम स्थानम् १। वा=अथवा साधुः प्राविहारिकं पतिद्विषते=प्रयोजनवशादानीय पुनरर्प्यते यच्चत्प्रातिहारिकं पुनः

कारण इस प्रकारसे हैं, जिसे—कोई नगर प्राकारसे परिवेष्टित होनेसे
 घुस हो, रक्षित हो, घुसदारवाला हो—जिसके दरवाजे बन्द हो रहे हों
 ऐसा हो, अतः अनेक अमणमाहण-उत्तरगुण मूलगुण युक्त संपत
 अथवा—अमण-शाक्य और माहण व्याका उपदेश देनेवाला आहार
 पानके लिये नगरसे बाहर जानेके लिये या इसमें प्रवेश करनेके लिये
 समर्थ न हो रहे हों तो ऐसी स्थितिमें उन अमण माहनोंकी इस प्रका
 रकी खबर देनेके लिये—अन्तःपुरमें स्थित राजाके पास अथवा प्रमाण
 मृत रानीके पास उनके प्रयोजनको प्रकट करनेके लिये—अमण निर्ग्रन्थ
 राजाके अन्तःपुरमें प्रवेश कर सकता है १। ऐसा यह प्रथम कारण है,
 द्वितीय कारण ऐसा है, कि प्रातिहारिक प्रयोजनवश लाकरके देनेके

પ્રવેશ કરતો સમય નિર્મલ ટીક કરાની આગાનો વિશાલ જનતા નથી
 હાથ નગર હાટથી ઘેરાયેલું હોવાને લીધે શુભ હોય, રક્ષિત હોય, શુભ
 દ્વારવાળું હોય એટલે કે એના દરવાજા બંધ કરી દેવામાં આવ્યા હોય, અને
 તે કારણે એવી પરિસ્થિતિ પેદા થઈ હોય કે અનેક સમય અને માહણ્ય
 (ઉત્તરગુણ મૂલગુણ) મુક્ત સમત અથવા સમય એટલે શાક્ય મુનિએ
 અને માહણ્ય એટલે દેવાનો ઉપદેશ આપનારા સાધુઓ) આદાર પાતની
 પ્રતિ માટે નગરની બહાર પણ જઈ શકતા ન હોય અને બહારથી નગરની
 બહાર પ્રવેશ પણ કરી શકતા ન હોય તો આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં તે
 સમય માહણ્યની તે પ્રકારની સ્થિતિનું શબ્દ પાસે નિવેદન કરવા માટે અથવા
 પ્રમાણભૂત રાજીની પાસે તેમના પ્રયોજનને પ્રકટ કરવા માટે હાથ પણ સમય
 નિર્મલ રાજના અત્યુરમાં પ્રવેશ કરે, તો તે બિનાસનો વિશાલ જણાતો નથી

સમર્પણીયં પીઠફલકશય્યાસંસ્તારકં-તત્ર પીઠં=ચતુષ્કિકાદિકમ્, ફલકઃ=પટ્ટાદિકઃ, શય્યા=શરીરપ્રમાણા, સંસ્તારકઃ=અર્ધતૃતીયદ્વસ્તપ્રમાણઃ, પીઠાદીનાં દ્વન્દ્વ એકવદ્વાવથ, તત્ પ્રત્યર્પયન્=પ્રત્યર્પયિતુકામો રાજાન્તઃપુરમનુપ્રવિશેત્ । પીઠાદીનાં પ્રત્યર્પણં તદાનયન વિના નોપપદ્યતે, અતસ્તદાનયનાર્થમપિ સાધુના મન્તઃપુરપ્રવેશો ન તીર્થકૃદાજ્ઞાવિરાધકો ભવતીતિ बोध्यम् । इति द्वितीयम् २। તથા આગચ્છતો દુષ્ટાત્=ઉન્મત્તાદ્ હયાદ્ વા ગજાદ્ વા ભીતઃ સાધુ રાજાન્તઃ-પુરમ્ અનુપ્રવિશેત્-इति तृतीयं स्थानम् ३। तथा-परः-स्वातिरिक्तः कश्चिज्जनः तस्करादिशङ्कया सहसा=अकस्मान् बलेन=बलपूर्वकं बाहौ गृहीत्वा राजान्तः-पुरम् अनुप्रवेशयेत् इति चतुर्थं स्थानम् ४। तथा-वह्निः=नगराद् वह्निः आरा-

યોગ્ય એસે જો પીઠ, ફલક શય્યા, સંસ્તારક હૈ, ઉન્હે વાપિસ કરનેકી હચ્છાવાલા મુનિજન અન્તઃપુરમેં પ્રવેશ કર સકના હૈ ૨। ચૌકી આદિકા નામ પીઠ હૈ, પટ્ટ આદિકા નામ ફલક હૈ, શરીર પ્રમાણ શય્યા હોતી હૈ, ઓર અઢાઈ હાથ પ્રમાણ સંસ્તારક હોતાહૈ, પીઠાદિકોંકા પ્રત્યર્પણ ઉન્હેં લાયે વિના તો હોતા નહીં હૈ, અતઃ ઇન્હેં લેનેકે લિયે બી સાધુકા અન્તઃપુરમેં પ્રવેશ કરના તીર્થકરકી આજ્ઞાકા વિરાધક નહીં હોતા હૈ, હસ પ્રકારકા યહ દ્વિતીય સ્થાન હૈ, તૃતીય સ્થાન હસ પ્રકારસે હૈ, યદિ કોઈ દુષ્ટ ઉન્મત્ત-હય-ઘોડા અથવા-ગજ આ રહા હો તો ડસસે હરા હુઆ સાધુ રાજાકે અન્તઃપુરમેં પ્રવેશ કર સકનાહૈ, એસા યહ તૃતીય કારણ હૈ, ચૌથા કારણ એસા હૈ, કિ કોઈ મનુષ્ય તસ્કરાદિકી શઙ્કાસે જવ-

(૨) પીઠ, ફલક, શય્યા, સંસ્તારક આદિ જે ચીજો લાભ્યા હોય તે પાછી સે પવાને માટે પણ સાધુ રાજાના અન્તપુરમાં પ્રવેશ કરી શકે છે. ચૌકી (ખાલેક) આદિને ' પીઠ ' કહે છે, પટ્ટ આદિને ' ફલક ' કહે છે. શરીરપ્રમાણ શય્યા હોય છે અને અઢી હાથપ્રમાણ સંસ્તારક હોય છે પીઠ આદિ પહેલાં લાભ્યા હોય તો જ પાછું આપવાનો પ્રશ્ન ઊભો થાય છે, તેથી પ્રયોજનવશ પીઠ, ફલક આદિ લેવા માટે રાજાના અન્તપુરમાં પ્રવેશ કરનાર સાધુ પણ જિનાશાનો વિરાધક ગણાતો નથી

ત્રીજું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—કોઈ મુનિ શિક્ષાયર્થા આદિ કારણે નીકળ્યા હોય, ત્યારે કોઈ ઉન્મત્ત ઘોડા હાથી આદિ માગે ઉપર દોડી રહ્યા હોય, તો તેનાથી બચવા માટે તે સાધુ રાજાના અન્તપુરમાં પ્રવેશ કરે, તો જિનાશાનો વિરાધક ગણાતો નથી.

ચોથું કારણ—કોઈ અમલદાર અથવા માણસ તેને ચોર માની લઇને

मगतम्-आरामः-विविधपुष्पजात्युपशोभितः स्थानविशेषः, सप्त गत=स्थितं, वा=अथवा उद्यानगतम्-उद्यानम्-पुष्पफलोपेतवृक्षयुक्त स्थान, सप्त गत साधु कौतूहलादिवशात् राजान्तःपुरमनः सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिग्भ्यः सम्परिसिष्य=उत्पाप्य स्वच्छ राजान्तःपुरं निवेशयेत् । इति पञ्चम स्थानम् ५। निगमयन्नाह-इत्येतेः पूर्वोक्ते पञ्चमि स्थाने राजान्तःपुरमनुमन्त्रिभ्यः भ्रमणो निर्ग्रन्थो नाठिकामन्त्रि तीर्थरुदाश्रया विरापको न भवतीति ॥ सू० ४॥

अन्तःपुराधिकारात् सम्प्रति स्त्रीमत क्रियाविशेषमाह—

मूकम्-पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं असवसमाणीवि गवमं धरेज्जा, त जहा-इत्थी दुव्वियडा दुव्विसण्णा सुक्कपोग्गले अधिद्विज्जा १, सुक्कपोग्गलससिडेव सेव्वरथे असोजोणीद अणुपवि सेज्जा २, सय वा सा सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा ३, परोष से

दस्ती अकस्मात् हाथोंको पकड़कर राजाके अन्तःपुरमें डाल देता है, तो ऐसी स्थितिमें वह साधु तीर्थकरकी आज्ञाका विरापक नहीं होता है, अथवा-नगरसे बाहर उद्यानमें स्थित हुए साधुको विविध पुष्पजातिसे उपशोभित स्थान विशेषमें स्थित मुनिको-अथवा उद्यानमें-पुष्पफलसे सुशोभित वृक्षोंसे युक्त स्थानमें-स्थित मुनिको योंही कौतूहल आदिके वशासे राजाके अन्तःपुरका जन कबा ठाकर उसमें रख दे तो ऐसी स्थितिमें वह साधु तीर्थकरकी आज्ञाका विरापक नहीं होता है। इस तरहके इन पाँच कारणोंसे राजाके अन्तःपुरमें प्रविष्ट हुआ मुनिजन तीर्थकरकी आज्ञाका विरापक नहीं होता है ॥ सू० ४ ॥

पराव्हे पड्ढिने तेने अ.त.पुरमा राजान्नी समसु जडा करे, ते जे परिस्थितिमा पवु ते साधु जिनाशाने विरापक जवुतो नथी

पाँचवुं कारण—नगरनी नकास उद्यान आदि स्थानमा विविध पुष्पवृक्ष सुशोभित स्थानविशेषमा रहैवा केहि मुनिने अ.त.पुरमे केहि भावसु डेरु कइथी प्रसङ्गने अ.त.पुरमा उपाधिने लई जव ते जेथी परिस्थितिमा पवु ते साधु जिनेअर जमजाननी आशाने विरापक जवुतो नथी. आ प्रसारना भाँय करवुआमा केहि पवु करवु राजाना अ.त.पुरमा प्रवेश करवाए मुनि दीमं करनी आशाने विरापक जवुतो नथी ॥ सू० ४ ॥

સુક્રગોગલે અણુપવેસેજા ૪, સીઓદગવિયડેણ વાં સે આયમ-
માળીણ સુક્રપોગલા અણુપવેસેજા ૫! એન્નેઈં પંચઈં ઠાળેઈં
જાવ ધરેજા ॥ સૂ ૦ ૫ ॥

છાયા—પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ સ્ત્રી પુરુષેણ સાર્દ્ધમ્ અસંવસન્તી અપિ ગર્ભં ધરેત્,
તથા—સ્ત્રી દુર્વિવૃત્તા દુર્નિષ્ણા શુક્રપુદ્ગલાન્ અધિતિષ્ઠેત્ ૧, શુક્ર પુદ્ગલસસ્ટ્વં વા
તસ્યા વસ્ત્રમ્ અન્તર્યોનો અનુપવિશેત્ ૨, સય વા સા શુક્રપુદ્ગલાન્ અનુપવેશયેત્
૩, પરોમા તસ્યાઃ શુક્રપુદ્ગલાન્ અનુપવેશયેત્ ૪, શીતોદકવિકટેન વા તસ્યા
આચામન્ત્યાઃ શુક્રપુદ્ગલા અનુપવિશેયુઃ ૫। इत्येतैः पश्चमिः स्थानै र्यावद् धरेत्॥મૂ ૦ ૫॥

ટીકા—પંચઈં ઠાળેઈં ' ઇત્યાદિ—

વશ્યમાનૈઃ પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ=કારણૈઃ સ્ત્રી પુરુષેણ સાર્દ્ધમ્ અસંવસન્તો અપિ=
પુરુષસંગતાઽપિ ગર્ભં ધરેત્=ચતું શક્નુયાત્ । તાન્વેચ સ્થાનાન્યાદ-તથા—સ્ત્રી
દુર્વિવૃત્તા=પિષ્ટતા=વિગતાવરણા, દુઃકુવિવૃત્તા, દુર્વિવૃત્તા-વિવૃત્તાત્વં તૂતરીયાપરિધા-
નેનાપિ સંમવતીતિ દુરિતિ વિશેષણમુક્ત, તેન સર્વથા નગ્નેત્યર્થઃ । एतादृशो सती
दुर्निषण्णा=दुष्ट निषण्णा=उपविष्टा=वैरूप्येणोपविष्टेत्यर्थः एवंभूता सती शुकपुद्ग-
लान्=कथंचित् पुरुषनिष्ठान् वीर्यपुद्गलान् अधितिष्ठेत्=योन्याकथंचिदाकृष्य
સંપૃક્ષીયાત્ । इति प्रथमं स्थानम् । तथा-शुकपुद्गलसंसृष्टं=कथंचित्शुकपुद्गलयुक्तं

અન્તઃપુરકે અધિકારસેહી અવ સૂત્રકાર સ્ત્રીગત ક્રિયા વિશેષકા
કથન કરતે હૈં—પંચઈં ઠાળેઈં ઇત્યી પુરિસેણ સાર્દ્ધ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૫ ॥

ટીકાર્થ-પાંચ કારણોસે પુરુષકે માથ નહીં રહતી હુઈં બી પુરુષકે સાથ
સંગમ નહીં કરતી હુઈં બી સ્ત્રી ગર્ભવતી હો સકતી હૈ, વે પાંચ કારણ
હસ પ્રકારસે હૈં—કોઈ સ્ત્રી બિલકુલ નગ્નાવસ્થામે યોનિકો પ્રસાર કર
હસ સ્થાન પર યદિ બેઠ જાતી હૈ, કિ જહાં પર પુરુષકા વીર્ય પહિલેસે
નિકલા હુઆ પડા હો તો એસી સ્થિતિમે વહ અપની યોનિ દ્વારા કિસી
તરહસે હન વીર્ય પુદ્ગલોંકો સ્વીંચકર હસકે ખીતર લેજાકર ગર્ભ ધારણ

અન્તઃપુરના અધિકારની સાથે સુમ્નગત એવો સ્ત્રીગત ક્રિયાવિશેષોનો
અધિકાર આપવામાં આવે છે—“ પંચઈં ઠાળેઈં ઇત્યી પુરિસેણ સાર્દ્ધ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—પુરુષની સાથે સંલોગન કરવા છતાં પણ નીચેના પાંચ કારણોને લીધે
સ્ત્રી ગર્ભવતી બની શકે છે—(૧) કોઈ સ્ત્રી મિલકુલ નગ્નાવસ્થામાં યોનિને
પ્રસારીને એવા સ્થાન પર ગેસે કે જ્યાં પુરુષનું વીર્ય પહેલેથી જ પડેલું હોય,
તો એવી પરિસ્થિતિમાં તે પોતાની યોનિ દ્વારા કોઈ પણ રીતે તે વીર્ય પુદ્ગલોને
એ સ્ત્રીને તેની અંદર દાખલ કરી દેવાથી ગર્ભ ધારણ કરી શકે છે.

પણ તસ્યા સ્ત્રિયા અન્તર્યોનો=યોનિમધ્યે અનુપવિશેત । ૩૬ વક્ષમિત્યુપલક્ષણ, તેન અન્યદપિ તથાચિષ્ કેશાદિક વાચ્યત્ । યથા કેશિમાત્રા રોગવિશેષનિવારણાર્યે રક્તનિરોધનાયર્થેષા અગ્રાતશુક્રપુદ્ગલસંયોગા કેશા યાનો બદ્ધાસ્તસ્થ એષ ગર્ભો જાત । સમ્પાદ્ ગર્ભાત્ કેશિહનિરુપ્પન્ન ઇતિ । ઇતિ દ્વિતીય સ્થાનમ્ । તથા-સા સ્ત્રી સ્વયં પુનઃકામનયા શુક્રપુદ્ગલાન્ અન્તર્યોનો પ્રવેશયત્ । અર્થ ગાથ-શીઠ રક્તમાર્પિનોત્તાન્ વરપુરુષસંગમમનાકારુપન્તી કાષિત્ પુષ્કામા સ્ત્રી શુક્રપુદ્ગલાન્ સ્વયમેવ યાનિમધ્યે પ્રવેશયેદિતિ । ઇતિ તૃતીય સ્થાનમ્ । તથા-પરઃ=સ્થાતિરિક્તઃ

કર સકના છે, એસાં યહ પ્રથમ કારણ છે, દ્વિતીય કારણ એસા છે, કિ પુરુષકે ધીર્યસે મીલા જુઝા વક્ષ્ય યદિ સ્ત્રીકી યોનિકે ખીતર ઘોસ દિયા જાતા છે તો ડસસે ખી વહ ગર્ભ ધારણ કર સક્તી છે, યહાં “વક્ષ્ય” યહ ઉપલબ્ધનરૂપ છે, હમસે યહ ખી ગ્રહણ કા છેના બાદિયે કિ પુરુષકે ધીર્યસે મીલે યદિ લિજ્જાદિકે ઝપરકે થાલ આદિ હોં ઓર વે વક્ષ્યાદિમેં ધાંધકર યોનિકે ઝપર ધાંધ લિયે જાવે તો હસ સ્થિતિમેં ખી સ્ત્રીકો ગર્ભ રહ સક્તા છે, જૈસે-કેશીકી માતાને રોગ વિશેષકો દૂર કરનેકે લિયે યા રક્તકા નિરોધન કરને અદિકે લિયે શુક્ર પુદ્ગલ સંયોગવાલે કેશોંકો યોનિકે ઝપર ધાંધ લિયા થા, સો ડસીસે ડસકો ગર્ભ રહ ગયા થા, ઓર ડસ ગર્ભસે કેશિષ્રમણ સ્તપ્પન્ન હુપ થે, હસ પ્રકારકા યહ દ્વિતીય સ્થાન છે, તૃતીય કારણ એસા છે, કિ કોઈ પુષ્કી કામનાવાલી સ્ત્રી પુરુષકે પતિત ધીર્યકો યોનિકે ખીતર ધર છે તો એસી સ્થિતિસે ખી

બીજુ કારણ આ પ્રમાણે છે—જે પુરુષના બીચથી ખરડાયેલા વક્ષને કોઈ સ્ત્રી પોતાની યોનિમાં પ્રવેશાવે છે, તો તેના દ્વારા પણ તે સ્ત્રી ગર્ભ ધારણ કરી શકે છે જ્યાં વક્ષ તો ઉપલક્ષણ રૂપ છે જ્યાં જોવા પણ શકાય હવુ જોઈએ કે પુરુષના સિમ્તાદિની ઉપરના અને આસપાસના બીચથી ખરડાયેલા બાકને કોઈ વક્ષમાં બાંધીને યોનિની ઉપર બાંધી દેવામાં આવે, તો પણ સ્ત્રી ગર્ભ ધારણ કરે છે જેમકે કેશી અમલુની માતાએ શેત્રવિશેષને રૂર કરવા મટે અસવા રક્તસ્રાવ અગ્રાવવા માટે શુક્ર પુદ્ગલ (બીચ પુદ્ગલ) ના સંયોગવાળા કોથોને યોનિની ઉપર બાંધી દીધા હતા, અને તેના દ્વારા જ તેને ગર્ભ રહ્યો હતો, અને તે ગર્ભમાંથી કેશી અમલુ ઉત્પત્ત થયા હતા

બીજુ કારણ ત્રીજે પ્રમાણે છે—કોઈ પુત્રની કામનાવાળી સ્ત્રી કોઈ પુરુષના પતિત બીચને પોતાની યોનિમાં ઘાખત કરી દે, તો જોઈ પરિસ્થિતિમાં પણ તે સ્ત્રીને ગર્ભ રહી શકે છે આ કથનને

શ્વશ્રાદિજનઃ તસ્યા યોનો શુક્રપુદ્ગલાન્ અનુપ્રવેશયેત્ । इति चतुर्थं स्थानम् । तथा= શીતોદકવિકટેન-શીતોદકરૂપં યદ વિકટં=સમયપરિમાપયા જલં તેન આચામ-
ન્ત્યાઃ=શૌચં કર્તવ્યા, તસ્યાઃ સ્ત્રિયો યોનિમય્યે તજ્જલસ્થિતાઃ શુક્રપુદ્ગલા અનુ-
પ્રવિશેયુરિતિ પશ્ચમં સ્થાનમ્ । इत्येतैरुपरिनिर्दिष्टैः पञ्चभिः कारणैः स्त्री पुरुषासं-
गताऽपि गर्भं धरेदिति ॥ सू० ५ ॥

યૈઃ સ્થાનૈઃ પુરુષેણ સંગતાઽપિ સ્ત્રી ગર્ભં ન ધરેત્, તાનિ સ્થાનાનિ પ્રાહ—

મૂલમ્—પંચહિં ઠાણેહિં इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणा-

वि गवमं नो धरेज्जा, तं जहा-अप्पत्तजोव्वणा १, अइकंतजो-

વહ ગર્ભવતી હો સકતી હૈ, હસ તુનીય કારણકા ભાવ એસા હૈ, કિ
કોઈ શીલવતી સ્ત્રી અપને શીલકી તો રક્ષા કરના ચાહતી હૈ, ઓર
પુત્રકી અભિલાષાવાલી ભી વની હુઈ હૈ, તો વહ પર પુરુષકે સાથ સંગમ
નહીં કરતી હુઈ ભી યદિ શુક્ર પુદ્ગલોંકો અપને હાથસેહી અપની યો-
નિકે ભીતર રલ્લ લેની હૈ, તો એસી હાલતમેં વહ ગર્ભવતી હો સકતી હૈ,
ચતુર્થ કારણ હસ પ્રકારસેહૈ, યદિ ડસકી સાસ આદિ રૂપ સ્ત્રોજન ડસકી
યોનિમેં શુક્ર પુદ્ગલોંકો રલ્લ દેતી હૈ. તો હસસે ભી વહ ગર્ભવતી હો
સકતી હૈ, પાંચવાં કારણ એસા હૈ, કિ શૌચકો કરતે સમય ડસ સ્ત્રીકે
યોનિકે અન્દર પાની લેતે સમય ડસ જલમેં પતિત શુક્ર પુદ્ગલ યદિ
પ્રવિષ્ટ હો જાતે હેં, તો હસસે ભી વહ ગર્ભવતી હો સકતી હૈ, હસ તર-
હકે ડન નિર્દિષ્ટ પાંચ કારણોંસે સ્ત્રી પુરુષસે અસુક્ત હોતી હુઈ ભી ગર્ભ-
વતી હો સકતી હૈ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ભાવાર્થ એવો છે કે-કોઈ શીલવતી સ્ત્રી પુત્રની કામનાવાળી છે તે પોતાના
શીલનુ રક્ષણ કરવા માગતી હોવાથી પરપુરુષ સાથે અગ્રહનુ સેવન કરતી
નથી પણ કોઈ પુરુષના પતિત વીર્ય પુદ્ગલોને પોતાના હાથમાં લઇને પોતાની
યોનિમાં દાખલ કરી દે છે, આમ કરવાથી તે ગર્ભવતી થઈ શકે છે.

ચોથું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—જો તેની સાસુ આદિ કોઈ પશુ વ્યક્તિ
કોઈ પુરુષના શુક્ર પુદ્ગલોને તેની યોનિમાં નાખી દે તો પણ તે ગર્ભ
ધારણ કરી શકે છે

પાંચમું કારણ—જજ્ઞ ગયા આદિ પાણી લેતી વખતે જે જળને ઉપ-
યોગ કરવામાં આવે, તે જળમાં કોઈ પુરુષના શુક્ર પુદ્ગલો લળેલાં હોય,
તો તે શુક્ર પુદ્ગલો તે સ્ત્રીની યોનિમાં દાખલ થઈ જાય તો તે સ્ત્રી ગર્ભવતી
બની શકે છે. આ પ્રકારના પાંચ કારણોને લીધે પુરુષની સાથે મૈથુનસેવન
કયો વિના પણ સ્ત્રી ગર્ભવતી થઈ શકે છે ॥ સૂ. ૫ ॥

घणा २, जाइवहा ३, गेळशपुट्टा ४, दोमणसिया ५। इच्छेपहि पचहि ठाणेहि जाय नो धरेज्जा । पचहि ठाणेहि इत्थी पुरि सेण सद्धि सवसमाणी वि नो गळम धरेज्जा, त जहा—निचो उया १, अणोउया २, वावझसोया ३, वाविद्धसोया ४, अणग पडिसेवणी ५। इच्छेपहि पचहि ठाणेहि इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणीवि गळम नो धरेज्जा, त जहा—उउमि णो गिगा मसेविणी यावि भवइ १, समागया वा से सुळपोगळा पडि विद्धंसति २, उदिण्णे वा से पित्तसोणिण ३, पुरा वा देवक म्मणा ४, पुत्तफले वा नो निदिट्ठे भवइ ५। इच्छेपहि जाव नो धरेज्जा ॥ सू० ६ ॥

ध्याया—पञ्चमिः स्थानैः स्त्री पुरुषेण सार्द्धं सवसन्त्यपि गर्भं नो धरेत्, तद्यथा—ममाप्तपौत्रना १, भविकान्तपौत्रना २, भाविवन्त्या ३, ग्वायसृष्टा ४, वीर्मेनस्त्रिका ५। इत्यतैः पञ्चमिः स्थानैः यावद् नो धरेत् । पञ्चमिः स्थानैः स्त्री पुरुषेण सार्द्धं सवसन्त्यपि नो गर्भं धरेत्, तद्यथा—नित्यपुष्टा १, भद्रतुका २, ग्वायमज्ञोताः ३, गगविद्धसोता ४, अनज्जभविसेविनी ५। इत्यतैः पञ्चमिः स्थानैः स्त्री पुरुषेण सार्द्धं सवसन्त्यपि गर्भं नो धरेत् । पञ्चमिः स्थानैः स्त्री पुरुषेण सार्द्धं सवसन्त्यपि गर्भं नो धरेत्, तद्यथा—अतो ना निकामसेविनी चापि भवति १, समागता वा तस्याः शुक्रपुष्ट्याः पदिविषयस्यते २, उदीर्यं वा तस्याः पित्तक्षोभितम् ३, पुरा वा देवकर्मणा ४, पुत्रफलं वा नो निदिष्टं भवेत् ५। इत्यतैः यावद् नो धरेत् ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘पचहि ठाणेहि’ इत्यादि—

पञ्चमिः स्थानैः कारणैः स्त्री पुरुष संगमाऽपि गर्भं नो धरेत् । यषु स्थानेषु सप्तु गर्भं न धरेत् तानि स्थानानि याइ—तद्यथा—ममाप्तपौत्रना—न मातं पौत्रनं

अथ सूत्रकार उन पांच कारणोंको एक करते हैं, कि जिनसे पुरुष पत्ने संगत हुई भी स्त्री गर्भको धारण नहीं कर सकती है—

पुरुष-नी साथे सयोग करवा छन पण के पाय आस्येने बीम भी अम धारण करी शकती नहीं, ते आस्येने छे सूत्रकार एकट करे ते

यथा सा १, अतिक्रान्तयौवना=अतिक्रान्तं यौवनं यस्या. सा-गतयौवना २, जातिवन्ध्या-जातेः=जन्मत आरभ्य वन्ध्या=निर्वीजा, ३ ग्लान्यस्पृष्टा-ग्लान्येन=रोगेण स्पृष्टा=ग्रस्ता ४, तथा-दौर्मनस्यिका-दौर्मनस्यं=शोकादिकमस्ति यस्याः सा, “दौर्मनस्यता”-इति च्छायापक्षे तु दौर्मनस्यं संजातं यस्याः सा,-शोकादि संकुलेत्यर्थः ५, इत्येतैः पञ्चभिः स्थानैः स्त्री पुरुषसंगताऽपि गर्भं न धरेत् ।

‘पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं’ इत्यादि सूत्र ६ ।

टीकार्थ-पुरुषके साथ संगम करती हुई भी स्त्री इन पांच कारणोंसे गर्भवती नहीं हो सकती है-वे पांच कारण इस प्रकारसे हैं-यदि वह अप्राप्त यौव नवाली है, तो वह पुरुषके साथ रत होती हुई भी गर्भवती नहीं हो सकती है १। इसी तरहसे वह यदि गत यौवनवाली है, यौवनावस्थासे वह रहित हो चुकी है, तो ऐसी स्थितिमें भी वह पुरुष द्वारा भुक्त होती हुई भी गर्भवती नहीं हो सकती है २। तथा-यदि वह जातिसे जन्मसेही वन्ध्या है, निर्बीजा है, तो वह पुरुषसे रतिक्रिया करती हुई भी गर्भवती नहीं हो सकती है ३, यदि वह ग्लान्य स्पृष्टा है, रोगग्रस्त है, तो भी वह पुरुषके साथ संगम करती हुई भी गर्भवती नहीं हो सकती है ४, और यदि वह रतिक्रियामें रत होती हुई भी शोकादिसे युक्त मनवाली बनी रहती है-प्रसन्न चित्त नहीं रहती है, तब भी वह गर्भवती नहीं हो सकती है ५, अथवा-“दोमणसिया” की छाया-“दौर्मनस्यता” ऐसी भी होनी है, इस पक्षमें यदि वह शोक आदिसे युक्त

टीकार्थ-“पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं ”

पुरुषनी साथे सलोग करवा छतां पणु नीयेना
पांथ कारणुने दीधे अी गर्भं धारणु करी शकती नथी
(१) युवावस्थाभां आन्था पडेलां जे कोर्छ कन्या पुरुष साथे रतिक्रिया करे, तो ते गर्भवती थती नथी (२) जे अी यौवन व्यतीत करी चुकी छे, ओटले के प्रौढा अथवा वृद्धा जनी चुकी छे, ते पुरुष साथे सलोग करवा छतां पणु गर्भं धारणु करी शकती नथी (३) जे कोर्छ अी जन्मथी ज वन्ध्या (निर्बीजा) होय, तो पुरुष साथे रतिक्रिया करवा छता पणु गर्भवती जनी शकती नथी, (४) जे ते रोगग्रस्त होय, तो पणु पुरुषनी साथे सलोग करवा छतां गर्भवती जनी शकती नथी (५) पुरुषनी साथे रतिक्रिया करवा छतां पणु जे अी शोकाकुल होय ओटले के प्रसन्नचित्त न होय, तो गर्भवती जनी शकती नथी. “दो मणसिया” आ पदनी संस्कृत छाया “दौर्मनस्यता” लेवाभां

અવાપ્તેઽવાન્તરમુપદ્યયદગપિ ઉપક્રમોપસારાનાકયમેવ વ્યાખ્યેયમ્ । તમ પ્રથમા
 ચાતરમુત્રોક્તાનિ પચ્ચસ્થાનાન્યતાનિ, તથાદિ-નિત્યર્થુકા-નિત્ય-સર્વદા ન તુ
 વિનયમે । આદુ = રક્તપદ્ધતિરૂપો યસ્યાઃ સા ૧, તથા-અનુતુકા-ન વિષયે ક્રતુ
 યસ્યા સા ૨ । તથા-વ્યાપન્નસ્રોતાઃ-વ્યાપન્ન-રોગાદિના પ્રતિરૂપ સ્રોતાઃ=ગર્ભા
 અવધિજ્ઞ યસ્યાઃ સા ૩, તથા-વ્યાપન્નિદ્વસ્રોતા -વ્યાપન્નિદ્વ-રોગાદિના વ્યાપ્તત્વેન
 ઇરાદશક્તિરૂ સ્રોતો યસ્યા સા ૪, તથા-અનુપવિસેપિની મદ્-મૈથુનોપયોગિ

હૈ, તો બી ગર્ભવતી નહીં હો સકની હૈ એસા અર્થ હોતા હૈ, અત્ત હસ
 તરફકે હન પાંચ કારણોસે પુરુષકે સાથ સંગમ કરતી હુઈ બી છી
 ગર્ભ ધારણ નહીં કર સકતો હૈ વહ પ્રકા કિયા, અવ ઓર બી ગર્ભ
 ધારણ નહીં કરનેકે ઓ કારણ હૈ, સુષકાર વહે પ્રકટ કરતે હૈ,
 હનમે પ્રથમ કારણ નિત્યર્થુક હૈ, જિસકે ત્રીન દિન તકહી ક્રતુધર્મ
 નહીં રહતા હૈ-કિન્તુ સદાહી રજ પ્રવાહિત હોતા રહતા હૈ, એસી વહ
 છી ગર્ભવતી નહીં હો સકતી હૈ, તથા જો અનુતુક હૈ, ક્રતુધર્મસે રહિત
 હૈ, વહ બી ગર્ભવતી નહીં હો સકની હૈ, જો વ્યાપન્ન સ્રોતા હૈ, વહ બી
 ગર્ભવતી નહીં હો સકની હૈ, અર્થાત્ રોગાદિકસે જિસકે ગર્ભાશયકા
 છિદ્ર બન્દ હો ગયા હો પ્રતિહત હો ગયા હો એસી વહ છી બી ગર્ભ
 ધારણ કરનેમે અમમર્થે હોતી હૈ । જિસકા વાતવ્યાપિ આદિસે વ્યાપ્ત
 હોનેકે કારણ ગર્ભાશયકા છિદ્ર ગર્ભ ધારણ કરનેકી શક્તિસે રહિત
 કર દિયા ગયા હો એસી વહ બી છી ગર્ભ ધારણ નહીં કર સકની

આવે, તો તેનો અર્થ આ પ્રમાણે પણ થાય છે-એ તે યોગદિથી મુક્ત હોય
 તો પણ ગર્ભવતી બની શકતી નથી.

અહીં પ્રશ્ન ન કરી શકવાના બીજા પણ કેટલાક કારણો છે, તે સૂચ
 કર દેને પ્રકટ કરે છે-“ નિત્યર્થુક ” ને જીને મહિનામાં ત્રણ દિવસ સુધી જ
 રજઆવ થતો નથી, પણ કાયમ રજઆવ આવુ રહે છે તે જી ગર્ભવતી
 બની શકતી નથી (૨) અનુતુક ને જી ક્રતુધર્મથી રહિત હોય છે તેને
 પણ ગર્ભ રહી શકતો નથી (૩) “ વ્યાપન્નસ્રોતા ” યોગદિને કારણે જે
 જીના ગર્ભાશયનું છિદ્ર બંધ થઈ ગયું હોય છે, તે જી પણ ગર્ભ ધારણ
 કરી શકતી નથી. (૪) કોઈ વ્યાપિને કારણે (વાત વ્યાપિ આદિને કારણે)
 જેના ગર્ભાશયના છિદ્રને ગર્ભ ધારણ કરવાને અસમર્થ કરી નાખવામાં આવ્યું
 હોય, તે જી પણ ગર્ભ ધારણ કરી શકતી નથી (૫) ને જી મૈથુન સેવના

મુખ્યમંત્ર લિંગ મગધ, તન્નિવેષોડનં તેન આહાર્યલિંગાદિના મૈથુનં પ્રતિસેવતે
યા સા ૫। ઇમિઃ પશ્ચમિઃ કારણૈઃ પુરુષ સંગતાડપિ સ્ત્રી ગર્ભ ન દયાતીતિ । તથા-
ઋતૌ=આર્ત્તવકાલે નિકામસેવિની-નિકામં=વીર્યપાતાવધિ મૈથુન સેવતે યા સા
તથા નો ભવતિ । ઇતિ પ્રથમં સ્થાનમ્ । તથા-તસ્યા યોનૌ સમાગતા વીર્યપુદ્ગલાઃ
પ્રતિવિવ્રસન્તે=યોનિદોષાદ્ વિનષ્ટશક્તિકા ભવન્તિ । ઇતિ દ્વિતીયં સ્થાનમ્ ।
તથા-તસ્યાઃ પિત્તશોણિતં=પિત્તપ્રવાનં શોણિતમ્ ઉદીર્ણમ્=ઉદ્રત ભવેત્-ઉદીર્ણે
પિત્તશોણિતે વીજં ન પ્રરોહતીતિ ભાવઃ, ઇતિ તૃતીયં સ્થાનમ્ । પુરા=ગર્ભધારણાત્
પૂર્વં દેવકર્મણા-દેવકિપયા દેવતાનુભાવેન શત્રુપ્રધાતઃ સ્યાદિતિ શેષઃ, યદ્વા-

હૈ, તથા-જો મૈથુનસેવનકે અંગ યોનિ ઓર લિંગકે સિવાય અનન્નસે
લિંગકે સિવાય અનન્નસે-આહાર્ય (?) લિંગ આદિસે કામ સેવન કરતી
હૈ, એસી વહ મી સ્ત્રી ગર્ભ ધારણ નહી કર સકતી હૈ, તાત્પર્ય યહી હૈ,
કિ પુરુષ સંગત હુઈ મી સ્ત્રી ઇન પાંચ કારણોંકે કારણ ગર્ભવતી નહીં
હો સકતી હૈ, ગર્ભ ધારણ કરનેમેં વાધક ઓર મી કારણાન્તર હૈ, જો
ઇસ પ્રકારસે હૈ-ઇનમેં પ્રથમ કારણ વહ હૈ, જો વીર્યપાત હો જાનેકે
વાદ મી મૈથુન સેવા ક્રિયામેં રત રહતી હૈ ૧। તથા-યોનિમેં પતિત વીર્ય
પુદ્ગલ જિસકી યોનિકે દોષસે વિનષ્ટ શક્તિવાલે હો જાતે હૈ ૨। તથા
જિસકા પિત્ત શોણિત નિકલ ગયા હોતા હૈ, તથ વીજ અઢ્કુરિત
નહીં હોતા હૈ ॥ ૩ ॥ તથા જિસકી ગર્ભ ધારણ
શક્તિ કિસી દેવતાકે પ્રભાવસે નષ્ટકર દી ગઈ હૈ, અથવા-ગર્ભ નિરોધક

અંગ વડે મૈથુન સેવન કરતી નથી, એટલે કે પુરુષના લિંગ વડે મૈથુન
સેવન કરતી નથી, પણ લિંગ સિવાયના અંગ વડે-આહાર્ય લિંગ આદિ
વડે કામસેવન કરે છે, તે સ્ત્રી પણ એ રીતે ગર્ભ ધારણ કરી શકતી નથી.

ગર્ભ ધરણ કરવામા સ્ત્રી નીચેના અન્ય કારણોને લીધે પણ અસમર્થ
બને છે—(૧) પુરુષના વીર્યને સાવ થઈ ગયા બાદ પણ પુરુષ સાથે રતિ-
ક્રિયા કરવાથી સ્ત્રીને ગર્ભ રહેતો નથી (૨) યોનિમા પ્રવિષ્ટ થયેલા વીર્ય-
પુદ્ગલો જે સ્ત્રીની યોનિના કોઈ દોષને લીધે વિનષ્ટ શક્તિવાળા થઈ જતાં હોય
તે સ્ત્રી પણ ગર્ભ ધારણ કરી શકતી નથી (૩) જે સ્ત્રીનું પિત્તશોણિત નીકળી
ગયું હોય છે, તે સ્ત્રી પણ ગર્ભ ધારણ કરી શકતી નથી. (૪) જેની ગર્ભ
ધારણ શક્તિ કોઈ દેવતાના પ્રભાવથી નષ્ટ થઈ ગઈ હોય, તે સ્ત્રી પણ ગર્ભ

‘देवकर्मणात्’ इतिच्छाया-तत्र देवस्य कर्मण चेति-देवकर्मणम् इति समाहार
 द्वय, तस्मात्-देववशात् तथाविधद्रव्यसयोगात् वा श्रुत्युपपातः स्यात् । इति
 चतुर्थं स्थानम् । तथा-तस्याः स्त्रिया जमान्तरकर्ममभावेण पुत्रफलं नो निर्दिष्टं
 भवेत् ५। इति पञ्चमं स्थानम् । इत्येतैः पञ्चभिः स्थानैः पुरुषसंगताऽपि स्त्री
 गर्भं नो धरेदिति ॥ सू० ६ ॥

स्त्रीविवयकोऽधिकारः प्रस्तुत एव, तदधिकारादेश सम्प्रति साध्वी वक्तव्यता
 प्रतिपद्य स्त्रयद्रपात्मकमेकं सूत्रमाह—

सूत्रम्-पश्चहि ठाणेहि निगगथा निगगथिओ य एगयओ
 ठाण वा सिज्ज वा निसोहिय वा चेएमाणा णाइक्कमति, त
 जहा-अत्येगइया निगगथा निगगथीओ य एग सह आगामिय
 छिन्नावाय दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा, तत्येगयओ ठाणं वा सेज्ज
 वा निसीहिय वा चेएमाणा णाइक्कमति १, अत्येगइया निगगथा
 निगगथीओ य गामासि वा णयरसि वा जाव रायहारिणिसि वा
 वास उवागया एगइया जत्थ उवस्सय लभति एगइया णो
 लभंति, तत्येगयओ ठाणं वा जाव नाइक्कमति २, अत्येगइया
 निगगथा निगगथीओ य नागकुमारवाससि वा सुवण्णकुमारा वा
 ससि वा वास उवागया तत्येगयओ जाव णाइक्कमति ३, आमो
 औपधि आदिके द्वारा जिसकी गर्भ धारण शक्तिका निरोध कर दिया
 गया है ४। तथा जमान्तरमें पूर्वजन्ममें-कृत कर्मके प्रभावसे जिसे पुत्र
 फल प्राप्त होना नहीं चाहिये, ऐसी स्त्री भी गर्भवती नहीं हो सकती है सू० ६॥

धारण करी सकती नहीं अथवा गल निषाधक औपधि द्वारा जे स्त्रीनी गर्भ
 धारण करवाणी शक्तिने निषाध करी नाभवामां आ ये छेध, ते स्त्री पण
 गर्भ धारण करी सकती नहीं. (५) पूवज्ज भन्ना वृत्तकर्मिने वीपे जेना नखी
 लभां पुत्रइव प्राप्ति लप्ताईज्ज न छेध, जेवो स्त्री पण गर्भ धारण
 करी सकती नहीं. ॥ सू ६ ॥

सगा दीसंति ते इच्छंति निगंथीओ चीवरवडियाए पडिगाहि-
त्तर तत्थेगयओ ठाणं वा जाव णाइकमंति ४, जुवाणा दीसंति
ते इच्छंति निगंथीओ मेहुणपडियाए पडिगाहित्तए तत्थेगयओ
ठाणं वा जाव णाइकमंति ५। इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव
नाइकमंति । पंचहिं ठाणेहिं समणे निगंथे अचेलए सचेलि-
याहिं निगंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइकमइ, तं जहा--खित्त-
वित्ते समणे निगंथे निगंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलि-
याहिं निगंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णाइकमइ १, एवमेएणं गम-
एणं दित्तवित्ते २, जक्खाइट्टे ३, उम्मायपत्ते ४, निगंथोपवा-
वियए समणे निगंथे निगंथेहि अविज्जमाणेहिं अचेलए सच-
लियाहिं निगंथोहिं सद्धिं संवसमाणे णाइकमइ ५॥ सू०७ ॥

छाया—पञ्चभिः स्थानैः निर्यन्था निर्यन्थश्च एकतः स्थानं वा शय्यां
वा नैपेधिकीं वा चेतयन्तो नातिक्रामन्ति, तद्यथा—सन्त्येके निर्यन्था निर्यन्थश्च
एकां मढ्ठीम् अग्रामिकां छिन्नापातां दीर्घाध्यामट्ठीम् अनुप्रविष्टाः, तत्रैकतः
स्थानं वा शय्यां वा नैपेधिकीं वा चेतयन्तो नातिक्रामन्ति १। सन्त्येके निर्यन्था
निर्यन्थश्च ग्रामे वा नगरे वा यावत् राजधान्या वा वासम् उपागताः, एकके यत्र
उपाश्रयं लभन्ते, एकं नो लभन्ते तत्रैकतः स्थानं वा यावद् नातिक्रामन्ति २। सन्त्येकके
निर्यन्था निर्यन्थश्च नागकुमारावासे वा सुपर्णकुमारावासे वा वासम् उपागताः, तत्रै-
कतो यावद् नातिक्रामन्ति ३। आमोपका दृश्यन्ते, ते इच्छन्ति निर्यन्थिकाः चीवरप्रति-
ग्रहीतुं, तत्रैकतः स्थानं वा यावद् नातिक्रामन्ति ४। युवानो दृश्यन्ते, ते इच्छन्ति
निर्यन्थिकाः मैथुनप्रतिज्ञया प्रतिग्रहीतुम्, तत्रैकतः स्थानं वा यावत् नातिक्रा-
मन्ति ५। इत्येतैः पञ्चभिः स्थानैः यावत् नातिक्रामन्ति । पञ्चभिः स्थानैः श्रमणो
निर्यन्थः अचेलकः सचेलिकाभिः निर्यन्थीभिः सार्द्धं संवसन् नातिक्रामति तद्यथा—
क्षिप्तचित्तः श्रमणो निर्यन्थो निर्यन्थेषु अविद्यमानेषु अचेलकः सचेलिकाभिः निर्य-
न्थीभिः सार्द्धं संवसन् नातिक्रामति १। एवमेतेन गमकेन दत्तचित्तो २ यक्षाविष्ट
३, उन्मादप्राप्तो ४, निर्यन्थो प्रव्राजितः श्रमणो निर्यन्थो निर्यन्थेषु अविद्यमानेषु
अचेलकः सचेलिकाभिः निर्यन्थीभिः सार्द्धं संवसन् नातिक्रामति ५ ॥ सू० ७ ॥

ટીકા—‘પચ્છિં ઠાણેહિ’ હત્યાદિ—

પચ્છમિં મ્યાનૈઃ=કારણૈઃ નિર્ગમ્યા નિર્ગમ્યથા એકત્વ =એકસ્મિન્ સ્થલે સ્થાન=
કાયોત્સર્ગમ્ ઉપવેશનં વા શ્વયં=સસ્વારક વા નૈવધિકી=સ્વાધ્યાયમૂર્તિ વા ચેત
યન્તઃ=કુર્વન્તો નાતિક્રામતિ=નોર-હયન્તિ જિનાશ્ચામ્ । તાનિ સ્થાનાનિ પ્રા-
સન્તિ=મનન્તિ । એકે=કેવિદ ત્રિ મ્યા નિર્ગમ્યથા, ત કિલ્લકાશ્ચિત્ એકાં મહર્તી=
ચિશાલામ્ અગ્રામિકામ્=ગ્રામરહિતમ્ છિન્નાપાતામ્-છિન્ના આપાતા-જનાનામા
ગમનાનિ, ઉપલક્ષણાત્ ગમનાનિ વા યથ્યાં સા તાં, શીર્ષાધ્યામ્=શીર્ષ અથવા=માર્ગો
યથ્યાં સા તાં-મહાપથામ્, યદ્વા-‘શીર્ષાદ્યામ્’ इति જ્ઞાયા શીર્ષ =મહાન મદ્વા=
કાલો નિસ્તરણે યથ્યાં સા તાં-શીર્ષાત્પાલકુનીપામ્લહનગોપ્યામ્ અશ્વીમ્ મનુષ

અમ સુત્રકારે હસી સ્ત્રી વિષયક અધિકારકે સમ્બંધસે સાધ્વીકી
વસ્તુસ્થિતિસે પ્રતિષ્ઠા સૂત્રદયાર્થમક એક સૂત્રકા કથન કરતે હૈ—

‘પચ્છિં ઠાણેહિ નિર્ગમ્યા નિર્ગમ્યીમો’ હત્યાદિ સૂત્ર ૭ ॥

ટીકાર્થ-નિર્મલ્ય ઓર નિર્મલ્યનિર્ગમ્યા-સાધુ ઓર સાધ્વી-યદિ જન પાંચ
કારણોનો છેકર એકહી જગહ કાયોત્સર્ગ કરતે હૈ, યા પેઠતે હૈ વિસ્તર
કરતે હૈ, યા સ્વાધ્યાય કરતે હૈ, તો વે જિનાશ્ચાકે વિરાધક નહીં હોતે
હૈ, વે પાંચ કારણ હસ પ્રકારસે હૈ-એસે-કિનનેક નિર્મલ્ય ઓર નિર્મ
લ્યનિર્ગમ્યા એક એસી અટવીમૈં પહુંચ જાતે હૈ, કિ જો વહુત ચિશાલ હૈ,
જિસમૈં એક સી ગ્રામ નહીં હૈ, મનુષ્યોંકા સી આગમન આનાજાના
જિમમૈં નહીં હૈ, જો લમ્બે રાસ્નાવાલી હૈ, અપવા જિસે પાર કરના
વહુત સમય સાધ્ય હૈ, એસી અર્થકર ગહન અટવીમૈં પહુંચ જાને પર

આગલા સૂત્રમાં સ્ત્રીવિષયક કથન કરવામાં આવ્યું છે સાધ્વીજી પણ
સ્ત્રીજી જ હોય છે આ સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર સાધ્વીજીની
વસ્તુસ્થિતિની મુદ્દા સૂત્ર દ્વયના સમૂહરૂપ એક સૂત્રનું કથન કરે છે

ટીકાર્થ-‘પચ્છિં ઠાણેહિ નિર્ગમ્યા નિર્ગમ્યીમો’ હત્યાદિ—

નિર્ગમ્યા (સાધુજી) અને નિર્ગમ્યીનિર્ગમ્યા (સાધ્વીજી) એ આ પાંચ
કારણોને લીધે એક જ જગ્યાએ કાયોત્સર્ગ કરે, એસે, સ્વાધ્યાય કરે, અપવા
શયન કરે તો તેજી જિનાશાના વિરાધક થતાં નથી

(૧) કેટલાક નિર્ગમ્યા અને નિર્ગમ્યીજી કોઈ એક જગ્યા અને
નિશાળ અટવીમાં જાયો પહોંચ્યાં છે કે જેમા એક પણ ગામ નથી, મનુષ્યોને
અવરજવર પણ જ્યાં થતો નથી, જેને પાર કરીને કોઈ ગામમાં પહોંચવું
પડે જ રુબર છે, યજુ જ લાંબા સમયે જેને પાર કરી શકાય એવી છે, તો

વિધા । તત્ર=અટવ્યામ્ એકત્ર=એકસ્મિન્ સ્થલે સ્થાનં વા શય્યાં વા નૈષેધિકીં વા ચેતય-
ન્તઃ=કુર્વન્તો નિર્ગ્રન્થા નિર્ગ્રન્થ્યશ્ચ નાતિક્રામન્તિ=નોલુઙ્ઘ્યન્તિ જિનાજ્ઞામિતિ પ્રથમં
સ્થાનમ્ । તથા-સન્તિ એકે નિર્ગ્રન્થા નિર્ગ્રન્થ્યશ્ચ, યે કિલ ગ્રામે વા નગરે વા યાવદ્
રાજધાન્યાં વા વાસં=નિવાસમ્ ઉપાગતાઃ=પ્રાપ્તાઃ, તેષુ મધ્યે એકે=નિર્ગ્રન્થા વા
નિર્ગ્રન્થો વા અત્ર-ગ્રામાદૌ ઉપાશ્રયં=ગૃહસ્થેન નિવાસાર્થ પ્રદત્તં સ્થાનં લભન્તે=
પ્રાપ્નુવન્તિ, એકે=અન્યતરે પુનર્નૌ લભન્તે, તત્ર એકત્ર સ્થલે સ્થાનાદિકં કુર્વન્તો
નિર્ગ્રન્થા નિર્ગ્રન્થ્યશ્ચ નાતિક્રામન્તીતિ દ્વિતીયં સ્થાનમ્ । તથા-સન્તિ એકે નિર્ગ્રન્થા

યદિ સાધુ જન એવં સાધ્વિયાં એકહી સ્થાન પર ઠહર જાતે હૈં બેઠ જાતે
હૈં, કાર્યોત્સર્ગ કરતે હૈં, આદિ ૨ ક્રિયાઈ કરતે હૈં, તો એસે વે નિર્ગ્રન્થ
સાધુ ઔર સાધ્વિયાં તીર્થંકર પ્રભુકી આજ્ઞાકે વિરાધક નહીં હોતે હૈં,
એસા યહ પ્રથમ કારણહૈં । દ્વિતીય સ્થાન-કારણ એસા હૈ-કિતનેક સાધુ
સાધ્વિયાં વિહાર કરતી હુઈ કિસી એક ગ્રામમૈં યા નગરમૈં આદિ આ-
જાતી હૈં-વહાં વે ગૃહસ્થકે દ્વારા પ્રદત્ત કિસી ઉપાશ્રયમૈં ઠહર જાતી હૈં,
પરન્તુ યદિ ઔર મી સાધુ સાધ્વિયાં એસી વચી રહતી હો કિ જિન્હે
ઠહરનેકે લિયે સ્થાન ન મિલા હો તો એસી સ્થિતિમૈં વે સવકે સવ યદિ
એકહી સ્થાનમૈં ઠહર જાતે હૈં, વહી પર અપની ૨ ધાર્મિક ક્રિયાઈ કરતે
હૈં, તો વે જિનાજ્ઞાકે વિરાધક નહીં માને જાતે હૈં । તૃતીય સ્થાન એસા

એવી પરિસ્થિતિમા સાધુઓ અને સાધ્વીઓ તે ગહન અટવીમા એક જ
સ્થળે રોકાઈ જાય, એસી જાય, અને કાર્યોત્સર્ગ આદિ ક્રિયાઓ કરે, તો તે
પ્રમાણે કરવાથી તે સાધુઓ અને સાધ્વીઓ તીર્થંકર ભગવાનની આજ્ઞાની
અવગણના કરનારા ગણાતાં નથી

ખીજુ કારણ નીચે પ્રમાણે છે—કેટલાક સાધુઓ અને સાધ્વીઓ
ગ્રામાનુશાસન વિચરતાં વિચરતા કોઈ એક ગામ, નગર આદિમાં આવી પહોંચે
છે ધારે કે કેટલાક સાધુઓ અથવા સાધ્વીઓ ત્યાં કોઈ ગૃહસ્થ દ્વારા
આપવામા આવેલા કોઈ ઉપાશ્રયમા ઉતરે છે કેટલાક સાધુ અથવા સાધ્વી-
ઓને તે ગામ આદિમાં ઉતરવાને માટે કોઈ અલગ સ્થાન મળી શકતું નથી
તો એવી પરિસ્થિતિમા તે સાધુઓ અને સાધ્વીઓ તે એક જ સ્થાનમાં ઉતરે
અને કાર્યોત્સર્ગ આદિ ક્રિયાઓ કરે, તો તેઓ જિનેશ્વર ભગવાનની આજ્ઞાના
વિરાધક ગણાતાં નથી

ત્રીજુ કારણ આ પ્રમાણે છે—જો કોઈ સાધુઓ અને સાધ્વીઓ કોઈ
નાગકુમારાવાસમાં અથવા સુપર્ણકુમારાવાસમા એક સાથે જ વાસ કરે, તો

નિર્ગ્ન્યપથ, ય કિંચ નાગકુમારાવાસે=નાગકુમારગૃહે વા સુવર્ણકુમારાવાસે=સુવર્ણકુમારગૃહે વા વાસમ્=વસધિમ્ ઉપાગતાઃ, તસ્ય નાગકુમારાવાસસ્ય સુવર્ણકુમારાવાસસ્ય વ અતિ શૂન્યત્વાત્, અથવા-વહુજનામપત્ત્વાત્ અનાયકત્વાત્ નિર્ગ્ન્યી ધીલરસાર્થે તથા નાગકુમારાવાસર્થે સ્થાનાદિકં કુર્વામા નિર્ગ્ન્યા નિર્ગ્ન્યપથ નાવિકામન્વીતિ તૃતીયં સ્થાનમ્ । તથા-અરચિત્ સ્પષ્ટે નિર્ગ્ વા નિર્ગ્ન્યપથ ઉપાગતાઃ, તથા મામોપકા-મામુષ્ણન્તિ=ચોરયન્તીતિ મામોપકા=ચોરા દશ્યન્તે, ત ચોરા શ્ચન્તિ ચીવરમતિક્ષયા=ચીવરોદ્દેષ્ટેન-વસ્ત્રાવહરયન્ત્યે હે—યદિ કિંચનક સાધુ સાધિવર્ગા કિંસી ણક નાગકુમારાવાસમેં યા સુવર્ણકુમારાવાસમેં આકર ઠહર જાતે હું તો એસી સ્થિતિમેં વે જિનાજાકે વિરાધક નહીં માને ગપે હે, કયોંકિ નિર્ગ્ન્યોં કે સાધ નિર્ગ્ન્યોં કે ઠહરને કા પેસા અભિપ્રાય રહતા હે કિં જનકે સહારે સે મેરે ધીલ કી રક્ષા હો જાવેગી, કયોંકિ વહ આવાસ અતિશૂન્ય હે ।

અથવા—યહ વહુજનામપ હે યા હસકા કોઈ નાપક નહીં હે, અતઃ એસી સ્થિતિ મેં યહાં દુર્વ્વસની બી આ સકતે હે, હસલિપે સાધુ મહારાજ કે પાસ ઠહરને સે મેરે ધીલકી રક્ષા હો સકતી હે, હસ અભિપ્રાયસે વહ યદિ જનકે સાધ ઠહર જાતી હે, ઓર વે ઠસે ઠહરા છતે હે, તો એસી સ્થિતિમેં વે જિનાજાકે વિરાધક નહીં માને જાતે હે । ચતુર્થ સ્થાન પેસા હે--કિંસી સ્વામ પર નિર્ગ્ન્યપ ઓર નિર્ગ્ન્યપનિર્ગ્ન્યા આવે હોં ઓર યહાં ઠહે ચોર છુટેરે ક્ષિસ્લાઈ દિવે હોં ઓર વે ચોર વહ પાહતે હોં કિં હમ જમ નિર્ગ્ન્યપનિર્ગ્ન્યોં કો છૂટ હેં તાકિ હમે

તેઓ જિનાસાના વિશાધક બધાના નથી આવા સ્થાનોમાં સાધીઓ બેઠેલી રહે તો તેમના શીલની રક્ષા કરવાને તેઓ અસમર્થ બને છે, સાધુઓ પણ તે બગાડે ઉતર્યા હોય, તો તેમના શીલની રક્ષા થઈ શકે છે, સાધુઓની કાશ્ઠીમાં ત્યાં કોઈ દુરવ્યવસ્થાની સંભવ કરી શકતો નથી. આવા આપસો યા તો નિર્જન હોય છે યા તો બહુજનાસિત હોય છે, અથવા તો ત્યાં કોઈ રક્ષક જ હોતો નથી. જેવી બગાડો દુરાચારીઓ પણ આવી શકે છે આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં ત્યાં કોઈ સાધુઓ ઉતર્યા હોય તો તેમની સાથે પાતાના શીલની રક્ષાના વિચારથી પ્રેરાઈને, બધીઓ પણ આવતીને ઉતરે તો તેઓ જિનાસાની વિશાધક બધાની નથી

ધ્યાન કાળ—કોઈ ગ્રામ આદિમાં સાધુઓ અને સાધીઓ આવગ અવગ ઉપાસનામાં ઉતર્યા હોય, અને તે ગ્રામ આદિમાં ચોર લૂટારાને

स्था०-५

તીતિ । इदमपवादयुग्मम् । उपर्युक्तकरणेष्वेव एकप्रस्थितिं कुर्वन्तो निर्ग्रन्था निर्ग्रन्थश्च जिनाज्ञा विराधका न भवन्तीति । तथा-क्षिप्रचित्तादिरूपे पञ्चमि कारणैः अनेन द्वा-वस्तरहित भवणा निर्ग्रन्थ सचेष्टिकाभिनिर्ग्रन्थीमि सार्धे संवत्समपि नातिक्रामति तीर्थरूपायाम् । तानि स्थानानि प्राद-सद्यथा-सिप्रचितः= शोकादिना विसिप्रचितः अनप्यम अचेलो=विगतवस्त्रः भवणा निर्ग्रन्थ इतरेषु निर्ग्रन्थेषु अस्थिमानेषु सचेष्टिकाभि निर्ग्रन्थीमिः सह संवत्सव तीर्थरूपाया विराधका न भवतीति प्रथम स्थानम् । एवम्=अनया रीत्या एतेन गमन-पाठन इति

હૈ, તા ષ જિનાજ્ઞા કે વિરાધક નહીં માને જાતે હૈ । યહ અપવાદ સૂત્ર હૈ । इन उपर्युक्त पांच कारणों में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थिनीयों को एक जगह ठहरने पर जिनाज्ञा को अयहेटना करनेवाला नहीं कहा गया है, इसी प्रकार क्षिप्र चित्ता आदि रूप पांच कारणों से, अचेल-वस्त्ररहित साधु क्षमण निर्ग्रन्थ-सचेष्टिका निर्ग्रन्थिनीयों के साथ रहना हुआ भी तीर्थंकर की आज्ञा का अतिक्रमण करनेवाला नहीं होता है । ये पांच कारण इस प्रकार से हैं-“ क्षिप्रचिते समणे निर्गन्थे ” इत्योदि-

શોકાદિ સે જિસકા ચિત્ત અનવહિત હૈ, અસ્તચ્ચસ્ત હો રહા હૈ, સાધવાન નહીં હૈ-અતઃ એ જો અચેલ વિગતવસ્ત્ર હો ગયા હૈ, વસ્ત્ર રહિત બન ગયા હૈ, એસા બહ અમણ નિર્ગન્થ હતર નિર્ગન્થોંંની અવિધ

કોઈ એક જ આશ્રયસ્થાનમાં સાથે જ ઉતારા કરે, તે તેઓ જિનાજ્ઞાન વિરાધક ગણાતાં નથી

સામાન્ય રીતે તેા સાધુઓ અને સાધ્વીઓને એક જ સ્થળે રહેવાને નિરોધ છે પણ ઉપર બતાવેલા પાંચ કારણોને લીધે સાધુઓ અને સાધ્વીઓ એ એક જ સ્થળે ઉતારે અને સ્વાધ્યાય, કથોત્સર્ગ આદિ કરે, તેા તેઓ જિનેશ્વર સમવાનની આજ્ઞાની અવહેલના કરનારા ગણાતાં નથી આ રીતનેા અપવાદ અહીં પ્રકટ કરવામાં આવેલો છે એ જ પ્રમાણે ક્ષિપ્ર-ચિત્તા આદિ રૂપ પાંચ કારણોને લીધે કોઈ અચેલ (વસ્ત્રરહિત) સાધુ-અમલ નિર્ગન્થ, સચેષ્ટિકા (વસ્ત્રમુક્ત) નિર્ગન્થિનીઓ સાથે રહેવા છતાં પણ જિનાજ્ઞાને વિરાધક ગણાતો નથી. તે પાંચ કારણો નીચે પ્રમાણે છે-

ક્ષિપ્રચિત્તે સમણે નિર્ગન્થે ” ઇત્યાદિ-

શોકાદિથી બેનું ચિત્ત કામચોળ થઇ જવાને કારણે જે જાન સુખાવી બેઠો છે-ઇન્નાને પણ થઇને જે વસ્ત્રરહિત કાલતર્માં (નિઃશ્વરધામાં) રહેલો છે તેની સજ્જલ લેનાર બીજા સાધુઓ ત્યાં કોજર ન લેાય, તેા સચેલક

ચિત્ત:-હર્ષાદિના ઉન્મત્ત: ૨, યક્ષાવિષ્ટ: =યક્ષગૃહીત: ૩, ઉન્માદપ્રાપ્ત: =ગાતાદિ ક્ષોભાદુન્માદમાર્ગ ગત: ૪, અર્થ ત્રિવિધોડપિ નિર્ગ્રન્થો દ્વસચિત્તત્વાદિવશાત્ અચેલક: નિર્ગ્રન્થોભિ: સદૃ સંવપન્નાપિ જિનાજ્ઞાવિરાધકો ન ભવતીતિ સ્થાનત્રય-મિતિ ચતુર્થ સ્થાનમ્ । તથા-નિર્ગ્રન્થી પ્રવાજિત:-નિર્ગ્રન્થ્યા-દીક્ષાદાયક-તદ્ર-ક્ષરુપાધ્વભાવ-પરમવૈરાગ્યવચ્ચપ્રવર્ધમાનપરિણામવત્ત્વાદિકારણવશાત્ સાધ્વ્યા પ્રવાજિત: પુત્રાદિ: શ્વઘૃરાદિર્વા, સ ચ ત્રાલત્વાદ્ અચેલ:, મહાનપિ વૃદ્ધત્વાદિના માનતા મેં સચેલક સવન્ન નિર્ગ્રન્થનિર્ગ્રન્થો-સાધ્વિયો કે સાથ રહતા હુઆ તીર્થંકર કી આજ્ઞા કા વિરાધક નહીં હોતા હૈ, એસા યહ પ્રથમ કારણ હૈ ।

“ એવમેતેન ગમકેન દ્વસચિત્તો ” ઇત્યાદિ—

હસી રીતિ સે હસી પાઠ સે હર્ષાદિ આદિ સે ઉન્મત્ત હુઆ ૨ યક્ષ સે અવશિષ્ટ હુઆ-ગ્રહીત હુઆ-૩ ઉન્માદ કો પ્રાપ્ત હુઆ-વાત આદિ કે ક્ષોભસે ઉન્માદ આવ કો પ્રાપ્ત હુઆ ૪ ભી શ્રવણ નિર્ગ્રન્થ યદિ અચેલક વસ્ત્ર રહિત હન દ્વસચિત્તના આદિકે વશસે હો જાતા હૈ, ઓર નિર્ગ્રન્થનિર્ગ્રન્થો કે સાથ રહતા હૈ, તો ભી વહ જિનાજ્ઞા કા વિરાધક નહીં, હસ પ્રકાર કે યહાં તક યે ૪ સ્થાન હૈં, પાંચર્વા સ્થાન હસ પ્રકારસે હૈં—કિસી નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી કે દ્વારા એસી અવસ્થામેં કિ જય દીક્ષા દેનેવાલા દીક્ષા રક્ષક સાધુકા અભાવ હો ઓર દીક્ષા લેનેવાલા પરમ વૈરાગ્ય સે વર્ધિત પરિણામવાલા હો રહા હો, દીક્ષિત કિયા ગયા પુત્ર

(સવસ્ત્ર) સાધ્વીઓ તેમની પાસે રહી શકે છે. આ પ્રમાણે કરવામા તે સધુ કે સાધ્વી જિનાજ્ઞાના વિરાધક બનતાં નથી.

“ એવમેતેન ગમેત દ્વસચિત્તો ” ઇત્યાદિ—

એ જ પ્રમાણે (૨) હર્ષના અતિરેકને કારણે ઉન્મત બની ગયેલા, (૩) શરીરમા યક્ષાદિનો પ્રવેશ થવાને કારણે ઉન્માદાવસ્થા પામેલા, (૪) વાતાદિના પ્રકોપને કારણે ઉન્મત્ત થઇ ગયેલા, એવા કોઇ શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ નશ્વાવસ્થામા રહેલા હોય અને તેમની સાથે સચેલક સાધ્વીઓ રહે, તો એવી પરિસ્થિતિમા તે નિર્ગ્રન્થ કે નિર્ગ્રન્થિની જિનાજ્ઞાના વિરાધક ગણાતા નથી.

પાંચમુ કારણ નીચે પ્રમાણે છે—દીક્ષાદાયક અને દીક્ષારક્ષક સાધુનો અભાવ હોય, અને દીક્ષા લેનાર પુત્ર, સસરા આદિ પરમ વૈરાગ્યથી વર્ધિત પરિણામવાળો થઇ રહ્યો હોય, એવી પરિસ્થિતિમા તેમને કોઇ નિર્ગ્રન્થી (સાધ્વી) દ્વારા દીક્ષા પ્રદાન કરવામાં આવે છે દીક્ષા લેનાર પુત્ર ધારે કે

मपेला, सहि अन्येषु निर्गन्धेषु अविद्यमानेषु ससु सचेलिकाभिर्निर्गन्धीभिः सह सप्तमपि तीर्थकृदाङ्गारिरापको न भवतीति पञ्चम स्थानम् ॥ सू० ७ ॥

अनन्तरसूत्रे मिनाङ्गानातिष्कामति इत्युक्त, तदतिक्रमणशीलम् आङ्गाविरा पको भवति, आङ्गाविरापना च भासवरूपा भवति, अतः आसवरद्वाराणि, तत्र तिपसत्वात् सवरद्वाराणि, पुनर्दण्डसंस्थानात् आसवविशेषांश्च प्राद—

१ मूलम्—पञ्च आसवद्वारा पण्णत्ता, त जहा—मिच्छत्त १, अविरह २, पमाप् ३, कसाया ४ जोगा ५। पञ्च सवरद्वारा पण्णत्ता, त जहा—समत्त १ विरह २ अपमाओ ३, अकसा इत्त ४, अजोगित्त ५। पञ्च दण्डा पण्णत्ता, त जहा—अट्टादडे १ अगट्टादडे २ हिसादडे ३ अकम्हादडे ४ दिट्ठीविप्परियासि यादडे ५ ॥ सू० ८ ॥

छाया—पञ्च आसवद्वाराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—मिष्पास्वम् १ अविरतिः २ पमाप् ३ कसाया ४ जोगा ५। पञ्च सवरद्वाराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—सम्पत्त १, विरतिः २ अपमाहः ३ अकसायित्वम् ४ अयोगित्वम् ५। पञ्च दण्डाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—अर्णदण्डः १ अनर्णदण्डः २ हिसादण्डः ३ अकस्मादण्डः ४ इष्टिर्विपर्यासदण्डः ५ ॥ सू० ८ ॥

आदि अथवा स्वशूर आदि यदि अथेलक हुमा—यासक होनेसे अथेलक हुआ पुत्र और पक्षा होने पर भी वृद्धता आदि के कारणसे अथेलक हुमा स्वशूर आदि—अप निर्गन्धों के अभावमें उनकी अविद्यमानता में सचेलक निर्गन्धनियों के साथ यदि रहता है, तब भी यह तीर्थकरकी आङ्गाका विरापक नहीं होता है, ऐसा यह पाँचवां स्थान है ॥ सू० ७ ॥

आसव ६ ते अथेलक (नम) होय तो पण्ण साधोल् तेनी पाये रही रहे ॥ ६६ ॥ तेनार ससरा आदि पाये के वृद्ध होय अने वृद्धापस्थाने कासले अथेलक (नमपस्थानाणि) अर्थ अथो होय, अने अन्य साधुज्ये त्यां विद्यमान न होय, तो जोषी परिस्थितिमा सचेलक साधुजीयो साथे रहेतो अथेल निर्गन्ध अजयाननी आङ्गानो विरापक भवतो नही ॥ सू० ७ ॥

ટીકા—‘ પંચ આસ્રવદારા ’ इत्यादि—

આસ્રવદારાણિ-આસ્રવણમ્-આસ્રવઃ-જીવરૂપે તડાગે કર્મરૂપજલસ્ય પ્રવેશઃ તસ્ય દ્વારાણીવ દ્વારાણિ=ઉપાયાઃ, તાનિ હિ પંચ સંલ્પકાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તદ્વથા મિથ્યાત્વમ્=અવરત્તે તત્ત્વાધ્યવસાનરૂપં વિપરીતશ્રદ્ધાનમિત્યર્થ इति પ્રથમં સ્થાન ૧। અવિરતિઃ=આપરૂપતોડનિવૃત્તિઃ નિવૃત્તેરભાવઃ ૨। પ્રમાદઃ=અનવધાનતા-

अनन्तर सूत्रमें “ जिनाज्ञा को माननेवाला जिनाज्ञाका विराधक नहीं होता है ” ऐसा कहा गया है और जो जिनाज्ञा को नहीं मानता है वह जिनाज्ञाका विराधक होता है, जिनाज्ञाकी विराधना आस्रव रूप होती हैं। अतः अब सूत्रकार आस्रव द्वारों का और आस्रव द्वारों के रुकने रूप संवर द्वारों का तथा दण्ड रूप आस्रव विशेषोंका कथन करते हैं--“ पंच आस्रवदारा पणत्ता ” इत्यादि--

टीકાર્થ-આસ્રવ દ્વાર પાંચ કહે ગયે હૈં, જૈસે-મિથ્યાત્વ ૧, અવિરતિ ૨, પ્રમાદ ૩, કષાય ૪ ઓર યોગ ૫ । પાંચ સંવર દ્વાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-સમ્યક્ત્વ ૧, વિરતિ ૨, અપ્રમાદ ૩, અકષાયિતા ૪ ઓર અયોગિતા ૫ દણ્ડ પાંચ કહે ગયે હૈં, જૈસે-અર્થદણ્ડ ૧, અનર્થદણ્ક ૨, હિંસાદણ્ડ ૩, અકસ્માત્ દણ્ડ ૪ ઓર દૃષ્ટિવિપર્યાસ દણ્ડ ૫.

જીવરૂપ તાલાય મેં કર્મરૂપ જલકા જો પ્રવેશ હૈં વહ આસ્રવ હૈં, ઇસ આસ્રવ કે દ્વાર જૈસે જો દ્વાર હૈં વે આસ્રવદાર હૈં । આસ્રવકે આનેકે જો ઉપાય કારગ હૈં વે પાંચ હૈં, જૈસે-મિથ્યાત્વ આદિ અનરત્તમેં

“ जिनाज्ञानु पालन करनासे जिनाज्ञानो विराधक थतो नथी, ” એવું અગળ કહેવ મા આન્યું છે, જેઓ જિનાજ્ઞાને માનતા નથી તેઓ જિનાજ્ઞાના વિરાધક ગણાય છે. જિનાજ્ઞાની વિરાધના આસ્રવ રૂપ હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર આસ્રવદારોનું અને આસ્રવોનો નિરોધ કરનારા સંવરદારોનું તથા ૬૭ રૂપ આસ્રવવિશેષોનું કથન કરે છે.

‘ पंच आस्रवदारा पणत्ता ’ इत्यादि—

પાંચ આસ્રવદારો કહ્યા છે—(૧) મિથ્યાત્વ, (૨) અવિરતિ, (૩) પ્રમાદ (૪) કષાય, અને (૫) યોગ પાંચ સંવરદાર કહ્યાં છે--(૧) સમ્યક્ત્વ, (૨) વિરતિ, (૩) અપ્રમાદ, (૪) અકષાયિતા અને (૫) અયોગિતા. ૬૭ પાંચ દૃષ્ટા છે—(૧) અર્થદંડ, (૨) અનર્થદંડ, (૩) હિંસાદંડ, (૪) અકસ્માત્ દંડ અને (૫) દૃષ્ટિ વિપર્યાસ દંડ

છવ રૂપ તળાવમા કર્મ રૂપ જળનો જે પ્રવેશ થાય છે, તેનું નામ આસ્રવ છે તે આસ્રવના દ્વાર જેવા જે દ્વાર છે તેમને આસ્રવદાર કહે છે. આસ્રવો (કર્મો) ના આગમના નીચે પ્રમાણે પાંચ કારણો છે—

કર્તવ્ય-કર્તવ્યપોરમપ્રવૃત્તિરૂપા ૩। કપાયા-ક્રોધાદિલ્પ્પનાઃ ૪।
 યોગા-મનોયોગાદય ૫। ક્ત્યતાનિ પશ્ચ આસ્રવદ્વારાણિ યોષ્પાનિ સમ્પતિ
 પતત્પતિપત્તયુતાનિ સવરદ્વારાણિ માઃ-તયાદિ સવરદ્વારાણિ-સવરેણ સવર-
 સમિતિગુણિ મનુષિમિરાત્મતઢાગે આગચ્છદ્ધર્મસંલોભનાં નિરોધનમ્ । તસ્ય દ્વારા
 યોગ દ્વારાણિ । તાનિ પશ્ચવિધાનિ પ્રજ્ઞતાનિ । તથા-સમ્પત્તયમ્ ૧, વિરતિ
 ૨ અપમાદઃ ૩ અક્રયાવિત્તમ્ ૪ અપાગિમ્તમ્ ૫ તયા-દૃષ્ટા-દૃષ્ટવતે નિઃસારી
 ક્રિયતે આત્મા યૈસ્મે દૃષ્ટાઃ-પ્રાણન્યપરોણાદિરૂપા । પ્રાણવિયોજનાદિરૂપા
 તે ચ પશ્ચવિદા પ્રજ્ઞતા । પશ્ચવિધતામેવાહ-તથા-મર્ગદૃષ્ટ-મર્ગાવ-વ્રજાનાં

તરલાવ્યવસાનરૂપ જો વિપરીત શ્રદ્ધાન છે, વહ મિષ્ટ્યાય છે, પાપક્રમસે
 વિરત્તિ નહીં હોના હસકા નામ અધિરતિ છે, અનવધાનતાકા નામ
 પ્રમાદ છે, વહ પ્રમાદ કર્તવ્યમેં અપ્રવૃત્તિરૂપ ઓર અકર્તવ્યમેં પ્રવૃત્તિરૂપ
 હોના છે, ક્રોધાદિરૂપ કપાય છે, ઓર મનોયોગ આદિરૂપ યોગ છે, હનસે
 કર્મોંકા આના હોતા છે, અત હહે આસ્રવદ્વાર કહા ગયાહે, આસ્રવકા
 પ્રતિપક્ષી સવર હોતા છે, હસ સવરકે દ્વાર વપાવતી પાંચ કહે ગયે છે,
 આત્મારૂપી તાલાવમેં ધાનેવાહે કર્મરૂપ જલકા જો સમિતિ ગુણિ આ
 વિકોં દ્વારા નિરોધ કર દિયા જામા છે, વહી સવર છે, હસકે ત્રી પાંચ
 દ્વાર કહે ગયે છે, જૈસે સમ્પત્તય આદિ યે પાંચ દ્વાર આસ્રવ દ્વારોંસે
 વિપરીત હોતે છે । આત્મા અવધા અપ જીવ જિનકે દ્વારા પ્રાણવ્યવ

મિષ્ટ્યાત્વ આદિ પાંચ કારણો અહીં અક્રમ કરવા બેઠબે અતરત્તમ
 વત્ત અવસાન રૂપ જે વિપરીત વત્તોમાં અદ્ય છે, તેનું નામ મિષ્ટ્યાત્વ છે
 પાપકર્મથી નિવૃત્ત ન થવું તેમાં પ્રવૃત્ત જ રહેવું તેનું નામ અવિરતિ છે
 અનવધાનતાનું નામ પ્રમાદ છે કરવા યોગ્ય કાર્યોમાં પ્રવૃત્ત ન થવું અને ન
 કરવા યોગ્ય કાર્યોમાં પ્રવૃત્ત થવું તેનું નામ જ પ્રમાદ છે ક્રોધ, માન, માયા
 અને હેતુરૂપ વ્યાર કપાય છે મનોયોગ, વાચ્ચોગ અને કાલયોગ રૂપ ત્રણ
 યોગ છે તેમના દ્વારા કર્મોંનું આગમન થાય છે તેથી તેમને આસ્રવદ્વાર રૂપ
 કહ્યા છે આસ્રવનો પ્રતિપક્ષી સવર છે તે સવરના ઉપાય રૂપ જે પાંચ
 કારણો છે તેમને સવરદ્વાર કહે છે આત્મા રૂપી જળાશયમાં પ્રવેશ કરતાં
 કર્મરૂપ જલને જે સમિતિ, શુદ્ધિ વગેરે દ્વારા શેષવામાં આવે છે, તેનું
 નામ જ સવર છે તેના સમ્પત્તય આદિ જે પાંચ દ્વાર કહ્યા છે, તેઓ
 આસ્રવદ્વારોં કરતાં વિપરીત હોય છે આત્મા અવધા અન્ય છત્ર જેમના

સ્થાવરાણાં વા આત્મનઃ પરસ્ય વા પ્રયોજનાય દણ્ડો વધઃ ૧। અનર્થદણ્ડઃ-અનર્થો= નિર્રર્થકો યો દણ્ડઃ સઃ નિષ્પ્રયોજનો દણ્ડ इत्यर्थ. ૨। હિંસાદણ્ડઃ-‘અચં મમ પુત્રાદિકં હિંસિતવાન હિનસ્તિ હિંસિષ્યતિ ચેતિ બુદ્ધ્યા યઃ શત્રુ પ્રભૃતીનાં દણ્ડઃ સ હિંસાદણ્ડઃ ૨ તથા-અકસ્માદ્ દણ્ડઃ-અન્યવધાર્થ પ્રહારે કૃતે અકસ્માદ યોડ- ન્યસ્ય દણ્ડઃ-પ્રાણવ્યપરોપણં સઃ ૪। તથા-દૃષ્ટિવિપર્યાસદણ્ડઃ-દૃષ્ટિવિપર્યાસેન- દૃષ્ટિવૈપરીત્યેન-મિત્રસ્યાપ્યમિત્રધિયા યો દણ્ડઃ સઃ ૫। इत्येते पञ्च दण्डा स्त्रयोदशक्रियास्थानानां मध्ये वर्तन्ते । अत्र तु पंचस्थानानुरोधेन पञ्चैव स्थानानि गृहीतानि । तानि त्रयोदशक्रियास्थानानि यथा—

“અઢા ૧ ણઢા ૨ હિંસા ૩ ડકમ્હા ૪ દિઢી ૫ ય મીસદદિન્ને ૬ ય।

અજ્ઞત્ય ૮ માણા ૯ મિત્તે ૧૦ માયા ૧૧ લોમે ૧૨ રિયાત્રહિયા ૧૩ ॥૧॥”

રોપણાદિ રૂપ દણ્ડકો પાતા હૈ, વે દણ્ડ હૈ, યે દણ્ડમી અર્થદણ્ડ આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, इनमें त्रस जीवोंका अथवा स्थावर जीवोंका तथा अपना तथा परका प्रयोजनवश वध करना वह अर्थदण्ड है, નિષ્પ્રયોજન પ્રાણાતિપાત કરના વહ અનર્થદણ્ડ હૈ, इसने मेरे पुत्रादिका वध किया था अथवा अब भी वध करता है, आगेभी यह ऐसाही करेगा इस अभिप्रायसे जो शत्रु आदिकोंका वध कर दिया जाता है, वह हिंसादण्ड है, અન્યકો મારનેકે લિયે તૈયાર હુણ વ્યક્તિસે જો અકસ્માત્ ષોચમેં દૂસરેકી હિંસા હો જાતી હૈ, वह अकस्मात् दण्ड है, દૃષ્ટિકે વિપર્યાસસે જો પ્રાણાતિપાત હો જાતા હૈ, वह दृष्टि विपर्यास दण्ड है, जैसे-अमित्रकी बुद्धिसे मित्रका वध हो जाता है । ये पांच दण्ड १३

દ્વારા પ્રાણુવ્યપરોપણુ આદિ રૂપ દડને પ્રાપ્ત કરે છે, તેમને દંડ કહે છે. તે દંડના પણ અર્થદંડ અદિ પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે ત્રસ જીવોનો, સ્થાવર જીવોનો પોતાનો કે પરનો કોઈ પ્રયોજનને લીધે વધ કરવો તેનું નામ અર્થદંડ છે કોઈ પણ જાતના પ્રયોજન વિના જીવહિંસા કરવી તે અનર્થદંડ છે આ જીવે મારા પુત્ર આદિનો વધ કર્યો હતો, વધ કરે છે કે વધ કરશે, એવી માન્યતાથી પ્રેરાઈને શત્રુ આદિનો જે વધ કરવામા આવે છે તેનું નામ હિંસાદંડ છે કોઈને મારવાને તૈયાર થયેલી વ્યક્તિ દ્વારા કોઈ અન્ય વ્યક્તિની અકસ્માત્ હત્યા થઈ જાય તો તેને અકસ્માત્ દંડ કહે છે દૃષ્ટિવિપર્યાસને કારણે જે પ્રાણાતિપાત થઈ જાય છે, તેને દૃષ્ટિવિપર્યાસ દંડ કહે છે જેમકે મિત્રને અમિત્ર માનીને તેનો વધ થઈ જાય તો તે દૃષ્ટિવિપર્યાસ દંડ કહેવાય છે આ પાંચ દડનો ૧૩ ક્રિયાસ્થાનોમાં સમાવેશ થઈ જાય છે, પરંતુ અહીં

छाया-मर्षा १ अनयो २ हिंसा ३ ऋत्स्मात् ४ इष्टिश्च ५ मृषा ६ मद्दत्त ७ च ।
 मध्याह्नं ८ मानो ९ मित्रं १० माया ११ लोम १२ ऐर्षापक्षिणी १३ ॥
 इति ॥ ॥ सू० ८ ॥

अथ भास्यविशेषरूपाणि क्रियास्थानानि प्राह—

मूलम्—पञ्च किरियाओ पणगत्ताओ, त जहा—आरभिया १,
 परिगहिया २, मायावत्तिया ३, अपस्वक्त्वाणवत्तिया ४, मिच्छा
 दत्तणवत्तिया ५। मिच्छादिद्विषाणं नेरइयाणं पञ्च किरियाओ
 पणगत्ताओ त जहा आरभिया जाव मिच्छादत्तणवत्तिया ५।
 एव सत्तां निरतर जाव मिच्छादिद्विषाणं वेमाणियाणं । नवर
 विगलिंदिया मिच्छादिद्वी न भणगत्ति, सेस तहेव ॥ १ ॥ पञ्च
 किरियाओ पणगत्ताओ, त जहा—काइया १ आहिगरणिया २
 पाओसिया ३ पारितावणिया ४ पाणाइवायकिरिया ५। णेरइ
 याणं पञ्च एव चेव जाव वेमाणियाणं २। पञ्च किरियाओ पण
 गत्ताओ, त जहा—दिद्विया १ पुट्टिया २ पाड्डुच्चिया ३ सामतो
 वणिवाइया ४ साहरिथिया ५। एव णेरइयाणं जाव वेमाणियाण
 क्रिया स्थानोके बीचमें हैं, परन्तु यहाँ पाँच स्थानोंके अनुरोधसे पाँचही
 स्थान गृहीत हुए हैं । ये १३ क्रियास्थान इस प्रकारसे हैं—

“ भट्टाणद्धा हिंसा ” इत्यादि ।

इन १६ क्रिया स्थानोंमें अर्थ अनर्थ आदि ये पाँच दृष्ट आये हैं ।

इन १३ क्रिया स्थानोंसे जीव बंध होता है ॥ सू० ८ ॥

आय स्थानोने अपिआए आलतो दोषाभी पाय व स्थान भट्टण इत्याभां
 आयां छे ते १३ क्रिया स्थान नीचे प्रभावे छे—

“ भट्टाणद्धा हिंसा ” इत्यादि ते तेर क्रियास्थानोभां अर्थ, अनर्थ आदि
 आ पाँच इदो तो अभावेषा यथेसा व छे ते तेर क्रियास्थानो भटे एव
 पय भतो छे व छे ॥ सू० ८ ॥

૩। પંચ કિરિયાઓ પળ્લત્તાઓ, તં જહા—ળેસત્થિયા ૧ આળવ-
ળિયા ૨ વેયારળિયા ૩ અળાભોગવત્થિયા ૪ અળવકંઠવત્થિયા
૬, એવં જાવ વેમાળિયાળં ૪। પંચ કિરિયાઓ પળ્લત્તાઓ, તં
જહા—પેઝ્જવત્થિયા ૧ દોમવત્થિયા ૨ પઓગકિરિયા ૩ સમુદા-
ળકિરિયા ૪ ઇરિયાવહિયા ૬, એવં મળ્લુસ્સાળવિ । સેસાળં
નત્થિ ૬ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

છાયા—પચ્ચ ક્રિયા: પ્રજ્ઞસા: તથથા—આરમ્મિકી ૧, પારિગ્રહિકી ૨, માયા
પ્રત્યયા ૩, અપ્રત્યયાલ્યાનપ્રત્યયા ૪ મિથ્યાદર્શનપ્રત્યયા ૫। મિથ્યાદૃષ્ટિકાનાં
નૈરયિકાળાં પચ્ચ ક્રિયા: પ્રજ્ઞસા:, તથથા આરમ્મિકી ૧ યાવદ્ મિથ્યાદર્શનપ્રત્યયા
૫। એવં સર્વેપાં નિરન્તરં યાવદ્ મિથ્યાદૃષ્ટિકાનાં વૈમાનિકાનામ્ । નવરં વિકલે-
ન્દ્રિયા મિથ્યાદૃષ્ટયો ન મળ્યન્તે, શેષં તથૈવ ॥ ૧॥ પચ્ચ ક્રિયા: પ્રજ્ઞસા:,
તથથા—કાયિકી ૧ આધિકરણિકી ૨, પ્રાદ્વેપિકી ૩ પારિતાપનિકી ૪ પ્રાણા-
તિપાતક્રિયા ૫। નૈરયિકાળાં પચ્ચ, એવમેવ નિરન્તરં યાવદ્ વૈમાનિકાનામ્ ૨।
પચ્ચ ક્રિયા: પ્રજ્ઞસા:, તથથા—દૃષ્ટિકા ૧ પૃષ્ટિકા ૨ પ્રાતીત્યિકા ૩ સામન્તોપ-
નિપાતિકી ૪ સ્વાદસ્તિકી ૫। એવં નૈરયિકાળાં યાવદ્ વૈમાનિકાનામ્ ૩। પચ્ચ
ક્રિયા: પ્રજ્ઞસા:, તથથા—નૈસ્રુષ્ટિકી ૧ આજ્ઞાપનિકા ૨, વૈદારણિકા ૩ અનાભોગ-
પ્રત્યયા ૪ અનવકાઙ્ક્ષાપ્રત્યયા ૫। એવં યાવદ્ વૈમાનિકાનામ્ ૪। પચ્ચ ક્રિયા:
પ્રજ્ઞસા: તથથા—પ્રેમપ્રત્યયા ૧ દ્વેષપ્રત્યયા ૨ પ્રયોગક્રિયા ૩ સમુદાનક્રિયા ૪
પેર્યાપથીકી ૫। એવં મનુષ્યાળામપિ । શેષાળાં નાસ્તિ ૫॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—‘ પંચ કિરિયાઓ ’ ઇત્યાદિ—

ક્રિયા: કરણાનિ ક્રિયા—કર્મબન્ધકારણીભૂતચેષ્ટા ઇત્યર્થ, તાહિ પચ્ચ
પ્રજ્ઞસા । પચ્ચ સંઘ્યકન્થમેવાહ—‘ આરમ્મિકી ’ ઇત્યાદિ । તત્ર—આરમ્મિકી—આ-

અવ સૂત્રકાર આસ્રવ વિશેષરૂપ ક્રિયા સ્થાનોંકી પ્રરૂપણા કરતે હૈ—

‘ પંચ કિરિયાઓ પળ્લત્તાઓ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧ ॥

ટીકાર્થ—કર્મબન્ધ કારણભૂત જો ચેષ્ટા વિશેષ હૈ, વે ક્રિયાઈ હૈ, ચે ક્રિયાઈ

હવે સૂત્રકાર આસ્રવવિશેષ રૂપ ક્રિયા સ્થાનોની પ્રરૂપણા કરે છે

ટીકાર્થ—“ પંચ કિરિયાઓ પળ્લત્તાઓ ” ઇત્યાદિ—

કર્મબન્ધનમા કારણભૂત જે ચેષ્ટાવિશેષો હોય છે, તેમને ક્રિયાઓ કહે

સ્થા—૬

રમ્મ-પૃથ્વીપાણુપમર્દન, સ પ્રયોજન, યસ્યાઃ મા-પૃથ્વીપાણુપમર્દનરૂપા ક્રિયે
ત્યર્થઃ ॥૧॥ તથા-પારિમિદિકી-પરિપદ્ધતિ=ધર્મોપકરણાતિરિક્તવસ્તુપદ્ધતિ ધર્મોપકરણે
મૂર્છાંવા, ન પ્રયોજન યસ્યાઃ સા પરિમિદાયો ક્રિયત્યથા ॥૨॥ તથા-માયા પ્રત્યયા
માયા=મનાઝવમ્, ઉપલક્ષ્યત્વાત્ ક્રોધાદિ રવિ સા પ્રત્યય =કારણ યસ્યા સા,
માયાનિષ્ચિની ક્રિયે-ત્યર્થઃ ॥૩॥

અપ્રત્યાક્ષ્યાનપ્રત્યયા-અપ્રત્યાક્ષ્યાનમ્=અનિવૃત્તિઃ, સત્ પ્રત્યયો યસ્યા સા,
અપ્રત્યાક્ષ્યાનપ્રત્યા ક્રિયત્યર્થઃ ॥૪॥ તથા-મિધ્યાદર્શનપ્રત્યયા-મિત્યા=ચિપ
રીતદર્શન=અદ્વાન, સદેવ, પ્રત્યયો હેતુર્યસ્યા સા, મોહોદયજ-યા ત્રિયેત્યર્થઃ

પાંચ કહી ગઈ છે-આરમ્મિકી ૧ પારિમિદિકી ૨ માયાપ્રત્યયા ૩ અપ્ર-
ત્યાક્ષ્યાન પ્રત્યયા ૪ ઓર મિધ્યાદર્શન પ્રત્યયા જિમ ક્રિયાકા પ્રયોજન
પૃથ્વી આદિકા ઉપમર્દન કરનેરૂપ હોતા છે, વહ આરમ્મ ક્રિયા છે,
આરમ્મ વિના પ્રાણાનિપાત્ત હોના નહીં છે, ફસલિયે આરમ્મ ક્રિયાકો
પૃથ્વીકાયાિક આદિકે ઉપમર્દનરૂપ કહા ગયા છે, ધર્મોપકરણ
સે અતિરિક્ત વસ્તુઓકા ઘટ્ટણ કરના અથવા ધર્મોપકરણમેં મૂર્છા
રહના વહ પ્રયોજન જિસ ક્રિયાકા હોના છે વહ પારિમિદિકી ક્રિયા છે,
જિસ ક્રિયાકા કારણ માયા યે ઉપલક્ષણસે ક્રોધાદિક મી હોતે છે,
વહ માયાપ્રત્યયા ક્રિયા છે, અનિવૃત્તિ સ્થાગકા અભાય અપ્રત્યાક્ષ્યાન
છે, વહ અપ્રત્યાક્ષ્યાનમાય જિમ ક્રિયાકા કારણ હોતા છે, વહ અપ્રત્યા
ક્ષ્યાનજન્ય ક્રિયા અપ્રત્યાક્ષ્યાન ક્રિયા છે, ચિપરીત દર્શનકા નામ મિધ્યા
દર્શન છે વહ મિધ્યાઅદ્વાનરૂપ મિધ્યાદર્શન જિસ ક્રિયાકા હેતુ હોતા

છે એવી ક્રિયાઓ પાંચ કહી છે—(૧) આરમ્મિકી, (૨) પારિમિદિકી, (૩)
માયાપ્રત્યયા, (૪) અપ્રત્યાક્ષ્યાનપ્રત્યયા અને મિધ્યાદર્શનપ્રત્યયા.

જે ક્રિયાનું પ્રયોજન પૃથ્વીકાય આદિને ઉપમર્દન કરવા રૂપ હોય છે,
તે 'આરમ્મ ક્રિયા' છે આરમ્મ વિના પ્રાણાનિપાત્ત થતો નથી તેથી આરમ્મ
ક્રિયાને પૃથ્વીકાયિક આદિના ઉપમર્દન રૂપ કહેવામાં આવેલ છે ધર્મોપકરણ
સિવાયની વધારાની વસ્તુઓને ઘટ્ટણ કરવી અથવા ધર્મોપકરણમાં મૂર્છાભાવ
રાખવા રૂપ પ્રયોજન જે ક્રિયાનું હોય છે તે ક્રિયાને પારિમિદિકી ક્રિયા કહે
છે જે ક્રિયાનું કારણ માયા હોય છે અને ઉપલક્ષણથી ક્રોધાદિક પણ હોય
છે તે ક્રિયાને માયાપ્રત્યયા ક્રિયા કહે છે અનિવૃત્તિ (સ્થાગના અભાય) ને
અપ્રત્યાક્ષ્યાન કહે છે તે અપ્રત્યાક્ષ્યાન ભાવ જે ક્રિયાનું કારણ હોય છે, તે
અપ્રત્યાક્ષ્યાનજન્ય ક્રિયાને અપ્રત્યાક્ષ્યાન પ્રત્યયા ક્રિયા કહે છે વિપરીત દર્શન
નું નામ મિધ્યાદર્શન છે તે મિધ્યાઅદ્વાન રૂપ મિધ્યાદર્શન જે ક્રિયાનું

૧૫૥૥ ઇતિ । એતા ઠિ પશ્ચ ક્રિયા મિથ્યાદૃષ્ટિનૈરગિકાદિ-મિથ્યાદૃષ્ટિકૈવા
નિકાન્તાનાં ચતુર્વિંશતિદણ્ડકોક્તાનાં મગ્નિતિ । ચતુર્વિંશતિ દણ્ડકે તુ યે વિક-
લેન્દ્રિયાઃ=એકદ્વિત્રિચતુરિન્દ્રિયાઃ સન્તિ, તે ઠિ મિથ્યાદૃષ્ટીતિ વિશેષણેન ન
વિશિષ્યન્તે, તેષુ સદૈવ સમ્યગ્દૃષ્ટિવાભાવેન વ્યવચ્છેયામાવાત્ । નન્તુ તેષ્વપિ
સાસાદના મગ્નિતિ, તત્તથ તેષામપિ મિથ્યાદૃષ્ટીતિ વિશેષણં યોજ્યમેવેતિચેન્ન,
તેષામત્પત્ત્વેનેદાવિવક્ષગાદિતિ । અમુમેવાર્થમાહ મૂત્રકારઃ-‘ મિચ્છાદિદ્વિયાણં નૈર-

હૈ, એસી વહ મોહકે ઉદયસે ઉત્પન્ન હુઈ ક્રિયા મિથ્યાદર્શન ક્રિયા હૈ,
યે પાંચ ક્રિયાઈ મિથ્યાદૃષ્ટિ નૈરગિકસે લેકર મિથ્યાદૃષ્ટિકૈવાનિક
તકકે સમસ્ત ચૌવીસ દણ્ડકમેં હોની હૈં, ચૌવીસ દણ્ડકમેં જો એકેન્દ્રિય
દોહન્દ્રિય તેદ્વન્દ્રિય ઓર ચૌહન્દ્રિય જીવ હૈં વે “ મિથ્યાદૃષ્ટિ ” હસ વિશે-
ષણસે વિશેષિત નહીં હોતે હૈં, ક્યોંકિં ઇનમેં સમ્યગ્દૃષ્ટિત્વકે અભાવસે
વ્યવચ્છેય હોનેકા અભાવ હૈ, અર્થાત્ ઇનમેં યદિ સમ્યગ્દૃષ્ટિ કોઈ જીવ
પાયા જાતા તો ડસ દૃષ્ટિકે અભાવસે યહાં મિથ્યાદૃષ્ટિત્વ આતા હૈ,
પરન્તુ યહાં તો એસી હાલત હૈ નહીં-અતઃ યે મિથ્યાદૃષ્ટિ વિશેષતાવાલે
નહીં કહે જાતે હૈં । યદિ યહાં પર એસી આશંકા કી જાવે કિ ઇનમેં ઓ
સાસાદન સમ્યગ્દૃષ્ટિ હોતે હૈં, અતઃ યહ દૃષ્ટિ જિનકે નહીં હૈં વે મિથ્યા-
દૃષ્ટિ હૈં, હસ તરફ ડનમેં ઓ “ મિથ્યાદૃષ્ટિ ” યહ વિશેષણ લગાના
ચાહિયે સો હસકા સમાધાન એસા હૈ, કિ જિનમેં સાસાદન સમ્યગ્દૃષ્ટિ

કારણ હોય છે, એવી ઓહના ઉદયથી ઉત્પન્ન થયેલી ક્રિયાને મિથ્યાદર્શન
ક્રિયા કહે છે મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકોથી લઇને વૈમાનિકો પર્યન્તના ૨૪ દંડકના
સમસ્ત જીવોમાં આ પાવે ક્રિયાઓનો સદ્ભાવ હોય છે ચોવીસ દંડકમાં જે
એકેન્દ્રિય, દ્વીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને ચતુરિન્દ્રિય જીવો છે તેમને “ મિથ્યાદૃષ્ટિ ”
આ વિશેષણ લગાડી શકાતું નથી, કારણ કે તેઓમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિત્વના અભા-
વથી વ્યવચ્છેય હોવાનો અભાવ છે, એટલે કે તેઓમાં જે સમ્યગ્દૃષ્ટિ કોઈ
જીવનો સદ્ભાવ હોય, તો તે દૃષ્ટિના અભાવથી ત્યાં મિથ્યાદૃષ્ટિત્વ આવે
છે. પણ ત્યાં તો એવી હાલત નથી તેથી તેમને મિથ્યાદૃષ્ટિ વિશેષણવાળા
કહેવાતા નથી

જો અહીં એવી આશંકા કરવામાં આવે કે તેમનામાં પણ સાસાદન
સમ્યગ્દૃષ્ટિ હોય છે, તેથી આ દૃષ્ટિનો જેમનામાં અભાવ છે, તેમને મિથ્યા-
દૃષ્ટિ જ ગણવા જોઈએ. છતાં તેમને મિથ્યાદૃષ્ટિ વિશેષણ લગાડવાની શા
કારણે ના પાડવામાં આવી છે? તો આ શકાતું સમાધાન નીચે પ્રમાણે છે—

इयाण' इत्यारभ्य 'सेस तद्देव इत्यन्तेन सन्दर्भेणेति ॥१॥ पुनरपि कायिकयादिभेदेन, पञ्च क्रियाः प्राह—उपादि—कायिकी=काये मवा कायेन निर्वृत्ता या, इत्यादिभ्या पाररूपेभ्यः ॥१॥ आधिकरणीकी=अधिकरण=लङ्गादिकं तत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता । इयं द्विविधा भवति—निर्वर्तनाधिकरणक्रियासंयोजनाधिकरणक्रिया च । तत्र वा स्वप्नादीनां च दृष्ट्यादीनां च निर्वर्तनलक्षणा क्रिया सा प्रथमा । या तु निर्वृत्तानामेव तेषां संयोजनलक्षणा सा द्वितीयेति । २ । प्राद्वेषिकी—प्रद्वेषो—मात्सर्यम्—अन्य शुभदेय इत्यर्थः, तेन निर्वृत्ता या क्रिया सा—'मारयाम्येनम्'

પાયે આતે હું, પેસે વે સાસાદન સમ્યગ્દષ્ટિ બહુતહી કમ હોતે હું અત્ર વનકી યાં અધિવક્ષા હૈ, ચિવધા નહીંકી ગઈ હૈ, इसीका पुष्टि सूत्रकारने "मिच्छादिद्वियाणं नेरइयाण" यहांसे लेकर "सेसं तद्देव" यहां तकके सन्दर्भसे प्रकटकी गई है । पुनश्च—कायिकी आदिके—मेइसे क्रियाएं पांव होती हैं—इनमें जो क्रिया शरीरमें या शरीरके द्वारा होती है, वह—कायिकी क्रिया है, यह क्रिया इत्यादिके उपापाररूप होती है? आधिकरणीकी—लङ्गादिरूप अधिकरणम् या स्वप्नादिरूप अधिकरणके द्वारा जो क्रिया होनी है वह आधिकरणकी क्रिया है, यह क्रिया दो प्रकारकी होती है—एक निर्वर्तनाधिकरण क्रिया और दूसरी संयोजनाधिकरण क्रिया इनमें जो स्वप्नादिकोंका या उनकी मूठ आदिका बनाना है, वह निर्वर्तनाधिकरण क्रिया है, तथा जो स्वप्नादिकोंका और उनकी मूठ आदिका परस्परमें संयोजन है, वह संयोजनाधिकरण क्रिया है । प्रद्वेष नाम मात्सर्यका है, अपने शुभके प्रति प्रेपरूप परिणतिका होना इसका

તેઓમાં સાસાદન સમ્યગ્દષ્ટિ છવે બધાં જ બોલાં હોય છે તેથી સૂત્રકારે અહીં તેમને ઉદ્દેશ્ય કયો નથી. સૂત્રકારે "મિચ્છાદિદ્વિવાણં નેરइयाणं" થી લઇને "સેસં તદ્દેવ" આ સૂત્રપાઠ મુખીના કથન દ્વારા બે જ વાતની પુષ્ટિ કરી છે.

ક્રિયાના કાયિકી આદિ પાંચ લેહ પણ કહ્યા છે જે ક્રિયા શરીરમાં અથવા શરીર દ્વારા થાય છે તે ક્રિયાને કાયિકી ક્રિયા કહે છે તે ક્રિયા ઉત્પાદિની પ્રવૃત્તિ ક્રિયા કહેવા છે (૨) આધિકરણિકી ક્રિયા—તેના બે પ્રકાર કહ્યા છે—નિવર્તનાધિકરણ ક્રિયા અને સંયોજનાધિકરણ ક્રિયા તલવાર, તેની મૂઠ આદિ બનાવવાની ક્રિયાને નિવર્તનાધિકરણ ક્રિયા કહે છે તલવાર આદિ ઠાનું અને તેમની મૂઠ આદિનું પરસ્પરમાં જે સંયોજન કરવા ક્રિયા છે તેને સંયોજનાધિકરણ ક્રિયા કહે છે (૩) પ્રદ્વેષિકી ક્રિયા—અન્યના લાભને બેધને તેના પ્રત્યે ક્રિયા પણ પ્રવૃત્તિ કરવામાં આવે છે, તેનું નામ પ્રદ્વેષ છે

इत्यभुभमनः संकल्परूपा । ३। पारितापनिकी-परितापनं नाम दुःखं तेन निवृत्ता-
स्वहादिघातेन पीडाकरणरूपा ४। तथा प्राणातिपातक्रिया-प्राणाः=उच्छ्वासादयः
तेषाम् अतिरातनं=प्राणवतःसकाशाद् वियोजनं, नाशनं, प्राणातिपातः, तद्रूपा
क्रिया ५। एताः कायिक्यादयः क्रियाश्चतुर्विंशतिदण्डकोक्तनैरयिकादिवैमा-
निकान्तानां सर्वेषां बोध्याः । २।

પુનરપિ દૃષ્ટિકાદિભેદૈઃ પશ્ચ ક્રિયાઃ પ્રાઢ-તથાહિ-દૃષ્ટિકા-દૃષ્ટં=દર્શનમ્=
અવલોકનં તદ્વિષયં વસ્તુ વા નિમિત્તતયા યસ્યામસ્તિ સા દૃષ્ટિકા-અશ્વાદિ ચિત્ર-
નામ માત્સર્યં હૈ, હસ માત્મર્યરૂપ પ્રદેષસે જો ક્રિયા હોતી હૈ, વહ પ્રાદે-
ષિકી ક્રિયા હૈ, યહ પ્રાદેષિકી ક્રિયા “મેં હસે મારું” હસ પ્રકારકે
માનસિક સંકલ્પરૂપ હોતી હૈ ૩। પરિતાપન નામ દુઃખ હૈ હસ દુઃખ રૂપ
પરિતાપનસે જો ક્રિયા હોતી હૈ, વહ પારિતાપનિકી ક્રિયા હૈ, યહ ક્રિયા
સ્વહ્ર આદિકે ઘાનસે પીડા કરનેરૂપ હોતી હૈ ૪। તથા ઉચ્છ્વાસ આદિ
પ્રાણોંકા પ્રાણવાલેસે વિયોજન કરનાં હસકા નામ પ્રાણાતિપાત હૈ, ઓર
હસ રૂપ જો ક્રિયા હૈ, વહ પ્રાણાતિપાત ક્રિયા હૈ ૫। યે કાયિકી આદિ
ક્રિયાઁ ચૌદીસ દણ્ડકોક્ત નૈરયિકસે લેકર વૈમાનિક તકકે સમસ્ત
જીવોંકો હોતી હૈ ૨।

પુનશ્ચ-દૃષ્ટિક આદિકે ભેદસે ક્રિયાઁ પાંચ પ્રકારકી હોતીહૈ, જૈસે-
દૃષ્ટિકા ૧ આદિ હનમેં દર્શનકા નામ દૃષ્ટહૈ, અથવા-અવલોકનકા-દેખનેકા
નામ દૃષ્ટ હૈ, અથવા-અવલોકનકી વિષયભૂત જો વસ્તુ હૈ, વહ દૃષ્ટ હૈ,

આ પ્રદેષને કારણે જે ક્રિયા થાય છે તેને પ્રાદેષિકી ક્રિયા કહે છે “ હુ તેને
મારું ” આ પ્રકારના માનસિક સંકલ્પ રૂપ આ ક્રિયા હોય છે. (૪) પરિ-
તાપનિકી ક્રિયા--પરિતાપન એટલે દુઃખ આ દુઃખરૂપ પરિતાપન વડે જે ક્રિયા
થાય છે તેને પરિતાપનિકી ક્રિયા કહે છે લાકડી, તલવાર આદિના ઘા વડે
પીડા કરવા રૂપ આ ક્રિયા હોય છે. (૫) પ્રાણાતિપાત ક્રિયા-ઉચ્છ્વાસ આદિ
પ્રાણોને પ્રાણવાળા જીવોમાથી અલગ કરવા તેનું નામ પ્રાણાતિપાત છે તે
પ્રાણાતિપાત રૂપ જે ક્રિયા હોય છે તેને પ્રાણાતિપાત ક્રિયા કહે છે કાયિકીથી
લઈને પ્રાણાતિપાત પર્યાન્તની પાંચે ક્રિયાઓનો નારકોથી લઈને વૈમાનિકો
પર્યાન્તના ૨૪ દહકેના સમસ્ત જીવોમા સદ્ભાવ હોય છે

દૃષ્ટિકા આદિના લેડથી પણ ક્રિયાઓ પાંચ પ્રકારની ઠહી છે-દર્શનનું
નામ દૃષ્ટ છે અથવા અવલોકનનું નામ દૃષ્ટ છે અથવા અવલોકનનાં વિષય

કર્મોદિર્શનાર્થ ગમનરૂપેત્યર્થઃ । યદ્વા-‘દૃષ્ટિજા’ ઇતિજ્ઞાયા । દૃષ્ટમાર્ગા-
દૃષ્ટિજા દર્શનજનિતા ક્રિયત્યર્થઃ । ૧। પૃષ્ટિકા-પૃષ્ટ-અન્ના, યદગ્નિ નિમિત્ત
ત્વા યસ્માં સા-મીવાદીન્ રાગાદિના પૃષ્ઠતો યા ક્રિયા સા સાવયમશ્રમજનિતા
ક્રિયેત્યર્થઃ । ‘સ્પૃષ્ટિકા’ ઇતિ યા જ્ઞાયા । સ્પૃષ્ટ-સ્પર્શન તદગ્નિ નિમિત્તત્વે
યસ્માં સા-રાગાદિના સ્પૃશ્વતો યા ક્રિયા સા સ્પર્શમન્યા-ક્રિયેત્યર્થઃ । ‘પૃષ્ટિજા’
ઇતિ યા જ્ઞાયાવક્ષ્ય પૂર્વોક્તપ્રવાધા ધોષ્યાઃ ॥

યદ્દ દૃષ્ટ નિમિત્ત રૂપસે જિમ ક્રિયામેં હે યદ્દ દૃષ્ટિકા ક્રિયા હે, યદ્દ
દૃષ્ટિકા ક્રિયા અન્નાદિકે વિષ્ણુ આદિકો દેવનકે લિયે ગમન કરન રૂપ
(જાને રૂપ) હોતી હે, અથવા-“ વિદિવા ”કી સંસ્કૃત જાયા “ દૃષ્ટિજા ”
એસી બી હો સક્તી હે, હમ પશ્ચમેં દેવનેસે જો ક્રિયા હોતી હે, યદ્દ
દૃષ્ટિજા ક્રિયા હે એસા અર્થ હોના હે ૧। પૃષ્ટિકા-પૃષ્ટ નામ પ્રશ્નકા હે,
યદ્દ પ્રશ્ન જિમ ક્રિયામેં નિમિત્તરૂપસે હોના હે યદ્દ દૃષ્ટિકા ક્રિયા હે,
એસી યદ્દ પૃષ્ટિકા ક્રિયા જીવાદિકોકે વિષયમેં યા રાગાદિકોકે વિષ
યમેં પૂછનવાલેકો હોતી હે, અથવા-સાવય પ્રશ્નસે જો ક્રિયા ઉત્પન્ન
હોતી હે, યદ્દ દૃષ્ટિકા ક્રિયા હે, અથવા-“ પુદ્ધિવા ”કી સંસ્કૃત જાયા
“ સ્પૃષ્ટિકા ” એસી બી હોતી હે, હસકા અર્થ એસા હોતા હે, કિ જિમ
ક્રિયામેં સ્પર્શન નિમિત્ત હોના હે, યદ્દ સ્પૃષ્ટિકા ક્રિયા હે, રાગાદિકે

હપ ને વસ્તુ છે તેનું નામ દૃષ્ટ છે જે કિશમાં આ દૃષ્ટ નિમિત્ત-હપ હોય
છે તે ક્રિયાને દૃષ્ટિકા ક્રિયા કહે છે આ દૃષ્ટિકા ક્રિયા અન્નાદિકાના વિષયને
જોવાને માટે પ્રયત્ન કરવા હપ હોય છે

અથવા “ વિદિવા ” ની સંસ્કૃત જાયા “ દૃષ્ટિકા ” દેવામાં આવે તે
તેના અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-“ દેખવાથી જે ક્રિયા થાય છે, તેને દૃષ્ટિકા
ક્રિયા કહે છે ”

(૨) પૃષ્ટિકા ક્રિયા-પૃષ્ટ જોડે જે પૂછવામાં આવે તે પ્રશ્ન જે
ક્રિયામાં તે નિમિત્ત હપ હોય છે, તે ક્રિયાને પૃષ્ટિકા ક્રિયા કહે છે જ્યા
જિંદાના વિષયમાં અથવા રાજાદિકેના વિષયમાં પ્રશ્ન પૂછનારને આ ક્રિયા
લાગે છે અથવા-“ સાવય પ્રશ્નથી જે ક્રિયા ઉત્પન્ન થાય છે તેને પૃષ્ટિકા
ક્રિયા કહે છે અથવા “ પુદ્ધિવા ” ની સંસ્કૃત જાયા “ સ્પૃષ્ટિકા ” ‘પર્શ’ થાય
તેના અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-“ જે કિશમાં સ્પર્શ નિમિત્ત હપ હોય છે
તે ક્રિયાને સ્પૃષ્ટિકા ક્રિયા કહે છે ” સ્પર્શદિકેને વશવર્તી થઈને સ્પર્શ કરનાર

પ્રાતીતિકી-વાહ્યં વસ્તુ જીવાંજીવ પ્રતીત્ય=આશ્રિત્ય યા ક્રિયા ભવતિ સા
૧. સામન્તોપનિપાતિકી-સમન્તાત્=સર્વત ઉપનિપાતઃ=જનનાં સમ્મિલનં, તત્ર-
મવા ક્રિયા । અથ્વાદિ સ્થાદિકં લોકાઃ પ્રશંસન્તિ, તત્પ્રશંસાં શ્રુત્વા પ્રહૃષ્યતોઽથ્વા-
દિરથાદિપતેરિયં ક્રિયા ભવતિ ૪। તથા-સ્વાહસ્તિકી-સ્વહસ્તેન નિર્ઠૃત્તા ક્રિયા ।
સ્વહસ્તગૃહીતજીવાદિના જીવાન્ મારયતઃ ક્રિયા સ્વાહસ્તિકીત્યુચ્યતે ૫। एताः
पञ्चापि क्रिया नैरयिकादि वैमानिकान्तानां भवन्तीति ॥३॥

વશવર્તી હોઠ્ઠર છૂનેવાલે વ્યક્તિકી જો સ્પર્શજન્ય ક્રિયા હૈ, વહ સ્પૃષ્ટિકા
ક્રિયા હૈ અથવા-“ સ્પૃષ્ટિકા સ્પૃષ્ટિકા ” હસ પક્ષમેં મી યહી પૂર્વોક્ત
અર્થ હૈ ૨। પ્રાતીતિકી જીવ અજીવ રૂપ વાહ્ય વસ્તુકો પ્રતીત કરકે આ-
શ્રિત કરકે જો ક્રિયા હોતી હૈ વહ પ્રાતીતિકી ક્રિયા હૈ ૩. સામન્તો-
પનિપાતિકી સવ તરફસે મનુષ્યોંકો જો સમ્મિલન હોતા હૈ, વહ સામ-
ન્તોપનિપાત હૈ, હસ સામન્તોપનિપાતમેં જો ક્રિયા હોતી હૈ, વહ સામ-
ન્તોપનિપાતિકી ક્રિયા હૈ, પરસ્પર મમ્મેલનમેં અશ્વરથાદિકી લોક જઘ
પ્રશંસા કરતે હૈ તચ હસ પ્રશંસાકો સુનકર હર્ષિત હોતે હુ઼. અશ્વરથા-
ધિપતિકે યહ ક્રિયા હોતી હૈ ૪। સ્વાહસ્તિકી-અપને હાથસે જો ક્રિયા
નિષ્પન્ન હોતીહૈ વહ સ્વાહસ્તિકી ક્રિયાહૈ, અપને હસ્તસે ગૃહીત જીવાદિકોં
દ્વારા જીવોંકો મારનેવાલે પ્રાણીકી ક્રિયા સ્વાહસ્તિકી ક્રિયા કહલાતીહૈ
૫। ये पांच क्रियाएँ नैरयिकसे लेकर वैमानिक तकके जीवोंको हातीहैं३।

વ્યક્તિની જે ક્રિયા હોય છે તેને સ્પૃષ્ટિકા ક્રિયા કહે છે અથવા “ સ્પૃષ્ટિકા
સ્પૃષ્ટિકા ” આ સંસ્કૃત છાયા લેવામા આવે તો પણ તેના ઉપર મુજબ જે
અર્થ થાય છે.

(૩) પ્રાતીતિકી ક્રિયા—જીવ અજીવ રૂપ વાહ્ય વસ્તુને પ્રતીત કરીને
આશ્રિત કરીને જે ક્રિયા થાય છે, તેને પ્રાતીતિકી ક્રિયા કહે છે

(૫) સામન્તોપનિપાતિકી ક્રિયા—ચોમેરથી આવીને માણસોનુ જે સમ્મિ-
લન થાય છે, તેને ‘ સામન્તોપનિપાત ’ કહે છે આ સામન્તોપનિપાતમાં જે
ક્રિયા થાય છે, તેને સામન્તોપનિપાતિકી ક્રિયા કહે છે આવા સમ્મેલનમા
અશ્વ, રથ આદિની જ્યારે પ્રશંસા થાય છે, ત્યારે તે પ્રશંસા સાંભળીને
હર્ષિત થતા અશ્વપતિ રથપતિ અદિ આ પ્રકારની ક્રિયાવાળા હોય છે

(૫) સ્વાહસ્તિકી ક્રિયા—પોતાના હાથથી જે જે ક્રિયા થાય છે તેને
સ્વાહસ્તિકી ક્રિયા કહે છે. પોતાને હાથે પકડેલા જીવાદિકો દ્વારા જીવોને
મારવાની જે ક્રિયા થાય છે તેને સ્વાહસ્તિકી ક્રિયા કહે છે. આ પાંચે ક્રિયા-
ઓનો નારકોથી લઈને વૈમાનિકો પર્યંતના જીવોમાં સદૃશાવ હોય છે. ૧૩।

પુનરપિ પચ્ચ ક્રિયા માહ-સપાદિ-નૈમિષ્ટિકી-નિમ્બુષ્ટ-વિસર્જન પાપાનાદીનાં પ્રસવનમિતિ યાવત્, સપ્ત મથા ક્રિયા ૧। આજ્ઞાપનિકા-આજ્ઞાપનમ્પ=આવેશનમ્પ રૂપમ્, આજ્ઞાપનમથ ચા આજ્ઞાપની, સૈવયમ્-આજ્ઞાપનિકાઃ-આજ્ઞાપનવિપયા ક્રિયા ૧ જીવાજીવાન્ અનાયયતઃ ક્રિયત્યર્થ ૨। વૈદારણી-વિદારણમેવ વૈદારણી શાનં જીવાજીવાન્ વિદારયતઃ ક્રિયા ૩ અનામોગમત્યયા-અનામોગ =અજ્ઞાના દિક, સ ઇવ મત્યયાઃ કારણં યસ્યાઃ સા-અજ્ઞાનન પાપાદિ આવદતો નિશ્ચિયતો યા સમ્મતતો ક્રિયત્યર્થ ૪ । તથા-અનવકાઠ્ઠાપ્રત્યયા-અનવકાઠ્ઠા-સ્વસ્ત્ર

પુનઃ-ક્રિયાયે પાચ પ્રકારની છે-એસે-નૈમિષ્ટિકી ૨ આજ્ઞાપનિકા ૨ વૈદારણિકા ૩ અનામોગમત્યયા ૪ ત્યર્થ અનવકાઠ્ઠા પ્રત્યયા ૫ इनमें-જો નૈમિષ્ટિકી ક્રિયા હોતી હે, યહ પાપા ૭ આદિરે ફેરકને પર હોતી હે, આજ્ઞાપનિકા ક્રિયા જીવોંકો એવં અજીવોંકો પરકી પ્રેરણાસે આવેવાલેકે હોતી હે, જો ક્રિયા આદેશસે સમ્પન્ન રાખતી હે, યા સ્વયં આજ્ઞાપનરૂપ હોતી હે, યહ આજ્ઞાપની ક્રિયા હે, યહ આજ્ઞાપની ક્રિયાહી આજ્ઞાપનિકા ક્રિયા હે, યહ ક્રિયા આજ્ઞાપન વિપયવાલી હોતી હે, જીવોંકો એવં અજીવોંકો વિદારણ કરનેવાલેકે વૈદારણી ક્રિયા હોતી હે, जिस क्रियाका कारण अज्ञान होता है, यह अनामोग मत्यया क्रिया है, अनामोग नाम अज्ञान आदि का है यह अनामोगही जिस क्रिया का कारण होता है, ऐसी यह क्रिया अनामोग मत्यया क्रिया है, यह क्रिया अज्ञानसे पाप्रादिको उठानेवाले के या अज्ञानसे पाप्रादिकोंको धरनेवालेकी होती है, अनवकाष्ठता प्रत्यया

નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકારની ક્રિયાઓ પણ દેવા છે—(૧) નૈમિષ્ટિકી, (૨) આજ્ઞાપનિકા (૩) વૈદારણિકા (૪) અનામોગ મત્યયા અને (૫) અનવકાઠ્ઠા પ્રત્યયા ૫૪૫૨ આદિને ફેરવાથી નૈમિષ્ટિકી ક્રિયા થાય છે એ ક્રિયા આદેશ સાથે સંબંધ રાખતી હોય છે અથવા પોતે જ આજ્ઞાપન રૂપ હોય છે તેને આજ્ઞાપની અથવા આજ્ઞાપનિકા ક્રિયા કહે છે છતાં અને અછતેને પાંચી પ્રેરણાથી માનનારને કે અથવા પદોંઆક્રમણને આ ક્રિયા લાગે છે છતાં અને અછતેનું વિદારણ કરનાર વડે વૈદારણી ક્રિયા થતી હોય છે એ ક્રિયા અજ્ઞાનને કારણે થાય છે, તે ક્રિયાને અનામોગ મત્યયા ક્રિયા કહે છે અનામોગ એટલે અજ્ઞાન વગેરે આ અનામોગ જ એ ક્રિયાનું કારણ હોય છે એવી ક્રિયાને અનામોગ મત્યયા ક્રિયા કહે છે અજ્ઞાનથી પાપાદિ ઉદ્ભવ નાર કે મૂકનાર ૧ આ ક્રિયા લાગે છે પેલાના શરીર આદિ સંબંધી અન પદાને કારણે એ ક્રિયા થાય છે, તે ક્રિયાને અનવકાઠ્ઠા પ્રત્યયા ક્રિયા કહે છે

રીરાબનપેક્ષત્વં, સૈવ પ્રત્યયં-કારણં યત્યાઃ સા-દ્દહલોકા પરલોકાપાયાનપેક્ષસ્ય ક્રિયેત્યર્થઃ ૫। એતા નૈમિષ્ટિક્યાગ્નનકાઙ્કથપ્રત્યયાન્તાઃ પશ્ચાપિ ક્રિયા નૈરયિકાદિ વૈમાનિકાન્તાનાં ચતુર્વિંશતિદણ્ડકોક્તાનાં વ્રોધ્યા । પુનરપિ પશ્ચ ક્રિયાઃ પ્રાદ્-તથાદિ-પ્રેમપ્રત્યયા-પ્રેમ=રાગઃ પ્રત્યયોઃ હેતુર્વેસ્યાં ક્રિયાયાં સા, રાગજન્યા ક્રિયા ૧। દ્વેષ પ્રત્યયા-દ્વેષઃ=અપ્રીતિઃ પ્રત્યયો યત્યાં સા-દ્દેવજન્યા ક્રિયા ૨। પ્રયોગ-ક્રિયા-વીર્યાન્તરાયક્ષયોપશમાધિર્ભૂતવીર્યેણ આત્મના પ્રયુજ્યતે=વ્યાપાર્યતે इति પ્રયોગઃ મનોવાક્ષાયલક્ષણઃ, તસ્ય ક્રિયા=દારણં વ્યાપારઃ-મનોવાક્ષાયવ્યાપાર-ક્રિયા ગ્રહ છે, કિં જિસકા કારણ સ્વચ્ચરીરાદિકી અનપેક્ષા હોતી છે, ગ્રહ ક્રિયા ઉસકો હોતી છે કિં જિસે દ્દહલીક સરચન્ધી ઓર પરલોક સમ્યન્ધી ઉપાયકી પરવાહી નહીં હોતી છે, યે પાંચોંહી ક્રિયાઈ નૈરયિકસે લેકર વૈમાનિક તકકે સમસ્ત ચૌવીસ દણ્ડકસ્થ જીવોંકો હોતી હૈં ।

પુનશ્ચ--ક્રિયાઈ પાંચ પ્રકારકી હૈં-જૈસે-પ્રેમ પ્રત્યયા ૧ દ્વેષ પ્રત્યયા ૨ પ્રયોગ ક્રિયા ૩ સમુદાન ક્રિયા ૪ ઓર ઐર્યાયથિકી ક્રિયા ૫ જિસ ક્રિયામૈં પ્રેમ-રાગ હેતુ હોના છે, ગ્રહ પ્રેમપ્રત્યયા ક્રિયા છે, તાત્પર્ય ગ્રહ છે કિં જો ક્રિયા રાગસે જન્મ હોતી છે, ગ્રહ પ્રેમપ્રત્યયા ક્રિયા છે ૧ જિસ ક્રિયામૈં અપ્રીતિ કારણ હોતી છે, અર્થાત્ જો ક્રિયા દ્વેષજન્ય હોતી છે, ગ્રહ દ્વેષપ્રત્યયા ક્રિયા છે, વીર્યાન્તરાય કર્મકે ક્ષયોપશમસે આધિર્ભૂત વીર્યસે યુક્ત આત્માકે દ્વારા જો વ્યાપાર ક્રિયા જાના છે, ઉસકા નામ પ્રયોગ છે, ગ્રહ પ્રયોગ મન વચન કાર્યરૂપ હોના છે, અર્થાત્ મન વચન

આ ક્રિયા તેના દ્વારા થાય છે કે જેને અલોક અને પરલોક સમન્ધી ઉપા-યની પરવા હોતી નથી નારકોથી લઈને વૈમાનિકો પર્યાન્તના ૨૪ દહકના સમસ્ત જીવોમા આ પાંચે ક્રિયાઓનો સદ્ભાવ હોય છે । ૪ ।

ક્રિયાના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પ્રેમ પ્રત્યયા, (૨) દ્વેષ પ્રત્યયા, (૩) પ્રયોગ ક્રિયા, (૪) સમુદાન ક્રિયા અને (૫) ઐર્યાયથિકી ક્રિયા. જે ક્રિયામાં પ્રેમ-રાગ કારણરૂપ હોય છે તે ક્રિયાને પ્રેમ પ્રત્યયા ક્રિયા કહે છે એટલે કે રાગજન્ય જે ક્રિયા હોય છે તેને પ્રેમપ્રત્યયા ક્રિયા કહે છે. જે ક્રિયામાં અપ્રીતિ કારણરૂપ હોય છે, અથવા જે ક્રિયા દ્વેષજન્ય હોય છે, તેને દ્વેષપ્રત્યયા ક્રિયા કહે છે વીર્યાન્તરાય કર્મના ક્ષયોપશમથી આધિર્ભૂત વીર્યથી યુક્ત આત્મા દ્વારા જે વ્યાપાર કરાય છે, તેનું નામ પ્રયોગ છે. તે પ્રયોગ મન, વચન અને કાર્યરૂપ હોય છે એટલે કે મન, વચન અને કાર્યની

રૂપરથઃ ૩। સમુદાનક્રિયા-પ્રયોગક્રિયૈકત્વાત્વા સુહીતાનાં કર્મવર્ગીયાનાં સમ્યક્ પ્રકૃતિ-શરિમેદેન વેશ સર્વોપચારિરૂપતયા ચ આદાન=સ્વીકરણં સમુદાન, તદ્વાપા ક્રિયા, યદ્વા-સમુદાનમ્=ગ્રનસમૂહઃ, તસ્ય ક્રિયા ૪। સ્વા-પેર્પાપધિકી-ઈરણં=ગમનમ્-ઈર્પાં, તદ્વિદિષ્ટ પ વા ઈર્પાપય સ્વ મવા પેર્પાપધિકો ઉપજાન્ત

કાર્યકી ક્રિયારૂપ જો આત્માકા વ્યાપાર હૈ, યહી પ્રયોગ હૈ, ઓર યહી પ્રયોગ ક્રિયા હ, સમુદાન ક્રિયા-પ્રયોગ ક્રિયા દ્વારા વકરૂપસે ગૃહીત હુઈ કર્મવર્ગનામોંકા જો પ્રકૃતિપંચ આદિકે મેદસે ચિત્તાગ હોતા હૈ, ઓર ઉસમેંમી દેશધાતિ પંચ સર્વધાતિકે ઈર્ષોંકા પડના હોતા હૈ, યહ સમુદાન ક્રિયા હૈ, જૈસે કિસી જીવને પ્રયોગ ક્રિયા દ્વારા કાર્મણ વર્ગ નામોંકા સામાન્યરૂપમેં પંચ કિયા, અથ ઉનમેં કિત્તનિકવર્ગનામોંકા જ્ઞાનાવરણીય આદિ રૂપસે પ્રકૃતિપંચ હુમા ઉસમેંમી મતિજ્ઞાનાવરણ, સ્મૃતજ્ઞાનાવરણ, અવધિ જ્ઞાનાવરણ મન પર્યવજ્ઞાનાવરણ હસ રૂપસે જો ઉસકા પરિણમન હુમા હૈ, યહ દેશધાતિરૂપસે ઉસકા પ્રકૃતિપંચ હૈ, ઓર જો કેવલ જ્ઞાનાવરણ રૂપસે ઉસકા પરિણમનહૈ, યહ સર્વધાતિરૂપસે પ્રકૃતિપંચ હૈ, યહી હસ સમુદાન ક્રિયાકા તાત્પર્ય હૈ, અથવા-સમુદાન નામ જનસમૂહકા હૈ, હસકી જો ક્રિયા હૈ, યહ મી સમુદાન ક્રિયા હૈ ૪। ઈરણ નામ ગમનકા હૈ યહ ઈરણહી ઈર્પાં હૈ, હસ ઈર્પાંસે વિશિષ્ટ જો માર્ગ હૈ, યહ ઈર્પાપય હૈ, અર્થાત્ ગમનકા સાધક જો માર્ગ હૈ, યહ ઈર્પા

પ્રવૃત્તિરૂપ આત્માનો જે વ્યાપાર છે તેને પ્રયોગ કહે છે અને એ જ પ્રયોગ ક્રિયા છે હવે સમુદાન ક્રિયાનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—

પ્રયોગક્રિયા દ્વારા જ્યેષ્ઠ રૂપે અકલ્પ કશમેત્ત કર્મવર્ગજ્ઞાનોને પ્રકૃતિ બધ અદિ રૂપે વિકાસ થાય છે અને તેમાં પણ દેશધાતિ અને સર્વધાતિ રૂપ જે વિભાજો પડે છે તેનું નામ સમુદાન ક્રિયા કહે છે જેમકે-કોઈ એવે પ્રયોગક્રિયા દ્વારા કાર્મણ વર્ગજ્ઞાનોને સામાન્ય રૂપે બધ ક્યોં તેમાંથી કેટલીક વર્ગજ્ઞાનોને જ્ઞાનાવરણીય આદિ રૂપે પ્રકૃતિપંચ થયો. હવે તેનું જે મતિજ્ઞાનાવરણ સ્મૃતજ્ઞાનાવરણ, અવધિજ્ઞાનાવરણ અને મન પર્યવજ્ઞાનાવરણ રૂપે જે જે પરિણમન થયું છે તે દેશધાતિ રૂપે તેના પ્રકૃતિપંચ છે અને જે કેવલજ્ઞાનાવરણ રૂપે તેનું પરિણમન છે, તે સર્વધાતિ રૂપે પ્રકૃતિપંચ છે એ જ આ સમુદાન ક્રિયાનો ભાવાર્થ છે અથવા સમુદાન એટલે જનસમૂહ તે જનસમૂહની જે ક્રિયા છે તેને સમુદાન ક્રિયા કહે છે

એર્પાપધિકી ક્રિયા—“ ઈરણ ” એટલે ગમન તે ઇરણને જ ઇર્પા કહે છે જે માર્ગે થઈને ગમન કરવાનું હોય તે માર્ગને ‘ ઇર્પાપય ’ કહે છે તે

મોહક્ષીણમોહસયોગિકેવલિનાં કેવલયોગપ્રત્યયાસાતાવેદનોયકર્મવન્ધરૂપે-
ત્યર્થઃ ૧૧ પ્રેમપ્રત્યયાધૈર્મ્યાપયિક્વન્તાઃ પશ્ચકૃત્વેનોક્તાઃ ક્રિયાશ્ચતુર્વિંશતિ દણ્ડ-
કેષુ મનુષ્યાણામેવ ભવન્તિ નત્વન્યેપામ્, ઈર્થાપયિકી ક્રિયાયા ઉપશાન્તમોહા-

પથ હૈ, હસ ઈર્થાપથમેં જો ક્રિયા હોની હૈ, વહ ઈર્થાપયિકી ક્રિયા હૈ, યહ ઈર્થાપયિકી ક્રિયા ઉપશાન્ત મોહ ક્ષીણમોહ ઓર સયોગકેવલિ-
યોંકો હોની હૈ, હસકા કારણ કેવલ યોગહી હોતા હૈ, તાત્પર્ય હસ કથ-
નકા એસા હૈ, કિ યવપિ ઈર્થાકા અર્થ ગમન હૈ, પર યહ અર્થ કેવલ
વ્યુત્પત્તિ લભ્ય હૈ, ક્યોંકિ ઈર્થાપથ જો ક્રિયા હોતી હૈ, વહ કેવલ યોગસેહી
હોતી હૈ, હમલિયે ઈર્થાકા અર્થ યોગ લેના ચાહિયે. જિસ પ્રકાર કોરે
ઘડે પર ધુન મિટી નહીં જમતી હૈ, વહ ડસ પર પડ જાને પર મી તત્કાલ
ડસસે દૂર હો જાતી હૈ, વૈસેહી યોગસે જાયમાન ઈર્થાપથ ક્રિયા દ્વારા
ગૃહીત કર્મપુદ્ગલ કષાયકે અભાવમેં આત્માસે ચિત્કતા નહીં હૈ,
આતેહી વહ ડસસે અલગ હો જાતા હૈ, હસી લિયે યહ ક્રિયા ૧૧ ગ્યા
રહવે ૧૨ વારહવે ઓર ૧૩ તેરહવે ગુણસ્થાનવાલે જીવોંકો કહી ગઈહૈ,
ઈર્થાપથ ક્રિયાસે જો કર્મ હોતાહૈ, વહ સાતાવેદનીય વંધરૂપ હોતાહૈ, ઓર
હસકી કેવલ ઇક સમયકીહી સ્થિતિ હોતી હૈ, અર્થાત્ પહેલે સમય વન્ધ
હોતા હૈ દૂસરે સમય હસકા વેદન હોતા હૈ ઓર તીસરે
સમય નિર્જરણ હો જાતા હૈ યે પાંચ ક્રિયાઈં ચૌત્રીસ

ઈર્થાપથમા જે ક્રિયા થાય છે, તેને ઈર્થાપયિકી ક્રિયા કહે છે આ ઈર્થાપયિકી
ક્રિયા ઉપશાન્ત મોહ, ક્ષીણમોહ અને સયોગી કેવલીઓ દ્વારાજ થાય છે.
તેનું કારણ માત્ર યોગ જ હોય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

જો કે ઈર્થાનો અર્થ ગમન છે, પણ આ અર્થ તો માત્ર વ્યુત્પત્તિ લભ્ય
અર્થ જ છે, કારણ કે ઈર્થાપથ જે ક્રિયા હોય છે તે કેવળ યોગથી જ થાય
છે, તેથી અહીં ઈર્થાનો અર્થ યોગ લેવો જોઈએ જેમ કોરા ઘડા ઉપર રજ
આદિ જામતું નથી, કદાચ તેના પર રજ પડી હોય તો પણ તે પવન આદિ
વડે ભડી જાય છે, એ જ પ્રમાણે યોગજન્ય ઈર્થાપથ ક્રિયા દ્વારા ગૃહીત કર્મ
પુદ્ગલ કષાયને અભાવે આત્મા સાથે ચોટી જતા નથી, આવતાં સાથે જ તેઓ
આત્માથી અલગ થઈ જાય છે. તેથી ૧૧ માં, બારમાં અને તેરમા શુભસ્થાન-
વાળા છવો આ ક્રિયા કરે છે, એમ કહેવામાં આવ્યું છે ઈર્થાપથ ક્રિયા
દ્વારા આવેલું જે કર્મ હોય છે, તે સાતાવેદનીય બન્ધરૂપ હોય છે, અને
તેની માત્ર એક સમયની જ સ્થિતિ હોય છે. આ પાંચ ક્રિયાઓ ૨૪ કંડ-

દિષ્ટયેષ્વેવ સદ્ભાવાત્ । અમુમેશર્થમાહ—‘ એવ મણુસ્તાણધિ, સેસાણં પત્થિ ’
 इति । क्रियापापिस्तुतव्याख्या अस्मिन्नेव सूत्रे द्वित्यानकस्य प्रथमोद्देशकेऽवशो-
 कनीयेति ॥सू० ९ ॥

અનન્તરં કર્મવન્ધકારભીષૂતાઃ ક્રિયા ઉક્તા, સમ્પ્રતિ તત્સ્યેવ કમણો નિર્મરો
 પાપશૂતાં પરિણામાહ—

મૂઢધ્-પંચવિદ્યા પરિજ્ઞા પળ્લગ્તા, ત જહા—ઉવહિપરિજ્ઞા ૧
 ઉવસ્તયપરિજ્ઞા ૨ કષાયપરિજ્ઞા ૩ યોગપરિજ્ઞા ૪ ભક્તપાળપ
 રિજ્ઞા ૫ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

છાયા—પદ્મવિદ્યા પરિજ્ઞા મદ્દસા, વધયા—ઉપધિપરિજ્ઞા ૧ ઉપાધ્યયપરિજ્ઞા
 ૨, કષાયપરિજ્ઞા ૩ યોગપરિજ્ઞા ૪ ભક્તરાતપરિજ્ઞા ૫ ॥સૂ૦ ૧ ॥

વળ્લકર્મે કેવલ મનુષ્યોંકોહી હતીહે, અ-વ જીવોંકો નહોં છોતીહે, તથા
 પર્ણાપધિકી જો ક્રિયા હે, ઉપશાન્ત મોહનોવ ક્ષીણમોહ ઓર સયોગ
 કેવલી इन तीनकेही होती है, यही बात—‘ एवं मणुस्ताणधि सेसाण
 णत्थि ’ इत सूत्रपाठ द्वारा प्रकटकी गई है, क्रियाकी विस्तृत व्याख्या
 इसी सूत्रके विस्थानकके प्रथम उद्देशकमें देख लेनी चाहिय ॥सू० ९ ॥

इस तरहसे कर्मबंधकी कारणमूल क्रियाएँ कहीं अब सूत्रकार
 वसी कर्मकी निर्जराके उपायमूल परिज्ञाका कथन करते हैं—

‘पंचविहा परिज्ञा पल्लगता इत्यादि सूत्र १० ॥

ટીકાર્થ—પરિજ્ઞા પાંચ પ્રકારકી કહી ગઈહે જેસે ઉપધિ પરિજ્ઞા ૧ ઉપાધ્યય
 પરિજ્ઞા ૨ કષાયપરિજ્ઞા ૩ યોગપરિજ્ઞા ૪ ઓર ભક્તરાત પરિજ્ઞા ૫ जिसके

કેના બધાં છવે કારણ નથી પણ માત્ર મનુષ્યો જ કરે છે મનુષ્યોમાં પણ
 ૧૧, ૧૨ અને ૧૩ માં શુભસ્થાનવાળા મનુષ્યે જોએ છે ઉપશાન્ત મોહ
 ક્ષીણમોહ અને સયોગી કેવલી, જો ત્રણ જ ઔપાધિપદિસે ક્રિયા કરતા હોય છે
 જો જ વાત એવ મણુસ્તાણ ધિ સેસાણં પત્થિ ’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા અક્ષર
 થર્મ છે ક્રિયાની વિસ્તૃત વ્યાખ્યા આ સૂત્રના વિસ્થાનકના પહેલા ઉદ્દેશમાં
 આપવામાં આવી છે તો બિન સુ પાડે છે તેવાથી તે વાંચી લેવી. ॥ સૂ. ૬ ॥

આ રીતે કમળ ખનના કારણમૂલ ક્રિયાઓનું નિરૂપણ કરીને હવે સુવ
 કાર જો જ કમની નિર્જરાના ઉપાયરૂપ પરિજ્ઞાનું કથન કરે છે

‘ પંચવિદ્યા પરિજ્ઞા પળ્લગતા ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—પરિજ્ઞા પાંચ પ્રકારની કહી છે—(૧) ઉપધિ પરિજ્ઞા (૨) ઉપાધ્યયપરિજ્ઞા,
 (૩) કષાય પરિજ્ઞા, (૪) યોગ પરિજ્ઞા અને (૫) ભક્તરાત પરિજ્ઞા.

ટીકા—‘ પંચવિદ્યા ’ इत्यादि—

परिज्ञा-परिज्ञायते इति परिज्ञा-कल्पनीयाकल्पनीयवरतुस्वरूपस्य ज्ञानं, तत्पूर्वकं प्रत्याख्यानं च । इयं द्रव्यतो भावतश्च भवति । तत्र द्रव्यतोऽनुपयुक्तस्य, भावतस्तूपयुक्तस्य भवति । तदुक्तम्—

“ भावपरिणा जाणणं पच्चक्खणां च भावेण ”

छाया—भावपरिज्ञाज्ञानं प्रत्याख्यानं च भावेन इति ।

तत्र द्रव्यपरिज्ञा सचित्ताचित्तमिश्रभेदेन त्रिविधा भवति, भावपरिज्ञा तु ज्ञपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदेन द्विविधा भवति । द्रव्यभावभेदभिन्ना एषा परिज्ञा उपध्यादिभेदेन पञ्चविधा भवति । तथाहि-उपधि-परिज्ञा-उपधेः=रजो-हरणमदोरकमुखवस्त्रिकादेः परिज्ञा १। उपाश्रय-परिज्ञा-उपाश्रयस्य-उपश्रीयते

द्वारा जाना जाना है वह परिज्ञा है, यह परिज्ञा कल्पनीय अकल्पनीय वस्तुके स्वरूपके ज्ञानरूप होती है, एवं इस ज्ञानपूर्वक जो प्रत्याख्यान होता है, तद्रूप होती है, यह परिज्ञा द्रव्य और भाव के भेदसे दो प्रकारसे होती है, अनुपयुक्त आत्माके जो परिज्ञा होती है, वह द्रव्यपरिज्ञा है, और उपयुक्त आत्माके जो परिज्ञा होती है, वह भाव परिज्ञा है । कहा भी है

“ भावपरिणा जाणणं ” इत्यादि । क्योंकि प्रत्याख्यान भावसे होता है, इसलिये भावपरिज्ञा ज्ञानरूप होती है, द्रव्यपरिज्ञा सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारकी होती है और जो भावपरिज्ञा है, वह ज्ञपरिज्ञा और प्रत्याख्यान परिज्ञाके भेदसे दो प्रकारकी होती है, द्रव्य ओर भावके भेदसे भेदवाली यह परिज्ञा उपधि आदिके भेदसे

જેના દ્વારા જાણવામાં આવે છે તે પરિજ્ઞા છે. કલ્પનીય અને અકલ્પનીય વસ્તુના સ્વરૂપના જ્ઞાનરૂપ તે પરિજ્ઞા હોય છે, અને આ પ્રકારના જ્ઞાન-પૂર્વક જે પ્રત્યાખ્યાન થાય છે, તે પ્રત્યાખ્યાન રૂપ તે હોય છે તે પરિજ્ઞા દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી બે પ્રકારની હોય છે અનુપયુક્ત આત્માની જે પરિજ્ઞા હોય છે તેને દ્રવ્યપરિજ્ઞા કહે છે, અને ઉપયુક્ત આત્માની જે પરિજ્ઞા હોય છે તેને ભાવપરિજ્ઞા કહે છે કહ્યું પણ છે કે—

“ ભાવપરિણા જાણણં ” ઇત્યાદિ—

પ્રત્યાખ્યાન ભાવથી થાય છે, તે કારણે ભાવપરિજ્ઞા જ્ઞાનરૂપ હોય છે. દ્રવ્યપરિજ્ઞાના સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર એવાં ત્રણ ભેદ પડે છે, અને ભાવ પરિજ્ઞાના જ્ઞપરિજ્ઞા અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞા નામના બે ભેદ પડે છે. દ્રવ્ય અને ભાવરૂપ મુખ્ય બે ભેદોવાળી આ પરિજ્ઞા ઉપધિ આદિના ભેદથી

સપ્તમાત્રાનિર્વાહાય ચ ત્ત ઉપાશ્રય' = વસતિરૂપસ્તસ્ય પરિજ્ઞા ૨। કપાયપરિજ્ઞા-
કપાયાઃ = મોહનીયકર્મપુરુષશ્ચાદયસમ્પાદ્યજીવપરિણામા ક્ષોભમાનમાયા સોમા તેષાં
પરિજ્ઞા ૩। યોગારિજ્ઞા-યોગા = મનોયોગાદય, તેષાં પરિજ્ઞા ૪। તથા મક્ષપાનપરિજ્ઞા-
મક્ષપ્ = મશ્નમોદનાદિ પાન = વેપ પ્રાસુકજલાદિ, તથો પરિજ્ઞા ૫। इति ॥ ૧૦ ॥

પરિજ્ઞા ચ વ્યવહારવર્ણા મવતીતિ વ્યવહારં પ્રરૂપયતિ—

સૂક્ષ્મ-પચવિદે વચ્ચારે પળણત, ત જહા આગમે ૧ સુષ
૨ માળા ૩ ધારણા ૪ જીવ ૫। જહા સે તત્થ આગમે સિયા
આગમેણં વચ્ચાર પટ્ટવેજ્જા ૧, ણો સે તત્થ આગમે સિયા,
જહા સે તત્થ સુષ સિયા, સુષણં વચ્ચાર પટ્ટવેજ્જા ૨, ણા સે
તત્થ સુષ સિયા ૩, એવ જાવ જહા સે તત્થ જીવ સિયા ૪ જીવણં
પાંચ પ્રકારની હોતી છે, इनमं रजोहरण एवं सुखवस्त्रिणा आदिकी जो
परिज्ञा है वह उपधिपरिज्ञा है १। जो समय यात्राके निर्वाहके लिये
आश्रित किया जाता है वह उपाश्रय है, इस उपाश्रयकी जो परिज्ञा है,
वह उपाश्रयपरिज्ञा है २। मोहनीय कर्मके पुद्गलोंके उदयसे उत्पन्न
हुए जो क्षोभ मान माया और लोभ रूप जीवके परिणाम हैं, ये कपाय
हैं इन कपायोंकी जो परिज्ञा है, वह कपाय परिज्ञा है, मन बचन और
कायरूप योगोंकी जो परिज्ञा है, वह योगपरिज्ञा है, तथा मोदनादिरूप
अशानकी एव प्रासुक जलादिरूप वेपकी जो परिज्ञा है, वह मक्षपान
परिज्ञा है ॥ सू० १० ॥

પાંચ પ્રકારની છે એ તેમાં રજોહરણ, સુખવસ્ત્રિણા આદિની જે પરિજ્ઞા છે,
તેને ઉપધિ પરિજ્ઞા કહે છે સમય યાત્રાના નિર્વાહને માટે જે સ્થાનનો
આશ્રય લેવામાં આવે છે તે સ્થાનનું નામ ઉપાશ્રય છે તે ઉપાશ્રયની
જે પરિજ્ઞા છે તેને ઉપાશ્રય પરિજ્ઞા કહે છે મોહનીય કર્મનાં
પુદ્ગલોના ઉદયને લીધે ઉત્પન્ન થયેલ ક્ષોભ માન, માયા અને લોભરૂપ જીવનું
જે પરિણામ છે તેને કપાય કહે છે તે કપયોની જે પરિજ્ઞા છે તેને કપાય
પરિજ્ઞા કહે છે મન, વચન અને કાયરૂપ યોગોની જે પરિજ્ઞા છે તેને યોગ
પરિજ્ઞા કહે છે તથા જાત આદિ રૂપ અશાનની અને પ્રાસુક જલાદિ રૂપ
પાનની જે પરિજ્ઞા છે તેને મક્ષપાનપરિજ્ઞા કહે છે. ॥ સૂ. ૧૦ ॥

વ્યવહારં પટ્ટવેજ્જા ૫। ઇચ્છેણ્હિં પંચહિં વ્યવહારં પટ્ટવેજ્જા, આગ-
મેણં જાવ જીણં । જહા જહા સે તત્થ આગમે જાવ જીણ તહા
તહા વ્યવહારં પટ્ટવેજ્જા । સે કિમાહુ ભંતે ? આગમવલિયા
સમણા ણિગંથા ? ઇચ્છેયં પંચવિહં વ્યવહારં જયા જયા જહિં
જહિ તયા તયા તહિં તહિં અણિસ્સયોવસ્સિયં સમ્મં વ્યવહરમાણે
સમણે ણિગંથે આણાણ આરાહણ ભવઈ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

છાયા—પશ્ચવિધો વ્યવહારઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—આગમઃ ૧ શ્રુતમ્ ૨, આજ્ઞા
૩ ધારણા ૪ જીતમ્ ૫। યથા તસ્ય તત્ર આગમઃ સ્યાત્ આગમેન વ્યવહાર પ્રસ્થા-
પયેત્ ૧, નો તસ્ય તત્ર આગમઃ સ્યાત્, યથા તસ્ય તત્ર શ્રુતં સ્યાત્, શ્રુતેન વ્યવ-
હારં પ્રસ્થાપયેત્ ૨, નો તસ્ય તત્ર શ્રુતં સ્યાત્, એવં યાવત્ યથા તસ્ય તત્ર જીતં
સ્યાત્, જીતેન વ્યવહારં પ્રસ્થાપયેત્ ૫। ઇત્યેતેઃ પશ્ચવિધ્યવ્યવહારં પ્રસ્થાપયેત્—આગ-
મેન યાવદ્ જીતેન । યથા યથા તસ્ય તત્ર આગમો યાવદ્ જીતં તથા તથા વ્યવ-
હારં પ્રસ્થાપયેત્ । અથ કિમાહુ ભંદન્ત । આગમવલિકાઃ શ્રમણા નિર્ગન્થાઃ ?
ઇત્યેતે પશ્ચવિધં વ્યવહારં યદા યદા યત્ર યત્ર તદા તદા તત્ર તત્ર અનિશ્ચિતોપા-
શ્રિતં સમ્પન્ન વ્યવહરમાણઃ શ્રમણો નિર્ગન્થ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ટીકા—‘ પંચવિદે ’ इत्यादि—

વ્યવહરણં—વ્યવહારઃ—મોક્ષાર્થિમટ્ટત્તિનિવૃત્તિરૂપઃ, તદ્દેતુક્તવાદત્ર જ્ઞાન
વિશેષોઽપિ વ્યવહારઃ । સ પશ્ચવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—આગમ્યન્તે=પરિચ્છિદ્યન્તે

यह परिज्ञा व्यवहारवालोंको होती है, इसलिये अब सूत्रकार व्यव-
हारका प्ररूपण करते हैं—‘पंचविदे व्यवहारे पण्णत्ते इत्यादि’ सूत्र ११ ॥

ટીકાર્થ—વ્યવહાર પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા છે, જૈસે—આગમ ૧
શ્રુત ૨ આજ્ઞા ૩ ધારણા ૪ ઓર જીત ૫।

વ્યવહાર મોક્ષામિલાપિયોંકી પ્રવૃત્તિ ઓર નિવૃત્તિરૂપ હોના છે;

આ પરિજ્ઞા વ્યવહારવાળાના હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર વ્યવહારની
પ્રરૂપણા કરે છે “ પંચવિદે વ્યવહારે પણ્ણત્તે ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—અવહરના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) આગમ, (૨) શ્રુત
(૩) આજ્ઞા (૪) ધારણા અને (૫) જીત.

મધો મનનેતિ-આગમ, કેવલજ્ઞાન ૧ મનઃપ્રવૃત્તાના ૨ પરિજ્ઞાન ૩ ચતુર્દશ પૂર્વ ૪ દશપૂર્વ ૫ નવપૂર્વ ૬ સ્વ પર્વ ૭ ॥૧॥ શુનમ્-નવાદિ પૂર્વેષ્વોચ્ચક્ષિપ્તમ્ આચારાદિકમ્ । યથાપિ નવાદિપૂર્વાણ્યપિ મુતા-યથ, તથાડ્યપતીન્દ્રિયાર્થજ્ઞાનદેહ સ્વેન સાતિશ્ચપત્તાત્ કેવલાદ્ પર્વા આગમ-વપદશઃ । ૨। આજ્ઞા-અગીતાર્થસ્થાગ્રે ગૂઢાર્થરેર પદેશસ્થિતં ગીતાર્થં નિવેદયિતુ યદસિધારાલોચનમ્ / ગીતાર્થમાધુ નાડપિ તથેવ શુદ્ધિરન સા ॥૨॥ ધારણા-દ્રવ્યાધિપેક્ષયા યસ્મિન્નપરાધે ગીતાય

इस व्यवहारका हेतु ज्ञान विशेष होता है, अतः यह ज्ञान विशेष भी व्यवहार रूप है यह व्यवहार आगम आदिके भेदसे पांच प्रकारका जो कहा गया है, सो उसका स्मारपर्यं पेसा है जिसके द्वारा पदार्थ जाने जाते हैं। वह आगम व्यवहार है, ऐसा यह आगम व्यवहार के जलज्ञान । मन पप्र वज्ञान २ अवधिज्ञान ३ चतुर्दश पूर्व ४ दशपूर्व ५ और नवपूर्वके भेदसे ६ प्रकारका है । इन नवादि पूर्वोंसे अवशिष्ट जो आचाराद आदि हैं वे शुन हैं यद्यपि नवादि पूर्व भी भुतही हैं परन्तु भस्तीन्द्रिय अर्थज्ञानके हेतु होनेके कारण सातिषाय होनेसे केवलज्ञानकी तरह इनमें आग मका व्यवदेश होता है २। अगीतार्थके आगे गूढार्थ पदों द्वारा अन्य देशस्थित गीतार्थके पास निवेदनके निमित्त जो भविष्यारोका ओलोचन है तथा गीतार्थ साधुके द्वारा भी उसी प्रकारसे जो शुद्धिका दना है वह आज्ञा है, द्रव्यादिककी अपेक्षासे जिस अग्राधमें गीतार्थ साधुद्वारा

વ્યવહાર શ્રેષ્ઠ જિજ્ઞાસીએ ની પ્રવૃત્તિ અને નિવૃત્તિ રૂપ કોય છે

આ બ્યવહારનો હેતુ જ્ઞાનવિશેષ કોય છે તેથી તે જ્ઞાનવિશેષ પણ બ્યવહાર રૂપ છે તેના આગમ બ્યવહાર આદિ ને પાંચ પ્રકાર કહેવાનાં આવ્યાં છે તેમનું કહે રૂપથીકરણ કરવામાં આવે છે—

જેના દ્વારા પ્રકાશીને લાગુવામાં આવે છે, તે આગમ બ્યવહાર છે તે આગમ બ્યવહારના નીચે પ્રમાણે ૬ ભેદ પડે છે—(૧) કેવલજ્ઞાન (૨) મનઃ પ્રવૃત્તાજ્ઞાન (૩) અવધિજ્ઞાન (૪) ચો. પૂર્વ (૫) દશપૂર્વ અને (૬) નવપૂર્વ આ નવાદિ પૂર્વો સિવાયનાં ને આચારાંગ આદિ છે તેઓ મુતરૂપ છે એ કે નવદિ પૂર્વ પદ જનરૂપ છે પરન્તુ અતીન્દ્રિય અર્થજ્ઞાનના હેતુ કોવાને કારણે સાતિશ્ચ કોવાથી કેવલજ્ઞાનની જેમ તેઓમાં અગમનો અપરેશ થાય છે અગીતાયની આગમ ગૂઢાર્થ પદો દ્વારા અન્ય દેશસ્થિત ગીતાયની પાસે નિવેદનને નિમિત્ત ને અભિષાષાનું આલોચન છે તથા ગીતાય આધુ દ્વારા પણ એ જ પ્રકારે ને શુદ્ધિ અપાય છે તેનું નામ આજ્ઞા છે દ્રવ્યાદિકની

સાધુના યથા વિશુદ્ધિઃ કૃતા, તાં સંપ્રધાર્ય તસ્મિન્નેવાપરાધે યદન્યઃ સાધુસ્તથૈવ વિશુદ્ધિં કરોતિ સા ધારણા । અથવા-ગચ્છોપગ્રાહિણો વૈયાટ્ત્યકર્તુરશેપાનુ-ચિત્તસ્ય પ્રદર્શિતાનામ્ ઉચિતપ્રાયશ્ચિત્તપદાનાં યદ્ ધારણં સા ધારણા । ૪૧ તથા-જીતમ્-દ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવપુરુષપ્રતિસેવાઽનુગ્રહ્યા સંહનનઘૃત્યાદિ પરિહાણિમપેક્ષ્ય યત્ પ્રાયશ્ચિત્તદાનં તત્, અથવા-યત્ર ગચ્છે કારણવગ્નાદ યઃ સૂત્રાતિરિક્તઃ પ્રાય-શ્ચિત્તવ્યવહારઃ પ્રવર્તિતો વહુભિરન્યૈશ્વાપ્યનુવર્તિતઃ સઃ ॥ ૫ ॥ इति । આગમાદિ વ્યવહારપ્રદર્શિકા ગાથા અપિ અન્યત્રોક્તાઃ । તથાહિ—

જેસી વિશુદ્ધિકી ગઈ હો उस विशुद्धिको हृदयमें धारणकर उसी अप-राधमें जो अन्य साधुभी उसी प्रकारकी विशुद्धि करता है, वह धारणा है, अथवा-जो साधु गच्छका उपकार करता है; वैयाट्य करता है परन्तु यदि उससे कोई ऐसा कार्य बन जाता है, कि जो समस्त साधु-ओंको अनुचित-लगता है तो उसके निमित्त दिखलाये गये प्रायश्चित्त पदोंकी जो धारणा है वह धारणा है तथा-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एवं पुरुष प्रतिसेवाकी अनुवृत्तिसे संहनन घृति आदिकी हीनताकी अपेक्षा करके जो प्रायश्चित्त दिया जाता है वह जीत व्यवहार अथवा-जिस गच्छमें कारणके वजसे जो सूत्रातिरिक्त प्रायश्चित्त व्यवहार चल रहा है तथा अनेकोंने भी उसकी सराहनाकी हो ऐसा वह व्यवहार जीत व्यवहार है, आगम आदिरूप व्यवहारको दिखलानेवाली जो गाथाएँ

અપેક્ષાએ જે અપરાધમા ગીતાર્થ સાધુ દ્વારા જેવી વિશુદ્ધિ કરવામાં આવી-હોય તે વિશુદ્ધિને હૃદયમા ધારણ કરીને એ જ પ્રકારનો અપરાધ થઇ જતાં અન્ય સધુ પણ એ જ પ્રકારે જે વિશુદ્ધિ કરે છે તેને ધારણા કહે છે.

અથવા જે સાધુ ગચ્છનો ઉપકાર કરે છે-વૈયાટ્ય આદિ કરે છે, પરન્તુ તેના દ્વારા કોઈ એવું કાર્ય થઇ નય કે જે સમસ્ત સાધુઓને અનુચિત લાગે છે, તો તેની વિશુદ્ધિ નિમિત્તે ખતાવવામા આવેલા પ્રાયશ્ચિત્ત યદોની જે ધારણા છે, તેનુ નામ ધારણા સમજવું દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભાવ અને પુરુષ પ્રતિસેવાની અનુવૃત્તિની અપેક્ષાએ સંહનન, ઘૃતિ આદિની હીન-તાનો વિચાર કરીને જે પ્રાયશ્ચિત્ત આપવામા આવે છે તેને જીતવ્યવહાર કહે છે અથવા જે ગચ્છમાં કોઈ કારણે સૂત્ર નિરિક્ત (સૂત્રમાં જેનો આધાર ન મળતો હોય એવો) વ્યવહાર આવી રહ્યો હોય તથા અન્ય સાધુ આદિ દ્વારા જે વ્યવહારની પ્રશંસા કરાઇ હોય તેવા વ્યવહારને જીતવ્યવહાર કહે છે આગમ આદિ રૂપ વ્યવહારનુ સ્વરૂપ બતાવતી કેટલીક ગાથાઓ અન્ય શાસ્ત્રોમા અપેક્ષી છે, તે ગાથાઓ હવે અહીં આપવામાં આવે છે—

શાયા—આગમસુયવહારો, મુળદ જહા ધીરુરિસપક્ષો ।

પદ્યસ્તો ય પરોક્તો, સો વિ ય દુવિદો મુખેયન્તો ॥૧॥

છાયા—આગમધુતબ્ધવહારો, જાનીત યથા ધીરુરુપમક્ષ્ત ।

મત્પક્ષમપરોક્તઃ, સોઽપિ ચ દ્વિવિધો જ્ઞાતવ્ય ॥૧॥

શાયા—પદ્યન્તોઽવિ ય દુવિદો, હિંદિયમો ચેષ નો ય હિંદિયમો ।

હિંદિયપદ્યસ્તો વિ ય, પદ્યમુ વિસમુ નેયન્તો ॥૨॥

છાયા—મત્પક્ષોઽપિ ચ દ્વિવિધ, હિંદિયમમ્બ નો ચ હિંદિયમ્બ ।

હિંદિયમત્પક્ષોઽવિ ચ, પદ્યમુ વિસમુ જ્ઞાતવ્યઃ ॥૨॥

અર્થઃ કહી ગઈ હું કે હસ પ્રકારસે—“ આગમ સુયવહારો ” હત્યાદિ ।

“ જિસ પ્રકારસે ધીરુરુપ તીર્થંકર ગણપરાદિકોને આગમ ક્રુત બ્યવહાર આગમ બ્યવહાર કહા હૈ હૈ જિગ્ય । વસે મૈં તુમ્હે સમજાના હું તુમ હસે સુનો યહાં આગમક્રુત પે દો પદ અલગ ૨ નહોં હૈ, કિન્તુ આગમકો હૈ યહાં ક્રુત માના ગયા હૈ અતઃ આગમક્રુતરુપ જો બ્યવહાર હૈ વહ આગમ ક્રુત બ્યવહાર હૈ, એસા જામના જાહિયે । યહ આગમ બ્યવહાર પ્રત્યક્ષ ઓર પરોક્ષકે બેદસે દો પ્રકારકા કદા ગયા હૈ ॥૧॥

“ પદ્યસ્તોઽવિ ય દુવિદો ” હત્યાદિ । इनमें प्रत्यक्ष इन्द्रियजन्य प्रत्यक्ष और नो इन्द्रियजन्य प्रत्यक्षके बेटसे दो प्रकारका है, इन्द्रिय जन्य प्रत्यक्ष पांच इन्द्रियोंके अर्थको विषय करनेकी अपेक्षासे ५ प्रकारका है

“ આગમસુયવહારો ” ઇત્યાદિ—

હે શિષ્ય । ધીર પુરુષ તીર્થંકર ગણપરાદિકોને જે પ્રકારે આગમક્રુત બ્યવહારને આગમ બ્યવહાર કહ્યો છે તે હું નીચે સમજાવું છું, તો તું જ્ઞાત થઈને તે સંભળજી જાણી ‘ આગમક્રુત ’ બેક જ પદ છે આગમ અને ક્રુત અલગ અલગ પદો નથી. આગમને જ ન હોં ક્રુત માનવામાં આવેલ છે તેથી આગમક્રુત રૂપ જે બ્યવહાર છે તેને જ આગમક્રુત બ્યવહાર સમજવો. બેદસે. તે આગમ બ્યવહાર પ્રત્યક્ષ અને પરોક્ષના બેકથી મિ પ્રકારનો કહ્યો છે । ૧। “ પદ્યસ્તોઽવિ ય દુવિદો ” ઇત્યાદિ—

પ્રત્યક્ષ આગમ બ્યવહારના નીચે પ્રમાણે બે લોક પડે છે—(૧) ઇન્દ્રિય જન્ય પ્રત્યક્ષ અને (૨) નો ઇન્દ્રિય જન્ય પ્રત્યક્ષ ઇન્દ્રિય જન્ય પ્રત્યક્ષ પાંચ ઇન્દ્રિયોના અર્થને વિષય કરનારો હોવાથી પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે । ૨ ।

ગાથા—નો ઇન્દ્રિયપચ્ચક્ષો વ્યવહારો સો સમાસઓ તિવિદો ।

ઓહિમણવ્જજવે ય કેવલનાળે ય પચ્ચક્ષો ॥૩॥

છાયા—નો ઇન્દ્રિયપ્રત્યક્ષો વ્યવહારઃ સ સમાસતત્ત્વિવિધઃ ।

અવધિમનઃપર્યવં ચ કેવલજ્ઞાનં ચ પ્રત્યક્ષઃ ॥૩॥

ગાથા—પચ્ચક્ષાગમસરિસો દોઢ પરોક્ષો વિ આગમો જસ્સ ।

ચંદ્રમુદીવ ડ સો વિ હુ આગમ વ્યવહારવં દોઈ ॥૪॥

છાયા—પ્રત્યક્ષાગમનપદ્ધતો ભવતિ પરોક્ષોઽપિ આગમો यस્ય ।

ચંદ્રમુદીવ તુ સોઽપિ સ્વલુ આગમવ્યાહારવાન્ ભવતિ ॥૪॥

ગાથા—પરોક્ષવં વ્યવહાર આગમઓ સુવહારાવહરંતિ ।

ચોદસદસપુવ્વધરા નવપુર્વિકા ગંધ દત્તી ય ॥ ૫ ॥

છાયા—પારોક્ષં વ્યવહારમ્ આગમત શ્રુતધરાઃ વ્યવહરંતિ ।

ચતુર્દશ દગપૂર્વધરા નવપૂર્વિકા ગન્ધહસ્તિનઃ ॥૫॥

“ નો ઇન્દ્રિયપચ્ચક્ષો ” इत्यादि ।

નો ઇન્દ્રિયજન્ય પ્રત્યક્ષ સંક્ષેપસે ત્રીન પ્રકારકા હૈ—અવધિજ્ઞાન ૧ મનઃપર્યવજ્ઞાન ૨ ઓર કેવલજ્ઞાન ૩ ॥૩॥

“ પચ્ચક્ષાગમસરિસો ” इत्यादि

જિસ પ્રકાર સુખમે ચન્દ્રમાકા ઉપચાર કરકે, લોગ સ્ત્રી કો ચન્દ્ર-સુલી કહે દેતે હૈ—इसी प्रकारसे जिस मुनिका परोक्ष भी आगम वस्तु-स्वरूपका सम्यक् रूपसे निर्णायक होता है, तो वह मुनि भी उपचारसे आगम व्यवहारवाला कह दिया जाता है, क्योंकि उसका आगम भी प्रत्यक्षागमके जैसा मान लिया जाता है ॥४॥

“ નો ઇન્દ્રિય પચ્ચક્ષો ” इत्यादि—નો ઇન્દ્રિય જન્ય પ્રત્યક્ષ સંક્ષિપ્તમાં ત્રણ પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) અવધિજ્ઞાન, (૨) મનઃપર્યવજ્ઞાન અને કેવલજ્ઞાન । ૩ ।

“ પચ્ચક્ષાગમસરિસો ” इत्यादि—જેમ મુખમાં ચન્દ્રમાનો ઉપચાર કરીને લોકો કોઈ સ્ત્રીને ચન્દ્રમુખી કહી દે છે, એ જ પ્રમાણે જે મુનિને પરોક્ષ-આગમ પણ વસ્તુ સ્વરૂપનો સામાન્ય રૂપે નિર્ણાયક હોય છે. તે મુનિને પણ ઉપચારથી આગમ વ્યવહારવાળા કહેવામાં આવે છે, કારણ કે તેમના આગમને પણ પ્રત્યક્ષ આગમ સમાન માની લેવામાં આવે છે. । ૪ ।

ગાયા—જ જહમોલ્લ રયણં ત્વ વાગહ રયણત્રાણિઓ નિગુણ ।

इय मागह पद्यकवी जो सुन्दर जेण दिनेण ॥६॥-

છાયા—પદ્ધ યથામૂલ્ય રત્ન, તદ્ માનાતિ રત્નત્રાણિઓ નિપુણમ્ ।

इति जानाति प्रत्यक्षी, यः क्षुब्धति यन दत्तेन ॥६॥

ગાયા—રૂપસ્થ ય ત્રિજ્જુતિ વાદાસ્સં પરમનિગમસ્થ ।

ओ अत्यओ धियागह सो वरदारो अणुमाओ ॥७॥

- ॥

“પારોક્ષ્યે વ્યવહારં” રૂપાદિ ।

इस परोक्ष व्यवहारको परवार्दियोंको भगानेके लिये गद्य हस्तीके जैसे चतुर्दश पूर्वपर, दश पूर्वपर और नवपूर्वपर आगम रूपसे व्यवहार करते हैं ॥ ५ ॥

“જ જહમોલ્લ રયણ” રૂપાદિ ।

जिस रत्नका जैसा मूल्य होता है, इस बातको जिस तरह जौहरी जन अच्छी तरह जानता है, उसी तरहसे प्रत्यक्ष ज्ञानी भी इस बातको भली प्रकारसे जानता है, कि कौन अतीचारवाला किस प्रापञ्चिकसे छुद्र होना है, अतः वे उस अतिचारवालेकी उसी प्रापञ्चिकसे शुद्ध करते हैं ॥६॥

इस प्रकार जो मुनि केवलज्ञानसे मनापर्यवसानसे अवधिज्ञानसे अतिचारोंको जानकर चौदह पूर्ववारी होनेसे अतिचारोंकी विशुद्धिके जो प्रापञ्चिक देना है, वह प्रापञ्चिकज्ञान आगम व्यवहाररूपसे कहा

— ‘-પારોક્ષ્યવ્યવહાર’ રૂપાદિ—પરમગુણોને પરખ કરવાને માટે જ મહસ્તિ સમગ્ર ચોઢ પૂર્વધારી, દશ પૂર્વધારી અને નવ પૂર્વધારીઓ આ વરોક્ષ વ્યવહારને આગમ રૂપે ઉપયોગ કરે છે । ૫ ।

‘જ જહમોલ્લ રયણ’ રૂપાદિ—જેમ કથા રત્નનું કેટલું મૂલ્ય હોય છે તે હવેરી જ સારી રીતે બાળી શકે છે, એ જ પ્રમાણે પ્રત્યક્ષ જ્ઞાની પણ એ વાતને જાણે બાળી શકે છે કે કથા અતિચારવાળો કથા પ્રાપ્તિ દ્વારા શુદ્ધ થાય છે તેથી તેઓ ચોટ પ્રાપ્તિ આપીને તે અતિચારવાળાની શુદ્ધિ કરાવી શકે છે । ૬ ।

આ રીતે જે મુનિ કેવલજ્ઞાન દ્વારા, મનાપરવસાન દ્વારા કે અવધિજ્ઞાન દ્વારા અતિચારને બાળીને ચોઢ પૂર્વધારી કે દશ પૂર્વધારી કે નવ પૂર્વધારી હોવાથી અતિચારની વિશુદ્ધિને માટે જ પ્રાપ્તિ દે છે, તે પ્રાપ્તિજ્ઞાનને આગમ વ્યવહાર રૂપ માનવામાં આવે છે

છાયા—કલ્પસ્ય ચ નિર્યુક્તિ વ્યવહારસ્યૈ પરમનિપુણસ્ય ।

ય. અર્થતો વિજાનાતિ, સ વ્યવહારી અનુજ્ઞાતઃ ॥ ૭ ॥

ગાથા—તં ચેવડણુસજ્જંતે વચ્ચારવિદિ પઠંજદ્ જહુતં ।

एसो सुयव्वहारो पन्नतो वीयरामेदि ॥ ८ ॥

છાયા—તમેવ અનુપન્ન વ્યવહારવિધિ પ્રયુનક્તિ યથોક્તમ્ ।

एष श्रुतव्यवहारः पन्नतो वीतरागः ॥ ८ ॥

ગાથા—અપરકમ્મો તવસ્સી ગંતુ જો સો ઠિકારગમમીવે ।

न चरड् आगंतु मो सोहिरुरोऽपि देसाओ ॥ ९ ॥

ગયા હૈ, અવ શ્રુતનામક જો છિનોય વ્યવહાર હૈ, ઉસે સૂત્રકાર પ્રકટ કરતે હૈ—“ કલ્પસ્સ ય નિજ્જુત્તિ ” ઇત્યાદિ ।

જો મુનિ વૃહત્કલ્પ સૂત્રકી તથા પ્રાયશ્ચિત્તવિધિમે સ્ફુટ વિચારયુક્ત વ્યવહાર સૂત્રકી તથા અપિ શબ્દકે અર્થવાળે જાવ પદસે ગૃહીત નિશીથ સૂત્રકી એવ દશાશ્રુત સૂત્રકી નિર્યુક્તિકો અર્થરૂપસે જાનના હૈ, વહ મુનિ વ્યવહારી કહા ગયા હૈ—“ તંચેવાડણુસજ્જંતે ” ઇત્યાદિ ।

ઉસ વ્યવહારીકાહી અનુસરણ કરતા હુઆ જો મુનિજન અતિચારકે પ્રાપ્ત હોને પર શ્રુતોક્તિકા અનુસરણ કરકે વ્યવહારવિધિ પ્રાયશ્ચિત્તકો દેતા હૈ, ઉસ મુનિકા શ્રુતાનુસારસે વહ પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રદાનરૂપ વ્યવહાર વીતરાગિયોને શ્રુતવ્યવહાર કહા હૈ ॥ ૮ ॥

“ અપરકમ્મો તવસ્સી ” ઇત્યાદિ ।

આજ્ઞા નામકા જો તૃનોય વ્યવહાર હૈ, વહ ઇસ પ્રકારસે હૈ—જો તપસ્વી ગમનશક્તિસે હીન હો ગયા હૈ, એસા વહ તપસ્વી ઝોધિકારકકે

હવે શ્રુત નામનો વ્યવહારનો જે બીજો ભેદ છે, તેનુ સ્વરૂપ સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—“ કલ્પસ્સ ય નિજ્જુત્તિ ” ઇત્યાદિ—જે મુનિ વૃહત્કલ્પ સૂત્રની તથા પ્રાયશ્ચિત્તવિધિમા સ્પષ્ટ વિચારયુક્ત વ્યવહાર સૂત્રની તથા ‘ અપિ ’ શબ્દના અર્થવાળા “ ભાવ ” પદથી ગૃહીત નિશીથ સૂત્રની અને દશાશ્રુત સૂત્રની નિર્યુક્તિને અર્થરૂપે બાણે છે, તે મુનિ વ્યવહારી કહેવાય છે. ૧ ૭ ।

‘ તં ચેવાડણુસજ્જંતે ’ ઇત્યાદિ—જે વ્યવહારીનુ જે અનુસરણ કરીને જે મુનિજન અતિચારોની વિશુદ્ધિને માટે શ્રુતોક્તિનુ અનુસરણ કરીને જે પ્રાયશ્ચિત્ત દે છે, તે પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રદાન રૂપ વ્યવહારને વીતરાગીએ શ્રુતવ્યવહાર કહ્યો છે. ૧ ૮ ।

“ અપરકમ્મો તવસ્સી ” ઇત્યાદિ—હવે આજ્ઞા નામના ત્રીજા વ્યવહારનું સ્પષ્ટીકરણ આવે છે—કોઈ તપસ્વી ચાલવાને અશક્ત બની ગયો છે. તેથી તે

छाया—मपराक्रमस्तपस्वी गन्तु यः शोधिकारकमपीये ।

न भवतीति भाग्यन्तु स शोधिकरोऽपि दक्षात् ॥९॥

गाथा—मह पट्टवेह सीस दर्मतगमणनहृचेष्टाओ ।

इच्छामऽज्जो । काठ, तोरि तु सं सगासम्मि ॥१०॥

छाया—अथ मस्याप रति शिष्यं मेधा उरगमननहृचेष्टाः ।

इच्छाम आर्य । कर्तुं शोधि तत्र सहाओ ॥१०॥

गाथा—ओ बहहारविहिण्णू, अणुसज्जिचा सुभोषणसेर्य ।

सीसम् दे। आण, तस्स इम दह पच्छित्त ॥११॥

पासमें प्रायश्चित्त देनेवाछेके समीप जानके लिय असमर्थ हो रहा है, तथा शोधिकारक भी अपने आभित्त स्थानसे उमके पासमें आनेके लिये असमर्थ हो रहा है ॥ ० ॥

“अह पट्टवेह सीस” इत्यादि ।

ऐसी हालतमें वह तत्रस्थ उस शोधिकर प्रायश्चित्त प्रदानाके पास गृहार्थ पदोंसे युक्तकर अपने सदेशको देकर अपने शिष्यको भेजता है, उस सदेशमें वह शिष्यके मुखसे ऐसा कहलवाना है कि—हे आर्य ! मेरी अथ देशान्तरमें आनेजानेकी शक्ति नहीं है, और आपके पास प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ ॥१०॥

“सो बहहारविहिण्णू” इत्यादि ।

तब वह सदेशवादक शिष्यके मुखसे ऐसा सुनकर शास्त्रोक्त पद्धतिके अनुसार विचार करता है, कि इस प्रकारके अनिवार सेविके

शोधिकारकी पासे प्रायश्चित्त देनेवाले बर्ह शकें तेम नहीं तथा शोधिकारक (प्रायश्चित्त देनाए मुनि) भव पातना आद्यय स्थानेधी त्वा बर्ह शक्याने समर्थ नहीं । ६ ।

“अह पट्टवेह सीस” इत्यादि—आ प्रहारणी परिस्थितिर्भा ते तपस्वी ते शोधिकारणी पासे, अद्यय पदोधी मुञ्ज जेवे। पातानो सदेश कथने पाताना शिष्यने भोक्ते छ ते सदेश द्वार ते शिष्य सावे जेनु छडेवरावे छे के “छे आर्य । कवे हुं जेक जग्ग्याजेधी जीछ जग्ग्याजे भवन करी शक्याने समर्थ नहीं, तेधी हुं आपनी पासे आपी शक्त तेम नहीं, पण हुं आपनी अज्ञानुधार प्रायश्चित्त देना आशु छु” । १० ।

“सो बहहारविहिण्णू” इत्यादि—तब ते सदेशवादकने मुझे जेनु सांख्यीने ते शोधिकारक (जीताम) साधु) शास्त्रोक्त पद्धति अनुसार विचार कर छे के आ प्रहारण अनिवाराल सेवन करवावने आ प्रहारण प्रायश्चित्त

છાયા--સ વ્યવહારવિધિજ્ઞઃ, અનુપજ્ય શ્રુતોપદેશેન ।

શિષ્યાય દદાતિ આજ્ઞાં, તસ્મૈ હદ દેહિ પ્રાયશ્ચિત્તમ્ ॥૧૧॥

ગાથા--જેણડન્નયાઈ દિટ્ઠં સોહીકરણં પરસ્મ કીરતં ।

તારિસયં ચેવ પુણો, ઉપ્પણ્ણં કારણં તસ્મ ॥૧૨॥

છાયા--યેન અન્યદા દટ્ઠં, શોધિકરણં પરસ્ય ક્રિયમાણમ્ ।

તાદૃશકં ચૈવ પુનઃ, ઉત્પન્નં કારણં તસ્ય ॥૧૨॥

ગાથા--સો તસ્મિ ચેવ દઢ્ઠ્ઠે સ્વેત્તે કાલે ય કારણે પુરિસે ।

તારિસયં ચેવ પુણો કરિતુ આરાદ્ધો દોઢ ॥૧૩॥

છાયા--સ તસ્મિન્નેવ દ્રવ્યે ક્ષેત્રે કાલે ચ કારણે પુરુષે ।

તાદૃશકં ચૈવ પુનઃ, કારયન્ આરાધકો ભવતિ ॥૧૩॥

લિયે યહ પ્રાયશ્ચિત્ત દેના ચાહિયે અતઃ વહ ગૂઢાર્થ પદોસે યુક્ત કરકે પ્રાયશ્ચિત્તકો શિષ્યસે કહ દેતા હૈ, ઓર આજ્ઞા દેતા હૈ, કિ તુમ જાકર મેરી ઓરસે હસ પ્રાયશ્ચિત્તકો દેના ॥ ૧૧ ॥

“ જેણડન્નયાઈ દિટ્ઠં ” इत्यादि ।

ધારણાકા નામ ચતુર્થ વ્યવહાર હસ પ્રકારસે હૈ--જિસ સાધુને કિસી એક સમય અતિચારવાલે સાધુકો અપને અતિચારોંકી શુદ્ધિ કરતે હુએ દેલ લિયા હો ઓર અવ ઉસે દેલ્લનેવાલે સાધુકો યા ઉસી પ્રાયશ્ચિત્તકો કિયે હુએ પહિલેવાલે સાધુકો કારણ ઉપસ્થિત હો ગયા હૈ ॥૧૨॥ તો વહ મુનિ ઉસી દ્રવ્યકે હોને પર ઉસી કાલકે હોને પર ઉસી ક્ષેત્રકે હોને પર ઉસી કારણકે હોને પર ઉસી પુરુષકે હોને પર વૈસેહી પ્રાયશ્ચિત્તકો કરવાતા હૈ, તોહી આરાધક હોતા હૈ ॥૧૩॥ વૈયાઘ્રન્ય

દેવુ ભેઠ્ઠે, તેથી તે ગૂઢાર્થ પદોથી યુક્ત કરીને શિષ્યને પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિ કહી દે છે, અને તેને એવી આજ્ઞા કરે છે કે તમે જઈને મારા તરફથી તેમને આ પ્રાયશ્ચિત્ત દેજો. ૧૧ ।

હવે વ્યવહારના ચોથા ભેદ રૂપ ‘ધારણા’નું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે--“ જેણડન્નયાઈ દિટ્ઠં ” इत्यादि—કોઈ સાધુએ અતિચારથી યુક્ત એવા કોઈ સાધુને પોતાના અતિચારોની શુદ્ધિ કરતો જોયો હોય, ત્યારબાદ ક્યારેક તે (દેખનાર) સાધુને અથવા જોણે તે પ્રાયશ્ચિત્ત કરેલું છે એવા સાધુને પ્રાયશ્ચિત્ત લેવું પડે એવું કારણ ઉપસ્થિત થયું હોય, તો તે મુનિ એ જ દ્રવ્ય, એ જ કાળ, એ જ ક્ષેત્ર એ જ કારણ અને એ જ પુરુષ હોય ત્યારે એવું જ પ્રાયશ્ચિત્ત ભે કરાવે છે, તો જ તેને આરાધક કહી શકાય છે. ૧૨-૧૩

ગાયા—વેવાત્મકરો વા સીમો વા દેશદિગ્ધો વાપિ ।

દેવ અવધારેતો વડત્પ્રભો દોઢ વ્યવહારો ॥૧૧॥

છાયા—વૈવાઙ્મ્યકરો વા શિષ્યો વા દેશદિગ્ધકા વાપિ ।

દશમ્ અવધારયન્, ચતુર્થકો મવતિ વ્યવહાર ॥૧૪॥

ગાયા—વહુમો વહુસ્મુર્ણદિ જોષ્ઠો નો નિવારમો દોઢ ।

વત્સુષાષ્વમાણ બીણ કય દાઢ પય ॥૧૫॥

છાયા—વહુસો વહુધુનેઃ, યો વૃક્ષો નો નિવારિતો મવતિ ।

દૃષ્ટાનુદૃષ્ટમમાર્ણં જીતેન વૃત્ત મવતિ પતત્ । ૧૦ ॥ રૂતિ ।

અર્થ — ધીરપુરુષપદ્મ — ધીરપુરુષસ્તીર્થવગ્નપરાદિભિઃ પ્રગ્નત્ = દર પિત આગમધ્રુવવ્યવહાર આગમ એ ધ્રુવે તદ્ભૂતો વ્યવહાર — આગમવ્યવહાર હિતિ વાવત્ તથા = યે પ્રકારેણ પ્રતિ, તં દે નિપ્યા । પૂર્વ મમ સકાશાદ્ જાનીતત્

કરનેવાલા જો શિષ્ય હોતા હૈ અથવા દેશ દેશ મેં ભ્રમણ કરને વાલા જો શિષ્ય હોતા હૈ તદ્ દેશ દેશકે જૈસે ૨ પ્રાયશ્ચિત્તકો દેવતા હૈ, ઝસકો જો ધારણ કરતા હૈ પ્રાયશ્ચિત્તકે પદોંકો જો અપને મનમેં દેશ ૨ કે અનુસાર ધારણ કરતા હૈ, તદ્ ધારણા નામકા ચતુર્થ વ્યવહાર હૈ ॥૧૪॥ જીત નામકા જો પાંચર્વા વ્યવહાર હૈ, તદ્ હસ પ્રકારસે હૈ—જો વ્યવહાર, વહુધુત તાપુમો યાગ અનેકવાર આચરિત હો ચુકા હો તથા દુસરોં દ્વારા મો તદ્ વ્યવહાર નિવારિત નહોં કિયા ગયા હો હસ તરહ વૃસ્તાનુદૃષ્ટ પ્રવૃત્ત દુઝા—પરમ્પરાસે આચરિત દુઝા તદ્ વ્યવહાર જીત વ્યવહાર હૈ, તદ્ પ્રાયશ્ચિત્ત જીત વ્યવહારસે કિયા ગયા હોતા હૈ, અતઃ જીત વ્યવહારસે નિપ્પન તદ્ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ ॥૧૫॥

વૈમાવૃત્ત્ય એ કરનારો એ શિષ્ય હોય છે, અથવા દેશદેશમાં ભ્રમણ કરનારો એ શિષ્ય હોય છે તે દેશ દેશના વિવિધ પ્રાયશ્ચિત્તોને રૂખે છે અને તેમને પોતાના હૃદયમાં ધારણ કરે છે આ રીતે પ્રાયશ્ચિત્તના પદોને જુદા જુદા દેશની પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિ અનુસાર પોતાના હૃદયમાં ધારણ કરવા તેનું નામ ધારણા છે । ૧૪ ।

હવે વ્યવહારનો છત્ત નામનો એ પાઠ્યો લોક છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—એ વ્યવહાર બહુધુત સંધુઓ દ્વારા અનેકવાર આચરવામાં આવી ચુક્યો હોય અને અન્ય લોકો દ્વારા તે ચતુર્થનું જાતન કરવામાં આવ્યું ન હોય એવો પરમ્પરાથી આવશ્વિત થતો એ વ્યવહાર છે તેને છત્તવ્યવહાર કહે છે એ પ્રાયશ્ચિત્ત પરમ્પરાયત વ્યવહારને આપે આપવામાં આવે છે, પ્રાયશ્ચિત્તને જિતવ્યવહાર અન્ય પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે । ૧૫ ।

अवधारयत । स आगमव्यवहारः प्रत्यक्षपरोक्षभेदेन द्विविधो ज्ञानव्यः ॥१॥ तत्र
 प्रत्यक्षः पुनरिन्द्रियज नोऽन्द्रियजभेदेन द्विविधो बोध्यः । इन्द्रियज प्रत्यक्षस्तत्र
 पञ्चेन्द्रियार्थविषयकत्वेन पञ्चविधः । २। नोऽन्द्रियजन्यः प्रत्यक्षस्तु संक्षेपतः
 त्रिविधो भवति । त्रैविध्यं तस्य केवलज्ञानमनःपर्यवज्ञानावधिज्ञानभेदाद् बोध्यम्
 ॥३॥ यस्य मुनेः परोक्षोऽपि आगमः वस्तु स्वरूपस्य सम्यग् निर्णायकत्वात् प्रत्य-
 क्षागमसदृशो भवति । चन्द्रमुखीव-मुखे चन्द्रत्वमुपचर्य यथा रमणी चन्द्रमुखी-
 त्यभिधीयते तथैव उपचारात्-म मुनिरपि आगमव्यवहारवान् भवति ॥४॥ अमुं
 पारोक्षं व्यवहारं श्रुतधरा आगमतो व्यवहगन्ति ते श्रुतधरा के ? इत्याह-ते हि
 परवादिविद्रावणे गन्धहन्तिमदृशाः चतुर्दशपूर्वधरा दशपूर्वधरा नवपूर्वधराश्च
 बोध्याः ॥५॥ सम्प्रति आगमव्यवहारिणः प्रशंसापरां गाथामाह-‘ जं जहमोल्लं ’
 इत्यादि । यद् रत्नं यथामूल्यं भवति तत् रत्नवाणिजो निपुण यथा स्यात्तथा जानाति,
 इति=अमुना प्रकारेणैव प्रत्यक्षी=प्रत्यक्षज्ञानी अपि जानाति यत्, योऽनीचारवान्
 येन प्रायश्चित्तेन दत्तेन शुद्ध्यति, स तथैव अतीचारवते प्रायश्चित्तमपि ददाति ॥६॥
 इत्थं यो मुनिः केवलज्ञानेन मनःपर्यव ज्ञानेन अवधिज्ञानेन चतुर्दशपूर्वधरत्वेन दश-
 पूर्वधरत्वेन नवपूर्वधरत्वेन चाऽतीचारविशुद्ध्ये यत् प्रायश्चित्तं ददाति, तत्
 प्रायश्चित्तदानम् आगमव्यवहारइत्युच्यते । अथ श्रुतनामकं द्वितीयं व्यवहारमाह-
 यो मुनिः कल्पस्य=वृद्धकल्पमूत्रस्य तथा-परमनिपुणस्य-प्रायश्चित्तविधौ स्फुटवि-
 चारयुक्तस्य व्यवहारमूत्रस्य च, एरकारोऽप्यर्थकः, तेन निशीथदशाश्रुतयोः
 संग्रहः, निशीथस्य दशाश्रुतस्य च, निर्युक्तिम् अर्थतो विजानाति, स मुनिः व्यव-
 हारी अनुज्ञातः=हयितः । ७। तम्=व्यवहारिणमेव अनुपजन्=अनुवधनन् अनु-
 सरन् यो मुनिः अतीचारे सम्प्राप्ते यथोक्तम्=श्रुतोक्तिमनुसृत्य व्यवहारविधि=
 प्रायश्चित्तं प्रयुनक्ति=ददाति, तस्य मुनेः श्रुतानुपारेण प्रायश्चित्तप्रदानरूप एव व्यव-
 हारो वीतगमैः श्रुतव्यवहारः=श्रुतव्यवहार इति नाम्ना प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः ॥८॥
 अथ आज्ञानामकं तृतीयं व्यवहारमाह-यः अवराक्रमः=गमनशक्तिवर्जितः तपस्वी
 शोधिकारक समीपे=प्रायश्चित्तदातु समीपे गन्तुं न शक्नोति, शोधिकारकोऽपि
 देशात्=आश्रितस्थलात् आगन्तु न शक्नोति । ९॥ अथ=अनन्तरं स तपस्वी
 तस्य शोधिकारकस्य समीपे शिष्य गूढार्थपदै सन्दिश्य प्रस्थापयति=प्रेषयति,
 किं सन्दिश्य प्रेषयति ? इत्याह-हे आर्य ! देशान्तरगमननष्टवेष्टा-अशक्त्या
 देशान्तरगमने नष्टाः चेष्टा येषां तादृशा वयम् सकाशे=त्वत्तः शोधि=प्रायश्चित्तं
 कर्तुमिच्छामः, इति ॥१०॥ ततः सन्देशवाहकः शिष्यमुक्त्वात् स व्यवहारविधिज्ञः
 शोधिकारक श्रुतोपदेजेन=शास्त्रेण अनुपज्य=सन्देशं यथावद् विचार्य “ तस्मै

अतीचारसन्धिने ह्यनप इव प्रायश्चित्तं देहि " इति गृह्यसूत्रैः समै शिष्याय
आज्ञां ददाति तत्र आग्रनामकस्मृतीषो व्यवहारः ॥११॥ इति । अय-धारणा
नामकं चतुर्दशव्यवहारमाह-येन साधुना अन्वदा=अपस्मिन् सत्रये अतीचारस्य
तोऽप्यस्य साधोः क्रियमाणं चोभिरुपकरण=प्रायश्चित्तं इह सत्यं साधोश्चापि पुन
तादृशमेव कारणं=प्रायश्चित्तकारणं सन्नुत्तरम् ॥१२॥ स ह्यभिः तस्मिन्नेव द्रव्ये
क्षेत्रे काले कारणे पुरुषे च सति तादृशमेव प्रायश्चित्तं कारणम् आराधनो भवति
॥१३॥ अथवा वैवाहिक्यकरो यः शिष्यो देशदिष्टो वापि यः शिष्यो भवति,
स देशम् अरसरयन् यत् प्रायश्चित्तपदानां धारणं करोति, स धारणानामक-
धनुषोऽव्यवहारो भवतीति ॥ १४ ॥ अथ जीतनामकं पञ्चमं व्यवहारमाह-यच्च
व्यवहारो बहुभुजः साधुभिः बहुधा=अनेकवारम् हुताः=प्राचरितः अन्यैश्च स
व्यवहारो न निश्चितः न भविष्यति । ततश्च स व्यवहारः घृणानुवृत्तपट्टव-
पत्न्यवस्था प्रभृति प्राप्तो भवति । एतत् प्रायश्चित्तं जीतेन=जीतव्यवहारं कृतं
भवति । जीतनामकव्यवहारनिष्पन्नमिदं प्रायश्चित्तमिति भावः ॥ १५ ॥ इति ।

अथ आगमादीनाम् उत्सर्गाववादं प्राह—' जहा से ' इत्यादिना तस्य=
व्यवहर्तु-प्रायश्चित्तदानु तत्र-तेषु आगमादिव्यवहारेषु मध्ये, तस्मिन् वा प्राय-
श्चित्तदानादि व्यवहारकाले, तस्मिन् वा व्यवहर्तव्ये वस्तुनि विषये यथा=यथा
प्रकार-कैवल्यादीनामप्यतमः आगमः स्यात्, तदा आगमेन व्यवहारं प्रस्थाप-
येत्=प्रवक्तव्यं न तु भुतादिभिः, आगमापेक्षया तेषामप्राधान्यात् आगमेऽपि

अथ सूत्रकार आगमादिकोके उत्सर्ग और अपवादका कथन करते
हैं—' जहा से ' इत्यादि-प्रायश्चित्त दानाको उन आगमादि व्यवहारोके
बीचमें अथवा-प्रायश्चित्त देने आदिके समयमें अथवा व्यवहार करने
योग्य वस्तुमें जिस प्रकारका केषण आदिकोमेसे कोई एक आगम होता
है, उस समय उसी आगमसे व्यवहार चलाना चाहिये अथवा अथवा
हार नहीं चलाना चाहिये क्योंकि आगम आदिकी अपेक्षासे उनमें

इसे सूत्रकार आगम आदिकोना उत्सर्ग करने अपवादनु कथन करे हैं

' जहा से ' इत्यादि — प्रायश्चित्तदाताके, आगमादि के

व्यवहारों का हवा है तैमाथी आगमने (केवल आदि आगमने) के व्यव-
हार मध्ये शक्य होय ते मध्ये आगमने आधारे के व्यवहार व्यवहारों
के-के-अन आदिने आधारे व्यवहार व्यवहारों के-के नहीं करे के-के
सुभी आगमने आधारे प्रायश्चित्त आपी शक्य तेम होय तथा सुभी अतादिने
आधारे प्रायश्चित्त आपणु के-के नहीं करणु के अतादि करता आगममां

કેવલજ્ઞાનાદિપૂર્વપર્યન્તે પડવિયે પૂર્વસ્મિન્ સતિ પરેણ પરેણ વ્યવહારો ન પ્રકલ્પ-
નીયઃ, ઉત્તરોત્તરાપેક્ષયા પૂર્વપૂર્વમ્ય સાતિશયત્વેન વલીયરત્વાદિતિ ૧। યદિ તત્ર
આગમો ન સ્પાત્, તર્હિ તત્ર યત્પ્રકારક શ્રુત મહેત્, તેન વ્યવહારં પ્રસ્થાપયેત્
૨। યદિ તત્ર શ્રુતં નો મહેત્તદા આજ્ઞા વ્યવહાર પ્રકલ્પયેત્ ૩। આજ્ઞાયા અભાવે
ધારણયા ૪, તન્માવે તુ જીતેન વ્યવહારં પ્રકલ્પયેત્ । એતન્નિગમયન્નાહ-આગ-
મેન યાવદ્ જીતેન=આગમાદિ જીતાન્તૈરિત્યેતૈ-પશ્ચમિઃ વ્યવહાર પ્રસ્થાપયેદિતિ
સામાન્યતો નિગમનમ્ । વિશેષનસ્તુ-યથા યથા તસ્ય તત્ર આગમો યાવદ્ જીતં

અપ્રધાનતા હૈ, કેવલજ્ઞાનસે લેકર પૂર્વ પર્યન્તકે છહ આગમમેં મી પૂર્વ
પૂર્વકે હોને પર આગે ૨ કે આગમસે વ્યવહાર નહોં ચલાના ચાહિયે
કયોંકિ ઉત્તર ઉત્તરકી અવેક્ષાસે પૂર્વ ૨મેં સાતિશયતા હોનેસે અધિક
વલવક્તા હૈ, યદિ વહાં આગમ ન હો તો ફિર જિસ પ્રકારકા વહાં
શ્રુત હો ઉત્તસે વ્યવહાર ચલાના ચાહિયે યદિ વહાં
શ્રુત ન હો તો ફિર વહાં આજ્ઞાસે વ્યવહાર ચલાના ચાહિયે આજ્ઞાકે
અભાવમેં ધારણાસે ઓર ધારણાકે અભાવમેં જીતસે વ્યવહાર ચલાના
ચાહિયે । યહી વાત “ આગમેન યાવદ્ જીતેન ” હિસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટકી
ગઈ હૈ, કિ આગમસે લેકર જીત તકકે પાંચ વ્યવહારોંસે વ્યવહાર કર-
નેવાલા અપના વ્યવહાર ચલાવે । હિસ પ્રકારકા યહ કથન સામાન્ય
ઉત્સર્ગ રૂપસે કહા ગયા હૈ, પરન્તુ વિશેષ રૂપસે અપવાદ રૂપસે યહ
કથન હિસ પ્રકારસે મી કહા ગયા હૈ, કિ વ્યવહાર કરનેવાલા જૈસા

પ્રધાનતા રહેલી છે કેવલજ્ઞાનથી લઇને પૂર્વ પર્યન્તના છ આગમોમાંથી પૂર્વ
પૂર્વનો સદ્ભાવ હોય ત્યારે ઉત્તર ઉત્તરને આધારે વ્યવહાર ચલાવવો ભેદ
નહીં, કારણ કે પાછળના પ્રકારો કરતાં આગળના પ્રકારોમાં સાતિશયતા
હોવાથી અધિક બલવક્તા છે એ આગમનો વ્યવહાર શક્ય ન હોય તો જે
પ્રકારના શ્રુતનો સદ્ભાવ હોય તે પ્રકારના શ્રુત દ્વારા વ્યવહાર
ચલાવવો ભેદ છે અજ્ઞાના અભાવમાં ધારણા વડે અને ધારણાના અભાવમાં
શ્રુત વડે વ્યવહાર ચલાવવો ભેદ છે એ જ વાત “ આગમેન યાવદ્ જીતેન ”
આ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે એટલે કે વ્યવહારિકે આગમથી
લઇને શ્રુત પર્યન્તના પાંચ વ્યવહારો દ્વારા પોતાનો વ્યવહાર (અતિથારોની
શુદ્ધિ કરાવવા રૂપ વ્યવહાર) ચલાવવો ભેદ છે આ પ્રકારનું આ કથન
સામાન્ય ઉત્સર્ગ રૂપે સમજવું, પરન્તુ અપવાદ રૂપે અહીં આ પ્રમાણે કહે-

સ્વાત્ તથા તથા વ્યવહાર પ્રવાસાયે નનુ પ્રવચનવિષયે વ્યવહારં પ્રત્યાપયેદિતિ-
 નિગમનમ્ ૫ સમ્યગિતિ એતૈરાગમાદિમિ ક્યારહતુઃ કમ પ્રમદારવાદ- ' સે
 કિમાદુ ' રૂપાદિના, ' સે ' સત્=અવિષ્યં વ્યવહારં કિમ્=કિમર્થમ્ આદુ=રૂપ
 યમિ, એકેન આગમવ્યવહારેભેદેસિદ્ધે, યતઃ અમગા નિર્મન્યા આમનશલિકા-
 આગમવતસમ્યક્તા એન મરતિ ? રૂપિ શિષ્યમતઃ । ઉચરવતિ-રૂપત પચ્ચવિષ-
 પચ્ચપ્રકારઃ વ્યવહારં-વ્યવહારમાણસ્તપ્રમેય સમ્યન્થઃ યદા-યદા=પરિપન્ન યસ્મિન્
 અર્હા આગમાદિ હો ઉત્તસે વદા અપના વ્યવહાર ચલાય અર્થાત્ આગમ
 ન હો તો સુતસે સુત ન હો તો આજ્ઞાસે આજ્ઞા ન હો તો ધારણાસે
 ધારણા ન હો તો ઝીનસે અપના વ્યવહાર ચલાયે, પરન્તુ યદ પ્રય,
 યનસે વિરુદ્ધ વ્યવહારોસે અપના વ્યવહાર ન ચલાયે ।

અથ પ્રદનરૂપી એમા પ્રદન પૂજતા હૈ, કિ હન આગમાદિકોકે અનુ
 સાર વ્યવહારકસીકો કયા ફલ હોના હૈ ? યહી વાત- " સે કિમાદુ રૂપ
 સૂત્ર દ્વારા પ્રદન રૂપને પ્રકટ કરી ગઈ હૈ, અર્થાત્ યહ જો પાંચ પ્રકારકા
 વ્યવહારકહા ગયા હૈ, સો કિસલિયે કહા ગયા હૈ ? કયોકિ એક આગમ
 વ્યવહારસેહી રૂપ ફલકી સિદ્ધિ હો જાતી હૈ, કારણ જો
 અમગ જન હોતે હૈ વે આગમરૂપ ધલસે સમ્યક્તહી હોતે હૈ,
 અર્થાત્ આગમ સર ધલસે સમ્યક્તહી અમગ જન હોતે હૈ-રૂપ
 શિષ્યકે પ્રદનકે ઉચારમે પ્રમુ રૂપસે હૈ- " રૂપેત્ " રૂપાદિ-રૂપ પ્રકા
 રકે પાંચ પ્રકારકે વ્યવહારકો અથ ૨ જહાં ૨ તથ ૨ જહાં ૨ અનિશ્ચિ

વામાં અનુ છે- અર્થાત્ આગમ આદિ એને સદ્ભાવ હોય તેના દ્વારા વ્યવ
 હારકે વ્યવહાર અદ્ભાવો એક છે " એટલે આગમ ન હોય તો સુત વડે,
 સુત ન હોય તો આજ્ઞા વડે, આજ્ઞા ન હોય તો ધારણા વડે, અને ધારણા
 ન હોય તો છુટ વડે તં પોતાનો વ્યવહાર ચલાવે, પરન્તુ પ્રવચનની વિશિ
 ક્તનો વ્યવહાર તો તેણે ચલાવવો એક છે નહીં

પ્રશ્ન- " આગમાદિકો અનુસાર વ્યવહાર કરનારને કયા રૂપની પ્રાપ્તિ
 થાય છે ? " એ જ વાત ' સે કિમાદુ ' રૂપાદિ સૂત્ર દ્વારા પ્રશ્ન રૂપે પ્રકટ
 કરવામાં આવી છે પ્રશ્નરૂપી એ વાત પૂછવા માગે છે કે " એક આગમ
 વ્યવહાર વડે જ રૂપરૂપી સિદ્ધિ થઈ શકે છે તો પાંચ પ્રકારના વ્યવહારનું
 સુ પ્રયોજન છે ? અન્યથા તો આગમરૂપ બલથી સમ્યક્ જ હોય છે, તો
 આગમ વ્યવહાર શિષ્યના વ્યવહારની રૂપી આવશ્યકતા છે ?

ઉત્તર- ' રૂપત રૂપાદિ-આ પાંચ પ્રકારના વ્યવહારને અપારે અપારે
 અને અર્થાત્ અર્થાત્ ચલાવવાની આવશ્યકતા અસ્તિ, ત્યારે ત્યારે અને ત્યાં ત્યાં

કાલે યત્ર યત્ર=યસ્મિન્ યસ્મિન્ પ્રયોજને વા ક્ષેત્રે વા યો ય ઉચિતઃ, તદા તદા=તસ્મિન્કાલે તત્ર તત્ર=ત્વાસ્મિન્ તસ્મિન્ પ્રયોજને વા ક્ષેત્રે વા અનિશ્ચિતોપાશ્રિ-તમ્-અનિશ્ચિતૈ=સર્વાશવાદોપરહિતૈસ્તીર્થકરગમ્યપરાદિભિઃ ઉપાશ્રિતઃ=સ્વીકૃત સ્તમ્. અથવા-‘અનિશ્ચિતોપાશ્રિતમ્’ ઇતિ ક્રિયાવિશેષણમ્ । તત્ર-નિશ્ચિતઃ=શિષ્યત્વમુપાગતઃ, ઉપાશ્રિતઃ=શિષ્યત્વ વૈવાચન્યકારકઃ, નિશ્ચિતશ્ચ-ઉપાશ્રિત

તોપાશ્રિત હોકર જો શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ અચ્છી તરહસે ચલાતા હૈ, વહ શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ, તાત્પર્ય હમકા એમા હૈ-જો શિષ્યને એસી આજ્ઞાકાકી હૈ કિ શ્રમણ નિર્ગ્રન્થકો એક આગમ વ્યવ-હારકાહી આશ્રય કરના चाहिये और उससेही अपना व्यवहार चलाना चाहिये उस व्यवहारोंकी उसे क्या आवश्यकता है, सो इसका उत्तर यहाँ सूत्रकारने इस प्रकारसे दिया है-कि जिस २ कालमें जिस २ प्रयो-जनमें अथवा जिस २ क्षेत्रमें जो २ व्यवहार उचित हो एवं उस उस कालमें उस २ प्रयोजनमें अथवा उस २ क्षेत्रमें जो २ व्यवहार सर्व प्रकारके आज्ञासा दोषोंसे विहीन हुए तीर्थकरों द्वारा स्वीकृत हुआ हो उस २ व्यवहारसे अपने व्यवहारको करनेवाला चलानेवालाही श्रमण निर्गन्थ आज्ञाका आराधक होता है । यहाँ “अनिश्रितोपाश्रित” पदको “व्यवहार” इस पदका विशेषण मानकर ऐसा अर्थ किया गया है, अथवा “अनिश्रितोपाश्रित” इस पदको जब क्रिया विशेषण

અનિશ્ચિતોપાશ્રિત થઇને જે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ સારી રીતે ચલાવે છે, તે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ જિનાસાનો આરાધક ગણાય છે આ કથનનો ભાવર્થ નીચે પ્રમાણે છે-જે શિષ્ય એવો સદેહ કર્યો છે કે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ એક આગમ વ્યવ-હારનો જ આધાર લેવો જોઇએ અને તેની મદદથી જ પોતાનો વ્યવહાર ચલાવવો જોઇએ-અન્ય વ્યવહારની આવશ્યકતા જ શી છે ! તે તેનો ઉત્તર સૂત્રકારે અહીં આ પ્રમાણે દીધો છે--

“ જે જે કાળે, જે જે પ્રયોજનમાં અથવા જે જે ક્ષેત્રમાં જે જે વ્યવહાર ઉચિત હોય, અને તે તે કાળે, તે તે પ્રયોજનમાં અથવા તે તે ક્ષેત્રમાં જે જે વ્યવહાર સર્વ પ્રકારના આજ્ઞા સા દોષોથી વિહીન બનેલા તીર્થકરો દ્વારા સ્વીકૃત થયો હોય, તે તે વ્યવહાર પ્રમાણે પોતાનો વ્યવહાર ચલાવનાર શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ જ ભગવાનની આજ્ઞાનો આરાધક ગણાય છે અહીં “અનિશ્ચિતોપાશ્રિત” આ પદને “વ્યવહાર” આ પદનું વિશેષણ માનીને આ પ્રમાણે અર્થ કરવામાં આવ્યો છે પણ “અનિશ્ચિતોપાશ્રિત” આ પદને જે ક્રિયાવિશેષણ માનવામાં આવે તે આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે--

अति-निमित्तोपाधिती, तौ न विवेके यस्मिन्स्वद यथा स्वात्तया-मभिप्रवृत्तिरेव
 मयस्य नवानुष्ठितान् मरीचयन् पुनननक्षिप्येव वैशाख्यमकारपक्षित्यर्थः । यद्वा-
 निमित्त रागश्च, उपाधि-रेव च निमित्तोपाधि, ते तम न विवेके यस्मिन्स्वद
 यथास्वात्तया रागद्वेराभिः सभि-गर्भः । अथा-निमित्त च-माहारादि लाभे
 रक्षा, उपाधि च क्षिप्यदापकृतापेया एतद्वर्ण्यं नास्ति यस्मिन्स्वद यथास्व
 यथा-माहारादिनदार्थलाभे आगद्वित, क्षिप्यदापकृतापेया रक्षितश्च सभित्पयः ।
 तस्यैव यथास्वद यथास्वद यथास्वद यथास्वद यथास्वद यथास्वद यथास्वद यथास्वद
 रागस्त मयती ते । अथापच वैश्वव्यवहारं व्यवहरण मोक्त मयश्चित्तिरिति सू० १
 अथगवस्तावत् सयजानां तत्पतिवपयुतानामपयजानां च सुपवागतरारु
 पमाह-

पूवश्च-सजतमणुस्ताण सुत्ताण पच जागरा पणत्ता, त
 जहा-सदा जाव फासा । सजतमणुस्ताणं जागराण पच सुत्ता
 पणत्ता, त जहा-सदा जाव फासा । असजयमणुस्ताण सुत्ताण
 वा जागराण वा पच जागरा पणत्ता, त जहा-सदा जाव
 फासा ॥ सू० १२ ॥

रखा जाता है, तब इस पक्षमें ऐसा अर्थ होता है, कि अभिप्रवृत्ति विशेष
 पक्षी अपेक्षा करके नवीन शिष्योंको दीक्षा न देते हुए और पुराने
 शिष्योंसे वैशाख्य न कराते हुए अथवा रागद्वेषसे रहित होते हुए
 अथवा-माहारादिक लाभकी इच्छासे और उपामित-शिष्यदायक
 कुलकी अपेक्षासे रहित होते हुए कल्पके अनुसार प्रवृत्त व्यवहारको
 करनेवाला अमण निर्मय जिनास्त्राका आराधक होता है, इस तरह
 पचविध व्यवहारसे व्यवहार करना भगवान्ने कहा है ॥ सू० ११ ॥

अलिखत विशेषणी अपेक्षाको नवीन शिष्योंने दीक्षा न देना, अने
 नूतन शिष्यों पासे वैशाख्य न करी क्षयवा जोषा अथवा रागद्वेषकी रहित
 अनेका जोषा अथवा आकांक्षारहित लाभकी इच्छाकी अने उपाधित-शिष्यदायक
 कुलकी अपेक्षाकी रहित अनेका यथा कल्प (निमित्त) अनुसार प्रवृत्त
 व्यवहारने अपेक्षावन्त अमण निर्मय जिनास्त्राको आराधक अथवा
 आ सीते धर्म प्रवृत्त व्यवहार करनेवाले भगवान्ने कहा है ॥ सू० ११ ॥

હાયા—સંયતમનુષ્યાણાં સુમાનાં પશ્ચ જાગરાઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા—શબ્દા
યાવત્ સ્પર્શઃ । સંયતમનુષ્યાણાં જાગરાણાં પશ્ચ સુમાઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા—શબ્દા
યાવત્ સ્પર્શઃ । અસંયતમનુષ્યાણાં સુમાનાં વા જાગરાણાં વા પશ્ચજાગરાઃ પ્રજ્ઞાઃ,
તથા—શબ્દા યાવત્ સ્પર્શઃ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

ટીકા—‘સંજયમણુસ્માણં’ इत्यादि—

સુમાનાં=નિદ્રાવતાં સંયતમનુષ્યાણાં=માધુજન પશ્ચ જાગરાઃ—જાગ્રતીતિ જાગરાઃ
=જાગર इव જાગરાઃ—અસુપ્તસ્તુ પ્રજ્ઞા । તે કે? इत्याह—તથા—શબ્દાઃ યાવત્
સ્પર્શઃ इति । અય ભાવઃ—શબ્દાદયો ણિ સુમાનાં મંયનાનાં પ્રજ્વલનલવદપ્રતિહતશક્તિ-
મન્તો ભવન્તિ, તસ્મિન્ કાલે તેવાં કર્મબન્ધકારણસ્ય નિદ્રારૂપપ્રમાદસ્ય સદ્ભાવાત્,
તત્તથ સુમાવસ્થાયા પ્રતિબુદ્ધાસ્તે શબ્દાદયઃ કર્મબન્ધકારણં ભવન્તીતિ । તથા—

અમળકે પ્રસ્તાવસેહી અથ સૂત્રકાર સંવતોંકે ઓર इनके प्रतिपक्ष
असंयतोंके सुप्त एवं जागर स्वरूपका कथन करते हैं—

ટીકાર્થ—‘સંજયમણુસ્માણં સુત્તાણં પંચ જાગરા પળ્લક્ષા’ इत्यादि सूत्र १२॥

જો સંયત મનુષ્ય-માધુજન નિદ્રાવાલેહી, इनके अमुसकी तरह पांच जाग-
रण कहे गये हैं वे इस प्रकारसे हैं शब्द यावत् स्पर्श इसका भाव ऐसा है-
જો સંયત જન સુપ્ત હોય, उनको शब्दादिक प्रज्वलित अग्निकी तरह अप्रति-
हत शक्तिवाले होते हैं. क्योंकि उस कालमें उनके कर्मबन्धका कारण-
भूत निद्रारूप प्रमादका सद्भाव होता है, इसलिये सुप्त अवस्थामें प्रति-
बुद्ध हुए अप्रतिहत शक्तिवाले बने हुए वे शब्दादिक कर्मबन्धके कारण
होते हैं । तथा जो संयत जन अनिद्रित हैं—सचेत हैं—उनके पांच जाग-

શ્રમણોનો પ્રસ્તાવ ચાલી રહ્યો છે, તેથી હવે સૂત્રકાર સંયતો અને
असंयतोना सुप्त અને જાગરણ સ્વરૂપનું કથન કરે છે--

ટીકાર્થ—“સંજયમણુસ્માણં સુત્તાણં પંચ જાગરા પળ્લક્ષા” इत्यादि—

જે સંયત મનુષ્યો (માધુજો) નિદ્રાવાળા (અસાવધાન) હોય છે,
તેમના અમુસના જેવા પાંચ જાગરણ કહ્યા છે--તે પાંચ જાગરણો શબ્દથી
લઈને સ્પર્શ પર્યંતના શ્રેણી કરવા આ કથનનો લાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે--

જે સંયતજન સુપ્ત છે તેમને માટે શબ્દાદિક પ્રજ્વલિત અગ્નિની જેમ
અપ્રતિહત શક્તિવાળા હોય છે, ક રણ તે કાળે તેમનામાં કર્મબન્ધના કારણભૂત
નિદ્રારૂપ પ્રમાદનો સદ્ભાવ હોય છે તેથી સુપ્ત અવસ્થામાં પ્રતિબુદ્ધ થયેલા
અપ્રતિહત શક્તિવાળા બનેલા તે શબ્દાદિક કર્મબન્ધના કારણભૂત બને છે.
જે સંયતજન અનિદ્રિત (સાવધાન) છે, તેમના પાંચ જાગરણ સુપ્તના

જાગરાણામ્=અનિદ્રિતાનાં સાધૂનાં પણ સુષા=સુષાપ્ત-નિદ્રિતવત્, મક્ષતાઃ ।
 તે કે ? રૂપાદ-શબ્દા યાવત્ સ્વર્ણાઃ । જાગરિતાનાં સાધૂનાં શબ્દાદયઃ પણ
 મસ્ત-અગ્નિનિવ પ્રતિહતશક્તિથી મરન્તિ, તસ્મિન્ કાલે કર્મબન્ધકારણીભૂતસ્ય
 પ્રમાદમ્પામયાત્, તત્ત્વ જાગ્રદવસ્થામાં તે ન તેમાં કર્મબન્ધકારણ : મરન્તીતિ ।
 અથ મયયતનાશ્રિત્ય ગ્રાહ-‘અસંયત’ રૂપાદિના । સુષાનાં વા જાગરાણાં વા
 અસંયતમનુ-પાણામ્=અસંયમિનાં શબ્દાદય પણ જાગરા=અનિદ્રિતા મરન્તિ ।
 અથ માત્ર-મસપ્તાદિ પ્રમાદવતો મરન્તિ, આત્મા સ્વપ્નજાગ્રદુભયાવસ્થાય-
 મપિ શબ્દાર્થોડવિદિતશક્તિભ્રમ્યાત્ કર્મબન્ધદેતુકા મરન્તીતિ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

રણ સુષકી તરફ કહે ગયે છે-નિદ્રિતકી તરફ પ્રજા કિયે ગયે છે, એ
 પાંચ જાગરણ શબ્દોએ છેકર સ્વર્ણા તક છે, તાત્પર્ય એમાં છે, કિ જો
 સંયતન જાગરિત થોતે છે, અનેક શબ્દાદિક પાંચ જાગરણ મસ્તો
 આગાદિન દુર્હ-હંકી દુર્હ અગ્નિકી તરફ પ્રતિહત શક્તિવાળે થોતે છે,
 ક્યોંકિ તે કાલમાં કર્મબન્ધકે કારણમૂલ પ્રમાદકા બન્ધવ રહતા છે,
 હમલિયે એ જાગ્રત અવસ્થામાં અનેકો કર્મબન્ધકે કારણ નહીં થોતે છે

“અસંયત” રૂપાદિ-અસંયત મનુષ્ય જાહે સુષ હો જાહે જાગ
 રિત હો અનેકો શબ્દાદિક પાંચ જાગરણ મદા અનિદ્રિતથી થોતે છે,
 હમકા માથ એમાં છે, અસંયત જીવ પ્રમાદવાળે થોતે છે, હમલિયે અને
 સ્વપ્ન અવસ્થામાં પણ જાગ્રત અવસ્થામાં બોનો અવસ્થાઓમાં બી શબ્દા
 દિક અપ્રતિહત શક્તિવાળે થોતેસે કર્મબન્ધક દેતુ થોતે છે ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

સમાન કથા છે-નિદ્રિત । જેના પ્રજા કરવામાં જ્યાં છે શબ્દો લખને
 સ્વર્ણ પદ્મના પાંચ જાગરણ સમજવા આ કથનનો બ વાર્થ એ છે કે
 જે સંયત મનુષ્યે જાગ્રત હોય છે, તેના શબ્દાદિક પાંચ જાગરણ જેના
 પર શબ્દ વગી મરે છે એવા અગ્નિના જેવા પ્રતિહત શક્તિવાળા હોય છે
 કારણ કે તે કાળે કર્મબન્ધના કારણમૂલ પ્રમાદનો અભાવ રહે છે, તેથી
 જાગ્રત અવસ્થામાં તેમને કર્મબન્ધ થવાના કારણોનો અભાવ રહે છે

“અસંયત” રૂપાદિ-અસંયત મનુષ્યે જાહે સુષ હોય કે જાહે જાગ્રત
 હોય, પણ તેમને માટે તો શબ્દાદિક પાંચ જાગરણ મદા અનિદ્રિતસમ ન જ
 થાય છે આ કથનનો બ વાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-અસંયત મનુષ્યે પ્રમાદ
 વાળા થાય છે તેથી તેમને માટે તો સુષ અને જાગ્રત આ બન્ને અવસ્થામાં
 શબ્દાદિક અપ્રતિહત શક્તિવાળા થાયલા કર્મબન્ધના કારણમૂલ અને છે સૂ. ૧૨

સંયતાસંયતાધિકારાત્તદુભયસંબદ્ધ સૂત્રમાહ—

મૂલમ્—પંચહિં ઠાણેહિં જીવા રયં આદિજ્જંતિ તં જહા-
પ્રાણાઙ્વાણં જાવ પરિગ્ગહેણં । પંચહિં ઠાણેહિં જીવા રયં વમંતિ,
તં જહા -પ્રાણાઙ્વાયવેરમણેણં જાવ પરિગ્ગહવેરમણેણં ॥સૂ૦ ૧૩॥

હાયા—પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ જીવા રજ આદદતિ, તદ્વથા—પ્રાણાતિપાતેન યાવત્
પરિગ્રહેણ । પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ જીવા રજો વમન્તિ, તદ્વથા—પ્રાણાતિપાતવિરમણેન
યાવત્ પરિગ્રહવિરમણેન ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

ટીકા—‘ પંચહિં ઠાણેહિં ’ ઇત્યાદિ—

પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ જીવાઃ રજઃ—રજ્યતે=જીવસ્ય શુદ્ધસ્વરૂપં મલિનં ક્રિયતે-
જ્ઞેનેતિ—રજઃ કર્મ આદદતિ=ગૃહ્ણન્તિ વધન્તીતિ યાવત્ । તદ્વથા—પ્રાણાતિપાતેન
યાવત્ પરિગ્રહેણ । પ્રાણાતિપાતાદિપરિગ્રહાન્તાઃ પશ્ચ જીવસ્ય કર્મબન્ધકારણાનિ
મવન્તીતિ ભાવઃ । તથા—જીવાઃ પશ્ચમિઃ—સ્થાનૈઃ રજઃ=કર્મ વમન્તિ—ઉદ્વિલિન્તિ ક્ષય-
યન્તીતિ યાવત્ । તદ્વથા—પ્રાણાતિપાતવિરમણેન યાવત્ પરિગ્રહવિરમણેનેતિ ॥સૂ૦ ૧૩॥

સંયત ઓર અસંયતકે અધિકારસે इन दोनोंसे संबद्ध सूत्रका
कथन सूत्रकार करतेहैं—‘पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं आदिज्जंति’ इत्यादि

ટીકાર્થ—પાંચ કારણોસે જીવ રજકો જીવકે શુદ્ધ સ્વરૂપકો મલિન
કરનેકે કારણકે કારણ કર્મરજકો વાંધતે હૈ, વે પાંચ કારણ ચે હૈ—
પ્રાણાતિપાત યાવત્ પરિગ્રહકા તાત્પર્ય યહી હૈ, કિ પ્રાણાતિપાતસે લેકર
પરિગ્રહ તકકે પાંચોહી પાપ જીવકો કર્મબન્ધકે કારણ હોતે હૈ । તથા
જીવ પાંચ કારણોસે કર્મોંકા ક્ષય કરતે હૈ, વે પાંચ કારણ ચે હૈ પ્રાણા-
તિપાત વિરમણ યાવત્ પરિગ્રહ વિરમણ ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

સંયત અને અસંયતના અધિકાર સાથે સંબદ્ધ એવા કર્મરજ વિષયક
સૂત્રનું હવે સૂત્રકાર કથન કરે છે. “ પંચ હિં ઠાણેહિં જીવા રયં આદિજ્જંતિ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—પાપ કારણોને લીધે જીવ પોતાના શુદ્ધ સ્વરૂપને મલિન કરનાર રજની
(કર્મરજની) જમાવટ કરે છે તે પાંચ કારણો નીચે પ્રમાણે છે—

પ્રાણુતિપાતથી લઇને પરિગ્રહ પર્યન્તના કારણો અહીં ગ્રહણ
કરવા જોઇએ. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે પ્રાણુતિપાતથી લઇને પરિગ્રહ
પર્યન્તના પાપ જીવને કર્મનો બન્ધ કરાવવામા કારણભૂત બને છે.
તથા પ્રાણુતિપાત વિરમણથી લઇને પરિગ્રહ વિરમણ પર્યન્તના પાપ કારણોને
લીધે જીવ કોનેના ક્ષય કરે છે. ॥ સૂ. ૧૩ ॥

सयतानेवाधिकृत्य सम्पति संप्रत्यमाह—

मृत्म्—पचमासिय ण भिक्षुपटिम पटिवन्नस्स अणगा
रस्स कप्पति पच दत्तीओ मोयणस्स पट्टिगाहेत्तए पंच पाण
गस्स ॥ सू० १४ ॥

छाया—पचमासिकी तल्ल मिश्रप्रतिमां प्रतिपन्नस्य अनगारस्य कल्पन्ते
पच दत्तयो मोमनस्य प्रतिप्रदीपु पच पानकस्य ॥ सू० १४ ॥

टीका—‘पचमासियं’ इत्यादि—

व्याख्या स्पष्टा ॥ सू० १४ ॥ -

मृत्म्—पचविहे उवघाय पण्णत्ते, त जहा-उग्गमोवघाय
१, उप्पायणोवघाय २ एसणोवघाय ३ परिकम्मोवघाय ४ परि-
हरणोवघाय ५। पचविहा विसोही पण्णत्ता, त जहा-उग्गमवि-
सोही १ उप्पायणविसोही २ एसणाविसोही ३ परिकम्मवि-
सोही ४ परिहरणविसोही ४ ॥ सू० १५ ॥

छाया—पचविधउपपात मङ्गलः, तथया-उद्गमोपपातः १ उत्पादनोपपातः
२ एणोपपातः ३ परिकर्मोपपातः ४ परिहरणोपपातः ५। पचविधा विज्ञोपपा-
मङ्गलः, तथया-उद्गमविज्ञोपिः १ उत्पादनाविज्ञोपिः २ एणविज्ञोपिः ३ परि-
कर्मविज्ञोपि ४ परिहरणविज्ञोपि ५ ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘पचविहे’ इत्यादि—

उपपातः=अनुवृत्तिः, स पचविधः मङ्गलः । पचविधस्त्वमेवाह-तथया-उद्गमो-
पपात-उद्गमैः=उद्गमदोषैरापाकमौदिभि पोहसविधैर्मत्तपानोपकरणवसतीनाम्

संपत्तौको लेकरही सूत्रकार अब ये दो सूत्र और कहते हैं—

‘पचमासिय णं भिक्षुपटिम पटिवन्नस्स अणगारस्स इत्यादि १४॥

टीकार्थ—पचमासिकी मिश्र प्रतिमाको प्राप्त मुनिके लिये पांच दत्तियां
भोजनकी और पांचही दत्तियां पानककी लेना यास्त्रयिहीत हैं ॥ सू० १४॥

सयताने अनुवृत्तिने णं इवे सूत्रकार नीशेना से सूत्रो ठहे छे

टीका—‘पचमासिय णं भिक्षुपटिम पटिवन्नस्स अणगारस्स’ इत्यादि—

पांच मासिक मिश्र प्रतिमाकी आशयना करनार मुनिने पांच भोजनकी

दत्तियो अने पांच पानक (पेय) की दत्तियो लेनी ठहरे छे ॥ सू० १४ ॥

ઉપધાતઃ=અશુદ્ધતા ૧। ઉત્પાદનોપધાતઃ-ઉત્પાદનાભિઃ=ધાત્ર્યાદિભિઃ પોહશ્મિ-
રૂપાદનાદોષૈર્ભક્તપાનાદીનામશુદ્ધતા ૨। એળનોપધાતઃ-એળયા=શક્લિતાદિભિર્દ-
શ્મિરેષણાદોષૈરુપધાતઃ ૩। પરિકર્મોપધાતઃ-પરિકર્મ-વસ્ત્રપાત્રાદેઃ છેદનસીવનાદિ,
તેન ઉપધાતઃ=વસ્ત્રપાત્રાદેરકલ્પનીયતા । તત્ર વસ્ત્રસ્ય પરિકર્મોપધાતો યથા—

‘પંચવિહે ઉવધાએ પળ્લત્તે’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧૫।

ટીકાર્થ-ઉપધાત શબ્દકા અર્થ અશુદ્ધતાહૈ, યહ અશુદ્ધતા પાંચ પ્રકારકી
કહી ગઈ હૈ-ઉદ્ગમોપધાત ૧ ઉત્પાદનોપધાત ૨ એળનોપધાત ૩ પરિ-
કર્મોપધાત ૪ ઓર પરિહરણોપધાત ૫ પાંચ પ્રકારકી વિશોધિ કહી ગઈ
હૈ-જૈસે-ઉદ્ગમ વિશોધિ ૧ ઉત્પાદનાવિશોધિ ૨ એળાવિશોધિ ૩
પરિકર્મવિશોધિ ૪ ઓર પરિહરણ વિશોધિ ૫ ।

આધાકર્મ આદિ ૧૬ પ્રકારકે ઉદ્ગમ દોષોસે ભક્તપાન ઉપકરણ
હનકે આલયોંકી-સ્થાનોંકી અશુદ્ધતા યહ ઉદ્ગમોપધાત હૈ ૧। ધાત્રી
આદિ ૧૬ પ્રકારકે ઉત્પાદના દોષોસે ભક્તપાન આદિકોંકી અશુદ્ધતા
યહ ઉત્પાદનોપધાત હૈ ૨। શક્લિત આદિ ૧૦ પ્રકારકે એળા દોષોસે
ભક્તપાન આદિકોંકી અશુદ્ધતા એળનોપધાત હૈ ૩। વસ્ત્રપાત્ર આદિકોંકા
છેદના સીના આદિ પરિકર્મ હૈ, હસસે જો વસ્ત્રપાત્ર આદિકી અકલ્પ-
નીયતા હૈ, વહ પરિકર્મોપધાત હૈ ૪। વસ્ત્રકા પરિકર્મોપધાત એસા હૈ-

“ પંચવિહે ઉવધાએ પળ્લત્તે ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-ઉપધાત એટલે અશુદ્ધતા તે અશુદ્ધતા રૂપ ઉપધાતના નીચે પ્રમાણે
પાંચ પ્રકાર કહ્યાં છે—(૧) ઉદ્ગમોપધાત, (૨) ઉત્પાદનોપધાત, (૩) એળા-
પધાત, (૪) પરિકર્મોપધાત અને (૫) પરિહરણોપધાત.

પાંચ પ્રકારની વિશોધિ (વિશુદ્ધતા) કહી છે—(૧) ઉદ્ગમવિશોધિ,
(૨) ઉત્પાદના વિશોધિ, (૩) એળાવિશોધિ, (૪) પરિકર્મવિશોધિ અને
(૫) પરિહરણ વિશોધિ.

આધાકર્મ દોષ આદિ ૧૬ પ્રકારના ઉદ્ગમ દોષો કહ્યા છે. આહાર, પાણી,
અને ઉપકરણના સ્થાનોની અશુદ્ધતાનું નામ ઉદ્ગમોપધાત છે. ધાત્રીદોષ આદિ
૧૬ પ્રકારના ઉત્પાદના દોષોથી આહાર આદિકોમાં જે અશુદ્ધતા આવી
જાય છે તેનું નામ ઉત્પાદનોપધાત છે શક્લિત આદિ ૧૦ પ્રકારના દોષોથી
આહાર આદિકોમાં જે અશુદ્ધતા આવી જાય છે તેને એળાપધાત કહે છે. વસ્ત્ર
પાત્ર આદિકોનું છેદન કરવું અથવા સાધવું, તેનું નામ પરિકર્મ છે. તેને
કારણે વસ્ત્રાદિકોમાં જે અકલ્પનીયતા આવે છે તેને પરિકર્મોપધાત કહે છે.
વસ્ત્રના પરિકર્મનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું હોય છે—“ તિષ્ઠવારિ ફાલિયાણં ” ઇત્યાદિ.

“ તિગ્રહચરિત્રાલિપિયામ, વસ્થા જો કાલિય તુ સસીચે ।

પંચમ્ એગતર, સો પાત્ર આણમાઈણિ ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—ત્રયાણાસુપરિ પાટિતાનાં ચક્ષુ યઃ પાટિતં તુ સંસીચ્યેત્ ।

પશ્ચાનામેકતમત્ સ માન્નોતિ આઘાવીનિ ॥ ૧ ॥ इति ।

અર્થે મારા—ય પશ્ચાનામ્=ઝૂંઘોંદિ ‘પશ્ચનિપાનાં વસ્ત્રાણાં’ મધ્યે ‘એકતમત્’ અન્યતમ ચક્ષુ ત્રયાણાં પાટિતાનામ્=તિસ્રણાં વિગલિકાનામ્ ઉપરિ પાટિતં તુ=યદિ સંસીચ્યેત્ / તદા સ સાધુ આઘાવીનિ=આઘાવિરાષનાદિ દોષાન્ માન્નો સીતિ । પાત્રસ્ય પરિકર્મોપધાતો યયા—

“ અવલંકલ્લનેગર્મચે, દુગતિગ આરેગર્મપર્મ ચાપિ ।

જો પાપ પરિચ્છેદ, પર દિવદ્વામો માસામો ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—અવલંકલ્લનેગર્મ ચ દ્વિકથિકાતિરેકવર્મ ચાપિ ।

ય પાત્રં પરિચ્છેદતિ પર દ્વપેપાર્દાત્ માસાત્ ॥ ૧ ॥ इति ।

“ તિગ્રહચરિત્રાલિપિયામ ” इत्यादि ।

જો સાધુ ઢળી આદિ પાંચ પ્રકારનાં ચક્ષુઓમાંથી કોઈ એક ચક્ષુનો ફાટે હોય તો ત્રણ બેગલીએ અધિક બેગલી લગાવે. એ સાધુ આઘાવિરાષના આદિ દોષોનો પ્રાપ્ત કરતા હોય, પાત્રના પરિકર્મોપધાત હવે પ્રકારસે હોય—

“ અવલંકલ્લનેગર્મચે ” इत्यादि ।

જો પાત્ર સ્વરૂપ રહિત હોય એવું એક વસ્ત્રનવાળો હોય તો તેને તે પાત્રનો જો સાધુ ૧॥ જેઠ માસસે અધિક સમય તક રાખતા હોય, એ સાધુ આઘાવિરાષના આદિ દોષવાળો હોય, અધિક લક્ષણવાળો પાત્ર એક વસ્ત્ર નસે ચુકત હોય તો યદિ ૧॥ જેઠ માસસે તો અધિક કામમાં લે લેવા જાય છે, તો તેને તે સાધુનો આઘાવિરાષના આદિ દોષ નહીં લગતા હોય ।

જે સાધુ ઢળી (ઢનના બનાવેલાં) આદિ પાંચ પ્રકારના ચક્ષુઓમાંથી કોઈ એક પ્રકારના ફાટેલા ચક્ષુને ત્રણ કરતાં વધારે ચોટલાં લગાવે છે, તે સાધુ ચિનાજાનો વિરાષત ગણાય છે. ‘પાત્રનો પરિકર્મોપધાત આ પ્રકારનો થયો છે ’ ‘અવલંકલ્લનેગર્મચે’ इत्यादि—

જે પાત્ર સ્વરૂપ રહિત હોય અને એક જ વસ્ત્રવાળું હોય, તે પાત્રને ૧॥ માસ કરતાં અધિક સમય સુધી પોતાની પાસે રાખનાર સાધુ આઘાવિરાષના આદિ દોષવાળો ગણાય છે. જે પાત્ર સારા લક્ષણવાળું અને એક વસ્ત્રવાળું હોય, તેને ૧॥ માસથી અધિક સમય સુધી ઉપયોગમાં લેવામાં આવે તો તેથી સાધુને આઘાવિરાષના આદિ દોષ લાગતા નથી. એ અર્થ

અર્થે ભાવઃ—યત્ર પાત્રમ્ અપલક્ષણૈકવન્ધનમ્—અપગતં લક્ષણં=સ્વરૂપં યસ્ય તત્
 एवंભૂતં સત્ એકવન્ધનમ્=એકવન્ધનયુક્ત મહેત્, તત્ પાત્રં યઃ સાધુઃ દ્વયપાર્થાત્—
 દ્વિતીયમ્ અપાર્દ્ધં યસ્મિન્સતદ્ દ્વયપાર્દ્ધં તસ્માત્—સાર્દ્ધાત્ માસાત્ પરં પરિવર્તયતિ=
 પરિમુદ્ધે સ આજ્ઞાવિરાધનાદિદોષભાગ્ ભવતિ । સુલક્ષણં પાત્રમેકવન્ધનયુક્તમપિ
 સાર્ધમાસાત્પરમપિ પરિમુદ્ધાનઃ સાધુઃ આજ્ઞાદિદોષભાગ્ નો ભવતિ । તથા—દ્વિક-
 ત્રિકાતિરેકવન્ધનં—દ્વાભ્યાં વન્ધનાભ્યાં, ત્રિભ્યો વન્ધનેભ્યશ્ચાપિકવન્ધનયુક્તં=ચતુ-
 ર્વન્ધનયુક્તં સુલક્ષણમપિ પાત્રં સાર્ધમાસાત્પરં પરિમુદ્ધાનઃ સાધુરાજ્ઞાદિદોષભાગ્
 ભવતિ । કિંચિદ્નચતુર્વન્ધનયુક્તં પાત્રં પરિમુદ્ધાનઃ સાધુસ્તુ આજ્ઞાદિવિરાધકો ન
 ભવતીતિ બોધ્યમ્ । વસતેઃ પરિકર્મોપધાતસ્તુ—

“ દૂમિય ધૂમિય વાસિય, ઉજ્જોઝ્ય વલિકહા અવત્તા ય ।

સિત્તા સંસટ્ઠાવિ ય, અકલ્પનીયા ઉ સા વસહી ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—અવલિતા ધૂમિતા વાસિતા ઉદ્ઘોતિતા વલિકૃતા અવ્યક્તા ચ ।

સિત્તા સમ્મટ્ઠાપિ ચ અકલ્પનીયા તુ સા વસતિઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

અર્થે ભાવઃ—યા વસતિઃ—અવલિતા=શુભ્રીકૃતા, ધૂમિતા = દંશમશકાદીનાં
 વિનાશાય કૃતધૂમા, વાસિતા=સુગન્ધિતા, ઉદ્ઘોતિતા=પ્રદીપાદિના પ્રકાશિતા,

તથા દો વન્ધનોંસે યા ત્રીન વન્ધનોંસે અધિકવન્ધન યુક્ત—ચાર વન્ધન-
 યુક્ત પાત્ર યદિ સુલક્ષણવાલાં મી હૈ, તો ઉસે જો સાધુ ૧॥ હેઢ માસસે
 અધિક સમય તક અપને કામમેં લેતા હૈ, વહ સાધુ આજ્ઞા મંગ આદિ
 દોષોંકા પાત્ર માના જાતા હૈ । પરન્તુ કુછ કમ ચાર વન્ધનયુક્ત પાત્રકો
 અપને કામમેં લેનેવાલા સાધુ આજ્ઞાદિકા વિરાધક નહીં હોતા હૈ, વસ-
 તિકા પરિકર્મોપધાત્ હસ પ્રકારસે હૈ—

“ દૂમિય ધૂમિય વાસિય ” ઇત્યાદિ ।

તાત્પર્યં યહૈ કિં જો વસતિ (ઉપાશ્રય)અવલિત હો ચૂનેસે પોત કર

ત્રણ કરતાં અધિક એટલે કે ચાર, પાત્ર આદિ બન્ધનોથી યુક્ત પાત્ર, સુલક્ષ-
 ãયુક્ત હોવા છતાં પણ તેનો ૧॥ માસથી અધિક સમય પર્યન્ત ઉપયોગ
 કરનાર સાધુ આજ્ઞાવિરાધના આદિ દોષોને પાત્ર ગણાય છે, પરન્તુ ચારથી
 ઓછા બન્ધનયુક્ત પાત્રનો ૧॥ માસથી અધિક સમય માટે ઉપયોગ કરનાર
 સાધુ આજ્ઞાદિના વિરાધક ગણાતો નથી. વસતિ (રહેઠાણ) નો પરિકર્મોપધાત્
 આ પ્રકારનો છે. “ દૂમિય ધૂમિય વાસિય ” ઇત્યાદિ—

જે વસતિ (રહેઠાણ) ચૂના આદિ વડે ધોળેલી હોય, મચ્છર, ચાંચડ,

પછિજ્ઞા-કૂરાદિના યુથાર્થે વક્તિ કૃતો વસ્ત્રાં સા, અભ્યક્તા=ગોમયાદિના ઉપ
 ઠિતા, સિક્કા=નલસેક્યુકા, તયા-સમૃદ્ધા=સમ્માર્મિતા ચાપિ મવતિ, સા વસતિઃ
 અકલ્પનીયા યોગ્યેતિ ૩। તયા-પરિહરણોપધાત -પરિહરણમ્=આસેનન, તેન
 ઉપચાતઃ=ઉપધ્યાદેરકલ્પનીયત્વમ્ । તપ-ઉપધેઃ પરિહરણોપધાતો યથા-વકાકિ,
 દિશ્ઠકેન સાધુના યથાસેવિતમ્પ્રકરણં તદ્ ગ્રહીતુ ન કલ્પતે इति । પરન્તુ સ
 ગ-ઉનિર્પત સાધુરેકાક્રી સમ્પ્રપિ જાગર્તિ, દુગ્ધાદિવિકૃતિષુ ન પ્રતિબદ્ધો ન
 મવતિ, તદા ચિરેણાપિ ગચ્છે સમાગચ્છતોઽસ્ય સાધોરુપધિઃ ગ્રહીતુ કલ્પતે ।

સકેદકી ગઈ હો વંદામદાક આવિકોંકે વિભાણકે લિયે જિસમેં ધૂમ કિયા
 ગયા હો, ધૂપ આદિ જલાકર જિસે સુગંધિત કિયા ગયા હો, પ્રદીપ
 આદિસે જિસે પ્રકાશાયુક્ત કિયા હો, મૂતકે લિયે જિસમેં માન આદિસે
 ચલિ દી ગઈ હો, ગોશર આદિસે જો સીપી ગઈ હો, જલકા જિસમેં છિજ
 કાષ કિયા ગયા હો ઓર જિસકો કૂઠાકચરા નિકાલ કર સાફ કર
 દિયા ગયા હો ऐसी वह वसति साधुजनोंको ठहरनेके लिये अकल्प
 નીય હૈ, પરિહરણોપધાત હસ પ્રકારસે હૈ-પરિહરણ નામ આસેનકા
 હૈ, હસસે જો ઉપધિ આદિકી અકલ્પનીયતા હૈ, वह परिहरणोपधात
 હૈ, હસમેં ઉપધિકા પરિહરણોપધાત હસ પ્રકારસે હૈ-વકાકી ધ્રમણ કર
 નેવાલે સાધુકે દ્વારા આસેચિન જો ઉપકરણ હો वह लेना योग्य नहीं
 હૈ, પરન્તુ ગચ્છસે નિર્ગત સાધુ અકેલા હોતા હુઆ भी यदि जागरित
 હૈ-दुग्धादि विकृतिगोंमें प्रतिबद्ध नहीं होता है, तो बहुत दिनोंके बाद
 भी गच्छमें आने पर उस साधुकी उपधि आदि लेना कल्प्य है तदुक्तम्-

આદિનો નાશ કરવા માટે ધૂમાઠો કરવામાં આવ્યો હોય, ધૂપ આદિ વડે
 જેને મુગ્ધાનુકૂળ કરવામાં આવેલ હોય, પ્રદીપ વડે જેને પ્રકાશિત કરવામાં
 આવેલ હોય, જેમાં મૂતને માટે ખડકના બાકાના વગેરે બાળી દેવામાં આવેલ
 હોય, છાણ આદિ વડે જેને લીપધામાં આવેલ હોય, જેમાં પાણી છાંટવામાં
 આવ્યું હોય, જેમાંથી કચરાપણે સાફ કરાવવામાં આવેલ હોય, જેની વસતિ
 (સ્થાન) સાધુને રહેવાને માટે અકલ્પનીય અણાય છે

પરિહરણોપધાતું સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે-પરિહરણ એટલે આસેનન
 ઉપધિ આદિની જે અકલ્પનીયતા છે, તેને પરિહરણોપધાત કહે છે તેમાંનો
 ઉપધિનો પરિહરણોપધાત આ પ્રકારનો છે-એકલા વિકારી સાધુ દ્વારા આસે
 નિત જે ઉપકરણ હોય, તે લેવા યોગ્ય નથી, પરન્તુ અન્યમાંથી નીકળી અચેલો
 સાધુ એકલા વિકારી લેવા છતાં પણ અચૂત હોય (દ્રવ આદિ વિકૃતિઓમાં
 અપ્રતિબદ્ધ હોય) તો એવો સાધુ ઘણા દિવસો પછી પણ અન્યમાં પાડે

તદુક્તમ્—

“ જગગણ અપ્પહિવજ્જણ, જઈવિ ચિરેણં ન ઉવહંમે । ”

છાયા—જાગરણમ્ અપ્રતિવન્ધો યદ્યપિ ચિરેણ નોપહન્યતે । ઇતિ ।

તથા—વસતેઃ પરિહરણોપઘાતો યથા—યઃ કશ્ચિત્ સાધુર્યત્ર વસત્યાં શેષકાલસ્ય માસમેકં વર્ષાકાલસ્ય વા ચાતુર્માસીં સ્થિત્વા પુનસ્તત્રૈવ તિષ્ઠતિ તતઃ સા વસતિઃ કાલાતિક્રાન્તદોષદુષ્ટા ભવતિ । યઃ સાધુઃ યત્ર વસત્યાં શેષકાલસ્ય માસમેકં તિષ્ઠતિ, વર્ષાકાલસ્ય વા ચાતુર્માસીં તિષ્ઠતિ, તતો વિહૃત્ય તદ્વિગુણં કાલમનતિયાપ્ય યદિ પુનસ્તત્રૈવ વસતૌ સમાયાતિ તદા સા વસતિરુપસ્થાનદોષદુષ્ટા ભવતિ । તદુક્તમ્—

“ ઉઝવાસા સમઈયા, કાલાતીયા ઉ સા મવે સેઝા ।

સા ચેત્ર ઉવઢાણા, દુગુણ દુગુણં અઙ્ગિજ્ઞતા ॥ ૧ ॥ ”

“ જગગણઅપ્પહિવજ્જણ ” इत्यादि ।

વસતિકા (ઉપાશ્રય)પરિહરણોપઘાત હસ પ્રકારસેહૈ—જો કોઈ સાધુ જિસ વસતિમેં શેષકાલકે એક માસ તક અથવા વર્ષાકાલકે ચાર માસ તક ઠહર કર પુનઃ વહીં પર ઠહર જાતા હૈ, વહ વસતિ કાલાતિક્રાન્ત દોષસે દુષ્ટ હોતી હૈ, જો સાધુ જિસ વસતિમેં શેષ કાલકે એક મહિના તક ઠહરતા હૈ, અથવા વર્ષાકાલકે ચાર માસ તક ઠહરતા હૈ ફિર હસકે વાદ વહાંસે વિહાર કર યદિ હસસે દ્વિગુણિત કાલકો સમાસ નહીં કરકે હસી વસતિમેં આ જાતા હૈ, તો વહ વસતિ ઉપસ્થાન દોષસે દોષયુક્ત હોતી હૈ—કહાં ખી હૈ—“ ઉઝવાસા સમઈયા ” इत्यादि ।

આવી જાય, તો તે સાધુની ઉપધિ આદિ લેવા યોગ્ય (કલ્પનીય) ગણાય છે. કહ્યું પણ છે કે “ જગગણ અપ્પહિવજ્જણ ” इत्यादि—

વસતિ (રહેઠાણ) નો પરિહરણોપઘાત આ પ્રકારનો છે—સાધુઓને શેષકાળમાં એક માસ સુધી અને ચોમાસામાં ચાર માસ સુધી એક જ જગ્યાએ રહેવાનું કલ્પે છે જો એક જ જગ્યાએ તેથી વધારે સમય સુધી રહે તો તે વસતિ કાલાતિક્રાન્ત દોષથી દૂષિત થાય છે. જો કોઈ સાધુ અમુક વસતિ (સ્થાન) માં શેષકાળમાં એક માસ સુધી અને વર્ષાકાળમાં ચાર માસ સુધી રહીને ત્યાંથી વિહાર કરે છે, પણ તેના કરતાં બમણો સમય વ્યતીત થઈ ગયા પહેલાં તે વસતિમાં આવે, તો તે વસતિ ઉપસ્થાન દોષથી દૂષિત થાય છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ ઉઝવાસા સમઈયા ” इत्यादि—

જાયા—શ્વતુવપાઃ સમતીતા કામાતીતા હુ સા મનેત્ સ્વપ્યો ।

સા પ્વ ઉપસ્થાના દ્વિગુણ દ્વિગુણમ્ અવર્મેયિત્વા ॥૧॥ ઇતિ ।

તયા—મકરુપ પરિહરણોપધાત પરિષ્ઠાપકં પ્રતિ મન્તવિ ।

વદુક્તમ્—“ વિદિગદિય વિદિમુત્ત, અરેગ, મતપાણમોત્તર્વ ।

વિદિગદિય વિદિમુત્તે, પ્ત્વ ચ પડો મહે મેમા ॥૧॥

મહવાચિ ચ વિદિગદિયે, વિદિમુત્ત સં મુક્કરુપ્પુમાય ।

સેસા નાનુમાયા ગરુણે વિન્ને ચ નિમ્મુરુણ ॥૨॥

જાયા—વિધિગૃહીત, વિધિમુક્તમ્ અતિરેક મક્તપાનં ધીનતત્ત્વમ્ ।

વિધિગૃહીતે વિધિમુક્તે, અથ ચ ચત્વારો મવેયુર્મદ્વા ॥૧॥

અપનાડપિ ચ વિધિગૃહીત વિધિમુક્તં તદ્ગુરુભિરુદ્ધાત્મ ।

સેપા નાનુદ્ધાતા ગૃહીતે વૃષ્ણે, ચ નિર્યુદ્ધમા ॥ ૨ ॥ ઇતિ ।

નિર્યુદ્ધમા—ત્યાગઃ । ગુરુભિરુદ્ધનાદિકં પરિષ્ઠાપયિતુમાક્ષતં શિષ્યં પ્રતિ પરિ
ષ્ઠાપાશ્ચનાદિકરૂપકઃ પરિહરણોપધાતો મ્વતીતિ શોષ્યમ્ । તયા—વિશોષિ—
વિશોષન વિશોષિઃ—કલ્પ્યતા, સા પશ્ચવિધા પ્રક્રિયા । પશ્ચવિધસ્વમાર—તદ્વત્—
તદ્ગુરુભિરુદ્ધાતિરિત્યાદિ । ઉદ્ધમાદિશોષ પરિહારેભ્ય મક્તાનાં વિશોષિર્મોગ્યેતિ ॥૧૫॥

મક્તકા પરિહરણોપધાત હસ પ્રકારસે હૈ—યહ મક્તકા પરિહરણો
પધાત પરિષ્ઠાપકકે (પરિષ્ઠાપના કરતેવાહે) પ્રતિ હોના હૈ કદા સ્ત્રી-હૈ
“ વિદિગદિય વિદિમુક્ત” ઇત્યાદિ ।

નિર્યુદ્ધમા શબ્દકા અર્થ ત્યાગ કરના હૈ, ગુરુમનો દ્વારા અશનાદિ
કક્તી પરિષ્ઠાપના કરતેકે લિયે આજ્ઞાપિત હુપ શિષ્યકે પરિષ્ઠાપના
કરતે યોગ્ય અશનાદિ સમ્બન્ધી પરિહરણોપધાત હોના હૈ, તેસા જામના
આદિયે । કલ્પ્યતાકા નામ વિશોષિ હૈ, યહ કલ્પ્યત્રાકપ વિશોષિ પાંચ

મક્ત (આકાર) ને પરિહરણોપધાત આ પ્રકારનો છે—આ મક્ત
(આકાર) ને પરિહરણોપધાત પરિષ્ઠાપના હોયમુક્ત કરે છે કહ્યું પશુ છે કે
‘ વિદિગદિય વિદિમુક્ત ’ ઇત્યાદિ—

નિર્યુદ્ધમા એટલે ત્યાગ કરવો. ગુરુમનો દ્વારા અશનાદિકની પરિષ્ઠાપના
કરવાનો એને આદેશ આપામે કોય છે એના શિષ્યને પરિષ્ઠાપના કરવા એવું
અશનાદિ સબંધી પરિહરણોપધાત હોતે છે એમ સમજવું

કલ્પ્યતાને વિશોષિ કહે છે તે કલ્પ્યતા હુપ વિશોષિ પાંચ પ્રકારની
કદી છે—ઉદ્ધમ વિશોષિ આદિ પાંચ વિશોષિ આદી કદયુ કલ્પી. ઉદ્ધમ આદિ

ઉપધાતવૃત્તયો જીવા અધાર્મિકત્વેન બોધેરપ્રાપ્તિસ્થાનેષુ પ્રવર્તન્તે, વિશુદ્ધિ-
વૃત્તયો જીવાસ્તુ ધાર્મિકત્વેન બોધેઃ પ્રાપ્તિસ્થાનેષુ પ્રવર્તન્તે इत्युपदर्शयितुमाह-

મૂલમ્-પંચહિં ઠાણેહિં જીવા દુલ્ભબોહિયત્તાણ કમ્મં પગ-
રેતિ, તં જહા-અરહંતાણં અવન્નં વયમાણે ૧, અરહંતપન્નત્તસ્સ
ધમ્મસ્સ અવન્નં વયમાણે ૨, આયરિયઽવજ્ઞાયાણં અવન્નં
વયમાણે ૩, ચાઽવન્નસ્સ સંઘસ્સ અવન્નં વયમાણે ૪, વિવક્ક-
તવ વંમ્મચેરાણં દેવાણં અવન્નં વયમાણે ૫। પંચહિં ઠાણેહિં
જીવા સુલભબોહિયત્તાણ કમ્મં પગરેતિ, તં જહા-અરહંતાણં
વન્નં વયમાણે જાવ વિવક્ક તવ વંમ્મચેરાણં દેવાણં વન્નં વય-
માણે ॥ સૂ ૦ ૧૬ ॥

છાયા--પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ જીવા દુર્લભબોધિકતયા કર્મ પ્રકુર્વન્તિ, તથા-
અર્હતામ્ અવર્ણ વદન્ ૧, અર્હતપન્નત્તસ્ય ધર્મસ્ય અવર્ણ વદન્ ૨, આચાર્યોપાધ્યાયાનામ્
અવર્ણ વદન્ ૩, ચાતુર્વર્ણસ્ય સંઘસ્ય અવર્ણ વદન્ ૪, વિપક્વતપોબ્રહ્મચર્યાણાં દેવા-
નામ્ અવર્ણ વદન્ ૫। પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ જીવાઃ સુલભબોધિકતયા કર્મ પ્રકુર્વન્તિ,
તથા-અર્હતાં વર્ણ વદન્ યાવત્ વિપક્વતપોબ્રહ્મચર્યાણાં દેવાનાં વર્ણ વદન્ ॥ સૂ ૦ ૧૬ ॥

પ્રકારકી હોતી છે, જૈસે-ઉદ્ગમ વિશોધિ આદિ ઉદ્ગમાદિ દોષોંકે પરિ-
હારસેહી ભક્તોંકી વિશોધિ હોતી છે, એસા જાનના ચાહિયે ॥ સૂ ૦ ૧૫ ॥

સૂત્રાર્થ-ઉપધાત વૃત્તિવાલે જો જીવ હોતેહૈં, વે અધાર્મિક હોનેસે બોધિકે
અપ્રાપ્તિ સ્થાનોંમેં પ્રવૃત્તિ કરતે હૈં-ઔર જો વિશુદ્ધ વૃત્તિવાલે જીવ હોતે
હૈં, વે ધાર્મિક હોનેસે બોધિકે પ્રાપ્તિ સ્થાનોંમેં પ્રવૃત્તિ કરતે હૈં સો હસી

દોષોના પરિહારથી આહારાદિમાં વિશોધિ (વિશુદ્ધિ) જળવાય છે,
એમ સમજવું ॥ સૂ. ૧૫ ॥

સૂત્રાર્થ-ઉપધાત વૃત્તિવાળા જીવો અધાર્મિક હોવાને કારણે બોધિના અપ્રાપ્તિ
સ્થાનોમાં પ્રવૃત્તિશીલ રહે છે, અને જેઓ વિશુદ્ધ વૃત્તિવાળા હોય છે તેઓ
ધાર્મિક હોવાથી બોધિના પ્રાપ્તિ સ્થાનોમાં પ્રવૃત્તિવાળા હોય છે, એ જ વાત
સૂત્રકાર આ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કરે છે.

સ્થા-૧૧

ટીકા--પંચદિ ઠાળેદિ ' રૂપાદિ--

જીયા=રાગિનઃ પચ્ચમિઃ સ્થાને =કારણેઃ દુર્લભમ્બોધિકૃતયા દુર્લભા યોધિ
યસ્ય સ દુર્લભમ્બોધિક, તસ્ય ભાવસ્તત્તા તથા-દુષ્ટપ્રાપ્ત્યજિનપર્મકત્વેન કર્મ=
મોહનીયાદિ પ્રકુરંન્તિ=અર્થતિ । તદ્વચેવ સ્થાના-યાદ-તથા-અર્થતામ્ અવર્ગ=
નિન્દાં વદન્=કુર્વન્ જીયો દુર્લભમ્બોધિતાંસમ્પાદુર્ક કર્મ પ્રકરોતિ । અર્થતામર્ગ
વાદો યથા--

" નરયી અરહતત્તો, જાણં વા કીસ મુંમય મોય ? ।

પાદુદિયે સુવજીવહ એમાદ મિજાણ ઠ અવર્ણો ॥૧૧॥ "

જાયા-નાસ્તિ અર્થતિ, જાનાનો યા કર્ય મુદ્ધે મોગાન્ ।

પ્રાપ્તિયાં તૂપજીવતિ, પૂવમાદિજિનાનાં હુ અવર્ણો ॥૧૧॥ રૂપિ ।

અવર્થઃ--' અર્થન્ ' રૂપિ નાસ્તિ । અર્થન્ યદિ ભવેત્, રૂપિ જાનાનોઽપિ=

યાતકો અપ સૂત્રકાર પ્રવર્ણિત કરતે હે--

' પંચદિ ઠાળેદિ જીયા દુર્લભમ્બોધિયત્તાય ' રૂપાદિ સૂત્ર ૧૬ ॥

ટીકા-ય જન પાંચ સ્થાનોસે જીયોકો યોધિકી જિનચમકી પ્રાપ્તિ દુર્લભ હોતીદે,
અર્થઃ એ મોહનીય આદિ કર્મોકા વચ કરતેદે । એ સ્થાન હસ પ્રકારસેદે--
જો જીય અર્થન્ત પ્રમુકા અવર્ણવાદ કરતા દે, ઉસે યોધિકી પ્રાપ્તિ દુર્લભ
હોતી દે ૧ । અવર્ણવાદકા અર્થ નિન્દા કરના દે । તાત્પર્ય હસ કથનકા
પેસા દે, કિ જો પ્રાણી અર્થન્ત પ્રમુકી નિન્દા કરતા દે, પેસા વહ પ્રાણી
દુર્લભ યોધિકાકે ઉત્પાદક કર્મોકા વચ કરતા દે । અર્થન્ત પ્રમુકા અવ
ર્ણવાદ હસ પ્રકારસે હોતા દે--

" નરયી અરહતત્તી " રૂપાદિ । હસકા પેસા અર્થદે--અર્થન્ત નામકા કોઈ
વ્યક્તિદે હી નહીં યદિ વહદે તો કેવલજ્ઞાનસે વહ સમસ્ત પદાર્થોકો જાનતા

" પંચદિ ઠાળેદિ જીયા દુર્લભમ્બોધિયત્તાય " રૂપાદિ--

આ પાંચ સ્થાનો (ઠાળે) ને લીધે જીવોને માટે યોધિકી પ્રાપ્તિ
દુર્લભ જની અર્થ છે તેથી તેઓ મોહનીય આદિ કર્મોને બંધ કરે છે તે
પાંચ ઠાળે નીચે પ્રમાણે છે--(૧) એ જીવ અર્થન્ત પ્રમુકો અવર્ણવાદ કરે
છે, તેને યોધિકી પ્રાપ્તિ દુર્લભ જની અર્થ છે અવર્ણવાદ કરેલો નિ ૧ । આ
કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે એ જીવ અર્થન્ત પ્રમુકી નિન્દા કરે છે તે જીવ
દુર્લભ ને મિત્રાના વત્તાદક કર્મોને બંધ કરે છે અર્થન્ત પ્રમુકો અવર્ણવાદ
આ પ્રકારે વચ છે-- નરયી અરહતત્તી " રૂપાદિ--

' અર્થન્ત'નું અસ્તિત્વ જ નથી. એ વિષયમાં ધેવજ્ઞાન વડે સમસ્ત

ज्ञानयुक्तः सन्नपि स कथं भोगान् भुङ्क्ते ? तु=पुनः स प्राभृतिकां=समवसरणा-
दिरूपाम् ऋद्धिम् उपजीवति । यदि अहं न भवेत् न स एवं कुर्यात् । एवमादिरहता
मवर्णवादो बोध्य इति । अत्रेदं बोध्यम् यदुच्यते अहन्तो नाभूवन्निति, तन्न,
तत्प्रणीतवचनानामध्याप्युपलब्धेः । यत्ते भोगान् भुक्तवन्तोऽतस्तेषामज्ञत्वं यत्
साध्यते, तदप्यकिंचित्करमेव, निश्चयज्ञानित्वेन सातकर्मणस्तीर्थकरनामादि-कर्म-
णश्चाऽवश्यवेद्यत्वेन तदुपादानात् । यत्तुच्यते, ते प्राभृतिकामुपजीवन्तीति तदपि
न समीचिनम्, वीतरागत्वेन तेषां तदतिशयवशाज्जायमानास्तु प्राभृतिकादिषु प्रति-

हुआ भी भोगोंका भोक्ता कैसे हो सकता है ? और कैसे वह समवसर-
णादिरूप ऋद्धिका भोक्ता हो सकता है ? यदि वास्तवमें वह अहंन
होता तो वह ऐसा नहीं कर सकता है, इत्यादि रूपसे ऐसा कथन करना
अहन्त प्रसुका अवर्णवाद है । यहां ऐसा समझना चाहिये-जो लोग ऐसा
कहते हैं कि अहन्त हुएही नहीं है, सो उनका ऐसा कहना ठीक नहीं
है-क्योंकि उनके प्रणीत वचनरूप आगम अभी तकभी उपलब्ध हो
रहे हैं । जो उन्होंने भोगोंको भोगा है-सो इससे उनमें अज्ञता साध्यकी
जाती है, वह भी अकिञ्चित्करही है, क्योंकि वे निश्चय ज्ञानी थे
सातावेदनीय कर्म और तीर्थ कर नाम आदि कर्म उनके द्वारा अवश्यमेव
थे इसलिये उन्हें भोग भी भोगना पड़े हैं । रही समवसरणादि रूप
ऋद्धिकी बात सो यह भी उनमें दोषादह नहीं है, क्योंकि वे तो वीत-
रागी होते हैं, अतः उसमें उनका किसीभी प्रकारका प्रतिबन्ध नहीं
होता है, वह तो केवल उनके अतिशयके वशसे उत्पन्न होती है, इस

पदार्थानि लभुवा छतां पशु ते लोगोनो लोक्ष्ता देवी रीते छोछ शके छे, अने
समवसरणु आदि रुप ऋद्धिनो लोक्ष्ता देवी रीते छोछ शके ? ने भरेभर
तेओ अडंत छोत तो ओवु करत न नही ” आ प्रकारना कथन द्वारा अडंत
प्रभुनो अवषुवाद थाय छे अडंत थया न नथी ओवी मान्यता साथी नथी,
कारणु के तेमना प्रणीत वचनरुप आगमो अंत्यारे पशु भोजूद छे, तेमणु
समवसरणु आदि रुप ऋद्धि लोगवी छोवाथी तेमनामां अज्ञता मान्य करवी
ओ वात पशु मानी शकय तेम नथी, कारणु के तेओ अवश्य ज्ञानी न छेता,
सातावेदनीय कर्म अने तीर्थ कर नाम आदि कर्म तेमना द्वारा अवश्य वेद्य
छता ते कारणु तेमने लोगो पशु लोगववा पडया छता समवसरणु आदि
ऋद्धिनी ने वात करवामा आवी छे, ते तो तेमना अतिशयने प्रलावे उत्पन्न
थय छती, तेओ तो वीतराग छोवाथी तेमां तेमनी छोछ पशु प्रकारनी आसक्ति

પ્રામાનાદિતિ । इति प्रथमं स्थानम् १। तथा-अर्हत्त्वज्ञानस्य धर्मस्य=श्रुतचारि
 प्राप्तकस्य अर्णै=" प्राकृतभाषानिवदेन श्रुतेन किम् ? चारिभ्रातृ दानमेव भेषः,
 किं चारिभ्रातृधनेने " स्यादि रूपेण निर्वाणं वदन् जीवो दुःखमयोषिष्ठा सम्पादक
 कर्म प्रकरोतीति । तदाक्षेपनिरासस्तु एवं बोध्यः, तथाहि-श्रुतस्य प्राकृतभाषा
 निवदस्य स्त्रीषास्त्रादीनामपि सुखेनावबोधार्थम् । निर्वाणं प्रति चारित्र्यस्य साक्षा
 दुपकारित्वं दानस्य तु परम्परया, इत्येव च दानात् चारित्र्यमेव भेष इति । इति द्वितीयं

प्रकारका यह प्रथम स्थान है १। दूसरा स्थान ऐसा है कि अर्हन्त प्रज्ञप्त
 श्रुत चारित्र्य रूप धर्मका अवर्णयाव करना इससे भी जीव दुर्लभ योषि
 ताके सम्पादक कर्मका बच करता है, इस प्रकारका अवर्णयाव करने
 वाला जीव ऐसा कहता है, कि श्रुत तो प्राकृत भाषामें निबद्ध है, उससे
 हमें क्या लाभ है ? चारित्र्यकी अपेक्षा दान देनाही अंगस्कर है, चारि
 त्राधानसे क्या लाभ होता है, इस प्रकारसे केवल प्रज्ञप्त श्रुत चारित्र्य
 रूप धर्मका अवर्णयाव करनेवाला जीव दर्शन मोहनीय कर्मका बच
 करता है, यह दर्शनमोहनीय कर्मयोषिकी प्राप्तिको दुर्लभ समझता है,
 इसके द्वारा कृत आक्षेपका निरास इस प्रकारसे समझना चाहिये-श्रुत
 जो प्राकृत भाषामें निबद्ध हुए हैं, सो उसका कारण ऐसा है, कि वे स्त्री
 और पालकों तकको भी अच्छी तरहसे समझमें आजावे इसलिये
 प्राकृत भाषामें निबद्ध किये गये हैं । निर्वाणके प्रति चारित्र्यमें साक्षात्

ન હતી. આ રીતે અહીં ત પ્રભુ યથા જ નથી એ માન્યતા ધરાવનાર તેમનો,
 અવલોકન કરે છે

બીજું કારણ—અહીં ત પ્રજ્ઞાપ્ત શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો અવલોકન કરનાર
 એ પણ દુર્લભ યોષિયાના ઉત્પાદક ક્રમનો જન્મ કરે છે આ પ્રકારનો
 અવલોકન કરનાર એવો કહે છે કે શ્રુત તો પ્રાકૃત ભાષામાં નિબદ્ધ છે
 એવા સતથી થોડા જ થાય છે ? ચારિત્ર કરતાં તો દાન કેવું જ વધારે
 પ્રેરકર છે ચારિત્રની આરાધનાથી થોડા જ થાય છે ? આ પ્રકારે શ્રુત
 ચારિત્ર રૂપ ધર્મનો અવલોકન કરનાર એવો કહે છે કે આ દર્શન મોહનીય કર્મનો જ બ
 કરે છે તે દર્શન મોહનીય કર્મ યોષિની પ્રાપ્તિને દુર્લભ જનાવી નાખે છે
 તેમની આ ક્ષીણત્વ નિરાકરણ આ પ્રભાવે કરી શકાય છે ।

શ્રુતને પ્રાકૃત ભાષામાં નિબદ્ધ કરવા પાછળનો આશય એ છે કે જ્ઞેમ
 કરવાથી સ્ત્રીઓ અને બાલકો પણ તેને સારી રીતે સમજી શકે છે નિવોલની

સ્થાનમ્ ૨। તથા-આચાર્યોપાધ્યાયનામ્ અવર્ણમ્=‘ બાલોડયમિત્યાદિનિન્દાં વદન્
જીવો દુર્લભબોધિતાસમ્પાદકં કર્મ પ્રકરોતિ, અતસ્તેષાં બાલત્વાદિ નિમિત્તીકૃત્ય
અવર્ણવાદો ન કાર્યઃ । ન હિ પલિત્તશીર્ષાદિના વૃદ્ધો, યસ્તુ બુદ્ધ્યાદિના બુદ્ધઃ સ
એવ યથાર્થ વૃદ્ધઃ ।

“ હહરા વિ ય જે સુયબુદ્ધોવવેયા ”

છાયા-હહરા અપિ યે શ્રુતબુદ્ધ્યુપપેતાઃ” ઇતિ । ઇતિ હહરા=બાલકાઃ તૃતીયમ્ ૩।
ચાતુર્વર્ણસ્ય ચત્ત્વારો વર્ણાઃ=શ્રમણાઃ શ્રમણ્યઃ શ્રાવકાઃ શ્રાવિકાશ્ચેતિ ભેદા યસ્મિન્
સ ચતુર્વર્ણઃ, સ એવ ચાતુર્વર્ણસ્તસ્ય તથાભૂતસ્ય સંપ્રસ્ય=સમુદાયસ્ય અવર્ણમ્=

ઉપકારિતા આતી હૈ, દાનમેં નહીં ઉસમેં તો પરમ્પરા રૂપસેહી ઉપકારિતા
આતી હૈ, હસ દાનકી અપેક્ષા ચારિત્રમેંહી પ્રધાનતા હૈ । હસ પ્રકારસે યહ
દ્વિતીય સ્થાન હૈ, તૃતીય સ્થાન એસા હૈ, આચાર્ય ઉપાધ્યાયોંકા અવર્ણ-
વાદ કરના યહ જીવ બાલ હૈ, ઇત્યાદિ રૂપસે નિન્દા કરનેવાલા જીવ
દુર્લભબોધિતાકે સમ્પાદક કર્મકા બન્ધ કરતા હૈ, અર્થાત્ પાપકા ઉપા-
ર્જન કરતા હૈ । હસલિયે ઉનમેં બાલત્વાદિકો નિમિત્ત બનાકર ઉનકા
અવર્ણવાદ નહીં કરના चाहिये । અર્થાત્ યે આચાર્ય
બાલ હૈં કયા સમજાતે હૈં ઇત્યાદિ કથન ન કરના । બાલોંકે
સંકેદ હો જાનેસેહી કોઈ વૃદ્ધ નહીં માના જાતા હૈ-અસલીમેં વૃદ્ધ તો વહી
હૈ, જો બુદ્ધિ આદિ ગુણોંસે વૃદ્ધ હૈ “હહરા વિ ય જે સુયબુદ્ધોવવેયા” હસ
પ્રકારકા યહ તૃતીય સ્થાન હૈ, ચતુર્થ સ્થાન હસ પ્રકારસે હૈ-ચાર વર્ણરૂપ-
મુનિ, આર્યિકા, શ્રાવક ઓર શ્રાવિકારૂપ સંઘકી સમુદાયકી-નિન્દા
કરના યહ ચાતુર્વર્ણ સંઘકા અવર્ણવાદ હૈ, જૈસે-“યહ સંઘ કૈસા હૈ, જો

પ્રાપ્તિ માટે અરિત્ર જ સાક્ષાત્ ઉપકારી થઈ પડે છે-દાનમાં સાક્ષાત્ ઉપકારિ-
તાનો સદ્ભાવ નથી. તેમાં તો પરમ્પરા રૂપે જ ઉપકારિતા આવે છે, તેથી
દાન કરતા અરિત્ર જ શ્રેયસ્કર છે.

ત્રીજું કારણ—આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયનો અવર્ણવાદ કરનાર છપ
પણ દુર્લભ બોધિતા ઉત્પાદક કર્મનો બન્ધ કરે છે. આચાર્યને બાલ કહીને
તેમનો અવર્ણવાદ કરવો ભોળાં નહીં. વાળ સફેદ થઈ જવાથી જ માણસ
વૃદ્ધ થતો નથી. ખરી રીતે તો જે જ્ઞાન આદિમા વૃદ્ધિ પામ્યો હોય છે,
એ જ વૃદ્ધ છે કહ્યું પણ છે કે-“હહરા વિ ય જે સુયબુદ્ધોવવેયા”

ચોથું કારણ—સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક અને શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સંઘની
નિન્દા કરવી તે ચાતુર્વર્ણ (ચતુર્વિધ) સંઘનો અવર્ણવાદ છે. “આ સંઘ

યથામાત્રાદિતિ । इति प्रथमं स्थानम् १। तथा-अहंप्रज्ञप्तस्य धर्मस्य=भुतचारि
 आत्मकस्य अवर्ण=“ प्राकृतभाषानिषत्वेन भुतेन किम् ? चारिप्राद् दानमेव धेय ,
 किं चारिप्राराधनेने ” स्यादि रूपेण निर्व्या यदन् जीषो दुर्लभबोधिता सम्पादक
 कर्म प्रकरोतीति । तदाक्षपनिरासस्तु एवं बोध्या, तथाहि-भुतस्य प्राकृतभाषा
 निषदत्त स्त्रीयाञ्छादीनामपि मुखेनाथबोधार्थम् । निर्वानं प्रति चारित्र्यस्य साक्षा
 दुपकारित्वं दानस्य तु परम्परया, इत्य च दानात् चारिप्रमेव धेय इति । इति द्वितीय

प्रकारका यह प्रथम स्थान है १। दूसरा स्थान ऐसा है कि अर्हन्त प्रज्ञप्त
 भुत चारित्र रूप धर्मका अवर्णवाद् करना इससे भी जीष दुर्लभ बोधि
 ताके सम्पादक कर्मका बंध करता है, इस प्रकारका अवर्णवाद् करने
 वाला जीष ऐसा कहता है, कि भुत तो प्राकृत भाषामें निषद्व है, उससे
 हमें क्या लाभ है ? चारित्रकी अपेक्षा दान देनाही अपेक्षर है, चारि
 प्राराधनसे क्या लाभ होता है, इस प्रकारसे केवल प्रज्ञप्त भुत चारित्र
 रूप धर्मका अवर्णवाद् करनेवाला जीष दर्शन मोहनीय कर्मका बंध
 करता है, यह दर्शनमोहनीय कर्मबोधिकी प्राप्तिको दुर्लभ बनाता है,
 इसके द्वारा कृत आक्षेपका निरास इस प्रकारसे समझना चाहिये-भुत
 जो प्राकृत भाषामें निषद्व गुण है, सो उसका कारण ऐसा है, कि बेस्त्री
 और बालकों तकको भी अच्छी तरहसे समझमें आजाये इसलिये
 प्राकृत भाषामें निषद्व किये गये हैं । निषाणके प्रति चारित्रमें साक्षात्

ન હતી. આ રીતે અહીં ત પ્રભુ યથા જ નથી જો માન્યતા પ્રાપ્તનાર તેમનો
 અવર્ણવાદ કરે છે

બીજું કારણ—અહીં ત પ્રજ્ઞપ્ત ભુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો અવર્ણવાદ કરનાર
 એવ પશુ દુર્લભ બોધિતાના ઉત્પાદક ક્રમનો જન્મ કરે છે આ પ્રકારનો
 અવર્ણવાદ કરનાર એવ કોણ કહે છે કે ભુત તે પ્રાકૃત ભાષામાં નિષદ્ધ છે
 એવા ભુતથી શો લાભ થવાનો છે ? ચારિત્ર કરતાં તે દાન દેવ જ વધારે
 શેષસ્કર છે ચારિત્રની આશપનાથી શો લાભ થવાનો છે ? આ પ્રકારે ભુત
 ચારિત્ર રૂપ ધર્મનો અવર્ણવાદ કરનારો એવ દશન મોહનીય ક્રમનો જન્મ
 કરે છે તે દશન મોહનીય ક્રમ બોધિની પ્રાપ્તિને દુર્લભ બનાવી નાખે છે
 તેમની આ દલીલનું નિરાકરણ આ પ્રમાણે કરી શકાય છે ।

ભુતને પ્રાકૃત ભાષામાં નિષદ્ધ કરવા પાછળનો આશય જો છે કે જેમ
 કરવાથી બીજાં અને બાકીનાં પશુ તેને સારી રીતે સમજી શકે છે નિર્બોધની

સ્થાનમ્ ૨। તથા-આચાર્યોપાધ્યાયનામ્ અવર્ણમ્=‘વાલોડયમિત્યાદિનિન્દાંવદન્
જીવો દુર્લભવોધિતાસમ્પાદકં કર્મ પ્રકરોતિ, અતસ્તેષાં વાલત્વાદિ નિમિત્તીકૃત્ય
અવર્ણવાદો ન કાર્યઃ । ન હિ પલિતશીર્ષાદિના વૃદ્ધો, યસ્તુ બુદ્ધ્યાદિના બુદ્ધઃ સ
એવ યથાર્થ વૃદ્ધઃ ।

“હરરા વિ ય જે સુયબુદ્ધોવવેયા”

છાયા-હરરા અપિ યે શ્રુતબુદ્ધ્યુપપેતાઃ” ઇતિ । ઇતિ હરરા=વાલકાઃ તૃતીયમ્ ૩।
ચાતુર્વર્ણસ્ય ચત્વારો વર્ણાઃ=શ્રમણાઃ શ્રમણ્યઃ શ્રાવકાઃ શ્રાવિકાશ્ચેતિ ભેદા યસ્મિન્
સ ચતુર્વર્ણઃ, સ એવ ચાતુર્વર્ણસ્તસ્ય તથાભૂતસ્ય સંઘસ્ય=સમુદાયસ્ય અવર્ણમ્=

ઉપકારિતા આતી હૈ, દાનમેં નહીં ઉસમેં તો પરમ્પરા રૂપસેહી ઉપકારિતા
આતી હૈ, હસ દાનકી અપેક્ષા ચારિત્રમેંહી પ્રધાનતા હૈ । હસ પ્રકારસે યહ
દ્વિતીય સ્થાન હૈ, તૃતીય સ્થાન એસા હૈ, આચાર્ય ઉપાધ્યાયોંકા અવર્ણ-
વાદ કરના યહ જીવ વાલ હૈ, હત્યાદિ રૂપસે નિન્દા કરનેવાલા જીવ
દુર્લભવોધિતાકે સમ્પાદક કર્મકા બન્ધ કરતા હૈ, અર્થાત્ પાપકા ઉપા-
ર્જન કરતા હૈ । હસલિયે ઉનમેં વાલત્વાદિકો નિમિત્ત બનાકર ઉનકા
અવર્ણવાદ નહીં કરના ચાહિયે । અર્થાત્ યે આચાર્ય
વાલ હૈં કયા સમજાતે હૈં હત્યાદિ કથન ન કરના । વાલોંકે
સફેદ હો જાનેસેહી કોઈ વૃદ્ધ નહીં માના જાના હૈ-અસલીમેં વૃદ્ધ તો વહી
હૈ, જો બુદ્ધિ આદિ ગુણોંસે વૃદ્ધ હૈ “હરરા વિ ય જે સુયબુદ્ધોવવેયા” હસ
પ્રકારકા યહ તૃતીય સ્થાન હૈ, ચતુર્થ સ્થાન હસ પ્રકારસે હૈ-ચાર વર્ણરૂપ-
સુનિ, આરિકા, શ્રાવક ઔર શ્રાવિકારૂપ સંઘકી સમુદાયકી-નિન્દા
કરના યહ ચાતુર્વર્ણ સંઘકા અવર્ણવાદ હૈ, જૈસે-“યહ સંઘ કૈસા હૈ, જો

પ્રાપ્તિ માટે ચરિત્ર જ સાક્ષાત્ ઉપકારી થઈ પડે છે-દાનમાં સાક્ષાત્ ઉપકારિ-
તાનો સદ્ભાવ નથી તેમાં તો પરમ્પરા રૂપે જ ઉપકારિતા આવે છે. તેથી
દાન કરતા ચરિત્ર જ શ્રેયસ્કર છે.

ત્રીજું કારણ--આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયનો અવર્ણવાદ કરનાર એવ
પણ દુર્લભ બોધિતા ઉપાદક કર્મનો બન્ધ કરે છે. આચાર્યને બાલ કહીને
તેમનો અવર્ણવાદ કરવો ભેદબો નહીં. વાળ સફેદ થઈ જવાથી જ માણસ
વૃદ્ધ થતો નથી. ખરી રીતે તો જે જ્ઞાન આદિમાં વૃદ્ધિ પામ્યો હોય છે,
એ જ વૃદ્ધ છે કહ્યું પણ છે કે-“હરરા વિ ય જે સુયબુદ્ધોવવેયા”

ચોથું કારણ--સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક અને શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સંઘની
નિન્દા કરવી તે ચાતુર્વર્ણ (ચતુર્વિધ) સંઘનો અવર્ણવાદ છે. “આ સંઘ

“ કોદશોઽય સંધો, યોઽમાર્ગેમપિ માર્ગીકરોતિ ” इत्येन निन्दां षट् दुर्मम षो
 पितासम्पादकं कर्म प्रकरोति जीवः । वस्तुतस्तु चातुर्वर्णः सद्यो ज्ञानादिगुण-
 समुदायात्मकत्वान्न कदाचिदपि अमार्गं मार्गीकरोति, अपि तु स तीर्थं कटादि प्रव-
 र्तित मार्गत्वेनाधयतीति निन्दकाक्षुपो एवैवेति चतुर्थम् ३। तथा-विपक्षतपो
 ब्रह्मचर्याभा-विपक्ष-परिपाकावस्थामुपगत-प्रकृष्टतां प्राप्तं तपो ब्रह्मचर्यं मयो-
 न्तरे येषां तेषाम्, यद्वा-विपक्षम्=उदयावस्थायामागत तपो ब्रह्मचर्यं तदेतुकं देवा
 युष्कादि कर्म-येषां तेषां देवानाम् अवर्णम्=“ न सन्ति देवाः । यदि ते मयेषु
 स्तर्हि ते कदाचिदप्युपलभ्येरन्नपि । न च तेषां कदाचिदप्युपलभ्यिरेवति । सन्तु वा

અમાર્ગીકો મી માર્ગ કરતા હૈ, હસ પ્રકારસે સચકી નિન્દા કરનેલાલા વ્યક્તિ
 દુર્લભ યોચિતાકે સમ્પાદક કર્મકા વચ કરતા હૈ જાસ્તવમેં દેવા જાય તો
 ચાતુર્વર્ણ સદ્ જ્ઞાનાદિ ગુણોકા સમુદાયરૂપહી હોતા હૈ, અતઃ વહ કમી
 મી અમાર્ગીકો માર્ગરૂપ નહીં કરતા હૈ, કિન્તુ તાર્થકર આદિ દ્વારા પ્રવ-
 ર્તિત માર્ગીકોહી વહ માર્ગ રૂપસે આમિત કરતાહૈ, અતઃ હસ તરહસે નિન્દ-
 કકા આક્ષેપ શ્રુતાહી હૈ ૩। પાંચવાં કારણ એસા હૈ, જા વ્યક્તિ વિપક્ષ-
 તપો બ્રહ્મચર્યવાલે દેવોંકી નિન્દા કરતા હૈ, વહ દુર્લભ યોચિતા સમ્પાદક
 કર્મકા વચ કરતા હૈ-મવા તરમેં જિનકા તપ ઓર બ્રહ્મચર્ય વિપક્ષ
 વિશેષરૂપસે પરિપાકીકો પ્રાપ્ત હુમા હૈ, સર્વોત્કૃષ્ટ હુમા હૈ, યદ્વા-
 પરિપક્ષ ઉદય અવસ્થામેં આયા હૈ, તપ પચ બ્રહ્મચર્ય હેતુક દેવા
 યુષ્કાદિ કર્મ જિ-હોકે એસે દેવોંકા અવર્ણવાદ કરના “ અર્ચાત્ દેવ
 નહીં હૈ ” યદિ એ હોતે તો કમી તો દિસાઈ દેતે, અતઃ કેસે

કેવો છે કે એ અમાર્ગને પણ માર્ગ બલે છે । ” જા પ્રકારના વચનો દ્વારા
 સ્વર્ગની નિન્દા કરનાર દુર્લભ યોચિતાનો ઉત્પાદક કમનો બધ કરે છે ખરી
 રીતે તે ચતુર્વિધ સર્વ જ્ઞાનાદિ શુભોના સમુદાય રૂપ જ/કોવ છે તેથી તે
 કહી પણ અમાર્ગને માર્ગ રૂપે માનતો નથી તે તે તીવ્ર કર આદિ દ્વારા
 પ્રવર્તિત માર્ગે જ જાણતો હોય છે તેથી તેને અમાર્ગ બલવે/ તે તેનો
 અપવિત્ર વાદ જ કરવા બરાબર છે

પાંચમું કારણ—એ માણસ વિપક્ષ તપો બ્રહ્મચર્યવાળા દેવોંની નિન્દા કરે
 છે, તે પણ દુર્લભ યોચિતાના ઉત્પાદક કમનો બધ કરે છે જાસ્તવમેં
 જેમતે તપ અને બ્રહ્મચર્ય વિપક્ષ થયેલું છે વિશેષ રૂપે પરિપક્ષ થયેલું છે
 સર્વોત્કૃષ્ટ રહેલું છે અર્થાત્ એ તપ અને બ્રહ્મચર્ય હેતુક
 દેવાયુષાદિ કમનો જેમને ઉદય થયો છે એવા દેવોંને

તે, તથાઽપિ કામાસક્તમાનસૈર્વિરતિર્વર્જિતૈઃ, નિર્નિમેષૈષ્ટેષ્ટાવર્જિતૈઃ મ્રિયમાર્ણરિવ પ્રાચનકાર્યાનુપયોગિભિશ્ચ તૈર્ન કિંચિત્ પ્રયોજનમ્ ” इत्येवं निन्दां वदन् जीवो दुर्लभबोधितासम्पादकं कर्म प्रकरोति । देवविषयकाक्षेपनिरासस्त्वेवम्-विद्यमानपस्वका देवाः, तत्कृतनिग्रहानुग्रहयोः साक्षादुपलम्भात्, कामासक्तिस्तु तेषां मोहसातकर्मोदयात् ।

तदुक्तम्-“ एत्थ पसिद्धी मोहणीयसायवेयणीयकम्मउदयाओ ।

કામપસત્તા વિરઈ કમ્મોદયઓ ચિય ન તેસિ ॥૧॥

માના જાવે કિ દેવ હૈં, અથવા માન મી લિયા જાવે કિ વે હૈં-તો મી ડનસે લામહી કયા હૈ, કયોંકિ રાતદિન વે કામસેવનમેં આસક્તરહતે હૈં, વિરતિકા વે પાલન નહીં કરતે હૈં પન્કેં ડનકી અપકની નહીં હૈં, ચેષ્ટાવર્જિત વે હોતે હૈં, પ્રવચનકે કિસી કાર્યમેં વે આતે નહીં હૈં, અતઃ મરે હુઓંકી તરહ ડનસે કુછ મી પ્રયોજન નહીં હૈ ” इस प्रकारका अवर्णवाद करनेवाला जीव दुर्लभबोधिताका उपार्जन कर्मका बन्ध करता है, देवविषयक आक्षेपका निराकरण इस प्रकारसे है, देवोंकी सत्ता विद्यमान है, क्योंकि उनके द्वारा निग्रह और अनुग्रह हुआ साक्षात् देखा जाता है, काममें आसक्ति तो उनमें मोह एवं सात कर्मके उदयसे देखी जाती है, तदुक्तम्—

“ एत्थ पसिद्धी मोहणीय ” इत्यादि । देवोंको चारित्र मोहणीय

અવર્ણવાદ કરનાર દુર્લભ બોધિતા ઉત્પાદક કર્મનો બન્ધ કરે છે. તેમનો અવર્ણવાદ કરનાર આ પ્રમાણે કહે છે-“ દેવોનું અસ્તિત્વ જ નથી. જો દેવો હોય તો કોઈ વાર પણ આપણી નજરે કેમ પડતાં નથી ? કદાચ તેઓનું અસ્તિત્વ માની લેવામાં આવે, તો તેમના દ્વારા આપણને શા લાભની પ્રાપ્તિ થવાની છે ? તેઓ રાતદિન કામભોગોનું સેવન કર્યા કરે છે, વિરતિનું પાલન તો કરતા જ નથી, તેમની આખોની પાંપણો તો અનિમિષ હોય છે (પલકારા રહિત હોય છે), તેઓ ચેષ્ટાઓથી રહિત હોય છે, પ્રવચનના કોઈ પણ કાર્યમાં તેઓ આવતા નથી, તેથી મૃત આદમીની જેમ કોઈ પણ કામના નથી ” देवविषयक आ आक्षेपनु डरे निराकरण करवाभा आवे છે—

દેવોની સત્તા (પ્રભાવ) વિદ્યમાન છે, કારણ કે તેમના દ્વારા નિગ્રહ અને અનુગ્રહ થતો સાક્ષાત્ જોવામાં આવે છે તેઓ કામભોગોમાં જે આસક્તિ ધરાવે છે, તે તો મોહનીય અને સાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી જોવામાં આવે છે. કહ્યું પણ છે કે - “ एत्थपसिद्धि मोहणीय ” इत्यादि—

અગ્નિમિસ વેષસદાશા, નિચ્ચેદ્વાઽણુતરા ઇ કયકિન્ચા ।

કાલણુમાષા તિથ્યુન્નદ પિ અમલ્પ કુર્વન્તિ ॥૨॥ ”

છાયા—મથ મસિદ્ધિ મોહનીય સાતવેદનીય કર્મોદયાન્ ।

કામમસકિઃ, ચિરતિઃ કર્મોદયત યથ ન સેપામ્ ॥૨॥

અનિમેષા દેવસ્વમાનાઃ નિઘ્રષ્ટા અનુચરાસ્તુ કૃતકૃત્યાઃ ।

કાલાન્નુમાષાત્ સીર્યોન્નતિ મપિ અન્યથ કુર્વન્તિ ॥૨॥ ઇતિ ।

ઇતિ પચ્ચમં સ્થાનમ્ ૫૧ પમિઃ પચ્ચમિઃ સ્થાનૈર્જીવા દુર્લભચોષિકા મમ્ભન્તીતિ
બોધ્યમ્ । અય સુલભચોષિતામાહ—‘ પથર્હિ ઠાળેર્હિ ’ ઇત્યાદિ । પચ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ
જીવાઃ સુલભચોષિકતાસંપાદકં કર્મ પ્રકુર્વન્તિ । કાનિ ઠાનિ સ્થાનાનિ ?
ઇત્યાદિ—તથાયા—અર્હતો વર્ણમ્—સ્તુતિં ચરન્—કુર્વન્ જીવઃ સુલભચોષિકતા સંપા
દક કર્મ પ્રકરોતિ । અર્હતો ષણ્ણાદો યથા—

કર્મ ના ઉદય રહતા હે, અતઃ ઉનમેં ચિરતિ નહીં હોતી હે, દેવ સ્વમાના
અનિમિષ હોતે હેં, તથા અનુચરાસી જો દેવ હેં તે કૃતકૃત્ય હોનેસે
નિઘ્રષ્ટ હોતે હેં । દેવ કાલકે પ્રમાણસે અન્યથ સીર્ય કો ઉચ્ચત મી
કરતે હેં । હસ પ્રકારકા યહ પાંચવાં કારણ હે, જન પૂર્વેક પાંચ
કારણોસે જીવ દુર્લભ ચોષિવાલે હોતે હેં । અય સુલભ ચોષિવાલે જીવ
કેસે હોતે હેં—હસ યાજ્ઞો સૂત્રકાર પ્રકટ કરતે હેં—

‘ પથર્હિ ઠાળેર્હિ ’ ઇત્યાદિ । જીવ પાંચ કારણોસે સુલભ ચોષિ
તાકે સંપાદક કર્મકા પામ કરતે હેં તે પાંચ કારણ હસ પ્રકારસે હેં—
અર્હન્તોંકી સ્તુતિ કરના ૧ ક્યોંકિ અર્હન્તોંકી સ્તુતિ કરનેવાલા જીવ

દેવોને આદિત્ર ઓહનીય કર્મોને ઉદય રહે છે તેથી તેમનામાં ચિરતિને
અભાવ રહે છે । દેવો સ્વાભાવિક રીતે જ અનિનિષ હોય છે, તથા અનુચર
વિમાનનિવાસી જે દેવો છે તેઓ કૃતકૃત્ય હોવાથી નિચ્ચેદ્ (ઘેટા પકિત)
હોય છે । દેવ કાલના પ્રમાણથી અન્યથ સીર્યની ઉચ્ચતિ પણ કરે છે આ પ્રમા
રનું આ પાંચમું કારણ છે । આ પાંચ કારણોથી જીવ સુલભ ચોષિવાળો બને છે ।

હવે સૂત્રકાર જે વાત પ્રકટ કરે છે તે જીવ સુલભ ચોષિવાળો કેવી
રીતે બને છે । “ પથર્હિ ઠાળેર્હિ ” ઇત્યાદિ—

જીવ નીચેના પાંચ કારણોને બીધે સુલભ ચોષિવાળા ઉત્પાદક કર્મોને
બન્ધ કરે છે—(૧) અર્હન્તોને । વળી બાક કરવાથી એટલે કે તેમની સ્તુતિ

“ જિયરાગદોસમોહા, સવ્વન્નુ તિદસનાહકયમદ્દિમા ।

અચ્ચંતસચ્ચવયણા, સિવગગ્ગમણા જયંતિ જિના ” ॥૧॥

છાયા—જિતરાગદ્વેષમોહાઃ, સર્વજ્ઞાઃ ત્રિદશનાથકૃતમહિમાનઃ ।

અત્યન્તસત્યવચનાઃ, શિવગતિગમના જયન્તિ જિના ॥૧॥ ઇતિ ।

ઇતિ પ્રથમં સ્થાનમ્ ૧। એવમેવ અર્હત્ પ્રરૂપિતધર્માદિ વિપક્વતપો બ્રહ્મચર્ય-
દેવાન્તાનાં ચતુર્ણાં વર્ણં વદન્ જીવઃ સુલભવોધિકતાસમ્પાદકં કર્મ પ્રકરોતિ ।
તત્ર-અર્હત્પ્રરૂપિતધર્મસ્ય વર્ણવાદો યથા—

“ વત્થુપયાસણસૂરો, અહસયરયણાણ સાયરો જયહ ।

સવ્વજગજીવ વંધુરવંધુ દુવિહો વિ જિણધમ્મો ॥૧॥”

છાયા—વસ્તુપ્રકાશનસૂર્યઃ, અતિશયરત્નનાં સાગરો જયતિ ।

સર્વ જગજીવ વંધુરવંધુ દ્વિવિધોઽપિ જિનધર્મઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

ઇતિ દ્વિતીયં સ્થાનમ્ ૨। આચાર્યોપાધ્યાયવર્ણવાદો યથા—

સુલભવોધિતાકે સમ્પાદક કર્મકા વન્ધ કરતા હૈ, અર્હન્તોંકા વર્ણવાદ
સ્તુતિપાઠહિસ પ્રકારસે કહાં ગયા હૈ, “ જિયરાગદોસમોહા ” ઇત્યાદિ ।

અર્હન્ત પ્રભુ રાગદ્વેષકો જીતનેવાલે હોતે હૈં, બે સર્વજ્ઞ હોતે હૈં, ઉનકી
મહિમા હન્દ્ર કરતે હૈં । ઉનકે વચન અત્યન્ત સત્ય હોતે હૈં, ઔર નિય-
મતઃ યે ઉસી ભવસે મોક્ષમૈં જાતે હૈં એસા યહ પ્રથમ સ્થાન હૈ, હસી
તરહસે અર્હત્ પ્રરૂપિત ધર્મકા જાં વર્ણવાદ કરતે હૈં, યાવત્ પરિપક્વતપ
ઔર બ્રહ્મચર્યવાલે દેવોંકા જો વર્ણવાદ કરતે હૈં, એસે જીવ સુલભવોધિ-
તાકે સમ્પાદક કર્મકા વન્ધ કરતે હૈં, અર્હત્પ્રરૂપિત ધર્મકા વર્ણવાદ હિસ
પ્રકારસે હૈ—“ વત્થુપસાયણ સૂરો ” ઇત્યાદિ ।

અર્હત્પ્રરૂપિત ધર્મ વસ્તુઓંકો પ્રકાશિત કરનેકે લિયે સૂર્યકે જૈસા

કરવાથી એવ સુલભ બોધિતાના સંપાદક કર્મનો બન્ધ કરે છે અહં તેની
સ્તુતિ એવ આ પ્રમાણે કરે છે—“ જિયરાગદોસમોહા ” ઇત્યાદિ—
અહં ત પ્રભુ રાગદ્વેષને છોડનારા હોય છે, તેઓ સર્વજ્ઞ હોય છે, ઇન્દ્રો પણ
તેમનો મહિમા ગાય છે. તેમના વચન સર્વથા સત્ય જ હોય છે, તેઓ
એ જ ભવમા અવશ્ય મોક્ષ પ્રાપ્ત કરે છે ”

બીજું સ્થાન—અહં ત પ્રરૂપિત ધર્મનો વર્ણવાદ કરનાર એવ પણ સુલભ
બોધિતાના સંપાદક કર્મનો બન્ધ કરે છે અહં ત પ્રરૂપિત ધર્મનો વર્ણવાદ
આ પ્રમાણે થાય છે “ વત્થુપસાયણસૂરો ” ઇત્યાદિ—અહં ત પ્રરૂપિત ધર્મ
વસ્તુઓનો પ્રકાશિત કરવામા સૂર્યના સમાન છે, તે અતિશય રૂપ રત્નોનો

“ તેસિં નમો તેસિં નમો, માથેણ પુણો તેસિં ચેવ જમો ।

અનુવક્કયપરહિયરયા, જે નાણ દે સિ મઘ્ઞાણ ” ॥૧॥

છાયા—તેમ્યો નમઃ, તેમ્યો નમઃ, માથેણ પુનસ્તેમ્ય એવ નમઃ ।

અનુવક્કયપરહિસરતા યે જ્ઞાન દવતિ મઘ્યેમ્ય ॥૧॥ ઇતિ ।

ઈતિ તૃતીય સ્થાનમ્ ૩। વાતુર્વર્ણસંઘસ્ય વર્ણવાદો યયા—

“ સત્ત્વનિયમસંઘસંઘમઃ વિનયઞ્જયસ્તસિદ્ધિપુતિપુણ્યુત્તો ।

સીલસતીકયલોમો, સ જયત્ત સુપો વાઠ્ઠમ્મ્યો ॥ ૧ ॥

છાયા—સુપો નિયમસત્ત્વસંઘમ વિનયાર્નેવજ્ઞાન્તિમુક્તિગુણયુક્તઃ ।

સીલસતીકયલોમોઃ સ જયતિ સદ્ધમતુર્વર્ણઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

ઈતિ ચતુર્થ સ્થાનમ્ ૪। દેવવર્ણવાદો યયા—

હૈ, અતિશય રૂપ રત્નોંકા સમુદ્ર હૈ, સમસ્ત જગતીર્થોંકા અનોલા વપુ હૈ, યહ ગૃહસ્થ ધર્મ ઓર મુનિધર્મકે મેવસે દો પ્રકારકા હૈ, હસ પ્રકારકા યહ દ્વિતીય સ્થાન હૈ, આચાર્ય ઉપાધ્યાયકા વર્ણવાદ હસ પ્રકારસે હૈ— ‘ તેસિં નમો તેસિં નમો ’ ઇત્યાદિ ।

તન આચાર્ય ઉપાધ્યાયોંકો મેરા મન ધ્યન કાયકપ ખાવસે વારવાર નમસ્કાર હો જો બિના કિસી વાહનાકે પરકા હિત કરનેમેં સગે રહતે હૈ, ઓર નિર્મલ જ્ઞાનકા વાન દેતે હૈ, એસા યહ તૃતીય સ્થાન હૈ, ચતુર્વર્ણ સંઘકા વર્ણવાદ હસ પ્રકારસે હૈ—

“ તથ નિયમ સત્ત્વ સંઘમ ’ ઇત્યાદિ ।

જો ચતુર્વિધ સંઘ તથ નિયમ સત્ત્વ, સંઘમ, વિનય, આર્જવ જ્ઞાન્તિ, મુક્તિ આદિ ગુણોંસે યુક્તહૈં, ઓર જિસમે સીલસે લોકકો વશમેં કિયાહૈં, એસા વહ ચતુર્વિધ ભીસંઘ સદા અવશીલ રહો હસ પ્રકારકા યહ ચતુર્થ સ્થાન હૈ,

સાત્તર છે તે સમસ્ત સ સાદી લખેનો અનેઓ બ પુ છે, તે ગૃહસ્થ ધર્મ અને મુનિધર્મના લેહથી બે પ્રકારનો છે

ત્રીજું સ્થાન—આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયનો વળવાદ કરવાથી એવ મુલક બે બિંબાઓ બને છે તેમની સ્તુતિ આ પ્રમાણે કરી શકાય “ તેસિં નમો તેસિં નમો ” ઇત્યાદિ “ જેઓ નિષ્કામ કાવે પરહિતાના કામનાં પ્રવૃત્ત રહે છે અને નિમળ જ્ઞાનના દવા છે, એવા આચાર્યો અને ઉપાધ્યાયોન મન, વચન અને કામથી મારાં વારવાર નમસ્કાર હો ”

ચોથું સ્થાન—ચતુર્વિધ સંઘનો વળવાદ કરવાથી પણ એવ મુલક બે બિંબાના સંપાદક કમનો બ બે કરે છે ચતુર્વિધ સંઘની આ પ્રમાણે સ્તુતિ કરવી એવલે— ‘ જે ચતુર્વિધ સંઘ તથ નિયમ, સત્ત્વ સંઘમ વિનય, આર્જવ, જ્ઞાન્તિ મુક્તિ, અદિ ગુણોથી યુક્ત છે અને જેણે શીલથી લોકને વશ કરેલ છે, એવા ચતુર્વિધ આસંઘનો સદા જય હો ’

“ ધળ્લા સ્વલુ તે દેવા, વિસયત્રિમોઢાવિ હંત જિણસવિદે ।

ધમ્મં સુળંતિ સમ્મં, તિત્થપભાવં ચ કુવ્વંતિ ” ॥૧॥

હાથા—ધન્યાઃ સ્વલુ તે દેવાઃ વિપયત્રિમોઢા અપિ હન્ત । જિનસવિદે ।

ધર્મ શ્રુત્વન્તિ સમ્પક્, તીર્થ પ્રભાવં ચ કુર્વન્તિ ॥ ઇતિ ॥

ઈતિ પશ્ચમં સ્થાનમ્ ૫ । ઇમિઃ પશ્ચમિઃ સ્થાનૈઃ જીવાઃ સુલભવોધિકા ભવન્તીતિ વોધ્યમ્ । સ્થાનસ્થાનિનૉરભેદોપચારાત્ સ્થાની એવ સ્થાનત્વેન નિર્દિષ્ટ ઇતિ ॥ સૂ. ૧૬ ॥

સંયતાસંયતસંવદ્ધમેવ ‘ પંચ પડિસંલીળ ઇત્યાધારમ્બ આરોપણા પર્યન્તેન સૂત્રસત્તકેન પ્રાહ—

મૂલમ્—પંચ પડિસંલીળા પળ્ણત્તા, તં જહા—સોહંદિયપડિસંલીળે જાવ ફાસિંદિયપડિસંલીળે । પંચ અપ્પાડિસંલીળા, પળ્ણત્તા, તં જહા—સોહંદિય અપ્પાડિસંલીળે જાવ ફાસિંદિય અપ્પાડિસંલીળે । પંચવિદે સંવરે પળ્ણત્તે, તં જહા—સોહંદિયસંવરે જાવ ફાસિંદિયસંવરે । પંચવિદે અસંવરે પળ્ણત્તે, તં જહા—સોહંદિય અસંવરે જાવ ફાસિંદિય અસંવરે ॥ સૂ. ૧૭ ॥

દેવવર્ણવાદ ઇસ પ્રકારસે હૈ —“ ધળ્લા સ્વલુ તે દેવા ” ઇત્યાદિ વે દેવ ધન્ય હૈ, જો વિપયોસે વિમુલ્લ રહતે હૈ ઓર જિનેન્દ્ર ભગવન્તકે નિકટ શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મકા શ્રવણ કરતે હૈ, ઓર તીર્થકી પ્રભાવના કરતે હૈ । ઇસ પ્રકારકા યહ પાંચવાં સ્થાન હૈ—ઈસ પ્રકારકે ઇન પાંચ કારણોસે જીવ સુલભ વોધિવાલે હોતે હૈ—યહાં સ્થાન ઓર સ્થાનીમૈ અભેદકે ઉપચારસે સ્થાનીહી સ્થાન રૂપસે નિર્દિષ્ટ હુઝા હૈ । સૂ. ૧૬ ॥

પાચમું સ્થાન—દેવોનો વર્ણવાદ દશ્વાથી પણ ઇવ સુલભ યોધિની પ્રાપ્તિ કરે છે. દેવોનો વર્ણવાદ આ પ્રમાણે કરવો જોઈએ, “ ધળ્લા સ્વલુ તે દેવા ” ઇત્યાદિ. “ ધન્ય છે તે દેવોને કે જેઓ વિપયોથી સદા વિમુખ રહે છે અને જિનેન્દ્ર ભગવાનની સમીપે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનું શ્રવણ કરે છે, અને તીર્થની પ્રભાવના કરે છે ” આ પ્રકારનું પાચમું સ્થાન છે. આ પ્રકારના આ પૂર્વોક્ત પાચ કારણોથી ઇવ સુલભ યોધિવાળો થાય છે. અહીં સ્થાન અને સ્થાનીમાં અલેહ ગણીને સ્થાનીનો જ સ્થાન રૂપે નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે. ॥ સૂ. ૧૬ ॥

છાયા—પચ્ચ પ્રતિસલીનાઃ મહત્તા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિયપ્રતિસલીનો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રતિસલીનાઃ । પચ્ચ અપ્રતિસલીનાઃ મહત્તા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિયાપ્રતિ સંલીનો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયાપ્રતિસલીનાઃ । પચ્ચવિષઃ સંવરઃ, મહત્તા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિય સંવરો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયસંવરઃ । પચ્ચવિષોઽસંવરઃ મહત્તા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિયા સંવરો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયાસંવર ॥૬૦ ૧૭ ॥

ટીકા—‘ પંચ પદ્ધિસલીના ’ इत्यादि—

પ્રતિસલીનાઃ=કૂર્મચંદ્રિયગોપના ધોત્રેન્દ્રિયપ્રતિસલીનાદિમેદૈઃ પચ્ચ સમ્યક્તાઃ । અપ્રતિસલીના અપિ ધોત્રેન્દ્રિયાપ્રતિસલીનાદિમેદૈઃ પચ્ચ સંલુપકા બોધ્યાઃ । સંવરસ્તુ ધોત્રેન્દ્રિયસંવરાદિમેદૈઃ પચ્ચવિષઃ । અસંવરોઽપિ ધોત્રેન્દ્રિયા સંવરાદિમેદૈઃ પચ્ચવિષો બોધ્ય । અથ ધોત્રેન્દ્રિયાદિરુપેષ ય ક્રમો નિર્દિષ્ટ સ તત્તદિન્દ્રિયસ્ય ક્ષયોપશમપાદુષ્યકૃતો બોધ્યઃ । પ્રતિસલીનાપ્રતિસંલીનાત્વેન ચ બર્મી પુરુષ ટક્કઃ । મંચરામચરત્વેન તુ ધર્મ એવેતિ ॥ ૬૦ ૧૭ ॥

અથ સૂચકાર સયતાસયત સપદ્મ હી “ પંચ પદ્ધિસલીના ” યહાસિ લેકર આરોપણા પર્યન્તકે સાત સૂત્રો દ્વારા કથન કરસે હૈ—

પંચ પદ્ધિસલીના પળ્લસા इत्यादि सूत्र १७ ॥

ટીકાર્થ—કૂર્મની તરફ હન્દ્રિયોંકા ગોપન કરનેવાલે ધોત્રેન્દ્રિય પ્રતિ સંલીના વિકે મેદસે પાંચ કહે ગયે હૈ તથા અપ્રતિસંલીન મી ધોત્રેન્દ્રિય અપ્ર તિસંલીન આદિકે મેદસે પાંચ કહે ગયે હૈ સંવર મી ધોત્રેન્દ્રિય સંવર આદિકે મેદસે પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, તથા અસંવર મી ધોત્રેન્દ્રિય અસંવર આદિકે મેદસે પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, યહાં જો ધોત્રેન્દ્રિ યાદિ કપસે ક્રમ કહા ગયા હૈ અહ ઘન ૨ હન્દ્રિયોંકે ક્ષયોપશમની—

કવે સૂચકાર સયતાસયત વિષયક ‘ પંચ પદ્ધિસલીના ’ થી અર્થને ; ‘ આરોપણા ’ પર્યન્તના સાત સૂત્રોનું કથન કરે ॥

“ પંચ પદ્ધિસલીના પળ્લસા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—કાચબાની જેમ ધન્દ્રિયોંનું ગોપન કરનારા ધોત્રેન્દ્રિય પ્રતિસંલીન આદિના લેહથી પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે અપ્રતિ સંલીનના પદ્મ ધોત્રેન્દ્રિય અપ્રતિસંલીન આદિ પાંચ લેહ કહ્યા ॥ સંવરના પદ્મ ધોત્રેન્દ્રિય, સંવર આદિ પાંચ લેહ કહ્યા છે અસંવર પદ્મ ધોત્રેન્દ્રિય અસંવર આદિના લેહથી ; પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે અહીં ને ધોત્રેન્દ્રિય આદિ રૂપે ક્રમ કહેવામાં આવ્યો ॥ તે ક્રમ તે તે ધન્દ્રિયોંના ક્ષયોપશમની બહુલતાને, બહુલતાને કહ્યો છે.

મૂલમ્-પંચવિદે સંજમે પળ્લન્તે, તં જહા-સામાહ્યસંજમે
 ૧ છેદોવટ્ટાવણિયસંજમે, ૨ પરિહારવિસુદ્ધિયસંજમે, ૩ સુહુમસં-
 પરાયસંજમે, ૪ અહાક્ખાય સંજમે ૫ ॥ સૂ ૧૮ ॥

છાયા—પંચવિધઃ સંયમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા-સામાયિકસંયમઃ ૧, છેદોપ-
 સ્થાપનીયસંયમઃ ૨, પરિહારવિશુદ્ધિકસંયમઃ ૩ સૂક્ષ્મસંપરાયસંયમઃ ૪ યથા-
 રૂપાતસંયમઃ ૫ ॥ સૂ ૧૮ ॥

ટીકા--‘ પંચવિદે ’ इत्यादि--

સંયમઃ-સંયમનં સંયમઃ-સાવધવ્યાપારવિનિવૃત્તિઃ । સચ સામાયિકસંય-
 માદિભેદેન પંચવિધઃ તત્ર સામાયિકસંયમઃ-સમાનાં=સમ્યગ્જ્ઞાનદર્શનચારિત્ર-
 તયોરૂપાણાં રત્નાનામ્ આયો=લાભઃ । યદ્વા=સમાનિ=જ્ઞાનાદીનિ તેષુ તૈર્વા
 બહુલતાકો લેકર કહા ગયા હૈ, પ્રતિસંલીન રૂપસે ઔર અપ્રતિસંલીન
 રૂપસે ધર્મોપુરુષ કહા ગયાહૈ, ઔર સંવર રૂપસે ધર્મ કહા ગયાહૈ સૂ ૧૭ ॥

‘ પંચવિદે સંજમે પળ્લન્તે ’ इत्यादि सूत्र १८ ॥

સંયમ પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે સામાયિક સંયમ ૧ છેદો-
 પસ્થાપનીય સંયમ ૨ પરિહારવિશુદ્ધિકસંયમ ૩ સૂક્ષ્મ સંપરાય સંયમ
 ૪ ઔર યથારૂપાતસંયમ ૫

સાવધ વ્યાપારસે નિવૃત્તિ હોના હસકા નામ સંયમ હૈ, યહ સંયમ
 પૂર્વોક્ત રૂપસે સામાયિક આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકાર હૈ, જિસ સંયમમે
 સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન ઔર સમ્યક્ ચારિત્ર સમ્યક્તપ રૂપ રત્નોકા
 લાભ હોતા હૈ, વહ અથવા સમરૂપ જ્ઞાનાદિકોમે અથવા સમરૂપ જ્ઞાના-

પ્રતિસંલીન રૂપે અને અપ્રતિસંલીન રૂપે ધર્મોપુરુષ કહ્યો છે અને સંવર રૂપે
 અને અસંવર રૂપે ધર્મ કહ્યો છે. ॥ સૂ. ૧૭ ॥

“ પંચવિદે સંજમે પળ્લન્તે ” इत्यादि--

સંયમના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે--(૧) સામાયિક સંયમ,
 (૨) છેદોપસ્થાપનીય સંયમ, (૩) પરિહાર વિશુદ્ધિક સંયમ, (૪) સૂક્ષ્મ
 સંપરાય સંયમ અને (૫) યથારૂપાત સંયમ.

સાવધ વ્યાપારોથી નિવૃત્ત થવું તેનું નામ સંયમ છે. તે સંયમના
 સામાયિક આદિ પૂર્વોક્ત પાંચ ભેદ છે. જે સંયમમાં સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન,
 સમ્યક્ચારિત્ર અને સમ્યક્ તપ રૂપ રત્નોનો લાભ થાય છે, તે સંયમનું નામ

છાયા—પચ્ચ પ્રતિસલીનાઃ પ્રજ્ઞતા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિયપ્રતિસલીનો પાવત્
સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રતિસલીનાઃ । પચ્ચ અપ્રતિસલીનાઃ પ્રજ્ઞતા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિયાપ્રતિસલીનો
પાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયાપ્રતિસલીનાઃ । પચ્ચવિષઃ સંવરઃ, પ્રજ્ઞતા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિય
સવરો પાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયસવરઃ । પચ્ચવિષોઽસવરઃ પ્રજ્ઞતા, તથા—ધોત્રેન્દ્રિયા
સવરો પાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયાસવરઃ ॥૬૦ ૧૭ ॥

ટીકા—‘પચ પઢિસલીના’ ઇત્યાદિ—

પ્રતિસલીનાઃ=હ્રમશ્વદિન્દ્રિયગોપના ધોત્રેન્દ્રિયપ્રતિસલીનાદિભેદઃ પચ્ચ
સમ્યક્તાઃ । અપ્રતિસલીના અપિ ધોત્રેન્દ્રિયાપ્રતિસલીનાદિભેદઃ પચ્ચ સંત્યક્તા
બોધ્યાઃ । સવરસ્તુ ધોત્રેન્દ્રિયસવરાદિભેદઃ પચ્ચવિષઃ । અસવરોઽપિ ધોત્રેન્દ્રિયા
સવરાદિભેદઃ પચ્ચવિષો બોધ્યઃ । અથ ધોત્રેન્દ્રિયાદિરૂપેણ યઃ ક્રમો નિર્દિષ્ટઃ
સ તત્ત્વદિન્દ્રિયસ્ય સયોગશ્ચમયાહુલ્યકૃતો બોધ્યઃ । પ્રતિસલીનાપ્રતિસંલીનાત્વેન
ચ ધર્મો પુરુષ ઠક્તઃ । સંવરાસવરત્વેન તુ ધર્મ એવેતિ ॥ ૬૦ ૧૭ ॥

અથ સૂત્રકાર સયતાસંયત સંપદ્મ હી “પચ પઢિસલીના” યદ્વાંસે
સેકર આરોપણા પર્યન્તકે સાત સૂત્રો દ્વારા કથન કરતે હૈ—

પંચ પઢિસલીના પળ્લસા ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧૭ ॥

ટીકાર્થ—કૂર્મકીતરહ હન્દ્રિયોકા ગોપન કરનેવાલે ધોત્રેન્દ્રિય પ્રતિ સંલીના
વિકે ભેદસે પાંચ કહે ગયે હૈ તથા અપ્રતિસંલીના ધી ધોત્રેન્દ્રિય અપ્ર
તિસલીના આદિકે ભેદસે પાંચ કહે ગયે હૈ સવર ધી ધોત્રેન્દ્રિય સંવર
આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, તથા અસવર ધી ધોત્રેન્દ્રિય
અસવર આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, યદ્વાં જો ધોત્રેન્દ્રિ
યાદિ રૂપસે ક્રમ કહા ગયા હૈ, તથા યન ૨ હન્દ્રિયોકે ક્ષયોપશમકી

હવે સૂત્રકાર સયતાસંયત વિષયક “પચ પઢિસલીના” ધી હધને
‘આરોપણા’ પર્યન્તના સાત સૂત્રોનું કથન કરે છે

“પચ પઢિસલીના પળ્લસા” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—અવગણની જેમ ધન્દ્રિયોનું ગોપન કરનારા ધોત્રેન્દ્રિયપ્રતિસલીના આદિના
લેહધી પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે અપ્રતિ સલીનાના પચ્ચ ધોત્રેન્દ્રિય અપ્રતિસલીના
આદિ પાંચ લેહ કહ્યા છે સવરના પચ્ચ ધોત્રેન્દ્રિય સવર આદિ
પાંચ લેહ કહ્યા છે અસવર પચ્ચ ધોત્રેન્દ્રિય અસવર આદિના લેહધી
પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે અર્હો જે ધોત્રેન્દ્રિય આદિ રૂપે ક્રમ કહેવામાં આવ્યો
છે તે ક્રમ તે તે ધન્દ્રિયોના ક્ષયોપશમની બહુલવાને બહુલસીને કહ્યો છે,

મૂલમ્—પંચવિદ્દે સંજમે પળ્લન્તે, તં જહા-સામાદ્યસંજમે
 ૧ હેદોવટ્ટાવણિયસંજમે, ૨ પરિહારવિસુદ્ધિયસંજમે, ૩ સુહુમસં-
 પરાયસંજમે, ૪ અહાક્ખાય સંજમે ૫ ॥ સૂ ૧૮ ॥

છાયા—પંચવિધઃ સંયમઃ પ્રજ્ઞતઃ, તથા—સામાયિકસંયમઃ ૧, હેદોપ-
 સ્થાપનીયસંયમઃ ૨, પરિહારવિશુદ્ધિકસંયમઃ ૩ સૂક્ષ્મસંપરાયસંયમઃ ૪ યથા-
 રૂપાતસંયમઃ ૫ ॥ સૂ ૧૮ ॥

ટીકા—‘પંચવિદ્દે’ इत्यादि—

સંયમઃ—સંયમનં સંયમઃ—સાવધવ્યાપારવિનિવૃત્તિઃ । સચ સામાયિકસંય-
 માદિભેદેન પંચવિધઃ તત્ર સામાયિકસંયમઃ—સમાનાં=સમ્યગ્જ્ઞાનદર્શનચારિત્ર-
 તયોરૂપાણાં રત્નાનામ્ આયો=લાભઃ । યદ્વા=સમાનિ=જ્ઞાનાદીનિ તેષુ તૈર્વા
 बहुलताको लेकर कहा गया है, प्रतिसंलीन रूपसे और अप्रतिसंलीन
 रूपसे धर्मीपुरुष कहा गया है, और संवर रूपसे धर्म कहा गया है सू १७ ॥

‘પંચવિદ્દે સંજમે પળ્લન્તે’ इत्यादि सूत्र १८ ॥

સંયમ પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે સામાયિક સંયમ ૧ હેદો-
 પસ્થાપનીય સંયમ ૨ પરિહારવિશુદ્ધિકસંયમ ૩ સૂક્ષ્મ સંપરાય સંયમ
 ૪ ઔર યથારૂપાતસંયમ ૫

સાવધ વ્યાપારસે નિવૃત્તિ હોના હસકા નામ સંયમ હૈ, યહ સંયમ
 પૂર્વોક્ત રૂપસે સામાયિક આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકાર હૈ, જિસ સંયમમેં
 સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન ઔર સમ્યક્ ચારિત્ર સમ્યક્તપ રૂપ રત્નોકા
 લાભ હોતા હૈ, વહ અથવા સમરૂપ જ્ઞાનાદિકોમેં અથવા સમરૂપ જ્ઞાના-

પ્રતિસંલીન રૂપે અને અપ્રતિસંલીન રૂપે ધર્મીપુરુષ કહ્યો છે અને સંવર રૂપે
 અને અસંવર રૂપે ધર્મ કહ્યો છે. ॥ સૂ. ૧૭ ॥

“પંચવિદ્દે સંજમે પળ્લન્તે” इत्यादि—

સંયમના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) સામાયિક સંયમ,
 (૨) હેદોપસ્થાપનીય સંયમ, (૩) પરિહાર વિશુદ્ધિક સંયમ, (૪) સૂક્ષ્મ
 સંપરાય સંયમ અને (૫) યથારૂપાત સંયમ.

સાવધ વ્યાપારોથી નિવૃત્ત થવું તેનું નામ સંયમ છે. તે સંયમના
 સામાયિક આદિ પૂર્વોક્ત પાંચ ભેદ છે. જે સંયમમાં સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન,
 સમ્યક્ચારિત્ર અને સમ્યક્ તપ રૂપ રત્નોના લાભ થાય છે, તે સંયમનું નામ

छाया—पञ्च प्रतिसलीनाः मङ्गला, तपसा—भोगेन्द्रियप्रतिसलीनो यावत्
स्पर्शेन्द्रियप्रतिसलीनः । पञ्च अप्रतिसलीनाः मङ्गला, तपसा—भोगेन्द्रियाप्रति सलीनो
यावत् स्पर्शेन्द्रियाप्रतिसलीनाः । पञ्चविधः सवरः, मङ्गलः, तपसा—भोगेन्द्रिय
सवरो यावत् स्पर्शेन्द्रियसवरः । पञ्चविधोऽसवरः मङ्गलः, तपसा—भोगेन्द्रिय
सवरो यावत् स्पर्शेन्द्रियासवर ॥ सू० १७ ॥

टीका—‘ पञ्च पटिसलीना ’ इत्यादि—

प्रतिसलीनाः=कृमवदिन्द्रियगोपना भोगेन्द्रियप्रतिसलीनादिभेदैः पञ्च
संख्यकाः । अप्रतिसलीना अपि भोगेन्द्रियाप्रतिसलीनादिभेदैः पञ्च संख्यका
बोद्धव्याः । सवरस्तु भोगेन्द्रियसवरादिभेदैः पञ्चविधः । असवरस्तु भोगेन्द्रिया
सवरादिभेदैः पञ्चविधो बोध्यः । अथ भोगेन्द्रियादिरूपेण यः क्रमो निर्दिष्टः
स तच्चदिन्द्रियस्य क्षयोपशमनादुत्पद्यते बोध्यः । प्रतिसलीनाप्रतिसलीनत्वेन
च धर्मी पुरुष उक्तः । सवरामवरत्वेन तु धर्म एवेति ॥ सू० १७ ॥

अब सूत्रकार सयतामयत सपद्ध ही “ पञ्च पटिसलीना ” यहाँसे
छेकर आरोपणा पर्यन्तके सात सूत्रों द्वारा कथन करते हैं—

पञ्च पटिसलीना पण्यस्ता इत्यादि सूत्र १७ ॥

टीकार्य—कृमकी तरह इन्द्रियोंका गोपन करनेवाले भोगेन्द्रिय प्रति सलीना
दिके भेदसे पाँच कहे गये हैं तथा अप्रतिसलीन भी भोगेन्द्रिय अप्र
तिसलीन आदिके भेदसे पाँच कहे गये हैं सवर भी भोगेन्द्रिय सवर
आदिके भेदसे पाँच प्रकारका कहा गया है, तथा असवर भी भोगेन्द्रिय
असवर आदिके भेदसे पाँच प्रकारका कहा गया है, यहाँ जो भोगेन्द्रि
यादि रूपसे क्रम कहा गया है वह उन २ इन्द्रियोंके क्षयोपशमकी

दोहे सूत्रकार सयतामयत विषयके ‘ पञ्च पटिसलीना ’ भी लधने ;
‘ आरोपणा ’ पर्यन्तना सात सूत्रोंनु कथन करे छे

“ पञ्च पटिसलीना पण्यता ” इत्यादि—

टीका—‘ पञ्च पटिसलीना ’ केम इन्द्रियोंके गोपन करनेवाले भोगेन्द्रिय प्रति सलीन आदिना
दोहो पाँच प्रकारका कहा छे अप्रति सलीनना पञ्च भोगेन्द्रिय अप्रतिसलीन
आदि पाँच बोह कहा छे सवरना पञ्च भोगेन्द्रिय सवर आदि
पाँच बोह कहा छे असवर पञ्च भोगेन्द्रिय असवर आदिना दोहो ;
पाँच प्रकारको कहा छे अहाँ के भोगेन्द्रिय आदि रूपे क्रम बोधेवाला आनो,
छे ते क्रम ते ते इन्द्रियोंना क्षयोपशमनी अनुभवाने अनुवशीने कहा छे,

મૂલમ્-પંચવિદ્દે સંજમે પળ્લત્તે, તં જહા-સામાહ્યસંજમે
૧ છેદોપટ્ટાવણિયસંજમે, ૨ પરિહારવિશુદ્ધિયસંજમે, ૩ સુદુમ્મસં-
પરાયસંજમે, ૪ અહાક્ષાય સંજમે ૫ ॥ સૂ૦ ૧૮ ॥

છાયા—પશ્ચવિધઃ સંયમઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા—સામાયિકસંયમઃ ૧, છેદોપ-
સ્થાપનીયસંયમઃ ૨, પરિહારવિશુદ્ધિકસંયમઃ ૩ સૂક્ષ્મસંપરાયસંયમઃ ૪ યથા-
રૂપાતસંયમઃ ૫ ॥ સૂ૦ ૧૮ ॥

ટીકા—‘ પંચવિદ્દે ’ इत्यादि—

સંયમઃ-સંયમનં સંયમઃ-સાવધવ્યાપારવિનિવૃત્તિઃ । સત્ સામાયિકસંય-
માદિભેદેન પશ્ચવિધઃ તત્ર સામાયિકસંયમઃ-સમાનાં=સમ્યગ્જ્ઞાનદર્શનચારિત્ર-
તયોરૂપાણાં રત્નાનામ્ આયો=લાભઃ । યદ્વા=સમાનિ=જ્ઞાનાદીં તેષુ તૈર્વા
બહુલતાકો લેકર કહા ગયા હૈ, પ્રતિસલીન રૂપસે ઓર અપ્રતિસલીન
રૂપસે ધર્મોપુરુષ કહા ગયાહૈ, ઓર સંવર રૂપસે ધર્મ કહા ગયાહૈ સૂ૦ ૧૭ ॥

‘પંચવિદ્દે સંજમે પળ્લત્તે’ इत्यादि सूत्र १८ ॥

સંયમ પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે સામાયિક સંયમ ૧ છેદો-
પસ્થાપનીય સંયમ ૨ પરિહારવિશુદ્ધિકસંયમ ૩ સૂક્ષ્મ સંપરાય સંયમ
૪ ઓર યથારૂપાતસંયમ ૫

સાવધ વ્યાપારસે નિવૃત્તિ હોના હસકા નામ સંયમ હૈ, યહ સંયમ
પૂર્વોક્ત રૂપસે સામાયિક આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકાર હૈ, જિસ સંયમમે
સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન ઓર સમ્યક્ ચારિત્ર સમ્યક્તપ રૂપ રત્નોકા
લાભ હોતા હૈ, વહ અથવા સમરૂપ જ્ઞાનાદિકોમે અથવા સમરૂપ જ્ઞાના-

પ્રતિસલીન રૂપે અને અપ્રતિસલીન રૂપે ધર્મોપુરુષ કહ્યો છે અને સંવર રૂપે
અને અસંવર રૂપે ધર્મ કહ્યો છે. ॥ સૂ. ૧૭ ॥

“ પંચવિદ્દે સંજમે પળ્લત્તે ” इत्यादि—

સંયમના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) સામાયિક સંયમ,
(૨) છેદોપસ્થાપનીય સંયમ, (૩) પરિહાર વિશુદ્ધિક સંયમ, (૪) સૂક્ષ્મ
સંપરાય સંયમ અને (૫) યથારૂપાત સંયમ.

સાવધ વ્યાપારોથી નિવૃત્ત થવું તેનું નામ સંયમ છે. તે સંયમના
સામાયિક આદિ પૂર્વોક્ત રૂપાચ લેહ છે. જે સંયમમાં સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન,
સમ્યક્ચારિત્ર અને સમ્યક્ તપ રૂપ રત્નોનો લાભ થાય છે, તે સંયમનું નામ.

આપો ગમનમ્ । અપિ યા સમો=રાગદ્વેષાદિસ્પૃહાન્તઃ'કરણઃ=સ્વચ્ચિન્તિભિઃ
મૂલદર્શી' વિશુદ્ધ આત્મા સુચિત્તાનત્પચિન્તામણિકલ્પશકતામયેનુર્મિર્ગાહનમય
ગાહનપરિભ્રમણમયકલ્પેશનાશકૈર્પૂર્ણજ્ઞાનદર્શનાદિભિઃ સદૃશત્વાત્ તસ્ય
આયા=પ્રાપ્તિઃ સ્વાત્મવિશુદ્ધીકરણમિતિ યાવત્, સમાયા, સ યથ સામાયિકમ્ ।
સાવચ્ચયોગવિરમણાત્મકક્ષેપમપિ ચારિત્ર સામાન્યત સામાયિકમેવોચ્યતે ।
તદેવ છેદાદિવિશેષણૈર્વિશિષ્ટ સત્ શબ્દાર્થામ્યામનેકવિધત્ સમતે ।
તત્ત્વ તથ પ્રથમો મેરો નિર્વિશેષણ સામાયિકમેવ ક્વચિત્કાલિકયાવગ્રીવેતિમેદેન
દિકો દ્વારા જો ગમન છે, વહ અથવા-રાગદ્વેષ આદિસે અસ્પૃહ અન્તા
કરણકા જો સામ છે, વહ સમાય છે, અર્થાત્-જો કામપેનુ, કલ્પવૃક્ષ
ઔર ચિન્તામણિ इनको भी सुच्छ कीका कर देते हैं, एव गहनकान्तारके
जैसे इस भवके भ्रमणसे अन्य कछेराँका जो सर्वथा बिनाश कर देते
हैं, ऐसे अपूर्व ज्ञान दर्शनादिकोंसे सघृस्त होनेके कारण विशुद्ध बना
हुआ जो आत्मा है, कि जो समस्त प्राणियोंको अपने समान दखता
है, वह सम है, इस समका जो आय प्राप्ति है, वह समाय है, यह समाय
आत्माकी विशुद्धि करने रूप होता है । ऐसा समायही सामायिक है ।
यह सामायिक जितना भी सावच्ययोग विरमणरूप चारित्र है, सामा
न्यतः तद्वपही कहा जाता है, यह सामायिक चारित्रही छेदादिक विशेषे
षणोंसे विशिष्ट हुआ शब्द और अर्थकी अपेक्षा अनेक प्रकारताको प्राप्त
करता है । इनमें जो प्रथम भेद है, वह तो यिना किसी विशेषणका है,

‘समाय’ છે અથવા સમરૂપ જ્ઞાનાદિકોમાં અથવા સમરૂપ જ્ઞાનાદિકો દ્વારા
જે ગમન છે તેનું નામ ‘સમાય’ છે

અથવા--સમરૂપ આદિ વડે અસ્પૃહ અતઃકરણનો જે લાભ છે તેનું
નામ ‘સમાય’ છે એટલે કે જે કામપેનું કલ્પવૃક્ષ અને ચિન્તામણિને પણ
હીમાં પાડી દે છે, જે બદલ અવીના સમાન આ સસારના ભ્રમણથી બનિત
કલેશોનો સ્વયા વિનાશ થી નાખે છે એવો સસારના સમસ્ત છપો તરફ
સમભાવ રાખનારો જે આત્મા છે, અને જે જ્ઞાન દર્શનાદિ વડે સવૃત્ત હોવાને
લીધે વિશુદ્ધ અનેલો છે તેને ‘સમ’ કહે છે તે સમની જે પ્રાપ્તિ (પ્રાપ્તિ),
યથી તેનું નામ ‘સમાય’ છે તે સમાય આત્માની વિશુદ્ધિ કરવા રૂપ હોય
છે એવા સમાયને જ સામાયિક કહે છે તેને સાવચ્ચયેમ વિરમણરૂપ જે
ચારિત્ર છે, તે ચારિત્રરૂપ સામાન્યતા ગુણનામાં આવે છે તે સામાયિક રૂપ
ચારિત્ર જ ઉદાહરણ વિશેષણથી સુષ્ટ સમેલા શબ્દ અને અર્થની અપેક્ષાએ
અનેક પ્રકારતાને પ્રસ કરે છે. તેમાંથી જે પહેલો શબ્દ છે તે કેઈ અથ

દ્વિવિધમ્ । તત્ર-ઈત્વરકાલિકં સામાયિકં પ્રથમાન્તિમતીર્થકૃતોસ્તીર્થયોરનારોપિત-
વ્રતસ્ય ભવતિ । યાવજ્જીવં તુ મધ્યમતીર્થકૃતાં મહાવિદેહવર્તિતીર્થકૃતાં ચ તીર્થેષુ
ઉપસ્થાપનામાત્રાદ અનારોપિતવ્રતસ્ય ભવતીતિ વોધ્યમ્ । તદુક્તમ્—

“ સર્વમિણં સામાદ્યં, છેદાદિવિશેષો પુણ વિભિન્નં ।

અવિશેસિયમાદિમયં, ઠિયમિહ સામન્નસન્નાય ॥૧॥

સાવજ્જજોગવિરહિત્તિ તત્થ સામાદ્યં દુઠ્ઠા તં ચ ।

ઈત્તરમાવકહંતિ ય, પઢમં પઢમંતિમજિણાણં ॥૨॥

તિત્થેસુ અણારોવિયવયસ્સ સેહસ્સ થોવકાલીયં ।

સેસાણમાવકહિયં, તિત્થેસુ વિદેહયાણં ચ ॥ ૩ ॥

છાયા—સર્વમિદં સામાયિકં છેદાદિવિશેષતઃ પુનર્વિભિન્નં ।

અવિશેષિતમાદિમકં સ્થિતમિહ સામાન્યસંજ્ઞયા ॥૧॥

હસમેં કિસી ખી પ્રકારકા વિશેષણ નહીં હૈ, હસ પ્રકાર નિર્વિશેષણરૂપ
યહ સામાયિક ઇત્વર કાલિક ઓર યાવજ્જીવ હસ પ્રકારસે દો પ્રકાર-
કા કહા ગયા હૈ, હનમેં ઇત્વરકાલિક જો સામાયિક હૈ, વહ પ્રથમ
ઓર અન્તિમ તીર્થકરકે તીર્થકે અનારોપિત વ્રતવાલે પ્રાણીકો હોના હૈ,
તથા યાવજ્જીવ જો સામાયિક હૈ. વહ મધ્યકે શેષ ૨૨ તીર્થકરોંકે એવં
મહા વિદેહવર્તી તીર્થકરોંકે તીર્થમેં ઉપસ્થાનકે અભાવસે અનારોપિત
વ્રતવાલે પ્રાણીકો હોનાહૈ, કહા ખી હૈ—“ સર્વમિણં સામાદ્યં ” ઇત્યાદિ ।

યહ સમસ્ત સામાયિક છેદાદિકે વિશેષસે ભિન્ન ૨ હો જાતા હૈ,
“ સામાયિક ” એસી યહ સામાન્ય સંજ્ઞા હૈ, સાવધ યોગસે વિરતિ
હોના હસકા નામ સામાયિકહૈ, યહ સામાયિક ઇત્વર ઓર યાવત્કથિકકે

વિશેષણ વિનાનો છે આ પ્રકારે વિશેષણરૂપિત તે સામાયિકના બે પ્રકાર કહ્યા
છે--(૧) ઇત્વરકાલિક અને (૨) યાવજ્જીવ ઇત્વરકાલિક સામાયિકનો સદ્ભાવ
પહેલા અને છેલ્લા તીર્થ કરના તીર્થના અનારોપિત વ્રતવાળા જીવોમાં હોય
યાવજ્જીવ સામાયિકનો સદ્ભાવ વચ્ચેના ૨૨ તીર્થ કરના અને મહાવિદેહવર્તી
તીર્થ કરના તીર્થમાં ઉપસ્થાનના અભાવે અનારોપિત વ્રતવાળા જીવોમાં હોય છે.
કહ્યું પણ છે કે—“ સર્વમિણં સામાદ્યં ” ઇત્યાદિ

આ સમસ્ત સામાયિક છેદાદિના વિશેષથી રહિત હોય છે. “ સામાયિક ”
એવી આ સામાન્ય સંજ્ઞા છે સાવધ યોગોમાંથી વિરતિ થવું તેનું નામ
સામાયિક છે. તેના ઇત્વર અને યાવત્કથિક નામના બે ભેદ છે. તેમાંની ઇત્વર-

સામયયોગવિરતિરિતિ તથા સામાયિક દ્વિધા સત્ત્વ ।

। સ્ત્વરં યાવત્કયિકમિતિ ચ પ્રથમ મધ્યમાતિમજિનયોઃ ॥૨॥

તીર્થયોરનારોપિતઘતસ્ય લૈસકસ્ય સ્તોકકાલિક ।

ચોપાનાં યાવત્કયિક તીર્થેષુ વિદેશકાનાં ચ ॥૩॥ ઇતિ ।

સામાયિક ચ, તત્ સમયએતિ સામાયિકસમયઃ=સામાયિકરૂપઃ સમય
 હવર્થઃ । ઇતિ પ્રથમે સ્થાનમ્ ।-તથા-છેદોપસ્થાનિકસમયઃ-છેદઃ પૂર્વવર્ણ્યસ્ય
 છેદનમ્, ઉપસ્થાપન ઘતેષુ આરોપર્થ, ચૈતરદ્વય યત્ત્વ છેદોપસ્થાપન, તદેવ
 છેદોપસ્થાપનિકમ્, યદ્વા-છેદમ્ ઉપસ્થાપન ચ છેદોપસ્થાપને, તે વિચરે યત્ત્વ
 છેદોપસ્થાપનિકમ્, મધ્યા-છેદન=પૂર્વવર્ણ્યસ્ય છેદનેન ઉપસ્થાપ્યતે=આરો-
 પ્યતે યન્મહામતરૂપ ચારિત્રં ત્વછેદોપસ્થાપનોપમ્ । શ્વમપનતિચારસાતિષા

બેદસે દો પ્રકારકા હૈ, इनमें इत्वर सामायिक प्रथम और अन्तिम तीर्थ
 करके तीर्थमें अनारोपित घतवाले दोक्ष शिष्यके स्तोककालिक होना है ।
 तथा जो यावत्कथित सामायिक हैं, वह पाकीके २२ तीर्थ करके और
 विदेहक्षेत्र सम्मन्वी तीर्थ करके तीर्थमें उपस्थानके अभावसे अनारोपित
 घतवाले जीव के शिष्य को होता है । सामायिकरूप
 जो समय है वह सामायिक समय है । पूर्ववर्ण्य के
 छेदनका नाम छेद है, और घतोंमें आरोपण करनेका नाम उपस्थापन है ।
 यह दोनों जिस समयमें होते हैं, वह छेदोपस्थान है, यह छेदोपस्थान ही छे-
 दोपस्थानिक है, अथवा-जो महामतरूप चारित्र्य पूर्ववर्ण्यके छेदनसे
 आरोपित किया जाता है, वह छेदोपस्थापनीय है, यह भी अनतिचार

કાલિક સામાયિકનો સફળાવ પ્રથમ અને અન્તિમ તીર્થ કરના તીર્થમાં
 અનારોપિત ઘતવાળા શિષ્યમાં હોય છે તે સ્તોકકાલિક હોય છે
 યાવત્કથિત સામાયિકનો સફળાવ બાહ્યના બાવીસ તીર્થ કરના અને વિદેહ
 ક્ષેત્રના તીર્થ કરના તીર્થમાં ઉપસ્થાપનને અભાવે અનારોપિત ઘતવાળા છોપાના
 શિષ્યમાં હોય છે સામાયિક ૨૫ ને સમય છે તેનું નામ સામાયિક સમય
 છે આ પ્રકારનું સમયના પ્રથમ ક્ષેત્રનું સ્વરૂપ છે । ૧ ।

પૂર્વવર્ણ્યના છેદનનું નામ છેદ છે, અને ઘતોમાં આરોપણ કરવાનું
 નામ ઉપસ્થાપન છે આ બન્નેનો જે સમયમાં સફળાવ હોય છે, તે સમયનું નામ
 છેદોપસ્થાપન છે આ છેદોપસ્થાપન જ છેદોપસ્થાપનિક છે અથવા જે મહામત
 ૨૫ ચારિત્ર પૂર્વવર્ણ્યના છેદન વડે આરોપિત કથાય છે, તેનું નામ છેદોપ

સામ્યાં દ્વિવિધમ્ । તત્ર પ્રથમમ્ ઇત્વરસામાયિકસ્ય શૈક્ષકસ્ય પશ્ચયામપ્રતિપત્તુઃ
પાર્શ્વનાથસાધોઃ કેશિશ્રમણાદેર્વા । દ્વિતીયં તુ મૂલપ્રાયશ્ચિત્તપ્રતિપત્નસ્ય સાધો-
રારોપ્યતે । તદુક્તમ્—

“ પરિયાયસ્સ ડ છેઓ, જત્થોવઘાવણં વણ્ણં ચ ।

છેઓવઘાવણમિહ, તમણડયારેતરં દુવિહં ॥૧॥

સેહસ્સ નિરડયારં, તિથ્થંતરસંકમેવ તં હોજ્જા ।

મૂલગુણઘાણો સાડયારમુમયં ચ ઠિયકપ્પે ” ॥ ૨ ॥

છાયા—પર્યાયસ્ય તુ છેદો, યત્રોપસ્થાપનં વ્રતેષુ ચ ।

છેદોપસ્થાપનમિહ, તદનતિચારમિતરદ્ દ્વિવિધમ્ ॥૧॥

શૈક્ષસ્ય નિરતિચારં, તીર્થાન્તરસંક્રમેવા તદ્ ભવેત્ ।

મૂલગુણઘાતિનઃ સાતિચારમ્ ડમયં સ્થિતકલ્પે ॥૨॥

સ્થિતકલ્પે=અત્યમાન્તિમતીર્થ કરયોરવસ્થિતસમાચારે ઇત્યર્થઃ । છેદોપ-

ઔર સાતિચારકે ભેદસે દો પ્રકારકા હોતા હૈ, ઇનમેં પ્રથમ ભેદ ઇત્વર
સામાયિકવાલે શિષ્યકો હોતા હૈ, અથવા-તીર્થાન્તરકે સંક્રમમેં હોતા
હૈ, જૈસા કિ પાર્શ્વનાથકે સાધુ કેશિશ્રમણ આદિ કો હુઆ હૈ ઔર
દ્વિતીય ભેદ મૂલ પ્રાયશ્ચિત્ત કા સ્વીકાર કરનેવાલે સાધુકો હોતા હૈ,
કંહા મી હૈ—“ પરિયાયસ્સ ડ છેદો ” ઇત્યાદિ ।

પૂર્વપર્યાયકાછેદ ઔર વ્રતોમેં ઉપસ્થાન જહાં હોતાહૈ, વહ છેદોપસ્થાપ-
નીયહૈ, યહ અનતિચાર ઔર સાતિચારકે ભેદસે દો પ્રકારકા કહા ગયા હૈ,
શૈક્ષકો (નવીન) શિષ્યકો નિરતિચાર હોતાહૈ, અથવા-તીર્થાન્તરકે સંક્રમમેં
વહ હોતાહૈ, ઔર મૂલ ગુણઘાતી સાધુકો વહ સાતિચાર હોતાહૈ, એવં પ્રથમ
તથા અન્તિમતીર્થ કરકે અવસ્થિતિ સમાચારરૂપ સ્થિતકલ્પમેં દોનોં પ્રકા-

સ્થાપનીય છે તે પણ અનતિચાર અને સાતિચારના ભેદથી બે પ્રકારનું કહ્યું
છે તેમાંના પ્રથમ ભેદનો સદ્ભાવ ઈત્વર સામાયિકવાળા શિષ્યમાં હોય છે,
અથવા તીર્થાન્તરના સંક્રમમાં તેનો સદ્ભાવ હોય છે. બેમકે પાર્શ્વનાથના
સાધુઓ કેશિમુનિ આદિ અનતિચાર છેદોપસ્થાપનીય હતા. બીજા ભેદનો
સદ્ભાવ મૂળ પ્રાયશ્ચિત્તનો સ્વીકાર કરનાર સાધુમાં હોય છે.

કહ્યું પણ છે કે “ પરિયાયસ્સ ડ છેદો ” ઇત્યાદિ—

પૂર્વ પર્યાયનું છેદન અને વ્રતોમાં ઉપસ્થાન બંધાં થાય છે, તેનું નામ
છેદોપસ્થાપનીય છે તે અનતિચાર સાતિચારના ભેદથી બે પ્રકારનું કહ્યું છે
શૈક્ષમાં નિરતિચારનો સદ્ભાવ હોય છે, અથવા તીર્થાન્તરના સંક્રમમાં તે હોય
છે મૂલગુણઘાતી સાધુમાં સાતિચારનો સદ્ભાવ હોય છે. પ્રથમ તથા અતિમ
તીર્થ કરના અવસ્થિત સમાચાર રૂપ સ્થિતકલ્પમાં બંને પ્રકારના છેદોપસ્થાપનીય

સ્થાનિક ચ તત્ સયમથેતિ છેડોપસ્થાપનિકસયમ, અયમપિ પ્રથમાન્તિમતીર્થ
 કૃતીર્થયોર્મયતીતિ ચોધ્યમિત્ । इति द्वितीयम् । तथा-परिहारविशुद्धिकर्मयमः-
 परिहरणं परिहारा-तपोविशेषः, तेन विशुद्धं-परिहारविशुद्धम्, अथवा-परि
 हारो विशेषेण शुद्धो यस्मिन्स्तत् परिहारविशुद्धम्, तदस्ति यस्मिन्स्तत् परिहार
 विशुद्धिकम् । यद्वा=परिहारेण=तपोविशेषेण कर्म निर्जरास्वा विशुद्धि यस्मिन्स्तत्
 परिहारविशुद्धिकम् । एतच्च निर्विशमानकनिर्विष्टकायिकमेवेन द्विविधम् । तत्र
 इदं चारित्र्य सेवमाणाः साधनो निर्विशमानका उच्यन्ते, ते सेव्यमानत्वादिव
 चारित्र्यमपि निर्विशमानकमुच्यते । ये तु इदं चारित्र्य निर्विष्टकान्=आसेवितवन्ताः,
 ते निर्विष्टकायिका उच्यन्ते । तेरासेवितरादिव चारित्र्य निर्विष्टकायिकमित्युच्यते ।

રકા છેડોપસ્થાપનીય હોતા હૈ, છેડોપસ્થાપનીય રૂપ જો સયમ હૈ, યહ
 નો પ્રથમ તીર્થકર ઓર અન્તિમ તીર્થકરકે તીર્થમેં હોતો હૈ । હસ પ્રકા
 રસે યહ દ્વિતીય સયમ હૈ । પરિહાર વિશુદ્ધિક સયમ-પરિહરણકા નામ
 પરિહાર હૈ, યહ પરિહાર તપો વિશેષરૂપ હોતા હૈ, હસ પરિહારસે જો
 વિશુદ્ધ હોતા હૈ, યહ અથવા પરિહારવિશેષરૂપસે શુદ્ધ જિસમેં હોતા
 હૈ, વહ પરિહાર વિશુદ્ધ હૈ, યહ પરિહાર વિશુદ્ધ જિસમેં હૈ, વહ પરિહાર
 વિશુદ્ધિક હૈ, અથવા-પરિહારરૂપ તપ વિશેષ કર્મકી નિર્જારારૂપ વિશુદ્ધિ
 જિસમેં હોતી હૈ, વહ પરિહારવિશુદ્ધિક હૈ, યહ નિર્વિશમાનક ઓર
 નિર્વિષ્ટ કાયિકકે સેવસે દો પ્રકારકા હૈ, હસ ચારિત્રકો પાલન કરતે
 છુપ સાધુ નિર્વિશમાનક કહલાતેહેં, પરંતુ ઘનકે દ્વારા સેવ્યમાન હોનેસે

હોય છે છેડોપસ્થાપનિક રૂપ જે સયમ છે તેને છેડોપસ્થાપનિક સંયમ કહે
 છે તેનો અર્થભાવ પણ પહેલા તીર્થકર અને છેડલા તીર્થકરના તીર્થમાં હોય
 છે આ પ્રકારનું સંયમના બીજા સેવન સ્વરૂપ છે

પરિહાર વિશુદ્ધિ સયમ—પરિહરણનું નામ પરિહાર છે તે પરિહાર
 તપો વિશેષરૂપ હોય છે આ પરિહારની અપેક્ષાએ જે વિશુદ્ધ હોય છે તેને
 અથવા જેમાં આ પરિહાર વિશેષ રૂપે વિશુદ્ધ હોય છે તેને પરિહાર વિશુદ્ધ
 કહે છે આ પરિહાર વિશુદ્ધિ જેમાં હોય છે તેને પરિહાર વિશુદ્ધિક કહે છે
 અથવા પરિહાર રૂપ તપવિશેષ કર્મની નિર્જારા રૂપ વિશુદ્ધિ જેમાં થાય છે
 તે સયમને પરિહાર વિશુદ્ધિક કહે છે તેના નીચે પ્રમાણે બે સેવ છે—
 (૧) નિર્વિશમાનક અને (૨) નિર્વિષ્ટકાયિક

આ ચારિત્રનું પાલન કરતા જોવા સાધુજોને નિર્વિશમાનક કહેવાય છે,
 પરંતુ તેમના દ્વારા સેવ્યમાન હોવાને કારણે તે ચારિત્રને પણ નિર્વિશમાનક

તદુક્તમ્—“ પરિહારેણ વિશુદ્ધં, શુદ્ધોય તત્ત્વો જર્હિ વિસેસેળં ।

તં પરિહારવિશુદ્ધં, પરિહારવિશુદ્ધિયં નામ ॥ ૧ ॥

તં દુવિકલ્પં નિર્વિશમાણનિર્વિષ્ટકાઙ્કચસેળં ।

પરિહારિયાણુપરિહારિયાણકલ્પદ્વિયસ્સાવિ ” ॥૨॥

છાયા—પરિહારેણ વિશુદ્ધં, શુદ્ધં ચ તપો યત્ર વિશેષેણ ।

તત્ પરિહારવિશુદ્ધં પરિહારવિશુદ્ધિકં નામ ॥૧॥

તદ્ દ્વિવિકલ્પં નિર્વિશમાણનિર્વિષ્ટકાઙ્કચસેળં ।

પારિહારિકાનુપારિહારિકાણાં કલ્પસ્થિતસ્યાપિ ॥૨॥ ઇતિ

અત્રેદં વોધ્યમ્—ઇહ હિ નવસંસ્લેષકઃ સાધૂનાં ગણો ભવતિ । તત્ર ચત્વારઃ પરિહારતપોવિશેષં કુર્વન્તિ, તે પારિહારિકા ઉચ્યન્તે, ચત્વારસ્તુતદ્વૈયાવૃત્ત્યકારકાઃ બ્રહ્મપારિહારિકા ભવન્તિ, એકસ્તુ કલ્પસ્થિતો વાચનાચાર્યો ગુરુકલ્પો ભવતિ । એતેષુ નિર્વિશમાણકાનામયં પરિહારો ભવતિ । તથાહિ—ગ્રીષ્મે જઘન્યાદીનિ ચતુર્થષ્ઠાષ્ટમાનિ, શિશિરે તુ પઠાષ્ટમદશમાનિ, વર્ષાસ્વષ્ટમદશમદ્વાદશાનિ પારણકે યહ ચારિત્ર ધી નિર્વિશમાણક કહા ગયા હૈ । જિન્હોને હસ ચારિત્ર ત્વા સેવન કર લિયા હૈ, વે નિર્વિષ્ટકાઙ્ક કહે જાતે હૈં કહા ધી હૈ—

“ પરિહારેણ વિશુદ્ધં ” ઇત્યાદિ ।

યહાં હસ પ્રકાર સમજના ચાહિયે—યહાં નૌ સાધુઓંકા ગણ હોતા હૈ, હનમેં ચાર પરિહાર તપોવિશેષ કરતે હૈં—ઈન્હેં પારિહારિક કહા જાના હૈ, ઓર ચાર હનકા વૈયાવૃત્ત્ય કરનેવાંલે હોતે હૈં, ઈન્હેં અનુપારિહારિક કહા જાતા હૈ, એક કલ્પસ્થિત વાચનાચાર્ય હોતા હૈ, જો ગુરુકે જેસા હોતાહૈ, હનમેં નિર્વિશમાણકોંકા યહ પરિહાર હોતાહૈ, જેસે—ગ્રીષ્મમેં જઘન્યાદિ રૂપસે ચતુર્થ, ષ્ઠ, અષ્ટમ, શિશિરમેં (શિયાઝેમેં) ષ્ઠ, અષ્ટમ,

કહેવામા આવ્યુ છે જેમણે આ ચારિત્રનું સેવન કરી લીધું છે તેમને નિર્વિષ્ટ કાઙ્ક કહેવામા આવે છે. કહ્યું પણ છે કે “ પરિહારેણ વિશુદ્ધં ” ઇત્યાદિ—

પરિહાર વિશુદ્ધિક્ષિપ સયમનું આ પ્રકારનું સ્વરૂપ સમજવું— નવ સાધુઓનું એક ગણ હોય છે તેમાંથી ચાર સાધુઓ પરિહાર તપોવિશેષની આરાધના કરે છે તે ચાર સાધુને પારિહારિક કહેવામા આવે છે. બીજા ચાર સાધુઓ તેમનું વૈયાવૃત્ત્ય કરે છે વૈયાવૃત્ત્ય કરનારા તે સાધુઓને અનુપારિહારિક કહેવાય છે બાકીનો એક સાધુ કલ્પસ્થિત વાચનાચાર્ય હોય છે. જે ગુરુના જેવા હોય છે તેમાના જે નિર્વિશમાણકો છે (પારિહારિકો છે) તેમનો આ પ્રકારનો પરિહાર હોય છે—ગ્રીષ્મમાં તેઓ એક, જે અન્ય ત્રણ

वाचामाम्बम् । इतरेषां तु सर्वेषामावाचामाम्बमेव । एष चत्वारो निर्विश्रमानकाः
 पण्मासान् यावत् परिहारं कुर्वन्ति । तत एते निर्विश्रमानकाः सन्तस्तद्वैपाद्यकारका
 भवन्ति, ये पूर्वं वैपाद्यकारकास्ते पारिवारिका भवन्ति । ते पारिवारिकाः पञ्च
 मासान् यावत् परिहारं कुर्वन्ति । ततस्तेऽपि निर्विष्टकायिका भवन्ति । ततो वाच
 नाचार्यः पञ्च मासान् यावत् परिहारं करोति । निर्विष्टकायिकेष्वष्टमु एको
 वाचनाचार्यो भवति, अन्यं तु वैपाद्यकारका भवति । इत्थम् अयं परिहार
 विधुदिकः कल्पः अष्टादशमासिको भवति । परिहारविधुदिकं च तत् समयमेति
 परिहारविधुदिकसंयमः—परिहारस्य = साध्यविधुदियुक्तं समयं इत्यर्थः ।
 इति द्वितीयं स्नानम् ।

दशम और बर्षा में अष्टम दशम और द्वादश इन परिहारोंको करते
 हैं, एवं पारणाके दिन आचामाम्ब (आंपिल) करते हैं याकी और सब
 मुनि जन (आंपिल) आचामाम्बही करते हैं । इस तरहसे चार निर्वि
 श्रमानक छह महीने तक परिहार तप करते हैं, इसके बादसे चार निर्विष्ट
 कायिक बन जाते हैं, और उनकी वैपाद्यस्ति करनेवाले होते हैं, और
 जो पहिले वैपाद्यकारक थे वे पारिवारिक तप होते हैं । वे पारिवारिक
 छह महीने तक परिहार तप करते हैं, तब वे भी निर्विष्टकायिक हो जाते
 हैं, इसके बाद जो वाचनाचार्य है, वह छह महीने तक परिहार करता
 है, आठ निर्विष्टकायिकोंमें एक वाचनाचार्य हो जाता है, और दूसर
 वैपाद्यकारक होते हैं । इस प्रकारका यह परिहारविधुदिक कल्प
 १८ मासका होता है, परिहार विधुदिक रूप जो संयम है, वह परिहार

उपवास, शिष्टिर्मा भोजन करने और उपवास करने वर्षा में तब चार करने
 पांच उपवास करे छे पाश्चान्ते दिवसे तेजो आयवीछ करे छे लाक्षिना पांच
 साधुजो आयवीछ करे छे आ शीते छ मास सुभी चार निर्विश्रमानक
 परिहार कर्या करे छे, त्यागनाह तेजो—निर्विष्टकायिक जनी जय छे करने
 छ मास सुभी तेमन्त वैपाद्य करन रा चार साधुजो परिहार
 मास छे त्याग नाह तेजो पञ्च निर्विष्टकायिक यह जय छे त्यागनाह
 तेमन्त वाचनाचार्य छ मास सुभी परिहार करे छे ते समय इरमिमान
 आठ निर्विष्टकायिके (आंधी जेके वाचनाचार्य जने छे करने लाक्षिना साधुजो
 वैपाद्य करे छे आ शीते आ परिहार विधुदिक कल्प १८ मास सुभी यावे
 छे आ प्रकारना परिहार विधुदिक रूप जे संयम छे तेने परिहार विधुदिक

તથા-સૂક્ષ્મ સંપરાયસંયમ:-સપરૈતિ-પર્યટતિ સંસારમેભિરિતિ સંપરાયા:=
કષાયા:, સૂક્ષ્મા:=લોભાંશાવિશેષા: સમ્પરાયા યત્ર સ સૂક્ષ્મસમ્પરાય:-લોભકિ-
ટ્કારૂપકષાયયુક્ત ઇત્યર્થઃ । સ ચ વિશુદ્ધ્યમાનકસંકલિચ્યમાનકભેદેન દ્વિવિધઃ ।
તત્ર વિશુદ્ધ્યમાનકક્ષપકશ્રેણિમુપશમશ્રેણિચારોદતો ભવતિ, સંકલિચ્યમાનકસ્તુ
ઉપશમશ્રેણિતઃ પ્રચ્યમાનસ્ય ભવતિ । તદુક્તમ્—

“ કોહાઈ સંપરાઓ, તેજજઓ સંપરીડ સંસારં ।

તં સુદુમસંપરાયં, સુદુગો જત્યાવસેસો ડ ॥૧॥

સેઠિં વિલગ્ગઓ તં, વિસુજ્જમાણં તઓચયં તસ્સ ।

તહ સંકલિસસમાણં પરિણામવસેણ વિન્નેયં ॥૨॥”

વિશુદ્ધિક સંયમ હૈ, અર્થાત્ પરિહાર તપસે સાધ્ય જો વિશુદ્ધિ ઉસ
વિશુદ્ધિસે યુક્ત જો સંયમ હૈ, વહ પરિહાર વિશુદ્ધિક સંયમ હૈ ૩। મુક્ષમ
સંપરાય સંયમ-જિનકે કારણ જીવ સંસારમેં ષટકતા હૈ, વે સંપરાય
કષાય હૈં । જિસ સંપરાયોમેં સૂક્ષ્મ લોભકે અશહી અવિશેષ રહંતે હૈં-
અર્થાત્ કેવલ સૂક્ષ્મ લોભ કષાયકા જો સદ્ભાવ હૈ, વહ સૂક્ષ્મ સંપરાય હૈ,
હસ તરહ જો સંયમ લોભ રૂપ કષાયસે યુક્ત હોતા હૈ, વહ
સૂક્ષ્મ સંપરાય સંયમ હૈ, યહ ૧૦ વે ગુણસ્થાનવર્તી જીવકો હોતા હૈ, યહ
સંયમ વિશુદ્ધ્યમાનક એવં સંકલિચ્યમાનકકે ભેદસે દો પ્રકારકા હોતા
હૈ, હનમેં વિશુદ્ધ્યમાનક ક્ષપકશ્રેણિ એવં ઉપશમશ્રેણિ પર આરોહેણ ચઢતે
હુવે કરતે હુએ જીવકો હોતા હૈ, ઓર સંકલિચ્યમાનક ઉપશમશ્રેણિસે
ગિરતે હુએ જીવકો હોતા હૈ, તદુક્તમ્-“ કોહાઈ સંપરાઓ ” ઇત્યાદિ ।

સંયમ કહે છે એટલે કે પરિહાર તપ વડે સાધ્ય જે વિશુદ્ધિ છે તે વિશુ-
દ્ધિથી યુક્ત જે સંયમ છે તેનું નામ પરિહાર વિશુદ્ધિક સંયમ છે । ૩ ।

સૂક્ષ્મસંપરાય સંયમ—જેમને કારણે જીવ સંસારમા ભટકે છે તે કષા-
યોને સંપરાય કહે છે જે સંપરાયોમા સૂક્ષ્મલોભનો અશ જ બાકી રહી
ભય છે-એટલે કે સૂક્ષ્મલોભ કષાયનો જ જેમાં સદ્ભાવ હોય છે, તે સંપ-
રાયને સૂક્ષ્મસંપરાય કહે છે આ રીતે જે સંયમ લોભકિટ્કિ (સૂક્ષ્મલોભ)
રૂપ કષાયથી યુક્ત હોય છે, તેને સૂક્ષ્મસંપરાય સંયમ કહે છે. ૧૦ માં
ગુણસ્થાનવર્તી જીવમાં તેનો સદ્ભાવ હોય છે તેના વિશુદ્ધ્યમાનક અને
સંકલિચ્યમાનક નામના બે ભેદ પડે છે. ક્ષપક શ્રેણિ અને ઉપશમ શ્રેણિ પર
આરોહણ કરતા જીવમાં વિશુદ્ધ્યમાનક સૂક્ષ્મસંપરાયનો સદ્ભાવ હોય છે, પરંતુ
ઉપશમ શ્રેણિથી નીચે ઉતરતા જીવમાં સંકલિચ્યમાનકનો સદ્ભાવ હોય છે.
કહ્યું મળ્યું છે કે “ કોહાઈ સંપરાઓ ” ઇત્યાદિ—

જાયા—ક્રોધાદિઃ સપરાયઃ, તેમ યતઃ સંપરૈતિ સંસારમ્ ।

- સ સૂક્ષ્મસમ્પરાયઃ, સૂક્ષ્મો યત્રાશયોપસ્તુ ॥૧॥

ધ્રેણિ વિલગતઃ સ વિશુદ્ધ્યમાનઃ, સતતશ્ચમાનસ્ય ।

તથા સચ્ચિદ્ર્યમાન પરિણામવશેન વિગ્રેયઃ ॥૨॥ ઈતિ ।

અર્થેદ્ બોધ્યમ્-સત્યેયાનાં સોમલંઘનાનામ્ ઉપશમન વાદરસપરાય ઉચ્ચતે
ધરમસ્ય તુ સત્યેયલ્પસ્ય અસત્યેયાનિ લંઘ્યાનિ ક્રિયન્તે, તેષુ પ્રતિસમયમેકે
કસ્ય લંઘસ્ય ઉપશમનં સૂક્ષ્મસપરાય ઉચ્યતે । તથા-વાદરસમ્પરાયોપશમયુક્તો
વાદરસમ્પરાયઃ, સૂક્ષ્મસમ્પરાયોપશમયુક્તસ્તુ સૂક્ષ્મસમ્પરાય ઉચ્યતે । ઈતિ ।
સૂક્ષ્મસમ્પરાયઃ સ સયમથેતિ સૂક્ષ્મસપરાયસયમઃ-સોમાંત્રરૂપક્રપાય
યુક્તઃ સયમ इत्यर्थः । ઈતિ ચતુર્થે સ્થાનમ્ । તથા-યથાકપાતવારિશંયમઃ-

યહાં પેસા સમજના ધાહિયે-સચ્ચાતલોમ સ્વળ્લોકા ઉપશમ વાદર
સપરાય કહ્યાના હૈ, इनमेंसे अन्तिम सचचातवे स्वल्लोके असचचात
दुकडे अपनी बुद्धिसे और करो इनमेंसे प्रति समयमें एक २ स्वल्लोका जो
उपशमनहै, वह सूक्ष्म सपरायहै, तथा वादर संपरायके उपशमसे युक्त जो
वादर संपरायहै च। वादर सपरायहै । उपशम रूप जो सयणहै वह सूक्ष्म
सपराय संयमहै, तात्पर्य हमका यहीहै, किलोम कपायवाला जो सयमहै
वह सूक्ष्मसपराय सयम है, ऐसा यह चौथा संयम है ४, यथाख्यात
संयम-मगधान्ने जो मयम यथार्थ रूपसे और विधिके अनुमार कहा
है, वह यथाकपातसंयम है अथवा सर्व जीव लोकमें जो प्रसिद्ध हो

અહીં એવું સમજવું એકલે કે સચ્ચાત લેખકોનું ઉપશમન વાદર
સપરાય કહેવાય છે તેમાંથી અન્તિમ સચ્ચાતમાં બંધના બીજા અસચ્ચાત
દુકડા પિતાની કહપનાથી કરવામાં આવે તેમાંથી પ્રત્યેક સમયે એક એક બંધનું
જે ઉપશમન છે, તે સૂક્ષ્મસપરાય છે તથા વાદર સપરાયનાં ઉપશમની, સુક્ષ્મ
જે વાદર સપરાય છે, તે વાદર સપરાય છે સૂક્ષ્મસપરાય ઉપશમ રૂપ જે
સયમ છે તેનું નામ સૂક્ષ્મસપરાય સયમ છે આ કય નો જાણાર્થ છે છે
કે લોકાદિદ્ધા (સકમલોક) રૂપ કપાયવાળો જે સયમ છે તેનું નામ સૂક્ષ્મ
સપરાય સયમ છે આ સયમના ચોથા લેખરૂપ છે । ૪ ।

યથાચ્ચાત સયમ-જાતવાને જે સયમ વધારે રૂપે અને વિધિ અને
સાર કહ્યો છે, તેને યથાચ્ચાત સયમ કહે છે અથવા સમસ્ત છપસેકમાં
જે પ્રસિદ્ધ છે તેનું નામ યથાચ્ચાત છે યથાચ્ચાત અકપાય રૂપ લેખ છે
યથાચ્ચાત વારિશરૂપ જે સયમ છે, તે યથાચ્ચાત વારિશ સયમ છે । આ

યથા=યાયાતધ્યેન આહ=અભિવિધિના ચ ચદ્ ભગવતા રૂપાત્=કથિતમ્-યથા-
રૂપાતમ્, યદ્વા-સર્વસ્મિન્ જીવલોકે રૂપાત-પ્રસિદ્ધં યથારૂપાતમ્ અકપાયમિતિ ।
યથારૂપાતં ચ તત્ ચારિત્ર ચેતિ યથારૂપાતચારિત્રમ્, તદ્રૂપઃ સંયમઃ યથારૂપાત-
ચારિત્રસંયમઃ । અયં ચ હ્રદયસ્થસ્ય ઉપશાન્તમોહસ્ય ક્ષીણમં હસ્ય ચ ભવતિ, તથા-
સયોગસ્યાયોગસ્ય ચ કેવલિનો ભવતિ । इति पञ्चम स्थानम् ॥ सू० १८॥

સંયમપ્રસ્તાવસંયમં, તત્પ્રતિપક્ષભૂતમસંયમં ચ પ્રાહ—

મૂલમ્—एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे
संजमे कज्जइ, तं जहा-पुढविकाइयसंजमे जाव वणस्सइकाइय-
संजमे । एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे
कज्जइ, तं जहा-पुढविकाइयअसंजमे जाव वणस्सइकाइय
असंजमे ॥ सू० १९ ॥

છાયા—एकेन्द्रियान् खलु जीवान् असमारभमाणस्य पञ्चविधः संयमः
क्रियते, तद्यथा-पृथिवीकायिकसंयमो यावद् वनस्पतिकायिकसंयमः एके-
न्द्रियान् खलु जीवान् समारभमाणस्य पञ्चविधः असंयमः क्रियते, तद्यथा-पृथि-
वीकायिकासंयमो यावद् वनस्पतिकायिकासंयमः ॥सू० १९॥

વહ યથારૂપાત અકષાયરૂપ હોતા હૈ, યથારૂપાત ચારિત્રરૂપ જો સંયમ
હૈ, વહ યથારૂપાતચારિત્રસંયમ હૈ, તાત્પર્ય્ ઇસ્કો યહ હૈ, કિ યથા-
રૂપાત ચારિત્ર સંયમ અકષાયવાલે ઉપશાન્તમોહ ઓર ક્ષીણમોહકો
હોતા હૈ, યે દોનો હ્રદયસ્થ વીતરાગ કહે ગયે હૈ ઓર સયોગ કેવલી
૧૨ વેં શુણસ્થાનવાલેકો એવં અયોગકેવલી ચૌદહવેં શુણસ્થાનવાલેકો
હોતા હૈ, એસા યહ યથારૂપાત ચારિત્રકા કથન હૈ ॥સૂ૦ ૧૮॥

अथ सूत्रकार इसी संयमके प्रस्तावको लेकर संयम और संयमके

કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે યથારૂપાત ચારિત્રસંયમનો સદ્ભાવ અકષાયવાળા
ઉપશાન્તમોહ ક્ષીણમોહવાળા હોવામા હોય છે. તે બંનેને હ્રદયસ્થ વીતરાગ
કહે છે સયોગી કેવલી-૧૩ માં શુણસ્થાનવાળા અને અયોગી કેવલી ૧૪ ચૌદમાં
શુણસ્થાનવાળામાં તે સંયમનો સદ્ભાવ હોય છે આ પ્રકારનું સંયમના પાત્રમાં
લેઠ ૩૫ યથારૂપાતચારિત્રનું કથન સમજવું. ॥ સૂ. ૧૮ ॥

છાયા—ક્રોધાદિ સપરાયઃ, તેમ યતઃ સંપરેતિ સંસારમ્ ।

સ સૂક્ષ્મસમ્પરાયઃ, સૂક્ષ્મો યત્રાવશેષસ્તુ ॥૧॥

ઘ્રેણિ વિસંગતઃ સ વિશુદ્ધ્યમાનઃ, તત્તત્તત્તમાનસ્ય ।

તથા સત્કિલ્બ્યમાનઃ પરિણામવશેન વિશ્લેષ ॥૨॥ ઈતિ ।

અગ્રેય્ વોદ્યમ્—સમયેયાનાં ક્રોમર્ત્વદાનામ્ ઉપશમન ધાદરસપરાય ઉચ્યતે
 શરમસ્ય તુ સસ્મેયસ્ત્વદસ્ય અસમયેયાનિ લ્હાનિ ક્રિયન્તે, તેષુ પ્રતિસમયમેકે
 કસ્ય સ્વંદસ્ય ઉપશમનં સૂક્ષ્મસપરાય ઉચ્યતે । તથા—ધાદરસમ્પરાયોપશ્ચમયુક્તો
 ધાદરસમ્પરાયઃ, સૂક્ષ્મસમ્પરાયોપશ્ચમયુક્તસ્તુ સૂક્ષ્મસમ્પરાય ઉચ્યતે । ઈતિ ।
 સૂક્ષ્મસમ્પરાયઃ સ સમયમેતિ સૂક્ષ્મસપરાયસંયમઃ—ક્રોમાંશ્ચરૂપરૂપાય
 યુક્તઃ સંયમ ઇત્યર્થઃ । ઈતિ ચતુર્થે સ્થાનમ્ । તથા—યથાક્યાતધારિસયમા—

યદ્વાં એસા સમજના જાહિયે—સક્યાતલોમ સ્વળ્હકા ઉપશમ ધાદર
 સપરાય કહલાતા હૈ, હનમેંસે અન્તિમ સક્યાતલે સ્વળ્હકે અસવપાત
 ટુકહે અપની ધુદ્ધિસે ઓર કરો હનમેંસે પ્રતિ સમયમેં એક ૨ સ્વળ્હકા જો
 ઉપશમનહૈ, વહ સૂક્ષ્મ સપરાયહૈ, તથા ધાદર સંપરાયકે ઉપશમસે યુક્ત જો
 ધાદર સંપરાયહૈ યા ધાદર સપરાયહૈ । ઉપશમ રૂપ જો સયમહૈ વહ સૂક્ષ્મ
 સપરાય સંયમહૈ, તાત્પર્ય હમકા યહીહૈ, કિલોમ કપાયવાલા જો સયમહૈ
 વહ સૂક્ષ્મસપરાય સયમ હૈ, એસા યહ યૌથા સયમ હૈ ૪, યથાક્યાત
 સંયમ—મગવાન્ને જો સયમ યથાર્થ રૂપસે ઓર વિષિકે અનુમાર કહા
 હૈ, વહ યથાક્યાતસંયમ હૈ અથવા સયમ જીવ લોકમેં જો પ્રસિદ્ધ હો

અહીં એવું સમજવું એકાએક કે સંખ્યાત લેખખડોનું ઉપશમન બાદર
 સપરાય કહેવાય છે તેમાંથી અન્તિમ સંખ્યાતમાં બંધના બીજા અસંખ્યાત
 ટુકડા પિતાની કલ્પનાથી કરવામાં આવે તેમાંથી અત્યેક સમયેએક એક ખડોનું
 ને ઉપશમન છે, તે સૂક્ષ્મસપરાય છે તથા બાદર સપરાયના ઉપશમથી, સુષ્પ
 ને બાદર સપરાય છે, તે બાદર સપરાય છે સૂક્ષ્મસપરાય ઉપશમ રૂપ ને
 સયમ છે તેનું નામ સૂક્ષ્મસપરાય સયમ છે આ કથનનો બાવાર્થ એ છે
 કે દોલકિદ્ધા (સમલોભ) રૂપ કપાયવાળો ને સયમ છે તેનું નામ સૂક્ષ્મ
 સપરાય સયમ છે આ સયમના યોગ્ય સેદરૂપ છે ૧૪ ।

યથાક્યાત સયમ—જાગવાને ને સયમ વધાય રૂપ અને વિધિ અનુ
 સાર કહો છે, તેને યથાક્યાત સયમ કહે છે અથવા સમસ્ત છપ્પદોમાં
 ને પ્રસિદ્ધ છે તેનું નામ યથાક્યાત છે યથાક્યાત અંકપાય રૂપ દેખ છે
 યથાક્યાત આરિત્રરૂપ ને સયમ છે, તે યથાક્યાત આરિત્ર સયમ છે આ

યથા=યાયાતયેન આહ=અભિવિધિના ચ યદ્ ભગવતા રુચાતે=કથિતમ્—યથા-
રુચાતમ્, યદ્વા-સર્વસ્મિન્ જીવન્મોકે રુચાત-પ્રસિદ્ધં યથારુચાતમ્ અરૂપાયમિતિ ।
યથારુચાતં ચ તત્ ચારિત્ર ચેતિ યથારુચાતચારિત્રમ્, તદ્રૂપઃ સંયમઃ યથારુચાત-
ચારિત્રસંયમઃ । અયં ચ છદ્મસ્થસ્ય ઉપશાન્તમોહસ્ય ક્ષીણમ્ હસ્ય ચ ભવતિ, તથા-
સયોગસ્યાયોગસ્ય ચ કેવલિનો ભવતિ । ઇતિ પञ્ચમ સ્થાનમ્ ॥ સૂ૦ ૧૮॥

સંયમપ્રસ્તાવસંયમં, તત્પ્રતિપક્ષભૂતમસંયમં ચ પ્રાદ—

મૂલમ્—एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे
संजमे कज्जइ, तं जहा—पुढविकाइयसंजमे जाव वणस्सइकाइय-
संजमे । एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे
कज्जइ, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे जाव वणस्सइकाइय
असंजमे ॥ सू० १९ ॥

હાયા—एकेन्द्रियान् खलु जीवान् अमारभमाणस्य पञ्चविधः संयमः
क्रियते, तद्यथा—पृथिवीकायिकसंयमो यावद् वनस्पतिकायिकसंयमः एके-
न्द्रियान् खलु जीवान् समारभमाणस्य पञ्चविध असंयमः क्रियते, तद्यथा—पृथि-
वीकायिकासंयमो यावद् वनस्पतिकायिकासंयमः ॥सू० १९॥

વહ યથારુચાત અરૂપાયરૂપ હોતા હૈ, યથારુચાત ચારિત્રરૂપ જો સંયમ
હૈ, વહ યથારુચાતચારિત્રસંયમ હૈ, તાત્પર્ય હસકો વહ હૈ, કિ યથા-
રુચાત ચારિત્ર સંયમ અરૂપાયવાલે ઉપશાન્તમોહ ઓર ક્ષીણમોહકો
હોતા હૈ, ચે દોનો છદ્મસ્થ ચીતરાગ કહે ગયે હૈ ઓર સયોગ કેવલી
૧૩ વેં ગુણસ્થાનવાલેકો એવં અયોગકેવલી ચૌદહવેં ગુણસ્થાનવાલેકો
હોતા હૈ, એસા વહ યથારુચાત ચારિત્રકા કથન હૈ ॥સૂ૦ ૧૮॥

अथ सूत्रकार इसी संयमके प्रस्तावको लेकर संयम और संयमके

કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે યથારુચાત ચારિત્રસંયમનો સદ્ભાવ અરૂપાયવાળા
ઉપશાન્તમોહ ક્ષીણમોહવાળા હોવામા હોય છે તે બન્નેને છદ્મસ્થ ચીતરાગ
કહે છે સયોગી કેવલી—૧૩ મા ગુણસ્થાનવાળા અને અયોગી કેવલી ૧૪ ચૌદમાં
ગુણસ્થાનવાળામાં તે સંયમનો સદ્ભાવ હોય છે આ પ્રકારનું સંયમના પાંચમા
લેક ૩૫ યથારુચાતચારિત્રનું કથન ॥ સૂ. ૧૮ ॥

‘ટીકો — ‘પરિવિયાળ’ ઇત્યાદિ—

૧. એકેન્દ્રિયાદ્ જીવાન્ અસમારમમાણસ્ય=સંઘટ્ટાદિના અનુપમર્દયમાણસ્ય સાધોઃ સપ્તદશપ્રકારેષુ સયમેષુ મધ્યે પચ્ચમિથ=પચ્ચમપ્રકારકઃ સંયમઃ ક્લિપ્તે=મયતિ । કર્મેષ સયમસ્ય કર્તૃત્વેન વિશિષ્ટત્વાત્ ‘કૃન્’ ધાતુર્મયરયર્થો મય યીતિ લોઘ્યમ્ । સયમસ્ય પચ્ચત્રિપત્તમેવાહ-તથા-પૃથિવીકાયિકસંયમઃ=સપ્તદ્વાયુરમઃ ૧। અપ્કાયિકસયમઃ ૨, તેજસ્કાયિકસયમઃ ૩, વાયુકાયિક સયમો ૪ વનસ્પતિકાયિકસયમઃ ૫ લોઘ્ય । એતદ્વૈપરીત્યેન પચ્ચમિથોઽસયમો લોઘ્ય ઇતિ ॥ સૂ૦ ૧૯ ॥

પ્રતિપક્ષ અસંયમકા કથન કરતે છે—

‘પરિવિયાળં જીવા અસમારમમાણસ્ય’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧૯ ॥

સંઘટ્ટભાદિ દ્વારા એકેન્દ્રિય જીવકા અપમર્દન નહીં કરતે હુય સાધુકો ૧૭ પ્રકારકે સંયમમેસે પાંચ પ્રકારકા સંયમ હોતા છે । યહાં “કૃન્” ધાતુ “મયતિ” અર્થમે લિયા ગયા છે । યહ પાંચ પ્રકારકા સયમ એસા છે, પૃથિવીકાયિક સયમ યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સંયમ યદાં યાવત્પદ્સે “અપ્કાયિક સયમ, તેજસ્કાયિક સંયમ વાયુકાયિક સયમે” ઇન ત્રીન સયમોકા પ્રહ્ણ હુઆ છે । ઇન પાંચ સયમોસે ચિરદ્ પાંચ પ્રકારકા અસંયમ હોતા છે । પૃથિવીકાયિક જીવોકા સંઘટ્ટ ભાદિ કરનેકા ત્યાગ કરના યહ પૃથિવીકાયિક સયમ છે, ઇમી તરહસે યાવત્ વનસ્પતિકા યિક સયમ તક કથન જાનના જાહિયે ॥ સૂ૦ ૧૯ ॥

હવે સૂત્રકાર સયમ અને સયમના પ્રતિપક્ષ ૬૫ અસયમનું કથન કરે છે

‘પરિવિયાળં જીવા અસમારમમાણસ્ય’ ઇત્યાદિ—

સપ્તદ્વન આદિ દ્વારા એકેન્દ્રિય જીવોનું અપમર્દન (હત્યા) નહીં કરનારા સાધુ ૧૭ પ્રકારના સયમમાંથી પાંચ પ્રકારના સયમનું પાલન થાય છે અર્થાત્ ‘કૃન્’ ધાતુ મયતિ ના અર્થમાં વપરાયો છે સયમના તે પાંચ પ્રકાર નીચે પ્રમાણે સમજવા—(૧) પૃથ્વીકાયિક સયમ (૨) અપ્કાયિક સયમ (૩) તેજસ્કાયિક સયમ (૪) વાયુકાયિક સયમ અને (૫) વનસ્પતિકાયિક સયમ આ પાંચ સયમોથી વિરુદ્ધ પાંચ પ્રકારના અસયમ હોય છે પૃથ્વી કાયિક જીવોના સપ્તદ્વન આદિના ત્યાગ કરવો તેનું નામ પૃથ્વીકાયિક સયમ છે એ જ પ્રમાણે અપ્કાયિક અને વનસ્પતિકાયિક પદ્વનના સયમ વિશે પણ સમજવું ॥ સૂ ૧૬ ॥

મૂલમ્—પંચિંદિયા પાં જીવા અસમારભમાણસ્ત્વ પંચવિહે સંજમે કજ્જઈ, તં જહા—સોઈંદિયસંજમે જાવ ફાસિંદિયસંજમે । પંચવિયા પાં જીવા સમારભમાણસ્ત્વ પંચવિહે અસંજમે કજ્જઈ, તં જહા—સોઈંદિય અસંજમે જાવ ફાસિંદિય અસંજમે । સઠ્વપા-
ણભૂયજીવસત્તાપાં અસમારભમાણસ્ત્વ પંચવિહે સંજમે કજ્જઈ, તં જહા—ઈગિંદિય સંજમે જાવ પંચિંદિયસંજમે । સઠ્વપાણભૂય-
જીવસત્તા પાં સમારભમાણસ્ત્વ પંચવિહે અસંજમે કજ્જઈ, તં જહા—
ઈગિંદિયઅસંજમે જાવ પંચિંદિય અસંજમે ॥ સૂ. ૨૦ ॥

છાયા—પચ્ચેન્દ્રિયાન્ત્વ સ્વલુ જીવાન્ત્વ અસમારભમાણસ્ય પચ્ચવિધઃ સંયમઃ ક્રિયતે, તથા—શ્રોત્રેન્દ્રિયસંયમો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયસંયમઃ । પચ્ચેન્દ્રિયાન્ત્વ સ્વલુ જીવાન્ત્વ સમારભમાણસ્ય પચ્ચવિધોઽસંયમઃ ક્રિયતે, તથા—શ્રોત્રેન્દ્રિયાસંયમો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયાસંયમઃ । સર્વપાણભૂતજીવસત્તાન્ત્વ સ્વલુ અસમારભમાણસ્ય પચ્ચવિધઃ સંયમઃ

‘પંચિંદિયાણં જીવા અસમારભમાણસ્ત્વ’ इत्यादि सूत्र २० ॥

સૂત્રાર્થ—પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા ઉપમર્દન કરનેકા ત્યાગ કરનેરૂપ જો સંયમ હૈ, વહ પાંચ પ્રકારકા હૈ જૈસે—શ્રોત્રેન્દ્રિય સંયમ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય સંયમ હસી તરહસે સંઘટ્ટ આદિ દ્વારા પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા ઉપમર્દન કરને રૂપ જો અસંયમ હૈ, વહ ભી પાંચ પ્રકારકા હૈ, જૈસે—શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંયમ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય અસંયમ સમસ્ત પ્રાણ, ભૂત જીવ ંવં સત્ત્વોંકે સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા મર્દન કરનેકા ત્યાગ કરનેવાલે

“ પંચિંદિયાણં જીવા અસમારભમાણસ્ત્વ ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા ઉપમર્દન નહીં કરવા રૂપ જે સંયમ છે, તેના પાંચ પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે—શ્રોત્રેન્દ્રિય સંયમથી લઇને સ્પર્શેન્દ્રિય સંયમ પર્યન્તના પાંચે ઇન્દ્રિયોના સંયમ અહીં ગ્રહણ કરવા લેઈએ. એ જ પ્રમાણે સંઘટ્ટન આદિ વડે પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા ઉપમર્દન કરવા રૂપ અસંયમના પણ નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર પડે છે—શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંયમથી લઇને સ્પર્શેન્દ્રિય અસંયમ પર્યન્તના પાંચ પ્રકારે અહીં ગ્રહણ કરવા લેઈએ. સમસ્ત પ્રાણ, ભૂત, જીવો અને સત્ત્વોંકા સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા મર્દન કરવાનો ત્યાગ કરનાર જીવ દ્વારા પાંચ પ્રકારના સંયમનુ પાલન થાય

ટીકા — 'ર્ગિંદિયાણ' इत्यादि—

एकेन्द्रियान् जीवान् असमारममाणस्य=संघट्टादिना अनुपमर्दयमानस्य साधोः सप्तदशप्रकारेषु सयमेषु मध्ये पञ्चविध=पञ्चप्रकारकः संयमः क्रियते=भवति । कर्मण सयमस्य कर्तृत्वेन विवक्षितत्वात् 'कृञ्' धातुर्भवत्यर्थो भवतीति बोध्यम् । सयमस्य पञ्चविधस्यमेवाह-सद्यथा-पृथिवीकायिकसंयमः=संघट्टादुरमः १। एषम्-अण्कायिकसंयम २, तेजस्कायिकसंयमः ३, वायुकायिकसंयमो ४ वनस्पतिकायिकसंयमश्च ५ बोध्य । एतद्वैपरीत्येन पञ्चविधोऽसयमो बोध्य इति ॥ सू० १९ ॥

प्रतिपक्ष असंयमका કથન કરતે હૈં—

'ર્ગિંદિયાણં जीवा असमारममाणस्य' इत्यादि सूत्र १९ ॥

સંઘટ્ટ આદિ દ્વારા એકેન્દ્રિય જીવકા ઝપમર્દન નહીં કરતે હુમ સાધુકો ૧૭ પ્રકારકે સંયમમેંસે પાંચ પ્રકારકા સંયમ હોતા હૈ । યહાં "કૃઞ્" ધાતુ "ભવતિ" અર્થમેં લિયા ગયા હૈ । ઘહ પાંચ પ્રકારકા સયમ પેસા હૈ, પૃથિવીકાયિક સયમ યાઘત્ વનસ્પતિકાયિક સયમ યહાં યાઘત્પદસે "અણ્કાયિક સયમ, તેજસ્કાયિક સંયમ વાયુકાયિક સંયમ" इन तीन सयमोंका ग्रहण हुआ है । इन पांच सयमोंसे विरुद्ध पांच प्रकारका असंयम होता है । पृथिवीकायिक जीवोंका संघट्ट आदि करनेका त्याग करना यह पृथिवीकायिक सयम है, इसी तरहसे यावत् वनस्पतिकायिक सयम तक कथन जानना चाहिये ॥ सू० १९॥

હવે સૂત્રકાર સયમ અને સંયમના પ્રતિપક્ષ રૂપ અસંયમનું કથન કરે છે

'ર્ગિંદિયાણં जीवा असमारममाणस्य' इत्यादि—

સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા એકેન્દ્રિય જીવોનું ઝપમર્દન (કૃત્યા) નહીં કરનારા સાધુ વડે ૧૭ પ્રકારના સયમમાંથી પાંચ પ્રકારના સયમનું પાલન થાય ॥ અહીં 'કૃઞ્' ધાતુ 'ભવતિ' ના અર્થ માં વપરાયો છે સંયમના તે પાંચ પ્રકાર નીચે પ્રમાણે સમજવા—(૧) પૃથ્વીકાયિક સયમ, (૨) અણ્કાયિક સયમ (૩) તેજસ્કાયિક સયમ (૪) વાયુકાયિક સયમ અને (૫) વનસ્પતિકાયિક સયમ. આ પાંચ સયમોથી વિરુદ્ધ પાંચ પ્રકારના અસંયમ હોય છે પૃથ્વીકાયિક જીવોના સંઘટ્ટન આદિના ત્યાગ કરવે તેનું નામ પૃથ્વીકાયિક સયમ છે જે ન પ્રમાણે અણ્કાયિક લઈને વનસ્પતિકાયિક પર્યંતના સયમ વિશે પણ સમજવું ॥ સૂ. ૧૯ ॥

મૂલમ્—પંચિંદિયા ણં જીવા અસમારભમાણસ્સ પંચવિહે સંજમે કજ્ઞહિ, તં જહા—સોહંદિયસંજમે જાવ ફાસિંદિયસંજમે । પંચવિયા ણં જીવા સમારભમાણસ્સ પંચવિહે અસંજમે કજ્ઞહિ, તં જહા—સોહંદિય અસંજમે જાવ ફાસિંદિય અસંજમે । સઠ્ઠવા-
ણભૂયજીવસત્તાણં અસમારભમાણસ્સ પંચવિહે સંજમે કજ્ઞહિ, તં જહા—એગિંદિય સંજમે જાવ પંચિંદિયસંજમે । સઠ્ઠવાણભૂય-
જીવસત્તા ણં સમારભમાણસ્સ પંચવિહે અસંજમે કજ્ઞહિ, તં જહા—
એગિંદિયઅસંજમે જાવ પંચિંદિય અસંજમે ॥ સૂ. ૨૦ ॥

છાયા-પચ્ચેન્દ્રિયાન્ સઠ્ઠ જીવાન્ અસમારભમાણસ્ય પચ્ચવિધઃ સંયમઃ ક્રિયતે, તથથા-શ્રોત્રેન્દ્રિયસંયમો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયસંયમઃ । પચ્ચેન્દ્રિયાન્ સઠ્ઠ જીવાન્ સમારભમાણસ્ય પચ્ચવિધોઽસંયમઃ ક્રિયતે, તથથા-શ્રોત્રેન્દ્રિયાસંયમો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયાસંયમઃ । સર્વપ્રાણભૂતજીવસત્ત્વાન્ સઠ્ઠ અસમારભમાણસ્ય પચ્ચવિધઃ સંયમઃ

‘પંચિંદિયાણં જીવા અસમારભમાણસ્સ’ इत्यादि सूत्र २० ॥

સૂત્રાર્થ-પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા ઉપમર્દન કરનેકા ત્યાગ કરનેરૂપ જો સંયમ હૈ, વહ પાંચ પ્રકારકા હૈ જૈસે-શ્રોત્રેન્દ્રિય સંયમ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય સંયમ હસી તરહસે સંઘટ્ટ આદિ દ્વારા પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા ઉપમર્દન કરને રૂપ જો અસંયમ હૈ, વહ ભી પાંચ પ્રકારકા હૈ, જૈસે-શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંયમ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય અસંયમ સમસ્ત પ્રાણ, ભૂત જીવ એવં સત્ત્વોંકે સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા મર્દન કરનેકા ત્યાગ કરનેવાલે

“ प चिंदियाण जीवा असमारभमाणस्स ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ-પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા ઉપમર્દન નહીં કરવા રૂપ જે સંયમ છે, તેના પાંચ પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે-શ્રોત્રેન્દ્રિય સંયમથી શ્રવણે સ્પર્શેન્દ્રિય સંયમ પર્યંતના પાચે ઇન્દ્રિયોના સંયમ અહીં ગ્રહણ કરવા ભેઈએ. એ જ પ્રમાણે સંઘટ્ટન આદિ વડે પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકા ઉપમર્દન કરવા રૂપ અસંયમના પાચ નીચે પ્રમાણે પાચ પ્રકાર પડે છે-શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંયમથી શ્રવણે સ્પર્શેન્દ્રિય અસંયમ પર્યંતના પાંચ પ્રકારે અહીં ગ્રહણ કરવા ભેઈએ. સમસ્ત પ્રાણ, ભૂત, જીવો અને સત્ત્વોંકા સંઘટ્ટન આદિ દ્વારા મર્દન કરવાનો ત્યાગ કરનાર જીવ દ્વારા પાચ પ્રકારના સંયમનું પાલન થાય

ક્રિયતે, તથા-એકેન્દ્રિયસયમો યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયસંયમઃ । સર્વપ્રાણમૃતપ્રીષ
સપ્રાન્ત્ સ્વસ્થ સમારમમાણસ્ય પચ્ચત્રિયઃ અસયમઃ ક્રિયતે, તથા-એકેન્દ્રિયા
સયમો યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયાસંયમ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

ટીકા—‘વંધિદિયા’ ઇત્યાદિ—

“પુદ્ગલિદગઅગ્નિમારુય ષણસ્સદ્ધિ વિવિધઉપણિદિયાઝીવા । પદુપ્પેહપમ
જ્જળપરિદ્ધવમમણોવર્કાણ ॥ ૧ ॥ ઝાયા-પુષ્પિધ્ધુરકાગ્નિમારુતા વનસ્પતિ
દ્વિત્રિયતુઃપચ્ચેન્દ્રિયા ઝઝીવાઃ મેસોત્ત્રેયા પમાર્જન પરિષ્ઠાપર્ને મનોવાહુ કાયા
॥૧॥ ઇત્યમ્ સસદ્ગદિયઃ સયમઃ પ્રોક્ત તત્ર તસ્ય સયમસ્ય નયમો મેદઃ પચ્ચે
ન્દ્રિયસંયમઃ પ્રોક્ત । સ પચામ્ ઓત્રેન્દ્રિયસયમાદિમદેઃ પચ્ચત્રિયત્વેનોદ્યતે । તથાદિ-
પચ્ચેન્દ્રિયાન્ત્ જીવાન્ અસમારમમાણસ્ય=પચ્ચત્રિયઝીવાનાં વિરાષનામકુર્ષતો
જીવસ્ય ઓત્રેન્દ્રિયસયમાદિરૂપઃ પચ્ચત્રિયઃ સયમો મયતિ તત્ર ઓત્રેન્દ્રિયસ્ય
વિરાષનાપરિવર્જનં ઓત્રેન્દ્રિયસયમઃ એવ ચત્તુરિન્દ્રિયાદિ સ્વચ્ચિન્દ્રિયસ્ય
જીવકો પાંચ પ્રકારકા સયમ હોતા હૈ, જૈસે-એકેન્દ્રિય સયમ યાવત્
પચ્ચેન્દ્રિય સયમ મમસ્ત પ્રાણ મૂત્ત જીવ એવ સર્વલોકા સઘટ્ટન આદિ
દ્વારા મર્દનકરનેરૂપ અસંયમ પાંચ પ્રકારકા હૈ, જૈસે-એકેન્દ્રિય અસંયમ
યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિય અસયમ ।

“પુદ્ગલિદગઅગ્નિમારુય” ઇત્યાદિ ।

હમ ગાથા દ્વારા જો ૧૭ પ્રકારકા સયમ કહા ગયા હૈ, હસમેં સંય
મકા નૌવાં મેદ્ જો પચ્ચેન્દ્રિય સંયમ કહા હૈ, ઘહી ઘર્ષાં સૂત્રમેં ઓત્રે
ન્દ્રિય સયમ આદિકે મેદોં દ્વારા પાંચ પ્રકાર સે કહા ગયા હૈ, જો
જીવ પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકી વિરાષના નહીં કરતા હૈ, એસે જીવકો ઓત્રેન્દ્રિય
સંયમ આદિ રૂપ પાંચ પ્રકારકા સયમ હોતા હૈ, હનમેં ઓત્રેન્દ્રિયકી
વિરાષનોંકા ત્યાગ કરના વહ ઓત્રેન્દ્રિય સંયમ હૈ, હસી તરહસે અહુ

છે તે પાંચ પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે-એકેન્દ્રિય સયમથી લઇને પચ્ચેન્દ્રિય
સયમ પર્યન્તના પાંચ પ્રકાર અહીં સમજાવેલા સમસ્ત પ્રાણ, મૂત, લવે
અને સર્વોત્તમ સઘટ્ટન આદિ દ્વારા મર્દન કરવા હપ અસંયમતા થઇ નીચે
પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર છે-એકેન્દ્રિય અસંયમથી લઇને પચ્ચેન્દ્રિય અસયમ પર્ય
ન્તના પાંચ પ્રકાર અહીં સમજાવેલા

‘પુદ્ગલિદગઅગ્નિમારુય’ ઇત્યાદિ—

આ ગાથા દ્વારા સમજના જે ૧૭ પ્રકાર જતાવવામાં આવ્યા છે તેમાં
નવમી સેદ્ જે પચ્ચેન્દ્રિય સયમ કહ્યો છે એજ અહીં સૂત્રમાં ઓત્રેન્દ્રિય
સયમ આદિના સેવથી પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે જે લગ્ન પચ્ચેન્દ્રિય લવેની
વિરાષના કરતો નથી, જેવા લગ્ન દ્વારા ઓત્રેન્દ્રિય સયમ આદિ હપ પાંચ
પ્રકારના સયમનુ પાલન થાય છે તેમાં ઓત્રેન્દ્રિયની વિરાષનાનો ત્યાગ કરવો

વિરાધના પરિવર્જનં તત્તદિન્દ્રિયસંયમો વોધ્ય ઇતિ । एतद्वैपरीत्येन पञ्चविध-
इन्द्रियासंयमो वोध्य इति । पूर्वमेकेन्द्रियपञ्चेन्द्रियजीवाश्रयेण संयमसंयमा
सर्वजीवाश्रयत्वेन तावुच्येते ‘सञ्चपाणभूय’ -इत्यादिना । सर्वप्राणभूतजीव-
सत्त्वान् सर्वे च ते प्राणाश्च भूताश्च जीवाश्च सत्त्वावेति-सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वा-
स्तान् असमारभमाणस्य=अविराधयतो जीवस्य एकेन्द्रियसंयमादिपञ्चेन्द्रिय-
સંયમાન્તઃ પચ્ચવિધઃ સંયમો ભવતિ । પ્રાણાદીનાં ભેદસ્ત્વેવં વોધ્યઃ, તથાદિ—

“ પ્રાણા દ્વિત્રિચતુઃ પ્રોક્તાઃ ભૂતાસ્તુ તરવઃ સ્મૃતાઃ ।

जीवाः पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः शेषाः सत्त्वा इतीरिताः ” ॥१॥ इति ।

રિન્દ્રિય આદિ ઇન્દ્રિયોંકી વિરાધના કરનેકા ત્યાગ કરના વહ ઇન્દ્રિય સંયમ
હૈ, इन इन्द्रियोंके संयमसे विपरीत पांच प्रकारका इन्द्रिय असंयम होता है,
સંયમ ઓર અસંયમકા વહ પૂર્વોક્ત કથન એકેન્દ્રિય ઓર પચ્ચેન્દ્રિય જીવોંકે
આશ્રયકો લેકર કહા હૈ, अव समस्त जीवोंके आश्रयसे संयम अल-
यमका कथन सूत्रकार करते हैं—“ सञ्चपाणभूय ” इत्यादि—समस्त
પ્રાણોંકી સમસ્ત ભૂતોંકી સમસ્ત જીવોંકી ઓર સમસ્ત સત્ત્વોંકી વિરા-
ધના કરનેવાલે જીવકો એકેન્દ્રિય સંયમ આદિસે લેકર પચ્ચેન્દ્રિય સંયમ
તક પાંચોં પ્રકારકા સંયમ હોતા હૈ, પ્રાણાદિકોંમેં ભેદ इस प्रकारसे
કહા ગયા હૈ—પ્રાણા દ્વિત્રિચતુઃ પ્રોક્તા ” इत्यादि ।

दो इन्द्रियवाले तेइन्द्रियवाले और चार इन्द्रियवाले जीव “ प्राण ”

તેનું નામ શ્રોત્રેન્દ્રિય સંયમ છે, એ જ પ્રમાણે ચક્ષુરિન્દ્રિય, ઘ્રાણેન્દ્રિય, રસ-
નેન્દ્રિય અને સ્પર્શેન્દ્રિયની વિરાધનાનો ત્યાગ કરવો તેનું નામ અનુક્રમે
ચક્ષુરિન્દ્રિય સંયમ, ઘ્રાણેન્દ્રિય સંયમ, રસનેન્દ્રિય સંયમ અને સ્પર્શેન્દ્રિય
સંયમ છે. એ ઇન્દ્રિયોના સંયમથી વિપરીત પાંચ પ્રકારનો ઇન્દ્રિય અસંયમ
હોય છે. સંયમ અને અસંયમનું આ કથન એકેન્દ્રિય અને પચ્ચેન્દ્રિય જીવોને
આધારે કરવામાં આવ્યું છે હવે સમસ્ત જીવોને આધારે
સંયમ અને અસંયમનું કથન સૂત્રકાર કરે છે—“ સચ્ચપાણભૂય ”
ઇત્યાદિ—સમસ્ત પ્રાણોની, સમસ્ત ભૂતોની, સમસ્ત જીવોની અને સમસ્ત
સત્ત્વોની વિરાધના ન કરનાર જીવો એકેન્દ્રિય સંયમથી લઇને પચ્ચેન્દ્રિય સંયમ
પર્યન્તના પાંચે પ્રકારના સંયમનું પાલન કરનારા ગણાય છે. પ્રાણાદિકોનો
આ પ્રમાણે અર્થ સમજવો—“ પ્રાણા દ્વિ ત્રિ ચતુ પ્રોક્તા ” ઇત્યાદિ—

દીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને ચતુરિન્દ્રિય જીવોને ‘પ્રાણ’ કહે છે. પનસ્પતિ.

क्रियते, तथा-एकेन्द्रियसंयमो यावत् पञ्चेन्द्रियसंयमः । सर्वप्राणभूतमीष
सत्त्वान् सल्लु समारममाणस्य पञ्चविध असंयमः क्रियते, तथा-एकेन्द्रिया
संयमो यावत् पञ्चेन्द्रियासंयमः ॥ सू० २० ॥

टीका—‘ पञ्चिन्द्रिया ’ इत्यादि—

“ पुढविदगभगणिमाह्वय षणस्तह विविधउपणिदिवाजीवा । पेहुप्पेइयम
नमणपरिदुवगमणोवईकाए ॥ १ ॥ छाया-पुयिम्पुइकाग्निमारुता षनस्पति
द्विचिचतुपञ्चन्द्रिया अजीवा मेसोत्पेसा ममाज्जन परिष्ठापनं मनोवाक् काया
॥ १ ॥ इत्यत्र सप्तदशविध संयमः प्रोक्त एव तस्य संयमस्य नवमो भेदः पञ्च
न्द्रियसंयमः प्रोक्तः । स एवात्र भोत्रेन्द्रियसंयमादिभेदैः पञ्चविधत्वेनोच्यते । तथाहि-
पञ्चेन्द्रियात् जीवान् असमारममाणस्य=पञ्चन्द्रियजीवानां विराचनामकुर्वतो
जीवस्य भोत्रेन्द्रियसंयमादिरूप पञ्चविधः संयमो भवति एव भोत्रेन्द्रियस्य
विराचनापरिवर्जनं भोत्रेन्द्रियसंयमः एवं चक्षुरिन्द्रियादि तद्यदिन्द्रियस्य

जीवको पांच प्रकारका संयम होता है, जैसे-एकेन्द्रिय संयम यावत्
पञ्चेन्द्रिय संयम समस्त प्राण भूत जीव एवं सर्वोका संघटन आदि
द्वारा मर्दनकरनेरूप असंयम पांच प्रकारका है, जैसे-एकेन्द्रिय असंयम
यावत् पञ्चेन्द्रिय असंयम ।

“ पुढविदग भगणिमाह्वय ” इत्यादि ।

इस गाथा द्वारा जो १७ प्रकारका संयम कहा गया है, उसमें संय
मका नौवां भेद जो पञ्चेन्द्रिय संयम कहा है, वही यहाँ सूत्रमें भोत्रे
न्द्रिय संयम आदिके भेदों द्वारा पांच प्रकार से कहा गया है, जो
जीव पञ्चेन्द्रिय जीवोंकी विराचना नहीं करता है, ऐसे जीवको भोत्रेन्द्रिय
संयम आदि रूप पांच प्रकारका संयम होता है, इसमें भोत्रेन्द्रियकी
विराचनाका त्याग करना वह भोत्रेन्द्रिय संयम है, इसी तरहसे बहुत

उ ते पांच प्रकारो नीचे प्रभासे उ-एकेन्द्रिय संयमभी एधने पञ्चेन्द्रिय
संयम पधेन्तना पांच प्रकार अही समल लेवा. समस्त प्राण, भूत, एवे
अने सर्वोक्त संघटन आदि द्वारा मर्दन करवा रूप असंयमना पण नीचे
प्रभासे पांच प्रकार उ-एकेन्द्रिय असंयमभी एधने पञ्चेन्द्रिय संयम पध
न्तना पांच प्रकारो अही समल लेवा.

‘ पुढविदगभगणिमाह्वय ’ इत्यादि—

आ गाथा द्वारा संयमना के १७ प्रकार बताववाभा आब्या है तेभा
नवमी कोड के पञ्चेन्द्रिय संयम कहो है अने अही सूत्रभा भोत्रेन्द्रिय
संयम आदिना कोडकी पांच प्रकारना कहो है के एव पञ्चेन्द्रिय एवेनी
विराचना करतो नही, जेवा एव द्वारा भोत्रेन्द्रिय संयम आदि रूप पांच
प्रकारना संयमनु पाठन थाव है तेभा भोत्रेन्द्रियनी विराचनाना त्याग करवे।

ટીકા—‘પંચવિહા’ ઇત્યાદિ—

તુળવનસ્પતિકાયાિકા:—તુળરૂપા:—વાદરૂપા યે વનસ્પતિકાયાિકાજીવા: સન્તિ તે અગ્રવીજાદિભેદેન પશ્ચવિધા વૌધ્યા: । તન્ન-અગ્રવીજા:—કોરણ્ટકાદય: ૧, મૂલવીજા:—કમલકન્દાદય: ૨, પર્વવીજા:—હ્યુવંશાદય: ૩, સ્કન્ધવીજા:—શલ્લક્યાદય: ૪ વીજરૂહા:—વટાદય: ૫ ઇતિ ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

પૂર્વ વનસ્પતિકાયાિકજીવા: પ્રોક્તા:, તેષાં રક્ષણં ત્વાચારેણૈવ ભવતીત્યત આચારસ્વરૂપમાદ—

મૂલમ્—પંચવિહે આચારે પળ્લન્તે, તં જહા-ળાળાચારે ૧ દંસળાચારે ૨ ચરિત્તાચારે ૩ તવાચારે ૪ વીરિયાચારે ૫ ॥ સૂ ૦ ૨૨ ॥

છાયા—પશ્ચવિધ આચાર: પ્રજ્ઞત:, તથા-જ્ઞાનાચાર: ૧ દર્શનાચાર: ૨ ચારિત્રાચાર: ૩ તપ આચાર: ૪ વીર્યાચાર: ૫ ॥ મુ ૦ ૨૨ ॥

‘પંચવિહા તળવળસ્સહકાહયા પળ્લન્તા’ ઇત્યાદિ સૂ ૦ ૨૧ ॥

તુળરૂપ જો વાદર વનસ્પતિકાયાિક જીવ હૈં, વે અગ્રવીજ આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હૈં, જિનકા અગ્રભાગહી વીજરૂપ હોતા હૈ, એસે કોરણ્ટક આદિ અગ્રવીજ હૈં ૧। જિનકા મૂલહી વીજરૂપ હોતા હૈ, એસે કમલકન્દ આદિ મૂલવીજ હૈં ૨। જિનકા પર્વહી વીજરૂપ હોતા હૈ, એસે હ્યુ (ગન્ના) વંશ આદિ પર્વવીજહૈં, તથા જિનકા સ્કન્ધહી વીજરૂપ હોતા હૈ, એસે શલ્લકી આદિ સ્કન્ધવીજ હૈં, ઓર જો વનસ્પતિ વીજસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં એસે વે વટ આદિ વીજરૂપ વનસ્પતિ વીજ હૈં ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

इन कथित वनस्पतिकायिक जीवांका रक्षण आचारसेही होता है, अतः अब सूत्रकार आचारका स्वरूप कहते हैं—

“पंचविहा तणवणस्सहकाहया पण्णत्ता” इत्यादि—

તુળ રૂપ જે વાદર વનસ્પતિકાયાિક જીવો છે, તેમના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર પડે છે—(૧) અગ્રવીજ—જેમના અગ્રભાગ જ વીજરૂપ હોય છે, એવા કોરંટક આદિને ‘અગ્રવીજ’ કહે છે (૨) જેમનું મૂળ જ વીજરૂપ હોય છે, એવા કમલકન્દ આદિને ‘મૂળવીજ’ કહે છે (૩) જેમના પર્વ જ (ગાંઠ) વીજરૂપ હોય છે, એવા શેરડીના સાંઠા આદિને ‘પર્વવીજ’ કહે છે. (૪) જેનું શ્વ વીજ રૂપ હોય છે, એવી શલ્લકી આદિને ‘સ્કન્ધ વીજ’ કહે છે (૫) જે વનસ્પતિ વીજમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે, એવા વટ આદિના વીજને ‘વીજરૂપ વનસ્પતિ વીજ’ કહે છે ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

ઉપર જે વનસ્પતિકાયાિક આદિ જીવોની વાત કરી તેમનું રક્ષણ આચાર દ્વારા જ થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આચારનું સ્વરૂપ પ્રકટ કરે છે.

अत्र पृथिव्यादिपञ्चेन्द्रियपर्यन्ता नव सयमा बोध्या । यतः एकेन्द्रिय सयमेन पृथिव्यादयः पञ्च, द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रिया इति षत्वारः, इत्युभयेषां सक्त कनया नव । सर्वप्राणभूतजीवसंस्थानां विराचनां कुर्वतस्तु एकेन्द्रियासयमादि पञ्चेन्द्रियासयमातः पञ्चविधासयमो भवति ॥ सू० २० ॥

एकेन्द्रियमेवेनोक्तस्य वनस्पतेर्वाक्षरभेदस्य पञ्चविधत्वमाह—

मूलम्—पञ्चविधा तणवणस्तद्द्रव्या पणत्ता, त जहा-
अगवीया १ मूलवीया २ पोरवीया ३ स्वधवीया ४ वीयरुहा
५ ॥ सू० २१ ॥

छाया—पञ्चविधास्तृणवनस्पतिक्रायिकाः मृगमाः, तद्यथा—अग्रवीयाः १
मूलवीयाः २ पर्ववीया ३ स्तम्भवीयाः ४ वीजरुहाः ५ ॥ सू० २१ ॥

इस शब्दसे कहे गये हैं, पृथ्वी 'भूत' इस शब्दसे कहे गये हैं "पञ्चेन्द्रिय" जीव इस शब्दसे कहे गये हैं, इनसे अतिरिक्त एकेन्द्रिय जीव "सर्व" शब्दसे कहे गये हैं । यहाँ पृथिवी आदिसे लेकर पञ्चेन्द्रिय तकके नौ संयम हैं, क्योंकि एकेन्द्रिय संयमसे पृथिव्यादिक पाँच द्वीन्द्रिय तेन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय संयमसे चार इस प्रकारसे ये नौ संयम होते हैं । सर्व प्राण, भूत, जीव एवं सर्व इनकी विराचना कर नेवाले जीवके एकेन्द्रिय असंयमसे लेकर पञ्चेन्द्रिय असंयम तक पाँच प्रकारका असंयम होता है ॥ सू० २० ॥

एकेन्द्रियके भेदसे कथित हुए वनस्पतिका जो वाक्षर भेद है, उसकी पंचविधताका कथन अब सूत्रकार करते हैं—

आधिक्ये 'भूत' शब्दे ७ पञ्चेन्द्रियेने 'एव' शब्दे ७ ते सिवायना एकेन्द्रिय एवेने 'सर्व' शब्दे ७ अर्थात् पृथ्वीआदि सबभूत एवने पञ्चेन्द्रिय संयम पर्यन्तना नव प्रकारना संयम कहा है 'एकेन्द्रिय संयम' आ पक्ष द्वारा पृथ्वीआदि सबभूत एवने वनस्पतिआदि संयम पर्यन्तना पञ्च कोटि भेद पक्ष है आ सिवायना आर कोटि नीचे प्रमाण है द्वीन्द्रिय संयम, त्रिन्द्रिय संयम, चतुरिन्द्रिय संयम आने पञ्चेन्द्रिय संयम समस्त प्रमाण, भूत, एवे आने सर्वोनी विराचना करने के एवे वडे एकेन्द्रिय अत्रवभूत एवने पञ्चेन्द्रिय असंयम पर्यन्तना पञ्च प्रकारना असंयम सेव्य है ॥ सू० २० ॥

एकेन्द्रियना कोटि के वनस्पतिआदि तेना आकर वनस्पति रूप सेव्य पाँच प्रकारनु सूत्रकार कहे कथन करे है

ટીકા—‘ પંચવિહા ’ ઇત્યાદિ—

તૃણવનસ્પતિકાયિકા:—તૃણરૂપા:—વાદરૂપા યે વનસ્પતિકાયિકાજીવાઃ
સન્તિ તે અગ્રવીજાદિભેદેન પञ्ચવિધા બોધ્યાઃ । તન્ન-અગ્રવીજાઃ—કોરણ્ટકાદયઃ
૧, મૂલવીજાઃ—કમલકન્દાદયઃ ૨, પર્વવીજાઃ—શ્લુવંશાદયઃ ૩, સ્કન્ધવીજાઃ—
શલ્લક્યાદયઃ ૪ વીજરૂહાઃ—વટાદયઃ ૫ ઇતિ ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

પૂર્વે વનસ્પતિકાયિકજીવાઃ પ્રોક્તાઃ, તેષાં રક્ષણં ત્વાચારેણૈવ ભવતીત્યત
આચારસ્વરૂપમાહ—

મૂલમ્—પંચવિહે આચારે પળ્લત્તે, તં જહા-ળાળાચારે ૧
દંસળાચારે ૨ ચરિત્તાચારે ૩ તવાચારે ૪ વીરિયાચારે ૫ ॥ સૂ ૦ ૨૨ ॥

છાયા--પञ્ચવિધ આચારઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદ્યથા-જ્ઞાનાચારઃ ૧ દર્શનાચારઃ ૨
ચારિત્રાચારઃ ૩ તપ આચારઃ ૪ વીર્યાચારઃ ૫ ॥ સૂ ૦ ૨૨ ॥

‘પંચવિહા તળવળસ્સહકાહ્યા પળ્લત્તા’ ઇત્યાદિ સૂ ૦ ૨૧ ॥

તૃણરૂપ જો વાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ હૈં, વે અગ્રવીજ આદિકે
ભેદસે પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હૈં, જિનકા અગ્રભાગહી વીજરૂપ હોતા
હૈ, એસે કોરણ્ટક આદિ અગ્રવીજ હૈ ૧। જિનકા મૂલહી વીજરૂપ હોતા
હૈ, એસે કમલકન્દ આદિ મૂલવીજ હૈ ૨। જિનકા પર્વહી વીજરૂપ હોતા
હૈ, એસે શ્લુ (ગન્ના) વંશ આદિ પર્વવીજ હૈં, તથા જિનકા સ્કન્ધહી વીજરૂપ
હોતા હૈ, એસે શલ્લકી આદિ સ્કન્ધવીજ હૈં, ઓર જો વનસ્પતિ વીજસે
ઉત્પન્ન હોતે હૈં એસે વે વટ આદિ વીજરૂપ વનસ્પતિ વીજ હૈં ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

इन कथित वनस्पतिकायिक जीवाँका रक्षण आचारसेही होता है,
अतः अब सूत्रकार आचारका स्वरूप कहते हैं—

“ पंचविहा तणवणस्सहकाह्या पणत्ता ” इत्यादि—

તૃષ્ણ રૂપ જે વાદર વનસ્પતિકાયિક જીવો છે, તેમના નીચે પ્રમાણે પાંચ
પ્રકાર પડે છે—(૧) અગ્રળીજ જેમનો અગ્રભાગ જ ળીજરૂપ હોય છે, એવા
કોરણ્ટક આદિને ‘અગ્રળીજ’ કહે છે (૨) જેમનું મૂળ જ ળીજરૂપ હોય છે,
એવા કમલકન્દ આદિને ‘મૂળળીજ’ કહે છે (૩) જેમના પર્વ જ (ગાંઠ) ળીજરૂપ
હોય છે, એવા શેરડીના સાંઠા આદિને ‘પર્વળીજ’ કહે છે. (૪) જેનું થડ
ળીજ રૂપ હોય છે, એવી શલ્લકી આદિને ‘સ્કન્ધ ળીજ’ કહે છે (૫) જે
વનસ્પતિ ળીજમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે, એવા વટ આદિના ળીજને ‘ળીજરૂપ
વનસ્પતિ ળીજ’ કહે છે ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

ઉપર જે વનસ્પતિકાયિક આદિ જીવોની વાત કરી તેમનું રક્ષણ આચાર
દ્વારા જ થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આચારનું સ્વરૂપ પ્રકટ કરે છે.

ટીકા—‘પંચવિદે’ इत्यादि—

આચરણમ્-આચાર-જ્ઞાનાદિવિષયકમનુષ્ઠાનમિત્યર્થ । સ ચ જ્ઞાનાચારાદિમેદન પચ્ચવિધ । તત્-જ્ઞાનાચાર-જ્ઞાન=શ્રુતજ્ઞાન, તદ્વિષય આચાર-શ્રુતજ્ઞાનરૂપોઽપ્તવિધ આચાર इत्यર્થ ।

સદુક્તમ્—“કાલે ૧, વિનય ૨ સદુમાને ૩ ઉપદાને ૪ તદ્ય અનિહુવ ૫ ।

વ્યજન ૬ અર્થ ૭ તદુમય ૮, અદ્વિદો નાળમાયારો ॥૧॥ ”

છાયા—જ્ઞાનો વિનયો સદુમાનમ્, ઉપદાન તયા ચં અનિહુવનમ્ ।

વ્યજનનમ્ અર્થસ્તદુમયમ્, અપ્તવિદો જ્ઞાનાચાર ॥૧॥ इति ૧ ।

તયા-દર્શનાચાર-દર્શન=સમ્પત્ત્વ, તદ્વિષયઆચાર-સમ્પત્ત્વવર્તા વ્યજ
હાર इत्यર્થ । અપમપ્તવિધ । સદુક્તમ્—

‘પંચવિદે આચારે પળગતે’ इत्यादि સુ. ૨૨ ॥

ટીકા—આચાર પાંચ પ્રકારના કહા ગયા છે એવે-જ્ઞાનાચાર ૧ દર્શનાચાર ૨ ચારિત્રાચાર ૩ તપ આચાર ૪ ઓર ચીર્ષાચાર ૫

આચરણના નામ આચાર છે, યહ આચાર જ્ઞાનાદિ વિષયક અનુષ્ઠાનરૂપ હોતા છે યહ પૂર્વોક્તરૂપસે પાંચ પ્રકારના કહા ગયા છે, इनमें श्रुतज्ञान सम्बन्धी जो आचार है, वह ज्ञानाचार है, यह ज्ञानाचार आठ प्रकारका है । कहा भी है—“काले विनये बहुमाने” इत्यादि ।

કાલ ૧ વિનય ૨ સદુમાન ૩ ઉપદાન ૪ અનિહુવ ૫ વ્યજન ૬ અર્થ ૭ ઓર તદુમય ૮ દર્શનનામ સમ્પત્ત્વના છે, इन सम्बन्धी जो आचार है, वह दर्शनाचार है, यह दर्शनाचार सम्पत्त्व सहित जीवोंको

ટીકા—‘પંચવિદે આચારે પળગતે’ इत्यादि—

આચારના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) જ્ઞાનાચાર, (૨) દર્શનાચાર, (૩) ચારિત્રાચાર, (૪) તપ આચાર અને (૫) ચીર્ષાચાર.

આચારજ્ઞને આચાર કહે છે તે આચારો જ્ઞાનાદિ વિષયક અનુષ્ઠાન રૂપ હોય છે તેના જ્ઞાનાચાર આદિ પાંચ પ્રકાર છે શ્રુતજ્ઞાન સંબંધી એ આચાર છે, તેને નાનાચાર કહે છે તે જ્ઞાનાચારના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર છે—

“કાલે વિનયે बहुमाने” इत्यादि—

(૧) કાળ (૨) વિનય, (૩) બહુમાન (૪) ઉપદાન, (૫) અનિહુવ, (૬) વ્યજન (૭) અર્થ અને (૮) તદુમય

સમ્પત્ત્વને દર્શન કહે છે દર્શન સંબંધી એ આચાર છે તેને દર્શનાચાર કહે છે. તે દર્શનાચાર સમ્પત્ત્વ સુધ્ધ છોડીને અન્યકાર રૂપ હોય છે તેના.

“ નિસ્સંક્રિય ૧ નિઃકંસ્થિય ૨, નિઃચિત્તિગિચ્છા ૩ અમૂઢદિદ્ધો ૪ યા
ઉપવૃદ્ધ ૫-થિરીકરણે ૬, વચ્છલ્લ ૭, પ્રભાવણે ૮ અદ્ધ ॥૧॥ ”

છાયા--નિશક્તિ નિષ્કાક્ષિતં, નિર્વિચિકિત્સા અમૂઢદૃષ્ટિશ્ચ ।

ઉપવૃદ્ધા-સ્થિરીકરણે વાત્સલ્ય-પ્રભાવણે અદ્ધ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તથા--ચારિત્રાચારઃ-ચારિત્રં-સર્વવિરતિલક્ષણં, તદ્વિપયઆચારઃ, સમિત્યા
દિરૂપ ચારિત્ર પાલનાત્મકોઽષ્ટવિધો વ્યવહારઃ ।

તદુક્તમ્--પણિહાણજોગજુત્તો, પંચર્થિ સમિર્દર્શિં તિદ્ધિ ય ગુત્તીર્થિં ।

એમ ચરિત્તાચારો, અદ્ધવિદો દોઝ ણાયવ્વો ॥૧॥ ૧ ॥ ”

છાયા-પ્રણિયાનયોગયુક્તઃ(પ્રશસ્તવ્યાપારવાન)અશ્વભિઃ સમિતિમિસ્તિષ્ઠમિશ્ચગુપ્તિભિઃ।

એમ ચારિત્રાચારઃ અષ્ટવિધો ભવતિ જ્ઞાતવ્યઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

વ્યવહારરૂપ હોતા હૈ, યહ મી આઠ પ્રકારકા હૈ, જૈસે-“ નિસ્સંક્રિય
નિઃકંસ્થિય ” ઇત્યાદિ ।

નિશક્તિ ૧ નિષ્કાક્ષિત ૨ નિર્વિચિકિત્સા ૩ અમૂઢદૃષ્ટિ ૪ ઉપ-
વૃદ્ધા ૫ સ્થિરીકરણ ૬ વાત્સલ્ય ૭ ઓર પ્રભાવના ૮

ચારિત્રાચાર-સર્વવિરતિ રૂપ જો સંયમ હૈ, વહ ચારિત્ર હૈ, હસ
ચારિત્ર સમ્યન્ધી જો આચાર હૈ, વહ ચારિત્રાચાર હૈ, યહ ચારિત્રાચાર
સમિતિ આદિકે પાલને રૂપ હોતાહૈ, ઓર યહ મી અષ્ટ પ્રકારકા હૈ જૈસે-

“ પણિહાણજોગજુત્તો ” ઇત્યાદિ ।

પાંચ સમિતિયોંસે એવં ત્રીન ગુપ્તિયોંસે યુક્ત જો પ્રશસ્ત વ્યાપાર-
વાલા હોતા હૈ, વહ ચારિત્રાચાર હૈ, હસ પ્રકાર યહ ચારિત્રાચાર પાંચ
સમિતિ ઓર ત્રીન ગુપ્તિરૂપ હોનેસે આઠ પ્રકારકા હૈ, તપ આચાર ૧૨

પણ નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર છે

“ નિસ્સંક્રિય નિઃકંસ્થિય ” ઇત્યાદિ—

(૧) નિશક્તિ, (૨) નિષ્કાક્ષિત, (૩) નિર્વિચિકિત્સા, (૪) અમૂઢ દૃષ્ટિ
(૫) ઉપવૃદ્ધા, (૬) સ્થિરીકરણ, (૭) વાત્સલ્ય અને (૮) પ્રભાવના.

ચારિત્રાચાર—સર્વવિરતિ રૂપ જે સંયમ છે તેને ચારિત્ર કહે છે તે
ચારિત્ર વિષયક જે આચાર છે તેને ચારિત્રાચાર કહે છે તે સમિતિ આદિના
પાલન રૂપ હોય છે તેના પણ નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે

“ પણિહાણજોગજુત્તો ” ઇત્યાદિ—

પાંચ સમિતિઓ અને ત્રણ ગુપ્તિઓથી યુક્ત એવો જે સાધુનો પ્રશસ્ત
વ્યાપાર છે, તેને ચારિત્રાચાર કહે છે. આ રીતે પાંચ સમિતિ રૂપ પાંચ પ્રકાર

ટીકા—‘પચવિહે’ ઇત્યાદિ—

આચરણમ્-આચારઃ-જ્ઞાનાદિવિષયકમનુષ્ઠાનમિત્યર્થઃ । સ ચ જ્ઞાનાચારા
દિમેદેન પચવિધઃ । તથ-જ્ઞાનાચાર-જ્ઞાન=શ્રુતજ્ઞાન, તદ્વિષય આચારઃ-શ્રુતજ્ઞાન
રૂપોઽષ્ટવિધ આચાર इत्यर्थः ।

તદુક્તમ્—“કાલે ૧, વિનય ૨ વહુમાણે ૩ ઉપદાણે ૪ અનિહવ ૫

અવજન ૬ અર્થ ૭ તદુમય ૮, અદ્વિવિહો નાશમાયારો ॥૧॥”

છાયા—જ્ઞાનો વિનયો વહુમાનમ્, ઉપધાનં તથા ચ અનિહવનમ્ ।

અવજનમ્ અર્થસ્તદુમયમ્, અદ્વિવિહો જ્ઞાનાચારઃ ॥૧॥ इति १।

તથા-વર્ણનાચારઃ-વર્ણન=સમ્યક્ત્વં, તદ્વિષયમાચારઃ-સમ્યક્ત્વવત્તાં અવ-
જાર इत्यर्थः । અપમત્પચવિધઃ । તદુક્તમ્—

‘પચવિહે આચારે પચગ્સે’ ઇત્યાદિ સુ૦ ૨૨ ॥

ટીકાર્થ—આચાર પાંચ પ્રકારના કહા ગયા છે, જેણે-જ્ઞાનાચાર ૧ વર્ણનાચાર
૨ ચારિત્રાચાર ૩ તથા આચાર ૪ ઓર વીર્ષાચાર ૫

આચરણના નામ આચાર છે, यह आचार જ્ઞાનાદિ વિષયક મનુ-
ષ્ઠાનરૂપ હોતા છે, यह पूर्वोक्तरूपसे पांच प्रकारका कहा गया है, इनमें
શ્રુતજ્ઞાન સમ્યક્ત્વ જો આચાર છે, वह ज्ञानाचार है, यह ज्ञानाचार आठ
प्रकारका है । कहा भी है—“કાલે વિનય વહુમાણે” ઇત્યાદિ ।

કાલ ૧ વિનય ૨ વહુમાન ૩ ઉપધાન ૪ અનિહવ ૫ અવજન ૬
અર્થ ૭ ઓર તદુમય ૮ વર્ણનાનામ સમ્યક્ત્વવત્તા છે, इन सम्यक्ती जो
આચાર છે, वह वर्णनाचार है, यह वर्णनाचार सम्यक्त्व सहित जीवोंको

ટીકાર્થ—‘પચવિહે આચારે પચગ્સે’ ઇત્યાદિ—

આચારના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર છે—(૧) જ્ઞાનાચાર, (૨)
વર્ણનાચાર, (૩) ચારિત્રાચાર, (૪) તથા આચાર અને (૫) વીર્ષાચાર.

આચરણને આચાર કહે છે તે આચાર જ્ઞાનાદિ વિષયક મનુષ્ઠાન રૂપ
હોય છે તેના જ નાચાર આદિ પાંચ પ્રકાર છે શ્રુતજ્ઞાન સત્ત્વે જે આચાર
છે, તેને જ્ઞાનાચાર કહે છે તે જ્ઞાનાચારના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર છે—

“કાલે વિનય વહુમાણે” ઇત્યાદિ—

(૧) કાળ (૨) વિનય, (૩) મહુમાન (૪) ઉપધાન, (૫) અનિહવ,
(૬) અવજન (૭) અર્થ અને (૮) તદુમય

સમ્યક્ત્વને વર્ણન કહે છે વર્ણન સત્ત્વે જે આચાર છે તેને વર્ણનાચાર
કહે છે તે વર્ણનાચાર સમ્યક્ત્વ સહિત જીવોના અવજાર રૂપ હોય છે તેના

“ નિસ્સંક્રિય ૧ નિક્કંઘ્રિય ૨, નિઘ્વિતિગિચ્છા ૩ અમૂઢદિદ્ધો ૪ યા
ઉપવૃદ્ધ ૫-થિરીકરણે ૬, વચ્છલ્લ ૭, પ્રમાણે ૮ અદ્ધ ॥૧॥ ”

છાયા--નિશ્શક્તિ નિષ્કાંક્ષિતં, નિર્વિચિકિત્સા અમૂઢદૃષ્ટ્ય ।

ઉપવૃદ્ધા-સ્થિરીકરણે વાત્સલ્ય-પ્રમાણે અદ્ધ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તથા--ચારિત્રાચારઃ-ચારિત્રં-સર્વવિરતિલક્ષણં, તદ્વિષયઆચારઃ, સમિત્યા
દિરૂપ ચારિત્ર પાલનાત્મકોઽષ્ટવિધો વ્યવહારઃ ।

તદુક્તમ્--પણિહાણજોગજુતો, પંચર્થિ સમિર્દર્શિતિહિ ય ગુર્ત્તિર્દર્શિ ।

એમ ચરિત્તાચારો, અદ્ધવિદો હોઈ પાયાવ્તો ॥૧॥ ૧ ॥ ”

છાયા-પ્રણિધાનયોગયુક્તઃ(પ્રશસ્તવ્યાપારવાન)અશ્ચભિઃ સમિતિમિસ્તિસૃષ્ટિમિશ્વગુતિમિઃ ।

એષ ચારિત્રાચારઃ અષ્ટવિધો ભવતિ જ્ઞાતવ્યઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

વ્યવહારરૂપ હોતા હૈ, યહ બી આઠ પ્રકારકા હૈ, જૈસે-“ નિસ્સંક્રિય
નિક્કંઘ્રિય ” ઇત્યાદિ ।

નિશ્શક્તિ ૧ નિષ્કાંક્ષિત ૨ નિર્વિચિકિત્સા ૩ અમૂઢદૃષ્ટિ ૪ ઉપ-
વૃદ્ધા ૫ સ્થિરીકરણ ૬ વાત્સલ્ય ૭ ઓર પ્રમાવના ૮

ચારિત્રાચાર-સર્વવિરતિ રૂપ જો સંયમ હૈ, વહ ચારિત્ર હૈ, ઇસ
ચારિત્ર સમ્બન્ધી જો આચાર હૈ, વહ ચારિત્રાચાર હૈ, યહ ચારિત્રાચાર
સમિતિ આદિકે પાલને રૂપ હોતાહૈ, ઓર યહ બી અષ્ટ પ્રકારકા હૈ જૈસે-

“ પળિહાણજોગજુતો ” ઇત્યાદિ ।

પાંચ સમિતિયોંસે એવં ત્રીન ગુણિયોંસે યુક્ત જો પ્રશસ્ત વ્યાપાર-
વાલા હોતા હૈ, વહ ચારિત્રાચાર હૈ, ઇસ પ્રકાર યહ ચારિત્રાચાર પાંચ
સમિતિ ઓર ત્રીન ગુણિરૂપ હોનેસે આઠ પ્રકારકા હૈ, તપ આચાર ૧૨

પણ નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર છે

“ નિસ્સંક્રિય નિક્કંઘ્રિય ” ઇત્યાદિ—

(૧) નિઃશક્તિ, (૨) નિષ્કાંક્ષિત, (૩) નિર્વિચિકિત્સા, (૪) અમૂઢ દૃષ્ટિ
(૫) ઉપવૃદ્ધા, (૬) સ્થિરીકરણ, (૭) વાત્સલ્ય અને (૮) પ્રમાવના.

ચારિત્રાચાર—સર્વવિરતિ રૂપ જે સંયમ છે તેને ચારિત્ર કહે છે. તે
ચારિત્ર વિષયક જે આચાર છે તેને ચારિત્રાચાર કહે છે તે સમિતિ આદિના
પાલન રૂપ હોય છે તેના પણ નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે

“ પળિહાણજોગજુતો ” ઇત્યાદિ—

પાંચ સમિતિઓ અને ત્રણ ગુણિઓથી યુક્ત એવો જે માધુને પ્રશસ્ત
વ્યાપાર છે, તેને ચારિત્રાચાર કહે છે. આ રીતે પાંચ સમિતિ રૂપ પાંચ

તપા-તપ આચારો દ્વાદશવિધ સર્વોચ્ચજ્ઞાનાત્મકસ્વપત્તિ નામાચારઃ ।

તપનો દ્વાદશમેદાસ્તુ શાસ્ત્રાભ્યંતરમેદાદ્ ઘોષ્યાઃ । તપ આદ્યમેદાઃ પદ્
તપાદિ—

“અમવચમૂળોપરિયા, મિશ્રાચરિયા ય સ્વપરિચાગો ।

કાપક્ષિતેષો પશ્ચિમીણયા ય, વગ્ધો તપો દ્વોઃ ॥”

છાયા--અનશનમ્ ઝનોદરિકા મિશ્રાચર્યા ચ રસપરિત્યાગઃ ।

કાયસ્થેશઃ પ્રતિસલીનતા ચ શાશ્વ તપો ભવતિ ॥ ઇતિ ।

તપા-આમ્યન્તરમેદાઃ પદ્, તપાદિ—

“પ્રાપચ્છિત વિળમો, વૈષાધૃત્ય તદેવ સમ્ભ્રામો ।

શામ ચ ચિત્સત્તમો, એવો અઘ્નિતરો તપો ॥

છાયા--પ્રાપચ્છિત્ ચિનયો વૈષાધૃત્ય તયૈવ સ્વાધ્યાયઃ ।

ધ્યાન ચ ષ્પુત્સર્ગઃ, પદશામ્યન્તર તપઃ ॥

પ્રકારકા હોના છે, તપસ્વિચર્યોકા જો તપોકે અનુષ્ઠાન કરનેરૂપ આચાર
છે, વહ તપ આચાર છે, તપકે ૧૨ મેદ ૬ શાશ્વ તપ ઓર ૬ આમ્યન્તર
તપકે મેદસે હોતે હૈં એસે—“અણસળમૂળોપરિયા” ઇત્યાદિ ।

અનશન ૧ ઝનોદરિકા ૨ મિશ્રાચર્યા ૩ રસપરિત્યાગ ૪ કાય
સ્થેશ ૫ ઓર પ્રતિસલીનતા ૬ એ શાશ્વ તપ હૈં, આમ્યન્તર તપકે એ
૬ મેદ હૈં—“પ્રાપચ્છિત્ વિળમો” ઇત્યાદિ ।

પ્રાપચ્છિત્ ૧ ચિનય ૨ વૈષાધૃત્ય ૩ સ્વાધ્યાય ૪ ધ્યાન ૫ ઓર
ષ્પુત્સર્ગ ૬ આત્મા ઇવં શરીરની શક્તિકા નામ ચીર્ય છે, જ્ઞાનાચારકા

અને ત્રણ શુભિરૂપ ત્રણ પ્રકાર મળીને તે કુલ આઠ પ્રકારનો હોય છે

તપ આચાર—તપસ્વીએનો—તપનું અનુષ્ઠાન કરવા રૂપ એ આચાર હોય
છે તેને તપ આર કહે છે તેના ૧૨ પ્રકાર છે ૬ બહાર તપ અને ૬ આંતર
ન્તર તપ બાંધે હોદોના ન મ નીચે પ્રમાણે છે

‘અણસળમૂળોપરિયા’ ઇત્યાદિ—

(૧) અનશન (૨) ઝ્યોદરિકા (૩) મિશ્રાચર્યા (૪) રસપરિત્યાગ,
(૫) કાયસ્થેશ અને (૬) પ્રતિસલીનતા આ ૬ બાહ્યરૂપ છે આંતરન્તર
તપના ૬ કોડ નીચે પ્રમાણે છે ‘પ્રાપચ્છિત્ વિળમો’ ઇત્યાદિ—

(૧) પ્રાપચ્છિત્ (૨) ચિનય, (૩) વૈષાધૃત્ય (૪) સ્વાધ્યાય (૫) ધ્યાન
અને (૬) ષ્પુત્સર્ગ

વીર્ત્યાય—આત્મા અને શરીરની શક્તિનું નામ વીર્ય છે જ્ઞાનાચારના

તથા-વીર્યાચાર:-વીર્યમ્=આત્મશરીરસામર્થ્ય, તસ્યાનન્તરોક્તેષુ પદ્મ-
શદ્ધિષુ જ્ઞાનાચારાદિષુ સ્ફોરણમ્ । ઇતિ । સૂ૦ ૨૨ ॥

આચારસ્ય પ્રસ્તુતત્વાત્ સમ્પતિ આચારપ્રકલ્પસ્ય ભેદાનાહ--

મૂલમ્-પંચવિહે આચારપ્રકલ્પે પળ્લન્તે, તં જહા-માસિણ
ઉગ્ધાઈણ ૧, માસિણ અણુગ્ધાઈણ ૨, ચાઉમાસિણ ઉગ્ધાઈણ
૩, ચાઉમ્માસિણ અણુગ્ધાઈણ ૪, આરોવળા ૫। આરોવળા
પંચવિહા પળ્લન્તા, તં જહા-પદ્ધવિયા ૧ ઠવિયા ૨ કસિળા ૩
અકસિળા ૪ હાડહડા ૫ ॥ સૂ૦ ૨૩ ॥

હાયા-પંચવિધ આચારપ્રકલ્પઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા-માસિકમુદ્ધાતિકમ્ ૧,
માસિકમનુદ્ધાતિકમ્ ૨, ચાતુર્માસિકમુદ્ધાતિકમ્ ૩, ચાતુર્માસિકમનુદ્ધાતિકમ્ ૪,
આરોવળા પંચવિધા પ્રજ્ઞા, તથા-પ્રસ્થાપિતા ૧, સ્થાપિતા ૨, કૃત્સ્ના ૩,
અકૃત્સ્ના ૪, હાડહડા ૫ ॥ સૂ૦ ૨૩ ॥

૮ દર્શનાચારકા ૮ ચારિત્રાચારકા ૮ તપ આચારકા ૧૨ કુલ ૩૬ પ્રકાર-
કે જ્ઞાનાચાર આદિકૌંકે પરિપાલનમેં જો વીર્યરૂપ શક્તિકા પ્રકટ કરના
હૈ, વહ વીર્યાચાર હૈ ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

અવ સૂત્રકાર આચાર પ્રકલ્પકે ભેદોંકા કથન કરતે હૈ--

‘પંચવિહે આચારપ્રકલ્પે પળ્લન્તે’ ઇત્યાદિ સૂ૦ ૨૩ ॥

સૂત્રાર્થ-આચાર પ્રકલ્પ પાંચ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ, જૈસે-માસિક ઉદ્ધા-
તિક ૧ માસિક અનુદ્ધાતિક ૨ ચાતુર્માસિક ઉદ્ધાતિક ૩ ચાતુર્માસિક અનુ-
દ્ધાતિક ૪ ઓર આરોવળા ૫ હનમેં આરોવળા પાંચ પ્રકારકી કહી ગઈહૈ-
જૈસે-પ્રસ્થાપિતા ૧ સ્થાપિતા ૨ કૃત્સ્ના ૩ અકૃત્સ્ના ૪ ઓર હાડહડા ૫

૮, દર્શનાચારના ૮, ચારિત્રાચારના ૮ અને તપાચારના ૧૨ એ રીતે કુલ
૩૬ પ્રકારના જ્ઞાનાચારાદિકોના પરિપાલનમાં જે વીર્યરૂપ શક્તિનું પ્રકાશન
થાય છે, તેનું નામ વીર્યાચાર છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર આચાર પ્રકલ્પના ભેદોનું કથન કરે છે.

સૂત્રાર્થ-“ પંચવિહે આચારપ્રકલ્પે પળ્લન્તે ” ઇત્યાદિ--

આચાર પ્રકલ્પના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યાં છે--(૧) માસિક,
ઉદ્ધાતિક, (૨) માસિક અનુદ્ધાતિક, (૩) ચાતુર્માસિક ઉદ્ધાતિક, (૪) ચાતુર્મા-
સિક અનુદ્ધાતિક અને (૫) આરોવળા. તેમાંથી આરોવળા પાંચ પ્રકારની
કહી છે જેમકે (૧) પ્રસ્થાપિતા, (૨) સ્થાપિતા, (૩) કૃત્સ્ના, (૪) અકૃત્સ્ના,
અને (૫) હાડહડા.

ટીકા—‘પંચવિદે આચારપ્રકરણે’ ઇત્યાદિ—

આચારમકલ્પ પ્રકરણ કલ્યાણપ્રાપ્તિપદ્યોપાસન વિશેષ આચારમકલ્પ, સ ચ પદ્ય વિપ્રાપ્તિપદ્યપ્રકરણપદ્યોપાસન વિશેષ । તથાદિ—માસિકમુદ્યાતિકમ્—માસેન નિર્ણય માસિકમ્, ઉદ્દેશાતઃ—માગ્યાતઃ સાન્નિધ્યેન વા, તદ્ વિધતે યત્ તત્ ઉદ્દેશાતિકમ્ । સાર્વસત્યવિધિદિનમમાર્ગ પ્રાપ્તિપદ્ય માસિકમુદ્યાતિકમ્મુચ્યતે । સપ્ત માસપ્રાપ્તિપદ્યમિત્યર્થઃ । તત્કથામ્—

“અદ્યેન ધિમસેસ, પુનઃપદ્યેન સમુચ્ચાર્થઃ ।

દેવગ્રાહ સદુપદાણ, યદુદાણ સચિયં વેચ ॥૧૧॥”

છાયા—અદ્યેન ધિમસેસ, પુનઃપદ્યેન સમુચ્ચાર્થઃ ।

વીપતે સપ્તમદાને યદુદાણે જ્ઞાનવચ ॥૧૧॥

માસિકતવોઽધિકૃત્ય મત્સ્યાગાયાયા માર્ગર્થે પર્વ વૈધ્યઃ, તથાદિ—માસે અદ્યેન ધિને સતિ પદ્યદશદિનાનિ ક્રિયન્તે । માસાપેક્ષયા પૂર્વસ્ય પૂર્વતપસઃ પદ્યવિધિદિનાત્મકસ્ય અદ્ય, સાર્વસત્યવિધિદિનમમાર્ગ પ્રાપ્તિપદ્ય માસિકમુદ્યાતિકમ્મુચ્યતે ।

પ્રાપ્તિપદ્ય સ્વપ્રકરણકલ્પ, જ્યાં હોતા હૈ, તદ્ પ્રકલ્પ હૈ, આચારાગ્રહરૂપ આચારકા જો પ્રકલ્પ હૈ, તદ્ આચાર પ્રકલ્પ હૈ, તદ્ આચારપ્રકલ્પ નિર્ણય નામક અધ્યયન વિશેષ રૂપ હૈ તદ્ પૂર્વોક્ત રૂપસે પાંચ પ્રકારકા હૈ, કયોંકિ તદ્ પ્રાપ્તિપદ્યકા પ્રકલ્પક હોતાહૈ, તદ્ માસિક વદ્યાતિક કહલાતાહૈ, તસે, સપ્તમાસ પ્રાપ્તિપદ્ય કહા ગયાહૈ, કહા મીહ—

‘અદ્યેન ધિમસેસ’ ઇત્યાદિ ।

માસિક તપની અપેક્ષાસે તસ ગાયાકા પેસા અર્થહૈ, માસકે આપે દિન પન્દર દિન હોતેહૈ, માસકી અપેક્ષાસે ૨૫ દિનાત્મક પૂર્વતપકે આપે ૧૨ ॥ દિન હોતેહૈ, ૧૫ ઓર ૧૨ ॥ સાહે ધારહકો પરસ્પરમેં જોડનેસે ૨૭ ॥ સાહે સતા ર્હસ હોતેહૈ । સપ્ત પ્રાપ્તિપદ્ય યદિ યક માસકા દેના હો તો તદ્ ૨૭ ॥ દિનકાહી

પ્રાપ્તિપદ્ય રૂપ પ્રકરણ કલ્પ ત્યાં હોય છે, તે પ્રકરણ છે આચારાગ્રહ રૂપ આચારનો જે પ્રકરણ છે, તેનું નામ આચાર પ્રકરણ છે તે આચાર પ્રકરણ નિર્ણય નામના અધ્યયન વિશેષરૂપ છે તેના પૂર્વોક્ત પાંચ પ્રકારના પ્રકારો છે તે પ્રાપ્તિપદ્યની પ્રકરણ કલ્પ છે માસિક વદ્યાતિકને સપ્તમાસ પ્રાપ્તિપદ્ય પણ કહે છે । તદ્ પણ છે કે “અદ્યેન ધિમસેસ” ઇત્યાદિ—

માસિક તપની અપેક્ષાસે આ આચારનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે—
માસની અપેક્ષાસે દિવસ જોડે ૧૫ દિવસ થાય છે માસની અપેક્ષાસે ૨૫ દિનાત્મક પૂર્વતપન — ૧૫ અને ૧૨ ॥ નો અર્થથો

દિનાનિ ભવન્તિ । એતાવદિનાત્મકં માસિકં લઘુપ્રાયશ્ચિત્તં દાતવ્યમ્ । ગુરુ પ્રાય-
શ્ચિત્તં તુ માસાવધિકમેવ દાતવ્યમિતિ ॥૧॥

તથા-માસિકમ્ અનુદ્ધાતિકમ્ ન ઉદ્ધાતિકમ્ અનુદ્ધાતિકમ્-યથાશ્રુતપ્રાય-
શ્ચિત્તં ગુરુપ્રાયશ્ચિત્તમિત્યર્થઃ । એતત્ ત્રિંશદિનપ્રમાણં ભવતીતિ ॥૨॥

તથા-ચાતુર્માસિકમ્-ચતુર્ભિર્માસૈર્નિર્ણીતમ્ ચાતુર્માસિકં તદ્વૃષ્ણમ્ ઉદ્ધાતિકમ્-
લઘુચતુર્માસપ્રાયશ્ચિત્તમિત્યર્થઃ ॥૩॥ તથા-ચાતુર્માસિકમ્ અનુદ્ધાતિકમ્-ગુરુ
ચતુર્માસપ્રાયશ્ચિત્તમિત્યર્થઃ ॥૪॥ તથા-આરોપણા-આરોપ્યતે इत्यારોપણા-પ્રાય-
શ્ચિત્તાનામુપર્યુપર્યારોપણં યાવત્ પળમાસાન્, તત્ કુર્વ્વતુ ભગવતો મહાવીરસ્વામિન-
સ્તીર્થે આરોપણા ન ભવતિ ।

અયં ભાવઃ-“ આરોવણાચઢાવળત્તિભાણિયં હોઈ ”

જ્ઞાયા-આરોપણા આરોહણેતિ ભાણિત ભવતિ=इति । યો હિ યથાપ્રતિસેવિત
માલોચયતિ તસ્ય પ્રતિસેવના-નિષ્પન્નમેવ માસલઘુમાસગુરુપ્રમૃતિકં દીયતે,

દેના ચાહિયે ઔર ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્ત દિયા જાવે તો વહ તો એક પૂરે માસ
તકકાહી દેના ચાહિયે ૧ તથા-માસિક અનુદ્ધાતિક ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્ત રૂપ
હોતા હૈ, ઔર યહ તીસ દિનકા હોતા હૈ, જો પ્રાયશ્ચિત્ત ચાતુર્માસિક
ઉદ્ધાતિક હોતા હૈ, વહ ૩ માસ ૨૭ ૧/૨ દિનકા હોતા હૈ, હસે લઘુ ચાતુ-
ર્માસિક પ્રાયશ્ચિત્ત બી કહા ગયા હૈ, જો પ્રાયશ્ચિત્ત ચાતુર્માસિક અ-
નુદ્ધાતિક હોતા હૈ, વહ ગુરુ ચાતુર્માસિક હોતા હૈ, અર્થાત્ પૂરે ચાર
માસકા હોતા હૈ, પ્રાયશ્ચિત્તોંકે ઉપર જો પ્રાયશ્ચિત્ત ૬ માસ તક લગા-
તાર દિયે જાતે હૈ, વહ આરોપણા હૈ, હસકે વાદ મહાવીર સ્વામીકે
શાસનમે આરોપણા નહીં હોતી હૈ, ભાવ યહ હૈ, “ આરોવણા ચઢાવ-
ળત્તિ ભાણિયં હોઈ ” આરોપણા આરોહણા કહી ગઈ હૈ, જો પ્રાણી જૈસે

૨૭ ૧/૨ સાડીસત્યાવીસ આવે છે જે એક માસનું લઘુપ્રાયશ્ચિત્ત દેવું હોય તો પૂરા ૩૦
દિવસનું દેવાને બદલે ૨૭ ૧/૨ સાડીસત્યાવીસ દિવસનું દેવું જોઈએ, જે ગુરુપ્રાયશ્ચિત્ત
દેવું હોય તો તે પૂરા ૩૦ દિવસનું દેવું જોઈએ. આ
પ્રકારના ૩૦ દિવસના પ્રાયશ્ચિત્તને માસિક અનુદ્ધાતિક કહે છે જે પ્રાયશ્ચિત્ત
૩ માસ ૨૭ ૧/૨ દિવસનું દેવામાં આવે છે તેને લઘુચાતુર્માસિક અથવા ચાતુ-
ર્માસિક ઉદ્ધાતિક કહે છે. પૂરા ચાર માસના પ્રાયશ્ચિત્તને ચાતુર્માસિક અનુ-
દ્ધાતિક અથવા ગુરુચાતુર્માસિક કહે છે. સતત છ માસ પર્વન્તનું જે પ્રાય-
શ્ચિત્ત દેવામાં આવે છે તેનું નામ આરોપણા છે. મહાવીર પ્રભુના શાસનમાં
તેટલા સમય કરતાં વધારે સમયની આરોપણા દેવામાં આવતી નથી.
“ આરોવણા ચઢાવળત્તિભાણિયં હોઈ ” આરોપણાને આરોહણ પ્રદેવામાં આવે

યસ્ય ન તયા તસ્ય સત્તાવદ્ ધીયત એવ માયા નિષ્પન્નં ચાન્યદારોપ્યતે इत्यारोपणेति । आचारप्रकल्पस्य केषुचिदुद्देशकेषु लघुमासप्रायश्चित्तं प्ररूप्यते, केषु चित् गुरुमासप्रायश्चित्तम्, केषुचिद् लघुचतुर्मासप्रायश्चित्तं, केषुचित् गुरुचतुर्मासप्रायश्चित्तम्, केषुचित् आरोपणा । इति पञ्चविधप्रायश्चित्तप्ररूपकत्वा द्यमाचारप्रकल्पः पञ्चविधो बोध्य इति । अत्र आरोपणा आचारप्रकल्पस्य पञ्चम भेदत्वेनोक्ताः । सस्या एव सम्प्रति पञ्चविधत्वंमाह—' आरोपणा पञ्चविधा ' इत्या

દોષકા સેવન કરતા હૈ, યહ ઇસકી આલોચના ઇસીકે અનુસાર કરતા હૈ, તો ઇસે ઇસ પ્રતિસેવનાકે અનુસારહી માસ લઘુ માસગુરુ આદિ પ્રાયશ્ચિત્ત દિયે જાતે હૈ, ઓર જો પ્રતિસેવિત દોષકે અનુસાર આલોચના નહીં કરતા હૈ, ઇસે પ્રાયશ્ચિત્ત તો દિયાહી જાતા હૈ, પરન્તુ ઇસ પ્રાયશ્ચિત્તમેં માયાસે નિષ્પન્ન હુઅ અથ પ્રાયશ્ચિત્તકી આરોપણા કી જાતો હૈ, ઇસ પ્રકારસે યહ આરોપણા હોતી હૈ, આચાર પ્રકલ્પકે કિન્હીં ૨ ઉદ્દેશકોમેં લઘુમાસ પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રરૂપિત હુઆ હૈ, કિન્હીં ૨ ઉદ્દેશકોમેં ગુરુમાસ પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રરૂપિત હુઆ હૈ, ઓર કિન્હીં ૨ ઉદ્દેશકોમેં આરોપણા પ્રરૂપિત હુઈ હૈ, ઇસ તરહસે પાંચ પ્રકારકે પ્રાયશ્ચિત્તોકા પ્રરૂપક હોનેસે યહ આચારપ્રકલ્પ પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, એસા જાનના ચાહિયે યહાં આરોપણા આચાર પ્રકલ્પકે પંચમ ભેદ રૂપસે કહી હૈ, સો અવ ઇસકેહી સૂત્રકાર પાંચ ભેદ પ્રકટ કરનેકે લિયે કહતે હૈ—

ઉ જે છવ જેવા દોષનુ સેવન કરે છે, તે દોષની તેના દાસ તેને અનુરૂપ આલોચના કરાય છે—તેને પ્રતિસેવનાને અનુરૂપ જ માસલગુ માસગુરુ આદિ પ્રાયશ્ચિત્ત દેવામાં આવે છે જે માલગુ પ્રતિસેવિત દોષને અનુરૂપ આલોચના કરતો નથી, તેને પ્રાયશ્ચિત્ત તો દેવામાં આવે જ છે, પરન્તુ તે પ્રાયશ્ચિત્તમાં માયાથી નિષ્પન્ન થયેલા અન્ય પ્રાયશ્ચિત્તની આરોપણા કરાય છે આ પ્રકારનુ તે આરોપણાનુ સ્વરૂપ હોય છે આચાર પ્રકલ્પના કોઈ કોઈ ઉદ્દેશકોમાં લઘુમાસ પ્રાયશ્ચિત્તની પ્રકલ્પા કરવામાં આવી છે, કોઈ કોઈ ઉદ્દેશકોમાં ગુરુમાસ પ્રાયશ્ચિત્તની, કોઈ કોઈ ઉદ્દેશકોમાં લઘુ ચાતુર્માસ પ્રાયશ્ચિત્તની, કોઈ કોઈ ઉદ્દેશકોમાં ગુરુ ચાતુર્માસ પ્રાયશ્ચિત્તની અને કોઈ કોઈ ઉદ્દેશકોમાં આરોપણાની પ્રકલ્પા કરવામાં આવી છે આ રીતે પાંચ પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્તોનુ પ્રકલ્પક હોવાને કારણે આ આચાર પ્રકલ્પને પાંચ પ્રકારનો કહેવામાં આવેલ છે જેમ સમજનુ અહીં આરોપણુ ને આચાર પ્રકલ્પના પાંચમાં ભેદ રૂપ પ્રકટ કરવામાં આવી છે

હવે સૂત્રકાર તે આરોપણાના પાંચ ભેદો પ્રકટ કરે છે

દિના । આરોપણા હિ પ્રસ્થાપિતાદિભેદૈઃ પશ્ચવિધા ભવતિ । તત્ર—પ્રસ્થાપિતા—
આરોપણીયેષુ વહુપુ પ્રાયશ્ચિત્તેષુ સત્સુ યદ્ લઘુમાસગુરુમાસાદિપ્રાયશ્ચિત્તેષુ કસ્ય
ચિદેકસ્ય પ્રસ્થાપના સા પ્રસ્થાપિતેત્યુચ્યતે ॥૧॥ તથા—સ્થાપિતા—યઃ કશ્ચિત્
માસગુર્વાદિપ્રાયશ્ચિત્તાર્હી ભવતિ, સ ગુરોર્વૈયાવૃત્ત્યં કરોતિ, અતસ્તસ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત
વૈયાવૃત્ત્યસમાપ્તિં યાવત્ સ્થાપિતમ્, તતઃ પશ્ચાત્ સ પ્રાયશ્ચિત્તં કરિષ્યતીત્યેવા
સ્થાપિતેત્યુચ્યતે ॥૨॥ તથા—કૃત્સ્ના—યત્ર જ્ઞોષો ન ક્રિયતે સા । જ્ઞોપસ્ત્વયમ્—
ભગવતો મહાવીરસ્વામિનસ્તીર્થે પળ્માસાન્તમેવ તપો ભવતિ પળ્ળાં માસાનામુપરિ યે
“ આરોવળા પંચવિહા ” ઇત્યાદિ ।

યહ આરોપણા પ્રસ્થાપિત આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકી હાંતી હૈ,
इनमें जो आरोगणा आरोपणीय अनेक प्रायश्चित्तोंके होने पर लघुमास
गुरुमास आदि प्रायश्चित्तोंमेंसे किसी एक प्रायश्चित्तके प्रस्थापनारूप होती
है, वह आरोगणा “ प्रस्थापिता ” इस रूपसे कही गई है, तथा जो
कोई मासगुरु आदि प्रायश्चित्तके योग्य होता है, वह पहिले गुरुकी
वैयावृत्ति करता है, अतः जबतक वैयावृत्तिकी समाप्ति नहीं हो जाती
है, तब तक उसका प्रायश्चित्त स्थापित रहता है, इसके बाद वह प्राय
श्चित्त करता है, इस तरहसे यह आरोगणा स्थापितारूप कही गई है,
तथा जिस आरोगणामें ज्ञोष नहीं किया जाता है, वह आरोगणा कृत्स्ना
आरोगणा है, ज्ञोषका अभिप्राय ऐसा है, कि भगवान् महावीर स्वामीके
तीर्थमें छह मास तकही तप होता है, छह मासके बाद जो मास अप-

“ આરોવળા પંચવિહા ” ઇત્યાદિ—

તે આરોપણાના પ્રથ પિત આદિ પાચ ભેદ કહ્યાં છે જે આરોપણા, આરોપ
ણીય અનેક પ્રાયશ્ચિત્તોનો સફલાવ હોય ત્યારે લઘુમાસ, ગુરુમાસ આદિ પ્રાયશ્ચિ
ત્તોમાંથી એક પ્રાયશ્ચિત્તની પ્રસ્થાપના રૂપ હોય છે, તે આરોપણને ‘ પ્રસ્થા
પિતા ’ કહે છે. તથા જે કોઈ સાધુ માસગુરુ આદિ પ્રાયશ્ચિત્તને યોગ્ય હોય
છે, તે પહેલાં ગુરુનું વૈયાવૃત્ત્ય કરે છે, તેથી બ્યા સુધી વૈયાવૃત્તિની સમાપ્તિ
થઈ જતી નથી, ત્યાં સુધી તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત સ્થાપિત રહે છે, ત્યારબાદ તે
પ્રાયશ્ચિત્ત કરે છે આ રીતે આ આરોપણને ‘ સ્થાપિતા ’ રૂપ કહેવામાં
આવી છે તથા જે આરોપણામાં ‘ જ્ઞોષ ’ કરાતો નથી તે આરોપણને
“ કૃત્સ્ના આરોપણા ” કહે છે જ્ઞોષનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

મહાવીર પ્રભુના તીર્થમાં છ માસ સુધીનું જ પ્રાયશ્ચિત્ત આપી શકાર

માસા અપરાધિનો મરવન્તિ, તેણે સપ્ત મરવતિ, અર્થાત્ પન્માસાધિકમાસાનાં પ્રા
યશ્ચિત્તમપરાધિયુ નારોપ્યતે । ક્ષિમિવ ! યથા પ્રસ્યે ધાન્યે માતૃગ્ય તદધિકધાન્ય
સ્થાપન મરવતિ તદિદેતિ । પન્માસાધિકમાસાનાં યત્પ્રાયશ્ચિત્તાનારોપણ સ । એ
શ્લોપો ઘોષ્યઃ । તસ્માદાધેન પરિપૂર્ણત્વાદિય કૃત્સ્નેત્યુચ્યતે इति ॥૩॥

તથા-મઠ્ઠસ્ના-યત્ર પન્માસાધિકમામાનાં પ્રાયશ્ચિત્ત નારોપ્યતે इति સા
અપરિપૂર્ણત્વાત્ મઠ્ઠસ્નેત્યુચ્યતે, इति ॥૪॥ તથા-હાઢહઢા-યસ્થાપરાધિનો
હ્યુગુરુમાસાદિપ્રાયશ્ચિત્તેષુ યત્ પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રાપ્ત, તત્ ઠસ્મિન્નેવ કાલે ઠસ્મિ
રાધીકે દ્યોતેહું, ડસકી ક્ષવળા દ્યો જાતીહી, અર્થાત્ અપરાધિયોમેં છહ માસસે
અધિક માસોંકા પ્રાયશ્ચિત્ત આરોપિત નહીં હોતા હૈ, જૈસે-જિસ પ્રસ્યમેં
(નાપવિશેષ) જિતના ધાન્ય સમાનેકે યોગ્ય હોતાહૈ, ડસ પ્રસ્યમેં ડતનાહી
ધાન્ય સમાતા હૈ, અધિક ધાગ્ય વહાંસે ગિર જાતા હૈ, હસ તરહ છહ
માસસે અધિક માસોંકે પ્રાયશ્ચિત્તકી જો અનારોપળા હૈ, વહી શ્લોપ હૈ,
હસકે અભાવસે છહ માસસે અધિક પ્રાયશ્ચિત્ત દેનેકે અભાવસે વહ
આરોપળા પૂર્ણ હોનેકે કારણ કૃત્સ્ના આરોપળા કહી જાતી, હૈ ।
જિસમેં છ માસસે અધિક માસ કા પ્રાયશ્ચિત્ત કી આરોપળા નહીં કી
જાતીહૈ વહ અપરિપૂર્ણ હોમેસે “અઠ્ઠસ્ના” આરોપળા કહી, જાતોહૈ તથા
હાઢહઢા જો આરોપળા હૈ, વહ યેમી હૈ કિ જિસ અપરાધીકે હ્યુમાસ
ગુરુમાસ આદિ પ્રાયશ્ચિત્તોમેંસે જો પ્રાયશ્ચિત્ત હો વહ ડમી કાલમેં ડસમેં

ઉ. અપરાધીને છ માસથી વધારે માસનુ પ્રાયશ્ચિત્ત આપી શકાતું નથી. ૧
માસ કરતા વધારે સમયનુ પ્રાયશ્ચિત્ત આરોપિત કરી શકાતું નથી. જેમ ઠાઈ
પાત્રમાં જેટલું ધાન્ય સમાઈ શકે તેમ ઢોય એટલું જ ધાન્ય તેમાં ભરી
શકાય છે, પરંતુ જો તેથી વધારે ધાન્ય તેમાં નાખવામાં આવે તો તે પાત્ર
માંથી બહાર નીકળી આવે છે, એજ પ્રમાણે છ માસથી વધારે માસના
પ્રાયશ્ચિત્તની જે અનારોપણા છે તેનું નામ જ “ઢેવ” છે છ માસથી અધિક
સમયના પ્રાયશ્ચિત્તને અમાય ઢોવાને કારણે, તે આરોપણા (છ માસના
પ્રાયશ્ચિત્ત રૂપ અરોપણા) પૂર્ણ ઢોવાને કારણે તેને ‘કૃત્સ્ના આરોપણા’
કહે છે ‘જેમાં છ મહીનાથી વધારે મહિનાનુ પ્રાયશ્ચિત્તની આરોપણા
કરવામાં આવતી નથી તે અપરિપૂર્ણ ઢોવાથી ‘અઠ્ઠસ્ના આરોપણા’ કહેવાય
છે હાઢહઢા આરોપણા’ આ પ્રકારની છે—જે અપરાધીને તપુમાસ,
ગુરુમાસ આદિ પ્રાયશ્ચિત્તોમાંથી જે પ્રાયશ્ચિત્ત રવાનું ઢોય તે પ્રાયશ્ચિત્ત
એ જ કારણે તે અપરાધીમાં આરોપિત કરવામાં આવે છે, તેથી તે આરોપણાને

नारोप्यते इति सा ' हाडहडा ' इत्युच्यते । कृतापराधस्य सद्य एव यन्प्रायश्चित्त-
त्तारोपणा सा ' हाडहडे 'ति भावः ॥सू० २३॥

संयतासंयतसम्बन्धितया सूत्राणि प्रागभिहितानि, तत्र संयतासंयतगत-
वस्तुविशेषाः प्रोक्ताः, तेषां व्यतिकरस्तु मनुष्यक्षेत्र एव भवतीति मनुष्यक्षेत्रस्थान्
पदार्थविशेषानाह—

मूलम्—जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पवयस्स पुरत्थिमेणं सीयाए
महानईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पणत्ता, तं जहा-
मालवंते, १ चित्तकूडे २ पम्हकूडे ३ णलिणकूडे ४ एगसेले
५ ॥ १ ॥ जंबू मंदरस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महानईए दाहि-
णैणं पंच वक्खारपव्वया पणत्ता, तं जहा-तिकूडे १ वेसमण-
कूडे २ अंजणै ३ मायंजणै ४ सोमणसे ५ ॥ २ ॥ जंबू मंदरस्स
पच्चत्थिमेणं सीओदाए महाणईए दाहिणैणं पंच वक्खारपव्वया
पणत्ता, तं जहा-विज्जुप्पमे १ अंकावई २ पम्हावई ३ आसी-
विसे ४ सुहावहे ५ ॥ ३ ॥ जंबू मंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओदाए
महाणईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पणत्ता, तं जहा-चंद-
पव्वए १ सूरपव्वए २ णागपव्वए ३ देवपव्वए ४ गंधमायणे
५ ॥ ४ ॥ जंबूमंदरदाहिणैणं देवकुराए कुराए पंच महदहा
पणत्ता, तं जहा-निसहदहे १ देवकुरुदहे २ सूरदहे ३ सुल-

आरोपित किया जाता है, इसलिये यह “ हाडहडा ” कही-गई-है,
तात्पर्य यह है, कि जिसने जो अपराध किया है, उस अपराधकी उसी
समय जो प्रायश्चित्तकी आरोपणा है, वह हाडहडाआरोपणा है सू. २३॥

“ हाडहडा ” कही छे ओटवे डे जेजे जे अपराध कर्यो होय ते अपराधना
प्रायश्चित्तनी ओ न समये जे आरोपणा करवाभां आवे छे तेने
“ हाडहडा आरोपणा ” कही छे ॥ २३ ॥

सदहे ४ विष्णुपददहे ५ ॥ ५ ॥ जवू मंदरस्त उत्तरकुराप
 कुराप पच महद्दहा पणत्ता, त जहा-नीलवतदहे १ उत्तरकु
 रुदहे २ चददहे ३ एरावणदहे ४ मालवतदहे ५ ॥ ६ ॥ सब्बे
 वि णं वक्खारपव्वया सीया सीओयाओ महाणईओ मंदर वा
 पव्वयतेणं पच जोयणत्तयाइ उइ उच्चतेणं पच गाउयत्तयाइ
 उव्वेहेणं ॥ ७ ॥ धापइसडे दीवे पुरत्थिमंक्षेणं मंदरस्त पव्व
 यस्त पुरत्थिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं पच वक्खारप
 व्वया पणत्ता, त जहा-मालवते, एव जहा-जवूदीवे तहा
 जाव पुक्खारवरदीवइपच्चत्थिमंक्षे वक्खारा दहा य उच्चत्ते
 भाणियव्व । समयस्सेत्ते णं पच भरहाइ पच एरवयाइ एव
 जहा चउठाणे विइयउव्वेसे तहा एरथ वि भाणियव्व जाव पच
 मदरा पच मदरचूलियाओ, णवर उसुयारा णत्थि ॥ सू० २४ ॥

छाया—जम्बूद्वीपे द्वीपं मन्दरस्त्य पर्वतस्य पौरस्त्ये सीताया महानद्या उत्तरे
 पञ्च वक्त्रकारपर्वताः प्रज्ञातः, तेषां—माल्यवान्, १ चित्रकूटा, २ पञ्चकूटा, ३
 नखिनकूटा, ४ एकद्वीवा ७ ॥ १ ॥

सयत असयतके सम्पन्नके सुप्र सुप्रकारने पहिछे कह दिये हैं,
 इनमें सयत असयत मत ओ वस्तुविशेष कहे गये हैं, इनका व्यतिकर
 सम्पन्न या सद्भायतो मनुष्यक्षेत्रमें ही होता है, इस कारण अब सुप्र
 कार मनुष्यक्षेत्रस्थ पदार्थ विशेषोंका कथन करते हैं—

सयत अने असयत विषयक सूत्रणी प्रश्नाना सूत्रकार पढेता है की
 छे ते सूत्रिभा सयत असयत ने वस्तुविशेष कहेव भा आवेव छे तेमने।
 व्यतिहर सयत असयत सहसाव तो मनुष्यक्षेत्रभा न सयती शके छे तेभी
 अवे सूत्रकार मनुष्यक्षेत्रभा पढेता है तहा पदार्थविशेषाना कथन करे छे—

जम्बू मन्दरस्य पौरस्त्ये सीताया महानद्या दक्षिणे पञ्च वक्षस्कारपर्वताः, प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—त्रिकूटः १, वैश्रमणकूटः, २ अञ्जनः, ३ मायाञ्जनः, ४ सौमनसः ५ ॥२॥ जम्बूमन्दरस्य पाश्चात्ये सीतोदाया महानद्या दक्षिणे पञ्च वक्षस्कार पर्वताः प्रज्ञप्ताः तद्यथा विद्युत्प्रभः १, अङ्गावती, २ पद्मावती ३, आशीविपः ४, सुखावहः ५ ॥३॥ जम्बू मन्दरस्य पाश्चात्ये सीतोदाया महानद्या उत्तरे पञ्च वक्षस्कारपर्वताः, प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—चन्द्रपर्वतः, १ सुरपर्वतः, २ नागपर्वतः, ३ देवपर्वतः, ४ गन्धमादनः ५ ॥४॥

जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्त इत्यादि सू० २४ ॥

सूत्रार्थ—जंबूद्वीप नामके इस द्वीपमें मन्दर(मेरु) पर्वतकी पूर्वदिशामें सीता महानदीकी उत्तर दिशामें पांच वक्षस्कार पर्वत कहे गये हैं उनके नाम इस प्रकारसे हैं—माल्यवान् १ चित्रकूट २ पद्मकूट ३ नलिनकूट ४ और एकशैल ५ । जम्बूद्वीपस्थ मन्दर (मेरु) पर्वतकी पूर्व दिशामें सीता महानदीकी दक्षिण दिशामें पांच वक्षस्कार पर्वत कहे गये हैं—उनके नाम इस प्रकारसे हैं—त्रिकूट १ वैश्रमण कूट २ अञ्जन ३ मायाञ्जन ४ और सौमनस ५

जम्बूद्वीपस्थ महामन्दर पर्वतकी पश्चिम दिशामें सीतोदा महानदीकी दक्षिण दिशामें पांच वक्षस्कार पर्वत कहे गये हैं—उनके नाम इस प्रकारसे हैं—विद्युत्प्रभ १ अङ्गावती २ पद्मावती ३ आशीविप ४ और सुखावह ५ जम्बूद्वीपस्थ मन्दर पर्वतकी पश्चिम दिशामें सीतोदा महानदीकी उत्तर दिशामें पांच वक्षस्कार पर्वत कहे गये हैं । जैसे—चन्द्रपर्वत १ सुर पर्वत २ नाग पर्वत ३ देवपर्वत ४ और गन्धमादन पर्वत ५

“जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्त पञ्चवत्स” इत्यादि—

सूत्रार्थ—जंबूद्वीप नामका या द्वीपका मन्दर पर्वतकी पूर्व दिशामें वહેती सीता महानदीकी उत्तर दिशामें पांच वक्षस्कार पर्वत आवेला छे. तेमना नाम या प्रमाण छे—(१) माल्यवान्, (२) चित्रकूट, (३) पद्मकूट, (४) नलिनकूट अने (५) एकशैल

जंबूद्वीपका आवेला मन्दर पर्वतकी पूर्व दिशामें वહેती सीता महानदीकी दक्षिण दिशामें पांच वक्षस्कार पर्वत आवेला छे तेमना नाम या प्रमाण छे—(१) त्रिकूट, (२) वैश्रमणकूट, (३) अञ्जन, (४) मायाञ्जन अने (५) सौमनस.

जंबूद्वीपका मन्दर पर्वतकी पश्चिम दिशामें आवेला सीतोदा महानदीकी दक्षिण दिशामें पांच वक्षस्कार पर्वत आवेला छे तेमना नाम या प्रमाण छे—(१) विद्युत्प्रभ, (२) अङ्गावती, (३) पद्मावती, (४) आशीविप अने (५) सुखावह

सदहे ४ विज्जुप्पभदहे ५ ॥ ५ ॥ जवू मंदरस्त उत्तरकुराप
 कुराप पच महद्दहा पणत्ता, त जहा-नीलवतदहे १ उत्तरकु-
 रुदहे २ चददहे ३ एरावणदहे ४ मालवतदहे ५ ॥ ६ ॥ सव्वे
 वि णं वक्खारपव्वया सीया सीओयाओ महाणईओ मंदर वा
 पव्वयत्तेणं पच जोयणसयाइ उड्ड उच्चत्तेणं पच गाडयसयाइ
 उव्वेहेणं ॥ ७ ॥ धापइसहे दीवे पुरत्थिमंछेणं मंदरस्त पव्व
 यस्त पुरत्थिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं पच वक्खारप
 व्वया पणत्ता, त जहा-मालवत्ते, एव जहा-जवूदीवे तहा
 जाव पुक्खरवरदीवहुपच्चत्थिमंछे वक्खारा दहा य उच्चत्त
 भाणियव्व । समयखेत्ते णं पच भरहाइ पच एरवयाइ एव
 जहा चउट्ठाणे विइयउव्वेत्ते तहा एरय वि भाणियव्व जाव पच
 मदरा पच मदरचूलियाओ, णवर उसुयारा णरिथ ॥ सू० २४ ॥

छाया—जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्त पर्वतस्य पौरस्त्ये सीताया महानद्या उत्तरे
 पञ्च वक्खारपर्वताः मङ्गलाः, तद्यथा—माल्यवान्, १ विप्रकृता, २ पचकृता, ३
 नन्दिनकृता, ४ एकलैवः ५ ॥ १ ॥

सयत असयतके सम्पत्तके सुय सुयकारने पहिछे कद दिये हैं,
 वनमें सयत असयत गम जो वस्तुविशेष कहे गये हैं, उनका व्यनिकर
 सम्पत्त या सद्भावमो मनुष्यक्षेत्रमेंही होगा है, इस कारण अब सुय
 कार मनुष्यक्षेत्रस्थ पदार्थ विशेषोंका कथन करते हैं—

सयत अने असयत विषयक सूत्रणी ग्रहणजा सूत्रकार पदेका इरेही
 छे ते सूत्रेमां सयत असयत के वस्तुविशेष इरेव मां आवेल ॥ तेमने
 अतिशय समर्थ अथवा सहभाष तो मनुष्यक्षेत्रमां छे सयती शके छे तेथी
 दुवे सूत्रकार मनुष्यक्षेत्रमां पदेका इरेका पदार्थविशेषोनु कथन करे छे—

પર્વતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—માલ્યવાન્ એવં યથા જમ્બૂદ્વીપે તથા યાવત્ પુષ્કરવર દ્વીપાર્દ્ધપાશ્ચાત્યાર્દ્ધે વક્ષસ્કારા હ્રદાશ્ચ ઉચ્ચત્વં મણિતવ્યમ્ ॥૮॥ સમયક્ષેત્રે સ્વલુ પશ્ચભરતાનિ પશ્ચ ઐરાવતાનિ । એવં યથા ચતુઃસ્થાને દ્વિતીયોદ્દેશે તથા અત્રાઽપિ મણિતવ્યં યાવત્ પશ્ચ મન્દરાઃ પશ્ચ મન્દરચૂલિકાઃ । નવરમ્ ઇષુકારા ન સન્તિ ॥સૂ ૦૨૪॥

ટીકા—‘ જંબુદ્વીપે ’ ઇત્યાદિ—

વ્યાખ્યા સુગમ, તથાપિ કિંચિદત્ર લિખ્યતે—વક્ષસિ=મધ્યે ગોપ્યં ક્ષેત્રં દ્વા સંભૂય કુર્વન્તિ યે તે વક્ષસ્કારા ગજદન્તાપરપર્યાયાઃ પર્વતવિશેષાઃ । તે ચ માલ્ય-વતો ગજદન્તકાદ પ્રદક્ષિણયા ચતુર્દિશુ વર્તમાનાઃ ચતુઃસૂત્રોક્તા વિંશતિસંખ્યકાઃ

પ્રકારસે હૈં—માલ્યવાન્ ઇત્યાદિ इनका नाम जैसा जम्बूद्वीपके प्रकरणमें कहा गया है, वैसाही है, पुष्करवरद्वीपार्द्धमें और पाश्चात्यार्द्धमें वक्षस्कारों का ह्रदों का और इन की - वक्षस्कार पर्वतों की ऊंचाई का कथन पहिले की तरहसेही कहना चाहिये । समय-क्षेत्रमें पांच भरत और पांच ऐरवत क्षेत्रहैं । चतुःस्थानमें द्वितीय उद्देशे में जैसा कहा गया है, वैसा यहाँ पर भी कह लेना चाहिये यावत् पांच मन्दर और पांच मन्दर चूलिकाएँ हैं, विशेषता केवल इतनीसीही है, कि इषुकार नहीं हैं ।

ટીકાર્થ—इसकी व्याख्या सुगम है, तब भी कुछ इस विषयमें लिखा जाता है, वक्षस्कार पर्वतोंका दूसरा नाम गजदन्त भी है, यह विशेष पर्वत है । इनका वक्षस्कार ऐसा नाम इसलिये हुआ है कि ये दो एकत्रित होकर अपने मध्यमें क्षेत्रको गोप्य करते हैं । ये माल्यवान्

માલ્યવાન્ ઇત્યાદિ નામ જ ખૂદ્વીપના પ્રકરણમાં ઉપર કહ્યા અનુસાર સમજવા. પુષ્કરવરદ્વીપાર્ધમાં અને પશ્ચિમાર્ધમાં વક્ષસ્કારોનું, હ્રદોનું અને વક્ષસ્કાર પર્વતની ઊંચાઈનું કથન આગળના કથન પ્રમાણે જ સમજવું સમયક્ષેત્રમાં પાંચ ભરત અને પાંચ ઐરવતક્ષેત્ર છે ચતુઃસ્થાનકના બીજા ઉદ્દેશમાં તેમને વિષે જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે એવું જ કથન અહીં પણ કરવું જોઈએ.

આ રીતે “ પાંચ મન્દર અને પાંચ મન્દર ચૂલિકાઓ છે, ” ત્યાં સુધીનું કથન થઈ જાય કરવું જોઈએ. અહીં કેવળ એટલી જ વિશેષતા છે કે અહીં ઇષુકારનો સદ્ભાવ નથી

ટીકાર્થ—આ સૂત્રની વ્યાખ્યા સુગમ હોવા છતાં પણ અહીં તેમનું થોડું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે વક્ષસ્કાર પર્વતોનું બીજું નામ ગજદન્ત પણ છે. તે પર્વતોને વક્ષસ્કાર કહેવાનું કારણ એ છે કે તે બે પહાડો એકત્ર થઈને તેમની વચ્ચેના ક્ષેત્રને ગોપ્ય (અદૃશ્ય) કરે છે. તેઓ માલ્યવાન્

જમ્બૂ મન્દરદક્ષિણે દેવકુરો કુરો પચ્ચ મહાહદા પ્રજ્ઞતાઃ તથા-નિપથ
 રૂદઃ ૧, વૈવકુરુરૂદ, ૨ સુરરૂદ, ૩ સુલસ રૂદઃ ૪ વિદ્યુત્પ્રમ રૂદ ૫ ॥૫॥
 જમ્બૂ મન્દરસ્પોષકકુરુપુ કુરુપુ પચ્ચ મહાહદાઃ પ્રજ્ઞતા, તથા-નીલવત્ રૂદ, ૧
 ઉત્તર-કુરુરૂદ, ૨ ચમ્પ્રરૂદ, ૩ પેરાવણરૂદ, ૪ માલ્યવ રૂદઃ ૫ ॥૬॥ સર્વેઽપિ
 સ્વલ્લ વક્ષસ્કારપર્વતાઃ સીતા સીતાદે મહાનથી મન્દર વા પર્વત પ્રતિ પચ્ચ યો-
 જનશતાનિ કર્ષ્યમ્બુચત્વેન પચ્ચ ગમ્બૂતિશતાનિ ઉદ્ગ્રેષ્ઠેન ॥૭॥ ઘાતકીલ્પે દ્વીપે
 પૌરસ્ત્યાર્ધે સ્વલ્લ મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય પૌરસ્ત્યે સીતાયા મહાનથા ઉત્તરે પચ્ચ વક્ષસ્કાર

જમ્બૂરીપસ્ય મન્દર પર્વતકી દક્ષિણ દિશામાં દેવકુરુમાં પાંચ મહાહદ
 કહે ગયેહૈં-उनके नाम इस प्रकारसेहैं-निपथ रूद (रूद) १ देवकुरु रूद २
 सुर रूद ३ सुलस रूद ४ और विद्युत्प्रम रूद ५। जम्बूद्वीपस्य मन्दर पर्व
 तके उत्तर कुर्वमें पांच महाहद कहे गये हैं उनके नाम इस प्रकारसे हैं
 नीलवत् रूद १ उत्तरकुरु रूद २ चम्प्र रूद ३ ऐरावण रूद ४ और माल्य
 वद् रूद ५ समस्त वक्षस्कार पर्वत सीता सीतादा महानदीयोकी तरफ
 और मन्दर पर्वतकी तरफ पाचसौ योजन ऊंचे हैं और उद्वेगसे (मू-
 मिके अन्दर गहराइमें) पांचसौ गम्बूति (दो कोस) प्रमाण हैं ।

ઘાતકી લ્પ દ્વીપમે પૌરસ્ત્યાર્ધમે મન્દર(મેરુ)પર્વતકે પૂર્વદિશામે સીતા
 મહાનદીકે ઉત્તરમે પાંચ વક્ષસ્કાર પર્વત કહે ગયે હૈં उनके नाम इस

જ જમ્બૂદીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં આવેલી સીતાદા મહા
 નદીની ઉત્તર દિશામાં પાંચ વક્ષસ્કાર પર્વતો છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે
 છે—(૧) નિપથ પર્વત (૨) સુર પર્વત, (૩) નાગ પર્વત (૪) દેવ પર્વત
 અને (૫) મ મમ્બુદ્વિપ પર્વત.

જ જમ્બૂદીપમાં આવેલા મન્દર પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં આવેલા દેવકુરુમાં
 પાંચ મહાહદ છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) નિપથ રૂદ (૨) દેવકુરુ
 રૂદ, (૩) સુર રૂદ, (૪) સુલસ રૂદ અને (૫) વિદ્યુત્પ્રમ રૂદ

જ જમ્બૂદીપના મન્દર પર્વતની ઉત્તર દિશામાં આવેલા ઉત્તરકુરુમાં પચ્ચ
 નીચે પ્રમાણે પાંચ મહાહદ છે—(૧) નીલવત્ રૂદ (૨) ઉત્તરકુરુ રૂદ (૩)
 ચમ્પ્ર રૂદ, (૪) ઐરાવણ રૂદ અને (૫) માલ્યવત્ રૂદ

સમસ્ત વક્ષસ્કાર પર્વતો સીતા અને સીતાદા મહાનદીઓની તરફ અને
 મન્દર પર્વતની તરફ ૫૦૦ યોજન ઊંચા છે, અને તેમનો ઉદ્ગ્રેષ્ઠ (જમ્બીનની
 અદરની ઊંડાઈ) ૫૦૦ ગમ્બૂતિપ્રમાણ છે

ઘાતકીલ્પ ડ્વીપના પૂર્વાર્ધમાં મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં સીતા મહા
 નદીની ઉત્તરે પાંચ વક્ષસ્કાર પર્વતો આવેલા છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે

વિસ્તીર્ણો વેદિકાવનપણ્ડદ્વયવેદિતો દશ યોજનાનિ ભૂમિસવગાઠોર્દ્ધયોજન
વાહલ્યૈકયોજનવિષ્કમ્ભાત્મકેન નાનામણિમયેન દશયોજનનાલેન અર્દ્ધયોજન-
વિસ્તીર્ણકોશોચ્છિન્નકર્ણિકાયુક્તેન નિષધનામકદેવનિવાસભૂતભવનવિભૂષિત
મધ્યેન તદર્દ્ધપ્રમાણયુક્તૈરષ્ટોત્તરશતસંખ્યકૈ પદ્મૈઃ તદિતરૈશ્ચ સામાનિકાદિ
દેવનિવાસભૂતૈરનેકલક્ષૈઃ પદ્મૈઃ સમન્તાદ્ સપરિક્ષિપ્તેન મહાપદ્મેન વિરાજન્મધ્ય-
ભાગો નિષધો નામ મહાહદઃ। एवं देवकुरु हृदादयोऽपि तत्तद्भद्रदसमानदेव
નિવાસભૂતા ઉક્તાન્તર્યયુક્તા વિજ્ઞેયાઃ। अत्रेदं बोध्यम्-नीलवन्महाहदः स्वस्वसमान
નામકદેવનિવાસભૂતાભ્યાં વિચિત્રકૂટચિત્રકૂટપર્વતવ્યક્તવ્યતાસદશવક્ત-

વિસ્તારવાલા વેદિકા વનપણ્ડદ્વયસે વેદિત હુઆ એવં ૧૦ યોજન તક
ભૂમિમેં વિસ્તૃત એસા નિષધ નામકા મહાહદ હૈ, યહ મહાહદ આઠ
યોજનકે વાહલ્યવાલે એક યોજનકે વિષ્કમ્ભવાલે નાના મણિયોંસે યુક્ત
દશ યોજનકે નાલવાલે આથે યોજનકી વિસ્તારવાલી એવ એક કોશકી
ઝંચી એસી કર્ણિકાસે યુક્ત એવં જિસકા મધ્ય ભાગ નિષધ નામ કે
દેવકે નિવાસભૂત ભવનસે વિભૂષિત હૈં, એસે એક મહાપદ્મસે જિસકા
મધ્યભાગ વિરાજિત હૈં, એસા હૈ। યહ મહાપદ્મ અપને પ્રમાણસે આથે
પ્રમાણવાલે એસે ૧૦૮ પદ્મોંસે (કમલોં) એવં હનસે અતિરિક્ત ઓર મી અનેક
લક્ષ પદ્મોંસે જો કિ સામાનિક આદિ દેવોંકે નિવાસભૂત હૈં, ચારોં ઓરસે
ઘિરા હુઆ હૈ, હસી તરહસે દેવકુરુહદ આદિ મી અપને ૨ સમાનનામ-
વાલે દેવોંકે નિવાસભૂત હૈં, ઓર યુક્ત આન્તર્યવાલે હૈં, એસા જાનના
ચાહિયે। यहां ऐसा समझना-कि नीलवत् जो महाहद है, वह अपने समान

પહોળાઈવાળુ વેદિકા અને વનપણ્ડદ્વયથી વેદિત એવુ, અને ૧૦ યોજન સુધી
ભૂમિમા વિસ્તૃત એવુ નિષધ નામનુ મહાહદ છે તે મહાહદ આઠ યોજન
લાંબા, એક યોજન પહોળા, વિવિધ મણિઓથી યુક્ત, ૧૦ યોજનની નાલ
વાળા, અર્ધા યોજનની વિસ્તારવાળી અને એક કોશ ઊંચી એવી કર્ણિકાથી
યુક્ત અને જેનો મધ્યભાગ નિષધ નામના દેવના નિવાસસ્થાન રૂપ ભવનથી
વિભૂષિત છે એવા એક મહાપદ્મથી યુક્ત છે તે મહાપદ્મ, તેના કરતા અર્ધા
પ્રમાણવાળા ૧૦૮ પદ્મોથી અને તે સિવાયના બીજા પદ્મ અનેક લક્ષપદ્મોથી
ઘેરાયેલુ છે તે પદ્મો 'સામાનિક' આદિ દેવોના નિવાસસ્થાન રૂપ છે એ જ
પ્રમાણે દેવકુરુ હદ આદિ હદો નુ તેમના જેવા જ નામવાળા દેવોના નિવાસ-
સ્થાન રૂપ છે, અને ઉપર્યુક્ત આન્તર્યવાળા છે એમ સમજવું.

સન્તિ । તથા-દેવકુરુષુ નિપથર્પધરપર્વતાત્ ઉત્તરસ્પાં દિશિ સપ્તમાગવિભિન્ન-
સ્વેકસ્ય યોજનસ્ય ચતુરો માગાન્ ચતુર્વિંશદધિકાનિ મહત્તતપોમનાનિ ગત્વા
શીતોદાયા મહાનદ્યા પૂર્વાપરતટવર્તિનો વિચિત્રકૂટચિત્રકૂટનામાનો પર્વતો સ્ત' ।
તયોઃ પ્રત્યેકપર્વત-ઉચ્ચત્વેન યોજનસહસ્રપ્રમાણઃ, મૂલે સહસ્રયોજનાયામ
વિષ્કમ્ભયુક્તઃ, ઉપરિતનપ્રવેશે ચ પશ્ચાત્તતપોમનાયામવિષ્કમ્ભયુક્તઃ । તૌ ચ
પર્વતૌ પ્રાસાદપરિમણિતૌ સ્વ રત્નામસદૃશવિચિત્રકૂટચિત્રકૂટનામક દેવ
નિવાસમૂર્તૌ ત્રિજ્ઞેયૌ । સતસ્તામ્યાં પર્વતામ્યાં પૂર્વોક્તાન્તર્યયુક્તઃ શીતોદા મહાનદી
મધ્યમાગવર્તી દક્ષિણોચરત્ સહસ્રયોજનાન્યાયતઃ પૂર્વાપરત્ પશ્ચાત્તતપોમનાનિ

ગજવન્તસે પ્રદક્ષિણા કરસે હુપ ચારોં દિશામેં સ્થિત હેં । પહાં ચારોં
સૂત્રોં દ્વારા યે પીસ કહે ગયે હેં । તથા-દેવકુરુમોં નિપથ પર્વધર પર્વ-
તસે ઉત્તર દિશામેં એક યોજનકે સાત માગમેંસે ચાર માગ અધિક
૮૩૪ યોજન તક આગે જાકર શીતોદા મહાનદીકે પૂર્વ ઓર પશ્ચિમ તટ
પર સ્થિત વિચિત્રકૂટ ઓર ચિત્રકૂટ નામકે દો પર્વત હેં । इनमें प्रत्येक
पर्वतकी ऊँचाई १ हजार योजनकी है, मूलमें प्रत्येक पर्वतका आयाम
और विष्कम्भ एक हजार योजनका है, और ऊपरका इनका प्रवेश
पाँचसौ योजनका लम्बा चौड़ा है, ये दोनों पर्वत प्रासादोंसे मण्डित हैं,
और अपने २ नामके जैसे विचित्रकूट एवं चित्रकूट नामवाले देवोंके
ये निवासस्थानरूप हैं । इन दोनों पर्वतोंसे आगे पूर्वोक्त आन्तर्यसे युक्त
शीतोदा महानदीके मध्य भागमें रहा हुआ दक्षिणसे उत्तर तक एक
हजार योजनका आयामवाला पूर्वसे पश्चिम तक पाँचसौ योजनका

ગજવન્તની પ્રદક્ષિણા કરતા હોય એવી રીતે તેની ચારે દિશાઓમાં આવેલા
છે એવી ચાર સૂત્રો દ્વારા એવાં ૨૦ વક્ષસ્કાં ૫૫૮૦ પ્રકટ કરવામાં આવ્યાં
છે તથા દેવકુરુઓમાં નિપથ વર્ષધર ૫૫૮૦થી ઉત્તર દિશામાં ૮૩૪/૪/૦
યોજનપ્રમાણે અતરે શીતોદા મહાનદીના પૂર્વ અને પશ્ચિમ તટપર વિચિત્રકૂટ
અને ચિત્રકૂટ નામના બે પર્વતો છે તે પ્રત્યેક ૫૫૮૦ની ઊંચાઈ ૧ હજાર
યોજનની છે તેમના મૂળભાગની લંબાઈ-પહોળાઈ ૧૦૦૦ યોજનની અને
શિરોભાગની લંબાઈ-પહોળાઈ ૫૦૦ યોજનની થઈ છે તે બન્ને પર્વતો
પ્રાસાદોથી મંદિત છે તે પર્વતો વિચિત્રકૂટ અને ચિત્રકૂટ નામના દેવોના
નિવાસસ્થાન રૂપ છે આ બે પર્વતોથી આગળ જતા પૂર્વોક્ત આન્તર્યથી
યુક્ત શીતોદા મહાનદીના મધ્યભાગમાં રહેલું દક્ષિણથી ઉત્તરમાં ૧૦૦૦
યોજનના આયામ (લંબાઈ) વાળું અને પૂર્વથી પશ્ચિમમાં ૫૦૦ યોજનની

‘ સઽવે વિ ણં ’ ઇત્યાદિ । સર્વેઽપિ જમ્બૂદ્વીપાદિ સમ્બન્ધિનો વક્ષસ્કારપર્વતા-
સીતા સીતોદે મહાનદી પુનઃ મન્દરં પર્વતં ચ ‘ તેણ ’ તે દે સ્વલુ નદી પર્વતે લક્ષણી
કૃત્ય નદીદ્વયં મન્દરપર્વતં ચ પ્રતીત્યર્થઃ । એતન્મહાનદીદ્વયદિશિ મન્દરપર્વતદિશિ-
ચેતિ ભાવઃ, પશ્ચયોજનશતાનિ — ઊર્ધ્વમુચ્ચત્વેન પશ્ચ ગબ્ધૂતિ
શતાનિ ચ ઉદ્વેધેન સન્તિ । તત્ર મન્દરપર્વતદિશિ માલ્યવત્સૌમનસ-
વિદ્યુત્પ્રભગન્ધમાદનનામાનશ્ચત્વારો ગજદન્તાકારપર્વતાઃ યથોક્તસ્વરૂપાઃ
સન્તિ । ઇતોઽન્યે વક્ષસ્કારપર્વતાઃ સીતા સીતોદા મહાનદી દિશિ વર્તન્તે,
ઇતિ । યથા જમ્બૂદ્વીપે યાવત્પ્રમાણા વક્ષસ્કારપર્વતા મહાહ્રદાશ્ચ પ્રોક્તાસ્તથૈવ
ધાતકીચ્છળકસ્ય પૂર્વાર્ધઅપરાર્દ્ધે, પુષ્કરાર્દ્ધસ્ય પૂર્વાર્દ્ધેઅપરાર્દ્ધે ચ વોદ્યાઃ । અમુમેવાર્થ
દર્શયિતુમાહ સૂત્રકારઃ ‘ ધાયહસંઢે ’ ઇત્યાદિ ‘ વલારા દહાય ઉચ્ચં ભાણિયન્વં ’

લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈં “ સઽવે વિ ણં ” ઇત્યાદિ—

યે જમ્બૂદ્વીપાદિ સમ્બન્ધી જો વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં વે સઽવ સીતા
સીતોદા નામકી જો મહાનદિયાહૈં, ડનકી ઓર ઓર મેરુપર્વતકી ઓરહૈં,
અર્થાત્ હન નદીદ્વયકી એવં મન્દરકી દિશામેહૈં । હનકી ડંચાઈ હસ દિશામે
પાંચસૌ યોજન કી હૈં ઓર ઉદ્વેધ ગન્ધમાદન હનકા પાંચસૌ ગબ્ધૂતિકા
હૈં । મન્દર પર્વતકી દિશામે માલ્યવત્ સૌમનસ વિદ્યુત્પ્રભ ઓર ગન્ધમા-
દન નામકે ચાર ગજદંત કે આકાર જૈસે પર્વત પૂર્વોક્ત સ્વરૂપ-
વાલે હૈં । હનસે અન્ય વક્ષસ્કાર પર્વત સીતા સીતોદા મહાનદિયોંકી
દિશામેહૈં । જિસ પ્રકારસે જમ્બૂદ્વીપમેં જિતને પ્રમાણોપેત યે વક્ષસ્કાર
પર્વત ઓર મહાહ્રદ કહે હૈં, ડમી પ્રકારસે વે ધાતકીચ્છળકે પૂર્વાર્દ્ધમેં ઓર
પશ્ચિમાર્દ્ધમેં પુષ્કરાર્દ્ધકે પૂર્વાર્ધમેં ઓર પશ્ચિમાર્દ્ધમેં ભી હૈં, એસા જાનના
ચાહિયે । હસી વાતકો પ્રકટ કરનેકેલિયે સૂત્રકારને “ ધાયહ સંઢે ” ઇત્યાદિ

“ સઽવે વિ ણં ” ઇત્યાદિ—તે વક્ષસ્કાર પર્વતો સીતા અને સીતોદા
નામની મહાનદીઓ અને મન્દર પર્વતની દિશામાં છે તેમની ઊંચાઈ તે
દિશામાં ૫૦૦ યોજનની છે અને તેમનો ઉદ્વેધ (ભૂમિની અંદરનો વિસ્તાર)
૫૦૦ ગબ્ધૂતિ પ્રમાણ છે મન્દર પર્વતની દિશામાં માલ્યવત્, સૌમનસ,
વિદ્યુત્પ્રભ અને ગન્ધમાદન નામના ગજદન્તાના આકાર જેવા પર્વતો પૂર્વોક્ત
સ્વરૂપવાળા છે તે સિવાયના જે અન્ય વક્ષસ્કાર પર્વતો છે, તેઓ સીતા
અને સીતોદા મહાનદીઓની દિશામાં છે જ ખૂદીપમાં જેટલા પ્રમાણવાળા
આ વક્ષસ્કાર પર્વતો અને મહાહ્રદો કહ્યાં છે, જેટલા જ પ્રમાણવાળા વક્ષસ્કર
પર્વતો અને મહાહ્રદો ધાતકીચ્છળના પૂર્વાર્ધમાં, પશ્ચિમાર્ધમાં અને પુષ્કરાર્ધના
પૂર્વાર્ધ અને પશ્ચિમાર્ધમાં પણ આવેલા છે એ જ વાતને સૂત્રકારે “ ધાયહ

અપતાયુકામ્યાં યમકામિપાનપર્વતામ્યામનન્તર દ્રવ્યમ્ । તતો દક્ષિણત ઉત્તર
કુરુ દ્વાદશસ્ત્રારો દ્વાદશ બોધ્યા इति । एतेषु सर्वेषु महाह्रदेषु एकैका महाह्रदो
दशमिर्दશभिः काञ्चनकनामकैः पर्वतैर्युक्तो विद्येयः । एते पर्वतास्तु शतयोजनो
च्छ्रिता मूले शतयोजनविष्कम्भयुक्ता उपरि पञ्चाशद्योजनविस्तृता स्य समान
नामकैर्देवैरभिष्टिता प्रत्येक पूर्वापरतो दक्षयोजनान्तरेण व्यवस्थिता बोध्याः ।
एते ये विचित्रकूटादिपर्वतश्च द्वासीनो देवाः सन्ति, तेषामसंख्ययतममम्भू
द्वीपे द्वादशयोजनसदृशप्रमाणास्तन्नामिका नगरा भवतीति बोध्यम् । एते
यज्ञस्कारपर्वताः कस्यां दिशि वतन्त ? इति प्रकल्पितमाह—

નામઘાળે નિવાસ મૂળ યમક નામકે દો પર્વતોંકે અન્તર પાદમેં હૈ, इन
दोनो पर्वतोके सम्पन्धकी वक्तव्यता विचित्रकूट और चित्रकूटकी वक्त
व्यता जैसी है इससे दक्षिण दिशामें उत्तरकुल इत्यादि चार ह्रद हैं । इन
समस्त महाह्रदोमें एक एक महाह्रद दश दशका काञ्चन नामक पर्वतोसे
युक्त ह । ये सब पर्वत १०० योजन हैं । मूलमें ओ १०० योजनके ही
विस्तारवाले हैं । तथा ऊपरमें इनका विस्तार पांचसौ योजनका है, और
ये अपने २ जैसे नामघाळे देवोसे अभिष्टित हैं, ये प्रत्येक पर्वत पूर्वसे
पश्चिम तक १०-१० योजनके अन्तरसे व्यवस्थित हैं । ये विचित्रकूट
आदि पर्वतबानी और द्ववासी जो देव हैं सो इनकी जम्बूद्वीपके अस
ख्यातवें नागमें १२ योजन प्रमाणवाली उनके नामवाली नगरियां हैं ।
ये यज्ञस्कार पर्वत किस २ दिशामें हैं ? इस बातकी प्रकण्ण करनेके

એમકે જે નીચવત્ મહાહ્રદ છે તે નીચવત્ નામના દેવના નિવાસ રૂપ
છે તે મહાહ્રદ યમક નામના જે પવતો પછી આવે છે આ બન્ને પર્વતનું
વધુન વિચિત્રકૂટ અને ચિત્રકૂટના વધુન પ્રમાણે જ સમજવું તેની દક્ષિણ
દિશામાં ઉત્તરકુલ હ્રદ આદિ ચાર હ્રદ આવેલાં છે તે પ્રત્યેક મહાહ્રદ ૬૪
૬૪ કાંચન નામના પવતોથી યુક્ત છે તે બધા પવતો ૧૦૦ યોજનના
વિસ્તારવાળા છે તેમનો વિસ્તાર મૂળભાગમાં ૧૦૦ યોજનનો અને ઉપરના
ભાગમાં ૫૦ યોજનનો છે, તે પર્વતો તેમના જેવા જ નામવાળા દેવોથી
અભિષિત છે તે પ્રત્યેક પવત પૂર્વથી પશ્ચિમ મુખી ૧૦-૧૦ યોજનના અંતરે
વ્યવસ્થિત છે તે વિચિત્રકૂટ આદિ પવતબાંધી અને હ્રદવાંધી જે દેવો છે
તેમની જ બુદ્ધીપતા અસખ્યાતમાં ભાગમાં ૧૨ યોજન પ્રમાણવાળી નગરીઓ
છે તે નગરીઓના નામો તે દેવોનાં નામ જેવાં જ છે તે યજ્ઞસ્કાર પર્વતો
૬૪ ૬૪ દિશામાં છે, તે સ્વરગાર હવે પ્રકટ કરે છે

અનન્તર મનુષ્યક્ષેત્રસ્થાનિ પર્વતાદિરૂપાણિ વસ્તૂનિ પ્રોક્તાનિ, સમ્પ્રતિ તદ-
ધિકારાદેવ ભરતક્ષેત્રમ્ વર્તમાનાવસર્પિણીમૂળગાનામ્ ઋષભાદીનાં સમ્બધિકં
કિંચિત્ પ્રરૂપયતિ—

મૂલમ્—ઉસમેળં અરહા કોસાલિણ પંચ ધનુસયાદં ઉદું
ઉચ્ચત્તેળં હોત્થા । ભરહે ણં રાયા ચાઉરંતચક્રવટી પંચ ધનુસ-
યાદં ઉદુંઉચ્ચત્તેળં હોત્થા । વાહુવલી ણં અણગારે એવંચેવ । વંભી
ણામં અઝ્જા એવં ચેવ । એવં સુંદરી ત્રિ ॥ સૂ ૦ ૨૫ ॥

છાયા—ઋષભ' સ્વલુ અર્હન્ કૌસલિકઃ પશ્ચ ધનુશ્શતાનિ ઝર્ધ્વમ્ ઉચ્ચત્વેના-
ભવત્ । ભરત સ્વલુ રાજા ચાતુરન્તચક્રવર્તી પશ્ચ ધનુશ્શતાનિ ઝર્ધ્વમુચ્ચત્વેનાભવત્ ।
વાહુવલી સ્વલુ અનગાર એવમેવ । વ્રાહ્મી નામાર્યા એવમેવ । એવં સુંદરી અપિ ૨૫॥

ટીકા—‘ ઉસમેળ ’ इत्यादि—

વ્યાख्या સ્પષ્ટા । નવરં કોસલે ભવઃ કૌસલિકઃ=કોસલદેશોત્પન્નઃ । ઋષભઃ=
આદિજિનઃ । ભરતાદયશ્ચ તદપત્યાનિ વૌધ્યાનિ ॥ સૂ ૦ ૨૫ ॥

ચાહિયે, હસીલિયે વે “ જાવર ઉસુયારા નત્થિ ” હસ સૂત્રપાઠસે વર્જિત
કિયે ગયે હૈ ॥ સૂ ૦ ૨૪ ॥

હસ પ્રકારસે મનુષ્યક્ષેત્રસ્થિત પર્વતાદિરૂપ વસ્તુઓંકા કથન કર
અવ સૂત્રકાર હસી અધિકારકો લેકર ભરતક્ષેત્રમે વર્તમાન અવસર્પિણી
કાલકે મૂળગરૂપ જો ઋષભાદિ હુણ હૈ, ડનસે સમ્બન્ધિત થોડાસા
કથન કરતે હૈ । “ ઉસમેળં અરહા કોસલિણ પંચ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—કોસલ દેશમે ઉત્પન્ન હુણ ઋષભદેવ અર્હન્ત પાંચસૌ ધનુષ ઝંચે થે
ભરત રાજા જો કિ ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી થે । પાંચસૌ ધનુષ ઝંચે થે ઔર

કરવુ જોઈએ નહી “ જાવર ઉસુયારા નત્થિ ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા એ જ વાત
પ્રકટ કરવામા આવી છે કે ઇધુકાર પર્વત ચાર જ હોવાથી તેમનુ કથન
અહીં કરવુ જોઈએ નહીં ॥ સૂ ૦ ૨૪ ॥

આ પ્રકારે મનુષ્યક્ષેત્રના પર્વત આદિનુ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર
ભરતક્ષેત્રમાં વર્તમાન અવસર્પિણીકાળના ભૂષણ રૂપ જો ઋષભદેવ આદિ પુરુષો
થયા હતા તેમને વિષે થોડુ કથન કરે છે

“ ઉસમેળ અરહા કોસલિણ પંચ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—કોસલ દેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા ઋષભદેવ જિનેશ્વરની ઊંચાઈ ૫૦૦
ધનુષપ્રમાણુ હતી ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી ભરત રાજા પણ ૫૦૦ ધનુષપ્રમાણુ ઊંચા
હતા બાહુબલી અણુગાર, બ્રાહ્મી આર્યા અને સુંદરીની ઊંચાઈ પણ એટલી જ

ઇત્યન્તમિતિ । મમ્પતિ મરતાદીનિ ક્ષેત્રાણિ, સપ્રસ્થિતપર્વતાદી ચ પદ્મસ્થાનસ્થેન પ્રસ્પપિતુમાહ—‘ સમયક્ષેત્રેણ ’ ઇત્યાદિ સમયક્ષેત્રે મમય =આવિત્પગતિસમ મિત્યજ્યમાનપ્રાત્સ્વયનાદિકાઞ્ચ, તદ્યુક્ત ક્ષેત્ર સમયક્ષેત્રં, મનુષ્યક્ષેત્રમિત્યર્થ, તસ્મિન્ પદ્મ મરતાનિ પદ્મ પેરવતાનિ, યાવત્કરણાત પદ્મ હૈમવતાનિ પદ્મ હૈરણ્ય વ્રતાનિ, એવમિતોઽપાન્યપિ ક્ષેત્રાણિ ભાવનીયાનિ, તથા તત્ર ‘ શન્દાપાતિન પર્વ તાનારમ્ય પદ્મ મન્દરાઃ પદ્મ મન્દરશૂલિકા ’ ઇત્યન્તઃ સર્વોઽપિ પાઠમતુસ્થાનક ટિતીયોન્નકશ્ચ ચાન્ય । પરન્તુ શ્વપુકારપર્વતામત્પાર એવ સત્તિ, અતસ્તેઽત્ર ન વાચ્યાઃ । અત એવાહ—‘ જયાર ડમુયારા નરિય ’ ઇતિ ॥મુ૦ ૨૪॥

સૂત્રસે લેકર ‘ વક્ત્રારા વહાય વજ્જવ માણિયવ્વ ’ યદ્દાં તક સૂત્ર કહાઈ ।

અય સૂત્રકાર સમયક્ષેત્રમેં અઢાઢ્ઢીપ મનુષ્યક્ષેત્રમેં મરતાદિ ક્ષેત્રોંકી ઓર ડસમેં રહે દુગ પર્વત આદિકોંકી પ્રરૂપણા પાંચસ્થાનકસે કારસે દુગ કહતે હેં કિ “ સમયક્ષેત્રેણ ” ઇત્યાદિ—

આવિત્પકી ગતિસે પ્રકટ હોને યોગ્ય ઋતુ અયન આદિ રૂપ સમય સે યુક્ત જો ક્ષેત્ર હેં વહ સમયક્ષેત્રહેં, પેમા સમયક્ષેત્ર મનુષ્યક્ષેત્ર ઢાઈ ઢીપ હેં । ડન મનુષ્યક્ષેત્રમેં પાંચ મરત પાંચ પેરવત પાવત્-પાંચ હૈમવત પાંચ હૈરણ્યવત ઓગ હનસેમી અન્ય ઓરમી ક્ષેત્ર હેં, તથા શન્દાપાતી પર્વતોસે લેકર પાંચ મન્દર ઓર પાંચ મન્દર શૂલિકાહેં હેં । ઇત્યાદિ યદ્દાં તકકા સય પાઠ વતુર્થ સ્થાનકકે ટિતીય ઉદ્દેશકકી નરહસે કહ લેના વાહિયે । પરન્તુ શ્વપુકાર પર્વત ચારહી હેં, અતઃ લેં યદ્દાં નહીં કહના

સંહે ” થી લઇને “ વક્ત્રારા વહાય વજ્જવ માણિયવ્વ ” આ સૂત્રપાઠ પર્વ ન્નાય લખાણુ ઢાશ બચ્છા કરી છે

હવે સૂત્રકાર સમયક્ષેત્રમાં (મનુષ્યક્ષેત્રમાં) રહેલાં મરતાદિ ક્ષેત્રોની અને તેમાં આવેલા પર્વતાદિકોની પાંચ સ્થાનકની અપેક્ષાએ પ્રરૂપણા કરે છે

‘ સમયક્ષેત્રેણ ’ ઇત્યાદિ—સૂર્યની ગતિ વડે પ્રકટ થતાં ઋતુ અયન આદિ રૂપ સમયમાં યુક્ત જે ક્ષેત્ર છે તેને સમયક્ષેત્ર કહે છે એવું સમયક્ષેત્ર (મનુષ્યક્ષેત્ર) અહીં ઢીપ છે આ મનુષ્યક્ષેત્રમાં પાંચ મરત, પાંચ હૈમવત પાવત્ પાંચ હૈમવત પાંચ હૈરણ્યવત અને તે સિવાયના બીજા ક્ષેત્રો પણ છે વળી ત્યાં શન્દાપાતી પર્વતોથી લઇને પાંચ મન્દર અને પાંચ મન્દર શૂલિકાઓ પણ ન્તનુ બધુ છે આથી સ્થાનકના બીજા ઉદ્દેશમાં આ વિષયને અનુલક્ષીને જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે તેવું કથન અહીં પણ મહત્વ રૂપ બેઠાએ, પાન્તુ ઇપુકાર પર્વત ચારજ છે તેથી અહીં તેમનું કથન

અનન્તર મનુષ્યક્ષેત્રસ્થાનિ પર્વતાદિરૂપાણિ વસ્તૂનિ પ્રોક્તાનિ, સમ્પ્રતિ તદ-
ધેઠારાદેવ ભગતક્ષેત્રસ્ય વર્તમાનાવસર્પિણીભૂષણાનામ્ ઋષભાદીનાં સમ્બધિકં
કિંચિત્ પ્રરૂપયતિ—

મૂલમ્—ઉસમેણં અરહા કોસલિણ પંચ ધનુસયાઈં ઉઢું
ઉચ્ચત્તેણં હોત્થા । ભરહે ણં રાયા ચાઉરંતચક્રવટ્ટી પંચ ધનુસ-
યાઈં ઉઢુંઉચ્ચત્તેણં હોત્થા । વાહુવલી ણં અણગારે એવંચેવ । વંભી
ણામં અજ્જા એવં ચેવ । એવં સુંદરી ત્રિ ॥ સૂ ૦ ૨૫ ॥

છાયા—ઋષભ સ્વલુ અર્હન્ કૌસલિકઃ પશ્ચ ધનુશ્શતાનિ ઝર્ધ્વમ્ ઉચ્ચત્વેના-
ભવત્ । ભરત સ્વલુ રાજા ચાતુરન્તચક્રવર્તીં પશ્ચ ધનુશ્શતાનિ ઝર્ધ્વમુચ્ચત્વેનાભવત્ ।
વાહુવલી સ્વલુ અનગાર એવમેવ । વ્રાહ્મી નામાર્યા એવમેવ । એવં સુંદરી અપિ ૨૫ ॥

ટીકા—‘ ઉસમેણ ’ ઇત્યાદિ—

વ્યાહ્યા સ્પષ્ટા । નવરં કોસલે ભવઃ કૌસલિકઃ=કોસલદેગોત્પન્નઃ । ઋષભઃ=
આદિજિન । ભરતાદયશ્ચ તદપત્યાનિ વોધ્યાનિ ॥ ૨૫ ॥

ચાહિયે, હસીલિયે વે “ જવરં ઉસુયારા નત્થિ ” હસ સૂત્રપાઠસે વર્જિત
કિયે ગયે હૈં ॥ સૂ ૦ ૨૪ ॥

હસ પ્રકારસે મનુષ્યક્ષેત્રસ્થિત પર્વતાદિરૂપ વસ્તુઓંકા કથન કર
અવ સૂત્રકાર હસી અધિકારકો લેકર ભરતક્ષેત્રમેં વર્તમાન અવસર્પિણી
કાલકે ભૂષણરૂપ જો ઋષભાદિ હુણે હૈં, ઉનસે સમ્બન્ધિત થોડાસા
કથન કરતે હૈં । “ ઉસમેણં અરહા કોસલિણ પંચ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—કોસલ દેશમેં ઉત્પન્ન હુણે ઋષભદેવ અર્હન્ત પાંચસૌ ધનુષ ઝચે થે
ભરત રાજા જો કિ ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી થે । પાંચસૌ ધનુષ ઝચે થે ઔર

કરવું નેઈએ નહી “ જવર ઉસુયારા નત્થિ ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા એ જ વાત
પ્રકટ કરવામા આવી છે કે ઇષુકાર પર્વત ચાર જ હોવાથી તેમનું કથન
અહીં કરવું નેઈએ નહી ॥ સૂ. ૨૪ ॥

આ પ્રકારે મનુષ્યક્ષેત્રના પર્વત આદિનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર
ભરતક્ષેત્રમાં વર્તમાન અવસર્પિણીકાળના ભૂષણ રૂપ જે ઋષભદેવ આદિ પુરુષો
થયા હતા તેમને વિષે થોડું કથન કરે છે

“ ઉસમેણ અરહા કોસલિણ પચ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—કોસલ દેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા ઋષભદેવ જિનેશ્વરની ઊંચાઈ ૫૦૦
ધનુષપ્રમાણ હતી ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી ભરત રાજા પણ ૫૦૦ ધનુષપ્રમાણ ઊંચા
હતા બાહુભક્તી અણુગાર, બ્રાહ્મી આર્યા અને સુંદરીની ઊંચાઈ પણ એટલી જ

ઉપરિ નિર્દિષ્ટાઃ સર્વેઽપિ શુદ્ધાઃ । શુદ્ધ જીવો ભાવતા માહત્યાદ, દ્રવ્ય તથા નિદ્રાસયાદ મત્તીતિ દ્રવ્યબોધ કારણત ઉપદર્શયતિ—

મૂલમ્—પચર્હિ ઠાળેર્હિ સુત્તે ત્રિયુગ્લેષ્ટા, ત જહા સેર્ષણં ૧
ફાસેર્ણં ૨ મોયળપરિણામેર્ણં ૩ ણિદ્વક્ષવર્ણં ૪ સુમિણદસર્ણેર્ણં
૫ ॥ સૂ. ૨૬ ॥

છાયા—પચ્ચમિઃ સ્યાનૈઃ સુતો વિબુઘ્યેત, તથા—શબ્દેન ૧ સ્પર્શન ૨ મોમનપરિણામેન ૩ નિદ્રાસયેષ ૪ સ્વપ્નદર્શનેન ૫ ॥ સૂ. ૨૬ ॥

ટીકા—‘ પચર્હિ ’ इत्यादि—

પચ્ચમિઃ સ્યાનૈઃ=કારણૈઃ સુતો જીવો ત્રિયુગ્યેત=જાગરિતો મહેત્ । તથા—
તથાહિ-શબ્દેન=સ્પર્શચિત્ શબ્દ ધ્રુત્વા ૧, સ્પર્શન=સ્પર્શચિત્ સ્પર્શસ્પર્શમ્ ૨,
માહુપલી અમગાર વ્રાહ્મો આર્યા એવં સુન્દરી મી હતની હી કચી ધી,
ઋવમદેવ સર્વ પ્રથમ તીર્થકર હૈ । મરન માહુપલી આદિ મવ હનકી
સત્તાન પુત્રપુત્રી હૈ ॥ સૂ. ૨૫ ॥

યે ऊपरमें कहे गये ऋषभादिक सप्त शुद्ध ये, जीव शुद्ध जो होता है वह नाशसे मोहके क्षयसे और द्रव्यसे निद्राके क्षयसे होता है । इसलिये सूत्रकार अथ कारणको लेकर द्रव्यबोधका कथन करते हैं ।

“ पचर्हि ठाणेर्हि सुते त्रियुग्लेष्टा ” इत्यादि—

સુત જીવ પાંચ કારણોસે જાગરિત હો સકતા હૈ, યે પાંચ કારણ યે હૈ—શબ્દ ૧, સ્પર્શ ૨, મોજન પરિણામ ૩, નિદ્રાસય ૪ ઓર સ્વપ્ન દર્શન ૫ । કિસીકે શબ્દકો સુનકર ૧ કિસીકે સ્પર્શકો ઉપલક્ષ્ય કર

હતી ઋષભદેવ સૌથી પહેલા તીર્થ કરે થઈ ગયા અને ભરત, માહુપલી, વ્રાહ્મી અને સુન્દરી તેમનાં પુત્રપુત્રી હતાં. ॥ સૂ. ૨૫ ॥

ऊपर जेभनु ऋषभ इत्यादि आभुं छे, ते ऋषभादि शुद्ध હતા कायनी अभेक्षाके मोहना क्षयभी અને દ્ર વની અપેક્ષાકે નિદ્રાના સયમીજ છવ જુદ થઈ શકે છે તેથી હવે સૂત્રકાર દ્રવ્યબોધના કારણેનુ નિરૂપણ કરે છે

‘ पचर्हि ठाणेर्हि सुते त्रियुग्लेष्टा ’ इत्यादि—

સુત છવ નીચેના પાંચ કારણેને લીધે ભગૃત થઈ શકે છે—(૧) શબ્દ, (૨) સ્પર્શ (૩) મોજનપરિણામ, નિદ્રાસય અને (૫) સ્વપ્ન દર્શન

કોઈના અથવા આશયીને અથવા કોઈ વ્યક્તિ દ્વારા ચરીરને સ્પર્શ થવાથી સુતેલી વ્યક્તિ ભગી બને છે એ જ પમાલે મૃત્યુને કારણે પણ તે

ભોજનપરિણામેન=ભોજનપરિપાકેન-વુચ્યુક્ષયેત્યર્થઃ ૩, તથા નિદ્રાક્ષયેન=નિદ્રાયા અપગમેન ૪, સ્વપ્નદર્શનેન ચેતિ ૫ । જાગરણસ્ય નિદ્રાક્ષયઃ સાક્ષાત્કારણમ્, નિદ્રાક્ષયસ્ય ચ શબ્દસાર્થભોજનપરિણામાઃ પરમ્પરા કારણમ્, અતો જાગરણકારણસ્ય નિદ્રાક્ષયસ્ય હેતુત્વેન શબ્દાદીન્યપિ જાગરણકારણાનિ વોધ્યાનીતિ સૂ ૦ ૨૬ ॥

इत्थं कारणनिर्देशपुरस्सरं द्रव्यप्रवुद्धमुक्त्वा, सम्प्रति भावप्रवुद्धस्य कारणे सति जिज्ञानतિક्रमणतामाह—

મૂલમ્—પંચહિં ઠાળેહિં સમળે ણિગંથે ણિગંથિં ગિળ્હમાળે વા અવલંબમાળે વા ણાઙ્કમઙ્, તં જહા—નિગંથિંચ ણં અન્નચરે પસુજાઙ્ણ વા પક્ષિજાઙ્ણ વા ઓહાઙ્જા, એત્થ ણિગંથે ણિગંથિં ગિળ્હમાળે વા અવલંબમાળે વા નાઙ્કમઙ્ ॥ ૧ ॥ ણિગંથે ણિગંથિ દુગ્ગંસિ વા વિસમંસિ વા પક્ષલમાળિં વા પવડમાળિં વા ગિળ્હમાળે વા અવલંબમાળે વા ણાઙ્કમઙ્ ॥ ૨ ॥ ણિગંથે ણિગંથિં સેયંસિ વા પંકંસિ વા પળગંસિ વા ઉદગંસિ વા ઉક્કસમાળિં વા ઉવુજ્જમાળિં વા ગિળ્હમાળે વા અવલંબ-

સોતા હુઆ પ્રાણી જગ જાતા હૈ, હસ પ્રકાર વહ ભૂલસે મી જગ જાતા હૈ, તથા નિદ્રાકા અપગમ હો જાવે તો મી વહ જગ જાતા હૈ તથા સોતી હુઈ અવસ્થામં સ્વપ્નકે દેલ્લનેસે મી જગ જાતા હૈ । જાગરણકા સાક્ષાત્કારણ નિદ્રા ક્ષય હૈ ઓર નિદ્રાક્ષયકે શબ્દ શ્રવણ, સ્પર્શોપલબ્ધિ એવં ભોજન પરિણામ-વુચ્યુક્ષા યે સવ પરમ્પરા કારણ હૈં । હસલિયે જાગરણકે કારણ નિદ્રાક્ષયકે હેતુ હોનેસે શબ્દાદિકોંકો મી જાગરણકી કારણ યહાં કહા ગયા હૈ એસા જાનના ચાહિયે ॥ સૂ ૦ ૨૬ ॥

જાગી જાય છે, ઊઘ પૂગી થવાથી પણ તે જાગી જાય છે, અને ઊઘમા સ્વપ્ન દેખવાથી પણ તે જાગી જાય છે. જાગરણના સાક્ષાત્કારણ નિદ્રા છે, અને શબ્દ શ્રવણ, સ્પર્શોપલબ્ધિ, ભૂખ અને સ્વપ્નદર્શન, આ બધાં નિદ્રાક્ષયના પરમ્પરા કારણો છે, તેથી તેઓ જાગી જાના કારણભૂત નિદ્રાક્ષયમા હેતુરૂપ હોવાથી તેમને પણ જાગરણના કારણ રૂપે અહીં પ્રકટ કરવામા આવ્યા છે, એમ સમજવું ॥ સૂ. ૨૬ ॥

ભોજનપરિણામેન=ભોજનપરિપાકેન-વુશુક્ષયેત્યર્થઃ ૧, તથા નિદ્રાક્ષયેન=નિદ્રાયા અપગમેન ૪, સ્વપ્નદર્શનેન ચેતિ ૫ । જાગરણસ્ય નિદ્રાક્ષયઃ સાક્ષાત્કારણમ્, નિદ્રાક્ષયસ્ય ચ શબ્દસર્ગભોજનપરિણામાઃ પરસ્પરા કારણમ્, અતો જાગરણકારણસ્ય નિદ્રાક્ષયસ્ય હેતુત્વેન શબ્દાદીન્યપિ જાગરણકારણાનિ વોધ્યાનીતિ સ્મૃ ૦ ૨૬ ॥

इत्थं कारणनिर्देशपुरस्सरं द्रव्यप्रवुद्धमुक्त्वा, सम्प्रति भावप्रवुद्धस्य कारणे सति जिनाज्ञानतिक्रमणतामाह—

મૂલમ્—પંચર્હિં ઠાળેહિં સમણે ણિગંથે ણિગંથિં ણિગ્હમાણે વા અવલંબમાણે વા ણાઙ્કમઙ્, તં જહા—નિગંથિંચ ણં અન્નચરે પસુજાઙ્ણ વા પક્કિજાઙ્ણ વા ઓહાણ્ણા, एत्थ णिगंथे णिगंथिं णिगहमाणे वा अवलंबमाणे वा नाङ्कमङ् ॥ ૧ ॥ ણિગંથે ણિગંથિ દુગંસિ વા વિસમંસિ વા પક્કલમાણિં વા પવડમાણિં વા ણિગ્હમાણે વા અવલંબમાણે વા ણાઙ્કમઙ્ ॥ ૨ ॥ ણિગંથે ણિગંથિં સેયંસિ વા પંકંસિ વા પળગંસિ વા ઉદગંસિ વા ઉક્કલમાણિં વા ઉવુજ્જમાણિં વા ણિગ્હમાણે વા અવલંબ-

સોતા હુઆ પ્રાણી જગ જાતા હૈ, હસ પ્રકાર વહ ભૂલસે ભી જગ જાતા હૈ, તથા નિદ્રાકા અપગમ હો જાવે તો ભી વહ જગ જાતા હૈ તથા સોતી હુઈ અવસ્થામેં સ્વપ્નકે દેલ્લનેસે ભી જગ જાતા હૈ । જાગરણકા સાક્ષાત્કારણ નિદ્રા ક્ષય હૈ ઔર નિદ્રાક્ષયકે શબ્દ શ્રવણ, સ્પર્શોપલબ્ધિ एवं भोजन परिणाम-वुशुक्षा ये सब परस्पर कारण हैं । इसलिये जागरणके कारण निद्राक्षयके हेतु होनेसे शब्दादिकोंको भी जागरणकी कारण यहां कहा गया है ऐसा जानना चाहिये ॥ સૂ ૦ ૨૬ ॥

જાગી જાય છે, ઊઘ પૂરી થવાથી પણ તે જાગી જાય છે, અને ઊઘમાં સ્વપ્ન દેખવાથી પણ તે જાગી જાય છે. જાગરણનું સાક્ષાત્કારણ નિદ્રા છે, અને શબ્દ શ્રવણ, સ્પર્શોપલબ્ધિ, ભૂખ અને સ્વપ્નદર્શન, આ બધાં નિદ્રાક્ષયના પરસ્પરા કારણો છે, તેથી તેઓ જાગૃતિના કારણભૂત નિદ્રાક્ષયમાં હેતુરૂપ હોવાથી તેમને પણ જાગરણના કારણ રૂપે અહીં પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે, એમ સમજવું ॥ સૂ. ૨૬ ॥

માળે વા ણાઙ્કમહ ॥ ૩ ॥ ણિગ્ગથે ણિગ્ગથિં નાવ આરોહમાળે
 વા ઓરોહમાળે વા ણાઙ્કમહ ॥ ૪ ॥ ચિત્તચિત્ત દિત્તચિત્ત
 જક્ખાદ્દુ ઉમ્માયપ્પત્ત ઉવસગ્ગપ્પત્ત સાહિગરણં સપાયચ્છિત્ત
 મત્તપાળપહિયાદ્દિલ્લય અદ્દુજાય વા નિગ્ગથે નિગ્ગથિં ણિગ્ગમાળે
 વા અવલલ્લમાળે વા ણાઙ્કમહ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

છાયા:-પશ્ચિમિ: સ્યાનૈ: ધમ્મો નિર્ગ્ગ્યો નિર્ગ્ગ્યો ગુહ્ન વા અવલ્લમ્બમાનો
 વા નાતિક્કામત્તિ, સ્વયા-નિર્ગ્ગ્યો વા અન્યતર: પશ્ચિજાતિકો વા પશ્ચિજાતિકો વા
 ઉપહન્યાત્, તત્ર નિર્ગ્ગ્યો નિર્ગ્ગ્યો ગુહ્ન વા અવલ્લમ્બમાનો વા નાતિક્કામત્તિ ॥૧॥
 નિર્ગ્ગ્યો નિર્ગ્ગ્યો દુર્ગ્ગા ચિપ્પમ વા પ્રસ્મલ્લન્તી વા પ્રપતન્તી વા ગુહ્ન વા અવ
 લ્લમ્બમાનો વા નાતિક્કામત્તિ ॥૨॥ નિર્ગ્ગ્યો નિર્ગ્ગ્યો સેકે વા પહે વા પનકે વા

હસ પ્રકાર કારણકે નિર્દેશપૂર્વક દ્રવ્ય પ્રયુદ્ધકા કથન કરકે અથ
 સૂત્રકાર આપ પ્રયુદ્ધમે કારણકે દોને પર જિનાશાકી અનતિક્રમણતા
 હોતી હે એસા કથન કરતે હે ।

સૂત્રાર્થ-“ પચહિ ઠાળેહિ સમણે ણિગ્ગથે ” इत्यादि—

પાંચ કારણોસે શ્રમણ નિર્ગ્ગ્ય નિર્ગ્ગ્ય સાધ્વીકો સહાય દેતા હુઆ
 જિનાશાકા ચિરાધક નહીં હોતાહે, હે પાંચ કારણ એહે-જેસે-કિમી સાધ્વી
 કો કોઈ પશુ-ઢઢત હુઆ પેલ આદિ વા પશ્ચિજાતિક-ગીધ આદિ
 ચોટ પહુચા દેતા હે ઓર યહ ગિર પડતી હે, ઉઠ નહીં સકતી હે તો
 એસી સ્થિતિમે અથ સાધ્વી જનકે અભાવમેં વહાં પર સ્થિત હુઆ સાધુ

આ પ્રકારે કારણના નિર્દેશપૂર્વક દ્રવ્યપ્રયુદ્ધ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર
 એ વાતનું પ્રતિપાદન કરે છે કે અમુક સંયોગોમા આવપ્રયુદ્ધ અમુક પ્રકારે
 વર્તવાથી જિનાશાનો વિરાધક ગણાતા નથી.

શૂત્રાર્થ-“ પચહિ ઠાળેહિ સમણે ણિગ્ગથે ” इत्यादि—

નીચેના પાંચ કારણોમાંથી કોઈ પણ કારણ ઉદ્ભવે ત્યારે કોઈ અમણ
 નિમ્મ થ કોઈ નિર્ગ્ગ્યોને (સાધ્વીજીને) સહાય આપે તો તે જિનાશાનો
 વિરાધક ગણાતો નથી—(૧) કોઈ ઉચ્ચ અથવા આદિ પશુ કે ગીધ આદિ
 પક્ષી કોઈ સાધ્વી પર ધસી જઈને તેમને ભૂમિ પર પછાડી નાખે અને તેજો
 પોતાની બાંતે જીભાં ચવાને સમય ન હોય તથા તેમને ટેકા આપીને જીભા
 કરનાર કોઈ અન્ય સાધ્વીજી પણ ત્યાં હાજર ન હોય, તો એવી પરિસ્થિતિમાં

ઉદકે વા અવલમ્બમાણાં વા અપોહ્યમાનાં વા ગૃહ્ણન્ વા અવલમ્બમાનો વા નાતિ ક્રામતિ ॥૩॥ નિર્ગ્રન્થો નિર્ગ્રન્થી નાવમારોહયન્ વા અવરોહયન્ વા નાતિક્રામતિ ॥૪॥ ક્ષિપ્તચિત્તાં દ્વષચિત્તા યજ્ઞાવિષ્ટામ્ ઝન્માદપ્રાપ્તામ્ ઉપસર્ગપ્રાપ્તામ્ સાધિક- રણાં સપ્રાયશ્ચિત્તાં મક્તુપાનપ્રત્યાહ્યાતામ્ અર્થજાતાં વા નિર્ગ્રન્થો નિર્ગ્રન્થી ગૃહ્ણન્ વા અવલમ્બમાનો વા નાતિક્રામતિ ૫ ॥મુ ૦ ૨૭।

ટીકા—‘ પંચર્હિ ઠાણેર્હિ ’ ઇત્યાદિ—

પશ્વમ્ભિઃ સ્થાનૈઃ=કારણૈઃ શ્રમણો નિર્ગ્રન્થો નિર્ગ્રન્થી ગૃહ્ણન્=વાહાદૌ ગ્રહણં કુર્વન્ વા અવલમ્બમાનઃ=વાહાદૌ ગૃહીત્વા ધારયન્ વા, અથવા—‘ સત્ત્વંગિય તુ ગ્રહણ અવલંબણં તુ દેસમ્મિ ’

છાયા—‘ સાર્વાદ્રિકં તુ ગ્રહણં કરેણ અવલમ્બનં તુ દેશે ’ ઇતિ, ગૃ ન= સર્વોક્તે ગ્રહણં કુર્વન્, અવલમ્બમાનઃ=હસ્તાદૌ ધરન્ વા નાતિક્રામતિ=નોહ્યદ્વયતિ જિનાજ્ઞામ્ । તાન્યેવ સ્થાનાન્યાહ—તથા—કાચિત્ નિર્ગ્રન્થી=સાધ્વીમ્ અન્યતરઃ= કશ્ચિત્ પશુજાતિકુ=ઉદ્ભવગવાદિ વાં પક્ષિજાતિકો ગૃધ્રાદિ વાં ઉપહન્યાત્=ઉપ ઘાતં કુર્યાત્, તત્ર=ઉપઘાતે અન્યસ્યા નિર્ગ્રન્થિકાયા અભાવે તાં નિર્ગ્રન્થી ગૃહ્ણન્ વા અવલમ્બમાનો વા નિર્ગ્રન્થ આજ્ઞાં નાતિક્રામતિ સકારણત્યાત્ । નિષ્કારણં તુ ગૃહ્ણન્ અવલમ્બમાનો વા જિનાજ્ઞામતિક્રામત્યેવ, અતશ્ચ તત્ર દોષા મવન્ત્યેવ । દોષાશ્ચાત્રેવમુક્તાઃ, તથાહિ—

“ મિચ્છત્ત ઉદ્ધાહો, વિરાહણા કાસ ભાવ સંવધો ।

પહિગમણાઈ દોસા, શુત્તાશુત્તે ય નાયન્ના ॥૧॥”

उसे सहायता दे सकता है । इस स्थितिमें वह जिनाज्ञाका विराधक नहीं होता है,

ટીકાર્થ—ચાહુ આદિ પકડકર ઉઠાના હસકા નામ ગ્રહણહૈ ઔર ઉસે અપને દોંનોં હાથોમેં ઉઠા લેના હસકા નામ અવલમ્બન હૈ ।

અથવા—“ સત્ત્વંગિય તુ ગ્રહણં કરેણ અવલંબણ તુ દેસમ્મિ ” ઉસે પૂરા ઉઠા લેના યહ ગ્રહણ હૈ ઔર ઉસે અપને હાથકા સહારા દેકર ઉઠાના યહ અવલમ્બન હૈ । સાધુ જવ ચિના કિસી કારણ એસા કરતા હૈ તો અવશ્યહી વહ જિનાજ્ઞાકા વિરાધક હોતા હૈ, ક્યૌંકિ એસા કર

કોઈ સાધુ તેમને મદદ કરે—તેમને હાથ ઝલોને તેમને ઊભાં કરે, તો તે સાધુ જિનાજ્ઞાનો વિરાધક ગણાયતો નથી

ટીકાર્થ — હાથ આદિ પકડીને ઉઠાડવા તેનું નામ ‘ ઘડણુ ’ છે અને પોતાના બન્ને હાથોના ઉપાડી લેવાં તેનું નામ ‘ અવલબન ’ છે અથવા—“ સત્ત્વંગિય તુ ગ્રહણ કરેણ અવલંબણ તુ દેસમ્મિ ” તેમને પૂરેપૂરા ઉઠાવી લેવા તેનું નામ ઘડણુ છે, અને તેમને પોતાના હાથનો આધાર આપીને ઊભા કરવા તેનું નામ અવલબન છે કોઈ પણ કારણ વિના સાધુ એવું વર્તન કરે તો તે જિનાજ્ઞાનો વિરાધક ગણાય છે, કારણ કે એવું કરવામા તેને આ પ્રકારના દોષ લાગે છે “ મિચ્છત્ત ઉદ્ધાહો ” ઇત્યાદિ—

છાયા—મિધ્યાત્વમુદ્ઘાહો વિરાધના સ્પર્શે માથ સમ્પન્ન ।

પ્રતિગમનાદયો દોષા મુક્તાઽમુક્તે (મોગે અમોગે ચ સતિ) જ્ઞાતમ્યાઃઈતિ ।

ઈતિ પ્રથમ સ્થાનમ્ । તથા—નિર્ગ્રા-યો દુર્ગે—દુઃસ્થેન ગમ્યતે ઇતિ દુર્ગઃ, સ ચ ત્રિવિધઃ—વૃક્ષદુર્ગઃ શ્યાપદદુર્ગો મ્લેષ્છદુર્ગશ્ચ, વદુક્ષમ્—

ત્રિવિદ્ ચ હોદ્ દુર્ગઃ, રુક્ષે સાયમમણુસ્સ દુર્ગા ચ । ”

છાયા—ત્રિવિધશ્ચ મયતિ દુર્ગો વૃક્ષ શ્યાપદમનુષ્યદુર્ગશ્ચ—ઈતિ । તસ્મિન્ તથોક્તે માર્ગે વા, વિપમે—ગર્વપાપાણાદિ સકુલે પર્વતે વા પ્રસ્થલત્વી—ગત્યા પ્રસ્થલિતાં નેમે પેસે દોષ કહે ગયે હૈં “ મિચ્છત ડુઘાહો ” ઇત્યાદિ—

મિધ્યાત્વ ડુઘાહ આદિ યે દોષ ઉસે લગતે હૈં, પેસા યહ પ્રથમ કારણ હૈ । દુસરા કારણ એસા હૈ—ઈસ કારણમેં જય સાધ્વી કિસી દુર્ગમેં યા કિસી વિષમ સ્થાનમેં રિપટકર ગિર પડતી હૈ યા ચલતે ૨ ઉસકા પૈર મોઝ જાતા હૈ કિ જિમસે યહ ચલનેમેં સર્વથા અસમર્થ થન જાતી હૈ તો એસી સ્થિતિમેં ખી સાધુ ઉસે સહાય દે સકતા હૈ તો યહ જિનાજ્ઞાકા વિરાધક નહીં માના ગયા હૈ । જિસ સ્થાન પર દુઃસ્થે ચલા જાય યહ દુર્ગ હૈ, યહ દુર્ગ ત્રીન પ્રકારકા કહા ગયા હૈ—૧૧૧ વૃક્ષ દુર્ગ, દુસરા શ્યાપદ દુર્ગ ઓર તિસરા મ્લેષ્છ દુર્ગ કહા ખી હૈ ।

“ ત્રિવિદ્ ચ હોદ્ દુર્ગ ” ઇત્યાદિ—

એસે દુર્ગમેં અથવા-ગર્ત(ખુદ્ધા)પાપાણ આદિસે સકુલપર્વતકે ઝર ચલતો ચલતી સાધ્વી પ્રસ્થલિત હો જાતી હૈ યા મૂમિમેં ગિર પડતીહૈ તો એસી

કારણ બિના જોવું કરવાથી સાધુને મિધ્યાત્વ ડુઘાહ આદિ દોષ છાએ છે આ પ્રકારનું પહેલું કારણ સમજવું

લીલુ કારણ આ પ્રમાણે છે—કોઈ સધ્વી કોઈ દુર્ગમાં અથવા કોઈ વિષમ સ્થાનમાં ચાલતાં ચાલતાં લપટી બાજ અથવા ચાલતાં ચાલતાં તેમને પદ મચકોડાઈ જવાને લીધે તેઓ યાદી શકે તેમ ન હોય, તે જોવી ખરે સ્થિતિમાં તેમને સહાય દેનાર સાધુ જિનાજ્ઞાનો વિરાધક ગણાતો નથી દુર્ગ ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) વૃક્ષ દુર્ગ (૨) શ્યાપદ દુર્ગ અને (૩) મ્લેષ્છ દુર્ગ એવા સ્થાન પર ચાલવામાં યુરકેલી પડે છે તેનું ૫મું છે કે

ત્રિવિદ્ ચ હોદ્ દુર્ગ ઇત્યાદિ—

એવા મામં પર અથવા ગત, પાપાણ આદિથી મુક્ત પવત હપર ચાલતાં ચાલતાં જો કોઈ સાધ્વીનું પ્રસ્થલિત થઈ બાજ—લપટી બાજ અથવા

મવન્તીં વા પ્રપતન્તી=ભૂમૌ પતનં પ્રાપ્નુવતીં વા, પ્રસ્થલન-પ્રપતન લક્ષણ પ્રદ-
શિકા ગાથા યથા—

“ ભૂમીએ અસપત્તં, પત્તં વા હૃથજાણુજાઈર્હિ ।

પવ્થલનં નાચવ્વં, પવ્થણ ભૂમીએ નચ્છેર્હિ ” ॥૧॥

છાયા—ભૂમૌ અસંપ્રાપ્ત પ્રાપ્તં વા હસ્તજાનુકાદિભિઃ ।

પ્રસ્થલનં જ્ઞાતવ્યં, પ્રપતનમ્ભૌ ગાત્રેઃ ॥૧॥

इति गाथाऽनुसारेण भूमौ असंप्राप्तिः, हस्तजानुकादिषु केनचिदेकेनाङ्गेन वा प्राप्तिः प्रस्थलनं, सर्वगात्रैर्भूमौ प्राप्तिस्तु प्रपतनम्, तत् प्रस्थलनं प्रपतनं वा प्राप्नुवतीं निर्ग्रन्थीं गृह्णन् वा अलम्ब्यमानो वा आज्ञां नातिक्रामतीति द्वितीय स्थानम् । तथा-निर्ग्रन्थः सेके सीयते=वध्यते यस्मिन्नसौ सेकः=सजलकर्दम-

स्थितिमें साधु उसे सहायतादे सकता है । इसमें जिनाज्ञाके उल्लङ्घन करने जन्य दोषसे वह लिप्त नहीं हो सकता है, प्रस्थलन और प्रपतन का लक्षण इस प्रकारसे कहा गया है ।

“ भूमीए असंपत्तं ” इत्यादि—

जिसमें चलते २ इस प्रकारकी स्थिति हो जाय कि भूमि पर गिरना तो हो नहीं किन्तु फिसलना हो जाय वह स्खलन है अथवा हाथ छुट-
नोंके बलही जमीन पर गिरना हो जाय वह प्रस्थलन है । ऐसे प्रस्थलन में शरीर पशुके जैसा झुक जाता है, तथा उसमें भूमिका स्पर्श नहीं होता है, जमीन पर जो शरीरका पतन हो जाता है वह प्रपतन है । इस गाथाके अनुसार भूमि पर गिरना तो हो नहीं उस ओर केवल झुकना हो अथवा-हस्तजानुकादि अंगोंमें से किसी एक अङ्ग द्वारा भूमिका स्पर्श हो वह प्रस्थलन है और समस्त अङ्गोंसे जिस पतनमें जमीनका स्पर्श हो जाय वह प्रपतन है । तृतीय कारण ऐसा है कि

જમીન પર પડી જાય, તો તેમને સહારો દેનાર સાધુ જિનાજ્ઞાનો વિરાધક ગણાતો નથી પ્રસ્થલન અને પ્રપતનનું લક્ષણ આ પ્રમાણે છે

“ ભૂમિએ અસંપત્ત ” ઇત્યાદિ—જ્યારે ચાલતા ચાલતા જમીન પર આખું શરીર પડી જાય છે, ત્યારે પ્રપતન થયું ગણાય છે, પણ લપસી જવાને કારણે શરીર એક આગુ ખૂંટી જાય છે અને હાથ આદિ કોઈ એક જ અંગને આધારે જમીન પર ખડું રહે છે, ત્યારે તેનું પ્રસ્થલન થયું કહેવાય છે. પ્રપતન વખતે આખું શરીર ભૂમિનો સ્પર્શ કરે છે, પણ પ્રસ્થલન વખતે તો કોઈ એક જ અંગ ભૂમિનો સ્પર્શ કરે છે

સ્વસ્મિન્ વા, પક્કે=જલરહિતે કર્મમે વા, પનકે=પનક=શૈવાલ તપ વા, ઉદકે=જલે વા અપકૃષ્ટમાણામ્=ગરિપતર્થી વા, અપોહમાનાં=મલપારામિઃ પ્રથમમાનાં વા નિર્ગ્રંથીં યુક્ત્ વા અવલમ્બમાનોષા નાતિક્રામતિ જિનાશામ્ । इह पतन पक्के पन्के च बोध्यम् । अपवाहने तु सेके उदके च बोध्यम् । इति तृतीय स्थानम् । तथा-નિર્ગ્રંથો નિર્ગ્રંથી નામ્ અરોહયન્=નૌકોપરિ નિર્ગ્રંથ્યા અરોહણ કારયન્ વા, તથા-અરોહયન્=નૌકાસોડયતારયન્ વા નાતિક્રામતીતિ ચતુર્થ સ્થાનમ્ । તથા-સિત્તવિષ્ણાં=સિત્ત્વં=નષ્ટ ચિંચ યસ્યાઃ સા ણામ્, સિત્તવિષ્ણા તુ, રાગમયાપમાના દિના મવતિ । તદુક્તમ્—

અવ સાધ્વી સેકમેં જલ સહિત કીચહમેં ફસ જાય, પક્કમેં જલ રહિત કીચહમેં ફસ જાય પનક મેં શૈવાલ મેં ફસ જાય અથવા - જલ મેં કિસી પ્રવાહ મેં ફસ જાય, ઉસમેં ગિર પહે વા ઉસમેં વહ જાવે તો એસી સ્થિતિમેં ઉસે સહાયતા કરનેકે અમિ પ્રાયસે પ્રેરિત હુખા સાધુ સહારા લેતા હૈ તો વહ જિનાજ્ઞાકા વિરાધક નહીં હોતા હૈ । વહાં પતન પક્કુ ઓર પનકમેં મમજ્ઞના ઓર અપવાહન સેક (સિંચન) યથ ઉદકમેં સમજ્ઞના । ચતુર્થ કારણ એસા હૈ-નિર્ગ્રંથો નિર્ગ્રંથી નામ્ અરોહયન્ વા અપરોહયન્ વા નાતિક્રામતિ ” નિર્ગ્રંથ જબ નિર્ગ્રંથીકો નામ પર ચઢાતા હૈ વા નામસે હસે નીચે ઉતારતા હૈ તો વહ હસ સ્થિતિમેં જિનાજ્ઞાકા વિરાધક નહીં હોતા હૈ । પાંચવાં કારણ એસા હૈ-ક્ષિત્તચિત્તાં દત્તચિત્તાં યજ્ઞાવિષ્ણામ્, ઉન્માદપ્રાણામ્, અપસર્ગપ્રાણામ્, સાધિકરણાં, સપ્રાયશ્ચિત્તા, અરુપાનપ્રત્યાયાતામ્ અર્થજાતાં વા નિર્ગ્રંથાં-નિર્ગ્રંથીં યુક્ત્ વા અવલમ્બમાનો વા નાતિક્રામતિ ’ જપ સાધ્વી

શ્રીગુ કારણ આ પ્રમાણે છે—જ્યારે કોઈ સાધ્વીજી કોઈ જલધુજ્વળ ખાઠામાં અથવા જલરહિત કીચહમાં ફસાઈ આવે, લીલ, ચેવાળ આદિમાં ફસાઈ આવે, પાણીના પ્રવાહમાં ફસાઈ આવે અથવા તણાવાં ઢોલ, તેા જોવી પશ્ચિસ્થિતિમાં તેમને મદદ કરવાના આશયથી તેમને સહારો દેનાર સાધુ જિનાજ્ઞાનો વિરાધક જણાતો નથી. અહીં પતન પક અને પનકમાં સમજડું અને અપવાહન પાણીના પ્રવાહમાં સમજડું

સાધુ કારણ— નિર્ગ્રંથો નિર્ગ્રંથી નામ્ અરોહયન્ વા અપરોહયન્ વા નાતિક્રામતિ કોઈ નિર્ગ્રંથ કોઈ નિર્ગ્રંથીને ઘેસાડવામાં મદદ કરે અથવા નામમાંથી ઉતરવામાં મદદ કરે અને તેા જોવી સ્થિતિમાં તે જિનાજ્ઞાનો વિરાધક જણાતો નથી.

પાંચમું કારણ—“ ક્ષિત્તચિત્તાં, દત્તચિત્તાં યજ્ઞાવિષ્ણામ્, ઉન્માદપ્રાણામ્, અપસર્ગપ્રાણામ્, સાધિકરણાં સપ્રાયશ્ચિત્તા અરુપાનપ્રત્યાયાતામ્ અર્થજાતાં વા

“ રાગેણ વા મણવા, અથવા અવમાણિયા મહંતેજં ।
 ઇત્દિં સ્વિત્તચિત્તા, દોઈ મણિયં જિર્ણિદેહિ ॥ ”

છાયા—રાગેણ વા મયેન વા, અથવા અપમાનિતા મહતા ।

પૈતૈઃ ક્ષિપ્તચિત્તા ભવતિ કથિતં જિનેન્દ્રૈઃ ॥ ૬૩ ॥

અથવા—દક્ષિણચિત્તામ્—દક્ષમ્=દર્પયુક્તં ઉદ્ધતમિતિ યાવત્ ચિત્તં યસ્યાઃ સા તામ્,

ઉદ્ધતચિત્તા તુ સમ્માનાદિના ભવતિ, તદુક્તમ્—

“ ઇહ એસ અસંમાણાસ્વિત્તો સંમણઓ મહે દિત્તો ।

અગ્ગીવ ઇંધણેજં, દિપ્પિહ ચિત્તં ઇમેહિં તુ ॥ ૧ ॥

લાભમણ ઉ મત્તો, અથવા જેઝુણ દુજ્જયં સત્તું ॥ ”

છાયા—ઇત્યેપ અસંમાનાત્ ક્ષિપ્તઃ સમ્માનતો ભવેદ્ દક્ષઃ ।

અગ્નિરિવ ઇન્ધનૈ દિપ્યતિ ચિત્તમેભિસ્તુ ॥ ૧ ॥

લાભમદેન તુ મત્તઃ અથવા જિત્વા દુર્જયં શત્રુમ્ ॥ ૨ ॥

ક્ષિપ્ત નષ્ટ ચિત્તચાલી હો જાય ક્યોંકિ ક્ષિપ્તચિત્તતા તો રાગ, મય, અપ-
 માન આદિસે હો હી જાતી હૈ । કહા મી હૈ—“રાગેણ વા મણ વા” ઇત્યાદિ ।

એસા જિનેન્દ્રદેવને કહા હૈ કિ ક્ષિપ્તચિત્તતા રાગ, મય અથવા અપ-
 માનસે હો જાતી હૈ અથવા જય વહ સાધ્વી દક્ષ દર્પયુક્ત-ઉદ્ધત ચિત્ત-
 ચાલી હો જાય, ક્યોંકિ ઉદ્ધત ચિત્તતા તો સમ્માન આદિ સે હો હી
 જાતી હૈ । કહા મી હૈ—“ ઇહ એસ અસંમાણાસ્વિત્તો ” ઇત્યાદિ ।

મનુષ્ય અસંમાનસે ક્ષિપ્ત હોતા હૈ ઓર સંમાનસે દક્ષ હોતા હૈ ।
 જિસ પ્રકાર અગ્નિ ઇન્ધનસે દક્ષ હોતી હૈ । લાભસે યા મદસે અથવા દુર્જય

નિર્મન્યો નિર્મન્યો ગૃહ્ણ વા અવલમ્બમાનો વા નાતિક્રામતિ ” ન્યારે કૌઠ
 સાધ્વી ૭ ક્ષિપ્ત ચિત્તચાળા (ઉન્માદયુક્ત) થઈ જાય ત્યારે તેમને સહારો
 દેનાર સાધુ જિનાજાનો વિરાધક ગણાતો નથી. ક્ષિપ્તચિત્તતા રાગ, મય, અપ-
 માન આદિ કારણોને લીધે થઈ જાય છે કહ્યું પણ છે કે :

“ રાગેણ વા મણ વા ” ઇત્યાદિ—

જિનેન્દ્રદેવે એવું કહ્યું છે કે ક્ષિપ્તચિત્તતા (ચિત્તભ્રમ) રાગ, મય,
 અથવા અપમાનથી થાય છે અથવા ન્યારે તે સાધ્વી દર્પયુક્ત ચિત્તચાળા
 થઈ જાય છે, ત્યારે પણ એવું બને છે, કારણ કે સન્માન આદિને કારણે
 ઉદ્ધત ચિત્તતાનો સહભાવ તો જોવા મળે જ છે. કહ્યું પણ છે કે :

“ ઇહ એસ અસંમાણાસ્વિત્તો ” ઇત્યાદિ—

જેમ અગ્નિ ઇન્ધનથી પ્રજ્વલિત થાય છે, તેમ મનુષ્ય અસંમાનથી ક્ષિપ્ત
 થાય છે, અને સમાનથી દક્ષ (દર્પયુક્ત) થાય છે લાભ પ્રાપ્ત થવાથી, મદથી
 અથવા દુર્જય શત્રુને હરાવવાથી મનુષ્ય મત્ત થાય છે.

अथवा-यक्षाविष्टाम्-यक्षेण=देवविशेषेण आविष्टा=भास्यता ताम् । यसा
वेन्नस्तु पूर्वमथैरादिना मयति । तदुक्तम्--

" पुण्ड्रमयवेरिण, अथवा रागेण रागिणा सती ।

एषहि जलस्रद्धा, कहिषा सिरि मिणपरिदेहि ॥१॥

छाया--पूर्वमथैरिकेण अथवा रागेण रागिणा सती ।

एताभ्यां यसादिषा फयिता यी जिनकरेनैः ॥इति ।

अथवा-उन्मादमात्राम्=उन्माद=विचानवस्थितिः, त मात्रा ताम् । उन्मादो
यक्षावेशो मोहनीयमेति द्वित्रिषो मयति । तत्र यसायेशः पूर्वमुक्तः । अथ मोह
नीयो बोध्य । अयं च कथाद्दर्शनेन पिचमूर्च्छयासा मयति । तदुक्तम्--

शत्रुको जीतनेसे मनुष्य मरा होता है अथवा वह साध्वी यक्षाविष्ट हो
जाय, देवविशेषसे आस्थित हो जाय-यक्षावेश तो पूर्वमथके पैर आदि
से हो ही जाती है । कहामी है--" पुण्ड्रमयवेरिण " इत्यादि ।

जिनेश्वरदेवने इन दो कारणोंसे साध्वीको यक्षाविष्टा कहा है, या
तो वह किसी पूर्वमथके पैरी देव आदिसे आक्रांत हो जाय या किसी
विशेष रागसे अनुरक्त हो जाय तो ऐसी स्थितिमें वह यक्षाविष्टा कही
जाती है अथवा जब वह साध्वी उन्मादको प्राप्त हुई हो । यिचकी अन
वस्थितिका (विशेष)नाम उन्मादहै, इस उन्मादको स्थितिमें वह आगई हो,
उन्माद यक्षावेश और मोहनीयके मेवसे दो प्रकारका होता है, यक्षा
वेश रूप उन्माद तो ऊपर प्रकट करही दिया गया है, यह मोहनीय रूप

अथवा ते साध्वी ज्यारे यक्षाविष्ट यथ जाय ज्येदे के तेभना शरीरमां
यक्ष नामना देवविशेषने। प्रवेश यवाने कारणे ते साध्वी ज्यारे उ मत्त जनी
जाय त्वारे तेने अवललन आदि रूपे सद्धाये आपनार साधु जिनाज्ञाने।
विशयक जल्लाते नही । " पुण्ड्रमयवेरिण " इत्यादि--

जिनेश्वर भगवाने जेनु कहुं छे के नीयेना जे कारणेने तीपे साध्वीने
यक्षाविष्टा कहेवाय छे--(१) केछं पूजंअपना वेरी देवादिने। शरीरमां प्रवेश
यवासी अथवा (२) केछं विशेष राग बडे अनुरक्त यथ जाय, ते ज्ये
स्थितिमां तेने यक्षाविष्टा कहेवाभां आवे छे

अथवा ज्यारे केछं साध्वी उ मादानस्थामां-चित्तभ्रमनी दावतमां दोय
त्यारे पय तेने सद्धाये देनार साधु जिनाज्ञाने। विशयक यने नही । उ मा
दना जे भगार कहा छे--यक्षावेश रूप उन्माद-तेनु स्वल्प उपर रूप करवाभां
आ यु छे (२) मोहनीय रूप उन्माद-चित्तभ्रम रूप अथ ॥६॥ इति

“ ઉમ્માઓ સ્વલુ દુવિહો, જવસાપસોયમોહણિજ્જો ય ।

જવસાપસો વુત્તો, મોહેણ હમં તુ વોચ્છામિ ॥૧॥

સ્વંગં દદ્દુણં, ઉમ્માઓ અદ્વ પિત્તમુચ્છાપ ।

ઉમ્માયસ્સ ય મયા, કહિયા તિત્થંકરાઈહિ ॥૨॥ ”

છાયા-ઉન્માદઃ સ્વલુ દ્વિવિધો યક્ષાવેશશ્ચ મોહનીયશ્ચ ।

યક્ષાવેશઉક્તો મોહેનૈનં તુ વક્ષ્યામિ ॥૧॥

રૂપમગ્નં ચ દૃષ્ટ્વા ઉન્માદોઽથવા પિત્તમૂર્ચ્છયા ।

ઉન્માદસ્ય ચ ભેદૌ કથિતૌ તીર્થઙ્કરાદિભિઃ ॥ ૨ ॥ ઇતિ ।

અથવા-ઉપસર્ગપ્રાપ્તામ્-ઉપસર્ગમ્=ઉપદ્રવં પ્રાપ્તા તામ્ । ઉપસર્ગશ્ચ દિવ્યમા-
નુપતિર્યક્કૃતત્પ્રાત્ત્રિવિધો વોધ્યઃ । તદુક્તમ્—

ઉન્માદ હૈ, ચિત્તકી અનવસ્થિતિ રૂપ યહ ઉન્માદ રૂપાજ્ઞ દર્શનસે યા
પિત્તકી મૂર્ચ્છાસે હોતા હૈ । કહામી હૈ—

“ ઉમ્માઓ સ્વલુ દુવિહો ” ઇત્યાદિ ।

હસ ગાથાકા અર્થ સ્પષ્ટ હૈ, અથવા જવ વહ સાધ્વી ઉપસર્ગ પ્રાપ્ત
હૈ હો, ઉપદ્રવકો પ્રાપ્ત કરનેકી સ્થિતિવાલી હો ગઈ હો, દેવકૃત ઉપ-
સર્ગ, માનુષકૃત ઉપસર્ગ, તિર્યક્કૃત ઉપસર્ગ, હસ પ્રકારસે ઉપસર્ગ ત્રીન
પ્રકારકા હોતા હૈ, જો ઉપસર્ગ દેવ દ્વારા કૃત હોતા હૈ વહ દિવ્ય ઉપ-
સર્ગ હૈ, જો ઉપસર્ગ મનુષ્ય દ્વારા ક્રિયા ગયા હોતા હૈ વહ માનુષ ઉપ-
સર્ગ હોતા હૈ ઓર જો ઉપસર્ગ પશુ દ્વારા ક્રિયા ગયા હોતા હૈ વહ
તિર્યક્ કૃત ઉપસર્ગ હોતા હૈ । સો હી કહા ગયા હૈ—

દર્શનથી અથવા પિત્તની મૂર્ચ્છાથી થાય છે કહ્યું પણ છે કે : “ઉમ્માઓ સ્વલુ
દુવિહો ” ઇત્યાદિ. આ ગાથાનો અર્થ સ્પષ્ટ છે.

અથવા જ્યારે કોઈ સાધ્વીને ઉપસર્ગો અનુભવવા પડતાં હોય ત્યારે
પણ તેને સહારો દેનાર સાધુ જિનાજાનો વિરાધક ગણાતો નથી. ઉપસર્ગના
નીચે પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર છે—દેવકૃત ઉપસર્ગ, મનુષ્યકૃત ઉપસર્ગ અને તિર્યક-
કૃત ઉપસર્ગ. જે ઉપસર્ગો દેવ દ્વારા કરાય છે, તેમને દિવ્ય ઉપસર્ગો કહે છે,
મનુષ્ય દ્વારા કરાતા ઉપસર્ગોને માનુષી ઉપસર્ગો કહે છે. અને તિર્યક દ્વારા
કરાતા ઉપસર્ગોને તિર્યકકૃત ઉપસર્ગો કહે છે. એ જ વાત “ તિવિદેવ
વસગ્ને ” ઇત્યાદિ ગાથાઓ દ્વારા વ્યક્ત કરવામાં આવી છે.

“ तिबिहेय उषसगो, दिव्ये माणुस्सए तिरिक्खेय ।

दिव्येय पुब्बमणिए माणुस्से अभिओगय ॥१॥

चिज्जाए मेत्तेण य, चुत्तेण व जोह्या अणण्वत्ता ।

तेरिच्छो सीहसप्पाहएहि विहिमो सुणेयन्तो ॥२॥”

छाया-प्रविषय उपसर्गो दिव्यो मानुष्यकः तैश्च य ।

दिव्यश्च पूर्वमणितो मानुष्य आभियोगश्च ॥१॥

विषया मग्नेण च पूर्णेन वा योजिता अनात्यवस्थाः ॥

तैश्च सिंहसर्पादिकैर्विहितो ज्ञातव्यः ॥२॥ इति ।

अथवा-साधिकरणाम्-अधिकरणेन युद्धेन सह वर्तते या सा ताम्-केनापि कारणेन युद्धार्थमुपस्थिताम्, तथा-सप्रायश्चित्ताम्-प्रायश्चित्तेन सह वचते स प्रायश्चित्ता ताम्, अयं भाव-सेविताविचारा-समयितुमुपस्थिता, प्रायश्चित्तस्य प्रायश्चयात् एव वह सी क्लान्ता भवति, मयेन वा क्लान्ता-ग्नाना भवति ताम् । अथवा-मक्तपानप्रत्याख्याताम्-मक्तं पानं च मत्याख्यातं यावज्जीव यथा सा ताम्-प्रत्याख्यातमक्तपानामित्यर्थः । उक्तं चाप-

“ अहं वा हेतं वा, समणीण विरहयं कवित्तस्स ।

मुष्ठाए विरडियाए, कप्पह गहण परिन्नाए ॥१॥”

“ तिबिहे य उषसगो ” इत्यादि ।

इन गाथाओंका अर्थ सुगम है, उम उपसर्गोंमेंसे किसीभी प्रकारके उपसर्गसे वह युक्त हो गई हो अथवा जय वह अधिकरण सहित हो, किसी कारणसे ज्ञेय करनेके लिये उपस्थित हुई हो अथवा-जय वह कृतकविचारोंका प्रायश्चित्त छेनेके लिये उपस्थित हुई हो और प्रायश्चित्तकी प्रथमताके कारण उसे धारण करती हुई क्लान्त बनी अथवा मयसे क्लान्त बनी हो अथवा जिसने यावज्जीव मक्तपानका प्रत्याख्यान कर दिया हो । कहा भी है-“ अहं वा हेतं वा ” इत्यादि ।

अथवा व्यापारे ते साध्वी अभिहरण सुद्धिं कोय-कोय करणुं केशरु इत्याने तैश्च यत्तं कोय, अथवा ते साध्वीने कोय अतिशयाना निवारण निमित्ते प्रायश्चित्त सेवाने । प्रसंग उपस्थित यथा कोय अने पदेही यत्तं च आवे । प्रसंग उद्भवयाने करणुं तं प्रायश्चित्तने भाषण करती ज्येही ते साध्वी क्लान्त बनी अथ कोय, अथवा अयने करणुं आहुणआहुण यत्तं यत्तं कोय सो तेने सदाशे देवार्थ साधु जिनाशाने विराधु अणुतो नथी

‘ अहं वा हेतं वा ’ इत्यादि

छाया—अर्थ वा हेतु वा श्रमणीनां विरहिते कथयतः ।

मूर्च्छया विपतितायाः कल्पते ग्रहणं परिज्ञया ॥ इति ।

अयमर्थः—संस्तारकस्य अर्थम्=उद्देश्यं हेतुं=कारणं वा कथयतः=उपदिशतो निर्ग्रन्थस्य पुरतो मूर्च्छया विपतितायाः निर्ग्रन्थ्याः श्रमणीनां विरहिते सति परिज्ञायाम्=अनशने ग्रहणं कल्पते इति । अथवा—अर्थजाताम्—अर्थः=पतिचौरादेः कार्ये प्रयोजनमिति यावत् जातो यतः सा तथा ताम्—पतिचौरादिना संयमाच्चाल्यमानामित्यर्थः । उक्तं चात्र—

“ अट्टोत्तिजीए कज्जं, संजयं एस अट्टजायाउ ।

तं पुण संजमभावा चालिज्जंतं समवलंबं ॥३॥ ”

छाया—अर्थ इति यस्याः कार्यं संजातम् एषा अर्थजाता तु ।

तां पुनः संयमभानाच्चाल्यमानां समवलम्बः ॥३॥ इति ।

इसका भाव ऐसा है—संस्तारकके (अनशन) प्रयोजनको अथवा कारणको कहते हुए, उपदेश देते हुए, निर्ग्रन्थके समक्ष यदि कोई यावज्जीव भक्तप्रत्याख्यानवाली साध्वी गिर पड़ी हो—और उस समय वहाँ अन्य साध्वियाँ न हो तो ऐसी अवस्थामें साधुका उसे सहारा देना दोषावह नहीं है अथवा—जब वह अर्थजाता हो, पति अथवा चोर आदि जिसे संयमसे चलायमान कर रहे हो । कहा भी है—

“ अट्टोत्ति जीए कज्ज ” इत्यादि ।

जिसे पति अथवा चोर आदिका भय उपस्थित हो गया हो, इस स्थितिमें जो साध्वी आगई हो ऐसी वह अर्थजाता साध्वी है । इस तरह

अथवा कौछ साध्वीको आलुवन अनशनव्रत अंगीकार कथुं होय, अने शारीरिक अशक्तिते कारखु तेको पडी जाय तो त्यां अन्य साध्वीको हाजर न होय कोवी परिस्थितिमां तेमने सहारे देनार साधु जिनाज्ञानो विराधक गणुतो नथी. अथवा न्यारे ते साध्वीलु अथजता होय (जेने पति अथवा चोर आदि सयमथी चलायमान करी रह्या होय कोवी साध्वीने अर्थजता कडे छे) त्यारे तेने सहारे देनार साधु पणु जिनाज्ञानो विराधक गणुतो नथी. कहु पणु छे के “ अट्टोत्ति जीए कज्ज ” इत्यादि—

जेने पति अने चोर आदिने लय उपस्थित थयो होय कोवी परिस्थितिमां भूकथेदा साध्वीने अडी अर्थजता साध्वी कडेवामां आवेत छे.

ક્ષિત્તિષ્ઠાપર્યજાતાપર્યન્તામ્ કામપિ નિર્ગ્ન્યો ગૃહ્ણત્વા અવક્રમ્વમાનો વા નિર્ગ્ન્યો જિનાશ્ચાં નાતિક્રામસીતિ પચ્ચમ સ્થાનમ્ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

અનન્તર યેષુ કારણેષુ વર્ધમાનો નિર્ગ્ન્યો જિનાશ્ચાં નાતિક્રામતિ ઇત્યુક્તાનિ, સમ્પત્તિ નિર્મયવિશેષા આચાર્યૌપાધ્યાયા યેષુ અતિશયેષુ વર્તમાના જિનાશ્ચાં નાતિક્રામન્તિ ઇત્યાદિ—

પૃષ્ઠ—આયરિયુવજ્જ્ઞાયસ્સ ણં ગણંસિ પચ્ચ અહિસેસાં પપ્પણ્ણત્તા, તં જહ્વા—આયરિયુવજ્જ્ઞાણં અતો ઉવસ્સયસ્સ પાપ્પ નિગિજ્જિણ્ણય નિગિજ્જિણ્ણય પપ્પ્ફોદ્દેમાણે વા પમજ્જેમાણે વા ણાહકમહ ૧। આયરિયુવજ્જ્ઞાણં અતો ઉવસ્સયસ્સ ઉચ્ચારપાસવણં વિગિંચ માણે વા વિસોદ્દેમાણે વા ણાહકમહ ૨। આયરિયુવજ્જ્ઞાણં પમ્મુ ઇચ્છાવેયાવહિય કરેજ્જા ઇચ્છા ણો કરેજ્જા ૩। આયરિયુવજ્જ્ઞાણં અતો ઉવસ્સયસ્સ યગરાય વા દુરાય વા યગામી વસમાણે ણાહ કમહ ૪। આયરિયુવજ્જ્ઞાણં યાહિં ઉવસ્સયસ્સ યગરાય વા દુરાય વા વસમાણે ણાહકમહ ૫ ॥ સૂ. ૨૮ ॥

ક્ષિત્તિષ્ઠિસે છેકર 'અર્થજાતા પર્યન્ત તત્કાલી કિસીમી અવસ્થામેં પતિતેં હુઈ કિલીમી સાધ્વીકો સહારા લેનેલાલા સાધુ નિર્મય જિનાશાકા અતિક્રમણ—ઉત્સરણ કરનેલાલા નહીં હોતા હૈ, હસ તરહસે યહ પાંચર્વા સ્થાન હૈ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

હસ તરહસે જિન કારણોકો છેકર નિર્મય જિનાશાકા ઉલ્લઘ્ન કરનેલાલા નહીં હોતા હૈ, ધનકો પ્રદર્શિત કર અથ સૂચકાર નિર્મય વિશેષ જો આચાર્ય મૌર ઉપાધ્યાય હૈ, યે જિન અતિશયોમેં વર્તમાન હોકર જિનાશાકા ઉલ્લઘ્ન નહીં કરતે હૈ, ઊમકા કથન કરતે હૈ—

આ રીતે ક્ષિત્તિષ્ઠિથી બહુને અર્થજાતા પર્યન્તની કોઈ પણ પરિસ્થિતિમાં મુકાયેલા સાધ્વીજીને સહારા દેનાર અમણુ નિર્મય જિનાશાનો વિશદક મણુતો નથી આ પ્રકારનુ આ પાંચમુ કારણ સમજવુ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

કયા પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં સાધ્વીજીને સહારા દેનાર અમણુ નિર્મય જિનાશાનો વિશદક મણુતો નથી જો વાત પ્રકટ કરીને કહે સુત્રકાર જો વાત પ્રકટ કરે છે કે આચાર્ય અને ઉપાધ્યાય કૃપા નિર્મય વિશેષે કયા અવધેથી મુક્ત હોયા છતાં પણ જિનાશાની અવગણના કરનારા બણુતા નથી.

હાયા—આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય સ્વલ્પ ગણે પञ्ચ અતિશેષાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—
આચાર્યોપાધ્યાયઃ અન્તરૂપાશ્રયસ્ય પાદૌ નિગૃહ્ય નિગૃહ્ય પ્રસ્ફોટયન્ વા પ્રમાર્જ-
યન્ વા નાતિક્રામતિ ૧। આચાર્યોપાધ્યાયઃ અન્તરૂપાશ્રયસ્ય ઉચ્ચારપ્રસૂચર્ણ વિવે-
ચયન્ વા વિશોધયન્ વા નાતિક્રામતિ ૨। આચાર્યોપાધ્યાયઃ પ્રભુઃ ઇચ્છા વૈયા-
દૃત્યં કુર્યાત્ ઇચ્છા ન કુર્યાત્ ૩। આચાર્યોપાધ્યાયઃ અન્તરૂપાશ્રયસ્ય એકરાત્રં વા
દ્વિરાત્ર વા એકાકી વસન્ નાતિક્રામતિ ૪। આચાર્યોપાધ્યાયો વહિરૂપાશ્રયસ્ય
એકરાત્રં વા દ્વિરાત્રં વા વસન્ નાતિક્રામતિ ૫ ॥ સૂ. ૦ ૨૮ ॥

ટીકા—‘ આચરિયુવજ્ઞાયસ્સ ’ ઇત્યાદિ—

આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય—આચાર્યઃ—કૌપાંચિદર્થપ્રદાતૃત્વાત્, તા એવ ઉપાધ્યાયઃ
કૌપાંચિત્ સાધુનાં દૃત્વપ્રદાતૃત્વાત્, આચાર્યશ્ચાસૌ ઉપાધ્યાયઃ*વેતિ આચાર્યોપાધ્યાયઃ,
યદ્વા—આચાર્યોઽન્યઃ, ઉપાધ્યાયશ્ચાન્યઃ, ઉભયોઃ સમાહારે—આચાર્યોપાધ્યાયઃ, તસ્ય—
આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય આચાર્યોપાધ્યાયયોર્વા સ્વલ્પ=નિશ્ચયેન ગણે=સાધુસમુદાયે
પञ્ચ અતિશેષાઃ=અતિશયઃ અન્યસાધ્વપેક્ષયા પ્રજ્ઞતાઃ કથિતાઃ । તદ્વથા—આચાર્યો-
પાધ્યાયઃ—આચાર્યોપાધ્યાયપદવિશિષ્ટ એકઃ સાધુઃ આચાર્યત્વોપાધ્યાયત્વવિશિષ્ટં

“ આચરિયુવજ્ઞાયસ્સ ણ ગણંસિ ” ઇત્યાદિ ।

આચાર્યોપાધ્યાયકે અથવા આચાર્ય ઓર ઉપાધ્યાયકે ગણમેં પાંચ
અતિશેષ અન્ય સાધુકી અપેક્ષા અતિશય કહે ગયે હૈં, વે હસ પ્રકારસે
હૈં—“ આચરિય ઉવજ્ઞાય અંતો ઉવસ્સયસ્સ ” ઇત્યાદિ ।

જો આચાર્યોપાધ્યાય—આચાર્યરૂપ ઉપાધ્યાય કિન્हीं કિન્हीं સાધુ-
ઓંકો અર્થ ઓર સૂત્ર પ્રદાતા હોને સે આચાર્યરૂપ
ઓર ઉપાધ્યાય રૂપ હુઆ એસા વહ આચાર્યોપાધ્યાય
અથવા સ્વતંત્ર ઉપાધ્યાય—ઉપાશ્રયકે ખીતર શિષ્યજનકો હસ અભિ-
પ્રાયસે એસા કહકર “ કિ ચરણોં પગકી ધૂલિકો ક્ષટકારનેસે ઉડી હુઈ
ચરણ રજ અન્યકે ડપર પડ જાતી હૈં, અતઃ વે ન પડ જાયેં હસલિયે
ચરણોંકો ઉપાશ્રયકે બાહરહી ક્ષટકાર લેના ચાહિયે, “ ઉપાશ્રયકે ખીતર

“ આચરિયુવજ્ઞાયસ્સ ણ ગણંસિ ” ઇત્યાદિ—

આચાર્યોપાધ્યાયમા અથવા આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયમાં પાંચ અતિશેષ
એટલે કે અન્ય સાધુઓની અપેક્ષાએ અતિશય કહ્યા છે. તે પાંચ અતિશયો
નીચે પ્રમાણે છે—“ આચરિયુવજ્ઞાય અંતો ઉવસ્સયસ્સ ” ઇત્યાદિ—જે આચા-
ર્યોપાધ્યાય—આચાર્ય રૂપ ઉપાધ્યાય કોઈકોઈ સાધુઓને અર્થના દાતા હોવાને
કારણે આચાર્ય રૂપ ગણી શકાય છે અને કોઈકોઈ સાધુઓને સૂત્રના પ્રદાતા
હોવાથી તેઓ ઉપાધ્યાય રૂપ ગણાય છે, એવા તે આચાર્યોપાધ્યાય અથવા
સ્વતંત્ર આચાર્ય અને સ્વતંત્ર ઉપાધ્યાય ઉપાશ્રયની અદર ગિણ્યોને આ

सिद्धविचार्यभातापर्यन्तासु कामपि निर्ग्रन्थी गह्वर वा अवक्रममानो वा निर्ग्रन्थो जिनाज्ञा नातिक्रामतीति पञ्चमं स्थानम् ॥ सू० २७ ॥

अनन्तर येषु कारणेषु वर्तमानो निर्ग्रन्थो जिनाज्ञा नातिक्रामति तान्युक्तानि, सम्पत्ति निर्ग्रन्थविशेषा आचार्योपाध्याया येषु अतिशयेषु वर्तमाना जिनाज्ञा नातिक्रामन्ति तानाह—

मूळम्—आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पच्च अहसेतां पण्णत्ता, तं जहा—आयरिय उवज्झाय अतो उवस्सयस्स पाय निगिज्झिय निगिज्झिय पप्फोहेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णाइक्कमइ १। आयरियउवज्झाय अतो उवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिंष माणे वा विसोहेमाणे वा णाइक्कमइ २। आयरियउवज्झाय पमू इच्छावेयावडिय करेज्जा इच्छा णो करेज्जा ३। आयरिय उवज्झाय अतो उवस्सयस्स एगाराय वा दुराय वा एगागी वसमाणे णाइक्कमइ ४। आयरियउवज्झाय याहिं उवस्सयस्स एगाराय वा दुराय वा वसमाणे णाइक्कमइ ५ ॥ सू० २८ ॥

क्षिप्तचित्तसे छेकर अर्थजाता पर्यन्त तककी किसी भी अवस्थामें पतित हुई किसी भी साध्वीको सहारा देनेवाला साधु निर्ग्रन्थ जिनाज्ञाका अतिक्रमण—उल्लंघन करनेवाला नहीं होता है, इस तरहसे यह पांचवां स्थान है ॥ सू० २७ ॥

इस तरहसे जिन कारणोंको छेकर निर्ग्रन्थ जिनाज्ञाका उल्लङ्घन करनेवाला नहीं होता है, उनको प्रदर्शित कर अथ सूत्रकार निर्ग्रन्थ विशेष जो आचार्य और उपाध्याय हैं, वे जिन अतिशयोंमें वर्तमान होकर जिनाज्ञाका उल्लङ्घन नहीं करते हैं, उनका कथन करते हैं—

आ शीते क्षिप्तचित्तथी दधने अर्थजाता पर्यन्तानी कोर पच्च परिस्थितिमा भूयायेता साध्वीएने सहारे देनाए अभय निर्ग्रन्थ जिनाज्ञानी विराधे अजातो नथी आ प्रभारनु आ पाययु करयु समज्जु ॥ सू० २७ ॥

अथ प्रभारनी परिस्थितिमा साध्वीएने सहारे देनाए अभय निर्ग्रन्थ जिनाज्ञानी विराधे अजातो नथी, जो बात प्रकट करीने दवे सुत्रकार जो बात प्रकट करे छे के आचार्य एने उपाध्याय इय निर्ग्रन्थ विशेष अथ अर्थजातेथी मुक्त देना छता पच्च जिनाज्ञानी अथययुना करनाए अजाता नथी.

છાયા—આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય સ્વલુ ગણે પञ्ચ અતિશેષાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—
આચાર્યોપાધ્યાયઃ અન્તરુપાશ્રયસ્ય પાદૌ નિગૃહ્ય નિગૃહ્ય પ્રસ્ફોટયન્ વા પ્રમાર્જ-
યન્ વા નાતિક્રામતિ ૧। આચાર્યોપાધ્યાયઃ અન્તરુપાશ્રયસ્ય ઉચ્ચારપ્રસ્રવણં વિવે-
ચયન્ વા વિશોધયન્ વા નાતિક્રામતિ ૨। આચાર્યોપાધ્યાયઃ પ્રભુઃ ઇચ્છા વૈયા-
વૃત્યં કુર્યાત્ ઇચ્છા ન કુર્યાત્ ૩। આચાર્યોપાધ્યાયઃ અન્તરુપાશ્રયસ્ય એકરાત્રં વા
દ્વિરાત્રં વા એકાકી વસન્ નાતિક્રામતિ ૪। આચાર્યોપાધ્યાયો વહિરુપાશ્રયસ્ય
એકરાત્રં વા દ્વિરાત્રં વા વસન્ નાતિક્રામતિ ૫ ॥સૂ૦ ૨૮ ॥

ટીકા—‘ આચરિયુવજ્ઞાયસ ’ ઇત્યાદિ—

આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય—આચાર્યઃ—કેપાંચિદર્થપ્રદાતૃત્વાત્, તા એવ ઉપાધ્યાયઃ
કેપાંચિત્ સાધુનાં સૂત્રપ્રદાતૃત્વાત્, આચાર્યશ્વાસૌ ઉપાધ્યાયઃ*વેતિ આચાર્યોપાધ્યાયઃ,
યદ્વા—આચાર્યોઽન્યઃ, ઉપાધ્યાયશ્વાન્યઃ, ઉભયોઃ સમાહારે—આચાર્યોપાધ્યાયઃ, તસ્ય—
આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય આચાર્યોપાધ્યાયયોર્વા સ્વલુ=નિશ્ચયેન ગણે=સાધુસમુદાયે
પञ્ચ અતિશેષાઃ=અતિશયાઃ અન્યસાધ્વપેક્ષયા પ્રજ્ઞતાઃ કથિતાઃ । તદ્વથા—આચાર્યો-
પાધ્યાયઃ—આચાર્યોપાધ્યાયપદવિશિષ્ટ એકઃ સાધુઃ આચાર્યત્વોપાધ્યાયત્વવિશિષ્ટ

“ આચરિયુવજ્ઞાયસ સ્વર્ણ ગર્ણસિ ” ઇત્યાદિ ।

આચાર્યોપાધ્યાયકે અથવા આચાર્ય ઓર ઉપાધ્યાયકે ગણસે પાંચ
અતિશેષ અન્ય સાધુકી અપેક્ષા અતિશય કહે ગચે હૈં, વે હસ પ્રકારસે
હૈં—“ આચરિયુવજ્ઞાય અંતો ઉવસ્સયસ ” ઇત્યાદિ ।

જો આચાર્યોપાધ્યાય—આચાર્યરૂપ ઉપાધ્યાય કિન્હીં કિન્હીં સાધુ-
ઓંકો અર્થ ઓર સૂત્ર પ્રદાતા હોને સે આચાર્યરૂપ
ઓર ઉપાધ્યાય રૂપ હુઆ એસા વહ આચાર્યોપાધ્યાય
અથવા સ્વતંત્ર ઉપાધ્યાય—ઉપાશ્રયકે ખીતર શિષ્યજનકો હસ અભિ-
પ્રાયસે એસા કહકર “ કિ ચરણોં પગકી ધૂલિકો છટકારનેસે ઉડી હુઈ
ચરણ રજ અન્યકે ડુપર પડ જાતી હૈં, અતઃ વે ન પડ જાયેં હસલિયે
ચરણોંકો ઉપાશ્રયકે બાહરહી છટકાર લેના ચાહિયે, “ ઉપાશ્રયકે ખીતર

“ આચરિયુવજ્ઞાયસ સ્વર્ણ ગર્ણસિ ” ઇત્યાદિ—

આચાર્યોપાધ્યાયમા અથવા આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયમાં પાંચ અતિશેષ
એટલે કે અન્ય સાધુઓની અપેક્ષાએ અતિશય કહ્યા છે. તે પાંચ અર્થોત્થયો
નીચે પ્રમાણે છે—“ આચરિયુવજ્ઞાય અંતો ઉવસ્સયસ ” ઇત્યાદિ—જે આચા-
ર્યોપાધ્યાય—આચાર્ય રૂપ ઉપાધ્યાય કોઈકોઈ સાધુઓને અર્થના દાતા હોવાને
કારણે આચાર્ય રૂપ ગણી શકાય છે અને કોઈકોઈ સાધુઓને સૂત્રના પ્રદાતા
હોવાથી તેઓ ઉપાધ્યાય રૂપ ગણાય છે, એવા તે આચાર્યોપાધ્યાય અથવા
સ્વતંત્ર આચાર્ય અને સ્વતંત્ર ઉપાધ્યાય

સાધુદ્વર્પ વા ઉપાશ્રયસ્પ=વસતઃ મન્તાઃ=મધ્યે નિગૂઢા નિગૂઢા=પ્રસ્ફોટનેન ઠડીપ માનૈશ્વર્યરજોમિત્યગ્રીષ્ઠવિરાષના મા મધેદિતિ યતનયા શિષ્ય મૂયો મૂયો મિશાય પાશી પ્રસ્ફોટયન્=આમિગ્રહિકેણ અન્યેન વા સાધુના સ્વકીય રજોહરણાદિના ધરણયોઃ પ્રસ્ફોટન કારયન્ વા, પ્રમાર્જયન્=ઝનૈઃ શ્લોષયન્ વા નાતિક્રામતિ જિનાશ્ચામ્ । અયમશ્રામિમાયઃ—શ્રાપાર્ય ઉપાધ્યાયો વા કુલગણાદિકાર્યેણ નિર્ગત્ય પ્રત્યાહુત । સ્વોત્સર્ગેણ ઉપાશ્રયાદ્ બહિરેષ ધરણી પ્રસ્ફોટયતિ, યદિ સત્ર કશ્ચિત્ સાગારિકો ભવતિ તદા સ ઉપાશ્રયમધ્યે પ્રસ્ફોટયતિ । પ્રસ્ફોટન ચ પ્રમાર્જનવિશેષ एव, નહીં ” પેરોંકે સ્ટકારને સે ચાર ૨ નિપેષ કરતાહે ખોર વદ મ્વયં અપને પેરોંકો કિસી આમિગ્રહિકસે અથવા કિસી અય સાધુસે અપને રજોહરણ આદિસે ઉપાશ્રયકે ખોતર સ્ટકારતાહે દુરકરાતા હૈ યા ડનકી ખોરે ૧ પ્રમાર્જના કરાના હૈ તો એસા કરાતા હુમા યહ આચાર્ય યા ઉપાધ્યાય જિનાશ્ચાકા વિરાષક નહીં હોતા હૈ । તાત્પર્ય્ હમ કપનકા એસા હૈ— આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય કુલગણ આદિકે કાર્યકે નિમિત્ત બાહર ગયે ઓર વસ કાર્ય કરકે બે ફિર પીછે છોટ આયે તો ડરસર્ગ માર્ગ તો યહીહૈ કિ બે ઉપાશ્રયકે બાહર હી અપને ડોનોં પેરોંકો પ્રમાર્જન કર છે પીછે ઉપાશ્રયકે ખોતર પ્રવિષ્ટ હોતે હૈ, પરંતુ યદિ યહાં કોઈ સાગારિક હોના હૈ તો બે ઉપાશ્રયકે ખોતર અપને પેરોંકો પ્રમાર્જન કરવાતેહૈ, યહ પ્રસ્ફો

પ્રમાણે કહે છે પણ પર લાગેલી રજને બાપવાળી તે રજ ઉપરને કોઈની ઉપર પડે છે તેથી તમારે ઉપાશ્રયની બહાર જ પગની રજને બાપવી નાખવી બેઇએ ઉપાશ્રયમાં બાપવી બેઇએ નહીં ”

આ પ્રમાણે તેઓ શિષ્યોને ઉપાશ્રયની અંદર પગની રજ બાપવી નાખવાનો વારંવાર નિર્દેશ કરે છે પરંતુ તેઓ પોતે કોઈ આમિગ્રહિક થાસે અથવા કોઈ અન્ય સાધુ થાસે પોતાના પગને રજોહરણ આદિ વડે ઉપાશ્રયની અંદર જ ડપડાવે છે અથવા ખીરે ખીરે તેની પ્રમાણના કરાવે છે તો બેઇ કરનાર તે આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય જિનાનાના વિરાષક ગણાતા નથી. આ કથનનું તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે—

આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયને કુટ, ગણુ આદિના કાષને નિમિત્તે બહાર જવું પડ્યું હોય. ત્યારબાદ જ્યારે તેઓ પાછા ફરે, ત્યારે ઉત્સવવિધિ પ્રમાણે તો તેમણે ઉપાશ્રયની બહાર જ પોતાના બન્ને પગનું પ્રમાણન કરીને જ ઉપાશ્રયમાં પ્રવેશ કરવો બેઇએ, પરંતુ જો ત્યાં કોઈ સામાનિક દોષ છે તો તેઓ ઉપાશ્રયની અંદર ઢાખણ થયા બાદ પણ પોતાના પગનું

તત્ત્વ પ્રત્યુપેક્ષણપૂર્વકમેવ ભવતિ । પ્રત્યુપેક્ષણં ચ ચક્ષુર્વ્યાપાર एवेति सप्तभङ्गा
अत्र भवन्ति । तथाहि-न प्रत्युपेक्षते न च प्रमाष्टि-इति प्रथमो भङ्गः । न प्रत्यु-
पेक्षते प्रमाष्टि चेति द्वितीयो भङ्गः । प्रत्युपेक्षते न च प्रमाष्टि-इति तृतीयो भङ्गः ।
प्रत्युपेक्षते प्रमाष्टि चेति चतुर्थो भङ्गः । प्रत्युपेक्षणं प्रमार्जनं च दुष्कृतया सुष्ठु-
तया चापि भवतीति चतुर्थे भङ्गे चत्वारो भङ्गा बोध्याः । तत्र दुष्प्रत्युपेक्षते दुष्प्र-
माष्टि-इति प्रथमो भङ्गः । दुष्प्रत्युपेक्षते सुप्रमाष्टि इति द्वितीयो भङ्गः । सुप्रत्यु-

દન રૂપ પૈરોંકા જટકારના પ્રમાર્જન વિશેષરૂપ હીંદૈ, યહ પ્રત્યુપેક્ષણપૂર્વ-
કહી હોના હૈ, ઔર પ્રત્યુપેક્ષણ-પડિલેહણ ચક્ષુર્વ્યાપાર રૂપ હોતા હૈ,
અતઃ યહાં સાત ભઙ્ગ હોતે હૈં-જૈસે-“ ન પ્રત્યુપેક્ષતે ન પ્રમાર્ષ્ટિ ૧ ” ન
વહ પ્રત્યુપેક્ષા કરતાહૈ, ઔર ન પ્રમાર્જના કરતાહૈ? “ ન પ્રત્યુપેક્ષતે પ્રમાર્ષ્ટિ
ચ ૨ ” પ્રત્યુપેક્ષા તો નહીં કરતા હૈ પર પ્રમાર્જના કરતા હૈ ૨ “ પ્રત્યુ-
પેક્ષતે ન ચ પ્રમાર્ષ્ટિ ૩ ” પ્રત્યુપેક્ષા તો કરતા હૈ, પર પ્રમાર્જના નહીં
કરતા હૈ ૩ “ પ્રત્યુપેક્ષતે પ્રમાર્ષ્ટિ ચ ૪ ” ઔર પ્રત્યુપેક્ષા મી કરતા હૈ,
ઔર પ્રમાર્જના મી કરતા હૈ ૪ હસ ચતુર્થ ભઙ્ગકે મી ચાર ભંગ હોતે હૈં,
ક્યોંકિ પ્રત્યુપેક્ષણ ઔર પ્રમાર્જન દુષ્ટરૂપસે વિના ઉપયોગકે ઔર સુ-
ષ્ટરૂપસે ઉપયોગસે મી હોતે હૈં, વે ચાર ભંગ હસ પ્રકારસે હૈં “ દુષ્પ્ર-
ત્યુપેક્ષતે દુષ્પ્રમાર્ષ્ટિ ૧ ” યદિ વહ અસાવધાનીસે અઠ્ઠી તરહસે નહીં
ઉપયોગ દિયે વિના હી-પ્રત્યુપેક્ષા કરતા હૈ, ઔર પ્રમાર્જના કરતા હૈ, તો
વહ પ્રથમ ભંગવાલા હૈ । “ દુષ્પ્રત્યુપેક્ષતે સુપ્રમાર્ષ્ટિ ૨ ” યદિ વહ પ્રત્યુ-

પ્રમાર્જન કરાવી શકે છે રજેહરણ આદિ વડે બંને પગને કોઈ સાધુ પાસે
ઝપટાવવા એ પણ પ્રમાર્જન વિશેષરૂપ જ હોય છે. તે ક્રિયા પ્રત્યુપેક્ષણપૂર્વક
થાય છે, અને પ્રત્યુપેક્ષણ ચક્ષુર્વ્યાપાર રૂપ હોય છે, તેથી અહીં સાત ભાગા
(વિકલ્પો) બને છે “ ન પ્રત્યુપેક્ષતે ન પ્રમાર્ષ્ટિ ” (૧) તે પ્રત્યુપેક્ષા કરતો
નથી અને પ્રમાર્જના પણ કરતો નથી (૨) “ ન પ્રત્યુપેક્ષતે ન પ્રમાર્ષ્ટિ ચ ”
પ્રત્યુપેક્ષા તો કરતો નથી પણ પ્રમાર્જના કરે છે (૩) પ્રત્યુપેક્ષતે ન ચ
પ્રમાર્ષ્ટિ ” પ્રત્યુપેક્ષા તો કરે છે, પણ પ્રમાર્જના કરતો નથી (૪) પ્રત્યુપેક્ષતે
પ્રમાર્ષ્ટિ ચ ” પ્રત્યુપેક્ષા પણ કરે છે અને પ્રમાર્જના પણ કરે છે આ ચોથા
ભાગાના પણ ચાર ભાગા પડી શકે છે, કારણ કે પ્રત્યુપેક્ષણ અને પ્રમાર્જન
ઇષ્ટ રૂપે (ઉપયોગ સહિત પણે) અને સુષ્ટ રૂપે (ઉપયોગ સહિત) પણ થાય
છે તે ચાર ભાગા નીચે પ્રમાણે સમજવા “ દુષ્પ્રત્યુપેક્ષતે દુષ્પ્રમાર્ષ્ટિ ” એ તે
અસાવધાનીથી પ્રત્યુપેક્ષા કરે છે અને અસાવધાનીથી પ્રમાર્જના કરે છે તે

પેસતે દુષ્પ્રમાર્ષિ-ઈતિ તૃતીયો મજ્ઞઃ । સુપ્રત્યુપેક્ષતે સુપ્રમાર્ષિ ઈતિ ચતુર્થો મજ્ઞઃ ।
 ચતુર્થમજ્ઞસ્ય મદ્વચતુષ્પદકરણેન શોષાશ્ચય પથેતિ સત્તમજ્ઞા ચોષ્યાઃ । મનાન્તિમઃ
 શુદ્ધઃ । અવશિષ્ટેષુ સામાચારી ન મત્વતિ । યદિ તુ સાગારિકસ્તતો ગમનોન્મુલો
 મથેષ્વરા પાવણ કાલેન સત્તપદાન્યવકમ્પ્યતે તાવન્ત કાલમ્ ઉપામયાદ્ ધરિષ્
 ણિષ્ટેન્, ગથેચ તસ્મિન્ પાદો પ્રસ્ફોટયેત્ । આચાર્યસ્ય પાદપ્રસ્ફોટનમાચાર્ય

વેક્ષા તો અચ્છી તરહસે નહીં કરતા હૈ, પર પ્રમાર્જના અચ્છી તરહસે
 કરતાહૈ, તો વહ્ હસ દ્વિતીય મંગલાલાહૈ । “સુપ્રત્યુપેક્ષતે દુષ્પ્રમાર્ષિ ૩”
 પદિ વહ્ પ્રત્યુપેક્ષણ અચ્છી તરહસે કરતા હૈ, ઔર પ્રમાર્જન ઠોક તર
 હસે નહીં કરતા હૈ તો વહ્ હસ તૃતીય મંગલાલાહૈ ૩ “સુપ્રત્યુપેક્ષતે
 સુપ્રમાર્ષિ ૪” ઔર યદિ વહ્ અચ્છી તરહસે પ્રત્યુપેક્ષણ કરતા હૈ, ઔર
 અચ્છી તરહસેહી પ્રમાર્જન કરતા હૈ, તો વહ્ હસ ચતુર્થ મંગલાલાહૈ,
 ચતુર્થ મંગલે ચાર મંગ કરનેસે ઘોવ મંગ રહી મંગ હૈ, હસ પ્રકાર કુલ
 યે ૭ મંગ હોતે હૈ । ચતુર્થ મંગલા જો અન્તિમ ચોપા મંગ હૈ વહી શુદ્ધ
 હૈ, અવશિષ્ટ મંગોમેં સામાચારી નહીં હોતી હૈ, યદિ સાગારિક વહાસે
 ગમનોન્મુલ હોતા હૈ, તો જિતને સમયમેં વહ્ સાત પેર આગે ચઢતાહૈ,
 લતને કાલ તક ઉપામયસે યાહર રહના આહિયે ઔર ફિર વસકે અછે
 જાને પર ફિર ચરણોકો પ્રમાર્જન કરના આહિયે આચાર્યકા પાદપ્રસ્ફોટન

પહેલા ભાગમાં (૨) દુષ્પ્રત્યુપેક્ષતે સુપ્રમાર્ષિ ” જો તે પ્રત્યુપેક્ષા તો સારી રીતે
 કરતો નથી પણ પ્રમાર્જના સારી રીતે કરે છે, તો તેને બીજા ભાગમાં
 મૂકી શકાય છે “સુપ્રત્યુપેક્ષતે દુષ્પ્રમાર્ષિ” (૩) જો તે પ્રત્યુપેક્ષા તો સારી
 રીતે કરે છે પણ પ્રમાર્જના સારી રીતે કરતો નથી, તો તેને ત્રીજા ભાગમાં
 મૂકી શકાય છે ‘સુપ્રત્યુપેક્ષતે સુપ્રમાર્ષિ’ જો તે પ્રત્યુપેક્ષા પણ સારી રીતે
 કરે છે અને પ્રમાર્જના પણ સારી રીતે કરે છે તો
 તેને ચોથા ભાગમાં જોડે છે આ રીતે આગળના ત્રણ ભાગ
 અને ચોથા ભાગના જે ચાર ભાગો જને છે, તે મળીને કુલ ૭ ભાગો થાય
 છે ચોથા ભાગના જે ચાર ભાગો કહેવામાં આવે છે તેમના જે ચોથો
 ભાગો છે, જેજ શુદ્ધ છે, બાકીના ભાગોમાં સામાચારી થતી નથી જો
 સાગારિક ત્યાંથી ગમન કરવા માટે, તો જેટલા સમયમાં તે ત્યાં ઠગલાં
 આગળ વધે છે, તેટલા કાળ સુધી ઉપાધ્યયની જહાર રહેવું જોઈએ અને તે
 આવધા મવા બાદ પશુ પ્રમાર્જન કરવું જોઈએ આવધા કરનાં રીક્ષાપર્ષા
 થતી અપેક્ષાએ જે સાધુ નાનો ડોલ તેજે જ આવધાના પશુ રહેદરજ

પેક્ષયા પર્યાયલઘુત્વે સાધુના કર્તવ્યં ન તુ પર્યાયજ્યેષ્ઠેન । પર્યાયજ્યેષ્ઠાસ્તુ
આચાર્યસ્ય ગુરુતુલ્યા એવ । આચાર્યઃ સાગારિકસ્ય સત્તાયામુપાશ્રયન્તર્ગત એવ
પાદૌ પ્રસ્ફોટયતીત્યુક્તમ્ । તત્ર ઉપાશ્રયો યદિ વિપુલો ભવેત્તદાપરિશ્રુત્કસ્થાને
ઉપવિશ્ય પાદૌ તેન પ્રસ્ફોટનીયૌ । યદિ ઉપાશ્રયઃ સદ્ગુચિતઃ ભવેત્તદા સ્વસંસ્તાર-
કાવકાશે એવ સમુપવિષ્ટેન તેન પાદૌ પ્રસ્ફોટનીયૌ । અથ ચેદાચાર્યોપાધ્યાયૌ
સદૈવ સમાગચ્છત્તત્તદા તયોર્યે પર્યાયજ્યેષ્ઠસ્તર્ય પૂર્વ પાદપ્રસ્ફોટના કાર્યા ।
તતોડન્યસ્ય । ઇતિ પ્રથમોડતિશેષઃ । તથા-આચાર્યોપાધ્યાય ઉપાશ્રયસ્ય મધ્યે

આચાર્યકી અપેક્ષા જો પર્યાયમેં લઘુ સાધુ હો એસેહી સાધુકો કરના
ચાહિયે પર્યાયકી અપેક્ષા જ્યેષ્ઠ સાધુકો નહીં કરના ચાહિયે ક્યોંકિ
પર્યાય જ્યેષ્ઠ જો સાધુ હૈં વે આચાર્યકે ગુરુતુલ્યહી હોતે હૈં । આચાર્ય
સાગારિકકી સત્તામેં મૌજૂદગીમેં ઉપાશ્રયકે મીતરહી દોનોં પૈરોંકો પૂંજતા
હૈ, એસા કહા હૈ, સો યદિ ઉપાશ્રય વિપુલ વડા હો તો ઉસે અપરિ શ્રુત્ક
સ્થાનમેં વૈઠકર અપને દોનોં પૈરોંકો શુદ્ધ કરના ચાહિયે ઓર યદિ ઉપાશ્રય
છોટા હૈ, તો ઉસે અપને સંસ્તારકકે સ્થાન પરહી વૈઠકર પૈરોંકો પૂંજ
લેના ચાહિયે યદિ આચાર્ય ઓર ઉપાધ્યાય સાથહી સાથ આયે હોં તો
ઉન દોનોંમેં જો પર્યાયસે જ્યેષ્ઠ હૈ, ઉસે પહિલે ચરણોંકા પ્રમાર્જન કરની
ચાહિયે ઉસકે વાદ દૂસરેકો કરની ચાહિયે હસ પ્રકારકા યહ પ્રથમ

આદિ વડે પ્રસ્ફોટન (૨૪ આપટવાતું કાર્ય) કરવું જોઈએ, પરન્તુ આચાર્ય
કરતાં જે સાધુ દ્વીર્ દીક્ષાપર્યાયવાળો હોય, તેણે આચાર્યતું પાદપ્રસ્ફોટન
કરવું જોઈએ નહીં, કારણ કે પર્યાયજ્યેષ્ઠ જે સાધુઓ હોય છે તેઓ તો
આચાર્યના ગુરુ સમાન ગણાય છે આચાર્ય સાગારિકની હાજરી હોય ત્યારે
ઉપાશ્રયની અદર જ બન્ને પગની પ્રમાર્જના કરે છે, એવું અહીં જે કહેવામાં
આવ્યું છે તેનો ભાવાર્થ એ છે કે જે ઉપાશ્રય વિશાળ હોય તો તેમણે
અપરિશ્રુત્ક સ્થાનમાં બેસીને જ પોતાના બન્ને પગ ધોવા જોઈએ, પણ જે
ઉપાશ્રય નાનો હોય તો તેમણે પોતાના સંસ્તારકના સ્થાન પર બેસીને, જ
પોતાના પગની પ્રમાર્જના કરવી જોઈએ. જે આચાર્ય અને ઉપાધ્યાય બન્ને
બહારથી સાથે આવ્યા હોય, તો તે બન્નેમાં દીક્ષાપર્યાયની અપેક્ષાએ જ્યેષ્ઠ
હોય તેમણે પોતાના પગની પ્રમાર્જના પહેલાં કરવી જોઈએ, અને ત્યાર બાદ
લઘુ દીક્ષાપર્યાયવાળાએ પોતાના પગની પ્રમાર્જના કરવી જોઈએ. આ પ્રકારનું
પહેલા અતિશેષતું સ્વરૂપ છે

ઉચ્ચારમસ્રવણં વિવેચયન્-પરિષ્ઠાપયન્ વા વિશોધયન્ વા જિનાશ્નં નાતિકા
મતિ । અત્રેદં ચોપ્યમ્-આચાર્ય ઉપાધ્યાયો વા ઉત્સર્ગતો વિચારમૂર્મિ ન ગચ્છતિ
દોષસમ્પ્રવાદ્, સપાદિ-આચાર્યાદિઃ કદાચિત્ તિથિષુ ગચ્છન્ પૂર્વે 'શ્રુતાદિ
ગુણયુક્તોઽય' -મિતિ બુદ્ધ્યા આત્મકાવિમિરમ્યુત્પાનાદિના સત્ક્રિયતે, યમનેકશ્ચો
વિચારમૂર્મિ ગચ્છતિ તતઃ આત્મકાદય આલસ્યવશાત્ ન તથા કુર્વન્તિ, તથોઽન્યે
કદાચિત્ એવ મન્યન્તે-યદેતે આત્મકાદયો ગુણિનાં પૂજકા મથન્તિ, તે સૈવ

અતિશય છે । દ્વિતીય અતિશય એસા છે-આચાર્ય ઔર ઉપાધ્યાય ઉપા
અયમે ઉચ્ચાર ઔર પ્રસ્રવણકા નિધારણ કરતે હૈ તો
વે જિનાશ્નકા ઉત્સર્ગન નહી કરતે હૈ, યહાં એસા સમસ્રના વાહિયે
આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય દોષોંકી સંભાવનાસે વિચારમૂર્મિમેં નહીં
જાતે હૈ, હસકા કારણ એસા છે, કિ જય વે વિચાર મૂર્મિમેં જાતે સમય
માર્ગ સે નિકલતેહૈ, તો ઉમ સમય પહિલે આવક લોગ ઉન્હે હસ બુદ્ધિસે
કિ વે શ્રુતાદિ ગુણોંસે યુક્ત હૈ, અમ્યુત્પાન આદિ દ્વારા સત્ક્રુત કરતે હૈ,
પર યદિ વે વાર ૨ વિચાર મૂર્મિમેં જામેકે લિયે માર્ગસે હોકર નિકલને લગતે
હૈ, તો આવક આદિજન આલસ્યકે વશસે વાર ૨ એમા નહીં મી કરતે
હૈ તો એસી વનકી વશા દેવકર અન્ય જન કદાચિત્ એસા મી માનને
લગતે હૈ, કિ વે આવકજન તો ગુણિજનોંકે પૂજક હોતે હૈ, ઔર ફિર

દ્વિતીય અતિશય આ પ્રકારનો છે-આચાર્ય અને ઉપાધ્યાય એ ઉપા
અયમં ઉચ્ચાર અને પ્રસ્રવણની (મગમૂત્રની) પરિષ્ઠાપના અથવા વિશેષના
કરે, તો તેઓ જિનાશ્નની વિશાધના કરનારા અણાતા નથી બહીં એમ
સમજતુ એકએ કે આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય કોયોની સંભાવનાને કીધે
વિચારમૂર્મિમાં (ચીજમૂર્મિમાં) જતા નથી. તેનું કારણ નીચે પ્રમાણે સમજતુ
અચારે વિચારમૂર્મિમાં જ્યાં માટે તેઓ નીકળે છે ત્યારે તેમના માર્ગમાં જે
જે આવકો આવે છે, તેઓ તેમને શ્રુતાદિ શ્રુતોથી મુક્ત અર્થાતે ઉત્થાન
આદિ દ્વારા તેમનો સત્કાર કરે છે. પણ એ તેઓ વાર ૧૨ વિચારમૂર્મિમાં
જ્યાંને માટે માર્ગ પરથી પસાર થાય છે, તો જ વહેં વહેં આગસને આધીન
થઇને અશ્રુત્યન આદિ દ્વારા તેમનો સત્કાર કરવાનો કદાચ બંધ પણ કરી
નાયે છે. માર્ગથી પસર થતાં તે આચાર્ય આદિના આવકો દ્વારા અશ્રુત્યન
આદિ દ્વારા સત્કાર ન થતો એકને બીજા દોઠો કદાચ એવી પણ કલ્પના
કરવા માટે છે કે આવકો તો શુભીજનોના પૂજક હોય છે, છતાં તેઓ આ

ન સત્કુર્વન્તિ, અતો નૂનમયં પતિત્વમિતિ । તથા-અયં દ્વિર્ઘુજ્જતેત્યવર્ણવાદો ભવતિ, મત્સરિકર્તૃકમરણાથશઙ્કાઽપિ ચ તસ્ય ભવતીતિ । ઇતિ દ્વિતીયોઽતિશેષઃ ।

તથા-આચાર્ય ઉપાધ્યાયો વા પ્રભુઃ=સ્વામી ભવતિ ગણનાયકત્વાત્, અત-
સ્તસ્ય યદિ ઇચ્છા ભવેત્ તદા સ વૈયાવૃત્યં=સાધુભ્યો ભક્તપાનાદિદાનરૂપં
કુર્યાત્, તસ્ય ઇચ્છા ન ભવેત્તદા ન કુર્યાત્ । આચાર્યોદિર્ગણનાયકો ભવતિ, અત
સ્તસ્ય વૈયાવૃત્યરૂપે કામચારઃ, સ સ્વેચ્છયા કુર્યાદપિ, નાપિ ચ કુર્યાત્ । નાસ્તિ
તસ્મિન્ પ્રતિવન્ધ ઇતિ ભાવઃ । ઇતિ તૃતીયોઽતિશેષઃ । તથા-આચાર્ય ઉપાધ્યાયો

યે અવ એસા ક્યોં નહી કરતે હૈં, જો ઇનકે યે ગુરુજન યહાંસે હોઝર
નિકલતે હૈં, ઓર યે ડનકા અભ્યુત્થાન આદિ દ્વારા સત્કાર આદિ નહીં
કરતે હૈં, અતઃ નિયમસે યે પતિન હૈં, ઇસલિયે યે એસા કરતે હૈં, તથા
યે દો વાર ભોજન કરતે હૈં, ઇસીલિયે ઇન્હેં અનેક વાર વિચારભૂમિમેં
જાના પડતા હૈ, એસા અવર્ણવાદ મી હોતા હૈ, તથા જો માત્સર્ય ભાવસે
યુક્ત હોતે હૈ, એસે વ્યક્તિયોં દ્વારા ડન્હે અપને મારે જાને આદિકી શઙ્કા
મી હો સકતી હૈ, ઇસીલિયે વે ઉચ્ચાર પ્રસવળ આદિ ઉપાશ્રયકે મીત-
રહી કરતે હૈં, ઓર ડસકી વિશોધના કરતે હૈં, એસા યહ દ્વિતીય અ-
તિશેષ હૈ, તૃતીય અતિશેષ એસા હૈ, ગણનાયક હોનેસે આચાર્ય યા
ઉપાધ્યાય અપને ગણકા સ્વામી હોતા હૈ, અતઃ યદિ ડસકી ઇચ્છા હોતી
હૈ, તો વહ અન્ય સાધુજનોંકી ભક્તપાન આદિકે દેનેરૂપ ડનકી વૈયા-
વૃત્તિ કરતા હૈ, ઓર યદિ ડસકી ઇચ્છા નહી હોતી હૈ, તો વહ એસા
નહીં મી કરતા હૈ, આચાર્ય આદિ ગણનાયક હોતે હૈં, અત અન્ય સા-

તેમના આગ્રયને અભ્યુત્થાન આદિ દ્વારા સત્કાર શા માટે કરતા નથી ?
અવશ્ય આ સાધુનું પતન થયું હોવું જોઈએ, અને તે કારણે શ્રાવકો તેમને
સત્કાર નહીં કરતા હોય વળી લોકો એવી કલ્પના પણ કરે છે કે તેઓ
બે વાર જન્મે છે, તેથી તેમને અનેકવાર વિચારભૂમિમાં જવું પડે છે, આ
પ્રકારનો તેમનો અવર્ણવાદ (નિંદા) પણ થાય છે વળી માત્સર્યભાવ યુક્ત
વિરોધીઓ વડે પોતાની હત્યા થઈ જવાની શંકા પણ તેમને રહે છે. તે
કારણે તેઓ ઉચ્ચાર પ્રસવળ આદિ ઉપાશ્રયની અદરજ કરે છે અને તેની
વિશોધના કરે છે આ પ્રકારનો આ બીજો અતિશેષ છે.

ત્રીજો અતિશેષ આ પ્રકારનો છે—ગણનાયક હોવાને કારણે આચાર્ય
અથવા ઉપાધ્યાય પોતાના ગણના સ્વામી હોય છે. અન્ય સાધુઓને ભક્તપાન
આદિ દેવા રૂપ તેમનું વૈયાવૃત્ય તેઓ ઐશ્વર્ય રીતે કરે છે, એટલે કે તેમની

યા સાધનાદિરૂપ કારણવશાત્ ઉપાધ્યયસ્ય મધ્યે એકરાત્રિ યા દ્વિરાત્રિ યા એકાકી વસન્ નાતિક્રામતિ જિનાજ્ઞામિતિ ચતુર્થોઽતિશેષ । તથા—આચાર્ય ઉપાધ્યાયો યા સાધનાદિરૂપકારણવશાત્ ઉપાધ્યાયદ્ વદિ—એકરાત્રિ યા દ્વિરાત્રિ યા એકાકી વસન્ જિનાજ્ઞાં નાતિક્રામતીતિ પશ્યમોઽતિશેષઃ । યત્રેદં વોદ્યમ્ ગણાય એદક સ્યાદિતસ્ત્રયોઽતિશેષા ન મશન્તિ, અતિમૌ દ્વૌ મત્વઃ । તદુક્તમ્—

“ ગણાવચ્છેયવસ્ત ગર્ણસિ ણં દો અરસસા પળ્લતા, ત જહા—ગમાવચ્છેયવ અતો ઉવસ્સયસ્સ ઇગરાય યા દુરાયં યા વસમાણે ણો અહ્કમર ૧, ગણાવચ્છેયવ

ધુમ્બોક્કી વૈયાપૃત્તિ કરનેમેં વસત્કી કામચારતા હૈ, ઇમ્મકી રૂઝા હોતી હૈ, તો વહ કરતા હૈ ઓર નહીં હોતી હૈ તો નહીં કરતા હૈ । અન્ય સાધુઓંકી વૈયાપૃત્તિ કરનેમેં ઉસે પ્રતિષ્ઠ નહીં હૈ । ચતુર્થ અતિશેષ પેસા હૈ, આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય સાધનાદિ રૂપ કારણકે વદાસે ઉપા અથમેં એક રાત્ર યા દો રાત્ર તક અકેલા રહતા હૈ, તો વહ જિનાજ્ઞાકા વલ્લહન નહીં કરતા હૈ, પાંચવાં અતિશેષ પેસા હૈ, આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય સાધનાદિ રૂપ કારણકે વદાસે ઉપાધ્યયકે બાહર એક રાત્ર અથવા દો રાત્ર તક યદિ બાહર રહતા હૈ, તો વહ જિનાજ્ઞાકા ઘિરાયક નહીં ધનતા હૈ, આદિકે ત્રીન અતિશેષ ગણાવચ્છેદકો નહીં હોતે હૈ, અન્તિમ દો અતિશેષ હોતે હૈ તદુક્તમ્—

“ ગણાવચ્છેયવસ્ત ગર્ણસિ ણં દો અરસેસા પળ્લતા—ત જહા ગણા વચ્છેયવ વાદિ ઉવસ્સયસ્મ ઇગરાય યા દુરાયં યા વસમાણે ણો અહ્કમ

હજા યાપ તો કરે છે અને હજા ન થાય તો કરતા નથી તેઓ અધુનાયક હોવાથી તેમને માટે વૈયાપૃત્ત કરવાનું ફરજિયાત નથી, અને વૈયાપૃત્ત કરવાનો નિયમ પણ નથી

શીયો અતિશેષ આ પ્રકારનો છે—આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય સાધના આદિ રૂપ કારણે ઉપાધ્યયમાં એકથી બે રાત્ર મુખી બેઠેલા રહે તો તેઓ જિનાજ્ઞાના વિરાધક ગણાતા નથી.

પાંચમો અતિશેષ આ પ્રકારનો છે—આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય સાધના આદિ રૂપ કારણે વીધે ઉપાધ્યયની જગ્યાએ એક અથવા બે રાત્ર મુખી રહે છે, તો તેઓ જિનાજ્ઞાના વિરાધક ગણાતા નથી

પહેલાં ત્રણ અતિશેષનો ગણાવચ્છેદકમાં સહભાવ હોતો નથી, છેલ્લા બે અતિશેષોનો જ તેમનામાં સહભાવ હોય છે કર્મું પણ છે કે—

“ ગણાવચ્છેયવસ્ત ગર્ણસિ ણં દો અરસસા પળ્લતા—ત જહા ગમાવચ્છેયવ વાદિ વરાયયાહ ઇગરાયં યા દુરાય યા વસમાણે ણો અહ્કમર ૧ । ગમાવચ્છેયવ

વાહિં ઉવસ્સયસ્સ एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे णो अइक्कमइ २ ॥”

છાયા — ગણાવચ્છેદકસ્ય ગણે સ્વલુ દ્વૌ અતિશેષૌ પ્રજ્ઞસૌ, તથા—ગણાવચ્છેદકઃ અન્તરૂપાશ્રયસ્ય એકરાત્રં વા દ્વિરાત્રં વા વસન્ નાતિક્રામતિ ૧, ગણાવચ્છેદકો વહિરૂપાશ્રયાત્ એકરાત્રં વા દ્વિરાત્ર વા વસન્ નાતિક્રામતિ ૨।ઇતિ ।

યદિ આચાર્યોપાધ્યાયગણાવચ્છેદકાઃ સહૈવ સમાગચ્છેયુસ્તત્ર યદિ ગણાવચ્છેદઃ પર્યાયજ્યેષ્ઠો ભવતિ, તદા પર્યાયજ્યેષ્ઠત્વાદ્ ગણાવચ્છેદકસ્ય પ્રથમં પાદપ્રસ્ફોટના, અનન્તરમાચાર્યોપાધ્યાયયોઃ પર્યાયક્રમાનુસારેणेતિ ॥સૂ. ૦ ૨૮॥

આચાર્યોપાધ્યાયયોર્ગણેઽતિશેષા ઉક્તા, સમ્પ્રતિ તયોરતિશયવિપરીતાનિ ગણનિર્ગમનકારણાનિ પ્રાહ —

મૂલમ્—પંચહિં ઠાગેહિં આયરિયુવજ્ઞાયસ્સ ગણાવક્કમણે પળળત્તે તં જહા—આયરિયુવજ્ઞાણ ગળંસિ આળં વા ધારણં વા નો સમ્મં પડંજિત્તા ભવઈ ૧। આયરિયુવજ્ઞાણ ગળંસિ આહારાયણિયાણ કિઙ્કમ્મં વેળઈયં ણો સમ્મં પડંજિત્તા ભવઈ ૨। આયરિયુવજ્ઞાણ ગળંસિ જે સુયપજ્જવજ્ઞાણ ધારેઈ તે કાલે કાલે નો સમ્મમણુપ્પવાણ્ત્તા ભવઈ ૩। આયરિયુવજ્ઞાણ

મઈ ૧ ગણાવચ્છેદયણ વાહિં ઉવસ્સયસ્સ एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे णो अइक्कमइ २ ” इसका अर्थ पूर्वोक्तानुसारही है—

यदि आचार्य उपाध्याय और गणावच्छेदक ये तीनों साथही आते हैं, तो उनमें यदि गणावच्छेदक पर्यायसे ज्येष्ठ है, तो उस गणावच्छेदककी पादप्रस्फोटना (प्रमार्जना) सबसे पहिले होती है, इसके बाद आचार्य और उपाध्यायकी पर्यायके क्रमानुसार होती है ॥सू. ० २८॥

વાહિં ઉવસ્સયસ્સ एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे णो अइक्कमइ २ ”

આ સૂત્રપાઠને ભાવાર્થ પૂર્વોક્ત કથન અનુસાર જ સમજવો. જો આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અને ગણાવચ્છેદક એ ત્રણે સાથે જ આવે, તો ગણાવચ્છેદક જો પર્યાયની અપેક્ષાએ જ્યેષ્ઠ હોય તો તે ગણાવચ્છેદકની પાદપ્રસ્ફોટના (પગની પ્રમાર્જના) સૌથી પહેલા થાય છે અને ત્યાર બાદ પર્યાયના ક્રમ અનુસાર આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયના પગની પ્રમાર્જના થાય છે ॥

ગણંસિ સગણિયાણ વા પરગણિયાણ વા નિગ્ગધીણ વાહિલ્લેસે
 મવ્વઃ ૪। મિત્તે ણાઈગણે વા સે ગણાઓ અવ્વક્રમેઙ્ગા, તેસિં
 સંગહોવરગહદ્વયાણ ગણાવ્વક્રમણે પપ્પણ્ણસે ॥ સુ. ૨૯ ॥

છાયા—પદ્ધતિ: સ્થાનૈ: આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય ગણાવ્વક્રમણ પદ્ધત્તમ્, તથા—
 આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે આજ્ઞાં વા ધારણાં વા નો સમ્પક્ પ્રયોક્તા મરતિ ૧,
 આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે યથારાસિનકતયા કૃતિકર્મ ચૈનયિક નો સમ્પક્ પ્રયોક્તા
 મરતિ ૨। આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે યાનિ બ્રુતપવચનાતાનિ ધારયતિ તાનિ કાષ્ઠે
 કાષ્ઠે નો સમ્પક્ બ્રુતપવાચવિતા મરતિ ૩। આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે સ્વગણિ-
 કાપો વા પરગણિકાપાં વા નિર્ગ્ગધાં વાહિલ્લેસો મરતિ ૪। મિત્તં જ્ઞાતિગણો વા
 સ્વપ ગમાત્ અવ્વક્રમેત્ તેપાં સમ્પ્રોવ્વક્રમણાં ગણાવ્વક્રમણ પદ્ધત્તમ્ ૪ ॥૫૦૨૯॥

ટીકા - 'પવહિ ઠાણેહિ' इत्यादि—

પદ્ધતિ સ્થાનૈ = કારણૈ: આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય-આચાર્યોપાધ્યાયરશિશિષ્ય
 સ્પર્શસ્ય સાધો: આચાર્યસ્ય ઉપાધ્યાયસ્ય ચ માધુદ્વયસ્ય વા ગણાવ્વક્રમણ-ગણાત્ =
 ગચ્છાત્ અવ્વક્રમણ = નિસ્મરણ = વર્ણિર્ગમનમ્ પદ્ધત્તમ્ । તથા—તાનિ સ્થાનાન્યાહ—
 આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે = ગચ્છે આજ્ઞાં = ' હે શુને । મરતેદ ચિત્તેપમ્ ' इत्येवंप्राम्,

આચાર્ય ઓર ઉપાધ્યાયકે ગણમેં હમ પ્રકારસે જો અતિશય હોતે
 હેં યે પ્રકાર કિયે અવ સુત્રકાર જન દોનોંકે ગણસે નિર્ગમન હોનેકે કાર
 ણોંકો જો અતિશયોસે ચિપરીત હોસે હેં કહસે હેં—

'પવહિ ઠાણેહિ આચરિયઠવજ્ઞ યસ્સ' इत्यादि सूत्र २९ ॥

ટીકાર્થ—પાંચ કારણોંકો હેકર આચરિય રૂપ ઉપાધ્યાયકા અથવા આચાર્ય
 ગૃથ ઉપાધ્યાયકા ગચ્છસે નિસ્મરણ હોના કહા ગયા હેં—યે પાંચ કારણ
 હસ પ્રકારસે હેં—“આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે આજ્ઞાં વા ધારણાં વા” इत्यादि

આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયના ગણમાં આ પ્રકારના જે અતિશયો હોય
 છે તે પ્રકાર ઉપાધ્યાયના આ વા હવે સૂત્રકાર તે બન્નેના ગણમાંથી નીકળી
 જવાના કારણેનું નિરૂપણ કરે છે અતિશયો કરતાં નિર્ગમન વિહરીત હોવાથી
 અતિશયોનું નિરૂપણ કરીને સૂત્રકાર નિર્ગમનના કારણે પ્રકટ કરે છે

ટીકાર્થ—“પવહિ ઠાણેહિ આચરિયઠવજ્ઞાપસ” इत्यदि—

નીચનાં પાંચ કારણોંકો હોયે આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયને અથવા આચાર્ય
 અને ઉપાધ્યાયને ગણમાંથી નીકળી જવું પડે છે તે કારણે આ પ્રમાણે છે

(૧) આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે આજ્ઞાં વા ધારણાં વા इत्यादि—એ આચાર્ય

ધારણાં=‘ નેદં વિધેયમ્ ’ इत्येवंरूपां वा नो सम्पक्=यथौचित्येन प्रयोक्ता=प्रवर्त्तको भवति । अयं भावः—गणस्य दुर्विनीतत्वात् आज्ञां धारणां वा गणे प्रवर्त्तयितुमशक्नुवन् आचार्य उपाध्यायो वा गणादपक्रामति कालकाचार्यवदिति । आज्ञाधारणयोर्विशिष्टव्याख्याऽस्यैव स्थानकस्य प्रथमोद्देशे त्रयोदशसूत्रे द्रष्टव्या । इति प्रथमं स्थानम् । तथा—आचार्योपाध्यायो गणे=गणविषये यथारात्निक तया=पर्यायज्येष्ठानुसारेण कृतिकर्म=वन्दनकं वैनयिकं=विनयं च नो सम्पक् प्रयोक्ता भवति । अयं भावः—आचार्येणापि प्रतिक्रमणक्षामणादिषु पर्यायज्येष्ठानामुचितो

આચાર્ય યા ઉપાધ્યાય ગચ્છમેં આજ્ઞાકા—“ હે મુને ! આપકો યહ કરના ચાહિયે ” इस प्रकारका निषेधका औचित्यरूपसे यदि प्रवर्त्तक नहीं होता है, तथा आज्ञा और धारणा नहीं करा सकता है, तो उसे गणसे पृथक् हो जाना चाहिये ऐसा यह प्रथम कारण है । तात्पर्य इसका ऐसा है, कि अपना गण यदि दुर्विनीत हो गया है, और वह गणमें अपनी आज्ञा एवं धारणाको प्रवृत्त करानेमें अशक्य है, तो ऐसी स्थितिमें उसका कालकाचार्यकी तरह गणसे बाहर होना श्रेयस्कर है । आज्ञा और धारणाकी विशिष्ट व्याख्या इसी स्थानके प्रथम उद्देशकमें १३ वे सूत्रमें देख लेनी चाहिये । द्वितीय स्थान ऐसा है—आचार्य एवं उपाध्याय यदि अपने गणमें पर्याय ज्येष्ठके अनुसार कृतिकर्म वन्दनक एवं वैनयिक विनय इनके प्रयोक्ता नहीं होते हैं, तो उन्हें गणसे पृथक् हो जाना चाहिये इसका भाव ऐसा है. आचार्यको भी प्रतिक्रमण क्षामणा आ-

અથવા ઉપાધ્યાય પોતાના ગણમાં આજ્ઞા અને ધારણાનું ઉચિત રીતે પાલન કરાવવાને સમર્થ ન હોય તો તેમણે ગણમાંથી નીકળી જવું જોઈએ. “ હે મુનિ ! તમારે આ પ્રમાણે કરવું જોઈએ ” આ પ્રકારના આદેશને આજ્ઞા કહે છે. “ હે મુનિ ! તમારે આ પ્રમાણે ન કરવું જોઈએ ” આ પ્રકારના નિષેધનું નામ ધરણા છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એવું છે કે પોતાનો શિષ્યસમુદાય દુર્વિનીત થઈ ગયો હોય અને તે કારણે પોતાની આજ્ઞા અને ધારણાનું તેમની પાસે પાલન કરાવવાનું અશક્ય બની ગયું હોય, તો એવી પરિસ્થિતિમાં કાલકાચાર્યની જેમ તેમણે ગણમાંથી નીકળી જવું જોઈએ. આજ્ઞા અને ધારણાની વિસ્તૃત વ્યાખ્યા આજ સ્થાનના પહેલા ઉદ્દેશાના ૧૩ માં સૂત્રમાં આપવામાં આવી છે, તો ત્યાંથી વાંચી લેવી જોઈએ.

બીજુ કારણ આ પ્રમાણે છે—જો આચાર્ય અને ઉપાધ્યાય પોતાના ગણમાં દીક્ષાપર્યાયની અપેક્ષાએ કૃતિકર્મ, વન્દણા અને વૈનયિકના પ્રયોક્તા ન હોય, તો તેમણે ગણમાંથી અલગ થઈ જવું જોઈએ આ કથનનો ભાવાર્થ

ગણંસિ સગણિયાપ્ વા પરગણિયાપ્ વા નિગ્ગથીપ્ ઘહિલ્લેસે
 ભવઙ્ ૪૧ મિત્તે ણાઙ્ગણે વા સે ગગાઓ અવ્વકમેઙ્ગા, તેસિં
 સંગહોવગ્ગહટ્ઠયાપ્ ગણાવ્વકમણે પપ્પણસે ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

છાપા—પદ્ધતિઃ સ્યનૈઃ આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય ગણાવ્વકમણ મદ્ધત્તમ્, તથવા—
 આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે આઢ્ઠાં વા ધારણાં વા નો સમ્પક્ક પ્રયોક્તા મરતિ ૧,
 આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે યથારાત્નિકતયા કૃતિકર્મ વૈનયિક નો સમ્પક્ક પ્રયોક્તા
 મરતિ ૨। આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે યાનિ યુતપર્યવજ્ઞાતાનિ ધારયતિ ટાનિ કાષ્ઠે
 કાષ્ઠે નો સમ્પક્ક અનુપવાધપિતા મરતિ ૩। આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે સ્વમયિ
 કાયાં વા પરમયિદ્દાર્ષાં વા નિર્ગ્ગમ્યો ઘરિવેદો મરતિ ૪। મિત્તં દ્ઢાતિગ્ગમ્મો વા
 ત્તસ્ય ગગાત્ અરકામેત્ તેપો સમ્પદાપમ્પદાર્થોપ ગમારકમમે મદ્ધમમ્ ૪ ॥૫૦૨૧॥

તીકા—‘પચ્છિ ઠાણેહિ’ ઇત્યાદિ—

પદ્ધતિ સ્યનૈઃ=કાળે આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય-આચાર્યોપાધ્યાયસ્ત્રિચ્છિ
 સ્યક્તસ્ય સાધાઃ આચાર્યસ્ય ઉપાધ્યાયસ્ય ચ સાધુદયસ્ય વા ગણાવ્વકમમ્-ગણાત્
 ગચ્છાન્ અવ્વકમણ=નિસ્સરણ=વિર્ગમનમ્ મદ્ધત્તમ્ । તથવા-તાનિ સ્વાનાન્વાદ—
 આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે=ગચ્છે આઢ્ઠાં=‘ હે યુને ! મથતેવં તિથેપમ્ ’ ઇત્યેવંરૂપાત્,

આચાર્ય ઓર ઉપાધ્યાયકે ગણમેં હમ્ પ્રકારસે જો અતિશેષ હોતે
 હેં વે પ્રકટ કિયે અવ સૂત્રકાર હન દોનોંકે ગણસે નિર્ગમન હોનેકે કાર
 ણોંકો જો અતિશયોસે ધિપરીત હોતે હેં કહતે હેં—

‘પચ્છિ ઠાણેહિ આપરિયવજ્ઞા પસ્સ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૨૧ ॥

તીકાર્થ—પાંચ કારણોંકો હેકર આચાર્ય રૂપ ઉપાધ્યાયકા અથવા આચાર્ય
 પર્વ ઉપાધ્યાયકા ગચ્છસે નિસ્સરણ હોના કહા ગયા હેં—વે પાંચ કારણ
 હસ પ્રકારસે હેં—“આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે આઢ્ઠાં વા ધારણાં વા” ઇત્યાદિ

આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયના ગણમાં આ પ્રકારના જે અતિશેષ હોય
 છે તે પ્રકટ કરવામાં આન્ધા. હવે સૂત્રકાર તે બંનેના મણુમાંથી નીકળી
 જવાના કારણેનું નિરૂપણ કરે છે અતિશેષ કરતાં નિર્ગમન વિધીત હોવાથી
 અતિશેષનું નિરૂપણ કરીને સૂત્રકાર નિર્ગમનના કારણે પ્રકટ કરે છે

તીકાર્થ—“ પચ્છિ ઠાણેહિ આપરિયવજ્ઞાવાસ ” ઇત્યાદિ—

નીચેનાં પાંચ કારણોને લીધે આચાર્ય રૂપ ઉપાધ્યાયને અથવા આચાર્ય
 અને ઉપાધ્યાયને મણુમાંથી નીકળી જવું પડે છે તે કારણે આ પ્રમાણે છે

(૧) ‘ આચાર્યોપાધ્યાયો ગણે આઢ્ઠાં વા ધારણાં વા ઇત્યાદિ—જે આચાર્ય

સંભાવ્યતે इति विचारणा न कार्या । यतः प्राक्तनाशुभघनचिक्कणगुरुवज्रसार-
कर्मोदयाद् ज्ञानाढ्या अपि उत्पथप्रवृत्ता भवन्ति । तदुक्तम्—

“ कस्माद् ज्ञૂणं घनचिक्कणाद् गुरुयाद् वज्रसाराद् ।

नागद्वयंपि पुरिसं पयाओ उप्पहं निति ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—કર્મણિ નૂનં ઘનચિક્કણાનિ ગુરુકાણિ વજ્રસારાણિ ।

જ્ઞાનાદ્યમપિ પુરુષં નૂનં પય ઉપ્પથં નયન્તિ ॥ ૧ ॥ इति ।

इति चतुर्थ स्थानम् ।

तथा—तस्य=आचार्यस्य मित्रं=सुहृत् ज्ञातिगणः=स्वजनवर्गो वा कुतश्चित्
कारणात् गणात् अपक्रामेत्=निर्गच्छेत्, तेषां=निर्गतानां सुहृत्स्वजनानां, संग्र-
होपग्रहार्थम्-सङ्ग्रहः=स्वीकरणम् उपग्रहः=वस्त्रादिदानैरुपप्लव्यः, तदर्थं गणाप-
क्रमणं=गच्छान्निर्गमनम् आचार्योपाध्यायस्य प्रज्ञप्तमिति पञ्चमं स्थानकम् ॥सू. ० २९॥

चाहिયે કયોંકિ પ્રાક્તન અશુભ ઘન ચિક્કણ વજ્રસાર કર્મકે ઉદયસે
જ્ઞાનાદ્યજન ઓ ઉત્પથમેં પ્રવૃત્ત હો જાતે હૈં, જૈસા કિ કહા હૈ—

“ કસ્માદ્ જૂણં ” इत्यादि

ઘનચિક્કણ ગુરુ વજ્રસાર કર્મ જ્ઞાનાદ્ય પુરુષકો ઓ ઉન્માર્ગમેં લે
જાતે હૈં । પાંચવાં સ્થાન એસા હૈ, યદિ આચાર્ય એવં ઉપાધ્યાયકે સુહૃત્-
જન અથવા જ્ઞાતિગણ-સ્વજનવર્ગ ગણસે ઘોહર હો ગયે હોં તો ઉન
નિકલે હુએ સુહૃત્ જન એવં સ્વજનોંકે સંગ્રહ એવં ઉપગ્રહકે લિયે-સ્વીકાર
એવં વસ્ત્રાદિકોંસે ઉન્હે ધર્મમેં સ્થિર કરનેકે લિયે ગચ્છસે બાહર હોના
કહા ગયા હૈ, એસા યહ પાંચવાં સ્થાન હૈ ॥ સૂ. ૦ ૨૯॥

પ્રકારનો ભાવ સંભવી શકતો નથી, ” એવી વિચારણા કરવી ભેદથી નહીં,
કારણ કે પ્રાક્તન, અશુભ, ઘન, ચીકણા અને વજ્રસાર કર્મના ઉદયથી જ્ઞાનાદ્ય
પુરુષનું પણ પતન થઈ જાય છે અને તે અવળે માર્ગે ચડી જાય છે. કહ્યું
પણ છે કે “ કસ્માદ્ જૂણં ” ઇત્યાદિ-ઘન, ચીકણા, ગુરુ અને વજ્રસાર કર્મ
જ્ઞાનાદ્ય પુરુષને પણ ઉત્પથમાં (અવળે માર્ગે) લઈ જાય છે.

પાંચમું કારણ—જો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયના સુહૃદ્જનો અથવા
જ્ઞાતિગણ (સ્વજનોનો સમૂહ) ગણમાંથી બહાર નીકળી ગયેલા હોય, તો
તેમના (નીકળી ગયેલા તે લોકોના) સંગ્રહ અને ઉપગ્રહને માટે-સ્વીકાર
અને વસ્ત્રાદિકો વડે તેમને ધર્મમાં સ્થિર કરવાને માટે તેમણે ગચ્છમાંથી
નીકળી જવું ભેદથી. ॥ સૂ. ૨૯ ॥

વિનયઃ કર્ષ્ય એવં । સ ધેતુ આચાર્યસમ્પ્રદાશ સામિપાનસ્થયા ન કરોતિ તસ્ય તસ્ય ગણાશિષ્યક્રમણ મયતિ । એવાપાઘ્યાયસ્થાયિ યોગ્યમિતિ । इति द्वितीय स्थानम् । તથા-આચાર્યપાઘ્યાયો યાનિ મુલપર્યેષમાવાનિ=અચાર્યમકારાન્ધાર પતિ=મયગચ્છતિ તાનિ કાલે કાલે=પગાવસર નો સમ્યક્=પાયાવધ્યેન અતુમ યાચયિતા=પાઠયિતા મન્વતીતિ-ગણાદવક્રાગતીતિ તૃતીય સ્થાનમ્ । તથા-આચાર્ય પૈર્વાપ્યાયો ગણે સ્થિતાઃ સન્ સ્વગણિકાર્યા=સ્વગચ્છસ્થિતાયાં પરગણિકાર્યા= પરગણસ્થિતાયાં ધા નિમ્ન-૮યાં=સાધ્યાં વર્ધિર્લેશ્યાઃ-પ્રાક્તરાશુમક્રમોદ્યનસેન સરુચ્છરયાણાધ્યયસ્થાનસપમવાગદાદ્ વર્ધિર્ગતાલેશ્યા=મન્તઃકરણ યસ્વ સ તથાપૂર્વઃ-આસક્તો મન્વતીતિ ગણાદવક્રાન્તો મયતિ । ગુણાદ્યસ્યાચાર્યસ્ય નૈર્વ

દિર્મે પર્યાયસે ક્ષેપ્ત આશુજનોકા ઉચિત વિનય કરના આદિયે યદિ વહ આચાર્ય સપદાસે અમિમાન સહિત હોતા હુઆ એવા નદી કરતા હૈ, તો ડાલકા ગળસે મિચ્છામણ હોતા હૈ, દસી પ્રકારસે ઉપાધ્યાયકે સમ્પન્ધયે મી જાનના વાહિયે એસા યદ્ વિતીય સ્થાન હૈ, તૃતીય સ્થાન એસા હૈ, આચાર્ય ઓર ઉપાધ્યાય જિન સુત્રાર્થ પ્રકારાર્કો જાનસે હૈ, ઉન્હ યયાવસર વે યદિ સમ્યક્ રુપસે શિષ્યોંકો પહાનેવાલે નહી હોસે હૈ તો ઉન્હ ગળસે પૂષ્પ હો જાના વાહિયે । ચતુર્થ કારણ એસાહૈ, કિ આચાર્ય પુવ ઉપાધ્યાય ગળમે સ્થિત હોતા હુઆ અપને ગચ્છમે રહી હુઈ યા પર ગચ્છમે રહી હુઈ નિમ્નત્રીકે ઉપર વર્ધિર્લેશ્યાવાલા યન જાતા હૈ-આસક્ત હો જાતા હૈ, તો વહ ગળસે બાહર નિકાલ્જા જાતા હૈ “ગુણાદ્ય આચાર્યકે એમા આચ સંમયિત નહી હોતા હૈ” એસી વિચારણા નહીં કરની

જેવો છે કે આચાર્યે પશુ પ્રતિકમણ, આમણાં આદિમાં દીક્ષાપર્વાવની અપેક્ષાએ પોતાના કરતાં અધેષ્ટ ને સાધુઓ દોષ તેમને ઉચિત વિનય કરવો જોઈએ અને આ પ્રકારના પર્વામાં અધેષ્ટ સાધુઓનો યોગ વિનય અન્ય સાધુઓ પાસે પણ કરાવવો જોઈએ એ આચાર્ય અભિમાનને કારણે પર્વાવધેષ્ટ સાધુઓનો વિનય ન કરે તો તેમને અજુમાંથી નીકળી જવું પડે છે ઉપાધ્યાયને પણ એ જ પ્રકારના કારણને લીધે અજુમાંથી નીકળી જવું પડે છે ત્રીજુ કારણ-આચાર્ય અને ઉપાધ્યાય ને સુત્રાર્થ પ્રકારને અજુના દોષ, તેમજ યોગ અવસરે શિષ્યોને સમ્યક્ રીતે અભ્યયન ન કરાવે, તો તેમણે અજુમાંથી નીકળી જવું પડે છે

ચોથુ કારણ-જો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય પોતાના અગ્નિની અથવા અન્ય અગ્નિની નિર્જાલીમાં આસક્ત થઈ જાય-તેના પ્રત્યે ક્રોધિ કરે તો, તેમને અજુમાંથી નીકળી જવું પડે છે. “ગુણાદ્ય (શુદ્ધસપ્ત) આ આચાર્યમાં

સંભાવ્યતે इति विचारणा न कार्या । यतः प्राक्तनाशुभघनचिकणगुरुवज्रसार-
कर्मेदयाद् ज्ञानादथા અપિ ઉત્પથપટ્ટા ભવન્તિ । तदुक्तम्—

“ कस्माइं पूर्णं घनचिकणाइं गुरुयाइं वज्रसाराइं ।

નાગદ્વયંપિ પુરિસં પંચાશ્રો ઉપ્પદ નિતિ ॥૧॥ ”

છાયા—કર્મણિ નૂનં ઘનચિકણાનિ ગુરુકાણિ વજ્રસારાણિ ।

જ્ઞાનાદયમપિ પુરુષં નૂનં પથ ઉત્પથં નયન્તિ ॥ ૧ ॥ इति ।

इति चतुर्थ स्थानम् ।

तथा—तस्य=आचार्यस्य मित्रं=सुहृत् ज्ञातिगणः=स्वजनवर्गो वा कुतश्चित्
कारणात् गणात् अपक्रामेत्=निर्गच्छेत्, तेषां=निर्गतानां सुहृत्स्वजनानां, संग्र-
होपग्रहार्थम्-सङ्ग्रहः=स्वीकरणम् उपग्रहः=वस्त्रादिदानैरुपप्लव्म्, तदर्थं गणाप-
क्रमणं=गच्छान्निर्गमनम् आचार्योपाध्यायस्य प्रज्ञप्तमिति पञ्चमं स्थानम् ॥ सू. ० २९ ॥

चाहिये क्योंकि प्राक्तन अशुभ घन चिकण वज्रसार कर्मके उदयसे
ज्ञानादयजन भी उत्पथमें प्रवृत्त होजाते हैं, जैसा कि कहा है—

“ कस्माइं पूर्णं ” इत्यादि

घनचिकण गुरु वज्रसार कर्म ज्ञानાદય પુરુષકો भी ઉન્માર્ગને લે
जाते हैं । પાંચવાં સ્થાન એસા છે, યદિ આચાર્ય એવં ઉપાધ્યાયકે સુહૃત્-
जन अथवा ज्ञातिगण-स्वजनवर्ग गणसे बाहर हो गये हों तो उन
निकले हुए सुहृत् जन एवं स्वजनोके संग्रह एवं उपग्रहके लिये-स्वीकार
एवं वस्त्रादिकोसे उन्हे धर्ममें स्थिर करनेके लिये गच्छसे बाहर होना
कहा गया है, ऐसा यह पांचवां स्थान है ॥ सू. ० २९ ॥

પ્રકારનો લાભ સ્વલભી શકતો નથી, ” એવી વિચારણા કરવી જોઈએ નહીં,
કારણ કે પ્રાક્તન, અશુભ, ઘન, ચીકણા અને વજ્રસાર કર્મના ઉદયથી જ્ઞાનાદય
પુરુષત્વં પણ પતન થઈ જાય છે અને તે અવળે માર્ગે ચડી જાય છે. કહ્યું
પણ છે કે “ કસ્માઈં પૂર્ણ ” ઇત્યાદિ-ઘન, ચીકણા, ગુરુ અને વજ્રસાર કર્મ
જ્ઞાનાદય પુરુષને પણ ઉત્પથમાં (અવળે માર્ગે) લઈ જાય છે.

પાંચમું કારણ—જો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયના સુહૃદ્જનો અથવા
જ્ઞાતિગણ (સ્વજનોના સમૂહ) ગણમાંથી બહાર નીકળી ગયેલા હોય, તો
તેમના (નીકળી ગયેલા તે લોકોના) સંગ્રહ અને ઉપગ્રહને માટે-સ્વીકાર
અને વસ્ત્રાદિકો વડે તેમને ધર્મમાં સ્થિર કરવાને માટે તેમણે ગચ્છમાંથી
નીકળી જવું જોઈએ.

આચાર્યસ્ય ગણાશ્પકમણનનતરણમે મોક્તમ્ । આચાર્યસુ શ્વદિમાનેષ
મવતીતિ શ્વદિનતો મનુષ્યવિશેષાનાદ—

મૂસમ્—પંચવિદ્યાં શ્વદિમતા મણુસ્તા પળ્લસા, ત જહા—
અરહતા ચક્રવર્તી પલદેવા વાસુદેવા ભાવિતાત્માનો અનગારા
॥ સૂ. ૩૦ ॥

॥ શ્વદિ પચમટ્ટાણસ્ત વિદ્વો ઉદેસો ॥

છાયા—પંચવિદ્યા શ્વદિમતો મનુષ્યાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, વચવા—અર્હતા, ચક્રવ
ર્તિન, પલદેવાઃ, વાસુદેવાઃ, ભાવિતાત્માનો અનગારાઃ ॥ સૂ. ૩૦ ॥

॥ શ્વદિ પચમટ્ટાણસ્ત વિદ્વો ઉદેસો ॥

ટીકા—‘પંચવિદ્યા’ ઇત્યાદિ—

શ્વદિમન્તઃ—શ્વદિઃ=લગ્નિઃ, સા ચ-આમર્શોપધિઃ વિમુઠ્ઠોપધિઃ, શ્લેષ્મૌ
પધિઃ—૧-જલ્મોપધિઃ ૨ જલ્મો=મઠ, સ એન ઓપધિઃ, સર્વોપધિ, સમિષ્મો

આચાર્યકા ગણસે અપક્રમણ (નિકલના) અનન્તર સૂત્રમે કહા ગયા
હે, આચાર્ય તો શ્વદિવાલાહી હોતા હે, અતઃ અવ સૂત્રકાર શ્વદિવાલે
મનુષ્ય વિશેષોંકા કપન કરતે હે—

‘પંચવિદ્યા શ્વદિમતા મણુસ્તા પળ્લસા’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૩૦ ॥

ટીકાર્થ—શ્વદિવાલે મનુષ્ય પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હે એસે—અર્હન્ત
૧ ચક્રવર્તી ૨ પલદેવ ૩ વાસુદેવ ૪ ઔર ભાવિતાત્મા અનગાર ૫ શ્વદિ
નામ લગ્નિકા હે, પદ શ્વદિ અનેક પ્રકારકી હોતી હે, એસે—આમર્શો
પધિ ૧ વિમુઠ્ઠોપધિ ૨ શ્લેષ્મૌપધિ ૩ જલ્મોપધિ ૪ સર્વોપધિ ૫

આજલા સૂત્રમાં આચાર્યના જણમાંથી અપક્રમણ (નીકળી જવાનો ક્રિયા)
ના કારણે પ્રકટ કરવામાં આવ્યા. આચાર્યો તો શ્વદિવાળા હોય છે. તેથી
હવે સૂત્રકાર શ્વદિસ પત્ત વિશિષ્ટ વ્યક્તિઓનું કથન કરે છે

ટીકાર્થ—“પંચવિદ્યા શ્વદિમતા મણુસ્તા પળ્લસા” ઇત્યાદિ—

શ્વદિસ પત્ત મનુષ્યોના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અર્હન્ત,
(૨) ચક્રવર્તી, (૩) પલદેવ, (૪) વાસુદેવ અને (૫) ભાવિતાત્મા અનગાર.

શ્વદિ એટલે લગ્નિ. તેના અનેક પ્રકારે કહ્યા છે જેમકે (૧) આમ
ર્શોપધિ, (૨) વિમુઠ્ઠોપધિ, (૩) શ્લેષ્મૌપધિ, (૪) જલ્મોપધિ, (૫) સર્વોપધિ,

તત્ત્વલઘ્વિઃ ૬, સંમિત્તપ્રોત્તમ્=પુગ્નત્ત્વેશ્વરશ્રવણગત્તિમત્તા અવધિલઘ્વિઃ ૭
 ઋજુમતિત્ત્વલઘ્વિઃ ૮, વિપુલમતિત્ત્વલઘ્વિઃ ૯, ચારણત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૦ આશીવિપત્ત્વ
 લઘ્વિઃ ૧૧, આશીવિપત્ત્વ=શાપાનુગ્રહસામર્થ્યમ્ કેવલિત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૨, ગણધરત્ત્વ-
 લઘ્વિઃ ૧૩, પૂર્વધરત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૪, અર્હત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૫, ચક્રવર્તિત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૬,
 વલદેવત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૭, વાસુદેવત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૮ ક્ષીરાસ્રત્ત્વ, મધ્વાસ્રત્ત્વ, સર્પિરા-
 સ્રત્ત્વલઘ્વિઃ ૧૯, કોઠ્ઠબુદ્ધિત્ત્વલઘ્વિઃ ૨૦, પદાનુસારિત્ત્વલઘ્વિઃ ૨૧, યીજબુ-
 દ્ધિત્ત્વલઘ્વિઃ ૨૨, તેજોલેશ્યત્ત્વલઘ્વિઃ ૨૩, આહારકત્ત્વલઘ્વિઃ ૨૪, શીતલેશ્યત્ત્વ-
 લઘ્વિઃ ૨૫, વૈક્રિયત્ત્વલઘ્વિઃ ૨૬, અક્ષીણમહાનસત્ત્વલઘ્વિઃ ૨૭, પુલાકત્ત્વલઘ્વિઃ
 ૨૮, ઉક્ત ચ—“ ઉદયલ્લયલ્લયોત્તમોત્તમસમુત્થા વહુષ્પગારાઓ ।

एवं परिणामवशात्, लघ्वीभ्यो ह्येति जीवाणं ” ॥

છાયા—ઉદય લ્લય ક્ષયોપશમોપશમ સમુત્થા વહુપ્રકારાઃ ।

एवं परिणामवशाद् लघ्वयो भवन्ति जीवानाम् ॥ इति ।

एवं प्रकारा ऋद्धिरस्ति प्राचुर्येण येषां ते तदाभूता मनुष्याः पञ्चविधाः
 प्रज्ञायाः । पञ्चविधत्वमेवाह—तद्यथा—अर्हन्त इत्यादयः । तत्र—भावित्तात्मानः—

સંમિત્તપ્રોત્તમ લઘ્વિ ૬, અવધિ લઘ્વિ ૭, ઋજુમતિ લઘ્વિ ૮, વિપુલ-
 મતિ લઘ્વિ ૯, ચારણ લઘ્વિ ૧૦, આશીવિપ લઘ્વિ ૧૧, કેવલિલઘ્વિ
 ૧૨, ગણધરલઘ્વિ ૧૩, પૂર્વધર લઘ્વિ ૧૪, અર્હત્ત્વ લઘ્વિ ૧૫, ચક્રવ-
 ર્તિત્ત્વ લઘ્વિ ૧૬, વલદેવ લઘ્વિ ૧૭, વાસુદેવ લઘ્વિ ૧૮, ક્ષીરાસ્રત્ત્વ,
 મધ્વાસ્રત્ત્વ, સર્પિરાસ્રત્ત્વ લઘ્વિ ૧૯, કોઠ્ઠબુદ્ધિ લઘ્વિ ૨૦, પદાનુસારિ
 લઘ્વિ ૨૧, યીજબુદ્ધિ લઘ્વિ ૨૨, તેજોલેશ્યા લઘ્વિ ૨૩, આહારક લઘ્વિ
 ૨૪, શીતલેશ્યા લઘ્વિ ૨૫, વૈક્રિય લઘ્વિ ૨૬, અક્ષીણ મહાનસ લઘ્વિ
 ૨૭, પુલાક લઘ્વિ ૨૮. મોહી કહાઈ—“ઉદયલ્લય લ્લયોત્તમો” ઇત્યાદિ ।

શુભ કર્મોંકે ઉદયસે કર્મોંકે ક્ષયસે કર્મોંકે ક્ષયોપશમસે કર્મોંકે
 ઉપશમસે એવં શુભ પરિણામોંકે વશસે જીવોંકો અનેક પ્રકારકી લઘ્વિયાં
 ઉત્પન્ન હોની હૈં । ऐसी ऋद्धि जिनके प्रचुर मात्रामें होती हैं वे ऋद्धि-

(૬) સંમિત્તપ્રોત્તમલઘ્વિ, (૭) અવધિલઘ્વિ, (૮) ઋજુમતિલઘ્વિ, (૯) વિપુલમતિ
 લઘ્વિ, (૧૦) ચારણલઘ્વિ, (૧૧) આશીવિપલઘ્વિ, (૧૨) કેવલીલઘ્વિ,
 (૧૩) ગણધરલઘ્વિ, (૧૪) પૂર્વધરલઘ્વિ, (૧૫) અર્હત્ત્વલઘ્વિ, (૧૬) ચક્ર-
 વર્તિત્ત્વલઘ્વિ, (૧૭) વાસુદેવલઘ્વિ, (૧૮) વાસુદેવલઘ્વિ, (૧૯) ક્ષીરાસ્રત્ત્વ,
 મધ્વાસ્રત્ત્વ, સર્પિરાસ્રત્ત્વલઘ્વિ, (૨૦) કોઠ્ઠબુદ્ધિલઘ્વિ, (૨૧) પદાનુસારિલઘ્વિ,
 (૨૨) યીજબુદ્ધિલઘ્વિ, (૨૩) તેજોલેશ્યાલઘ્વિ, (૨૪) આહારકલઘ્વિ, (૨૫)
 શીતલેશ્યાલઘ્વિ, (૨૬) વૈક્રિયલઘ્વિ, (૨૭) અક્ષીણમાનસલઘ્વિ, (૨૮) પુલાક-
 લઘ્વિ વગેરે કહ્યું પણ છે કે “ ઉદય લ્લય લ્લયોત્તમો ” ઇત્યાદિ —

શુભ કર્મોના ઉદયથી, કર્મોના ક્ષયથી, કર્મોના ક્ષયોપશમથી, કર્મોના
 ઉપશમથી અને શુભ પરિણામોના નિમિત્તથી જીવોને અનેક પ્રકારની લઘ્વિ
 ઓની પ્રાપ્તિ થાય છે. એવી લઘ્વિ અથવા ઋદ્ધિથી જૂઠું જ સંપત્ત પ્રકરણે

આચાર્યસ્ય ગણાશ્વકમણમનન્તરસ્યે મોક્ષમ્ । આચાર્યસ્ય કદિમાનેવ મયતીતિ કદિમતો મનુષ્યવિશેષાનાહ—

મૂલ્ય—પચ્ચવિદ્યા હૃદ્ધિમતા મણુસ્સા પળ્લણ્ણા, ત જહા—
અરહતા ચક્કવટ્ટી ઘલદેવા વાસુદેવા માધિયપ્પાણો અળગારા
॥ સૂ. ૩૦ ॥

॥ હૃદ્ધિ પચ્ચમટ્ટાણસ્સ વિદ્ધઓ ઉદેસો ॥

છાયા—પચ્ચપિવા કદિમતો મનુષ્યાઃ પ્રજ્ઞા, સપવા—મર્હન્તઃ, ચક્કવ
ચિન્તિ, ઘલદેવાઃ, વાસુદેવાઃ, માધિતાત્માનોઽનગારા ॥ સૂ. ૧૦ ॥

॥ इति पञ्चमस्यानस्य द्वितीय उद्देशः ॥

ટીકા—‘પચ્ચવિદ્યા’ હત્યાદિ—

કદિમતઃ—કદિમ્=લગ્નિઃ, સા ચ-આમર્શોપચિ ચિમુહોપચિ, શ્લેષ્મી
પચિ—૧-જલ્લોપચિઃ ૨ જલ્લોપચિઃ, સ એવ ઓપચિ, સર્વોપચિ, સંમિશ્રો

આચાર્યકા ગણસે સપક્કમણ (નિકલના) અનન્તર સૂત્રમે કહા ગયા
હે, આચાર્ય તો કદિમવાલાહી હોતા હે, અતઃ અવ સૂત્રકાર કદિમવાહે
મનુષ્ય વિશેષોંકા કથન કરતે હે—

‘પચ્ચવિદ્યા હૃદ્ધિમતા મણુસ્સા પળ્લણ્ણા’ હત્યાદિ સૂત્ર ૧૦ ॥

ટીકાર્થ—કદિમવાહે મનુષ્ય પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હે જેસે—મર્હન્ત
૧ ચક્કવર્તી ૨ ઘલદેવ ૩ વાસુદેવ ૪ ઔર માધિતાત્મા અનગાર ૫ કદિ
મામ લગ્નિકા હે, યહ કદિમ અનેક પ્રકારકી હોતી હે, જેસે—આમર્શો
પચિ ૧ ચિમુહોપચિ ૨ શ્લેષ્મીપચિ ૩ જલ્લોપચિ ૪ સર્વોપચિ ૫

આમલ સૂત્રમાં આચાર્યના અણુમાંથી અપક્રમણ (નીકળી જવાની ક્રિયા)
ના કારણે પ્રકટ કરવામાં આમલ આચાર્યો તો કદિમવાળા હોય છે તેથી
હવે સૂત્રક ૨ કદિમપત્ત વિશિષ્ટ અક્ષિત્વોનુ કથન કરે છે

ટીકાર્થ—“પચ્ચવિદ્યા હૃદ્ધિમતા મણુસ્સા પળ્લણ્ણા” હત્યાદિ—

કદિમપત્ત મનુષ્યોના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) મર્હન્ત,
(૨) ચક્કવર્તી, (૩) ઘલદેવ, (૪) વાસુદેવ અને (૫) માધિતાત્મા અણુગાર
કદિ એટલે લગ્નિ તેના અનેક પ્રકારો કહ્યા છે જેમકે (૧) આમ
ર્શોપચિ, (૨) ચિમુહોપચિ, (૩) શ્લેષ્મીપચિ, (૪) જલ્લોપચિ, (૫) સર્વોપચિ,

અથ તૃતીયોદ્દેશકઃ પ્રારમ્ભ્યતે

ઉક્તો દ્વિતીયોદ્દેશકઃ, સમ્પતિ તૃતીય આરમ્ભ્યતે । અસ્ય ચ પૂર્વોદ્દેશકેન સહાયમમિત્ત્વમ્ભવ્યઃ । પૂર્વસ્મિન્નુદ્દેશકે જીવધર્માઃ પ્રાયઃ પ્રરૂપિતાઃ । અસ્મિન્તૃતીયોદ્દેશકે અજીવજીવધર્માઃ પ્રરૂપ્યન્તે, ક્ત્યનેન સનન્ધેનાયાતસ્યારય તૃતીયોદ્દેશ-કસ્યેદમાદિમં સૂત્રમ્—

તથા—દ્વિતીયોદ્દેશકાન્ત્યમૂત્રેણ સહારય તૃતીયોદ્દેશકપ્રથમસૂત્રપ્રાયમમિત્ત્વમ્ભવ્યઃ—પૂર્વોદ્દેશકાન્ત્યમૂત્રે ઋદ્ધિમન્તો જીવાસ્તિકાયવિશેષા ઉક્તાઃ, इह तु असं-ख्येषानन्तप्रदेशलक्षणऋद्धिमन्तः समस्ता अस्तिकाया उच्यन्ते—

મૂલમ્—પંચ અત્થિકાયા પળ્લગ્ત્તા, તે જહા—ધમ્મત્થિકાણ ૧, અધમ્મત્થિકાણ ૨, આગાસત્થિકાણ ૩, જીવત્થિકાણ ૪, પોગ્ગલત્થિકાણ ૫। ધમ્મત્થિકાણ અવજ્ઞે અગંધે અરસે અકાસે

— પાંચવે સ્થાનકે ત્રીસરા ઉદ્દેશકો પ્રારમ્ભ —

પંચમ સ્થાનકા દ્વિતીય ઉદ્દેશા સમાપ્ત હુઆ અવ સૂત્રકાર હસકા તૃતીય ઉદ્દેશક પ્રારંભ કરતે હૈં, પૂર્વ ઉદ્દેશકકે સાથ હસકા એસા સંબંધ હૈ, કિ પૂર્વ ઉદ્દેશકમૈં પ્રાયઃ જીવ ધર્મોં કી પ્રરૂપણા હુઈ હૈ, ઓર અવ હસ તૃતીય ઉદ્દેશકમૈં અજીવ જીવ ધર્મોં કી પ્રરૂપણા હોતી હૈ, તથા દ્વિતીય ઉદ્દેશકકે અન્તિમ સૂત્રકે સાથ હસ તૃતીય ઉદ્દેશકકે પ્રથમ સૂત્રકા સંબંધ એસા હૈ, કિ પૂર્વ ઉદ્દેશકકે અન્તિમ સૂત્રમૈં ઋદ્ધિમાન્ જીવાસ્તિકાય વિશેષ કહે ગયે હૈં, પરન્તુ યહાં અસંખ્યાત પ્રદેશરૂપ ઓર અનન્તપ્રદેશરૂપ ઋદ્ધિવાલે સમસ્ત અસ્તિકાય કહે જા રહે હૈં—

— પાંચમા સ્થાનનો ત્રીજો ઉદ્દેશો —

પાંચમાં સ્થાનનો ત્રીજો ઉદ્દેશક પૂરો થયો હવે સૂત્રકાર ત્રીજા ઉદ્દેશકનો પ્રારંભ કરે છે. આ ઉદ્દેશકનો આગલા ઉદ્દેશક સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે આગલા ઉદ્દેશકમાં જીવધર્મોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે, હવે આ ત્રીજા ઉદ્દેશકમાં અજીવ અને જીવધર્મોની પ્રરૂપણા કરવાની છે ત્રીજા ઉદ્દેશકના છેલ્લા સૂત્ર સાથે આ ઉદ્દેશકના પહેલા સૂત્રનો સંબંધ આ પ્રકારનો છે—ત્રીજા ઉદ્દેશકના છેલ્લા સૂત્રમાં ઋદ્ધિસપ્ત જીવાસ્તિકાય વિશેષનું કથન કરવામાં આવ્યું હતું, પરન્તુ અહીં અસંખ્યાત પ્રદેશ રૂપ અને અનન્ત પ્રદેશ રૂપ ઋદ્ધિવાળા સમસ્ત અસ્તિકાયની પ્રરૂપણા કરવામાં આવે છે.

માવિત = સદામનસા યામિતાઃ આત્મા યૈસ્તે સયા-શુભચાસનાચાસિતાન્તઃકરણા
 બનગારા. = સાધવ । एतेषु पञ्चसु आदितभतुर्णां ऋद्धिमत्त्वम् अर्हत्वादिभि,
 यथासम्भवभामशौष्यादिभिश्च बोध्यम् । पञ्चममेवैस्य ऋद्धिमत्त्व तु आमशौष
 य्यादिमिरेवेति ॥ सू० ૩૦ ॥

इति श्री विश्वविख्यातमगद्वन्द्वम मसिद्वाधकपञ्चदशभाषाकलि
 तललितकल्याणालापकप्रविशुद्धानपद्यनैकग्रन्थनिर्माप-आदिमानमर्दक
 श्रीग्राह्य छत्रपतिकोत्साहपुरराजमदक्ष ' जैनधाम्नाचार्य ' पदभूषित
 कोल्हापुरराजगुरु बालग्रन्थकारि जैनाचार्य-जैनधर्मविवाकर पूज्यश्री
 घासीलालप्रतिविरचितार्या श्री स्थानाङ्गस्य सुभाष्यार्या
 व्याख्यायां पञ्चमस्थानके द्वितीयोद्देशका समाप्तः ॥५-२॥

માન કહે જાતે હૈં યે ઋદ્ધિવાં મનુષ્યોંકો હોતી હૈં, અત યે મનુષ્ય પાંચ
 પ્રકારકે પૂર્વોક્ત રૂપસે પ્રકટ કિયે ગયે હૈં । જલ્લ નામ મલકા હૈ, યહ
 મલહી જય ઔપધિરૂપ હો જાતા હૈ, યહ જલ્લૌપધિ હૈ, શાપ એવં અ
 નુગ્રહકી જો સામર્થ્ય હૈ, યહ આશીર્વાધ ઋદ્ધિ હૈ, એકહી સાય સમસ્ત
 શાર્દાકો સુનનેકી શરિકા પ્રકટ હોના મમિભઓત્ત્વ હૈ, જો સાધુ
 જન સદાસનાસે ઘાસિત અન્તઃકરણવાલે હોતે હૈં યે યાચિતાત્મા બન
 ગાર હૈં । इन पांचोंमेंसे जो आदिके चार मनुष्य हैं उनमें अर्हत्वादिसे
 एव यथासम्भव भामशौषधि आदिसे ऋद्धिमत्ता जानना चाहिये तथा
 जो पञ्चम मेव है उसमें भामशौषधि आदिसेही ऋद्धिमत्ता जानना
 चाहिये ॥ सू० ૩૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ રચિત “ સ્થાનાંકસૂત્ર ”
 કી સુખા નામકી વ્યાખ્યાકે પાંચવે સ્થાનકા દ્વિતીય ઉદ્દેશા
 સમાપ્ત ॥ ૫-૨ ॥

ઋદ્ધિમાન કહેવામાં આવે છે જોવા ઋદ્ધિમાન પુરુષોના અર્થ ત આદિ
 પૂર્વોક્ત પાંચ પ્રકારે સમજવા ' જલ્લ ' કહેલે મળ ' તે જલ્લ જ ન્યારે
 ઔપધિ ૧૫ બની જાય છે, ત્યારે તેને જલ્લૌપધિ કહે છે શાપ અને જનુ
 મહેનુ જે સામર્થ્ય છે તેનુ નામ આશીર્વાધ સ્વધિ છે જોદ્ધિ સાથે સમસ્ત
 શબ્દોને સવલુ કરવાની શક્તિ જે ઋદ્ધિને લીધે પ્રાપ્ત થાય છે, તે ઋદ્ધિને
 મમિભઓત્ત્વ ઋદ્ધિ કહે છે જે સુનિ સદ્વાસનાથી મુક્ત અન્તઃકરણવાળા
 હોય છે તેમને યાચિતાત્મા અણુગાર કહે છે ઉપરોક્ત પાંચમાંથી જે શરૂ
 આવના ચાર મનુષ્યો છે તેમનામાં અર્હત્વાદિની અપેક્ષાએ અને યથા સમય
 આમશૌષધિ આદિની અપેક્ષાએ ઋદ્ધિમત્તા સમજવી જોઈએ અને જે પાંચમો
 પ્રકાર છે તેમાં આમશૌષધિ અદિની અપેક્ષાએ જ ઋદ્ધિમત્તા સમજવી સૂ ૩૦

॥ પાંચમાં સ્થાનકેના બીજે ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥

અથ તૃતીયોદ્દેશકઃ પ્રારમ્ભ્યતે

ઉક્તો દ્વિતીયોદ્દેશકઃ, સમ્પતિ તૃતીય આરમ્ભ્યતે । અસ્ય ચ પૂર્વોદ્દેશકેન સહાયમભિસમ્બન્ધઃ । પૂર્વસ્મિન્નુદ્દેશકે જીવધર્માઃ પ્રાયઃ પ્રરૂપિતાઃ । અસ્મિન્તૃતીયોદ્દેશકે અજીવજીવધર્માઃ પ્રરૂપ્યન્તે, इत्यनेन संबन्धेनायातस्यारय तृतीयोद्देशकस्येदमादिमं सूत्रम्—

તથા—દ્વિતીયોદ્દેશકાન્ત્યમુત્રેણ સહાયસ્ય તૃતીયોદ્દેશકમથ્યમમુત્રયાયમભિસમ્બન્ધઃ—પૂર્વોદ્દેશકાન્ત્યમુત્રે ઋદ્ધિમન્તો જીવાસ્તિકાયવિશેષા ઉક્તાઃ, इह तु असंख्येषानन्तप्रदेशलक्षणरुद्धिमन्तः समस्ता अस्तिकाया उच्यन्ते—

મૂલમ્—પંચ અતિકાયા પળ્લગ્ના, તં જહા—ધમ્મત્થિકાણ ૧, અધમ્મત્થિકાણ ૨, આગાસત્થિકાણ ૩, જીવત્થિકાણ ૪, પોગ્ગલત્થિકાણ ૫। ધમ્મત્થિકાણ અવલ્લે અગંધે અરસે અકાસે

— પાંચવે સ્થાનકે ત્રીસરા ઉદ્દેશકા પ્રારંભ —

પંચમ સ્થાનકા દ્વિતીય ઉદ્દેશા સમાપ્ત હુઆ અવ સૂત્રકાર હસકા તૃતીય ઉદ્દેશક પ્રારંભ કરતે હૈં, પૂર્વ ઉદ્દેશકકે સાથ હસકા એસા સંબંધ હૈ, કિ પૂર્વ ઉદ્દેશકમેં પ્રાયઃ જીવ ધર્મોંકી પ્રરૂપણા હુઈ હૈ, ઓર અવ હસ તૃતીય ઉદ્દેશકમેં અજીવ જીવ ધર્મોંકી પ્રરૂપણા હોતી હૈ, તથા દ્વિતીય ઉદ્દેશકકે અન્તિમ સૂત્રકે સાથ હસ તૃતીય ઉદ્દેશકકે પ્રથમ સૂત્રકા સંબંધ એસા હૈ, કિ પૂર્વ ઉદ્દેશકકે અન્તિમ સૂત્રમેં ઋદ્ધિમન્ જીવાસ્તિકાય વિશેષ કહે ગયે હૈં, પરન્તુ યહાં અસંખ્યાત પ્રદેશરૂપ ઓર અનન્તપ્રદેશરૂપ ઋદ્ધિવાલે સમસ્ત અસ્તિકાય કહે જા રહે હૈં—

— પાંચમા સ્થાનનો ત્રીજો ઉદ્દેશ —

પાંચમાં સ્થાનનો ત્રીજો ઉદ્દેશક પૂરો થયો હવે સૂત્રકાર ત્રીજા ઉદ્દેશકનો પ્રારંભ કરે છે. આ ઉદ્દેશકનો આગલા ઉદ્દેશક સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે આગલા ઉદ્દેશકમાં જીવધર્મોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે, હવે આ ત્રીજા ઉદ્દેશકમાં અજીવ અને જીવધર્મોની પ્રરૂપણા કરવાની છે ત્રીજા ઉદ્દેશકના છેલ્લા સૂત્ર સાથે આ ઉદ્દેશકના પહેલા સૂત્રનો સંબંધ આ પ્રકારનો છે—ત્રીજા ઉદ્દેશકના છેલ્લા સૂત્રમાં ઋદ્ધિસપ્ત જીવાસ્તિકાય વિશેષનું કથન કરવામાં આવ્યું હતું, પરન્તુ અહીં અસંખ્યાત પ્રદેશ રૂપ અને અનન્ત પ્રદેશ રૂપ ઋદ્ધિવાળા સમસ્ત અસ્તિકાયની પ્રરૂપણા કરવામાં આવે છે.

अरुची अजीवे सासए अवट्टिए लोगद्वे । से समासओ पच
 विहे पणत्ते, त जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ
 गुणओ । दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एग दव्व खेत्तओ लोग
 पमाणमेत्ते, कालओ ण कयाइणासी, न कयाइ न भवइ, न
 कयाइ न भविस्सइति भुविं य भविस्सइ य, धुवे णियए
 सासए अक्खए अव्वए अवट्टिए णिच्चे, भावओ अवल्ले अगधे
 अरसे अफासे गुणओ गमणगुणे य १। अधम्मत्थिकाए अवल्ले
 एव चेव, णवर गुणओ ठाणगुणे २। आगासत्थिकाए अवल्ले
 एव चेव, खेत्तओ लोगलोगपमाणमित्ते, गुणओ अवगाइणा
 गुणे, सेस त चेव ३। जीयत्थिकाए णं अरल्ले एव चेव, णवर
 दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइ दव्वाइ अरुची जीवे सासए,
 गुणओ उवओगगुणे, सेस त चेव ४। पोग्गलत्थिकाए पचवल्ले
 पचरसे दुग्धे अट्टफासे रुची अजीवे सासए अवट्टिए जाव,
 दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइ दव्वाइ, खेत्तओ लोग
 पमाणमेत्ते, कालओ ण कयाइ णासी जाव णिच्चे, भावओ
 वल्लमत्ते गधमत्ते रसमत्ते फासमत्ते, गुणओ गहणगुणे ॥ सू०१ ॥

उपा-पञ्च अस्तिकायाः प्रज्ञाः तपसा-धर्मास्तिकाय १, अर्धमास्तिकायः २
 आकाशास्तिकायो ३ जीवास्तिकायः ४ पुत्रनास्तिकाय ५ धर्मास्तिकायः अरण्यः
 अगन्धः अरम अरुच्यः अरुची अजीवः सासः अरस्थिता लोकरूप्यम् । ए
 समागत पञ्चविंशः प्रज्ञाः, तपसा-द्रव्यतः कालत नापञ्चान्तरान् । द्रव्यतः स्वतः
 धर्मास्तिकाय एक द्रव्यम्, क्षयाः शून्य प्रमाणमात्राः, कालतो न कदापि नागोत्तः,
 न कदापि न मरति, न कदापि न मरिगतीति भूद् भवति मरिष्यति य
 भूतो नित्यं नापञ्च अधुना अरिगः अरिस्थिता त्रिंश भागत -अरण्य मगन्धाः

અરસઃ અસ્પર્શઃ, ગુણતો ગમનગુણશ્ચ ૧। અધર્માસ્તિકાયઃ અવર્ણઃ એવમેવ, નવરં
ગુણતઃ સ્થાનગુણઃ ૨। આકાશાસ્તિકાયઃ અવર્ણ ધર્મમેવ, ક્ષેત્રતો લોકાલોકપ્રમા-
ણમાત્રઃ, ગુણત - અપ્રમાદનાગુણઃ, શેષં તદેવ ૩। જીવાસ્તિકાયઃ સ્વલુ અવર્ણઃ
એવમેવ નવરં દ્રવ્યતઃ સ્વલુ જીવાસ્તિકાયઃ અનન્તાનિ દ્રવ્યાણિ અરૂપી જીવઃ
શાશ્વતઃ, ગુણત ઉપયોગગુણ શેષ તદેવ ૪। પુદ્ગલાસ્તિકાયઃ પશ્ચવર્ણઃ પશ્ચરસો
દ્વિગન્ધઃ અપ્ટસ્પર્શ રૂપી અજીવઃ શાશ્વતઃ અવસ્થિતો યાવદ્ દ્રવ્યતઃ સ્વલુ પુદ્ગલા-
સ્તિકાય અનન્તાનિ દ્રવ્યાણિ, ક્ષેત્રતો લોકપ્રમાણમાત્રઃ, કાલતો ન કદાપિ
નાસીત્ યાવદ્ નિત્યઃ, ભાવતો વર્ણવાન્ ગન્ધવાન્ રસવાન્ સ્પર્શવાન્, ગુણતો
ગ્રહણગુણઃ ૫ ॥ સૂ ૧ ॥

ટીકા—‘ પચ અત્થિકાયા ’ ઇત્યાદિ—

અસ્તિકાયાઃ—અસ્તિ શબ્દઃ અભૂવન્ ભવન્તિ ભવિષ્યન્તિ ચેતિ ત્રિકાલવાચકઃ,
અસ્તિ ચ તે કાયાઃ=પ્રદેશાનાં રાશયશ્ચેતિ, યદ્વા—અસ્તિશબ્દઃ પ્રદેશવાચકઃ, અ-
સ્તીનાં=પ્રદેશાનાં કાયાઃ—રાશયઃ । તે ચ પશ્ચવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । પશ્ચવિધત્વમેવાહ -

‘ પચ અત્થિકાયા પણ્ણત્તા ’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧ ॥’

ટીકાર્થ—પાંચ અસ્તિકાય કહે ગયે છે—જે-ધર્માસ્તિકાય ૧ અધર્માસ્તિકાય
૨ આકાશાસ્તિકાય ૩ જીવાસ્તિકાય ૪ ઓર પુદ્ગલાસ્તિકાય ૫ યહાં
જો અસ્તિ શબ્દ હૈ, વહ ત્રિકાલકા વાચક હૈ, અર્થાત્ યે ધર્માસ્તિકાય
આદિ પહિલે યે વર્તમાનમેં હૈ, ઓર આગે બી રહેમે । પ્રદેશોંકી રાશિકા
નામ કાય હૈ, હમ તરહ જો અસ્તિરૂપ કાય હૈ, વે અસ્તિકાય હૈ । અ-
થચા—અસ્તિ શબ્દ પ્રદેશકા વાચક હૈ, હમ તરહ જો અસ્તિયોંકી પ્રદે-
શોંકી રાશિયાં હૈ, વે અસ્તિકાય હૈ, યે અસ્તિકાય ધર્માસ્તિકાય આ-
દિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હૈ. હમ ધર્માસ્તિકાયાદિક્ની વ્યાખ્યા

“ પચ અત્થિકાયા પણ્ણત્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—પાંચ અસ્તિકાય કહ્યા છે—(૧) ધર્માસ્તિકાય, (૨) અધર્માસ્તિકાય, (૩)
આકાશાસ્તિકાય, (૪) જીવાસ્તિકાય અને (૫) પુદ્ગલાસ્તિકાય

અહીં જે અસ્તિ પદ છે, તે ત્રિકાળનું વાચક છે એટલે કે આ ધર્મા
સ્તિકાય આદિ પહેલા હતા, હાલમાં છે અને ભવિષ્યમાં પણ હશે જે પ્રદેશોની
રાશિને ‘ કાય ’ કહે છે આ રીતે જે અસ્તિ રૂપ કાય છે, તેમને અસ્તિકાય
કહે છે અથવા ‘ અન્તિ ’ શબ્દ પ્રદેશનો વાચક છે આ રીતે જે અસ્તિઓની
(પ્રદેશોની) રાશિઓ છે, તેમને અસ્તિકાય કહે છે આ અસ્તિકાયના ધર્મા
સ્તિકાય આદિ પાંચ પ્રકારો છે તેમની વ્યાખ્યા પ્રથમ સ્થાનમાં આપનામાં
આવી છે, તે ત્યાંથી વાંચી લેવી.

अरुची अजीवे सासए अवट्टिए लोगदवे । से समासओ पच
 विहे पण्णत्ते, त जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ
 गुणओ । दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एग दव्व खेत्तओ लोग
 पमाणमेत्ते, कालओ ण कयाइणासी, न कयाइ न भवइ, न
 कयाइ न भविस्सइत्ति भुत्ति य भविस्सइ य, घुवे णियए
 सासए अक्खए अव्वए अवट्टिए णिच्चे, भावओ अव्वे अगघे
 अरसे अकासे गुणओ गमणगुणे य १। अधम्मत्थिकाए अव्वे
 एव चेव, णवरं गुणओ ठाणगुणे २। आगासत्थिकाए अव्वे
 एव चेव, खेत्तओ लोगालोगपमाणमित्ते, गुणओ अवगाइणा
 गुणे, सेस त चेव ३। जीवत्थिकाए णं अव्वे एवं चेव, णवर
 दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइ दव्वाइ अरुची जीवे सासए,
 गुणओ उवमोगगुणे, सेस त चेव ४। पोग्गलत्थिकाए पचव्वे
 पचरसे दुर्गाए अट्ठकासे रुची अजीवे सासए अवट्टिए जाव,
 दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइ दव्वाइ, खेत्तओ लोग
 पमाणमेत्ते, कालओ ण कयाइ णासी जाव णिच्चे, भावओ
 वधमते गधमते रसमते फासमते, गुणओ गइणगुणे ॥ सू०१ ॥

छाया-पञ्च अस्तिक्कायाः प्रज्ञप्ताः, तप्या-पर्यास्तिक्कायः १, अपर्यास्तिक्कायः २
 आकाशान्तिक्कायो ३ जीवास्तिक्कायः ४ पुत्रान्तिक्कायः ५ पर्यास्तिक्कायः अरण्यः
 अगन्धः मरम अस्पृश्यः अस्पी अजीवः आश्रित अवस्थितो लोकद्रव्यम् । त
 समागत पञ्चविध प्रज्ञप्तः, तप्या-द्रव्यतः कालतः भावता गुणतः । द्रव्यतः सखु
 धर्मान्तिक्काय एकं द्रव्यम्, सप्रता लोक प्रमाणमात्रा, कालओ न कदापि नासीत्,
 न कदापि न मरति, न कदापि न मरिष्यतीति भूत् भवति मरिष्यति य
 घुवो नि-न दाघत अधयः अयगः अवस्थितो तित्यः भावतः-अरण्यः अगन्धः

ગન્ધદ્વયવર્જિતઃ । અરતઃ=મધુરાદિરસપશ્ચન્નવર્જિત. । અસ્પર્શઃ=મૃદુકર્કશા-
ઘટ્ટવિધ સ્પર્શ વર્જિતઃ । અરૂપી-રૂપમ્ આકારઃ-ગર્ભાદિમત્ત્વ, તદરયાસ્તીતિ રૂપી,
ન રૂપી-અરૂપી=અપૂર્તઃ । અજીવ.-જીવઃ=ઉપયોગલક્ષણં જીવદ્રવ્યમ્, ન જીવઃ-
અજીવઃ=અચેતનઃ । શાશ્વતઃ-પ્રતિસમય તસ્ય સદ્ભાવાત્ । અવસ્થિતઃ-ધર્માસ્તિ-
કાયસ્ય યત્ સ્વરૂપં નિત્યત્વાત્તેનૈવ સ્વરૂપેણ સર્વદા સ્થાયી । તથા-લોકદ્રવ્યમ્-
લોકસ્ય અંશભૂતં દ્રવ્યમ્ । લોકસ્ય સર્વાત્મકં દ્રવ્ય ત્વયં નાસ્તિ, પञ्ચાસ્તિકાયા-
ત્મકલોકસ્યૈકદેશત્વાત્ । તદુક્તમ્—

‘ પંચત્થિકાયમદ્યે લોએ અણાડનિહણે । ’

રહિત હૈ, મધુરાદિકે ભેદસે પાંચો પ્રકારકે રસસે રહિત હૈ, એવં
મૃત્યુ કર્કશ આદિ આઠ પ્રકારકે સ્પર્શસે રહિત હૈ । આકાશકા નામ
રૂપ હૈ, રૂપ યહ ઉપલક્ષણ હૈ, હસસે રૂપ રસ આદિ ચારો ગુણોકા ગ્રહણ
હુઆ હૈ અતઃ યહ અરૂપી હૈ, હસકા તાત્પર્ય એસા હૈ, કિ યહ રૂપ રસ
ગન્ધ આદિસે રહિત હોનેકે કારણ અરૂપી હૈ, અમૂર્ત હૈ । ઉપયોગ લક્ષ-
ણવાલા જો હોતા હૈ, વહ જીવ હૈ, યહ ધર્માસ્તિકાય એસા નહીં હૈ અતઃ
અજીવ હૈ, પ્રતિસમય હસકા સદ્ભાવ રહતા હૈ, અતઃ શાશ્વત હૈ, ધર્મા-
સ્તિકાયકા જો અપના સ્વરૂપ હૈ, ઉસ સ્વરૂપસે યહ નિત્ય હોનેકે કારણ
સર્વદા સ્થાયી રહતા હૈ, અતઃ યહ અવસ્થિત હૈ, તથા યહ લોકકા અંશ-
ભૂત દ્રવ્ય હૈ, હસલિયે યહ લોકદ્રવ્ય હૈ, યહ લોક પંચાસ્તિકાય રૂપ હૈ,
કેવલ ધર્મદ્રવ્યરૂપ નહીં હૈ, અતઃ યહ લોકકા સર્વાત્મક દ્રવ્ય નહીં
હૈ, કિન્તુ ઉસકા એક અંશભૂત દ્રવ્ય હૈ । કહા બી હૈ—

છે, મધુરાદિ પાચે પ્રકારના રસથી રહિત છે અને મૃદુ, કર્કશ આદિ આઠ
પ્રકારના સ્પર્શથી રહિત છે. આકાશનુ નામ રૂપ છે રૂપ તે ઉપલક્ષણ છે,
તેના દ્વારા રૂપ, રસ, આદિ ચારે ગુણોનુ ગ્રહણ થયું છે. તેથી તે અરૂપી
છે. આ કથનનુ તાત્પર્ય એ છે કે ધર્માસ્તિકાય રૂપ, રસ, ગન્ધ અને સ્પર્શથી
રહિત હોવાને લીધે અરૂપી છે-અમૂર્ત છે જીવની જેમ તે ઉપયોગ લક્ષણવાળું
નથી, તે કારણે તે અજીવ છે પ્રતિસમય તેના સદ્ભાવ રહે છે, તેથી તેને
શાશ્વત કહ્યું છે. તેનુ પોતાનુ જે સ્વરૂપ છે તે સ્વરૂપે તે નિત્ય હોવાને
લીધે સ્થાયી રહે છે, તેથી તેને અવસ્થિત કહ્યું છે. ધર્માસ્તિકાય આ લોકના
અશભૂત દ્રવ્ય હોવાથી તેને લોકદ્રવ્ય કહ્યું છે આ લોક પંચાસ્તિકાય રૂપ
છે, પરન્તુ માત્ર ધર્મદ્રવ્ય રૂપ નથી, તેથી તેને લોકના સર્વાત્મક દ્રવ્યરૂપ કહી
શકાય નહિ, પણ તેના એક અંશભૂત દ્રવ્ય રૂપ જ કહી શકાય છે.

તપયા-ધર્માસ્તિકાયાઃ અધર્માસ્તિકાયાં इत्यादि । धर्मास्तिकायादीनां व्याख्या प्रथम स्थानतोऽयसेया । धर्मास्तिकायादिक्रमेण यो निर्देशः कृतस्तथाय हेतुर्वाच्यः । धर्मशब्दो मातृलिक, अतः पूर्वं धर्मास्तिकायाः प्रोक्तः । तदनु धर्मास्तिकाया-प्रति पक्षत्वात् अधर्मास्तिकायाः । धर्माधर्मास्तिकायायोगधारभूतत्वाच्च आकाशास्ति कायाः । ततश्च तदाशेषो जीवास्तिकाया । तत्पश्चाद् जीवास्तिकायास्योपग्राहकः पुद्ग लास्तिकायाश्च प्रोक्ताः । सम्प्रति धर्मास्तिकायादीनां स्वरूपं क्रमेणार-‘ धम्म त्तिकाया ’ इत्यादिना तत्र धर्मास्तिकाया-अवर्ण-न विधत्ते धर्मः=श्रुतत्वादिः पञ्चविधो यस्य स-शुक्लादि पञ्चविधवर्णरहितः, अग-ध=सुरमिश्रमि-

પ્રથમ સ્થાનસે જાન લેના વાદિયે । હન ધર્માસ્તિકાયાદિકોકા જો પૂર્વોક્ત રૂપસે નિર્દેશ કિયા ગયા હૈ, ઉસમેં એમા વિચાર હૈ કિ ધર્માસ્તિકાયામેં જો ધર્મ શબ્દ હૈ, બહ માતૃલિક હૈ, હસલિયે સયસે પહિલે અસ્તિકા યોમેં ધર્માસ્તિકાયાકા કયન નિયા ગયા હૈ, હસ ધર્માસ્તિકાયાકા પ્રતિ પક્ષ હોનેસે ઉસકે વાદ અધર્માસ્તિકાયાકા કયન કિયા ગયા હૈ હન ધર્માસ્તિકાયા ઓર અધર્માસ્તિકાયાકા આધારભૂત હોનેસે હન ધોનોકિ વાદ આકાશાસ્તિકાયાકા કયન કિયા ગયા હૈ, હસ આકાશાસ્તિકાયાકા આશેય જીવાસ્તિકાયા હૈ, ઓર હસ જીવાસ્તિકાયાકા ઉપગ્રાહક પુદ્ગ લાસ્તિકાયા હૈ હસલિયે જીવાસ્તિકાયાક વાદ પુદ્ગલાસ્તિકાયાકા વચન કિયા ગયા હૈ ।

અવ સૂત્રકાર ધર્માસ્તિકાયાદિકોં કે સ્વરૂપ કા કથન કરસે હૈ-‘ધર્મસ્તિકાયા’ इत्यादि-या धर्मास्तिकाया शुक्लादिके भवेत्ते पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, सुगन्ध और दुर्गन्ध इन दोनों गन्धसे

ધર્માસ્તિકાયામા ધન ' શુદ્ધ માતૃલિક ડોવાથી સમસ્ત અસ્તિકાયાઓમાં સૌથી પહેલા ધર્માસ્તિકાયાની પ્રકૃતિ જણાવવામાં આવી છે ધર્માસ્તિકાયાના પ્રતિપક્ષ રૂપ ડોવાને કારણે અધર્માસ્તિકાયાની પ્રકૃતિ ત્યાર બાદ જણાવવામાં આવી છે ધર્માસ્તિકાયા અને અધર્માસ્તિકાયાના આધારભૂત આકાશાસ્તિકાયા છે તે કારણે તે બન્નેની પ્રકૃતિ જાણવામાં બાક આકાશાસ્તિકાયાની પ્રકૃતિ કરી છે આ આકાશાસ્તિકાયાનું આશેય છવાસ્તિકાયા છે અને છવાસ્તિકાયાનું ઉપગ્રાહક પુદ્ગલાસ્તિકાયા છે, તે કારણે આકાશાસ્તિકાયાનું કથન કર્યા બાદ અનુક્રમે છવાસ્તિકાયા અને પુદ્ગલાસ્તિકાયાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે અને સૂત્રકાર ધર્માસ્તિકાયા વગેરેના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે

“ ધર્મસ્તિકાયા ઇત્યાદિ-ધર્માસ્તિકાયા શુદ્ધ અર્થે પાંચ પ્રકારના વસ્તુથી રહિત છે સુગંધ અને દુર્ગંધ રૂપ બંને પ્રકારના ગંધથી રહિત

ગન્ધદ્વયવર્જિતઃ । અરતઃ=મધુરાદિરસપશ્ચક્રવર્જિત । અસ્પર્શઃ=મૃદુકર્કશા-
ઘટ્ટવિધ સ્પર્શ વર્જિતઃ । અરૂપી-રૂપમ્ આકારઃ-ગુણાદિમત્ત્વ, તદરયાસ્તીતિ રૂપી,
ન રૂપી-અરૂપી=અમૂર્તઃ । અજીવઃ-જીવઃ=ઉપયોગલક્ષણ જીવદ્રવ્યમ્, ન જીવઃ-
અજીવઃ=અચેતનઃ । શાશ્વતઃ-પ્રતિસમય તસ્ય સદ્ભાવાત્ । અવસ્થિતઃ-ધર્માસ્તિ-
કાયસ્ય યત્ સ્વરૂપં નિત્યત્વાત્તેનૈવ સ્વરૂપેણ સર્વદા સ્થાયી । તથા-લોકદ્રવ્યમ્-
લોકસ્ય અંશભૂતં દ્રવ્યમ્ । લોકસ્ય સર્વાત્મકં દ્રવ્ય ત્વયં નાસ્તિ, પञ्ચાસ્તિકાયા-
ત્મકલોકસ્યૈકદેશત્વાત્ । તદુક્તમ્—

‘ પંચત્થિકાયમણ્યે લોએ અણાઈનિહળે । ’

રહિત હૈ, મધુરાદિકે મેદસે પાંચોં પ્રકારકે રસસે રહિત હૈ, એવં
મૃત્યુ કર્કશ આદિ આઠ પ્રકારકે સ્પર્શસે રહિત હૈ । આકાશકા નામ
રૂપ હૈ, રૂપ યહ ઉપલક્ષણ હૈ, હસસે રૂપ રસ આદિ ચારોં ગુણોંકા ગ્રહણ
હુઆ હૈ અતઃ યહ અરૂપી હૈ, હસકા તાત્પર્ય એસા હૈ, કિ યહ રૂપ રસ
ગન્ધ આદિસે રહિત હોનેકે કારણ અરૂપી હૈ, અમૂર્ત હૈ । ઉપયોગ લક્ષ-
ણવાલા જો હોના હૈ, વહ જીવ હૈ, યહ ધર્માસ્તિકાય એસા નહીં હૈ અતઃ
અજીવ હૈ, પ્રતિસમય હસકા સદ્ભાવ રહતા હૈ, અતઃ શાશ્વત હૈ, ધર્મા-
સ્તિકાયકા જો અપના સ્વરૂપ હૈ, હસ સ્વરૂપસે યહ નિત્ય હોનેકે કારણ
સર્વદા સ્થાયી રહતા હૈ, અતઃ યહ અવસ્થિત હૈ, તથા યહ લોકકા અંશ-
ભૂત દ્રવ્ય હૈ, હસલિયે યહ લોકદ્રવ્ય હૈ, યહ લોક પંચાસ્તિકાય રૂપ હૈ,
કેવલ ધર્મદ્રવ્યરૂપ નહીં હૈ, અતઃ યહ લોકકા સર્વાત્મક દ્રવ્ય નહીં
હૈ, કિન્તુ હસકા એક અંશભૂત દ્રવ્ય હૈ । કહા સ્ત્રી હૈ—

છે, મધુરાદિ પાચે પ્રકારના રસથી રહિત છે અને મૃદુ, કર્કશ આદિ આઠે
પ્રકારના સ્પર્શથી રહિત છે. આકાશનું નામ રૂપ છે. રૂપ તે ઉપલક્ષણ છે,
તેના દ્વારા રૂપ, રસ, આદિ ચારે ગુણોનું ગ્રહણ થયું છે. તેથી તે અરૂપી
છે આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે ધર્માસ્તિકાય રૂપ, રસ, ગન્ધ અને સ્પર્શથી
રહિત હોવાને લીધે અરૂપી છે-અમૂર્ત છે જીવની જેમ તે ઉપયોગ લક્ષણવાળું
નથી, તે કારણે તે અજીવ છે પ્રતિસમય તેનો સદ્ભાવ રહે છે, તેથી તેને
શાશ્વત કહ્યું છે તેનું પોતાનું જે સ્વરૂપ છે તે સ્વરૂપે તે નિત્ય હોવાને
લીધે સ્થાયી રહે છે, તેથી તેને અવસ્થિત કહ્યું છે ધર્માસ્તિકાય આ લોકના
અંશભૂત દ્રવ્ય હોવાથી તેને લોકદ્રવ્ય કહ્યું છે આ લોક પંચાસ્તિકાય રૂપ
છે, પરંતુ માત્ર ધર્મદ્રવ્ય રૂપ નથી, તેથી તેને લોકના સર્વાત્મક દ્રવ્યરૂપ કહી
શકાય નહિ, પણ તેના એક અંશભૂત દ્રવ્ય રૂપ જ કહી શકાય છે.

છાયા-પચાસ્તિકાયમયો લોકઃ અનાદિનિપન -૩૫૧ ।

તત્ત્વ વિશ્વરૂપિ- સે સમાસમો ' ઇત્યાદિ । સ ધર્માસ્તિકાયો દ્રવ્યાદિમદેન સક્ષપતઃ પચ્ચવિધો યોગ્યઃ । તત્ત્વ દ્રવ્યન-ત્રયત્વમાધિરય ધર્માસ્તિકાય એક દ્રવ્યમ્-તથાવિષેકપરિણામસ્ય સરવેનૈકત્વસંખ્યાયા એવદ સમ્ભાવાત્ । ક્ષેત્રત્વ-ક્ષેત્રમાભિત્ય આક્રમમાણમાત્ર -ઓક્તસ્ય પ્રમાણ-છાંકપ્રમાણમ્-અસંખ્યયાઃ પ્રદેશા, તત્ત્વમાપમસ્યેતિ । કાલત્વ-કાલમાત્રિત્ય અથ ધર્માસ્તિકાય ત્રૈકાલિકા, પ્રેક્ષા ભિક્તસ્વરૂપેષ્વ વિશ્વરૂપિ-ત કદાપિ નાસીત્ અર્થાત્-અસ્ય ધર્માસ્તિકાયસ્ય ભૂતકાલિકી સત્તા સર્વદા આસોદેવ । તથા-અથ ન કદાપિ ન મવતિ-પ્રત્ય વર્તમાનકાલિકી સત્તા સર્વદા તિષ્ઠત્યેવ । તથા ચ-અથ ન કદાપિ ન મવિષ્યતિ-અસ્ય

‘વંચસ્થિકાયમયે’ ઇત્યાદિ । યદ્ લોક વંચાસ્તિકાય મય હૈ, ઓર અનાદિ અનન્ત હૈ, હસી ચિપયકો અથ સૂત્રકાર વિશ્વદ રૂપસે પ્રકટ કરતે હૈ-“ સે સમાસમો ” ઇત્યાદિ-યહ ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્યાદિકે મેદસે સંક્ષેપત પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ-જૈસે-દ્રવ્યકી અપેક્ષા ધર્માસ્તિકાય એક દ્રવ્ય હૈ, કયોંકિ તથાવિષ એક પરિણામકે સસ્મસે એકસ્વ સદયાકાહી ઇસમેં સદ્ભાવ પાયા જાના હૈ । ક્ષેત્રકી અપેક્ષા યહ ધર્માસ્તિકાય લોકપ્રમાણ માત્ર હૈ અર્થાત્ લોકોકાશકે જિતને પ્રદેશ હૈ, અસંખ્યાત પ્રદેશ હૈ-હતનેહી પ્રમાણબાલા યહ ધર્માસ્તિકાય હૈ, કયોંકિ તિલમેં તૈલકી તરહ યહ પૂરે લોકોકાશમેં જગાપક હૈ, કાલકી અપેક્ષા યહ ધર્માસ્તિકાય ત્રૈકાલિક હૈ, એસા મૂતકાલકા કોઈ સમય નહીં યા કિ જિસમેં યહ ન રહા હો વર્તમાનકાલ ઓ એસા નહીં હૈ, કિ

કથમ્ પચ્ચ એ કે ‘ વંચસ્થિકાયમયે ’ ઇત્યાદિ—

આ લોક વંચાસ્તિકાયમય છે અને અનાદિ અનન્ત છે એ જ વિષયનું
૫૧૨ સૂત્રકાર વિશ્વદ રૂપે નિરૂપણ કરે છે

‘સે સમાસમો’ ઇત્યાદિ-તે ધર્માસ્તિકાયના દ્ર માહિતી લેવાથી પાંચ પ્રકાર પડે છે-દ્ર યની અપેક્ષાએ ધર્માસ્તિકાય એક દ્રવ્ય છે કારણ કે તથાવિષ (તે પ્રકારના એક પરિણામના સત્ત્વ (સદ્ભાવ) થી એકત્વ સંખ્યાને જ તેમાં સદ્ભાવ સંભવી શકે છે) ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ આ ધર્માસ્તિકાય લોકપ્રમાણ માત્ર છે એવે કે લોકોકાશના એટલા પ્રદેશ છે (લોકોકાશના અસંખ્યાત પ્રદેશ છે) એટલે જ પ્રમાણવાળું આ ધર્માસ્તિકાય છે એમ તત્ત્વમા તેજ રહેલું હોય છે એ જ પ્રમાણે તે પૂરેપૂરા લોકોકાશમાં જગાપક છે કારણકે અપેક્ષાએ પ્રવેશીને તને સદ્ભાવ કહી છે ભૂતકાળને કોઈ પણ સમય એવો ન હોતો કે જ્યારે તેનું અસ્તિત્વ ન હોય, વર્તમાનકાળે પણ તેનું અસ્તિત્વ ન હોય

ભવિષ્યત્કાલિકી સત્તાપિ સર્વદા સ્થાયસ્યત્યેવ । इति हेनोरग्यम् अमृतं भवति भविष्यति । इत्थं चायं धर्मास्तिकायस्रैकालિકો बोध्यः । त्रैकालिकत्वादेव अयं धर्मारितिकायो ध्रुव । ध्रौव्यं च एकमृष्ट्यापेक्षयाऽपि संभाव्यमेत आह—नियतः= सर्वदा एकरूपेण स्थित इति । नियततन्मनेकमृष्ट्यपेक्षयाऽपि संभाव्यमत आह— शाश्वत इति, शाश्वतत्वं तु प्रत्ययाभ्यात् । एवम् अस्यः सर्वदा सद्भाविन्वात् । तथा—अव्ययः=अविनाशी—केषांचित् पर्यायाणामप्राग्भवेऽप्यनन्तपर्यायत्वात् । अवस्थितः—अक्षयत्वेनाव्ययत्वेन च सर्वदा स्थितिशीलः । अनन्त प्रकारेणाप- मोघतो नित्यः ।

अथवा यतोऽयं धर्मास्तिकायस्रैकालिकः, अनप्रागभौ ध्रुव । नियतः=एकरूप । शाश्वत=प्रतिक्षणं विद्यमानः । अतएव—अस्यः=क्षयवर्जितः—

जिसमें यह नहीं रहा है, और भविष्यत् काल भी ऐसा नहीं होगा कि जिसमें इसका सद्भाव नहीं रहेगा अर्थात् ज्ञानकालमें वर्तमानकालमें और भविष्यत् कालमें सर्वदा यह रहा है, रहता है और रहेगा त्रैकालिक होनेसेही यह धर्मास्तिकाय ध्रुव है, ध्रुवना एक मृष्टिकी अपेक्षासे भी संभवित होती है, अतः इसके लिये कहा गया है, “नियतः” यह धर्मास्तिकाय सर्वदा एकरूपसे स्थित रहता है, नियतता अनेक मृष्टिकी अपेक्षासे भी संभवित हो सकती है, अतः इसके लिये कहा गया है— “शाश्वत” यह शाश्वत है, क्योंकि इसमें क्षयका अभाव है, इसी तरहसे यह अक्षय है, क्योंकि इसका सर्वदा सद्भाव रहता है, तथा यह धर्मास्तिकाय अव्यय है, अविनाशी है, क्योंकि कितनेक पर्यायोंके अपगम हो जाने पर भी यह अनन्तपर्यायवाला होनेसे कभी भी विनष्ट

એવું નથી અને ભવિષ્યકાળમાં પણ કોઈ સમય એવો નહીં હોય કે જ્યારે તેનું અસ્તિત્વ નહીં હોય એટલે કે ભૂત, વર્તમાન અને ભવિષ્યકાળમાં તે અનુક્રમે હતું, છે અને રહેવાનું જ છે

આ રીતે ત્રણે કાળમાં તેનું અસ્તિત્વ હોય છે, તે કારણે તેને ધ્રુવ કહ્યું છે ધ્રુવતા એક મૃષ્ટિની અપેક્ષાએ પણ સંભવિત હોય છે, તેથી તેને ‘નિયત’ વિશેષણ લગાડયું છે આ ધર્માસ્તિકાય સદા એક જ રૂપે સ્થિત છે. નિયતતા અનેક મૃષ્ટિની અપેક્ષાએ પણ સંભવી શકે છે, તેથી તેને શાશ્વત વિશેષણ લગાડયું છે તેનો ક્ષય થતો નથી તેથી તેને અક્ષય કહ્યું છે. અથવા તેનો કાયમ સદ્ભાવ રહે છે તેથી તેને અક્ષય કહ્યું છે આ ધર્માસ્તિકાય અવ્યય (અવિનાશી) છે, કારણ કે કેટલાક પર્યાયોનું ગમન થઈ જવા છતાં પણ તે અનન્ત પર્યાયવાળું હોવાથી કદી પણ વિનષ્ટ થતું નથી. તથા આ

અવ્યવસ્થિત્યાપેક્ષયા, અતઃ ક્વચિદ્ધ્યાપેક્ષતઃ અવ્યવસ્થિત્યર્થઃ । તથા-અવ્યવ-
સ્થિત્યાપેક્ષયા । તથા-અવસ્થિત-નિશ્ચલતાતઃ । યતાઽય ધ્રુવસાદિચિન્નિષ્ઠોઽ
એવ નિત્ય ઇતિ । તથા-મામતાઽયં ધર્માસ્તિકાયો વર્ગગ-પરસ્પર્શર્થઃ ।
તથા-ગુણતઃ-કાર્યતદ્ધાર્ય ગમનગુણ-ગમન-ગતિઃ ગુણ-ગતિપરિણામપરિ-
ણતાનાં જીવપુદ્ગલનાં સહકારિફારણત્વાત્ કાર્ય મત્સ્થાનાં જતસ્થય પરસ્પર્શો,
યદ્વા-ગતી-ગમને ગુણ ઉપકારો યસ્માત્ ॥ -ગમનોપકારક ઇત્યર્થઃ । ઇતિ ષષ્ઠ

નહીં હોતા હૈ, તથા યહ ધર્માસ્તિકાય અક્ષય એવ અવ્યવસ્થિત હોનેસે સર્વદા
સ્થિતિશીલ હૈ, ઇસલિયે યહ અવસ્થિત હૈ, ઇસી પ્રકારસે યહ સામાન્ય
રૂપસે નિત્ય હૈ, અથવા-જિસ કારણ યહ ધર્માસ્તિકાય ધ્રુવકાલિક હૈ,
ઇસી કારણસે યહ ધ્રુવ હૈ, નિયત એક રૂપ હૈ, જામ્વત હૈ-પ્રતિક્ષણ
વિષયમાન હૈ, ઓર ઇસીસે યહ અક્ષય હૈ, અથવાધિ દ્રવ્યની અપેક્ષા ક્ષય
રહિત હૈ, અથવા અક્ષત હૈ-પરિપૂર્ણ હૈ, તથા-અવ્યવસ્થિતી અપેક્ષા અવ્યવ-
સ્થિત હૈ, નિશ્ચલ હોનેસે અવસ્થિત હૈ, જિસ કારણ યહ ધ્રુવત્વ આદિ વિશે-
ષગોંવાલા હૈ, ઇસીલિયે યહ નિત્ય હૈ, તથા માયકી અપેક્ષાસે-યહ ધર્મા-
સ્તિકાય વર્ગ, ગ-પ, રસ ઓર સ્પર્શસે રહિત હૈ, તથા કાર્યકી અપેક્ષાસે
યહ ગમન હૈ ગુણ જિસકા એસા હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર મત્સ્થોંકે ચલ-
નૈમેં સહાયક જલ હોતા હૈ, ઊસી પ્રકાર ગતિ ક્રિયા પરિણામ જીવ ઓર
પુદ્ગલોંકો ગમન કરનેમેં યહ સહાયક હોતા હૈ, અતઃ ગમન હૈ, ગુણ
કાર્ય જિસકા એસા ઇસે કહા ગયા હૈ, અથવા ગમનમેં હૈ ઉપકાર જિસસે

ધર્માસ્તિકાય અક્ષય અને એ ષષ્ઠ કોવાળી સ્વદા સ્થિતિથીજ કોવાળે કારણે
તેને અવસ્થિત કહ્યું છે આ પ્રકારે તે સામાન્ય રૂપે નિત્ય છે અથવા જે
કારણે આ ધર્માસ્તિકાય પ્રેક્ષક છે, એજ કારણે તે ધ્રુવ છે, નિયત (એક
રૂપ) છે, સામ્ય (પ્રતિક્ષણ વિષયમાન) છે, અને તેથીજ તે અક્ષય છે,
અવ્યવસ્થિત દ્રવ્યની અપેક્ષાએ તે ક્ષયરહિત છે અથવા અક્ષત (પરિપૂર્ણ) છે,
તથા અવ્યવસ્થિત અપેક્ષાએ એ વ્યવસ્થિત, નિશ્ચલ કોવાળે કારણે તે અવસ્થિત
છે તે કારણે તે ધ્રુવત્વ આદિ વિશેષજોવાળું છે, તે કારણેજ તે નિત્ય છે
માયની અપેક્ષાએ આ ધર્માસ્તિકાય વર્ગ, રસ, જન્મ અને સ્પર્શથી રહિત છે

કેવે આ ધર્માસ્તિકાયના કામનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે—જેવી રીતે
પાણીમાં અતિ ઘન શ માછલાઓને પાણીમાં અતિ હલવામાં જળ સહાયક અને
છે એજ રીતે અતિક્રિયા પરિણત જીવ અને પુદ્ગલોને અમન કરવામાં આ
ધર્માસ્તિકાય સહાયકનું અને છે તેથી તેને અમનરૂપ સુવ્યવસ્થાળું કહ્યું છે
અથવા અમનમાં જેના દ્વારા ઉપકાર (સહાયતા) થાય છે તેને અવિગ્રહ કહે

મોઽસ્તિકાયઃ । તથા-અધર્માસ્તિકાયોઽપિ ધર્માસ્તિકાયવદેવ અવર્ણાદિ સ્વરૂપો વોદ્યઃ । દ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવાનાશ્રિત્યાઽપ્યયં ધર્માસ્તિકાયવદેવ । વિશેષસ્વયમ્-યદયં ગુણતઃ સ્થાનગુણઃ-સ્થાનં=સ્થિતિઃ ગુણઃ=કાર્યં यस્ય સઃ, અયદિ સ્થિતિ પરિણતાનાં જીવપુદ્ગલાનામપેક્ષાકારણાતયા સ્થિતિરૂપં કાર્યં કરોતિ । યદ્વા-સ્થાને=સ્થિતૌ ગુણઃ=ઉપકારો યસ્માત્ સઃ, જીવપુદ્ગલાનાં સ્થિતાનુપકારકં इत्यर्थः । इति द्वितीयोऽस्तिकायः । તથા-આકાશાસ્તિકાયોઽપિ ધર્માસ્તિકાયવદેવ અવર્ણાદિસ્વરૂપઃ । તથા-દ્રવ્યકાલભાવાનાશ્રિત્યાપિ પૂર્વવદેવ । તથા-ક્ષેત્રમાશ્રિત્ય

વહ ગતિગુણ હૈ, જીવ ઓર પુદ્ગલોંકે અપની ૨ ગતિમેં ગમન કરનેમેં યહ ઉપકારક હોતા હૈ । હસ પ્રકારકા યહ પ્રથમ અસ્તિકાય હૈ । તથા અધર્માસ્તિકાય મી ધર્માસ્તિકાયકી તરહહી અવર્ણાદિ સ્વરૂપવાલા હૈ, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ ઓર ભાવકી અપેક્ષા લેકર યહ ધર્માસ્તિકાયકી તરહહી હૈ, વિશેષતા કેવલ ઇતનીસી હૈ, કિ યહ ગુણકી કાર્યકી અપેક્ષા સ્થિતિ હૈ ગુણકાર્ય જિસકા એસા હૈ, યહ અસ્તિકાય સ્થિતિમેં ઠહરનેમેં પરિ-ગત હુએ જીવ ઓર પુદ્ગલોંકો અપેક્ષા કારણરૂપ હોનેસે સ્થિતિરૂપ કાર્ય કરતા હૈ, જિસ પ્રકાર ઠહરનેમેં મુસાફિરોંકો છાયા મદદ કરતી હૈ, ડસી પ્રકારસે યહ મી ઠહરનેમેં ડન્હે ડદાસીન રૂપસે કારણ હોતા હૈ અથવા જીવ ઓર પુદ્ગલોંકો અપની સ્થિતિમેં જિસસે ઉપકાર હોતાહૈ, વહ સ્થિતિ-ગુણહૈ, તાત્પર્ય હસકા યહીહૈ, કિ જીવ ઓર પુદ્ગલોંકો ઠહરનેમેં ઉપકાર હોતાહૈ હસ પ્રકારકા યહ દ્વિતીય અસ્તિકાયહૈ, તથા-આકાશાસ્તિકાય મી ધર્માસ્તિકાયકી તરહહી અવકાશદાનઅવર્ણાદિ સ્વરૂપવાલા હૈ, એવં

છે જીવ અને પુદ્ગલોને પોતપોતાની ગતિ કરવામાં તે મદદ રૂપ અને છે આ પ્રકારનું ધર્માસ્તિકાય નામના અસ્તિકાયના પહેલા લેહનું સ્વરૂપ છે.

અધર્માસ્તિકાય પણ ધર્માસ્તિકાયની જેમ અવર્ણાદિ સ્વરૂપવાળું છે દ્રવ્ય, કાળ, ક્ષેત્ર અને ભાવની અપેક્ષાએ તે ધર્માસ્તિકાયના જેવું જ છે, પણ માત્ર ગુણની (કાર્યની) અપેક્ષાએ તેમાં તફાવત છે. ધર્માસ્તિકાય પુદ્ગલોને ગતિકાર્યમાં મદદ રૂપ અને છે, ત્યારે અધર્માસ્તિકાય તેમને સ્થિતિકાર્યમાં મદદ રૂપ અને છે એટલે કે ગતિપરિણત જીવો અને પુદ્ગલોને થોભવામાં મદદરૂપ થાય છે જેમ વૃક્ષની છાયા મુસાફરોને થોભવામાં મદદરૂપ અને છે, તેમ ધર્માસ્તિકાય જીવો અને પુદ્ગલોની ગતિ અટકાવીને તેમને થોભવામાં મહાયજૂત અને છે આ રીતે ગતિને બદલે સ્થિતિમાં ઉપકારક બનવાનું કાર્ય તેના દ્વારા થાય છે આ આસ્તિકાયના બીજા લેહનું સ્વરૂપ છે

અવ્યયિદ્વ્યાપેક્ષયા, અક્ષત્ત્વમિતિચ્છાયાપેક્ષેતુ અક્ષત્ત્વ = પરિપૂર્ણઃ । તથા-અવ્યય-
અવ્યયપેક્ષયા । તથા-અવસ્થિત - નિમગ્નસ્ત્વાત્ । યતોઽય ધ્રુવસ્ત્વાદિવિવિદ્યોઽત્ત
એવ નિત્યમિતિ । તથા-માવતાઽય ધર્માસ્તિકાયો વર્ણમપરસપ્તર્થર્થમિતિ ।
તથા-ગુણત્વમિતિ = કાર્યત્વમાર્થ ગમનગુણ-ગમન = ગતિ ગુણ = ગતિપરિણામપરિ
ણતાનો જીવપુદ્ગલના સહકારિકારણત્વાત્ કાર્ય મત્સ્વાનાં જલસ્યેય યસ્માસૌ,
યદ્વા-ગતૌ = ગમને ગુણ ઉપકારો યસ્માત્ સ - ગમનોપકારક इत्यर्थः । इति प्रय

નહી હોતા હૈ, તથા યહ ધર્માસ્તિકાય અક્ષય એવ અવ્યય હોનસે સર્વદા
સ્થિતિશીલ હૈ, ફસલિયે યહ અવસ્થિત હૈ, ફસી પ્રકારસે યહ સામાન્ય
રૂપસે નિત્ય હૈ, અથવા-જિસ કારણ યહ ધર્માસ્તિકાય ત્રૈકાલિક હૈ,
ફસી કારણસે યહ ધ્રુવ હૈ, નિયત એક રૂપ હૈ, શાશ્વત હૈ-પ્રતિક્ષણ
વિષયમાન હૈ, ઓર ફસીસે યહ અક્ષય હૈ, અવ્યયિ દ્રવ્યની અપેક્ષા ક્ષય
રહિત હૈ, અથવા અક્ષત હૈ-પરિપૂર્ણ હૈ, તથા-અવ્યયની અપેક્ષા અવ્યય
હૈ, નિમગ્ન હોનેસે અવસ્થિત હૈ, જિસ કારણ યહ ધ્રુવસ્ત્વ આદિ વિશે
ષણોવાલા હૈ ફસીલિયે યહ નિત્ય હૈ, તથા માવતાની અપેક્ષાસે-યહ ધર્મા
સ્તિકાય વર્ણ, ગ-ય, રસ ઓર સ્પર્શસે રહિત હૈ, તથા કાર્યની અપેક્ષાસે
યહ ગમન હૈ ગુણ જિસકા એસા હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર મત્સ્પોકે જલ
નેમૈ સહાયક જલ હોતા હૈ, ડસી પ્રકાર ગતિ ક્રિયા પરિણત જીવ ઓર
પુદ્ગલોંકો ગમન કરનેમૈ યહ સહાયક હોતા હૈ, અતઃ ગમન હૈ, ગુણ
કાર્ય જિસકા એમા ફસે કદાગયા હૈ, અથવા ગમનમૈ હૈ ઉપકાર જિસસે

ધર્માસ્તિકાય અક્ષય અને અવ્યય હોવાથી સર્વદા સ્થિતિશીલ હોવાને કારણે
તેને અવસ્થિત કહ્યું છે આ પ્રકારે તે સામાન્ય રૂપે નિત્ય છે અથવા જે
કારણે આ ધર્માસ્તિકાય ત્રૈકાલિક છે, એ જ કારણે તે ધ્રુવ છે, નિયત (એક
રૂપ) છે, શાશ્વત (પ્રતિક્ષણ વિષયમાન) છે અને તેથી જ તે અક્ષય છે,
અવ્યયિ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ તે સ્પર્શરહિત છે અથવા અક્ષત (પરિપૂર્ણ) છે,
તથા અવ્યયની અપેક્ષાએ આ ધર્મ છે નિમગ્ન હોવાને કારણે તે અવસ્થિત
છે તે કારણે તે ધ્રુવત્વ આદિ વિશેષણોવાળું છે, તે કારણે જ તે નિત્ય છે
માવતાની અપેક્ષાએ આ ધર્માસ્તિકાય વર્ણ, રસ, ગ-ય અને સ્પર્શથી રહિત છે
હવે આ ધર્માસ્તિકાયના કામનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે-જેવી રીતે
પાણીમાં અતિ ઠરન શ માછલાંઓને પાણીમાં ગતિ કરવામાં જળ સહાયક બને
છે એ જ રીતે અતિક્રિયા પરિણત જીવ અને પુદ્ગલોને ગમન કરવામાં આ
ધર્માસ્તિકાય સહાયક બને છે તેથી તેને ગમનરૂપ જીવમાત્ર કહ્યું છે
અથવા ગમનમાં જેના દ્વારા ઉપકાર (સહાયતા) થાય છે તેને ગતિધ્રુવ કહે

મોડસ્તિકાયઃ । તથા-અધર્માસ્તિકાયોડપિ ધર્માસ્તિકાયવદેવ અવર્ણાદિ સ્વરૂપો
વોદ્યઃ । દ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવાનાશ્રિત્યાડપ્યયં ધર્માસ્તિકાયવદેવ । વિશેષસ્ત્વયમ્-
યદયં ગુણતઃ સ્થાનગુણઃ-સ્થાનં=સ્થિતિઃ ગુણઃ=કાર્યં यस્ય સઃ, અયદિ સ્થિતિ
પરિણતાનાં જીવપુદ્ગલાનામપેક્ષાકારણાતયા સ્થિતિરૂપં કાર્યં કરોતિ । યદ્વા-
સ્થાને=સ્થિતૌ ગુણઃ=ઉપકારો યસ્માત્ સઃ, જીવપુદ્ગલાનાં સ્થિતાવુપકારક
ઇત્યર્થઃ । ઇતિ દ્વિતીયોડસ્તિકાયઃ । તથા-આકાશાસ્તિકાયોડપિ ધર્માસ્તિકાયવદેવ
અવર્ણાદિસ્વરૂપઃ । તથા-દ્રવ્યકાલભાવાનાશ્રિત્યાપિ પૂર્વવદેવ । તથા-ક્ષેત્રમાશ્રિત્ય

વહ ગતિગુણ હૈ, જીવ ઓર પુદ્ગલોંકે અપની ૨ ગતિમેં ગમન કરનેમેં
યહ ઉપકારક હોતા હૈ । હસ પ્રકારકા યહ પ્રથમ અસ્તિકાય હૈ । તથા
અધર્માસ્તિકાય ખી ધર્માસ્તિકાયકી તરહહી અવર્ણાદિ સ્વરૂપવાલા હૈ,
દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ ઓર ભાવકી અપેક્ષા લેકર યહ ધર્માસ્તિકાયકી તરહહી
હૈ, વિશેષતા કેવલ ઇતનીસી હૈ, કિ યહ ગુણકી કાર્યકી અપેક્ષા સ્થિતિ
હૈ ગુણકાર્ય જિસકા એસા હૈ, યહ અસ્તિકાય સ્થિતિમેં ઠહરનેમેં પરિ-
ણત હુએ જીવ ઓર પુદ્ગલોંકો અપેક્ષા કારણરૂપ હોનેસે સ્થિતિરૂપ કાર્ય
કરતા હૈ, જિસ પ્રકાર ઠહરનેમેં મુસાફિરોંકો છાયા સદ્દ કરતી હૈ, ડસી
પ્રકારસે યહ ખી ઠહરનેમેં ડહેં ઉદાસીન રૂપસે કારણ હોતા હૈ અથવા
જીવ ઓર પુદ્ગલોંકો અપની સ્થિતિમેં જિસસે ઉપકાર હોતાહૈ, વહ સ્થિતિ-
ગુણહૈ, તાત્પર્ય હસકા યહીહૈ, કિ જીવ ઓર પુદ્ગલોંકો ઠહરનેમેં ઉપકાર
હોતાહૈ હસ પ્રકારકા યહ દ્વિતીય અસ્તિકાયહૈ, તથા-આકાશાસ્તિકાય
ખી ધર્માસ્તિકાયકી તરહહી અવકાશાદાનઅવર્ણાદિ સ્વરૂપવાલા હૈ, એવં

છે જીવ અને પુદ્ગલોને પોતપોતાની ગતિ કરવામાં તે મદદ રૂપ અને છે
આ પ્રકારનું ધર્માસ્તિકાય નામના અસ્તિકાયના પહેલા લેઢનું સ્વરૂપ છે.

અધર્માસ્તિકાય પણ ધર્માસ્તિકાયની જેમ અવર્ણાદિ સ્વરૂપવાળું છે.
દ્રવ્ય, કાળ, ક્ષેત્ર અને ભાવની અપેક્ષાએ તે ધર્માસ્તિકાયના
જેવું જ છે, પણ માત્ર ગુણની (કાર્યની) અપેક્ષાએ તેમાં તફાવત છે.
ધર્માસ્તિકાય પુદ્ગલોને ગતિકાર્યમાં મદદ રૂપ અને છે, ત્યારે અધર્માસ્તિકાય
તેમને સ્થિતિકાર્યમાં મદદ રૂપ અને છે એટલે કે ગતિપરિણત જીવો અને
પુદ્ગલોને થોભવામાં મદદરૂપ થાય છે જેમ વૃક્ષની છાયા મુસાફરોને થોભ-
વામાં મદદરૂપ અને છે, તેમ ધર્માસ્તિકાય જીવો અને પુદ્ગલોની ગતિ અટકાવીને
તેમને થોભવામાં સહાયભૂત અને છે આ રીતે ગતિને બદલે સ્થિતિમાં ઉપ-
કારક બનવાનું કાર્ય તેના દ્વારા થાય છે આ અસ્તિકાયના બીજા લેઢનું સ્વરૂપ છે

લોકાન્તરપ્રમાણમાન = લોકાન્તરપ્રમાણમાન એન તપદેશાત્મક પ્રમાણ, તપ્રમાણ
 યસ્ય સ । લોકાન્તરપ્રમાણમાન યસ્મિન્નપદેશાત્મક પ્રમાણ, તપ્રમાણ પ્રમાણ
 સ્થિતિયા સ્થિતિયો ગામ્ય । તપા-ગુણન = ગુણમાત્રિય અવગાહનાગુણ - અવગા
 હના = ગ્રીવાદીનામાત્રયો ગુણા = કાય યસ્ય સ સ્થિતિ । ગ્રીવાદીનામાત્રયનરૂપકાર્ય
 યુક્ત ઇત્યર્થ । અવગા-અવગાહનાયામ્ ગુણ ઉપકારો યસ્માત્ તા-અવગાહના
 વિવિધોપકારાદેતુક ઇત્યર્થ । ઇતિ ઠનીયોઽસ્થિતિયાઃ । તપા-ગ્રીવાસ્થિતિયાઽપિ
 પૂર્વવદેવ અવગાદિ સ્વરૂપ । વિશેષસ્થિતિય યદ્ય દ્રવ્યતાઃ-અતઃતાનિ દ્રવ્યાનિ =
 અનન્તદ્રવ્યસ્વરૂપઃ । પ્રત્યેકગ્રીવાય દ્રવ્યતાત્ ગ્રીવાનાં વાત-ઉત્વાત્ ગ્રીવાસ્થિ
 તિયાસ્ય અતઃતદ્રવ્યાત્મકત્વ યોગ્યમ્ । તપાયં ગ્રીવાસ્થિતિયાઃ-અરૂપી = પ્રમૂર્ચ ,

દ્રવ્ય તો જાણી શકાય તેવી અવેક્ષાએ ગ્રીવા સમ્પર્કમાં કયન પૂર્વકે જેમા હી
 હી ક્ષેત્રની અવેક્ષા યા લોકાલોક પ્રમાણ માત્ર હી, અર્થાત્ આકાશકે
 પ્રદેશ અનન્ત હી, કયોંકિ લોકોંકિ ઓર અલોકોંકિ મામાન્ય રૂપસે આકાશ
 ગ્રહતા હી, અતઃ દ્રવ્ય અવેક્ષા આકાશાસ્થિતિયાકે હસને પ્રદેશ કહે ગયે
 હી હમલિયે લોકાલોક સમ્પર્કની જો અનન્ત પ્રદેશ પ્રમાણતા હી, વહી
 પ્રદેશ પ્રમાણતા ક્ષેત્રની અવેક્ષાએ આકાશાસ્થિતિયાકે કહી ગઈ હી, એસા
 સમજના ચાહિયે તથા ગુણકાર્યની અવેક્ષા ગ્રહ આકાશાસ્થિતિયા અવ
 ગાહના ગુણમાત્રા હી, અર્થાત્ ગ્રીવાદિકોંકો અવગાહના માત્રા દેના યહી
 હમકા કાર્ય હી, અવગા-અવગાહનામે હી, ગુણ ઉપકાર-જિસસે યહ અ
 વગાહના ગુણ હી હસ સરહ અવગાહના વિવિધ ઉપકારમે યહ હેતુમાત્રા હી,

ગ્રીવાસ્થિતિયા ગ્રીવા પૂર્વની તરહી અવગાહનામાત્રા હી, હસમેં જો વિશે
 યતા હી, યહ હસ પ્રમાણસે હી યહ દ્રવ્યની અવેક્ષા અનન્ત દ્રવ્ય સ્થિતિ

કહે આકાશાસ્થિતિયાના સ્વરૂપનુ નિરૂપણ કરવામાં આવે ॥ તે પછી
 ધર્માસ્થિતિયા તથા અધર્માસ્થિતિયાની જેમ વર્ણન થાય, રક્ષ અને સ્પર્શની
 સ્થિતિ છે રક્ષ ઠાણ અને બાવની અવેક્ષાએ તે લોકાલોક પ્રમાણ માત્ર જ
 છે, એટલે કે આકાશના પ્રદેશ અનન્ત છે કારણ કે લોક તથા અલોકમાં
 સામાન્યતા આકાશ રહે છે તથા તે હિંમને વિચાર કરતાં આકાશાસ્થિતિયાના
 એટલા પ્રદેશ કલા છે તથા લોકાલોક સંબંધી જે અનન્ત પ્રદેશ પ્રમાણતા
 છે, જે જ પ્રદેશ પ્રમાણતા રેવની અવેક્ષાએ આકાશાસ્થિતિયામાં કહી છે, એમ
 સમજવું ગુણકાર્ય (ઉપયોગીતા) ની અવેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો
 તે અવગાહના દ્રવ્યમાત્રા છે એટલે કે ગ્રીવાદિકોંકે આકાશ દેવાનું જ તેનું
 કાર્ય ॥ આ રીતે અવગાહના વિવિધ ઉપકાર કરનાર હોવાથી તેને અવ
 ગાહના દ્રવ્યમાત્રા કહ્યું છે

જીવઃ=ચેતનાવાન્ શાશ્વતઃ=અવિનાશી ચ વૌધ્યઃ । ગુણતસ્ત્વયમ્-ઉપયોગગુણઃ-
ઉપયોજનપ્રયોગઃ, ઉપશુદ્ધયતે વસ્તુપરિચ્છેદં પ્રતિ વ્યાપાર્યતે જીવોઽનેનેતિ વા
ઉપયોગઃ-વૌધરૂપો જીવસ્ય તત્ત્વભૂતો વ્યાપારઃ । સ ચ સાકારાનાકારભેદાદ્
દ્વિવિધઃ । યદા સચેતનેઽચેતને ના વસ્તુનિ ઉપયુક્તિ આત્મા સપર્યાયમેવ વસ્તુ
પરિચ્છિન્નતિ તદા સ ઉપયોગઃ સાકાર ઇત્યુન્યતે । સ ચ છદ્મસ્થાનામન્તર્મુહૂર્ત

હૈ, ક્યોંકિ પ્રત્યેક જીવ સ્વતંત્ર દ્રવ્ય હૈ, ઓર જીવ હૈં અનન્ત ઇસલિયે
યહ જીવાસ્તિકાય દ્રવ્યકી અપેક્ષા અનન્ત કહા ગયા હૈ, તથા યહ જી-
વાસ્તિકાય અરૂપી અમૂર્ત હૈ, ચેતનાવાલા હોનેસે યહ જીવરૂપ હૈ, ઓર
શાશ્વત અવિનાશી હૈ । ગુણકી અપેક્ષા યહ ઉપયોગ ગુણવાલા હૈ ક્યોંકિ
પદાર્થોંકો જાનનેકી તરફ યહ ઉન્મુખ હોતા હૈ, પદાર્થોંકો જાનનેકી
તરફ ઉન્મુખ હોના ઇસીકા નામ ઉપયોગ હૈ. ઇસીલિયે-“ ઇન્દ્રિયપ્રણા-
લિકયા શબ્દાદીનામુપલબ્ધિરૂપયોગઃ ” એસા ઉપયોગકા લક્ષણ કિયા
ગયા હૈ, અથવા-વસ્તુ પરિચ્છેદ કરનેકે પ્રતિ જીવ જિસકે દ્વારા વ્યા-
પારયુક્ત કિયા જાતા હૈ, વહ ઉપયોગ હૈ, યહ ઉપયોગ જીવકા તત્ત્વભૂત
અક વ્યાપારરૂપ હોતા હૈ । યહ સાકાર ઉપયોગ ઓર અનાકાર ઉપયો-
ગકે ભેદસે દો પ્રકારકા કહાં ગયાં હૈ, જિસ સમય પર્યાય સહિત સચેતન
અથવા અચેતન વસ્તુકો જાનનેકે લિયે આત્માકા વૌધરૂપ વ્યાપાર હોતા
હૈ, વહ સાકાર ઉપયોગ હૈ, યહ સાકાર ઉપયોગ છદ્મસ્થ જીવોંકો અન્ત-

જીવાસ્તિકાય યણ અવર્ણાદિવર્ણું છે તેમા એટલી જ વિશેષતા છે કે
દ્રવ્યની અપેક્ષાએ તે અનન્ત દ્રવ્યસ્વરૂપ છે, કારણ કે પ્રત્યેક જીવ સ્વતંત્ર
દ્રવ્ય છે, અને જીવ અનન્ત છે, તેથી જીવાસ્તિકાયને દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનન્ત
કહ્યું છે તથા તે જીવાસ્તિકાય અરૂપી અમૂર્ત છે, ચેતનાવાળું હોવાથી તે
જીવરૂપ છે અને શાશ્વત અવિનાશી છે ગુણની અપેક્ષાએ તે ઉપયોગ ગુણ-
વાળું છે, કારણ કે તે પદાર્થોને જાણવાની વૃત્તિવાળું છે “ પદાર્થોના વિષયમા
જાણવાને તત્પર થવું તેનું નામ જ ઉપયોગ છે તેથી જ “ ઇન્દ્રિય પ્રણાલિકયા
શબ્દાદિનામુપલબ્ધિરૂપયોગ ” આ પ્રકારનું ઉપયોગનું લક્ષણ કહ્યું છે અથવા
વસ્તુ પરિચ્છેદ (વસ્તુ વિષય યોધ) ને માટે જીવ બેના દ્વાગ વ્યાપારયુક્ત
કરાય છે તે ઉપયોગ છે આ ઉપયોગ જીવના તત્ત્વભૂત એક વ્યાપાર રૂપ
હોય છે તે ઉપયોગનું બે પ્રકાર છે—(૧) સાકાર ઉપયોગ અને (૨) અના-
કાર ઉપયોગ પર્યાય સહિત સચેતન અથવા અચેતન વસ્તુને જાણવાને માટે
આત્માનો યોધરૂપ જે વ્યાપાર ચાલે છે તેનું નામ સાકાર ઉપયોગ છે આ

લોકાલોક્તપમાણમાય = લોકાલોક્તયોર્થત્ અનન્તપદ્ધતાત્મક પ્રમાણ, તત્પ્રમાણ
 યસ્ય સઃ । લોકાલોક્તમસ્ત્રિય યદનન્તપ્રદેશાત્મક પ્રમાણ, તત્પ્રમાણ આચારા
 સ્તિકાપ ક્ષેત્રનો ચોધયઃ । સપ્તા-ગુણત = ગુણમાયિન અચારાદનાગુણ-પ્રવગા
 દના = જીવાદીનામાયયો ગુણા = કાય યસ્ય સ તથા । મીવાદ્યાભયપદ્ધાનરૂપકાર્ય
 યુક્ત ઇત્યર્થ । પ્રથમા-અચારાદનાયામ્ ગુણ ઉપચારો યસ્માત્ સ - અચારાદના
 વિચયતોપકારાદેતુક ઇત્યર્થઃ । ઇતિ તનોયોઽસ્તિકાયઃ । તથા-મીવાસ્તિકાયાઽપિ
 પૂરવદેવ અવર્ણાદિ સ્વરૂપ । વિશેષસ્તસ્ય યદય દ્રવ્યત્વ - અનન્તાનિ દ્રવ્યાણિ =
 અનન્તદ્રવ્યસ્વરૂપઃ । પ્રત્યેકમીવ-ય દ્રવ્યત્વાત્ જીવાનાં જ્ઞાન ઉત્ત્વાત્ જીવાસ્તિ
 કાયસ્ય અનન્તદ્રવ્યાત્મકત્વ ધો-યન્ । તથાય જીવાસ્તિકાયઃ-અરૂપી = અમૂર્ષઃ,

દ્રવ્યકોળ ઓર માલકી અપેક્ષાસે મી હસ સમ્પન્નમેં કપન પૂર્વકે જેસા હી
 હે ક્ષેત્રકી અપેક્ષા યા લોકાલોક્ત પ્રમાણ માત્ર હે, અર્થાત્ આકાશકે
 પ્રદેશ અનન્ત હૈ, કયોગિ લોક ઓર અલોકમેં સામાન્ય રૂપસે આકાશ
 રજતા હે, અતઃ હસ અપેક્ષા આકાશાસ્તિકાયકે હતને પ્રદેશ કહે ગયે
 હૈં હમલિપે લોકાલોક્ત સમ્પન્નધી જો અનન્ત પ્રદેશ પ્રમાણતા હે, વહી
 પ્રદેશ પ્રમાણતા ક્ષેત્રકી અપેક્ષાસે આકાશાસ્તિકાયમેં કાઢી ગઈ હે, પેસા
 સમજના યાદિયે તથા ગુણકાર્યકી અપેક્ષા યહ આકાશાસ્તિકાય અય
 ગાદના ગુણવાલા હે, અર્થાત્ જીવાદિકોંકો અગતમેં ભાશ્ય દેના યહી
 હમકા કાર્ય હે, અથવા-અચારાદનામેં હે, ગુણ ઉપચાર-જિસસે યહ મ
 યગાદના ગુણ હે હસ તરહ અચારાદના વિષયક ઉપકારમેં યહ હેતુવાલા હૈ,

જીવાસ્તિકાય મી પૂરવી તરાદી અવર્ણાદિવાલા હૈ, હસમેં જો વિશે
 યતા હે, યહ હસ પ્રકારસે હે, યા દ્રવ્યકી અપેક્ષા અનન્ત ત્રય સ્વરૂપ

હવે આકાશાસ્તિકાયના વરૂપતુ નિરૂપણ કરવામાં આવે છે તે પણ
 પ્રમાણસ્તિકાય તથા અધર્માગિતાની જેમ પણ અન્ધ, રક્ષ અને સ્પર્શથી
 રહિત છે દ્રવ્ય કાળ અને ભાવની અપેક્ષાએ તે લોકાલોક્ત પ્રમાણ માત્ર જ
 છે, ક્યારે કે આકાશના પ્રદેશ અનન્ત છે કારણ કે લોક તથા અલોકમાં
 સામાન્યતા આકાશ રહે છે તેથી તે હરિએ વિચાર કરતાં આકાશાસ્તિકાયના
 એટલા પ્રદેશ કહ્યા છે નથી લોકાલોક્ત સંબંધી જે અનન્ત પ્રદેશ પ્રમાણતા
 છે એ જ પ્રદેશ પ્રમાણતા ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ આકાશાસ્તિકાયમાં કહી છે એમ
 સમજવું શુભકાર્ય (ઉપયોગીના) ની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો
 તે અવગાદના શુભવાણ છે એટલે કે છવાદિકેને આશય દેવાનું જ તેનું
 કાર્ય છે આ રીતે અવગાદના વિષયક ઉપકાર કરનાર જ્ઞાવાધી તેને અવ
 ગાદના શુભવાણ કહ્યું છે

જીવઃ=ચેતનાવાન્ શાશ્વતઃ=અવિનાશી ચ વૌધ્યઃ । ગુણતસ્ત્વયમ્-ઉપયોગગુણઃ-
 ઉપયોજનપ્રયોગઃ, ઉપયુજ્યતે વસ્તુપરિચ્છેદં પ્રતિ વ્યાપાર્યતે જીવોઽનેનેતિ વા
 ઉપયોગઃ-બોધરૂપો જીવસ્ય તત્ત્વભૂતો વ્યાપારઃ । સ ચ સાકારાનાકારભેદાદ્
 દ્વિવિધઃ । યદા સચેતનેઽચેતને વા વસ્તુનિ ઉપયુજ્ઞાન આત્મા સપર્યાયમેવ વસ્તુ
 પરિચ્છિન્નત્તિ તદા સ ઉપયોગઃ સાકાર ઇત્યુચ્યતે । સ ચ છદ્મસ્થાનામન્તર્મુહૂર્ત

હૈ, ક્યોંકિ પ્રત્યેક જીવ સ્વતંત્ર દ્રવ્ય હૈ, ઓર જીવ હૈં અનન્ત ડસલિયે
 યહ જીવાસ્તિકાય દ્રવ્યકી અપેક્ષા અનન્ત કહા ગયા હૈ, તથા યહ જી-
 વાસ્તિકાય અરૂપી અમૂર્ત હૈ, ચેતનાવાલા હોનેસે યહ જીવરૂપ હૈ, ઓર
 શાશ્વત અવિનાશી હૈ । ગુણકી અપેક્ષા યહ ઉપયોગગુણવાલા હૈ ક્યોંકિ
 પદાર્થોંકો જાનનેકી તરફ યહ ઉન્મુખ હોતા હૈ, પદાર્થોંકો જાનનેકી
 તરફ ઉન્મુખ હોના હસીકા નામ ઉપયોગ હૈ, હસીલિયે-“ઇન્દ્રિયપ્રણા-
 લિકયા શબ્દાદીનામુપલબ્ધિરૂપયોગઃ” એસા ઉપયોગકા લક્ષણ કિયા
 ગયા હૈ, અથવા-વસ્તુ પરિચ્છેદ કરનેકે પ્રતિ જીવ જિસકે દ્વારા વ્યા-
 પારયુક્ત કિયા જાતા હૈ, વહ ઉપયોગ હૈ, યહ ઉપયોગ જીવકા તત્ત્વભૂત
 ંક વ્યાપારરૂપ હોતા હૈ । યહ સાકાર ઉપયોગ ઓર અનાકાર ઉપયો-
 ગકે ભેદસે દો પ્રકારકા કહાં ગયાં હૈ, જિસ સમય પર્યાય સહિત સચેતન
 અથવા અચેતન વસ્તુકો જાનનેકે લિયે આત્માકા બોધરૂપ વ્યાપાર હોતા
 હૈ, વહ સાકાર ઉપયોગ હૈ, યહ સાકાર ઉપયોગ છદ્મસ્થ જીવોંકો અન્ત-

જીવાસ્તિકાય પણ અવર્ણાદિવાળું છે તેમા એટલી જ વિશેષતા છે કે
 દ્રવ્યની અપેક્ષાએ તે અનત દ્રવ્યસ્વરૂપ છે, કારણ કે પ્રત્યેક જીવ સ્વતંત્ર
 દ્રવ્ય છે, અને જીવ અનત છે, તેથી જીવાસ્તિકાયને દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનંત
 કહ્યું છે તથા તે જીવાસ્તિકાય અરૂપી અમૂર્ત છે, ચેતનાવાળું હોવાથી તે
 જીવરૂપ છે અને શાશ્વત અવિનાશી છે ગુણની અપેક્ષાએ તે ઉપયોગ ગુણ-
 વાળું છે, કારણ કે તે પદાર્થોને જાણવાની વૃત્તિવાળું છે “પદાર્થોના વિષયમાં
 જાણવાને તત્પર થવું તેનું નામ જ ઉપયોગ છે તેથી જ “ઇન્દ્રિય પ્રણાલિકયા
 શબ્દાદિનામુપલબ્ધિરૂપયોગ” આ પ્રકારનું ઉપયોગનું લક્ષણ કહ્યું છે અથવા
 વસ્તુ પરિચ્છેદ (વસ્તુ વિષયક બોધ) ને માટે જીવ જેના દ્વારા વ્યાપારયુક્ત
 કરાય છે તે ઉપયોગ છે આ ઉપયોગ જીવના તત્ત્વભૂત એક વ્યાપાર રૂપ
 હોય છે તે ઉપયોગનું બે પ્રકાર છે—(૧) સાકાર ઉપયોગ અને (૨) અના-
 કાર ઉપયોગ પર્યાય સહિત સચેતન અથવા અચેતન વસ્તુને જાણવાને માટે
 આત્માને બોધરૂપ જે વ્યાપાર ચાલે છે તેનું નામ સાકાર ઉપયોગ છે આ
 સ્થા. —૨૨

કાસં તિષ્ઠતિ, કેવલિનાં તુ એક સમયમ્ । યદા ચ વસ્તુનાં સામાન્યતા પરિ
 ચ્છેદસ્વરૂપાનાકાર ઉપયોગો મળતિ । અયમપિ છદ્ધસ્થાનામ્-અમૂર્ત્યં તિષ્ઠતિ,
 કેવલિનાં તુ એક સમયમ્ । અગ્રેદ્ ધોષ્યમ્-છદ્ધસ્થાનાં સાકારોપયોગકાલોડના
 કારોપયોગકાલાદમુક્તિરેવમૂળઃ પર્યાયપરિચ્છેદકન્યા ચિરકાલગગનાછદ્ધસ્થાનાં
 તથા સ્માભાવ્યાત્ । ઉપયોગો મુળો ધર્મોપસ્ય સ તથા, સાકારાનાકારરૂપચેતન્ય
 ધર્મયુક્ત इत्यर्थः । इतिचतुर्थोऽस्ति काय । तथा-પુદ્ગલાસ્તિકાયા પચ્ચર્ણો=ચુડા
 દ્વિપચ્ચર્ણયુક્તઃ પચ્ચર્મ=મધુરાદિ પચ્ચર્મસતપચ્ચ, દ્વિગચ-સુરમિદુરમિગચદ્વય
 યુક્ત, અષ્ટસ્પર્શ=ચતુર્ભુજાદિવિષયસ્પર્શસંવિતઃ, રૂપી=મૂર્તિઃ, અઝીવ=અચેતનઃ ।
 તથા-શાશ્વતઃ અસ્થિતો લોકદ્રવ્ય ચ । આ પુનર્દ્રવ્યાદિમદૈઃ પચ્ચર્ણાઃ । તમ
 સુદર્શન તક રહતા હૈ, ઝીર કેવલિયોંકો એક સમય તક રહતા હૈ, યહી
 એસા સમજના ચાહિયે-છદ્ધસ્થોંકો સાકારોપયોગકા કાલ અનાકારોપ
 યોગકે કાલસે અસંખ્યાત મુળા હૈ, યયોંકિ પર્યાયોંકા જાનનેકે રૂપમે
 હસકા ચિરકાલ ગલ જાતા હૈ, યયોંકિ છદ્ધસ્થોંકા એસાહી સ્વભાવ
 હોતા હૈ, ઉપયોગ હૈ, મુળધર્મ જિસકા એસા યહ જીવ હૈ, અર્થાત્ યહ
 જીવ સાકાર અનાકારરૂપ ચેતન્ય ધર્મસે યુક્ત હૈ તથા-પુદ્ગલાસ્તિકાયા
 છુલ્લાદિ પાંચ ધર્ણો ચાલા હૈ, મધુરાદિ પાંચ રસોંચાલા હૈ, સુરમિ દુ
 રમિરૂપ ઘોનો ગચ્ચાલા હૈ, ઝીર ચતુર્ભુજા આદિ આઠ પ્રકારકે રૂપ
 જાલા હૈ, રૂપી હૈ, મૂર્તિ હૈ અઝીવ અચેતન હૈ, તથા શાશ્વત અવસ્થિત
 હૈ, ઝીર લોકદ્રવ્ય હૈ, લોક ખરમેં યહ ક્યાપક હૈ, યહ પુદ્ગલાસ્તિકાયા
 દ્રવ્યાદિકે મેદસે પાંચ પ્રકારકા હૈ, દ્રવ્યકી અપેક્ષા યહ પુદ્ગલાસ્તિ
 કાયા અનન્ત દ્રવ્યાત્મક હૈ ક્ષેત્ર કી અપેક્ષા યહ લોકપ્રમાણ હૈ,

સાકાર ઉપયોગનો સદ્ભાવ છદ્ધસ્થ એવોમાં એક અન્તમૂલત પર્યન્ત રહે છે
 અને ઠેવલીએમાં એક સમય પર્યન્ત રહે છે બહોં એવું સમજવું એકએ
 કે છદ્ધસ્થોના સાકારોપયોગનો કાલ અનાકારોપયોગના કાલ કરતાં અસંખ્યાત
 મૂલો છે કારણ કે ધર્મોને બાબતમાં તેનો ચિરકાલ અતીત અર્થ બધા છે
 કારણ કે છદ્ધસ્થોના એવો જ સ્વભાવ હોય છે આ એવ ઉપયોગરૂપ મુક્ત
 પ્રમાણો છે એટલે કે આ એવ સાકાર અનાકાર તર વેર ધર્મમાંથી મુક્ત છે

પુદ્ગલાસ્તિકાયાનુ સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે—પુદ્ગલાસ્તિકાયા મુક્ત આદિ
 પાંચ વર્ણોથી મધુર આદિ પાંચ રસોંથી, સુરમિ અને દુરમિ રૂપ બે જ ધર્મો
 અને મૂર્તિ ઠેકાં આદિ આઠ પ્રકારના રૂપોંથી મુક્ત હોય છે તે રૂપી-મૂર્તિ
 છે અઝીવ-અચેતન છે, શાશ્વત અવસ્થિત છે અને લોકદ્રવ્ય છે એટલે કે
 સમસ્ત લોકમાં બાધેલું છે આથીના બેઠી તે પુદ્ગલાસ્તિકાયાના પાંચ મેદ

દ્રવ્યતઃ પુદ્ગલાસ્તિકાયોઽનન્ત દ્રવ્યાત્મકઃ । ક્ષેત્રતો લોકપ્રમાણઃ । કાલતથા ત્રૈકાલિકત્વમેવાહ—‘ ન કયા વિણામી ’ इत्यादिना । भावतश्चायं वर्णगन्धरसगर्णनाद् । गुणतश्चायं ग्रहणगुणः—ग्रहणम्=औदारिकशरीरादितया ग्राह्यत्वम्, इन्द्रियग्राह्यत्वं वा, अथवा—वर्णादिमत्त्वात् परस्परसम्बन्धो ग्रहणम्, तद्गुणो धर्मो यस्य स तथा । इति पञ्चमोऽस्तिकायः ॥ सू० १ ॥

પચ્ચાસ્તિકાયાઃ પ્રોક્તાઃ । સમ્પતિ તદ્વત જીવાસ્તિકાયસધ્વન્ધીનિ વસ્તુનિ પ્રાહ—અધ્યયનસમાપ્તિં યાત્રત્ । તત્ર પ્રથમં ગતિમેદાનાહ—

મૂલમ્—પંચ ગર્હઓ પળણક્તાઓ, તં જહા—નિરયગર્હ ૧, તિરિયગર્હ ૨, સળુયગર્હ ૩, દેવગર્હ ૪, સિદ્ધિગર્હ ૫ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

છાયા—પચ્ચ ગતય પ્રજ્ઞાતાઃ, તથા—નિરયગતિઃ ૧, તિર્યગતિઃ ૨, મનુષ્યગતિઃ ૩, દેવગતિઃ ૪, સિદ્ધિગતિઃ ૫ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

કાલકી અપેક્ષા યહ ત્રૈકાલિક હૈ, હસી વાતકી પુષ્ટિકે લિપે સૂત્રકારને “ ન કદાપિ નાસીત્ ” इत्यादि सूत्र कहा है, भावकी अपेक्षा यह वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शवाला है, गुणकी अपेक्षा यह ग्रहण है, औदारिक शरीरादिरूप ग्राह्यता अथवा इन्द्रियों द्वारा ग्राह्यता अथवा—वर्णादिमत्त्व होनेसे परस्पर सम्बन्ध रूपता है, गुणधर्म जिसका ऐसा ग्रहण गुणवाला है । अर्थात् पडण पडन धर्मवाला है । इस प्रकारसे यह पचम अस्तिकाय है ॥ सू० १ ॥

હસ પ્રકાર પાંચ અસ્તિકાય કહે અવ સૂત્રકાર તદ્ગત જીવાસ્તિ-

કહ્યા છે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પુદ્ગલાસ્તિકાય અનન્ત દ્રવ્યાત્મક છે, ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ તે લોકપ્રમાણ છે, કાળની અપેક્ષાએ તે ત્રૈકાલિક છે એટલે જ સૂત્રકારે “ ન કદાપિ નાસીત્ ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા તેનું ત્રણે કાળમાં અસ્તિત્વ હોવાનું પ્રતિપાદન કર્યું છે લાવની અપેક્ષાએ તે વર્ણ, ગન્ધ, રસ અને સ્પર્શથી યુક્ત છે, અને ગુણની અપેક્ષાએ તે અકુળ ગુણવાળું છે, એટલે કે ઔદારિક શરીરાદિ રૂપ ગ્રાહ્યતા અથવા ઇન્દ્રિયો દ્વારા ગ્રાહ્યતા અથવા વર્ણાદિથી યુક્ત હોવાને કારણે પરસ્પર સબધ રૂપતા જ જેને ગુણધર્મ છે એવું અકુળ ગુણવાળું તે છે એટલે કે તે સડવું, પડવું વગેરે ધર્મવાળું છે આ પ્રકારનું પુદ્ગલાસ્તિકાયનું સ્વરૂપ કહ્યું છે ॥ સૂ ૧ ॥

આ પ્રકારે પાંચ અસ્તિકાયોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. હવે સૂત્રકાર

ટીકા—'પંચ ગર્હ્યો' ઇત્યાદિ—

ગમન—ગતિઃ—ગમનક્રિયા ૧, ગમ્યતે—માપ્યત્ત યા સા ગતિઃ—ક્ષેત્રવિશેષ
રૂપા ૨, ગમ્યત્ત શાઙ્ગના કર્મપુદ્ગલસહસ્યેતિ ગતિઃ—નામકર્મોત્તરપ્રકૃતિરૂપા,
સ્તકૃતા યા જીવાકસ્યા ૩। સદ્બદુસ્ત્વે ગતયા, સા પચ્ચવિધાઃ પદ્ધતાઃ। પચ્ચવિધ
સ્વમેવાહ—તત્પથા—'નિરયગ્' ઇત્યાદિ। નિરય—નરકે ગતિ—ગમન—નિરયગતિઃ
૧ નિરયઃ—ક્ષેત્રવિશેષ જ્ઞ ચાસૌ ગતિષ્વ નિરયગતિ ૨। ગમ્યતેઙ્ગત્યેતિ ગતિઃ—
નિરયમાપિકા ગતિર્નિરયગતિ ૩ રિતિ। ૧। તિર્યગ્ગતિઃ—તિર્યક્ ગતિ ૧, તિર્યક્-
કાયસે સમ્યક્ રત્નનેપાલી જો પાતેહે, ડનકા કથન અધ્યયનની સમાપ્તિ
તક કરતે હે, હનમે પ્રથમ ગતિ મેઘોંકો યે વપ્તે હે—

'પંચ ગર્હ્યો પળ્લવ્વામ્નો' ઇત્યાદિ સુત્ર ૨ ॥

ટીકા—ગમન ક્રિયાકા નામ ગતિહે અથવા જો જીવદ્વારા પ્રાપ્તકી જાતી
હે વહ ગતિ હે, તેમી યદ્ ગતિ ક્ષેત્ર વિશેષરૂપ હોતી હે, અથવા જિમ
કમ પુદ્ગલોંકો સગતિસે જીવકા ગમન હોતા હે, વહ ગતિ હે, એસી
યદ્ ગતિ નામકર્મની ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ હોતી હે, અથવા—જીવકી જો
અવસ્થા નામકર્મની ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ ગતિ દ્વારા ફી જાતીહે, વહ ગતિ
હે। ય જીવકી અવસ્થાઈં વહુન હોતી હે યે ગતિયા પાંચ કહી ગર્હ્ય હે
જેસે—નિરયગતિ ૧ તિર્યક્ગતિ ૨ મનુષ્યગતિ ૩ દેવગતિ ૪ ઓર મિદ્ધ
ગતિ ૫ નિરય (નરક મેં જો ગમન કરતા હે, વહ નિરયગતિહે, નિરય
ક્ષેત્ર વિશેષરૂપ હે, હસ ક્ષેત્ર વિશેષરૂપ જો ગતિ હે, વહ નિરયગતિ હે,

અવાસ્થિકાપ સાધે જ્ઞ અથ ધરાવતી કેન્દ્રીક વાતોનું આ અધ્યયનની સમાપ્તિ
સુધી પ્રતિપાદન કર્યો. તેમાંથી પહેલાં તો સુત્રકાર અતિતેરોનું કથન કરે છે

ટીકા—'પંચ ગર્હ્યો પળ્લવ્વામ્નો' ઇત્યાદિ—

ગમનક્રિયાનું નામ ગતિ છે અથવા ? છતાં દ્વારા પ્રાપ્ત કરાવ છે તે
ગતિ છે, એવી તે ગતિ ક્ષેત્રવિશેષ રૂપ દેાવ છે અથવા જે કર્મપુદ્ગલોની
પ્રાપ્તિને કારણે છતાં ગમન થાય છે તે ગતિ છે એવી તે ગતિ નામકર્મની
ઉત્તર પ્રકૃતિ રૂપ દેાવ છે અથવા નામકર્મની ઉત્તરપ્રકૃતિ રૂપ ગતિ દ્વારા છતાં
જે અવસ્થા કરાવ છે તે ગતિ છે છતાં એવી અવસ્થાઓ (નિવૃત્તિ)
પાંચ કહી છે—(૧) નિરયગતિ (૨) તિર્યક્ગતિ (૩) મનુષ્યગતિ (૪)
દેવગતિ અને (૫) મિદ્ધગતિ

છતાં નરકમાં ગમન થતું તેનું નામ નિરયગતિ છે નિરય ક્ષેત્રવિશેષ
રૂપ છે તે ક્ષેત્રવિશેષમાં ગમન કરાવનારી જે ગતિ છે તેને નિરયગતિ કહે

ક્ષેત્રરૂપાગતિઃ ૨, તિર્યક્તરૂપાપિકા યા ગતિઃ ૩। ૨। એવ દેવગતિઃ ૩ મનુષ્યગતિ-
રપિ ૪ માયત્રીયા ૫। સિદ્ધિગતિઃ-મિદ્ધૌ ગતિઃ ૧, મિદ્ધિવાયૌ ગતિશ્ચેતિ વા,
દ્વહ નામપ્રકૃતિર્નાસ્તીતિ ૫ ॥ સૂ. ૨ ॥

અનન્તરમુત્રે સિદ્ધિગતિઃ પ્રોક્તા । સા ચ હિન્દ્રિયાર્થોન્ રૂપાયાદીશ્ચ નિમિ-
ત્તોક્તૃપ મુણ્ડિતત્ત્વે સતિ મયગીતોન્દ્રિયાર્થોન્ હિન્દ્રિયરૂપાયાદિમુણ્ડાશ્ચ પ્રાહ—

મૂલમ્—પંચ દિગ્દિશ્ચ તથા પળગત્તા, તં જહા—તેદિગ્દિશ્ચ તથે જાવ
ફાસિદિશ્ચ તથે । પંચ મુંડા પળગત્તા, તં જહા—તેદિગ્દિશ્ચ મુંડે જાવ
ફાસિદિશ્ચ મુંડે । અહવા પંચ મુંડા પળગત્તા, ત જહા—કોહમુંડે
૧ સ્વામુંડે ૨ માયામુંડે ૩ લોહમુંડે ૪ શિરમુંડે ૫ ॥ સૂ. ૩ ॥

છાયા—પંચ હિન્દ્રિયાર્થોઃ પ્રજ્ઞાઃ, તત્ત્વા-શ્રોત્રેન્દ્રિયાર્થો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિ-
યાર્થઃ । પંચ મુણ્ડાઃ પ્રજ્ઞાઃ, તત્ત્વા-શ્રોત્રેન્દ્રિયમુણ્ડો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયમુણ્ડઃ ।
અથવા-મુણ્ડાઃ પંચ પ્રજ્ઞાઃ, તત્ત્વા-કોમુણ્ડો ૧ ગાનમુણ્ડો ૨ માયામુણ્ડો ૩
લોભમુણ્ડ ૪ શિરોમુણ્ડઃ ૫ ॥ સૂ. ૩ ॥

અથવા હસ ક્ષેત્ર વિશેષરૂપ નિરયકે પ્રાપ્ત કરાવેવાલી જો ગતિ હૈ, વહ
નિરયગતિહૈ, તિર્યક્ષોમેં જો ગતિ-ગમન ક્રિયા જાનાહૈ, વહ તિર્યક્ષ ગતિહૈ,
અથવા તિર્યક્ષ ક્ષેત્ર રૂપવાલી જો ગતિ હૈ, વહ તિર્યક્ષ ગતિ હૈ । હસી
તરહત્તા અયમ દેવગતિ ઔર મનુષ્યગતિકે સ્વસ્વસ્વમે ખો જાનના ચાહિયે
સિદ્ધિમેં જો જાતા હૈ, વહ સિદ્ધિગતિ હૈ, અથવા સિદ્ધિરૂપ જો ગતિ હૈ,
વહ સિદ્ધિગતિ હૈ, યહાં નામકર્મકી પ્રકૃતિ નહીં હ ॥ સૂ. ૨ ॥

હસ અનન્તર મુત્રમેં જો સિદ્ધિગતિ નહી ગઈ હૈ, વહ હિન્દ્રિયાર્થ ઔર
કર્માર્થોકો નિમિત્ત કરકે મુણ્ડિત તેને પર હોતી હૈ, અતઃ અથ ત્વત્રકાર

છે અથવા તે ક્ષેત્રવિશેષ રૂપ નિરયને પ્રાપ્ત કરાવનારી જે ગતિ છે તેનું નામ
નિરયગતિ છે. તિર્યક્ષોમા જે ગમન થાય છે તેનું નામ તિર્યક્ષગતિ છે.
અથવા તિર્યક્ષ ક્ષેત્રરૂપ જે ગતિ છે તેને તિર્યક્ષગતિ કહે છે. અથવા તિર્યક્ષ
દશાને પ્રાપ્ત કરાવનારી જે ગતિ છે તેને તિર્યક્ષગતિ કહે છે. એ બે પ્રકારનું
કથન મનુષ્યગતિ અને દેવગતિ વિષે પણ સમજવું. સિદ્ધિમા જે બંધ છે
તેનું નામ સિદ્ધિગતિ છે અથવા સિદ્ધિરૂપ જે ગતિ છે તેનું નામ સિદ્ધિગતિ
છે અહીં નામકર્મની પ્રકૃતિને સફલાવ હોતો નથી ॥ સૂ. ૨ ॥

આગલા સૂત્રમાં સિદ્ધિગતિનો ઉદ્દેશ થયો છે હિન્દ્રિયાર્થો અને કર્મા-
ર્થોના ત્યાગપૂર્વક મુક્તિ થવને શ્રમણપર્યાય અગીકાર કરવાથી તેની પ્રાપ્તિ

ટીકા—‘ પંચ ગઈઓ ’ ઇત્યાદિ—

ગમન-ગતિ:-ગમનક્રિયા ૧, ગમ્યતે-માગ્યત યા સા ગતિ:-ક્ષેત્રવિશેષ રૂપા ૨, ગમ્યતે ષાડનયા કર્મપુદ્ગલસહસ્યેતિ ગતિ-નામકર્મોત્તરપ્રકૃતિરૂપા, વત્કૃતા યા જીવાયસ્યા ૩. તદ્વદ્વસ્યે ગત્યાઃ, તા પચ્ચવિધાઃ પ્રજ્ઞતાઃ । પચ્ચવિધ સ્વમેવાહ-ઉપયા-‘ નિરયગઈ ’ ઇત્યાદિ । નિરય-નરકે ગતિ-ગમન-નિરયગતિઃ ૧ નિરય-ક્ષેત્રવિશેષ સંધાતૌ ગતિશ્ચ નિરયગતિઃ ૨ । ગમ્યતડનમતિ ગતિઃ-નિરયમાપિકા ગતિરનિરયગતિ ૩ રિતિ । ૧ । તિર્યગગતિઃ-તિર્યક્ષુ ગતિઃ ૧, તિર્યક્-

કાપસે સમ્બન્ધ સમ્બંધવાલી જો પાતેહૈ, ડનકા કથન અગ્યપનની સમાપ્તિ તક કરતે હૈ, હનમેં પ્રયમ ગતિ મેઘોંકો યે કહતે હૈ—

‘ પચ ગઈઓ પળ્લણ્ણાઓ ’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૨ ॥

ટીકા—ગમન ક્રિયાકા નામ ગતિહૈ અથવા જો જીવ દ્વારા પ્રાપ્તકી જાતી હૈ વહ ગતિ હૈ, જેમી યદ ગતિ ક્ષેત્ર વિશેષરૂપ હોતી હૈ, અથવા જિમ કર્મ પુદ્ગલોંકો સગતિસે જીવકા ગમન હોતા હૈ, વહ ગતિ હૈ, જેમી યદ ગતિ નામકર્મકી ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ હોતી હૈ, અથવા-જીવકી જો અવસ્થા નામકર્મકી ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ ગતિ દ્વારા કી જાતીહૈ, યદ ગતિ હૈ । યે જીવકી અવસ્થાઈ યહુન હોતી હૈ યે ગતિયા પાંચ કહી ગઈ હૈ જૈસે-નિરયગતિ ૧ તિર્યગગતિ ૨ મનુષ્યગતિ ૩ દેવગતિ ૪ ઓર સિદ્ધ ગતિ ૫ નિરય (નરક મેં જો ગમન કરતા હૈ, વદ નિરયગતિહૈ, નિરય ક્ષેત્ર વિશેષરૂપ હૈ, હસ ક્ષેત્ર વિશેષરૂપ જો ગતિ હૈ, વહ નિરયગતિ હૈ,

અવાસ્તિકાચ સાથે સબધ ધરાવતી કેન્દ્રીક વાતોનું આ અધ્યયનની સમાપ્તિ સુધી પ્રતિષાદન કરશે. તેમાંથી પહેલાં તો સૂત્રકાર ગતિવેદોનું કથન કરે છે
ટીકાર્થ—‘ પચ ગઈઓ પળ્લણ્ણાઓ ’ ઇત્યાદિ—

ગમનક્રિયાનું નામ ગતિ ॥ અથવા જે જીવ દ્વારા પ્રાપ્ત કરાય છે તે ગતિ છે એવી તે ગતિ ક્ષેત્રવિશેષ રૂપ હોય છે અથવા જે કર્મપુદ્ગલોની પ્રતિબેદ કરાવે જીવનું ગમન થાય છે તે ગતિ છે એવી તે ગતિ નામકર્મની ઉત્તર પ્રકૃતિ રૂપ હોય છે અથવા નામકર્મની ઉત્તરપ્રકૃતિ રૂપ ગતિ દ્વારા જીવની જે અવસ્થા કરાય ॥ તે ગતિ છે જીવની એવી અવસ્થાઓ (ગતિઓ) પાંચ કહી છે—(૧) નિરયગતિ (૨) તિર્યગગતિ (૩) મનુષ્યગતિ (૪) દેવગતિ અને (૫) સિદ્ધગતિ

જીવનું નરકમાં ગમન થતું તેનું નામ નિરયગતિ છે નિરય ક્ષેત્રવિશેષ રૂપ છે તે ક્ષેત્રવિશેષમાં ગમન કરાવનારી જે ગતિ છે તેને નિરયગતિ કહે

દ્વિવિધા । તત્ર વાહ્યા અનેકવિધા આભ્યન્તરગ નિર્વૃત્તિઃ શ્રોત્રાદીનાં ક્રમેણ વદસ્વ-
પુષ્પધાન્યમમૂરાતિમુક્તકપુષ્પચન્દ્રિકાક્ષુરપતનાનામકારસંસ્થાના । ઉપકરણેન્દ્રિયં તુ
વિષયગુણસામર્થ્યરૂપમ્ । ઇદં છેદ્યન્છેદને સ્વજ્ઞધારેવ ભવતિ । યથા ધાગયા-
મુપહતાયાં સ્વજ્ઞસ્થેયચ્છેદને સમર્થો ન ભવતિ તયૈવ ઉપકરણેન્દ્રિયાસન્ધે નિર્વૃત્તૌ
મત્યામપિ ઇન્દ્રિયં વિષયાન્ન ગૃહ્ણતીતિ । તથા માવેન્દ્રિયલઙ્ઘ્યુપયોગભેદાદ્ દ્વિવિ-
ધમ્ । તત્ર લઙ્ઘીન્દ્રિયમ્-તદાવરણક્ષયોપશમરૂપમ્ । ઉપયોગેન્દ્રિયં ચ સ્વવિષયે

ઇન્દ્રિય મી વાહ્ય ઓર આભ્યન્તરકે ભેદરો દો પ્રકારકી હૈ । વાહ્ય
નિર્વૃત્તિ ઇન્દ્રિય અનેક પ્રકારકી હૈ, આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ શ્રોત્રાદિકકે
ક્રમસે કદસ્વપુષ્પ, ધાન્યમસૂર અતિમુક્તકપુષ્પ ચન્દ્રિકા ક્ષુરપ તથા નાના
પ્રકારકે સંસ્થાનવાલી હૈ । અર્થાત્ શ્રોત્રેન્દ્રિયકી આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ
કદસ્વ પુષ્પકે સમાન હૈ, આંખકી આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ મસૂરકે દાલકે
સમાન હૈ, નાકકી આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ અતિમુક્તકપુષ્પ ચન્દ્રિકાકે
સમાન હૈ, રસનેન્દ્રિયકી નિર્વૃત્તિ ક્ષુરપ (ઉસ્તરા)કે સમાન હૈ, ઓર
સ્પર્શન ઇન્દ્રિયકી આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ અનિયમિત આકારવાલી હૈ ।
વિષયોંકો ગ્રહણ કરનેકી શક્તિરૂપ ઉપકરણ ઇન્દ્રિય હોતી હૈ યહ છેદ્ય-
કો છેદનમેં સ્વજ્ઞધારાકે સમાન હોતી હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકારસે ધારકે
ઉપહત હો જાને પર સ્વજ્ઞ તલવાર છેદનેકે યોગ્ય પદાર્થોંકો છેદનેમેં સમર્થ
નહીં હોતી હૈ, ઉસી પ્રકાર ઉપકરણ ઇન્દ્રિયકે અભાવમેં નિર્વૃત્તિકે હોને
પર મી ઇન્દ્રિય વિષયોંકો ગ્રહણ નહીં કરતી હૈ, તથા યહ માવેન્દ્રિય

આભ્યન્તરના લેહથી કે પ્રકાર કહ્યા છે બાહ્યનિર્વૃત્તિ ઇન્દ્રિય અનેક પ્રકારની
છે અને આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ અનુક્રમે શ્રોત્રેન્દ્રિયથી લઈએ તો કદમ્બપુષ્પ,
ધાન્યમસૂર, અતિમુક્તક પુષ્પ ચન્દ્રિકા, ક્ષુરપ (અસ્ત્રો) અને વિવિધ સંસ્થાન-
વાળી છે એટલે કે શ્રોત્રેન્દ્રિયની આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ (આકાર) કદમ્બપુષ્પ
સમાન છે, આખની આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ મસૂરની દાળ સમાન છે, નાકની
આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ અતિમુક્તક પુષ્પચન્દ્રિકા સમાન છે, જીભની આભ્યન્તર
નિર્વૃત્તિ અસ્ત્રા સમાન છે, અને સ્પર્શેન્દ્રિયની આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ અનિયમિત
આકારવાળી છે વિષયોને ગ્રહણ કરવાની શક્તિ રૂપ ઉપકરણ ઇન્દ્રિય હોય
છે તે છેદ્યુ' છેદન કરવામા તલવારની ધારસમાન હોય છે. એટલે કે જેમ
ધાર વિનાની તલવાર-ખૂડી તલવાર છેદવા યોગ્ય પદાર્થને છેદવામા અસમર્થ
નિવડે છે, એ જ પ્રમાણે ઉપકરણ ઇન્દ્રિયનો અભાવ હોય ત્યારે નિર્વૃત્તિનો
સદ્ભાવ રોગા પદાર્થોના અભાવે નિર્વૃત્તિ નથી થતો.

ટોકા— પચ દિપત્યા ' ઇત્યાદિ—

ઈદિપાર્થોઃ—ઈન્દ્રનાત્=સર્વવિષયોપલબ્ધિમોગમણપરમૈશ્વર્યસન્નાયાત્-ઈન્દ્રો
જીવઃ, સ્વપ્ન લિહ, તેન વા દષ્ટ મૃષ્ટ જુષ્ટ દષ્ટ કુર્જય વા ઇન્દ્રિય ઓષાદિકમ્, તથા
નામસ્થાપનાદ્રવ્યમારમેદશયતુર્વિષમ્ । તત્ર નામસ્થાપને સુગમે । દ્રવ્યેન્દ્રિય તુ નિર્વૃ
ત્પુરકરમમેદશ્ચ દિવિષમ્ । તત્ર નિર્વૃત્તિઃ=આકારઃ । સા ચ યાત્રાભ્યન્તરમેદાદ્

ઈન્દ્રિયાર્થોંકો ઓર ઇન્દ્રિય કપાર્થોંસે સુષિદ્ધત હુગ ક્યસ્તિયોંકો છેકર
કથન કરતે હેં--'પચ દિપત્યા પળ્ળાસા' ઇત્યાદિ સૂત્ર ૩ ॥

ટીકાર્થ-ઈન્દ્રિયોંકે અર્થ વિષય પાંચ કહે ગયે હેં જૈસે ઓત્રેન્દ્રિયકા અર્થઃ
યાવત્ સ્પર્શનેન્દ્રિયાર્થ ૫ ઇન્દ્રકા જો બિહુ હૈ, વહ ઇન્દ્રિય હૈ, ઇન્દ્ર શબ્દસે
યહા આત્મા લિયા ગયા હૈ ક્યોંકિ વહ સર્વ વિષયોંકી ઉપલબ્ધિ એવ
જનકે મોગરૂપ જો પરમૈશ્વર્ય અનુમલ કરનેવાલા હૈ, ઉસ જીવકા જો
બિહુ હૈ, યહ ઇન્દ્રિય હૈ, અથવા ઉસ જીવરૂપ ઇન્દ્રસે જો દષ્ટ હૈ, મૃષ્ટ
હૈ જુષ્ટ હૈ દષ્ટ હૈ અથવા કુર્જય હૈ વહ ઇન્દ્રિય હૈ, અથવા ઇન્દ્રસે હોને
વાલા હૈ, જેસી યે ઇન્દ્રિયાં ઓષાદિક હેં । યે ઓષાદિક ઇન્દ્રિયાં નામ
સ્થાપના દ્રવ્ય ઓર આશકે મેદસે ચાર પ્રકારકી હેં, इनमें नाम और
स्थापनारूप इन्द्रियां सुगम हैं । द्रव्येन्द्रिय निर्वृत्ति और उपकरणके
मेदसे दो प्रकारकी हैं निर्वृत्तिका नाम आकार है, यह निर्वृत्तिरूप

થાય છે તેની હવે સૂત્ર ૩ ર ઇન્દ્રિયાર્થોંનુ અને ઇન્દ્રિય કપાર્થોંથી રહિત થવા
રૂપ સુદિત અવસ્થા આજ્ઞા કરનાર અગ્નિજોનુ કથન કરે છે

ટીકાથ—“ પચ દિપત્યા પળ્ળાસા ” ઇત્યાદિ—

ઇન્દ્રિયોના વિષયરૂપ અર્થ પાંચ કહ્યા છે—(૧) ઓત્રેન્દ્રિયાથ (૨)
નેત્રેન્દ્રિયાથ (૩) પ્રાણેન્દ્રિયાથ, (૪) રસનેન્દ્રિયાથ અને (૫) સ્પર્શેન્દ્રિયાથ
ઇન્દ્રનુ જે બિહુ છે તે ઇન્દ્રિય છે ઇન્દ્ર ચળ દ્વારા અહીં આત્મા પ્રહળ
થયો છે કારણ કે સર્વવિષયોની ઉપલબ્ધિ અને અનેક ભોગ રૂપ પરમૈશ્વર્યનો
અનુભવ તે કરે છે તેની જીવને પ્રાપ્તિ કરાવનાર જે બાહ્ય સાધનો છે તેને
ઇન્દ્રિયો કહે છે અથવા તે જીવરૂપ ઇન્દ્રથી જે દષ્ટ છે, સૃષ્ટ છે, કત છે,
અથવા કુર્જય છે તે ઇન્દ્રિય છે એવી ઇન્દ્રિયો ઓત્રેન્દ્રિય આદિ પાંચ છે
તે ઓષાદિક ઇન્દ્રિયો નામ, સ્થાપના દ્રવ્ય અને જાણના ભેદથી ચાર પ્રકારની
છે તેમાંથી નામ અને સ્થાપના રૂપ ઇન્દ્રિયો સુગમ હોવાથી અહીં તેમનુ
કયુ વિવેચન કયુ નથી દ્ર વેદિયના નિવૃત્તિ અને ઉપકરણ નામના બે ભેદ
કહ્યા છે નિવૃત્તિ બે/સે આકાર તે નિવૃત્તિરૂપ ઇન્દ્રિયના પણ બાહ્ય અને

તત્ નામાદિ ચતુર્દ્વાં દ્રવ્યં નિર્વૃત્તિરુપકરણ ચ ।
 આકારો નિર્વૃત્તિઃ ચિત્રા યાદ્યા અન્નરિમા ॥ ૨ ॥
 પુષ્પ કલમ્બુકાયા ધાન્યમમુરાતિશુક્તચન્દ્રં ચ ।
 ભવતિ ક્ષુરપ્રો નાનાકૃતિશ્ચ શ્રોત્રેન્દ્રિયાદીનામ્ ॥ ૩ ॥
 વિષયપ્રદણમામર્થ્યમ્ , ઉપકરણમ્ હિન્દ્રિયાન્તરં તદપિ ।
 યન્નેહ તદુપધાતે ગૃહ્ણતિ નિર્વૃત્તિભાવેડપિ ॥ ૪ ॥
 લઘ્યુપયોગૌ ભાવેન્દ્રિય તુ લઘ્વિરિતિ યઃ ક્ષયોપશમઃ ।
 ભવતિ તદાવરણાનાં તલ્લાભે એવ શેષમપિ ॥ ૫ ॥
 યઃ સ્વવિષયવ્યાપારઃ સ ઉપયોગઃ સ ચૈકુકાલે ।
 એકેન એવ તસ્માત્ ઉપયોગૈકેન્દ્રિય સર્વઃ ॥ ૬ ॥
 એકેન્દ્રિયાદિશેદોઃ પ્રતીત્ય શેષેન્દ્રિયાણિ જીવાનામ્ ।
 અથવા પ્રતીત્ય લઘ્વીન્દ્રિયમપિ પશ્ચેન્દ્રિયાઃ સર્વે ॥ ૭ ॥
 યત્કિલ વકુલાદીનાં દૃશ્યતે શેષેન્દ્રિયોપલમ્બોડપિ ।
 તેનાસ્તિ તદાવરણ ક્ષયોપશમસંભવસ્તેષામ્ ॥ ૮ ॥ હિતિ ॥

સે યા હિન્દ્રકે દ્વારા દૃષ્ટ આદિ હોનેસે શ્રોત્રાદિકોંકો હિન્દ્રિય કહા ગયાહૈ ।
 “હિદિ પરમૈશ્વર્યે” કે અનુસાર હિદ્ ધાતુસે હિન્દ્ર શબ્દ બનતાહૈ, સમસ્ત
 પદાર્થોંકા જ્ઞાતા દૃષ્ટા બન જાતા હૈ, એસા બન જાનાહી આત્માકા પરમૈ-
 શ્વર્ય હૈ, એસે પરમૈશ્વર્યવાલા યહ આત્માહી હો સકતા હૈ, ઓર દ્રવ્ય
 નહીં હો સકતાહૈ, અતઃ હિન્દ્રકી તરહ યહ જીવ પરમૈશ્વર્યવાલા હો મકનેકે
 કારણ હિન્દ્ર કારા ગયા હૈ, હસ હિન્દ્રકાહી યહ ચિહ્ન હૈ, હસ હિન્દ્રિય રૂપ
 ચિહ્નસેહી આત્મા જીવકી પદ્ધિચાન હોતી હૈ, યહાં જ્ઞાનેન્દ્રિયોંકી હી યહ
 યાત ચલ રહી હૈ હસલિયે શ્રોત્રાદિક હિન્દ્રિયાં પાંચહી કહી ગઈ હૈં,
 કંયોંકિ છદ્મસ્થ જીવ હનકી સહાયતાસે હી હનકે વિષયોંકા જ્ઞાતા હો
 સકતા હૈ ॥ ૧ ॥

અથવા હિન્દ્રના દ્વારા દૃષ્ટ આદિ હોવાથી શ્રોત્રાદિકોને હિન્દ્રિયો કહેવામાં આવેલ
 છે “હિદિ પરમૈશ્વર્યે” ના અનુસાર “હિદ્” ધાતુમાંથી હિન્દ્ર બન્યો છે
 સમસ્ત જ્ઞાનાવરણ અને દર્શનાવરણોને અભાવ થઈ જાય ત્યારે આત્મા સમસ્ત
 પદાર્થોને જ્ઞાતા (દૃષ્ટ) બની જાય છે એવો બની જવું એજ આત્માનું
 પરમૈશ્વર્ય છે એવા પરમૈશ્વર્યવાળો આ આત્મા જ હોઈ શકે છે—બીજું દ્રવ્ય
 હોઈ શકતું નથી તેથી તે હિન્દ્રની જેમ પરમૈશ્વર્યસંપન્ન હોઈ શકવાને કારણે
 તેને હિન્દ્ર કહ્યો છે આ હિન્દ્રનું જ તે ચિહ્ન છે આ હિન્દ્રિય રૂપ ચિહ્ન વડે જ
 આત્માને (જીવને) જોખ મી શકાય છે. અહીં જ્ઞાનેન્દ્રિયોની જ વાત થાવી
 રહી છે અહીં શ્રોત્રાદિક પાંચ હિન્દ્રિયો કહી છે, અને છદ્મસ્થ જીવો તેમની
 સહાયતાથી જ તેમના વિષયોને (તે પાંચે હિન્દ્રિયોના વિષયોને) જાણી શકે છે । ૧ ।

સ્વાપાર । ઠરત ચ—

‘દેવો જીવો સમ્યોત્પલ્લિમોગપરમેસરણમો ।
 સોષાઃ મેગમિદિયમિદ તસ્મિન્નાદ માનામો ॥ ૧ ॥
 ત નામાદિ ચડદા, દષ્ટ નિત્તિઓચ્છરણ ચ ।
 આગારો નિઠરતી, નિષ્ઠા યજ્ઞા ઇમા થતો ॥ ૨ ॥
 પુષ્ક જલપાણ, ધનમસરાણાચમદો ય ।
 હોઃ સુસ્વો નાનાગિર્દ ય સોદિયાર્દ ણ ॥ ૩ ॥
 વિમયગાદણપમમ્ય, ઉચ્છરણ દિવ્યતરં સપિ ।
 જ નેદ મદુચપાણ, ગિજ્ઞાદ નિન્નિશિમાય વિ ॥ ૪ ॥
 લખ્યુરગોગા માર્ગિદિયતુ લલિતિ જો ચમોત્તમો ।
 હોઃ તવાચરણાણ તલ્લામે ચેવ સેસપિ ॥ ૫ ॥
 જો તપિમપવાગારો મો ઉપમોગો સચેગકાન્તમ્મિ ।
 ઇમેષ ચેવ તમ્હા, ઠરમોર્ગોગદિમો સન્ધા ॥ ૬ ॥
 ઇર્ગિદિયાર્દમેયા, પદુચ સેતિદિયાર્દ બીરાષ ।
 અદયા પદુચ મદ્દિ દિયપિ પચ્છિદિયા સઘ્ધે ॥ ૭ ॥
 જ કિંત યડગાં ધીમદ સેર્મિદિઓત્તમો વિ ।
 તે જલ્પિ તદાચરણકલઓત્તમતમરો ચેતિ ॥ ૮ ॥

ઉપા—દ્રાઢી ગરોપન્નિમોગારમેચર્પાત ।

ઓષાદિમેઈમિન્નિગમિદ તસ્મિન્નાદિમાવાત ॥ ૧ ॥

લલિતિ ઓર ઉપમોગકે સેદસે દો પ્રકારકી હોતી હૈ । ફનમેં લલ્પિરૂપ જો આવેદિય હૈ, વદ તદાચરણકલઓપદામ રૂપ હોતી હૈ, ઓર ઉપ મોગ રૂપ જો આવેદિય હોતી હૈ, વદ અપને ચિપચમેં જાપોરરૂપ હોતી હૈ । કહા ની હૈ—‘દેવો જીવો સમ્યોત્પલ્લિ’ હત્યાદિ ।

ફન તાપાઓંકા આવર્થ ઈલાઈ—‘ઈન્દ્રસ્ય લિંગ્ગ દ્વિત્રયમ્ હત્રેણ ફન્દ્ર જીવ દ્રાપાદિમ્યાત યા દ્વિત્રયમ્’ ફસ ધ્યુસ્પસિકે અનુસાર ફન્દ્રયા ચિહ્ન જોને

તે ઉપદ્રવ ઇદ્રિયના બે બેઠ છે—(૧) આવન્નિય તન્નિ અને (૨) આવેદિય ઉપયોગ તેમાંથી બે તન્નિરૂપ આવેદિય છે તે તદાચરણકલ યશમ રૂપ હોય છે અને ઉપયોગ રૂપ બે આવેદિય હોય છે તે પોતાના ચિપચમાં બ્યપર (પ્રવૃત્તિ) રૂપ હોય છે રદુ પજુ છે કે :

‘દેવો જીવો સમ્યોત્પલ્લિ’ ઇત્યાદિ—

આ તાપાઓંને આવર્થ નીચે પ્રમાણે છે—‘ઈન્દ્રસ્ય લિંગ્ગ દ્વિત્રયમ્ ફન્દ્રય દ્રાપાદિમ્યાત યા દ્વિત્રયમ્’ આ ધ્યુસ્પસિકે અનુસાર ઇન્દ્રુ ચિહ્ન હોવાથી

તત્ નામાદિ ચતુર્દ્વા દ્રવ્યં નિર્વૃત્તિરૂપકરણં ચ ।
 આકારો નિર્વૃત્તિઃ ચિત્રા વાઘ્યા અન્નરિમા ॥ ૨ ॥
 પુષ્પ કલ્પમ્બુસાયા ધ્રાન્ગમમુગાતિયુક્તચન્દ્રં ચ ।
 ભવતિ ક્ષુરપ્રો નાનાકૃતિશ્ચ શ્રોત્રેન્દ્રિયાદીનામ્ ॥ ૩ ॥
 વિષયગ્રહણમામર્શ્યમ્ , ઉપકરણમ્ ઇન્દ્રિયાન્તરં તદપિ ।
 યન્નેહ તદુપચાતે ગૃહ્ણાતિ નિર્વૃત્તિમાદેડપિ । ૪ ॥
 લઘ્વયુષયોગૌ માત્રેન્દ્રિયં તુ લઘ્વિરિતિ યઃ ક્ષયોપશમઃ ।
 ભવતિ તદાવરણાનાં તલ્લાભે એવ શેષમપિ ॥ ૫ ॥
 યઃ સ્વવિષયવ્યાપારઃ સ ઉપયોગઃ સ ચૈક્રકાલે ।
 એકેન એવ તસ્માત્ ઉપયોગૈકેન્દ્રિય સર્વઃ ॥ ૬ ॥
 એકેન્દ્રિયાદિષેદાઃ પ્રતીત્ય શેષેન્દ્રિયાણિ જીયાનામ્ ।
 અથવા પ્રતીત્ય લઘ્વીન્દ્રિયમપિ પન્નેન્દ્રિયાઃ સર્વે ॥ ૭ ॥
 યત્કિલ વકુલાદીનાં દૃશ્યતે શેષેન્દ્રિયોપલભ્યોડપિ ।
 તેનાસ્તિ તદાવરણ ક્ષયોપશમસંભવસ્તેષામ્ ॥ ૮ ॥ ઇતિ ॥

સે યા ઇન્દ્રકે દ્વારા દૃષ્ટ આદિ હોનેસે શ્રોત્રાદિકોંકો ઇન્દ્રિય કહા ગયાહૈ ।
 “ઈદિ પરમૈશ્વર્યે” કે અનુસાર ઇદ્ ધાતુસે ઇન્દ્ર શબ્દ બનતાહૈ, સમસ્ત
 પદાર્થોંકા જ્ઞાતા દૃષ્ટા બન જાતા હૈ, એસા બન જાનાહી આત્માકા પરમૈ
 શ્વર્ય હૈ, એસે પરમૈશ્વર્યવાલા યહ આત્માહી હો સકતા હૈ, ઔર દ્રવ્ય
 નહીં હો સકતાહૈ, અતઃ ઇન્દ્રકી તરહ યહ જીવ પરમૈશ્વર્યવાલા હો સકનેકે
 કારણ ઇન્દ્ર કહા ગયા હૈ, ઇસ ઇન્દ્રકાહી યહ ચિહ્ન હૈ, ઇસ ઇન્દ્રિય રૂપ
 ચિહ્નસેહી આત્મા જીવકી પદ્ધિચાન હોતી હૈ, યહાં જ્ઞાનેન્દ્રિયોંકી હી યહ
 ઘાન ચલ રહી હૈ ઇમલિયે શ્રોત્રાદિક ઇન્દ્રિયાં પાંચહી કહી ગઈ હૈ,
 કંયોંકિ છદ્મસ્થ જીવ ઇનકી સહાયતાસે હી ઇનકે વિષયોંકા જ્ઞાતા હો
 સકતા હૈ ॥ ૧ ॥

અથવા ઇન્દ્રના દ્વારા દૃષ્ટ આદિ હોવાથી શ્રોત્રાદિકોને ઇન્દ્રિયો કહેવામાં આવેલ
 છે “ઈદિ પરમૈશ્વર્યે” ના અનુસાર “ઈદ્” ધાતુમાંથી ઇન્દ્ર બન્યો છે
 સમસ્ત જ્ઞાનાવરણ અને દર્શનાવરણનો અભાવ થઈ જાય ત્યારે આત્મા સમસ્ત
 પદાર્થોના જ્ઞાતા (દૃષ્ટા) બની જાય છે એવો બની જવું એજ આત્માનું
 પરમૈશ્વર્ય છે એવા પરમૈશ્વર્યવાળો આ આત્મા જ હોઈ શકે છે—બીજું દ્રવ્ય
 હોઈ શકતું નથી તેથી તે ઇન્દ્રની જેમ પરમૈશ્વર્યસ પત્ર હોઈ શકવાને કારણે
 તેને ઇન્દ્ર કહ્યો છે આ ઇન્દ્રનું જ તે ચિહ્ન છે આ ઇન્દ્રિય રૂપ ચિહ્ન વડે જ
 આત્માને (જીવને) જાણ મી શકાય છે અહીં જ્ઞાનેન્દ્રિયોની જ વાત ચાલી
 રહી છે અહીં શ્રોત્રાદિક પાંચ ઇન્દ્રિયો કહી છે, અને છદ્મસ્થ જીવો તેમની
 સહાયતાથી જ તેમના વિષયોને (તે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોને) જાણી શકે છે । ૧ ।

અવધર્મઃ-ઈતો જીવ ઉચ્ચતે । કુતઃ ? સર્વોપલબ્ધિમોગપરમેશ્વર્યાત્-આપ
રણામાયે સર્વેસ્યાપિ વસ્તુન ઉપજન્મ-પ્રાપ્તિઃ, નાનામાયયુ સર્વેસ્યાપિ પ્રિયગદ્
સ્તુનોમોગઃ-પરિમોગઃ સર્વોપલબ્ધિમોગ, તદ્વપ પરમેશ્વર્ય, તસ્માત્ । તસ્ય ઇન્દ્રસ્પ
શ્ચિત્ત્વાત્, તેન ઇન્દ્રેણ દૃષ્ટાદિત્વાત્ ષા । ઇદે ઓગ્રાદિમદ્ય-ઓગ્રનપનગ્રાપ્તરસ
નસ્પર્શનમેદાત્ પચ્ચત્રિયમિન્દ્રિય ચોત્તયમ્ ॥ ૧ ॥ એનાનિ ઇન્દ્રિયાણિ નામસ્થાપનાદિ
મેદાદ્યતુર્વિધાનિ-અસ્યાદિ-‘ત નામાદિ’ ઇત્યાદિ । સત્ ઇન્દ્રિય નામેન્દ્રિય-સ્થાપ
નેન્દ્રિય-દ્રવ્યેન્દ્રિય-ભાવેન્દ્રિય-મેદાદ્યતુર્વિધમ્ । તત્ર નામેન્દ્રિયસ્થાપનેન્દ્રિયે
પ્રસિદ્ધે । દ્રવ્યેન્દ્રિય તુ નિર્વૃત્ત્યુપકરણમેદાદ્ દ્વિવિધમ્ । તત્ર નિર્વૃત્તિ-પ્રાકાર
પરિવિશિષ્ટઃ સસ્થાનવિશેષઃ, સા ચ વાચ્યાભ્યંતરમેદાદ્ દ્વિવિધા । તત્ર વાચ્યા

યદ્યપિ અન્ય સિદ્ધાન્તકારોને જનકે અતિરિક્ત વાક્ય, વચન
પાણિ દાઘ, પાદ, (ચરણ) વાયુ મલદ્વાર ઓર ઉપરસ્થકે
ગુપ્તેન્દ્રિય મેદસે ઓર મી ઇન્દ્રિયાં માની હૈ, પર હે યહાં ઉપ
યોગી નહીં હૈ, કયોંકિ યે ઇન્દ્રિયાં જ્ઞાનમેં કામ નહીં આતી હૈ । યે તો
કર્મેન્દ્રિયાં હૈ, યે પોલને ચાલને આદિ કામોમેં હી આતી હૈ, “ત
નામાદિ” જન ઓગ્રાદિક પાંચ ઇન્દ્રિયોંકો નામ સ્થાપના દ્રવ્ય ઓર
ભાવકે મેદસે ચાર વિભાગોમેં મી વિમલ્ક ક્રિયા ગયા હૈ, પર યહાં નામ
સ્થાપના ઇન્દ્રિયકા પ્રકરણ નહીં હૈ, કયોંકિ નામ ઇન્દ્રિય ઓર સ્થાપના
ઇન્દ્રિય જ્ઞાનમેં સાધક નહીં હોતી હૈ । અતઃ દ્રવ્યેન્દ્રિય ઓર ભાવેન્દ્રિય
યે લો ઇન્દ્રિયાં હી દેખી હૈ જો જીવકો જ્ઞાન કરાનેમેં સાધક હોતી હૈ
તંયા યે લો હી જ્ઞાનેન્દ્રિય હૈ । અર્થાન્ ઓગ્રાદિ રૂપ પાંચ જ્ઞાનેન્દ્રિય
ઇન્દ્રિયાં દ્રવ્યેન્દ્રિય રૂપ મી હોતી હૈ ઓર ભાવેન્દ્રિય રૂપ ની હોતી હૈ

જે કે અન્ય સિદ્ધાન્તકારોએ તે સિવાયની વાદ (પ્રતિ) (દાઘ) યમ યદુ
(મલદ્વાર) અને ઉપરશના લેલથી બીજી પણ પાંચ ઇન્દ્રિયો કહી છે, પરંતુ તેઓ
જ્ઞાનપ્રાપ્તિમાં ઉપયોગી થતી નથી તે કારણે અહીં તેમની વાત કરી નથી.
તેમને કર્મેન્દ્રિયો કહી શકાય છે, કારણ કે તે બાહ્યતા, ચાલવા આદિ કાર્યો માં
કામ આવે છે ‘ત નામાદિ’ તે ઓગ્રાદિક પાંચ ઇન્દ્રિયોને નામ, સ્થાપના
દ્રવ્ય અને ભાવના લેલથી ચાર વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવી છે પરંતુ
અહીં નામ ઇન્દ્રિય અને સ્થાપના ઇન્દ્રિયના અધિકાર આદી રહ્યો નથી
અહીં દ્રવ્ય ઇન્દ્રિય અને ભાવ ઇન્દ્રિયના અધિકાર આદી રહ્યો છે કારણ કે
નામ ઇન્દ્રિય અને સ્થાપના ઇન્દ્રિય જ્ઞાનની સાધક હોતી નથી પરંતુ કે જે
ન્દ્રિય અને ભાવેન્દ્રિય જ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરાવવામાં સાધનબૂત અને છે તેથી તે
જે પ્રકારે જ જ્ઞાનેન્દ્રિય રૂપ છે એવે કે ઓગ્રેન્દ્રિય આદિ પાંચ જ્ઞાનેન્દ્રિયો
દ્રવ્યેન્દ્રિય રૂપ પણ હોય છે અને ભાવેન્દ્રિય રૂપ પણ હોય છે તેમની રચના

નિર્વૃત્તિ ચિત્રાન્નનેકવિધા । અથ મારા-વાદ્યા નિર્વૃત્તિ, પર્યટિકાદિરૂપા ।
 તાં ચ વિવિધા-પ્રતિનિયતરૂપતયા ટપદેષ્ટુમશક્યત્વાત્ । તથાહિ-મનુષ્યકર્મો
 નેત્રયોરુપપર્યવર્તિતોગત્ય , સુત્રો ચોપરિતનશ્રવણચન્ધાપેક્ષયા સમે, દુરગત્ય નેત્ર
 ચોરુપરિ તાદૃશ્યે ચાગ્રભાગે રૂપાદિ પ્રકારા જાતિમદાનાનાવિધા વાદ્યા નિર્વૃત્તિ
 રિતિ । અન્તરિમાન્ન્યામ્યન્તરા નિર્વૃત્તિસ્તુ સર્વેષાં પ્રાણિનાં સમાનેષ । સ્પર્શેન્દ્રિય
 નિર્વૃત્તેસ્તુ વાદ્યામ્યન્તરમેદા ન મયન્તિ, નાનાકૃતિકત્વાત્ । ' રમા અંતો '
 રસ્યત્ર પ્રાકૃતસ્ત્વાત્ રૂપનિચ્ પ્રત્યય મકૃતે પૂર્વે નિર્વિષ્ટ રિતિ ॥ ૨ ॥ સમ્પ્રતિ-
 રિત્રિયાણામ્ આન્યન્તરસંસ્થાના વાદ- ' પુષ્ક કન્ધુવાય ' રસ્યાદિના ભાષેન્દ્રિ

મળલ છે વહ આમ્યન્તર ઉપકરણ છે, ઓર અશ્વિપત્ર આદિ રૂપ જો છે
 વહ વાદ્ય ઉપકરણ છે । યહી વાત યહાં ' વાદ્યા નિવૃત્તિ ચિત્રા ' રસ
 કયન સે પ્રદર્શિત કી ગઈ છે । વાદ્ય નિવૃત્તિ અનેક પ્રકાર કી હોતી છે,
 કયોંકિ યહ પ્રતિનિયત આકાર રૂપસે કહી નહીં જા મકતી છે ।
 જૈસે-મનુષ્યકે કાન નેત્રોંકે કોનો વાદ્યભાગ મેં હોતે હૈં ઓર ઉપરિતન
 શ્રવણચક્રી અપેક્ષા સે કોનોં મોહે સમાન હોતી હૈં । દુરગ-ઘોડા કે
 કોનોં નેત્રોં કે ઉપર તીક્ષ્ણ અગ્રભાગ હોતે હૈં, રસ્યાદિ પ્રકાર કે જાતિ
 મેદસે નાના પ્રકારકી વાદ્ય નિવૃત્તિ હોતી છે । પરન્તુ આમ્યન્તર જો
 નિવૃત્તિ હોતી છે વહ સમસ્ત જીવોં કે સમાન હોતી છે । સ્પર્શેન્દ્રિય
 નિવૃત્તિ કે તો વાદ્ય ઓર આમ્યન્તર પેસે કો મેદ નહીં હોતે હૈં કયોંકિ
 વહ નાના આકૃતિવાલી હોતી છે ॥ ૨ ॥

જે રૂપ્યુ શુદ્ધ મદગ છે તે આમ્યન્તર ઉપકરણ છે અને જે અશ્વિપત્ર
 (પાંચ) આદિ રૂપ ઉપકરણ છે તે વાદ્ય ઉપકરણ છે જે જ વાત અહીં
 ' વાદ્યા નિવૃત્તિ ચિત્રા ' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામા આવી છે વાદ્ય
 નિવૃત્તિ (વાદ્યાકાર) અનેક પ્રકારની હોય છે કારણ કે તે પ્રતિનિયત આકાર
 રવાળી સભવી શકતી નથી જેમકે માણુગ્રન્થ કાન નેત્રે ના જ ને વાદ્યભાગોમાં
 હોય છે અને ઉપરીતન યત્નજન ખની અપેક્ષાએ જ ને અમરે સમાન હોય
 છે કાદાના જ ને નેત્રો ઉપર તીક્ષ્ણ અર્ધભાગ (જ ને કાન) હોય છે
 રસ્યાદિ પ્રકારે અવિશેષ અનુસાર વિવિધ પ્રકારની વાદ્ય રિત્રિય નિવૃત્તિ હોય
 છે પરન્તુ સમસ્ત જીવોમાં જે આમ્યન્તર નિવૃત્તિ હોય છે તે તો સમાન જ
 હોય છે સ્પર્શેન્દ્રિય નિવૃત્તિના તો જહ અને આન્તરિક રૂપ જે કોરો
 પડતાં જ નથી કારણ કે તે વિવિધ આકૃતિવાળી હોય છે ॥ ૨ ॥

આદોનાં=શ્રોત્રચક્ષુર્ગ્રામનસ્પર્શનેન્દ્રિયાણાં ક્રમેણ કદમ્બપુષ્પાદીનિ સંસ્થાનાનિ
 બોધ્યાનિ । તત્ર શ્રોત્રેન્દ્રિય કદમ્બપુષ્પસંસ્થાનમ્-કદમ્બપુષ્પાકારમાસગોલકરૂપ
 મિત્યર્થઃ । ચક્ષુરિન્દ્રિય-મસૂરધાન્યસંસ્થાનમ્ । ગ્રાણેન્દ્રિયમ્-અતિમુક્તકકુસુમ
 ચન્દ્રકસંસ્થાનમ્ । રમનેન્દ્રિયં ક્ષુરપ્રસંસ્થાનમ્ । સ્પર્શનેન્દ્રિયં તુ નાનાસંસ્થાનમ્ ।
 इति ॥ ३ ॥ अथ द्रव्येन्द्रियस्य द्वितीयभेद निरूपयति-‘ विसयग्राहण इत्यादि,
 उपकरणं विषयग्रहणसामर्थ्यं, तदपि इन्द्रियान्तरम्=निर्वृत्तीन्द्रियाद् अन्यदिन्द्रियं
 बोध्यम् । अयं भावः-कदम्बपुष्पाद्याकृतिमांसगोलकरूपायाः श्रोत्राद्यन्तर्निवृत्तेः

अब सूत्रकार हन्द्रियों के आभ्यन्तर संस्थान का कथन करते हैं—
 “पुष्कं कलत्रुयाए ” इत्यादि-श्रोत्र, चक्षु, घ्राण एवं रसन इन हन्द्रियों
 का संस्थान क्रमसे कदम्बपुष्प के जैसा मसूर धान्यकेजैसा अतिमुक्तक
 कुसुम के चन्द्रक जैसा एवं क्षुरप्र के जैसा है । एव स्पर्शनेन्द्रिय का
 संस्थान नियमित नहीं होने से वह नाना संस्थानवाला है । अर्थात्
 श्रोत्रेन्द्रिय का संस्थान कदम्ब पुष्पके जैसा, चक्षु हन्द्रिय का संस्थान
 चंद मसूर की दाल जैसा, घ्राणेन्द्रियका संस्थान अतिमुक्तक कुसुमके
 चन्द्रक जैसा, रसनेन्द्रिय का संस्थान क्षुरप्र के जैसा है ॥ ३ ॥

“ विसयग्रहणाह ” इत्यादि-द्रव्येन्द्रिय का द्वितीय भेद जो उप-
 कारणेन्द्रिय है, वह विषयको ग्रहण करने की सामर्थ्यरूप है, इसलिये
 इसे इन्द्रियान्तर रूप-निवृत्ति इन्द्रिय से अन्य इन्द्रिय रूप कहा गया है ।
 तात्पर्य इसका यह है कि कदम्ब पुष्प आदि की आकृतिरूप जो मांस
 गोलक है, इस मांसगोलक रूप जो श्रोत्र आदि की आभ्यन्तर निवृत्ति

હવે સૂત્રકાર ઇન્દ્રિયોના આભ્યન્તર સંસ્થાનનુ કથન કરે છે—
 “પુષ્કં કલંત્રુયાए ” ઇત્યાદિ—શ્રોત્ર, ચક્ષુ, ઘ્રાણ અને રસના ઇન્દ્રિયોનું
 સંસ્થાન અનુક્રમે કદમ્બ પુષ્પ જેવું, મસૂરની દાળ જેવું, અતિમુક્તક કુસુમના
 ચન્દ્રક જેવું અને ક્ષુરપ્ર (અસ્રા) જેવું છે સ્પર્શેન્દ્રિયનું સંસ્થાન નિયમિત
 નથી પણ વિવિધ આકારવાળું છે એટલે કે શ્રોત્રેન્દ્રિયનો આકાર કદમ્બ પુષ્પ
 સમાન છે, ચક્ષુઇન્દ્રિયનો આકાર મસૂરની દાળ સમાન છે, ઘ્રાણેન્દ્રિયનો આકાર
 અતિમુક્તક કુસુમના ચન્દ્રક સમાન છે, અને રસનેન્દ્રિયનો આકાર અસ્રા
 સમાન છે ॥ ૩ ॥

“ विसयग्रहणाह ” इत्यादि—द्रव्येन्द्रियनो जे उपकरणेन्द्रिय रूप धीले
 लेह छे ते विषयने ग्रहण करवाना सामर्थ्य रूप छे, तेही तेने इन्द्रियान्तर
 रूप-निवृत्ति इन्द्रिय करतां अन्य इन्द्रिय रूप कहेवामा आवेल छे आ कथननु
 तात्पर्य नीचे प्रमाणे छे—कदम्बपुष्प आदिनी आकृति रूप जे मांसगोलक छे,
 आ मांसगोलक रूप जे श्रोत्र आदिनी आभ्यन्तर निवृत्ति छे, ते आभ्यन्तर

નિર્વૃત્તિ ચિત્રા=અનેકવિધા । અથ ભારા-વાદ્યા નિર્વૃત્તિઃ, પર્યટિકારૂપા ।
 સાં ચ વિવિધા-પ્રતિનિપત્તરૂપતયા ઉપદેશુમશન્યત્વાત્ । તથાહિ-મનુષ્યકર્ણો
 નેપયોરુમયપાર્શ્વતોમત્તત્ , મુશ્નો ચોપરિતનશ્રવણપ્રાપેક્ષયા સમે, ઘુરગસ્ય નેત્ર
 યોરુપરિ તોરુણે ચાગ્રભાગે રૂયાદિ પ્રકારા નાતિમેશનાનાવિધા વાદ્યા નિર્વૃત્તિ
 રિતિ । અન્તરિમા=આમ્યન્તર નિર્વૃત્તિસ્તુ સર્વેષાં પ્રાપ્તિનો સમાનેવ । સ્પર્શનેન્દ્રિય
 નિર્વૃત્તિસ્તુ વાદ્યામ્યન્તરમેદા ન મશન્તિ, નાનાકૃતિકત્વાત્ । ‘ રમા જતો ’
 રત્યથ પ્રાકૃતસ્વાત્ ર્યનિચ્ પ્રસય પ્રકૃતેઃ પૂર્વ નિર્દિષ્ટ રિતિ ॥ ૨ ॥ સામ્પ્રતિ-
 રત્રિયાણામ્ આમ્યન્તરસંસ્થાનામાહ-‘ પુલ્ક કમ્પુપાપ ’ રત્યાદિના ભાષેન્દ્રિ

મળલ છે વહ આમ્યન્તર ઉપકરણ છે, ઓર અન્નિયથ આદિ રૂપ જો છે
 વહ વાદ્ય ઉપકરણ છે । યહી વાત યહી ‘ વાદ્યા નિર્વૃત્તિ ચિત્રા ’ રસ
 કથન સે પ્રદર્શિત કી ગઈ છે । વાદ્ય નિર્વૃત્તિ અનેક પ્રકાર કી હોતી છે,
 ક્યોંકિ યહ પ્રતિનિયત આકાર રૂપસં કહીં નહીં જા સકતી છે ।
 જૈસે-મનુષ્યકે કાન નેત્રોંકે ઘોનોં વાદ્યભાગ મેં હોતે હેં ઓર ઉપરિતન
 શ્રવણપ્રાપ્તી અપેક્ષા સે ઘોનોં ભોલે સમાન હોતી હેં । ઘુરગ-ઘોડા કે
 ઘોનોં નેત્રોં કે ઉપર તોરુણ અગ્રભાગ હોતે છે, રૂયાદિ પ્રકાર કે જાતિ
 મેદસે નાના પ્રકારકી વાદ્ય નિર્વૃત્તિ હોતી છે । પરન્તુ આમ્યન્તર જો
 નિર્વૃત્તિ હોતી છે વહ સમસ્ત જીવોં કે સમાન હોતી છે । સ્પર્શનેન્દ્રિય
 નિર્વૃત્તિ કે તો વાદ્ય ઓર આમ્યન્તર તેસે કો મેદ નહીં હોતે હેં, ક્યોંકિ
 વહ નાના આકૃતિવાલી હોતી છે ॥ ૨ ॥

જે કુલ્યુ શુદ્ધ મળ છે, તે આમ્યન્તર ઉપકરણ છે અને જે અક્ષિપત
 (પાંચલ) આદિ રૂપ ઉપકરણ છે તે બાદ્ય ઉપકરણ છે એ જ વાત અહીં
 ‘ વાદ્યા નિર્વૃત્તિ ચિત્રા ’ આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામા આવી છે બાદ્ય
 નિર્વૃત્તિ (બાદ્યાકાર) અનેક પ્રકારની હોય છે કારણ કે તે પ્રતિનિયત આકાર
 રવાળી સહતી થકી નથી એમકે માણસના કાન નેત્રેના બન્ને પાંચ ભાગોમાં
 હોય છે અને ઉપરીતન શ્રવણ પ્રતી અથે ॥ એ જ ને જમરે સમાન હોય
 છે ઘોડાના જ ને નેત્રો ઉપર તોરુણ અર્ધભાગ (જ ને કાન) હોય છે
 રૂયાદિ પ્રકાર અતિશેઃ અનુસાર વિવિધ પ્રકારની બાદ્ય રત્રિય નિર્વૃત્તિ હોય
 છે પરન્તુ સમસ્ત ઇવેમાં જે આમ્યન્તર નિર્વૃત્તિ હોય છે તે તો સમાન જ
 હોય છે રપરોન્દ્રિય નિર્વૃત્તિના તો બાદ્ય અને આન્તરિક રૂપ છે સેરો
 પ્રકાર જ નથી કારણ કે તે વિવિધ આકૃતિવાળી હોય છે ॥ ૨ ॥

યાદોનાં=શ્રોત્રચક્ષુર્ગ્રાસનસ્પર્શનેન્દ્રિયાણાં ક્રમેણ કદમ્બપુષ્પાદીનિ સંસ્થાનાનિ
 વોધ્યાનિ । તત્ર શ્રોત્રેન્દ્રિય કદમ્બપુષ્પસંસ્થાનમ્-કદમ્બપુષ્પાકારમાંસગોલકરૂપ
 મિત્યર્થઃ । ચક્ષુરિન્દ્રિય-મસૂરધાન્યસંસ્થાનમ્ । ગ્રાણેન્દ્રિયમ્-અતિમુક્તકકુસુમ
 ચન્દ્રકસંસ્થાનમ્ । રસનેન્દ્રિયં છુરપ્રસંસ્થાનમ્ । સ્પર્શનેન્દ્રિયં તુ નાનાસંસ્થાનમ્ ।
 ઇતિ ॥ ૩ ॥ અથ દ્રવ્યેન્દ્રિયસ્ય દ્વિતીયભેદ નિરૂપયતિ-‘વિસયમાહ્ન ઇત્યાદિ,
 ઉપકરણં વિષયગ્રહણસામર્થ્યં, તદપિ ઇન્દ્રિયાન્તરમ્=નિર્વૃત્તીન્દ્રિયાદ્ અન્યદિન્દ્રિયં
 વોધ્યમ્ । અયં ભાવઃ-કદમ્બપુષ્પાદ્યાકૃતિમાંસગોલકરૂપાયાઃ શ્રોત્રાચન્તર્નિર્વૃત્તેઃ

અવ સૂત્રકાર ઇન્દ્રિયોં કે આશ્યન્તર સંસ્થાન કા કથન કરતે હૈ—
 “પુષ્પ કલ્પુયા” ઇત્યાદિ-શ્રોત્ર, ચક્ષુ, ગ્રાણ એવં રસન ઇન્દ્રિયોં
 કા સંસ્થાન ક્રમસે કદમ્બપુષ્પ કે જૈસા મસૂર ધાન્યકેજૈસા અતિમુક્તક
 કુસુમ કે ચન્દ્રક જૈસા એવં છુરપ્ર કે જૈસા હૈ । એવ સ્પર્શનેન્દ્રિય કા
 સંસ્થાન નિયમિત નહીં હોને સે વહ નાના સંસ્થાનવાલા હૈ । અર્થાં
 શ્રોત્રેન્દ્રિય કા સંસ્થાન કદમ્બ પુષ્પકે જૈસા, ચક્ષુ ઇન્દ્રિય કા સંસ્થાન
 ચંદ મસૂર કી દાલ જૈસા, ગ્રાણેન્દ્રિયકા સંસ્થાન અતિમુક્તક કુસુમકે
 ચન્દ્રક જૈસા, રસનેન્દ્રિય કા સંસ્થાન છુરપ્ર કે જૈસા હૈ ॥ ૩ ॥

“વિસયગ્રહણા” ઇત્યાદિ-દ્રવ્યેન્દ્રિય કા દ્વિતીય ભેદ જો ઉપ-
 કારણેન્દ્રિય હૈ, વહ વિષયકો ગ્રહણ કરને કી સામર્થ્યરૂપ હૈ, હસલિયે
 હસે ઇન્દ્રિયાન્તર રૂપ-નિર્વૃત્તિ ઇન્દ્રિય સે અન્ય ઇન્દ્રિય રૂપ કહો ગયાહૈ ।
 તાત્પર્ય હસકા યહ હૈ કિ કદમ્બ પુષ્પ આદિ કી આકૃતિરૂપ જો માંસ
 ગોલક હૈ, હમ માંસગોલક રૂપ જો શ્રોત્ર આદિ કી આશ્યન્તર નિર્વૃત્તિ

હવે સૂત્રકાર ઇન્દ્રિયોના આશ્યન્તર સંસ્થાનનુ કથન કરે છે—
 “પુષ્પ કલ્પુયા” ઇત્યાદિ—શ્રોત્ર, ચક્ષુ, ગ્રાણ અને રસના ઇન્દ્રિયોનુ
 સંસ્થાન અનુક્રમે કદમ્બ પુષ્પ જેવું, મસૂરની દાળ જેવું, અતિમુક્તક કુસુમના
 ચન્દ્રક જેવું અને છુરપ્ર (અન્ના) જેવું છે સ્પર્શેન્દ્રિયનુ સંસ્થાન નિયમિત
 નથી પણ વિવિધ આકારવાળું છે એટલે કે શ્રોત્રેન્દ્રિયનો આકાર કદમ્બ પુષ્પ
 સમાન છે, ચક્ષુઇન્દ્રિયનો આકાર મસૂરની દાળ સમાન છે, ગ્રાણેન્દ્રિયનો આકાર
 અતિમુક્તક કુસુમના ચન્દ્રક સમાન છે, અને રસનેન્દ્રિયનો આકાર અન્ના
 સમાન છે ॥ ૩ ॥

“વિસયગ્રહણા” ઇત્યાદિ—દ્રવ્યેન્દ્રિયનો જે ઉપકરણેન્દ્રિય રૂપ બીજો
 ભેદ છે તે વિષયને ગ્રહણ કરવાના સામર્થ્ય રૂપ છે, તેથી તેને ઇન્દ્રિયાન્તર
 રૂપ-નિર્વૃત્તિ ઇન્દ્રિય કરતા અન્ય ઇન્દ્રિય રૂપ કહેવામાં આવેલ છે આ કથનનું
 તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે—કદમ્બપુષ્પ આદિની આકૃતિ રૂપ જે માંસગોલક છે,
 આ માંસગોલક રૂપ જે શ્રોત્ર આદિની આશ્યન્તર નિર્વૃત્તિ છે, તે આશ્યન્તર

વિષયગ્રહણસામર્થ્યમ્ ઉપકરણદ્રષ્ટ્ર્યેન્દ્રિયમિતિ । યદ્-યસ્માદ્ હેતોઃ તદુપધાતે=
 વિષયગ્રહણસામર્થ્યરૂપાવકરણેન્દ્રિયસ્ય ઉપધાતે=નાશ સતિ નિર્વૃત્તિસદ્ભાવેઽપિ-
 ઇન્દ્રિયસ્ય ઘાતામ્ય-તરાકારસત્ત્વેઽપિ ઇન્દ્રિય વિષયાન્ન શૂઢ્વાતિ, યથા ધારાયામુપ્પ,
 હવાયાં । સ્વદ્ કિમપિ વસ્તુ ન ઊત્તિ-ઇતિ ॥ ૪ ॥ અય માવેન્દ્રિય મરૂપયતિ-
 ‘લઘુવધાગો’ ઇત્યાદિ । માવેન્દ્રિય મ્ લઘુવધાગોન્દ્રિયોવયોગેન્દ્રિયમવાદ દ્વિવિ-
 ધમ્ । તથ યસ્તદાવરણાનાં ક્ષયોપશમસ્તદ્ લઘુવધાગોન્દ્રિયમ્ । તદ્ભાવે=લઘુવધાગોન્દ્રિયસ્ય
 પ્રાપ્તિવેર શેષમપિ=મવશિષ્ટમપિ ઇન્દ્રિયમ્ અર્થાદ દ્રષ્ટ્ર્યેન્દ્રિય મવતીતિ ચોધ્યમ્
 હૈ, સો હસ આમ્યન્તર નિવૃત્તિ કી જો વિષય કો ગ્રહણ કરનેકી શક્તિ
 હૈ વહ દ્રષ્ટ્ર્યેન્દ્રિય હૈ, કયોંકિ વિષય ગ્રહણ કરને કી સામર્થ્ય રૂપ જો
 ઉપકરણેન્દ્રિય હૈ વસકે નાશ હોને પર નિવૃત્તિકે સદ્ભાવ મેં બી વાદ
 એન આમ્યન્તર કે હોને પર બી ઇન્દ્રિય વિષય કો ગ્રહણ નહીં કરતી હૈ,
 જૈસે સ્વદ્ધારા કે જોપરી હો જાને પર કિસી બી વસ્તુકા મેદન નહીં
 કર પાતા હૈ ॥ ૪ ॥

અય સૂત્રકાર માવેન્દ્રિય કો પ્રરૂપણા કરતે હૈ—“લઘુવધાગો”
 ઇત્યાદિ । યહ માવેન્દ્રિય લઘિ એવં ઉપયોગ કે મેદ સે દો પ્રકાર કી હૈ
 તદાવરણોં કા જો ક્ષયોપશમ હૈ વહ લઘુવધાગોન્દ્રિય હૈ । અર્થાત્-મતિજ્ઞાના
 વરણ, ચક્ષુર્દર્શનાવરણ, ઔર અબ્ધુર્દર્શનાવરણ કા ક્ષયોપશમ હોકર
 જો આત્મામેં જ્ઞાન ઔર વર્ણન રૂપ શક્તિ વત્પન્ન હોતી હૈ વહ લઘિ
 ઇન્દ્રિય હૈ, યહ લઘિ ઇન્દ્રિય આત્માકે સપ પ્રદેશોં મેં પાઈ જાતી હૈ,

નિવૃત્તિની વિષયકને શ્રદ્ધા કરવાની જે શક્તિ છે, તે
 ઉપકરણ દ્રષ્ટ્ર્યેન્દ્રિય છે કારણ કે વિષય શ્રદ્ધા કરવાના સામર્થ્ય
 રૂપ જે ઉપકરણેન્દ્રિય છે તેનો નાશ થાય તો નિવૃત્તિનો સદ્ભાવ હોવા છતાં
 પણ જોડે કે બદલ અને આમ્યન્તરનો સદ્ભાવ હોવા છતાં પણ ઇન્દ્રિય
 વિષયને શ્રદ્ધા કરતી નથી જેમ તલવારની ધાર જુદી થઈ ગઈ હોય તો
 તલવાર કાંઈ પણ વસ્તુનું છેદન કરી શકતી નથી, જે જ પ્રમાણે ઉપકરણે
 ન્દ્રિયનો નાશ થવાથી ઇન્દ્રિય પણ વિષયને શ્રદ્ધા કરી શકતી નથી. ॥ ૪ ॥

હવે સૂત્રકાર માવેન્દ્રિયની પ્રરૂપણા કરે છે “લઘુવધાગો” ઇત્યાદિ—
 આ માવેન્દ્રિય લઘિ અને ઉપયોગના બેદથી બે પ્રકારની થઈ છે મતિજ્ઞાના
 વરણ અબ્ધુર્દર્શનાવરણ અને અબ્ધુર્દર્શનાવરણનો ક્ષયોપશમ થવાથી આત્મામા
 જે જ્ઞાન અને ઇશન રૂપ શક્તિ ઉત્પન્ન થાય છે તેનું નામ લઘિ ઇન્દ્રિય
 છે. તે લઘિ ઇન્દ્રિયનો સદ્ભાવ આત્માના સપગા પ્રદેશે માં હોય છે કારણ

॥ ૫ ॥ માવેન્દ્રિયસ્ય દ્વિતીયભેદમાહ—‘ જો સવિમય ’ ઇત્યાદિના । શ્રોત્રાદેરિન્દ્રિયસ્ય ચ. સ્વવિષયવ્યાપારઃ—સ્વવિષયે=તત્તદિન્દ્રિયગ્રાહ્યે શબ્દાદૌ વ્યાપારઃ સ ઉપયોગઃ—ઉપયોગેન્દ્રિયમિત્યર્થઃ । સ ચ એકકાલે=એકસ્મિન્ સમયે શ્રોત્રાદિષુ એકેનૈવ કેનચિદિન્દ્રિયેણ ભવતિ, તસ્માત્ હેતોઃ સર્વોઽપિ જીવ એકેન્દ્રિય એવ ભવતીતિ ॥ ૬ ॥ નતુ સર્વોઽપિ જીવ એકેન્દ્રિયસ્તર્હિ એકેન્દ્રિયદ્વીન્દ્રિયાદિ જીવભેદો ન સિધ્યતીતિ ચેદાહ—‘ ઇન્દિયાદ્યભેદા ’ ઇત્યાદિ । જીવાનામ્ એકેન્દ્રિયદ્વીન્દ્રિ-

વર્ગોકિ ક્ષયોપશમ સર્વાંગ્ગ હોતા હૈ । તથા—લબ્ધિ નિવૃત્તિ ઔર ઉપકરણ હન તીનોં કે હોને પર જો વિષયોંમેં પ્રવૃત્તિ હોતી હૈ, ઉપયોગેન્દ્રિય હૈ, યહાં કોઈ એસી આશંકા કર સકતા હૈ કિ ઉપયોગ હિન્દ્રિય કા કાર્ય હૈ, પર યહાં ઉપચારસે અર્થાત્ કાર્યમેં કારણ કા ઉપયોગ કો બી હિન્દ્રિય કહા હૈ । અથવા હિન્દ્રિયકા સુખ્ય અર્થ ઉપયોગ હૈ, ઇસલિયે બી ઉપયોગ કો હિન્દ્રિય કહ દિયા હૈ ॥ ૫ ॥

“ જો સવિમય ” ઇત્યાદિ—શ્રોત્રેન્દ્રિય આદિકા જો સ્વવિષય કે પ્રતિ વ્યાપાર હૈ, અર્થાત્ અપને ૨ ગ્રાહ્ય શબ્દાદિકો ગ્રહણ કરને રૂપ જો પ્રવૃત્તિ હૈ વહ ઉપયોગ હૈ, ઉપયોગેન્દ્રિય હૈ । એસા યહ ઉપયોગ એક સમયમેં કિસી એક હિન્દ્રિય સે હી હોતા હૈ ॥ ૬ ॥

“ ઇન્દિયાદ્યભેદા ” ઇત્યાદિ ।

હસ કારણ મમસ્ત બી જીવ એક હિન્દ્રિયવાલે હી હોતે હૈ । યદિ યહાં પર એમી શંકા કી જાવે કિ યદિ સમસ્ત જીવ એક હિન્દ્રિયવાલે

કે ક્ષયોપશમ સર્વાંગી હોય છે તથા લબ્ધિ, નિવૃત્તિ અને ઉપકરણ આ ત્રણેના સદ્ભાવ હોય ત્યારે વિષયોમા જે પ્રવૃત્તિ થાય છે, તે ઉપયોગેન્દ્રિય રૂપ છે અહીં કોઈ એવી આશંકા કરી શકે છે કે ઉપયોગ હિન્દ્રિય નથી, પણ હિન્દ્રિયનું ફલ છે, છતાં તેને હિન્દ્રિય રૂપ કેવી રીતે કહે છે ? તેની શંકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે કરી શકાય છે—જો કે ઉપયોગ હિન્દ્રિયનું કાર્ય છે, પરંતુ અહીં કાર્યમા કારણનું આરોપણ કરીને ઉપયોગને પણ હિન્દ્રિય કહેવામા આવેલ છે અથવા હિન્દ્રિયને સુખ્ય અર્થ (વિષય) ઉપયોગ છે, તેથી ઉપયોગને હિન્દ્રિય કહેવામા આવેલ છે ॥ ૫ ॥

“ જો સવિમય ” ઇત્યાદિ—શ્રોત્રેન્દ્રિય આદિની ચોતચોતાના વિષયને એટલે કે શબ્દાદિકાને ગ્રહણ કરવા રૂપ જે પ્રવૃત્તિ છે, એ જ ઉપયોગ છે અને તે ઉપયોગ જ ઉપયોગેન્દ્રિય રૂપ છે એવો તે ઉપયોગ એક સમયમા હિન્દ્રિય વડે જ થાય છે ॥ ૬ ॥

“ ઇન્દિયાદ્યભેદા ” ઇત્યાદિ—આ કારણે સમસ્ત જીવો એક હિન્દ્રિયવાળા જ હોય છે.

યત્રીન્દ્રિયચતુરિન્દ્રિયપચ્ચેન્દ્રિયભેદા શેષેન્દ્રિયાણિ=નિર્વૃત્ત્યુપકરણભવિરૂપાવ
 શિષ્ટેન્દ્રિયાણિ પ્રતીત્ય=આધિત્ય પ્રવૃષ્ટ્યા । અથવા-લગ્નીન્દ્રિય પ્રતીત્ય=
 આધિત્ય સર્વેન્દ્રિયા જીવા પચ્ચેન્દ્રિયા મચ્ચતીતિ ॥ ૭ ॥ નનુ કય સર્વેન્દ્રિયા જીવા
 પચ્ચેન્દ્રિયા મચ્ચતિ ? કથમહ- 'જં કિર' ક્તવાદિના । યદ્ યસ્માદ્ દેશ કિં
 નિશ્ચયેન ચક્રનાદીના=ચક્રજ્ઞાનાનાં ધનસ્પતિવિશેષાણાં શ્વેતેન્દ્રિયોપસમ્મોડપિ=
 સ્પર્શનેન્દ્રિયાધિરિક્તેન્દ્રિયલાભોડપિ હસ્યતે તેન દેહુના જાયતે યત્ તેવાં ચક્રના
 દીનામપિ તદાસરગમયોપશમમંમયોડસ્તિ । અન્યથા ચક્રનસ્ય કામિનીમુખાર્પિત
 મદિરાગમ્હયેગ ચરકસ્ય અતિસુરભિગ્ધોદકમેચનન, તિલકમ્ય કામિનીકયા

હું તો ફિર પચેન્દ્રિય, ધ્રીન્દ્રિય, ધ્રીન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય ઓર પંચેન્દ્રિય રૂપ જો
 જીવોં કે મેદ્ હું જે મિદ્ નહોં હો મકતે હું । તો હસકા ઉસદ્ પેસા હું
 કિ એસે જો જે મેદ્ હુદ્ હું જે નિવૃત્તિ ઉપકરણ એ લગ્નિ હન હન્દ્રિયોં
 સે મિદ્ જો હન્દ્રિયા હું, ધનકી પ્રતીતિ કરકે આશ્રિત કરકે હી હુદ્ અથવા
 લગ્નીન્દ્રિય રૂપ આશેન્દ્રિય કોલેકર સમસ્ત જીવ પચેન્દ્રિય હોતે હું ॥ ૭ ॥

સમસ્ત જીવ પચેન્દ્રિય કેસે હોતે હું ? તો હસકે લિપે "જં કિર"
 ક્તવાદિ યાગ સમજાયા ગયો હું કિ ચક્રલઘુક્ષ આદિ જો ધનસ્પતિ
 વિશેષ હું ધનકે સ્પર્શન હન્દ્રિય સે અતિરિક્ત હન્દ્રિયોં કા લાભ મી દેલા
 જાના હું, કિ ચક્રલ આદિકોં કે મી તદાવરણ કા ક્ષયોપશમ સંભવ
 હું નહોં તો ચક્રલ જો કામિની કે મુખસે અર્પિત મદિરા કે કુલ્લે સે
 ચપક કે અતિ સુરમિ ગમ્હયક કે નિચન સે તિલક કે કામિનીજનોંકે

શકા—જો સમસ્ત હવે એક હન્દ્રિયવાળા હોય તો હવેના એક
 દ્રીન્દ્રિય દ્રીન્દ્રિય ત્રીન્દ્રિય ચતુરિન્દ્રિય અને પચેન્દ્રિય કેવું બેરો આ
 માટે પાઠ્યા છે ?

ઉત્તર—જા જે બેરો પાઠ્યામાં આ યા છે તે નિવૃત્તિ ઉપકરણ અને
 લગ્નિ આ હન્દ્રિયોથી જિન જે હન્દ્રિયો કહી છે તેમને આધારે જ પાઠ્યામાં
 આવેલ છે અથવા લગ્નીન્દ્રિય કેવું બેરો દ્રિયની અપેક્ષાએ સમસ્ત હવે
 પચેન્દ્રિય હોય છે ॥ ૭ ॥

સમસ્ત હવે પચેન્દ્રિય કેવી રીતે હોય છે ? આ વાત નીચેના સુત્ર
 થાક દ્વારા સમજાવવામાં આવી છે "જં કિર" ક્તવાદિ—અકુલજ્ઞ આદિ
 જે ધનસ્પતિ વિશેષ છે તેમનામાં સ્પર્શેન્દ્રિય સિવાયની હન્દ્રિયોના સક્રિય
 ભાગમાં આવે છે તે કારણે એવું માની શકાય છે કે અકુલ આદિકોમાં
 પણ તદાવરણીય ક્રમોના ક્ષયોપશમ અનુભવિત છે એ આ વાત અસંભવિત
 હોવા તો અકુલજ્ઞને અતિ મુત્ર પીદાર અપોહક હાંચાથી, તિલકજ્ઞને કૌર્ણ

સંવિક્ષેપેન, વિરહકૃત્ત્વસ્ય ચ પञ्चमस्वरश्रवणेन पुष्पपल्लवादि संभवो न स्या-
दिति ॥ ८ ॥ ननु वक्रुत्तादयो यदि पञ्चेन्द्रियान्तर्हि ते पञ्चेन्द्रियत्वेन कथं न व्यव-
हियन्ते ? इत्यत आह—

“ पंचिन्द्रियवच्च उलो, नरोव च सर्वविषयभोवलंभाउ ।

तद्वि न भणइ पंचिन्द्रિओति वज्झि दियા भावा ” ॥ ૯ ॥

છાયા—પંચેન્દ્રિય એવ વકુલ, નર એવ સર્વવિષયોપલમ્ભાત્ ।

તથાપિ ન ભળયતે પંચેન્દ્રિય ઇતિ વાહ્યેન્દ્રિયાભાવાત્ ॥ ૯ ॥

અર્થ—ઉપજ્ઞાનત્વાત્ ચંપકાદિશ્ચ સર્વવિષયોપલમ્ભાત્ નરએવ પંચેન્દ્રિય
એવ । તથાપિ સ વાહ્યેન્દ્રિયાભાવાત્ પંચેન્દ્રિય ઇતિ ન ભળયતે ઇતિ ॥ ૯ ॥

एवं भूतस्य इन्द्रियस्य अर्थाः=विषयाः शब्दादयः पञ्चसंख्यकाः प्रज्ञप्ताः,

કટાક્ષ વિદ્યેપ સે એવ વિરહક વૃક્ષકે પञ्चम स्वरके श्रवण से पुष्पपल्लव
આદિકા જો સંભવ હોતા હૈ વહ નહીં હોના યાહિયે ॥ ૮ ॥

यदि यहां पर ऐसी शका की जावे कि वक्रुल आदि पंचेन्द्रिय माने
जाते हैं तो फिर इनमें पञ्चेन्द्रियत्व रूपका व्यवहार क्यों नहीं होता है ?
तो इसके लिये ऐसा कहा गया है—

“ पंचिन्द्रियवच्च उलो ” इत्यादि । वक्रुल चंपक आदि वृक्ष सर्व विष-
यके उपलंभक होने से मनुष्य की तरह पंचेन्द्रिय ही हैं, फिर भी वाह्य-
न्द्रियके अभावसे पंचेन्द्रिय इस रूपसे नहीं कहे जाते हैं ॥ ९ ॥

इस प्रकार की इन्द्रिय के जो अर्थ हैं, विषय हैं वे इन्द्रियार्थ हैं,
ऐसे ये इन्द्रियार्थ शब्दादिक रूपा पांच होते हैं । जिससे सुना जाता है

કોઈ કામિનીના કટાક્ષ વિદ્યેપ સંભળાવવાથી અને વિરહકવૃક્ષને પંચમ સ્વરના
સૂરનું શ્રવણ કરવાથી પુષ્પપલ્લવ આદિ જે આવવા માટે છે, તે આવવાનું
સંભવી શકત નહીં ॥ ૮ ॥

શંકા—જે બકુલ આદિને અહીં પંચેન્દ્રિય રૂપ બતાવવામા આવેલ છે,
તો તેમનામા પંચેન્દ્રિયત્વ રૂપે વ્યવહાર કેમ થતો નથી. શા માટે તેમને
એકેન્દ્રિય રૂપે માનવામાં આવે છે ?

આ શંકાના સમાધાન માટે એવું કહ્યું છે કે “ પંચિન્દ્રિયવચ્ચઉલો ”
ઈત્યાદિ—બકુલ, ચંપક આદિ વૃક્ષો સર્વ વિષયના ઉપલબ્ધ હોવાથી તેમને
મનુષ્યની જેમ અહીં પંચેન્દ્રિય રૂપ બતાવ્યા છે. છતાં પણ બાહ્યેન્દ્રિયના
અભાવે કરીને તેમને એકેન્દ્રિય રૂપ જ ગણવામા આવે છે—પંચેન્દ્રિય રૂપ
ગણાતાં નથી ॥ ૯ ॥

આ પ્રકારના ઇન્દ્રિયોના જે અર્થ (વિષય) છે, તેમને ઇન્દ્રિયાર્થ કહે
સ્થા. ૧૦—૨૪

તાનેશ્વર-તથા-ધોષેન્દ્રિયાર્થ-શ્રવણેનેનેતિ શ્રોત્રમ્, સચ્ચ તદિન્દ્રિય ચ
ધોષેન્દ્રિયં તસ્ય મર્ધા વિષયઃ સ્વરઃ । યાવત્-અધ્યાત્-ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થઃ પ્રાણેન્દ્રિ
યાર્થઃ રસનેન્દ્રિયાર્થઃ ગ્રાણ । તપ્ત ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થો રૂપમ્, પ્રાણેન્દ્રિયાર્થો ગન્ધઃ ।
રસનેન્દ્રિયાર્થો રસઃ, સ્પર્શનેન્દ્રિયાર્થઃ સ્પર્શઃ इति ।

તથા—મુળ્હ-મુળ્હનમ્-મપનયનમ્-મુળ્હઃ । સ ચ દ્વિવિધો-દ્રવ્યતો માત્ર
તથા । તત્-દ્રવ્યતઃ કેશાવનયનમ્ । માવતસ્તુ મનસ શ્દિયાર્થનિષ્ઠ રોગરૂપોઃ
કપાવાર્મા ચાવનયનમ્ । દ્રવ્યમાત્રરૂપમુળ્હયોગાત્ પુરુષોઽપિ મુળ્હઃ । સ ચ
પદ્ધતિઃ મહત્તઃ । પદ્ધતિપરમાદ-તથા-ધોષેન્દ્રિયમુળ્હ-ધોષેન્દ્રિયે મુળ્હઃ
ધોષેન્દ્રિયેણ ચા મુળ્હઃ । ધોષેન્દ્રિયવિષયશબ્દ રાગાવનયનાત્ પુરુષઃ ધો
ષેસો જો હિન્દ્રિય હૈ ચહ ધોષેન્દ્રિય હૈ । રસ હિન્દ્રિય કા વિષય શબ્દ હૈ,
યહાં યાવત્ શરૂસે " ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થઃ પ્રાણેન્દ્રિયાર્થઃ રસનેન્દ્રિયાર્થઃ
સ્પર્શનેન્દ્રિયાર્થ " રૂપકા મહત્ત હુમા હૈ । ચક્ષુરિન્દ્રિય કા વિષય રૂપ હૈ
પ્રાણેન્દ્રિય કા વિષય ગન્ધ હૈ, રસનેન્દ્રિય કા વિષય રસ હૈ, ઓર સ્પર્શ
નેન્દ્રિય કા વિષય સ્પર્શ હૈ । દૂર કરને કા નામ મુળ્હ હૈ, યહ મુળ્હ દો
મહાર કા હોતા હૈ, ઇક દ્રવ્ય સે મુળ્હ ઓર દૂસરા માય સે મુળ્હ કેશો
કા દૂર કરના, મસ્તક સે કેશો કા લુબન આદિ કરના યહ દ્રવ્ય સે
મુળ્હ હૈ તથા મનસે હિન્દ્રિય કે અર્થો મેં રાગદ્વેષ કરને કા અથવા કપાવ
કરને કા ત્યાગ કરના યહ માત્ર સે મુળ્હ હૈ । રૂપ દ્રવ્ય ઓર માત્રરૂપ
મુળ્હ કે તંપચ સે પુરુષ મી મુળ્હ હોના હૈ, યહ મુળ્હ પાંચ પ્રકાર કહા
ગયા હૈ । જૈસે-ધોષેન્દ્રિય મુળ્હ, જો ધોષેન્દ્રિય મેં મુળ્હ અથવા ધોષ

ઉ બેનાં તે ઇન્દ્રિયાર્થો શબ્દાદિ રૂપ માત્ર પ્રકાશના દોષ ઉ બેના દ્વારા
અભિપ્રાય છે તે ઇન્દ્રિયને ધોષેન્દ્રિય કહે છે તે ઇન્દ્રિયનો વિષય શબ્દ છે
અને 'યાવત્' યદ વડે ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થ, પ્રાણેન્દ્રિયાર્થ, રસનેન્દ્રિયાર્થ અને
સ્પર્શેન્દ્રિયાર્થ બદલ કરના બેધને ચક્ષુરિન્દ્રિયનો વિષય રૂપ છે પ્રાણેન્દ્રિયનો
વિષય ગન્ધ છે રસના ઇન્દ્રિયનો વિષય રસ છે અને સ્પર્શેન્દ્રિયનો વિષય
સ્પર્શ છે દૂર કરવું તેનું નામ 'મુળ્હ' છે તે મુળ્હ (મુદન) બે પ્રકારનું
છે—(૧) દ્રવ્યની અપેક્ષાએ મુદન અને (૨) જાતની અપેક્ષાએ મુદન અર્થ
કના ડેધનું ઉદન અર્થ કરવું તેનું નામ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ મુદન છે તથા
માનવી હિન્દ્રિયોના વિષયોમાં રાગદ્વેષ કરવાનો અથવા કપાવ કરવાનો ત્યાગ
કરવો તેનું નામ જાતની અપેક્ષાએ મુદન છે આ દ્રવ્ય અને જાત રૂપ મુદન

ત્રેન્દ્રિયમુખ્દ હત્યુચ્યતે । एवं चक्षुरिन्द्रिय-मुण्डादिपि बोध्य इति । प्रकारान्तरेण पुनरपि पञ्चविधान् मुण्डानाह-क्रोधमुण्ड-क्रोधस्य अपनयात् क्रोधे मुण्डः क्रोधेन वा मुण्ड इति १। एवं मानमुण्डो २ मायामुण्डो ३ लोभमुण्डः ४ शिरो-मुण्डश्च ५ बोध्य इति ॥मू० ३॥

મુખ્દનં ચ વાદરજીવવિશેષાણામેવ ભવતીતિ વાદરજીવ વિશેષાનાહ-

મૂલમ્-અહેલોગે ણં પંચ વાયરા પળ્લન્તા, તં જહા-પુઠ્ઠાવિ-કાઢ્યા ૧ આઝકાઢ્યા ૨ વાઝકાઢ્યા ૩ વળસ્સર્ફકાઢ્યા ૪ ઓરાલા તસા પાળા ૫ । ૧। ઝઢૂલોગે ણં પંચ વાયરા પળ્લન્તા, તં જહા-એવં તં ચેવ ૨। તિરિયલોગે ણં પંચ વાયરા પળ્લન્તા, તં જહા-એગિંદિયા જાવ પંચિંદિયા ૩। પંચવિહા વાયરતેઝકાઢ્યા પળ્લન્તા, તં જહા-ઙ્ગાલે ૧ જાલા ૨ મુમ્મુરે ૩ અચ્ચી ૪

હિન્દ્રિય સે મુખ્દ હોતા હૈ-અર્થાત્ શ્રોત્રેન્દ્રિય કે વિષયમૂત શબ્દમેં રાગ દ્રેષ હોને રૂપ ભાવ કોઈ ૨ કરતા હૈ, વહ પુરુષ શ્રોત્રેન્દ્રિય મુખ્દ કહા જાતા હૈ, હસી પ્રકાર સે ચક્ષુ હિન્દ્રિય મુખ્દ આદિ ભી સમજ્જ લેના ચાહિયે । હસ ઢિતીય પ્રકારાન્તર સે ભી મુખ્દ પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, જૈસે-ક્રોધ મુખ્દ, માન મુખ્દ, માયા મુખ્દ, લોભ મુખ્દ ઔર શિરો મુખ્દ હૈ, જો ક્રોધ કો હટા દેતા હૈ, ક્રોધ કરને કા ત્યાગ કર દેતા હૈ, વહ ક્રોધ મુખ્દ હૈ, હસી પ્રકારસે માન મુખ્દ આદિ ભી સમજ્જ લેના ચાહિયે ॥મૂ० ૩॥

નના સખધથી પુરુષ પણ મુહિત થાય છે તે મુહ (મુહિત) ના પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) શ્રોત્રેન્દ્રિય મુહ, (૨) ચક્ષુરિન્દ્રિય મુહ, (૩) શ્રાણેન્દ્રિય મુહ, (૪) રસનેન્દ્રિય મુહ અને (૫) સ્પર્શેન્દ્રિય મુહ

જે શ્રોત્રેન્દ્રિયમાં મુહ અથવા શ્રોત્રેન્દ્રિયની અપેક્ષાએ મુહ અથવા શ્રોત્રેન્દ્રિયના વિષય રૂપ શબ્દમાં રાગદ્રેષથી રહિત હોય છે તેને શ્રોત્રેન્દ્રિય મુહ કહે છે એ જ પ્રમાણે ચક્ષુરિન્દ્રિય મુહ આદિ વિષે પણ સમજવું ખીલ રીતે પણ પાંચ પ્રકારના મુહ કહ્યા છે—(૧) ક્રોધમુહ, (૨) માનમુહ, (૩) માયામુહ, (૪) લોભમુહ અને (૫) શિરોમુહ જે માણસ ક્રોધને દૂર કરે છે-ક્રોધનો ત્યાગ કરે છે તેને ક્રોધમુહ કહે છે. એ જ પ્રમાણે માનમુહ આદિ વિષે પણ સમજવું. ॥ સ્. ૩ ॥

વાનેશ્વર-વપ્સા-ભોત્રેન્દ્રિયાર્થઃ-શ્રુતેન્દ્રિયેનેતિ શ્રોત્રમ્, તદ્વપ્સ તદિન્દ્રિયં ચ
 ભોત્રેન્દ્રિયં તસ્ય અર્થો વિષયઃ શબ્દઃ । યાવત્-શબ્દાત્-ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થઃ પ્રાણેન્દ્રિ
 યાર્થઃ રસનેન્દ્રિયાર્થમ્ ગ્રાહ્ય । તત્ત્વ ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થો રૂપમ્, પ્રાણેન્દ્રિયાર્થો ગન્ધઃ ।
 રસનેન્દ્રિયાર્થો રસઃ, સ્પર્શનેન્દ્રિયાર્થમ્ સ્પર્શઃ इति ।

તથા—મુઢ્ઢ-મુઢ્ઢનમ્-અપનપનમ્-મુઢ્ઢઃ । સ ચ દ્વિવિધો-દ્રવ્યતો માર
 તમ્ । તત્ત્વ-દ્રવ્યતઃ કેશાપનપનમ્ । માતૃતસ્તુ મનસ ઈન્દ્રિયાર્થનિષ્ઠ રાગદ્વેષયોઃ
 કપાયામાં ચાપનપનમ્ । દ્રવ્યમાતૃરૂપમુઢ્ઢયોગાત્ પુરુષોઽપિ મુઢ્ઢઃ । સ ચ
 પચ્ચવિધઃ પ્રકારઃ । પચ્ચવિધત્વમાહ-તથા-ભોત્રેન્દ્રિયમુઢ્ઢ-ભોત્રેન્દ્રિય મુઢ્ઢઃ
 ભોત્રેન્દ્રિયેણ ચા મુઢ્ઢઃ । ભોત્રેન્દ્રિયવિષયશબ્દે રાગાપનપનાત્ પુરુષઃ ભો
 યેસી જો ઈન્દ્રિય હૈ ચહ ભોત્રેન્દ્રિય હૈ । હસ ઈન્દ્રિય કા વિષય શબ્દ હૈ,
 યહાં યાવત્ શબ્દસે “ ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થઃ પ્રાણેન્દ્રિયાર્થઃ રસનેન્દ્રિયાર્થઃ
 સ્પર્શનેન્દ્રિયાર્થઃ ” ફનકા પ્રકરણ હુઆ હૈ । ચક્ષુરિન્દ્રિય કા વિષય રૂપ હૈ
 પ્રાણેન્દ્રિય કા વિષય ગન્ધ હૈ, રસનેન્દ્રિય કા વિષય રસ હૈ, ઓર સ્પર્શ
 નેન્દ્રિય કા વિષય સ્પર્શ હૈ । દૂર કરને કા નામ મુઢ્ઢ હૈ, યહ મુઢ્ઢ દો
 પ્રકાર કા હોતા હૈ, એક દ્રવ્ય સે મુઢ્ઢ ઓર દૂસરા આવ સે મુઢ્ઢ કેશો
 કા દૂર કરના, મસ્તક સે કેશો કા લુપ્ત આદિ કરના યહ દ્રવ્ય સે
 મુઢ્ઢ હૈ તથા મનસે ઈન્દ્રિય કે અર્થો મેં રાગદ્વેષ કરને કા અથવા કપાપ
 કરને કા ત્યાગ કરના યહ આવ સે મુઢ્ઢ હૈ । હસ દ્રવ્ય ઓર આવરૂપ
 મુઢ્ઢ કે સંયમ સે પુરુષ મી મુઢ્ઢ હોતા હૈ, યહ મુઢ્ઢ પાંચ પ્રકાર કહા
 ગયા હૈ । જૈતે-ભોત્રેન્દ્રિય મુઢ્ઢ, જો ભોત્રેન્દ્રિય મેં મુઢ્ઢ અથવા ભોત્ર

ઉ બેનાં તે ઇન્દ્રિયાર્થો શબ્દાદિ રૂપ પાંચ પ્રકારના હોય છે બેના દ્વારા
 સંલગ્નાય છે તે ઇન્દ્રિયને ભોત્રેન્દ્રિય કહે છે તે ઇન્દ્રિયનો વિષય શબ્દ છે
 અહીં ‘યાવત્’ પદ વડે ચક્ષુરિન્દ્રિયાર્થ, પ્રાણેન્દ્રિયાર્થ, રસનેન્દ્રિયાર્થ અને
 સ્પર્શનેન્દ્રિયાર્થ શબ્દો કરવા બોધાએ ચક્ષુરિન્દ્રિયનો વિષય રૂપ છે, પ્રાણેન્દ્રિયનો
 વિષય ગન્ધ છે, રસનાઇન્દ્રિયનો વિષય રસ છે અને સ્પર્શનેન્દ્રિયનો વિષય
 સ્પર્શ છે દૂર કરવું તેનું નામ “ મુઢ્ઢ ” છે તે મુઢ્ઢ (મુઢ્ઢન) બે પ્રકારનું
 છે—(૧) દ્રવ્યની અપેક્ષાએ મુઢ્ઢન અને (૨) ભાવની અપેક્ષાએ મુઢ્ઢન મસ્ત
 કના કેશનું લુપ્ત આદિ કરવું તેનું નામ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ મુઢ્ઢન છે તથા
 મનથી ઇન્દ્રિયોના વિષયોના રાગદ્વેષ કરવાનો અથવા કપાપ કરવાનો ત્યાગ
 કરવો તેનું નામ ભાવની અપેક્ષાએ મુઢ્ઢન છે આ દ્રવ્ય અને ભાવ રૂપ મુઢ્ઢ

અધોલોક્યવદેવ ઋર્ધ્વલોકેડપિ પશ્ચ વાદરા યોધ્યાઃ । અધોલોકેર્ધ્વલોકયોશ્ચ તૈ-
જસા વાદરા ન સન્તીતિ પશ્ચ વાદરા ઉક્તાઃ । નનુ અધોલોકે ઋર્ધ્વકપાટદ્વયે
વાપિ તૈજસા વાદરાઃ સન્તિ, તર્હિ કથમુક્તમ્-અધોલોકોર્ધ્વલોકયોશ્ચ તૈજસા
વાદરા ન સન્તિ ? इति चेदाह-यद्यपि सन्ति परन्तु तेऽल्पतया न विवक्षिताः । ये
चोर्ધ્વકપाटद्वये तेऽपि उत्पत्त्यमानत्वेन उत्पत्तिस्थान-स्थितत्वाद् न विवक्षिता
इति । तिर्यग्लોકેડપિ એકેન્દ્રિયાદિ પશ્ચેન્દ્રિયાન્તાઃ પશ્ચ વાદરાઃ સન્તિ । તત્ર-
એકેન્દ્રિયાઃ-एकं=स्पर्शनरक्षणम् इन्द्रियम्=एकेन्द्रियजातिनामकर्मोदयात्तदावर-

કહા હૈ । એકેન્દ્રિયકી અપેક્ષા સે ઉદારતા જાનની ચાહિયે, અધોલોક
કી તરહ ઉર્ધ્વલોક મેં ભી હસી તરહ સે પાંચ વાદર હૈં । અધોલોક એવં
ઉર્ધ્વલોક મેં તૈજસ વાદર નહીં હૈં ।

શંકા--અધોલોક મેં એવં ઉર્ધ્વ કપાટદ્વય મેં તૈજસ વાદર હૈં, તો
ફિર આપ અધોલોક એવં ઉર્ધ્વલોક મેં તૈજસ વાદર નહીં હૈં એસા
કેસે કહતે હૈં ?

ઉત્તર--યદ્યપિ ये वहां हैं परन्तु वे वहां बहुत थोड़े हैं, इसलिये
वहां वे विवक्षित नहीं हुए हैं । तथा जो ऊर्ध्वकपाटद्वय में तैजस वાદર
કહે ગયે હૈં, वे भी उत्पत्त्यमान होने से उत्पत्तिस्थान के आश्रित होने
રૂપસે વિવક્ષિત નહીં હુએ હૈં । તિર્યગ્લોક મેં ભી એકેન્દ્રિય સે લેકર
પશ્ચેન્દ્રિય તકકે પાંચ વાદર હૈં । જિનકો એકેન્દ્રિય જાતિ નામ કર્મ કે
ઉદયસે ઔર તદાવરણ કે ક્ષયોપશમ સે એક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય હૈં વે

ત્રસ પ્રાણી. તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક પણ ત્રસ હોય છે, તેથી સ્થૂલ ત્રસ
પ્રાણીને ' ઉદાર ' વિશેષણ લગાડવામા આવ્યું છે. આ ઉદારતા એકેન્દ્રિયોની
અપેક્ષાએ સમજવી જોઇએ ઉર્ધ્વલોકમાં પણ એ જ પ્રકારના પાંચ બાદરો
છે. અધોલોક અને ઉર્ધ્વલોકમાં તૈજસ બાદર નથી.

શંકા--અધોલોકમાં અને ઉર્ધ્વકપાટ દ્વયમાં પણ તૈજસ બાદરનો સદ્-
ભાવ હોય છે, છતાં આપ શા કારણે એવું કહો છો કે ઉર્ધ્વલોક અને
અધોલોકમા તૈજસ બાદરનો સદ્ભાવ નથી ?

ઉત્તર--જો કે તેમનું ત્યા અસ્તિત્વ છે ખરૂં, પણ તેઓ ત્યા ઘણાં જ
અલ્પ પ્રમાણમાં છે, તેથી અહીં તેમનો ઉલ્લેખ કરવામા આવ્યો નથી.

તથા જે ઉર્ધ્વકપાટદ્વયમાં તૈજસ બાદર કહ્યા છે, તેઓ પણ ઉત્પત્ત્ય-
માન હોવાથી ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં આશ્રિત હોવા રૂપે વિવક્ષિત થયા નથી.
તિર્યગ્લોકમાં પણ એકેન્દ્રિયથી લઇને પશ્ચેન્દ્રિય પચાન્તના પાંચ પ્રકારના બાદર

અલાપ ૧ પચ્ચિહા વાયરવાડકાદ્યા પળ્લતા, ત જહા-પાર્શ્વ
વાપ ૧ પહીળવાપ ૨ દાહિળવાપ ૩ ઉદીળવાપ ૪ વિદિસ
વાપ ૫। પચ્ચિહા અચિત્તા વાડકાદ્યા પળ્લતા, ત જહા-
અક્ષતે ૧ ધતે ૨ પીલિપ્ ૩ સરીરાળુગપ્ ૪ સમુચ્છિમે ૫ ॥ સૂ. ૦ ૪ ॥

છાયા—અધોલોકે સ્વલ્પ પચ્ચ વાદરા પ્રહસા, તથા—પૃથિવીકાપિકા ૧,
અપ્કાપિકા ૨, વાયુકાપિકા ૩, રત્નસ્પતિકાપિકા ૪ ઉદારાસ્પતાઃ પ્રાપ્તાઃ ૫।
૧। અધોલોકે સ્વલ્પ પચ્ચ વાદરા પ્રહસા, તથા—એવં તદ્વત્। ઉપરલોકે સ્વલ્પ પચ્ચ
વાદરા પ્રહસા, તથા—એકેન્દ્રિયા યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયા। પચ્ચવિધા વાદરતેજ-
સ્કાપિકા પ્રહસા, તથા—મહારો ૧ જ્વાલા ૨ સુર્પરઃ ૩ અર્ચિ ૪ અલાત્પ્
૫। પચ્ચવિધા વાદરવાયુકાપિકા પ્રહસા, તથા—પ્રાચીનવાતઃ ૧, પ્રગીચીન
વાત ૨, દક્ષિણવાતઃ ૩, ઉદીચીનવાતઃ ૪ વિદિગ્ધવાતઃ ૫। પચ્ચવિધા અગ્નિ
વાયુકાપિકા, પ્રહસા, તથા—પ્રાકાત ૧ ક્ષ્માત ૨ પીલિપ્ ૩ સરીરાળુગતઃ
૪ સંમુચ્છિમઃ ૫ ॥ સૂ. ૦ ૪ ॥

ટીકા—‘અધોલોકે’ ઇત્યાદિ—

અધોલોકે સ્વલ્પ=નિષ્પેદન પચ્ચ—૧ સ્વ સંકપકા વાદરાઃ સન્તિ। તેવ પૃથિવી
કાપિકાઃ ૧, અપ્કાપિકાઃ ૨, વાયુકાપિકાઃ ૩, રત્નસ્પતિકાપિકાઃ ૪ તથા—
ઉદારા=સ્પૂતાઃ પ્રસાઃ પ્રાપ્તાઃ=પ્રાણિનઃ ૫। તેજસ્કાપિકા વાયુકાપિકા અગ્નિ
પ્રસા મત્ત-જીતિ ‘ઉદારા’ ઇતિ વિશેષગમ્યકમ્। ઉદારસ્પતિકેન્દ્રિયાપેતવા ચોક્કમ્।

પદ્ય સુવિજ્ઞાન અવસ્થા જો વિશેષ વાદરજીવ હોતે હિ, તરીકો હોતી
હિ। અથ સૂત્રકાર વાદરજીવ વિશેષોક્તા કવન કરતે હિ—

“અધોલોકે પચ્ચ વાયરા પળ્લતા” ઇત્યાદિ।

ટીકાપ—અધોલોકે પાંચ વાદરહે જાતે—પૃથિવીકાપિક ૧, અપ્કાપિક ૨
વાયુકાપિક ૩ રત્નસ્પતિકાપિક ૪ તથા ઉદાર સ્પૂલ પ્રસવાળી ૫ તેજસ્કા
પિક એવ વાયુકાપિક ઓ અસ હોતે હિ, ફસલિયે ઉદાર જેમા વિશેષણ

આ મુકિત અવસ્થાને સદ્ભાવ બાદર છત્ર વિશેષોક્તા હોય છે તેથી
એ સૂત્રકાર બાદર છત્ર વિશેષજ્ઞ કવન કરે છે

‘અધોલોકે પચ્ચ વાયરા પળ્લતા’ ઇત્ય દિ—

ટીકાપ—અધોલોકે પાંચ વાદરહે જાતે પાંચ વાદર છત્રે હોય છે—(૧) પૃથ્વીકાપિક
(૨) અપ્કાપિક, (૩) વાયુકાપિક, (૪) રત્નસ્પતિકાપિક અને (૫) ઉદાર સ્પૂલ

અધોલોકવદેવ ઋર્ધ્વલોકેડપિ પશ્ચ વાદરા વોધ્યાઃ । અધોલોકોર્ધ્વલોકયોશ્ચ તૈ જસા વાદરા ન સન્તીતિ પશ્ચ વાદરા ઉક્તાઃ । નન્તુ અધોલોકે ઋર્ધ્વકપાટદ્વયે ચાપિ તૈજસા વાદરાઃ સન્તિ, તર્હિ કથમુત્કમ્-અધોલોકોર્ધ્વલોકયોશ્ચ તૈજસા વાદરા ન સન્તિ ? इति चेदाह-यद्यपि सन्ति परन्तु तेऽल्पतया न विवक्षिताः । ये चोर्ध्वकपाटद्वये तेऽपि उत्पत्त्यमानन्वेन उत्पत्तिस्थान-स्थितत्वाद् न विवक्षिता इति । तिर्यग्लોકેડપિ એકેન્દ્રિયાદિ પશ્ચેન્દ્રિયાન્તાઃ પશ્ચ વાદરાઃ સન્તિ । તત્ર-એકેન્દ્રિયાઃ-એકં=સ્પર્શનચક્ષણમ્ ઇન્દ્રિયમ્=એકેન્દ્રિયજાતિનામકર્મોદયાત્તદાવર-

કહા હૈ । એકેન્દ્રિયકી અપેક્ષા સે ઉદારતા જાનની ચાહિયે, અધોલોક કી તરહ ઉર્ધ્વલોક મેં મી હસી તરહ સે પાંચ વાદર હૈં । અધોલોક એવં ઉર્ધ્વલોક મેં તૈજસ વાદર નહીં હૈં ।

શંકા--અધોલોક મેં એવં ઉર્ધ્વ કપાટદ્વય મેં તૈજસ વાદર હૈં, તો ફિર આપ અધોલોક એવં ઉર્ધ્વલોક મેં તૈજસ વાદર નહીં હૈ એસા કૈસે કહતે હૈં ?

ઉત્તર--યદ્યપિ યે વહાં હૈં પરન્તુ વે વહાં વહુત થોડે હૈં, ઇસલિયે વહાં વે વિવક્ષિત નહીં હુએ હૈં । તથા જો ઋર્ધ્વકપાટદ્વય મેં તૈજસ વાદર કહે ગયે હૈં, વે મી ઉત્પત્ત્યમાન હોને સે ઉત્પત્તિસ્થાન કે આશ્રિત હોને રૂપસે વિવક્ષિત નહીં હુએ હૈં । તિર્યગ્લોક મેં મી એકેન્દ્રિય સે લેકર પશ્ચેન્દ્રિય તકકે પાંચ વાદર હૈં । જિનકો એકેન્દ્રિય જાતિ નામ કર્મ કે ઉદયસે ઓર તદાવરણ કે ક્ષયોપગમ સે એક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય હૈ વે

ત્રસ પ્રાણી. તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક પણ ત્રસ હોય છે, તેથી સ્થૂલ ત્રસ પ્રાણીને ' ઉદાર ' વિશેષણ લગાડવામાં આવ્યું છે આ ઉદારતા એકેન્દ્રિયોની અપેક્ષાએ સમજવી લેઈએ. ઉર્ધ્વલોકમાં પણ એ જ પ્રકારના પાંચ બાદરો છે. અધોલોક અને ઉર્ધ્વલોકમાં તૈજસ બાદર નથી.

શંકા--અધોલોકમાં અને ઉર્ધ્વકપાટ દ્વયમાં પણ તૈજસ બાદરનો સદ્-ભાવ હોય છે, છતાં આપ શા કારણે એવું કહો છો કે ઉર્ધ્વલોક અને અધોલોકમાં તૈજસ બાદરનો સદ્ભાવ નથી ?

ઉત્તર--જો કે તેમનું ત્યા અસ્તિત્વ છે ખરૂં, પણ તેઓ ત્યા ઘણાં જ અદ્ય પ્રમાણમાં છે, તેથી અહીં તેમનો ઉલ્લેખ કરવામાં આવ્યો નથી.

તથા જે ઉર્ધ્વકપાટદ્વયમાં તૈજસ બાદર કહ્યા છે, તેઓ પણ ઉત્પત્ત્યમાન હોવાથી ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં આશ્રિત હોવા રૂપે વિવક્ષિત થયા નથી. તિર્યગ્લોકમાં પણ એકેન્દ્રિયથી લઈને પશ્ચેન્દ્રિય પચન્તના પાંચ પ્રકારના બાદર

ગતપાપમમાય પૃથિવ્યાદય इत्यर्थ एवमेव द्वीन्द्रियमष्टीनामप्येषां पोरयः । एकन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियातेषु पूर्वपूर्वापेक्षया उत्तरोत्तरम् इन्द्रियविशेषो जाति विशेषेण वाच्य इति । सम्प्रति एकेन्द्रियानेषु त्रिष्वक्षरस्थानरूपेणाह—‘पंचविहा’ इत्यादि । वादरसेवस्थायिका जीवाः पञ्चविहाः=पञ्चप्रकाराः प्रज्ञाः=रूपाः । पञ्चविधत्वमेषाह—तपया-भक्षारः प्रसिद्धाः १ । ज्वाला=छिन्नमूलाऽग्निशिला २ । सुर्गुरः=सप्तस्माग्निकमरु ३ । अर्चिः=अग्निशिला ४ । अलातम्=उत्तमरु-मर्द्दग्धकाष्ठरूपम् ५ । तथा-वादर-वायुकायिका पञ्चसप्तकाः सन्ति ।

एकेन्द्रिय हैं, ऐसे ये एकेन्द्रिय पृथिवि आदि हैं । इसी तरह से दो इन्द्रिय आविकोंका भी अर्थ समझ लेना चाहिये । एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तकमें पूर्व २ की अपेक्षा उत्तरोत्तर में इन्द्रिय की विशेषता जाति नामकर्म की विशेषता कह लेनी चाहिये ।

अब सूत्रकार एकेन्द्रियोंको ही तीन पाँच स्थानकों से कहते हैं ।

“ पंचविहा ” इत्यादि—वाद्दर तेजस्कायिक जीव पाँच प्रकारके कहे गये हैं, जैसे—भक्षार १, ज्वाला २, सुर्गुर ३, अर्चि ४ और अलात ५ । इनमें भक्षार तो प्रसिद्ध है १ जो अग्निशिला छिन्न मूलवाली होती है वह ज्वाला है जो अस्म सहित अविकण रूप होता है वह सुर्गुर है, जो अग्निशिला अग्निशिला मूलवाली होती है वह अर्चि है । एवं जो अर्धदग्ध काष्ठ रूप होता है वह उत्तमरु अलात है । वादर वायुकायिक

એવા છે એકેન્દ્રિય બતાવનામના ઉદાહરણ અને વ્યાખ્યા (તેણે જાણ્યું કરનારા) કાયપદ્ધમથી જેમને એક સ્પર્શોન્દ્રિયનો જ સદૃશ વ હોય છે, તેમને એકેન્દ્રિય । એવા કહે છે પૃથ્વીકાય આદિ એવાને એકેન્દ્રિય કહે છે એ જ પ્રમાણે દ્વીન્દ્રિય આદિકોના વિષયમાં પણ સમજવું એકેન્દ્રિયથી હળેને પદેન્દ્રિય પદ-વતના એવામાં પૂર્વપૂર્વની અપેક્ષાએ ઉત્તરોત્તરમાં ઇન્દ્રિયની વિશેષતા અને બહુતામકમની વિશેષતાનું કથન થવું જોઈએ.

કહે સૂત્રકાર ગુણી ગુણી ત્રણ રીતે એકેન્દ્રિયોના પાંચ પ્રકારોનું કથન કરે છે “ પંચવિહા ” ઇત્યાદિ—વાદર તેજસ્કાયિક એવ પાંચ પ્રકારના કથા છે—(૧) ભક્ષાર (૨) જ્વાળા, (૩) સુર્ગુર, (૪) અર્ચિ અને (૫) અલાત.

ભક્ષાર એટલે દેવતાનો ભક્ષાર જે અતિશય ઊંચ મૂળવાળી હોય છે તેને ‘ જ્વાળા ’ કહે છે, જેના ઉપર રાખેલા અર્ધ હોય એવા અગ્નિ કવને-અગ્નિને ‘ સુર્ગુર ’ કહે છે જે અતિશય ઊંચ મૂળવાળી હોય છે તેને ‘ અર્ચિ ’ કહે છે અર્ધ દગ્ધ કાષ્ટ આદિ રૂપ જે અગ્નિ છે તેને ‘ અલાત ’ કહે છે

પશ્ચસંહ્યકન્વમેવાહ-તથા-પ્રાચીનવાતઃ=પૂર્વદિગ્વાતઃ ૧, પ્રતીચીનવાત=પશ્ચિમદિગ્વાતઃ, ૨ દક્ષિગ્વાતઃ=દક્ષિણદિગ્વાતઃ ૩, ઉદીચીનવાતઃ=ઉત્તરદિગ્વાતઃ ૪। અથો મિન્નો વાતો વિદિગ્વાત હિતિ ૫।

તથા-અચિત્તા વાયુકાયિકાઃ પશ્ચવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-આક્રાન્તઃ=ચરણાદિના આક્રાન્તે ભૂતલાદૌ યો ભવતિ સ આક્રાન્ત ઇત્યુચ્યતે ૧। ધ્માતઃ-ધ્માતે શબ્દાદૌ વાયુધ્માતઃ ૨। પીડિતઃ=નિષ્પીડ્યમાને જલાર્દ્રવસ્થે વાયુઃ પીડિતઃ ૩। શરીરાનુગતઃ=ઉદ્ગારોચ્છ્વાસાદિઃ ૪। સમ્પૂર્ણિમઃ=વ્યજનાદિ જન્યઃ ૫। એતે આક્રાન્તાદયઃ પૂર્વમચેતનાઃ પશ્ચાત્ સચેતના અપિ ભવન્તીતિ ॥મૂ૦ ૪॥

પાંચ પ્રકારકે હૈં, જૈસે--પ્રાચીનવાત, પ્રતીચીનવાત, દક્ષિણવાત, ઉદીચીનવાત ઓર વિદિગ્વાત ૫ હનમેં પૂર્વ દિશાકા જો વાત હૈ વહ પ્રાચીનવાત હૈ, પશ્ચિમ દિશાકા જો વાત હૈ વહ પ્રતીચીનવાત હૈ, દક્ષિણ દિશાકા જો વાત હૈ વહ દક્ષિણવાત હૈ, ઉત્તર દિશાકા જો વાત હૈ વહ ઉદીચીનવાત હૈ તથા હનસે મિન્ન જો વાત હૈ વહ વિદિગ્વાત હૈ। અચિત્ત જો વાયુકાયિક હૈં વે પાંચ પ્રકારકે હૈં, જૈસે-આક્રાન્ત ૧, ધ્માત ૨, પીડિત ૩, શરીરાનુગત ૪ ઓર સમ્પૂર્ણિમ ૫। ચરણાદિ દ્વારા આક્રાન્ત હોને પર ભૂતલ આદિમેં જો વાયુ હોતા હૈ વહ ધ્માત વાયુ હૈ, જલાર્દ્ર વસ્ત્ર જબ નિષ્પીડ્યમાન હોતા હૈ, તવ જો વાયુ હોતા હૈ વહ પીડિત વાયુ હૈ, શરીર મેં જો ઉદ્ગાર ઉચ્છ્વાસ આદિ રૂપ વાયુ હોતા હૈ વહ શરીરાનુગત વાયુ હૈ, એવં જો વાયુ વ્યજન આદિસે જન્ય હોતા

શાર્દ વાયુકાયિક પાત્ર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) પ્રાચીનવાત, (૨) પ્રતીચીનવાત, (૩) દક્ષિણવાત, (૪) ઉદીચીનવાત અને (૫) વિદિગ્વાત.

પૂર્વ દિશાના વાયુને પ્રાચીનવાત કહે છે, પશ્ચિમ દિશાના વાયુને પ્રતીચીનવાત કહે છે, દક્ષિણ દિશાના વાયુને દક્ષિણવાત કહે છે, ઉત્તર દિશાના વાયુને ઉદીચીનવાત કહે છે, અને એ સિવાયની દિશાઓના વાયુને વિદિગ્વાત કહે છે. અચિત્ત વાયુકાયિકના નીચે પ્રમાણે પાત્ર પ્રકાર છે—(૧) આક્રાન્ત, (૨) ધ્માત, (૩) પીડિત, (૪) શરીરાનુગત અને (૫) સમ્પૂર્ણિમ ચરણ દિ દ્વારા આક્રાન્ત થી વખતે ભૂતલ આદિમાંથી જે વાયુ નીકળે છે તેને આક્રાન્તવાયુ કહે છે શબ્દ આદિને વગાડતી વખતે જે વાયુ છૂટે છે તેનું નામ ધ્માતવાયુ છે લીના વસ્ત્રને બ્યારે ફડકાવવામાં આવે છે, ત્યારે જે વાયુ નીકળે છે તેને પીડિતવાયુ કહે છે શરીરમાંથી ઉચ્છ્વાસ વખતે, વાઘૂટ વખતે અને શખ્દના ઉચ્ચારણ વખતે જે વાયુ નીકળે છે તેને શરીરાનુગત વાયુ કહે

પચેન્દ્રિયાઃ પૂર્વ સામાયેનોક્તાઃ, સમ્પત્તિ ચત્તિશેષામ્ નિર્મયાન, યદ્વા-
પૂર્વ સનેનાવેતના વાયશઃ પ્રોક્તા, સમ્પત્તિ યાયાત્મ્યેન સદ્વચ્ચક્તિ નિર્મિત્વાન્માદ

મૂલ્ય—પચ નિર્ગથા પળ્લન્તા, ત જહા—પુલાય ૧ ઘડતે
૨ કુત્તીલે ૩ નિયંતે ૪ સિનાય ૫। પુલાય પચવિદે પળ્લન્તે
ત જહા—નાળપુલાય ૧ દસળપુલાય ૨ ચરિત્તપુલાય ૩ લિંગ
પુલાય ૪ અહાસુદ્ધમપુલાય ૫ નામ પચમે । ઘડમે પચવિદે
પળ્લન્તે ત જહા—આમોગઘડમે ૧ અનામોગઘડમે ૨ સસુદ્ધય
ડમે ૩ અમસુદ્ધવડમે ૪ અહાસુદ્ધમવડમે ૫ નામ પચમે । કુત્તીલે
પચવિદે પળ્લન્તે, ત જહા—નાળકુત્તીલે ૧ દસળકુત્તીલે ૨ ચરિ
ત્તકુત્તીલે ૩ લિંગકુત્તીલે ૪ અહાસુદ્ધમકુત્તીલે ૫ નામ પચમે ।
નિયંતે પચવિદે પળ્લન્તે ત જહા—પદમસમયનિયંતે અપદમસમ
યનિયંતે ૨ ચરિમસમયનિયંતે ૩ અચરિમસમયનિયંતે ૪ અહા
સુદ્ધમનિયંતે ૫। સિનાય પચવિદે પળ્લન્તે, ત જહા—અદ્ધવી
૧, અમવલે ૨ અકમ્મલે ૩, સસુદ્ધનાળદસળધરે અરહા જિળે
કેવલી ૪, અપરિસ્સાધી સૂં ૫ ॥

છાયા—પચ નિર્મિત્વાઃ મહત્તાઃ, સપયા—પુલાકઃ ૧ ઘડતઃ ૨ કુત્તીલઃ ૩
નિર્મિત્વાઃ ૪ સ્તાતઃ ૫। પુલાકઃ પચવિધઃ મહત્તાઃ, સપયા—જ્ઞાનપુલાકઃ ૧ દર્શન
પુલાકઃ ૨ ચારિત્રપુલાકઃ ૩ ચિત્ર પુલાકઃ ૪ યથા સુદ્ધમપુલાકો ૫ નામ પચમઃ।
ઘડતઃ પચવિધઃ મહત્તાઃ, સપયા—આમોગઘડતઃ ૧ અનામોગઘડતઃ ૨ સદ્ધન ઘડતઃ
૩ અસદ્ધન ઘડતઃ ૪ યથા સુદ્ધમઘડતો ૫ નામ પચમઃ । કુત્તીલઃ પચવિધઃ
મહત્તાઃ સપયા—જ્ઞાન કુત્તીલઃ ૧, દર્શનકુત્તીલઃ ૨, ચારિત્રકુત્તીલઃ ૩, ચિત્ર
દે યદ્ સમ્મુર્ચિષ્ઠમ યામ દે । યે આકાન્ત આદિ પદિલે અચેતન હોતે દે
વાદમે સચેતન ખી હો જાતે દે ॥ સૂં ૪ ॥

ઉ પચા આદિથી જનિત વાયુને સમ્મુર્ચિષ્ઠમવાત કહે છે આ આકાન્ત આદિ
વાત પદેશાં અચેતન કહે છે, પચ તથાપનાદ સચેતન પચુ યથ બાય છે ॥ સૂં ૪ ॥

કુશીલઃ ૪, યથા સૂક્ષ્મકુશીલો ૫ નામ પશ્ચમઃ । નિર્ગ્રન્થ પશ્ચવિધઃ પ્રજ્ઞસઃ,
તથા-પ્રથમમમયનિર્ગ્રન્થઃ, ૧ અપ્રથમમમયનિર્ગ્રન્થઃ, ૨ ચરમમમયનિ-
ર્ગ્રન્થઃ, ૩ અચરમમમયનિર્ગ્રન્થઃ, ૪ યથામુક્ષમ નિર્ગ્રન્થઃ, ૫। સ્નાતઃ પશ્ચવિધઃ
પ્રજ્ઞસઃ-તથા-અન્નહિઃ ૧, અન્નવલ, ૨ અકર્મણ, ૩ મમુદ્ગજ્ઞાનદર્શનધરઃ ૪
અર્હન્ જિનઃ કેવલી, ૪ અપરિસ્વાવી ૫ ॥મ. ૫॥

ટીકા—‘ પંચ નિર્ગંગ્યા ’ इत्यादि—

નિર્ગંગ્યાઃ-શ્રમણાઃ, તે પશ્ચવિધાઃ પ્રજ્ઞસઃ । પશ્ચવિધત્વમેવાહ-તથા-પુ-
લાકઃ-તન્દુલકણરહિત પલ્લિક્ષિરૂપ નિરસારં ધાન્યં પુલાકઃ કન્યુન્યતે, તત્સદશ-
ચારિત્રયુક્તઃ સાધુરપિ પુલાકઃ કન્યુન્યતે ।

અથ સાવઃ-તપઃ-શ્રુતસમુત્પન્નાયાઃ સંવાદિ પ્રયોજને સતિ સસૈન્યસ્ય

પહિલે પશ્ચેન્દ્રિય સામાન્ય રૂપસે કહે ગયે હૈં । અવ પશ્ચેન્દ્રિયોં મેં
વિશેષરૂપ જો નિર્ગ્રન્થ હૈં ઉન્હે અથવા સચેતન અચેતન જો વાયુ કહી
ગઈ હૈં તો ઉમ્મત્તી યથાર્થ રૂપસે રક્ષા કરનેવાલે જો નિર્ગ્રન્થ હૈં ઉન્હે અવ
સૂત્રકાર પ્રકટ કરતે હૈં--“ પંચ નિર્ગંગ્યા પળ્લગત્તા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ-નિર્ગ્રન્થ પાંચ પ્રકારકે કહે ગયેહૈં, વે વે હૈં--પુલાકઃ વક્ત્રુશર
કુશીલ ૩ નિર્ગ્રન્થ ૪ ઓર સ્નાત ૫ । તન્દુલકણોં સે રહિત પલ્લિક્ષિરૂપ
જો પોચા નિરસાર ધાન્ય હોના હૈં ઉસે પુલાક કહા જાતા હૈં, ડસકે જૈસે
ચારિત્ર સે યુક્ત જો સાધુ હોના હૈં વહ બી પુલાક કહાજાતા હૈં । તાત્પર્ય
યહ હૈં કિ તપ ઓર શ્રુત કો આરાધના સે ઉત્પન્ન હુઈ-તથા સંવાદિકે
પ્રયોજન હોને પર સસૈન્ય ચક્રવર્તી આદિકે વિનાશ કરને મેં સમર્થ

પહેલા પશ્ચેન્દ્રિયનુ સામાન્ય રૂપે કથન કરવામા આવ્યુ હવે પશ્ચેન્દ્રિય
વિશેષરૂપ જે નિર્ગંગ્યા જે તેમનુ સૂત્રકાર નિરૂપણ કરે છે. તે નિર્ગંગ્યા જે
સચેતન અચેતન જે વાયુ કહ્યા છે, તેનુ યથાર્થ રૂપે રક્ષણ કરે છે આ
પ્રકારના સબધને અનુલક્ષીને વાયુકાચિકેના પ્રકારોનું નિરૂપણ કરીને હવે
સૂત્રકાર નિર્ગંગ્યાનુ નિરૂપણ કરે છે “ પંચ નિર્ગંગ્યા પળ્લગત્તા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ-નિર્ગંગ્યાના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પુલાક, (૨) બકુશ,
(૩) કુશીલ, (૪) નિર્ગંગ્યા અને (૫) સ્નાત

ચોખાના કહોથી રહિત જે પરાળ હોય છે તેને પુલાક કહે છે તેના
જેવા ચારિત્રથી યુક્ત જે સાધુ હોય છે તેને પશુ પુલાક કહેવાય છે એટલે
કે તપ અને શ્રુતની આરાધનાથી ઉત્પન્ન થયેલી અને સદાદિના રક્ષણનું
પ્રયોજન ઉદ્દેશવે ત્યારે સૈન્યયુક્ત ચક્રવર્તી આદિનો વિનાશ કરવાને સમર્થ

ષકવર્યાત્રેરપિ વિનાશને તમર્થાયાઃ લઘ્યેન્પજીવનેન જ્ઞાનાવિચારાસેવનેન
યા સકલસયમસારગલનાત્ પલ્લવિવનિસ્તારા યઃ તા પુલાક ઉચ્યતે ઇતિ ।

ઉક્તચાપ્ર—

“ જિન પ્રણીતાદાગમાન્ સદૈવાપ્રતિપાતિનો જ્ઞાનાનુસારેણ ક્રિયાનુષ્ઠાપિનો
લપ્તિમુપજીવન્તો નિર્ગ્રંથાઃ પુલાકાઃ ભવન્તિ ” ઇતિ ।

इत्य चाप लघ्विपुलाकाऽऽसेयनापुलाकमेव द्विविधो ज्ञय १। तथा-
षकुशः—षकुशसयमयोगाद् षकुशः—शरीरोपकरणविभूपादिना दयलवारिभा ।
अय मोक्षनीयसय प्रत्युक्त क्षरीरषकुशोपकरणषकुशमेव द्विविध । तत्र-

ऐसी लघ्विकी प्राप्तिसे अथवा ज्ञानादिकर्म अतिचारके आसेवन से
सकल सयम रूप सारके गल जानेके कारण जो पल्लि (पल्ल) की
तरह सारसे रहित होता है, ऐसा यह साधु पुलाक कहलाता है । कहा
भी है—“ जिनप्रणीतादागमात् सदैवाप्रतिपातिनो ज्ञानानुसारेण
क्रियानुष्ठापिनो लघ्विमुपजीवन्तो निर्गन्थाः पुलाका भवन्ति ” जो जिन
प्रणीत आगम के अनुसार सदा अपनी क्रियाएँ करता है, एव उसीका
जो श्रद्धालु होता है और जो लपिवाला होता है वह पुलाकमुनि है ।
यह पुलाक लघ्विपुलाक और आसेयना पुलाक के भेद से दो प्रकार का
है, जो क्षीर और उपकरणको विभूपा आदि से जगज्ज्यारिप्रवाला
होता है और इसीसे जिसका सयम षकुश होता है अतिचार सहित
होता है, ऐसा साधु षकुश कहा गया है, यह षकुश शरीर षकुश और
उपकरण षकुश के भेदसे दो प्रकारका है । इनमें जो कर चरण या

જોવી લઘ્વિકી પ્રાપ્તિ પડે, અથવા જ્ઞાનાદિકર્મ અતિચારનું આસેવન કરવાથી
સકલ સયમ રૂપ સાર જરી જવાને કારણે પરાળની જેમ સારરહિત હોય છે,
જોવા સાધુને પુલાક કહે છે કહ્યું પણ છે કે ‘ જિનપ્રણીતાદાગમાત્ સદૈવા
પ્રતિપાતિનો જ્ઞાનાનુસારેણ ક્રિયાનુષ્ઠાપિનો લઘ્વિમુપજીવન્તો નિર્ગ્રંથો પુલાકા
ભવન્તિ ” જે સાધુ સદા જિનપ્રણીત આગમ અનુસાર પોતાની ક્રિયાઓ કરે
છે, અને તેના પ્રત્યે જે શ્રદ્ધાવાળો હોય છે, અને જે લપિવાળો હોય છે,
તે સાધુને પુલાકમુનિ કહે છે તે પુલાકના લઘ્વિપુલાક અને આસેયના પુલા
કના લેખી બે પ્રકારના હોય છે

જે સાધુ શરીર અને ઉપકરણને વિભૂષિત કરવાને કારણે શબ્દ (દ્રવિત)
ચારિત્રવાળો હોય છે અને તે કારણે જેનો સયમ બકુશ હોય છે—અતિચાર
રહિત હોય છે જોવા સાધુને બકુશ કહે છે બકુશના બે પ્રકાર પડે છે—
(૧) શરીર બકુશ અને (૨) ઉપકરણ બકુશ જે સાધુ હોય, પત્ર આદિનું

વક્ત્રુઃ-શિથિલાચારિતયા કરચરણપ્રક્ષાલનં નયનાદિમલાદ્યપનયનં ચ યઃ શરીર-
સૌન્દર્યાર્થં કરોતિ સઃ । ઉપકરણવક્ત્રુશ્ચ યઃ અકાલ ણ્ન ચોલપટ્ટાદિકં પ્રક્ષાલ્ય
પાત્રાદિકં ચ તૈલેન ચમત્કૃત્ય વિશૃપાર્થં ધારયતિ સઃ । ઉભયેડ્યંતે પ્રભૂતવસ્ત્ર-
પાત્રાદિરૂપામ્ ઋદ્ધિં ‘એતે ગુણવન્તો વિશિષ્ટાઃ સાધવઃ’ इत्यादि प्रवादरूपां
ख्यातिं च कामयन्ते, सातगौरवयुक्तनयाऽहोरात्रानुष्ठेयक्रियाम् नोद्युञ्जते, घृष्ट-
जङ्घतैलाभ्यञ्जितशरीरत्वादिना एषा शिष्यपरिवारोऽसंयमयुक्तो भवति, तथा-
सर्वदेशच्छेदाहंतिचारजनितरागलत्वेनैते बहुच्छेदशवलयुक्ताश्चापि भवन्तीति

પ્રક્ષાલન એવં નયન આદિ કે મલાદિક કા અપનયન શારિરિક સૌન્દર્ય
કે નિમિત્ત કરતા હૈ વહ શરીર વક્ત્રુશ હૈ । તયા જો અકાલ મેં હી
ચોલપટ્ટક આદિ કા પ્રક્ષાલન કરકે એવં પાત્રાદિકોં કો તૈલસે ચિકના
કરકે સૌન્દર્ય કે નિમિત્ત ધારણ કરના હૈં વહ ઉપકરણ વક્ત્રુશ હૈ । યે
દોનોં ભી વસ્ત્ર પાત્રાદિ રૂપ ઋદ્ધિ કો તથા યે “ગુણશાલી વિશિષ્ઠ
સાધુજન હૈં” इत्यादि प्रवादरूप ख्याति को कामनावाले होते हैं, सात
गौरव युक्त होने के कारण रात्रदिन की अनुष्ठेय क्रियाओंमें ये उपयोग
पूर्वक प्रवृत्ति करनेवाले नहीं होते हैं । जङ्घादिकों में तैल की मालिश
करने से एव चिकनाचुपड़ा शरीर आदि रखनेसे इनका शिष्य परिवार
असंयम युक्त होता है तथा सर्वदेश संयम को छेदने के योग्य जो अति-
चार होते हैं अर्थात् समस्त रूपसे संयम को या देशरूपसे संयम को
छेदने योग्य जो अनिचार हैं, उन अतिचारों को ये सेवन करते हैं,

વારંવાર પ્રક્ષાલન કરે છે, અને આળ, કાન આદિનો મેલ વારંવાર કાઢ્યા
કરે છે-આ બધું શરીર સૌંદર્ય નિમિત્તે કરનાર સાધુને શરીર બકુશ કહે છે.
જે સાધુ અકાળે ચોલપટ્ટક આદિનું પ્રક્ષાલન કરીને અને પાત્રાદિકોને તેલ
અથવા વાર્નિશ આદિ વડે મુલાયમ અને ચળકતા કરીને સૌંદર્યને નિમિત્તે
ધારણ કરે છે, તે સાધુને ઉપકરણ બકુશ કહે છે. આ બન્ને પ્રકારના
સાધુઓ વસ્ત્રપાત્રાદિ રૂપ ઋદ્ધિની અને “આ શુણ્ણસપત્ર વિશિષ્ઠ સાધુજન
છે ” આ પ્રકારની ખ્યાતિની કામનાવાળો હોય છે

સાત ગૌરવયુક્ત હોવાને કારણે રાત્રિનિની અનુષ્ઠેય ક્રિયાઓમા તેઓ
ઉપયોગપૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરનારા હોતા નથી જાંઘ આદિપર તેલનું માલિશ
કરવાથી અને સ્નિગ્ધ શરીરાદિ રાખવાને કારણે તેમનો શિષ્ય પરિવાર પણ
અસંયમયુક્ત હોય છે તથા સમસ્ત રૂપે સંયમનું છેદન કરનારા અથવા દેશ
રૂપે સંયમનું છેદન કરનારા જે અતિચારો છે તેમનું તેઓ સેવન કરતા હોય
છે તેથી તેમનો સંયમ અતિચારયુક્ત હોય છે

૨। તથા-કુશીલા:-ઉત્તરગુણપ્રતિસેવનેન સજ્જ્વલનકપાયોદયન યા દુપિતરવાત્ કુત્સિત શીલમ્=અઘાદશ્ચશીલાઙ્ગ સદ્સમદ યસ્ય સ તથા । અય પ્રતિસેવનાકુશીલ કપાયકુશીલમદાદ્ દ્વિવિધ । તપ્ર યે નૈર્ગ્રંથ્યમાપન્ના અપિ અનિયતેન્દ્રિયસ્વાત્ પિઠ્ઠવિશુદ્ધિસમિતિમાવના તપઃ પ્રતિમાભિગ્રહાદિપુ ઉત્તરગુણેષુ કયષિત્ કિંચિદેવ વિરાધના કુર્વન્તો જિનાજ્ઞામુલ્લહર્ષાંતિ ઇ પ્રતિસેવનાકુશીલાઃ । ય વુ સયતા સન્તોઽપિ કયચિદુદીરિતસજ્જ્વલનજવાયા મશન્તિ તે કપાયકુશીલા ઇતિ ૩। તથા-નિર્ગ્રન્થ-નિર્ગતો ગ્રયાત્=મોહનીયમિધાદ યઃ સ્ત । અય ચ ક્ષીણ કપાયોપશાન્તમોહમેદન દ્વિવિધ ઇતિ ૪।

અતઃ ફનકા સયમ અતિચાર યુક્ત હોના હૈ । ઉત્તર ગુણોકે પ્રતિસેવન સે અથવા સજ્જ્વલનકપાય કે ઉદય સે દુપિત્ત હોને સે ૧૮૦૦૦ શીલ કે ભેદ જિસકે કુત્સિત હૈ વહ કુશીલ હૈ, વહ કુશીલ પ્રતિસેવના કુશીલ ઓર કપાય કુશીલકે ભેદસે દો પ્રકારકા હૈ । જો નિર્ગ્રંથમાવકો પ્રાપ્ત હુપ્ત મી અનિયત ઇન્દ્રિયવાલે હોનેસે પિઠ્ઠ વિ શુદ્ધિ સમિતિ માવના તપ્ત પથ અભિગ્રહ આદિરૂપ ઉત્તર ગુણોમિં કિસી તરહસે કુછ ધોષી યદ્વત્ત વિરાધના કરતે હુપ્ત જિનાજ્ઞાકા ઉલ્લસ્ટન કરતે હૈ વે પ્રતિસેવનાકુશીલ હૈ, તથા જો સયત્ત હોતે હુપ્ત મી કયષિત્ ઉદય પ્રાપ્ત સજ્જ્વલન કપાયવાલે હોતે હૈ વે કપાયકુશીલ હૈ । તથા જો મોહનીય રૂપ ગ્રંથસે નિર્ગત હોતા હૈ, વહ નિર્ગ્રન્થ હૈ વહ નિર્ગ્રન્થ ક્ષીણ કપાય ઓર ઉપશાન્ત મોહકે ભેદસે દો પ્રકારકા હોતા હૈ.

ઉત્તરગુણોના પ્રતિસેવનથી અથવા સજ્જ્વલન કપાયના ઉલ્લસ્ટી દુપિત્ત થવાને કારણે જેના ૧૮૦૦૦ શીલના ભેદ કુત્સિત થયેલા છે એવા સાધુને કુશીલ કહે છે તેના બે ભેદ કલા છે—(૧) પ્રતિસેવનાકુશીલ અને (૨) કપાય કુશીલ

જે સાધુ અનિયત ઇન્દ્રિયવાળો (ઇન્દ્રિયોપર કાપૂ રાખવાને અસમર્થ) હોવાને કારણે પિઠ્ઠવિશુદ્ધિ સમિતિ માવના તપ્ત પ્રતિમા અને અભિગ્રહ આદિ રૂપ ઉત્તરગુણોમાં કોઈપણ પ્રકારે વધુ જોછી વિરાધના કરતા હોવાથી જિનાજ્ઞાત ઉલ્લસ્ટ થઈ જાય છે, તે સાધુને પ્રતિસેવનાકુશીલ કહે છે સયત્ત હોવા છતાં પણ જેમનામાં સજ્જ્વલન કપાયનો વધુ જોછો ઉદય હોય છે, એવા સાધુઓને કપાય કુશીલ કહે છે

જે સાધુ મોહનીય રૂપ ગ્રંથ (બધન) થી મુક્ત હોય છે તેને નિર્ગ્રંથ કહે છે તે નિર્ગ્રંથના નીચે પ્રમાણે બે ભેદ કલા છે—(૧) ક્ષીણકપાય અને (૨) ઉપશાન્તમોહ.

સ્નાતકઃ -- શુક્લધ્યાનરૂપજલક્ષાલિતમકલધાતિકર્મમલમમૃદતયા સ્નાત
 ચ્ચ સ્નાતઃ, સ એવ સ્નાતકઃ । અયમપિ સયોગેષ્વલ્યયોગકેવલિભેદેન ટિવિચ
 ઇતિ ૫। કથં નિર્ગ્રન્થભેદાનુક્ત્યા મમ્પ્રતિ તેષામેવ પૈકૈકસ્ય પશ્ચ પશ્ચમેદાનાદ—
 જો શુક્લધ્યાનરૂપ જલસે ક્ષાલિત દુગ્ધ સ્વકલ ધાતિયા કર્મરૂપ મલ-
 વાલા હોતા હૈ, અતઃજો સ્નાતકી નરૂદ સ્નાત હોતા હૈ, ઈસા વદ
 સાધુ સ્નાતક કહા ગયા હૈ । જિનમેં સર્વજના પ્રકટ હો ચુકી હૈ, વદ
 સ્નાતક હૈ । યદ્ સ્નાતક સયોગ કેવલી ઓર અયોગ કેવલીકે ભેદસે
 દો પ્રકારકા હોતા હૈ । તાત્પર્ય ઇમ સમસ્ત કથનકા ઈસા હૈ કિ
 યદ્ નિર્ગ્રન્થકે તરતમ રૂપસે હોનેવાલે ભાવોંકી અપેક્ષા યે પાંચ ભેદ
 કિયે ગયેહૈં । સૂલગુણ તથા ઉત્તર ગુણસે પરિપૂર્ણતા પ્રાપ્ત ન કરતે ઓ
 વીતરાગ પ્રણીત આગમસે કમી અસ્થિર ન હોનેવાલા પુલાક નિર્ગ્રન્થ
 હૈ । પુલાક નામ પલાલકા હૈ, વદ જૈસે સારભાગ રહિત હોતા હૈ, વૈસેહી
 યે નિર્ગ્રન્થ હોતે હૈ યે પુલાક ઉત્તર ગુણોંકો ઉત્તમતામે નહીં પાલતે હૈં
 સાધમેં સૂલગુણોંમે ઓ પૂર્ણતાકો પ્રાપ્ત નહીં હોતે હૈં । જો વ્રતોંકો પૂરી
 તરહસે પાલતે હૈં કિન્તુ શરીર ઓર ઉપકરણોંકો સંસ્કારિત કરતે રહતે
 હૈં ક્રદ્ધિ ઓર યશની અભિલાષા રખતેહૈં, જિઘ્યાદિ પરિવારસે ધિરે રહતે
 હૈં । ઇવં મોહજન્ય દોષસે યુક્તહૈં વે વકુશહૈં । કુશીલ નિર્ગ્રન્થ દો પ્રકારકે

શુક્લધ્યાન ચ્ચ જલ વદે જેનો ધાતિયા કર્મરૂપ મલ (મેલ) ધાવાઈ
 જવાને કાણે જે સાધુ સ્નાત મનુષ્યના જેવો બની ગયો હોય છે તેને
 સ્નાતક કહે છે અથવા જેનામા સર્વજના પ્રકટ થઈ ચુકી છે તે સ્નાતક છે
 તે સ્નાતકના નીચે પ્રમાણે બે ભેદ કહ્યા છે—(૧) સયોગ કેવલી, (૨) અયોગ કેવલી

આ સમસ્ત કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—અહીં નિર્ગ્રન્થના તરતમ
 રૂપે પ્રકટ થનારા ભાવોની અપેક્ષાએ પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે મૂળગુણો અને
 ઉત્તરગુણોમા પરિપૂર્ણતા પ્રાપ્ત ન કરવા છતાં પણ વીતરાગ પ્રણીત આગમમાં
 સદા સ્થિર રહેનાર સાધુને અહીં પુલાક નિર્ગ્રન્થ કહ્યો છે પુલાક એટલે
 પરાગ પરાગ જેમ સારભાગ રહિત હોય છે, એ જ પ્રમાણે આ પુલાક
 નિર્ગ્રન્થ પણ સારરહિત હોય છે, કારણ કે તેઓ ઉત્તરગુણોનું સંપૂર્ણ રીતે
 પાલન કરતા નથી એટલું જ નહિ પણ મૂળગુણોમા પણ પૂર્ણતા પ્રાપ્ત કરતા
 નથી જેઓ વ્રતોનું સંપૂર્ણ પાલન કરે છે, પરંતુ શરીર અને ઉપકરણોને
 સંસ્કારિત કરતા રહે છે, ક્રદ્ધિ અને યશની અભિલાષા સેવે છે, પરિવારથી
 વીટળાયેલા રહે છે, અને મોહજન્ય દોષથી યુક્ત હોય છે, એવા સાધુઓને

૨। તથા-કુશીલઃ-ઉત્તરગુણપ્રતિસેવનેન સંજ્વલનકપાયોદયન વા દુષિતત્વાત્
કુત્સિત શીલમ્=અણદક્ષશીલાઃ સહસ્રમેદ વત્ય સ તથા । અપ પ્રતિસેવનાકુશીલ
કપાયકુશીલમેદાદ્ દ્વિવિધ । તપ યે નૈમ્ન-અધ્યાપના અપિ અનિયતેન્દ્રિયત્વાત્
પિન્હવિદ્યુદ્ધિસમિતિમાયના તપઃ પ્રતિમામિગ્રહાદિપુ ઉત્તરગુણેષુ કયચિત્ કિંચિ
દેવ વિરાધના કુર્વન્તો જિનાશામુલ્લક્ષ્યતિ તે પ્રતિસેવનાકુશીલાઃ । યે હ
સંયતા સન્તોઽપિ કયચિદુદીરિતસંજ્વલનકપાયા મયન્તિ ત કપાયકુશીલા
इति ३। તથા-નિર્ગમ્યા-નિર્ગમ્યો ગ્રંથાત્=મોહનીયામિધાદ યઃ સ । અપ ચ સ્ત્રીય
કપાયોપશાન્તમોહમેદન દ્વિવિધ इति ४।

અતઃ इनका सपम अतिचार युक्त होता है। उत्तर गुणोंके प्रतिसेवन से
अथवा संज्वलनकपाय के उदय से दूषित होने से १८००० शील के
भेद जिसके कुरिमत हैं वह कुशील है, यह कुशील प्रतिसेवना
कुशील और कपाय कुशीलके भेदसे दो प्रकारका है । जो
निर्ग्रन्थभायको प्राप्त हुए भी अनियत इन्द्रियवाले होनेसे पिन्ह वि
द्युद्धि समिति भायना तप एव अभिग्रह आदिरूप उत्तर गुणोंमें
किसी तरहसे कुछ थोड़ी बहुत विराधना करते हुए जिनाशाका उल्ल
ङ्घन करते हैं वे प्रतिसेवनाकुशील हैं, तथा जो मयत होते हुए भी
कयश्चित् उदय प्राप्त संज्वलन कपायवाले होते हैं वे कपायकुशील हैं ।
तथा जो मोहनीय रूप ग्रन्थसे निर्गत होता है, यह निर्गम्य है यह नि
र्गम्य क्षीण कपाय और उपशान्त मोहके भेदसे दो प्रकारका होता है।

ઉત્તરગુણોના પ્રતિસેવનથી અથવા સંજ્વલન કપાયના ઉદયથી દૂષિત
થવાને કારણે જેના ૧૮૦૦૦ શીલના ભેદ કુત્સિત થયેલા છે એવા સાધુને
કુશીલ કહે છે તેના બે ભેદ કહ્યા છે—(૧) પ્રતિસેવનાકુશીલ અને
(૨) કપાય કુશીલ

જે સાધુ અનિયત ઇન્દ્રિયવાળો (ઇન્દ્રિયોપર કાબૂ રાખવાને અસમર્થ)
હોવાને કારણે પિન્હવિદ્યુદ્ધિ, સમિતિ ભાવના, તપ, પ્રતિમા અને અભિગ્રહ
આદિ રૂપ ઉત્તરગુણોમાં કાંઈપણ પ્રકારે વધુ જોછી વિરાધના કરતો હોવાથી
જિનાશાનુ ઉલ્લંઘન કરે છે તે સાધુને પ્રતિસેવનાકુશીલ કહે છે સંયત
હોવા છતાં પણ જેમનામાં સંજ્વલન કપાયનો વધુ જોછો ઉદય હોય છે,
જેવા સાધુઓને કપાય કુશીલ કહે છે

જે સાધુ મોહનીય રૂપ ગ્રંથ (ગ્રંથન) થી ગુપ્ત હોય છે તેને
નિર્ગમ્ય કહે છે તે નિર્ગમ્યના નીચે પ્રમાણે બે ભેદ કહ્યા છે—(૧) ક્ષીણકપાય
અને (૨) ઉપશાન્તમોહ

તથા—કુદૃષ્ટિ સંસ્તવાદિના યો દર્શનં નિસ્સારં કરોતિ સ દર્શનપુલાકઃ ૨। તથા—
મૂલોત્તરગુણાન્ યઃ પ્રતિસેવતે સ ચરણપુલાકઃ ૩। યઃ સાધુનાં ચલિન્નં, તતો-
ઽધિકલિન્નં ગૃહ્ણાતિ સ લિન્નપુલાકઃ ૪। યસ્તુ કિંચિત્ પ્રમાત્રતિ મનસા વા અ-
કલ્પ્યં ગૃહ્ણાતિ સ યથામૂક્ષમપુલાકો નામ પુલાકસ્ય પશ્ચમો ભેદઃ ૫। લઙ્ઘિપુલાકથ
અકલ્પ્ય એવેતિ સ નાત્ર વિવક્ષિત ઇતિ । તથા—શરીરવકુશોપકરણવકુશભેદદ્વય
વિશિષ્ટો વકુશોઽપિ આભોગવકુશાદિભેદેન પશ્ચવિધઃ । તત્ર—યઃ શરીરવિભૂષા-
મુપકરણવિભૂષાં ચ ચિન્તનપુરસ્સરં કરોતિ સ આભોગવકુશઃ ૧। યઃ સહસા-
કરોતિ સઃ અનાભોગવકુશઃ ૨। યઃ પ્રચ્છન્નતયા કરોતિ સ સંતૃપ્તવકુશઃ
૩। યઃ પ્રકટતયા કરોતિ સઃ અસંતૃપ્ત વકુશઃ ૪। સત્

આદિસે જો દર્શનકો નિસ્સાર કરતા હૈ, વહ દર્શન પુલાક હૈ ૨ મૂલ-
ગુણોં એવં ઉત્તર ગુણોંકી જો પ્રતિસેવના કરતા હૈ, વહ ચરણપુલાક હૈ
૩ જો સાધુઓંકા લિન્ન હૈ ઉસસે અધિક લિન્નકો જો ગ્રહણ કરતા હૈ,
વહ લિન્ન પુલાક હૈ, ૪ જો કુછ ૨ પ્રમાદ પતિત હો જાતા હૈ, અથવા
મનસે અકલ્પ્યકો ગ્રહણ કરતાહૈ, વહ યથામૂક્ષમ પુલાક હૈ । યહ પુલા-
કકા પાંચવાં ભેદ હૈ । લઙ્ઘિપુલાક એક પ્રકારકાહી હોના હૈ, અતઃ
ઉસકી યહાં વિવક્ષા નહીં હુઈ હૈ । શરીર વકુશ એવં ઉપકરણ વકુશકે
ભેદસે દો ભેદવાલા હુઆ વકુશ બી આભોગવકુશ આદિકે ભેદસે
પાંચ પ્રકારકા હૈ, इनमें जो विचारपूर्वक शरीरकी विभूषा एवं उपकर-
णकी विभूषाको करता हॆ, वह आभोगवकुश हॆ १ और सहसा विना
विचारेही शरीरकी विभूषा एवं उपकरणकी विभूषाको करता हॆ, वह
अनाभोग वकुश हॆ २। तथा जो गुप्त रूपसे शरीरादिकोंकी विभूषा

દર્શનને નિસ્સાર કરે છે, તેને દર્શનપુલાક કહે છે (૩) મૂલગુણો અને ઉત્તર
ગુણોની જે પ્રતિસેવના કરે છે તેને ચરણપુલાક કહે છે (૨) રત્નેહરણ, મુદ્ધ
પત્તિ આદિ રૂપ સાધુઓના જે લિંગ છે, તેના કરતાં અધિક લિંગને ધારણ
કરનાર સાધુને લિંગપુલાક કહે છે. (૫) જે સાધુ થોડો થોડો પ્રમાણે
બની ગયો હોય છે તેને અથવા જે મનથી અકલ્પ્યને ગ્રહણ કરે છે તેને
યથાસક્ષમ પુલાક કહે છે લઙ્ઘિપુલાક એ જ પ્રકારનો હોય છે તેથી અહીં
તેનું વિવેચન કર્યું નથી

હવે સૂત્રકાર બકુશના ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે. બકુશના સુબ્ધ બે ભેદ
કહ્યા છે—(૧) શરીર બકુશ અને (૨) ઉપકરણ બકુશ બકુશના નીચે પ્રમાણે
પચ ભેદ પણ પડે છે—(૧) આભોગ બકુશ—જે સાધુ વિચારપૂર્વક શરીર
અને ઉપકરણોની વિભૂષા કરે છે તેને આભોગ બકુશ કહે છે (૨) વિના વિચારે
જ સહસા શરીર અને ઉપકરણોની વિભૂષા કરનાર સાધુને અનાભોગ બકુશ કહે

‘પુણ્ય પચવિદ્’ રૂપાદિના ।

પુણ્યાકાન્ત-પ્રાસેવનાપુણ્યાકાન્તપુણ્યાકાન્ત-વિવિધઃ પ્રોક્તઃ સપ્ત-
પ્રાસેવનાપુણ્યાકાન્ત - જ્ઞાનપુણ્યાકાદિમેદેન પચવિદ્ઃ । તથા - યસ્ત્વ
જિવ મિલિતાદિભિરાચારૈઃ જ્ઞાતમાધિત્યાત્માનમસારં કરોતિ સ જ્ઞાનપુણ્યાકાન્તઃ ॥

હોતે છે-પ્રતિસેવનાકુશીલ ઔરકપાય કુશીલ જિનકો પરિગ્રહસે
આસક્તિ નહીં છે જો મૂલગુણો ઔર ઉત્તરગુણાકો પાલતે છે તો બી
કદાચિત્ ઉત્તરગુણોકી વિરાધના કર છેતે છે, યે પ્રતિસેવનાકુશીલ
છે જો અન્ય કપાયો પર વિજય પાકર બી સંજ્વલન કપાયકે આધીન
છે યે કપાય કુશીલ નિર્મળ્ય છે । જિન્હોને રાગદેવકા અભાવ કર દિયા
છે, ઔર અન્તર્મુદ્દર્શને જો કેવલજ્ઞાનકો પ્રાપ્ત કરતે છે યે નિર્મળ્ય નિર્મળ્ય
છે । સર્વજ્ઞતા પ્રાપ્ત જો નિર્મળ્ય છે યે સ્નાતક છે ।

હસ પ્રકાર નિમ્ન-પદકે મેદોંકો કહકર અથ સૂચકાર ડનમેંસે એક
એકકે પાંચ ૨ મેદોંકો કહતે છે-“પુણ્ય પચવિદ્” રૂપાદિ-પુણ્યાકા
પ્રાસેવના પુણ્યાકાન્ત લઙ્ગિપુણ્યાકાન્ત મેદસે દો પ્રકારકા કહા ગયા
છે-હનમેં જો પ્રાસેવનાપુણ્યાકા છે, વહ જ્ઞાનપુણ્યાકા આદિકે મેદસે પાંચ
પ્રકારકા છે, જો સ્વલના મિલિત આદિ આચારોસે જ્ઞાનકો આશ્રિત
કરકે આત્માકો અસાર કરતા છે, વહ જ્ઞાનપુણ્યાકા છે ૧ કુદૃષ્ટિકે સંસ્તવ

અપુણ્ય કહે છે કુશીલ નિમ્ન યના બે પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) પ્રતિસેવનાકુશીલ
અને (૨) કપાયકુશીલ

જેમને પરિશ્રદ્ધ પ્રત્યે આસક્તિ નથી, જેઓ મૂળગુણો અને ઉત્તરગુણો
પાલન કરે છે, છતાં પણ જેઓ કપાયક ઉત્તરગુણોની વિરાધના કરી નાખે છે
જેવા સાધુઓને પ્રતિસેવનાકુશીલ કહે છે જે સાધુઓ અથવા કપાયો પર
વિજય પ્રાપ્ત કરવા છતાં સંજ્વલન કપાયને આધીન રહે છે, તે સાધુઓને
કપાય કુશીલ કહે છે જેમણે રાગદેવના અભાવ કરી નાખ્યા છે અને અ
મુદ્દર્શના જેઓ કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરે છે તેમને નિર્મળ્ય કહે છે જેમણે
સર્વજ્ઞતા પ્રાપ્ત કરી છે જેવા નિર્મળ્યને સ્નાતક કહે છે

નિમ્ન યના બેરોનું નિમ્નપદ કરીને કેવે સૂચકાર તે પ્રત્યેક સેવના જે
પાંચ પાંચ ઉપલેખો પડે છે તેનું કથન કરે છે “પુણ્ય પચવિદ્” રૂપાદિ
પુણ્યાકાન્ત પ્રાસેવનાપુણ્યાકાન્ત અને લઙ્ગિપુણ્યાકાન્ત નામના બે સેવ કહ્યા છે
તેમાંથી જે પ્રાસેવનાપુણ્યાકા છે તેમાંથી જ્ઞાનપુણ્યાકા આદિ પાંચ સેવ કહ્યા છે જે
સ્વલનામિલિત આદિ આચારો પડે જ્ઞાનને આશ્રિત કરીને આત્માને અસાર
કરે છે, તે સાધુને જ્ઞાનપુણ્યાકા કહે છે (૨) કુદૃષ્ટિના સંસ્તવ આદિ પડે જે

તથા—કુટ્ટિ સંસ્તવાદિના યો દર્શનં નિસ્સારં કરોતિ સ દર્શનપુલાકઃ ૨। તથા—
મૂલોત્તરગુણાન્ યઃ પ્રતિસેવતે સ ચરણપુલાકઃ ૩। યઃ સાધુનાં યલ્લિઙ્ગં, તતો-
ઽધિકલિઙ્ગં ગૃહ્ણાતિ સ લિઙ્ગપુલાકઃ ૪। યસ્તુ કિંચિત્ પ્રમાત્રતિ મનસા વા અ-
કલ્પ્યં ગૃહ્ણાતિ સ યથામુક્ષમપુલાકો નામ પુલાકસ્ય પશ્ચમો ભેદઃ ૫। લઘ્વિપુલાકથ
અકલ્પ્યં એવેતિ સ નાત્ર વિવક્ષિત ઇતિ । તથા—શરીરવકુશોપકરણવકુશભેદદ્વય
વિશિષ્ટો વકુશોઽપિ આમોગવકુશાદિભેદેન પશ્ચવિધઃ । તત્ર—યઃ શરીરવિભૂષા-
ઉપકરણવિભૂષાં ચ ચિન્તનપુરસ્સરં કરોતિ સ આમોગવકુશઃ ૧। યઃ સહસ્રા-
કરોતિ સઃ અનામોગવકુશઃ ૨। યઃ પ્રચ્છન્નતયા કરોતિ સ સંવૃતવકુશ
૩। યઃ પ્રકટતયા કરોતિ સઃ અસવૃત વકુશઃ ૪। સટ

આદિસે જો દર્શનકો નિસ્સાર કરતા હૈ, વહ દર્શન પુલાક હૈ ૨ મૂલ-
ગુણોં એવં ઉત્તર ગુણોંકી જો પ્રતિસેવના કરતા હૈ, વહ ચરણપુલાક હૈ
૩ જો સાધુઓંકા લિઙ્ગ હૈ ડસસે અધિક લિઙ્ગકો જો ગ્રહણ કરતા હૈ,
વહ લિઙ્ગ પુલાક હૈ, ૪ જો કુછ ૨ પ્રમાદ પતિત હો જાતા હૈ, અથવા
મનસે અકલ્પ્યકો ગ્રહણ કરતાહૈ, વહ યથામુક્ષમ પુલાક હૈ । યહ પુલા-
કકા પાંચવાં ભેદ હૈ । લઘ્વિપુલાક એક પ્રકારકાહી હોના હૈ, અતઃ
ડસકી યહાં વિવક્ષાં નહીં હુઈ હૈ । શરીર વકુશ એવં ઉપકરણ વકુશકે
ભેદસે દો ભેદવાલા હુઆ વકુશ બી આમોગવકુશ આદિકે ભેદસે
પાંચ પ્રકારકા હૈ, इनमें जों विचारपूर्वक शरीरकी विभूषा एवं उपकर-
णकी विभूषाको करता हॆ, वह आमोगवकुश हॆ १ और सहस्रा विना
विचारेही शरीरकी विभूषा एवं उपकरणकी विभूषाको करता हॆ, वह
अनामोग वकुश हॆ २। तथा जों गुप्त रूपसे शरीरादिकोंकी विभूषा

દર્શનને નિસ્સાર કરે છે, તેને દર્શનપુલાક કહે છે (૩) મૂલગુણો અને ઉત્તર
ગુણોની જે પ્રતિસેવના કરે છે તેને ચરણપુલાક કહે છે (૨) રત્નેકરણ, મુદ્ધ
પત્તિ આદિ ૩૫ સાધુઓના જે લિંગ છે, તેના કરતાં અધિક લિંગને ધારણ
કરનાર સાધુને લિંગપુલાક કહે છે. (૫) જે સાધુ થોડો થોડો પ્રમાણે
ખની ગયો હોય છે તેને અથવા જે મનથી અકલ્પ્યને ગ્રહણ કરે છે તેને
યથાસક્ષમ પુલાક કહે છે લઘ્વિપુલાક એ જ પ્રકારનો હોય છે તેથી અહીં
તેનું વિવેચન કર્યું નથી

હવે સૂત્રકાર બકુશના ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે. બકુશના મુખ્ય બે ભેદ
કહ્યા છે—(૧) શરીર બકુશ અને (૨) ઉપકરણ બકુશ બકુશના નીચે પ્રમાણે
પાંચ ભેદ પણ પડે છે—(૧) આલોગ બકુશ—જે સાધુ વિચારપૂર્વક શરીર
અને ઉપકરણોની વિભૂષા કરે છે તેને આલોગ બકુશ કહે છે (૨) વિના વિચારે
જ સહસ્રા શરીર અને ઉપકરણોની વિભૂષા કરનાર સાધુને અનાલોગ બકુશ કહે

તત્ત્વમસદૃશત્વં ચ મૃત્તાત્મગુણાશ્રિતત્વ યોષ્યમ્ । તથા ચ ક્ષિન્નિત્ પ્રમાણતિ નેષ
મળાવપનયન યા કરોતિ સ યથા મુક્તમયકુશો નામ પદ્મમયકુશભદ્ર ૫ । તથા-
પ્રતિસેવનાકુશીલકપાયકુશીલમેદકુશવિશિષ્ટઃ કુશીલોઽપિ જ્ઞાનકુશીલદર્શન
કુશીલાદિમયેન પદ્યત્રિયઃ । તત્ર-યો જ્ઞાનમુપજીત્ પિષ્ટવિશુદ્ધ્યાદિ સ્વચ્છનાદિ
પૂર્વક પિષ્ટાદિક પ્રતિસેવમાનો જિનાશામ્ ઉલ્લદ્યયતિ સ જ્ઞાનકુશીલઃ ૧ । एवं
दर्शनवारिप्र लिप्त च उपजीवन दर्शनकूशीलवारिप्रकूशीलो १ । लिप्तकूशीलश्च
योष्यः । तथा-‘अयं सपश्यतीत्येव जनै प्रशमितो यो हृष्यति स यथासुखं
परमाहै, यत् सदृशं यकूशहै १ । एष जो प्रकट रूपमें शरीरादिकोंकी वि
भूषा करताहै, यह अमपुस्त यकूशहै ४ । सदृशतय और असदृशतय मूल
गुण और उत्तर गुणोंके आश्रित जानना चाहिये । तथा जो कुछ प्रमाद
पतित होता है, अथवा नेत्रके मैल आदिका अपनयन करता है, वह
यथा सूक्ष्मयकूश नामका पांचवां भेद है, प्रतिसेवना कुशील और
कपाय कुशील इन दोनों भेदोंसे विशिष्ट जो कुशील है, यह ज्ञान
कुशील द्दानकूशील आदिके भेदसे पांचप्रकारका है । इनमें जो ज्ञानसे
युक्त होता भी पिष्ट विशुद्धि आदिमें स्मरना आदि पूर्वक पिष्टादि
कफ प्रतिसेवन करता है, यह जिनेन्द्रकी भाषाका उत्कृष्टन करता है,
ऐसा यह ज्ञानकुशील है १ । इसी प्रकारसे दर्शन और चारित्र्य एवं
लिप्तको धारण करता हुआ अधीत ब्रह्मे अपन निष्ठा करनेका साधन
मानता है, ऐसा यह द्दानकूशील और चारित्र्यकूशील लिप्त कुशील
कहा गया है । तथा या तपस्या करता है उसी जनोद्वारा कृत्वा प्रश

ઉ (૩) ને બ્રુમ રૂપે શરીરાદિકોની વિભૂષા કરે છે તેને ચતુર્થ બ્રુમ
છે (૪) ને પ્રાગ રીને શરીરાદિકોની વિભૂષા કરે છે તેને અષ્ટમી બ્રુમ
કહે છે ચતુર્થ અને અષ્ટમી બ્રુમશુભ અને ઉત્તરશુભોને આશ્રિત સમજવું
(૫) ને સાધુ યોદા યોદા પ્રમાદી ચર્ચ ગયો દેાય છે તેને અથવા ને સાધુ
નેત્ર આદિના મેલનુ અપનયન કરે છે તેને યથાસુખમદ્ય કરે છે

કુશીલના પ્રતિસેવનાકુશીલ અને કપાયકુશીલ નામના બે ભેદોનું
પ્રતિષ્ઠાન તો આગળ કથામાં આ ગુ છે તેના જ્ઞાનકુશીલ દર્શનકુશીલ
આદિ પાંચ ભેદ ૫ છે ને સાધુ જ્ઞાનસપક્ષ દેવા છતાં પણ પિંડવિશુદ્ધિ
આદિમાં રજતન પૂર્વક પિંડારિતનું પ્રતિસેવન કરે છે ને જિનાનનું તપન
કરે છે તેથી એવા મનુને જ્ઞાનકુશીલ કરે છે એજ પ્રમાણે દર્શનકુશીલ
ચારિત્રકુશીલ અને વિષ્ણુકુશીલ વિશેષજી સમજવું વિદને (મનુને) પાતળ

કુશીલ ૫। ઇતિ । તથા કષાયકુશીલસ્ય પञ्चविधत्वमेव बोध्यम् । तथाहि-यः क्रोधादिना विद्यादिज्ञानं प्रयुङ्क्ते स ज्ञानकुशीलः १। क्रोधादिकषायेण यो निःशङ्कितत्वादिकं दर्शनाचारं विराधयति स दर्शनकुशीलः २। तथा यः क्रोधादित्रशात् कमपि शपति स चारित्रकुशीलः ३। यश्च क्रोधादिना लिङ्गान्तरं गृह्णाति स लिङ्ग-कुशीलः ४। तथा यो मनसा क्रोधादिकषायान् करोति स यथासूक्ष्मकुशीलो नाम पञ्चमः कुशीलभेदः ५। तथा-क्षीणकषायोपशान्तमोहभेदद्वयविशिष्टो निर्ग्रन्थः प्रथमसमयनिर्ग्रन्थादिभेदेन पञ्चविधः । तत्र यः अन्तर्मुहूर्तप्रमाणाया निर्ग्रन्था-द्धायाः प्रथमसमये तिष्ठति स प्रथमसमयनिर्ग्रन्थः १। प्रथम समयातिरिक्तसमयेषु

સાસે જો હર્ષિત હોતા હૈ, વહ યથાસૂક્ષ્મકુશીલ હૈ ૧। તથા કષાય કુશીલ પાંચ પ્રકારકા ઇસ તરહસેહૈ જો ક્રોધ આદિકે વજા હોકર વિદ્યા-દિજ્ઞાનકો પ્રયુક્ત કરતા હૈ વહ જ્ઞાનકુશીલ હૈ ૧ ક્રોધાદિક કષાયસે જો નિઃશંકિત આદિ દર્શનાચારકો વિરાધના કરતા હૈ, વહ દર્શન-કુશીલ હૈ ૨। જો ક્રોધાદિકકે વજાસે કિસીકો શાપ દેતા હૈ; વહ ચારિ-ત્રકુશીલ હૈ ૩। ક્રોધાદિકકે વજા સે જો અન્ય લિંગકો ધારણ કરતા હૈ વહ લિંગકુશીલ હૈ ૪। તથા જો અપને મનસે ક્રોધાદિક કષાયોકો કરતા હૈ વહ યથાસૂક્ષ્મ કુશીલ હૈ ૫। ક્ષીણકષાય ઓર ઉપશાન્તમોહ ઇન દો ભેદોવાલા નિર્ગ્રન્થ પ્રથમ સમયકે નિર્ગ્રન્થાદિકકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકા હૈ-ઇનમૈં જો અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણવાલે નિર્ગ્રન્થકાલકે પ્રથમ સમયમૈં રહતા હૈ, વહ પ્રથમસમય નિર્ગ્રન્થ હૈ ૧ જો અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણવાલે નિ-

કરવા છતા તેને પેતાના નિર્ગાહનું સાધન માનતા સાધુને લિંગકુશીલ કહે છે પેતાની તપસ્યાની લોકો દ્વારા પ્રશંસા થતી જોઇને હર્ષ પામતા સાધુને સૂક્ષ્મકુશીલ કહે છે કષાય કુશીલના પચ્ચ એવા જ પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે (૧) જે ક્રોધાદિથી ચુકત થઇને વિદ્યાદિજ્ઞાનને પ્રયુક્ત કરે છે તેને જ્ઞાનકુશીલ કહે છે (૨) ક્રોધાદિક કષાયને આધીન થઇને જે નિઃશંકિત આદિ દર્શના ચારની વિરાધના કરે છે તેને દર્શનકુશીલ કહે છે (૩) જે ક્રોધાદિકને આધીન થઇને કોઇને શાપ આપે છે તેને ચારિત્રકુશીલ કહે છે (૪) ક્રોધાદિકને આધીન થઇને જે અન્યલિંગને ધારણ કરે છે તેને લિંગકુશીલ કહે છે. (૫) જે પેતાના મનમાં જ ક્રોધાદિક કષાયો કરે છે તેને યથાસૂક્ષ્મકુશીલ કહે છે

ક્ષીણકષય અને ઉપશાન્ત મોહ, આ બે લેહોવાળા નિર્ગ્રંથોના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) પ્રથમ સમય નિર્ગ્રંથ-જે અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણવાળા નિર્ગ્રંથકાળના પ્રથમ સમયમાં રહે છે, તેને પ્રથમ સમય નિર્ગ્રંથ કહે છે (૨) અપ્રથમસમય નિર્ગ્રંથ-જે અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણવાળા નિર્ગ્રંથ

પત્તિષ્ઠતિ સોડમયમમયનિર્મય ૨। તથા-યોડન્તમુદ્ધર્તપમાણાયા નિષ્પન્થા
દાયાધરમસમયે તિષ્ઠતિ સ ચરમસમયનિર્મય ૩। તથા યમસમયપાદન્યસ્મિન્
યાવચ્છેદેદયરમ્યાવામમયે તિષ્ઠતિ સો-વચ્છમસમયનિર્મય ૪। યસુ નિર્મય્યા
દ્વાપા અન્તમુદ્ધર્તપમાણાયા પ્રથમસમયાદાગમ્ય શૈલેશ્વરસ્થાયાધરમસમયપર્યંતે
સર્વેષુ સમયેષુ તિષ્ઠતીતિ સ યથામુદ્ધર્તનિર્મય્ય ઇતિ ૫ તથા-મયોગકેવલમયોગ
કેવલમેદદ્યવચ્છિષ્ટ સ્નાતક અચ્છવ્યાદિમેદન વચ્છવિષ ૧ ઉત્ત્ર-કાયયોગ
નિરોધેન યસ્ય છવિઃ=શરીરં નાસ્તિ સોડચ્છવિઃ ૨ અગ્રેદ ઘોર્યમ્-મયોગકેવલિનાં
કાયયોગનિરોધો મચ્છવેવેતિ તેપામચ્છવિત્ત મુદ્ધર્ત ૩ મયોગકેવલિનોડપિયદા

ર્મ-પ્રકાલકે પ્રથમ સમયસે અતિરિક્ત સમયોમેં રહતા હૈ, વહ અપ્રથમ
સમય નિર્મય્ય હૈ ૨। જો અન્તમુદ્ધર્ત પ્રમાણવાલે નિર્મય્યકાલકે ચરમ
સમયમેં રહતા હૈ, વહ ચરમ સમય નિર્મય્ય હૈ ૩। જો ચરમ સમયસે
અન્ય સમયમેં યાવત્ શૈલેશ્વી અવસ્થાકે ચરમ સમયમેં રહતા હૈ, વહ
અચરમ સમય નિર્મય્ય હૈ ૪। જો અન્તમુદ્ધર્ત પ્રમાણવાલે નિર્મય્યકાલકે
પ્રથમ સમયસે લેકર શૈલેશ્વી અવસ્થાકે ચરમ સમય પર્યંત સય સમ
યોમેં રહતા હૈ, વહ યથામુદ્ધર્ત નિર્મય્ય હૈ ૫। સંયોગકેવલી ઔર અયોગ
કેવલી રૂપ દો મેદોસે ઘિષિષ્ટ જો નિર્મય્ય હૈ, વહ અચ્છવિ આદિકે
મેદસે પાંચ પ્રકારકા હૈ, इनमें काययोगके निरोधसे जिमको शरीर
नहीं होता है, यत्त अचछवि है, यहाँ इम प्रकार समझना चाहिये-
अयोग केवलियोंके काययोगका तो निरोध होताहै, इसलिये इनमें अ

જાળના પ્રથમ સમય સિવાયના સમયમાં રહે છે તેને અપ્રથમસમય નિર્મય્ય
કહે છે (૩) ચરમસમય નિર્મય્ય-જે અન્તમુદ્ધર્ત પ્રમાણવાળા નિર્મય્યજાળના
ચરમ (અન્તિમ) સમયમાં રહે છે તેને ચરમસમય નિર્મય્ય કહે છે (૪)
અચરમ સમય નિર્મય્ય-જે ચરમ સમય કરતાં અન્ય સમયમાં શૈલેશ્વી અવ
સ્થામાં ચરમ સમય પથ તના સમયમાં રહે છે તેને અચરમસમય નિર્મય્ય
કહે છે (૫) યથામુદ્ધર્ત નિર્મય્ય-જે અન્તમુદ્ધર્ત પ્રમાણવાળા નિર્મય્યજાળના
પ્રથમ સમયથી લઈને શૈલેશ્વી અવસ્થામાં ચરમ સમય પથ તના જ્યાં સુધી
ચેામાં રહે છે તેને યથામુદ્ધર્ત નિર્મય્ય કહે છે

અયોગ કેવલી અને અયોગકેવલી રૂપ બે લેહવાળા જે સ્નાતક નિર્મય્ય
છે તેમના અચ્છવિ આદિ પાંચ પ્રકાર કયા છે

કાયયોગના નિરોધને કારણે જેમનો શરીરનો-કાયના વ્યાપારનો અભાવ
હોય છે તે નિર્મય્યને અચ્છવિ કહે છે આથી જોવું સવજવું જોઈએ કે અયોગ
કેવલીના કાયયોગનો તો નિરોધ યડ ગયેલો જ હોય છે, તેથી તેમનામાં

સૂક્ષ્મકાયયોગેન વાદરકાયયોગં નિરુન્ધન્તિ તદા તેષામપિ અચ્છવિત્ત્વં ભવતિ ।
 વિરોધસ્ત્વેવં બોધ્યઃ—ભગવાન્ સયોગકેવલી સ્વોપગ્રાહિ કર્મક્ષપણાય પરમનિર્મલ-
 મત્યન્તાપ્રક્રમ્પં પરમનિર્જરાકારણ ધ્યાનં પ્રતિપત્તુકામો યોગનિરોધાર્થમુપક્રમતે ।
 તત્ર પ્રથમં વાદરકાયયોગેન વાદરમનોયોગ નિરુગદ્ધિ, તતો વાદસ્વાગ્યોગમ્ । તતઃ
 સૂક્ષ્મકાયયોગેન વાદરકાયયોગં નિરુગદ્ધિ તતઃ સૂક્ષ્મકાયયોગેનૈવ સૂક્ષ્મમનોયોગ
 સૂક્ષ્મવાગ્યોગં ચ । સૂક્ષ્મકાયયોગં તુ સૂક્ષ્મક્રિયમનિવર્તિ શુક્લધ્યાનં વ્યાયન્ સ્વાત્-
 પ્ટમ્ભેનૈવ નિરુગદ્ધિ, અન્યસ્ય અવષ્ટમ્ભનીયસ્ય યોગસ્ય તસ્મિન્ કાલે અભાવાત્ ।
 અચ્છવિતા તો સુસ્પષ્ટહી હૈ, સંયોગ કેવલીકે ખી જલ્પ સૂક્ષ્મ કાયકે યો-
 ગસે વાદરકાય યોગકા નિરોધ કરતે હૈં, તલ્પ ઉનકે ખી અચ્છવિતા
 હોતી હૈ, નિરોધ હસ પ્રકારસે હોતા હૈ—ભગવાન્ સયોગ કેવલી સ્વો-
 પગ્રાહિ કર્મકે ક્ષપણકે લિયે પરમ નિર્મલ અત્યન્ત અપ્રક્રમ્પ એવં પરમ
 નિર્જરાકે કારણરૂપ ધ્યાન કરનેકે અભિલાષી હોતે હૈં, તલ્પ લે યોગ
 નિરોધકે લિયે ઉપક્રમ કરતે હૈં, ઉસમેં લે પ્રથમ કાયયોગસે વાદર મનો-
 યોગકા નિરોધ કરતે હૈ, લાદમેં લાદર લાગ્યોગકા નિરોધ કરતે હૈં ।
 હસકે લાદ સૂક્ષ્મ કાયયોગસે લાદર કાયયોગકા નિરોધ કરતે હૈં, લાદમેં
 લે સૂક્ષ્મ કાયયોગસેહી સૂક્ષ્મમનોયોગકા ઓર સૂક્ષ્મ લાગ્યોગકા નિરોધ
 કરતે હૈં । સૂક્ષ્મ ક્રિયા અનિવૃત્તિ શુક્લધ્યાનકો ધ્યાતે હુલ્લે લે કેવલી
 અપને અવષ્ટમ્ભસેહી સૂક્ષ્મ કાયકા નિરોધ કરતે હૈં । કલ્પોકિ ઉસ સમય
 અન્ય અવષ્ટમ્ભનીય યોગકા અભાલ હોતા હૈ, ઉસ ધ્યાનકે સામર્થ્યસે લે

અચ્છવિતા સુસ્પષ્ટ જ છે. સયોગ કેવલી પણ જ્યારે સૂક્ષ્મ કાયના યોગથી
 બાહર કાયયોગનો નિરોધ કરે છે, ત્યારે તેમનામા પણ અચ્છવિતા જ હોય
 છે. નિરોધ આ પ્રમાણે થાય છે—ભગવાન સયોગ કેવલી સ્વોપગ્રાહિ કર્મના
 ક્ષપણને માટે પરમ નિર્મલ અત્યન્ત અપ્રક્રમ્પ પરમનિર્જરાના કારણરૂપ ધ્યાન
 ધરવાની અભિલાષાવાળા થાય છે ત્યારે તેઓ યોગનિરોધને માટે ઉપક્રમ
 કરે છે. ત્યારે તેઓ પહેલા કાયયોગ દ્વારા બાહર મનોયોગનો નિરોધ કરે
 છે, ત્યાર બાદ બાહર લાગ્યોગનો નિરોધ કરે છે ત્યાર બાદ સૂક્ષ્મ કાયયોગ
 વડે બાહર કાયયોગનો નિરોધ કરે છે ત્યારબાદ તેઓ સૂક્ષ્મકાયયોગ વડે
 જ સૂક્ષ્મ મનોયોગનો અને સૂક્ષ્મ લાગ્યોગનો નિરોધ કરે છે સૂક્ષ્મ ક્રિયા
 નિવૃત્તિ શુક્લ ધ્યાન ધરતા ધરતા તે કેવલી થોતાના અવષ્ટભથી જ સૂક્ષ્મ
 કાયનો નિરોધ કરે છે, કારણ કે તે સમયે અન્ય અવષ્ટભનીય યોગનો અભાવ

तदुभयानामभ्यासः स तदनोदरादिविवरपूरणेन सकृच्चित्तदेहप्रिभागवर्ति प्रवेशो
भवति । तदनन्तरं समुच्छिन्नक्रियामप्रतिपाति शुक्लध्यानं भ्यायन् मध्यमप्रतिपत्त्या
इत्यपश्चात्तरोधारणमात्रकालशैलेशीकरणं प्रविशति इति । वादरकाययोगनिरोधो
मन्तरं यावत् सूक्ष्मकाययोगः न निरुणद्धि तावत् गयोगिकेवली भवति । अस्या
मवस्थायां वादरकाययोगाभावेन भवच्छित्तम् । सूक्ष्मकाययोगनिरोधानन्तरं तु
अयोगिकेवली भवति । तत्र तु भवच्छित्तं सुस्थितमेवेति उच्यते । इति स्नात
कस्य प्रथमो मेदः । अतिचारेभ्यो निर्गतत्वाद्वारलो द्वितीयः । अकर्मज्ञः-नास्ति
कर्मणः अज्ञः-लेशोऽपि क्षपितकर्मत्वाद्यस्य ॥ इति तृतीयः । तया-संशुद्धज्ञान
दर्शनधरः-संशुद्ध-ज्ञानदर्शनान्तरमपर्वण्यत्वात् यत् ज्ञानदर्शनं तस्य धरः-
धारकः, अहम्-नरामरनमस्कारार्हत्वात्, जिनो नितरपापत्वात् केवली-परिपूर्ण
रत्नप्रपरादिति चतुर्थः । अपरिस्त्रावी-सकलयोगनिरोधेन निष्क्रियत्वादिति
पञ्चमः । इति ॥ सू० ५ ॥

यदन उदर आदि विवरके पूरण होनेसे सकृच्चितदेह प्रिभागवर्ती प्रवे
शवाले हो जाते हैं । इसके बाद समुच्छिन्न क्रिया अप्रतिपाती शुक्ल
ध्यानको ध्याते हुए वे मध्यम प्रतिपत्तिसे हस्य पश्चात्तरके उच्चारण
मात्र कालतक शैलेशीकरणमें प्रवेश करते हैं । वादर काययोगके
निरोधके बाद जब तक सूक्ष्म काययोगका निरोध नहीं कर लेते हैं, तब
तक वे सयोग केवली होते हैं, इन अवस्थामें वादर काययोगके अभा
वसे उनमें भवच्छित्ता सुस्थितही हो जाती है, इस प्रकारका यह स्नात
कका प्रथम मेद है, अज्ञात यह इसका द्वितीय मेद है इस अव
स्थामें वे अतिचारोंसे रहित हो जाते हैं । अकर्मज्ञ यह तृतीय मेद है
इस अवस्थामें क्षपित कर्मवाले हो जानेसे उनके कर्मोंका अंश तक भी
नहीं रहता है । संशुद्ध ज्ञान दर्शनधर यह चतुर्थमेद है, इस अवस्थामें

देव उ ते ध्यानना साभ्यधी तेजो यदन उदर आदि विवर पूरण यवाधी
सकृच्चित देहवाणा-त्रिभागवती प्रवेशवाणा यत् नाथ ॥ त्परे जाह समुच्छिन्न
क्रिया अप्रतिपाती शुक्लध्यानने धरणा यत् तेजो मध्यम प्रतिपत्ति वदे यत्
इत्यादिना उच्चारण प्रमाणकाय सुधी ॥ शैलेशीकरणं प्रवेश करे उ
जाह काययोगनो निरोध कर्त्ता जाह अथा सुधी तेजो सूक्ष्म काययोगनो निरोध
करी वेता नथी त्वा सुधी तेजो सयोग केवली ॥ अथाप उ अथ अवस्थाभां
तेजो अतिचारेभ्यो रहित यत् नाथ उ (उ) अकर्मज्ञ नाभने श्रीने सेह
उ अथ अवस्थाभां तेजना कर्मेनि अथ यत् अथाधी तेजना कर्मेना अथ पञ्च

નિર્ગ્રન્થપ્રસ્તાવાત્ સમ્પતિ તેવાગેવ ઉપધિવિશેષાન્ પ્રદર્શયતિ—

મૂલમ્—કપ્પડ્ડિ નિર્ગમંથાણ વા નિર્ગમંથીણ વા પંચ વસ્થાઈં
ધરિત્તણ વા પરિહરિત્તણ વા તં જહા—જંગિણ ૧ મંગિણ ૨ સાળણ
૩ પોત્તિણ ૪ તિરીડપટ્ટણ ૫ નામં પંચમણ । કપ્પડ્ડિ નિર્ગમંથાણ
વા નિર્ગમંથીણ વા પંચ રયહરણાઈં ધરિત્તણ વા પરિહરિત્તણ વા,
તં જહા—ઉણિણ ૧ ઉટ્ટિણ ૨ સાળણ ૩ પચ્છાપિચ્ચયણ ૪ મુંજા-
પિચ્ચિણ ૫ નામં પંચમણ ॥ સૂ. ૬ ॥

છાયા—કલ્પતે નિર્ગ્રન્થાનાં વા નિર્ગ્રન્થીનાં વા પચ્ચવસ્થાણિ ધર્તું વા પરિહર્તું
વા, તથથા—જાક્કમિક્કમ્ ૧ માક્કિક્કમ્ ૨ શાળકમ્ ૩ પૌત્તિકં ૪ તિરીટપટ્ટક ૫
નામ પચ્ચમકમ્ । કલ્પતે નિર્ગ્રન્થાનાં વા નિર્ગ્રન્થીનાં વા પચ્ચ રજોહરણાણિ ધર્તું
વા પરિહર્તું વા, તથથા—ઔર્ણિકમ્ ૧, ઔર્ણિકમ્ ૨, શાળકમ્ ૩ વલ્લવજકુટ્ટિત-
ત્વહ્મયં ૪ મુજ્જકુટ્ટિત્વહ્મયં ૫ નામ પચ્ચમકમ્ ॥ સૂ. ૬ ॥

બનકા જ્ઞાનાન્તર ઔર દર્શનાન્તરકે સંપર્કસે જ્ઞાનદર્શન શૂન્ય હો જાતા
હૈ, ઇસલિયે એસે જ્ઞાન ઔર દર્શનકે વે ધારી હો જાતે હૈં । “અર્હન્ જિનઃ
કેવલી અપરિસ્લાવી ૫” ઇસ પ્રકાર નર ઔર અમરસે નમસ્કાર કરને
યોગ્ય હો જાનેસે વે અર્હન્ હો જાતે હૈં જિન કપાયવાલે હોનેસે વે જિન
હો જાતે હૈં, ઔર પરિપૂર્ણ રત્નત્રયવાલે હો જાનેસે કેવલી હો જાતે હૈં
એસા યહ ચતુર્થ ભેદ હૈ, ઔર અન્તર્મે સકલ યોગોંકે નિરોધસે વે નિષ્ક્રિય
બન જાનેકે કારણ અપરિસ્લાવી હો જાતેહૈં એસા યહ પાંચવાંભેદહૈં ॥સૂ. ૫॥

બાકી રહેતો નથી (૪) સ શુદ્ધ જ્ઞાન દર્શનધર નામનો એથો ભેદ છે આ
અવસ્થામા જ્ઞાનાન્તર અને દર્શનાન્તરના સંપર્કથી તેમનું જ્ઞાન અને દર્શન
વિહીન થઈ જાય છે, તે કારણે તેઓ જ્ઞાન અને દર્શનને ધારણ કરનારા
બની જાય છે “અર્હન્ જિન કેવલી અપરિસ્લાવી” આ પ્રકારે મનુષ્યો અને
દેવો દ્વારા વન્દનીય થઈ જવાથી તેઓ અર્હંત બની જાય છે કષાયોને છૂત-
નારા હોવાને કારણે તેઓ જિન કહેવાય છે અને પરિપૂર્ણ રત્નત્રયવાળા થઈ
જવાને લીધે તેઓ કેવલી બની જાય છે, એવો આ એથો ભેદ છે અન્તે
સકળ યોગોને નિરોધ કરીને તેઓ નિષ્ક્રિય બની જવાને કારણે અપરિસ્લાવી

ટીકા—'કપ્પહ' इत्यादि—

નિર્મળ્યાનાં નિર્મળ્યોનાં શા પથ્થ=વશ્વવિષાણિ પસાણિ ધર્તુ=ગ્રહીત શા પરિહર્તુમ્=આસરિત કલ્પત । સાન્યથ યસાળ્પાદ-તથા-માઙ્ગમિકમ્-જઙ્મ = પ્રસા મેપાદયસ્વરભ્રોમનિષ્પન્ન કમ્બહાદિકમ્ । માઙ્ગિકમ્-મઙ્ગા=મતગ્રી (અસહી) તત્ત્વગ્મિનિષ્પન્નમ્ । શાળકમ્=શળવૃષ્ટનિષ્પન્નમ્ । પૌતિકમ્-પૌત કાપાસ વસ્ત્ર તદેવ । તિરીટપટ્ટમ્-તિરીટનામક વૃક્ષવિશેષત્વવાનિર્મિતમ્ । ઉક્ત ચાત્ર—

“ જગમજાય જગિય, ત પુણ વિગલિદિય ચ પર્વિર્દિ ।

પ્વકેવરુપિ ચ દ્યો, હોદ વિમાગેષ ખેગવિર્દિ ॥ ૧ ॥

અમ સૂત્રકાર નિર્મળ્યકે પ્રકરણસેહી ડનકી વિશેષ ઉપધિકા પ્રતુપણ કરતે હે—'કપ્પહ જિગ્ગવાળ શા' इत्यादि सूत्र ६ ॥

ટીકાર્થ-નિર્મળ્યોકો અથવા નિર્મળ્યનિર્મળ્યોકો પાંચ પ્રકારકે વસ્ત્રોકા ધારણ કરના ડનકા આસેવન કરના કલ્પ્ય રુપા ગયા હે । યે પાંચ પ્રકારકે વસ્ત્ર યેહ—જાઙ્ગમિક ૧ માઙ્ગિક ૨ શાળક ૩ પૌતિક ૪ ડૌર તિરીટપટ્ટક ૫ જો વસ્ત્ર મેપાદિક (મઘાદિ) જઙ્મ જીવોકે રોમસે નિષ્પન્ન હોતા હે, યહ જાઙ્ગમિક હે ડૌસે-કપ્પલ આદિ મઘ નામ અતસી અલસીકા હે, હસ અલસીકી છાલસે જો વસ્ત્ર નિર્મિત હોતા હે, યહ માઙ્ગિક હે, શાળકે સૂત્રોસે જો વસ્ત્ર વનતા હે, યહ શાળક હે, પૌત નામ કપાસકા હે, હમ કપાસસે જો વસ્ત્ર નિર્મિત હોતા હે, યહ પૌતિક વસ્ત્ર હે, ડૌર જો વસ્ત્ર તિરીટ નામક વૃક્ષ વિશેષકી છાલસે નિર્મિત હોતા હે, યહ તિરીટપટ્ટક

વર્ધ અપ છે, આ પાઞ્ચમે કોઠ સમજવે । ॥ સૂ. ૫ ॥

નિમ્ન યને અધિકાર આઘી રહ્યો છે તેથી હવે સૂત્રકાર તેમની વિશિષ્ટ ઉપધિતુ નિર્દેશ કરે છે કપ્પહ જિગ્ગવાળ શા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—નિમ્ન યને અને નિમ્ન યીજીને નીચે જતાવેલા પાંચ પ્રકારના વસ્ત્રો ધારણ કરવા અને તેમને ઉપયોગ કરવે કહે છે—(૧) અગમિક (૨) માઙ્ગિક, (૩) શાળક (૪) પૌતિક અને (૫) તિરીટ પટ્ટક

જે વસ્ત્રો યેમ આદિ જગમ જીવેલા વાળમાંથી અને છે, તે વસ્ત્રોને અગમિક કહે છે જગમ આદિને આ પ્રકારતુ વસ્ત્ર કહી શકાય છે અલસીને અત્ર કહે છે અલસીની છાલમાંથી જે વસ્ત્ર બને છે, તે વસ્ત્રને માઙ્ગિક કહે છે યવુના રેસામાંથી જે વસ્ત્ર બને છે તેને શાળક કહે છે કપાસને પાત કહે છે તે કપાસમાંથી જે વસ્ત્ર બને છે તેને પૌતિકવસ્ત્ર કહે છે જે વસ્ત્ર તિરીટ નામના વૃક્ષની છાલમાંથી બને છે તેને તિરીટપટ્ટક કહે છે

પટ્સુવણ્ણે મલ્લ, અંશુય ચીર્ણસુપ ય વિગલિંદી ।

ઉત્તોદ્વિયમિયલોમે, કુતવે કિદ્વિયપંચિંદી ॥ ૨ ॥

અયમી વંમીમાટય, મંમિયં સાળયં તુ સળવલ્લો ।

પોત્તં કપ્પાણમયં, તિરીડરુક્ષા તિરીડપટ્ટો ॥ ૩ ॥

છાયા—જઙ્ગમજાતં જાઙ્ગમિકં તત્ પુનર્વિકલેન્દ્રિયં ચ પચ્ચેન્દ્રિયમ્ ।

એકૈકમપિ ચ ઇતો ભવતિ વિભાગેન પચ્ચવિધમ્ ॥ ૧ ॥

પટ્ઃ સુવર્ણમલયમ્ અંશુકં ચીર્ણાંશુકં ચ વિકલેન્દ્રિયમ્ ।

ઓર્ણમ્ ઓલ્લિંદ્રુકં મૃગલોમકુતુપં કિદ્વિજ પચ્ચેન્દ્રિયમ્ ॥ ૨ ॥

અતયી વંચપાદિજં માઙ્ગિકં સાળકં તુ સળવલ્લઃ ।

પોતં કાર્પાસમયં તિરીડરુક્ષાત્ તિરીડપટ્ટઃ ॥ ૩ ॥

અયમર્થઃ—જઙ્ગમાજ્ઞાતં વલ્લં જાઙ્ગમિકં ભવતિ । તત્પુનઃ વિકલેન્દ્રિયજન્ય-
ત્વાદ્ વિકલેન્દ્રિયં પચ્ચેન્દ્રિય જન્યત્વાચ્ચ પચ્ચેન્દ્રિયં ભવતિ । ઇતઃ=અત્ર ભેદદ્વય-
મધ્યે એકૈકમપિ વિભાગેન=વિકલેન્દ્રિયાણાં પચ્ચેન્દ્રિયાણાં ચ જીવાનાં ભેદેન
અનેકવિધં ભવતિ ॥ ૧ ॥ પટ્ટવલ્લં પ્રસિદ્ધમ્ સુવર્ણ=સુવર્ણવર્ણસૂત્રનિર્મિતં કુમિજ-

હૈ । કહા મી હૈ—“ જગમજાયં જગિયં ” હત્યાદિ ।

જો વલ્લ જઙ્ગમસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ, વલ્લ જાઙ્ગમિક હૈ, યહ વલ્લ વિક-
લેન્દ્રિયોકે રોમસે જન્ય હોનેસે વિકલેન્દ્રિય હોતા હૈ, ઓર પચ્ચેન્દ્રિયકે
રોમસે જન્ય હોનેસે પચ્ચેન્દ્રિય હોતા હૈ, હસ તરહ્ હન દો ભેદોકે વીચમેં
એક વલ્લ મી વિકલેન્દ્રિય ઓર પચ્ચેન્દ્રિય જીવોકે ભેદસે અનેક પ્રકારકા
હોતાહૈ ? પટ્ટવલ્લ ? સુવર્ણવલ્લ ૨ મલયવલ્લ ૩ અંશુક બારીક વલ્લ ૪ ઓર
ચીર્ણાંશુક વલ્લકે ભેદસે વલ્લ પાંચ પ્રકારકા હોતા હૈ, યહ પાંચ પ્રકારકા
વલ્લ વિકલેન્દ્રિય જીવોકે રોમસે ઉત્પન્ન હોતાહૈ, હનમેં પટ્ટવલ્લ પ્રસિદ્ધ હૈ ।
અચ્છે વર્ણવાલે સૂત્રસે જો વલ્લ નિર્મિત હોતા હૈ, વલ્લ સુવર્ણવલ્લ હૈ, યહ

કલ્પ પલ્પ છે કે “ જગમજાયં જગિય ” ઇત્યાદિ—

જે વલ્લ જ જગમ જીવોના વાળમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે તેને જાંગમિક કહે
છે તે વલ્લ વિકલેન્દ્રિયોના રોમમાંથી ઉત્પન્ન થતું હોવાથી વિકલેન્દ્રિય જન્ય
પલ્પ હોય છે અને પચ્ચેન્દ્રિયોના રોમમાંથી ઉત્પન્ન થતું હોવાથી પચ્ચેન્દ્રિયજન્ય
પલ્પ હોય છે વિકલેન્દ્રિયજન્ય વલ્લ પલ્પ પાંચ પ્રકારનું હોય છે—(૧) પટ્ટવલ્લ
(૨) સુવર્ણવલ્લ, (૩) મલય વલ્લ, (૪) અંશુક વલ્લ (૫) અને ચીર્ણાંશુક વલ્લ આ પાંચ
પ્રકારના વલ્લ વિકલેન્દ્રિય જીવોના રોમમાંથી અને છે પટ્ટ વલ્લ બહારીતું હોવાથી અહીં
તેનું વર્ણન કર્યું નથી. સંદેશ વર્ણવાળા તત્ત્વાંગી ને ...

મિત્યર્થઃ, મલય=મલયવેગોદ્ભવ વસ્તુ, અશુક=શુદ્ધવસ્તુ, ઘીનાંશુકમ્=શીશ-
યમ્, -ઘીનવેગોદ્ભવ વા શુદ્ધવસ્તુમય વસ્તુ, એસત્ પદાદિ પચમદ્મિત્યન વર્ણ
નિરુલેન્દ્રિયજમ્ । તથા-ઔર્ગિકમ્=ઝર્ગમિયમ્, ઔપ્દ્રિકમ્=ઉપ્દ્રોમમ્, મૃગ
મોમ્નો માનસાદ્ વસ્તુ મૃગલોમમ્ । ઉપલપગત્તાન્ શશરોમજ મૂપકરોમજ વાપિ
ચોદ્યમ્ । તથા-કુતુપમ્-ઝાગરોમજમ્, કિદ્દિજમ્=ખેતેપામચ નિઠ્ઠરોમનિર્મિતમ્
॥ ૨ ॥ તથા-અનસીધરવાદિમ્ માત્રિકં વસ્તુ મતિ શળવરકીર્ણને તુ શાણક

વસ્તુ કૃમિજ (રેશમી) હોતા હૈ, મલયવસ્તુ-મલયવેશકા પના હુખા હોતા
હૈ, જો વસ્તુ ચિહ્ના હોતા હૈ, વહ અશુક કહલાતા હૈ, જો વસ્તુ ઘીન
વેશકા પના હોના હૈ, અથવા રેશમકા પના હોતા હૈ, વહ ઘીનાંશુક
કહલાતા હૈ, જો વસ્તુ ડટક રોમોંકા પના હોના હૈ, વહ ઔપ્દ્રિકવસ્તુ
હૈ, જો વસ્તુ ઝર્ગાકા પના હોના હૈ, વહ ઔર્ગિક વસ્તુ હૈ, જો વસ્તુ મૃગકે
રોમકા પના હોતા હૈ, વહ મૃગલોમ વસ્તુ હૈ, ઉપલક્ષણસે " શશરોમજ
મૂપકરોમજ " इन वस्तुओंका मी ग्रहण हुआ है, स्वरगोशके रौमोंका
पना हुआ वस्तु शशरौमज है, और चूड़ोंके रौमसे पना वस्तु मूपकरो
मज है, जो घट्ट पकरेके रौमसे पनताहै, वह कुतुप वस्तुहै, तथा इन्हींके
निष्कृष्ट (इलके) रौमोंसे जो वस्तु पनाया जाता है, वह किद्विजवस्तु है,
तथा-अनसी आदिकी छालसे जो वस्तु पनाया जाता है वह भाद्रिक
वस्तु है । शाणके बोरोंसे जो वस्तु पनाया जाता है, वह शाणक है,

વસ્તુ કહે છે તે વસ્તુ રેશમના કીડાઓની છાળમાંથી બને છે મલય વસ્તુ
મલય રેશમાં બને છે જે વસ્તુ બહુ જ મુલાવમ હોય છે તેને અશુક વસ્તુ
કહે છે જે વસ્તુ ઘીન રેશમાં બને છે અથવા રેશમમાંથી બને છે તેને
ઘીનાંશુક કહે છે

પદોદ્ગ્રિપજન્મ વસ્તોના નીચે પ્રમાણે બનેલા પ્રકાર પડે છે—જે વસ્તુ
છીડની રુવાટીમાંથી બને છે તેને ઔપ્દ્રિક કહે છે જે વસ્તુ છીનમાંથી બને
છે તે ઔર્ગિક વસ્તુ કહે છે જે વસ્તુ મૃગની રુવાટીમાંથી બને છે તેને
મૃગલોમ વસ્તુ કહે છે ઉપલક્ષણથી " શશરોમજ મૂપકરોમજ " સસલાની
રુવાટીમાંથી બનેતું શશરોમજ વસ્તુ અને મૂપકોની રુવાટીમાંથી બનેલું
મૂપકરોમજ વસ્તુ બંને પ્રકાર મુગ લેખે છે (૪) ' કુતુપવસ્તુ ' જે વસ્તુ બા
શના વાળમાંથી બને છે તેને કુતુપવસ્તુ કહે છે (૫) ' કિદ્દિજવસ્તુ ' તેમની જ
નિષ્કૃષ્ટ રુવાટીમાંથી જે વસ્તુ બને છે તેને કિદ્દિજવસ્તુ કહે છે

અનસી આદિની છાલમાંથી જે વસ્તુ બને છે, તેને ભાદ્રિકવસ્તુ કહે છે
શણના રેશમાંથી જે વસ્તુ વસ્ત્રમાં આવે છે, તેને શાણકવસ્તુ કહે છે ૩૫૩

ભવતિ કર્પાસનિર્મિતં તુ પોતમુચ્યતે, તથા—તિરીટવૃક્ષત્વચયા યદ્ વત્ત નિષ્પદ્યતે
તત્ તિરીટપટ્ટકમુચ્યતે ॥ ૩ ॥

યદ્યપિ સાધુકલ્પનીયં પશ્ચવિધં પ્રોક્તં તથાપિ ઉત્સર્ગતઃ સાધુભિઃ કર્પાસમૌ-
ર્ણિકં ચ દ્વિવિધમેવ વસ્ત્રં ગ્રાહ્યમ્ । તદુક્તમ્—

“ કર્પામિયા ડ દોન્ની ડન્નિય એક્કો ય પરિભોગો ” ।

છાયા—કાર્પામિકસ્ય તુ દ્વે ઔર્ણિકમેકં ચ પરિભોગઃ રૂપિત ।
તથા — “ કર્પામિયસ્સ અસર્ફવાગયપટ્ટો ય કોસિયારો ય ।

અસર્ફ ય ડણ્ણિયસ્મ વાગયકોસેજ્જપટ્ટો ય ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—કાર્પામિકસ્યામતિ વાલ્લજપટ્ટશ્ચ કૌશિકાકારશ્ચ ।

અસતિ ચ ઔર્ણિકે વાલ્લજઃ કૌશેયપટ્ટશ્ચ ॥ ૧ ॥ રૂપિત ।

एतदाल्पमूल्यकमेव ग्राह्यं न तु बहुमूल्यकम् । दशमुद्रादिमूल्यकं वस्त्रं
बहुमूल्यं बोध्यमिति । तथा—निर्ग्रन्थानां निर्ग्रन्थानां वा पञ्चविधानि रजोहर-
णानि धर्तुं परिग्रहीतुं वा कल्पते । पञ्चविधत्वमेवाह—तथया—और्णिकम्—मेषलो-

और कपासके डोरोंसे जो वस्त्र बनाया जाता है, वह पोतवस्त्र
कहलाता है, तथा तिरीट वृक्षकी छालसे जो वस्त्र निष्पन्न होता है,
वह तिरीटपट्टक है ३ । यद्यपि साधुजनोंको कल्पनीय पांच प्रकारका
वस्त्र कहा गया है, तब भी उत्सर्गसे साधुजनोंको कार्पास और औ-
र्णिक ये दो वस्त्रही ग्रहण करना चाहिये । कहा भी है—

“ કર્પાસિયા ડ દોન્ની ” इत्यादि ।

कार्पासिक आदि जो वस्त्र साधुजनोंको धारण करने योग्य कहे
हैं, वे वस्त्र भी ऐसे धारण करना चाहिये जो अल्पमूल्यके हों बहुत-
मूल्यवाला न हों । दशमुद्रा आदिके मूल्यवाला वस्त्र बहुमूल्य कहा
गया है । तथा—निर्ग्रन्थोंको एवं निर्ग्रन्थनियोंको पांच प्रकारके रजोहरण

ના સૂતરમાથી જે વસ્ત્ર વણવામાં આવે છે, તેને પેતવસ્ત્ર કહે છે.
તિરીટવૃક્ષની છાલમાથી જે વસ્ત્ર બનાવવામાં આવે છે, તેને તિરીટપટ્ટક કહે છે
જે કે સાધુઓને માટે ઉપર્યુક્ત પાત્ર પ્રકારના વસ્ત્રને કલ્પ્ય કહ્યાં છે, છતાં
સાધુઓએ સૂતરાઉ અને બિનના બનાવેલા વસ્ત્રોજ ગ્રહણ કરવા તે વધારે
ઉચિત છે કહ્યું પણ છે કે “ કર્પાસિયા ડ દોન્ની ” ઇત્યાદિ—

સૂતરાઉ આદિ જે વસ્ત્રો સાધુજનોને માટે ધારણ કરવા યોગ્ય કહ્યા
છે, તે પણ બહુ મૂલ્યવાન હોવા બેઠાં નહીં, પણ સસ્તા હોવા બેઠાં
દશ મુદ્રા આદિ ભાવના કપડાંને બહુમૂલ્ય કહ્યા છે

સાધુ અને સાધ્વીઓને નીચે પ્રમાણે પાત્ર પ્રકારના રજોહરણ જ કલ્પે
સ્થા ૦—૨૭

મમયમ્ । ઔદ્ધિરુમ્=ઉદ્ધૃતોમનિર્મિતમ્ । શ્રાણકમ્=શ્રણનિવ્વનમ્ । 'પદ્માપિષિ
યપ્' 'પદ્મા' इति परमवृत्तगवाचो देशोक्तम् । 'पिषिप' इति कुक्षितम्-
परवनस्य या कुक्षिता त्वय ताभ्यो निव्वन्नम् । तथा-सूजकुक्षितरवङ्मयम्,
इति ॥ सू० ६ ॥

નિર્ગન્યાનો યથાવસ્થ રમોહરણ ચ ધર્મોપકરણં મરતિ સયૈવ તદતિરિક્તાનિ
કાયાદીંયપિ તેનાં ધર્મોપકરણાનિ મરતીતિ સાધાહ—

મૂતમ્—ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ ણિસ્સાઠાણા પપ્પણ્ણત્તા, ત
જહા—છક્કાપ ૧ મળે ૨ રાયા ૩ ગિડ્વર્ઘ ૪ સરીર ૫ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

છાયા—ધર્મ ચરતા પચ્ચ નિમાસ્થાનાનિ મમ્મસાનિ, તથાયા—પદ્કાપો ૧ મળો
૨ રાજા ૩ સુદ્ધવતિઃ ૪ સરીરમ્ ૫ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

રાજના ઓર જનકાહી આસેચન કરના કલ્પિત કહા ગયા હૈ, જો રજો
હરણ મેયકે સોમોસે યના હોતાહૈ, યહ ઔર્ણિક રજોહરણ હૈ ૧ ઉદ્ધિકે
રોમોસે જો રજોહરણ યના હોના હૈ યહ ઔદ્ધિક રજોહરણ હૈ ૨, જો
રજોહરણ જાળકે મુઝસે યનો હોતા હૈ, યહ શ્રાણક રજોહરણ હૈ ૩,
“પદ્માપિષ્વિષયપ્” યહાં “પદ્મા” યહ શબ્દ વલ્લજ જુગલા યાચક
હૈ, ઓર દેશીય હૈ તાત્પર્ય યહ હૈ કિ જો રજોહરણ વલ્લજવતી કુક્ષિત
છાલસે યનાયા જાતા હૈ યહ વાલ્લજ રજોહરણ હૈ ૪ ઓર જો મૂજકી
ફૂટી હુઈ છાલકા યના હોના હૈ યહ મૌજિક રજોહરણ હૈ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

જિસ પ્રકાર નિર્ગ-ધોંગા ચરણ ઓર રજોહરણ ધર્મોપકરણ હોતા હૈ
જસી પ્રગ્ગરસે જનસે અતિરિક્ત જો ડનકે જાપ આદિ હૈ યે બી ડનકે
ધર્મોપકરણ હૈ હત વાતકો મમ મુઝકાર કહતે હૈ—

ઉ—(૧) ઘેટાની રવાટીમાંથી બનાવેલો ‘ઔર્ણિક રજોહરણ’ (૨) ઘેટાની
રવાટીમાંથી બનાવેલો ‘ઔદ્ધિક રજોહરણ’ (૩) શબ્દના રેશામાંથી બનાવેલો
‘શ્રાણક રજોહરણ’ (૪) “પદ્માપિષ્વિષયપ્” અર્થે ‘પદ્મા’ આ ૫૪
અક્ષરો વૃણ્ણ વાચક હો અક્ષર નામની વનસ્પતિની છાલને ફૂટી ફૂટીને જે
રજોહરણ બનાવવામાં આવે છે તેને બાકરજ રજોહરણ કહે છે (૫)
મુજને ફૂટી ફૂટીને જે રજોહરણ બનાવવામાં આવે છે તેને મૌજિક રજોહરણ
કહે છે ॥ સૂ ૬ ॥

જેમ વચ્ચે રજોહરણ આદિ નિશ યોના ધર્મોપકરણ હોય છે, જે જ
પ્રમાણે તે સિવાયના તમના ૭ કાય આદિ છે તે વચ્ચે તેમના ધર્મોપકરણ
હો જે જ વાત મુઝકાર કહે પ્રાદ કહે છે

ટીકા—‘ ધમ્મં ચરમાણસ્સ ’ ઇત્યાદિ—

ધર્મ=શ્રુતચારિત્રરૂપ ચરમા=અસેવનસ્ય પંચ નિશ્ચરથામાનિ=આલમ્બન-સ્થાનાનિ ધર્મોપગ્રહકારણાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તાન્દેવ’હ-નણથા—પટ્કાય -પટ્કીવનિકાયઃ, સંયમોપકારકત્વ શાસ્ત્રે પ્રસિદ્ધં, તથાપિ કિશ્ચિદ્દર્શ્યતે-પૃથિવીકાયસ્ય સંયમોપકારકત્વં સ્થાનનિષીદન ત્વગ્વર્તનાદિના ૧। અપ્કાયસ્ય ધારનાદિજલપાનાદિના ૨। તેજસ્કાયસ્ય વાયુપ્રકોપાદૌ તપ્તેષ્ટિકા તાપિકાદિના ૩। વાયુકાયસ્ય શ્વાસોન્ધ્યા-

‘ ધમ્મં ચરમાણસ્સ પંચ નિસ્સા ઠાણા પળગત્તા ’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૭ ॥

ટીકાર્થ-શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મમાં આસેવન કરનેવાલે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થોકે ધર્મોપગ્રહમાં કારણભૂત પાંચ સ્થાન કહે ગયેહું, જૈસે-પટ્કીવનિકાયરૂપ પટ્કાય ૧. યહ સંયમકા ઉપકારક હોતા હૈ, યહ બાન યદ્યપિ શાસ્ત્રમં પ્રસિદ્ધ હૈ, તથા બી યહાં ઉસે પ્રકટ ક્રિયા જાના હૈ-પૃથિવીકાયિક એક સ્થાન પર બેઠનેમં ઓર પાર્શ્વ આદિ પરિવર્તન કરનેમં સહાયક હોનેકે કારણ સંયમકા ઉપકારક હોતા હૈ, અર્થાત્ પૃથિવી પર સયમી જીવ એક સ્થાન પર બેઠતા હૈ, ઉસ પર અપને પાર્શ્વભાગ આદિકો ચડ-લતા હૈ, ઇસ તરહ પૃથિવીકાયિક જીવ અપને ઉપર સ્થાન આદિ દેને રૂપસે સંયમકે પાલન કરાનેમં ઉપકારક હોતા હૈ । અપ્કાય પાન આદિ ક્રિયા દ્વારા સંયમકા ઉપકારક હોતા હૈ, તેજસ્કાયિક વાયુપ્રકોપ આદિ કે હોને પર તત્ત ઈંદ્રસે સેંક આદિ કરાનેરૂપસે સંયમકા ઉપકારક હોતા

“ ધમ્મં ચરમાણસ્સ પંચ નિસ્સા ઠાણા પળગત્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-શ્રુતચારિત્ર ૩૧ ધર્મની આરાધના કરનારા શ્રમણ નિર્ગ્રન્થોના ધર્મોપ-ગ્રહમાં કારણભૂત નીચે પ્રમાણે પાંચ સ્થાન કહ્યા છે—

(૧) પટ્કીવનિકાય રૂપ છકાય—તેઓ સંયમમાં ઉપકારક થઈ પડે છે, તે વાત તો શાસ્ત્રોમા પ્રસિદ્ધ છે તેઓ કેવી રીતે સયમમાં ઉપકારક થાય છે તે હવે પ્રકટ કરવામાં આવે છે—પૃથ્વીકાયિક જીવો એક સ્થાન પર બેસવામાં અને પડખુ ફેરવવા અદિમા સહાયક હોવાને લીધે સંયમની આરાધનામા ઉપકારક થઈ પડે છે એટલે કે સયમી જીવ એક સ્થાન પર બેસે છે અથવા તે સ્થાન પર પોતાના પાર્શ્વભાગ આદિને બદલે છે તે સ્થાન પૃથ્વીકાય રૂપ જ હોય છે આ રીતે પૃથ્વીકાયિક જીવ પોતાની ઉપર બેસવા, ઊઠવા આદિ રૂપ સ્થાન આપીને સયમના પાલનમાં સહાયક અને છે અપ્કાય પાન (પીવાની ક્રિયા) આદિ દ્વારા સયમના પાલનમા ઉપકારક અને છે, વાયુને પ્રકોપ થાય ત્યારે તત્ત ઈંદ્ર વડે સેંક આદિ કરાવવામા તેજસ્કાયિક ઉપકારક

સાદિના ॥ ઘનસ્પતિકાપસ્વ પાત્રપીઠફલકૌપધમૈપજ્યાદિના ૫। ધમકાપસ્વ
કમ્બલરજાદરણાદિના મુનેઃ સયમોપકારકત્વમિતિ મયમનિધાસ્થાનમ્ ૧। તથા
ગણઃ-ગચ્છોઽપિ ધર્મોપગ્રાહકઃ । ટદુકમ્—

“ ગુરુપરિચારો ગચ્છો, સત્ય નસંતાળ નિઝરા ચિત્તમા ।

વિનયાઽ સદ્ધા સારણ, માદ્દિં ન દોત પઠિવચી । ૧ ॥

અસોદાયેવભાષ, ઓયમ્મિ ઘર્મિ ઘર્મિ વ્યદ્ધો ।

નિયમણ ગચ્છવાસી, અસગપયતાદગો યેમો ॥ ૨ ॥ ”

છાયા—ગુરુપરિચારો ગચ્છ, તમ પસર્તા નિજરા ચિત્તમા ।

વિનયાતથા સારણાદિભિર્ન દોષવતિપધિઃ ॥ ૧ ॥

અયોપાપેસયા યોગે સપ્ત સપ્ત વર્ષટન્ ।

નિયમેન ગચ્છવાસી અસદ્ગત્ સાવકાગ્રેયઃ ॥ ૨ ॥

હૈ । વાયુકાય શ્વાસોચ્છ્વાસ રૂપસં મહાપક હોનેસ સયમકા ઉપકારક
હોતા હૈ, ઔર ઘનસ્પતિકાય પાત્ર પીઠ, ફલક આદિ રૂપસં એવં ઔપધિ
આદિ રૂપસં સંયમકા ઉપકારક હોતા હૈ । તથા ધ્રુવકાય સયમકે ઉપ
કારક જો કમ્બલ રજોદરણ આદિ હૈં उनके રૂપસં મયમકા ઉપકારક
હોતા હૈ । इस प्रकारका यह प्रथम निभास्थान है, तथा गणगच्छ भी धर्मो
पग्राहक होता है । कहा भी है— ‘ गुरु परिवारोगच्छो ’ इत्यादि ।

ગુરુ પરિચારકા નામ ગચ્છ હૈ, હમ ગચ્છમેં રહનેવાલે મુનિજનોંકિ
કર્મોંકા વિનય એવં સારણ આદિસે નિર્જરા અધિક હોતી હૈ, તથા ઘસમેં
રહનેવાલોંકિ ચારિત્રમેં અતિચાર આદિરૂપ દોષ ઓ નહીં લગતે હૈ ।
અ-ય અન્યકી અપેક્ષાસે ઘસ ઘસ યોગમેં વિદાર કરતા દુઝા સાધુ

અહ પટે છે વાયુકાયિક શ્વાસોચ્છ્વાસની ક્રિયામાં સદાયક બનીને સંયમપાત્ર
નામાં સદાયભૂત બને છે ઘનસ્પતિકાયિક પાત્ર ફલક, પીઠ આદિ ઉપકારકો
રૂપે તથા ઔપધિ આદિ રૂપે સંયમના પાલનમાં ઉપકારક બને છે ધ્રુવકાયની
રુચાટીમાંથી સંયમીના વચ્ચ, રજોદરણ આદિ બને છે, તેથી તેઓ સંયમમાં
ઉપકારક બને છે આ પ્રકારેનું આ પ્રથમ નિભાસ્થાન સમજવું

(૨) અણ અથવા અગ્નિ સધુનુ બીજુ નિધાસ્થાન છે કહું પણ છે કે
“ ગુરુપરિચારો ગચ્છો ” ઇત્યાદિ—એક જ ગુરુના પરિચારને અગ્નિ કહે છે
એવા અગ્નિમાં રહેનારા સાધુ દ્વારા વિનય બને સારણ આદિ પટે કર્મોંની
નિર્જરા અધિક માત્ર છે વળી અગ્નિમાં રહેનારા સાધુઓના ચારિત્રમાં અતિ
આર આદિ રૂપ દોષો લાગવાનો સંભવ પણ ઓછો રહે છે અન્ય અન્યની

યોગઃ—કુશલમનોવાકાયોદીરણલક્ષણઃ । અસદ્ગઃ=મોક્ષઃ । ઇતિ દ્વિતીયં નિશ્રાસ્થાનમ્ ૨ ।

તથા—રાજાડપિ ધર્મોપપ્રાપ્તકો ભવતિ, દુષ્ટકૃતોપદ્રવતઃ સાધૂનાં રક્ષણાત્ ।
ઉક્તં ચાત્ર—

“ જિણુત્તં પરમં ધમ્મં, પાલિજ્જાસુ કહં જણા ? ।

સિયા ણો ધમ્મિઓ રાયા, તેયંસી પુહવીતલે ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—જિનોક્તં પરમ ધર્મ, પાલયેયુઃ કયં જનાઃ ।

સ્યાત્ નો ધાર્મિકો રાજા, તેજસ્વી પૃથિવીતલે ॥૧॥ ”

અન્યતીર્થિકૈરપ્યુક્તમ્—

“ સુદ્રલોકાકુલે લોકે, ધર્મં કુર્યુઃ કથં હિ તે ।

ક્ષાન્તા દાન્તા અહન્તારથેદ્રાજા તાત્ર રક્ષતિ ॥ ૧ ॥

ગચ્છવાસી સંયમી નિયમસે અસદ્ગ પદકા સાધક હોતા હૈ, એસા જાનના ચાહિયે ૨ । ધાર્મિક ક્રિયાઓંમેં કુશલ મન વચન ઔર કાયકા વના રહના યહ યહાં યોગ શબ્દસે લિયા ગયા હૈ । અથવા સર્વદા મન વચન ઔર કાયકી શુદ્ધિકા વના રહના યહ યોગ શબ્દસે ગૃહીત હુઆ હૈ । અસદ્ગ શબ્દકા અર્થ મોક્ષ હૈ । ઇસ પ્રકારકા યહ દ્વિતીય નિશ્રાસ્થાન હૈ ૨ । તથા રાજા મી ધર્મોપકારક હોતા હૈ, ક્યોંકિ વહ દુષ્ટજનકૃત ઉપદ્રવસે સાધુઓંકી રક્ષા કરના હૈ । કહા મી હૈ—

“ જિણુત્તં પરમં ધમ્મં ” ઇત્યાદિ ।

ઇસ મૂમળલ પર યદિ તેજસ્વી રાજા ન હો તો મનુષ્ય જિનોક્ત ધર્મકી આરાધના કૈસે કર સકતે હૈં । અન્ય તીર્થિકોંને મી એસા કહા

અપેક્ષાએ તે તે યોગમા વિચરતો ગચ્છવાસી સંયમી સાધુ નિયમથી જ અસંગ (મોક્ષ) પદનો સાધક બને છે

ધાર્મિક ક્રિયાઓમાં મન, વચન અને કાયને પ્રવૃત્ત કર્યા જ કરવા તેનું નામ યોગ છે. અથવા મન, વચન અને કાયને સર્વદા શુદ્ધ રાખવા તેનું નામ યોગ છે. ‘ અસંગ ’ એટલે ‘ મોક્ષ ’. આ પ્રકારનું આ બીજું નિશ્રાસ્થાન છે

(૩) રાજા પણ સાધુઓને ધર્મસાધનામા ઉપકારક થઈ શકે છે. કારણ કે દુષ્ટ લોકો દ્વારા કરાતા ઉપદ્રવોથી તે સાધુઓની રક્ષા કરે છે.

કહ્યું પણ છે કે “ જિણુત્તં પરમં ધમ્મં ” ઇત્યાદિ—

આ પૃથ્વી પર જો રાજા ન હોત તો મનુષ્ય જિનોક્ત ધર્મનો આરાધના કેવી રીતે કરી શકત । અન્ય મતવાદીઓએ પણ એવું જ કહ્યું છે કે

અરાજકે દિ શાકેડસ્મિન, મર્વનો વિદ્મન મયાત્ ।

રસાર્થમસ્ય મર્વસ્ય, રામાનમમ્વત્ન પ્રમુઃ ॥ ૨ ॥ ઇતિ । ઇતિ વ્તોયં નિમા
સ્થાનમ્ ૬ ।

તથા-ગૃહપતિ = ગૃહાશાપતી મર્વોનપ્રદાકારકો મરતિ આરાસશાપકત્વેન
તસ્થાપિ તથાસ્થાત્ । શુદ્ધમ્—

“ ધૃતિર્મતિર્ગતિસ્તેન, દશા દત્તં સુખ તથા ।

શુભિમ્પ્રિયઃ સાધુમુષ્ણધ્વો, યનં વાસ સમર્પિત ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

તથા—“ જો દેહ ઉચસ્મયં મદ્વરાણત્ત ણિયમમોગજુષાણં ।

તેગ દિશ્વા શત્પમરાગમયમાસગભિગ્થ્વા ॥ ૧ ॥ ”

હૈ—“ છુદ્ધ લોકાકુલે લોકે ” ઇત્યાદિ ।

છુદ્ધલોકોં સે યુક્ત હમ લોકમ્મેં મગર જાંન દાંતિ વ્યાલુ કી રમ્પા
રાત્રા નહાં કર તો ધર્મ કો રક્ષા કસે ક્રિયા જાય ।

હન દોનોં શ્લોકોંકા અર્થ સ્પષ્ટ હૈ । હમ મકારકા વહ તુતીય સ્થાન
હૈ અતુર્ય નિધાસ્થાન ગૃહપતિ હૈ, ય્યોંકિ ગૃહપતિ શાસ્ત્રાશાપક હોતા હૈ,
અત વહ ધર્માવકારક હોતા હૈ, હસન્ધિયે નિયાસશાપક હોનેસે વહ બી
નિધાસ્થાન હૈ । કહા બી હૈ—“ ધૃતિર્મતિર્ગતિસ્તેન ” ઇત્યાદિ ।

જિન્મને સાધુજનોંકે લિપે ધામ પ્રદાન ક્રિયા હૈ ઘસને વનકે લિપે
ધૃતિ મતિ જ્ઞાન મૌર ગતિ પ્રદાન કી હૈ, તથા સુખ દિયા હૈ । તથા—
“ જો દેહ ઉચસ્મયં ” ઇત્યાદિ ।

જો તપ નિવમ, યોગ યુક્ત સાધુજનોંકે લિપે વવામ્રવ દેતા હૈ, વહ
વનકે લિપે શાવત્ર, આમન, ષસ્ટ્ર, અસ, પાન આદિ સવ કુલ દિયા

“ શુ લોકાકુલે લોકે ” ઇત્યાદિ આ બન્ને શ્લોકોના અર્થ સ્પષ્ટ છે—

(૪) સાધુઓનુ યોગુ નિધાસ્થાન ગૃહપતિ (ગૃહસ્થ) છે કારણ કે
ગૃહપતિ સમ્માદાયક હોય છે આ રીતે સાધુને નિવાસસ્થાન આપનાર હોવાને
કારણે તેને પણ નિધાસ્થાન રૂપ પ્રકર કરવ.ર્થ આવેલ છે

કશુ પણ છે કે ‘ ધૃતિર્મતિર્ગતિસ્તેન ’ ઇત્યાદિ—

તેણે સાધુને નિવસસ્થાન પ્રદાન કશુ છે તેણે તેમને ધૃતિ મતિ,
જ્ઞાન અને ગતિ પ્રદાન કરી છે તથા તેમને સુખ આપ્યુ છે તથા ‘ જો દેહ
ઉચસ્મયં ’ ઇત્યાદિ—તે તપ નિવમ અને યોગયુક્ત સાધુઓને ઉપદેશ આપે
છે, તેણે તેમને શવન, આસન, વજ્ર અત પાણિ આદિ સઘન આપ્યુ જ
છે, યોગ સમજવુ આ પ્રકારનુ આ યોગુ નિધાસ્થાન છે

છાયા—યો દદાત્યુતાથયં યત્તિવરેભ્યસ્તાતો નિયમયોગયુક્તેભ્યઃ ।

તેન દત્તા વસ્ત્રાન્નપાનશયનાસનવિમ્લપાઃ (પ્રકારાઃ) ॥૧॥ ઇતિ ।

ઇતિ ચતુર્થ નિશ્રાસ્થાનમ્ ૪।

તથા—શરીરમપિ ધર્મોપગ્રાહકમ્ । તથા ચોક્તમ્—

“ શરીરં ધર્મસંયુક્તં, રક્ષણીયં પ્રયત્નતઃ ।

શરીરાત્ સ્રવતે ધર્મઃ, પર્વતાન્ સલિલ યથા ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

ઇતિ પચ્ચમં નિશ્રાસ્થાનમ્ ૫।

एतत्पञ्चविधनिश्रास्थानोपग्राहिका गाथा एवं निर्दिष्टा—

તથાહિ—“ ધર્મં ચરતઃ સાધોર્લોકે નિશ્રાપદાનિ પચ્ચૈવ ।

રાજા ગૃહપતિરપરઃ, પટ્ટકાયા ગણશરીરે ચ ॥૧॥ ઇતિ । ” ॥મૂ ૦૭॥

સમજના યાહિયે હસ પ્રકારકા યહ ચોથા નિશ્રાસ્થાન હૈ । તથા પાંચવાં નિશ્રાસ્થાન ધર્મોપગ્રાહક શરીર ખી હૈ । કહા ખી હૈ—

“ શરીરં ધર્મસંયુક્તં ” ઇત્યાદિ ।

ધર્મસંયુક્ત શરીરકી ઘડી સાવધાનીકે સાથ રક્ષા કરની યાહિયે કયોંકિ જિસ પ્રકાર પર્વતસે પાની ધ્રરતા હૈ, ડસી પ્રકાર શરીરસે ધર્મરૂપ પાની ધ્રરતા હૈ ।

इन पांच प्रकारके निश्रास्थानोंमें धर्मोपग्राहिकता प्रकट करनेवाली एक यह गाथा भी है—“ धर्म चरतः साधोर्लोके ” इत्यादि ।

ધર્મકા આચરણ કરનેવાલે સાધુકે નિશ્રાપદ પાંચહી હોતે હૈ । એક પટ્ટકાયા દૂસરા ગણ તોસરા રાજા ચોથા ગૃહપતિ ઓર પાંચવાં શરીરહૈ ૭॥

(૫) સાધુઓનું પાત્રમુ નિશ્રાસ્થાન ધર્મોપગ્રાહક શરીર છે કહ્યું પણ છે કે “ શરીરં ધર્મસંયુક્તં ” ઇત્યાદિ—ધર્મસંયુક્ત શરીરની ઘણી સાવધાની પૂર્વક રક્ષા કરવી જોઈએ, કાગળ કે જેમ પર્વતપરથી પાણી ઝરે છે એ જ પ્રમાણે શરીરમાથી ધર્મરૂપી પાણી ઝરે છે.

આ પણ પ્રકારના સ્થાનોમા ધર્મોપગ્રાહિકતા પ્રકટ કરનારી એક ગાથા નીચે પ્રમાણે છે. “ ધમ ચરત સાધોર્લોકે ” ઇત્યાદિ—

ધર્મની આરાધના કરતા સાધુઓને માટે રાજા, ગૃહપતિ, છકાયના છુવો, ગણ અને શરીર એ પાત્ર જ નિશ્રાસ્થાનો છે ॥ સૂ. ૭ ॥

સાધુ સમ્બંધીનિ પદ્મ નિશાસ્થાનાન્યુત્તરા સમ્પતિ નિષિક્ષણાણિ લૌકિકાણિ
પદ્મ નિશાસ્થાનાન્યાહ—

મૂલમ્—પંચ ગિહી પળ્લવતા, ત જહા—પુત્રગિહી ૧ મિત્ર
ગિહી ૨ સિપ્પગિહી ૩ ધનગિહી ૪ ધનગિહી ૫ ॥ સૂ. ૮ ॥

છાયા—પદ્મ નિષયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ તથા—પુત્રનિધિઃ ૧ મિત્રનિધિ ૨ શિલ્પ
નિધિ ૩, ધનનિધિ ૪, ખાન્યનિધિ ૫ ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા—‘પર ગિહી’ इत्यादि—

નિષયઃ પદ્મસમ્યક્તા મજ્ઞતાઃ, ટાનેવાહ—તથા—પુત્રનિધિઃ—‘નિષય’ કીયતે=
સ્થાપ્યતે યત્ર ય નિધિ=વિશિષ્ટરત્ન સુવર્ણાદિ દ્રવ્યમાજન, નિધિરિવ નિધિઃ,
પુત્રપ્રાસો નિધિશ્ચેતિ । ધનોર્વાર્જનેન માતાપિત્રોઃ પરિપોષકતયા પુત્રસ્ય નિધિ
ત્વમ્ । અથ એવ પુત્રમુલ્લાભકોરુને વિપ્રોરાનમ્બનનકં મયતિ । સુદુક્ષમ્—

“જન્માન્તરફલ પુણ્ય, તપોદાનસમુદ્ભવમ્ ।

સન્તતિઃ મુદ્ધવંડયા દિ પરજેદ ચ શર્મણે ॥ ૧ ॥ इति ॥

इति मयमो निधिः १।

इस प्रकारसे साधु संपत्ती पांच निशास्थानोंको कह कर अब
सूत्रकार निधिरूप लौकिक पांच निशास्थानोंका कथन करते हैं—

‘पंच गिही पल्लवता’ इत्यादि सूत्र ८ ॥

નિધિ પાંચ કહી ગઈ છે—એસે—પુત્રનિધિ ૧ મિત્રનિધિ ૨ શિલ્પ
નિધિ ૩ ધનનિધિ ૪ ઓર ખાન્યનિધિ ૫ ।

વિશિષ્ટ રત્ન સુવર્ણાદિ દ્રવ્યકા જો માજન હોતા હૈ, વહ નિધિ
હૈ, પુત્રસ્વ જો નિધિ હૈ, વહ પુત્રનિધિ હૈ પુત્રકો જો નિધિરૂપ કહા ગયા
હૈ, સમસ્ત કારણ ધનોર્વાર્જન દ્વારા માતાપિતાકા પરિપોષક હોનેસે કહા
ગયા હૈ, હસીલિયે પુત્રકે સુખકા અબલેકન માતાપિતાકો આનન્દકા
જનક હોતા હૈ । કહા ઓ હૈ—“જન્માન્તરં ફલ પુણ્ય” इत्यादि ।

આ રીતે સાધુએના પાંચ નિશાસ્થાનો પ્રવટ કરીને હવે સૂત્રકાર નિધિ
રૂપ પાંચ લૌકિક નિશાસ્થાનેનું નિરૂપણ કરે છે

‘પંચ ગિહી પલ્લવતા’ इत्यादि पांच प्रकारના નિધિ કહ્યા છે—(૧) પુત્રનિધિ,
(૨) મિત્રનિધિ (૩) શિલ્પનિધિ (૪) ધનનિધિ અને (૫) ખાન્યનિધિ.

વિશિષ્ટ રત્ન સુવર્ણાદિના ભક્ષણે નિધિ કહે છે પુત્ર રૂપ બે નિધિ
છે તેને પુત્રનિધિ કહે છે પુત્રને નિધિરૂપ કહેવાનું કારણ બે છે કે તે ધનો
પાલન કરીને માતાપિતાનું પાલન પોષણ કરે છે તેથી જ પુત્રનું ઇશન અથવા
પુત્રપ્રાપ્તિ માતાપિતાને માટે આનન્દજનક થઈ પડે છે કહ્યું પણ છે કે

“જન્માન્તર ફલ પુણ્ય” इत्यादि—

તથા-મિત્રનિધિઃ-મેઘતિ=સ્નિહ્યતીતિ મિત્રં=સુહૃન્, તત્તતનિધિશ્ચેતિ । અર્થાદિ-
સાધને સાહાય્યકરણેન મિત્રસ્યાનન્દજનકત્વાત્ નિધિત્વમ્ । તદુક્તમ્—

“કુતસ્તસ્યાસ્તુ રાજ્યશ્રીઃ, કુતસ્તસ્ય મૃગેક્ષણાઃ ।

યસ્ય શૂરં વિનીતં ચ, નાસ્તિ મિત્રં વિચક્ષણમ્: ” ॥ ૧ ॥ इति ।

इति द्वितीयो निधिः २।

તથા-શિલ્પનિધિઃ-શિલ્પ=ચિત્રાદિવિજ્ઞાનં, તદેવ નિધિઃ-શિલ્પ-નિધિઃ ।
શિલ્પં ચ વિદ્યાયા ઉપલક્ષણમ્ । તેન વિદ્યાપિ નિધિરિવ પુરુષાર્થસાધકત્વાદ્ વોદ્યા ।

તપ ઔર દાનરો ઉત્પન્ન હુઆ પુણ્ય પરલોકમેં જીવોંકો સુખ દેને-
વાલા હોતા હૈ, પરન્તુ શુદ્ધવંશમેં ઉત્પન્ન હુઈ સંતતિ પરલોક એવં હહ
લોક દોનોં લોકોંમેં આનન્દ દેનેવાલી હોતી હૈ ।

इस प्रकारकी यह पुत्ररूप निधि पहिली लौकिक निधि है । जो
स्नेह करता है, वह मित्र सुहृत् है । सुहृत् रूप जो निधि है, वह सुहृत्
निधि है । मित्रको जो निधिरूप कहा गया है, उसका कारण यह है,
कि वह अर्थादिके साधनमें सहायता करनेसे आनन्दजनक होता है ।
कहा भी है-“ कुतस्तस्यास्तु राज्यश्रीः ” इत्यादि ।

जिसको शूर विनीत एवं विचक्षण मित्र नहीं है, उसको कहाँसे
तो राज्यश्री हो सकती है, और कहाँसे मृगेक्षणा-मृगके जैसी नेत्र-
वाली प्राणप्यारी हो सकती है । इस प्रकारकी यह द्वितीय निधि है ।

चित्रादिके विज्ञानका नाम शिल्प है, यह शिल्परूप जो निधि है,
वह शिल्पनिधि है । शिल्प यह विद्याका उपलक्षण है, इससे पुरुषा

તપ અને દાન કરવાથી પ્રાપ્ત થતુ પુણ્ય તો જીવને પરલોકમાં જ સુખ-
દાયી થાય છે, પણ સુપુત્ર તો આલોક અને પરલોક રૂપ બંને લોકમાં
સુખદાયક થઈ પડે છે આ પ્રકારના આ પુત્રરૂપ નિધિને પહેલો લૌકિક નિધિ-
કહ્યો છે. (૨) મિત્રને ધીજી લૌકિક નિવિરૂપ કહ્યો છે જે સ્નેહ કરે છે તે
મિત્ર-સુહૃત્ છે. એવા મિત્રરૂપ નિધિને મિત્રનિધિ અથવા સુહૃત્નિધિ કહે છે
મિત્રને નિધિરૂપ કહેવાનું કારણ એ છે કે તે અર્થાદિની પ્રાપ્તિમાં સહાયક
બનતો હોવાથી આનંદદાયક થઈ પડે છે કહ્યું પણ છે કે

“કુતસ્તસ્યાસ્તુ રાજ્યશ્રી ” ઇત્યાદિ—

જેને શૂર, વિનીત અને વિચક્ષણ મિત્ર હોતો નથી તેને રાજ્યશ્રીની
પ્રાપ્તિ કેવી રીતે થઈ શકે અને મૃગના જેવા નયનવાળી પ્રાણપ્યારી પણ
કેવી રીતે સહન શકે ! આ પ્રકારનો આ ધીજી લૌકિકનિધિ કહ્યો છે
(૩) શિલ્પનિધિ—ચિત્રાદિના જ્ઞાનનું નામ શિલ્પ છે આ પ્રકારના શિલ્પરૂપ
જે નિધિ છે તેને શિલ્પનિધિ કહે છે, ‘શિલ્પ’ પદ વિદ્યાનું ઉપલક્ષણ

સાધુ સમ્વન્ત્રીનિ પદ્ય નિધાસ્થાનાન્યુત્તર સમ્પતિ નિષિકરુણાણિ લૌકિકાણિ
પદ્ય નિધાસ્થાનાન્યાહ—

મૂલપ્—પદ્ય ગિહી પળગણા, ત જહા-પુત્રગિહી ૧ મિત્ર
ગિહી ૨ સિપ્પગિહી ૩ ઘણગિહી ૪ ઘણગિહી ૫ ॥ સૂ. ૮ ॥

છાપા-પદ્ય નિધયઃ મહત્તાઃ સઘપા-પુત્રનિધિઃ ૧ મિત્રનિધિ ૨ શિલ્પ
નિધિઃ ૩, ઘનનિધિઃ ૪, માન્યનિધિ ૫ ॥ સૂ. ૮ ॥

દીકા—' પદ્ય ગિહી ' રૂપાદિ—

નિધયઃ પદ્યસંલગ્ના મહત્તાઃ, સાનેવાહ-સઘપા-પુત્રનિધિ - િતાં ખોપતે=
સ્યાપ્યત યદ્ય ય નિધિ =વિશિષ્ટરત્ન સુવર્ણાદિ દ્રવ્યમામન, નિધિરિષ નિધિઃ,
પુત્રધાસૌ નિધિશ્ચેતિ । ધનોવાર્જનમેન માતાપિત્રોઃ પરિપોષકત્વયા પુત્રસ્ય નિધિ
ત્વમ્ । અતઃ એવ પુત્રમુલ્લાસચ્છેદનં વિધોરાનન્દનનકં મશતિ । સુત્કમ્—

“ જામાન્તરફલે પુણ્ય, સપોદાનસમુદ્ભવમ્ ।

સન્તતિઃ શુદ્ધવદ્વયા દિ પરત્રેહ વ શર્પયે ॥ ૧ ॥ રૂપિ ॥

રૂપિ મયમો નિધિ ૧ ।

હસ પ્રકારસે સાધુ સંપદી પાંચ નિધાસ્થાનોનો કહ કર અવ
સુપ્રકાર નિષિકરુણા લૌકિક પાંચ નિધાસ્થાનોનો કથન કરતે હૈ—

'પદ્ય ગિહી પળગણા' રૂપાદિ સૂત્ર ૮ ॥

નિધિ પાંચ કહી ગઈ હૈ—જેસે-પુત્રનિધિ ૧ મિત્રનિધિ ૨ શિલ્પ
નિધિ ૩ ઘનનિધિ ૪ ઓર માન્યનિધિ ૫ ।

વિશિષ્ટ રત્ન સુવર્ણાદિ દ્રવ્યકા જો મામન હોતા હૈ, વહ નિધિ
હૈ, પુત્રસ્ય જો નિધિ હૈ, વહ પુત્રનિધિ હૈ પુત્રનો જો નિધિકરુણા કહા ગયા
હૈ, ઝમકા કારણ ધનોવાર્જન મારા માતાપિતાનો પરિપોષક હોનેસે કહા
ગયા હૈ, હસીલિયે પુત્રને સુખવા અશ્વલોકન માતાપિતાનો આનન્દના
જનક હોતા હૈ । કહા ઓ હૈ—“ જામાન્તર ફલ પુણ્ય ” રૂપાદિ ।

આ રીતે સાધુઓના પાંચ નિધાસ્થાનો મહત્ કરીને હવે સુપ્રકાર નિધિ
૩૫ પાંચ લૌકિક નિધાસ્થાનોનું નિરૂપણ કરે છે

પદ્ય ગિહી પળગણા ' રૂપાદિ પાંચ મહત્તાના નિધિ કહ્યા છે—(૧) પુત્રનિધિ,

(૨) મિત્રનિધિ (૩) શિલ્પનિધિ (૪) ધનનિધિ અને (૫) માન્યનિધિ.

વિશિષ્ટ રત્ન સુવર્ણાદિના અશ્વલોકને નિધિ કહે છે પુત્ર ૩૫ ને નિધિ
છે તેને પુત્રનિધિ કહે છે પુત્રને નિધિકરુણા કરેલાનું કારણ એ છે કે તે ધનો
પામન કરીને માતાપિતાનું પાલન પોષણ કરે છે તેથી જ પુત્રનું રક્ષણ અથવા
પુત્રશાંતિ માતાપિતાને માટે આનન્દજનક થઈ પડે છે કહ્યું પણ છે કે

“ જામાન્તર ફલ પુણ્ય ” રૂપાદિ—

ટીકા—‘ સોષ ’ ઇત્યાદિ—

શુચિઃ=શુદ્ધિઃ સૈવ શૌચમ્ । તત્ત્વં વ્યત્ત ચતુર્વિધં ભાગત્ એકવિધમ્ । પૃથ્વી-વિધમપીદં શૌચં તત્ત્વનામ્ના વ્યપદિશતિ, તથા—પૃથ્વીશૌચમ્-પૃથ્વીવ્યાપ્તિ-કયા શૌચ શુદ્ધિઃ-શરીરાદિષુ મૃત્તિકાયા ઘર્ષણાપલેખનેન તત્ત્વ મલદુર્ગન્ધદૂરીકરણમિત્યર્થઃ । ઇતિ પ્રથમં શૌચમ્ । તથા=અપૂશૌચમ્-અદ્ધિઃ=જલૈઃ શૌચમ્=પ્રક્ષાલનમ્ ૨ । તેજઃ શૌચમ્-તેજસા=અગ્નિના તદ્વિકારેણ મસ્મના વા શૌચમ્ ૩ । મન્ત્ર શૌચમ્-મન્ત્રેણ=શુચિવિધયા શૌચમ્ ૪ । તથા-પશ્ચમ બ્રહ્મશૌચમ્-બ્રહ્મ-બ્રહ્મચર્યાદિ કુશલાનુષ્ઠાનં, તદેવ શૌચં બ્રહ્મશૌચમ્ । અનેન સત્યશૌચં તપઃ શૌચમ્ । ઇન્દ્રિયનિગ્રહશૌચ સર્વભૂતદયાશૌચમ્ ચેતિ ચતુર્વિધમપિ શૌચં ગૃહીતમ્—

સોષ પંચવિદે પળ્લત્તે’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧ ॥

ટીકાર્થ-શૌચ પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે-પૃથ્વી શૌચ ૧ અપૂશૌચ ૨ તેજઃ શૌચ ૩ મન્ત્ર શૌચ ૪ ઔર બ્રહ્મચર્ય શૌચ ૫ શુદ્ધિકા નામ શૌચ હૈ, યહ દ્રવ્યકી અપેક્ષા ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, ઔર ભાવકી અપેક્ષા એક પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, પાંચ પ્રકારકે મી હમ્ શૌચકો સૂત્રકારને ઉસ ૨ નામસે કહો હૈ, જૈસે પૃથ્વીશૌચ આદિ-મૃત્તિકા દ્વારા જો શુદ્ધિ કી જાતી હૈ વહ પૃથ્વીશૌચ હૈ, મિટીસે હાથોકો ધોના શરીર પર મિટી લગાના ઇત્યાદિ લૌકિક ક્રિયાઈ હમ્ પૃથ્વી શૌચમે આ જાતી હૈ । જલસે શુદ્ધિ કરના યહ અપૂશૌચ હૈ । તેજ અગ્નિસે યા રાગ્વસે શુદ્ધિ કરના યહ તેજઃ શૌચ હૈ મન્ત્ર સે શુચિ વિદ્યાસે જો શુદ્ધિ કરતા હૈ યહ મન્ત્ર શૌચ હૈ, બ્રહ્મચર્ય આદિ કુશલ અનુષ્ઠાન કરના યહ બ્રહ્મશૌચ હૈ । હસસે સત્યશૌચ, તપઃ શૌચ, ઇન્દ્રિય

શૌચને પ્રકટ કરે છે ‘ સોષ પંચવિદે પળ્લત્તે ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-શૌચના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પૃથ્વીશૌચ, (૨) અપૂશૌચ, (૩) તેજઃશૌચ, (૪) મન્ત્રશૌચ, અને (૫) બ્રહ્મચર્યશૌચ

શૌચ એટલે શુદ્ધિ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ શૌચના પૃથ્વીશૌચથી લઈને મન્ત્રશૌચ પર્યંતના ચાર પ્રકાર સમજવા અને ભાવની અપેક્ષાએ તેનો બ્રહ્મચર્યશૌચ નામનો એક જ પ્રકાર સમજવો

માટી દ્વારા શરીરની જે શુદ્ધિ થાય છે તેનું નામ પૃથ્વીશૌચ છે માટી વડે હાથની શુદ્ધિ કરવી, શરીર પર માટીનો લેપ કરવો આદિ લૌકિક ક્રિયાઓને આ પૃથ્વીશૌચ ક્ષેત્ર કહી શકાય છે પાણી વડે શરીર આદિની શુદ્ધિ કરવી તેનું નામ અપૂશૌચ છે પ્રકાશ, અગ્નિ અથવા રાગ વડે શુદ્ધિ કરવી તે તેજઃશૌચ છે. મન્ત્ર વડે (શુચિ વિદ્યા વડે) શુદ્ધિ કરવી તેનું નામ મન્ત્રશૌચ છે. બ્રહ્મચર્ય આદિ કુશલ અનુષ્ઠાન કરવા તેનું નામ બ્રહ્મશૌચ છે

વસ્તુત્વ—

“ વિધયા રાજપૂજ્યાઃ સ્યાત્, વિધયા સર્વાન્યતા ।

વિયા દિ સર્વલોકસ્ય, ષ્ઠીકરણકારણમ્ ” ॥ ૧ ॥ इति ।

इति द्वितीयो निधिः ३। तथा-वननिधिः=कोशः । धान्यनिधिश्च कोष्ठागारः इति चतुर्थपञ्चमी निधी । ४। ५ ॥ सू० ८ ॥

इत्य निधि पञ्चविध प्रोक्ता, स च द्रव्यत पुत्रादि, मावतस्तु कुशलानु
ष्ठानस्य ग्रन्थस्य, तद्वच शૈવત્યેન વિવક્ષન્ અપાન્યપિ શૈવાનિ પ્રાદ—

મુચ્ચ-સોણ પચત્રિહે પળણસે, ત જહા-પુઠવિસોણ ૧

આડસોણ ૨ તેડસોણ ૩ મતસોણ ૪ ઘમસોણ ॥૫॥ સૂ० ૯ ॥

છાયા-શૈવ પચ્ચવિધે પ્રજ્ઞમ્, તથા-પૃથિવોશૈવમ્, ૧ અપ્સૌષમ્ ૨,
સૈવાશૈવમ્ ૩, મન્નશૈવમ્ ૪, ઘસશૈવમ્ ૫ ॥ સૂ० ૯ ॥

ધૈયા સાધુનૈરુપ હોનેસે વિધા ષ્ઠી નિધિકી તરફ સમજની વાદિયે ।
કહા ષ્ઠી હૈ-“ વિધયા રાજપૂજ્યાઃ સ્યાત્ ” इत्यादि ।

મનુષ્ય વિધાસે રાજપૂજ્ય હો મકના હૈ, ઔર દિધાસે યહ સર્વ
માન્ય હૈ સક્તા હૈ, ક્યૌંકિ વિધા સર્વલોકકો વશમેં કરમેકા પક
થૈલીકરણ મન્ન હૈ હમ પ્રકારકા યહ તૃતીય નિધિત્યાન હૈ ।

इसी प्रकारसे कोश और धान्यागार रूप जो निधि है, वह चतुर्थ
पञ्चम निधि है ४-५ ॥ सू० ८ ॥

इस प्रकारसे पांच निधियोंका कथन किया इनमें द्रव्यरूप निधि
पुत्रादिक है और मावरूपनिधि कुशलानुष्ठानरूप शस्त्रचर्य है इसको
शૈવરૂપસે કહનેકો હજ્જાવાલે આવાર્ય મવ અપ શૌભૌકા કથન કરતેહૈ

કેવાથી તે વિધાને ૫૩ નિધિરૂપ સમજી વિશાળ પુરુષાર્થમાં સાધનરૂપ
બને ॥ ૬૫ પછી છે કે ‘ વિધયા રાજપૂજ્યાઃ સ્યાત્ ’ इत्यादि—

વિધાને કારણે મનુષ્ય શાસ્ત્ર વડે પણ પૂજ્ય છે વિધા વડે માનુષ
સમસ્ત શૈકેમાં માનનીય બને છે કારણ કે વિધા સમસ્ત મનુષ્યોને વશ
કરવામાં વર્તીકરણ મન્નની ગરજ સારે છે આ પ્રકારનો આ ત્રીજો નિધિ
શ્રમજ્ઞવેદા જોઈ પ્રમાણે કૈયા બને ધાન્યાગાર રૂપ જે કૈયા બને પાંચમો
નિધિ છે, તેને વિશે પણ સમજવું ॥ સૂ ૮ ॥

આ પ્રકારના પાંચ નિધિએનું કથન કરવામાં આ વું તેમાંથી પુત્રા
દિકને દ્રવ્ય રૂપ નિધિ સમજવા કુશલાનુષ્ઠાન રૂપ શસ્ત્રચર્યને બાવરૂપ નિધિ
શ્રમજ્ઞવે તેને શૌચ રૂપે પ્રકટ કરવાની અભિલાષવાળા સૂત્રાર કહે અન્ય

સૂર્યદૃષ્ટં તુ યદૃષ્ટં, તદિવ્યમૃપયો વિદુઃ ।

પાર્થિવં ચ મૃદા સ્નાનં, મનઃ શુદ્ધિસ્તુ માનસમ્ ॥ ૪ ॥ ” ઇતિ ॥મૂ૦૯॥

પૂર્વમુત્રે બ્રહ્મશૌચશુક્તમ્ તત્ત્વ જીવશુદ્ધિરૂપમ્ । જીવં તુ છદ્મસ્થો ન વિજા-
નાતિ કેવલી તુ વિજાનાતીતિ સમ્બન્ધાચ્છદ્મસ્થકેવલિનૌરજ્ઞેયજ્ઞેયપદાર્થાન્ પશ્ચથા
પ્રતિપાદયતિ—

મૂલમ્-પંચ ઠાળાઈં છઠમત્થે સઘ્વભાવેણં ણ જાણઈ, ણ
પાસઈ, તં જહા-ધમ્મપત્થિકાયં ૧ અધમ્મપત્થિકાયં ૨ આગાસ-
ત્થિકાયં ૩ જીવં અસરીરપડિવહ્નં ૪, પરમાણુપોગ્ગલં ૫। ઇયાણિ
ચેવ ઉપ્પન્નનાણદંસણધરે અરહા જિણે કેવલી સઘ્વભાવેણં
જાણઈ પાસઈ ધમ્મપત્થિકાયં જાવ પરમાણુપોગ્ગલં ॥સૂ૦ ૧૦॥

છાયા—પશ્ચ સ્થાનાનિ છદ્મસ્થઃ સર્ગભાવેન ન જાનાતિ ન પશ્યતિ, તત્રથા—
ધર્માસ્તિકાયમ્ ૧ અધર્માસ્તિકાયમ્ ૨ આકાશાસ્તિકાયમ્ ૩ જીવમ્ અશરીર-
પ્રતિવહ્નં ૪ પરમાણુપુદ્ગલમ્ ૫। એતાન્યેવ ઉત્પન્નજ્ઞાનદર્શનધરઃ અર્હન્ જિનઃ કેવલી
સર્ગભાવેન જાનાતિ પશ્યતિ-ધર્માસ્તિકાયં યાવત્ પરમાણુપુદ્ગલમ્ ॥મૂ૦૧૦॥

જો સ્નાન ક્રિયા જાતા હૈ, વહ વાયવ્ય સ્નાન હૈ, સૂર્યકા આતાપ લેના
યહ દિવ્ય સ્નાન હૈ, મૃત્તિકા સે જો સ્નાન હૈ, વહ પાર્થિવ સ્નાન હૈ,
ઔર મનકી શુદ્ધિ કરના યહ માનસ સ્નાન હૈ ॥ મૂ૦ ૯ ॥

હસ પ્રકારસે યહ શૌચ કહા હૈ, યહ શૌચ જીવકી શુદ્ધિ રૂપ
હોતા હૈ, છદ્મસ્થ જીવકો નહીં જાનતા હૈ, કેવલીહો જીવકો જાનતે હૈ,
સો હસ સમ્બન્ધકો લેક્કર અવસૂત્રકાર છદ્મસ્થ ઔર કેવલીકે જો અજ્ઞેય
જ્ઞેય પદાર્થ હૈ, ઉનકે પાંચ પ્રકારોંકા કથન કરતે હૈ—

‘પંચ ઠાળાઈં છઠમત્થે સઘ્વભાવેણં ણ જાણઈ ઇત્યાદિ’ સૂત્ર ૧૦ ॥

નામ વાયવ્યસ્નાન છે. સૂર્યના તડકા વડે જે આતાપના લેવાય છે, તેનું નામ
દિવ્યસ્નાન છે. માટી વડે જે સ્નાન કરાય છે, તેનું નામ પાર્થિવસ્નાન છે.
અને મનની શુદ્ધિ કરવા રૂપ માનસસ્નાન હોય છે ॥ સૂ. ૯ ॥

આ પ્રકારના આ શૌચ કહ્યાં છે તે શૌચ જીવની શુદ્ધિરૂપ હોય છે.
છદ્મસ્થ મનુષ્ય જીવને જાણતો નથી, કેવલી જ જીવને જાણે છે. આ પ્રકારના
સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર છદ્મસ્થ અને કેવલીને જે અજ્ઞેય અને જ્ઞેય
પદાર્થો છે તેમના પાંચ પ્રકારોંનું કથન કરે છે.

“ સત્ય શૌચ તપઃ શૌચ, શૌચમિન્દ્રિયનિગ્રહઃ ।

સર્વભૂતદયા શૌચં, જલશૌચ ચ પચ્ચમમ્ ॥ ૧ ॥ ” इति ।

અન્યતીર્થિકૈઃ પુનરિદં શૌચં સત્તત્ત્રિયં પ્રોક્ત તથાદિ—

“ સત્તસ્નાનાનિ પ્રોક્તાનિ, સ્વયમેવ સ્વયમ્બુધા ।

વ્રણ્યભાષત્રિશુદ્ધયર્થમ્, ઋષીણાં વ્રણ્યવાદિણામ્ ॥ ૧ ॥

આગ્નેય વારુણે વ્રાહ્મ, વાયવ્ય દિવ્યમેવ ચ ।

પાર્થિવં માનસં ચૈવ સ્નાનં સત્તત્રિયં સ્મૃતમ્ ॥ ૨ ॥

આગ્નેયં ધસ્મના સ્નાનમથગાઘતુ વારુણમ્ ।

ગ્રાપોદિષ્ટામયં વ્રાહ્મ વાયવ્યં તુ ગર્ગ રમઃ ॥ ૩ ॥

નિગ્રહ શૌચ ઐત્ સર્વમૂલ દયા શૌચ એ જો ચાર પ્રકારકે શૌચ છે, વહ મી શુદ્ધીત હો જાતા છે । કહા મી છે—

“ સત્ય શૌચ તપઃ શૌચ ” इत्यादि ।

અન્ય તીર્થિકોને જો સાત પ્રકારકા શૌચ કહા છે વહ હસ પ્રકારસે છે—“ સત્તસ્નાનાનિ પ્રોક્તાનિ ” इत्यादि ।

ઋષી વ્રણ્યચારિયોંકા વ્રણ્ય ગર્ગ ભાવકી શુદ્ધિકે લિયે સ્વયંમૂને એ સાત સ્નાન કહે છે—આગ્નેય ૧ વારુણ ૨ વ્રાહ્મ ૩ વાયવ્ય ૪ દિવ્ય ૫ પાર્થિવ ૬ ઔર માનસ સ્નાન ૭ હનમેં જો રાત્રસે સ્નાન ક્રિયા જાતા છે, વહ આગ્નેય સ્નાન છે, જલસે જો સ્નાન ક્રિયા જાતા છે, વહ વારુણ સ્નાન છે મથસે જો સ્નાન ક્રિયા જાય વહ વ્રણ્યસ્નાન છે, ગોપૂલિસે

શૌચમાં સત્યશૌચ, તપશૌચ, ઇન્દ્રિય નિગ્રહશૌચ અને સર્વભૂત દયાશૌચને ખજુ સમાવેશ થઈ જાય છે કહુ ખજુ છે કે—

“ સત્ય શૌચ તપઃ શૌચ ” इत्यादि

અન્ય તીર્થિકોંકે સાત પ્રકારનાં શૌચ કહા છે, તે નીચે પ્રમાણે છે

‘ સત્તસ્માનાનિ પ્રોક્તાનિ ’ इत्यादि—

બ્રહ્મચારી કષિજોની વ્રણ્યશુદ્ધિ અને ભાવશુદ્ધિ નિમિત્તે સ્વયંમૂને સાત સ્નાન કહ્યાં છે—(૧) આગ્નેય, (૨) વારુણ, (૩) વ્રાહ્મ, (૪) વાયવ્ય, (૫) દિવ્ય, (૬) પાર્થિવ અને (૭) માનસ સ્નાન.

રાખથી જે સ્નાન કરાય છે તેનું નામ આગ્નેય સ્નાન છે પાણી વડે જે સ્નાન કરાય છે, તેનું નામ વારુણ સ્નાન છે મત્ર વડે જે સ્નાન કરાય છે, તેનું નામ વ્રણ્યસ્નાન છે ગોપૂલિ વડે જે સ્નાન કરાય છે, તેનું

સૂર્યદૃષ્ટં તુ યદૃષ્ટં, તદિવ્યમૃપયો વિદુઃ ।

પાર્થિવં ચ મૃદા સ્નાનં, મનઃ શુદ્ધિસ્તુ માનસમ્ ॥ ૪ ॥ ” ઇતિ ॥ સૂ ૦ ૯ ॥

પૂર્વમુત્તરે બ્રહ્મગૌચમુક્તમ્ તત્ત્વ જીવશુદ્ધિરૂપમ્ । જીવં તુ છદ્મસ્થો ન વિજા-
નાતિ કેવલી તુ વિજાનાતીતિ સમ્બન્ધાચ્છદ્મસ્થકેવલિનોરજ્ઞેયજ્ઞેયપદાર્થાન્ પશ્ચદ્યા
પ્રતિપાદયતિ—

મૂલમ્-પંચ ઠાણાઈં છઠમત્થે સઠ્ઠભાવેણં ણ જાણહ, ણ
પાસહ, તં જહા-ધમ્મપત્થિકાયં ૧ અધમ્મપત્થિકાયં ૨ આગાસ-
ત્થિકાયં ૩ જીવં અસરીરપડિવચ્છં ૪, પરમાણુપોગ્ગલં ૫। ઇયાણિ
ચેવ ઉપ્પન્નનાણદંસણધરે અરહા જિણે કેવલી સઠ્ઠભાવેણં
જાણહ પાસહ ધમ્મપત્થિકાયં જાવ પરમાણુપોગ્ગલં ॥ સૂ ૦ ૧૦ ॥

છાયા—પશ્ચ સ્થાનાનિ છદ્મસ્થઃ સર્વભાવેન ન જાનાતિ ન પશ્યતિ, તત્રથા-
ધર્માસ્તિકાયમ્ ૧ અધર્માસ્તિકાયમ્ ૨ આકાશાસ્તિકાયમ્ ૩ જીવમ્ અસરીર-
પ્રતિવચ્છં ૪ પરમાણુદ્વલમ્ ૫। एतान्येव उत्पन्नज्ञानदर्शनधरः अर्हन् जिनः केवली
સર્વભાવેન જાનાતિ પશ્યતિ-ધર્માસ્તિકાયં યાવત્ પરમાણુદ્વલમ્ ॥ સૂ ૦ ૧૦ ॥

જો સ્નાન ક્રિયા જાતા હૈ, વહ વાયવ્ય સ્નાન હૈ, સૂર્યકા આતાપ લેના
યહ દિવ્ય સ્નાન હૈ, મૃત્તિકા સે જો સ્નાન હૈ, વહ પાર્થિવ સ્નાન હૈ,
ઔર મનકી શુદ્ધિ કરના યહ માનસ સ્નાન હૈ ॥ સૂ ૦ ૯ ॥

હસ પ્રકારસે યહ શૌચ કહા હૈ, યહ શૌચ જીવકી શુદ્ધિ રૂપ
હોતા હૈ, છદ્મસ્થ જીવકો નહીં જાનતા હૈ, કેવલીહો જીવકો જાનતે હૈ,
સો હસ સમ્બન્ધકો લેકર અવસૂત્રકાર છદ્મસ્થ ઔર કેવલીકે જો અજ્ઞેય
જ્ઞેય પદાર્થ હૈ, ઁનકે પાંચ પ્રકારૌંકા કથન કરતે હૈ—

‘પંચ ઠાણાઈં છઠમત્થે સઠ્ઠભાવેણં ણ જાણહ ઇત્યાદિ’ સૂત્ર ૧૦ ॥

નામ વાયવ્યસ્નાન છે સૂર્યના તડકા વડે જે આતાપના લેવાય છે, તેનું નામ
દિવ્યસ્નાન છે. માટી વડે જે સ્નાન કરાય છે, તેનું નામ પાર્થિવસ્નાન છે.
અને મનની શુદ્ધિ કરવા રૂપ માનસસ્નાન હોય છે. ॥ સૂ. ૯ ॥

આ પ્રકારના આ શૌચ કહ્યાં છે તે શૌચ જીવની શુદ્ધિરૂપ હોય છે.
છદ્મસ્થ મનુષ્ય જીવને જાણીતો નથી, કેવલી જ જીવને જાણે છે. આ પ્રકારના
સંબન્ધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર છદ્મસ્થ અને કેવલીને જે અજ્ઞેય અને જ્ઞેય
પદાર્થો છે તેમના પાંચ પ્રકારોનું કથન કરે છે.

ટીકા—‘ પંચ ટાણા’ રૂપાદિ—

છપ્પસ્યઃ—અવધિજ્ઞાનમનાપર્યવજ્ઞાનચર્ચિતો મુનિઃ પશ્ચસ્થાનામિ સર્વમા
ધેન=સાક્ષાત્કારેણ=પ્રત્યક્ષતયેત્યર્થઃ, ન જાનાતિ ન પश्यति । તામિત્યાનાન્વાહ-
તયયા-ધર્માસ્તિકાગમિત્યાદિ । સપ=અશરીરપ્રતિબદ્ધમ્=અશરીરચર્ચિત જીવમ્ ।
પરમાણુપુદ્ગલમ્=પરમાણુભાસી પુદ્ગલમ્તિ ચમ્ । ર્દ્યં દ્રવ્યણુકાદીનામપ્યુપલક્ષણમ્,
તેન દ્રવ્યણુકાદીનપિ છપ્પસ્યઃ સાક્ષાત્કારેણ નો જાનાતિ નો પश्यति । -શુનજ્ઞાનન

ટીકાર્થ—અવધિજ્ઞાન એવ યનઃ પર્યવજ્ઞાનસે રહિત મુનિરૂપ છપ્પસ્ય રૂપ
પાંચ સ્થાનોનો સર્વભાવસે સાક્ષાત્ રૂપસે પ્રત્યક્ષરૂપસે નહીં જાનતા હૈ,
નહીં દેખતાહૈ, યે પાંચ સ્થાન રૂપ પ્રકારસે હૈ ધર્માસ્તિકાચ ૧ અધર્માસ્તિ
કાચ ૨ આકાશાસ્તિકાચ ૩ અશરીરપ્રતિબદ્ધ જીવ ૪ મૌર પરમાણુ
પુદ્ગલ ૫ । ર્દ્યં પાંચ સ્થાનોનો ઉત્પત્તજ્ઞાનદર્શનધારી અર્દ્યમ્ જિન
કેવલી સવભાવસે સાક્ષાત્ રૂપસે જાનતે હૈ જાનતે હૈ । યે પાંચ સ્થાન
ધર્માસ્તિકાચ યાવત્ પરમાણુ પુદ્ગલ હૈ । અવધિજ્ઞાન એવ યન પર્યવજ્ઞાન
બાહે જીવ ધી છપ્પસ્ય જીવમે રૂદીત કિયે ગય હૈ, અતઃ યે યદાં રૂદીત
ન હૈં રૂદીતિયે ટીકાકારને રૂદીત યર્જિત કિયા હૈ, અશરીર પ્રતિબદ્ધકા
ભાવ હૈ, શરીરસે રહિત જીવ પરમાણુ પુદ્ગલ દ્રવ્યણુક આદિકા ઉપ
લક્ષણ હૈ, અતઃ એસા યદ્ય છપ્પસ્ય પરમાણુ પુદ્ગલનો સાક્ષાત્ નહીં જાનતા
હૈ, વસી પ્રકારસે યદ્ય દ્રવ્યણુક આદિકો ધી સાક્ષાત્ રૂપસે નહીં જાનતા

‘ પંચ ટાણા’ છપ્પસ્યે સર્વમાધેણ જા જાણ’ રૂપાદિ—

અવધિજ્ઞાન અને મનાપર્યવજ્ઞાનથી રહિત જોનો છપ્પસ્ય મુનિ આ પાંચ
સ્થાનોને સવભાવે, સાક્ષાત્ રૂપે પ્રત્યક્ષ રૂપે જાણતો નથી. (૧) ધર્માસ્તિકાચ
(૨) અધર્માસ્તિકાચ, (૩) આકાશાસ્તિકાચ, (૪) અશરીર પ્રતિબદ્ધ જીવ
અને (૫) પરમાણુ પુદ્ગલ

જો જ પાંચ સ્થાનોને ઉત્પત્ત જ્ઞાન રૂપાનધારી અર્દ્યમ્ જિન કેવલી
સર્વભાવે-સાક્ષાત્ રૂપે જાણે છે અને રૂપે છે જોરતે કે ધર્માસ્તિકાચથી
લઈને પરમાણુ પુદ્ગલ પચન્તાના પાંચ સ્થાનોને કેવળજ્ઞની જીવ પ્રત્યક્ષ રૂપે
જાણી શકે છે અને રૂપી શકે છે અવધિજ્ઞાની અને મનાપર્યવજ્ઞાનવાળા
જીવને પણ છપ્પસ્ય જ જાણવામાં આવે છે તેથી તેમને અહીં રૂદીત કરવાના
ન કોવાથી સુત્રકારે તેમને અહીં વર્ણિત કર્યો છે ‘ અશરીર પ્રતિબદ્ધ ’
જોરતે શરીરથી રહિત જીવ પરમાણુ પુદ્ગલ દ્રવ્યણુક આદિનું ઉપલક્ષણ છે તે
છપ્પસ્ય જેમ પરમાણુ પુદ્ગલને સાક્ષાત્ રૂપે જાણતો નથી, જો જ પ્રમાણે તે
દ્રવ્યણુક આદિને પણ સાક્ષાત્ રૂપે જાણતો નથી. સુતજ્ઞાનની સહાયતાથી જ

તુ ધર્માસ્તિકાયાદીન્ જાનાત્યેવેતિ અત્રેદં બોધ્યમ્-અવધિજ્ઞાની મનઃપર્યવજ્ઞાની
 ચ યદ્યપિ છદ્મસ્થ એવ તથાપિ સ નેહ વિવક્ષિતઃ ધર્માસ્તિકાયાદીનાં ચતુર્ણાં સા-
 ક્ષાત્કારેણ જ્ઞાનાભાવેડપિ પરમાણુપુદ્ગલસ્ય સાક્ષાત્કારેણ જ્ઞાનાત્ । નતુ સર્વભાવેન
 इत्यस्य सर्वपर्यायेण इत्यर्थः, एव च अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी च सर्वपर्यायेण
 परमाणुपुद्गलं न जानातीति छद्वस्त्रपदेन अवधिमन पर्ययज्ञानिनोरपि ग्रहणे
 है, श्रुतज्ञानकी सहायतासेही जानता है, तात्पर्य ऐसा है-यद्यपि अव-
 धिज्ञानी मनः पर्ययज्ञानी छद्वस्त्रही हैं, परन्तु यहां उनकी विवक्षा नहीं
 हुई है, क्योंकि वे परमाणु पुद्गलको तो साक्षात् रूपसे जानते हैं, भलेही
 वे धर्मास्तिकायादिक चारको साक्षात् रूपसे नहीं जानते ।

શંકા—“ સર્વભાવ ” હસ પદકા અર્થ છે, સર્વપર્યાયસે અતઃ અવ-
 ધિજ્ઞાની એવ મનઃ પર્યયજ્ઞાની જો જીવ છે, વહ સર્વભાવસે સર્વપર્યા-
 યસે પરમાણુપુદ્ગલકો જાનતા નહીં છે, હસલિયે છદ્મસ્થ પદસે અવધિ-
 જ્ઞાની ઓર મનઃપર્યયજ્ઞાની હનકા ઓ ગ્રહણ કર લિયા જાવે તો
 ક્યા હાનિ છે ?

ઉત્તર—“ સર્વભાવેન ” હસ પદકા અર્થ યદિ “ સર્વપર્યાયઃ ”
 ऐसा माना जाय और ऐसा मानकर यह कहा जायकि अशरीर प्रति-
 बद्ध जीवको छद्वस्त्र सर्व पर्यायरूपसे साक्षात् नहीं जानता है, साक्षात्
 नहीं देखता है, तो इसका भाव ऐसा होता है, कि वह शरीर प्रतिबद्ध

જાણે છે આ કથનતુ તાત્પર્ય એવુ છે કે અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યયજ્ઞાની
 છદ્મસ્થ જ છે, છતાં પણ અહીં તેમની વિવક્ષા થઈ નથી કારણ કે તેઓ
 પરમાણુ પુદ્ગલને તો સાક્ષાત્ રૂપે જાણે જ છે, ભલે તેઓ ધર્માસ્તિકાય આદિ
 ચારને સાક્ષાત્ રૂપે જાણતા નથી

શંકા—“ સર્વભાવ ” આ પદનો અર્થ ‘ સર્વપર્યાયની અપેક્ષાએ ’ થાય
 છે તેથી અવધિજ્ઞાની અને મન-પર્યાયજ્ઞાની એ જીવો છે, તેઓ સર્વભાવે,
 સર્વપર્યાયની અપેક્ષાએ-પરમાણુ પુદ્ગલને જાણતા નથી, એવું સિદ્ધ થાય છે
 તો પછી છદ્મસ્થ પદ વડે અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યાયજ્ઞાનીને પણ શ્રદ્ધા કર-
 વામાં શો વાધો છે ?

ઉત્તર—“ સર્વભાવેન ” આ પદનો અર્થ જો “ સર્વ પર્યાય રૂપે ” માન
 વામાં આવે, તો અને એ પ્રકારનો અર્થ માનીને જો એવું કહેવામાં આવે
 કે “ અશરીર પ્રતિબદ્ધ જીવને છદ્મસ્થ સર્વ પર્યાય રૂપે સાક્ષાત્ જાણતો
 નથી અને સાક્ષાત્ દેખતો નથી, ” તો તેના દ્વારા એવો ભાવ પ્રકટ થાય છે

ન કાપિ જાનિરિતિષેત્, અત્રોચ્યતે—યદિ સર્વમાષેન इत्यस्य सर्वपर्यायेण इत्यर्थः स्वीक्रियते, यदि 'अक्षरीरमतिषद् जीव छद्मस्यः सर्वपर्यायेण न जानाति न पश्यतीत्युक्ते शरीरमतिषद् जीव तु सर्वपर्यायेण जानाति पश्यतीत्यर्थो गम्यते। न च क्षरीरमतिषद् जीवम् अवधिज्ञानी मनःपर्यवस्थानी च सर्वपर्यायेण जानाति। अतः 'सर्वमाषेन' इत्यस्य 'साक्षात्कारेण' इत्येवार्थो युक्तः। परमाणु पुद्गल तु साक्षात्कारेण अवस्थानि ज्ञानी जानात्येव, अतः—छद्मस्यपदेनापि भवध्यादि रक्षित एव ग्राह्य इति। जिनस्तु एतानि पञ्च स्थानानि साक्षात्कारेण जानाति—इत्याह—एयाणि चेव' इत्यादि इति ॥ सू० १० ॥

પૂર્વોક્ત ધર્માસ્તિકાપાતિરિક્તાનપ્પતીન્દ્રિયમાય ન્ જિનો જ્ઞાનાતીત્યપો-
લોકોદ્ધર્મ્મોક્ષવર્તીન્ અતીન્દ્રિયાન્ માયાન્ પચ્ચ સ્થાનકત્વેનાહ—

મૂલ્મ—અહોલોપ્પણં પચ અણુત્તરા મહદ્દમહાલયા મહ્વા
નિરયા પપગત્તા, ત જહા—કાલે ૧ મહાકાલે ૨ રોરુ ૩ મહ્વા

જીવકો સાક્ષાત્ જાનતા હૈ, ઓર સાક્ષાત્ દેહતા હૈ, પરન્તુ એસા અર્થ માનના મ્હી સંગત નહોં હોતા હૈ કયોંકિ અવધિજ્ઞાની ઓર મના પપ્પ જ્ઞાની જીવકો શરીર પ્રતિષદ્ જીવકો સર્વપર્યાય સહિત ન જાનતા હૈ, ઓર ન દેહતા હૈ, હમલિયે “સર્વમાષ” વક્ષા અર્થ “સાક્ષાત્કાર” એસાહી યજ્ઞ કરના જાહિયે “સર્વપર્યાય” એસા નહોં કરના જાહિયે અતઃ એસી અર્થ સગતિમેં કોઈ દોષ નહોં ખાતા હૈ, કયોંકિ અવધિજ્ઞાન આદિવાહે જીવ પરમાણુ પુદ્ગલકો સાક્ષાત્ રૂપસે જાનતેહી હૈં। હમલિયે છદ્મસ્ય પદસે યજ્ઞ અવધિજ્ઞાન આદિસે ઘર્જિત પુરુષહી હેના જાહિયે। જિન મગયાન્ તો હન પાંચ સ્થાનોકો સાક્ષાત્ રૂપસે જાનતે હૈં, યહી યાત “एयाणि चेव” इत्यादि सूत्र पाठ द्वारा प्रकटकी गई है ॥ सू० १० ॥

કે તે શરીર પ્રતિષદ્ જીવને સાક્ષાત્ બાહે છે અને સાક્ષાત્ દેખે છે પરન્તુ
એવો અથ પશુ સંગત લાગતો નથી કારણ કે અવધિજ્ઞાની અને મનાપ્પ
જ્ઞાની મદ્રપ્ય શરીર પ્રતિષદ્ જીવને સર્વપર્યાય સહિત બાધતો નથી અને
દેખતો નથી તેથી સતમાય પદનો અથ અહીં ‘સાક્ષાત્કાર’ જ આવે
એળજે ‘સર્વપર્યાય’ એવો અથ અહીં આવે એળજે નહીં તેથી એથી
અથ સંગતિમાં કોઈ દોષ રહેતો નથી કારણ કે અવધિજ્ઞાન આદિવાળો છદ્મ
પરમાણુ પુદ્ગલને સાક્ષાત્ રૂપે બાહે જ છે તેથી છદ્મસ્ય પદ દ્વારા અહીં
અવધિજ્ઞાન જ વિધી રક્ષિત પુરુષને જ મદ્રપ્ય આવે એળજે જિનેન્દ્ર અપ્રમાન
તો આ પાંચ સ્થાનને સાક્ષાત્ રૂપે બાહે છે એ જ યાતને “एयाणि चेव”
इत्यादि सूत्रपाठ द्वारा प्रकट करवाया जावेक છે ॥ सू १० ॥

રોરુ ૪ અપ્પહટ્ટાણે ૫। ઉહ્લોણ પં પંચ અણુત્તરા મહામહા-
તયા મહાવિમાણા પળ્લન્તા, તં જહા-વિજય ૧ વૈજયંતે ૨
જયંતે ૩ અપરાજિય ૪ સઠ્ઠટ્ઠસિદ્ધે ॥ સૂં ૧૧ ॥

છાયા—અધોલોકે સ્થલ પંચ અણુત્તરા મહાતિમહાલયાઃ મહાનિરયાઃ પ્રજ્ઞાઃ,
તથા—કાલો ૧ મહાકાલો ૨ રૌરવો ૩ મહારૌરવઃ ૪ અપ્રતિષ્ઠાનઃ ૫। ઊર્ધ્વ-
લોકે સ્થલ પંચ અણુત્તરા મહાતિમહાલયા મહાવિમાનાઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા—વિજયો
૧ વૈજયન્તો ૨ જયન્તઃ ૩ અપરાજિતઃ ૪ સર્વાર્થસિદ્ધ ૫ ॥મૂં ૧૧॥

इन पूर्वोक्त धर्मास्तिकाय आदिसे अतिरिक्त भी अतीन्द्रिय पदा-
र्थों को जिन भगवान् जानते हैं, यही वान प्रकट करनेके लिये अधोर्लो-
कवर्ती उर्ध्वलोकवर्ती अतीन्द्रिय भावोंकी प्ररूपणा अव सूत्रकार पांच
स्थानोंसे करते हैं—‘अहोलोएणं पंच अणुत्तरा’ इत्यादि सूत्र ११ ॥

सूत्रार्थ—इस सूत्र ती व्याख्या स्पष्ट है—अधोलोकमें सात पृथिवी
हैं उनमें जो सातवीं पृथिवी है, उसमें पांच अनुत्तर बहुत बड़े विशाल
महानिरय कहे गये हैं, उनके नाम इस प्रकारसे हैं—काल १ महाकाल
२, रौरव ३, महा रौरव ४, और अप्रतिष्ठान ५, उर्ध्वलोकमें पांच
नाम अनुत्तर महाविमान जो कि बहुत बड़े विशाल कहे गये हैं,
उनके नाम इस प्रकारसे हैं—विजय १ वैजयन्त २ जयन्त ३ अपराजित ४
और सर्वार्थ सिद्ध ५ ।

આ પૂર્વોક્ત ધર્માસ્તિકાય આદિ નિવાયના અન્ય અતીન્દ્રિય પદાર્થોને
પણ જિન ભગવાન જાણે છે એજ વાતને પ્રકટ કરવા માટે સૂત્રકાર હવે
અધોલોકવર્તી અને ઉર્ધ્વલોકવર્તી અતીન્દ્રિય ભાવોની પ્રરૂપણા પાંચ સ્થાનોની
અપેક્ષા કરે છે “ અહોલોણ પંચ અણુત્તરા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—આ સૂત્રની વ્યાખ્યા સુગમ છે અધોલોકમાં સાત પૃથ્વી (રત્નપ્રભા
આદિ નરકો) છે તેમાંની જે સાતમી પૃથ્વી છે તેમાં પાંચ અણુત્તર (ઘણાજ
વિશાળ) નરકવાસો આવેલા છે. તેમના નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) કાલ,
(૨) મહાકાલ, (૩) રૌરવ, (૪) મહારૌરવ અને (૫) અપ્રતિષ્ઠાન.

ઉર્ધ્વલોકમાં પંચ અણુત્તર મહાવિમાનો છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે
છે—(૧) વિજય, (૨) વૈજયન્ત, (૩) જયન્ત, (૪) અપરાજિત અને (૫)
સર્વાર્થસિદ્ધ.

ટીકા--‘ અશોભ્ય ’ રૂપાદિ--

શ્યાલયા સ્પષ્ટા । નરમ્-અશોભ્યકે સત્તમપૂર્ણિન્યામ્ । અનુચર-નાસ્તિ
ઉચ્ચર-ઉત્કૃષ્ટો ચેત્ત્યસ્તે-સર્વાત્કૃષ્ટા इत्यर्थः । सर्वात्કૃષ્ટત્વં तु उत्कृष्टवेदनादि
ત્વાત્, સ્વતઃ પરં નરકાભાષાદ વા યોગ્યમ્ । મહાતિમહાલયાઃ-અતિમહાન્ત-અતિ
વિશાલા इत्यर्थः । अति महत्त्वमादित्यतुवर्गा क्षेत्रतोऽप्यसख्यातयोजनत्वेन बो
ધ્યम् । अपतिष्ठानो यद्यपि क्षेत्रतो योजनलक्ष्यमाण एव तथापि तत्प्रत्यानां
નારકજીવાનામાયુષોઽતિમહત્વાત્તસ્ય મહત્ત્વ યોગ્યમિતિ । एवमुर्ध्वलोकेऽपि
વિદ્યેયમ્, ન ધરમ્ ઊર્ધ્વલોકે સાતાવેદનાદિત્વ યોગ્યમ્ ॥ ૧૦૧ ॥

ટીકા-‘ અશોભ્ય-’ હસ સુગ્રની શ્યાલયા સ્પષ્ટ છે, જિનની અપેક્ષા કોઈ ઓર ઉત્કૃષ્ટ
નહીં હોતા છે, એ અનુચર હૈ-સર્વોત્કૃષ્ટ છે । સર્વોત્કૃષ્ટતા જનમેં ઉત્કૃ
ષ્ટવેદનાવાળે હોનેસે આઈ છે । અથવા-જનકે પાદ ઓર નરક નહીં છે,
હસ કારણ મી જનમેં ઉત્કૃષ્ટતા ફાળી ગઈ છે, મહાતિમહાલય શબ્દકા
અર્થ અતિ વિશાલ છે । જનમેં અતિવિશાલતા આદિકે ચારોમેં ક્ષેત્રની
અપેક્ષા અસખ્યાત યોજનકે હોનેસે છે । અપતિષ્ઠાન યદ્યપિ ક્ષેત્રની
અપેક્ષા ૧ લાખ યોજનકાદી છે । તથા મી ઘડાંકે નારક જીવોની આયુ
અતિ મહાન્ છે, હસલિયે હસમેં હસ અપેક્ષા અતિ મહત્વા કાઢી ગઈ છે ।
इसी तरहका कथन उर्ध्वलोकमें भी जानना चाहिये । यहाँ पर जो मरता
પ્રકટ ફાળી ગઈ છે ઘટ " સાતાવેદનીયકા તીવ્ર ઉદય રહતા છે, અતઃ
જસસે ઘડાં સાતાવેદન આદિકા પ્રકૃષ્ટ અનુભવ હોતા રહતા છે " હસ
અપેક્ષાસે પ્રકટ ફાળી ગઈ છે ॥ સુ. ૧૧ ॥

ટીકા-‘ નેના કારણે કોઈ પણ ઉત્કૃષ્ટ ન હોય તેને અનુચર અથવા સર્વોત્કૃષ્ટ
કહે છે । કાવ, મહાકાવ આદિ પાંચ નરકવાસોમાં ઉત્કૃષ્ટ વેદનાવાળા નારકોને
કારણે સર્વોત્કૃષ્ટતા સમજવી । અથવા તે નરકવાસોની નીચે બીજી કોઈ પણ
નરકો નહીં હોવાને કારણે પણ તેમાં સર્વોત્કૃષ્ટતા સમજવી । ‘ મહાતિમહાલય ’
જોટથી ‘ અતિ વિશાળ ’ પહેલાં આ ૧ નરકવાસો અત્યંત યોજનપ્રમાણ
હોવાને કારણે તેમનામાં ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ અતિ વિશાળતા સમજવી । એ કે
અપતિષ્ઠાન નામનો પાંચમો નરકવાસ એ ૧ લાખ યોજનપ્રમાણ જ છે, છતાં
પણ તેમાં નારકોનું આયુષ્ય અતિ મહાન હોવાથી તે શરિએ તેમાં સર્વોત્કૃષ્ટતા
પ્રકટ કરવામાં આવી છે ।

એ જ પ્રકારનું કથન ઉર્ધ્વલોકના પાંચ અનુચર વિમાનો વિષે પણ
અમળ્યું ત્યાં સાતાવેદનીયનો તીવ્ર ઉદય રહે છે તેથી તે અનુચર વિમાન
નિવાસી દેવો સાતાવેદનીય આદિનો પ્રકૃષ્ટ અનુભવ કરે છે તે કારણે તેમાં
સર્વોત્કૃષ્ટતા પ્રકટ કરવામાં આવી છે ॥ સુ. ૧૧ ॥

અનુત્તરનરકેષુ અનુત્તરવિમાનેષુ ચ વિશિષ્ટસત્ત્વા એવ પુરુષા ગચ્છન્તીતિ
પશ્ચવિધાન પુરુષાનાદ—

મૂલમ્—પંચ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં જહા—હિરિસત્ત્વે ૧
હિરિમળસત્ત્વે ૨ ચલસત્ત્વે ૩ થિરસત્ત્વે ૪ ઉદયગ્લસત્ત્વે ૫ ॥સૂ૦૧૨॥

છાયા—પશ્ચ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, તદ્વથા—હ્રી સત્ત્વઃ ૧ હ્રીમનઃ સત્ત્વઃ ૨
ચલસત્ત્વઃ ૩ સ્થિરસત્ત્વઃ ૪ ઉદયનસત્ત્વઃ ૫ ॥સૂ૦ ૧૨॥

ટીકા—‘ પંચ પુરિસજાયા ’ ઇત્યાદિ—

પુરુષજાતાનિ=પુરુષ પ્રકારાઃ પશ્ચ પ્રરૂપિતાનિ । તાન્યેવમ્—તદ્વથા—હ્રીસત્ત્વઃ—
હિયા=લજ્જયો સત્ત્વઃ=સ્થિતિઃ—અવદ્રમ્મઃ અવિચલત્વમિતિ યાવત્ પરીપહેષુ યસ્ય
સંયતસ્ય સંગ્રામાદિષુ વા યસ્ય સંયતેતરપુરુષસ્ય સઃ ।૧। તથા—હ્રીમનઃસત્ત્વઃ—
હિયા=મનસ્થેવ સત્ત્વઃ ન તુ શરીરે, શીતાદૌ કમ્પાદિ-વિકારદર્શનાદ યસ્ય સઃ

અનુત્તર નારકોંમેં ઔર અનુત્તર વિમાનોંમેં વિશિષ્ટ શક્તિશાલી
પુરુષહી જાતે હૈં, ઇસલિયે અવ સૂત્રકાર પાંચ પ્રકાર કે પુરુષ કા કથન
કરતે હૈં—‘પંચ પુરિસજાયા પળ્લન્તા’ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧૨ ॥

ટીકાર્થ—પુરુષ જાત પાંચ કહે ગયે હૈં જૈસે—હ્રીસત્ત્વ ૧ હ્રીમનઃ સત્ત્વ ૨ ચલ
સત્ત્વ ૩ સ્થિર સત્ત્વ ૪ ઔર ઉદયન સત્ત્વ ૫ જિસ સંયતકી પરીપહકે
આને પર લજ્જાવશ અપને સંયમ ભાવસે અવિચલતા બની રહતી હૈ,
વહ હ્રીસત્ત્વ હૈ, અથવા સંયતસે ઇતર જિસ પ્રાણીકી સંગ્રામ આદિકોંમેં
લજ્જાકે વશસે સ્થિરતા રહતી હૈ, વહ હ્રી સત્ત્વ હૈ, લજ્જાસે સ્થિતિ
અવિચલતા જિસકીહૈ એસા વહ પ્રાણી હ્રી સત્ત્વહૈ । લજ્જાકે વશ જિસકે

અનુત્તર નરકોમાં અને અનુત્તર વિમાનોમાં વિશિષ્ટ શક્તિશાળી જીવો જ
જાય છે તેથી હવે સૂત્રકાર પાંચ પ્રકારના પુરુષોનું કથન કરે છે.

“ પંચ પુરિસજાયા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—પુરુષોના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) હ્રી સત્ત્વ, (૨)
હ્રીમન સત્ત્વ, (૩) ચલ સત્ત્વ, (૪) સ્થિર સત્ત્વ અને (૫) ઉદયન સત્ત્વ.

પરીપહો આવી પડે ત્યારે જે સંયત લજ્જાને કારણે પોતાના સયમ
ભાવમાંથી ચકાયમાન થતો નથી—અવિચલ જ રહે છે તેને હ્રીસત્ત્વ કહે છે.
અથવા સંગ્રામ આદિમાં લજ્જાને કારણે જે માણસ અવિચલ રહે છે તેને
હ્રીસત્ત્વ કહે છે. આ રીતે લજ્જાને કારણે જ જેની અવિચલતા ટકી રહી છે
એવા જીવને હ્રીસત્ત્વ કહે છે. લજ્જાને કારણે જેના મનમાં જ માત્ર હ્રીસત્ત્વ

૧૨। ચચસત્ત્વઃ-ચલમ્=અસ્થિર સત્ત્વ યસ્ય સઃ ૧૨। અચચસત્ત્વઃ-અચચ=સ્થિરં
સત્ત્વં યસ્ય સઃ ૧૪। તથા-ઉદયનસત્ત્વઃ-ઉત્ત્વ=ઊર્ધ્વમ્ અપર્નમ્ગમન યમ્ય સત્ત્વ ઉદય
યનમ્-ઉદયગામિ પ્રવર્તમાનમિતિ યાવત્ સત્ત્વ યસ્ય સ ઇતિ પદ્યમ ૧ ॥૧૨॥

અનન્તરં સત્ત્વયાન્ પુરુષ પદ્યમસત્ત્વચરત્વેન પ્રોક્તઃ । સત્ત્વયાન્ પુરુષા પાપો
મિશ્નુરવેતિ ઉત્ત્વરૂપં સત્ત્વપ્રાપ્તમાહ—

મૂલમ્-પચ મચ્છા પળ્લગ્તા, ત જહા-અણુસોયચારી ૧,
પદિસોયચારી ૨ અત્તચારી ૩ મજ્જાચારી ૫। પચમેવ પચ
મિચ્છાગા પળ્લગ્તા, ત જહા અણુસોયચારી ૧ જાવ સન્નચારી
૫ ॥ સૂ. ૧૩ ॥

છાયા--પચ મત્સ્યાઃ મજ્જાઃ, તથા-અણુસોયચારી ૧ મતિસોયચારી ૨
અત્તચારી ૩ મધ્યચારી ૪ સવનારી ૫। પ્રથમેવ પચ મિચ્છાગા મજ્જાઃ તથા-
અણુસોયચારી ૧ યાવત્ મર્ચચારી ૫ ॥ સૂ. ૧૩॥

કેવલ મનમેહી દ્વોસત્ત્વ સ્થિરતા રહતી હૈ, શરીરમેં નહીં ક્યોંકિ શીત
આદિકે સમયમેં શરીરમેં કમ્પાદિ વિકાર થસા જાતા હૈ, પેસા યદ્
પ્રાણી હીમાઃ સત્ત્વહૈ । જિસકા સત્ત્વ અસ્થિર હોતા હૈ પેસા યદ્ પ્રાણી
ચલ સત્ત્વ હૈ, જિસકા સત્ત્વ-ચલ સ્થિર હોતા હૈ, પેસા યદ્ પ્રાણી
અચલ સત્ત્વ હૈ । ઓર જિસકા સત્ત્વ પ્રવર્તમાન હોતા હૈ, પેસા યદ્
પ્રાણી ઉદયન સત્ત્વ હૈ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

સત્ત્વયાન્ પુરુષ પાંચ પ્રકારના ફદા અચ દુષ્કાર યદ્ પ્રકટ કરતે હૈ
કિ સત્ત્વયાન્ પુરુષ પ્રાયઃ મિશ્નુહી હોતા હૈ અતઃ મિશ્નુકા સ્વરૂપ દ્રષ્ટાન્ત
પૂર્વક પ્રગટ કિયા જાતા હૈ-‘ પચ મચ્છા પળ્લગ્તા ’ ઇત્યાદિ સૂ. ૧૩ ॥

(સ્થિરતા રહે છે-શરીરમાં રહતી નથી (કાશ્ય કે શીતાદિને અવસર તેના
શરીરમાં કયાદિ વિકાર નજર પડે છે), એવા છાને “ હીમાના સત્ત્વ ” કહે
છે અસ્થિર સત્ત્વવાળા છાને ‘ અચલ સત્ત્વ ’ કહે છે એનું સત્ત્વ (ગેનાત્રય)
સ્થિર હોય છે એવા છાને ‘ અચલ સત્ત્વ ’ કહે છે એનું સત્ત્વ પ્રવર્તમાન
હોય છે એવા છાને ‘ ઉદયન સત્ત્વ ’ કહે છે ॥ સૂ. ૧૨ ॥

સત્ત્વયાન્ પુરુષના પાંચ પ્રકાર પ્રકટ કરવામાં આન્યા સામાન્ય રીતે
મિશ્નુ (માધુ) ન સત્ત્વયાન્ હોઈ શકે છે તેથી હવે સૂચકાર દ્વાનંત સહિત
મિશ્નુના સ્વરૂપ નિરૂપણ કરે છે “ પચ મચ્છા પળ્લગ્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકા—‘ પંચ મઝ્ઝા ’ ઇત્યાદિ—

મત્સ્યાઃ પશ્ચ સંખ્યકા ભવન્તિ । તત્ર પ્રથમઃ—અનુસ્રોતશ્ચારી—પ્રવાહાનુકૂલ-
ચરણશીલઃ ૧ । પ્રતિસ્રોતશ્ચારી=પ્રવાહસંમુલ્લચરણશીલઃ ૨ । અન્તચારી=પાર્શ્વચારી
૩ । મધ્યચારી=મધ્યભાગે સંચરણશીલઃ ૪ । તથા—સર્વચારી=અનુસ્રોતઃ પ્રતિસ્રોતો-
ન્તમધ્યેષુ સર્વત્ર સંચરણશીલ ૫ । ઇતિ । ઇત્યં દૃષ્ટાન્તમુક્તયા સમ્પ્રતિ દાર્ઢ્યંન્તિક-
માહ—‘ એમેવ ’ ઇત્યાદિ । એમેવ=એનેનૈવ પ્રકારેણ પશ્ચ સંખ્યકા મિથુઓઽપિ
ભવન્તિ । તત્ર કથિત અનુસ્રોતશ્ચારી=ઉપાશ્રયમીપાત્ ક્રમેણ મિથુાર્થ ચરણશીલઃ

ટીકાર્થ—મત્સ્ય પાંચ પ્રકારકે કહે ગયે હૈ—જૈસે—અનુસ્રોતશ્ચારી ૧
પ્રતિસ્રોતશ્ચારી ૨ અન્તચારી ૩ મધ્યચારી ૪ ઓર સર્વચારી ૫ હસી પ્રકા-
રસે પાંચ મિથુક કહે ગયે હૈ જૈસે—અનુસ્રોતશ્ચારી ૧ યાવત્ સર્વચારી ૫ ।

જો મત્સ્ય પ્રવાહકે અનુકૂલ ચલનેકે સ્વભાવવાલા હોના હૈ, વહ
અનુસ્રોતશ્ચારી હોના હૈ જો પ્રવાહકે સમુલ્લ ચલનેકે સ્વભાવવાલા હોના
હૈ, વહ પ્રતિસ્રોતશ્ચારી હોના હૈ, જો પાર્શ્વમેં ચલનેકે સ્વભાવવાલા હોના
હૈ, વહ પાર્શ્વચારી હોના હૈ, જિમકા સ્વભાવ મધ્યભાગમેં સંચરણ કર-
નેકા હોના હૈ, વહ મધ્યચારી હૈ, ઓર જિસકા સ્વભાવ પ્રવાહકે અનુ-
કૂલ પ્રવાહકે પ્રતિકૂલ ચલનેકા એવં અન્નમેં ઓર મધ્યમેં ચલનેકા હોના
હૈ વહ સર્વચારી હૈ, હસી તરહસે મિથુ મી પાંચ પ્રકારકે હોતે
હૈ, इनमें कोई एक मिथु ऐसा होता है, जो उपाश्रयके पाससेही क्रमशः
मिक्षा करनेके स्वभाववाला होता है, ऐसा वह मिथु अनुस्रोतश्वारी

ટીકાર્થ—મત્સ્યના નાચે પ્રમાણે પાચ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અનુસ્રોતચારી, (૨)
પ્રતિસ્રોતચારી, (૩) અન્તચારી, (૪) મધ્યચારી અને (૫) સર્વચારી

એ જ પ્રમાણે સિશુકના પણ અનુસ્રોતચારી આદિ પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે

જે મત્સ્ય પ્રવાહના વહેણની દિશામા જ ચાલવાના સ્વભાવવાળો હોય
છે, તેને અનુસ્રોતચારી કહે છે જે મત્સ્ય પ્રવાહના વહેણની વિરુદ્ધની દિશામા
ચાલવાના સ્વભાવવાળો હોય છે તેને પ્રતિસ્રોતચારી કહે છે જે પ્રવાહની
બાજુમા ચાલવાના સ્વભાવવાળો હોય છે, તેને અન્તચારી કહે છે જે મત્સ્ય
પ્રવાહના મધ્યભાગમા સંચરણ કરનારો હોય છે, તેને મધ્યચારી કહે છે જે
મત્સ્ય પ્રવાહની દિશામા, પ્રવાહની સામે, પ્રવાહની પડખે અને પ્રવાહના
મધ્યભાગમા સંચરણ કરનારો હોય છે તેને સર્વચારી કહે છે. એ જ પ્રમાણે
સિશુક પણ પાચ પ્રકારનો હોય છે. જે સિશુક ઉપાશ્રયની નજીકના ઘરથી
શરૂ કરીને કમશ. અન્ય ઘરોમાથી સિક્ષા પ્રાપ્ત કરનારો હોય છે તેને અનુ

ટીકા--‘ પંચ વળીમગા ’ ઇત્યાદિ--

વનીપકાઃ--વન્વતે=યાચન્તે યે તે-યાચકા ઇત્યર્થઃ । સ્વમક્તાન્ પ્રશંસાદિભિર્દાનાભિમુલ્લેખકા ઇત્યર્થઃ । તે ચ પશ્ચવિધાઃ પ્રજ્ઞમાઃ । તાનેવાદ-તદ્યથા-અતિથિ વનીપકઃ-ભોજનકાલે ઉપતિષ્ઠમાનોઽતિથિઃ-સોઽતિથિદાનપ્રશંસયા સ્વમક્તાદ્ દાતુરાહારાદિકં યાચતેઽતઃ સોઽતિથિવનીપક ઇત્યુચ્યતે ।

અતિથિદાનપ્રશંસા યથા--

“ પાણ દેહલોગો, ઉવગારિસુ પરિજિણસુ જુણિણસુ ।

જો પુણ અદ્વાલિન્નં અતિહિં પૂણ્ણં તં દાણં ॥૧૧”

છાયા-પ્રાયેણ દદાતિ લોકઃ ઉપકારિભ્યઃ પરિચિતેભ્યોજુષ્ટેભ્યઃ ।

યઃ પુનરધ્વલિન્નમતિથિ પૂજયતિ તદ્દાનમિતિ ॥૧૧॥

વનીપક ૩ શ્વવનીપક ૪ ઓર અસ્રગ વનીપક ૫ જો પ્રશંસા આદિ દ્વારા અપને ભક્તોંકો દાનકે અભિમુલ્લેખ કરનેચાલે હોતે હૈં વે વનીપક હૈં । ઇનમેં જો વનીપક ભોજન કાલમેં આતા હૈ, ઓર અતિથિ દાનકી પ્રશંસાસે અપને ભક્ત દાતાસે આહાર આદિકી યાચના કરતે હૈં, એસા વહ યાચક અતિથિવનીપક હૈ અતિથિ દાનકી પ્રશંસા હસ પ્રકારસે હૈ—

“ પાણ દેહ લોગો ઇત્યાદિ ।

લોક પ્રાયઃ ઉપકારીકે લિયે યા પરિચિતજનકે લિયે યા સેવા કરને-ચાલેકે લિયે જો કુછ ઘનતા હૈ, વહ દેતા હૈ પર વહ દાન નહીં હૈ, પર દાન વહી હૈ જો માર્ગસે ચલકર આયે હુણ સ્વિન્ન અતિથિજનકે લિયે પ્રત્યુપકારકી આકાંક્ષા કિયે બિના આહારાદિ દેતા હૈ, કૃપણવનીપક

જેઓ પ્રશંસા આદિ દ્વારા પોતાના ભક્તોને દાન કરવાને પ્રેરે છે, તેમને ‘વનીપક’ કહે છે. જે વનીપક ભોજન કરવાને સમયે આવીને અતિથિદાનની પ્રશંસા કરીને દાતા પાસેથી આહારાદિની યાચના કરે છે, તે વનીપક (યાચક) ને ‘અતિથિ વનીપક’ કહે છે. અતિથિદાનની પ્રશંસા આ પ્રમાણે કરવામાં આવી છે. “ પાણ દેહ લોગો ” ઇત્યાદિ—

સામાન્ય રીતે તો લોકો ઉપકારીજનોને અથવા પશ્ચિતજનોને અથવા પોતાની સેવા કરનાર લોકોને કંઈને કંઈ આપે છે-યથાશક્તિ મદદ કરે છે, પરંતુ આ પ્રકારની મદદને દાન કહી શકાય નહીં. દાન તો તેને જ કહી શકાય કે જે કોઈ પણ પ્રકારના પ્રત્યુપકારની આકાંક્ષા વિના આપવામાં આવે છે. આગળે આવીને બોલેલા કોઈ હુ.ખી અને અબળપ્રયા અતિથિને જે આહારાદિનું દાન કરાય છે તેને જ સાચું દાન કહે છે.

ટીકા--‘ પંચ વળીમગા ’ ઇત્યાદિ--

વનીપકાઃ--વન્વતે=યાચન્તે યે તે-યાચકા ઇત્યર્થઃ । સ્વમક્તાન્ પ્રશંસાદિમિ
ર્દનાભિમુખકારકા ઇત્યર્થઃ । તે ચ પશ્ચવિધાઃ પ્રજ્ઞામા । તાનેવાહ-તચથા-અતિથિ
વનીપકઃ--ભોજનકાલે ઉપતિષ્ઠમાનોડતિથિઃ-સોડતિથિદાનપ્રશંસયા સ્વમક્તાદ્
દાતુરાદારાદિકં યાચતેડતઃ સોડતિથિવનીપક ઇત્યુચ્યતે ।

અતિથિદાનપ્રશંસા યથા--

“ પાણ દેહ્લોગો, ઉવગારિસુ પરિજિણસુ જુસિણસુ ।

જો પુણ અદ્ધાચિન્નં અતિહિં પૂણ્ણં તં દાણં ॥૧૫”

છાયા-પ્રાયેણ દદાતિ લોકઃ ઉપકારિભ્યઃ પરિચિતેભ્યોજુષ્ટેભ્યઃ ।

યઃ પુનરઅચિન્નમતિથિ પૂજયતિ તદ્દાનમિતિ ॥૧૬॥

વનીપક ૩ શ્વવનીપક ૪ ઓર અન્નગ વનીપક ૫ જો પ્રશંસા આદિ દ્વારા
અપને ભક્તોંકો દાનકે અભિમુખ કરનેવાલે હોતે હૈં વે વનીપક હૈં ।
ઇનમેં જો વનીપક ભોજન કાલમેં આતા હૈં, ઓર અતિથિ દાનકી પ્રશં-
સાસે અપને ભક્ત દાનાસે આહાર આદિકી યાચના કરતે હૈં, એસા વહ
યાચક અતિથિવનીપક હૈં અતિથિ દાનકી પ્રશંસા ઇસ પ્રકારસે હૈં--

“ પાણ દેહ્ લોગો ઇત્યાદિ ।

લોક પ્રાયઃ ઉપકારીકે લિયે યા પરિચિતજનકે લિયે યા સેવા કરને-
વાલેકે લિયે જો કુછ યત્નતા હૈં, વહ દેતા હૈં પર વહ દાન નહીં હૈં, પર
દાન વહી હૈં જો માર્ગસે ચલકર આયે હુણ ચિન્ન અતિથિજનકે લિયે
પ્રત્યુપકારકી આકાંક્ષા કિયે ત્રિના આદારાદિ દેતા હૈં, કૃપણવનીપક

જેઓ પ્રશંસા આદિ દ્વારા પોતાના ભક્તોને દાન કરવાને પ્રેરે છે,
તેમને ‘ વનીપક ’ કહે છે. જે વનીપક ભોજન કરવાને સમયે આવીને અતિ-
થિદાનની પ્રશંસા કરીને દાતા પાસેથી આહારાદિની યાચના કરે છે, તે વની-
પક (યાચક) ને ‘ અતિથિ વનીપક ’ કહે છે. અતિથિદાનની પ્રશંસા આ
પ્રમાણે કરવામાં આવી છે. “ પાણ દેહ્ લોગો ” ઇત્યાદિ--

સામાન્ય રીતે તો લોકો ઉપકારીજનોને અથવા પશ્ચિતજનોને અથવા
પોતાની સેવા કરનાર લોકોને કંઈને કંઈ આપે છે-યથાશક્તિ મદદ કરે છે,
પરંતુ આ પ્રકારની મદદને દાન કહી શકાય નહીં. દાન તો તેને જ કહી
શકાય કે જે કોઈ પણ પ્રકારના પ્રત્યુપકારની આકાંક્ષા વિના આપવામાં આવે
છે. આગણે આવીને ભણેલા કોઈ હુ ખી અને અભાણ્યા અતિથિને જે આહાર
રાદિતું દાન કરાય છે તેને જ સાચું દાન કહે છે.

કૃપણવનીપકાઃ-કૃપણે વ્યરિષ્ઠિઃ, સપ્થ ધનીપકાઃ । યોદિ સ્વમ્ય દાદિધ્યારુપાન
પુરસ્સર સ્વમ્ય દીયમાન દાન પ્રશ્નમતિ સકૃત્તણ્યવનીપકાઃ । કૃપણદાનપ્રશ્નતા યથા-

“ કિવિણેસુ દુમ્મણેસુ ય, અર્થમનાયકિ જુગિયંણેસુ ।

પૂયાહિત્તેવ્વોદ, દાણપઠાગ દરદ્દેસો ॥૧॥

છાયા--કૃપણેશ્યો દુર્મનોશ્યમ અનાધવાસક્કિણ્ણદિતાદેશ્ય ।

પૂનાર્હે ભોકે દાનપણાકાં દરતિ દવત્ ॥૧॥ ઇતિ ।

બ્રાહ્મણવનીપકાઃ યો દિ બ્રાહ્મણાય દીયમાન દાનં મસસન્ મિસર્ય ચરંતિ
સઃ । બ્રાહ્મણદાનપ્રશ્નતા યથા—

“ ભોગાણુગ્ગહકરિસુ, ધુમીદેવસુ વહુકર્મ દાણં ।

મરિણામ પવંચુસુ, રિં પૂણ છદત્તમરિયાણં ॥૧॥”

પે હૈ, જો અપની દરિદ્રતાક પ્રકાશાપૂર્વક અપને ટિયે દિયે જા રહે
દાનકી પ્રશંસા કરતા હૈ । કૃપણદાનકી પ્રશંસા હસ પ્રકારસે હૈ—

“ કિવિણેસુ દુમ્મણેસુ ય ” ઇત્યાદિ ।

જિનકા કાઈ પાપુ નહીં હૈ, આતઙ્કસે જો સદા યુક્ત વને રહસે હૈ,
શરીર જિનકા ઉપાગ્ર આદિસે રહિત હો રહ્યા હૈ, વેસે કૃપણ વુઁક્તિ
જનોકે લિયે જો વતા હૈ, વહુ અવનો દાન વગાકાતો હમ લોકમેં ફહરાતા હૈ ।

જો ધનીપક બ્રાહ્મણક લિયે ધિય જાતે વામકી પ્રશંસા કરતા હુઆ
મિશ્રાકે લિયે ભ્રમણ કરતા હૈ, વહુ બ્રાહ્મણ ધનીપક હૈ, બ્રાહ્મણ
દાન પ્રશંસા હસ પ્રકારસ હૈ—“ ભોગાણુગ્ગહકરિસુ ” ઇત્યાદિ ।

લોકકા અનુગ્રહ કર્મનેવાલે મુમિદેશોમેં બ્રાહ્મણોમેં દિવા તપા દાન

ને વાચક પોતાની હી તા પ્રશ્ન કરીને જાતા પાસે જાન નાજે છે અને
પોતાને આપવામાં આવતા દાનની પ્રશંસા કરે છે તેને ‘કૃપણવનીપક’ કહે
છે । કૃપણદાનની પ્રશંસા આ પ્રમાણે કરી છે—‘ કિવિણેસુ દુમ્મણેસુ ય ’
ઇત્યાદિ જેમને કોઈ બધુ નથી જેઓ સદા આતઙ્કથી યુક્ત જ રહ્યા કરે
છે તેમનું શરીર ઉપાગ્ર આદિથી રહિત હોય જેવા કૃપણ કુ જિવત્તોને
જે માણસ દાન આપે છે તે પોતાની યથાવગાકાને આ લોકમાં ફેરવાવે છે ।

જે ધનીપક (વાચક) જાણવને આપાતા દાનની પ્રશંસા કરી કરીને
જાતા પાસેથી દાનની વાચના કરે છે તેને જાણવ વનીપક કહે છે । જાણવને
આપાતા દાનની આ પ્રમાણે પ્રશંસા કરવામાં આવે છે ।

‘ ભોગાણુગ્ગહકરિસુ ” ઇત્યાદિ—

લોકોનું હરવાણુ કરનાર મુદેવેને (બ્રાહ્મણોને) આપવામાં આવતું દાન

છાયા—લોકાનુગ્રહકારિણુ ભૂમિદેવેષુ વહુકલે દાનમ્ ।

અપિ નામ બ્રહ્મચન્ધુષુ કિં પુનઃ પટ્કર્મનિરતેષુ । ૧॥ ૬૮ ॥

વહાવન્ધવઃ=જન્મના બ્રાહ્મણા ન તુ કર્મણા ।

તથા—શ્વવનીપકઃ—શ્વાર્થ વનીપકઃ । શ્વસ્યો દીયમાનસ્ય દાનસ્ય પ્રશંસા યથા—

“ અવિનામ હોજ્જ સુલભો, ગોનાર્ણં તળાઙ આહારો ।

છિચ્છિકારહયાણં, ન હુ સુલભો હોજ્જ સુળયાણં । ૧॥

કૈલાસભવણા એ, ગુહ્યગા આગયા મહિ ।

ચરંતિ જક્ષસ્ત્રુવેણં, પૂયાડપૂયા હિયાડહિયા ॥૨॥”

છાયા—અપિ નામ ભવેત્ સુલભો ગવાદીનાં તૃણાદિરાહારઃ ।

છિચ્છીકારહતાનાં ન સ્વલુ સુલભો ભવેત્ શુનકાનામ્ ॥૧॥

કૈલાસભવનાદેતે ગુહ્યકા આગતા મરીમ્ ।

ચરંતિ યક્ષરૂપેણ પૂજિતા અપૂજિતા દિતા અદિતાઃ । ૨॥ ૬૯ ॥

પશુત ફલગલા હોતા હૈ, જવ રેલી વાતહૈ તો ફિર પટ્કર્મ નિરત બ્રહ્મ-
ચન્ધુઓમેં દિયે ગયે દાનકી વાતહી કયા કહની ? યહાં બ્રહ્મચન્ધુસે જો
જન્મસે બ્રાહ્મણ હૈ, કર્મસે નહીં એસા બ્રાહ્મણ લિયા ગયા હૈ ।

જો કુત્તોંકે લિયે વનીપક હોતા હૈ, વહ શ્વવનીપક હૈ, વહ કુત્તોંકે
લિયે દિયે ગયે દાનકી પ્રશંસા હસ પ્રકારસે કરતા હૈ—“ અવિનામ હોજ્જ
સુલભો ” ૬૮ ॥

ગવાદિકોંકે લિયે તો તૃણાદિકા આહાર સુલભ હોતા હૈ, પરન્તુ
છિચ્છીકારસે હત હુર કુત્તોંકો આહાર સુલભ નહીં હોતા હૈ, યે કુત્તે,
કૈલાસભવનસે આયે હુર ગુહ્યક-દેવ વિશેષ હૈ । યે યક્ષરૂપસે પૃથ્વી

ધણુ જ ફલગથી ગણાય છે ’ તો પછી પટ્કર્મ નિરત બ્રહ્મચન્ધુઓને અર્પણ
કરાતા દાનના ફળની તો વાત જ શી કરવી । અહીં ભૂદેવ પદ જન્મે બ્રાહ્મણ
કર્મે બ્રાહ્મણ નહીં એવા બ્રાહ્મણનું વાચક છે. અને “ બ્રહ્મચન્ધુ ” પદ જન્મે
પણ બ્રાહ્મણ અને કર્મે પણ બ્રાહ્મણનું વાચક છે.

જે વનીપક કૃતરાઓને નિમિત્તે અપાતાં દાનની પ્રશંસા કરે છે તેને
‘ શ્વવનીપક ’ કહે છે કૃતરાને માટે અપાતાં દાનની આ પ્રમાણે પ્રશંસા
કરવામાં આવે છે.

ગાયઆદિને તો ઘાસચારા આદિ આહાર સરળતાથી પ્રાપ્ત થાય છે, પરંતુ
જેના પ્રત્યે લોકો નફરતથી બુદ્ધિ છે અને જેને લોકો હંડપૂત કરે છે એવા
કૃતરાઓને તો આહારપ્રતિ હર્ષભય થઈ પડે છે તે કૃતરાઓ કૈલાસ ભવન-
માંથી આવેલા શુદ્ધકો (દેવવિશેષો) છે. તેઓ યક્ષ રૂપે ભૂમિપર સંચરણ

ગુપ્તતા:-દેવનિદોષાઃ । एते पूजिता - भोजनादिना उत्कृता हिताय, अपूजिता अहिताय भवन्तीति भाव । तथा-भ्रमणवनीपकः निर्गन्धशाक्यतापस गैरिकामीश्वरूप पञ्चविधः भ्रमणाः । सत्र निर्गन्धो वनीपको न भवति । शाक्यतापस एव वनीपका उच्यन्ते । सत्र शाक्यभ्रमणवनीपकदानप्रशंसा यथा--

“ सुजति चित्तहम्मद्विषा य कारुणिय दानरुणो य ।

अविक्रामगरमेसु वि न नस्सप किंपुण खईसु ॥૧॥

छाया--सुजन्ति चित्तहर्म स्थिता इव कारुणिका दानरुचयश्च ।

अपि नाम कामगर्दमेसु अपि न नश्यति किं पुनर्यतिषु ॥૧॥ इति ।

कामगर्दमा:-विषय सोलुपस्थेषु दत्त दानमपि न नश्यति किं पुनर्यतिषु दत्तम् एवमेव तापमवनीपकादि दानप्रशंसाऽपि भगवन्मेति । सू० ૧૪॥

पर चलते रहते हैं । भोजनादिसे जो इनका सत्कार करता है, वह उसके हितके लिये होता है और जो इनका सत्कार नहीं करता है, वह उसके अहितके लिये होता है ।

भ्रमणवनीपक-निर्गन्ध, शाक्य, तापस, गैरिक और आजीवकके भेदसे पांच प्रकारका है, इनमें जो निर्गन्ध होता है, वह वनीपक नहीं होता है, किन्तु जो शाक्य आदि होते हैं, वे ही वनीपक कहलाते हैं । इनमें शाक्य भ्रमण वनीपक दान प्रशंसा इस प्रकारसे है--“ सुजति चित्तहम्मद्विषा ” इत्यादि ।

जो प्राणी विषयोंमें सोलुप हैं उनमें दिया गया दान भी जब मल्ट नहीं होता है, तो फिर यदि जनोंमें दिया गया दान निष्फल दैसे हो सक्ता है । इसी प्रकार दानकी प्रशंसा जानना चाहिये ॥सू० ૧૪॥

કરતા રહે છે એ વનાદિ વટે તેમનો સત્કાર કરનારનું કષ્ટાણ થાય છે, અને તેમને જે વનાદિ વટે તૃપ્ત નહીં કરનારનું અહિત થાય છે

આ પાંચ પ્રકાર છે--(૧) નિર્ગન્ધ, (૨) શાક્ય, (૩) તાપસ, (૪) ગૈરિક

(૧) નિર્ગન્ધ તેમથી જે નિર્ગન્ધ દોષ છે, તેઓ વનીપક

આદિજ વનીપક દોષ છે શાક્યભ્રમણ વનીપકને

આ પ્રમાણે કરવામાં આવી છે

સૂ. ૧૪ ઇત્યાદિ

નિષ્ફળને રેવામાં આવેલું દાન પણ એ નષ્ટ થતું નથી, તો

સતતજી રી કરવો ! આ પ્રમાણની દાનની

અનન્તરમુત્રે પશ્ચવિધો વનીપકઃ પ્રોક્તઃ । સ ચ સાધ્વાભાસો ન તુ સાધુઃ । સાધુઃ અચેલ એવં ભવતીતિ અચેલત્વસ્ય પશ્ચ પ્રશંસા સ્થાનાનિ પાઠ--

મૂલ્ય—પંચહિં ઠાણેહિં અચેલણ પસત્થે ભવદ્ધ, તં જહા—
અપ્પાપ્પડિલેહા ૧, લાઘવિણ પસત્થે ૨, રૂઘે વેસાણિણ ૩, તવે
અણુણ્ણાણ ૪, વિઝલે ઇંદિયનિગ્ગહે ૫ ॥ સૂ ૧૫ ॥

છાયા—પશ્ચમિઃ સ્થાનૈરચેલકઃ પ્રશસ્તો ભવતિ, તદ્વયા—અલ્પા પ્રતિલેખા ૧, લાઘવિરૂ-
પશસ્તમ્ ૨, રૂપં વૈશ્વાસિકમ્ ૩, તપઃ અનુજાતમ્ ૪, વિપુલં ઇન્દ્રિય નિગ્રહ ૫ ॥ ૧૫ ॥

ટીકા—‘પંચહિં ઠાણેહિં’ ઇત્યાદિ—

અચેલકઃ—ન સન્તિ ચેલાનિ=વસ્ત્રાણિ यस્ય સઃ । સ ચ જિનકલ્પિકસ્થવિર-
કલ્પિકભેદેન દ્વિવિધઃ । તત્ર જિનકલ્પિકસ્યાચેલત્વં ચેલાભાવાદેવ । સ્થવિર
કલ્પિકસ્તુ અત્યલ્પમૂલ્યકપરિમિતજીર્ણમલિન-વસ્ત્રધારકઃ । અચેલકત્વં ચાસ્ય

અનન્તર સૂત્રમેં જો પાંચ પ્રકારકે વનીપક કહે ગયે હૈં, સો વનીપક સાધ્વા ભાસરૂપ હોતે હૈં, સચ્ચે સાધુ નહીં હોતે હૈં । ક્યોંકિ સત્ય સાધુ જો હોતા હૈ, વહ તો અચેલહી હોતા હૈ, હસલિયે અથ સૂત્રકાર અચેલતાકે પાંચ પ્રશંસા સ્થાનોંકા કથન કરતે હૈં—

પંચહિં ઠાણેહિં અચેલણ ઇત્યાદિ સૂત્ર ૧૫ ॥

ટીકાર્થ—જિસકો વસ્ત્ર નહીં હોતે હૈં, વહ અચેલક હૈ, યહ અચે-
લક જિન કલ્પિક ઓર સ્થવિરકલ્પિકકે ભેદસે દો પ્રકારકા હોતા હૈ, હનમેં ચેલકે અભાવસે જિનકલ્પિકમેં અચેલતા હૈ । તથા જો સ્થવિર-
કલ્પિક હૈં, હનમેં જો અચેલતા આતી હૈ, વહ અત્યલ્પ મૂલ્યવાલે પરિ-

આગલા સૂત્રમા વનીપકના પાંચ પ્રકારનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. તે વનીપક સાચા સાધુ હોતા નથી—તેઓ તો સાધુ હોવાનો ભાસ જ કરાવે છે સાચો સાધુ તો અચેલ (વસ્ત્રરહિત) જ હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર અચેલતા પાંચ પ્રશંસાસ્થાનોનું કથન કરે છે.

“પંચહિં ઠાણેહિં અચેલર” ઇત્યાદિ—

જેમને વસ્ત્ર હોતાં નથી તેમને અચેલક કહે છે. તે અચેલકના નીચે પ્રમાણે બે પ્રકર કહ્યા છે—(૧) જિનકલ્પિક અને (૨) સ્થવિર કલ્પિક. ચેલ (વસ્ત્ર) ના અભાવને લીધે જિનકલ્પિકમાં અચેલતા કહી છે. સ્થવિર કલ્પિકમાં અત્યમૂલ્યવાળાં, પરિમિત, જીર્ણશીર્ણ અને મલિન વસ્ત્રોને ધારણ કરવાને

તપોમિર્ષદિષ્કરણમિવિમાત્ર, તદ્યોગાત્સાધુરપિ પારાશ્રિક્ષ । સ સંક્ષેપેણ દ્વિવિધઃ
આશાતના પારાશ્રિક્ષ, પ્રતિસેવનાપારાશ્રિક્ષ । તન્ન સ પ્રત્યક્ સ ચારિત્રા-
ચરિત્રમેદેન દ્વિવિધ, તથાદિ—સચરિત્ર આશાતનાપારાશ્રિક્ષ, અચરિત્ર આશાતના
પારાશ્રિકો યા । एवं सचरित्रः प्रतिसेवनापाराश्रिकः, अचरित्र प्रतिसेवनापारा-
श्रिको या । परिणाममपराधं चाभित्य कुत्रचित् केनाऽपि प्रतिसेवितेन पदेन सर्वं
चारित्रं श्रद्धयति, कुत्रचिद्देशतो श्रद्धयति । एवं कुत्रचित्तुल्यऽपराधेऽपि परिणाम
वशाद्धानाप्रकारेण प्रापश्चित्तदानं भवति, कुत्रचित्तुल्ये परिणामेऽपि अपराधनानात्वं

પારાશ્રિક્ષ હૈ, “ પારાશ્રિક ” यह दशावा प्रापश्चित्त है इसमें छिद्र क्षेत्र
काल-तप इनसे पाराश्री को याहर करना होता है इस कारण इस प्राप
श्चित्त के सम्बन्ध से साधु को भी पाराश्रिक कह दिया गया है, यह
संक्षेप से दो प्रकार का होता है—एक आशातना पाराश्रिक, और दूसरा
—प्रतिसेवना पाराश्रिक, इनमें प्रत्येक के भी दो दो भेद हैं, जैसे—सच-
रित्र आशातना पाराश्रिक, और अचरित्र आशातना पाराश्रिक, सचरित्र
प्रतिसेवना पाराश्रिक, और—अचरित्र प्रतिसेवना पाराश्रिक, परिणाम
और अपराध की अपेक्षा के अनुसार कहीं पर किसी भी प्रतिसेवित
हुए पद से सम्पूर्ण चारित्र से भ्रष्ट हो जाता है और कहीं पर देशतः
चारित्र भ्रष्ट होता है इसी तरह कहीं पर तुल्य अपराध के होने पर
भी परिणाम के अनुसार नाना प्रकार से प्रापश्चित्त दिया जाता है तथा
—कहीं पर तुल्य परिणाम के होने पर भी अपराध में भिन्नता अनेकता

અનુદાન કહે છે “ પારાશ્રિક ” આ દશમુ પ્રાપશ્ચિત્ત છે તેમાં છિદ્ર ક્ષેત્ર,
કાળ અને તપથી પારાશ્રિકને વાશવાનો કોષ છે તે કારણે આ પ્રાપશ્ચિત્તના
સબંધને અનુલક્ષીને સાધુને પણ પારાશ્રિક કહી દેવામાં આવે છે તે
પારાશ્રિકના બે પ્રકાર પડે છે—(૧) આશાતના પારાશ્રિક અને (૨) પ્રતિસેવના
પારાશ્રિક આ રીતેના પણ બન્ને લેઈ કહ્યા છે—સચરિત્ર આશાતના પારાશ્રિક
અને અચરિત્ર આશાતના પારાશ્રિક આ બે લેઈ આશાતના પારાશ્રિકના
સમજવા પ્રતિસેવના પારાશ્રિકના પણ નીચે પ્રમાણે બે લેઈ કહ્યા છે—(૧)
સચરિત્ર પ્રતિસેવના પારાશ્રિક અને (૨) અચરિત્ર પ્રતિસેવના પારાશ્રિક

પરિણામ અને અપરાધની અપેક્ષાએ ક્યારેક કોઈપણ પ્રતિસેવિત મેયેતા
પદથી સંપૂર્ણ ચારિત્રભ્રષ્ટ થઈ જાય છે, અને ક્યારેક દેશતઃ (અશતઃ) ચારિત્ર
ભ્રષ્ટ થઈ જાય છે આ રીતે ક્યારેક તુલ્ય અપરાધનો સદૃશ્ય દોવા છતાં
પણ પરિણામાનુસાર વિવિધ પ્રકારે પ્રાપશ્ચિત્ત આપવામાં આવે છે, તથા
ક્યારેક તુલ્યપરિણામનો સદૃશ્ય દોવા છતાં પણ અપરાધમાં ભિન્નતા દેખાવી

भवति । तीर्थंकर-प्रवचनश्रुता-ऽऽचार्य-गणधरमहर्द्विकानां आशातनाकारक आशात-
नापाराश्रिको भवति ।

उक्तञ्च—“ सव्वे आसायते पावइ पारंचियं ठाणं ”

छाया—सर्वान् आशातयन् प्राप्नोति पाराश्रिकं स्थानम्, इति ।

प्रतिसेवनापाराश्रिकस्त्रिविधः—दुष्टपाराश्रिकः प्रमत्तपाराश्रिकः, अन्योन्य-
पाराश्रिकश्चेति, उक्तञ्च—

“ पडिसेवणपारंची, तिविहो सो होइ आणुपुव्वीए ।

दुट्ठे य पमत्ते य, नायव्वो अन्नमत्ते य ॥ १ ॥

छाया—प्रतिसेवनापाराश्रिकस्त्रिविधः स भवति आनुपूर्व्या ।

दुष्टश्च प्रमत्तश्च, ज्ञातव्योऽन्योऽन्यश्चेति ॥ १ ॥ इति ।

पाराश्रिकत्रैविध्यमाह—दुष्टपाराश्रिकः, दुष्टो-दोषवान् पाराश्रिकः । प्रम-
त्तपाराश्रिकः, प्रमत्तः-पञ्चमनिद्राप्रमादवान्, स एव पाराश्रिकः । अन्योन्यं कुर्वन्
पाराश्रिकः, अन्योन्यं-परस्परं मैथुनं पाराश्रिकः पुरुषयुग्मरूप इत्यर्थः । तत्र—

आતી है तीर्थंकर प्रवचन श्रुत-आचार्य गणधर और महर्द्विक इनकी
आशातना करने वाला जीव आशातना पाराश्रिक होता है, कहा भी
है—“ सव्व आसायंते पावइ पारंचियं ठाणं—” प्रतिसेवना पाराश्रिक तीन
प्रकार का होता है, एक दुष्टपाराश्रिक दूसरा प्रमत्तपाराश्रिक, और
तीसरा अन्योन्यपाराश्रिक, कहा भी है—“ पडिसेवणपारंची तिविहो—”
इत्यादि, जो दुष्ट दोषवाला होता है वह दुष्टपाराश्रिक है, जो पांचवां
निद्रारूप प्रमादवाला होता है वह प्रमत्तपाराश्रिक है, तथा-परस्परमें मैथुन
करता है वह-अन्योन्यपाराश्रिक है । इनमें जो दुष्ट पाराश्रिक है वह
कषाय विषय की अपेक्षा से दो प्रकार का है, तथा-कषायदुष्टपाराश्रिक

હોય છે તીર્થંકર-પ્રવચન, શ્રુત, ગણધર, આચાર્ય અને મહર્દ્વિકની આશા
તના કરનારો એ આશાતના પારાશ્રિક હોય છે કહ્યું પણ છે કે—

“ સવ્વ આસાયંતે પાવઈ પારેંચિય ઠાણં ” ઇત્યાદિ

પ્રતિસેવના પારાશ્રિક ત્રણ પ્રકારના હોય છે—(૧) દુષ્ટ પારાશ્રિક (૨)
પ્રમત્ત પારાશ્રિક અને (૩) અન્યોન્ય પારાશ્રિક કહ્યું પણ છે કે—

‘ પહિસેવણપારંચી તિવિહો ’ ઇત્યાદિ—

જે દુષ્ટ (દોષવાળો) હોય છે તેને દુષ્ટ પારાશ્રિક કહે છે જે પંચમ
નિદ્રારૂપ પ્રમાદવાળો હોય છે તેને પ્રમત્ત પારાશ્રિક કહે છે, તથા જે પરસ્પરમા
મૈથુન (અગ્રહ) નું સેવન કરે છે તેને અન્યોન્ય પારાશ્રિક કહે છે. આ ત્રણ
પ્રકારના પારાશ્રિકોમાંથી જે દુષ્ટ પારાશ્રિક છે તે કષાય-વિષયની અપેક્ષાએ
બે પ્રકારનો છે—(૧) કષાય દુષ્ટ પારાશ્રિક અને (૨) વિષય દુષ્ટ પારાશ્રિક,

સાધ્યાઃ) સંપ્રાપ્તિ યો નિગચ્છતિ પાપઃ । સર્વજિનાનામાર્યાઃ સંઘો વા આશા-
તિતસ્તેન ॥૧॥ ઇતિ । एतादृशो मुनिर्द्रष्टुमप्ययोग्यः अनन्तसंसारभ्रमणहेतुकर्म-
कारित्वात् , उक्तञ्च—

“ પાવાણ પાવયરો દિટ્ઠિપ્પાસેવિ સો ન કપ્પહ ડ ।

જો જિણ પુંગવવેસં નમિઝ્ઞણ તમેવ ધરિસેઙ્ગ ॥ ૧ ॥

સંસારમણવયગ્ગં, જાહજરામરણવેયણાય ડર ।

પાવમલપહલછન્ના, ભમંતિ મુદ્દાધરિસણેણં ॥

છાયા-પાપાનાં પાપતરો દટિસ્પર્શેઽપિ રા ન કલ્પતે તુ ।

યો જિનપુદ્ગવવેપં, નત્થા તમેવ ધર્પતિ ॥ ૧ ॥

સસારમનવદગ્ર જાતિજરામરણવેદનાપ્રચુરમ્ ।

પાપમલપટલચ્છન્ના ભ્રમન્તિ મુદ્રા (વેપ) ઘર્પણેન ॥ ૨ ॥ ઇતિ ।

પરપક્ષકપાયદુષ્ટઃ—રાજમારકઃ, પરપક્ષવિષયદુષ્ટઃ રાજાગ્રમહિપીગામી રાજા-
ગ્રમદીપ્યા સહ કામભોગાભિલાષુક इत्यर्थः । प्रमत्तपाराश्रिको यथा—पञ्चमनिद्रा

વાલી આર્યા કે સાથ મૈથુન કરતા હૈ વહ મુનિ પાપી હૈ ઓર-એસે ઉસ
મુનિ કે દ્વારા સર્વ જિનેન્દ્રોં કી આર્યાઈ આશાતિત કી હુઈ માની જાતી
હૈ, તથા સંઘ મી ઉસસે આશાતિત હુવા સમજા જાતા હૈ એસા મુનિ
દેખને કે યોગ્ય મી નહીં રહતા હૈ ક્યોં કિ-અનન્ત સંસાર મેં ભ્રમણ
કરાને વાલે કર્મ કા વહ કર્તા બન ગયા હોતા હૈ । કહા મી હૈ-“પાવાણ
પાવયરો-” હત્યાદિ, જો મુનિ રાજ મારક હોતા હૈ વહ પરપક્ષકપાય
દુષ્ટ હૈ તથા-પરપક્ષવિષય દુષ્ટ વહ હૈ જો રાજા કી પટ્ટરાની કે સાથ
વિષયભોગ કરને કા અભિલાષી હોતા હૈ, પ્રમત્તપારાશ્રિક વહ મુનિ હૈ
જો સ્થાનદ્વિનિદ્રાવાલા માંસાશી હોતા હૈ એસા વહ મુનિ સદ્ગુણોજ્વલ

મુનિવેષધારી જે મુનિ મુનિવેષધારી આર્યા (સાધવી) ની સાથે મૈથુન
કરે છે, તે મુનિ પાપી છે. એવા મુનિ દ્વારા જિનેન્દ્રોની સઘળી આર્યાઓની
આશાતના કરવામાં આવી છે, એવું માનવામાં આવે છે એટલું જ નહીં પણ
તેના દ્વારા સઘની પણ આશાતના થઈ ગણાય છે. એવો મુનિ દર્શન કરવાને
પાત્ર પણ ગણાતો નથી, કારણ કે અનંત સંસારમાં ભ્રમણ કરાવનાર કર્મોના
કર્તા તે બની ગયો હોય છે કહ્યું પણ છે કે-“પાવાણ પાવયરો” ઇત્યાદિ.

જે મુનિ રાજભારક હોય છે તેને પરપક્ષ કપાય દુષ્ટ કહે છે. જે મુનિ
રાજની પટ્ટરાણીની સાથે વિષયભોગ સેવવાનો અભિલાષી હોય છે, તેને
પરપક્ષ વિષય દુષ્ટ કહે છે

પ્રમાદવાન માંસાશ્નિનમ્નિતમ્નિ, અય ચ સર્વગુણોઽપિ ત્યાજ્ય એવં । અન્યોન્ય કુર્ષન્ પારાશ્નિક અન્યોન્ય પુરુષ પુરુષેણ સહ મુલ્તપાપુપયોગત અન્ને વા મૈથુન કુર્ષન્ પારાશ્નિકો મયતિ । અસ્ય દીક્ષાદાને વિવેક કાર્યઃ, ઉક્તચાત્ર—

“ આસયપોસયસેવી, કેવિ મળ્સા કુષેયગા હૈતિ ।

તેસિં ષેસવિષેગો ” છાયા—આસ્યકપોપકસેવિનઃ ક્ષેઽપિ મન્નુપ્યા દ્વિવેદકા મવન્તિ તેષાં ષેપવિષેકઃ (કાર્યઃ) રૂતિ । ૨। ‘ તમો અમ વદ્વપ્યા ’ રૂત્યાદિ । ત્રય અનવસ્થાપ્યાઃ, અવસ્થાપયિતુ મહાવ્રતેષુ સ્થાપયિતુ યોગ્યા અવસ્થાપ્યા, ન અવસ્થાપ્યા અનવસ્થાપ્યાઃ—આસેવિતાવિષારવિષ્ણવાઃ સન્તોઽનાચરિત્તપોવિષ્ણેપાસ્તરોપોપરતા અપિ મહાવ્રતેષુ નાવસ્થાપ્યતે, આચરિત

હોને પર ખી સ્થાજ્યકોટિ મેં હી કહા ગયા હૈ, અન્યોન્યપારાશ્નિક ઘટ્ટ હોતા હૈ જો દૂસરે પુરુષ કે સાથ મુખ્ય મેં પાયુ-ગુદા મેં કામક્રીડા કરતા હૈ, અથવા જો કામસેવન કે અગ્ન નહીં હૈં ઇનમેં કામસેવન કરતા હૈં એસે વા તો દીક્ષા દેને મે વિવેક કર્તવ્ય કહા ગયા હૈ । કહા ખી હૈ— “ આસયપોસય સેવી—” રૂત્યાદિ, “ તમો અણવદ્વપ્યા—” રૂત્યાદિ, જો મહાવ્રતો મેં સ્થાપના કે યોગ્ય હોતે હૈં ષે અવસ્થાપ્ય હૈં, ઓર જો એસે નહીં હોતે હૈં—ષે અનવસ્થાપ્ય હૈં, ષે અનવસ્થાપ્ય અતિચાર વિશેષોં કા આસેવન કરતે રહતે હૈં ઓર તપોવિશેષ કો આચરણ કરને કી ઓર ધ્યાન સે રહિત હોતે હૈં એસે ષે જીવ યદિ અતિચારરૂપ દોષોં સે ઉપરત હો સી જાયે તો ખી મહાવ્રતોં મ ષે અવસ્થાપિત નહીં રૂતિયે જાતે હૈં,

પાંચમી નિદ્રા પ્રમત્ત મંસ બક્ષી મુનિનેપ્રમત્ત પારાશ્નિક કહે છે જોવો મુનિ સમુલ્લેખવત્ત દોવા છતાં પણ ત્યાજ્ય કોટિમાં જ મૂકી શકાય છે કામસેવનના અભિન દોષ જોવાં અભોમાં અન્ય પુરુષની સાથે કામસેવન કરનાર મુનિને અન્યોન્ય પારાશ્નિક કહે છે જોવા મુનિને પણ દીક્ષા દેવામાં પણ વિવેક રાખવાનું કહ્યું છે કહ્યું પણ છે કે—“ આસય પોસયસેવી ” રૂત્યાદિ

“ તમો અણવદ્વપ્યા ” રૂત્યાદિ—

જે મુનિજો મહાવ્રતોમાં સ્થાપનાને યોગ્ય દોષ છે, તેમને અવસ્થાપ્ય કહે છે પરન્તુ જે મુનિજો જોવા કોતા નથી તેમને અનવસ્થાપ્ય કહે છે જે અનવસ્થાપ્ય મુનિજો અતિચાર વિશેષોનું સેવન કરતા રહે છે અને તપો વિશેષનું આચરણ કરવા પ્રત્યે ધ્યાન રાખવાથી રહિત દોષ છે જોવા તે સાધુજો અતિચાર રૂપ દોષોથી ઉપરત (તે પ્રકારના દોષોનું સેવન કરતા અંદી જનુ તે) થા જાય તો પણ મહાવ્રતોમાં તેમને અવસ્થાપિત કરી

તપોવિશેષારતુ પુનર્દીક્ષાયોગ્યા ભવન્તીતિ ભાવઃ । તાનેવાહ-સાધર્મિકાણાં સ્તૈન્યં કુર્વન્ સાધર્મિકાઃ-એકમાણ્ડલિકાઃ સામ્ભોગિકામુનયઃ તેષાં તત્સત્ત્વોત્કૃષ્ટોપધેઃ શિષ્યાદેર્વાર્ચૈયં કુર્વન્, તાન્ પ્રતિ પ્રદિષ્ટચિત્તો વા । અન્યધાર્મિકાણાં સ્તૈન્યં કુર્વન્ અન્યસાધર્મિકા-શાક્યાદયો ગૃહસ્થા વા તેષાં તત્સત્ત્વોપધ્યાદેશ્ચૈયં કુર્વન્ । તથા-હસ્તાતાલ દદત્, નસ્તેનાડડતાલનમાતાલન હસ્તાતાલસ્તં દદત્-ચષ્ટિમુષ્ટિ-લકુટાદિર્મિર્મરણાદિનિરપેક્ષઃ સ્વસ્ય પરસ્ય વા પ્રહરન્ ઘોરપરિણામહત્યર્થઃ અનવસ્થાપ્યો ભવતીતિ પ્રક્રમઃ ૪ ॥ સુ. ૬૯ ॥

પરન્તુ જ્યેષ્ઠે તપોવિશેષ કો આચરિત કરને લગતે હૈં તો હી યે પુનઃ દીક્ષા કે યોગ્ય હો જાતે હૈં હસી વાત કો સૂત્ર તાર ને હસ પ્રકાર સે કહા હૈં જો એક માણ્ડલિક સામ્ભોગિક મુનિ હૈં, યે સાધર્મિક કહે ગયે હૈં-એસે સાધર્મિક મુનિજનોં કી ઉત્કૃષ્ટ ઉપધિકોં અથવા-અનકે શિષ્યા-દિકોં કો ચુરાને વાલા અથવા અનકે પ્રતિ પ્રદિષ્ટચિત્ત રાખને વાલા મુનિ સાધર્મિકોં કી ચોરી કરને વાલા અનવસ્થાપ્ય કહા ગયા હૈં । અન્ય સાધર્મિક સે યહાં શાક્ય આદિ અથવા-ગૃહસ્થજન ગૃહીત હુવે હૈં સો અનકી જિસ વસ્તુ પર સત્તા હૈં અસ વસ્તુ કો ઉપધિ આદિ કો ચુરાને વાલા મુનિ અનવસ્થાપ્ય કે દ્વિતીય ભેદ મેં પરિગણિત હુવા હૈં હસ્તાતાલ કો દેનેવાલા, અર્થાત્-ચષ્ટિ સે મુષ્ટિ સે, લકુટ (લકડી) આદિ સે અપને

શકાતા નથી પરતુ જ્યારે તેઓ તપોવિશેષને આચરવા માંડે છે, ત્યારે જ તેમને ફરીથી દીક્ષા આપવાને યોગ્ય ગણી શકાય છે. એ જ વાતને સૂત્રકારે આ રીતે કહી છે

હવે અનવસ્થાપ્યના ત્રણ પ્રકારનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવે છે—જે સાધુઓ એક જ મહાગ્રામ (સમૂહમાં) સામ્ભોગિક મુનિરૂપે રહે છે તેમને સાધર્મિક કહે છે એવા સાધર્મિક મુનિઓની ઉત્કૃષ્ટ ઉપધિ (પાત્ર, વસ્ત્ર આદિ) ની ચોરી કરનારા, અથવા તેમના શિષ્યાદિકોની ચોરી કરાવનારા, અથવા તેમના પ્રત્યે પ્રદિષ્ટ ચિત્ત રાખનારા મુનિને સાધર્મિકોની ચોરી કરનારો અનવસ્થાપ્ય કહ્યો છે

અન્ય સાધર્મિક પદ્ધતી અહીં શાક્ય આદિ અથવા ગૃહસ્થજન ગૃહીત થયેલ છે આ પ્રકારના અન્ય સાધર્મિકની માલિકીની જે વસ્તુ છે તેની ચોરી કરનાર સાધુને અહીં અનવસ્થાપ્યના બીજા ભેદ રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે

(૩) અનવસ્થાપ્યનો ત્રીજો ભેદ—હાથથી તાલન કરનાર, સોટી, લાકડી, સુટી આદિ વડે-મરણની પરવા કર્યા વિના-પોતાની જીપર કે ગળાની કીતની

પૂર્વોક્તાનિ પ્રાયશ્ચિતાનિ પ્રમજ્યાદાયકાનાં મવન્તિ । પ્રમજ્યાદાન ચાયોગ્યા શિરસ્ય યોગ્યાનાં વિધેયમિતિ તદયોગ્યાન્ યુષ્પદ્ધકેન નિરૂપયત્તિ—

મૂલ્ય-તઓ ણો કપ્પતિ પઠ્ઠાવેત્તણ, ત જહા પઢણ, વાહણ (વાહિણ) કીવે ૧ । ઇવ મુઢાવિત્તણ, સિલ્લાવિત્તણ, ઉવ ટ્ઠાવિત્તણ ૪, સમુજિત્તણ ૫, સલાસિત્તણ ૬ ॥ સૂ. ૭૦ ॥

છાયા-ત્રયો નો કરપ-તે પ્રમાપયિતુ, તથા-પઞ્ચકઃ, વાતિક (ધ્યાપિતઃ) કલીક ૧ । ૧ । ઇવ મુઢયિતુ ૨, શિલ્પયિતુ ૩, ઉપસ્થાપયિતુ ૪, સમોજયિતુ ૫, સલાસયિતુ ૬ ॥ સૂ. ૭૦ ॥

મરણની પરવાહ નહીં કરતા પુષ્પા અપને ઊપર યા પરકે ઊપર પ્રહાર કરને થોલા અનવસ્થાપ્ય કે તૃતીય એક મેં પરિણમ કિયા ગયા હૈ એસા વ્યક્તિ ધોર પરિણામો થાલા હોતા હૈ ॥ સૂ. ૬૯ ॥

પે પૂર્વોક્ત પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રમજ્યાદાયકોં કો હોતે હૈ, અતઃ પ્રમજ્યાદાન અયોગ્યોં કો છોડકર યોગ્યોં કો કિયા જાતા હૈ હસલિયે ઘૂલકાર સૂત્ર પટ્ટક સે અયોગ્યોં કા નિરૂપણ કરતે હૈ “તઓ ણો કપ્પતિ પઠ્ઠાવે ત્તણ”-” હત્યાદિ

સૂત્રાર્ય-પે ત્રીન પ્રમજ્યા દેને કે યોગ્ય નહીં હોતે હૈ, કૈસે-૧) પઞ્ચક દિતીય વાતિક ઓર તૃતીય વ્યાધિત, હસી પ્રકાર સે પે મુઞ્ચિત કરને કે લિયે, શિક્ષા પ્રદણ કરને કે લિયે, મહાવ્રતોં મેં અવસ્થાપિત કરને કે લિયે, ઉપધિ-આહાર આદિ સે સાથ મેં સમોગ કરને કે લિયે ઓર -અપને પાસ રાવને કે લિયે યોગ્ય નહીં હોતે હૈ ।

ઉપર પ્રકાર કરનાર સાધુને અનવસ્થાપ્યના ત્રીજા લેખમાં મૂકી ચકાસ છે, એવો સાધુ હોર પરિણામિવાળો હોય છે ॥ સૂ. ૬૯ ॥

સૂત્રાર્ય-પ્રમજ્યાદાયકોને આ પૂર્વોક્ત પ્રાયશ્ચિત્ત લાગે ॥ તેથી અયોગ્ય અધિભોને પ્રમજ્યા અપાતી નથી પણ યોગ્ય અધિભોને ન પ્રમજ્યા અપાય ॥ તેથી હવે સૂત્રકાર નીચેનાં ૬ સૂત્રો દ્વારા એવી અયોગ્ય અધિભોનું નિરૂપણ કરે છે- ‘તઓ ણો કપ્પતિ પઠ્ઠાવેત્તણ’-” હત્યાદિ—

સૂત્રાર્ય-નીચે જતાવેલી ત્રણ પ્રકારની અધિભો પ્રમજ્યા દેવાને પાત્ર અપાતી નથી-(૧) પ. ૫૭, (૨) વાતિક (૩) આધીત. આ ત્રણે પ્રકારના મનુષ્યો ઊંઠેલ કરવાને યોગ્ય અપાતા નથી, શિક્ષાપ્રદણ કરવાને યોગ્ય અપાતા નથી, મહા વ્રતોમાં સ્થાપિત કરવાને યોગ્ય અપાતા નથી ઉપધિ-આહાર આદિની અપેક્ષાએ સાંભળિજ કરવાને યોગ્ય અપાતા નથી અને પિતાની સાથે રાખવાને યોગ્ય પણ અપાતા નથી.

ટીકા—‘ તઓ ’ इत्यादि । सूत्रपट्टकं सुगमं, नवरं-त्रयः प्रव्राजनयोग्या न भवन्ति । तानेवाह — पण्डकः — पण्डकलक्षणपट्टकयुक्तो नपुंसकविशेषः, तल्लक्षणानि यथा—

“ महिलासहावो १ सरवन्नमेओ २, मेंढ महंतं ३ मउई य वाया ४ ।

સસદર્શમુત્ત ૫ મફેનગં ૬ ય, ઇયાણિ છપ્પંડગલક્ષણાણિ ॥ ૧ ॥

છાયા-મહિલાસ્વભાવઃ ૧ સ્વરવર્ણમેદઃ ૨, મેદ્ મહત્ ૩ મટ્ટી ચ વાચા ૪ ।

સશબ્દકં મૂત્ર ૫ મફેનકં ૬ ચ, એતાનિ પટ્ પણ્ડકલક્ષણાણિ ॥ ૧ ॥ इति ।

इत्यादि लक्षणैर्विज्ञाय पण्डकः परिहर्त्तव्यः । वातोऽस्यास्तीति वातिकः—

વાતપ્રકૃતિકઃ, અયં સ્વપરરૂપેણ કેનાપિ નિમિત્તેન વેદોદયં થતું ન શ્વનોતિ

टीकार्थ-सूत्रकार ने “ ये तीन प्रव्राजना प्रव्रज्या योग्य नहीं होते हैं ” ऐसा जो कहा है इसी बात को यहां स्पष्ट किया गया है, पाण्डक-एक जाति का नपुंसकविशेष होता है इसके ६ लक्षण इस प्रकार से कहे गये हैं—“ महिलासहावो ” इत्यादि, इसका स्वभाव स्त्री के स्वभाव जैसा होता है स्वर में और वर्ण में इसको मेद होता है इसका लिङ्ग बड़ा होता है इसकी वाणी पतली होती है पेशाब करते समय इसकी पेशाब में से शब्द निकलता है, और-इसकी पेशाब में फेन नहीं उठता है ये पण्डक के ६ लक्षण हैं । इन लक्षणों से पण्डक को जानकर उसे दीक्षा नहीं देनी चाहिये ? वात जिसको होता है वह वातिक वान प्रकृतिवाला है, वह वातिक स्व पर रूप से किसी निमित्त से वेदोदय को धारण करने में समर्थ नहीं हो

टीકાર્થ—“ આ ત્રણ પ્રકારના મનુષ્યો પ્રવ્રજ્યા આપવા યોગ્ય ગણાતા નથી, એવું સૂત્રકારે જે વિધાન કર્યું છે, તેનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—(૧) પડકને પ્રવ્રજ્યા આપવા યોગ્ય ગણ્યો નથી પડક એક જાતનો નપુસક વિશેષ હોય છે, તેના છ લક્ષણ નીચે પ્રમાણે કહ્યાં છે—

“ महिला सहावो ” इत्यादि—

તેનો સ્વભાવ સ્ત્રી જેવો હોય છે, તેના સ્વરમાં અને વર્ણમાં ભેદ હોય છે, તેનું લિંગ મોટું હોય છે, તેની વાણી પાતળી હોય છે, પેશાબ કરતી વખતે તેના પેશાબમાંથી વિશિષ્ટ અવાજ નીકળે છે અને તેના પેશાબમાં શીણ વળતા નથી આ છ લક્ષણોથી પડકને ઓળખી શકાય છે, અને આ લક્ષણોથી તેને ઓળખી લઇને તેને પ્રવ્રજ્યા આપવી ભેદભરે નહીં.

(૨) વાતિકને પણ દીક્ષા આપવાનો નિષેધ કરમાવ્યો છે વાત-વાયુથી પીડાતી વ્યક્તિને વાતિક કહે છે આ વાતપ્રકૃતિવાળો મનુષ્ય ન્યા સુધી તેની પ્રતિસેવા કરી લેતો નથી, ત્યા સુધી સ્વ-પર રૂપ કોઈ પણ નિમિત્તે

યાવત્તસ્ય પ્રતિસદ્ધા કૃતા ન સ્પાત્, નિરુદ્ધવેદોઽસૌ નપુ સક્તયા પરિણમતિ, एता
 दसः पुरुषो बानिक कथ्यते । यद्वा—‘ व्याधित ’ इति पक्षव्याधिपुक्तः, चिरका
 लिक राजपद्मादि व्याधिसम्पन्न इत्यर्थः, क्लीब—‘ त्रिष संवितुमसमर्थ’, स चतु
 र्विधः—दृष्टिक्लीब, शब्दक्लीब, आदिग्वक्लीब, निमन्त्रणक्लीबश्चेति । तत्र यो
 चित्स्त्रायवस्यां स्त्री दृष्टै स्वलति स दृष्टिक्लीब । य कस्यापि पुमस्य
 सुरतसमयसमुद्भूतसीत्कारादि शब्द—भ्रमणमाशेग स्वलति ॥ शब्दक्लीबः २ ।

સકતા હૈ, જય તક કિ યહ उसकी प्रतिलेखन न करछे यदि यह निरुद्ध
 वेदवाला हो जाता है तो यह नपुंसकरूप से परिणम जाता है ऐसा पुंस्
 वातिक कहा गया है, यह भी दीक्षा देने को योग्य नहीं माना गया है।
 यद्वा—“ वाह्य वाह्य ” की संस्कृतजाया व्याधित भी हो सकती है,
 इस पक्ष में जो व्याधि से चिरकालिक राजपद्मा आदि व्याधि से
 सम्पन्न होता है यह व्याधित है, ऐसा व्याधित भी दीक्षा देने योग्य
 नहीं माना गया है—? जो स्त्री को सेवन करने में असमर्थ होता है यह
 क्लीब है यह क्लीब चार प्रकार का होता है, एक दृष्टिक्लीब, दूसरा
 शब्दक्लीब, तीसरा आदिग्वक्लीब, और चौथा निमन्त्रणक्लीब इनमें
 जो नग्न अथवावाली वस्त्र से रहित स्त्री को देखते ही स्वलित हो
 जाता है यह दृष्टिक्लीब है । जो सुरतक्रिया में लवलीन स्त्री पुरुष के
 सुरत समय के सीत्कार आदि शब्द को सुनते ही स्वलित हो जाता
 है, वह शब्दक्लीब है २ जो स्त्री को आलिङ्गन करते ही स्वलित हो

કરીને વેદોદ્ધવને ધારણ કરવાને અમથ કોઈ શક્તો નથી. જો તે નિરુદ્ધ વેદ
 વાળો થઈ જાય છે તો તે નપુંસક રૂપે પરિણમી જાય છે. જોવા પુરુષને
 વાતિક થયો છે અને તેને દીક્ષા દેવાને યોગ્ય ગણ્યો નથી.

અથવા—“ વાહ્ય-વાહ્ય ” આ પદની સંસ્કૃત છાયા વ્યાધિત પણ થઈ
 શકે છે જે સિરકાળથી લગભગ વ્યાધિ નથી થી પીડાતો હોય તેને વ્યાધિત
 કહે છે, જોવી વ્યાધિત વ્યક્તિને પણ દીક્ષા આપવાને યાત્ર ગણાવી નથી.

કલીબને પણ દીક્ષા આપવાનો નિષેધ છે જે મનુષ્ય સ્ત્રીનું સેવન કર
 વાને અસમર્થ હોય છે તેને કલીબ કહે છે તે કલીબ ચાર પ્રકારના કલા
 છે—(૧) દૃષ્ટિ કલીબ, (૨) શબ્દ કલીબ (૩) આદિગ્વ કલીબ અને (૪) નિમ
 ત્રિત કલીબ. નમ અવસ્થાવાળી (વસ્ત્રરહિત) સ્ત્રીને દેખતાંની સાથે જ બેના
 વીર્યનું સ્ખલન થઈ જાય છે તેને દૃષ્ટિ કલીબ કહે છે કામકીદારમાં રત થયેલા
 સ્ત્રી-પુરુષોના સીત્કાર આદિ શબ્દોને સાંભળતા જ બેના વીર્યનું સ્ખલન થઈ

યઃ સ્ત્રિયા-આલિંગનમાત્રેણ સ્વલતિ સ આદિગ્ધક્લીવઃ ૩ । યઃ સ્ત્રીજનસ્ય નિમન્ત્રણમાત્રેણ સ્વલતિ સ નિમન્ત્રિતક્લીવ ઇતિ ૪ । ચતુર્વિધોઽપ્યય વેદનિરોધેન નપુંસકત્વં પ્રાપ્નોતીત્યતઃ કલીવત્ત્વેન કથ્યતે, વાતિક્વલીવયોસ્તુ પરિજ્ઞાનં તન્મિત્રાદીનાં સમીપે શ્રવણાદેવ ભવતીતિ । કિમર્યમેતે પ્રવ્રાજનયોગ્યા ન સન્તિ ? ઇતિ ચેદાહ-એતે ચોત્કટવેદવત્ત્વાત્ નિર્વલમનોવૃત્તિકત્વાચ વ્રતપાલનાસમર્થા ભવન્તિ, પ્રવ્રજ્યા પ્રદાતુરપ્યાજ્ઞાભજ્ઞદોષપ્રસજ્ઞ ઇતિ પ્રવાજયિતું ન કલ્પન્તે, ઉક્તશ્ચ-

“ જિણવયણે પઢિકુટ્ટ, જો પવ્વાવેહ્ લોભદોસેણં ।

ચરણદ્વિઓ તવસ્સી, લોવેહ્ તસેવ ઉ ચરિત્તં ॥ ૧ ॥ ”

છાયા-જિનવચને પ્રતિકુટ્ટં (નિષિદ્ધં) યઃ પ્રવ્રાજયતિ લોભદોષેણ ।

ચરણસ્થિતસ્તપસ્વી, લોપયતિ તદેવ ચારિત્રમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

જાતા હૈ, વહ આદિગ્ધક્લીવ હૈ ૩ તથા જો સ્ત્રી કે બુલાને માત્ર સે હી સ્વલિત હો જાતા હૈ, વહ નિમન્ત્રિતક્લીવ હૈ ૪ ચારોં પ્રકાર કે યે કલીવ વેદનિરોધન સે નપુંસકતા કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈં । અતઃ યે કલીવ રૂપ સે કહ દિયે ગયે હૈં । વાતિક ઔર વલીવ કા પરિજ્ઞાન ઉનકે મિત્રાદિકોં કે પાસ મેં સુનને સે હી હો જાતા હૈ તો ફિર યે ક્યોં પ્રવ્રજ્યા કે યોગ્ય નહીં હૈં ૩ તો હસકા ઉત્તર એસા હૈ કિ યે ઉત્કટવેદ વાલે હોતે હૈં અતઃ હનકી મનોવૃત્તિ નિર્વલ હોને કે કારણ યે વ્રતપાલન કરને મેં અસમર્થ રહતે હૈં, તથા એસોં કો પ્રવ્રજ્યા દેને કી આજ્ઞા ભી નહીં હૈ, અતઃ જો હન્હે પ્રવ્રજ્યા દેગા, ઉસે ભી આજ્ઞાભંગ કરને કા દોષ લગેગા, હસીલિયે યે પ્રવ્રજ્યા દેને કે યોગ્ય નહીં કહે ગયે હૈં । કહા ભી હૈ-“ જિણવયણે પઢિકુટ્ટં ” ઇત્યાદિ, તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈ કિ જિન વચન મેં જિન્હે

બળ છે તેને શબ્દ કલીબ કહે છે સ્ત્રીને આલિંગન કરતાં જ જેના વીર્યનું સ્ખલન થઈ બળ છે તેને આદિગ્ધ કલીબ કહે છે કેઈ સ્ત્રીના નિમન્ત્રણ બોલાવવા માત્રથી જેનું સ્ખલન થઈ બળ છે તેને નિમન્ત્રિત કલીબ કહે છે ઉપર્યુક્ત ચારે પ્રકારના કલીબ વેદનિરોધનથી નપુંસકતા પ્રાપ્ત કરી લે છે, તેથી તેમને કલીબરૂપે પ્રતિપાદિત કરવામાઆવ્યા છે

પ્રશ્ન—વાતિક અને કલીબનું પરિજ્ઞાન તેમના મિત્રાદિકો દ્વારા પણ થઈ શકે છે તેમને શા કારણે પ્રવ્રજ્યા આપવા યોગ્ય ગણ્યા નથી ?

ઉત્તર—તેઓ ઉત્કટ વેદવળા હોય છે, તેથી તેમની મનોવૃત્તિ નિર્બળ હોય છે. નિર્બળ મનોવૃત્તિને કારણે તેઓ વ્રતપાલન કરવાને સમર્થ હોતા નથી તથા એવાં મનુષ્યોને પ્રવ્રજ્યા દેનારને પણ શાસ્ત્રાજ્ઞાનો ભગ કરવાનો દોષ લાગે છે, તેથી તેમને પ્રવ્રજ્યા દેવી બેઠએ નહીં કહ્યું પણ છે કે—

“ જિણવયણે પઢિકુટ્ટ

અમ્ર ત્રિસ્થાનકાનુરોધાત્મય એવ સુદ્ધાતે, અન્યથા તુ-વિશ્વતિ-સ સ્વકા બના
મત્રાજયિત્વમયોગ્યા મવન્તિ, તથાદિ—

“ વાલે ૧ યુદ્ધે ૨ નપુ સે ૩ ય, જન્મે ૪ કોઢે ૫ વાઈ ૬ (વાદિવ) ।

તથે ૭ રાપાવગારી ૮ ય, ઉમ્મસે ૯ ય અત્મણે ૧૦ ॥ ૧ ॥

દાસે ૧૧ દુદ્ધે ૧૨ ય મૂઢે ૧૩ ય, અણત ૧૪ જુંગિણ ૧૫ ઇયં ।

તદ્દાણ ૧૬ ય ૧૭, મયણ સંહિણિફેટિયા ૧૮ ઇયં ॥ ૨ ॥

ગુલ્મિણી ૧૯ ચાલવચ્છા ૨૦ ય, પખ્ખાવેઠ ન કપ્પાઈ ।

છાયા-પાલો પ્રદો નપુ સકલ્લ, જઢઃ વલ્લીવલ્લ વાતિકાઃ (સ્પ્યાધિતઃ) ।

સ્તેનો રામાવગારી ય, ઉમરાચા દચ્છન ॥ ૧ ॥

દાસો દુદ્ધચ મૂઢચ, પાખાચો જુક્કિત્ત ઇતિ ચ ।

ઉદ્દપદપચ મૃતકઃ ક્ષેસ નિપ્પેટિત ઇતિ ચ ॥ ૨ ॥

ગુલ્મિણી ચાલવસા ચ, મત્રાજયિત્વ ન વસ્પસે ॥ ઇતિ ।

તત્ર — વાલ — અષ્ટવર્ષાન્ન્યુનઃ ૧ । દુદ્ધ — પટ્ટિવર્ષાદધિકઃ ૨ । નપુ સકા-
મસિદ્ધઃ ૩ । જઢ — સ્પૂલઃ સ પ્રિવિધઃ, માપા — શરીર-મિયા મેદાત્ । માપાજઢ

દીક્ષા દેના નિપિદ્ધ કિયા ગયા હૈ, ઉર્દે જો શિષ્ય પનાને કે લોભ રૂપ
લોપ સે દીક્ષા દેતા હૈ પેસા વહ ચરણસ્થિત તપસ્વી ચારિત્ર ધર્મ કા
લોપ કરતા હૈ । યહાં ત્રિસ્થાનક કે અનુરોધ સે યે ત્રીન હી ગૃહીત હુએ
હૈ, નહીં તો પ્રવરજ્યા દેને કે લિપે ૨૦ પુરુષ અયોગ્ય કહે ગયે હૈ, જેસે
— “ વાલે યુદ્ધે નપુંસે — ” ઇત્યાદિ, આઠ વર્ષ સે જો ન્યૂન હૈ વહ વાલ માના
ગયા હૈ — ૧, ૬૦ વર્ષ સે જો અધિક હૈ વહ દુદ્ધ માના ગયા હૈ ૨ નપુંસક
પ્રસિદ્ધ હૈ, સ્પૂલ કા નામ જઢ હૈ, વહ ત્રીન પ્રકાર કો હોતા હૈ માપા

આ કલનનું વાતપર્ષ નીચે પ્રમાણે છે— જિનેન્દ્ર ભગવાને એમને દીક્ષા
દેવાનો નિર્દેશ કર્યો છે તેમને શિષ્ય બનાવવાના દોષરૂપ દોષથી ને દીક્ષા
આપે છે, એવો ચરણસ્થિત તપસ્વી ચારિત્રધર્મનો લોપ કરે છે અર્થાં ત્રિસ્થા
નકનું પ્રકરણ આજ્ઞા દોષથી આ ત્રણુજ નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે
આમ તો નીચે ગણવેલા ૨૦ પ્રકારના પુરુષોને પ્રમત્ત્યા આપવાને માટે
અયોગ્ય ગણાવ્યા છે જેમકે— વાલે મુઢે મપુસે ” ઇત્યાદિ—

આઠ વર્ષથી ઓછી ઉમરવાળાને બાળક કહ્યો છે (૧) ૬૦ વર્ષથી વધુ
ઉમરવાળાને વૃદ્ધ કહ્યો છે (૨) નપુંસક—આ શબ્દ બલ્લીતો દોષથી તેનું
નિવેચન ક્યું નથી. (૩) સ્પૂલ—જે માણસ જઢ જેવો હોય છે તેને સ્પૂલ કહે છે
તેના ત્રણ પ્રકાર છે—(૧) માપાની અપેક્ષાએ જઢ, (૨) શરીરની અપેક્ષાએ
જઢ અને (૩) દિવાની અપેક્ષાએ જઢ.

શ્વતુર્વિધઃ—જલમૂકઃ ૧, મન્મનમૂકઃ ૨, એલકમૂકઃ ૩, દુર્મેધશ્ચ ૪ । જલમગ્ન
 ઇવ બુદ્બુડાયમાનો યો વક્તિ સ જલમૂકઃ ૧ । યસ્ય વદતઃ સ્વચ્ચમાનમિવ વચનં
 સ્વલલતિ સ મન્મનમૂકઃ ‘તોતલા’ ‘વોવડા’ ઇતિ પ્રસિદ્ધઃ ૨ । યશ્ચૈલક ઇવ
 મૂકતયા શબ્દમાત્રમેવ કરોતિ ન તુ વ્યક્તવાચા વક્તું શક્નોતિ સ એલકમૂકઃ ૩ ।
 દુર્મેધઃ—ધારણાવિકલઃ, અસ્ય પુનઃ પુનઃ પાઠનેઽપિ ન કિશ્ચિદપિ સ્મૃતિપથે સમા-
 યાતિ, વિસ્મરણસ્વભાવત્વાત્ ૪ । ૧ । ભાષાજડશ્વતુર્વિધોઽપિ જ્ઞાનગ્રહણેઽસમર્થ-
 ત્વાન્ન પ્રવ્રજ્યાયોગ્યઃ ૧ । શરીરજડ—શરીરેણ સ્થૂલઃ, યો વિહારે પથિ, ભિક્ષાચ-
 ર્યાયામટને, વન્દનાદિષુ ચાતીવસ્થૂલતયાચાઽશક્તો ભવતિ ૨ । ક્રિયાજડઃ—કરણ—

સે શરીર સે ઔર ક્રિયા સે, इनमें भाषाजड़ चार प्रकार का होता है—
 जलमूक १ मन्मनमूक २ एलकमूक ३ और दुर्मेध ४ जल में मग्न हुवे
 की तरह बुदबुद जैसा होकर बोलता है वह जलमूक है, बोलते समय
 जिसके वचन बीच २ में रुककर निकलते हैं वह मन्मनमूक है, इसे
 भाषा में “तोतला” तथा गुजरात में “वोवडा” कहते हैं । मूक होने
 के कारण एलक [बकरा] की तरह शब्दमात्र ही करता है बोलता है,
 स्पष्ट वाणी नहीं बोल सकता है वह एलकमूक है । धारणा से जो विकल
 होता है वह दुर्मेध है बार २ पढ़ाने पर भी इनकी स्मृति में कुछ भी
 नहीं जमता है क्योंकि इसका स्वभाव विस्मरणवाला होता है—४ चार
 प्रकार का यह भाषाजड़ ज्ञान के ग्रहण में असमर्थ होने के कारण
 प्रव्रज्या के अयोग्य कहा गया है १ । शरीरजड़ वह है जो शरीर से
 स्थूल होता है ऐसा शरीरजड़ विहारमार्ग में, भिक्षाचर्या करने में, और

ભાષાજડના પશુ ચાર પ્રકાર પડે છે—(૧) જલમૂક, મન્મનમૂક, (૩)
 એલકમૂક અને (૪) દુર્મેધ. જળમા મગ્ન થયેલાની જેમ ‘બુડબુડ’ જેવો
 અવાજ કરનારને જલમૂક કહે છે બોલતી વખતે વચ્ચે વચ્ચે અટકીને જેના
 શબ્દો નીકળે છે તેને મન્મનમૂક અથવા બોળકો કહે છે. જે માણસ મૂંગો
 હોવાથી બકરાની જેમ “બે બે” જેવી અસ્પષ્ટ વાણી જ બોલી શકે છે
 તેને એલકમૂક કહે છે (એલક એટલે બેકરો). ધારણાથી જે વિકલ (રહિત)
 હોય છે તેને દુર્મેધ કહે છે. વારવાર સમજાવવા છતાં પણ તેના મગજમાં
 કંઈપણ ઉતરતું નથી, કારણ કે તેના સ્વભાવ જ વિસ્મરણશીલ હોય છે. આ
 ચારે પ્રકારના ભાષાજડ માણસો જ્ઞાનને ગ્રહણ કરવામાં અસમર્થ હોય છે,
 તે કારણે તેમને પ્રવ્રજ્યા આપવા યોગ્ય ગણાવ્યા નથી.

જેનુ શરીર ખૂબ જ સ્થૂલ હોય છે તેને શરીરજડ કહે છે એવો માણસ
 વિહાર માર્ગમાં, ભિક્ષાચર્યા કરવામાં અને વન્દણાદિ ક્રિયાઓ કરવામાં અસ-

ક્રિયા, તથા જડ-અલસ-અવ્યય, સમિતિ-ગુપ્તિ-પ્રતિષેધનાદિ ક્રિયા પુનઃ પુનરુપદિશ્યમાનામપ્યતીજઙ્ગતયા યઃ કર્તુ ન શક્નોતિ સઃ ૨ । ફલીયઃ ૫, વાતિકઃ (વ્યાધિત) ઓક્તસંખ્ય ૬ । સ્તેનઃ-ચોર ૭, રાજાપકારી-રાના પરાધી ૮, ઉન્મત્ત-પ્રસિદ્ધઃ ૯ । અવર્ણનઃ-દષ્ટિહીનઃ, અધ-અવ્યય ૧૦ । દાસ ૧૧, દુષ્ટઃ ૧૨, મૂઢઃ ૧૩ પક્ષે પ્રસિદ્ધા । ઋણાર્તઃ-શ્રવણપીઢિતઃ ૧૪, જુઝ્જિકઃ વ્યક્તિ હીન-અવ્યયઃ અર્થ જાતિ-કર્મ-શિલ્પ-શરીરમેદા-સમુર્ધિયઃ । તત્ર વાતિ જુઝ્જિકઃ-જ્ઞાત્યા જુઝ્જિકઃ-હીના । તેષામ્-પાણાઃ, હોમ્નાઃ ફિગિકઃ અપ-ચાણ્ય । તત્ર પાણા-એ ગ્રામનગરાદર્શિશાકાશેડનાદૃતરથાને વસન્તિ, હોમ્નાઃ-

વન્દનાદિક્રિયા મેં અતીતસ્પૂલ હોન કે કારણ અશક્ત હોતા હૈ ૨ । જો ક્રિયા કરને મેં અલસ (આલસી) હોતા હૈ યહ ક્રિયાજડ હૈ, એસા યહ ક્રિયાજડ સમિતિ ગુપ્તિ પ્રતિષેધના આદિ ક્રિયાઓ કો વાર વાર સમ જ્ઞાને પર મી અતીત જડ હોને કે કારણ યથાવત્ કર નહીં સકના હૈ- ૩ । ફલીય ઓર વાતિક (વ્યાધિત) इनका लक्षण तो कह ही दिया गया है ६ स्तेन चोर ७ राजापकारी राजापराधी ८ उन्मत्त पागल ९ अवर्णन दृष्टिहीन (अध) १०, दास ११ दुष्ट १२ मूढ १३ ऋणार्त ऋण से पीड़ित १४ एवम्-जुञ्जिक व्यक्ति अङ्गहीन, ये सब दीक्षा देने के अयोग्य कहे गये हैं । यह जुञ्जिक-वाति, कर्म, शिल्प, और शरीर के मेद से चार प्रकार का कहा गया है जो जाति से हीन होता है वह जातिजुञ्जिक है । जातिजुञ्जिक भी चार प्रकार के होते हैं-पाण, होम,

અર્થ નિવડે છે આ? તેને પ્રવચ્ચા દેવાને યોગ્ય કહ્યો નથી. જે માણસ ક્રિયા કરવામાં આગલ કરનારો હોય છે, તેને ક્રિયાજડ કહે છે. એવો ક્રિયાજડ માણસ વારંવાર સમજાવવા છતાં પણ સમિતિ, ગુપ્તિ, પ્રતિષેધના આદિ ક્રિયાઓ પોતાની જગ્યાને કારણે યોગ્ય રીતે કરી શકતો નથી (૫) ફલીય અને (૬) વાતિક (વ્યાધિત), આ બન્નેનાં લક્ષણો તો આ સુત્રમાં જ પહેલાં જણાવવામાં આવેલ છે (૭) સ્તેન (ચોર) (૮) રાજાપકારી એટલે કે રાજાપરાધી, (૯) ઉન્મત્ત (પાગલ ગણે), (૧૦) અવર્ણન-દષ્ટિહીન-અધ, (૧૧) દાસ, (૧૨) દુષ્ટ (૧૩) મૂઢ-મૂર્ખ (૧૪) (૧૫) ઋણાર્ત-દેવાદાર, તથા જુઝ્જિક વ્યક્તિ અને અંગહીનને પણ દીક્ષા દેવા યોગ્ય કહ્યા નથી

જુઝ્જિક અનુપ્પના ભનિ, કમ શિલ્પ અને શરીરના બેદથી ચાર પ્રકાર કહ્યા છે જે ભતિની અપેક્ષાએ હીન હોય છે, તેને ભતિજુઝ્જિક કહે છે ભતિજુઝ્જિક પણ ચાર પ્રકારના હોય છે-પાણ, હોમ્ન ક્રિજિક અને સ્વપચ.

યે ગૃહનિવાસિનો ગીત ચ ગાયન્તિ । કિણિકાઃ-યે વાદિત્રાણિ પરિણહન્તિ-મળ્હ-
યન્તીત્યર્થઃ, શ્વપચાદ્વાળાલાઃ । ઉપલક્ષણાદન્યેऽપ્યેતાદૃશાધિગ્જાતીયા વરુ-
હાદયો ગ્રાહ્યાઃ । એતે જાતિજુઙ્ગિકાઃ ૧ । કર્મજુઙ્ગિકાઃ-કર્મણા જુઙ્ગિકાઃ-હીનાઃ,
તેઽષ્ટત્રિધા-પોષક-સંવર-નટ-લંચ-વ્યાધ-મત્સ્યવન્ધ-રજક-વાયુરિકમેદાત્ ।
તત્ર પોષકાઃ યે સ્ત્રી કુલ્લુટ-મયૂરાન્ જીવિકા નિમિત્ત પોષયન્તિ ૧, સંવરાઃ-
તિરસ્કરણિકાકારકાઃ, યે તૃણવિશેષેણ કુલ્યાદિકમાચ્છાદયન્તિ ૨, નટાઃ-યે
નાટકાનિ નર્તયન્તિ ૩ । લંચાઃ-યે વશાદેરુપરિસ્થિત્વા સ્વકલાં દર્શયન્તિ ૪ ।

કિણિક, ઔર શ્વપચ, इनमें जो ग्राम नगर आदि के बाहर बिलकुल
खुले द्रुवे मैदान में रहते हैं, वे पाणजातिजुङ्गिक हैं जो घर बना कर
रहते हैं और गीत गाते हैं, वे डोम्य हैं । जो वादित्रों को मढते हैं, वे
किणिक हैं. और जो चाण्डाल हैं वे श्वपच हैं । उपलक्षण से और भी
इसी तरह के नीच जाति के वरुड आदि जातिजुङ्गिक जानना चाहिये ।
जो कर्म से जुङ्गिक हीन होते हैं वे कर्मजुङ्गिक हैं, वे कर्मजुङ्गिक आठ
प्रकार के होते हैं, पोषक १ संवर २ नट ३ लंछ ४ व्याध ५ मत्स्यवन्ध
६ रजक घोषी ७ और वायुरिक ८ । इनमें जो स्त्री, कुल्लुट, एवं मयूरों
को अपनी आजीविका के निमित्त पालते हैं वे पोषक हैं १ जो तृण-
विशेषों से दीवाल वगैरह को आच्छादित करते हैं, अर्थात् जो कनात
वगैरह बनाते हैं वे संवर हैं २ जो नाटकों को करते हैं उनमें नाचते हैं
वे नट हैं-३ जो वांस आदि के ऊपर खेलकर अपनी कला का प्रदर्शन

જેઓ ગામ, નગર આદિની બહાર તદન ખુલ્લા મેદાનમાં રહે છે તેમને પણ
જાતિજુગિક કહે છે જેઓ ઘર બનાવીને રહે છે અને ગીત ગાવાનો ધંધો
કરે છે, તેમને ડોમ્ય કહે છે જે લોકો વાદિત્રોને મઢવાનો ધંધો કરે છે
તેમને કિણિક કહે છે, અને ચાંડાલને શ્વપચ કહે છે ઉપલક્ષણની અપેક્ષાએ
એ જ પ્રકારની વરુડ આદિ અન્ય નીચ જાતિના મનુષ્યોને પણ જાતિજુગિક
સમજવા જોઈએ જે લોકો કર્મની અપેક્ષાએ જુગિક (હીન) હોય છે,
તેમને કર્મજુગિક કહે છે તે કર્મજુગિક આઠ પ્રકારના હોય છે-(૧) પોષક,
(૨) સંવર, (૩) નટ, (૪) લંચ, (૫) વ્યાધ, (૬) મત્સ્યવન્ધ, (૭) રજક
(ઘોષી) અને (૮) વાયુરિક જે લોકો કૂકડા, મરઘી, મોર, સ્ત્રી આદિને
પોતાની આજીવિકાને નિમિત્તે પાળે છે, તેમને પોષક કહે છે (૨) જે લોકો
તૃણવિશેષોથી દીવાલ વગેરેને આચ્છાદિત કરે છે અથવા જે લોકો કનાત વગેરે
બનાવે છે તેમને સંવર કહે છે (૩) જે લોકો નાટકો ખેલે છે અને તેમાં
નાચે છે તેમને નટ કહે છે (૪) જે વાસ, દોરડા આદિ ઉપર ખેલ કરીને

વ્યાધા:-લુન્ઘકા ૫ । મસ્ત્યવઘા-ઘીઘરા ૬ । રમકા:-વસ્ત્રપસાલકા ૭ ।
 વાગુરિકા:-મૃગજાલિકા ૮ । શિરપેન જુઝ્ઝિકા:-યે પટકારા: ' ઘનકર ' હવિ
 મસિદ્ધા: નાપિતાદયો યા ૨ । શરીરજુઝ્ઝિકા:-શરીરેણ હીના-યે હસ્તપાદકર્ણ
 નાસિકોષ્ઠર્જિતા:, ધામનકા:-છદ્ધુહસ્તપાદાવયવયા:, કુન્ઘા:-વર્તિર્નિસ્સૃષ્ઠપીઠ
 હૃદયાસ્થિકા:, કુદ્ધમ્યાધ્યુપહતા, કાળા:, પ્રસિદ્ધા: પદ્ધય:-પાદગમનશક્તિવિક્ષા:
 કરતે હિં વે લદ્ધ હિં ૪ લુન્ઘક-શિકારી જો હોતે હિં વે વ્યાધ હિં-૫ મદ્ધ-
 લિયોં કો પકડને ઘાલે ઘીઘર મસ્ત્યવઘ હિં ૬ કપઠોં કો ઘોને ઘાલે
 ઘોષી રજક હિં ૭ મૃગોં કો આલજાલકર જો પકડતે વે વાગુરિક હિં ૮ ।
 પટકાર ધુનકર, અથવા-નાપિત નાઈ આદિ શિલ્પજુઝ્ઝિક હિં ૨ શરીર સે
 અજ્ઞોપાઙ્ગ સે જો હીન હોતે હિં વે શરીરજુઝ્ઝિક હિં, જૈસે-કોઈ હાથસે હીન
 હોતા હૈ, કોઈ ચરણ સે હીન હોતા હૈ, કોઈ કર્ણ સે તો કોઈ નામિકા
 સે હીન હોતા હૈ ઓર કોઈ ક્ષોઠ સે હીન હોતા હૈ એસે વે સ્વ શરીર
 જુઝ્ઝિક કહે ગયે હિં, તથા ધામનક વે હોતે હૈ-જો શરીર સે ઘોને હોતે હિં
 છદ્ધુ હસ્તપાદ આદિ અવયવો ઘાલે હોતે હિં, વે કુપક-કુપકે હોતે હિં,
 જિસ્કો પીઠ કી, અથવા હૃદય કી દડી ઘાહર નિકલ આતી હૈ તથા
 -કુદ્ધ સે જિનકે હાથ પગ આદિ અવયવ ગલ જાતે હિં, વે તથા-જો કાને
 હોતે હિં વે, તથા જો પગ હોતે હિં વે ચલને ફિરને મેં જો ચરણોં કી શક્તિ

પોતાની કલાનું પ્રદર્શન કરે છે તેમને લખ (જાણીયા) કહે છે (૫)
 શિકારીને બ્યાધ કહે છે (૬) માછલાં પકડવાને ધધો કરનાર ધીઘરને
 (માછીમારને) મસ્ત્યવઘ કહે છે (૭) કપડાં ધોવાને ધધો કરનારને રજક
 ધોળી કહે છે (૮) બાળ નાખીને મૃગોને પકડનાર માણસને વાગુરિક કહે છે

પટકાર (વજુકર) અથવા નાઈઆદિને શિલ્પજુઝ્ઝિક કહે છે જે લોકો
 શારીરિક ખેલ-ખાપણવાળા હોય છે તેમને શરીરજુઝ્ઝિક કહે છે જેમકે કોઈ
 લૂલા દોય છે તો કોઈ દૂધા દોય છે તો કોઈ નકા (નાક ઉઘાડતા)
 દોય છે કોઈ કર્ણહીન દોય છે, તો કોઈ કોડ વિનાના દોય છે, એ બધાં
 મનુષ્યોને શરીરજુઝ્ઝિક કહ્યા છે.

તથા જેઓ વામનરૂપ (ઠીંગણ) દોય છે, -છદ્ધુ હાથપગ આદિ અવ
 યવોવાળા દોય છે જે દૂબજ દોય છે જેના વાહાના અથવા છાતીના હાકાં
 બહાર નીકળી આવ્યા હોય છે જેના હાથપગ આદિ અવયવો કોઠને લીધે
 ગળી બધાં દોય છે તથા જે લોકો એક બાજે ઠાંગા દોય છે તથા જે લૂલા
 દોય છે હાથવા આલવારૂપ ચરણોની શક્તિથી જે ચલિત દોય છે, એવાં

इत्यादयः शरीरजुद्धिकाः । एते सर्वे दीक्षयितुं न योग्याः १५॥ उद्बद्धकः—शिक्षणादि-
निमित्तेन नियतकालं यावद् बद्धः सेवाभावेन—आयत्तीभूतः, यद्वा केनचित् मूल्य-
ग्रहणेन नियतावधिं यावद् बद्धः—वचनबद्धः कृतः स्वाधीनीकृत इत्यर्थः, एताव-
त्कालं यावद्भवत्पाश्वे स्थास्यामि, यद्वा—त्वयैतावत्कालं यावन्ममपाश्वेऽवश्यं स्था-
तव्यमित्यादिरूपेण स्वपरतोवचनबद्धः—उद्बद्धः स एव—उद्बद्धः । स कर्म—शिल्प
—विद्या—मन्त्रयोगभेदेन पञ्चविधः । तत्र कर्म—अनुपदेशपूर्वकं गृहकार्यक्षेत्रकर्षणा-
दिकम् १ । शिल्प—आचार्योपदेशपूर्वकचित्रकर्मदिरूपः २ । एवं विद्या—लेखादिका
शक्नुनरुतपर्यवसाना ३ । मन्त्रः—विद्वेषणवशीकरणादिरूपः ४ । योगः—चूर्णादि

से रहित होते हैं इत्यादि वे सब, ऐसे मनुष्य शरीरजुद्धिक कहे गये हैं । ये सब दीक्षा के अयोग्य कहे गये हैं । शिक्षण आदि के निमित्त से जो नियमितकाल तक सेवाभाव से बद्ध हो, अथवा—मूल्य देकर किसीने जिसे नियत समयतक वचनबद्ध करलिया हो, अपने अधीन बना लिया हो कि इतने समयतक तुम्हे (ज्ञे) मेरे पास रहना होगा, अथवा इतने समयतक मैं तुम्हारे पास रहूंगा, इस प्रकार से जो स्व पर से वचनबद्ध हो गया हो वह उद्बद्ध है उद्बद्ध ही उद्बद्धक है यह उद्बद्धककर्म, शिल्प विद्या मन्त्र और योग के भेद से पांच प्रकार का होता है अनुपदेश पूर्वक गृहकार्य क्षेत्रकर्षण आदि से जो बद्ध होता है वह कर्म उद्बद्ध है आचार्योपदेश पूर्वक चित्रकर्म आदिरूप शिल्प से जो बद्ध होता है वह शिल्प उद्बद्ध है लेखनकला से लेकर पक्षी के

મનુષ્યોને શરીરજુગિદ કહે છે. તે દરેક પ્રકારના શરીરજુગિદોને દીક્ષા આપવાને યોગ્ય ગણ્યા નથી

શિક્ષણ આદિને નિમિત્તે જે દોઢો નિયમિત કાળપર્યન્ત સેવાલાવથી બધાયેલા હોય, અથવા વેતન આપીને જેને કોઈએ નિયત સમય સુધી કામ કરવાને માટે વચનબદ્ધ કરી લીધા હોય—એટલે કે “આટલા સમય સુધી તમારે મારી પાસે રહેવું પડશે અથવા આટલા સમય સુધી હું તમારી સાથે રહીશ,” આ પ્રકારે જે પોતે અન્યની સાથે વચનથી બંધાયેલા હોય તેને ઉદ્બદ્ધ કહે છે, એવા ઉદ્બદ્ધને જ ઉદ્બદ્ધક કહે છે આ ઉદ્બદ્ધકના કર્મ, શિલ્પ, વિદ્યા, મંત્ર અને યોગના લેદથી પાંચ પ્રકાર ક્રધા છે—અનુપદેશપૂર્વક જે ગૃહકાર્ય, કૃષીકર્મ આદિ કરવાને બંધાય છે તેને કર્મઉદ્બદ્ધક કહે છે. આચાર્યોપદેશ પૂર્વક જે ચિત્રકાર્ય આદિ રૂપ શિલ્પ કરવાને બંધાયેલા હોય છે તેને શિલ્પઉદ્બદ્ધક કહે છે લેખનકલાથી લઈને પક્ષીની બોલીને બાણવા પર્યન્તની

પયોગ ૫ । પશ્ચવિધોઽપ્યપ દીક્ષયિતુ ન કલ્પતે । ઉક્તञ—

“ કમ્મ ૧ સિપ્પે ૨ વિજ્ઞા ૧, મતે જોગે ય દોઢ ઉવયરઆ ।

ઉત્ત્યદ્ધમો ઇણ્ણો, ન કલ્પણ સારિસે દિધ્થા ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—કર્મણિ ૧ ક્ષિલ્પે ૨ વિધ્યાયાં ૧ મન્ત્રે ૪ યોગે ૮ ચ મવત્યુપવરક ।

ઉદ્વદ્ધકસ્ત્યેષ ન કલ્પતે સાદ્યો દીક્ષા ॥ ૨ ॥

મૃતક —મૃત્યુ —પ્રસિદ્ધ ૧૭ । શ્રેષ્ઠનિષ્કેદિત —નિષ્કેદિત શ્રેષ્ઠ રત્નરૂપ; યો
ગુરુફલદાદિકારણમાભિત્ય માતાપિત્રોરનનુદ્ધાત એવ દીક્ષા પ્રહીતુમિચ્છતિ સઃ,
યદ્વા—અન્યતઃ કશ્ચિરીસામિલાપી દીક્ષિતો વા પલાન્ય સમાગતઃ સાઽપિ દીક્ષ
યિતુ ન કલ્પતે ૧૮ । શુર્ચિણી—સગર્મા ૧૯ । યાચન્તસા—મધુપાલમાતા ૨૦

શબ્દોં જાનને તક કી કલાઓં મેં જો નિપુણ હોતા હૈં વહ વિધાઉદ્વદ્ધ
હૈં, ધિત્રેષણ ઉચ્ચાટન મારણ તાદન, એવ યશીકરણરૂપ મન્ત્ર વિધા મેં
જો નિપુણ હોતા હૈં, વહ મન્ત્રઉદ્વદ્ધ હૈં, ઓર ચૂર્ણાદિપ્રયોગ કરને મેં
જો ચતુર હોતા હૈં વહ યોગ ઉદ્વદ્ધ હૈં યે પાંચો પ્રકાર કે ઉદ્વદ્ધ મી
દીક્ષા દેને કે યોગ્ય નહીં કહે ગયે હૈં । કહા મી હૈં—“ કમ્મે સિપ્પે
વિજ્ઞા ” હરપાદિ, જો દુસરોં કે યહાં આજીવિકા કે નિમિત્ત નોકરી
કરતા હૈં વહ મૃતક હૈં, વહ તથા—ગુરુફલદ આદિરૂપ કારણ કો ઉકર
જો માતાપિતાકી આજ્ઞા પ્રાપ્ત કિયે વિના હી દીક્ષા કો ઉચિત હોતાહૈં એસા
વહ નિષ્કેદિત શ્રેષ્ઠ કહાતે હૈં । અથવા દીક્ષામિલાપી પના હુવા, યા દીક્ષિત
હુવા જો દુસરી જગહ સે મગકર આપા હો, વહ મી દીક્ષા દેને કે યોગ્ય
નહીં કહા ગયા હૈં ૧૮, જો ગર્મયતી હૈં એસી શુર્ચિણી સ્ત્રી, તથા જિસકા

હવાઓમાં જે નિપુણ હોય છે તેને વિધાઉદ્વદ્ધ કહે છે વિદ્વેષણ—ઉચ્ચાટન,
મારણ—તાદન અને વશીકરણ રૂપ મન્ત્રવિધામાં જે નિપુણ હોય છે તેને મન્ત્ર
ઉદ્વદ્ધ કહે છે અને ચૂર્ણાદિ પ્રયોગ—રસાયણ પ્રયોગ કરવામાં જે નિપુણ હોય
છે તેને યોગઉદ્વદ્ધ કહે છે આ પાંચે પ્રકારના ઉદ્વદ્ધને દીક્ષા આપવાને યોગ્ય
હજી નથી કહ્યું પણ છે કે—“ કમ્મે સિપ્પે વિજ્ઞા ” ઇત્યાદિ—

જે આલેખિકા નિમિત્તે જીજ્ઞાસે ત્યાં નોકરી કરે છે તેને જૂનક કહે છે,
તેને પણ દીક્ષા આપવા યોગ્ય કહ્યો નથી. ગુરુકલદ આદિ મારણને લીધે
માતાપિતાની આજ્ઞા લીધા વિના દીક્ષા દેવાને તૈયાર થયેલ બ્યક્તિને પણ
દીક્ષા આપવા યોગ્ય ગણેલ નથી. જે પ્રકારના દીક્ષાર્થીને ‘ નિષ્કેદિત શ્રેષ્ઠ ’
કહે છે અથવા દીક્ષામિલાપી જનીને જીલ જગ્યાઓથી ભગી આવેલને, અને
જો વાર દીક્ષા લઈને ત્યાંથી ભાગીને આવેલા માણસને પણ દીક્ષા આપવાને

‘एव’ मिति एवं — यथा पूर्वोक्ता एते प्रव्राजयितुं न कल्पन्ते तथैत एव कथञ्चिच्छलनादिना प्रव्राजिता अपि सन्तो मुण्डयितु—शिर केशान् लुञ्चयितुम्, शिक्षयितुं—ग्रहणासेवनी शिक्षां ग्राहयितुम् ३, उपस्थापयितु—महाव्रतेषु व्यवस्थापयितुम् ४, संभोक्तुम्—उपध्याहारादिना तेन सह सम्भोगं कर्तुम् ५, तथा यधनाभोगेन संभोगविषयीकृता भवेयुरतदा संवासयितुम्—आत्मसमीपे स्थापयितुं न कल्पन्त एवेति ॥ सू० ७० ॥

पूर्वं प्रव्राजनाद्ययोग्या प्रोक्ताः, साम्प्रतं तत्प्रसङ्गाद् वाचनादिविषयेऽयोग्ययोग्यान् कथयन् सूत्रचतुष्टयमाह—

मूलम्—तओ आवायणिज्जा पणत्ता, तं जहा—अविणीए, विगइपडिवद्धे, अविओसियपाहुडे । १ । तओ कप्पंति वाइत्तए, तं जहा-विणीए अविगइ पडिवद्धे, विओसिय पाहुडे । २ । तओ दुस्सन्नप्पा पणत्ता, तं जहा—दुट्ठे मूढे वुग्गाहिए । ३ । तओ सुस्सन्नप्पा पणत्ता, तं जहा—अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिए । ४ ॥ सू० ७१ ॥

बच्चा अभी छोटा है, ऐसी बालवत्सा स्त्री भी दीक्षा देने के योग्य नहीं कही गई है । तो जिस प्रकार से ये सब दीक्षा देने के योग्य नहीं कहे गये हैं उसी प्रकार से ये कथञ्चित् छलना आदि से प्रव्राजित हो जाने पर भी शिर के केशों का लुञ्चन करवाने योग्य तथा ग्रहण, शिक्षा और आसेविनी शिक्षा को ग्रहण कराने योग्य शिक्षित महाव्रतों में इन्हें व्यवस्थापित करना उपधि और आहारादि का इनके साथ संबन्ध रखना, और इन्हें अपने पास रखना ये सब चाते भी इनके साथ किसी भी तरह से (करनी) योग्य नहीं हैं ॥ सू० ७० ॥

योग्य गण्ठावेस नथी गर्लवती स्त्री तथा बालवत्सा स्त्री—जेतु आणक नानु डोय जेवी स्त्रीने पणु दीक्षा आपवाने योग्य कही नथी.

उपर्युक्त २० प्रकारना माणुसेने दीक्षा आपवाने योग्य कहा नथी, जेतु ४ नहीं पणु कैरि प्रकारना छणथी तेओ दीक्षित थई गया डोय तो पणु तेमना शिरना केशेने डोय करवा ते योग्य नथी, तथा ग्रहण—शिक्षा आसेविनी शिक्षाने ग्रहण करावना योग्य नथी भडावतोमा स्थापित करवा योग्य पणु नथी अने उपधि—(आहारादि) ने तेमनी साथे सम्भ राखवा योग्य पणु नथी, अने पोतानी साथे राखवा योग्य पणु नथी. ॥ सू. ७० ॥

છાયા—ત્રયઃ અવાચનીયા પ્રજ્ઞતા, તથા—અવિનીત, વિદિતિપ્રતિષદ્, અન્યવસિતપ્રામૃતઃ । ૧ । પ્રય કલ્પયતે વાચયિતુ, તથા—વિનીતા, અવિકૃતિ પ્રતિષદ્, વ્યવસિતપ્રામૃત ૨ । પ્રયો દુસ્સજ્ઞાપ્યા પ્રજ્ઞતા તથા—કુપ્તઃ, મૂઢો, વ્યુદ્ગ્રાહિત ૩ । પ્રય સુસજ્ઞાપ્યા પ્રજ્ઞતા, તથા — અકુપ્તઃ, અમૂઢ, અન્યુદ્ગ્રાહિતઃ ૪ । સૂ ૭૧ ॥

ટીકા—‘ તત્ત્વો અવાચણિજ્ઞા ’ इत्यादि । प्रयः अवाचनीयाः—वाचयितुं सूत्रं पाठयितुं न योग्या, अत एवार्थमपि वाचयितुं न योग्या, सूत्रार्थस्य मह

इस प्रकार प्रजाजना (प्रज्ज्ञता) आदि के अयोग्यों का कथन करके अथ सूत्रकार उसी प्रसङ्ग से वाचना आदि के विषय में जो अयोग्य हैं उनके सम्बन्ध में और जो योग्य हैं उनके सम्बन्ध में कथन करने के लिये चार सूत्र कहते हैं—“ तत्रो अवाचणिज्ज्ञा पण्णत्ता ” इत्यादि । सूत्रार्थ—ये तीन अवाचनीय (वाचना देनेके योग्य नहीं) कहे गये हैं, जैसे अविनीत, विकृतिप्रतिषद, और अन्यवसितप्रामृत । ये तीन वाचना के योग्य कहे गये हैं, जैसे—विनीत अविकृतिप्रतिषद और व्यवसितप्रामृत । ये तीन दुःसज्ज्ञाप्य कहे गये हैं, जैसे—कुप्ट मूढ और व्युद्ग्राहित, ये तीन सुसज्ज्ञाप्य कहे गये हैं, जैसे—अकुप्ट अमूढ और अन्युद्ग्राहित, तात्पर्य इन सूत्रों का इस प्रकार से है जो सूत्र और अर्थ का अपने को अध्ययन कराने वाले हैं, या जो अपनी अपेक्षा सम्यग्दर्शन ज्ञान और

સૂત્રાર્થ—પ્રજ્ઞતા આદિને માટે અધોગ્ધ અનુબ્ધોનુ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર વાચના આદિના વિષયમાં અધોગ્ધ અને યોગ્ય અનુબ્ધોનુ નીચીના ચાર સૂત્રો દ્વારા કથન કરે છે—“ તત્ત્વો અવાચણિજ્ઞા પણ્ણત્તા ’ इत्यादि—

નીચે દર્શાવેલા ત્રણ પ્રકારના માણસોને અવાચનીય (વિષા આપવાને માટે અપત્ર) કહ્યા છે—(૧) અવિનીત, (૨) વિકૃતિ પ્રતિષદ્ અને (૩) અન્યવસિત પ્રામૃત. નીચે દર્શાવેલા ત્રણ પ્રકારના માણસોને વાચનીય (વાચના દેવાને યોગ્ય) કહ્યા છે—(૧) વિનીત (૨) અવિકૃતિ પ્રતિષદ્ અને (૩) અવસિતપ્રામૃત. નીચે દર્શાવેલા ત્રણ પ્રકારના માણસોને દુઃસજ્ઞાપ્ય કહ્યા છે—(૧) કુપ્ત, (૨) મૂઢ અને (૩) વ્યુદ્ગ્રાહિત. નીચે દર્શાવેલા ત્રણ પ્રકારના માણસોને સુસજ્ઞાપ્ય કહ્યા છે—(૧) અકુપ્ત (૨) અમૂઢ અને (૩) અન્યુદ્ગ્રાહિત.

આ સૂત્રોનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે જે સૂત્ર અને અર્થનું અધ્યયન કરાવનાર દોષ છે, તથા જેઓ પાતાના કરતા સગવડદશન, જ્ઞાન અને ચારિત્ર

સ્વાત્ । તાનેવાહ—અવિનીત.—સૂત્રાર્થદાયકસ્ય રત્નાધિકસ્ય વા વન્દનાદિવિ-
નયવિકલઃ તસ્મૈદત્તા વિદ્યા ન ફલદા ભવતિ ।

યત ઉક્તમ્—“ વિણયા હીજ્જાવિજ્જા દેફલં ઇહ પરે ચ લોગમ્મિ ।
ન ફલંતઽવિણયગદ્ધિયા, સસ્સાણિ વ તોયહીનાહં ॥ ૧ ॥

છાયા—વિનયાધીતા વિદ્યા દદાતિ ફલમિદ્ધ પરસ્મિન્નલોકે ।
ન ફલન્ત્યવિનયગૃહીતાઃ સસ્યાનીવતોયહીનાનિ ॥ ૧ ॥

વિકૃતિપ્રતિવદ્ધઃ—દુર્ગ્ધાદિરસગૃહ્ધઃ, અયં હિ—વાચનાગ્રહણેઽસમર્થો ભવતિ ।
રસાસ્વાદૈકદત્તચિત્તત્વાત્ । અવ્યવસિતપ્રાપ્તઃ, અવ્યવસિતમ્—અનુપશાન્તં (ઉપહાર)
પ્રાપ્તમિવ પ્રાપ્તં—નરકપાલકૌશલિકં પરમક્રોધ-ઇત્યર્થઃ, યસ્ય સઃ અવ્યવસિત-
અનન્તાનુબન્ધિક્રોધયુક્ત ઇત્યર્થઃ, યઃ ક્ષામિતોઽપ્યક્ષાન્ત ઇત્યેવ ન પ્રત્યુત વહુશઃ

ચારિત્ર રૂપરત્ન સે અધિક હૈં ડનકી વન્દના આદિ કરને રૂપ વિનય સે
જો રહિત હોતે હૈં, એસે જીવ અવિનીત કહે જાતે હૈં એસે અવિનીતોં કો
દી ગઈ વિદ્યા ફલપ્રદ નહીં હોતી હૈ । કહા ઓ હૈ—“ વિણયાહીયાવિજ્ઞા ”
હત્યાદિ, જિસ પ્રકાર જલહીન સસ્ય (અનાજ) ફલિત નહીં હોતા હૈ,
ઉસી પ્રકાર અવિનય સંગૃહીત વિદ્યા ઓ ફલિત નહીં હોતી હૈ । ક્યોં
કિ—વિનયાધીન વિદ્યા હી ફલિત હોતી કહી ગઈ હૈ, જો દુર્ગ્ધાદિરસોં
મેં ગૃહ્ધ હોતા હૈ વહ વિકૃતિપ્રતિવદ્ધ હૈ યહ વિકૃતિપ્રતિવદ્ધ વાચના
ગ્રહણ કરને મેં અસમર્થ હોતા હૈ, ક્યોં કિ—હસકા ચિત્ત રસાસ્વાદ મેં
હી ખગ્ન બના રહતા હૈ તથા જો અનન્તાનુબન્ધી ક્રોધ સે યુક્ત હોતા હૈ
વહ અવ્યવસિત પ્રાપ્ત હૈ । અવ્યવસિત શબ્દ કા અર્થ અનુપશાન્ત હૈ,

૩૫ ત્રિરત્નની અપેક્ષાએ ચડિયાતા છે, તેમને વંદણા આદિ કરવા૩૫ વિનયથી
જે છવ રહિત હોય છે તેને અવિનીત કહે છે એવા અવિનીતોને જે વિદ્યાદાન
દેવામાં આવે છે તે બ્યર્થ બય છે કહ્યું પણ છે કે—“ વિણયા હિયા વિજ્ઞા ” ઇત્યાદિ
જેમ પાણી ન મળે તો અનાજ પાકતું નથી એ જ પ્રમાણે અવિનય
સંગૃહીત વિદ્યા પણ ફળદાયી નિવડતી નથી, કારણ કે વિનયથી જ વિદ્યા શોભે
છે—વિનયાધીન વિદ્યા જ ફલિત થાય છે, એવું આગમવાક્ય છે.

રૂઢ આદિ રસોમાં જે લોહુપ (ગૃહ્ધ) હોય છે તેને વિકૃતિ પ્રતિબદ્ધ
કહે છે એવા વિકૃતિ પ્રતિબદ્ધ છવો વાચના ઝડપ કરવાને અસમર્થ હોય
છે, કારણ કે તેમનું ચિત્ત રસાસ્વાદમાં જ લીન રહ્યા કરે છે

જે મનુષ્ય અનન્તાનુબન્ધી ક્રોધથી યુક્ત હોય છે તેને અવ્યવસિત પ્રાપ્ત
કહે છે ‘ અવ્યવસિત ’ એટલે “ અનુપશાન્ત, ” અને ‘ પ્રાપ્ત ’ એટલે
‘ ઉપહાર ’ તેથી પ્રાપ્તની જેમ (પરમાધાર્મિકની જેમ) છવ અતિશય ક્રોધી

ક્રોધમુદીરયતિ સઃ,

ઉક્ત ચ—“ અપ્યેષિ પારમાર્ણિ અથરાહે ચપ્પ સ્થામિય ત વ ।

વહુમો ઉદીરયતો, અવિઓસિય પાહુહો સ સ્વલુ ॥ ૧ ॥

છાયા—અપ્યેઽપિ પારમાર્ણિ (પરમક્રોધ સમુદ્ભવ) અપરાધ વ્રતતિ શામિત તં વ ।

વહુમ્ ઉદીરયન્ અન્યવસિત પ્રાપ્તઃ સ સ્વલુ ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

પ્રત્યક્ષ વાચનાદાને લોકદ્વયહાનિ, તજોહલોકહાનિસ્તત્પ્રેરણાયાં કમ્પહસમવાત્ પરલોકહાનિ—વપ્તસ્ય ધ્રુતસ્ય ઊપરક્ષિત્ત્વોપશિષ્કલતાત્ ક્રોધાવશેન મગધવ નત્યાઙ્નાદરકરણાચ્ચેતિ ૧ । પ્રતિષ્ઠિતસુત્રમાદ—‘ તમો વપ્તિ ’ ઇત્યાદિ ।

મૌર પ્રાપ્ત શબ્દ કા અર્થ ઉપહાર છે, અતઃ પ્રાપ્ત કી તરહ પ્રાપ્ત—પરધાર્મિક કી તરહ પરમક્રોધી છે વહુ અપ્પવસિત પ્રાપ્ત છે, એસા અન્યવસિત પ્રાપ્તવાલા જો અનન્તાનુષ્ઠી ક્રોધવાલા હોતા છે વહી હોતા છે, ક્યોં કિ—ઈમસે ક્રમા માંગને પર મી વહુ ઈસ્ટા અધિક અર્શાત હી પનતા છે, અધિક સે અધિક ક્રોધ પો પ્રકટ કરતા છે । કહા મી છે —‘ અપ્યેષિપારમાર્ણિ—’ ઇત્યાદિ, ઈમકો વાચના દેને મેં ઇમપલોક કી હાનિ હોતી છે દેનેવાલે કી ઈહલોક સમ્પન્ધી હાનિ ઉસે પ્રેરણા કરને પર કલહ હોને કી સમાયના સી હોતી છે તથા પરલોક કી હાનિ દિયે ગયે ધ્રુત કો ઊપરમૂમિ મેં ઢાલે ગયે ધોજ કી તરહ નિષ્ફલ હો જાને સે હોતી છે । ક્યોં કિ—વહુ ક્રોધાવેશ સે મગધાન કે વચનોં કા આદર કારક નહીં હોતા છે ઈસલિયે યે સૂત્ર પઢાને કે યોગ્ય નહીં કહે ગયે હૈં, જય યે સૂત્ર પઢાને કે મી લાપક નહીં કહે ગયે હૈં, સો ઈન્હે અર્થ સુનાના

હવ છે તેને અન્યવસિત પ્રાપ્ત કહે છે એવો અન્યવસિત પ્રાપ્ત એ અનન્તાનુષ્ઠી ક્રોધવાળો એવજ ક્રોધ શકે છે કારણ કે તેની પાસે ક્રમા માંગના છતાં પણ તે ઉલ્ટો અધિક અશાન્ત બને છે અને વધારેને વધારે ક્રોધ પ્રકટ કરે છે કહ્યું પણ છે કે—‘ અપ્યેષિપારમાર્ણિ ’ ઇત્યાદિ—

તેને વાચના દેવાથી હાનિ થાય છે—તેને વાચના દેનારના આલોક સ્વયં હાનિ આ રીતે થાય છે—તેને પ્રેરણા કરવાથી કલહ થવાનો સંભવ રહે છે, એ રીતે વાચના દેનારના આલોકની હાનિ થાય છે જેમ ઉપર (સારઢીન) ભૂમિમાં બીજ વાગવાથી ફળની પ્રાપ્તિ થતી નથી તેમ એવા માણસને સુતદાન આપવાથી તેનું કોઈ સારું પરિણામ આવતું નથી આ રીતે તેના પરલોકની પણ હાનિ જ થાય છે કારણ કે એવો માણસ ક્રોધને વશ થઈને ભગવાનનાં વચનોનો પણ આદર કરતો નથી, તેથી તેને સૂત્રનો અભ્યાસ કરાવવો તે એગર નથી જ્યારે તેમને સૂત્રનો અભ્યાસ કરાવવાને પણ મોઝ કદા નથી,

પ્રયઃ-एतद्विपरीता विनीतादयो वाचयितुं कल्पन्ते । शेषं स्पष्टम् । २ । पूर्व श्रुत-
दानायोग्यावर्णिताः, साम्प्रतमयोग्यप्रस्तावान्सम्यक्त्वस्याप्ययोग्यान् वर्णयति-
'तओ दुस्सज्जप्पा' इत्यादि । सुगमं, नवरं-दुःदु खेन कष्टेन संज्ञाप्यन्ते=प्रज्ञाप्यन्ते
बोधविषयी क्रियन्त इति दुस्संज्ञाप्याः - अप्रज्ञापनीया इत्यर्थः । ते त्रयः प्रज्ञप्ताः,
तथाहि-दुष्टः, द्विष्टो वा तत्त्वं प्रति तत्त्वप्रज्ञापकं प्रति वा । अयं चा-प्रज्ञापनीयः
यतोऽस्य द्वेषेण दुष्टत्वेन बोधदेशस्य सफलता न जायत इति १ । मूढः-मूर्खः-

कदापि योग्य नहीं है । क्यों कि सूत्र की अपेक्षा अर्थ का महत्त्व होता
है इन पूर्वोक्त अविनीत आदिकोंसे जो विपरीत हैं वे विनीत आदिक
सूत्र पढ़ाने के और अर्थ सुनाने के योग्य होते हैं, यह बात अब सूत्र-
कार कहते हैं इसमें यह कहा गया है कि जो विनीत, अविकृतिप्रतिबद्ध
और व्यवसितप्राभूत होते हैं वे वाचना देने के योग्य कहे गये हैं ।
अयोग्य का प्रकरण होने से जो सम्यक्त्व के भी अयोग्य हैं, उन्हें-
सूत्रकार-" तओ दुस्सज्जप्पा पणत्ता " इत्यादि, इस सूत्र द्वारा कहते
हैं-जो बड़ी मुश्किल से बोध के विषयभूत किये जाते हैं ऐसे वे दुःस-
ंज्ञाप्य अप्रज्ञापनीय तीन कहे गये हैं, एक दुष्ट, अथवा द्विष्ट, दूसरा
मूढ, और तीसरा व्युद्ग्राहित, इनमें जो तत्त्व के प्रति अथवा-तत्त्वप्र-
ज्ञापक के प्रति द्वेष रखता हो या दुष्टप्रकृति संपन्न बना रहता हो वह
प्रथम नम्बर का अप्रज्ञापनीय है इसे अप्रज्ञापनीय इसलिये कहा गया

तो अर्थ સંભળાવવાનું તો ઠીકી રીતે યોગ્ય હોઈ શકે ! સૂત્ર કરતાં અર્થનું
મહત્વ વિશેષ હોય છે, એટલે અર્થ સમભવવાનું તો એથી પણ વધારે અયોગ્ય
મણી શકાય. પૂર્વોક્ત અવિનીત આદિથી વિપરીત એવા વિનીત આદિ શુષ્ણો-
વાણા શિષ્યો જ સૂત્ર શીખવવાને અને અર્થ સંભળાવવાને યોગ્ય હોય છે,
એ જ વાત હવે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે

વિનીત, અવિકૃતિ પ્રતિબદ્ધ અને વ્યવસિત પ્રાભૂત ક્રોધને વશ રાખનાર
શિષ્યો જ વાચના દેવાને યોગ્ય કહ્યા છે. અયોગ્યનું પ્રકરણ હોવાથી હવે સૂત્ર-
કાર સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ માટે જેઓ અયોગ્ય છે તેનું કથન કરે છે—

“ તઓ દુસ્સજ્જપ્પા પણત્તા ” ઇત્યાદિ—

જેઓ મહા મુશ્કેલીથી બોધને પ્રાપ્ત કરી શકે છે તેમને હઃસંજ્ઞાપ્ય
(અપ્રજ્ઞાપનીય) કહ્યા છે એવાં હઃસંજ્ઞાપ્ય ત્રણ કહ્યા છે—(૧) દુષ્ટ અથવા
દ્વિષ્ટ, (૨) મૂઢ અને (૩) વ્યુદ્ગ્રાહિત. જે તત્વ પ્રત્યે અથવા તત્વપ્રજ્ઞાપક પ્રત્યે
દ્વેષ રાખે છે અથવા દુષ્ટ પ્રકૃતિસંપન્ન જ આલુ રહે છે તેને દુષ્ટ અપ્રજ્ઞાપનીય

अथ हेयोपादेयविवेकविकसस्थेन उपदेशग्रहणासमर्थत्वात् प्रज्ञापयितुं न यो
 व्युद्ग्राहितः—विमोहितमतिताः—कृगुरु इदीकृतविपर्यास इत्यर्थः । एषोऽप्युपां
 न योग्यः ३ । एतद्विपरीतादुष्टाद्विशेषणविशिष्टा, सु-सुखेन-अनाया
 सज्ञाप्यते-बोध्यन्ते इति सुसज्ज्ञाप्या भवन्ति । क्षेत्र स्पष्टम् । ४ ॥ सू ७
 पूर्व प्रज्ञापनाद्वा पुरुषा वर्णिताः, सम्प्रति सत्प्रज्ञापनीयवस्तूनि त्रिस्थाना
 वतारयोम्यान्वाह—

१ मूळम्—तओ महालिया पळवया, पणत्ता, त जहा-मा
 सुत्तरे, कुडलवरे, रुयगवरे ॥ १ ॥ तओ महाइमहालया पणत्त
 त जहा-जवुदीवे मदरे मदरेसु १, सयभुरमणे समुद्धे समुद्धेसु
 खमलोए कण्णे कण्णेषु ॥ सू० ७२ ॥

है कि कुछ होता है, अथवा प्रेय रखनेवाला होता है, इस लिये दि
 गया तत्त्वोपदेश इसमें सफलताशाली नहीं होता है । मूढ-मूर्ख
 होता है वह इसलिये अप्रज्ञापनीय कहा गया है कि वह हेयोपां
 विवेक से विकल होता है, अतः—उपदेश ग्रहण करने में असमर्थ ब
 रहता है तथा जो व्युद्ग्राहित होता है विमोहित मतिवाला होता
 अर्थात् कृगुरु की शिक्षा से जिसका विपर्यास मजबूत कर दिया ग
 होता है वेमा यह व्युद्ग्राहित मतिवाला पुरुष भी उपदेश देने के यो
 नहीं कहा गया है, किन्तु—इनसे विपरीत जो होते हैं अर्थात्—अदुष्टा
 विशेषण से विशिष्ट जो मनुष्य होते हैं वे बिना किसी भाषास के सु
 पूर्वक समझाये जा सकते हैं, इसलिये उन्हें सूत्रकारों ने सुसज्ज्ञाप्य क
 है अथवा विशिष्ट स्पष्ट है—॥ सू० ७१ ॥

कहे छ तेने अप्रज्ञापनीय कहेवानु कारण को छ के ते दुष्ट दोष छे, अथ
 दोष राजनादे दोष छे तेथी तेने के तत्वोपदेश आपनामा आवे छे त
 १५ लय छे मूढ (मूर्ख) अप्रज्ञापनीय कहेवानु कारण को छ के ते
 हेयोपादेयना विवेकही विहीन दोष छे तेथी उपदेश अल्प करवाने असमर्थ
 दोष छे विमोहित मतिवाजने अनुग्रहादिन कहे छे अरवे के कृगुरुना उप
 देशही नेना विपर्यास मजबूत रीते यह जगो दोष छे कोना अनुग्रहादि
 मतिवाला पुरुषने यह उपदेश देवाने पात्र कहा नही, परंतु तेना कर
 विपरीत अदुष्ट अभूद अने अनुग्रहादित आदि विशेषज्ञावाजे मनुष्य भूष
 साध्य दोष छे कारण के तेने तत्वोपदेश अदेसायी समझी याय छे,
 त्या उपदेश वाताने उपदेश निभूज जतो नही, ॥ सू ७१ ॥

છાયા—ત્રયો માળ્ડલિકા પર્વતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—માનુષોત્તરઃ, કુણ્ડલવરઃ રુચકવરઃ ॥ ૧ ॥ ત્રયો મહાતિમહાલયાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—જમ્બૂદ્વીપે મન્દરો મન્દરેષુ ૧, સ્વયમ્ભૂરમણઃ સમુદ્રઃ સમુદ્રેષુ ૨, બ્રહ્મલોકઃ કલ્પઃ કલ્પેષુ ૩ ॥ સૂ૦ ૭૨ ॥

ટીકા—‘તઓ મંડલિયા’ इत्यादि । माण्डलिकाः, मण्डलं-चक्रवालं, तदस्ति येषां ते माण्डलिकाः प्राकारवलयवदवस्थिताः पर्वतास्त्रयः प्रज्ञप्ताः, तथथा—ते यथा—मानुषोत्तरः, मानुषेभ्यो मानुषक्षेत्राद्वा उत्तरः परतोवर्त्तो यो मानुषलोकविभाजकः

इस प्रकार प्रज्ञापनार्ह पुरुषों का वर्णन करके अब सूत्रकार त्रिस्थानावतरण योग्य तत्त्वप्रज्ञापनीय वस्तुओं को कहते हैं “तओ मंडलिया पन्वया पणत्ता” इत्यादि,

सूत्रार्थ — तीन माण्डलिक पर्वत कहे गये हैं, जैसे—मानुषोत्तर १ कुण्डलवर २ और रुचकवर ३ ये तीन सब से बहुत बड़े कहे गये हैं, जैसे जम्बूद्वीप अन्य मन्दरों के बीचमें मन्दर पर्वत १ समुद्रों के बीच में स्वयम्भूरमण २ और कल्पों के बीच में ब्रह्मलोक कल्प ३

टीકાર્થ—इस सूत्रका विस्तृत अर्थ ऐसा है—मण्डल नाम चक्रवाल का है यह चक्रवाल जिनको है वे माण्डलिक हैं, प्राकार की तरह जो गोल रूप में अवस्थित होते हैं वे माण्डलिक कहलाते हैं ऐसे माण्डलिक पर्वत तीन कहे गये हैं,—एक मानुषोत्तर पर्वत यह मानुषोत्तर पर्वत पुष्करवर द्वीप के बीच में है इसके आगे मनुष्य नहीं हैं इसके पहले २ मनुष्य हैं इसलिये इसका नाम मानुषोत्तर है । अथवा—मनुष्यक्षेत्र अर्थात् द्वीप

પ્રજ્ઞાપનીય પુરુષોનુ પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકર ત્રિસ્થાનકનો આશ્રય લઇને પ્રજ્ઞાપનીય વસ્તુઓનું વર્ણન કરે છે—

“ તઓ મંડલિયા પન્વયા પણત્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—ત્રણ મંડલિક પર્વત કહ્યા છે—(૧) માનુષોત્તર, (૨) કુંડલવર અને (૩) રુચકવર આ ત્રણેને સૌથી મોટા કહ્યા છે—બધા મન્દર પર્વતોમાંથી જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલો મન્દર પર્વત સૌથી મોટો છે. (૨) સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્ર બધા સમુદ્રો કરતાં મોટો છે. (૩) બ્રહ્મલોક કલ્પ બધા કલ્પોમાં સૌથી મોટું છે.

ટીકાર્થ—હવે આ સૂત્રનો વિશેષાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—મંડલ એટલે ચક્રવાલ. આ ચક્રવાલ (ગોળાકાર) થી યુક્ત જે હોય છે તેને મંડલિક કહે છે. પ્રાકાર (કોટ) ની જેમ જે પર્વતો ગોળાકારે અવસ્થિત હોય છે તેમને મંડલિક પર્વતો કહે છે એવા મંડલિક પર્વત ત્રણ કહ્યા છે—(૧) માનુષોત્તર પર્વત. આ પર્વત પુષ્કરવર દ્વીપની મધ્યમાં છે, ત્યાંથી આગળ જતાં મનુષ્યોનો સદ્ભાવ નથી, પરંતુ તે પર્વતની પહેલા મનુષ્યોનો સદ્ભાવ છે, તેથી તેનું નામ માનુષોત્તર પર્વત છે. અથવા મનુષ્યક્ષેત્ર—અર્થાત્ દ્વીપનો તે વિભાગ કહે

સ સયા । કુણ્ડલચર-एकादशे कुण्डलचरनाम्नि द्वीपे स्थित माकारकुण्डलाकृ
 तिकः कुण्डलद्वीपं विभजमानः पर्वतः । रुचकचरः-अयोदशे रुचकचरे द्वीपे पर्व-
 मानः कुण्डलाकृतिकः रुचकद्वीपं विभजमानः पर्वतविशेष । तत्र मध्यमानुषोचर
 पर्वतस्वरूप यथा—

“पुक्खरचर दीवदु, परिखिचइ माणुसुचरो सेलो ।
 पायारसरिसरूची, विमनसो माणुस भोग ॥ १ ॥
 सत्तरस एगवीसाइ भोयण सयाइ सो समुब्धिदो ।
 चत्तारि य तीसाइ भूले कोस च भोगाडो ॥ २ ॥
 दसपावीसाइ अहे, चित्थिन्नो होइ भोयणसयाइ ।
 सचय चेवीसाइ, चित्थिभो होइ मग्गम्मि ॥ ३ ॥
 चत्तारि य चठवीसे, चित्थारो होइ उवरि सेछत्स ।
 अट्टाइग्गे दीवे, दो य समुरे अणुपरोइ ॥ ४ ॥

છાયા—પુક્કરચરદ્વીપાર્થે પરિસિપતિ માણુપોચરઃ શીલ* ।

માકારસદ્ધરૂપો વિમનમાનો માણુપં સોકમ્ ॥ ૧ ॥

સત્તદશ एकविंशत्या (અધિકાનિ) યોનનશ્તાનિ (एकविंशत्यधिकसप्तदश
 योजनश्तानीत्यर्थ) સમુદ્ધિદાઃ । ચત્તારિ ચ વિંશત્ (विंशदधिकचतुश्चता
 नीत्यर्थः) ક્રોશં વાવગાહ ॥ ૨ ॥

કા યહ વિભાગ કરતા હે હસલિયે મી હસકા નામ માણુપોત્તર પર્વત હે
 ૧૧ વાં દ્વીપ જો કુણ્ડલચર હે વસ દ્વીપ મેં યહ પર્વત હે ઓર હસકી
 આકૃતિ કુણ્ડલ કે ઝેસી ગોલ હે યહ પર્વત કુણ્ડલદ્વીપ કા વિભાગ
 કરતા હે । રુચકચર યહ પર્વત તેરહવાં જો રુચકચર દ્વીપ હે વસમેં ચર્ત
 માન હે, યહ મી કુણ્ડલ કી આકૃતિ ઝેસા ગોલ હે, ઓર રુચકચર
 દ્વીપ કા વિભાગ કરતા હે इनमें માણુપોત્તર પર્વત કા સ્વરૂપ હસ પ્રકાર
 સે હે—“પુક્કરચરદીવદુ” હત્યાદિ, તાત્પર્યે હન ગાપાઓં કા હસ ૭

ઉ તેથી પણ તેનું નામ માણુપોત્તર પર્વત પડ્યું છે (૧) કુણ્ડલચર પર્વત
 કુણ્ડલચર નામના અજિવારમાં દ્વીપમાં આવેલો છે તે કુણ્ડલના જેવા બેળ
 આકારવાળો છે અને તે પર્વત કુણ્ડલદ્વીપનો વિભાગ કરે છે (૨) રુચકચર
 પર્વત ૧૩ માં રુચકચર દ્વીપમાં આવેલો છે, તેનો આકાર પણ કુણ્ડલ
 જેવો બેળ છે, આ પર્વત રુચકચર દ્વીપના વિભાગ કરે છે અને માણુપોત્તર
 પર્વતના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે—“પુક્કરચરદીવદુ” હત્યાદિ—

દશદ્વાવિંશતિઃ અધો વિસ્તીર્ણો ભવતિ યોજનશતાનિ (દ્વાવિંશત્યધિકદશ-
યોજનશતાનીત્યર્થઃ) સપ્ત ચ ત્રયોવિંશતિઃ (ત્રયોવિંશત્યધિકસપ્તશતાનીત્યર્થઃ)
વિસ્તીર્ણો ભવતિ મધ્યે ॥ ૩ ॥

ચત્વારિ ચ ચતુર્વિંશતિઃ (ચતુર્વિંશત્યધિકચતુઃશતાનીત્યર્થઃ) વિસ્તારો ભવતિ
ઉપરિ શૈલસ્ય । સાર્ધદ્વયદ્વીપાન્ દ્વી સમુદ્રાવનુપર્યેતિ ॥ ૪ ॥ ઇતિ ।

ષોડશદ્વીપેષુ કુણ્ડલવરદ્વીપસ્યૈકાદશત્વે ક્રમમાહ—

“ જંબુદીવો ૧ ધાયઙ્ ૨, પુન્નરદીવો ૩ ચ વારુણિવરો ૪ ।

શીરવરોઽપિ ૫ ચ દીવો, યયવરદીવો ૬ ચ શ્વેતવરો ૭ ॥ ૧ ॥

નંદીસરો ૮ ચ અરુણો ૯, અરુણોવાઓ ૧૦ ચ કુણ્ડલવરો ૧૧ ચ ।

તદ્દ સંઘ ૧૨ રુચગ ૧૩ ધ્રુવવર ૧૪ કુસ ૧૫ કુંચરો ૧૬ તત્તો દીવો ” ॥ ૨ ॥

છાયા-જમ્બૂદ્વીપો ૧ ધાતકી ૨ પુન્નરદ્વીપશ્ચ ૩ વારુણીવરશ્ચ ૪ ।

શીરવરોઽપિ ૫ ચ દ્વીપો, ધૃતવરદ્વીપશ્ચ ૬ ક્ષોદવરઃ ૭ ॥ ૧ ॥

નન્દીશ્વરશ્ચ ૮ અરુણઃ ૯ અરુણોપપાતશ્ચ ૧૦ કુણ્ડલવરશ્ચ ૧૧ ।

પ્રકાર સે હૈ-યહ માનુષોત્તરપર્વત ઓતર કી ઓર ૧૭૨૧ યોજન ઝંચા
હૈ ૪૩૦ કોશતક નીચે જમીન કે ઓતર ઈસકા અવગાઢ (ગહરાઈ) હૈ
જમીન પર હસકી ચૌડાઈ ૧ હજાર ઘોઈસ યોજન કી હૈ મધ્ય મેં ૭૨૩
યોજન કી હૈ ઓર ડપર મેં ૪૨૪ યોજન કી યહ અઢાઈ દ્વીપ કા વિભાગ
કરતા હૈ સોલહ દ્વીપોં મેં કુણ્ડલવર દ્વીપ કો જો ૧૧ વાં દ્વીપ કહા ગયા
હૈ ડસમેં યહ પ્રમાણ હૈ “ જંબુદીવો ધાયઙ્ ” ઇત્યાદિ, જમ્બૂદ્વીપ યહ
પ્રથમ દ્વીપ હૈ ધાતકીશ્વર યહ દ્વિતીય દ્વીપ હૈ પુન્નરવરદ્વીપ યહ તૃતીય
દ્વીપ હૈ વારુણિવર યહ ચૌથા દ્વીપ હૈ શીરવર યહ પાંચવાં દ્વીપ હૈ ધૃત-
વરદ્વીપ યહ છઠ્ઠા દ્વીપ હૈ ક્ષોદવર હક્ષુરસ યહ સાતવાં દ્વીપ હૈ નન્દીશ્વર

આ ગાથાઓનુ તાત્પર્ય આ પ્રકારનુ છે-આ માનુષોત્તર પર્વત
બાજુએ ૧૭૨૧ યોજન ઊંચો છે, જમીનની નીચે ૪૩૦ કોશ પર્યંતની તેની
ઊંડાઈ છે, જમીનપર તેની પહોળાઈ એક હજાર યોજનની છે, મધ્યમાં તેની
પહોળાઈ ૭૨૩ યોજનની છે અને સૌથી ઉપરની બાજુએ તેની પહોળાઈ
૪૨૪ યોજનની છે. આ પર્વત અઢી દ્વીપનો વિભાગ કરે છે ૧૬ દ્વીપોમાં
કુંડલવર દ્વીપને જે અગિયારમો દ્વીપ કહેા છે, તેનુ પ્રમાણ નીચે મુજબ છે.
“ જંબુદીવો-ધાયઙ્ ” ઇત્યાદિ

પહેલો દ્વીપ જમ્બૂદ્વીપ છે, બીજો દ્વીપ ધાતકીખડ દ્વીપ છે, ત્રીજો પુન્ન-
રવર દ્વીપ, ચોથો વારુણિવર દ્વીપ છે, પાંચમો શીરવર દ્વીપ છે, છઠ્ઠો ધૃતવર
દ્વીપ છે, ક્ષોદવર-હક્ષુરસ સાતમો દ્વીપ છે, આઠમો નન્દીશ્વર દ્વીપ છે, નવમો

તયા શ્રદ્ધ ૧૨ ક્વચઃ ૧૩ સુમગચરઃ ૧૪ કુશ ૧૫ ક્રોચચરઃ ૧૬ સ્તતા
દ્રીપઃ ॥ ૨ ॥ ૩૬ । કુણ્ડલચરપર્વતસ્વરૂપં યથા—

“ કુણ્ડલચરસ્સ મન્દો નમુષ્મો દોઢ કુણ્ડલો સેલો ।
પાગારસરિસરુષો, ધિગયતો કુણ્ડલ દીર્ઘ ॥ ૧ ॥
ધાયાલીસસહસ્તે, ઉષ્ણદો ગુણ્ડલો ઢમ્ ઢ સેલો ।
એગ શ્વેત સહસ્ત, ધરણિયલમહે સમોગાદો ॥ ૨ ॥
દસ છેત્ર જોયણસપ, યાત્રીસે વિત્થલો ય મૂલમ્મિ ।
સપેત્ર જોયણસપ, યાત્રીસે વિત્થલો મન્દ ॥ ૩ ॥
ચત્તારિ જોયણસપ, ચઢવીસે વિત્થલો ડસિહરતલે ॥ ”

છાયા-કુણ્ડલચરસ્ય મધ્યે, નમોષ્મો મન્વતિ કુણ્ડલ શીલઃ ।

પ્રાકારસહસ્તરૂપો વિમનમાનઃ કુણ્ડલ દ્રીપમ્ ॥ ૧ ॥

દ્વિચત્વાર્ણિશ્વસ્ત્રહસ્રાણિ (દ્વિચત્વાર્ણિશ્વસ્ત્રહસ્રયોમનનીત્યર્થઃ) ઉદ્વિદ્ઘઃ કુણ્ડલો
મન્વતિ શીલ । એક શ્વેત સહસ્ત્ર ધરણિયલમધઃ સમવગાદ ॥ ૨ ॥

દશ છેત્ર યોજનશતાનિ દ્વાવિંશતિઃ (દ્વાવિંશત્યધિકાનીત્યર્થઃ) વિસ્તૃતમ્
મૂલે । સપ્તૈત્ર યોજનશતાનિ દ્વાવિંશતિઃ (દ્વાવિંશત્યધિકાનીત્યર્થઃ) વિસ્તૃતો મધ્યે ॥ ૩ ॥

પદ ૮ થાં દ્રીપ હૈ અરુણચર યદ્ નૌથા દ્રીપ હૈ અરુણોપપાત યદ્ ૧૦ થાં
દ્રીપ હૈ કુણ્ડલચર યદ્ ૧૧ થાં દ્રીપ હૈ શાદ્ધ યદ્ ૧૨ થાં દ્રીપ હૈ ક્વચક
યદ્ તેરહથાં દ્રીપ હૈ સુમગચર યદ્ ૧૪ થા દ્રીપ હૈ કુશ યદ્ ૧૫ થાં
દ્રીપ હૈ ઔર ક્રોચચર યદ્ ૧૬ થાં દ્રીપ હૈ, કુણ્ડલચર પર્વત કા સ્વરૂપ
હસ પ્રકાર સે હૈ—“ કુણ્ડલચરસ્સ મન્દો—” હત્યાવિ, તાત્પર્ય જન ગાયામોં
કા એમા હૈ—કુણ્ડલચર પર્વત કુણ્ડલચર દ્રીપકે મધ્ય મેં હૈ પ્રાકાર કોટ
કે જેસા હસકા આકાર હૈ કુણ્ડલચર દ્રીપ કા યદ્ વિભાગ કરતા હૈ
હસકા સમેગ કુખાઈ ૪૨ હજાર યોજન કા હૈ પૃથિવી કે મીતર મીચે ૧
હજાર યોજન તક યદ્ હૈ ૧૦૨૨ એક હજાર ચાવીસ યોજન કી જમીન

અરુણચર દ્રીપ છે, હસમે અરુણોપપતિ દ્રીપ છે, ૧૧ મી કુણ્ડલચર દ્રીપ છે,
વારમે શાંળ દ્રીપ છે તેરમે ક્વચક દ્રીપ છે, ૧૪ મી સુમગચર દ્રીપ છે
૧૫ મી કુશ દ્રીપ છે, અને ૧૬ મી ક્રોચચર દ્રીપ છે કુણ્ડલચર પર્વત
૧૦૨૨ મી પ્રકારનું છે—કુણ્ડલચરસ્સ મન્દો ” હત્યાવિ—

આ ગાયામોનો આવાથો આ પ્રમાણે છે—કુણ્ડલચર પર્વત કુણ્ડલચર દ્રીપની મધ્યમાં
છે પ્રાકાર (કોટ) એવો તેનો આકાર છે—આ પર્વત કુણ્ડલચર દ્રીપનો વિભાગ ૪૨
છે તેનો ઉદ્દેશ (ઉચ્ચાઈ) ૪૨૦૦૦ મી તાલીસ હજાર મીજનની છે, જમીનની નીચે
૧૦૦૦ મીટર હજાર મીજનની છે કાંઈ મુખી તે આપેલો છે જમીનપર તેની પહેળાઈ

ચત્વારિ યોજનશતાનિ ચતુર્વિંશતિઃ (ચતુર્વિંશત્યધિકાનીત્યર્થઃ) વિસ્તૃતસ્તુ શિખરતલે ॥ ૬૮ ॥

ત્રયોદશતમરુચકવરદ્વીપસ્થિતસ્ય રુચકવરપર્વતસ્ય સ્વરૂપં ।

યથા—“ રુચગવરસ્સ ૩ મઙ્ગે, નગુત્તમો હોઈ પવ્વઓ રુચગો ।

પાગારસરિસરૂવો, રુચગં દીવ વિભયમાણો ॥ ૧ ॥

રુચગસ્સ ૩ ઉત્સેહો, ચરરાસીઈં ભવે સહસ્સાઈં ।

અગં ચેવ સહસ્સં, ધરણિયલમહે સમોગાદો ॥ ૨ ॥

દસ ચેવ સહસ્સા રાહુ, વાવીસા જોયણાણ વોદ્ધવ્વો ।

મૂલમ્મિ ૩ વિકલંભો, સાહિઓ રુચગસેલસ્સ ” ॥ ૩ ॥

છાયા—રુચકવરસ્ય તુ મધ્યે, નગોત્તમો ભવતિ પર્વતો રુચકઃ ।

પ્રાકારસદ્શરૂપઃ, રુચકં દ્વીપં વિભજમાનઃ ॥ ૧ ॥

રુચકસ્ય તુ ઉત્સેધઃ, ચતુરશીતિર્ભવેત્ સહસ્રાણિ ।

અકં ચેવ સહસ્રં ધરણિતલમધઃ સમવગાદ ॥ ૨ ॥

દશ ચવ સહસ્રાણિ રાહુ દ્વાવિંશતિઃ (દ્વાવિંશત્યધિક દશયોજનશતાનીત્યર્થઃ) વોદ્ધવ્યઃ । મૂલે તુ વિકલમ્ભઃ સાધિકો રુચક શૈલસ્ય ॥ ૩ ॥ ૬૮ ॥

અસ્ય રુચકવરપર્વતસ્ય મધ્યવિસ્તારો દ્વાવિંશત્યધિકાનિ સપ્તસહસ્રયોજનાનિ, ઉપરિવિસ્તરતસ્તુ ચતુર્વિંશત્યધિકાનિ યોજનસહસ્રાણીતિ ॥ ૧ ॥

પર इसकी चौड़ाई है, मध्य में ७२२ योजन विस्तीर्ण है और ४२४ योजन ऊपर है । तेरहवां जो रुचकद्वीप है उस द्वीप में स्थित जो रुचकवरोपर्वत है उसका स्वरूप इस प्रकार से है—“ रुचगवरस्स ३ मङ्ग्ले ” इत्यादि । यह पर्वतों में श्रेष्ठ रुचकवर पर्वत रुचकवर द्वीप के मध्य में है इसका आकार भी प्राकार—कोटके जैसा है यह रुचकवरद्वीपका विभाग करता है, इसका उत्सेध ऊंचाई ८४ हजार योजन की है तथा १ हजार योजन यह पृथिवी के अन्दर है दश हजार २२ योजन से कुछ अधिक इसकी मूल में चौड़ाई है मध्य में इसका विस्तार ७ हजार २२ योजन

૧૦૨૨ યોજનની છે, મધ્યમાં ૭૨૨ યોજનનો તેનો વિસ્તાર છે અને ઉચે ૪૨૪ યોજનનો વિસ્તાર છે ૧૩ માં રુચકવર દ્વીપમાં આવેલા રુચકવર પર્વતના સ્વરૂપનું હવે નિરૂપણ કરવામાં આવે છે—“ રુચગવરસ્સ ૩ મઙ્ગે ” ઇત્યાદિ—પર્વતોમાં શ્રેષ્ઠ એવો રુચકવર પર્વત રુચકવર દ્વીપની મધ્યમાં છે. તેનો આકાર પ્રાકાર (કોટ) નો જેવો છે, તે રુચકવર દ્વીપનો વિભાગ કરે છે. તેનો ઉત્સેધ ઉચાઈ ૮૪ હજાર યોજનની છે. તે પૃથ્વીની અંદર એક હજાર યોજન સુધી ફેલાયેલો છે, જમીનપરનો તેનો વિસ્તાર દસ હજાર બાવીસ યોજન કરતાં

માનુષોત્તરાદયો મહાન્ત ઇતિ મહત્મસજ્ઞાદતિ મહતઃ પદાર્થના—
 ‘તમો મહા’ં’ इत्यादि, अतिमहान्तश्च ते आलयाश्च आधया इति—अतिमहालया,
 महान्तश्च तेऽतिमहालयाश्चेति महातिमहालया । महच्छब्दस्य द्विरुच्चारण मन्
 रादीनां सर्वगुरुत्वव्यापनार्थं, तेन—अन्येभ्य स्वस्वजातीयेभ्योऽति महान्त इत्यर्थः,
 ते भयः प्रज्ञप्ता , तानेवाह—मन्दरेषु—पश्चानां मन्दरपर्वतानां मध्ये इत्यर्थं , अम्बू
 द्वीपे यो मन्दरः मध्यमम्बूद्वीपस्यमेरुपर्वत स महान् वर्तते यतोऽय सप्त-
 योजनपरिमितः, श्रेयाश्चत्वारो मन्दराः सात्तिरेकपञ्चाशीतियोजमसहस्रपमाणा
 का है, और ऊपर में इसका विस्तार १ हजार २४ योजन का है।
 ये मानुषोत्तर पर्वत महान् हैं ऐसा कहा, अब सूत्रकार इनमें भी जो
 और अधिक महान् हैं उन्हें प्रगट करते हैं—“तमो मपह” इत्यादि,
 यहाँ जो ‘महत्’ शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है वह इस बात
 को स्थापन करने के लिये किया गया है, कि ये मन्दरादि पदार्थ सब
 से महान् हैं, इनसे महान् और कोई नहीं हैं, अर्थात्—अपनी जाति के
 जो पदार्थ हैं उनमें ये अति महान् हैं, इन अति महानों के बीच में पाँच
 मन्दर पर्वतों के बीच में जो जम्बूद्वीप में मन्दरपर्वत है वह महान् है
 क्यों कि—इसका विस्तार १ लाख योजन का कहा गया है
 और पाक्षी के जो चार मन्दर पर्वत हैं—चातकीश्रृण्व के दो, और पुष्कर-
 रथर द्वीपार्थ के दो—इसका विस्तार केवल ८१ हजार योजन का ही
 पक्ष पधारो छे મહામાં તેનો વિસ્તાર ૭૦૨૨ યોજનનો છે અને સૌથી
 ઉપર તેનો વિસ્તાર ૧૦૨૪ યોજનનો છે

આ માનુષોત્તર પર્વતો મહાન છે એવું કહ્યું હવે સૂત્રકર એ વાત પ્રગટ
 કરે છે કે સૌથી મહાન પર્વત કયો છે—“તમો મપહ” ઇત્યાદિ

આ સૂત્રમાં જે “મહત્ મહાન” શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે
 તે એ વાતને પ્રતિપાદિત કરવાને માટે કરાયો છે કે—

આ મન્દરાદિ પદાર્થ સૌથી મહાન છે—તેમનાથી અધિક મહાન બીજો
 કોઈ પદાર્થ નથી. એટલે કે પોતાની બાતિના જે પદાર્થો છે તેમનામાં તે
 અતિ મહાન છે વળી તે પાંચ પર્વત અતિ મહાન મન્દર પર્વતોમાં પણ
 સૌથી મહાન પર્વત તો જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલો મન્દર પર્વત જ છે ખાતકીશ્રુણ્વ
 બે મન્દર પર્વતોનો અને પુષ્કરથર દ્વીપાર્થના બે મન્દર પર્વતોનો વિસ્તાર
 કેવલ ૮૧૦૦૦ યોજનનો જ કહ્યો છે પરન્તુ જમ્બૂદ્વીપના મન્દર પર્વતનો
 વિસ્તાર તો એક લાખ યોજનનો કહ્યો છે

એવ સન્તીતિ । સમુદ્રેષુ-સર્વસમુદ્રાણાં મધ્યે इत्यर्थः, स्वयम्भूरमणः समुद्रो महान् वर्तते तस्य शेषसर्वद्वीपसमुद्रेभ्यः समधिकप्रमाणत्वात् । कल्पेषु-सर्वदेवलोकेषु मध्ये ब्रह्मलोकः कल्पः-पञ्चमदेवलोको महान् अस्ति, तत्प्रदेशे लोकविस्तरस्य पञ्चरज्जुप्रमाणत्वात्, तत्प्रमाणतया च ब्रह्मलोकस्य विवक्षितत्वादिति ॥सू० ७२॥

अनन्तरं ब्रह्मलोककल्प उक्त इति कल्पशब्दसाधर्म्यात् कल्पस्थितिं सूत्रद्वयेनाह-

मूलम्-तिविहा कप्पट्टिई पणत्ता, तं जहा-सासाइयकप्प-
ट्टिई, छेदोवट्ठावणियकप्पट्टिई, निविसमाणकप्पट्टिई । १ । अहवा
तिविहा कप्पट्टिई पणत्ता, तं जहा-णिव्विट्ठकप्पट्टिई, जिणकप्प-
ट्टिई, थेरकप्पट्टिई । २ ॥ सू० ७३ ॥

छाया-त्रिविधा कल्पस्थितिः प्रज्ञप्ता, तद्यथा सामायिककल्पस्थितिः, छेदो-
पस्थापनीयकल्पस्थितिः, निर्विशमानकल्पस्थितिः । १ । अथवा त्रिविधा कल्पस्थितिः

કહા ગયા હૈ સમુદ્રોં મેં સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્ર હૈ વહ સવ સે બડા કહા
ગયા હૈ, કયોં કિ-સવ દ્વીપોં ઓર સમુદ્રોં સે ઇસકા પ્રમાણ અધિક હૈ,
કલ્પોં મેં બ્રહ્મલોક કલ્પ હૈં પાંચવાં દેવલોક હૈ-વહ સવ સે બડા કલ્પ હૈ,
કયોં કિ-ઇસકે પ્રદેશ મેં લોક વિસ્તાર પાંચ રાજૂ કા કહા ગયા હૈ સો
ઇતને હી બડે પ્રમાણવાલા યહ બ્રહ્મલોક ભી કહા ગયા હૈ ॥ સૂ૦ ૭૨

બ્રહ્મલોક કલ્પગત કલ્પ શબ્દ કે સાધર્મ્ય કો લેકર અવ સૂત્રકાર
કલ્પસ્થિતિ કા કથન દો સૂત્ર સે કરતે હૈ-“તિવિહા કપ્પટ્ટિઈ પણત્તા”
इत्यादि,

સૂત્રાર્થ-કલ્પસ્થિતિ ત્રીન પ્રકારકી કહી ગઈ હૈ જૈસે-સામાયિકકલ્પ-

અધા સમુદ્રોમાં સૌથી મોટો સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્ર છે, કારણ કે સઘળા
દ્વીપો અને સમુદ્રો કરતાં તેનું પ્રમાણ અધિક કહ્યું છે.

અધાં કલ્પોમાં બ્રહ્મલોક કલ્પ સૌથી મોટું છે, બ્રહ્મલોક કલ્પ પાંચમું
દેવલોક છે તેને સૌથી મોટું કલ્પ કહ્યું છે કારણ કે તેના પ્રદેશમાં લોકવિસ્તાર
પાંચ રાજૂપ્રમાણ કહ્યો છે. આ બ્રહ્મલોક કલ્પ પણ પાંચ રાજૂપ્રમાણ
વિસ્તારવાળું કહ્યું છે. ॥ સૂ. ૭૨ ॥

બ્રહ્મલોક કલ્પગત કલ્પ શબ્દના સાધર્મ્યને હવે સૂત્રકાર કલ્પસ્થિતિનું
કથન કરવા નિમિત્તે બે સૂત્રો કહે છે—

“તિવિહા કપ્પટ્ટિઈ પણત્તા” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-કલ્પસ્થિતિ ત્રણ પ્રકારની કહી છે-(૧) સામાયિક કલ્પસ્થિતિ, (૨)
છેદોપસ્થાપનીય કલ્પસ્થિતિ, અને (૩) નિર્વિશમાન કલ્પસ્થિતિ.

મહત્તા, તથા-નિર્વિષકલ્પસ્થિતિઃ, જિનકલ્પસ્થિતિઃ, સ્પધિરકલ્પસ્થિતિઃ । ૨ ॥ સુ. ૭૬ ॥

ટીકા—‘તિવિદા’ રૂપાદિ, સૂત્રદ્વયમ્ । કલ્પઃ—કરણમાધારઃ, તસ્ય તથા સ્થિતિઃ—મર્યાદાકલ્પસ્થિતિ । સા ત્રિવિદા, તથા-તથાદિ-સામાયિકકલ્પસ્થિતિઃ, સમાનિ-જ્ઞાનાદીનિ તેષામાયો લાભ સમાય, સ એવ સામાયિક-સયમ વિશેષઃ, તસ્ય તદેવ વાકલ્પ સામાયિકકલ્પઃ યય ચ પ્રથમચરમતીર્થયોઃ સાધુનાં સ્વરૂપકાલિકા, હેદોપસ્થાપનીયસ્ય સમ્પ્રાપ્તઃ, મધ્યતીર્થેષુ મહાનિવેદેષુ ચ સ્થિતિ હેદોપ સ્થાપનીયકલ્પસ્થિતિ, ઔર નિર્વિદામાનકલ્પસ્થિતિ, અથવા ઇત્ત તરહ સે ખી કલ્પસ્થિતિ ત્રીન પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ જૈસે-નિર્વિષકલ્પસ્થિતિ, જિનકલ્પસ્થિતિ ઔર સ્પધિરકલ્પસ્થિતિ ।

ટીકોર્થ—કલ્પ નામ-કરણ આધાર કા હૈ ઉસમે, યા ઉસકી જો સ્થિતિ-મર્યાદા હૈ વહ કલ્પસ્થિતિ હૈ યહ કલ્પસ્થિતિ જો ત્રીન પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ, સો ઉસકા સાત્પર્યે એસા હૈ, અર્થાત્ સામાયિક કલ્પ સ્થિતિ મેં જો સામાયિકપદ હૈ વહ જ્ઞાનાદિકોં કે લાભરૂપ હૈ અર્થાત્ સમ જાન્દ કા અર્થ જ્ઞાનાવિરૂપ હૈ ઇસ જ્ઞાનાદિકોં કા જો લાભ હૈ વહ સમાય હૈ યહ સમાય હી સામાયિક હૈ સામાયિક એક સયમવિશેષ કહા ગયા હૈ ઇસ સામાયિક કા જો કલ્પ હૈ વહ સામાયિક કલ્પ હૈ અથવા-સામાયિક રૂપ જો કલ્પ હૈ વહ સામાયિકકલ્પ હૈ, એસા ઇસકા વાચ્યાર્થ હોતા હૈ યહ સામાયિક કલ્પ પ્રથમ ઔર ચરમ તીર્થકરકે સાધુઓં કા અલ્પકાલિક હૈ । ક્યોં કિ-ઉસ સમય હેદોપસ્થાપનીયકા સમ્પ્રાપ્તિ મધ્ય

અથવા આ પ્રમાણે પણ કલ્પસ્થિતિ ત્રણ પ્રકારની કહી છે-(૧) નિર્વિષકલ્પસ્થિતિ (૨) જિન કલ્પસ્થિતિ અને (૩) સ્પધિર કલ્પસ્થિતિ.

ટીકામ-કલ્પ નામ કરણ-આધારનું છે તેમાં અથવા તેની જે સ્થિતિ (અર્થાત્) હોય છે તેનું નામ કલ્પસ્થિતિ છે તે કલ્પસ્થિતિ ત્રણ પ્રકારની કહી છે (૧) સામાયિક કલ્પસ્થિતિનો આવાજ નીચે પ્રમાણે છે—

સામાયિક કલ્પસ્થિતિમાં જે ‘સામાયિક’ પદ છે તે જ્ઞાનાદિકોના લાભ રૂપ છે એટલે કે સમ જાન્દનો અર્થ જ્ઞાનાદિકરૂપ છે આ જ્ઞાનાદિકોનો જે લાભ છે તેનું નામ ‘સમાય’ છે તે સમાય જ સામાયિકરૂપ છે, સામાયિકને એક સયમવિશેષ કહી છે આ સામાયિકનો જે કલ્પ છે (આચાર છે) તેને સામાયિક કલ્પ કહે છે અથવા-સામાયિક રૂપ જે કલ્પ છે તેનું નામ સામાયિક કલ્પ છે એવો તેનો વાચ્યાર્થ થાય છે તે સામાયિક કલ્પ પ્રથમ અને ચરમ તીર્થ કરના સાધુઓનું કલ્પકાલિક છે, કારણ કે તે સમયે હેદોપ

યાવત્કથિકઃ તત્ર છેદોપસ્થાપનીયામાવાત્, તસ્ય તત્ર વા સ્થિતિઃ સામાયિકકલ્પસ્થિતિઃ । સા ચ મધ્યદ્વાવિંશતિતીર્થસાધૂનાં મહાવિદેહસ્થસાધૂનાં ચ ગચ્યાતર-પિણ્ડપરિહારે ચતુર્થામપાલને પુરુષજ્યેષ્ઠત્વે વૃહત્પર્યાયસ્યેતરેણ વન્દનકદાને ચ નિયમલક્ષણા, શુક્લપ્રમાણોપેતવસ્ત્રાપેક્ષયા યદચેલત્વં તત્ર ૧, તથા—ઔદેશિકભક્તા-દિગ્રહણે ૨, રાજપિણ્ડગ્રહણે ૩, પ્રતિક્રમણકરણે ૪, માસકલ્પકરણે ૫, પર્યુષણ-કલ્પકરણે ૬, ચાનિયમલક્ષણાચેતિ, ઉક્તં ચાત્ર—

“ સિઙ્ગાયરપિંડે ય ૧, ચાઙ્ગામે ય ૨, પુરિસજેટ્ટે ય ૩ ।

કિઙ્કમ્મસસ ય કરણે ૪, ચત્તારિ અવઢ્ઠિયા કપ્પા ॥ ૧ ॥

આચેલુક્કુ ૧ દેસિય ૨ સપઢિકમણે ૩ ય રાયપિંડે ૪ ય ।

માસં ૫ પઙ્ગોસવણા ૬, છપ્પે અણવઢ્ઠિયા કપ્પા ॥ ૨ ॥ ”

છાયા—શય્યાતરપિંડે ૧ ચ, ચાતુર્થામે ૨ ચ પુરુષજ્યેષ્ઠે ૩ ચ ।

કૃતિકર્મણશ્ચકરણે ૪ ચ ચત્વારોઽવસ્થિતાઃ કલ્પાઃ ॥ ૧ ॥

આચેલક્ય ૧ મોદેશિકં ૨ સપ્રતિક્રમણશ્ચ ૩ રાજપિણ્ડશ્ચ ૪ ।

માસઃ ૫ પર્યુષણા ૬ પઢપ્યેતેઽનવસ્થિતાઃ કલ્પાઃ ॥ ૨ ॥

અચેલકત્ત ચૈવમ્—

કે તીર્થકરોં મેં ઔર મહાવિદેહોં મેં યહ યાવત્કથિક હૈ, ક્યોં કિ—વહાં છેદોપસ્થાપનીય કા અભોવ હૈ, ડસ સામાયિકકલ્પ કી અથવા—સામાયિક કલ્પ મેં જો સ્થિતિ હૈ વહ સામાયિકકલ્પસ્થિતિ હૈ યહ મધ્ય કે ૨૨ તીર્થકરોં કે સાધુઓં કી ઔર મહાવિદેહસ્થ સાધુઓં કી શય્યાતર કે પિણ્ડ પરિહાર મેં, ચાતુર્થામપાલન મેં, ઔર પુરુષ કે જ્યેષ્ઠત્વ મેં, ડસકી વન્દના મેં વિનયરૂપ હૈ, ઔર—શુક્લપ્રમાણોપેત વસ્ત્ર કી અપેક્ષા સે જો અચેલકતા હૈ ૧ ડસમેં, તથા—ઔદેશિકભક્તાદિ ગ્રહણ મેં ૨ રાજપિણ્ડ-ગ્રહણ મેં ૩ પ્રતિક્રમણ કરને મેં ૪ માસકલ્પ કરને મેં ૫ ઔર પર્યુષણ-કલ્પ કરને મેં અનિવાર્યરૂપ હૈ । કહા બી હૈ “ સિઙ્ગાયરપિંડે ય ”

સ્થાપનીયનો સદ્ભાવ છે મધ્યના તિર્થકરોમાં અને મહાવિદેહોમાં તે યાવત્કથિક છે, કારણ કે ત્યાં છેદોપસ્થાપનીયનો અભાવ છે તે સામાયિક કલ્પની અથવા સામાયિક કલ્પમાં જે સ્થિતિ છે, તેને સામાયિક કલ્પસ્થિતિ કહે છે. તે મધ્યના ૨૨ તિર્થકરોના સાધુઓની અને મહાવિદેહસ્થ સાધુઓની શય્યાતરના પિંડના પરિહારમાં, ચતુર્થામ પાળવામાં અને પુરુષના જ્યેષ્ઠત્વમાં તેની વન્દનામાં વિનયરૂપ છે, અને શુક્લ પ્રમાણોપેત વસ્ત્રની અપેક્ષાએ જે અર્થકતા છે તેમાં ઔદેશિક ભક્તાદિ ગ્રહણમાં, (૩) રાજપિંડ ગ્રહણમાં, (૪) પ્રતિક્રમણ કરવામાં, (૫) માસકલ્પ કરવામાં, અને (૬) પર્યુષણ કલ્પ

“ દુવિહો હોઈ અચેલો, અસતચેલો ય સંતચેલો ય ।
 તત્ય અસંતેઈ જિણા, સતચેલા મથે સેસા ॥ ૧ ॥
 સીસાષેદિયપોત, નાઠપરણમ્મિ નમ્મયં ચેતિ ।
 જુન્નેઈ નગિયમ્મિ દુર સાલિય । દહિ મ પોતિ ॥ ૨ ॥
 જુન્નેઈ સંતિપદિ, અસન્ન તણુયાતણિ ણ ય મિન્નં ।
 સતેરિ ત્રિ ણિમ્મયા અચેલયા હોતિ ચેલેઈ ॥ ૩ ॥ ”

છાયા—દ્વિવિધો મત્સ્યચેલોઽસન્નચેલઃ સન્નચેલઃ ।

તથાઽસદ્ધિ (વઢૈઃ) મિનાઃ, સન્નચેલા મથન્તિ શ્રેષ્ઠા ॥૧॥

શ્રોત્રાદિપિત્તપોત નપુત્રણે નન્નક દ્યુવન્તિ ।

ત્રીર્ણઃ (વઢૈઃ) નન્નકોઽસ્મિ સ્વરિતં શાલિકા ! દેશિમે પોતીમ્
 (શાલિકા) ॥ ૨ ॥

ત્રીર્ણે સ્વણિદત્તે અસર્વતનુમાહતૈર્ન ચ નિત્યમ્ ।

સદ્ધિરપિ (વઢૈઃ) નિર્ગન્ધ્યા અચેલકા મથન્તિ ચેલૈઃ ॥૩ ॥ ” इति ।

एवं त्रिर्णखण्डितप्रमाणोपेतपक्षेषु सत्स्वपि अनेलत्वेन लोके व्यवहारो ह्यपठे
 १ । छेदोपस्थापनीयकल्परियतिः छेदेन—पूर्वपर्यायच्छेदेन उपस्थापनीयम्—
 आरोपणीय छेदापस्थापनीय व्यक्तिो महाप्रतारोपणमित्यर्थः, तच्च प्रथमपर
 इत्यादि, । अचैतकता इम प्रकार से है “दुविहो होइ अचेलो” इत्यादि,
 इस तरह जीर्ण खण्डित एव प्रमाणोपेत पक्षों के होने पर भी, रम्यन
 पर भी, अचेलतारूप से लोक में व्यवहार देखा जाता है । छेदोपस्था
 पनीय कल्पस्थिति पूर्वपर्याय के छेद से जो पुनः आरोपणीय होता है
 यह छेदोपस्थापनीय है, यह अन्यव्यक्ति में जो आरोप की अपेक्षा महा
 प्रतारोपणरूप होता है । यह छेदोपस्थापनीय प्रथम तीर्थकर और अन्तिम

કરનામાં અનિવાર્યરૂપ છે કહ્યું પણ છે કે—“ સિદ્ધાપરિચેષ ” ઇત્યાદિ.
 અચેલકતા આ પ્રકારે દેાય છે—“ દુવિહો હોઈ અચેલો ” ઇત્યાદિ—

આ રીતે છજું—અદિત અને પ્રમાણોપેત વચ્ચે દેવા છતાં પણ, રાખવા
 છતાં પણ અચેલતારૂપ વ્યવહાર લોકમાં જોવામાં આવે છે

દરે ઉદોપસ્થાપનીય કલ્પસ્થિતિનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે—પ્રથ
 મપ્રયોગના ઉદાહરણ ? પુનઃ આરોપણીય કાલ છે તેનું નામ ઉદોપસ્થાપનીય છે
 તે અન્ય વ્યક્તિમાં આરોપની અપેક્ષાએ નિરૂપણરૂપ દેાય છે આ ઉદોપ
 સ્થાપનીયનો સદ્ભાવ પડેલા અને ઉલ્લેખ તીર્થકરના સમયમાં જ કહ્યો છે

મતીર્યયોરેવ । તસ્ય તદેવ વા કલ્પઃ તસ્ય સ્થિતિઃ—મર્યાદા સા તથોક્તા, ઇયં ચ દશસુ સ્થાનકેષ્વવશ્યં પાલનરૂપેતિ । ઉક્તશ્ચ—

“ દસઠાણઠિઓ કપ્પો, પુરિમસ્સ ય પચ્છિમસ્સ જિણસ્સ ।

एसो धुरयस्यकप्पो, दसठाणपइट्ठिओ होइ ॥ १ ॥

छाया—दशस्थानस्थितः कल्पः पूर्वस्य पश्चिमस्य च जिनस्य ।

एष धूतरजःकल्पो दशस्थानप्रतिष्ठितो भवति ॥ १ ॥ इति ।

तानि दश स्थानानि यथा—

“ आचेलक्कु १ દેસિય ૨ સિજ્જાયર ૩ રાયપિંડ ૪ કિઙ્કમ્મે ૫ ।

वय ६ जेट्ठ ७ पडिक्कमणे ८, मासं ९ पज्जोसवणकप्पे १० ॥ १ ॥

छाया—आचेलक्यौ १ देशिक-शय्यातर-राजपिण्ड ३-४ कृतिकर्माणि ५ ।

व्रत ६ ज्येष्ठ ७ प्रतिक्रमणानि ८ मास पर्युपणकल्पः ९-१० ॥ १ ॥

तत्र—आचेलक्यं असत्सद् भेदेन द्विविधम्, सर्वथा वस्त्राभावरूपमसदचेलत्वं

તીર્થકર કે સમય મેં હી કહા ગયા હૈ, હસ છેદોપસ્થાપનીય કા જો કલ્પ હૈ વહ છેદોપસ્થાપનીય કલ્પ હૈ અથવા—છેદોપસ્થાપનીયરૂપ જો કલ્પ હૈ વહ છેદોપસ્થાપનીય કલ્પ હૈ, હસકી જો સ્થિતિરૂપ મર્યાદા હૈ વહ છેદોપસ્થાપનીય કલ્પ હૈ, યહ દશ સ્થાનકોં મેં અવશ્ય પાલનરૂપ કહી ગઈ હૈ । કહા મી હૈ—“ દસઠાણઠિઓ કપ્પો ” હત્યાદિ, યહ દશ સ્થાન સ્થિતકલ્પ પૂર્વ ઓર પશ્ચિમ જિનમે કી હૈ યહ પાપરૂપ રજકો નષ્ટ કરને વાલા કલ્પ દશ સ્થાન પ્રતિષ્ઠિત હોતા હૈ ૧ વે દશ સ્થાન હસ પ્રકાર સે હૈ—“ આચેલક્કુદેસિય ” હત્યાદિ, હનમેં આચેલક્ય અસત્ ઓર સત્ કે ભેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ સર્વથા—વસ્ત્રાભાવરૂપ અસત્ અચેલતા જિન તીર્થકરોં કો હોતી હૈ ઓર જીર્ણ, સ્ખણ્ડિત એવ પ્રમાણો-

આ છેદોપસ્થાપનીયનો જે કલ્પ છે (આચાર છે) તેનું નામ છેદોપસ્થાપનીય કલ્પ છે, અથવા—છેદોપસ્થાપનીયરૂપ જે કલ્પ છે, તે છેદોપસ્થાપનીય કલ્પ છે, અને તેની જે સ્થિતિ (મર્યાદા) છે, તે છેદોપસ્થાપનીય કલ્પસ્થિતિ છે. તે દસ સ્થાનકોમાં અવશ્ય પાલનરૂપ કહી છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ દસઠાણઠિઓ કપ્પો ” ઇત્યાદિ.

આ દસ સ્થાનસ્થિતિનો કલ્પનો સદ્ભાવ પહેલાં અને છેલ્લા જિનમાં કહ્યો છે—આ પાપરૂપ રજને નષ્ટ કરનાર કલ્પ જે દસ સ્થાન પ્રતિષ્ઠિત છે, તે દસ સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે—“ આચેલક્કુદેસિય ” ઇત્યાદિ—તેમાથી (૧) આચેલક્ય સત્ અને અસત્ના ભેદથી જે પ્રકારનું કહ્યું છે. સર્વથા વસ્ત્રાભાવરૂપ

જિનાનાં, ઝીર્ણસ્થિતમમાણોપેતવસ્તુરૂપં સદ્ધેતૃત્વ શેષમુનીનાં મરતિ ૧ । ઔરે
 શિકપિઙ્ઢ-શાલ્પાતરપિઙ્ઢ-રાજપિઙ્ઢગ્રહણસ્વં પ્રય પ્રસિદ્ધમ્ ૪ । કૃતિકર્મ-રત્ના
 ધિકમર્યાદયા વન્દનવ્યવહારઃ ૫ । પ્રતાનિ-પદ્મમહાપ્રતાનિ ૬, જ્યેષ્ઠઃ-પુરુષવ્યવહારો
 ધર્મઃ, પ્રતિક્રમણ સાધિચારસ્ત્વે-નિરતિચારસ્ત્વેઽપિ પ્રતિક્રમણવ્રજમ્ ૮ । માસઃ-માસ-
 વસ્તુઃશ્વેતકાલે માસ યાત્રદેકમવસનમ્ ૯ । પર્યુષણવસ્તુઃ-પર્યુષણપર્વારાધના ૧૦ । પરે
 દશ વસ્તુઃ પ્રથમચારમતીર્થકરયોસ્તીર્થ મરન્તિ ન મધ્યમ દ્વાવિંશતિતીર્થ-
 કરાણામિતિ ૨ ।

તથા નિર્વિશ્વમાનકલ્પસ્થિતિઃ-નિર્વિશ્વમાનાઃ-પરિહારવિશુદ્ધિતપોઽનુચારકાઃ
 પરિહારકા इत्यर्थ, તેમાં કલ્પ યા સ્થિતિઃ સા તથોક્તા । સ વ કલ્પો યથા-

પેત વસ્તુ રાગ્યને રૂપ સત્ અષ્ટેલતા શેષ મુનિયો કો જ્ઞાતી હૈ ૧ ઔરે
 શિકપિઙ્ઢ, શાલ્પાતરપિઙ્ઢ, રાજપિઙ્ઢ ફનકો ગ્રહણ કરને રૂપ ૨ સ્થાન
 પ્રસિદ્ધ હૈ ૪ રત્નાધિક કી મર્યાદાનુસાર વન્દના કરને કા જો વ્યવહાર
 હૈ વહ કૃતિકર્મ હૈ ૫ પાંચ મહાવ્રત યે વ્રત હૈ જ્યેષ્ઠ પુરુષવ્રેષ્ઠ ધર્મ હૈ,
 સાતિચાર અવસ્થા મેં ઔર નિરતિચાર અવસ્થા મેં સી પ્રતિક્રમણ કરના
 વહ પ્રતિક્રમણ હૈ ૮ માસ સે યહાં માસકલ્પ લિખા ગયા હૈ શેષકાલ
 મેં એક માસ તક એક જગહ રહના ૯ યહ ફસકા તાત્પર્ય હૈ, તથા-
 પર્યુષણ પર્વ કી આરાધના કરના લિખા ગયા હૈ ૧૦ યે ૧૦ કલ્પ પ્રથમ
 ઔર અતિમ તીર્થકર કે તીર્થ મેં હોતે હૈ, પીચ કે ૨૨ તીર્થકરોં કે
 તીર્થ મેં નહીં હોતે હૈ । નિર્વિશ્વમાનકલ્પસ્થિતિ પરિહારવિશુદ્ધ તપ કા

અસત્ અધિભૂતા જિનવીશ્વ કર્માર્થા હોય છે, અને એક, અદિત અને પ્રમા
 હોયેત વસ્તુ સમવાદ્ય સત્ અધિભૂતા બાહ્યતા મુનિઓમાં હોય છે (૧)
 ઔરેશિક પિઙ્ઢ, (૨) શાલ્પાતર પિઙ્ઢ અને (૩) રાજપિઙ્ઢ બ્રહ્મ કરવા રૂપ વ્રજ
 સ્થાન તે બાહ્યતા છે, તેથી અહીં તેમનું વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું
 નથી (૪) રત્નાધિકની મર્યાદા અનુસાર વ્રજ કરવાનો એ વ્યવહાર છે તેનું
 નામ કૃતિકર્મ છે (૫) પાંચ મહાવ્રતને મત શાળથી બ્રહ્મ કરવામાં આવ્યા
 છે (૬) જ્યેષ્ઠ-પુરુષ વ્રેષ્ઠ ધર્મ છે (૭) સાતિચાર અવસ્થામાં અને નિરતિચાર
 અવસ્થામાં પણ પ્રતિક્રમણ કરવું તેનું નામ પ્રતિક્રમણ છે. (૮) માસ પદ્મ
 અહીં માસકલ્પ બ્રહ્મ કરવામાં આવેલ છે શેષકાળમાં જોઈ માસ મુખી જોઈ
 અગ્યાએ રહેવું તેનું નામ માસકલ્પ છે (૯) પણ પણ પવની આરાધના કરવી (૧૦)
 આ રૂપ કલ્પ (આચાર) નો સદ્ગુણ પહેલા અને છેલ્લા તીર્થ કરના તીર્થમાં
 હોય છે-વચ્ચેના ૨૨ તીર્થ કરના તીર્થમાં તેમનો સદ્ગુણ હોતો નથી.

ગ્રીષ્મ-શીત-વર્ષાકાલેષુ ક્રમેણ જઘન્યમધ્યમોત્કૃષ્ટરૂપં તપો ભવતિ, તત્ર ગ્રીષ્મકાલે જઘન્યં ચતુર્થપષ્ટાષ્ટમરૂપમ્, શીતકાલે મધ્યમં પદ્માષ્ટમદશમરૂપમ્, વર્ષાકાલે ઉત્કૃષ્ટમષ્ટમદશમદ્વાદશરૂપમિતિ, પારણમાચામામ્લેનૈવ, પિષ્ઠૈષ્ણાસપ્તકે ચ પ્રથમ-દ્વિતીયોરભિગ્રહ एव, શેપાસુ તૃતીયાદિ પञ्चसु पिण्डैषणासु पुनरेकया भक्तमेकया च पानमित्येवं द्वयोरભિગ્રહ इति. उक्तञ्च—

“ વારસ ૧ દસ ૨ અટ્ટ ૩ દસ દસ ૧ દ્વ ૨ છટ્ટ ૩ અદ્વેવ ૧ છટ્ટ ૨ ચરોર ૩ ય ।

उत्क्रोममज्झिमज्झन्ना उ वासासिसिरि गिम्हे १ ॥ १ ॥

પારણમે આચામં પચસુ ગહો દોસઽભિગાહો મિક્ષ્વા ” ઇતિ ।

છાયા-દ્વાદશં ૧ દશમં ૨ અષ્ટમં ૩ દશમં ૧ અષ્ટમં ૨ પષ્ઠં ૩ અષ્ટમમેવ ૧ પષ્ઠ-ચતુર્થં ચ । ઉત્કૃષ્ટમધ્યમજઘન્યકાવર્ષા શિશિરગ્રીષ્મેષુ ॥ ૨ ॥

પારણકે આચામામ્લં પञ्चसु ग्रहो द्वयोरभिग्रहो भिक्षायाम् ॥ इति ।

પાલન કરને વાલે પરિહારોં કા જો કલ્પ હૈ ઉસ કલ્પ મેં જો ઉનકી સ્થિતિ હૈ, વહ નિર્વિઝયમાન કલ્પસ્થિતિ હૈ, ઉનકા વહ કલ્પ હસ પ્રકાર સે હૈ ગ્રીષ્મઋતુ મે, શીતઋતુ મેં, ઔર વર્ષાઋતુ મેં હનકા ક્રમશઃ જઘન્ય મધ્યમ ઔર ઉત્કૃષ્ટરૂપ તપ હોતા હૈ, ગ્રીષ્મકાલ મેં જઘન્યતપ ચતુર્થ પષ્ઠ અષ્ટમરૂપ ઔર શીતકાલ મેં પષ્ઠ અષ્ટમ ઔર દશમ રૂપ હોતા હૈ તથા - વર્ષાકાલ મેં ઉત્કૃષ્ટ તપ અષ્ટમ, દશમ, ઔર દ્વાદશરૂપ હોતા હૈ, તથા-પારણા આગંબિલ સે હી હોતા હૈ, પિષ્ઠૈષ્ણા સપ્તક મેં પ્રથમ દ્વિતીય પિષ્ઠૈષ્ણાઓં મેં અભિગ્રહ હી હોતા હૈ, તથા-પિષ્ઠૈષ્ણાઓં મેં-તોસરી સે લેકર સાતવીં પિષ્ઠૈષ્ણા તક મેં એક ભક્ત એક પાન હસ પ્રકાર સે દો કા અભિગ્રહ હોતા હૈ । કહા મી હૈ-“ વારસ દસ અટ્ટ-” રૂપાદિ । અવ સુત્રકાર પ્રકારાન્તર સે મી

હવે નિર્વિશમાન કલ્પસ્થિતિનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે-પરિહાર વિશુદ્ધિ તપનું પાલન કરનાર પરિહારિકેના આચારરૂપ જે કલ્પ છે, અને તે કલ્પમાં તેની જે સ્થિતિ છે, તેનું નામ નિર્વિશ્યમાન કલ્પસ્થિતિ છે. તેના તે કલ્પ (આચાર) આ પ્રમાણે હોય છે-તેઓ ગ્રીષ્મ ઋતુમાં, શીત ઋતુમાં અને વર્ષા ઋતુમાં અનુક્રમે જઘન્ય, મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટ તપ કરે છે. ગ્રીષ્મકાળમાં તપની જઘન્યતા ચતુર્થ પષ્ઠ અને અષ્ટમ રૂપે અને શીતકાલમાં છટ્ટ (જે ઉપવાસ), અટ્ટમ (ત્રણ ઉપવાસ) અને દસ ઉપવાસરૂપ હોય છે વર્ષાકાળમાં ઉત્કૃષ્ટ તપ અષ્ટમ દશમ અને દ્વાદશ રૂપ હોય છે, તથા આગંબિલથી જ તેના પારણા કરવામાં આવે છે પિષ્ઠૈષ્ણા સપ્તકમાંની પહેલી અને છીણ પિષ્ઠૈષ્ણાઓમાં અભિગ્રહ જ કરાય છે. ત્રીજીથી લઈને સાતમી પર્યન્તની પાંચ પિષ્ઠૈષ્ણાઓમાં એક ભક્ત (આહાર) અને એક પાન (પીણુ), એમ બે વસ્તુનો જ અભિગ્રહ થાય છે. કહ્યું પણ છે કે-“ વારસ દસ અટ્ટ ” ઇત્યાદિ—

અથ પ્રકારાન્તરેણ કલ્પસ્થિતિમાહ—‘અહ્યા’ ઇત્યાદિ ।

અથથેતિ પ્રકારાન્તરેણ કલ્પસ્થિતિસ્ત્રિવિધા, ત્રયા નિર્વિષ્ટકલ્પસ્થિતિઃ, જિનકલ્પસ્થિતિઃ, સ્થવિરકલ્પસ્થિતિઃથેતિ । સપ્ત-નિર્વિષ્ટા-આસેવિતવિવક્ષિત ચારિત્રા અનુપહારિકા ઇત્યર્થઃ, તેષાં કલ્પ-આચારસ્તસ્ય સ્થિતિઃ-મર્યાદા નિર્વિષ્ટ કલ્પસ્થિતિઃ, યથા પ્રતિદિનમાધ્યામ્લમાત્ર તપા, મિત્તા પૂર્વોક્તપ્રકારૈવેતિ । ઠક્ત્ર

“કલ્પદ્વિયાધિ પદ્ધિણ, કરંતિ એમેષ ચાયામ” ઇતિ ।

છાયા-કલ્પસ્થિતા અપિ પ્રતિદિન કુર્ષન્તિ એવમેષ ચાચામામ્સમ્ ।

એતે પૂર્વસૂત્રોક્તા નિર્વિષ્ણમાનકા નિર્વિષ્ટાશ્ચ પરિહારવિશુદ્ધિકા ઉચ્ચથે, તેષાં ચ નવકો ગમ્નો મરતિ, તેષૈર્વ વિધા મરન્તિ—

“સમ્બે ચરિત્તર્વંતો ઠ, વંસજે પરિનિદ્વિયા ।

નવપુશ્વિયા અદ-મેણ, ઠક્કોસા દસપુશ્વિયા ॥ ૧ ॥

વંચવિદે વવદારે, વપ્પમિ દુવિદમિ ચ ।

દસવિદેય પરિહથે, સમ્બે તે પરિનિદ્વિયા ॥૨॥”

કલ્પસ્થિતિ કા કયન કરતે હૈ—“અહ્યા—” ઇત્યાદિ, અથવા કલ્પસ્થિતિ હસ પ્રકારાન્તર સે ત્રીન પ્રકાર કી હૈ, જૈસે-નિર્વિષ્ટકલ્પસ્થિતિ, જિન કલ્પસ્થિતિ ઔર સ્થવિરકલ્પસ્થિતિ, નિર્વિષ્ટોં કા આસેવિત વિવક્ષિત ચારિત્રચાલોં કા અનુપરિહારિકોં કા જો કલ્પ હૈ આચાર હૈ, ઊસ આચાર કી જો સ્થિતિ હૈ-મર્યાદા હૈ, વહ નિર્વિષ્ટ કલ્પસ્થિતિ હૈ, જૈસે-પ્રતિદિન આધ્યામ્લ માત્ર તપ કરના, ઔર પૂર્વોક્ત પ્રકાર કી હી નિષ્ક્રા કરના, । કહા બી હૈ—“કલ્પદ્વિયા ધિ પદ્ધિણ—” ઇત્યાદિ, પૂર્વસૂત્રોક્ત નિર્વિષ્ણ માનક, ઔર યે નિર્વિષ્ટ ઢોનોં પરિહાર વિશુદ્ધિક કહલાતે હૈ, इनका गण ९ नौ का होता है ये इस प्रकार से होते हैं—“सम्बे चरित्तर्बन्तो—”

ઢવે સુત્રકાર બીજી રીતે ઠક્પસ્થિતિની પ્રકૃપણા કરે છે—“અહ્યા” ઇત્યાદિ-અથવા ઠક્પસ્થિતિના આ પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) નિર્વિષ્ટ ઠક્પસ્થિતિ (૨) જિન ઠક્પસ્થિતિ અને (૩) સ્થવિરઠક્પસ્થિતિ.

નિર્વિષ્ટોનો-આસેવિત વિવક્ષિત યાત્રિત્રવાજ્ઞાનો-અનુપરિહારિકોનો જે ઠક્પ (આચાર) છે, તે આચારની જે સ્થિતિ છે, મર્યાદા છે તેને નિર્વિષ્ટ ઠક્પસ્થિતિ કહે છે જેમકે પ્રતિદિન આધ્યામ્લ માત્ર તપ કરવું, અને પૂર્વોક્ત પ્રકારની જ નિષ્ક્રા શ્રદ્ધણ કરવી. કશું પણ છે કે—“કલ્પદ્વિયાધિ પદ્ધિણ” ઇત્યાદિ પૂર્વ સૂત્રોક્ત નિર્વિષ્ણમાનક અને આ નિર્વિષ્ટ, અનેને પરિહાર વિશુદ્ધિક કહે છે તેમના બધાનાથ કોથ છે તેઓ આ પ્રકારના કોથ છે—‘સમ્બે ચરિત્તર્વંતો’ ઇત્યાદિ-તેઓ યાત્રિત્રવાજ્ઞી કોથ છે, ઇશન પરનિષ્ઠિત (પરિપૂર્ણ)

છાયા—સર્વે ચારિત્રવન્નસ્તુ, દર્શને પરિનિષ્ઠિતાઃ ।

નવપૂર્વિકા જપન્યેન, ઉત્કૃષ્ટા દશપૂર્વિકાઃ ॥ ૧ ॥

પશ્ચવિધો વ્યવહારઃ, કલ્પે દ્વિવિધે ચ (જિનકલ્પે સ્થવિરકલ્પેચેત્યર્થઃ)
દશવિધે ચ પ્રાયશ્ચિત્તે, સર્વે તે પરિનિષ્ઠિતાઃ ॥૨॥ અન્યાદિ ૧। જિનકલ્પસ્થિતિઃ,
જિનાઃ-ગચ્છનિર્ગતસાધુવિજ્ઞેષા, નેપાં કલ્પસ્થિતિઃ । જિનકલ્પસ્વરૂપશ્રુતરાધ્ય-
યનમુત્તરસ્ય મત્કૃતાયાં પ્રિયદર્શિનીટીકાયાં દ્વિતીયેઽધ્યયનેઽચેલપરીપદમ્બરૂપેઽવ-
લોકનીયમ્ ॥૨॥

સ્થવિરકલ્પસ્થિતિઃ-સ્થવિગઃ-ગચ્છપ્રતિવદ્વા આચાર્યાદયઃ, તેષાં કલ્પ-
સ્થિતિઃ । તત્સ્વરૂપં યથા —

“વ્યવજ્ઞા મિત્રવાવય મત્યગમહણં ચ અનિયમો વામો ।

નિષ્ફુત્તીય વિહારો, મમાયારી ટિર્ડિ ચેવ ॥૨॥ ઇતિ ।

इत्यादि, । ये सब चारित्रजाली होते हैं दर्शन में परिनिष्ठित परिपूर्ण
होते हैं कम से कम ये ० नव पूर्वतक के पाठी होते हैं और उत्कृष्ट से १०
पूर्वतक के पाठी होते हैं, इनका व्यवहार पांच प्रकार का होता है जिन-
कल्प और स्थविरकल्प में और दश प्रकार के प्रायश्चित्त में ये सब
परिनिष्ठित होते हैं । जिनकल्पस्थिति-गच्छ से निर्गत जो साधु होते हैं
वे जिन हैं, इन जिनो के कल्प की जो रूपादा है वह जिनकल्पस्थिति
है । जिनकल्प का स्वरूप उत्तराध्ययन मूत्र की प्रियदर्शिनी टीका में मैंने
द्वितीय अध्ययन में अचेल परीपद के स्वरूप में चर्चित किया है, अतः
वहां से देख लेना चाहिये । स्थविरकल्पस्थिति गच्छप्रतिवद्व आचार्य
आदि स्थविर हैं इनके कल्प की जो स्थितिरूप रूपादा है वह स्थविर

હોય છે, ઝોછામા ઝોછા નવ પૂર્વના પાડી હોય છે, અને વધારેમા વધારે
દસ પૂર્વના પાડી હોય છે તેમને વ્યવહાર આગમાદિ પાંચ પ્રકારના હોય છે તેઓ
જિનકલ્પ અને સ્થવિરકલ્પમા અને દસ પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્તોમા પરિનિષ્ઠિત
(પરિપૂર્ણ) હોય છે

હવે જિનકલ્પસ્થિતિનું નિરૂપણ કરવામા આવે છે-ગચ્છમાથી નિર્ગત
જે સાધુઓ હોય છે તેમને જિન કહે છે તે જિનોના કલ્પ (આચાર) ની જે
મર્યાદા છે તેને જિનકલ્પસ્થિતિ કહે છે જિનકલ્પનું સ્વરૂપ મેં ઉત્તરાધ્યયન
સૂત્રની પ્રિયદર્શની ટીકાના ૧૧મ અધ્યયનમાં અચેલપરીપદના સ્વરૂપનું
વર્ણન કરતાં, સ્પષ્ટરૂપે પ્રકટ કર્યું છે, તો જિજ્ઞાસુ પાઠકોએ તે ત્યાથી વાંચી લેવું.

હવે સ્થવિર કલ્પસ્થિતિની પ્રરૂપણા કરવામા આવે છે-ગચ્છ પ્રતિબદ્ધ
આચાર્ય આદિને સ્થવિર કહે છે તેમના કલ્પ (આચાર) ની સ્થિતિરૂપ જે
મર્યાદા છે, તેને સ્થવિર કલ્પસ્થિતિ કહે છે તેનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે—

ગયા—મગ્ન્યા શિશ્નાગ્રતાનિ અર્થગ્રહણં વાનિપતો વાસ ।

નિવ્યવિશ્વ વિહારાઃ, સામાધારી સ્થિતિઐવ ॥૧॥

ઈત્યાદિરૂપા સ્થવિરકલ્પસ્થિતિરિતિ ૩. ૬૬૪ મૂત્રક્રમેડય ક્રમોપન્યાસા સામાયિકે સતિ છેદોપસ્થાપનીય મત્તિ, તસ્મિન્ન સતિ પરિહારવિગુદ્ધિકમેદરૂપ નિર્વિશમાનક, તદનંતર નિર્વિષ્ટકાયિક, તદાગ્નિજનકલ્પ સ્થવિરકલ્પો વા મત્તિતિ સામાયિકકલ્પસ્થિત્યાદીનાં ક્રમ ઇતિ ॥ સૂ૦ ૭૩ ॥

પૂર્વોક્તકલ્પસ્થિતીનાં વ્યતિક્રમવિપરીતવિધાયકા નારકાદિ શરીરિણો મવન્તીતિ નારકાદિશરીરનિરૂપણમાહ—

મૂત્રમ્ નેરહ્યાણં તઓ સરીરગા પળ્ળતા, ત જહા-વેડવિવ્વ
તેયવ્વ, કમ્મવ્વ । અસુરકુમારાણ તઓ સરીરગા પળ્ળતા, ત
જહા વ્વ ચેવ । એવ સવ્વેસિં દેવાણ । પુઢ્ઠવીકાહ્યાણ તઓ
સરીરગા પળ્ળતા, ત જહા આરાલિવ્વ તેયવ્વ કમ્મવ્વ । એવ
વાડકાહ્યાવજ્ઞાણ જાવ્વ ચડરિંદિયાણ ॥ સૂ૦ ૭૪ ॥

કલ્પસ્થિતિ હૈ ઇસકા સ્વરૂપ ઇમ પ્રકાર હૈ—“પવ્વજ્ઞા સિવ્વ્યાવવ”
ઈત્યાદિ, ઇત્યાદિરૂપ યદ સ્થવિરકલ્પસ્થિતિ હૈ ૩ યહાં દો સૂત્રોં મેં યદ
ક્રમોપન્યાસ હૈ—સામાયિક કે દોને પર છેદોપસ્થાપનીય હોતા હૈ, છેદોપ
સ્થાપનીય ક દોને પર પરિહાર વિગુદ્ધિક કા મેદરૂપ નિર્વિશમાનક
હોતા હૈ, વાદ મેં—નિર્વિષ્ટકાયિક હોના હૈ ઇસકે વાદ જિનકલ્પ હોતા
હૈ, અથવા સ્થવિરકલ્પ હોતા હૈ, ઇસ પ્રકાર સે યદ સામાયિક કલ્પ
સ્થિતિ આદિકોં કા પ્રમ્ત હૈ । સૂ૦ ૭૩ ।

ઇન પૂર્વોક્ત કલ્પસ્થિતિયોં કા વ્યતિક્રમ વિપરીત કરનેવાલે નાર
કાદિ શરીરયાલે હોતે હૈ, અતઃ અવ મૂત્રકોર નારકાદિ શરીર
નિરૂપણ કરતે હૈ—

પવ્વજ્ઞા સિવ્વ્યાવવ ઇત્યાદિ રૂપ આ સ્થવિર કલ્પસ્થિતિ દોવ છે અહીં
મે સૂત્રોમા ક્રમોપન્યાસ (ઉચ્ચે ક્રમ) છે—સામાયિકના અદ્ભુતવર્મા ઉદોપ
સ્થાપનીય થાય છે છેદોપસ્થાપનીયના અદ્ભુતવર્મા પરિહાર વિગુદ્ધિક મેદરૂપ
નિર્વિશમાનક થાય છે ત્યારબાદ નિર્વિષ્ટકાયિક થાય છે ત્યારબાદ જિનકલ્પ
થાય છે અથવા સ્થવિરકલ્પ થાય છે આ પ્રમાણે આ સામાયિક સ્થિતિ
આદિને ક્રમ છે ॥ સૂ ૭૩ ॥

આ પૂર્વોક્ત કલ્પસ્થિતિયોના વ્યતિક્રમ (વિપરીતતા) કરનારા નારકાદિ
શરીરજાગ્ર દેવ છે તેથી એવે મૂત્રકોર નારકાદિના શરીરનું નિરૂપણ કરે છે
તમો શરીરગા પળ્ળતા ” ઇત્યાદિ—

છાયા—નૈરયિકાણાં ત્રીણિ શરીરાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા—વૈક્રિયં, તૈજસં, કાર્મણમ્ ૧। અસુરકુમારાણાં ત્રીણિ શરીરાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા—એવમેવ ૨। એવ સર્વેષાં દેવાનામ્ ૩। પૃથિવીકાયિકાનાં ત્રીણિ શરીરાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા—ઔદારિકં, તૈજસં, કાર્મણમ્ ૪। એવં વાયુકાયિકવર્જાનાં યાવચ્ચતુરિન્દ્રિયાણામ્ ૫। સુ. ૭૪।

ટીકા—‘ નેરઙ્ગ્યાણ ’ ઇત્યાદિ સૂત્રપશ્ચકં સુગમં, નવરં—નૈરયિકાણાં વૈક્રિય-તૈજસકાર્મણરૂપાણિ ત્રીણિ શરીરાણિ ભવન્તિ ૧। અસુરકુમારાણામપિ ‘ એવં ચેવે ’ તિ એવમેવ—એતાન્યેવ પૂર્વોક્તાનિ વૈક્રિયાદીનિ ત્રીણિ શરીરાણિ સન્તીતિ ૨। એવમ્—યથા નૈરયિકાણામસુરકુમારાણાં ચ વૈક્રિયાદીનિ ત્રીણિ શરીરાણિ તથા સર્વેષાં નાગ-

ટીકાર્થ—“તઓ સરીરગા પળજ્ઞા—” ઇત્યાદિ, યે પાંચ સૂત્ર હૈં—હનકા અર્થ સુગમ હૈ, ફિર ખી સૂત્રકાર ને હનમૈં યહ પ્રકટ કિયા હૈ કિ નૈર-યિકોં કે તીન શરીર હોતે હૈં વૈક્રિય તૈજસ ઔર કાર્મણ તૈજસ કાર્મણ હન દો શરીરોં કા સમ્બન્ધ તો પ્રત્યેક જીવ કો હોતા હી હૈં, ઉસકે સાથ નૈરયિક જીવોં કો વૈક્રિય શરીર હોતો હૈ, અસુરકુમારોં કો ખી યે હી ૨ શરીર હોતે હૈં। ઇસી તરહ સે—નાગકુમાર આદિ ભવનપતિયોં કો, વ્યન્તર દેવોં કો, જ્યોતિષ્ક દેવોં કો ઔર વૈમાનિક દેવોં કો, કલ્પોપ-પન્ન કલ્પાતીતોં કો ખી યે હી ૩ શરીર હોતે હૈં। પૃથિવીકાયિક, અપ્-કાયિક, તૈજસકાયિક ઔર વનસ્પતિકાયિક, હન એકેન્દ્રિય સ્થવિર જીવોં કો ઔદારિક તૈજસ એવં કાર્મણ શરીર હોતે હૈં, દોહન્દ્રિય તેહન્દ્રિય ઔર ચૌહન્દ્રિય જીવોં કો ખી યે હી તીન શરીર હોતે હૈં। વાયુકાયિક,

ટીકાર્થ—પાંચ સૂત્રો દ્વારા નારકાદિ જીવોનાં શરીરોનું સૂત્રકારે નિરૂપણ કર્યું છે. આ સૂત્રોનો અર્થ સુગમ છે, છતાં અહીં સક્ષિપ્તમા તેમનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે—નારકોને ત્રણ શરીર હોય છે—(૧) વૈક્રિય, (૨) તૈજસ અને (૩) કાર્મણ તૈજસ અને કાર્મણ, આ બે શરીરનો સબધ તો પ્રત્યેક જીવને હોય છે, અસુરકુમારોમાં પણ એ જ ત્રણ શરીરનો સદ્ભાવ હોય છે એ જ પ્રમાણે નાગકુમાર આદિ ભવનપતિ દેવોમાં, વ્યન્તર દેવોમાં, વૈમાનિકોમાં કલ્પોપપન્ન અને કલ્પાતીતોમાં પણ એ જ ત્રણ શરીરનો સદ્ભાવ હોય છે પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તૈજસકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક, આ એકેન્દ્રિય સ્થવિર જીવોમાં ઔદારિક, તૈજસ અને કાર્મણ શરીરનો સદ્ભાવ હોય છે. દ્વીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને ચતુરિન્દ્રિય જીવોમાં પણ એ જ ત્રણ શરીરોનો સદ્-

કુમારોદિ મધનપતિ-અન્યનરવ્યોતિષ્ઠૈમાનિક્ષેરાનામપિ વિદ્યેયાનિ ૩। પૃથિ
 વીકાપિયાનામૌદારિક સૈજસકાર્મણરૂપાણિ શ્રીણિ શરીરાણિ મરન્તિ ૪। અપ-
 યયા-પૃથિવીકાપિકાનામૌદારિકાદીનિ શરીરાણિ મરન્તિ તથા વાયુક્રાયિકવ
 ઝર્જનાં વાયુકાપિકાન્ વર્જયિત્વેત્પર્યે 'જાત્ર' ઇતિ યાષ્ઠ, યાત્ર-હ્યન-
 'અપ્યાય-તેજસ્કાય - રનસ્પતિકાય-દ્રોન્નિય-શ્રોન્નિયાણામ્' ઇતિ ગ્રામ્,
 ચકુરિન્દ્રિયાગાં વૌદારિકૈત્સકાર્મણરૂપાણિ શ્રીણિ શરીરાણિ સન્તિ । વાયુકા
 પિકાનાં પદ્યેન્દ્રિયતિરસ્કાં ચાહારકર્જશરીરસ્તુષ્ટય મનુષ્યાણાં તુ શરીરપદ્મક
 મરતીતિ ત્રિસ્થાનકાનુગેષાસાનિ નાત્ર દર્શિતાનિ ॥ સૂ૦ ૭૪ ॥

કલ્પસ્થિતિષ્પતિકામકાશ મત્પનીકા અપિ મરન્તોતિ મત્પનીક વૃષપદ્મકાશ-
 મૂષ્મ-ગુરુ પદ્મુચ્ચ તઓ પદિળીયા પળ્ળત્તા, ત જહા આયરિય
 પદિળીય, ઉવઝ્જાયપદિળીય, થેરપદિળીય ૧ । ગહ્ પદ્મુચ્ચ તઓ
 પદિળીયા પળ્ળત્તા, ત જહા ઇહલોગપદિળીય, પરલોગપદિળીય
 દુહઓ લોગપદિળીય૨। સમૂહ પદ્મુચ્ચ તઓ પદિળીયા પળ્ળત્તા,
 ત જહા-કુલપદિળીય, ગળપદિળીય, સઘપદિળીય ૩ । અણુકપ
 પદ્મુચ્ચ તઓ પદિળીયા પળ્ળત્તા, ત જહા તવસ્તિપદિળીય,
 ગિલાળપદિળીય, સેહ પદિળીય૪। માત્ર પદ્મુચ્ચ તઓ પદિળીયા
 પળ્ળત્તા, ત જહા-ળાળપદિળીય, દસળપદિળીય, ચરિત્તપદિળીય
 ૫ । સુય પદ્મુચ્ચ તઓ પદિળીયા પળ્ળત્તા, ત જહા-સુત્તપદિ
 ળીય, અસ્થપદિળીય, તદુભયપદિળીય ૬ ॥ સૂ૦ ૭૫ ॥

ઔર પદ્યેન્દ્રિય તિર્યચ્ચ જનકો ઔદારિક, વૈમિય સૈજસ ઔર કાર્મણ
 યે ચાર શરીર તક મી હો સકતે હૈં, આહારક શરીર નહીં હોતા હૈ
 તયા-મનુષ્યોં કો તો પાચ શરીર તક મી હો સકતે હૈં, પરન્તુ યહાં પર
 ત્રિસ્થાનક કા પ્રકરણ હોને સે ઉહે યદ્યા નહીં કહ્યા ગયા હૈ ॥સૂ૦૭૪॥

આવ દોષ છે વાયુકાપિક અને પદ્યેન્દ્રિય તિષ્ઠામાં ઔદારિક વૈક્રિય, સૈજસ
 અને કાર્મણ એ ચાર શરીરનો સદ્ભાવ હોઈ શકે છે-પણ આદારક શરીર
 હોતું નથી. મનુષ્યોમાં તો પાંચ શરીરનો સદ્ભાવ પણ હોઈ શકે છે, પરન્તુ
 અહીં ત્રિસ્થાનકનો અધિકાર આવતો હોવાથી તેમની પ્રત્યક્ષ કરવામાં
 આવી નથી ॥ સૂ. ૭૪ ॥

હાયા—ગુરું પ્રતીત્ય ત્રયઃ પ્રત્યનીકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—આચાર્યપ્રત્યનીકઃ, ઉપાધ્યાયપ્રત્યનીકઃ, સ્થવિરપ્રત્યનીકઃ । ૧। ગતિં પ્રતીત્ય ત્રયઃ પ્રત્યનીકા પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—હલોરુપ્રત્યનીકઃ, પરલોકપ્રત્યનીકઃ, દ્વિધાતોલોરુપ્રત્યનીકઃ । ૨। સમૂહં પ્રતીત્ય ત્રયઃ પ્રત્યનીકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ તદ્વથા—કુલપ્રત્યનીકઃ, ગણપ્રત્યનીકઃ, સંઘપ્રત્યનીકઃ । ૩। અનુકમ્પાં પ્રતીત્ય ત્રયઃ પ્રત્યનીકા પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—તપસ્વિપ્રત્યનીકઃ, ગ્લાનપ્રત્યનીકઃ, શૈક્ષપ્રત્યનીકઃ । ૪। ભાવં પ્રતીત્ય ત્રયઃ પ્રત્યનીકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા જ્ઞાનપ્રત્યનીકઃ, દર્શનપ્રત્યનીકઃ, ચારિત્રપ્રત્યનીકઃ । ૫। શ્રુતં પ્રતીત્ય ત્રયઃ પ્રત્યનીકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—સૂત્રપ્રત્યનીકઃ, અર્ધપ્રત્યનીકઃ, તદુભયપ્રત્યનીકઃ । ૬। મુ. ૭૫।

ટીકા—‘ ગુરું ’ इत्यादि सूत्रपट्कं सुगमं, नवरं—‘ गुरु ’—मिति, गृणाति—अभिवच्ते तत्त्वमिति गुरुस्तं प्रतीत्य—आश्रित्य—प्रत्यनीकाः—प्रतिकूलाः ते आचार्योपाध्यायस्थविरभेदेन त्रयः प्रज्ञप्ताः । तत्राचार्योपाध्यायप्रत्यनीकौ तदवर्णवादिनौ । स्थविरो जात्यादिभिर्भवति तस्य प्रत्यनीकः—प्रतिकूलः । स्थविरप्रत्य-

કલ્પસ્થિતિ વ્યતિક્રામક પ્રત્યનીક (પ્રતિકૂલ) બી હોતે હૈં, અતઃ અવ સૂત્રકાર પ્રત્યનીક પ્રતિકૂલ રહને વાલોં કે છહ સૂત્રોં કા કથન કરતે હૈં—“ ગુરું પઙ્કચ તઓ પઙ્કિણીયા—” इत्यादि

ટીકાર્થ—ये ६ सूत्र हैं, इनका अर्थ सुगम है फिर भी सूत्रकार ने इनमें यह प्रकट किया है—गुरु को लेकर प्रत्यनीक तीन होते हैं, जो तत्त्व का कथन करता है वह “ गृणाति तत्त्वमितिगुरुः ” तत्त्व समझाने वालेको गुरु कहते हैं । इस व्युत्पत्तिके अनुसार गुरु कहा गया है प्रत्यनीक शब्द का अर्थ प्रतिकूल रहना है ऐसे गुरुप्रत्यनीक आचार्यप्रत्यनीक उपाध्यायप्रत्यनीक और स्थविरप्रत्यनीक के भेद से ३ तीन प्रकार के कहे गये हैं । आचार्य और उपाध्याय का जो अवर्णवाद करता है वह

કલ્પસ્થિતિ વ્યતિક્રામક પ્રત્યનીકો (પ્રતિકૂળ માણસો) પણ હોઈ શકે છે તેથી હવે સૂત્રકાર પ્રત્યનીક (પ્રતિકૂળ રહેનારા) ને અનુલક્ષીને છ સૂત્રોનું કથન કરે છે—“ ગુરું પઙ્કચ તઓ પઙ્કિણીયા ” इत्यादि—

આ સૂત્રોનો અર્થ સુગમ છે, છતાં અહીં આ સૂત્રોનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—શુરુની અપેક્ષાએ ત્રણ પ્રત્યનીક હોય છે “ ગૃણાતિ તત્ત્વમિતિ ગુરુ ” આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર જે તત્ત્વનું કથન કરે છે તેને ગુરુ કહે છે પ્રતિકૂળ રહેનારને પ્રત્યનીક કહે છે શુરુ પ્રત્યનીકના નીચે પ્રમાણે ત્રણ ભેદ કહ્યા છે—(૧) આચાર્ય પ્રત્યનીક, (૨) ઉપાધ્યાય પ્રત્યનીક અને (૩) સ્થવિર પ્રત્યનીક આચાર્યનો અવર્ણવાદ કરનાર જીવને આચાર્ય પ્રત્યનીક કહે છે અને ઉપાધ્યાયનો અવર્ણવાદ કરનાર જીવને ઉપાધ્યાય પ્રત્યનીક

નીક —યો જાત્યાદિકમાભિત્ય સ્થિરિસ્થાવર્ણવાદં વદતિ છિદ્રાવપી ચ મન્વતિ સઃ । ઉક્ત્ય—

“જઘર્ષાદિ અવન્નં, વિમાસદ્વદ્ય ન યાતિ ઉચ્ચાણ ।

અદિયા છિદ્રપ્પદી, પગાસઘર્ષા અણુલોમો ॥ ૧ ॥

અદ્વાયિ ષપ ષ્વ, ઉષપસ પરસ્સદેતિ ષ્વ તુ ।

દસત્રિદ્વેયામ્બ, કાયઠ્ઠ સય ન કુન્થતિ ॥૨॥ ” ઇતિ ।

છાયા—જાત્યાદિમિરત્વર્ણ વિમાપતે નોપપાતેઽપિ વશ સે ।

અદિત છિદ્રપ્રેલી ધક્ત્વાદી અનનુલોમ ॥૧॥

અયવાઽપિ (સ પ્રત્યનીક ,) વધેદેવ, (પતે આચાર્યાદયઃ) પરસ્પોષ-

દસં દદતિ, ષ્વમેષ દસથિષ વૈયાહૃત્યં કર્તવ્યં પરં સ્વય ન કુર્વન્તિ ॥ ૨ ॥

ઇત્યમવર્ણવાદકરણે શુરુપ્રત્યનીકતા મન્વતિ ॥૧॥ મતિ માનુષત્વાદિકા, તા પ્રતીત્ય પ્રત્યનીકાઃ, સ મિથિષઃ—ઇલોકપરલોકોમયલોકમેદાત્ । તમ—ઇલોક

આચાર્ય પ્રત્યનીક, ઔર હવાપ્યાપ્રત્યનીક હૈ જાતિ આદિ ની અપેક્ષા સ્થિરિ હોતા હૈ, એસે સ્થિરિ કા જો પ્રત્યનીક પ્રતિકૂળ હોતા હૈ વહ સ્થિરિપ્રત્યનીક હૈ સ્થિરિપ્રત્યનીક વહ હૈ જો જાતિ આદિ કો હેકર સ્થિરિ કા અવર્ણવાદ કહના હૈ ઔર ઝન્કે છિદ્રો કા અન્વેષી હોતા હૈ । કહા ની હૈ—“જઘર્ષાદિ અવન્નં—” ઇત્યાદિ, યે આચાર્યાદિક દશ પ્રકાર કે વૈયાહૃત્ય કા ઉપદેશ દેતે હૈ, પરન્તુ—સ્વયં આચરણ નહીં કરતે હૈ એસા યોગનેવાલા અવર્ણવાદી હૈ । ઇસ પ્રકાર સે અવર્ણવાદ કરને પર શુરુપ્રત્યનીકતા હોતી હૈ—૧ માનુષત્વાદિક જાતિ કો આમિત કરકે પ્રત્યનીક ત્રીન પ્રકાર કા હોતા હૈ, જેસે—ઇલોકપ્રત્યનીક પરલોકપ્રત્યનીક ઔર ઝમયલોકપ્રત્યનીક ઇનમેં ઇલોકપ્રત્યનીક વહ હૈ જો મનુષ્યસ્વરૂપ પર્યાયકા પ્રત્યનીક હૈ એસા વહ ઝીય કૃત્રિમનપુત્રક આદિ ની

કહે છે જાતિ આદિની અપેક્ષાએ બેબા સ્થિરિ છે, તેમના પ્રત્યનીકને સ્થિરિ પ્રત્યનીક કહે છે જે માણસ જાતિ આદિની અપેક્ષાએ સ્થિરિને અવર્ણવાદ કરે છે અને તેમના છિદ્રો શોધ્યા કરે છે તે માણસને સ્થિરિ પ્રત્યનીક કહે છે કહું પણ છે કે—જઘર્ષાદિ અવન્નં’ ઇત્યાદિ—

“આ જાત્યાદિ આદિ ઇસ પ્રકારના વૈયાહૃત્યને ઉપદેશ આપે છે પરંતુ યોને તો તે પ્રમાણે આજ પણ કરતા નથી આ પ્રકારે જોલનાર અવર્ણવાદી માણસ છે આ પ્રમાણે અવર્ણવાદ કરનારમાં શુરુ પ્રત્યનીકતાનો સહભાવ મુમત્વે ૧ મનુષ્ય આદિ જાતિને આધારે ત્રણ પ્રકારના પ્રત્યનીક સૂચવી શકે છે—

(૧) ઇલોક પ્રત્યનીક (૨) પરલોક પ્રત્યનીક અને (૩) ઝમનલોક પ્રત્યનીક મનુષ્યત્વ રૂપ પર્યાયને જે પ્રત્યનીક (પ્રતિકૂળ) હોય છે તેને ઇલોક પ્રત્યનીક કહે છે એવે તે પ્રત્યનીક હજી કૃત્રિમનપુત્રક આદિની જેમ ઇન્દ્રિયમય પ્રતિકૂળ

પ્રત્યનીક:-ઇહલોકસ્ય-મનુષ્યત્વરૂપપયાર્યસ્ય પ્રત્યનીક: इन्द्रियार्थप्रतिकूलविधायकत्वात् कृत्रिमनपुंसकादिवत् । परलोकप्रत્યनीक:-जन्मान्तरप्रतिकूलइन्द्रियार्थतत्परत्वाच्चार्वाकवत् । द्विधातो लोकप्रत્યनीक:-उभयलोकप्रत્યनीक:-भोगसाधनतत्परत्वाद् द्रव्यलिङ्गिवत् । यद्वा-चौर्यादिभिरिन्द्रियार्थसाधनतत्परउभयलोकप्रत્યનીક: । इति गतिप्रत્યनीकता ॥ २ ॥ अथ समूहप्रत્યनीकमाह—

સમૂહ:-કુલગણસંઘરૂપ:, તે પ્રતીત્ય પ્રત્યનીક:, તત્ર કુલપ્રત્યનીક:-કુલમ્-
एकगुरुकशिष्यसमुदायरूपम्, गण:-अनेककुलानां समूहरूप:, सङ्घ:-अनेकगणानां
સમૂહરૂપ:, एतेषामवर्णवादकः प्रत्यनीको भवति । इयं समूहप्रत्यनीकतेति । ३।

તરહ ઇન્દ્રિયાર્થ પ્રતિકૂલ વિધાયક હોતા હૈ । પરલોકપ્રત્યનીક વહ હૈ
जो इन्द्रियार्थ में तत्पर होने के कारण चार्वाक आदि की तरह जन्मान्तर का प्रतिकूल होता है, । तथा-उभयलोक प्रत्यनीक वह है जो भोग सम्बन्ध में तत्पर होने के कारण द्रव्यलिङ्गी की तरह दोनों लोक का प्रतिकूल होता है, अथवा-चौर्य आदि कुकृत्यों द्वारा जो इन्द्रियार्थ के साधन में तत्परबना है वह-उभयलोक प्रत्यनीक है-२ यह गति की अपेक्षा प्रत्यनीकता प्रगट की है । समूह को लेकर कुल, गण, और संघ को आश्रित कर प्रत્યनीकता इस प्रकार से है-एक गुरु का जो शिष्य समुदाय होता है, वह कुल है अनेक कुलों का समुदाय गण है, और-अनेक गणों का समुदाय संघ है, इनका अवर्णवाद करनेवाला समूह प्रत्यनीक कहा गया है-३ अनुकंपा प्रत्यनीक इस प्रकार से कहा

વિધાયક હોય છે જે જીવ ઇન્દ્રિયોના સુખમા લીન થઈને-ચાર્વાકના મત પ્રમાણે ભોગવિલાસમય જીવન જીવ્યા કરે છે તેને પરલોક પ્રત્યનીક કહે છે. કારણ કે એવો જીવ પોતાના પરલોકને ખગાડે છે તથા ઉભયલોક પ્રત્યનીક એ છે કે જે ભોગ સમ્બધમાં પ્રવૃત્ત જ રહેવાને કારણે દ્રવ્યલિંગીની જેમ બંને લોકને માટે પ્રતિકૂળ એવું આચરણ કરે છે અથવા જે માણસ ચોરી આદિ કુકૃત્યો દ્વારા ઇન્દ્રિયાર્થના સાધનમા તત્પર રહ્યા કરે છે, તેને ઉભયલોક પ્રત્યનીક કહે છે આ રીતે ગતિની અપેક્ષાએ ત્રણ પ્રકારની પ્રત્યનીકતાને પ્રકટ કરવામાં આવી છે । ૨ ।

સમૂહની અપેક્ષાએ ત્રણ પ્રકારના પ્રત્યનીક કહ્યા છે-(૧) કુલ પ્રત્યનીક, (૨) ગણ પ્રત્યનીક અને (૩) સઘ પ્રત્યનીક.

એક ગુરુના શિષ્ય સમુદાયને કુલ કહે છે, અને કુલોના સમુદાયને ગણ કહે છે અને અનેક ગણોના સમુદાયને સઘ કહે છે તેમનો અવર્ણવાદ કરનારને સમૂહ પ્રત્યનીક કહે છે. અનુકંપા પ્રત્યનીક પણ ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે

અપાનુકમ્પાપ્રત્યનીકમાહ-અનુકમ્પાં પ્રતીત્ય-માધિત્ય ત્રયઃ પ્રત્યનીકા મવન્તિ તપાદિ-તપસ્વિપ્રત્યનીક, ગ્લાનપ્રત્યનીક, શૈક્ષપ્રત્યનીકઃ । તપ તપસ્વી-દ્વાદશવિધતપોવિધાયકઃ, ગ્લાનઃ-રોગાદિકારણવશાદશક્ત, શૈક્ષઃ-નવદીક્ષિતઃ । एतेहि अनुकम्पायोग्या भवन्तीत्यस्तेषामननुकम्पाया अकरणेन, भ-पद्वाराऽनुकम्पाया अकरणेन च प्रत्यनीकता भवति । एतेऽनुकम्पामाधित्य तपस्यादीनां प्रत्यनीका भवन्तीति । १४। सम्प्रति भावमपनीकतामाह-भावः-जीवाजीवगतः पचोय, तत्र जीवस्य प्रसस्तोऽपसस्तश्च भावो भवति । तत्र जीवस्य प्रसस्तो भावो सापिकादि, अपसस्तो विषयामाधित्यौशधिक । माधिकादिषु ज्ञानादिरूपस्त्वन भाव-ज्ञानद्वयनवारिप्रत्य प्रतीत्य प्रत्यरु प्रत्यनीकाः ज्ञानदर्शनवारिप्राणामन्यया गया है-जो अनुकम्पा को आश्रित करके अशरणवाद होता है वह भी तीन प्रकार का होता है एक तपस्विप्रत्यनीक, दूसरा ग्लानप्रत्यनीक, और तीसरा शैक्षप्रत्यनीक इनमें अनशनादि १२ प्रकार के तपों का जो अनुष्ठान करनेवाला होता है वह तपस्वी होता है, रोगादि कारण के वश से जो अशक्त होता है वह ग्लान है, नये दीक्षित का नाम शैक्ष है, य सब अनुकम्पा के योग्य होते हैं सो इनके प्रति अनुकम्पा नहीं करना अथ द्वारा भी इनके प्रति अनुकम्पा नहीं करवाना यही उनकी और प्रत्यनीकता है, यही घात तपस्विप्रत्यनीक, ग्लानप्रत्यनीक, और शैक्षप्रत्यनीक इन पदों द्वारा प्रकट की गई है । भाव की अपेक्षा लेकर तीन प्रत्यनीक इस प्रकार से प्रकट किये गये हैं-एक ज्ञानप्रत्यनीक, १ दर्शनप्रत्यनीक २ और तीसरा चारित्रप्रत्यनीक ३ जीव और अजीव

અનુકંપા બતાવવા શોખન છવે પ્રત્યે સ્વયં અનુકંપા (દવા) નહીં રાખનાર અને બીજાને અનુકંપા રાખવા નહીં દેનાર બ્યક્તિને અનુકંપા પ્રત્યનીક કહે છે તેના નીચે પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) તપસ્વી પ્રત્યનીક, (૨) ગ્લાન પ્રત્યનીક, (૩) શૈક્ષ પ્રત્યનીક અનશનાદિ ૧૨ પ્રકરના તપને અનુષ્ઠાન કરનારને તપસ્વી કહે છે શામદિ કાણેને દીપિ જે સાધુ અશક્ત હોય છે, તેને ગ્લાન કહે છે નવદીક્ષિત સધુને શૈક્ષ કહે છે તપસ્વી, ગ્લાન અને શૈક્ષ અનુકંપાને પાત્ર હોય છે તેમના પ્રત્યે અનુકંપા નહીં રાખનાર અને અનુકંપા રાખનારને પણ અનુકંપા નહીં રાખવાનું કહેનારને અનુકંપા પ્રત્યનીક કહે છે આ રીતે તપસ્વી પ્રત્યે અનુકંપા નહીં રાખનારને તપસ્વી પ્રત્યનીક, ગ્લાન પ્રત્યે અનુકંપા નહીં રાખનારને ગ્લાન પ્રત્યનીક અને નવદીક્ષિત પ્રત્યે અનુકંપા નહીં રાખનારને શૈક્ષ પ્રત્યનીક કહે છે જાવની અપેક્ષાએ ત્રણ પ્રત્યનીક કહ્યા છે-(૧) જ્ઞાન પ્રત્યનીક, (૨) દર્શન પ્રત્યનીક અને (૩) ચારિત્ર પ્રત્યનીક

પ્રરૂપણતસ્તદ્દૂષણનો ત્રા ભવન્તિ, યથા—

“ પાવયસુત્તનિવદ્ધં, કોવા જાણઈ પળીય કેળેયં ? ।

કિંવા ચરણેણં તુ, દાણેણ વિનાં ઉ કિં દવદ્ ॥ ૧ ॥ ” ઈતિ ।

છાયા—પ્રાકૃતસૂત્રનિવદ્ધં કો ત્રા જાનાતિ પ્રજીતં કેનેદમ્ ? ।

કિં વા ચરણેણ તુ દાનેન વિના તુ કિં ભવતિ ॥૧॥

તત્ર જ્ઞાનવિષયાઽન્યથાપ્રરૂપણા યથા—સૂત્રમિદં પ્રાકૃતભાષાનિવદ્ધં—ન તુ સંસ્કૃતભાષાનિવદ્ધમિત્યાદિ । દર્શનવિષયાઽન્યથાપ્રરૂપણા યથા—કો જાનાતીદ શાસ્ત્રં કેન ભગવતાઽન્યેન વા કેનચિત્ પ્રણીતમિતિ ન શ્રદ્ધેયમિત્યાદિ । ચારિત્રવિષયા-

ગત પર્યાય કા નામ ભાવ હૈ જીવ કો પ્રજારત ભાવ, ઔર અપ્રજાસ્ત ભાવ, દોનોં પ્રકાર ભી ભાવ હોતા હૈ, ક્ષાયિકાદિ કા હોના યહ પ્રજાસ્ત ભાવ હૈ તથા વિવક્ષા કી અપેક્ષા સે ઔદયિક આદિ ભાવ અપ્રજાસ્ત ભાવ હૈ ક્ષાયિકાભાવ સામાદિરૂપ હોના હૈ હમ કારણ યહાં જ્ઞાનદર્શન ઔર ચારિત્રરૂપ અપ્રજાસ્ત ભાવ કો લેકર યે પ્રત્યેક કે પ્રત્યનીક પ્રકટ કિયે ગયે હૈ જ્ઞાનદર્શન ઔર ચારિત્ર મેં અન્યથા પ્રરૂપણા કરને સે, યા ઉનમેં દૂષણ લગાને સે યે પ્રત્યનીક હોતે હૈ । જૈસે—“ પાવયસુત્તનિવદ્ધં ” ઇત્યાદિ, યહ સૂત્ર પ્રાકૃત ભાષા મેં નિવદ્ધ હૈ—સંસ્કૃત મેં નિવદ્ધ નહીં હૈ ઇત્યાદિરૂપ સે ગર્હિત વિચારધારા પૂર્વક કહના યહ જ્ઞાનવિષયક અન્યથા પ્રરૂપણાહૈ કૌન જાનતા હૈ યહ શાસ્ત્ર ભગવાનને ઉપદિષ્ટકિયા હૈ, યા હસે અન્ય દૂસરે કિસીને ઉપદિષ્ટ કિયાહૈ ૩ ભગવાનને ઉપદિષ્ટ કિયાહૈ રચાહૈ

છવ અને અછવગત પર્યાયનુ નામ ભાવ છે છવમાં પ્રજાસ્ત અને અપ્રજાસ્ત, આ બન્ને પ્રકારના ભાવ હોય છે ક્ષાયિકાદિ ભાવને પ્રજાસ્ત ભાવ કહે છે અને ઔદયિક આદિ ભાવને અપ્રજાસ્ત ભાવ કહે છે ક્ષાયિક ભાવ સામાદિ (જ્ઞાનાદિ) રૂપ હોય છે, તે કારણે અહીં જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્ર રૂપ અપ્રજાસ્ત ભાવની અપેક્ષાએ તે પ્રત્યેકના પ્રત્યનીક પ્રકટ કરવામા આવ્યા છે. જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્ર વિષયક વિપરીત પ્રરૂપણા કરવાથી અથવા તેમાં રૂપણું આરોપણ કરવાથી, તેઓમા પ્રત્યનીકતા આવી જાય છે જેમકે—

પાવય સુત્તનિવદ્ધ ” ઇત્યાદિ—

આ સૂત્ર પ્રાકૃત ભાષામા નિબદ્ધ છે, સંસ્કૃતમા નિબદ્ધ નથી ” ઇત્યાદિ રૂપે ગર્હિત વિચારધારાપૂર્વક કહેવું તેને જ્ઞાનવિષયક વિપરીત પ્રરૂપણા કહેવાય છે. તથા “ શી ખખર, આ શાસ્ત્ર ભગવાને રચ્યું છે કે અન્ય કોઈએ રચ્યું છે । ” ભગવાને જ રચ્યું છે તેનું પ્રમાણ શું છે ? એવા કોઈ પ્રમાણને અભાવે તેમા

અન્યથા પ્રરૂપણા યથા—ચારિત્રેણ—ચારિત્રગ્રહણેન કિમ્—જો લાભ, યત્ ચારિત્રી જ્ઞાન વાતુ ન શ્વનોતિ, જ્ઞાનેન વિના કિં મવતિ, લોકે જ્ઞાન હિ સર્વશ્રેષ્ઠ વર્તે નાન્યત્કિમપાતિ । ૧ । શ્રુતપ્રત્યનીકતા યથા—શ્રુતમ્—માગમ પ્રતીત્ય સ્માર્થ—તદુમય મેદેન ત્રયઃ પ્રત્યનીકા મવન્તિ । સત્ર સૂત્રમ્—આચારાદ્વાદિકમ્, અર્થઃ—સરપા-રૂપાન, તદુમય—સ્માર્થરૂપ દ્વિતયમપિ । તેષાં પ્રત્યનીકતા—દૂષણોદ્ધાવન યથા—
' જીવા ય અજીવા ય, યથા પમાયા તથા ય અપમાયા ।

एषाणि पसिद्धानि य, किमेत्य सुप्तस्यमणणेण ॥१॥' इति ।

છાયા—જીવાશ્ચામીવાચ પ્રતાનિ પમાદાસ્તથા પાપમાદા' ।

एतानि पसिद्धानि च, किमत्र स्मार्थमणनेन ॥२॥ इत्यादि । ६॥ सू० ७५॥

इसमें प्रमाण क्या है ? अतः—यह अद्वेय नहीं है ऐसा कथन करना यह दर्शनविषयक अन्यथा प्ररूपण है । चारित्र ग्रहण से क्या लाभ है ? क्यों कि—चारित्री ज्ञान तो वे नहीं सकता है, और ज्ञान के बिना कुछ होता नहीं है, लोक में ज्ञान सर्वश्रेष्ठ कहा गया है, और कुछ सर्वश्रेष्ठ नहीं कहा गया है इस प्रकार का कथन चारित्रविषयक अन्यथा प्ररूपण रूप होती है । श्रुत को आश्रित करके तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, जैसे—सूत्रप्रत्यनीक अर्थप्रत्यनीक और तदुमयप्रत्यनीक, आचाराज्ज आवि सूत्ररूप आगम है इनका व्याख्यान अर्थरूप आगम हैं, सूत्र और अर्थ यह उभयरूप आगम है इनमें दूषणों का उद्धारन करना यह उनकी प्रत्यनीकता है । जैसे “ जीवाय अजीवा य ” इत्यादि । जीव अजीववत्त अप्रमाद ये तो प्रसिद्ध ही हैं फिर सूत्र अर्थ पहले से प्रयोजन क्या है, अर्थात् कुछ भी नहीं । सू० ७५ ॥

પહેલે જો કલ્પસિદ્ધિ કરી ગઈ છે ત્થા ગર્ભજ મનુષ્યોં કો હીં હોતી

જેવું શા માટે શાખી બોલે છે ? આ પ્રકારનું કથન કરનારને જ્ઞાન પ્રત્યનીક કહે છે “ ચારિત્ર ગ્રહણ કરનાર શા લાભ છે ? ચારિત્રશાળી જીવ જ્ઞાન તો આપી શકે તો નથી, અને જ્ઞાન વિના કેઈ લાભ થતો જ નથી જોકે જ્ઞાન ને જ શ્રેષ્ઠ કહ્યું છે બીજું કંઈ પણ તેનાથી ઉત્તમ નથી આ પ્રકારની વિપરીત પડીપણા કરનારને ચારિત્ર પ્રત્યનીક કહે છે શ્રુતની અપેક્ષાએ પણ ત્રણ પ્રત્યનીક કહ્યા છે (૧) સૂત્ર પ્રત્યનીક (૨) અર્થ પ્રત્યનીક અને (૩) તદુમય પ્રત્યનીક આચારાંજ આદિ સૂત્રરૂપ આગમ છે તેનું આજ્ઞાન તો અર્થરૂપ આગમ છે સૂત્ર અને અર્થ એ બન્ને ઉભયરૂપ આગમ છે તેમાં કયણેનું આશરણ કરવું એ જ તેમના પ્રત્યેની પ્રત્યનીકતા છે એમકે— જીવા ય અજીવા ય ” ઇત્યાદિ “ જીવ, અજીવ તત્ત્વ અપ્રમાદ આ તો બાહ્યતાં તત્ત્વો છે તે સૂત્ર, અર્થ આદિ નિષ્કાનાની જરૂર જ રી છે ? ” આ પ્રમાણે કહેનારને શ્રુત પ્રત્યનીક કહે છે ॥ સૂ. ૭૫ ॥

પૂર્વે કલ્પસ્થિતિરુક્તા, સા ચ ગર્ભજમનુષ્યાણામેવ ભવતિ, તેષાં શરીરં ચ માતાપિતૃદેહુકમિતિ તચ્છરીરે, માતાપિત્રોરુદ્ધવિભાગં પ્રરૂપયન્ સૂત્રદ્વયમાહ—

મૂલમ્--તત્રો પિદ્મયંગા પળ્લન્તા, તં જહા-અઢ્ઢી, અઢ્ઢિમિંજા, કેસમંસુરોમનહે ૧ । તત્રો માડયંગા પળ્લન્તા, તં જહા-મંસે, સોણિણ, મત્થુલિંગે ॥ સૂ૦ ૭૬ ॥

છાયા—ત્રીણિ પિત્રદ્ધાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથથા-અસ્થિ, અસ્થિમિજ્ઞા, કેશશ્મશ્તુરોમનશ્વમ્ ૧ । ત્રીણિ માત્રદ્ધાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથથા-માંસં, શોણિતં, મસ્તુલિદ્ધમ્ ૨ ॥ સૂ૦ ૭૬ ॥

ટીકા—‘ તત્રો પિદ્મયંગા ’ ઇત્યાદિ । ત્રીણિ-ત્રિસંખ્યકાનિ, પિત્રદ્ધાનિ-પિતૃસમ્બન્ધીનિ-અદ્ધાનિ પ્રાયઃ શુક્રપરિણતાનીત્યર્થઃ । તથથા-તાન્યેવાહ અસ્થિ-પ્રસિદ્ધમ્, અસ્થિમિજ્ઞા-અસ્થિમધ્યગતો રસઃ, કેશશ્મશ્તુરોમનશ્વમ્, તત્ર કેશાઃ-પ્રસિદ્ધાઃ, શ્મશ્તુ-કૂર્ચઃ, ઢાઢી ઇતિભાષા પ્રસિદ્ધં રોમાણિ-કધાદિજાતાનિ, નશ્વા-શ્વેતિ સમાહારે કેશશ્મશ્તુરોમનશ્વમ્, એતદેકાદ્ભત્વેન વિવક્ષિતં પ્રાયઃ સમાનત્વા-
હૈ, તથા ગર્ભજ મનુષ્યોં કા શરીર માતાપિતાઓં કે સંયોગ સે હોતા હૈ
અતઃ અનેકે શરીર મેં માતાપિતા કે અદ્ધ કા વિભાગ સૂત્રકાર પ્રરૂપિત
કરતે હૈ—‘ તત્રો પિદ્મયંગા પળ્લન્તા ’ ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ-પિત્રદ્ધ ત્રીન કહે ગયે હૈં જૈસે અસ્થિ અસ્થિમજ્જા ઓર કેશ શ્મશ્તુરોમ નશ્વ, ત્રીન માતાકે અદ્ધ કહે ગયે હૈં, જૈસે-માંસ શોણિત મસ્તુલિદ્ધ । ગર્ભજન્મવાલોં કે શરીર મેં પિતા સમ્બન્ધી જો ત્રીન અદ્ધ કહે ગયે હૈં, વે પ્રાયઃ શુક્ર કે પરિણામ રૂપ હોતે હૈં, અસ્થિ હઢ્ઢી અસ્થિમિજ્જા શ્મશ્તુ ઢાઢી કે વાલ, ઓર કધ્ધ આદિ કે વાલ તથા નશ્વ યહ પદ એકાદ્ધ રૂપ

પહેલાં જે કલ્પસ્થિતિની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી, તેના સદ્ભાવ મનુષ્યોમાં જ હોય છે. તથા ગર્ભજ મનુષ્યના શરીરનું નિર્માણ માતાપિતાના સંયોગથી જ થાય છે તેથી તેના શરીરમાં માતાપિતાના કયા કયા અંગો હોય છે, તે હવે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—“ તત્રો પિદ્મયંગા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-તેના શરીરમાં ત્રણ પિતૃ અંગ હોય છે—(૧) અસ્થિ-અસ્થિમજ્જા, (૨) કેશ, શ્મશ્તુ, રોમ અને (૩) નખ તેના શરીરમાં માતાના નીચે પ્રમાણે ત્રણ અંગ હોય છે (૧) માંસ, (૨) શોણિત અને (૩) મગજ. ગર્ભજન્મવાળા મનુષ્યના શરીરમાં પિતાના ત્રણ અંગોના જે સદ્ભાવ કહ્યો છે તે પ્રાયઃ (સામાન્ય રીતે) શુક્રના પરિણામ રૂપ હોય છે

અસ્થિ એટલે હાડકા અને અસ્થિમજ્જા તથા ‘ શ્મશ્તુ ’ એટલે ઢાઢી, ખગલ આદિના વાળ. મનુષ્યના આ ત્રણ અંગો (અસ્થિ, શ્મશ્તુ અને નખ) સામાન્ય

વિતિ ૧૨। ‘તમા માતૃયગા’ ઇત્યાદિ-માતૃજ્ઞાનિ-માતૃસમ્બન્ધીનિ-માર્તૃયમાપપ
રિણતાનીત્યર્થ, યદ્વાનિ તાનિ ધીણિ યથા-માંસ-પ્રસીત, શોણિત-રક્ત, માસ્તુ
લિઙ્ગ-પિત્રદ્વારચિષ્ટ સર્વમજ્જ મેદઃ ક્રિષ્કિસાદિકમ્, યદ્વા-કપાસમધ્યવર્તિ મેઝઞ
કમિતિ ૧૨। ॥ સુ ૭૬ ॥

પૂર્વે શરીરે માતાપિત્રોરજ્ઞાનિ પ્રદર્શિતાનિ, તદ્વાત્માત્ર કોઽપિ પૂર્વપુણ્યોદયેન
ભ્રામખ્ય માત્નોગ્રેતિ તત્પતિપન્થસ્ય વિશિષ્ટનિર્જરા કારણાનિ નિરૂપયન્ ગૃહ્યપમાર-

મૂલ્મ તીર્હિ ઠાળેર્હિ સમળે ણિગંગે મહાનિજ્જરે મહાપજ્જ
વસાળે ભવ્વઙ્ગ, ત જહા-કયા ણ અહ અપ્પ વા વહુય વા સુય
અહિજ્જિસ્તામિ ૧, કયા ણ અહ એકહ્લવિહારપડિમ ઉવસપજ્જિત્તા ણ
વિહરિસ્તામિ ૨, કયા ણં અહ અપચ્છિમમારણંતિયસલેહ્ણાદ્ધુ
સળાદ્ધુતિષ્ ભત્તપાળપડિયાદ્ધાક્ષિપ્પ પાઓવગ્ગ કાલ અળવક-
ખમાળે વિહરિસ્તામિ ૩। યવ સમળસા સવયસા સકાયસા પહારે
માળે સમળે નિગંગંથે મહાનિજ્જરે મહાપજ્જવસાળે ભવ્વઙ્ગ ॥ ૧ ॥

તીર્હિ ઠાળેર્હિ સમળોવાસપ્પ મહાનિજ્જરે મહાપજ્જવસાળે
ભવ્વઙ્ગ ત જહા-કયા ણં અહ અપ્પ વા વહુય વા પરિગ્ગહ પરિચ્છ-
હસ્તામિ ૧, કયા ણં અહ મુઢ ભવિત્તા અગારાઓ અળગારિય
પવ્વઙ્ગસ્તામિ ૨, કયા ણં અહ અપચ્છિમમારણાતિયસલેહ્ણાદ્ધુસળા

સે પ્રાયઃ સમાન હોને કે કારણ વિવક્ષિત થુષા હૈ-૧ માતા કે મજ્જ કૌન
૨ સે ઉત્તમેં હોતે હૈ, ઇસ વાત પો સૂત્રકાર ને-“તમા માતૃયગા-”
ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કિયા હૈ યે મજ્જ માર્તૃય કે પરિણામરૂપ હોતે હૈ,
જેસે-માંસ શોણિત રક્ત, ઓર મસ્તુલિઙ્ગ મસ્તક=મગજ । પિત્રજ્ઞ વિશિષ્ટ
સર્વ મજ્જ મેદ કુફકુસ આદિ અથવા-કપાસ કે મધ્યવર્તી મેજા-॥સુ ૭૬॥

શીતે જ્ઞાતાના તે અગ્રો જેવાં જ દોય છે તેથી અર્હી તે અમેમાં પિતૃજન
(પિતૃજ) સાથે અમાનતા પ્રકટ કરી છે- ‘તમા માતૃયગા’ આ સૂત્ર દ્વારા
જે વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે ગર્ભજ અનુષ્ઠામાં માંસ, રક્ત અને
મસ્તુલિંગ (મગજ) માતાના તે અગ્રો જેવા દોય છે, તે અજ અતન્ત
પરિણામરૂપ દોય છે ॥ સુ ૭૬ ॥

હ્રુસિષ ભક્તપાણપડિયાદ્વિલ્લપ્ત પાઓવગ્ન કાલં અણવકંઠમાણે
વિહારિસ્સામિં ૩ । एवं समणसा स्वयसा सकायसा पागडेमाणे
समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ २॥सू० ७७॥

છાયા—ત્રિભિઃ સ્થાનૈઃ શ્રમણો નિર્ગ્રન્થો મહાનિર્જરો મહાપર્યવસાનો ભવતિ,
તથથા—કદા સ્વલ્પ અહમ્ અલ્પં વા વહુકં વા શ્રુતમ્ અધ્યેષ્યે ૧, કદા સ્વલ્પ અહમ્
एकाकिविहार प्रतिमाम् उपसंपद्य स्वलु विहरिष्यामि ૨। કદા સ્વલ્પ અહમ્ અપ-
શ્ચિમમારણાન્તિકસંલેઘના જોપણા જોપિતો ભક્તપાણપ્રત્યારુયાતઃ પાદપોષગતઃ
કાલમ્ અનવકાઙ્ક્ષન્ વિહરિષ્યામિ ૩। एवं स्वमनसा स्ववचसा स्वकायेन प्रधार-
यत् श्रमणो निर्ग्रन्थो महानिर्जरो महापर्यवसानो भवति । १॥

ત્રિભિઃ સ્થાનૈઃ શ્રમણોપાસકો મહાનિર્જરઃ મહાપર્યવસાનો ભવતિ, તથથા—
કદા સ્વલ્પ અહમ્ અલ્પં વા વહુકં વા પરિગ્રહં પરિત્યક્ષ્યામિ ? ૧, કદા સ્વલ્પ અહમ્
मुण्डो भूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजिष्यामि ? ૨, કદા સ્વલ્પ અહમ્ અપશ્ચિ-
મારણાન્તિકસંલેઘનાજોપણાજોપિતો ભક્તપાણપ્રત્યારુયાતઃ પાદપોષગતઃ કાલમ્
અનવકાઙ્ક્ષન્ વિહરિષ્યામિ ? ૩। एवं स्वमनसा स्ववचसा स्वकायेन प्रकटयन् श्रम-
णोपासको महानिर्जरो महापर्यवसानो भवति । २॥ सू० ७७ ॥

ટીકા—‘તીર્હિ’ इत्यादि । त्रिभिः स्थानैः—कारणै श्रमणः—तपस्वी निर्ग्रन्थः—
द्रव्यभावग्रन्थिरहितो मुनिः महानिर्जरः महती निर्जरा—कर्मक्षयरूपा यस्य स

इस प्रकारसे शरीर में मातापिता स्वग्रन्थी अङ्गोंको दिखाया
उनके अङ्गों से उत्पन्न हुवा कोई भी पूर्वपुण्य के उदय से श्रामण्य को
प्राप्त कर लेता है सो श्रामण्य पर्याय को प्राप्त हुवा वह जीव जिन जिन
कारणों से विशिष्ट निर्जरा करता है अब उन कारणों को सूत्रकार दो
सूत्रों से प्रकट करते हैं—“तीर्हि ठाणेहि समणे निग्गंथे—” इत्यादि
टीकार्थ—तीन कारणोंसे श्रमण निर्ग्रन्थ कर्मक्षयरूप निर्जरावाला होता है
और तद्वच से उली अब में मोक्षगामी होता है जो द्रव्यग्रन्थि, और

ઉપરના સૂત્રમા ગર્ભજ મનુષ્યના શરીરમાં માતાપિતાના કયા કયા અંગો
હોય છે તે પ્રકટ કરવામા આવ્યુ ગર્ભજ જન્મથી ઉત્પન્ન થયેલો કોઈ પણ
મનુષ્ય પૂર્વ પુણ્યના ઉદયથી શ્રામણ્ય પર્યાયની પ્રાપ્તિ કરી શકે છે. આ રીતે
જેણે શ્રામણ્ય પર્યાય પ્રાપ્ત કરી છે એવો જીવ જે જે કારણોને લીધે વિશિષ્ટ
નિર્જરા કરે છે, તે તે કારણોનું હવે નિરૂપણ કરવા નિમિત્તે સૂત્રકાર નીચેના
બે સૂત્રોનું કથન કરે છે—“તીર્હિ ઠાણેહિ સમણે નિગ્ગંથે ” ઇત્યાદિ—
ટીકાર્થ—નીચેના ત્રણ કારણોના સદ્ભાવમા શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ કર્મક્ષયરૂપ નિર્જરા-
વાળો હોય છે, અને એ જ ભવમાથી મોક્ષગામી થાય છે. તે દ્રવ્યગ્રન્થિ અને

તથા-સર્વતઃ કર્મક્ષયકારીત્યર્થઃ, અતएष-મહાપર્યવસાનઃ-મહત્-માત્પન્તિકં પર્ય
વસાનમ્, મન્તો મવાન્તો यस્ય સ તથા-તદ્મવસિદ્ધિગામીત્યર્થઃ, મવતિ । તથા-
તાન્યેવ સ્થાનાનિ યથા-‘ કયાણ ’ અહ ઇત્યાદિ, કયા સ્વલુ મહમ્ ઇત્યાદિ મુગ
મમ્ । ‘ અપચ્છિમ ’-રપાદિ, અપશ્ચિમમારણાન્તિકસંછેત્સનાનોપખાઓપિત
તપ્ર-ન નિષ્પતે પશ્ચિમો યસ્યા સા અપશ્ચિમા-સર્વાન્તિમા, યદ્વા-પશ્ચિમૈવામશ્ચપ
રિહારાર્થમપશ્ચિમા, મરણ-સર્વાયુષ્કસ્યલક્ષણ પ્રતિષ્ઠાજાયમાનાઽઽચીધીમરણા
ગ્રહણાત્, તદેવાન્તઃ-મરણાન્તઃ, તપ્ર મવા મારણાન્તિકી, સમ્પ્રિચ્ચતે-કૃષ્ણીક્રિયતે
શરીરરૂપાયાદિ યથા સા સંછેત્સના-તપોવિશેષમશ્ચુષા, અપશ્ચિમમારણાન્તિકસંછે
ત્સના, તસ્યા ઓપના-સેવના અપશ્ચિમમારણાન્તિક-સંછેત્સના ઓપના, તથા
ઓપિતઃ-સેવિતઃ સતથા-અપશ્ચિમમારણાન્તિકમંછેત્સનામ્થ્યેન તપસા સીમીકૃતવદેહ

‘ભાયમશ્ચિ’ સે રહિત હોતા હૈ વહી તપસ્વી નિમ્નન્ય હોતા હૈ, પેમા વહ
તપસ્વી નિમ્નન્ય મુનિ સર્વતઃ કર્મક્ષય કરને ઘાલા હોતા હૈ ઇસીલિયે
વહ આત્મનિર્મલરૂપ સે ‘મય વા મન્ત વરને ઘાલા હોતા હૈ અપોત્-ઊસી
‘મવ મેં મોક્ષગામી હોતા હૈ’ ંે સીન સ્થાન હમ પ્રકાર સે હૈ-“ કયાઈ
મહ-” ઇત્યાદિ, મેં કય થોહેવો મહત્ મુત કા અધ્યયન કરુંગા ? કય
મેં પકાકી વિહાર પ્રતિમા કો પ્રાપ્ત કર વિહાર કરુંગા ૨ ઓર કય મેં
‘સર્વાન્તિમ મારણાન્તિક સંછેત્સના સે સેવિત હોતા હુવા’ અક્ષપાન કે
પ્રત્યારૂપાન સે મૃત્યુ કી આકાંક્ષા નહીં કરતા હુવા પાદપોષગમન સંધારા
કો ધારણ કરુંગા ૩ ઇસ પ્રકાર સે અપને મન સે અપને ઘચન સે ઓર
અપને કાય સે વિચાર કરતા હુવા અમળ નિર્મલ મહાનિર્જરાયોલ્ હોકર
મહાપર્યવસાન હોતા હૈ, હન ત્રીન સ્થાનો દ્વારા અમળોરાતકા મહાનિર્જ

ભાયમશ્ચિ રહિત હોય છે, તેને જ તપસ્વી નિમ્ન જ કહેવાય છે એવો તે
તપસ્વી નિમ્ન થ સવ પ્રકારે કર્મક્ષય કરનારો હોય છે, તેથી તે આત્મનિર્મ
રૂપે બવને ક્ષય કરનારો-એટલે કે એ જ અર્થમાંથી આક્ષતમન કરનારો હોય છે
તે ત્રણ સ્થાન (કારણો) નીચે પ્રમાણે છે-‘ કયા હ અહ ’ ઇત્યાદિ—

“(૧) કયારે હું થોડા અથવા વધારે મુનનું અધ્યયન કરનારો બનીશ ?
(૨) કયારે હું કોઈક વિદ્યાર પ્રતિમ ને પ્રાપ્ત કરીને વિચરીશ ? કયારે હું
સર્વાન્તિમ મારણાન્તિક સંતેજનાનું સેવન કરીને અક્ષપાનના પ્રત્યારૂપાનપૂર્વક
મૃત્યુની આકાંક્ષા કર્યા વિના પાદપોષગમન સંધારો ધારણ કરીશ ?” આ
પ્રશ્નની મન વચન અને કાયાથી ભારના બાબતો અમલું નિર્મલ મહા
નિર્જરાયોલ્ થઈતે મહાપર્યવસાનવાળો થાય છે

इत्यर्थः, तथा भक्तपानप्रत्याख्यातः—भक्तं च पानं चेति भक्तपाने, ते प्रत्याख्यायेते येन स तथा—(क्तान्तस्य परनिपात) अनशनकारीत्यर्थः पादपोषगतः—पाद-पोषगमनसंरतारकं प्राप्तं कालं—मृत्युम् अनवकाङ्क्षन्—अनशनकपटेन—मरणमनि-च्छन् कदाहं विहरिष्यामीति । एवं—अनेन प्रकारेण ‘ समणसा ’ इति स्वमनसा

રાવાલા હોકર મહાપર્યવસાનવાલા હોતા હૈ, । અર્થાત્ સંસાર કા અંત કરનેવાલા હોતા હૈ । વે ત્રીન સ્થાન હસ પ્રકાર સે હૈ—કવ મૈ ધોડે, વહુત પરિગ્રહ કા પરિત્યાગ કરુંગા ૧ કવ મૈ મુળિંદત હોકર અગારાવસ્થા સે અનગારાવસ્થા પ્રાપ્ત કરુંગા ૨ તથા—કવ મૈ અપશ્ચિમ મારણાન્તિક સંલેખના કે સેવન સે સેવિત હુવા ભક્તપાન કે પ્રત્યાખ્યાન સે કાલ—મૃત્યુ કી આકાંક્ષા નહીં કરતા હુવા પાદપોષગમન કો ધારણ કરુંગા ૩ હસ પ્રકાર સે અપને મન, અપને વચન, ઔર અપને કાય સે પ્રકટ કરતા હુવા શ્રમણોપાસક મહાનિર્જરાવાલા હોકર મહા-પર્યવસાનવાલા હોતા હૈ યહાં જો—“ અપશ્ચિમ મારણાન્તિક સંલેખના જોષણાજોષિતઃ—” એસા પદ કહા હૈ, ડસકા તાત્પર્ય હસ પ્રકાર સે હૈ —જિસકા પશ્ચિમ નહીં વહ અપશ્ચિમ હૈ, અર્થાત્—જો સર્વાન્તિમ હૈ વહ અપશ્ચિમ હૈ, ક્યોં કિ સંલેખના મરણ કે અન્ત મૈં હી ધારણ કી જાતી હૈ, અથવા યહ અમઙ્ગલ પરિહાર કે લિયે કી જાતી હૈ ડસલિયે યહ પશ્ચિમ હોકર ભી અપશ્ચિમ હૈ પ્રતિક્ષણ જાયમાન અવીચિ મરણ કે અગ્રહણ સે યહાં મરણ શબ્દ સે સર્વાયુષ્ક ક્ષયરૂપ મરણ હી ગૃહીત હુવા હૈ યહ મરણ હી મરણાન્ત હૈ હસ મરણાન્ત મૈં જો હોની હૈ વહ

હવે શ્રમણોપાસકની અપેક્ષાએ ત્રણ સ્થાનોની પ્રશ્નણા કરવામા આવે છે.

(૧) ક્યારે હુ થોડા કે વધારે પરિગ્રહનો ત્યાગ કરનારો બનીશ ? (૨) ક્યારે હુ મુક્તિ થઈને ગૃહસ્થાવસ્થાના પરિત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થા અંગીકાર કરીશ ? (૩) તથા ક્યારે હુ અપશ્ચિમ મારણાન્તિક સંલેખનાની આરાધના કરવાને તત્પર થઈને, આહારપાણીના પ્રત્યાખ્યાનપૂર્વક, મૃત્યુની આકાંક્ષા નહીં રાખતો થકો, પાદપોષગમન સંચારો ધારણ કરીશ ? ” આ પ્રકારની ભાવના પોતાના મન, વચન અને કાયાથી પ્રકટ કરતો થકો શ્રમણોપાસક મહાનિર્જરાવાળો થઈને મહાપર્યવસાનવાળો થાય છે. અહીં જે “ અપશ્ચિમમારણાન્તિક સંલેખના જોષણાજોષિત ” આ સૂત્રપાઠ આપ્યો છે, તેનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—જેના કરતા અન્ય કોઈ અન્તિમ હોય નહીં તેને અપશ્ચિમ કહે છે, એટલે કે સર્વાન્તિમને અપશ્ચિમ કહે છે, કારણ કે સંલેખના મરણના અંતે જ (અન્તકાળે જ) ધારણ કરવામા આવે છે, અથવા તે અમગલ પરિહાર નિમિત્તે જ કરવામા આવે છે, તેથી તે પશ્ચિમરૂપ હોવા છતાં પણ અપશ્ચિમ જ છે પ્રતિક્ષણ બીજામન આવીથી મરણના અગ્રહણથી અહીં મરણ શબ્દ દ્વારા સર્વાયુષ્ક ક્ષયરૂપ મરણ જ ગૃહીત થયેલ છે, આ મરણને જ મરણાન્ત કહે છે, આ મરણાન્તમા જે આરાધિત થાય છે તેને મારણાન્તિકી કહે છે, જેના દ્વારા

મારણાન્તિકી છે જિસને પ્રારા શરીર ઓર કપાય આવી કૂણા કિયે જાતે
 હૈ વહ સહેલ્વના હૈ યહ સહેલ્વના વિશિષ્ટ તપોમ્પ દોતી હૈ હસ સહે
 લ્વના કા જો પ્રીતિ પૂર્વક સેવન કિયા જાતા હૈ યહ અપશ્ચિમ મારણાન્તિક
 સહેલ્વના જોપના હૈ, હમ જોપના સે જો સેવિત હોતા હૈ વહ "અપશ્ચિમ
 મારણાન્તિક સહેલ્વના જોપના જોપિત" હૈ અર્થાત્-હમ અપશ્ચિમ
 મારણાન્તિક સહેલ્વના મામકે તપ સે જિસકા વેદ ક્ષીણ હો ગયા હૈ
 પેસા તપસ્વી મુનિ શ્રમણ નિમ્ન ય હી "અપશ્ચિમ મારણાન્તિક સહેલ્વના
 જોપના જોપિત-" પદચાલા દોતા હૈ હસકા અર્થ "અનશનકારી"
 પેસા હૈ "પાદ્વોપગતઃ" કા તાત્પર્ય પાદવોપગમન સસ્તારક કો પ્રાપ્ત
 છુવે સો હૈ "કાલં અનવકાદ્ધનુ" 'મૃદુ કી રુચા
 કિયે યિના' યહ પદ યહ વહતા હૈ કિ - જિસને સચારા
 ધારણ કિયા હૈ વહ અનશનકારી હોકર અનશન કે કષ્ટ સે
 મરણ કી આદના કરે હસ પ્રકાર સે અપશ્ચિમ મારણાન્તિક સહેલ્વના
 જોપના સે જુપિત હોને કા જો વહ વિચાર કરતા હૈ સો ડસ વિચારમેં
 કિસી અન્ન કી પ્રેરણા નહીં દોની આદિયે, યહી વાત "સ્વમનસા"

શરીર અને કપાય આગિને મૃદુ (દુઝલ) કરવામાં આવે છે તેનું નામ સહેલ્વના છે
 આ સહેલ્વના વિશિષ્ટ તપોરૂપ હોય છે આ સહેલ્વનાનું એ પ્રીતિપૂર્વક સેવન
 કરવામાં આવે છે તેને "અપશ્ચિમ મારણાન્તિક સહેલ્વના જોપના" કહે
 છે અથવા આ અપશ્ચિમ મારણાન્તિક સહેલ્વના નામના તપસ્વી એને રહે
 ક્ષીણ થઈ જાય છે, એવો 'તપસ્વી શ્રમણ નિર્ભયઃ' "અપશ્ચિમ માર
 ણાન્તિક સહેલ્વના જોપના ભેષિત" વિશેષણવાળો હોય છે તેનો "અનશનકારી"
 એવો અર્થ થાય છે 'પાદ્વોપગતઃ' આ પદનો બાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

પાદ્વોપગમન સચારા જેવું થઈ જાય છે એવા છપને "પાદ્વોપગતઃ"
 કહે છે 'કાલં અનવકાદ્ધનુ' આ પદનો બાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—એવું
 સહેલ્વના ધારણ કરેલી છે એવા અનશનકારી છપે અનશનના રહેથી મુઝાઈને
 મરણની ઈચ્છા કરવી ભેષિત નહીં આ પ્રકારનો અપશ્ચિમ મારણાન્તિક
 સહેલ્વના જોપનાથી જુપિત થવાનો એ વિચાર તેના દાયા કરાય છે તે
 વિચારમાં અન્ન કોઈની પ્રેરણા દોવી ભેષિત નહીં, એ જ વાતનું "સ્વમનસા"

સ્વવચસા સ્વકાયેન નત્વન્યજનપ્રેરણયા પ્રવારયન્-પર્યાલોચયન્ શ્રમણો નિર્ગન્થો
મહાનિર્જરો મહાપર્યવસાનો ભવતીતિ ।૧॥ અથ શ્રાવકવિપયં સૂત્રમાહ—‘ તોર્હિ ’
ઇત્યાદિ, ત્રિભિઃ સ્થાનૈઃ શ્રમણોપાસકો મહાનિર્જરો મહાપર્યવસાનો ભવતિ । તાન્યે-
વસ્થાનાન્યાહ—‘ કયાણં ’ ઇત્યાદિ, કદા સ્વલુ અહમ્ અલપં વા વહું વા પરિગ્રહં,
પરિગૃહ્યતે-આદીયતેઽસ્માદિતિ, પરિગ્રહણં વા પરિગ્રહઃ-ધનધાન્યદ્વિપદ-ચતુષ્પદાદિ
સંગ્રહઃ, તં પરિત્યક્ષ્યામિ-પૃથક્કરિષ્યામિ ।૧। અન્યત્ સ્થાનદ્વયં સુગમમ્ ।સૂ. ૭૭॥

અનન્તરં કર્મનિર્જરા પ્રોક્તા, કર્માણિ ચ પુદ્ગલરૂપાણીતિ પુદ્ગલાનાં પરિ-
ણામવિશેષમભિધિત્સુરાહ—

સૂત્રમ્—તિવિદ્ધે પોગ્ગલપડિઘાણ પણ્ણત્તે, તં જહા-પરમાણુ
પોગ્ગલે પરમાણુપોગ્ગલં પપ્પ પડિહન્નિજ્જા, લુક્કલ્લપ્પાણ વા પડિ-
હન્નિજ્જા, લોગ્ગંતે વા પડિહન્નિજ્જા ॥ સૂ. ૭૮ ॥

આદિ પદોં દ્વારા સમર્થન કી ગઈ હૈ इस प्रकार की विचार धारा का
यह परिणाम निकलता है कि वह विचार महती निर्जरा का अधिपति
बनकर तद्भव सिद्धिगामी होता है इस प्रकार का भाव प्रथमसूत्र का
है । इसी तरह से जो श्रमणोपासक श्रावक होता है वह भी जब पूर्वोक्त
तीन कारणों वाला होता है, अर्थात्-वह ऐसा विचारता है कि मेरे
जीवन में ऐसा वह समय कब आयेगा जब कि मैं थोड़े बहुत रूप में
परिग्रह का धनधान्य द्विपदचतुष्पद आदि का परित्याग कर दूंगा,
इत्यादि, इस प्रकार की विचारधारा श्रमणोपासक श्रावक महानिर्जरा
का पात्र बनकर महापर्यवसानवाला होता है ॥ सू. ७७ ॥

“ પોતાના મન, વચન અને કાયાથી ” આ પદોના પ્રયોગ દ્વારા સમર્થન
કરવામા આવ્યું છે. આ પ્રકારની વિચારધારાનું એ પરિણામ આવે છે કે આ
વિચાર મહત્તી નિર્જરોના અધિપતિ બનીને જીવને તદ્ભવ-સિદ્ધિગામી કરે
છે, આ પ્રકારનો ભાર પ્રથમ સૂત્રનો છે એ જ પ્રમાણે જે શ્રમણોપાસક
શ્રાવક હોય છે, એવો જીવ પણ પૂર્વોક્ત ત્રણ કારણોને લીધે એ જ ભવમાથી
મોક્ષગામી થાય છે-એટલે કે તે એવો વિચાર છે કરે કે મારા જીવનમાં
એવો અવસર કયાને આવશે કે ન્યારે હું પણ અલ્પ કે અધિકરૂપે પરિગ્રહનો
ધન, ધાન્ય, દ્વિપદ, ચતુષ્પદ આદિનો પરિત્યાગ કરી નાખીશ. ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત
વિચારધારાવાળો શ્રમણોપાસક શ્રાવક મહાનિર્જરાને પાત્ર બનીને મહા-
પર્યવસાનવાળો થાય છે ॥ સૂ. ૭૭ ॥

તિવિદ્દે ચક્ષુ પળ્લન્તે ત જહા-પગચક્ષુ યિચક્ષુ
તિચક્ષુ છઠમત્થે ણમણુસ્સે પગચક્ષુ, દેવ ધિચક્ષુ, તહારૂવે
સમણે વા માહણે વા ઉપ્પલ્લનાણદસણધરે સે ણ તિચક્ષુત્તિ
વત્તથ મિયા ॥ સૂ. ૭૧ ॥

તિવિદ્દે અભિસમાગમે પળ્લન્તે, ત જહા-ઉઠ્ઠ અહ તિરિય ।
જયા ણ તહારૂવસ્સ સમણસ્સ વા માહણસ્સ વા આહસેસે નાણ
દસણે સમુપ્પજ્જહ સે ણં તપ્પઢમયાપ્પ ઉઠ્ઠ અભિસમેહ, તઓ
તિરિય, તઓ પચ્છા અહે અહોલોગે ણ દુરભિગમે પળ્લન્તે
સમણાડસો ॥ સૂ. ૮૦ ॥

છાપા—ત્રિવિધ પુદ્ગલપ્રતિષ્ઠાત પ્રજ્ઞતા, તથા—પરમાણુપુદ્ગલઃ, પર
માણુ પુદ્ગલ પ્રાપ્ય પ્રતિદિશ્યતે રૂક્ષતયા વા પ્રતિદિશ્યતે, લોકાન્તે વા પ્રતિદિશ્યતે ।
॥ સૂ. ૭૮ ॥

ત્રિવિધચક્ષુઃ પ્રજ્ઞતા, તથા—પદ્મચક્ષુઃ, દિશ્ચક્ષુ, ત્રિચક્ષુ । ઉચ્ચસ્યઃ સ્વછ
મનુષ્ય પદ્મચક્ષુઃ, દેવો દિશ્ચક્ષુઃ, તયારૂપઃ ધમણો વા માહનો વા ઉત્પન્નજ્ઞાન
વર્ધનધરઃ, સ સ્વછ ત્રિચક્ષુરિતિ વક્તવ્ય સ્વાત્ ॥ સૂ. ૭૦ ॥

હસ પ્રકાર સે કર્મનિર્જરા હોને કા કથન કિયા યે કર્મ પુદ્ગલરૂપ
હોતે હિં હસલિપે અય સૂત્રકાર પુદ્ગલોં કે પરિણામ વિશેષ કા કથન
કરને કી હચ્છા સે કહતે હિં—“ તિવિદ્દે પોગ્ગલપઢિપાપ્પ પળ્લન્તે—”
હત્યાદિ, પુદ્ગલ પ્રતિષ્ઠાત ત્રીન પ્રકાર કા કદા ગયા હે, જેસે—પરમાણુપુ
દ્ગલ, પરમાણુપુદ્ગલ કો પ્રાપ્ત કરફે પ્રતિષ્ઠાતવાલા હોતા હે રૂક્ષતા સે વહ
પ્રતિષ્ઠાત વાલા હોતા હે લોકાન્ત મેં વહ પ્રતિષ્ઠાત વાલા હોતા હે ॥ સૂ. ૭૮ ॥

આ પ્રમાણે કર્મનિર્જરાનું કથન પૂર્ણ થયું તે કર્મ પુદ્ગલરૂપ હોય છે
તેથી હવે સૂત્રકાર પુદ્ગલોના પરિણામ વિશેષનું કથન કરવા નિમિત્તે નીચેના
સૂત્રનું કથન કરે છે— તિવિદ્દે પોગ્ગલપઢિપાપ્પ પળ્લન્તે ” ઇત્યાદિ—

પુદ્ગલ પ્રતિષ્ઠાત ત્રણ પ્રકારનો હોય છે—(૧) પરમાણુ પુદ્ગલ, પરમાણુ
પુદ્ગલને પ્રાપ્ત કરીને પ્રતિષ્ઠાતવાળું થાય છે (૨) રૂક્ષતાને લીધે તે પ્રતિષ્ઠાત
વાળું થાય છે અને (૩) લોકાન્તમાં તે પ્રતિષ્ઠાતવાળું થાય છે ॥ સૂ. ૭૮ ॥

ત્રિવિધઃ અભિસમાગમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—ઊર્ધ્વમ્, અધઃ, તિર્યક્, યદા સ્વલ્પ તથારૂપસ્ય શ્રમણસ્ય વા માહનસ્ય વા અતિશેષે જ્ઞાનદર્શને સમુત્પદ્યેતે સ સ્વલ્પ તત્પ્રથમતાયાં ઊર્ધ્વમભિસમેતિ, તતસ્તિર્યક્, તતઃ પશ્ચાદ્ અધઃ અધોલોકઃ સ્વલ્પ દુરભિગમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ શ્રમણાયુષ્મન્ ? સૂ૦ ૮૦ ॥

ટીકા—‘ત્રિવિધે પોગ્ગલ૦’ ઇત્યાદિ । પુદ્ગલાનામ્—અણ્વાદીનાં પ્રતિધાતઃ—ગતિસ્વલ્પનં પુદ્ગલપ્રતિધાતઃ, સ ત્રિવિધરતયાદિ—પરમાણુશ્વાસો પુદ્ગલથ પર-

ચક્ષુવાલા ત્રીન પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, એક ચક્ષુવાલા ૧ દો ચક્ષુઓ-વાલા ૨ ત્રીન ચક્ષુઓવાલા ૩ । उनमें छद्मस्थ मनुष्य एक चक्षुवाला कहा गया है—१ देव द्विचक्षुवाला कहा गया है—२ तथा उत्पन्न ज्ञान दर्शन धारी श्रमण, अथवा—माहन तीन चक्षुवाला कहा गया है ॥ सू. ७९ ॥

અભિસમાગમ ત્રીન પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, એક ઊર્ધ્વાભિસમાગમ ૧ દૂસરા—અધોઽભિસમાગમ ૨ ઔર ત્રીસરા—તિર્યગભિસમાગમ—૩ જિસ સમય તથારૂપવાલે શ્રમણ કો, યા—માહન કો અતિશય જ્ઞાન દર્શન ઉત્પન્ન હોતે હૈં વહ તત્પ્રથમતા મેં ઊર્ધ્વલોક કે પદાર્થોં કા પરિ-ચ્છેદ કરતા હૈ, ઉસકે વાદ તિર્યગ્લોક કે પદાર્થોં કા પરિચ્છેદ કરતા હૈ, વાદ મેં અધોલોક કે પદાર્થોં કા પરિચ્છેદ કરતા હૈ, હે શ્રમણાયુ-ષ્મન્ ! અધોલોક દુરભિગમ કહા ગયા હૈ ॥ સુ ૮૦ ॥

ટીકાર્થ—હન ત્રીન સૂત્રોં કા તાત્પર્ય એસા હૈ, અણુઆદિકોંકી ગતિકા જો સ્વલ્પન હોતા હૈ વહ પુદ્ગલપ્રતિધાત હૈ, એસા ચહ પુદ્ગલપ્રતિધાત ત્રીન

ચક્ષુવાળાના ત્રણ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) એક ચક્ષુવાળો, (૨) બે ચક્ષુવાળો અને (૩) ત્રણ ચક્ષુવાળો છદ્મસ્થ મનુષ્યને એક ચક્ષુવાળો કહ્યો છે, દેવાને બે ચક્ષુવાળા કહ્યા છે અને ઉત્પન્નજ્ઞાનદર્શનધારી શ્રમણ અથવા માહનને ત્રણ ચક્ષુવાળા કહ્યા છે. ॥ સૂ. ૭૯ ॥

અભિસમાગમ ત્રણ પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) ઊર્ધ્વાભિસમાગમ, (૨) અધો અભિસમાગમ અને (૩) તિર્યગભિસમાગમ બ્યારે તથા૩પ (શાઓક્તા નિય-મોનું પાલન કરનારા) શ્રમણ કે માહનને અતિશય જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે પ્રથમ તો તે ઊર્ધ્વલોકના પદાર્થોનો પરિચ્છેદ કરે છે, ત્યારબાદ તિર્યગ્લોકના પદાર્થોનો પરિચ્છેદ કરે છે અને ત્યારબાદ અધોલોકના પદાર્થોનો પરિચ્છેદ કરે છે. હે શ્રમણાયુષ્મન્ ! અધોલોકને દુરભિગમ્ય કહ્યો છે ॥ સૂ. ૮૦ ॥

ટીકાર્થ—૭૮ થી ૮૦ સુધીના સૂત્રોનો ભાવાર્થ હવે પ્રકટ કરવામા આવે છે—પરમાણુ આદિકોની ગતિનું જે સ્ખલન (રુકાવટ) થાય છે, તેનું નામ પુદ્ગલ પ્રતિધાત છે એવા તે પુદ્ગલ પ્રતિધાતને ત્રણ પ્રકારનો કહ્યો છે. ૭૭-૭૮-૭૯-૮૦

માણુ પુદ્ગલ, સોડ્ય પરમાણુ પુદ્ગલ પ્રાપ્ય પ્રતિહન્યત-પ્રતિસ્તમતિ-ગતેઃ પ્રતિ
 ઘાતમાપઘત ઇત્યર્થે, રુક્ષતયા-સ્નેહાભાવેન તથાવિષપરિણામાન્તરગદ્ ગતિપ્રતિ
 ઘાતો ભવતિ લોકાત ધા ગત્વા પ્રતિહન્યતે તમ્ન ગતિસહાયકધર્માસ્તિકાય
 સ્પામાવાદિતિ ॥ મુ. ૭૮ ॥

પુદ્ગલપ્રતિઘાતવ સવશ્ચુરેય જાનાતીતિ તદાદિ-‘વિવિદે વક્ષુ’ ઇત્યાદિ

પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ । પ્રથમ પ્રકાર મેં પરમાણુરૂપ પુદ્ગલ અન્યપરમા
 ણુરૂપ પુદ્ગલ કો પ્રાપ્ત કરકે ગતિક્રિયાકે પ્રતિઘાતકો પ્રાપ્ત કરતા હૈ, અર્થાત્
 રુકજાતા હૈ દ્વિતીય પ્રકાર મેં સ્નેહકે અભાવસે વહ તથાવિષ પરિણામાન્તર
 કો લેખર ગતિક્રિયાકે પ્રતિઘાતકો પ્રાપ્ત કરતા હૈ, તૃતીય પ્રકાર મેં લોકાન્ત
 મેં જાકર વહ ગતિક્રિયા મેં સહાયક ધર્માસ્તિ કે અભાવ સે ગતિક્રિયા
 કે પ્રતિઘાત કો પ્રાપ્ત કરતા હૈ ઇક પુદ્ગલ પરમાણુ જય દ્વિતીય પુદ્ગલ
 પરમાણુ કે સાથ ટકરાતા હૈ તય વહ વહીં રુક જાતા હૈ આગે નહીં જાના
 હૈ, ગતિક્રિયા મેં સહાયક સ્નેહ ગુણ મી હોતા હૈ-જય પરમાણુ સ્નેહગુણ
 સે રહિત હોતા હૈ તય વહ ચુરદરા હોને કે કારણ ગતિક્રિયા કા પ્રતિ
 ઘાતવાલા હો જાતા હૈ, અર્થાત્ ગતિક્રિયા નહીં કર પાતા હૈ લોક કે
 અન્ત મેં જાકર વહ આગે અલોક મેં જો નહીં જા પાતા હૈ ઉસકા કારણ
 આગે ગતિસહાયક ધર્મદ્રવ્ય કા અભાવ હૈ, ૭૮

પુદ્ગલપ્રતિઘાત કો સવશ્ચુ હી જાનતા હૈ, અતઃ-અય વક્ષુ કે વિષય

પરમાણુ ઇપ પુદ્ગલ અન્ય પરમાણુ ઇપ પુદ્ગલને પ્રાપ્ત કરીને અતિક્રિયાને પ્રતિ
 ઘાત પ્રાપ્ત કરે છે બીજો પ્રકાર-સ્નેહના અભાવે કરીને (રુક્ષતાના સદ્ભાવે
 કરીને) તે તથાવિષ પરિણામાન્તરની અપેક્ષાએ ગતિક્રિયાને પ્રતિઘાત પ્રાપ્ત
 કરે છે ત્રીજો પ્રકાર-લોકાન્તમાં જઈને અતિક્રિયામાં સદાયક એવા ધર્માસ્તિ-
 હાયને અભાવે તે અતિક્રિયાના પ્રતિઘાતને પ્રાપ્ત કરે છે એક પુદ્ગલ પરમાણુ
 અથાવે બીજા પુદ્ગલ પરમાણુ સાથે અથકાય છે, ત્યારે તે ત્યાં જ અટકી જાય
 છે-આમ જ તું નથી, સ્નેહ શુચુ (સ્નિગ્ધતા) વધુ ગતિક્રિયામાં સદાયક
 બને છે અથાવે પરમાણુ સ્નેહશુચી રહિત બને છે ત્યારે તે ખરબખડુ મઈ
 જવાને કારણે ગતિક્રિયા કરી શકતું નથી એટલે કે રુક્ષતાને કારણે પરમાણુની
 બિંદી અટકી જાય ॥ લોકના અન્ત ભાગ સુધી પહોંચીને તે અલોકમાં ગતિ
 કરી શકતું નથી, કારણ કે ગતિમા સહાયક તથા ધર્માસ્તિહાયનો ત્યાં અભાવ
 હોય છે આ રીતે ૭૮ માં પ્રતિઘાત સૂત્રનો સાવાય સમજાવવામાં આવ્યો.

૭૬ માં સૂત્રનો સાવાય-પુદ્ગલ પ્રતિઘાતને સવશ્ચુ છત્ર ન બાધી થકે

ત્રિવિધઃ ચક્ષુઃ, ચક્ષુરિતિ દ્રવ્યતો લોચનં, ભાવતો જ્ઞાનં, તદ્ યસ્યાસ્તીતિ તદ્દો-
ગાચ્ચક્ષુરિતિ ચક્ષુષ્માનિત્યર્થ, સ ચ ત્રિવિધઃ-ચક્ષુઃ સંરૂપાભેદાત્ । તત્રૈકચક્ષુઃ-
એકચક્ષુષ્માન્ । એવ દ્વિ ચક્ષુરિતિ દ્વિચક્ષુષ્માન્, ત્રિચક્ષુરિતિ ત્રિચક્ષુષ્માનિતિ ।
તત્ર-છાદયતીતિ છદ્મ-નાનાવરણાદિ, તત્ર તિષ્ઠતીતિ છદ્મસ્થઃ, એતાદૃશો યદ્યપિ-
અનુત્પન્નકેવલજ્ઞાનઃ સર્વેષ્વોચ્યતે તથાપીદ્ સાતિશયશ્રુતજ્ઞાનાદિવર્જિતો વિવક્ષ્યતે
ઇત્યત એકચક્ષુશ્ચક્ષુરિન્દ્રિયમપેક્ષ્ય વોદ્ધવ્ય । દેવો દ્વિચક્ષુઃ-ચક્ષુરિન્દ્રિયાવધિજ્ઞાના-

મેં સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ-પુદ્ગલપ્રતિધાન કો જાનનેવાલા ચક્ષુ ચક્ષુવાલા
પ્રાણી-ત્રીન પ્રકાર કા હોતા હૈ, એક એક ચક્ષુવાલા દુસરા દો ચક્ષુઓ
વાલા ઓર ત્રીસરા ત્રીન ચક્ષુઓવાલા । ચક્ષુ દ્રવ્યચક્ષુ ઓર ભાવચક્ષુ કે
ભેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, દ્રવ્યચક્ષુ લોચનરૂપ હોતા હૈ, ઓર
ભાવચક્ષુ જ્ઞાનરૂપ હોતા હૈ, વહ ચક્ષુ જિસકો હોતા હૈ વહ ઉસકે યોગ
સે ચક્ષુ ચક્ષુવાલા કહા ગયા હૈ । જો જ્ઞાનાદિ ગુણોં કા છાદન કરતા હૈ
વહ છદ્મ હૈ ઇસ છદ્મ મેં જો રહતા હૈ વહ છદ્મસ્થ યદ્યપિ અનુત્પન્ન જ્ઞાન-
વાલે જિતને હૈં વે સબ હી પ્રાણી હૈં પરન્તુ એસા છદ્મસ્થ યહાં વિવક્ષિત
નહીં હુવા હૈ, યહાં તો એસા હી છદ્મસ્થ વિવક્ષિત હુવા હૈ જો સાતિશય
શ્રુતજ્ઞાનાદિ સે રહિત હૈ ઇસલિયે જિસકી ચક્ષુરિન્દ્રિય હૈ વહ એક
ચક્ષુવાલા હૈ, તથા-દેવોં કે દો ચક્ષુ હોતે હૈં એસા જો કહા ગયા હૈ ઉસકા
તાત્પર્ય એસા હૈ કિ-દેવોં કો ચક્ષુ ઇન્દ્રિય હોતી હૈ ઓર અવધિજ્ઞાન

છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ચક્ષુના ત્રિવિધતું નિરૂપણ કરે છે. પુદ્ગલ પ્રતિધાતને
જાણનારા ચક્ષુયુક્ત છવે ત્રણ પ્રકારના છે (૧) એક ચક્ષુવાળા, (૨) બે ચક્ષુ-
વાળા અને (૩) ત્રણ ચક્ષુવાળા.

ચક્ષુના આમ તો બે પ્રકાર જ કહ્યા છે-(૧) દ્રવ્યચક્ષુ અને (૨) ભાવ-
ચક્ષુ દ્રવ્યચક્ષુ લોચન (નેત્ર) રૂપ હોય છે અને ભાવચક્ષુ જ્ઞાનરૂપ હોય છે.
આ ચક્ષુ જેને હોય છે તે તેના યોગથી ચક્ષુવાળો કહેવાય છે જે જ્ઞાનાદિ
ગુણોનું છેદન કરનાર હોય છે તેને છદ્મ કહે છે. આ પ્રકારની છદ્મ અવસ્થા-
વાળા છવેને છદ્મસ્થ કહે છે. જે કે અનુત્પન્ન જ્ઞાનવાળા જેટલા છવે છે
તેમને છદ્મસ્થ જ કહે છે, પરન્તુ અહીં એવા છદ્મસ્થની વાત કરવામા આવી
નથી અહીં તો એવા છદ્મસ્થની વાત કરવામા આવી છે કે જે સાતિશય
શ્રુતજ્ઞાનાદિથી રહિત છે તેથી જેને ચક્ષુરિન્દ્રિય (આખો) નો સદ્ભાવ હોય
છે, તેને એક ચક્ષુવાળો કહે છે. ‘દેવોને બે ચક્ષુ હોય છે’ આ કથનનો
ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-દેવોને ચક્ષુરિન્દ્રિય ત્રણ હોય છે અને તેઓ અવધિ-

ભ્યામ્ । ત્રિષ્કુપ્ત-ઉત્પન્નજ્ઞાનદર્શનમ્ , તત્ર ઉત્પન્નમ્-આવરણસયોપસમેન પ્રક્ટી
 મૂલ જ્ઞાન-ધ્રુવાવધિરૂપ , દર્શનમ્-અવધિદર્શનરૂપ ધારયતિ વહતીતિ સતપા, યથા
 દશો યઃ ધમ્મો વા માહનો વા મયતિ સ સ્વલ્લ ત્રિષ્કુપ્તઃ ચક્ષુરિન્દ્રિય-પરમધ્રુવ-
 પરમાવધિમર્યાદાત્ ઇતિ-પૂર્વોક્તપ્રકારેણ વક્તવ્ય કથનીયં સ્વાત્ । અર્થે હિ દેવોપા-
 દયાનિ સમસ્તવસ્તુનિ સાક્ષાદિવાનબ્ધોપયતીતિ ત્રિષ્કુપ્તપરમસ્ય ત્રિષ્કુપ્તમ્ ।
 નતુ કેવલિનચક્ષુરિન્દ્રિય-કેવલજ્ઞાન-કેવલદર્શન વચ્ચાસ્ત્રિષ્કુપ્તસ્ત્વેનાપિ સ કિં
 ન વિવક્ષિત । ઇત્યગ્રાહ-ચક્ષુરિન્દ્રિયલક્ષણચક્ષુષ ડાયોગામાબેન તસ્ય ચક્ષુરિન્દ્રિયા
 વિવક્ષણાત્, દ્રવ્યેન્દ્રિયાપેક્ષયા તુ સોઽપિ ન ત્રિવક્ષ્યત ઇતિ ॥ સૂ. ૭૯ ॥

હોતા હૈ, તથા-જિનકો આવરણ કે ક્ષયોપશમ સે તજ્ઞાન અવધિજ્ઞાન
 ઓર અવધિદર્શન યે પ્રકટ હો ચુકે હૈં એસા જો : । ણ અથવા માહન
 હૈં વહ ત્રિન ચક્ષુવાલા કહા ગયા હૈં ક્યોં કિ-વહ ચક્ષુરિન્દ્રિય પરમધ્રુવ
 ઓર પરમાવધિવાલા હૈં । ત્રિષ્કુપ્તવાલા જીવ દેવ ઓર ઉપાદેયરૂપ સમ
 સ્ત વસ્તુઓં કો સાક્ષાત-હુઈં કી તરહ દેખતા હૈં યદિ યહાં પર એસી
 આશક્કા કી જાવે કિ-યહા કેવલી મી ત્રિષ્કુપ્તવાલોં કે રૂપ મેં ગૃહીત
 હોના ચાહિયે । ક્યોં કિ ડનકે પામ મી ચક્ષુરિન્દ્રિય કેવલજ્ઞાન ઓર
 કેવલદર્શન રહતા હૈં, અર્થાત્-કેવલી દ્રવ્યેન્દ્રિયરૂપ ચક્ષુ સે તથા માવે
 ત્રિયરૂપ કેવલજ્ઞાન, ઓર કેવલદર્શન સે સમ્પન્ન હોતે હૈં તપ હન્નેં ક્યોં
 નહોં ત્રિષ્કુપ્તમાત્ર કે રૂપ મેં ગૃહીત કિયા ગયોં હૈં ? તો હસકા વત્તર
 એસા હૈં કિ-વન્નેં ચક્ષુરિન્દ્રિયવાલા હસલિયે નહોં કહા ગયા હૈં કિ-
 ડનમેં ચક્ષુરિન્દ્રિય અન્ય ઉપયોગ કા અભાવ રહતા હૈં દ્રવ્યેન્દ્રિય કી

જ્ઞાન સપત પદ્ય દેખ છે તથા જોમને આવરણના ક્ષયોપશમથી મુક્તજ્ઞાન
 અવધિજ્ઞાન અને અવધિદર્શન પ્રકટ થઈ ચુક્યા દેખ છે એવા સમગ્ર અવધિ
 માહનને ત્રણ ચક્ષુવાળો કહી છે, કારણ કે તે ચક્ષુરિન્દ્રિય પરમધ્રુવ અને
 પરમાવધિવાળો દેખ છે ત્રિષ્કુપ્તવાળો છત્ર દેખ અને ઉપાદેયરૂપ સમસ્ત
 વસ્તુઓને સામે જ દેખ એવી રીતે (પ્રત્યક્ષની જોમ) જોઈ શકે છે

પ્રશ્ન-કેવલીને પણ ત્રણ ચક્ષુવાળામાં સમાવેશ થવો જોઈએ કારણ કે
 તેમની પાસે પણ ચક્ષુરિન્દ્રિય, કેવલજ્ઞાન અને કેવલ દર્શનનો સદ્ભાવ દેખ
 છે એ/તે કે કેવલી દ્રવ્યેન્દ્રિયરૂપ ચક્ષુ વડે અને ભાવેન્દ્રિયરૂપ કેવલજ્ઞાન
 અને કેવલદર્શનથી સંપન્ન દેખ છે તો પછી ત્રણ ચક્ષુવાળા છોડોમા તેમને
 કેમ ખ્યા થા નથી ?

ઉત્તર-કેવલીને ચક્ષુરિન્દ્રિયવાળા નહીં કહેવાનું કારણ એ છે કે તેમ

પૂર્વે ચક્ષુષ્માન્ પ્રોક્તઃ, તસ્ય ચાભિસમાગમ इति वस्तुपरिच्छेदो भवतीति-
તં દિગ્ભેદેન વિભજતે-‘તિવિદ્દે અભિસમાગમે’ ઇત્યાદિ । ત્રિવિધઃ-ત્રિપ્રકારઃ
અભિસમાગમઃ, ‘અભિ’ ઇત્યર્થાભિમુખ્યેન ન તુ વિપર્યાસરૂપતયા ‘સમ્’ ઇતિ
સમ્યક્ ન સંશયતયા, ‘આ’ ઇતિ મર્યાદયા ગમનં જ્ઞાનં’ યે ગત્યર્થાસ્તે જ્ઞાનાર્થાઃ’
ઇતિ વચનાત્, અભિસમાગમઃ-પદાર્થ-પરિચ્છેદઃ । સ ત્રિવિધસ્તદ્વયા-ઊર્ધ્વમ્-
વિવક્ષા સે તો વે ભી ત્રીન ચક્ષુષ્માનોં મેં ગૃહીત હો જાવેં તો હસમેં કોઈ
વિરોધ નહીં હૈ ।

હસ પ્રકાર સે ચક્ષુષ્માન્ કા કથન કરકે અબ સૂત્રકાર ડસકે
અભિસમાગમ કા દિગ્ભેદ કો લેકર કથન કરતે હૈ-“તિવિદ્દે અભિસ-
માગમે-” ઇત્યાદિ । અભિસમાગમ કા અર્થ પદાર્થ કા પરિચ્છેદ હોના
હૈ, અર્થાત્ ચક્ષુષ્માન્ કો જો પદાર્થ કા પરિચ્છેદ હોતા હૈ વહ અભિસ
માગમ હૈ, અભિસમાગમ મેં “અભિ” ઉપસર્ગ હૈ હસકા અર્થ હૈ વિપ-
ર્યાસ (વિપરીતતા) સે રહિત હોકર ગમ (જ્ઞાન કા) હોના વહ અભિગમ
હૈ સાથ મેં “સમ” ઓર “આ” યે દો ઉપસર્ગ ઓર ભી હૈ, સો હનકા
અર્થ ઇસા હૈ કિ-જૈસા વહ જ્ઞાન વિપરીતતા રહિત હોતા હૈ ડસી પ્રકાર
સે ડસે “સમ” સમ્યક્ રૂપ ભી હોના ચાહિયે, સંશયરૂપ નહીં । ઓર
“આ” યહ મર્યાદા અર્થ મેં આયા હૈ “ગમ” યહ ગત્યર્થક ગમ્ ધાતુ
સે બના હૈ, સો “યે ગત્યર્થા સ્તેજ્ઞાનાર્થાઃ” હસ કથન કે અનુસાર જો

નામાં ચક્ષુરિન્દ્રિય જન્ય ઉપયોગનેા અભાવ રહે છે દ્રવ્યેન્દ્રિયની અપેક્ષાએ
તેમને ત્રણ ચક્ષુવાળા કહેવામા આવે, તો એમાં કેઈ વાધો નથી.

૮૦ મા સૂત્રના ભાવાર્થનું નિરૂપણ—ચક્ષુષ્માનનું કથન કરીને હવે
સૂત્રકાર તેમના અભિસમાગમ (વિપરીતતાથી રહિત જ્ઞાન) નું દિગ્ભેદની
અપેક્ષાએ કથન કરે છે-“તિવિદ્દે અભિસમાગમે” ઇત્યાદિ—

અભિસમાગમ એટલે કે પદાર્થનેા પરિચ્છેદ થવો તે. અભિસમાગમમાં
‘અભિ’ ઉપસર્ગ છે તેનો અર્થ ‘વિપર્યાસ (વિપરીતતા) થી રહિત’
થાય છે. અને ‘ગમ’ એટલે ‘જ્ઞાન’. “વિપર્યાસથી રહિત એવા જ્ઞાનને
‘અભિગમ’ કહે છે” અભિગમ પદની સાથે “સમ” અને “આ” ઉપ-
સર્ગો પણ આવેલા છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—જેમ તે જ્ઞાન વિપરીતતાથી
રહિત હોય છે, એ જ પ્રમાણે સમ્યક્રૂપ પણ હોવું જોઈએ—સંશયરૂપ હોવું
જોઈએ નહીં “આ” ઉપસર્ગ મર્યાદા અર્થમાં પ્રયુક્ત થયો છે. “ગમ”
આ પદ ગત્યર્થક ‘ગમ્’ ધાતુમાંથી જન્ય છે. “યે ગત્યર્થાસ્તે જ્ઞાનાર્થા.” આ

ઊર્ધ્વાભિગમઃ, અથ - અધોઽભિગમઃ, તિર્યક્-તિર્યગભિગમ । અથૈવ જ્ઞાનમેદ કય
યતિ-‘ વ્યા ણ ’ મિત્યાદિ, યદા સ્વલુ તથાસ્પસ્ય તથાવકારસ્ય વિશિષ્ટમકા
રસ્ય ધમણસ્ય-તપસ્વિનઃ, વા-અથવા માહનસ્ય-દ્વિસાદિનિવૃત્તસ્ય અતિશેષે-
શેષાણિ-છદ્ધસ્ય જ્ઞાનાનિ, સાન્યતિક્રાન્તે અતિશેષે તથાવિધે રૂપે સમાખ્યેષે, તે
સમુત્પદ્યેષે, સ સ્વલુ સત્પ્રથમતાયાં કેવલસ્ય ન ક્રમેણોપયોગો યન સત્પ્રથમતયે-
ર્યાયુક્તમતવગસ્યાદિતિ, સસ્ય-જ્ઞાનાદેરૂપાદસ્ય પ્રથમતા સસ્યાઃ સત્પ્રથમસમય
ઇત્યર્થઃ ઊર્ધ્વમ્-ઊર્ધ્વલોકમમિસમેતિ-તથત્ય પદાર્થપરિચ્છેદ કરોતિ, તત -તત્પદાર્થ
તિર્યક્-તિર્યગ્લોક, તતઃ પદ્માદ્ અથઃ-અથ ઇત્યપાલોકમમિસમેતિ । અધોલોક

ધોતુ ગત્યર્થક હોતે હું જે જ્ઞાનાર્થક મી હોતે હું, અત -વિષયક ઓર
સશય દોષ સે રહિત હોકર જો જ્ઞાન મર્યાદા કે અનુમાર હોના હૈ વહ
અભિસમાગમ હૈ એસા હસકા નિષ્કર્ષ અર્થ હૈ । વહ અભિસમાગમ ત્રીન
પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ જો હસ પ્રકાર સે હૈ-૧૬ક ઊર્ધ્વાભિસમાગમ,
દ્વિસરા અધોઽભિસમાગમ, ઓર ત્રીસરા તિર્યગભિસમાગમ, જય તયા
પ્રકાર કે વિશિષ્ટ પ્રકાર કે અમણ કે, અથવા માહન કે દ્વિસાદિ ક્રિયા
સે નિરસ્ત હુવે કે-અતિશેષ છદ્ધસ્ય કે જ્ઞાનોં કો અતિક્રમ કરને વાછે
એસે જ્ઞાનદર્શન-સમાવના સે પરમાવધિરૂપ જ્ઞાન દર્શન ઉત્પન્ન હોતે
હું તય વહ ઉનકે જ્ઞાનાદિકોં કે ઉત્પાદ કે પ્રથમ સમય મેં ઊર્ધ્વલોક કા
ઊર્ધ્વલોક ગતપદાર્થોં કા પરિચ્છેદ કરતા હૈ વાદ મેં તિર્યગ્લોકગતપદાર્થોં
કા પરિચ્છેદ કરતા હૈ વાદ મેં અધોલોકગતપદાર્થોં કા પરિચ્છેદ (નિગમ)
કરતા હૈ હૈ અમણાયુગમન? અધોલોક કુરભિગમ કહા ગયા હૈ । “જ્ઞાનવ

કથન અનુસાર જે ધાતુ અત્યલક હોય છે તે જ્ઞાનાર્થક પણ હોય છે તેથી
‘ વિષયક (વિપરીતતા) અને સશય હોયથી સ્થિત એવું જે જ્ઞાન મર્યાદા
બુદ્ધાદ ધાય છે તેને અભિસમાગમ કહે છે ” આ પ્રકારનો તેનો અર્થ હકિત
ધાય છે આ અભિસમાગમના ત્રણ પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) ઊર્ધ્વાભિસમાગમ,
(૨) અધોઽભિસમાગમ અને (૩) તિર્યગભિસમાગમ ત્યારે તથાઈપ (વિશિષ્ટ
પ્રકારના) કોઈ અમણને અથવા મહનને-દ્વિસાદિ ક્રિયાથી નિરાત થયેલા
અમણ કે મહનને અતિશેષ-છદ્ધસ્યના જ્ઞાનોને અતિક્રમ કરનાર એવું જ્ઞાનદર્શન
સમાવનાની અપેક્ષાએ પરમાવધિરૂપ જ્ઞાનદર્શન ઉત્પત્ત ધાય છે, ત્યારે તે
તેમના (જ્ઞાનાદિકના) ઉત્પદના પ્રથમ સમયમાં ઊર્ધ્વલોક ગત પદાર્થોનો
પરિચ્છેદ કરે છે ત્યારબાદ તિર્યગ્લોક ગત પદાર્થોનો પરિચ્છેદ કરે છે અને
ત્યારબાદ અધોલોક ગત પદાર્થોનો પરિચ્છેદ કરે છે ” હે અમણાયુગમન !

સ્વલ્લુ દુરભિગમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, एवं च सामर्थ्यात्प्राप्तं क्रमेण पर्यन्ताभिगम्यत्वात्,
हे श्रमणायुष्मन् ! शिष्यामन्त्रणमेतदिति ॥ सू० ८० ॥

પૂર્વમભિસમાગમઃ પ્રોક્તઃ, સ ચ જ્ઞાનમેવ જ્ઞાનં ચ ઋદ્ધિરૂપમિતિ સમેદામ્
ઋદ્ધિં પ્રરૂપયન્ સસમૂત્રીમાહ—

મૂલમ્—તિવિહા ઇહી પપ્પણત્તા, તં જહા-દેવહી રાયહી
ગણિહી । ૧ । દેવિહી તિવિહા પપ્પણત્તા, તં જહા-વિમાણિહી
વિઝ્ઞણિહી પરિયારણિહી । ૨ । અહવા દેવિહી તિવિહા પપ્પણત્તા,
તં જહા-સચિત્તા અચિત્તા મીસિયા । ૩ । રાહ્વહી તિવિહા પપ્પણત્તા,
તં જહા-રત્તો અહ્યાણિહી, રત્તો નિઝ્જાણિહી, રણ્ણો વલવાહ-
ણકોસકોટ્ઠાગારિહી । ૪ । અહવા રાહ્વહી તિવિહા પપ્પણત્તા, તં
જહા-સચિત્તા અચિત્તા મીસિયા । ૫ । ગણિહી તિવિહા પપ્પણત્તા,
તં જહા-ગાણહી દંસણિહી ચરિત્તિહી । ૬ । અહવા ગણિહી
તિવિહા પપ્પણત્તા, તં જહા-સચિત્તા અચિત્તા મીસિયા ॥ ૭ ॥ સૂ ૦ ૮૧ ॥

ર્શન"પદ સે યહાં કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શન ઇન દો કા ગ્રહણ નહીં હુવા હૈ,
કયોં કિ—"તત્પ્રથમતાયાં" ઇત્યાદિરૂપ જો કથન હૈ ઉસસે યહી સિદ્ધ
હોતા હૈ કિ કેવલજ્ઞાન તથા કેવલદર્શન કે હોને પર આત્મા મેં ઇસ
પ્રકાર સે ઉપયોગ ક્રમતા નહીં હોતી હૈ કિ પહેલે વહ ઉર્ધ્વલોક કે
પદાર્થોં કો જાને-બાદ મેં તિર્યગ્લોક કે પદાર્થોં કો જાને ઓર ફિર બાદ
મેં અધોલોકગત પદાર્થોં કો જાને, કારણ કિ ઉનસે યુગપત્ ત્રિકાલગત
ત્રીન લોકગત પદાર્થોં કા ઘોષ હોતા હૈ ॥ સૂ ૮૦ ॥

અધોલોક દુરભિગમ કહેલ છે " 'જ્ઞાનદર્શન' પદથી અહીં કેવળજ્ઞાન અને
કેવળદર્શન અહુણ કરાયેલ નથી, કારણ કે "તત્પ્રથમતાયાં" ઇત્યાદિ—
૩૫ જે કથન છે તેના દ્વારા એજ સિદ્ધ થાય છે કે કેવળજ્ઞાન અને
કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થાય ત્યારે આત્મામાં આ પ્રકારે ઉપયોગક્રમતા હોતી નથી.
એટલે કે પહેલાં ઉર્ધ્વલોકના પદાર્થોને જાણે, ત્યારબાદ તિર્યગ્લોકના પદાર્થોને
જાણે અને ત્યારબાદ અધોલોકના પદાર્થોને જાણે, એવું બનતું નથી. પરંતુ
કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન સંપન્ન એવ તો ત્રણે કાળગત અને ત્રણે લોકગત
પદાર્થોને એક સાથે જાણી શકે છે અને કેળી શકે છે. ॥ સૂ. ૮૦ ॥

છાયા—ત્રિવિધા શ્રદ્ધિઃ પ્રજ્ઞા, તથા—દેવદિઃ, રાજદિઃ, ગણિશ્રદ્ધિઃ । ૧ । દેવદિઃત્રિવિધા પ્રજ્ઞા, તથા—વિમાનદિઃ, વિકુર્બણદિઃ, પરિચારણદિઃ । ૨ । અથવા દેવદિઃત્રિવિધા પ્રજ્ઞા, તથા—સચિત્તા, અચિત્તા મિશ્રિતા । ૩ । રાજદિઃત્રિવિધા પ્રજ્ઞા, તથા—રાજોઽવિધાનદિઃ, રાજો નિર્ધાનદિઃ, રાજો વહનકોપકોષ્ઠાગારદિઃ । ૪ । અથવા રાજદિઃત્રિવિધા પ્રજ્ઞા—તથા—સચિત્તા અચિત્તા મિશ્રિતા । ૫ । ગણિશ્રદ્ધિત્રિવિધા પ્રજ્ઞા, તથા—જ્ઞાનદિઃ, દર્શનદિઃ, ચારિત્રદિઃ । ૬ । અથવા ગણિશ્રદ્ધિત્રિવિધા પ્રજ્ઞા, તથા — સચિત્તા, અચિત્તા મિશ્રિતા । ૭ । સુ. ૮૧ ॥

इस प्रकारसे अभिसमागमके सम्पन्नमें कथन किया यह अभि समागम ज्ञानरूप ही होता है, और ज्ञान श्रद्धिरूप होता है, अतः भव सूत्रकार समेद श्रद्धि की प्ररूपणा सात सूत्रों द्वारा करते हैं “ त्रिविधा इष्टी पण्णत्ता ” इत्यादि ।

सूत्रार्थ — श्रद्धि तीन प्रकार की कही गई है जैसे—देवद्वि राजद्वि और गणिश्रद्धि, इनमें भी जो देवद्वि है वह भी तीन प्रकार की कही गई है, जैसे—विमानद्वि विकुर्बणद्वि, और परिचारणद्वि, अथवा—इस तरहसे भी देवश्रद्धि के तीन भेद है, सचिन्त-अचिन्त और मिश्रित ३ राजद्वि के भी तीन भेद कहे गये हैं, जैसे—राजा की अति घानद्वि राजा की निर्धानद्वि, राजा की वलघाहन कोप कोष्ठागारद्वि ४ अथवा इस प्रकारसे राजद्वि के तीन भेद कहे गये हैं, जैसे—सचिन्त अचिन्त और मिश्रित ५ गणिश्रद्धि भी तीन प्रकार की कही गई है, जैसे ज्ञानद्वि दर्शनद्वि और चारित्रद्वि ६ अथवा इस प्रकारसे भी

આ પ્રમાણે અભિસમાગમનું નિરૂપણ થયું તે અભિસમાગમ જ્ઞાન રૂપ હોય છે અને જ્ઞાન શ્રદ્ધિરૂપ હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર સાત સૂત્રો દ્વારા શ્રદ્ધિના ભેદોની પ્રરૂપણા કરે છે “ ત્રિવિધા ઇષ્ટી પણ્ણત્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—શ્રદ્ધિ ત્રણ પ્રકારની હોય છે—(૧) દેવદિ, રાજદિ અને (૩) ગણિશ્રદ્ધિ તેમાંની જે દેવદિ છે તેના નીચે પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર પડે છે—(૧) વિમાનપ્રશ્રદ્ધિ, (૨) વિકુર્બણ શ્રદ્ધિ અને (૩) પરિચારણ શ્રદ્ધિ

દેવદિના આ પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) સચિત્તા, (૨) અચિત્તા અને (૩) મિશ્રિત.

રાજદિના પણ નીચે પ્રમાણે ત્રણ ભેદ કહ્યા છે—(૧) રાજાની અતિવાતદિ (૨) રાજાની નિર્ધાનદિ (૩) રાજાની વલઘાહન કોષ્ઠાગારદિ અથવા રાજદિના નીચે પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) સચિત્તા, (૨) અચિત્તા અને (૩) મિશ્રિત

ટીકા—‘તિવિદા ઇહી’ ઇત્યાદિ । ઋદ્ધિઃ—એશ્વર્યમ્, સા ત્રિવિદા તથાહિ—
 દેવસ્ય—ઇન્દ્રાદિઃ ઋદ્ધિઃ—એશ્વર્યમ્ દેવર્દ્ધિઃ, રાજઃ—ચક્રવર્ત્યાદિ ઋદ્ધિઃ રાજર્દ્ધિઃ,
 ગણિનઃ—ગણાધિપતેરાચાર્યસ્ય ઋદ્ધિઃ—ગણિઋદ્ધિઃ । ૧। તત્ર દેવર્દ્ધિસ્ત્રિવિદા,
 તથાહિ—વિમાનાનાં વિમાનવિષયા વા ઋદ્ધિઃ—સમૃદ્ધિઃ વિમાનર્દ્ધિઃ । સા ચ દ્વાત્રિ-
 શલ્લક્ષાદિસંખ્યારૂપા, વાહુલ્ય—મહત્ત્વરત્નાદિરમણીયત્વરૂપા વા । સૌધર્માદિ
 દેવલોકેષુ વિમાનસંખ્યા યથા—સૌધર્મદેવલોકે દ્વાત્રિશલ્લક્ષાણિ વિમાનાનિ ૧,
 ઈશાનેષ્ટાત્રિશતિલક્ષાણિ ૨, સનત્કુમારે દ્વાદશલક્ષાણિ ૩, માહેન્દ્રેષ્ટલક્ષાણિ ૪,

ગણિઋદ્ધિ કે ત્રીન ભેદ કહે ગયે હૈં, જૈસે—સચિત અચિત્ત ઓર મિશ્રિત

ટીકાર્થ—૭ इस सूत्रोंका भावार्थ इस प्रकारसे है ऐश्वर्यका नाम ऋद्धि है
 यह जो तीन प्रकारकी कही गई है, देवर्द्धि आदिके भेदसे—सो देव इन्द्र
 आदि की जो ऐश्वर्यरूप ऋद्धि है वह देवर्द्धि है, तथा—चक्रवर्ती आदि
 राजाओं की जो ऋद्धि है वह राजर्द्धि है, तथा गणी, गणाधिपति आचार्य
 की जो ऋद्धि है वह गणिऋद्धि १ इनमें जो देवर्द्धि है वह तीन प्रकार
 की जो कही गई है, उसमें जो विमानों की ऋद्धि है, अथवा विमान
 विषयक ऋद्धि है समृद्धि है वह विमानर्द्धि है यह विमानर्द्धि ३२ लाख
 की संख्यादि रूप होती है अथवा बाहुल्यरूप महत्त्वरूप या रत्नादिकों
 की रमणीयतारूप होती है सौधर्मादि देवलोकों में विमान संख्या इस
 प्रकार से प्रकट की गई है, सौधर्म देवलोक में ३२, लाख, ईशान देव-

ગણિઋદ્ધિ પણ ત્રણ પ્રકારની કહી છે—(૧) રાજર્દ્ધિ, (૨) દર્શનર્દ્ધિ અને
 (૩) ચારિત્રર્દ્ધિ અથવા ગણિઋદ્ધિના આ પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર પણ પડે છે—
 (૧) સચિત્ત, (૨) અચિત્ત અને (૩) મિશ્રિત

ટીકાર્થ—હવે આ સાત સૂત્રોનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—ઐશ્વર્યનું નામ
 ઋદ્ધિ છે. તેના દેવર્દ્ધિ આદિ ત્રણ ભેદ કહ્યા છે. ઇન્દ્ર આદિના ઐશ્વર્યરૂપ જે
 ઋદ્ધિ હોય છે તેને દેવર્દ્ધિ કહે છે ચક્રવર્તી આદિ રાજાઓની જે ઋદ્ધિ હોય
 છે તેને રાજર્દ્ધિ કહે છે, તથા ગણીગણાધિપતિ—આચાર્યની જે ઋદ્ધિ હોય
 છે તેને ગણિઋદ્ધિ કહે છે.

હવે દેવર્દ્ધિના ત્રણ પ્રકારોનું વિવેચન કરવામાં આવે છે—ઇન્દ્રાદિ દેવોની
 વિમાનોની જે ઋદ્ધિ છે, અથવા વિમાન વિષયક જે સમૃદ્ધિ છે, તેને વિમાનર્દ્ધિ
 કહે છે તે વિમાનર્દ્ધિ ૩૨ લાખની સખ્યાદિરૂપ હોય છે, અથવા બાહુલ્યરૂપ,
 મહત્ત્વરૂપ કે રત્નાદિકોની રમણીયતા રૂપ હોય છે સૌધર્મ આદિ દેવલોકમાં
 વિમાનોની સખ્યા આ પ્રમાણે કહી છે—સૌધર્મ દેવલોકમાં ૩૨ લાખ, ઈશાન
 દેવલોકમાં ૨૮ લાખ, સનત્કુમાર દેવલોકમાં ૧૦ લાખ, માહેન્દ્ર દેવલોકમાં ૮

બ્રહ્મલોકે ૫ પત્થારિ સ્થાપિ વિમાનાનિ સન્તિ ૫, એવાન્તકે પચાશ્તસ્રસાપિ ૫, શુક્રે પત્થારિશ્વસ્રસ્રસાપિ, ૭ સહસ્રારે ૫૬ સહસ્રાપિ-વિમાનાનિ સન્તિ ૮। આનમાનતપાર્દેશલોકયોઃ મત્યેકં પત્થારિ પત્થારિ સ્થાપિ ૯-૧૦, આરમાપ્યુ તયોસ્ત્રીણિ સ્થાપિ વિમાનાનાં વિષત્તે ૧૧-૧૨। નભઃપ્રેવેયકેષ્વપસ્તને એકાસ્રલો ચર સ્થતમેક, મત્યમે સસોત્તરં સ્થતમ્, ઉપરિતને ચૈક સ્થતં વિમાનાનામસ્તિ ૧૩। પચ પાનુચરવિમાનાનિ સન્તિ ૧૪। સ્થેયે સર્વાણિ ચતુરસ્રીવિજ્ઞાપિ સપ્તનવતિ સહસ્રાપિ ત્રયોવિંશત્યપિઠસસ્રસ્રવાનિ ચ વિમાનાનિ મયન્તીતિ ।

ઉક્તચ—“ વર્ષોસ મદ્ધવીસા, ચારસ ચ્હ વડરો સપસહસ્તા ।

આરણ્ય મલોગા, વિમાણસલા મવે એસા ॥૧॥

પંચાસ વચ છપ્પેવ સહસ્તા છત્તમુક સહસ્તારે ।

સપચડરો આણવ પાવણસુ તિન્નારણ્યસુ ॥૨॥

એકારસુચરદેદિમેસુ સપુચર ચ મશ્ચિમય ।

સપમેસા ઉપરિમય પપેવ મપુચરવિમાયા ॥૩॥ ઇતિ ।

લોક મેં ૨૮ લાલ્, સનસ્કુમાર દેવલોક મેં ૧૨ લાલ્, મહેન્દ્ર દેવલોક મેં ૮ લાલ્, બ્રહ્મલોકદેવલોક મેં ૪ લાલ્, સાન્તકદેવલોક મેં ૫૦ હજાર, શુકદેવલોક મેં ૪૦ હજાર, સહસ્રાર દેવલોક મેં ૬ હજાર, ઔર આનત પ્રાગત દેવલોક મેં ૪-૪ સૌ, તથા આરણ્ય ઔર અપ્યુત મેં ૩૦૦ ત્રીન સૌ વિમાન હૈ, નવ પ્રેવેયકો મેં અપસ્તન મેં ૧૧૧ વિમાન હૈ, મત્યમ પ્રેવેયક મેં ૧૦૭ ઔર ઉપરિતન પ્રેવેયક મેં ૧૦૦ વિમાન હૈ, તથા પાંચ અનુસરો મેં ૫ અનુસર વિમાન હૈ, હસ તરહ વિમાનો કી કુલ સમયા ૮૪ લાલ્ ૯૭ વે હજાર ૭ સૌ ૨૧ હોતી હૈ। કહા મી હૈ—“ વર્ષોસ મદ્ધ વીસા ” ઇત્યાદિ, । દેવદિ” પદ મનન ઔર નગરોં કા ઉપલક્ષણ હૈ, અર્થાત્—હસ પદ સે મનન એક નગરસ્વ કદિ કા મી મદ્ધન દુવા હૈ।

લાલ્, બ્રહ્મલોક દેવલોકમાં ૪ લાલ્, લા ૧૩ દેવલોકમાં ૫૦ હજાર, શુક દેવલોકમાં ૪૦ હજાર, સહસ્રાર દેવલોકમાં ૬ હજાર, આનત-પ્રાગત દેવલોકમાં ૪૦૦-૪૦૦ તથા આરણ્ય અને અપ્યુતમાં ૩૦૦-૩૦૦ વિમાન છે નવ પ્રેવેયકોના અપસ્તરમાં ૧૧૧, અપસ્તરમાં ૧૦૭ અને ઉપરિતન પ્રેવેયકોમાં ૧૦૦ વિમાન છે તથા પાંચ અનુસરોમાં પાંચ અનુસર વિમાનો છે આ રીતે વિમાનોની કુલ સંખ્યા ૮૪૬૭૩૨૩ (આઠાસી લાલ્, સત્તણ્ણ હજાર આતસે તેવીસ) થાય છે કશું પણ છે કે—“ વર્ષોસ મદ્ધવીસા ” ઇત્યાદિ. દેવદિ પદ મનન અને નગરોંનું પણ ઉપલક્ષણ છે એટલે કે આ પદના પ્રયોગ દ્વારા સવન અને નવરૂપ કદિને પણ મદ્ધન કરવી એકાંતે.

છાયા—દ્વાત્રિશદષ્ટાવિંશતિદ્વાદશાષ્ટ ચ ચત્વારિ શતસહસ્રાણિ ।

આરાદ્ બ્રહ્મલોકાદ્ વિમાનસંખ્યૈવા ભવેત્ ॥૧॥

પञ્ચાશચત્વારિંશત્ પદ્ ચૈવ સહસ્રાણિ લાન્તકશુક્રસહસ્રારેપુ ।

ચત્વારિ શતાન્યાનતપ્રાણતયો સ્ત્રીખ્યારણાવ્યુતયોઃ ॥૨॥

एकादशोत्तरमधस्तने, सप्तोत्तरं च मध्यमके ।

शतमेऽमुपरितने पञ्चैवानुत्तरविमानानि ॥૩॥

उपलक्षणं चैतद् भवननगराणामिति । विकुर्वणर्द्धिः—विकुर्वणलक्षणा ऋद्धिः ।
अस्या ऋद्ध्याः प्रभावेण देवो वैक्रियशरीरैर्जम्बूद्वीपद्वयम् असंख्यातान् वा द्वीप-
समुद्रान् पूरयति, उक्तं च व्याख्याप्रज्ञप्त्याम् —

“ चमरे णં भંते ! કે મહિદ્દિ૆ જાવ કેવહ યં ચ ણં પમ્મૂ વિઝવ્વિત્ત૆ ? ગોયમા !
ચમરેણં જાવ પમ્મૂળં કેવલકપ્પં જંબુદ્વીવં દીવં વહ્હિં અસુરકુમારેહિં દેવેહિ ય દેવો-
હિય આહન્નં જાવ કરેત્ત૆, અદુત્તરં ચ ણં ગોયમા । પમ્મૂ ચમરે જાવ તિરિયમસં-
સેજ્જે દીવસમુદ્દે વહ્હિં અસુરકુમારેહિં આહન્ને જાવ કરિત્ત૆, એસ ણં ગોયમા ।
ચમરસસ દેવિંદસસ દેવરાયસસ અયમેયારુવે વિસયમેત્તે બુદ્ધે, નો ચેવ ણં સંપત્તી૆
વિઝવ્વિસુ ૩ । एवं सक्केऽपि दो केवलकप्पे जंबुदावे दीवे जाव आहन्ने
करेज्जा । ” इति ।

વિકુર્વણારૂપ જો ઋદ્ધિ હૈ વહ વિકુર્વણર્દ્ધિ, હસ ઋદ્ધિ કે પ્રભાવ સે દેવ
દો જમ્બૂદ્વીપોંકો અથવા અસંખ્યાત દ્વીપસમુદ્રોંકો ભર સકતાહૈ, અર્થાત્—
વ્યાપ્ત કર સકતા હૈ, વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞસિ (ભગવતી, મેં) એસા હી કહા ગયા હૈ
—“ ચરમે ણં ભંતે ! મહિદ્દિ૆ જાવ કેવહ યં ચ ણં પમ્મૂ વિઝવ્વિત્ત૆ ૩
ગોયમા ! ચમરેણં જાવ પમ્મૂ ણં કેવલકપ્પં જંબુદ્વીવં દીવં વહ્હિં અસુર-
કુમારેહિં દેવેહિય દેવોહિય આહન્નં જાવ કરે ત્તહ અદુત્તરં ચ ણં ગોયમા ।
પમ્મૂ ચમરે જાવ તિરિયમસંસેજ્જે દીવ સમુદ્દે વહ્હિં અસુરકુમારેહિં
આહન્ને જાવ કરિત્ત૆ એસ ણં ગોયમા ! ચમરસસ ૩ અયમેયારુવે વિસય-
મેત્તે બુદ્ધે, નો ચેવ ણં સંપત્તી૆ વિઝવ્વિસુ ૩ । एवं सक्के वि दो केवल

વિકુર્વણા ૩૫ જે ઋદ્ધિ છે તેને વિકુર્વણર્દ્ધિ કહે છે. આ ઋદ્ધિના
પ્રભાવથી દેવ એ જ ખૂદ્દીપોને અથવા અસંખ્યાત દ્વીપ સમુદ્રોને વ્યાપ્ત કરી શકે
છે. વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞસિ (ભગવતી) માં આ વિષયને અનુલક્ષીને એવું કહ્યું છે કે—

“ ચમરેણં ભંતે ! મહિદ્દિ૆ જાવ કેવહ યં ચ ણં પમ્મૂ વિઝવ્વિત્ત૆ ?
ગોયમા ! ચમરે ણં જાવ પમ્મૂળં કેવલકપ્પં જંબુદ્વીવં દીવં વહ્હિં અસુરકુમારેહિં
દેવેહિ ય દેવોહિય આહન્નં જાવ કરેત્તહ અદુત્તરં ચ ણં ગોયમા । પમ્મૂ ચમરે જાવ તિરિયમ-
સંસેજ્જે દીવસમુદ્દે વહ્હિં અસુર — વ કરિત્ત૆ । એસ ણં ગોયમા !

छाया—चमर खलु मयन्त । विषमहर्दिको यावत् क्रियन् च खलु मयः
चिकुरिन्मु ? गौतम । चमर खलु यावत् मयः खलु केवलकल्पं जम्बूद्वीपं द्वीप
बहुमिरसुरकुमारैर्देवैश्च देवीमित्राकीर्णं यावत् कर्तुम्, अथोपर च खलु गौतम ।
मयममरो यावत् विषमसल्लयेयान् द्वीपसमुद्रान् बहुमिरसुरकुमारैराकीर्णान् यावत्
कर्तुम् । एष खलु गौतम । चमरस्य देवेन्द्रस्य देयरामस्य अयमेतद्रूपो विषयमात्र
उक्तः, नो चैव खलु संपत्त्या व्यकार्योत्, चिकुर्यति, चिकुरिन्प्यति । एष श्रुकोऽपि
हो केवलकल्पी जम्बूद्वीपी द्वीपो आकीर्णो यावत् कुर्यात् ॥

परिवारगर्दि, परिवारणा-कामसेवा, तद्विषया श्रद्धाः परिवारगर्दिः एत
दर्दिमान् द्वोऽन्याम् देवान्, अन्यसत्का देवीः, स्वकीया देवी, अमियुज्याऽऽ
त्मानं च चिकुरित्वा परिवारयतीत्येवकपेति । २। अपवा-प्रकारान्तरेण देवर्दि,
सचिवाचिचमिभित्तमेदाभिषिपा । तस्य सचिवा-स्वशरीररूपा, स्वपरिवारमृताप्र
महिष्यादि सचेतनवस्तुरूपा सपत्, अचिवा-ब्रह्माभरणादिरूपा मिश्रिता-ब्रह्मा

कल्पे जम्बूद्वीपे जाय आहन्ते करेऽजा ” इति, परिवारणा का अर्थ विषय
सेवन है इस विषयवाली जो श्रद्धा है वह परिवारणार्दि । इस श्रद्धावाला
देव अ-यद्वों को, अ-यद्वों की देवियों को अपनी देवियों को पकड़
कर मलात् ग्रहण कर और स्वयं चिकुर्यणा कर उनके साथ कामसेवा
करता है इस प्रकार की यह परिवारणार्दि होती है अपवा-सचिवा
अचिवा और मिश्रित के भेद से देवर्दि तीन प्रकार की होती है । इनमें
अपने शरीररूप तथा-स्वपरिवारमृत जो अग्रमहिषी आदि सचेतन
वस्तु रूप सपत् है वह सप्त सम्पत्ति सचिवा देवर्दि है । ब्रह्माभरणादिरूप जो

चमराय देवर्दि-देवरामस्य अयमेतद्रूपो नो चैव न सचिवा विद
मिह । एष सक्के वि हो केवलकल्पे जम्बूद्वीपे जाय आहन्ते करेऽजा ” इत्यादि—

आ सूत्रपाठ द्वाया चमरेन्द्र, शक्र आदिनी पूष क्षिति चिकुर्यत्वा शक्रियु च
समर्थेन हरवामा आभ्यु छे

परिवारणा श्रद्धा-परिवारणा जोरसे विषय सेवन. आ विषयवाणी ने
श्रद्धा छे तेने परिवारणार्दि कहे छे आ श्रद्धावाला देव अन्य देवोंने, अन्य
देवानी देवीजोने अने पातानी देवीजोने पकड़ीने पकड़ीने, जलजलरीभी पकड़ी
तानीने अने पाते चिकुर्यणा करीने तेमनी साथे विषयसेवन करे छे

देवर्दिना सचिवा, अचिवा अने मिश्रित जेवा वस्तु जोड़ वस्तु कथा छे
कवे आ वस्तु सेवानु तिहवस्तु हरवामा आवे छे-शरीररूप, स्वपरिवारमृत
अग्रमहिषीजो आदि सचेतन वस्तु रूप ने सपत्ति छे ते सपत्तिने सचिवा
देवर्दि कहे छे

ભરણાદિ સમલકૃતદેવ્યાદિરૂપા ।૩। અથ દેવદ્વિવર્ણનાનન્તરં રાજદ્વિમાહ-
' રાહ્ણી ' ઇત્યાદિ, રાજદ્વિત્ત્રિવિધા પ્રજ્ઞતા, તદ્યથા-રાજઃ અતિયાનદ્વિઃ અતિ-
યાનં-નગરપ્રવેશઃ, તત્ર ઋદ્ધિઃ-નગરશોભાજનકતોરણદ્વસમલંકરણજનસંમર્દાદિ-
રૂપા । રાજો નિર્યાણદ્વિઃ, નિર્યાણં-નગરાશ્રિર્ગમનં, તત્ર ઋદ્ધિઃ-હસ્ત્યશ્વસામન્ત-
પરિવારાદિરૂપા । રાજો વલવાહનકોશકોષ્ઠાગારદ્વિઃ, તત્ર-વલં-ચતુરઙ્ગસૈન્યરૂપં,

દેવદ્વિઃ' હૈ વહ અચેતન દેવદ્વિઃ' હૈ, તથા-વસ્ત્રભરણાદિ સે સમલંકૃત જો
દેવી આદિરૂપ દેવદ્વિઃ' હૈ વહ મિશ્રિત દેવદ્વિઃ' હૈ ૩ । "રાહ્ણી" ઇત્યાદિ
રાજા કી અતિયાનદ્વિઃ' આદિ કે ભેદ સે રાજદ્વિઃ' ત્રીન પ્રકાર કી જો
કહી ગઈ હૈ સો ડસકા અભિપ્રાય ઇસા હૈ-અતિયાન નામ રાજા કે
નગર મેં પ્રવેશ કરને કા હૈ ઇસ સમય જો ડસકી શોભા કરને કે લિયે
ડસમેં તોરણ બનાયે જાતે હૈ, છોટી તોરણ ધ્વજાઈ લટકાઈ જાતી હૈ,
દૂસરોં કો વિવિધ ડપકરણોં સે સજ્જિત કિયા જાતા હૈ, બાજાર કો
સુશોભિત હો જાતા હૈ, મનુષ્યોં કી મેદિની ઇકત્રિત હો જાતી હૈ સો યહ
સબ રાજા કી અતિયાનદ્વિઃ' હૈ । રાજા કા નગર સે નિકલના ઇસકા નામ
રાજા કી નિર્યાણદ્વિઃ' હૈ જબ રાજા નગર સે ઘાહર નિકલતા હૈ તબ જો
ડસકે સાથ હસ્તિ-અશ્વ સામન્ત ઇત્યાદિકોં કા પરિવાર હોતા હૈ વહ
સબ નિર્યાણદ્વિઃ' હૈ । તૃતીયઋદ્ધિ જો રાજા કી વલ વાહન આદિરૂપ કહી

વસ્ત્ર, આભૂષણુ આદિ રૂપ જે દેવઋદ્ધિ છે તેને અચેતન દેવદ્વિઃ' કહે છે.
વસ્ત્રાભરણુ આદિથી વિભૂષિત દેવી આદિ રૂપ જે દેવદ્વિઃ' છે, તેને મિશ્રિત
દેવદ્વિઃ' કહે છે " રાહ્ણી " ઇત્યાદિ—

હવે રાજાની ત્રણ પ્રકારની ઋદ્ધિનુ નિરૂપણ કરવામાં આવે છે—
પહેલો પ્રકાર અતિયાનદ્વિઃ' છે રાજાના નગરપ્રવેશનું નામ અતિયાન છે. તે
વખતે નગરની શોભા વધારવા માટે તેમાં તોરણો લટકાવવામાં આવે છે, ધન્ય
પતાકાઓ વડે રસ્તા શણુગારવામાં આવે છે, બળરોને શણુગારવામાં આવે
છે, રાજસેવકો આદિને વિવિધ ડપકરણોથી સુસજ્જિત કરવામાં આવે છે,
મનુષ્યોની ખાસ્સી લીડ એક ચિત્ત થઈને રાજાના આગમનની પ્રતીક્ષા કરે છે.
આ બધી સામગ્રીને રાજાની અતિયાન ઋદ્ધિરૂપે અહીં પ્રકટ કરવામાં આવેલ
છે (૨) રાજાની નિર્યાણદ્વિઃ' રાજાનુ નગરમાંથી બહાર જે પ્રયાણ થાય છે તેને
' નિર્યાણુ ' કહે છે રાજા બ્યારે નગરની બહાર પ્રયાણ કરે છે, ત્યારે તેની સાથે
જે હાથી, ઘોડા, રથ, પાયદળ સામંતો આદિનો પરિવાર હોય છે તેને જ રાજાની

વાહનાનિ - વેસરાદીનિ, સ્વચ્ચર ઇતિમાપા મસિદ્ધાનિ કોષ્ઠ-માળાગારં,
 કોષ્ઠાગારં - ધાન્યપૃષ્ઠ, તદૂપા ઋદ્ધિર્થા સા ઠપા । ૪ ।
 પ્રકારાન્તરેણ રાજર્દિમાદ - 'અથવા' ઇત્યાદિ, અથવા - પુનરપ્ય
 ન્યપ્રકારેણ રાજર્દિ સ્થિતિપા, સચિત્તાચિત્તમિષ્ટમેદાત્, તત્ર સચિત્તા-સ્વચ્ચર
 પદ્ધતિરૂપા, અચિત્તા પ્રાસાદસ્વતોમરચત્તદ્વયાદિરૂપા, મિશ્રિતા-સામ્યકારાગ્રમદિ
 વ્યાદિરૂપા સમ્યક્સૈવાદિરૂપાવા ૫। ગણિત્તદ્વિસ્થિતિપા, તદેવવર્ણયતિ-જ્ઞાનર્દિઃ-
 વિશિષ્ટપ્રત્યક્ષરૂપા, દર્શનર્દિ - પ્રવચનવિષયે નિર્ગુણકૃત્તાદિત્વરૂપા, પ્રવચનપ્રમાણના
 પ્રતિપાદકસાક્ષસમ્પ્રદૂપા વા, ચારિત્તર્દિઃ-ચારિત્રવિષયકનિરતિચારતારૂપા । ૬।

ગઈદે, સો-ચતુરક્ષ સૈન્યરૂપ, પલ, વેસરાદિરૂપ (સ્વચ્ચર) વાહન માળાદિ
 રૂપકોષ્ઠ ઔર ધાન્યાગારરૂપ કોષ્ઠાગાર યે સપ્ત ઇસ ઋદ્ધિ મેં ગૃહીત હુવેદે ।
 પ્રકારાન્તર સે મી રાજર્દિ ત્રીન પ્રકાર કી હોતી હૈ વે ઇસકે પ્રકારાન્તર
 સચિત્ત, અચિત્ત, ઔર મિશ્રિત હૈ, ઇસિ અર્થ ઔર પદ્ધતિ યે સપ્ત
 સચિત્ત રાજર્દિ મેં પરિણત હુવે હૈ, પ્રાસાદ સ્વક્ષ તોમર-ચત્તદ્વય આદિ
 અક્ષ અચિત્ત રાજર્દિ મેં પરિણત હુવે હૈ, તથા અલ્પકારો સે વિમૂચિત
 પદ્ધતિનિર્ણય વગેરહ, અથવા-સમ્યક્ સૈન્ય વગેરહ યે સપ્ત મિશ્રિત રાજર્દિ
 મેં પરિગણિત હુવે હૈ । જ્ઞાનર્દિ આદિ ક મેવ સે જો ગણિત્તદ્વિ કે મેવ
 કહે ગયે હૈ ઇસકા વાત્પર્ય એસા હૈ કિ વિશિષ્ટ પ્રત્યક્ષ જ્ઞાનર્દિ હૈ ।
 પ્રવચન કે વિષય મેં નિર્ગુણ કૃત્તાદિ રૂપ હોના યહ દર્શનર્દિ હૈ, અથવા
 -પ્રવચન કી પ્રમાણના પ્રકટ કરને વાલે જો સાક્ષ હૈ ઇનકા સંગ્રહ કરના

નિર્ણયર્દિ કહે છે (૩) રાજાની બલવાહન આદિ રૂપ ઋદ્ધિનું હવે નિરૂપણ
 કરવામા આવે છે-ચતુરક્ષ સૈન્યરૂપ બલ, હાથી ઘોડા, રથ આદિરૂપ વાહન, બાંકાદિ
 (પાત્રાદિ) રૂપ કોષ, ધાન્યાગાર રૂપ ઠેકાદ, ઇત્યાદિ વસ્તુઓને આ પ્રકારની
 ઋદ્ધિમાં ગણાવી શકાય છે

હવે રાજર્દિના જે સચિત્ત અચિત્ત અને મિશ્રિતરૂપ અન્ય ત્રણ પ્રકારો કહ્યા
 છે, તેનું નિરૂપણ કરવામા આવે છે હાથી ઘોડા, પાલકાળા આદિને રાજાની
 સચિત્ત ઋદ્ધિમાં ગણાવી શકાય છે પ્રાસાદ, તલવાર, બાણ બાણુ આદિને
 રાજાની અચિત્ત ઋદ્ધિ કહેવાય છે તથા અલ્પકારોથી વિમૂચિત રાણીઓ, સચાક્ષ
 સૈનિકો વગેરેને રાજાની મિશ્રિત ઋદ્ધિમાં ગણાવી શકાય છે

હવે ગણિત્તદ્વિના જ્ઞાનર્દિ આદિ લેહોને સ્પષ્ટ કરવામા આવે છે-
 વિશિષ્ટ પ્રત્યક્ષ જ્ઞાનર્દિને કહી છે પ્રવચનના વિષયમાં શકા આદિથી રહિત
 હોતું તેનું નામ જ્ઞાનર્દિ છે અથવા પ્રવચનની પ્રમાણના પ્રકટ કરનારા જે
 સાક્ષો છે તેમનું અધ્યયન કરવું-તે સાક્ષાત્સાર પ્રવચનની પ્રમાણના કરવી,

પ્રકારાન્તરેણ ગણિક્ષુદ્ધિત્તિવિધા સચિત્તાદિરૂપા, તથા સચિત્તા - શિષ્યાદિરૂપા, અચિત્તા - વસ્ત્રાદિરૂપા, મિશ્રા - વસ્ત્રાદ્યલ્લક્ષ્યશિષ્યાદિરૂપેતિ । ૭ ।
 એતાશ્ચ વિકુર્વણાદિરૂપા ઋદ્ધયોઽન્યેષામપિ ભવિતુમર્હન્તિ, તથાપિ યદ્ દેવાદીના-
 મેવ ઋદ્ધિત્વેન પ્રોક્તાઃ તાઃ કેવલં દેવાદીનાં વિશેષવત્યો ભવન્તીતિ તેષામેવોક્તા
 ઇતિ । ॥ સૂ ૮૧ ॥

ઋદ્ધૌ સત્યાં ગૌરવં ભવતીતિ ગૌરવભેદાનાહ —

મૂલમ્—તઓ ગારવા પ્રણતા, તં જહા-ઙ્હીગારવે, રસ-
 ગારવે, સાયાગારવે ॥ સૂ ૮૨ ॥

અધ્યયન કરના અનેકે અનુસાર પ્રવચન કી પ્રભાવના કરના, યહ દર્શ-
 નર્દિં હૈ । તથા ચારિત્ર કી આરાધના અતિચાર રહિત કરના યહ
 ચારિત્રર્દિં હૈ, અથવા-સચિત્ત અચિત્ત મિશ્રિત રૂપ સે મી ગણિ ઋદ્ધિ
 ત્રીન પ્રકાર કી જો કહી ગઈ હૈ સો ઉસમેં શિષ્યાદિરૂપ સચિત્ત ગણિ-
 ઋદ્ધિ હૈ । વસ્ત્રાદિરૂપ ધર્મ કે સાધન શૂન વસ્ત્રાદિકોં કા રખના યહ
 અચિત્તગણિઋદ્ધિ હૈ, ઓર વસ્ત્રાદિકોં સે સહિત શિષ્યાદિરૂપ મિશ્રિત
 ગણિઋદ્ધિ હૈ યદ્યપિ યે વિકુર્વણાદિ રૂપ ઋદ્ધિયાં અન્ય કોં મી હો સકતી
 હૈ ફિર મી યહાં જો દેવાદિકોં કો હી ઋદ્ધિમત્ત્વ રૂપ સે કહા ગયા હૈ,
 સો ઉસકા કારણ એસા હૈ કિ યે દેવાદિકોં મેં વિશિષ્ટરૂપ સે હોતી હૈ
 એસી વિશેષણતા લિયે હુવે યે ઋદ્ધિયાં વહાં હોતી હૈ વૈસી અન્યત્ર નહીં
 હોતી હૈ હસલિયે યે ઉનકી હી કહી ગઈ હૈ ॥ સૂ ૮૧ ॥

તેનું નામ દર્શનર્દિં છે. નિરતિચારપૂર્વક ચારિત્રની આરાધના કરવી તેનું નામ
 ચારિત્રર્દિં છે. ગણિક્ષુદ્ધિના સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્રિત, આ ત્રણ પ્રકાર
 પણ કહ્યા છે શિષ્યાદિ રૂપ સચિત્ત ગણિક્ષુદ્ધિ સમજવી, ધર્મના સાધનો રૂપ
 વસ્ત્રાદિકોને અચિત્ત ગણિક્ષુદ્ધિ કહે છે. અને વસ્ત્રાદિ સહિત શિષ્યાદિને
 મિશ્રિત ગણિક્ષુદ્ધિ રૂપ ગ્રહણ કરવા ભેદબે.

જો કે આ વિકુર્વણાદિ રૂપ ઋદ્ધિઓનો અન્ય જગ્યામાં પણ સદ્ભાવ
 હોઈ શકે છે, છતાં પણ અહીં દેવાદિકોને જ ઋદ્ધિસંપન્ન કહ્યા છે તેનું કારણ
 એ છે કે દેવાદિકોમાં તે વિશિષ્ટરૂપે હોય છે જેવી વિશિષ્ટતાપૂર્વક આ
 ઋદ્ધિઓનો દેવાદિકોમાં સદ્ભાવ હોય છે, એવી વિશિષ્ટતા પૂર્વક અન્ય
 જગ્યામાં તેમનો સદ્ભાવ હોતો નથી. તેથી અહીં દેવાદિકોને જ આ ઋદ્ધિઓથી
 સંપન્ન કહ્યા છે. ॥ સૂ. ૮૧ ॥

તિથિહે કરણે પળણતે, ત જહા ધમ્મિય કરણે, અધમ્મિય કરણે, ધમ્મિયાધમ્મિય કરણે ॥ સૂ. ૮૩ ॥

તિથિહે મગવયા ધમ્મે પળણતે, ત જહા-સુમહિજિણ, સુજ્ઞાણ, સુતવસ્સિય । જયા સુમહિજિણ્ય મવહ તયા સુજ્ઞાણ્ય મવહ, જયા સુજ્ઞાણ્ય મવહ તયા સુતવસ્સિય મવહ, તે સુમહિજિણ સુજ્ઞાણ્ય સુતવસ્સિય સુમવસ્સાણ ન મગવયા ધમ્મે પળણતે ॥ સૂ. ૮૪ ॥

છાયા—ધીણિ ગૌરવાણિ પ્રજ્ઞાણિ, તથા—કદ્દિગૌરવ, રસગૌરવ, સાતગૌરવ ॥ સૂ. ૮૨ ॥

ત્રિવિધ કરણં પ્રજ્ઞત, તથા—ધાર્મિક કરણ, અધાર્મિક કરણ, ધાર્મિકાધાર્મિક કરણ ॥ સૂ. ૮૩ ॥

ત્રિવિધો મગવતા ધર્મઃ પ્રજ્ઞત, તથા—સ્વધીતઃ, સુધ્યાતઃ, સુતપસ્વિતઃ । યદા (ભુતં) સ્વધીત મવતિ તદા સુધ્યાત મવતિ, યદા સુધ્યાત મવતિ તદા સુતપસ્વિત મવતિ । સ સ્વધીતઃ સુધ્યાતઃ સુતપસ્વિતઃ સ્વાધ્યાતઃ સ્વહ મગવતા ધર્મઃ પ્રજ્ઞતઃ ॥ સૂ. ૮૪ ॥

ઋદ્ધિ કે હોને પર ગૌરવ હોતા હૈં ફસલિયે સૂચકાર ગૌરવ કે મેદોં કા કપન કરતે હૈં—તમો ગારવા પળગતા—શૂંપાદિ,

સુધાર્ય—ગૌરવ ત્રીન કહે ગયે હૈં જૈસે—ઋદ્ધિગૌરવ, રસગૌરવ, ઓર શાતા ગૌરવ, કરણ ત્રીન કહે ગયે હૈં, જૈસે—ધાર્મિકકરણ, અધાર્મિકકરણ, ઓર ધાર્મિકાધાર્મિકકરણ । મગવાન્ ને ધમ ત્રીન પ્રકાર કા કહા હૈં જૈસે—સ્વધીતધર્મ, સુધ્યાતધર્મ, ઓર સુતપસ્વિતધર્મ ૩ જય બુત સ્વધીત હોતા હૈં તપ યહ સુધ્યાત હોતા હૈં ઓર જય યહ સુધ્યાત હોતા

ઋદ્ધિના સદ્ભાવમાં જ ઓરવનો ઋદ્ધભાવ હોય છે, તેથી હવે સૂત્રાનુ ગોરવનું નિરૂપણ કરે છે—“ તઆ ગારવા પળગતા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાય—ઔરવ ત્રણ પ્રકારનું કહ્યું છે—(૧) ઋદ્ધિ ઔરવ (૨) રસઔરવ, અને (૩) શાતા ઔરવ. કરણ (ક્રિયાનુ સાધન) પણ ત્રણ કહ્યા છે—ધાર્મિક કરણ, અધાર્મિક કરણ અને ધાર્મિકાધાર્મિક કરણ. ભગવાને ધમ ત્રણ પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) સ્વધીત ધમ, (૨) સુધ્યાત ધમ, અને (૩) સુતપસ્વિત ધમ. બ્યારે બુત સ્વધીત હોય છે, ત્યારે તે સુધ્યાત હોય છે, અને બ્યારે તે સુધ્યાત હોય છે, ત્યારે

ટીકા—‘તઓ ગારવા’ ઇત્યાદિ । ત્રીણિ ગૌરવાણિ પ્રજ્ઞમાનિ, ગુરોર્ભાવઃ કર્મવેતિ ગૌરવં, તદ્દ્રવ્યભાવભેદાદ્ દ્વિવિધ, તત્ર દ્રવ્યતો વજ્રાદેર્ગૌરવં, ભાવત આત્મનોઽભિમાનલોભાદિલક્ષણાશુભભાવવત્ત્વં, તત્ર-ગૌરવાણિ ભાવગૌરવાણિ ત્રીણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા-ઋદ્ધિર્ગૌરવં, ઋદ્ધ્યા-નરેન્દ્રાદિ લક્ષણયા આચાર્યત્વાદિ લક્ષણયા વાઽભિમાનાદિદ્વારેણ ગૌરવમ્, ઋદ્ધિપ્રાપ્ત્યભિમાના પ્રાપ્તતત્પ્રાર્થનાદ્વારેણાઽશુભભાવો ભાવગૌરવમિત્યર્થઃ, રસો-રસનેન્દ્રિયાર્થો મધુરાદિઃ, તત્પ્રાપ્ત્યભિમાનાપ્રાપ્તપ્રાર્થનાદિનાઽઽત્મનોઽશુભભાવઃ, એવં સાતગૌરવમિતિ ॥ સૂ૦ ૮૨ ॥

હૈ તવ વહ સુતપસ્યિત હોતા હૈ, વહ સ્વધીત સુધ્યાત ઓર સુતપસ્યિત ધર્મ સમ્યગ્જ્ઞાન ક્રિયારૂપ હોને સે સત્યધર્મ કહા ગયા હૈ, ઓર યહ ધર્મ ભગવાન્ મહાવીર ને કહા હૈ ।

ટીકાર્થ — ગુરુ કા ભાવ, અથવા-કર્મ, ગૌરવ હૈ (અહંકાર) વહ ગૌરવ દ્રવ્ય ઓર ભાવકે ભેદસે દો પ્રકારકા કહા ગયા હૈ વજ્રાદિકોં મેં જો ગુરુના-ભરિપન હૈ વહ દ્રવ્ય ગૌરવ હૈ । તથા-આત્મા મેં અભિમાનરૂપ, લોભાદિકષાયરૂપ, અશુભ ભાવોંસે યુક્તતાહૈ વહ ભાવગૌરવ હૈ । યહ ભાવગૌરવ હી ઋદ્ધિ ગૌરવાદિકે ભેદસે ત્રીન પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, નરેન્દ્રાદિરૂપ અથવા આચાર્યાદિરૂપ ઋદ્ધિ કે પ્રાપ્તિ સે આત્મા મેં જો અભિમાન કી માત્રા આ જાતી હૈ, ઓર હસ અભિમાન કી માત્રા દ્વારા જો અશુભ ભાવ હોતા હૈ, વહ ભાવગૌરવ હૈ તાત્પર્ય યહ હૈ કિ જવ નરેન્દ્રાદિરૂપ, યા આચાર્ય આદિરૂપ વિશિષ્ટપદ જીવ કો પ્રાપ્ત હો જાતા હૈ, તવ ઉસકી પ્રાપ્તિ સે ઉસે એક પ્રકાર કા અહંકાર આદિરૂપ અશુભ ભાવ આ જાતા હૈ ઉસ ભાવ કે આ જાને પર વહ અપ્રાપ્ત વસ્તુ કી ચાહના આદિ કરને લગતા હૈ, સો યહ સવ હસ પ્રકાર કા ભાવ હી ભાવગૌરવ હૈ । ક્યોં કિ-આત્મા મેં હસ પ્રકાર કે અશુભ

તે સુતપસ્યિત હોય છે. તે સ્વધીન, સુધ્યાત અને સુતપસ્યિત ધર્મ સમ્યગ્જ્ઞાન ક્રિયા રૂપ હોવાથી તેને સાચો ધર્મ કહ્યો છે, અને આ ધર્મ ભગવાન મહા વીર કહ્યો છે.

ટીકાર્થ—શુરુનો ભાવ અથવા કર્મ ગૌરવ છે તે ગૌરવ દ્રવ્ય અને ભાવના લેઈથી એ પ્રકારનું કહ્યું છે. વજ્રદિકોભા જે શુરુતા છે, તે દ્રવ્ય ગૌરવ રૂપ છે, તથા આત્મામાં અભિમાનરૂપ, લોભાદિ કષાયરૂપ, અશુભ ભાવોથી યુક્તતા હોવા રૂપ, જે ગૌરવ છે તેને ભાવગૌરવ કહે છે. તે ભાવ ગૌરવને જ ઋદ્ધિ આદિના લેઈથી ત્રણ પ્રકારનું કહ્યું છે નરેન્દ્રાદિ રૂપ અથવા આચાર્યાદિ રૂપ ઋદ્ધિની પ્રાપ્તિ થવાથી આત્મામાં જે અભિમાનની માત્રા આવી નથી છે અને તે અભિમાનની માત્રા દ્વારા જે અશુભ ભાવ પેદા થાય છે તેનું નામ જ ભાવગૌરવ છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે નરેન્દ્રાદિ રૂપ અથવા આચાર્યાદિ

અનન્તર ચારિત્રવિષયા શ્રદ્ધા પ્રોક્તાઃ, ચારિત્ર ચ કરણેન મયતીતિ કરણ મેદાનાહ—‘તિથિદે કરણે’ इत्यादि ।

ક્રિયતે ચરણસ્ય પુષ્ટિરનેતિ કરણમ્—ઉચ્ચારણરૂપમ્, ચદ્વા—કરણં—પિષ્ઠ વિશુદ્ધિપાદિ પદ્યપિ સપ્તસિસરૂપકમ્ । ઉક્તમ્—

“પિષ્ઠવિસોદ્ધી સમિર્ઘ, માધર્મ પદિમા યેન્દ્રિયનિરોધો ।

પદિલેખેણ શુક્તોમો અમિગ્દાલ ચેવ કરણે તુ ॥ ૧ ॥

છાયા—પિષ્ઠવિશુદ્ધિઃ સમિર્ઘ, માધર્મ પ્રતિમા ચેન્દ્રિયનિરોધઃ ।

પદિલેખના શુક્તયઃ અમિગ્દાલચૈવ કરણ તુ ॥ ૧ ॥ इति ॥

આવ સે કર્મય ધજન્યગુસ્તા હી હૈ સ્વગુતા નહીં આતી હૈ, રસનેન્દ્રિય કા જો વિષય હૈ ઘહ રસ હૈ । ઘહ રસ મધુર રસ આદિ કે મેદ્ સે ૫ પ્રકાર કા હોતા હૈ હસ રસ કી પ્રાપ્તિ સે જો આરમા મેં અમિમાન આતા હૈ ઓર ફિર ડસી પ્રકાર કે રસ કો પ્રાપ્ત કરને કી પુનઃ યાહના જગતી હૈ ઘહ યાહનારૂપ અશુભ આવ રસગૌરવ હૈ હસી પ્રકાર કા જ્ઞાતાગૌરવ હૈ, ચારિત્રશ્રદ્ધિ કહી ગઈ હૈ—સો ચારિત્ર કરણ દ્વારા હોતા હૈ હસી યાત કો હેકર સૂત્રકાર ને ચરણ કે મેદોં કા કથન કિયા હૈ—“તિથિદે કરણે” इत्यादि । કરણ કી જિસ સે પુષ્ટિ કી જાતી હૈ ઘહ કારણ હૈ, ઘહ કરણ ઉચ્ચારણરૂપ હોતા હૈ અથવા—પિષ્ઠવિશુદ્ધિ આદિ કા નામ કરણ હૈ, ઘહ વિશુદ્ધિ આદિરૂપ કરણ ૭૦ પ્રકાર કા હૈ । કહા મી હૈ

इय विशुद्ध पानी आदि प्राप्ति भाव उ त्पत्ति तेनी प्राप्तिने हीये लवभां अकक्षर आदि इय अशुभ भावो उत्पन्न याव उ, तं भाव उत्पन्न यधाने हीये ते अप्राप्त वस्तुनी अविज्ञाया करण दागी भाव उ तेन्य आ प्रक्षरना भावने च भावगौरव कहे छे, क्षरण के आत्माभां आ प्रक्षरना अशुभ भाव आत्रायाही कर्मज प्रक्षर्य श्रुत्या च उत्पन्न याव उ—सुपुत्रा उत्पन्न सती नयी । रसनेन्द्रियने के विषय उ तेनुं नाम रस उ ते रस मधुर आदि भांय प्रक्षरना कहे छे आ रसनी प्राप्तिही आत्माभां के अविमान आवे छे, जने जे च प्रक्षरना रस हरी प्राप्त करवाणी के तुम्हा आवे छ ते तुम्हा (आहना) इय अशुभ भावतुं नाम रसगौरव छे, जे च प्रक्षरनुं गानगौरव पंच स्रमवतुं के चारित्रश्रद्धिनी बात करी छ तेनी हवे प्रक्षरणा करवाभां आवे छे—चारित्रक्षरण दास सजवे छे, तेही सूत्रकार हवे क्षरणा खेरेतु कथन कहे छे “तित्थिदे करणे” इत्यादि—

अशुनी केन्य दास पुष्टि कथाव छ ते क्षरण छ ते क्षरण उत्तरशुच इय होय छे अथवा चिह्न विशुद्धि आदितुं नाम क्षरण छ ते विशुद्धि आदि इय

કરણમિત્યનુષ્ઠાન, તત્ત્વ ધાર્મિકાદિ સ્વામિભેદેન ત્રિવિધં, તત્ર ધાર્મિકસ્ય-
સંયતસ્યેદં ધાર્મિકં કરણમનુષ્ઠાનમિતિ, તદ્વિપરીતમધાર્મિકમ્ અસંયતમમ્બન્ધિ
કરણમિતિ, તૃતીયં ધાર્મિકાધાર્મિકં-દેશસંયતસમ્બન્ધિ કરણમિતિ ॥ સૂ. ૮૫ ॥

અનન્તરં ધાર્મિકકરણમુક્તં, તત્ત્વધર્મ એવેતિ ધર્મભેદાનાહ-‘તિવિહે ધમ્મે’
ઇત્યાદિ, ધર્મઃ-શ્રુતચારિત્રરૂપઃ, સ ભગવતા ત્રિવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, ન તુ મયેતિ શ્રી
સુધર્મા સ્વામી જમ્બૂસ્વામિનં પ્રતિ પ્રાહેતિ । તાનેવ દર્શયતિ-સ્વધીતઃ, સુધ્યાતઃ
સુતપસ્યિતઃ । ત્રયાણામપ્યેષામુત્તરોત્તરતોઽવિનાભાવં દર્શયતિ-‘જયા’ ઇત્યાદિ,

“પિંડ વિસોહી સેસઈ” ઇત્યાદિ, આહાર, વસ્ત્ર, પાત્ર વસતિ રૂપ
પિંડ વિશુદ્ધિ ૪ સમિતિ ૫ આવના ૧૨ ઓર ૧૨ પ્રતિમા ઇન્દ્રિયનિ-
રોધકે ૬ ઓર પ્રતિલેખનારૂપ ગુપ્તિ ૩ અભિગ્રહ ૪ કરણ યહ અનુષ્ઠાનરૂપ
હોતાહે યહ ધાર્મિક આદિ સ્વામિ ભેદસે ત્રીન પ્રકારકા હોતાહે । સંયતકા
જો અનુષ્ઠાન હૈ વહ ધાર્મિક કરણ હૈ, તથા અસંયત સમ્બન્ધી જો અનુ-
ષ્ઠાન હૈ વહ અધાર્મિક કરણ હૈ તથા દેશસંયત સમ્બન્ધી જો અનુષ્ઠાન
હૈ વહ ધાર્મિકાધાર્મિક કરણ હૈ । ધાર્મિક કરણ ધર્મરૂપ હી હોતા હૈ
હસ ભાવ કો લેકર હી યહાં સૂત્રકાર ને ધર્મભેદ કહા હૈ-“તિવિહે
ધમ્મે” ઇત્યાદિ, ધર્મ શ્રુતચારિત્ર રૂપ હોતા હૈ ભગવાન્ ને યહ ધર્મ ત્રીન
પ્રકાર કા કહા હૈ, સુધર્માસ્વામી ને એસા યહ જમ્બૂસ્વામી સે કહા હી હૈ
કિ, મૈને એસા હી કહા હૈ કિ ધર્મ ત્રીન પ્રકાર કા હૈ, એસા કથન તો
ભગવાન્ ને ક્રિયા હૈ કિ ધર્મ ત્રીન પ્રકાર કા હોતા હૈ ધર્મ કે વે ત્રીન
પ્રકાર ચે હૈ સ્વધીત, સુધ્યાત, ઓર સુતપસ્યિત ૩ ઇન ત્રીનોં કા સૂત્રકાર

કરણના ૭૦ પ્રકાર છે. કહ્યું પણ છે કે-“પિંડવિસોહી સેસઈ” ઇત્યાદિ-
કરણ અનુષ્ઠાનરૂપ હોય છે, તે ધાર્મિક આદિ સ્વામિભેદની અપેક્ષાએ ત્રણ
પ્રકારનું કહ્યું છે સંયતનું જે અનુષ્ઠાન હોય છે તેને ધાર્મિક કરણ કહે છે,
અસંયતના અનુષ્ઠાનને અધાર્મિક કરણ કહે છે, તથા દેશસંયતના અનુષ્ઠાનને
ધાર્મિકાધાર્મિક કરણ કહે છે. ધાર્મિક કરણ ધર્મરૂપ જ હોય છે, તે ભાવને
અનુલક્ષીને જ સૂત્રકારે અહીં ધર્મભેદનું કથન કર્યું છે-“તિવિહે ધમ્મે” ઇત્યાદિ
ધર્મ શ્રુત ચારિત્રરૂપ હોય છે. ભગવાને આ ધર્મ ત્રણ પ્રકારનો કહ્યો છે-
સુધર્મા સ્વામીએ જ જૂ સ્વામીને એવું કહ્યું છે કે-“ધર્મ ત્રણ પ્રકારના હોય
છે એવું સ્વયં મહાવીર ભગવાને કહ્યું છે-હું ધર્મના જે ત્રણ પ્રકાર કહું છું
તે માફ પોતાનું કથન નથી પણ ભગવાન મહાવીરનું જ કથન છે.”

ધર્મના તે ત્રણ પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે-(૧) સ્વધીત, (૨) સુધ્યાત અને (૩)
સુતપસ્યિત આ ત્રણેનો ઉત્તરોત્તર આવનાભાવી એકવાર બીજાનું નહોતાં પણ સંબંધ

અમ્ર મૃતમિતિગમ્ય તેન યદા મૃત સ્વધીત, મુ-મુષ્ટુ કાલવિનયાધારાધનયાઽધીત
 ગુરુમકાશાત્સૂત્રતઃ પઠિત તથથા, તથા મુધ્યાત્, મુ-મુષ્ટુચિધિના ગુરુસકાશાદેવ
 ધ્યાસ્યાનેનાર્યત મૃત્મા ધ્યાતમ્-અનુપેક્ષિતમ્, અનુપેક્ષણાયા અમાત્રે તથાનમ
 ગમેનાધ્યયનધ્રવણયો માયોઽકૃતાર્યત્વાદિતિ । અનેન મેદદ્રયેન મૃતપર્મો વિનશ્યત
 તથા સુતપસ્થિતં, મુ-મુષ્ટુ શ્લોકાધ્યાસસારશિત્ત્વેન તપસ્થિત-તપસ્યાનુષ્ઠાનમ્ ।
 અનેન ષ ચારિષપર્મઃ મોક્ત ઇતિ । ઇષ યદા મૃત સ્વધીત મવતિ તદા મુધ્યાત
 મવતિ, નિર્દોષાધ્યયન વિના મૃતાર્યામણીયેઃ મુધ્યાતસ્યાઽસક્ત્યાવાત, યદા મુધ્યાત

ઉત્તરોત્તર અધિનામાવ સમ્બન્ધ દિશ્વાને કે નિમિત્ત-“જયા” ઇત્યાદિ,
 સૂત્ર કા કપન કરતે હૈં-વહાં મૃત પેસા પદ લગા હેના ચાહિયે ।
 અતઃ જય મૃત કાલવિનય આદિ કી આરાધના પૂર્યક ગુરુ સે સૂત્ર કે
 રૂપ મેં અધીત હોતા હૈ તય વહ મૃત સ્વધીત કહા જાતા હૈ ઓર જય
 વહ ગુરુ સે ધ્યાસ્યા દ્વારા સાર્યક હુચા સુનકર ધાર ૨ વિચારિત હોતા
 હૈ તય વહ મૃત મુધ્યાત હોતા હૈ । યયોં કિ અનુપેક્ષા ધાર ધાર વિચાર
 કિયે વિના તરણ કા અવગમ નહીં હોતા હૈ इन दो मैदों से मृतपर्म
 विवक्षित हुआ है, और सुतपस्थित पद से चारित्र धर्म कहा गया है ।
 इस लोक आदि की आर्द्धાत्मा से रहित होकर जो तपस्या का अनुष्ठान
 है वह सुतपस्थित है । इस तरह मृत जब स्वधीत होता है तब वह
 मુध्यात होता है, ययों कि-निर्दोष अध्ययन किये बिना जीय को मृतार्थ
 की प्रतीति नहीं होती है उसकी प्रतीति के अभाय में वह मુध्यात नहीं

પત્યાવચ્ચાને માટે સૂત્રકાર “જયા ઇત્યાદિ સૂત્રેણુ કથન કરે છે-ત્વાં “મૃત” હેતુ
 પદ લગાવી હેતુ બેધર્મો. જ્યારે મૃત કાલવિનય આદિની આરાધનાપૂરક ગુરુ
 યાસેથી સૂત્રના રૂપમા અધીત થાય છે ત્યારે તે મૃતને સ્વધીત મૃત કહે છે
 અને જ્યારે ગુરુની સમીપે યાજ્ઞ્યાન દ્વારા સાર્યક શ્રવણ કરીને જ્યારે તેના
 પર વારવાર વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે મૃત મુધ્યાત થાય છે, કારણ
 કે વારવાર વિચાર કર્યા વિના તરવને અવગમ (બોધ) થતો નથી. આ
 બે લોકોની અપેક્ષાએ બંદી મૃતપર્મનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, અને
 ‘મૃતપસ્થિત’ પદથી ચારિત્ર ધર્મનું કથન કરાયું છે. આલોક આદિની આશ્રયા
 (કામના) થી રહિત થઈને જે તપસ્યાનું અનુષ્ઠાન કરવામાં આવે છે તેને
 ‘મૃતપસ્થિત’ કહે છે. આ રીતે મૃત જ્યારે સ્વધીત હોય છે, ત્યારે જ
 મુધ્યાત હોઈ શકે છે. કારણ કે નિર્દોષ અધ્યયન કર્યા વિના જીવને મૃતપર્મની
 પ્રતીતિ થતી નથી, અને તેની પ્રતીતિના અભાવમાં તે મુધ્યાત થઈ શકતું

भवति तदा सुतपस्यितं भवति, तदभावे च ज्ञानविकलतया सुतपस्यितस्याभावा दिति । ' से ' इति सः स्वधीतादित्रयरूपो धर्मः । स्वाख्यातः—सुगृह्यः सम्यग्ज्ञान—क्रियारूपत्वात्, ज्ञानक्रिययोश्चैकान्तिकात्यन्तिकसुखावन्धोपायत्वेन निरुपचारितधर्मत्वात्, प्रज्ञसः—प्ररूपितः, केनेत्याह—भगवता श्रीमहावीरेणेति । सुगतिधारणाद्धि धर्मः, उक्तञ्च—

“ नाणं पयासयं सोढओ तवो संजमो य गुत्तिकरो ।

तिण्हंपि समाओगे, मोक्खो जिणसासणे भणिओ ॥ १ ॥ ”

छाया—ज्ञानं प्रकाशकं शोधकं तपः संयमश्च गुप्तिकरः ।

त्रयाणामपि समायोगे मोक्षो जिनशासने भणितः ॥ १ ॥ इति । सू. ૮૪॥

हो सकता है, जब वह सुध्यात होता है तब वह सुतपस्यित होना है, सुध्यात के अभाव में ज्ञान विकल होने के कारण उसमें सुतपस्यित का अभाव आता है । इस प्रकार स्वधीतादि त्रयरूप धर्म सम्यग्ज्ञान क्रियारूप होने से स्वाख्यात हुवा है अच्छी तरह से कथित हुवा है । अर्थात् ज्ञान एवं क्रिया में ऐकान्तिक एवं आध्यात्मिक सुख का सकल उपाय होने से वह श्रुत चारित्ररूप धर्म निरुपचारित धर्मरूप से वास्तविक सच्चे धर्मरूप से कहा गया है ऐसा कथन भगवान् महावीर ने किया है तात्पर्य इसका ऐसा है कि जीव को जो संसारिक दुःखों से छुड़ाकर सुगति में प्राप्त करा देता है वही सच्चा धर्म है, ऐसा सच्चा धर्म श्रुतचारित्र रूप ही हो सकता है अन्य नहीं । कहा भी है—“ नाणं पयास यं—” इत्यादि, ज्ञान प्रकाशक होता है तप शोधक होता है और संयम

નથી. બ્યારે તે સુધ્યાત થાય છે, ત્યારે જ સુતપસ્યિત પણ થઈ શકે છે. સુધ્યાતના અભાવમાં જ્ઞાનવિકલ હોવાને કારણે તેનામાં સુતપસ્યિતતાનો અભાવ રહે છે આ પ્રકારનો સ્વધીતાદિત્રય રૂપ (સ્વધીત, સુધ્યાત, સુતપસ્યિત) ધર્મ સમ્યગ્જ્ઞાન ક્રિયા રૂપ હોવાથી તેને સાચા ધર્મ રૂપે પ્રતિપાદિત કરવામાં આવ્યો છે. એટલે કે “ જ્ઞાન અને ક્રિયામાં એકાન્તિક અને આધ્યાત્મિક સુખનો સકલ ઉપાય હોવાથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મને નિરુપચરિત ધર્મ રૂપે વાસ્તવિક સાચા ધર્મ રૂપે પ્રતિપાદિત કરાયો છે. ” આ પ્રકારનું કથન મહાવીરે ભગવાને જ કરેલું છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે જીવને જે સાંસારિક દુઃખોમાંથી છોડાવીને સુગતિ પ્રાપ્ત કરાવે છે, એ જ સાચો ધર્મ છે એવો સાચો ધર્મ શ્રુતચારિત્ર રૂપ જ હોઈ શકે છે—અન્ય નહીં. કહ્યું પણ છે કે—

“ નાણં પયાસયં ” ઇત્યાદિ—

પૂર્વં સુતપમ્પિતમિત્યનેન પારિશ્ર પ્રોક્ત, તસ્ય પ્રાણાતિપાતાદિનિવૃત્તિરુપ
મિતિ તસ્યા યેદાનાહ—

મૂલમ્—તિવિહા યાવત્તી પંચણત્તા, ત જહા-જાણ, અજાણૂ,
વિતિગિચ્છા, યવ અજ્ઞોયવજજના પરિયાવજજના ॥ સૂ૦૮૫ ॥

તિવિહે અતે પંચણત્તે, ત જહા-લોયતે, વેયતે, સમયતે સૂ૦૮૬ ॥

તઓ જિણા પંચણત્તા, ત જહા-ઓહિણાણજિણે, મળપ
જ્વણાણજિણે, કેવલણાણજિણે ૧ । તઓ કેવલી પંચણત્તા, તં
જહા-ઓહિણાણકેવલી, મળપજ્વણાણકેવલી, કેવલ્લણાણકે
વલી ૨ । તઓ અરહા પંચણત્તા, ત જહા ઓહિનાણઅરહા, મળ
પજ્વણાણ અરહા, કેવલનાણ અરહા ૩ ॥ સૂ૦ ૮૭ ॥

છાયા-ત્રિવિધા આપૃષિ પ્રકૃતા, તથા-શાયિકા, આશાયિકા, વિવિકિત્તા ।
યવમ્ અપ્યુપપાદના, પર્યાપાદના ॥ સૂ૦ ૮૫ ॥

રક્તક હોતા હૈં, ઓર જવ્વે દુન તોનોં કા એક હો આત્મા મેં યોગ મિલ
જાતા હૈં—તવ્વે વસ આત્મા કી મુક્તિ હો જાતી હૈં એસા જિન શાસન મેં
કહો ગયા હૈં ॥ સૂ૦૮૪ ॥

“સુતતપસ્વિત” હસ પદ સે પારિશ્ર કથન હુવા હૈં યદ્ પારિશ્ર
પ્રાણાતિપાત આદિ કી નિવૃત્તિરુપ હોતા હૈં, અતઃ અય સૂત્રકાર વસ
નિવૃત્તિ કે મેવોં કા કથન કરતે હૈં—“તિવિહા યાવત્તી પંચણત્તા” હત્યાદિ,

આપૃષિ ત્રીન પ્રકારકી કહી ગઈ હૈં જૈસે—સાયિકા ૧ અસાયિકા ૨

“જ્ઞાન પ્રકાશક હોય છે, તપ શોધક હોય છે અને સત્યમ વક્ષક હોય
છે, અને આરે આ ત્રણેના એક જ આત્મમર્મ સમ રથ (યોગ) થઈ જાય
છે, ત્યારે તે આત્માની મુક્તિ થઈ જાય છે ” એવું જિનશાસનમાં
કહ્યું છે સૂ ૮૨ થી ૮૪ ॥

‘સુતતપસ્વિત’ આ પદ દ્વારા ચરિત્રની પ્રકૃતિ કરવામાં આવી.
તે પારિશ્ર પ્રાણાતિપાત આદિની નિવૃત્તિ રૂપ હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર આ
નિવૃત્તિના લેહોનું કથન કરે છે—‘તિવિહા યાવત્તી પંચણત્તા’ હત્યાદિ—

આવૃત્તિ ત્રણ પ્રકારની કરી છે એમકે (૧) સાયિકા, (૨) અસાયિકા

ત્રિવિધઃ અન્તઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-લોકાન્તઃ, વેદાન્તઃ, સમયાન્તઃ ॥ સૂ. ૮૬ ॥

ત્રયો જિનાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-અવધિજ્ઞાનજિનઃ, મનઃપર્યવજ્ઞાનજિનઃ, કેવલજ્ઞાનજિનઃ ૧ । ત્રયઃ કેવલિનઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-અવધિજ્ઞાનકેવલી, મનઃપર્યવજ્ઞાનકેવલી, કેવલજ્ઞાનકેવલી ૨ । ત્રયઃ અર્હન્તઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-અવધિજ્ઞાનાર્હન્ત મનઃ પર્યવજ્ઞાનાર્હન્, કેવલજ્ઞાનાર્હન્ ૩ ॥ સૂ. ૮૭ ॥

ટીકા—‘ ત્રિવિદા વાવત્તી ’ इत्यादि ।

વ્યાવર્તન-વ્યાવૃત્તિઃ હિંસાદેઃ ક્રિયદવધિનિવર્તન, સા ત્રિવિદા તથાહિ-જ્ઞાયિકા-જ્ઞસ્ય હિંસાદીનાં હેતુસ્વરૂપફલજ્ઞાયકસ્ય જ્ઞાનપૂર્વિકા વ્યાવૃત્તિઃ, સાઽપિ ઔર વિચિકિત્સા ૩ । इस प्रकार अधुपपादना और पर्यापादना भी तीन तीन प्रकार की कही गई है ॥ सू. ८५ ॥

અન્ત ત્રિન પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ જૈસે લોકાન્ત વેદાન્ત ઔર સમયાન્ત ॥ સૂ. ૮૬ ।

જિન ત્રિન પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ, જૈસે અવધિજ્ઞાનજિન મનઃપર્યવજ્ઞાનજિન ઔર કેવલજ્ઞાનજિન । ૧ કેવલી ત્રિન પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ, જૈસે-અવધિજ્ઞાનકેવલી મનઃ પર્યવજ્ઞાનકેવલી ઔર કેવલજ્ઞાનકેવલી । ૨ અર્હન્ત ત્રિન પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ, જૈસે-અવધિજ્ઞાનાર્હન્ત, મનઃ પર્યવજ્ઞાનાર્હન્ત ઔર કેવલજ્ઞાનાર્હન્ત ૩

भावार्थ — इन ८५ - ८६ और ८७ सूत्रों का भावार्थ इस प्रकार से है हिंसादि पापों का कितनी अवधि तक निवर्तन होना इसका नाम व्यावर्तन है, तात्पर्य इसका यह है कि हिंसादिक पापों से एकदेश निवर्तन होना इसका नाम देशनिवर्तन है । और

અને (૩) વિચિકિત્સા એ જ પ્રમાણે અધુપપાદના અને પર્યાપાદના પણ ત્રણ ત્રણ પ્રકારની કહી છે ॥ સૂ. ૮૫ ॥

અન્ત ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) લોકાન્ત, વેદાન્ત અને (૩) સમયાન્ત. ॥ સૂ. ૮૬ ॥

જિન ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) અવધિજ્ઞાન જિન, (૨) મનઃપર્યવજ્ઞાન જિન અને (૩) કેવલજ્ઞાન જિન । ૧ ।

કેવલી ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) અવધિજ્ઞાન કેવલી, (૨) મનઃપર્યવજ્ઞાન કેવલી અને (૩) કેવલજ્ઞાન કેવલી । ૨ ।

અર્હન્ત ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) અવધિજ્ઞાનાર્હન્ત, (૨) મનઃપર્યવજ્ઞાનાર્હન્ત અને (૩) કેવલજ્ઞાનાર્હન્ત । ૩ । ॥ સૂ. ૮૭ ॥

હવે ૮૫, ૮૬ અને ૮૭ માં સૂત્રનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—
હિંસાદિ પાપોનું અમુક મર્યાદામાં નિવર્તન થવું તેનું નામ વ્યાવર્તન છે.

પૂર્વ સુતપસ્ત્યવમિત્યનેન ચારિત્રિ પ્રોક્તં, તપ્ચ પ્રાણાતિપાતાવિનિવૃત્તિરૂપ મિતિ તસ્યા મેદાનાહ—

મૂલમ્--તિવિહા ધાવસી પળ્ળસા, ત જહા-જાણૂ, અજાણૂ, વિતિગિચ્છા, એવ અઝ્જોઘવઝ્જણા પરિયાવઝ્જણા ॥ સૂ૦૮૫ ॥

તિવિહે અતે પળ્ળત્તે, ત જહા લોયસે, વેયસે, સમયસે સૂ૦૮૬ ॥

તઓ જિણા પળ્ળસા, ત જહા-ઓહિણાણજિણે, મળપ જ્ઞવણાણજિણે, કેવલણાણજિણે ૧ । તઓ કેવલી પળ્ળસા, ત જહા-ઓહિણાણકેવલી, મળપઝવણાણકેવલી, કેવઞ્જણાણકેવલી ૨ । તઓ અરહા પળ્ળસા, ત જહા ઓહિનાણઅરહા, મળ પજ્જવનાણ અરહા, કેવલનાણ અરહા ૩ ॥ સૂ૦ ૮૭ ॥

છાયા-ચિરિષા વ્યાવૃત્તિ પ્રજ્ઞા, તથા-શાયિકા, આશાયિકા, વિચિકિત્સા । એવમ્ અધ્યુપપાદના, પર્યાપાદના ॥ સૂ૦ ૮૫ ॥

રક્ષક હોતા હૈ, ઓર જયે જન ત્રીનોં કા એક હી આત્મા મેં ધોગ મિલ જાતા હૈ—તયે ઉસ આત્મા કી મુક્તિ હો જાતી હૈ પેસા જિન શાસ્ત્રન મેં કહો ગયા હૈ ॥ સૂ૦૮૪ ॥

“સુતતપમ્મિયત” જમ પદ સે ચારિત્ર કથન હુવા હૈ ઘટ ચારિત્ર પ્રાણાતિપાત આદિ કી નિવૃત્તિરૂપ હોતા હૈ, અતઃ અય સૂત્રકાર ઉસ નિવૃત્તિ કે મેદોં કા કથન કરતે હૈ—“તિવિહા ધાવસી પળ્ળસા” હત્યાદિ

વ્યાવૃત્તિ ત્રીન પ્રકારકી કહી ગઈ હૈ જૈસે—સાયિકા ૧ અસાયિકા ૨

“જ્ઞાન પ્રકાશક હોય છે, તપ શોષક હોય છે અને સદમ રક્ષક હોય છે, અને આરે આ ત્રણેને એક જ આત્મામાં સમ રથ (યોગ) થયે જાય છે, ત્યારે તે આત્માની મુક્તિ થયે જાય છે ” એવું જિનશ્વસનમાં કહ્યું છે સૂ. ૮૨ થી ૮૪ ॥

“સુતતપમ્મિયત” આ પદ દ્વારા ચારિત્રની પ્રકરણ કરવામાં આવી તે ચારિત્ર પ્રાણાતિપાત આદિની નિવૃત્તિ રૂપ હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર આ નિવૃત્તિના લેદોનું કથન કરે છે—“તિવિહા ધાવસિ પળ્ળસા” હત્યાદિ—

આવૃત્તિ ત્રણ પ્રકારની કહી છે જેમકે (૧) શાયિકા, (૨) અસાયિકા

ત્રિવિધઃ અન્તઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-લોકાન્તઃ, વેદાન્તઃ, સમયાન્તઃ ॥ સૂ ૦૮૬ ॥

ત્રયો જિનાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-અવધિજ્ઞાનજિનઃ, મનઃપર્યવજ્ઞાનજિનઃ, કેવલજ્ઞાનજિનઃ ૧ । ત્રયઃ કેવલિનઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-અવધિજ્ઞાનકેવલી, મનઃપર્યવજ્ઞાનકેવલી, કેવલજ્ઞાનકેવલી ૨ । ત્રયઃ અર્હન્તઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-અવધિજ્ઞાનાર્હન્ત મનઃ પર્યવજ્ઞાનાર્હન્, કેવલજ્ઞાનાર્હન્ ૩ ॥ સૂ ૦૮૭ ॥

ટીકા—‘ ત્રિવિદા વાવત્તી ’ इत्यादि ।

વ્યાવર્તન-વ્યાવૃત્તિઃ હિંસાદેઃ ક્રિયદવધિનિવર્તનં, સા ત્રિવિદા તથાહિ-જ્ઞાયિકા-જ્ઞસ્ય હિંસાદીનાં હેતુસ્વરૂપફલજ્ઞાયકસ્ય જ્ઞાનપૂર્વિકા વ્યાવૃત્તિઃ, સાઽપિ ઔર વિચિકિત્સા ૩ । इस प्रकार अधुपपादना और पर्यापादना भी तीन तीन प्रकार की कही गई है ॥ सू ०८५ ॥

અન્ત ત્રિવિધ પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ જૈસે લોકાન્ત વેદાન્ત ઔર સમયાન્ત ॥ સૂ ૦૮૬ ।

જિન ત્રિવિધ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ, જૈસે અવધિજ્ઞાનજિન મનઃપર્યવજ્ઞાનજિન ઔર કેવલજ્ઞાનજિન । ૧ કેવલી ત્રિવિધ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ, જૈસે-અવધિજ્ઞાનકેવલી મનઃ પર્યવજ્ઞાનકેવલી ઔર કેવલજ્ઞાનકેવલી । ૨ અર્હન્ત ત્રિવિધ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ, જૈસે-અવધિજ્ઞાનાર્હન્ત, મનઃ પર્યવજ્ઞાનાર્હન્ત ઔર કેવલજ્ઞાનાર્હન્ત ૩

भावार्थ — इन ८५ - ८६ और ८७ सूत्रों का भावार्थ इस प्रकार से है हिंसादि पापों का कितनी अवधि तक निवर्तन होना इसका नाम व्यावर्तन है, तात्पर्य इसका यह है कि हिंसादिक पापों से एकदेश निवर्तन होना इसका नाम देशनिवर्तन है । और

અને (૩) વિચિકિત્સા એ જ પ્રમાણે અધુપપાદના અને પર્યાપાદના પણ ત્રણ ત્રણ પ્રકારની કહી છે ॥ સૂ. ૮૫ ॥

અન્ત ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) લોકાન્ત, વેદાન્ત અને (૩) સમયાન્ત. ॥ સૂ. ૮૬ ॥

જિન ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) અવધિજ્ઞાન જિન, (૨) મનઃપર્યવજ્ઞાન જિન અને (૩) કેવલજ્ઞાન જિન । ૧ ।

કેવલી ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) અવધિજ્ઞાન કેવલી, (૨) મન પર્યવજ્ઞાન કેવલી અને (૩) કેવલજ્ઞાન કેવલી । ૨ ।

અર્હન્ત ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) અવધિજ્ઞાનાર્હન્ત, (૨) મનઃપર્યવજ્ઞાનાર્હન્ત અને (૩) કેવલજ્ઞાનાર્હન્ત । ૩ । ॥ સૂ. ૮૭ ॥

હવે ૮૫, ૮૬ અને ૮૭ માં સૂત્રનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—
हिंसादि पापानुं अभुक् भयादाभां निवर्तनं यत्र तेनं नाम व्यावर्तनं છે.

વદમેદાદ્' જાપિકા યોગ્યત્વ । અજ્ઞાપિકા તદ્વિપરીતા । યા તુ વિચિકિત્સાઠઃ-
સંશયાત્ નિમિત્તનિમિષિનામદાદ્ વિચિકિત્સેત્યમિદિશા । વ્યાપ્તિરિત્યનેન પૂર્વ

મન ઘડન કાર્ય સે દિસાદિક પાપોં કા સવદેશ સે સ્વાગ કરમા ઉસ
સે નિવતન હોના, હસકા મામ સર્વદેશ નિવર્તન હૈ । યદ નિવર્તનરૂપ
વ્યાપ્તિ લીન પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ । યસમેં પ્રથમ પ્રકાર મેં જો દિસા-
દિકોં કે હેતુ કા, ઢનકે સ્વરૂપ કા, ઓર ડનકે ફલ કા જ્ઞાતા હોકર
ઢનકા નિવર્તન કરતા હૈ સો યદ નિવર્તનરૂપ વ્યાવર્તન ઉસકા જ્ઞાન
પૂર્વક હોનેકે કારણ "જાપિકા વ્યાપ્તિ" દિસાદિકર્મસે નિગતહોના હસકા
મામ વ્યાપ્તિ હૈ યે તીન પ્રકારકી હૈ એસા કહા જાતાહૈ " જ્ઞાત્ય
વ્યાપ્તિ " " જાપિકા વ્યાપ્તિઃ " હસકે અનુસાર જ્ઞાયક (જ્ઞાતા)
કી જો આપ્તિ હૈ યદ જાપિકા આપ્તિ હૈ, । ઇસ તરહ સે જો યદાં
વ્યાપ્તિ કો જાપિકા કહા ગયા હૈ યદ અમેદ સમ્પન્ન સે કહા ગયો
હૈ, । અર્થાત્-જ્ઞાયક ને જો પાપાદિકોં કી વ્યાપ્તિ કી હૈ યદ અવને
જ્ઞાન સે કી હૈ, અતઃ-યદ જ્ઞાયક ક જ્ઞાન કા કાર્ય હૈ, પરન્તુ હસ કાર્ય
કો જો " જાપિકા " યદ સે કદા ગયા હૈ યદ ઉસકી વ્યાપ્તિ કરને
યાછે આત્મા મેં ઓર કી ગઈ ઉસ વ્યાપ્તિ મેં અમેદ માનકર કદા ગયા

આ કથનનો આવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-દિસાદિક પાપે પ્રતી દેશતઃ
(અસત) નિવર્તન યદુ તેનું નામ દેશનિવર્તન છે અને મન, વચન અને
જાપાથી દિસાદિક પાપોના સર્વદેશથી (સંપૂર્ણત) ત્યાગ કરવો તે પાપિમાંથી
નિવર્તન યદુ તેનું નામ સર્વદેશ નિવર્તન છે તે નિવર્તન રૂપ વ્યાપ્તિ ત્રણ
પ્રકારની થી છે નેા દિસાદિકોના હેતુનો, તેમના સ્વરૂપનો, અને તેમના
ફલનો । તાત્પર્યથી વ્યાપ્તિ એવ તેમનો ત્યાગ કરે છે, ત્યારે એવના તે ત્યાગ
(નિવર્ત) રૂપ વ્યાવર્તન નાનપૂર્વક યદુ હે અને જાણે તેને " જાપિકા
વ્યાપ્તિ " કહે છે । જાણ વ્યાપ્તિ જાપિકા વ્યાપ્તિઃ " આ કથન અનુ
સાર ગ્રામ્ય (જ્ઞાતા) ની જે વ્યાપ્તિ છે તેનું નામ જ " જાપિકા વ્યાપ્તિ "
છે આ રીતે અહીં જે વ્યાપ્તિને જાપિકા કહેવામાં આવેલ છે, તે અમેદ
સમ્પન્નની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે એન્ને કે જાપિકા (જ્ઞાતાએ) જે જાપ
દિકોની વ્યાપ્તિ (નિવર્તિ) કરી છે, તે પોતાના જ્ઞાનથી જ કરી છે, તેથી તે જાપ
ક્રમા જ્ઞાનના કાર્ય રૂપ છે, પરન્તુ તે જાણને જે " જાપિકા " પ્રતી પ્રકટ કરવામાં
આ ય છે, તે તેની વ્યાપ્તિ કરવાના આત્મામાં અને કરવામાં આવેલી તે
વ્યાપ્તિમાં અનેક પ્રતીતિ કહેવામાં આ યુ છે

ચારિત્રં પ્રોક્તં, તદ્વિપક્ષભૂતે ચાશુભાધ્યવસાયાનુષ્ઠાને ડચિ તયોર્ભેદાનતિદેશેનાદ-
 'એવ' -મિત્યાદિ। એવં-વ્યાવૃત્તિવત્ અધ્યુપપાદના પર્યાપાદનાડપિ વિજ્ઞેયા, તત્ર-
 અધ્યુપપાદનમ્ અધ્યુપપાદના ઇન્દ્રિયાર્થેવાસક્તિઃ, તત્ર વિષયજન્યમનર્થ જાનતોડપિ
 તત્રાધ્યુપપત્તિઃ સા 'જાણુ' ઇતિ, જ્ઞાયિકાડધ્યુપપાદના। યા ત્વજાનતસ્તત્રાધ્યુ-
 પપત્તિઃ સા 'અજાણુ' ઇતિ અજ્ઞાયિકા। યા તુ સંશયવતો વિષયેન્વધ્યુપપત્તિઃ સા
 વિચિકિત્સાધ્યુપપાદના। એવં પર્યાપાદન પર્યાપાદના-પર્યાપાદના-પર્યાપત્તિરાસે
 હૈ। તથા-અજ્ઞાની આત્મા કી જો ડનકે સ્વરૂપ ફલ ઓર હેતુ કો જાને
 વિના ડનસે વ્યાવૃત્તિ હોતી હૈ વહ અજ્ઞાનિકા વ્યાવૃત્તિ હૈ। તથા જો
 હિંસાદિક સે વ્યાવૃત્તિ સંશય સે હોતી હૈ વહ વ્યાવૃત્તિ વિચિકિત્સા
 વ્યાવૃત્તિ હૈ યહાં નિમિત્ત ઓર નિમિત્તી મેં અભેદ સમ્બન્ધ માનકર
 વિચિકિત્સાકો "વ્યાવૃત્તિ" કહા ગયા હૈ। ઇન્દ્રિયોંકે અર્થોંમેં જો આસક્તિ
 હૈ વહ અધ્યુપપાદના હૈ યહ અધ્યુપપાદના આસક્તિ ભી વ્યાવૃત્તિકી તરહ
 જ્ઞાયિકા અજ્ઞાયિકા ઓર વિચિકિત્સા કે ભેદ સે ત્રીન પ્રકાર કી હૈ
 ડનમેં વિષયજન્ય અનર્થ કો જાનતે હુવે ભી જો ડનમેં આત્મા કી આસક્તિ
 હૈ વહ જ્ઞાયિકો અધ્યુપપાદના હૈ। તથા-જો અજ્ઞાન સે વિષયાદિકોં મેં
 આસક્તિ હોતી હૈ વહ અજ્ઞાયિકી અધ્યુપપાદના હૈ। તથા જો સંશયવાલે
 આત્મા કી વિષયોં મેં આસક્તિ હૈ, વહ વિચિકિત્સા અધ્યુપપાદના હૈ,

અજ્ઞાની આત્મામા, તેમના સ્વરૂપ (હિંસાદિકોતુ સ્વરૂપ), તેમનુ ફલ
 અને તેમના હેતુઓને જાણ્યા વિના, તે હિંસાદિક પાપોમાથી જે વ્યાવૃત્તિ
 (નિવર્તન) થાય છે તેને અજ્ઞાનિકા વ્યાવૃત્તિ કહે છે. તથા સંશયથી આત્મા
 હિંસાદિકોને જે ત્યાગ કરે છે, તે ત્યાગરૂપ વ્યાવૃત્તિને 'વિચિકિત્સા વ્યાવૃત્તિ'
 કહે છે. અહીં નિમિત્ત અને નિમિત્તીમાં અલેદ સબંધ માનીને વિચિકિત્સાને
 'વ્યાવૃત્તિ' કહેવામા આવેલ છે.

ઇન્દ્રિયોના વિષયમા જે આસક્તિ હોય છે તેને અધ્યુપપાદના કહે છે.
 તે અધ્યુપપાદનાના પશુ વ્યાવૃત્તિની જેમ જ્ઞાયિકા, અજ્ઞાયિકા અને વિચિકિત્સા
 રૂપ ત્રણ લેદ કહ્યા છે. વિષયજન્ય (વિષયોથી થનારા) અનર્થને જાણવા છતાં
 પશુ તેમા આત્માની જે આસક્તિ હોય છે તેને 'જ્ઞાયિકા અધ્યુપપાદના'
 કહે છે, તથા અજ્ઞાનને કારણે વિષયાદિકોમાં આત્માની જે આસક્તિ હોય છે
 તેને 'અજ્ઞાયિકા અધ્યુપપાદના' કહે છે સંશયવાળા આત્માની વિષયોમાં
 જે આસક્તિ હોય છે તેને 'વિચિકિત્સા અધ્યુપપાદના' કહે છે.

આસેવનાને પર્યાપાદના કહે છે. તે પર્યાપાદના પશુ જ્ઞાયિકા, અજ્ઞાયિકા
 અને વિચિકિત્સાના લેદથી ત્રણ પ્રકારની કહી છે. વિષયજન્ય અનર્થને જાણવા

તત્ર—વેદા ઋગ્યજુઃ સામાથર્વરૂપાશ્ચત્વારઃ । સમયાઃ—જૈનસિદ્ધાન્તા આચારાદયઃ ॥ સુ ૦ ૮૬ ॥

પૂર્વ સમયાન્તઃ પ્રોક્તઃ, સમયશ્ચ જિનકેવલ્યર્હચ્છન્દવાચ્યૈરાપ્તપુરુષૈઃ પ્રરૂપિતઃ
 એવ સમ્યગ્ ભવતીતિ જિનાદિશબ્દવાચ્યભેદાન્ પ્રરૂપયિતું સૂત્રત્રયમાહ—તત્ર
 પ્રથમજિનસૂત્રમાહ—‘તઓ જિણા’ ઇત્યાદિ, રાગદ્વેષ મોહોન જયન્તીતિ જિનાઃ—સર્વજ્ઞાઃ

ઉક્તશ્ચ—“ રાગો દ્વેષસ્તથા મોહો, જિતો યેન જિનો હસૌ ।

અસ્ત્રીશસ્ત્રાક્ષમાલત્વાદર્હન્નેવાનુમીયતે ” ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

સ્ત્રાદિરૂપ કહા ગયા હૈં હસસે જો અર્થાદિરૂપ નિર્ણય હોતા હૈં વહ લોકાન્ત
 હૈં હસી પ્રકાર સે ઋગ્વેદ યજુર્વેદ સામવેદ ઔર અથર્વવેદ ૪ હસ ચાર
 વેદોં સે જો અર્થાદિ નિર્ણય હોતા હૈં વહ વેદાન્ત હૈં, તથા જૈન સિદ્ધાન્તરૂપ
 આચારાદિકોંસે જો અર્થાદિરૂપ નિર્ણય હોતા હૈં વહ સમયાંન હૈં ॥ સુ ૮૬ ॥

સમયાન્ત કા જો કથન કિયા જાતા હૈં સો વહ સમય જિન કેવલી
 અર્હન્ત શબ્દવાચ્ય આસ પુરુષોં દ્વારા પ્રણીત હોને પર હી સમ્યક્ સત્ય
 હોતા હૈં હસલિયે સૂત્રકાર અથ જિનાદિ શબ્દવાચ્ય ભેદોં કી પ્રરૂપણા
 કરને કે લિયે ત્રીન સૂત્ર કહતે હૈં—“ તઓ જિણા ” ઇત્યાદિ, જો રાગ
 દ્વેષ એવં મોહરૂપી શત્રુઓં કો જીત લેતે હૈં વે જિન હૈં સર્વજ્ઞ હૈં । કહા
 ભી હૈં “ રાગો દ્વેષસ્તથા મોહઃ ” ઇત્યાદિ, ઇન્દ્રિયરૂપી શસ્ત્રોં કે મોજૂદ
 હોને પર ભી જો અસ્ત્રી વિષયવાસતા રહિત હૈં વે અર્હન્ત હૈં । યે જિન
 ત્રીન હોતે હૈં, જૈસે—અવધિજિન—અવધિજ્ઞાન કી પ્રધાનતાવાલે જિન,

રૂપ નિર્ણય થાય છે તેને લોકાન્ત કહે છે એ જ પ્રમાણે ઋગ્વેદ, સામવેદ,
 યજુર્વેદ અને અથર્વવેદને આધારે જે અર્થાદિ રૂપ નિર્ણય થાય છે તેને વેદાન્ત
 કહે છે આચારાંગાદિ રૂપ જૈન સિદ્ધાન્તને આધારે જે અર્થાદિ રૂપ નિર્ણય
 થાય છે તેને સમયાન્ત કહે છે ॥ સુ ૮૬ ॥

૮૭ માં સૂત્રનો ભાવાર્થ—સમયાન્તનું કથન પહેલાના સૂત્રમાં કરવામાં
 આવ્યું. તે સમય જિન, કેવલી, અર્હન્ત, શબ્દવાચ્ય આપ્તપુરુષો દ્વારા પ્રણીત
 હોવાથી સમ્યક્ સત્ય હોય છે, તેથી હવે સૂત્રકાર જિનાદિ શબ્દવાચ્ય ભેદોનું
 નિરૂપણ કરવા નિમિત્તે ત્રણ સૂત્રો કહે છે—“ તઓ જિણા ” ઇત્યાદિ—

જેમણે રાગ, દ્વેષ અને મોહરૂપી શત્રુઓને જીતી લીધાં છે, તેમને
 જિન—સર્વજ્ઞ કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ રાગો દ્વેષસ્તથા મોહઃ ” ઇત્યાદિ—

ઇન્દ્રિયો રૂપી શસ્ત્રો મોજૂદ હોવા છતાં પણ જેઓ વિષયવાસનાથી રહિત
 હોય છે તેમને અર્હન્ત કહે છે.

તે પ્રયોગ યથા અધિજ્ઞાનપ્રધાનો જિનોડચ્છિજ્ઞાનમિન, મનઃ પર્યવજ્ઞાનપ્રધાનો જિનો મન પર્યવજ્ઞાનજિન, એવી દ્વો નિશ્ચયપ્રત્યક્ષ-જ્ઞાનવત્ તથા ત્રિનાવિષત્રિનો દ્રશ્યુપચારગમ્યો સ્તા। છતીયઃ કેવલજ્ઞાનમિનઃ, પણ નિરુપચારઃ સર્વશ્રેયસ્વાત્—

મનઃ પર્યવજ્ઞાનજિન-મનઃ પર્યવજ્ઞાનપ્રધાનતાવાળે જિન, ઔર કેવલ જ્ઞાનજિન-કેવલજ્ઞાનની પ્રધાનતાવાળે જિન, इनमें अधिज्ञानजिन और मन पर्यवज्ञानजिन ये दो यथार्थ में केवलज्ञानजिन की तरह जिन नहीं हैं। क्योंकि इनका जो ज्ञान है वह विकल वेशप्रत्यक्ष है जब कि-केवलज्ञानजिन का प्रत्यक्ष सकल प्रत्यक्ष है परन्तु-फिर भी केवलज्ञान जिन का प्रत्यक्ष जैसा अपने विषय में पूर्णरूप से विशद होता है उसी प्रकार से इन दोनों जिनों का ज्ञान भी अपने अपने विषय में पूर्णरूप से विशद होता है। जैसा इनका प्रत्यक्ष अतीन्द्रिय होता है वसी प्रकार से ये दोनों ज्ञान भी अतीन्द्रिय होते हैं। इनके उनके प्रत्यक्ष में सङ्ग सना और विकलता यह विषयोपाधिजन्य है, इसलिये निश्चय प्रत्यक्ष ज्ञानवाले होने से ये दोनों जिनके भगवान् जैसे जिन माने गये हैं, यह कथन उपचार से किया गया जानना चाहिये। वास्तव में जिन तो केवलज्ञानवाला जो होता है वही है। केवलज्ञान वालों में "जिन" ऐसा

જિન ત્રણ પ્રકારના હોય છે-(૧) અધિજિન-અધિજ્ઞાનની પ્રધાનતા વાળો જિન, (૨) મન પર્યવજ્ઞાન જિન-એટલે કે મનપર્યવજ્ઞાનની પ્રધાનતા વાળો જિન, અને (૩) કેવલજ્ઞાન જિન-એટલે કે કેવલજ્ઞાનની પ્રધાનતાવાળો જિન. આ ત્રણ પ્રકારના જો જિન હોય છે તેમાંના અધિજ્ઞાન જિન અને મનપર્યવજ્ઞાન જિન, આ બે કેવલજ્ઞાન જિનની જેમ વચાર્થ રૂપે જિન નથી, કારણ કે તેમનું જો જ્ઞાન હોય છે તે વિકલ (વેશપ્રત્યક્ષ) હોય છે, પરન્તુ કેવલજ્ઞાન જિનનું જ્ઞાન સકલ પ્રત્યક્ષ હોય છે, છતાં પણ કેવલજ્ઞાન જિનનું પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન જેમ પોતાના વિષયમાં પૂર્ણરૂપે વિશદ હોય છે એ જ પ્રમાણે અધિજ્ઞાન જિન અને મનપર્યવજ્ઞાન જિનોનાં જ્ઞાન પણ પોતપોતાના વિષયમાં પૂર્ણરૂપે વિશદ હોય છે એવી રીતે તેમનું પ્રત્યક્ષ અતીન્દ્રિય હોય છે, એ જ પ્રમાણે તે બન્ને જ્ઞાન પણ અતીન્દ્રિય હોય છે તેમના પ્રત્યક્ષમાં સકલતા અને વિકલતા તે વિષયોપાધિજન્ય છે તેથી નિશ્ચય પ્રત્યક્ષ જ્ઞાનવાળા હોવાથી તે બન્ને જિનને ભગવાન એવા જ જિન માનવામાં આવ્યા છે, આ કથનને ઔપચારિક કથન જ સમજવું જોઈએ વાસ્તવમાં કેવલજ્ઞાનની છત્રે જ ખરા જિન હોઈ શકાય છે કેવલજ્ઞાનની છત્રેને "જિન" કહેવાનું કારણ એ

અથ કેવલિસૂત્રમાહ—‘ તઓ કેવલી ’ ઇત્યાદિ, કેવલમ્—એકમનન્તં પૂર્ણ વા જ્ઞાનાદિકં યેષામસ્તીતિ કેવલિનઃ, ઉક્તઞ્ચ—

“ કસિણં કેવલકલ્પં, લોગં જાણંતિ તદ્ ય પાસંતિ ।

કેવલચરિત્તણાણી, તમ્હા તે કેવલી હોંતિ ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—કૃત્સ્નં કેવલકલ્પં, લોકં જાનન્તિ તથા ચ પશ્યન્તિ ।

કેવલચારિત્રજ્ઞાનિનઃ, તસ્માત્તે કેવલિનો ભવન્તિ ॥ ૧ ॥

તે — અવધિમનઃપર્યવકેવલજ્ઞાનભેદાત્રયઃ । તત્રાવધિજ્ઞાનકેવલીમનઃ—
પર્યવજ્ઞાનકેવલીત્યેતૌ દ્વૌ જિનવન્નિશ્ચયપ્રત્યક્ષજ્ઞાનવત્ત્વાદુપચારાત્કેવલિપદવાચ્યૌ
સ્તઃ, તૃતીયઃ કેવલજ્ઞાનકેવલી નિરુપચારઃ સર્વભાવાનાં સાક્ષાદર્શકત્વાત્ ॥ ૨ ॥

વ્યવહાર ઉન્કો સર્વજ્ઞ હોને સે નિરુપચરિત હૈ । કેવલ શબ્દ કા અર્થ
એક અનન્ત, અથવા પૂર્ણ હૈ જિનકો જ્ઞાનાદિક એક અથવા અનન્ત, યા
પૂર્ણ હોતા હૈ વહ કેવલી હૈ । કહા મી હૈ—“ કસિણં કેવલકલ્પં ” ઇત્યાદિ,
યે કેવલી મી અવધિજ્ઞાની મનઃ પર્યવજ્ઞાની ઓર કેવલજ્ઞાની કે ભેદ સે
ત્રીન પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ । इनमें अवधिज्ञानी केवली, और मनः पर्य-
वज्ञानी केवली ये दो, जिनकी तरह निश्चय प्रत्यक्षज्ञानवाले होने के
कारण उपचार से केवली कहे गये हैं । और तीसरा जो केवलज्ञानी
केवली है वह निरुपचरित केवली कहा गया है । क्योंकि वह रूपी और
अरूपी समस्त भावों का साक्षात् देखने वाला होता है, तात्पर्य यह है
कि—अवधिज्ञानी, और मनः पर्यवज्ञानी केवली रूपीमात्र पदार्थ को ही

છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ હોય છે કેવળ પદનો અર્થ એક, અનન્ત અથવા પૂર્ણ
થાય છે જેમના જ્ઞાનાદિક એક અથવા અનન્ત અથવા પૂર્ણ હોય છે તેમને
કેવલી કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ કસિણં કેવલકલ્પં ” ઇત્યાદિ—

તે કેવલીના પણ અવધિજ્ઞાની, મન પર્યવજ્ઞાની અને કેવળજ્ઞાની, એ ત્રણ
ભેદ કહ્યા છે. અવધિજ્ઞાની કેવલી અને મન પર્યવજ્ઞાની કેવલિ, આ બંને
જિનની જેમ નિશ્ચય (નિયત) પ્રત્યક્ષ જ્ઞાનવાળા હોય છે, તેથી તેમને
ઓપચારિક રીતે જ કેવલી કહેવામાં આવેલ છે, અને ત્રીજા જે કેવળજ્ઞાની
કેવળી છે તેમને નિરુપચરિત કેવળી કહેવામાં આવ્યા છે, કારણ કે તેઓ
રૂપી, અરૂપી સમસ્ત ભાવોને સાક્ષાત્ જોઈ શકનારા હોય છે. આ કથનનો
ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—

અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યવજ્ઞાની કેવળી માત્ર રૂપી પદાર્થોને જ દ્રવ્ય
ક્ષેત્રાદિની મર્યાદામાં રહીને સાક્ષાત્ જાણી દેખી શકે છે—તેઓ અરૂપી પદાર્થોને

અથ સૃષ્ટીયમર્હત્વમાહ—‘ સમો અરહા ’ इत्यादि, अर्हन्तिदेवकुटाष्टमहाया
 तिहार्यरूपमतिशयमित्यर्हन्त् । ते प्रयाः शेषे ष्यास्यया जिनवत् चित्रेपा३।सू०८७।
 एते च सद्येइया अपि मवन्तीति चतुर्थशस्रजैलेइया प्रकरणमाह—

મૂલ્ય—સઓ લેસાઓ ટુઠિભગધાઓ પળ્ણત્તાઓ, ત જહા
 કળહલેસા, ણીલલેસા કાઝલેસા । ૧। તઓ લેસાઓ સુન્નિ
 ગંધાઓ પળ્ણત્તાઓ ત જહા—તેઝલેસા, પમ્હલેસા, સુક્કલેસા
 । ૨। યવ દોગ્ગહગામિણીઓ ૩, સોગ્ગહગામિણીઓ ૪, સુક્કિ-
 લિટ્ટાઓ ૫, અસાકિલિટ્ટાઓ ૬, અમણુળ્ણાઓ ૭, મણુળ્ણાઓ

બ્રહ્મક્ષેત્રાદિ કી મર્યાદા છેકર સાક્ષાત્ જાનતે હૈ, અરૂપી પદાર્થો કો
 નહીં । પરન્તુ—જો કેવલજ્ઞાન સે કેવલી હોતા હૈ કેવલજ્ઞાનવાલા હોતા
 હૈ વહ રૂપી અરૂપી સમસ્ત પદાર્થો કો જાનતા હૈ, પરન્તુ
 અપને વિષય કો જાનને મેં જન ત્રીનો કેવલિયો કો જ્ઞાન મેં વૈશય
 કા અન્તર નહીં હૈ યહી કથન નિશ્ચય પ્રત્યક્ષ જ્ઞાનવાન્ નિશ્ચય પ્રત્યક્ષ સે
 કહા ગયા હૈ । અર્હન્ત સૂત્ર કી પ્રરૂપણા કરતે છુવે સૂત્રકાર અથ કહતે
 હૈ—જો દેવકૃત અષ્ટ મહાપ્રાતિહાર્યરૂપ અતિશયવાલે હોતે હૈ એસે અર્હન્ત
 અવધિજ્ઞાનઅર્હન્ત આદિ કે મેદ સે ત્રીન પ્રકાર કે જો કહે ગયે હૈ મો
 જન પદો કી ક્વાસ્યા જિન ક્વાસ્યા કો સરહ જાનની ચાહિયે ॥ સૂ० ૮૭

જાણી-દેખી શકતા નથી પરન્તુ જે કેવલજ્ઞાનવાળા કેવલી હોય છે, તેઓ રૂપી
 અરૂપી સમસ્ત પદાર્થોને જાણી દેખી શકે છે અમુક મર્યા
 દામાં રહેલા પદાર્થોને જ તેઓ જોઈ શકે છે, જોઈ નથી, પરન્તુ
 ત્રિકાળવર્તી અને ત્રણે લોકમાં રહેલા સમસ્ત વસ્તુઓને “ હાથમાં રહેલા
 જામખાની જેમ ” જાણી-દેખી શકે છે પરન્તુ પોતપોતાના વિષયમાં તે ત્રણે
 કેવલીઓના જ્ઞાનમાં પૂણરૂપે વિશિષ્ટતા જ હોય છે એ જ વાત નિશ્ચય પ્રત્યક્ષ
 જ્ઞાનવાન્ નિશ્ચય પ્રત્યક્ષથી પ્રકટ કરવામાં આવી છે

હવે સૂત્રકાર અહીં ત સૂત્રની પ્રરૂપણા કરે છે—જેઓ દેવકૃત અષ્ટ મહા
 પ્રાતિહાર્યરૂપ અતિશયવાળા હોય છે એવા અર્હંતોના પણ પણ પ્રકાર છે—
 (૧) અવધિજ્ઞાન અર્હંત (૨) મનાપચક્ષુજ્ઞાન અર્હંત અને કેવલજ્ઞાન અર્હંત
 અવધિજ્ઞાન જિન આદિ પદોના જેવી જ આ પદોની વ્યાખ્યા સમજવી ॥ સૂ ૮૭ ॥

૮, અવિસુદ્ધાઓ ૯, વિસુદ્ધાઓ ૧૦, અપ્પસત્થાઓ ૧૧, પસ-
ત્થાઓ ૧૨, સીયલુક્કાઓ ૧૩, ણિદ્ધુપ્પહાઓ ૧૪ ॥ સૂ ૮૮ ॥

છાયા-તિસ્સો લેશ્યા દુરભિગન્ધાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-કૃષ્ણલેશ્યા, નીલલેશ્યા,
કાપોતલેશ્યા । ૧ । તિસ્સોલેશ્યાઃ સુરભિગન્ધાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-તેજોલેશ્યા,
પદ્મલેશ્યા, શુક્લલેશ્યા । ૨ ॥ ણ્વ દુર્ગતિગામિન્યઃ ૩, સુગતિગામિન્યઃ ૪, સંકિલ્પાઃ
૫, અસંકિલ્પાઃ ૬, અમનોજ્ઞાઃ ૭, મનોજ્ઞા ૮, અવિશુદ્ધાઃ ૯, વિશુદ્ધાઃ ૧૦,
અપશસ્તાઃ ૧૧, પ્રશસ્તા ૧૨, ગીતરુક્ષાઃ ૧૩, સ્નિગ્ધોષ્ણાઃ ૧૪ ॥ સૂ ૮૮ ॥

યે લેશ્યા સહિત ભી હોતે હૈં, અતઃ અવ સૂત્રકાર ૧૪ સૂત્રો દ્વારા
લેશ્યા પ્રકરણ કહતે હૈં-“ તઓ લેસ્સાઓ દુઢિમગંધાઓ દિત્યાદિ ।

સૂત્રાર્થ-ત્રીન લેશ્યાઈ દુર્ગંધવાળી કહી ગઈહૈં, જૈસે કૃષ્ણલેશ્યા ૧ નીલલે-
શ્યા ૨ ઓર કાપોતલેશ્યા ૩ । ૧ । ત્રીન લેશ્યાઈ સુભિગન્ધવાળી કહી ગઈહૈં,
જૈસે-તેજોલેશ્યા ૧ પદ્મલેશ્યા ૨ ઓર શુક્લલેશ્યા ૩ । ૨ । ઇસી પ્રકાર
સે ત્રીન લેશ્યાઈ જીવ કો દુર્ગતિ મેં લે જાનેવાળી કહી ગઈ હૈં ૩ ઓર
ત્રીન લેશ્યાઈ જીવ કો સુગતિ મેં લે જાનેવાળી કહી ગઈ હૈં ૪ ઇસી પ્રકાર
સે ત્રીન લેશ્યાઈ સંકિલ્પ (અશુભ) પરિણામોં કા હેતુ હોને સે સંકિલ્પ
કહી ગઈ હૈં ૫ ઓર ત્રીન લેશ્યાઈ સંકિલ્પ પરિણામોં કા હેતુ નહીં
હોને સે અસંકિલ્પ કહી ગઈ હૈં ૬ ઇસી પ્રકાર સે ત્રીન લેશ્યાઈ અમ-
નોજ્ઞ કહી ગઈ હૈં ૭ ઓર ત્રીન લેશ્યાઈ મનોજ્ઞ કહી ગઈ હૈં ૮ ઇસી
પ્રકાર સે ત્રીન લેશ્યાઈ અવિશુદ્ધ ૯ ઓર ત્રીન લેશ્યાઈ વિશુદ્ધ ૧૦

તેજો લેશ્યાસહિત પણ હોય છે, તેથી હવે સૂત્રકાર ૧૪ સૂત્રો દ્વારા
લેશ્યાઓનું કથન કરે છે-“ તઓ લેસ્સાઓ દુઢિમગંધાઓ ” ઇત્યાદિ—

(૧) ત્રણ લેશ્યાઓને દુર્ગંધવાળી કહી છે-કૃષ્ણ લેશ્યા, નીલ લેશ્યા
અને કાપોત લેશ્યા (૨) ત્રણ લેશ્યાઓને સુરભિગંધવાળી કહી છે-તેજો લેશ્યા
પદ્મ લેશ્યા અને શુક્લ લેશ્યા (૩) એ જ પ્રમાણે ત્રણ લેશ્યાઓને જીવને
દુર્ગતિ અપાવનારી કહી છે (૪) એ જ પ્રમાણે ત્રણ લેશ્યાઓને જીવને સુગ-
તિમાં લઈ જનારી કહી છે (૫) એ જ પ્રમાણે ત્રણ લેશ્યાઓ સંકિલ્પ (મલીન)
પરિણામોના હેતુ (કારણ) રૂપ હોવાથી તેમને સંકિલ્પ કહી છે, અને (૬) ત્રણ
લેશ્યાઓ સંકિલ્પ પરિણામોના કારણરૂપ નહીં હોવાથી તેમને અસંકિલ્પ કહી
છે (૭) એ જ પ્રમાણે ત્રણ લેશ્યાઓને અમનોજ્ઞ કહી છે, અને (૮) ત્રણ
લેશ્યાઓને મનોજ્ઞ કહી છે (૯) એ જ પ્રમાણે ત્રણ લેશ્યાઓને અવિશુદ્ધ કહી

ટીકા—‘તથો લેમાગો’ इत्याणि । तिस्र पदसु प्रिसङ्ख्यकाः छेद्या-
दुरमिगन्धाः दुर्गन्धवत्याः मग्नताः, कुरमिगन्धत्वं च तासां पुद्गलात्मकत्वात्, पुद्-
गेषु च गन्धादीनामवश्यम्भावात्, उक्तञ्च—

“जह गोमदस्स गंधो, सुणगमदस्स य जहा अहिमदस्स ।

एसो पि अणत्तगुणो, लेसाण अप्पसत्थाण ॥ १ ॥”

छाया—यथा गोमृतस्य गन्धः, शुनकमृतस्य यथाऽहिमृतस्य ।

इतोऽप्यनन्तगुणो छेद्यानामवश्यत्वानाम् ॥ १ ॥

તા દર્શયતિ—કૃષ્ણલેહ્યા, નીલલેહ્યા, કાપોતલેહ્યા । વર્ણચાસાં નામાન્ન
સારી વિશેષત્વેન કૃષ્ણલેહ્યા-કૃષ્ણવર્ણા, નીલલેહ્યા-નીલવર્ણા કાપોતલેહ્યા-
કહી ગઈ છે । इसी प्रकार से तीन छेद्याएँ प्रशस्त कही गई हैं ११ और
तीन छेद्याएँ अप्रशस्त कहीं गई हैं—१२ । इसी प्रकार से तीन छेद्याएँ
शीत-रक्ष कही गई हैं—१३ और-तीन छेद्याएँ स्निग्ध वर्ण कही गई हैं १४ ।

इन सूत्रों का तात्पर्य इस प्रकार से है—छेद्या-६ प्रकार की
कही गई हैं कृष्णलેહ્યા-નીલલેહ્યા-કાપોતલેહ્યા-તેજોલેહ્યા-પદ્મલેહ્યા
-और-शुक्ललેહ્યા-६ । इन में आदि की जो ३ छेद्याएँ हैं—कृष्णलેહ્યા
नीललેહ્યા, और-कાપોતલેહ્યા-३ ये कुरमिगन्धवाली इसलिये कही
गई हैं कि—ये कुरमिगन्धवाले पुद्गलों वाली होती हैं, क्योंकि कि-पुद्गलों में
गन्धादिक गुण अवश्य होते हैं । कहा भी है—“जहगोमदस्स गंधो”
इत्यादि—जैसीगोके मृतक शरीर की, कुत्ते के मरे शरीर की, अथवा-
जैसी सर्पके मरे शरीर की, दुर्गन्ध होती है इस से भी अनन्तगुणों

છે, અને (૧૦) ત્રણ લેશ્યાઓને વિગ્રહ કહી છે (૧૧) એ જ પ્રમાણે ત્રણ
લેશ્યાઓને અપ્રશસ્ત કહી છે અને (૧૨) ત્રણ લેશ્યાઓને પ્રશસ્ત કહી છે
(૧૩) એ જ પ્રમાણે ત્રણ લેશ્યાઓને શીત-રક્ષ કહી છે, અને (૧૪) ત્રણ
લેશ્યાઓને સ્નિગ્ધ-વર્ણ કહી છે

હવે આ ૧૪ સૂત્રોનો અર્થ પ્રકટ કરવામા આવે છે-લેશ્યાના નીચે
પ્રમાણે ૬ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) કૃષ્ણ લેશ્યા, (૨) નીલ લેશ્યા, (૩) કાપોત લેશ્યા
(૪) તેજો લેશ્યા, (૫) પદ્મ લેશ્યા અને (૬) શુક્લ લેશ્યા આ ૬ લેશ્યાઓ
માંથી પહેલી ત્રણ લેશ્યાઓને કુરમિ અથવાળી કહેવાનું કારણ એ છે કે તે
ત્રણ લેશ્યાઓ કુરમિ અથવાળા પુદ્ગલોવાળી હોય છે, કારણ કે પુદ્ગલોમાં
અવાધિક ગુણ અવશ્ય હોય છે કરું પણ છે કે—“જહ ગોમદસ ગમો” ઇત્યાદિ
' જામના મૃત કલેવરની કૃતરાના મૃત કલેવરની અને ગ્રાપના મૃત શરીરની

કપોતવર્ણા ધૂમ્રવર્ણેત્યર્થઃ । ૧ । ‘ તઓ ’ ઇત્યાદિ, તિસ્રોલેશ્યાઃ સુરભિગન્ધાઃ—
સુગન્ધવ્રત્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ આહ ચાત્રાર્થે—

“ જહ સુરભિકુસુમગંધો, ગવોવાસાણ પિરસમાણાણ ।

એત્તો ધિ અણંતગુણો, પસત્થલેસાણ તિષ્ઠંપિ ॥ ૧ ॥

છાયા—યથા સુરભિકુસુમગન્ધઃ, ગન્ધોવાસાનાં પિપ્પ્યમાણાનામ્ ।

ઇતોઽપ્યનન્તગુણઃ (ગન્ધઃ) પ્રશસ્તલેશ્યાનાં તિસ્રણામપિ ॥ ૧ ॥

તા એવાહ—તેજો-વદ્ધિઃ, તદ્વર્ણાલેશ્યા તેજોલેશ્યા લોહિતવર્ણેત્યર્થઃ, પદ્મ-

અધિકગન્ધ કૃષ્ણ-નીલ-એવં-કાપોત ઇન ત્રીન અપ્રશસ્ત લેશ્યાઓં કી
હોતી હૈ [ઉત્ત. અ. ૩૪ ગા. ૧૬] । “ જહ સુરભિ કુસુમગંધો—”
ઇત્યાદિ । જૈસી સુગન્ધિત ફૂલોં કી સુગન્ધ હોતી હૈ, અથવા-જૈસે-સુગ-
ન્ધ પીસે જાતે હુવે સુગન્ધિત દ્રવ્યોં સે આતી હૈ, ઇન સે સી અનન્તગુણ
અધિક સુગન્ધિ પીત-પદ્મ-એવં શુક્લ, ઇન ત્રીન પ્રશસ્ત લેશ્યાઓં કી
હોતી હૈ [ઉત્તર-અ ૩૪ ગા. ૧૭] ઇન મેં વર્ણ ઇન કે નામાનુસાર
હોતા હૈ—ઇસલિયે-કૃષ્ણલેશ્યા કૃષ્ણવર્ણ વાલી હોતી હૈ, નીલલેશ્યા
નીલવર્ણવાલી હોતી હૈ, એવમ્-કાપોતલેશ્યા ધૂમ્રવર્ણવાલી હોતી હૈ—૧
“ તઓ—” ઇત્યાદિ, ત્રીન લેશ્યાએં-તેજ, પદ્મ, ઓર-શુક્લ, યે ત્રીન લેશ્યાએં
જો-સુરભિગન્ધિ વાલી કહી ગઈ હૈં સો યે-સુરભિગન્ધવાલે પુદ્ગલોંવાલી
હોતી હૈં । કહા મી હૈ—“ જહ સુરભિ કુસુમગંધો—” ઇત્યાદિ, વર્ણ ઇન

જેવી દુર્ગંધ હોય છે, તેના કરતાં પણ અનન્તગણી અધિક દુર્ગંધ કૃષ્ણ, નીલ
અને કાપોત, આ ત્રણ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઓની હોય છે. ’ ઉ સૂ. ના ૩૪ માં
અધ્યયનની ૧૬ મી ગાથામાં આ વાતનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે.

“ જહ સુરભિકુસુમગન્ધો ” ઇત્યાદિ—

જેવી સુગંધીદાર ફૂલોની સુગંધ હોય છે, જેવી લસોડેલા સુગંધી દ્રવ્યોની
સુગંધ હોય છે, તેના કરતાં પણ અનન્તગણી સુગન્ધ તેલેલેશ્યા, પદ્મલેશ્યા
અને શુક્લ લેશ્યાની હોય છે. (ઉત્તર અ ૩૪ ગાથા ૧૭)

આ છએ લેશ્યાઓના વર્ણ તેમના નામાનુસાર હોય છે. જેમકે કૃષ્ણ
લેશ્યા શ્યામ વર્ણવાળી, નીલલેશ્યા નીલ વર્ણવાળી, કાપોત લેશ્યા ધૂમ્ર
વર્ણવાળી હોય છે “ તઓ ” ઇત્યાદિ—

તેલેલેશ્યા, પદ્મલેશ્યા અને શુક્લ લેશ્યાને સુરભિ ગંધવાળી કહી છે
કારણ કે તેઓ સુરભિ ગંધવાળા પુદ્ગલોવાળી હોય છે કહ્યું પણ છે કે—

“ જહ સુરભિ કુસુમગંધો ” ઇત્યાદિ—

છેદ્યા-પદ્યગર્ભવર્ણા જમલગર્ભસદૃશપીતવર્ણસ્પર્શાઃ, શુક્લવર્ણાછેદ્યા શુન્ધછેદ્યા
 । ૨ । एवं-પ્રથમ-દ્વિતીયસૂત્રવત્ વિસ્તૃત્તિસો છેદ્યાઃ અશુભશુભરૂપા દુર્ગતિગા-
 મિની સુગતિગામિન્યાધિ વિશેષણવિક્ષિપ્તાશ્વર્ત્વશ્ચમૃતૈ સ્પર્શ્યાઃ । તથા દુર્ગતિ-
 નરકતિર્યગ્નરૂપા ગમયન્તિ પ્રાણિનમિત્તિ દુર્ગતિગામિન્યઃ ૩, સુગતિ-મનુષ્યદેવગ
 તિરૂપા ગમયન્તિ પ્રાણિનમિત્તિ સુગતિગામિન્યઃ ૪ । एव सक्षिप्ता सख्येष-
 इतुत्वात् ५, एतद्विપरीता असक्लिप्ता । एवं વિપર્યયઃ સર્વત્ર વિગ્રેય, સ દ

મેં હનકે નામાનુસાર હોતા હૈ, जैसे-तेजोछेदया लादितवर्णवाली होती
 है क्यों कि-तेज नाम अग्नि है-अग्निका वर्ण लोहित होता है, अतः-
 यह छेदया भी उसी के वर्ण जैसी करी गई है । पद्यछेदया-पीतवर्णवाली
 होती है, क्यों कि-पद्यगर्भ पीतवर्णवाला होता है । पद्यशब्द से यहाँ
 पद्य का गर्भ लिया गया है । शुक्लवर्णवाली शुक्लछेदया होती है प्रथम
 द्वितीय सूत्र के प्रतिपादन की तरह तीन-२ छेदयाएँ अशुभरूप और
 शुभरूप, दुर्गति में छेजानेवाली-और सुगति में छेजानेवाली-संक्लिष्ट
 हेतुवाली-और असक्लिष्ट हेतुवाली तथा-अमनोज्ञ एवं-मनोज्ञ भावि
 विशेषणोंवाली होती है । ऐसा-प्रतिपादन इन दो सूत्रों से आगे के
 १२ सूत्रों द्वारा प्रतिपादन किया गया है-जो प्राणी को मनुष्य गतिरूप
 और देवगतिरूप शुभगतिमें छेजातीहै, वे छेदयाएँ सुगतिगामिनी और-जो
 जीव को नरक एवं-तिर्यग्गति में छेजाती है वे दुर्गतिगामिनी है । अशुभ-

આ ત્રણ દેશ્યાઓનાં વર્ણ પછી તેમનાં નામાનુસાર જ હોય છે જેમકે
 તેજ નામ અગ્નિનું છે અગ્નિને વર્ણ લોહિત (લાલ) હોય છે તેથી આ
 દેશ્યાને પણ લોહિત વર્ણવાળી કહી છે પદ્યદેશ્યા ખીળા વર્ણની હોય છે, પદ્યગર્ભ
 (કમળાનોગર્ભ) ખીળા વર્ણવાળો હોય છે ‘પદ્ય’ પદ્યથી અહીં પદ્યનો ગર્ભ
 ચૂકીત થયો છે શુક્લ દેશ્યા સદૃશ (શુક્લ) વર્ણવાળી હોય છે પહેલી ત્રણ
 દેશ્યાઓ અશુભ રૂપ દુર્ગતિમાં લઇ જનારી છે અને છેલ્લી ત્રણ દેશ્યાઓ
 શુભરૂપ સુગતિમાં લઇ જનારી છે જે દેશ્યાઓ છવને નરક અને તિર્યગ
 ગતિમાં લઇ જાય છે, તે દેશ્યાઓને દુર્ગતિ ગામિની કહે છે અને જે દેશ્યાઓ
 છવને મનુષ્યગતિ અને દેવગતિ રૂપ શુભગતિમાં લઇ જાય છે, તે દેશ્યાઓને
 સુગતિ ગામિની કહે છે પહેલી ત્રણ અશુભ દેશ્યાઓ છવના સક્લિષ્ટ પરિ-
 ણામના હેતુભૂત થાય છે તેથી તેમને સક્લિષ્ટ દેશ્યાઓ કહી છે અને છેલ્લી
 ત્રણ શુભ દેશ્યાઓ (તેઓ પદ્ય અને શુક્લ દેશ્યાઓ) છવના સક્લિષ્ટ
 પરિણામના હેતુભૂત થતી નથી, તેથી તેમને અસક્લિષ્ટ દેશ્યાઓ કહે છે.

સુવોધ એવ દ, અમનોજ્ઞા:-અમનોજ્ઞરસોપેતપુદ્ગલમયત્વાત્ ૭-૮ । અતિ શુદ્ધા
વર્ણત:-૯-૧૦ । અપ્રશસ્તા:-અશ્રેયસ્યોઽનાદેયા इत्यर्थः ૧૧-૧૨ । તથા-શીત
રુક્ષા. ૧૩, સ્નિગ્ધોષ્ણા: ૧૪, एते द्वे अपि स्पर्शत एवेति ॥ સૂ. ૮૮ ॥

પૂર્વ લેશ્યાવર્ણિતા:, સામ્પ્રતં લેશ્યા વિશિષ્ટમેવ મરણં ભવતીતિ મરણનિરૂપ-
ણાય સૂત્રચતુષ્ટયમાહ-

મૂલમ્--તિવિહે મરણે પળણત્તે, તં જહા-વાલમરણે, પંડિય-
મરણે, વાલપંડિયમરણે ૧ । વાલમરણે તિવિહે પળણત્તે, તં જહા

લેશ્યાઈ જીવકો સંક્રિષ્ટ પરિણામ કા હેતુભૂત હોતી હૈ ઓર-શુભલેશ્યાઈ
અસંક્રિષ્ટ પરિણામ કા હેતુભૂત નહીં હોતી હૈ । અમનોજ્ઞ ઓર મનોજ્ઞ
ઈન્હેં હસ કારણ કહા ગયા હૈ-કિ અમનોજ્ઞ રસોપેત પુદ્ગલમય હોતી હૈ
ઓર યે મનોજ્ઞ રસોપેત પુદ્ગલમય હોતી હૈ । અવિશુદ્ધતા-ઓર-વિશુ-
દ્ધતા, ઇનમેં વર્ણ કી અપેક્ષા જાનની ચાહિયે । અપ્રશસ્તતા-ઓર-પ્રશ-
સ્તતા-ઇનમેં-અશ્રેયસી ઓર-શ્રેયસી હોને કે કારણ હૈ । અર્થાત્-પૂર્વ
કી કૃષ્ણાદિ ૩ અનાદેય-[ત્યાજ્ય] હૈ, ઓર ઉત્તર કી ત્રીન તેજોલેશ્યા
આદિ આદેય ઉપાદેય હૈ । શીતરુક્ષતા ઓર સ્નિગ્ધઊષ્ણતા ઇનમેં સ્પર્શ
કી અપેક્ષા સે કહી ગઈ જાનની ચાહિયે ॥ સૂ. ૮૮ ॥

એ જ પ્રમાણે પહેલી ત્રણ અશુભ લેશ્યાઓ અમનોજ્ઞ, અવિશુદ્ધ અને અપ્ર-
શસ્ત હોય છે બીજી છેલ્લી ત્રણ લેશ્યાઓ મનોજ્ઞ, વિશુદ્ધ અને પ્રશસ્ત
હોય છે. પહેલી ત્રણ અશુભ લેશ્યાઓને અમનોજ્ઞ કહેવાતું કારણ એ છે કે
તે ત્રણ લેશ્યાઓ અમનોજ્ઞ રસોપેત પુદ્ગલમય હોય છે, અને છેલ્લી ત્રણ શુભ
લેશ્યાઓ મનોજ્ઞ રસોપેત પુદ્ગલમય હોવાને કારણે તેમને મનોજ્ઞ કહી છે.

પહેલી ત્રણ અશુભ લેશ્યાઓમાં વર્ણની અપેક્ષાએ અવિશુદ્ધતા સમજવી
અને છેલ્લી ત્રણ શુભ લેશ્યાઓમાં વર્ણની અપેક્ષાએ વિશુદ્ધતા સમજવી.
પહેલી ત્રણ લેશ્યાઓમાં અપ્રશસ્તા કહી છે અને છેલ્લી ત્રણ લેશ્યાઓમાં
પ્રશસ્તતા કહી છે પહેલી ત્રણ લેશ્યાઓ એ શ્રેયસી હોવાથી એટલે કે કૃષ્ણાદિ
ત્રણ લેશ્યાઓ અનાદેય (ત્યાજ્ય) હોવાથી તેમને અપ્રશસ્ત કહી છે અને
તેને લેશ્યા, પદ્મ લેશ્યા અને શુક્લ લેશ્યા આદિ લેશ્યાઓ આદેય-ઉપાદેય
હોવાથી તેમને પ્રશસ્ત કહેવામાં આવેલ છે.

પહેલી ત્રણ લેશ્યાઓમાં શીત રુક્ષતા અને છેલ્લી ત્રણ લેશ્યાઓમાં સ્નિગ્ધ
ઊષ્ણતા સ્પર્શની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે ॥ સૂ. ૮૮ ॥

ઠિયલેસે, સકિલિદ્વલેસે પજ્જવજાયલેસે । ૨ । પઢિયમરણે તિવિહે
પણ્ણત્તે, તં જહા ઠિયલેસે, અસકિલિદ્વલેસે, પજ્જવજાયલેસે । ૩ ।
વાલપઢિયમરણે તિવિહે પણ્ણત્તે, ત જહા ઠિયલેસે, અસકિલિ
દ્વલેસે અપજ્જવજાયલેસે । ૪ ॥ સૂ૦ ૮૧ ॥

છાયા-ત્રિવિધં મરણં મહ્નપ્ત, તથા-વાલમરણ, પઢિતમરણ, વાલપઢિતમ
રણમ્ । ૧ । વાલમરણ ત્રિવિધં મહ્નપ્તં, તથા-સ્થિતલેશ્ય સખિલ્લલેશ્ય, પર્યવ
જાતલેશ્યમ્ । ૨ । પઢિતમરણ ત્રિવિધ મહ્નપ્તં, તથા-સ્થિતલેશ્ય, અસંખિલ્લ
લેશ્યમ્ પર્યવજાતલેશ્યમ્ । ૩ । વાલપઢિતમરણં ત્રિવિધ મહ્નપ્ત, તથા-સ્થિ
તલેશ્ય, અસંખિલ્લલેશ્ય, અપર્યવજાતલેશ્યમ્ ૪ ॥ સૂ૦ ૮૧ ॥

અય સૂત્રકાર લેહ્યા ઘળીનકેણાવ મરણ કા નિરૂપણ કરતે હે । કયો
ફિ-મરણ લેહ્યા વિશિષ્ટ હી હોતા હે “ તિવિહે મરણે પણ્ણત્તે ” इत्यादि,

સૂત્રાર્થ-મરણ ત્રીન પ્રકારકા કહા ગયાહૈ જૈસે વાલ મરણ, પઢિત
મરણ, ઓર વાલપઢિત મરણ, ૧ इनमें वालमरण भी तीन प्रकार का
कहा गया है, जैसे स्थितिलेश्य, सखिल्ललेश्य, और पर्यवजातलेश्य २
पण्डितमरण भी तीन प्रकार का होता है, जैसे स्थितिलेश्य, असंखिल्ल
लेश्य, और पर्यवजातलेश्य । वालपण्डित मरण भी तीन प्रकार का कहा
गया है, स्थितिलेश्य असंखिल्ललेश्य और अपर्यवजातलेश्य ।

દેશ્યાઓનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર મરણનું નિરૂપણ કરે છે
મરણ દેશ્યાવિશિષ્ટ જ હોય છે આ સંબંધને જાનુલક્ષીને દેશ્યાનું નિરૂપણ
કર્તા બાદ હવે મરણનું નિરૂપણ ચાર સૂત્રો દ્વારા કરવામાં આવે છે

“ તિવિહે મરણે પણ્ણત્તે ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ-મરણ ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) જાલ મરણ (૨) પઢિત મરણ અને
(૩) જાલ પઢિત મરણ

જાલ મરણના પણ ત્રણ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) સ્થિતિ લેશ્ય, (૨) સ
ખિલ્લ લેશ્ય અને (૩) પર્યવજાત લેશ્ય

પઢિત મરણના પણ ત્રણ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) સ્થિતિ લેશ્ય, (૨)
અસંખિલ્લ લેશ્ય અને (૩) પર્યવજાત લેશ્ય.

વાલ પઢિત મરણના પણ ત્રણ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) સ્થિતિ લેશ્ય,
(૨) અસંખિલ્લ લેશ્ય અને (૩) અપર્યવજાત લેશ્ય

ટીકા--‘ તિવિહે મરણે ’ इत्यादि । मरणं, त्रिविधं, तदेवाह-बालमरणं, बालः-अज्ञस्तद्वद् यो वर्त्तते विरतिसाधकविवेकविकलत्वात् स बालः असंयत इत्यर्थः, तस्य मरणं बालमरण अस्मिन् मरणे व्रतप्रत्याख्याननादिकं न भवति । पण्डितमरणं, पण्डितः-सदसद्विवेकवान् विरतिकलेन फलवद्विज्ञानवत्त्वात् ज्ञाततत्त्वः संयत इत्यर्थः, तस्य मरणं पण्डितमरणम्, इदं व्रतप्रत्याख्याननादि सद्भावच्छब्दस्थ-यतीनां भवति । बालपण्डितमरणं, बालः-अविरतः, पण्डितः-विरतः, उभयरूप-

ટીકાર્થે इस मरणके प्रतिपादक ४ सूत्रहैं, बाल शब्दसे यहां अज्ञानी लिया गया है इस अज्ञानी जैसा जो होता है वह मरण है । अर्थात् जीव जबतक विरति साधक विवेकसे रहित बना रहता है तब तक बाल असंयत रहता है और इसीसे उसे अज्ञानी कहा गया है । इस अज्ञ अवस्था का बाल-दशा का जो मरण है वह बालमरण है, इस मरण में अज्ञानी जीव के व्रत प्रत्याख्यान आदि नहीं होते हैं । विरतिरूप फल से फलवाला होता है पण्डितमरण सत् असत् का विवेक जिसे होता है वह पण्डित है इसका ज्ञान पण्डित का ज्ञान विरतिरूप फल से सफल होता है, तत्त्वों का इसे ज्ञान हो जाता है अतः-यह संयतावस्था से युक्त हो जाता है ऐसे संयतरूप पण्डित का जो मरण है वह पण्डित मरण है । यह पण्डित मरण व्रत, प्रत्याख्यान आदि के सद्भाव से छद्मस्थ मुनियों को होता है तथा-बालपण्डित मरण देशविरति श्रावक को होता है,

ટીકાર્થે-મરણનુ પ્રતિપાદન કરતાં ચાર સૂત્રો અહીં આપ્યા છે બાલ શબ્દથી અજ્ઞાની જીવ ગૃહીત થયો છે આ અજ્ઞાન અવસ્થા યુક્ત જીવના મરણને બાલ-મરણ કહે છે આ કથનનો બાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—

જીવ ત્યાં સુધી વિરતિસાધક વિવેકથી રહિત જ રહે છે, ત્યાંસુધી તે બાલ (અસંયત) જ રહે છે, અને તે કારણે જ તેને અજ્ઞાની કહ્યો છે આ અજ્ઞ (જ્ઞાન રહિત) અવસ્થા રૂપ બાલદશા સંપન્ન જીવનું જે મરણ છે તેને બાલમરણ કહે છે. આ મરણથી મોતને ભેટતા એવા અજ્ઞાની જીવ દ્વારા વ્રત, પ્રત્યાખ્યાન આદિની આરાધના થતી નથી. વિરતિ રૂપ ફલ દ્વારા જે મરણ થાય છે, તે મરણને પડિત મરણ કહે છે જે માણસમાં સારાં નરસાંને વિવેક હોય છે, તેને પડિત કહે છે તે પડિતનું જ્ઞાન વિરતિરૂપ ફળથી સફળ બને છે તે તત્ત્વોનું જ્ઞાન થઈ બાય છે, તેથી તે સંયતાવસ્થાથી યુક્ત થઈ બાય છે એવા સંયતરૂપ પડિતનું જે મરણ છે તેને પડિત મરણ કહે છે. વ્રત, પ્રત્યાખ્યાન આદિના સદ્ભાવમા છદ્મસ્થ મુનિઓ આ પ્રકારનું પડિત મરણ પ્રાપ્ત કરે છે. દેશવિરત શ્રાવકના મરણને બાલ પડિત મરણ કહે છે. તે દેશવિરત

તાલ્ પાલપણ્ડિતઃ-સ યતાસ યત્ત દેશવિરતિશ્રાવક इत्यथ तस्य मरणं बालपण्डितं समरणम् । यदा-पालं सर्वविरतिपरिणामामानात्, पण्डित-स्थूलप्राणातिपातादि विरमणात्, बालं च तत् पण्डितं चेति बालपण्डितं तद् योगात् मरणं बालपण्डितमरणम् । इदं देशविरतिमतः भावकस्य भवतीति । १ ।

अयं बालमरणं कथयति 'बालमरणे इत्यादि, बालमरणं प्रविष्टं, तदेवाह स्थितले इयम्, स्थिता अस्मिता अविशुध्यमाना असंश्लिश्यमाना च छेदया कृष्णादिर्पस्मिन् तद्यथोक्तम् । स निष्कले इयं स विष्णु-संश्लिश्यमाना सफलेशमागच्छन्ती लेख्या च स्मिन् मरणे तद्यथोक्तम् । पर्यवसातले इयं पयसाः परिश्रव्यात् विशुद्धिर्निशेषा'वाता देशविरत आवक स्थावर हिंसा से अविरत होता है और असहिंसा से विरत होता है । इसीलिये विरताविरत की अपेक्षा लेकर देशविरत आवक का मरण बालपण्डित मरण कहा गया है, अथवा-देशविरत आवक में सर्व विरति का अभाव रहता है, अतः इस अपेक्षा वह बाल है तथा-स्थूलप्राणातिपात आदि से विरमण रहता है इसलिये-वह पण्डित है बाल होकर भी इस तरह वह पण्डित है, इस बात पण्डित के योग से मरण को भी बालपण्डित मरण कह दिया गया है । बालमरण के प्रकारों को दिखाते हुए सूत्रकार कहते हैं कि-स्थिति छेदय आदि जो तीन भेद बालमरण के कहे गये हैं उनका तात्पर्य इस प्रकार से है-जिस मरण में कृष्णादिलेख्या अविशुध्यमान और असंश्लिश्यमान होती है ऐसा वह मरण स्थितलेख्या बालमरण है २ जिस मरण में लेख्यासकलेश भाव को प्राप्त करती रहती है ऐसा वह मरण

આવક સ્થાવર દ્વિત્યાથી અવિરત હોય છે અને ત્રણદ્વિત્યાથી વિરત હોય છે, તે કારણે વિરતાવિરતની અપેક્ષાએ દેશવિરત આવકના મરણને બાલપણ્ડિત મરણ કહે છે । અથવા દેશવિરતિ બુદ્ધ આવકમાં 'સર્વ' વિરતિનો અભાવ રહે છે તેથી આ અપેક્ષાએ વિચારવામાં આવે તો તે બાલજ છે પરંતુ સ્થૂલ પ્રાણાતિપાત આદિ તે કરતા નથી, તેથી તે પણ્ડિત છે-બાલ હોવા છતાં પણ આ રીતે તે પણ્ડિત છે આ બાલ-પણ્ડિતના યોગથી તેના મરણને પણ બાલ પણ્ડિત મરણ કહે છે । ૧ ।

હવે બાલ મરણના સ્થિતિ લેશ્ય આદિ ત્રણ ભેદોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે જે મરણમાં કૃષ્ણાદિ લેશ્યા અવિશુદ્ધમાન અને અસંશ્લિષ્યમાન હોય છે તે મરણને 'સ્થિતિ લેશ્ય બાલમરણ' કહે છે । ૨ ।

જે મરણમાં લેશ્યા સકલેશ આવને પ્રાપ્ત કરવી રહે છે, એવા મરણને 'લેશ્યાસકલેશ બાલમરણ' કહે છે જે મરણમાં અતિ સમય લેશ્યાની

પ્રતિસમયમુત્પન્ના યસ્યાં સા પર્યવજાતા વિશુદ્ધ્યા વર્ધમાનેત્યર્થઃ, તથાવિધા લેશ્યા યસ્મિન્સ્તત્તથોક્તમ્ ૩ । અત્રાયં ભાવઃ—કૃષ્ણાદિલેશ્યઃ સન્ યદા કૃષ્ણાદિલેશ્યેવ નારકાદિપૃત્પદ્યતે તદા પ્રથમં સ્થિતલેશ્યાભિધં વાલમરણં ભવતિ ૧ । યદા નીલાદિલેશ્યઃ સન્ કૃષ્ણાદિલેશ્યેપ્રત્પદ્યતે તદા દ્વિતીયં સંકિલ્પલેશ્યાભિધં વાલમરણં ભવતિ ૨ । યદા પુનઃ કૃષ્ણલેશ્યાદિઃ સન્ નીલકાપોતલેશ્યેપૃત્પદ્યતે તદા તૃતીયં પર્યવજાતલેશ્યાભિધં વાલમરણં ભવતિ, ઉક્તં ચાન્ત્યદ્વયસંવાદિ ભગવત્યામ્, યદુત—

સંકિલ્પલેશ્યા વાલમરણં હૈ ૨ જિસ મરણ મેં પ્રતિસમય વિશુદ્ધ વિશેષ ઉત્પન્ન હુવે હોં એસા વહ મરણ પર્યવજ્ઞાનલેશ્ય વાલમરણં હૈ યહ પર્યવ શબ્દ સે વિશુદ્ધિ વિશેષ ગૃહીત હુવે હૈં । તાત્પર્ય એસા હૈ કિ જિસ મરણ મેં તથાવિધલેશ્યા વિશુદ્ધિ સે વર્ધમાન હૈ, એસા વહ મરણ પર્યવજ્ઞાન વાલમરણં હૈ ૨ યહાં ભાવ એસા હૈ—કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાલા હુવા કોઈ જીવ જષ કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાલે હી નારકાદિકોં મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, તવ ઉસકા વહ મરણ પ્રથમ સ્થિતલેશ્ય નામવાલા વાલમરણં કહલાતા હૈ ૧—જષ નીલાદિ લેશ્યા વાલા હુવા કોઈ જીવ કૃષ્ણાદિલેશ્યાવાલોં મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ તવ ઉસકા વહ મરણ દ્વિતીય સંકિલ્પ લેશ્ય નામ કા વાલ-મરણં કહલાતા હૈ ૨ ઓર જષ પુનઃ કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાલા હુવા નીલ એવમ્ કાપોત લેશ્યાવાલોં મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, તવ ઉસકા વહ મરણ તૃતીય પર્યવજાતલેશ્ય નામક વાલમરણં કહલોતા હૈ । ભગવતી મેં એસા

વિશુદ્ધિ વિશેષ ઉત્પન્ન થતી રહે છે, એવા મરણુને “ પર્યવજ્ઞાન લેશ્ય બાલ મરણુ ” કહે છે. આ પર્યવ શબ્દથી વિશુદ્ધિ વિશેષ ગૃહીત થયેલ છે આ કથનનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—જે મરણુમા તથાવિધ લેશ્યા વિશુદ્ધિની તરફ વર્ધમાન થતી જ રહે છે, એવા મરણુને ‘ પર્યવજ્ઞાન બાલમરણુ ’ કહે છે । ૩ ।

આ વાતને સૂત્રકાર હવે દેશાન્તો દ્રાગ સમન્નવે છે—(૧) કૃષ્ણાદિ લેશ્યાથી યુક્ત એવો કેઈ જીવ જ્યારે કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળા નારકાદિકોમા ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તેના તે મરણુને “ સ્થિતિ લેશ્ય બાલમરણુ ” કહે છે. (૨) જ્યારે નીલાદિ લેશ્યાથી યુક્ત થયેલો કેઈ જીવ કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળાઓમાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તેના મરણુને ‘ સંકિલ્પ લેશ્ય બાલમરણુ ’ કહે છે. (૩) જ્યારે કૃષ્ણાદિ લેશ્યાથી યુક્ત થયેલો જીવ નીલ અને કાપોત લેશ્યાઓવાળામા ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તેના તે મરણુને ‘ પર્યવજાત લેશ્ય બાલમરણુ ’ કહે છે.

ભગવતી સૂત્રમા આ વિષયને અનુલક્ષીને એવું જ પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે સૂત્રકાર અહીં સવાદ રૂપે તે વાત પ્રકટ કરે છે—

“ से नूनं भंते । कण्ठछेसे नीलछेसे जाव सुक्छेसे भविता काठलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ ? हुता गोयमा । से केणट्ठेण भंते ! एवं पुब्बइ ? गोयमा ! लसा ठाणेसु सक्किस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा काठलेस्स परिणमइ, परिणमिता काठलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ ” इति ।

छाया—अथ मून भइन्त ! कण्ठछेइयो नीलछेइयो यावत् सुक्छेइयो भूत्वा कपोतछेइयेषु नैरयिकेपूरपपत्ते ? इन्त ! गौतम ! तत् केनार्येन भइन्त ! एव मुच्यते ? गौतम ! लेइयास्थानेषु सक्किइयमानेषु वा विसुच्यमानेषु वा कापो तछेइय (मरण) परिणमति, परिणम्य कपोतलेइयेषु नैरयिकेपूरपपत्ते ॥ एतदनुसारेण पण्डितमरण-पालपण्डितमरणरूप सूत्रयोरपि स्थितछेइयादिविभागो विज्ञेय इति । तत्र पण्डितमरणे लेइयायाः सक्किइयमानता नास्ति सयत्त्वादेवेत्यय बाळमरणात् पण्डितमरणे विज्ञेयः । पालपण्डितमरणे तु लेइयायाः सक्किइयमानता विसुच्यमानता च नास्ति मिथत्वादेवेत्यय मरणव्याप्तिज्ञेय । किमुक्तं

ही कहा है—“ से नूनं भंते । कण्ठछेसे नीलछेसे जाव सुक्छेसे भविता काठलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ हुता ? गोयमा ? से केणट्ठेण भंते ! एवं पुब्बइ ? गोयमा ? लेसाठाणेसु सक्किस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा काठलेस्स परिणमइ परिणमिता काठलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ ” इति । इस कथन के अनुसार पण्डितमरण और पालमरण एव पण्डितमरण के सूत्रों में स्थितछेइय आदि विभाग किया गया जानना चाहिये पालमरण की अपेक्षा पण्डितमरण में लेइया की सक्किइय मानता नहीं है । क्यों कि यह मरण सयत् को ही होता है, अतः पालमरण से पण्डितमरण में विज्ञेयता है । पालपण्डितमरण में तो लेइयो की सक्किइयमानता और-विसुच्यमानता नहीं है, क्यों कि-बह

“ से नूनं भंते । कण्ठछेसे नीलछेसे जाव सुक्छेसे भविता काठलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ ? हुता, गोयमा ! से केणट्ठेण भंते ! एवं पुब्बइ ? गोयमा ! लेसाठाणेसु सक्किस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा काठलेस्स परिणमइ परिणमिता काठलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ ” ॥

आ कथन अनुसार पण्डित मरण अने पालमरण अने पण्डितमरण (पाल पण्डित मरण) ना सूत्रेमा स्थितछेइय आदि प्रसारे तु कथन एव अम । तु पालमरणमा लेइयानी सक्किइयमानता इदी ऐ परन्तु पण्डितमरणमा लेइयानी सक्किइयमानता नथी कारण के सयत् एव ए पण्डित मरण मास इरे ऐ, तेथी पालमरण इत्था पण्डित मरणमा आ प्रसारेनी विशिष्टता इदी ऐ पालपण्डित मरणमा तो लेइयानी सक्किइयमानता अने विसुच्यमानता होती नथी कारण के ते मरण मिथत्त्व दोष ऐ उरमुत्ता ऐ मरण इत्ता

મરણ : ચાલપણ્ડિતમરણં તુ સંયતાસંયતસ્ય શ્રાવકસ્ય મરણં, તેન તસ્મિન્ દેશ સંયતત્વેન સંવિલિચ્ચમાનલેચ્યાયા અભાવઃ, અસંયતત્વેન ચ વિશુદ્ધમાનલેચ્યાયા અભાવો મરણં મિશ્રત્વાદિત્યયં ચાલમરણાત્ પણ્ડિતમરણાચ્ચાત્ર વિશેષ ઇતિ ૪ ॥ સૂ. ૮૯ ॥

પૂર્વે મરણં પ્રોક્તં, મૃતસ્ય ત્વપરજન્મનિ ચાદ્યસ્ય ચત્વસ્તુત્રિકં ચસ્મિન્ નિષ્પદ્યતે તસ્ય તદ્વસ્તુત્રયં તસ્મૈ તદર્થ સમ્પદ્યમાનં દર્શયિતું સૂત્રદ્વયમાદ—

મૂલમ્--તઓ ઠાણા અવ્વવસિયસ્સ અહિયાણ અસુહાણ અક્ખમાણ અણિસ્સેયસાણ અણાણુગામિયત્તાણ ભવંતિ, તં જહા--સે ણં મુંડે મરણં અગારાઓ અણગારિયં પવ્વહણ ણિગ્ગંથે પાવયણે સંકિણ કંઠિણ વિત્તિગિચ્છિણ મેયસમાવન્ને કલુસસમાવન્ને નિગ્ગંથં પાવયણં ણો સદ્દહણ ણો પત્તિયહ ણો રોણહ તં પરિસ્સહા અભિજુજિય ૨ અભિભવંતિ, ણો સે પરિસ્સહે અભિજુજિય ૨ અભિભવહ ૧ । સે ણં મુંડે મરણં અગારાઓ અણગારિયં પવ્વહણ પંચહિં મહવ્વહણિં સંકિણ જાવ કલુસસમાવન્ને પંચમહવ્વહણિં નો સદ્દહણ જાવ ણો સે પરિસ્સહે અભિજુજિય ૨

મરણ મિશ્રરૂપ હોતા હૈ ચહી હસમેં દો મરણોં સે વિશેષતા હૈ । તાત્પર્ય કહને કા એસા હૈ કિં ચહ ચાલપણ્ડિતમરણ સંયતાસંયત (શ્રાવક) કો હોતા હૈ, હસલિચે-હસ મરણ મેં દેશસયત કે હોને કે કારણ સંવિલિચ્ચમાન લેચ્યા કા અભાવ રહતા હૈ, ઓર અસંયત હોને કે કારણ વિશુદ્ધમાન લેચ્યા કા અભાવ રહતા હૈ અતઃ મિશ્રરૂપ હોને સે હસમેં ચાલમરણ ઓર પણ્ડિતમરણ સે વિશેષતા હૈ-- ॥ ૪ ॥ સૂ. ૮૯ ॥

આ મરણમાં એટલી જ વિશેષતા છે આ કથનનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે— સંયતાસંયત શ્રાવકનું મરણ જ બાલપણ્ડિત મરણરૂપ હોય છે આ મરણથી મરનાર વ્યક્તિમાં દેશસયતતા હોવાને લીધે સંવિલિચ્ચમાન લેચ્યાનો અભાવ રહે છે અને અસંયતતા હોવાને કારણે વિશુદ્ધમાન લેચ્યાનો અભાવ રહે છે આ રીતે તે મિશ્રરૂપ હોવાથી તેમાં બાલમરણ અને પંડિતમરણ કરતાં વિશેષતા હોય છે. ॥ સૂ. ૮૯ ॥

અભિભવહ । સે ણ મુદે ભવિત્તા અગારાઓ અણગારિય પઘ્વહ
છહિં જીવનિકાપહિં જાવ અભિભવહ ૩ ॥૧॥

તઓ ઠાળા ધિવસિયસ્સ હિયાપ જાવ આણુગામિયત્તાપ
ભવતિ, ત જહા-સે ણ મુદે ભવિત્તા અગારાઓ અણગારિય
પઘ્વહપ ણિગંથે પાવચણે ણિસ્સવિક્કપ ણિવ્વકલ્લિપ જાવ નો
કલ્લસસમાવસે ણિગથ પાવચણ સઘ્વહ પત્તિયહ રોપહ સે
પરિસ્સહે અમિજુજિય ૨ અભિભવહ, નો ત પરિસ્સહા અમિજુ
જિય ૨ અભિભવતિ ૧ । સે ણ મુદે ભવિત્તા અગારાઓ અણ
ગારિય પઘ્વહપ સમાણે પચ્છહિં મહઠ્ઠવપહિં ણિસ્સકિપ ણિક્ક
લ્લિપ જાવ પરિસ્સહે અમિજુજિય ૨ અભિભવહ, નો ત પરિ
સ્સહા અમિજુજિય ૨ અભિભવતિ ૨ સે ણ મુદે ભવિત્તા અગા
રાઓ અણગારિય પઘ્વહપ છહિં જીવનિકાપહિં ણિસ્સકિપ જાવ
પરિસ્સહે અમિજુજિય ૨ અભિભવહ, નો ત પરિસ્સહા અમિજુ
જિય ૨ અભિભવતિ ૩ ॥ સુ. ૧૭ ॥

છાયા—પ્રીણિ સ્થાનાનિ અમ્પવસિતસ્ય અહિતાય અમુત્ત્વાય અધ્ધમાય અનિ
શ્વેપસાય અનાનુગામિક્ત્વાયૈ મશન્તિ, ઇથથા સ સદ્ધ મુણ્ડો મૂત્ત્વા અગારાત્ મન

હમ પ્રકાર સે મરણ કે સમ્પન્ન મેં કયન કિયા અપ સૂત્રકાર હસ
નચ્ચે ૯૦ સૂત્ર મેં કથિત ત્રીન સ્થાન કિનકે લિયે અહિત કર આદિ
વિશેષણોવાળે હોતે હેં ઓર કિનકેલિયે હિતકર આદિ વિશેષણો
વાળે હોતે હેં પેસા કયન કરતે હેં 'તઓ ઠાળા અમ્પવસિ પસ્સ અહિયાપ
અમુત્ત્વાપ' 'ઇત્યાદિ ।

સુમાર્થ—ત્રીન સ્થાન અન્યથસિત - ઇથમહીન જીવ કો અહિત

મરણનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું આ નેતુમાં સૂત્રમાં પ્રતિપાદિત ત્રણ
સ્થાનો કેને માટે અહિતકર ડોપ છે અને કેને માટે હિતકર ડોપ છે
તેનુ કયન કરે છે- 'તઓ ઠાળા અમ્પવસિયાસ અહિયાપ અમુત્ત્વાપ' 'ઇત્યાદિ—

સૂત્રાથ—નીચે જેનું પ્રતિપાદન કરવામાં આ મુ છે એવાં ત્રણ સ્થાન (કારણો)
અન્યથસિત (ઇથમહીન) એવનું અહિત કરનારાં અનુગ કરનારાં, અમ્પ

ગારિતાં પ્રવ્રજિતો નૈર્ગ્રન્થે પ્રાવચને શક્તિઃ કાક્ષિતઃ વિચિકિત્સિતઃ । મેદસમાપન્નઃ કલુપસમાપન્નઃ નૈર્ગ્રન્થં પ્રવચનં નો શ્રદ્ધાતિ નો પ્રત્યેતિ નો રોચયતિ તં પરીપદ્ધા અભિયુજ્ય ૨ અભિભવન્તિ, (કિન્તુ) નો સ પરીપદ્ધાન્ અભિયુજ્ય ૨ અભિભવતિ ૧ । સ સ્વલુ મુણ્ડો ભૂત્વા અગારાત્ અનગારિતા પ્રવ્રજિતઃ પશ્ચમુ મહાવ્રતેષુ શક્તિઃ યાવત્ કલુપસમાપન્નઃ પશ્ચમહાવ્રતાનિ નો શ્રદ્ધાતિ યાવત્ નો સ પરીપદ્ધાન્ અભિયુજ્ય ૨ અભિભવતિ ૨ । સ સ્વલુ મુણ્ડો ભૂત્વા અગારાત્ અનગારિતાં પ્રવ્રજિતઃ પદ્મસુ જીવનિકાયેષુ યાવદ્ અભિભવતિ ૩ । ૧ ।

કે લિયે, અસુખ કે લિયે, અસમર્થતા કે લિયે ઓર - અશુભાનુ-બન્ધ કે લિયે હોતે હૈ । વે ત્રીન સ્થાન હસ પ્રકાર સે હૈ—જૈસે કોઈ પુરુષ મુણ્ડિત હો કરકે—અગારાવસ્થા સે અનગારાવસ્થા કો ધારણ કર લેતા હૈ, પરન્તુ—વહ નૈર્ગ્રન્થ પ્રવચન મેં શક્તિ હૈ, કાક્ષિત હૈ, વિચિકિત્સિત હૈ, મેદસમાપન્ન હૈ ઓર નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન કો શ્રદ્ધા નહીં કરતા હૈ—ઉસી પ્રતીતિ મેં નહીં લાતા હૈ—અપની રુચિ કા વિષય ઉસે નહીં બનાતા હૈ, તો એસે અનગાર કો દ્રવ્યલિંગી સાધુ કો પરીપદ્ધા ઉસે આકરકે આકુલ વ્યાકુલ કર દેતે હૈ ॥ ૧ ॥ યદિ કોઈ પુરુષ મુણ્ડિત હોકર અગારાવસ્થા સે અનગારાવસ્થા કો ધારણ કર લેતા હૈ, પરન્તુ યદિ વહ પાંચ મહા-વ્રતો મેં શક્તિ યાવત્ કલુપસમાપન્ન હૈ ઓર પાંચ મહાવ્રતો કો શ્રદ્ધા કો દૃષ્ટિ સે નહીં દેખતા હૈ યાવત્ ઉન્હેં અપની રુચિકા વિષય નહીં બનાતા હૈ, તો એસે ઉસ અનગાર કો દ્રવ્યલિંગી સાધુકો પરીપદ્ધા આ આ કરકે આકુલવ્યાકુલ કર દેતે હૈ ૨ ઉસી પ્રકાર સે મુણ્ડિત અગારાવસ્થા સે અનગારાવસ્થા મેં પ્રવ્રજિત હુવા કોઈ પુરુષ ષહ જીવ નિકાય કે વિષયમેં શક્તિ યાવત્—કલુષ સમાપન્ન હૈ ઓર ઉસ નિકાય

ર્થતા ઉત્પન્ન કરનારા અને અશુભાનુબન્ધ કરનારા થઈ પડે છે. તે ત્રણ સ્થાન આ પ્રમાણે છે—

કોઈ પુરુષ મુડિત થઈને અગારાવસ્થાનો પરિત્યાગ કરીને અણુગારાવસ્થા ધારણ કરે છે, પરન્તુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પ્રત્યે શક્તિ, કાક્ષિત, વિચિકિત્સિત, લેદ સમાપન્ન અને કલુષ સમાપન્ન છે, અને નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પ્રત્યે શ્રદ્ધા નથી, તેને પોતાની પ્રતીતિમાં લાવતો નથી અને તેમાં રુચિ રાખતો નથી, તો એવો અણુગાર—દ્રવ્યલિંગી સાધુ આવી પડેલા પરીપદ્ધાથી આકુલવ્યાકુલ થઈ જાય છે

(૨) કોઈ પુરુષ મુડિત થઈને—ગૃહસ્થાવસ્થાના ત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થા ધારણ કરવા છતાં પણ પાપ મહાવ્રતોમાં શક્તિ, કાક્ષિત, વિચિકિત્સિત લેદ સમાપન્ન અને કલુષ સમાપન્ન થાય છે, તથા પાપ મહાવ્રતો પ્રત્યે શ્રદ્ધાની નજરે ભેતો નથી, તેમને પોતાની પ્રતીતિનો વિષય બનાવતો નથી અને તેમાં રુચિ રાખતો નથી, તો તે અણુગાર દ્રવ્યલિંગી સાધુ તેના ઉપર આવી પડતા પરીપદ્ધાથી આકુલવ્યાકુલ થઈ જાય છે

એ જ પ્રકારે ગૃહસ્થાવસ્થાના પરિત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થામાં પ્રવ્રજિત થયેલ કોઈ સાધુ જ્યારે છકાયના છવોના વિષયમાં શક્તિ, કાક્ષિત આદિ

મીઠિ સ્થાનાનિ વ્યવસિતસ્ય દિશય યાવત્ આનુગામિકથાયૈ મવન્તિ, સય્યા-
-સ સ્વલ્લ મુખ્દો મૂસ્વા અગારાત્ અનગારિતાં પ્રવ્રજિતો નૈર્ગ્ન્ય પ્રાવચને નિશ્ચક્ષિતઃ
નિષ્કાક્ષિતઃ યાવત્ નો કલ્પસમાપસ્ય નૈર્ગ્ન્ય પ્રાવચનં શ્રદ્ધાભિતિ પ્રત્યેતિ રોષ
યતિ સ પરીપદાન્ અમિયુજ્ય ૨ અમિમવતિ, (કિન્તુ) મો તં પરીપદા અમિયુજ્ય
૨ અમિમવન્તિ ૧ । સ સ્વલ્લ મુખ્દો મૂસ્વા અગારાત્ અનગારિતાં પ્રવ્રજિતઃ સન્
પદ્મમ્ મહાપ્રતેષુ નિશ્ચક્ષિતઃ નિષ્કાક્ષિત યાવત્ પરીપદાન્ અમિયુજ્ય ૨ અમિ
વતિ, નો તં પરીપદા અમિયુજ્ય ૨ અમિમવન્તિ ૨ । સ સ્વલ્લ મુખ્દો મૂસ્વા અગારાત્

કો યદિ ઘડ અદ્ધા કો દષ્ટિ સે નદીં દેક્ષતા હૈ, યાવત્-ઉસે અપની
રુચિ કા વિપય નહીં પનાતા હૈ, તો એસે ઉસ દ્રવ્યલિંગિસાધુ કો પરીપદ
આમા કરકે આકુલ-વ્યાકુલ કર વેતે હૈ-૩-૧

ત્રીન સ્થાન વ્યવસિત (વચમપાલે) જીવકો દિશકે લિયે યાવત્-અનુ
ગામિતાકે લિયે હોતે હૈ, વે ત્રીન સ્થાન હસ પ્રકારસે હૈ-જૈસે કોઈ મનુષ્ય
મુખિત હો કરકે અગારાવસ્થા સે અનગારાવસ્થા મેં પ્રવ્રજિત હો જાતા
હૈ ઓર-નિઃશક્ષિત આદિ વિશેષણોં સે યુક્ત હુચા નિર્ગ્ન્ય પ્રવચન પર
અદ્ધા રક્ષતા હૈ, વસ પર પ્રતીતિ કરતા હૈ, ઉસે અપની રુચિ કા વિપય
પનાતા હૈ, તો એસે-ઉસ અનગાર કે પાસ પરીપદ આતે તો હૈ, ઓર
ઉસે આકુલ વ્યાકુલ કરને કી ખેછા મી કરતે હૈ પરન્તુ-ઘડ ઉનસે
આકુલ વ્યાકુલ નહીં હોતા હૈ-૧ યદિ કોઈ પુરુષ મુખિત હો કરકે
અગારાવસ્થા સે અનગારાવસ્થા કો ધારણ કરલેખા હૈ ઓર-પાંચ મહા-
વ્રતોં મેં નિઃશક્ષિત ઇષ નિષ્કાક્ષિત આદિ વિશેષણોંવાલા હોકર યાવત્
ઉન કે વિપય મેં ઘડ કલ્પ સમાપદ નહીં હોતા હૈ, ઓર ડહે-અદ્ધા
કી દષ્ટિ સે દેક્ષતા હૈ, યાવત્-ડહે ઘડ અપની રુચિ કા વિપય પનાતા

કલ્પ સમાપત પશન્તના ભાવોથી મુક્ત થય છે, અને તે વ્યક્તિનિશ્ચયને એ
તે અદ્ધાની નજરે આવે નથી, તેને પોતાની પ્રતીતિના વિષય બનાવતો નથી
તેમાં રુચિ થતો નથી, તો એવા દ્રવ્યલિંગ સાધુને-પરીપદો આવી આવીને
આકુલ-વ્યાકુલ કરી નાખે છે

કહે એ યાવતુ પ્રતિપાદન કરવામાં આવે છે કે કયા ત્રણ સ્થાન વ્યવ
સિત (વચમી) હવેના માટે દિવકારી, મુખકારી, સમર્થતા ઉત્પત્ત કરવાના
અને અનુભામિતા (શુભાનુભવ) કારી હોય છે તે ત્રણ સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે-

(૧) કોઈ મનુષ્ય યુક્તિ યદને અગારાવસ્થાના પરિત્યાગપૂર્વક અથ
ગ્રાણવસ્થા ખાણુ કરે છે તે નિઃશક્ષિત આદિ ભાવોથી નિર્ગ્ન્ય પ્રવચન પર
અદ્ધા રાખે છે, તેની પ્રતીતિ કરે છે અને તેને પોતાની રુચિના વિષય બનાવે

અનગારિતાં પ્રવ્રજિતઃ પદ્મસુ જીવનિકાયેષુ નિશ્શક્તિતો યાવત્ પરીપદાન્ અભિ-
યુજ્ય ૨ અભિભવતિ, (કિન્તુ) નો ત પરીપદા અભિભવન્તિ ૩ । ૨ । સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા—‘ તથો ’ इत्यादि । त्रीणि स्थानानि—अनुपदं वक्ष्यमाणानि प्रवचन-
महाव्रत-जीवनिकायरूपाणि अव्यवसितस्य-व्यवसितः—निश्चयवान् पराक्रमवान्
वा, तन्निपेधाद् अव्यवसितः—अनिश्चयवान् अपराक्रमवानित्यर्थः, तस्य अहिताय-
अपथ्याय, असुखाय—दुःखाय, अक्षमाय—असमर्थतत्त्वाय, अनिःश्रेयसाय—अमोक्षाय

है तो ऐसे उस अनगार को परीपह आने पर भी आकुल व्याकुल नहीं करते हैं इसी तरह मुण्डित होकर जो पुरुष अगारावस्था से अनगारावस्था को धारण करता है और—पद्मजीवनिकाय के विषय में निश्शक्ति आदि विशेषणों वाला घना होकर उसपर श्रद्धा करता है और यावत्—उसे अपनी रुचि का विषय बनाता है तो ऐसे उस अनगारको परीपह चार—२ आकरके भी आकुल व्याकुल नहीं करपातेहैं—३

इन तीन सूत्रों का भावार्थ ऐसा है व्यवसित शब्द का अर्थ निश्चयवाला या “पराक्रमवाला” ऐसा है जो ऐसा नहीं है वह मनुष्य अव्यवसित है। अर्थात् जो निश्चयवाला नहीं है, या—पराक्रमवाला नहीं है उस के लिये ये प्रवचनरूप महाव्रत और—जीवनिकायरूप तीन

છે, તો તે અણુગારને પરીપહનો સામનો કરવો પડે છે. તે પરીપહો તેને આકુલ—વ્યાકુલ કરવાની ચેષ્ટા પણ કરે છે, પરન્તુ તે તેમનાથી આકુલ—વ્યાકુલ થતો નથી. (૨) કોઈ મનુષ્ય મુડિત થઈને ગૃહસ્થાવસ્થાના ત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થા ધારણ કરે છે ત્યારબાદ તે નિશ્ચિત નિઃશક્તિ આદિ ભાવોથી પાંચ મહાવ્રતોમાં શ્રદ્ધા રાખે છે, તે મહાવ્રતોની પ્રતીતિ કરે છે અને તેમાં પોતાની રુચિ રાખે છે, તો એવો તે અણુગાર ગમે તેવા પરીપહો આવી પડે તો પણ આકુલવ્યાકુલ થતો નથી (૩) કોઈ મનુષ્ય મુડિત થઈને ગૃહસ્થાવસ્થાના પરિત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થા ધારણ કરે છે ત્યારબાદ તે નિશ્ચિત આદિ વિશેષણોથી યુક્ત થઈને પદ્મ જીવનિકાય પ્રત્યે શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ ઢેચે છે, તેને પોતાની પ્રતીતિનો વિષય બનાવે છે અને તેને પોતાની રુચિનો વિષય બનાવે છે તો એવો તે અણુગાર ગમે તેવા પરીપહો આવી પડવા છતાં પણ આકુલ-વ્યાકુલ થતો નથી

હવે આ ત્રણે સૂત્રોનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—“વ્યવસિત” એટલે નિશ્ચયવાળો અથવા પરાક્રમવાળો જે જીવ નિશ્ચયવાળો હોતો નથી અથવા જે જીવમાં પરાક્રમનો અભાવ હોય છે, એવા જીવને ‘અવ્યવસિત’ કહે છે. એવા અવ્યવસિત મનુષ્યને માટે પ્રવચન, મહાવ્રત અને જીવનિકાય

અનનુગામિકતાયૈ-અધુમાનુષ-ધાય મર્ષાત, સઘયા-તાનિ શ્રીણિ સ્થાનાનિ યયા
 -‘સે જ’ હસ્થાદિ યસ્ય શ્રીણિ સ્થાનાનિ અદિતાદિત્વાય-મરતિતિ મ મુષ્ટા
 મૂત્વા મગારાત્-દૃશ્યમર્ષાત અનગારિતાં-સાધુતાં મમ્મનિતાઃ-ગપ્તાઃ સન્ નૈર્ગ-પે
 નિર્ગ-ન્યાનામિદં નૈર્ગ-ન્યમ્-ભાર્જત, તસ્મિન્ પ્રાચચને-મ-મકપળ આ-અભિવિધિના
 ઠપ્પ-તે જીવાદય પદાર્થા યસ્મિન્ સત્ પ્રાચચન જૈનેન્દ્રજ્ઞાસનમાગમો વા તસ્મિન્
 શક્તિઃ-દેશતઃ સર્વતો વા સઘયચાન્, કાંક્ષિત-યો દેશતઃ સર્વતો વા મતાન્ત
 રમપિ સાધુત્વેન મન્યતે સા, વિધિકિત્સિત-ફલ પ્રતિ સક્લોપેત, અતપ્પ મેદ
 સમાપન્ન-ઝેષીમાર્ષ મપ્રાપ્તઃ ‘ઇદમેવ કિન્તુ નૈનદેવમ્’ इति मतिरम्पन्ना, ફલ
 સમાપન્ન-‘एतदेवं ने’-ति प्रतिपत्तिमान् सन् नैर्ग-य પ્રાચચા ન મપાતિ—

સ્થાન અદિત કે લિપે, અપથ્ય કે લિપે, અસુખ-બુ-સ કે લિપે, ઔર
 અક્ષમ-અસમર્થતા કે લિપે, અનિઃશ્રેયસ-અમોક્ષ કે લિપે ઔર અશુ
 આનુષ-પરુપ અનનુગામિકતા કે લિપે હોતે હૈં " ણિગ્ગપાવયણે "
 નિર્ગ-ન્યો કે દ્વારા જી કહા ગયા હોતા હૈં વહ નૈર્ગ-ય હૈં ઔર-મન્ની
 તરફ અભિવિધિ પૂર્વક જીવાદિક પદાર્થ જિમ મેં કહે ગયે હૈં વહ પ્ર
 ચન હૈં એમા વહ પ્રચચન જૈનેન્દ્રજ્ઞાસન-અથવા-આગમરુપ હોતા હૈં,
 ‘કાંક્ષિત’ જિનેન્દ્ર પ્રચચન મેં દેશતઃ-યા સર્વતઃ જો સઘયશીલ હોતા
 હૈં હસકાનામ ણક્ષિત હૈં. કાશ્ચિન-દેશતઃ યા-સર્વત જો સર્વજ્ઞ પ્રણીત
 મતાન્તરોં કોં મી સાધુરુપ-સધાર્પરુપ મેં માનતા હૈં વહ કાંક્ષિત હૈં.
 ફલકે પ્રતિ શક્ષા થાલા જો હોતા હૈં, વહ વિધિકિત્સ હૈં. મેદસમાપન્ન
 ઝેષીમાર્ષકોં જો પ્રાપ્ત હોતા હૈં વહ મેદસમાપન્ન હૈં વહ એસા નહીં હૈં હસ

હય ત્રણ સ્થાન અદિતકારી અપથ્યકારી, અસુખકારી (કુખકારી), અક્ષમ
 (અપ્રમથતા) કારી, અનિઃશ્રેયસ (અમોક્ષ) કારી અને અશુભાનુષન્ધ હય
 અનનુગામિકતાકારી થઈ પડે છે

‘ ણિગ્ગપાવયણે ’ નિર્ગ-ય (તિથ કર) કાશ જે કહેવામાં આનુ છે તેને
 નૈર્ગ-ય કહે છે અને સારી રીતે, અભિવિધિપૂર્વક છવાયેલા પદાર્થની જેમા પ્રવચ્ચા
 કરવામાં આવી છે, તેને પ્રચચન કહે છે એવું તે પ્રચચન જૈનેન્દ્ર જ્ઞાસન હય
 અથવા આગમ રૂપ હોય છે

“ કાંક્ષિત ” જિનેન્દ્ર પ્રચચનમાં જે દેશતા અથવા સર્વતા સઘયશીલ
 હોય છે તેને કાંક્ષિત કહે છે “ કાંક્ષિત ” જે અપ્રવચ્ચ (અપ્રવચ્ચ ન હોય એવી
 અશક્તિ) પશ્ચીત મતાન્તરેને પણ દેશતા અથવા સર્વતા સાચા માને છે તેને
 કાંક્ષિત કહે છે. હવની બાબતમાં થકા રાજનારને વિચિકિત્સિત કહે છે
 “ મેદ સમાપન્ન ” દ્વિધા બાવથી મુજબ અક્ષિતને મેદ સમાપન્ન કહે છે “ આ

સામાન્યતો ન તત્ર શ્રદ્ધાં કરોતિ, નો પ્રત્યેતિ-ન સર્વથા પ્રીતિવિપરી કરોતિ, નો રોચયતિ-ન તદારાધનેચ્છાવિપરી કરોતિ, તમિતિ ય એવમ્ભૂતો ભવતિ તં સાધ્વા-ભાસં પરિપલ્બન્તે નિર્જરાધર્મિતિ પરીપદ્ધાઃ-શુદ્ધાદયો દ્વાવિંશતિસંખ્યકાઃ અભિયુજ્ય ૨ સમ્બન્ધમુપગત્ય પ્રતિસ્પર્ધ્ય અભિભવન્તિ-વ્યાકુલીકુર્વન્તિ કિન્તુ સ-પૂર્વોક્તઃ સાધ્વાભાસસ્તાન્ પરીપદ્ધાન્-અભિયુજ્ય ૨ નો અભિભવતિ ન જયતીત્યર્થઃ, આર્હત-વચને શઙ્કાદીનાં સદ્ભાવેન શ્રદ્ધાદીનામસદ્ભાવાત્સ તાન્ જેતું ન શક્નોતીતિ ભાવઃ

તરહકી પ્રતિપત્તિ (શ્રદ્ધા) ચાલા જો હોતાહે વહ કલુષસમાપન્ન હૈ, “ ન શ્રદ્ધાતિ ” પદ સે યહ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ કિ-વહ સામાન્યરૂપ સે ખી યહાં શ્રદ્ધાજીલ નહીં હોતા હૈ “ નો પ્રત્યેતિ ” ઉસે અપની પ્રતીતિ મેં ખી વહ સર્વથા નહીં લેતા હૈ ઓર-ન વહ ઉસ કે આરાધન કી ઇચ્છા હી કરતા હૈ-યહ વાત “ ના રોચતિ ” ક્રિયાપદ સે પ્રકટ કી ગઈ હૈ જો નિર્જરા કે લિયે સહન કી જાતી હૈ ઉસ કા નામ પરીપદ્ધ હૈ યે પરીપદ્ધ ક્ષુધા આદિ કે ભેદ સે ૨૨-વાડસ હોતે હૈં । અર્થાત્-જો સાધુ કે લક્ષણ સે રહિત હોતા હૈ ઓર-સાધુ જૈસા પ્રતીત હોતા હૈ વહ દ્રવ્યલિંગીસાધુ હૈ દ્રવ્યલિંગીસાધુ પરીપદ્ધોં દ્વારા ઇસલિયે પરાજિત હો જાતા હૈ કિ આર્હત વચન મેં શઙ્કાદિકોં કે સદ્ભાવ સે ઉસ મેં શ્રદ્ધાદિક કા અભાવ રહતા હૈ અતઃ-વહ ઉનપર વિજય નહીં પાસકતા હૈ-ઈસી તરહ સે પંચ

વાત આ પ્રમાણે નથી, ” આ પ્રકારની પ્રતિપત્તિવાળા જીવને કલુષ સમાપન્ન કહે છે. “ ન શ્રદ્ધાતિ ” પદ દ્વારા એ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે તે સામાન્ય રૂપે પણ નિર્ઞય પ્રવચન આદિ પ્રત્યે શ્રદ્ધાશીલ હોતો નથી “ નો પ્રત્યેતિ ” આ પદ દ્વારા એ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે કે તે નિર્ઞય પ્રવચન આદિને પોતાની પ્રતીતિને વિષય પણ બનાવતો નથી “ નો રોચતિ ” આ ક્રિયાપદના પ્રયોગ દ્વારા એ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે કે તે નિર્ઞય પ્રવચન આદિની આરાધનાની ઇચ્છા પણ કરતો નથી.

નિર્જરા નિમિત્તે જે સહન કરવામાં આવે છે, તેનું નામ પરીપદ્ધ છે ક્ષુધા આદિના લેદ્ધી પરીપદ્ધ ૨૨ પ્રકારના કહેવા છે

“ દ્રવ્યલિંગી સાધુ ”—સાધુના લક્ષણોથી રહિત હોવા છતાં પણ જે વેષ આદિને કારણે સાધુ જેવો લાગે છે, તેને દ્રવ્યલિંગી સાધુ કહે છે એવો દ્રવ્યલિંગી સાધુ પરીપદ્ધો દ્વારા પરાજિત થઈ જાય છે તેનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—એવો સાધુ આર્હત પ્રવચનમાં શંકાદિકોથી યુક્ત બને છે અને તે કારણે તે પ્રવચનાદિ પ્રત્યે તે સાધુ શ્રદ્ધા રાખી શકતો નથી તે કારણે તે પરીપદ્ધો પર વિજય પ્રાપ્ત કરી શકતો નથી.

૧। યયમવ પચ્ચમહાશ્વતથિપર્યવં પદ્મનીશનિકાયથિપય ચેતિ સ્થાનદ્વયમપિ ચિત્તેયમ્ ॥૧॥

‘તથો ઠાણા’ इत्यादि । पूर्वोक्तविपर्यय व्यवसितसूत्र विपर्ययेण व्याख्येय, नवर-विलम्ब-अक्षोपकरमिदपरलोके च, आत्मनः परेषां च पञ्चाशमोदनवत् १, सुखम्-मानन्द धर्मैर्वा कृष्णकूलस्य पानकरसपानवत् २, लम्बम्-उपित तयाविषव्याधिनिवारकौषपपानवत् ३, निशेयस-निमित्तं श्रेय-प्रयत्नं मायत पञ्चनमस्कारकरणमिव, आनुगामिकम्-अनुगमनशील, भास्वरद्वयमन्तिष्ठत्येवेति । श्रेय सुगमम् । व्यवसितः पुरुषः प्रवर्तित तन् परीपशान् अमिमुन्परममिमवति किन्तु परीपहास्त नामिमवितु क्षणवन्तीति सूत्रमात्रः २ ॥ सू. १०॥

મહાશ્વતરુપ ઓર-પદ્મજીવનિકાયરુપ સ્થાન સ્ત્રી સસ કો હોતે હેં એસા સમજ લેના ચાહિયે । ‘તથો ઠાણા’ इत्यादि जो व्यवसित सूत्र है, वह अव्यवसित सूत्र से विपरीत व्याख्यान हुआ है अतः-इस की व्याख्या अव्यवसित सूत्र से निम्न ही जाननी चाहिये । तात्पर्य यह है कि-अव्यवसित की जो निर्ग्रन्थ प्रवचन से पञ्चमहाश्रतों में एवं वह जीवनिकाय में पूर्वोक्तरूप से शङ्क-काक्षा आदि वाली वृत्ति होती है और-इसी कारण यह श्रद्धा आदि भावना से रहित बना रहता है तब कि यह व्यवसित जीव निर्ग्रन्थ प्रवचन में पञ्चमहाश्रतों में एवं वह जीव निकाय में पूर्वोक्तरूप निश्चास्त्रिज आदि वृत्तिवाला बनकर श्रद्धा आदि भावना से सम्पन्न बना रहता है इसीलिये अव्यवसित को परीपह आकूल व्याकूल बनादते हैं और-व्यवसित को वे आकूल व्याकूल न बनाकर स्वयंही पराजित हो जाते हैं ।

અવ્યવસિતને અનુલક્ષીને નિમ્ન ય પ્રવચન રૂપ પ્રથમ સ્થાનની એવી પ્રરૂપણા કરવામાં આવી એવી જ પ્રરૂપણા પાંચ મહામન રૂપ દ્વિતીય અને ત્રીજી નિકાય રૂપ તુલીય સ્થાનના વિષે પણ સમજાવેલી “તથો ઠાણા” ઈત્યાદિ વ્યવસિત સૂત્રની વ્યાખ્યા અવ્યવસિત સૂત્ર કરતાં વિપરીત સમજવી જોઈશે કે અવ્યવસિતને નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પાંચ મહામનો અને ત્રીજી નિકાય પ્રત્યે શંકા, કાક્ષા આદિવાળી વૃત્તિ હોય છે અને એ જ કારણે તે આ ત્રણેમાં શ્રદ્ધા આદિ આવેશી રહી જ હોય છે પરંતુ આ વ્યવસિત છત્ર નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન, પાંચ મહામન અને ત્રીજી નિકાયમાં પૂર્વોક્ત રૂપ નિઃશંકિત, નિઃકાક્ષિત આદિ વૃત્તિવાળો હોય છે અને તે કારણે તે છત્ર તેમાં શ્રદ્ધા, રુચિ આદિ આવેશી મુજબ રહે છે

આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં અવ્યવસિત રૂબરૂતિગી સામુને પરીપદો આપુલવ્યાકુલ થવી નાજે છે પરંતુ વ્યવસિત અવ્યવસિતને પરીપદો આપુલ

પૂર્વોક્ત પ્રકારો મુનિરિદેવ પૃથિવ્યાં વિચરતીત્યનેન સમ્બન્ધેન પૃથિવીસ્વરૂપં નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—एगसेगा णं पुढवी तोहिं वलएहिं सबओ समंता

इस तरह अव्यवसित सूत्र की व्याख्या से व्यवसित सूत्र की व्याख्या विपरीत है । निर्ग्रन्थ प्रवचनादि तीन स्थान व्यवसित के लिये हितकर होते हैं, अर्थात् पथ्यान्न भोजन की तरह अदोष कर होते हैं, इस लोक में और परलोक में वे उस के लिये और पर के लिये हितकर होते हैं । “ सुखं ” आनन्ददायक होते हैं, । जैसे-धूप में तृषार्त्तको पानकरस का (शरवत) पान आनन्ददायक होता है, । “क्षमं” उचित रूप होते हैं, जैसे-व्याधि से पीडित हुये को औषधि का पान उचित होना है । निःश्रेयसरूप होते हैं निश्चिनश्रेयस्कार-प्रशस्त होते हैं जैसे भाव पूर्वक किया गया पञ्च नमस्कार श्रेयस्कारक होता है, । आनुगामिक होते हैं जैसे-भास्वर द्रव्य से जनित छाया अनुगमनशील होती है बाकी का और सब कथन सुगम है व्यवसित पुरुष प्रव्रजित होकर परीषहों को ही जीत लेता है परीषह उसे नहीं जीत पाते हैं । ऐसा भाव इस सूत्र का है-॥ ॥ सु० ९० ॥

વ્યાકુલ કરી શકતા નથી એવા સાધુ આગળ તે પરીષદો પોતે જ પરાજિત થઈ જાય છે આ રીતે અવ્યવસિત સૂત્રની વ્યાખ્યા કરતાં વ્યવસિત સૂત્રની વ્યાખ્યા વિપરીત છે

નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનાદિ ત્રણુ સ્થાન વ્યવસિત જીવને માટે હિતકર હોય છે, એટલે કે પથ્યાન્ન ભોજનની જેમ અદોષકર હોય છે, આલોકમાં અને પરલોકમાં તે તેના માટે તથા અન્યને માટે હિતકર હોય છે, “ સુખ ” સુખકર અથવા આનંદદાયક હોય છે, જેમ તટસ્થાને સરળતનુ પાન આનંદદાયક થઈ પડે છે, તેમ તેને તે આનંદદાયક થઈ પડે છે “ ક્ષમં ” જેમ રોગથી પીડાતા જીવને ઔષધિનુ પાન ઉચિત થઈ પડે છે, તેમ તેને ઉચિતરૂપ થઈ પડે છે તે તેને માટે નિશ્ચિતરૂપ-નિશ્ચિતરૂપે શ્રેયસ્કારક નિવડે છે જેમ ભાવપૂર્વક કરાયેલા પંચ નમસ્કાર શ્રેયસ્કારક હોય છે, એમ તે જીવને માટે શ્રેયસ્કારક અને પ્રશસ્ત નિવડે છે જેમ ભાસ્વર (અપારદર્શક) દ્રવ્યથી જનિત છાયા અનુગમનશીલ હોય છે, તેમ તે તેને માટે આનુગામિક નિવડે છે બાકીનું સમસ્ત કથન સુગમ છે વ્યવસિત પુરુષ પ્રવ્રજિત થઈને પરીષદોને જીતી લે છે-પરીષદો તેને પરાજિત કરી શકતા નથી, એવો આ સૂત્રનો ભાવ છે. ॥ સૂ. ૯૦ ॥

સપરિચિત્તા, ત જહા-ઘણોદધિવલણ, ઘણવાયવલણ તણ
વાયવલણ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

છાયા-એકા સહ પૃથિવી ત્રિમિર્વલયૈઃ સર્વત સમન્તાત્ સપરિચિત્તા,
તથા-ઘણોદધિવલણ, ઘણવાયવલણ, તનુવાયવલણ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ટીકા-‘ યમેગા ’ ઇત્યાદિ । એકા-પ્રત્યેક પૃથિવી રત્નપ્રમાદિકા
ત્રિમિઃ-ત્રિસરૂપકૈઃ ચલયૈ-ચત્રૈઃ સર્વતઃ સમન્તાત્-સર્વાસુ દિશુ વિવિધુ વેત્તર્ય ,
સપરિચિત્તા-સમ્યગ્ ઘેષ્ટિતા પ્રજ્ઞા, તથા-ઘણોદધિવલણ, ઘન-સ્થાનો દિશ-
શિલા સદૃશ, ઉદધિઃ-જલનિષ્પન્ન-ઘણોદધિ, સ એવ જલપ્રમિત્તવલણ-વેષ્ટનં
ઘણોદધિવલણ, તેન ૧, એવ ઘણવાયવલણ, તથાવિષયનપરિણામોપેતો વાતા,

પૂર્વોક્ત પ્રકારવાળા મુનિ યહી પર ચિત્તરણ કરતા હૈ હસી સમ્પ્રથ
કો હેકર અથ સૂત્રકાર પૃથિવી કે સ્વરૂપ કા નિરૂપણ કરતે હૈ “ યગ
મેગાણ પુઢવી ” ઇત્યાદિ-

સૂત્રાર્થ — પ્રત્યેક પૃથિવી ત્રીન ચલણો સે ચારો દિશાઓ
મેં ઓર વિદિશાઓ મેં અઘી તરફ સે વેષ્ટિત હુઈ કહી ગઈ હૈ । બે
ચલણ હસ પ્રકાર સે હૈ ઘણોદધિવલણ ૧ ઘણવાયવલણ ૨ ઓર તનુવા-
યવલણ ૩ ।

ટીકાર્થ-હસ સૂત્ર કા વિસ્તૃત અર્થ હસ પ્રકારસે હૈ -પ્રત્યેક રત્નપ્રમા
આદિ પૃથિવી સમસ્ત દિશા ઓર વિદિશાઓ મેં અઘી તરફ સે પૂર્વોક્ત
ઘણોદધિ આદિ ત્રીન ચાલચલણો સે વેષ્ટિત હૈ જિસમેં ઉદધિ જલ

પહેલાના પ્રકરણમાં જેવા અણુમાર્ગની પ્રકૃતિના કારણમાં આવી, જેવા
અણુમાર્ગે આ પૃથ્વી પર જ વિચરતા હોય છે આ સબધને અણુકક્ષીને
કહે સૂત્રકર પૃથ્વીના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે—

‘ યગમેગાણં પુઢવી ’ ઇત્યાદિ—

પ્રત્યેક પૃથ્વી ત્રણ ચલણે થી આરે દિશાઓમાં અને વિદિશાઓમાં સારી
રીતે વેષ્ટિત થયેલી હોય છે તે ત્રણ ચલણના નામ આ પ્રમાણે છે-(૧) ઘણોદધિ
વલણ (૨) ઘણવાયવલણ અને (૩) તનુવાયવલણ. આ સૂત્રનો વિસ્તૃત
અર્થ આ પ્રમાણે છે—

રત્નપ્રમા આદિ પૃથ્વી સમસ્ત દિશાઓ અને વિદિશાઓમાં પૂર્વોક્ત
ઘણોદધિ આદિ ત્રણ ચાલચલણે થી સારી રીતે વેષ્ટિત (વર્તિત/વેષ્ટિ) છે
જેમાં દિશાશિલાના જેવો ઉદધિ (જલસમૂહ) ઘન રૂપે જમા થયેલો રહે છે,
તને ઘણોદધિ કહે છે જે જ વલણને જેનું વલણ વેષ્ટન + છે તેથી તેને

તદ્રૂપેણ વલયેન ૨, તનુવાતવલયેન, તનુવાતઃ—તથાવિધતનુપરિણામો વાત એવ, તદ્રૂપેણ વલયેન વેષ્ટિતા પૃથિવી પ્રજ્ઞતેતિ પ્રક્રમઃ । આશ્વન્તરં ઘનોદધિવલયં, તત્પરિતઃ ઘનવાતવલયં, તત્પરિતશ્ચ તનુવાતવલયમિતિ ભાવઃ ભવન્તિ ચાત્રગાથાઃ—

“ નવિ અ કુન્સન્તિ અલોગં ચડસંપિ દિસામ્ સવસ્પુઢવીઓ ।

સંગદિયા વલણ્ઢિ, વિકલ્લંભં તેમિ ચોન્છામિ ॥૧॥

છન્ચેવ? અદ્વપંચમર જોયણમદ્વં ચ હોડ રચનાણ ॥

ઉદહી? ઘનર તણુવાયાર, જઠામંચેણ નિદ્ધિઢ્ઠા ॥૨॥

તિ ભાગો? ગાડયં ચેવર, તિભાગો ગાડયસ્સ ય ૩ ।

આશ્વુવે પક્ષેવો, અહો અહો જાત્ર સત્તમિયં ॥૩॥”

છાયા—નાપિ ચ સ્પૃશન્તિ અલોકં. ચતસૃષ્ણપિ દિશુ સર્વાઃ પૃથિવ્યઃ ।

સંગૃહીતા વલયૈર્વિષ્કમ્ભં તેષાં વક્ષ્યે ॥ ૧ ॥

પદ્મૈવ? અર્ધપશ્ચમાનિર યોજન સાર્ધં ચ ભવતિ રત્નાયામ્ । ઉદધિ?

ઘનર તનુવાતાઃ, યથાસંલયેન નિર્દિષ્ટાઃ ॥ ૨ ॥

ત્રિભાગ? (યોજનમ્) ગવ્યૂત ચૈવર ત્રિભાગો ગવ્યૂતસ્ય ચ ૩ ।

આદિ ધ્રુવે પ્રક્ષેપ, અથઃ અથઃ યાવત્ સપ્તમિકામ્ ॥૩॥ ઇતિ ।

અસાં સંક્ષેપાર્થઃ—સર્વાઃ પૃથિવ્યઃ ચતસૃષ્ણપિ દિશુ અલોકં ન સ્પૃશન્તિ, સર્વા

અપિ વલયૈઃ સંગૃહીતાઃ—વેષ્ટિતાઃ સન્તિ, તેષાં—ઘનોદધિઘનવાતતનુવાતાનાં

નિચય—હિમશિલા કે જૈસા ઘન જમા હુવા રહતા હૈ વહ ઘનોદધિ હૈ, વહી વલય કે જૈસા વલય વેષ્ટિત હૈ હસલિયે—હસે ઘનોદધિવલય કહા હૈ । ઘનવાત વલય મેં તથાવિધ ઘનપરિણામોપેત વાત રહતા હૈ તનુવાત વલય મેં તથાવિધ તનુપરિણામોપેત વાત રહતા હૈ અતઃ—ઘનોદધિરૂપ વલય, ઘનવાનરૂપ વલય સે ઓર તનુવાતરૂપ વલય સે વેષ્ટિત પ્રત્યેક પૃથિવી કહી ગઈ હૈ । હનમેં આશ્વન્તર ઘનોદધિવલય હૈ, હસકે વાદ ચારોં ઓર ઘનવાત વલય હૈ હસકે વાદ ચારોં ઓર તનુવાત વલય હૈ । કહા ખી હૈ “ નવિ અ કુન્સન્તિ અલોગં—” હત્યાદિ હન ગાથાઓં કા સંક્ષિપ્ત અર્થ હસ પ્રકાર સે હૈ—સમસ્ત પૃથિવિયાં ચારોં ખી દિશાઓં મેં અલોક

ઘનોદધિ વલય કહેવામા આવેલ છે ઘનવાતવલયમા તથાવિધ (તે પ્રકારનો) ઘન—પરિણામોપેત વાત રહે છે તનુવાત વલયમાં તથાવિધ તનુ—પરિણામોપેત વાત રહે છે, તેથી પ્રત્યેક પૃથ્વીને ઘનોદધિરૂપ વલય, ઘનવાતરૂપ વલય અને તનુવાતરૂપ વલયથી વેષ્ટિત કહી છે આ ત્રણે વલયોમાં આશ્વન્તર ઘનોદધિ-વલય છે, ત્યારમાદ ચારે તરફ ઘનવાત વલય છે અને ત્યારમાદ ચારે તરફ તનુવાત વલય છે કહ્યું પણ છે કે—“ નવિ અકુસન્તિ અલોગં ” ઇત્યાદિ—

આ ગાથાઓનો સંક્ષિપ્ત અર્થ આ પ્રમાણે છે—સમસ્ત પૃથ્વીઓ ચારે દિશાઓમાં અલોકનો સ્પર્શ કરતી નથી, સમસ્ત પૃથ્વીઓ વલયોથી

ચિત્ક્રમ-ચિત્ક્રમપરિમાણ વસ્તુ, इति गायत्राकार कथयति ॥१॥ यथासंख्येनेति यथाक्रम, तथाहि घनोदधिचक्रपदस्य चिત્कर्मपरिमाणं पदयोजनानि, घनघातचक्रपदस्य सार्धचतुर्षोऽनानि तनुघातस्य सार्धषोडशममेकं चिद्वक्त्रपरिमाणम् । एतद् रत्न-प्रमाणमिदं माधित्योक्तम् । आदिभुजे-आदिचलये घनोदधिलयणे योजनस्य त्रिभागः प्रक्षेपणीयः, द्वितीये चलय-घनघातरूपे गव्यूत प्रक्षेपणीय, तृतीये चलये तनुघात-रूपे गव्यूतस्य त्रिभाग प्रक्षेपणीय । एवं करणेन द्वितीय-पृथिव्या चलयप्रपं संपद्यते, एवं यावत्सप्तमिका-सप्तमीतमस्तमापृथिवीपर्यन्तं प्रक्षेपयेत् सर्वांश्च पृथि-वीनां घनोदधिघनघात-तनुघातरूपस्य चलयत्रिरूपं चिद्वक्त्रपरिमाणं भवतीति गायत्रयस्य निष्कर्षार्थः ॥ सू० ०१ ॥

કો સ્પર્શ નહીં કરતી હૈ, સમસ્તપૃથિવિયાં ચલયસે ઘેટ્ટિત્તા હૈ । ઘનોદધિ-કા ચિદ્વક્ત્રમ પરિણામ ૬ યોજનકા હૈ ઘનઘાતચલયકા ચિદ્વક્ત્રમ માઁ ચાર યોજન કા હૈ તનુઘાત ચલય કા ચિદ્વક્ત્રમ પરિણામ ૧૧ યોજન કા હૈ ઘનોદધિરૂપ પ્રથમ ચલય મૈ યોજન કે ત્રીન ભાગ પ્રક્ષિત કરને સે, ઘનઘાતરૂપ દ્વિતીય ચલય મૈ ગવ્યૂત પ્રક્ષિત કરને સે તથા-તૃતીય તનુ-ઘાતચલય મૈ ગવ્યૂત કે ત્રીન ભાગ પ્રક્ષિત કરને સે દ્વિતીયપૃથિવી કે ત્રીન ઘાતચલયોં કા ચિદ્વક્ત્રમ પરિમાણ નિકલ આતા હૈ इसी तरह से सप्तमी तमस्तमा पृथिवी तक प्रक्षेपण करने से याकी समस्त पृथिवियों के घनोदधि घनघात और तनुघातरूप चलयत्रिक चिद्वक्त्रम परिणाम निकलता है यह तीन गायत्रीओं का निष्कर्षार्थ है सू० ०१॥

વેદિત છે પદેશી પૃથ્વીને બીટળાયેલા ઘનોદધિને વિષ્ણુ (વિસ્તાર) ૬ યોજનને છે ઘનઘાત વણવને વિષ્ણુ ૪૧ (સાડા ચાર) યોજનને છે અને તનુઘાત વણવને વિષ્ણુ ૧૧ (દોઢ) યોજનને છે

ઘનોદધિ રૂપ પ્રથમ વણવના વિષ્ણુ ૪૧ ભાગમાં યોજનને ત્રીએ ભાગ ઉમેરવાથી ઘનઘાત રૂપ વણવના વિષ્ણુ ૪૧ ભાગમાં ૪ યુતિ ઉમેરવાથી અને તનુઘાત રૂપ ત્રીએ વણવના વિષ્ણુ પરિભાગમાં ૪૫૫૮૮૦ ત્રીએ ભાગ ઉમેરવાથી બીજી પૃથ્વીના ત્રણે વાતરવયોના વિષ્ણુ પરિભાગ આવી ૯૫૪ છે એ ૯૫૪ ભાગે સાવત્રી તમસ્તમા પદ્યન્તની પૃથ્વીઓમાં ઉત્કુલ પ્રમાણને પધારે. હવે જાણી જાણીની પાંચે પૃથ્વીઓના ઘનોદધિ વણવ ઘનઘાત વણવ અને તનુઘાત વણવને વિષ્ણુ બીજી શાય છે આ પ્રકારને ત્રણ ભાગોને ભાગ્ય સમજવે ॥ સૂ. ૬-૧ ॥

પૂર્વે રત્નપ્રભાદિ પૃથિવીનાં પ્રરૂપણા કૃતાઃ, एतासु च नारका एवोत्पद्यन्त इति तेनामुत्पत्तिविधिमभिधातुमाह—

મૂલમ્—નેરઙ્ગયા ણં ઉત્ક્રોસેણં તિસમઙ્ગણં વિગ્રહેણં ઉવ-
વજ્જંતિ, ઇર્ગિંદિયવજ્જં જાવ વેમાણિયાણં ॥ સૂ. ૧૨ ॥

છાયા—નૈરયિકાઃ સ્વલુ ઉત્કર્ષેણ ત્રિસામયિકેન વિગ્રહેણ ઉપપચન્તે, એકે-
ન્દ્રિયવર્જં યાવદ્ વૈમાનિકાનામ્ ॥ મૂ. ૧૨ ॥

ટીકા—‘ નેરઙ્ગયાણં ’ ઇત્યાદિ સુગમં, નવરં-નૈરયિકા-ઉત્કર્ષેણ ત્રિસામયિ-
કેન ત્રયાણાં સમયાનાં સમાહારસ્ત્રિસમય તત્ પ્રાપ્તં યસ્ય સ ત્રિસામયિકસ્તેન તાદ-
શેન વિગ્રહેણ-વક્રગમનેન ઉપપચન્તે । ઉત્કર્ષેણેતિ ત્રસાનાં હિ ત્રસનાડચન્તરૂપા-
દાદ્ વક્રઢ્યં ભવતિ, તત્ર ચ ત્રય એવ સમયાસ્તથાહિ-જીવ આગ્નેયદિશાતો નૈર્ઋત્-
તદિશમેકેન સમયેન ગચ્છતિ, તતો દ્વિતીયેન સમયેન સમશ્રેણ્યાઽધો ગચ્છતિ,

इस प्रकार रत्नप्रभा आदि पृथिवियों की अब इन पृथिवियों में
नारक ही उत्पन्न होते हैं इस बात को कहने के लिये उनकी उत्पत्ति
विधि को सूत्रकार कहते हैं—“ नेरङ्गयाणं उक्कोसे० ” इत्यादि,
टीकार्थ नैरयिक जीव जिसमें उत्कृष्टसे तीन समय प्राप्त हैं ऐसे विग्रहसे वक्र-
गमनसे उत्पन्न होते हैं जिसमें एकधुमाव-एकवक्रगति हों उसका काल मान
दो समयका, जिसमें दोधुमाव हों उसका कालमान तीन समयका होता है
और जिसमें तीन धुमाव हों उसमें कालमान चार समयका है । इस नियम
के अनुसार त्रस जीवों का त्रस नाडी के भीतर उत्पाद होने से धुमाव
होते हैं अतः वहां तीन ही समय लगते हैं, जैसे-जीव अग्नेय दिशा
से नैर्ऋत दिशा तक एक समय में जाता है फिर द्वितीय समय में

રત્નપ્રભા આદિ પૃથ્વીઓને વીંટળાયેલા ત્રણ વાતવલયોનું નિરૂપણ કરીને
હવે સૂત્રકાર તે નરક પૃથ્વીઓમાં ઉત્પન્ન થતા નારકોની ઉત્પત્તિવિધિનું કથન
કરે છે— ‘ નેરઙ્ગયાણ ઉક્કોસે ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જેમાં વધારેમાં વધારે ત્રણ સમય લાગે છે એવા વિગ્રહથી-વક્રગમનથી
નારક એવા નરકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે જે વિગ્રહગતિમાં એક ધુમાવ (વળાંક)
નો સફાવ હોય છે, તે વિગ્રહનું કાળમાન બે સમયનું હોય છે જેમાં બે
ધુમાવ હોય તેનું કાલમાન ત્રણ સમયનું હોય છે આ નિયમ અનુસાર ત્રસ
નાડીની અંદર ત્રસ એવાનો ઉત્પાદ હોવાથી તે એવામાં બે ધુમાવનો સફાવ
હોય છે, તેથી ત્યાં ત્રણ જ સમય લાગે છે. જેમકે એવ અગ્નિ દિશાથી નૈર્ઋત્ય
દિશા સુધી એક સમયમાં જાય છે, ત્યારબાદ દ્વિતીય સમયમાં સમશ્રેણીથી

તતસ્તૃતીયંન સમયન ધાયક્યવિશિ સમયેઘ્યૈવ ગચ્છતીતિ ત્રય સમયા ઉક્તાઃ ।
 યવધિષ ઉત્કર્ષેણ વિગ્રહસ્થાનામેવ પ્રસોત્પત્તૌ મત્તતોત્પત્ત યદા—‘ યગિદિય
 ચજ્જ ’ इत्यादि, एकेन्द्रियान् वर्जयित्वेत्यर्थः । एकन्द्रियास्तु एकेन्द्रियेषु पञ्चसा
 मयिकेन विग्रहेणाप्युत्पत्ते, तेषां बहिस्तात् प्रसनादीनां बहिरुपपत्तमानत्वाद्,
 उक्तञ्च —

“ ચિદિસાડ દિસ પદમે, ધીપ પડસરખોયનાઠીપ ।

તદપ ઉત્પિ ધાવહ, ચતુર્ય નીહ ચારિં તુ ॥૧॥

પંચમય ચિદિસીપ ગતુ ઉપ્પજ્ઞપ ઉ યગિદી । ” इति ।

ઠાયા—ચિદિસાતો દિશ પ્રથમ, ઠિતીયે પ્રતિસરતિ છોદનાઠધામ્ ।

તુનીયે ઉપરિ ધાવતિ, ચતુર્યકે નયતિ બહિસ્તુ ॥૧॥

પચ્ચમકે ચિદિસાયાં ગતોત્પત્ત તુ એકેન્દ્રિયઃ ॥

સમયોડ્પ્પમ્ । મયતિ તુ ચતુઃ સામયિક એ વ્યાખ્યાપ્રવૃત્તિ તથા પ્રતિ
 પાદિત્વાત્, ઉક્તञ्च—

સમયેની સે નીચે જાના હે ઉસકે યાદ તુતીય સમય મેં ધાયક્ય વિશા
 મેં સમયેની સે જાના હે હસ પ્રકાર દો ધુમાવોં મેં યે ત્રીન સમય લગતે
 હે એસા કહા ગયા હે । એસા ઉત્કૃષ્ટ સે મોઢા-વિગ્રહ પ્રમોં કા પ્રસો
 ત્પત્તિ મેં હોતા હે હમીલિયે યદાં “ યગિદિયચજ્જ ” इत्यादि सूत्रकार
 ने कहा है । क्यों कि-एकेन्द्रिय एकेन्द्रियों में पांच समयवाले विग्रह से
 भी उत्पन्न होते हैं, क्यों कि-इसका उत्पाद प्रस नाडी से बाहर होता
 है । कहा भी है-“ चिदिसाडदिस पदमे ” इत्यादि एकेन्द्रिय जीव का
 यह पांच समयवाला उत्पाद सम्मय भी होना है परन्तु-व्याख्याप्रज्ञप्ति
 में चार समयवाला ही इसका उत्पाद कहा है । कहा भी है-

નીચે જાય છે ત્યાજ્યાદ તુતીય સમયમાં ધાયક્ય વિશાયા સમયેઘ્યૈવી જાય
 છે આ પ્રકારે બે ધુમાવમાં ત્રણ સમય લાગે છે એ કથન સિદ્ધ થાય છે
 આ પ્રકારેના ઉત્કૃષ્ટની અધિકાએ ત્રસોનો મોઢા વિગ્રહ પ્રસોત્પત્તિમાં થાય છે
 તેથી જ અહીં યગિદિયચજ્જ ઉત્પાદિ કથન સૂત્રકારે કયુ છે, કારણ કે
 એકેન્દ્રિયની એકેન્દ્રિયોમાં પાંચ સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પત્તિ થાય છે,
 કારણ કે તેનો ઉપાદ પ્રસ નાડી ધી બહાર થાય છે કહ્યું પણ છે કે—

“ ચિદિસાડદિસ પદમે ’ ઉત્પાદિ—

એકેન્દ્રિય જીવનો આ પાંચ સમયવાળો ઉત્પાદ સમયી થકે છે ખરો
 પરંતુ આખ્યા પ્રજ્ઞાપ્તિમાં બાહ સમયવાળો જ તેનો ઉપાદ કહ્યો છે કહ્યું પણ

या ४४

अभिर्ईणक्खत्ते तित्तारे पणत्ते १ । एव सवणा २ अस्सिणी
३, भरणी ४, मगसिरे ५, पूसे ६, जेद्धा ७ ॥ सू० ९४ ॥

धम्माओ णं अरहाओ सती अरहा तीहिं सागरोवमेहिं
तिचउवभागपलिओवमऊणएहिं वीतिक्कतेहिं समुप्पन्ने ॥ सू० ९५ ॥

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिस
जुगाओ जुगतकरमूमी ॥ सू० ९६ ॥

मल्ली णं अरहा तीहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुडे भवित्ता जाव
पव्वइए १ । एव पासे वि २ ॥ सू० ९७ ॥

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिमिसिया चउइस
पुव्वीण अजिणाणं जिणसकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईण जिण
इव अवितहवागरमाणाण उक्कोसिया चउइसपुव्विसपया
हुत्था ॥ सू० ९८ ॥

तओ सित्थयरो चक्कवट्ठी होरथा, त जहा सती १ कुट्थू २
अरो ३ ॥ सू० ९९ ॥

छाया-क्षीणमोहस्य खलु अर्हत्तत्त्वः कर्मोश्च युगपत् क्षीयते, तथया-ज्ञानावर
णीयं १, दशनावरणीयं २, भान्तराधिकम् ३ ॥ सू० १०१ ॥

पहले मोहबाले जीवों के तीन स्थान कहे हैं, अब सूत्रकार क्षीण
मोहबाले जीव के तीन स्थान को कहते हैं-क्षीणमोहस्स ण भरइमो
तमो-इत्यादि

सूत्रार्थ-क्षीणमोहबाले अर्हत् के तीन कर्मोश्च युगपत् क्षीणहोते
हैं, जैसे-ज्ञानावरणीय-१ वृद्धानावरणीय-२ और भान्तराय ३-॥ ९९ ॥

पहला मोहबाला जीवों के तीन स्थानों कथन यमु द्वये सूत्रात् क्षीण
मोहबाला जीवों के तीन स्थानों कथन करे छे—

‘ क्षीणमोहस्य णं भरइमो तमो ’ इत्यादि—

क्षीण मोहबाला अर्हत् के तीन कर्मोश्च ज्येष्ठी साये क्षीण बाप छे जेभवे
(१) ज्ञानावरणीय, (२) वृद्धानावरणीय, (३) भान्तराय । ६३ ।

अभिजिन्नक्षत्रं त्रितारं प्रज्ञप्तम् १, एव श्रवणः २, अश्विनी ३, भरणी ४, मृग-
शिरः ५, पुण्यम् ६, ज्येष्ठा ७ ॥ सू० ९४ ॥

धर्मात् खलु अर्हन्तं शान्तिरर्हन् त्रिषु सागरोपमेषु, त्रिचतुर्भागपल्योपमोनेषु
व्यतिक्रान्तेषु समुत्पन्नः ॥ सू० ९५ ॥

श्रमणस्य खलु भगवतो महावीरस्य यावत्तृतीयं पुरुषयुगं युगान्तकरभूमिः ॥ ९६

अभिजित् नक्षत्र तीन तारो वाला कहा गया है, इसी प्रकार से
श्रवणनक्षत्र, अश्विनीनक्षत्र, भरणीनक्षत्र, मृगशिरानक्षत्र, पुण्यनक्षत्र
और ज्येष्ठानक्षत्र भी तीन तारों वाले कहे गये हैं ॥ ९४

धर्मनाथ अर्हन्त के बाद शान्तिनाथ अर्हन्त तीन चौथाई भाग
पल्योपम से न्यून ३ सागरोपम निकल जाने पर उत्पन्न हुवे अर्थात्
पूर्ण तीन सागरोपम और पौन पल चीननेके बाद—॥ ९५

भगवान महावीर स्वामी के तीर्थ में उनसे लगाकर यावत् जम्बू
स्वामी तक निर्माण की प्रवृत्ति रही—बाद में वह प्रवृत्ति बिच्छेद
हो गई—॥ ९६

मल्लिनाथ भगवान तीन सौ पुरुष के साथ मुण्डित होकर यावत्
प्रव्रजित हुवे हैं उसी प्रकार से पार्श्वनाथ भी ३०० पुरुषों के साथ
प्रव्रजित हुवे हैं—॥ ९७

असिजित नक्षत्र त्रयु ताराओवाणु कहु छे ओ ज प्रमाणे श्रवण नक्षत्र,
अश्विनी नक्षत्र, भरणी नक्षत्र, मृगशीर्ष नक्षत्र, पुण्य नक्षत्र अने ज्येष्ठा नक्षत्र
पणु त्रयु त्रयु ताराओवाणां छे । ९४ ।

धर्मनाथ अर्हन्त थया पछी त्रयु सागरोपम करता ३/४ पल्योपम
(अर्थात् त्रयु सागरोपम अने पौण्य पल्योपम काल पछी)
प्रमाणे न्यून काण व्यतीत थया बाद शान्तिनाथ अर्हन्त उत्पन्न थया हुता । ९५ ।

लगवान महावीर स्वामीना तीर्थमा तेमनाथी शरु करीने ज यूस्वामी
पर्यन्त निर्वाणुनी प्रवृत्ति आहु रही हुती तयार बाद ते प्रवृत्ति बिच्छेद
(अर्थ) थई गई ॥ ९६ ॥

मल्लिनाथभगवान ३०० पुरुषोनी साथे मुंडित थयने गृहस्थावस्थाना
परित्यागपूर्वक प्रव्रजित थया हुता ओ ज प्रमाणे पार्श्वनाथ लगवाने पणु
३०० पुरुषोनी साथे प्रव्रज्या अंगीकार हुती । ९७ ।

अभिर्हणक्खत्ते तितारे पण्णसे १ । एव सवणा २ अस्सिणी
३, भरणी ४, मगसिरे ५, पूसे ६, जेद्धा ७ ॥ सू० ९४ ॥

धम्माओ णं अरहाओ सती अरहा तीहिं सागरोवमेहिं
तिचउवभागपलिओवमऊणएहिं वीतिकतेहिं समुप्पन्ने ॥ सू० ९५ ॥

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिस
जुगाओ जुगतकरमूमी ॥ सू० ९६ ॥

मल्ली णं अरहा तीहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुढे भवित्ता जाव
पव्वइए १ । एव पासे वि २ ॥ सू० ९७ ॥

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिमिसया चउइस
पुव्वीणं अजिणाणं जिणसकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं जिण
इव अवित्तहवागरमाणाण उक्कोसिया चउइसपुव्विसपया
हुत्था ॥ सू० ९८ ॥

तओ सित्थयरो चकवट्ठी होत्था, त जहा-सती १ कुंयू २
अरो ३ ॥ सू० ९९ ॥

छाया-क्षीणमोहस्य स्मृतु महत्स्रया कर्मोऽथ युगपत् क्षीयन्ते, तथया-ज्ञानावर
णीय १, दशैनावरणीय २, आन्तरायिकम् ३ ॥ सू० ९३ ॥

पहले मोहवाले जीवों के तीन स्थान कहे हैं, अथ सूत्रकार क्षीण
मोहवाले जीव के तीन स्थान को कहते हैं-क्षीणमोहस्त ण भरहमो
तओ-इत्यादि

सुत्रार्थ-क्षीणमोहवाले अहं-न के तीन कर्मोऽथ युगपत् क्षीणहोते
हैं, जैसे-ज्ञानावरणीय-१ दशैनावरणीय-२ और अन्तराय ३-॥ ९३

पहला मोहवाला एवमां त्रय स्थाननुं कथन यमुं द्वे सूत्रकार क्षीय
मोहवाला एवमां त्रय स्थाननुं कथन करे छे—

‘क्षीणमोहस्त ण भरहमो तमो’ इत्यादि—

क्षीय मोहवाला एक तना त्रय कर्मोऽथ जेही साथे क्षीय जाय छे जेभे
(१) ज्ञानावरणीय, (२) दशैनावरणीय, (३) अ तथय. : ६७ ।

जम्बूस्वामिनं यावदित्यर्थं युगान्तकरभूमिः, युगं-पुरुषयुगं-तदपेक्षया अन्तंकराणां
-भवान्तकारिणां निर्वाणगामिनामित्यर्थः भूमिः-कालः युगान्तकरभूमिरासीदिति ।
इदमत्र तात्पर्यम्-भगवतः श्रीमहावीरस्वामिनस्तीर्थे तस्मादारभ्य तृतीयं पुरुषं
जम्बूस्वामिनं यावन्निर्वाणमभूत्, तदुत्तरकाले तद्वचवच्छेदादिति ॥ सू० ९६ ॥

‘ मल्ली ’-त्यादि सूत्रद्वयम्, मल्ली-मल्लीनाथस्वामी खलु अर्हन् त्रिभिः पुरु-
षशतैः-त्रिशतसंख्यकपुरुषैः सार्धं मुण्डो भूत्वा ‘ यावत् ’ इति अगाराद् अनगा-
रितां प्रव्रजितः-प्राप्तः । ‘ एवं पासेवि ’ इति एवं-मल्लीनाथस्वामिवत् पार्श्वोऽपि
पार्श्वनाथस्वाम्यर्हन्नपि त्रिशतपुरुषैः सह प्रव्रजितोऽभूदिति भावः ॥ सू० ९७ ॥

त्रिस्थानकत्वाद् भगवतो महावीरस्य चतुर्दशपूर्विसंपत्सूत्रमाह-‘ समणस्स ’
इत्यादि, श्रमणस्य खलु भगवतो महावीरस्य चतुर्दशपूर्विणां-चतुर्दशपूर्वधराणाम्,
कीदृशानाम् ? इति विशेषणकलापमाह-‘ अजिणाणं ’ इत्यादि, अजिनानाम्-
असर्वज्ञत्वेन, जिनसकाशानां-जिनसदृशानां सकलसंशयच्छेदकत्वेन, सर्वाक्षरसं-नि-
पातिनां, सर्वे-सकलाः अक्षरसं निपाताः-अकारादिसंयोगाः-सर्वाक्षरसं निपाताः,
ते विद्यन्ते येषां ते तथोक्ताः, तेषां विदितसकलवाङ्मयानामित्यर्थः पुनश्च जिन
इव अर्हद्वत्, अवितथव्यागृणताम्, अवितथं-यथावस्थितं व्यागृणतां -
व्याकुर्वतां, तीर्थकरवत्तथ्यभाषिणामित्यर्थः, एतद्विशेषणविशिष्टानां चतुर्दशपूर्विणाम्
उत्कर्षिका-उत्कृष्टा चतुर्दशपूर्विसम्पत् - एतदभिधानासम्पत् ‘ होत्था ’
इति-आमीत् ॥ सू० ९८ ॥

‘ तओ ’ इत्यादि. त्रयस्तीर्थकराः चक्रवर्त्तिन आसन्, तानेवाह-शान्तिः-
शान्तिनाथः १, कुन्धुः-कुन्धुनाथः २, अरः-अरनाथः ३ इति ॥ सू० ९९ ॥

पूर्वं तीर्थकरा वर्णिताः, ते च विमानेभ्य आगता भवन्तीति विमानवक्तव्यतां
सूत्रचतुष्टयेनाऽऽह-

मूलम्-तओ गेविज्जविमाणपत्थडा पणत्ता, तं जहा-हिट्ठि-
मगेविज्जविमाणपत्थडे १, मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे २, उव-
रिमगेविज्जविमाणपत्थडे ३ । १ । हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे
तिविहे पणत्ते, तं जहा-हेट्ठिमहट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे १, हेट्ठि-

ये तीन तीर्थकर चक्रवर्ती हुवे हैं-शान्तिनाथ-कुन्धु-अरनाथ ९९

आ त्रयु तार्धं द्वयो अर्धवर्तीपद लोशब्दु उतु-(१) शान्तिनाथ, (२)
कुन्धुनाथ अने (३) अरनाथ । ९९ ।

મહી સ્વલ્લ અર્જન મિમિ પુરુષશતે ચાર્ધે મુખ્યો ભૂત્વા યાવત્ મદનિત ૧।
 એવ પાર્શ્વોઽપિ ॥ મૂ. ૧૭ ॥

અમળસ્ય સ્વલ્લ મગધતો મહાવીરસ્ય શ્રીખિ જ્ઞતાનિ ચતુર્દશપૂર્વોણામ્ અધિ
 તાનાં જિનસક્રાશ્નાનાં સર્વાંસરસનિપાતિનાં જિન રૂપાપિસયધ્યાશુભતામ્ ઉત્ક
 પિકા ચતુર્દશપૂર્વો સપદાઽઽસીત્ ॥ મૂ. ૧૮ ॥

પ્રયસ્તીર્થકરામકર્ષણિન આસન્, તથા-શાન્તિ ૧, કુ-ધુ ૨, મરઃ ૧૧૧
 ટીકા—‘ સ્ત્રીણમોહસ્ત ’ इत्यादि । સ્ત્રીણમોહસ્ત-સ્ત્રીણમાહનોયકર્મણા
 ઈતઃ-જિનસ્ય પ્રયઃ-કર્માદ્યા-કર્મમક્રતય યુગપત્-સમક સ્ત્રીયન્તે । તથા-
 જ્ઞાનાવરણીય ૧, દર્શનાવરણીયમ્ ૨, આન્તરાયિકમ્ ૩ ॥ મૂ. ૧૩ ॥

પૂર્વમસાધવાનાં ચિસ્ત્યાનકમુચત, સામ્યત દ્યાશ્વતાનાં તદાહ- અમીર્
 -इत्यादि, અમિજિમયમ્ મિતાર-તારકમયમય મક્રપ્તમ્ । શેષ મુગમમ્ ॥ મૂ. ૧૪ ॥

પરમ્પરસૂત્રે સ્ત્રીણમોહસ્ય ચિસ્ત્યાનકમુચત, સામ્યત પ્રસજ્ઞાચક્ષિણેપાનાં તીર્થ
 કરાણાં તદાહ—‘ ધર્મામો ’ इत्यादि, ધર્માત્-ધર્મેનાયામિષાનાત્ અર્થઃ-
 ધર્માર્હિતોઽનન્તરમિત્યર્થઃ, ત્રિચતુર્માગપર્યોપમોનેપુ-ત્રિમિ-ત્રિસયપકે ચતુર્માગિ-
 પાદૈ પર્યોપમસમ્પન્નિમિકુનાનિ ત્રિચતુર્માગપર્યોપમોનાનિ, તપુ તાદ્યેષુ પર્યો
 પમચતુર્થમાગત્રપરિહિતેષુ ત્રિપુ સાગરોપમેષુ વ્યતિક્રાંતેષુ સત્તુ શાન્તિ-શાન્તિ
 નાપોઽર્જન સમુત્પન્ન ॥ મૂ. ૧૫ ॥

‘ મમળસ્તે ’-સ્થાદિ, અમળસ્ય મગધતો મહાવીરસ્ય યાવત્તતીય પુરુષયુ
 ગમ્, યુગાનિ પશ્ચર્યમિત્તાનિ કાલચિશેષા, તાનિ ચ ક્રમધ્યવસ્તિતાનિ મય
 ન્વીત્યતઃ પુરુષાઃ-પુરુષધ્વિવ્યક્રમચન્તઃ પિતાપુત્રમમધન્તો ચા, અપ્પ પુરુષ-પુરુષધ્વિ
 ક્રમચાન્, ત પ્રુગમિચ પુરુષયુગ પુરુષસિદ્ધરસમાસઃ, તત્ત્વ ત્તીય પુરુષયુગ યાવત્-

અમળ મગધાન્ મહાવીર સ્વામી કે ૩૦૦ ચતુર્દશ પૂર્વધારિયો
 શૌદ્ધ પૂર્વ ધારિયો ફીડ્ડક્રુષ્ટ ચતુર્દશ પૂર્વો સમ્પદોર્ધો યે ચતુર્દશ પૂર્વ
 ધારી અજિન યે-અસર્વજ્ઞ યે-જિનકે ઝેસે યે । કયોં કિ-યે સકલસદાય
 કે મેદ્ક યે સકલયાદ્યમય કે સકલશાસ્ત્ર કે જ્ઞાના યે, એવ તીર્થકર ફી
 તરહ તત્ત્વનાપી યે । ૧૮

અમળ અમલાન મહાવીરની ઉલ્લેખ ચતુર્દશપૂર્વ સપદા ૩૦૦ ની કલ્પી
 એટલે કે તેમના શિષ્ય સમુદાયમાં ૩૦૦ અજ્ઞાતા । શૌદ્ધ પૂર્વધારી હતા તે
 શૌદ્ધ પૂર્વધારી અજિન હતા, અસર્વજ્ઞ હતા અને જિનના સમાન હતા, કારણ
 કે તેઓ સકલ ચચચના ઉદ્ધારના સકલ વાદ્મચના (સકલ યાત્રીના)
 જ્ઞાતા હતા અને તીર્થકરની જેમ તત્ત્વનાપી હતા । ૧૮ ।

મધ્યમાધસ્તનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૧, મધ્યમમધ્યમ — ગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૨, મધ્યમોપરિતનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૩ । ૩। ઉપરિતનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટસ્ત્રિવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—ઉપરિતનાધસ્તનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૧, ઉપરિતનમધ્યમગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૨, ઉપરિતનોપરિતનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૩ । ૪ ॥ સૂ. ૧૦૦ ॥

ટીકા—‘ તઓ ગેવિજ્જં ’ ઇત્યાદિ સુત્રચતુષ્ટયં સુગમં, નવરમ્—લોકપુરુષસ્ય ગ્રીવાસ્થાને ભવાનિ ગ્રૈવેયકાણિ, તાનિ ચ તાનિ વિમાનાનીતિ ગ્રૈવેયકવિમાનાનિ, તેષાં પ્રસ્તટાઃ—રચનાવિશેષવન્તઃ સમૂહા ઇતિ ગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટાઃ—તે ત્રયઃ—ત્રિસંખ્યકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ—અધસ્તન—મધ્યમો—પરિતન ગ્રૈવેયકપ્રસ્તટભેદાત્, તથા—તાનેવાદ—‘ દિદ્ધિમગેવિજ્જં ’ ઇત્યાદિ । સર્વં સ્પષ્ટમ્ ॥ સૂ. ૧૦૦ ॥

ઇદં ચ ગ્રૈવેયકાદિવિમાનવાસિત્વં યદ્ ભવતિ તત્ કર્મણઃ સકાશાદ્ ભવતીતિ કર્મણસ્ત્રિસ્થાનકમાદ —

મૂલમ્—જીવા પાં તિટ્ટાણાણિઠ્ઠાત્તિણ પોગ્ગલે પાવકમ્મત્તાણ ચિર્ણિસુ વા ચિર્ણિતિ વા ચિણિસ્સંતિ વા, તં જહા—હૃતિથાણિ-

૬—મધ્યમાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તર—૧ મધ્યમ મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તર—૨ મધ્યમોપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તર—૩ । ઉપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તર મી ત્રીન પ્રકાર કા ૬, ઉપરિતનાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તર—૧ ઉપરિતન મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તર—૨ ઉપરિતનોપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તર—૩ । લોક પુરુષ કી ગ્રીવા કે સ્થાન મેં હોને કે કારણ યે ગ્રૈવેયક વિમાન કહલાતે હેં, હનકે રચના વિશેષ સે યુક્ત જો સમૂહ હેં વે પ્રસ્તર કહલાતે હેં । હન કે ત્રીન પ્રકાર, ઓર પ્રકારોં કે મી પ્રકાર, યે સવ ડપર પ્રકટ કર દિયે ગયે હેં । ૧૦૦

૧ મધ્યમાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તર, ૨ મધ્યમમધ્યમ ગ્રૈવેયક-વિમાન પ્રસ્તર અને ૩ મધ્યમોપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તર.

ઉપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તરના ત્રણ પ્રકાર કહ્યા છે—

૧ ઉપરિતનાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તર, ૨ ઉપરિતન મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તર અને ૩ ઉપરિતનોપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તર શ્લોકપુરુષની ગ્રીવાના સ્થાનમાં હોવાને કારણે આ વિમાનોને ગ્રૈવેયક વિમાનો કહે છે. રચના વિશેષથી યુક્ત એવા તેમના જે સમૂહ છે તેમને પ્રસ્તર કહે છે. તેના મુખ્ય ત્રણ પ્રકારોનું અને પ્રત્યેક પ્રકારના ત્રણ ત્રણ પ્રકારોનું આ સૂત્રમાં કથન કરવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ. ૧૦૦ ॥

ममजिह्वमगेविज्जविमाणपत्थडे २, हेद्विमउवरिमगेविज्जविमाण
पत्थडे ३।२। मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थड तिविह पण्णत्ते, त
जहा-मज्झिमहेद्विमगेविज्जविमाणपत्थडे१, मज्झिममज्झिमगे
विज्जविमाणपत्थडे२, मज्झिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थड ३।३।
उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविह पण्णत्ते, त जहा-उवरि
महेद्विमगेविज्जविमाणपत्थडे१, उवरिममज्झिमगेविज्जविमाण
पत्थडे२, उवरिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थड ३ । २॥ सू० १००॥

छाया—यस्य प्रेक्ष्यविमानमस्त्य मग्नता, तद्यथा—अपस्तनप्रेक्ष्य
विमानमस्त्य १ मध्यमप्रेक्ष्यविमानमस्त्य २ उपरितन प्रेक्ष्यविमानमस्त्य
३ । १ । अपस्तनप्रेक्ष्यविमानमस्त्यद्विचिध मग्नता तद्यथा—अपस्तनापस्तनप्रे
क्ष्यविमानमस्त्य १ अपस्तनमध्यमप्रेक्ष्यविमानमस्त्य २, अपस्तनोपरितनप्रे
क्ष्यविमानमस्त्य ३ । २ । मध्यमप्रेक्ष्यविमानमस्त्यद्विचिध मग्नता, तद्यथा—

तीर्थहर विमानोंसे आकर होते हैं, अतः अप विमान सत्यंभी यथाव्यता
 सुप्रकार नार सुप्रोसे करते हैं " तमो गेयिप्रविमाणपथमा पण्णरा "
 इत्यादि,

जीकाथ-नीन प्रेषणक विमान प्रसारक कह गये हैं, अतः-अपस्तान प्रेषणक
 विमान प्रसार-१ मध्यमप्रेषणक विमान प्रसार-२ उपरिगिन प्रेषणक
 विमान प्रसार-३ इनमें-अपस्तान प्रेषणक विमान प्रसार भी तीन
 प्रकार के कहे गये हैं, अपस्तानापरान्न प्रेषणक विमान प्रसार-१ अ-
 स्तानमध्यम प्रेषणक विमान प्रसार २ अपस्तानोपरिगिन प्रेषणक विमान
 प्रसार-३ । मध्यम प्रेषणक विमान प्रसार भी तीन प्रकार के कहे गये हैं

નિર્ધાર : વિમલોમાથી આપીને આ મુજબના કાગળ માળ પ નથી
હવે મુજબની નીચના ચક્ર મુદ્દા દ્વારા વિમાને જ કાગળ કરે છે—

सुभा देविप्रसन्नमसंयुक्तं दत्तम् ६५६-

१। ५। ३। २। १। ०। १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

નાર્જિતાન્ . નપુસકનિર્વર્તિતાન્ નપુમકલ્લેસ્ત્વેનાર્જિતાન્ પુદ્ગલાન જીવાઃ કાલ-
ત્રયેઽપિ અચિન્નન્-ચિન્નન્તિ ચેષ્યન્તીતિ પ્રક્રમ । ૧ । ‘ એવ દન્યનેનાકાઢ્ઠા
વાક્યેન ચયસંગાદુપચયાચાલાપકપચ્ચક્રમપિ વિજેયમ્ । એવં ચયાલાપકવત્ ઉપા-
ચિન્વન્-પરિપોષણત્ એવ ૨, અવધનન-નિર્માણનતઃ ૩, ઉદૈરયન્-અધ્યવમાય વિશે-
પાપકર્મરૂપ સે પહ્લે એકત્રિત કિયા હૈ, વર્તમાન મેં વે જિન્હેં એક-
ત્રિત કર રહે હૈં ઓર-ભવિષ્યત્ કાલ મે જિન્હેં વે એકત્રિત કરેંગે વે
પુરુષવેદ નિવર્તિત પુદ્ગલ હૈં । ડસી પ્રકાર સે નપુંસક વેદ મે રહકર
જીવને જિન પુરુષોં કો ઉપાર્જિત કર પાદકર્મરૂપ સે પહ્લે એકત્રિત
કિયા હૈ વર્તમાન મે વે જિન્હે એકત્રિત કર રહે હૈં ઓર-ભવિષ્યત્
કાલ મે વે જિન્હેં એકત્રિત કરેંગે વે નપુંસક વેદનિવર્તિત પુદ્ગલ હૈં ।
અર્થાત્-સ્ત્રી વેદરૂપ સે અર્જિત પુદ્ગલોં કો પુરુષ વેદ રૂપ સે અર્જિત
પુદ્ગલોં કો તથા-નપુંસકવેદરૂપ સે અર્જિતપુદ્ગલોં કો જીવોંને કાલત્રય
મેં અર્જિત કિયા હૈ, અવ ભી વે કરતે હૈં ઓર-ભવિષ્યત્ મે ભી વે
અર્જિત કરેંગે “ એવમ્ ” યહ આકાંક્ષા વાક્ય હૈ-હસ આકાંક્ષાવાક્ય
સે ચય કે સમ્બન્ધ સે ઉપચયગ્ન્ધ, ઉદીરણા આદિ વીચ કે આલાપક
ભી જાનની ચાહિયે હસ તરહ હસ ચય કે આલાપક કી તરહ જીવ ને
ડનકે પરિપોષણ સે શ્રૂત કાલ મે ડનકા ઉપચય કિયાહૈ વર્તમાન મેં વે

એ જ પ્રમાણે પુરુષવેદમા રહીને એવે જે પુદ્ગલોને ઉપાર્જિત કરીને
અશુભ કર્મરૂપે પડેલા એકત્રિત કર્યા છે, વર્તમાનમા તે જેમને ઉપાર્જિત
કરી રહ્યો છે અને ભવિષ્યકાળમા તે જેમને એકત્રિત કરવાનો છે, તે પુદ્ગલોને
પુરુષવેદ નિવર્તિત પુદ્ગલો કહે છે

એ જ પ્રમાણે નપુસકવેદમા રહીને એવે જે પુદ્ગલોને ઉપાર્જિત કરીને
પડેલા અશુભ કર્મરૂપે એકત્રિત કર્યા છે વર્તમાનમા તે જેમને એકત્રિત
કરી રહ્યો છે અને ભવિષ્યમા પણ તે જેમને એકત્રિત કરવાનો છે, તે પુદ્ગલોને
નપુસકવેદ નિવર્તિત પુદ્ગલો કહે છે એટલે કે સ્ત્રીવેદરૂપે ઉપાર્જિત પુદ્ગલોને
પુરુષવેદરૂપે ઉપાર્જિત પુદ્ગલોને તથા નપુસકવેદરૂપે ઉપાર્જિત પુદ્ગલોને એવ
ત્રણે કાળમા એકત્રિત કરે છે - ભૂતકાળમા પણ ઉપાર્જિત કર્યા છે, વર્તમા-
નમા પણ ઉપાર્જિત કરે છે અને ભવિષ્યમા પણ ઉપાર્જિત કરશે

“ એવમ્ ” ઇત્યાદિ-આ આકાંક્ષા વાક્ય છે આ આકાંક્ષા વાક્ય દ્વારા
ચયના સમ્બંધથી ઉપચય ગ્ન્ધ, ઉદીરણા આદિ વચ્ચેના આલાપક પણ સમજી
લેવા બોધએ આ રીતે આ ચયના આલાપકની જેમ એવે પરિપોષણની

વ્રત્તિષ્ઠ, પુરિસણિઠ્ઠવ્રત્તિષ્ઠ, નપુસગણિઠ્ઠવ્રત્તિષ્ઠ ૧। એવ “ શિષ્ણ
 ઉવ્રત્તિષ્ણ-ઘઘ ઉદી-રણ વેદ તદ્દ નિજ્જરાણેવ ” ॥ સૂ. ૧૦૧ ॥

જાયા—જીયા સ્વહુ પ્રિસ્થાનનિર્વર્તિતાનુ પુત્રલાનુ પાપકર્મતયા મચિન્ન વા,
 વિન્નન્તિ વા, વેપ્યન્તિ વા, તપયા-સ્ત્રીનિર્વર્તિતાનુ, પુરુષનિર્વર્તિતાનુ, નપુસક
 નિર્વર્તિતાનુ ૧। એવ ઘયોપઘયઘ-યોદીરણવેદાસ્થાનિર્મરા વેવ ॥ સૂ. ૧૦૧ ॥

ટીકા—‘ જીયા ’ इत्यादि सूत्रपट्टकम् । जीयाः स्वहू प्रिस्थाननिर्वर्तितान्-
 भिभिःस्थानैर्निर्वर्तिताः-उपार्जिताः । प्रिस्थाननिर्वर्तितास्तान् पुत्रलान् पापकर्म
 तया-अशुभकर्मस्वेन उधरोचराश्रुमाध्यवसायवशात् भविष्यन्-एकधीकृतवन्तो भूत-
 काले, चिन्वन्ति वर्धमानकाले, वेप्यन्ति-अनागतकाल । तपयष प्रिस्थानानि दर्श
 यति—स्त्रीनिर्वर्तितान्-स्त्रीवेदस्वेनाऽर्जितान्, पुरुषनिर्वर्तितान्-पुरुषवेदस्वे

ઐયેયક આદિ વિમાનો મેં જીય કી નિશાસિના કર્મોદય સે હોતી
 હૈ—હમ લિયે—અમ સૂત્રકાર કર્મ કે તોન સ્થાન પ્રકાર કરતે હૈ—“ જીયા
 નં તિદ્ધાણ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—જીયોને ત્રીન સ્થાનો દ્વારા ઉપાર્જિત પુત્રલોં કો ઉત્તરોત્તર અશુભ અભ
 વ્યવસાય કે ઘઝામેં હોકર પાપકર્મરૂપ સે મૂતકાલ મેં સંગૃહીત કિયા
 હૈ વર્તમાન મેં સંગૃહીત કરતે હૈં ઓર—ભવિષ્યત્ કાલ મેં સંગૃહીત
 કરેગે । વે ત્રીન સ્થાન હમ પ્રકાર સે હૈ—સ્ત્રી વેદ, પુરુષ વેદ, ઓર નપુ
 સકવેદ હનમેં રહકર જીયને જિન પુત્રલોં કો ઉપાર્જિત કર પાપકર્મ
 સે પહિલે એકત્રિત કિયા હૈ વર્તમાન મેં એકત્રિત કર રહે હૈં ઓર—ભવિ
 ષ્યત્ કાલ મેં જિન્હેં વે એકત્રિત કરેગે વે સ્ત્રી વેદ નિર્વર્તિત પુત્રલ હૈં ।
 હસી પ્રકાર પુરુષ વેદ મેં રહકર જીય ને જિન પુત્રલોં કો ઉપાર્જિત કર

ઐવેયક આદિ વિમાનોમાં છવની ઉત્પત્તિ (ઉપપાત) ક્રમોદયથી થાય
 છે તેથી હવે સૂત્રકાર કમના ત્રણ સ્થાન મહત્ કહે છે—

“ જીયાણ તિદ્ધાણ ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—છવે એ ત્રણ સ્થાનો દ્વારા ઉપાર્જિત પુત્રલોંને ઉત્તરોત્તર અશુભ અભ
 વસાયને અખીન ઘઝને અશુભ કર્મરૂપે મૂતકાળમાં સંગૃહીત કર્યાં છે વત
 માનમાં સંગૃહીત કરે છે અને ભવિષ્યમાં સંગૃહીત કરશે તે ત્રણ સ્થાન આ
 પ્રમાણે છે—શ્રીવેદ, પુરુષવેદ અને નપુસકવેદ શ્રીવેદમાં રહ્યાને છવે ને
 પુત્રલોંને ઉપાર્જિત કરીને અશુભકર્મરૂપે પહેલાં (મૂતકાળમાં) એકત્રિત કર્યાં
 ॥ વર્તમાનમાં એકત્રિત કરી રહ્યો છે અને ભવિષ્યકાળમાં પણ એને તે
 એકત્રિત કરવાનો છે તે પુત્રલોંને શ્રીવેદ નિર્વર્તિત પુત્રલોં કહે છે

નાડર્જિતાન્, નપુસકનિર્વર્તિતાન્ નપુસકવેદત્વેનાડર્જિતાન્ પુદ્ગલાન્ જીવાઃ કાલ-
ત્રયેડપિ અચિન્નન્-ચિન્વન્નિ ચેત્ત્યન્તીતિ પ્રક્રમ ૧ ૧ । ‘ એવ ઇત્યનેનાકાઙ્ક્ષા
વાક્યેન ચયસંગાદુપચયાલાપકપદ્ધતિરપિ વિજેયમ્ । એવ ચયાન્યાપકવત્ ઉપા-
ચિન્વન્-પરિપોષણત એવ ૨, અદ્યક્ષન્-નિર્માપણતઃ ૩, ઉદૈરયન્-અધ્યવસાય વિશે-
પાપકર્મરૂપ સે પહેલે એકત્રિત કિયા હૈ, વર્તમાન સે વે જિન્હે એક-
ત્રિત કર રહે હૈં ઓર-ભવિષ્યત્ કાલ સે જિન્હે વે એકત્રિત કરેંગે વે
પુરુષવેદ નિવર્તિત પુદ્ગલ હૈં । ઇત્તી પ્રકાર સે નપુંસક વેદ સે રહકર
જીવને જિત પુરુષોં કો ઉપાર્જિત કર પાપકર્મરૂપ સે પહેલે એકત્રિત
કિયા હૈ વર્તમાન સે વે જિન્હે એકત્રિત કર રહે હૈં ઓર-ભવિષ્યત્
કાલ સે વે જિન્હે એકત્રિત કરેંગે વે નપુંસક વેદનિવર્તિત પુદ્ગલ હૈં ।
અર્થાત્-સ્ત્રી વેદરૂપ સે અર્જિત પુદ્ગલોં કો પુરુષ વેદ રૂપ સે અર્જિત
પુદ્ગલોં કો તથા-નપુંસકવેદરૂપ સે અર્જિતપુદ્ગલોં કો જીવોંને કાલત્રય
સે અર્જિત કિયા હૈ, અવ ખી વે કરતે હૈં ઓર-ભવિષ્યત્ સે ખી વે
અર્જિત કરેંગે “ એવમ્ ” યદ્ આકાંક્ષા વાક્ય હૈ-ઇસ આકાંક્ષાવાક્ય
સે ચય કે સમ્બન્ધ સે ઉપચયવન્ધ, ઉદીરણા આદિ ચીચ કે આલાપક
ખી જાનની ચાહિયે ઇસ તરહ ઇસ ચય કે આલાપક કી તરહ જીવ ને
उनके परिपोषण से भूत काल से उनका उपचय किया है वर्तमान में वे

એ જ પ્રમાણે પુરુષવેદમા રહીને જીવે જે પુદ્ગલોને ઉપાર્જિત કરીને
અશુભ કર્મરૂપે પહેલા એકત્રિત કર્યા છે વર્તમાનમા તે જેમને ઉપાર્જિત
કરી રહ્યો છે અને ભવિષ્યકાળમા તે જેમને એકત્રિત કરવાનો છે, તે પુદ્ગલોને
પુરુષવેદ નિવર્તિત પુદ્ગલો કહે છે

એ જ પ્રમાણે નપુંસકવેદમા રહીને જીવે જે પુદ્ગલોને ઉપાર્જિત કરીને
પહેલા અશુભ કર્મરૂપે એકત્રિત કર્યા છે વર્તમાનમા તે જેમને એકત્રિત
કરી રહ્યો છે અને ભવિષ્યમા પણ તે જેમને એકત્રિત કરવાનો છે, તે પુદ્ગલોને
નપુંસકવેદ નિવર્તિત પુદ્ગલો કહે છે એટલે કે સ્ત્રીવેદરૂપે ઉપાર્જિત પુદ્ગલોને
પુરુષવેદરૂપે ઉપાર્જિત પુદ્ગલોને તથા નપુંસકવેદરૂપે ઉપાર્જિત પુદ્ગલોને જીવ
ત્રણે કાળમાં એકત્રિત કરે છે - ભૂતકાળમા પણ ઉપાર્જિત કર્યા છે, વર્તમા-
નમાં પણ ઉપાર્જિત કરે છે અને ભવિષ્યમા પણ ઉપાર્જિત કરશે

“ એવમ્ ” ઇત્યાદિ-આ આકાંક્ષા વાક્ય છે આ આકાંક્ષા વાક્ય દ્વારા
ચયના સમઘટી ઉપચય બન્ધ, ઉદીરણા આદિ વચ્ચેના આલાપક પણ સમજી
લેવા જોઈએ આ રીતે આ ચયના આલાપકની જેમ જીવે પરિપોષણની

વેળાનુવીર્ણોદયપ્રવેશનતા, ૪ અવેદયન-અનુમનકરણતા ૫, નિરજરયન-આત્મ પ્રદેશપરિચ્છાદનત ૬ । એવ ધર્ષમાના-નાગતકામયોરપિ ષોધ્યમ્ । ધ્યાધ્યામિત્ય ગાધાર્ષમત્ર, તથાહિ—“ ધિજ ઉવચિગ ૦ ” ઇત્યાદિ । અસ્યાર્યો ધ્યારૂપાત-પૂર્વં વચિતિ ॥ સૂ ૧૦૧ ॥

ઉપસ્ય કરતે હું ઔર-મચિષ્યત્ મેં મી ષે ડનકા ઉપસ્ય કરેંગે । હસી પ્રકાર સે અપને માર્યો કે અનુસાર ડનકા નિર્માણ કરને સે ડનકા મૂત કાલ મેં વચ કિયા હૈ, વર્તમાનકાલ મેં ષે ડનકા વચ કરતે હું, મારો મી ષે ડનકા વચ કરેંગે । હસી તરહ અધ્યવસાય વિશેષ સે અનુવીર્ણ કો ડદ્ય મેં પ્રવેશ કરાને સે જીય ને મૂતકાલ મેં ડનકી ઉદીરણા કી હૈ વર્તમાન મેં ષે ડનકી ઉદીરણા કરતે હું ઔર મચિષ્યત્ મેં ષે ડનકી ઉદીરણા કરેંગે । હસી તરહ સે જીય ને ડનકા અનુમન કરણ સે ડનકા મૂતકાલ મેં વેદન કિયા હૈ વર્તમાન મેં ષે ડનકા વેદન કરતે હું ઔર મચિષ્યત્ મેં ષે ડનકા વેદન કરેંગે । હસી પ્રકાર આત્મપ્રદેશ સે ડનકે હટાને સે જીય ને મૂતકાલ મેં ડનકી નિર્જરા કી હૈ વર્તમાન મેં ષે ડનકી નિર્જરા કરતે હું ઔર મચિષ્યત્ મેં ષે ડનકી નિર્જરા કરેંગે । અધાદિ કો આમિત કરકે યહ આધી ગાથા સૂત્રકાર ને “ વચ ધિજ ઉવચિગ

અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં પણ તેમને । ઉપસ્ય કર્યો છે, વર્તમાનમાં તે તેમને । ઉપસ્ય કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ તેમને । ઉપસ્ય કરશે

એ જ પ્રમાણે ધિતાના બાવે અનુમાર તેમનું નિર્માણ કરવાની અપેક્ષાએ હવે મૂતકાળમાં તેમને । બધ કર્યો છે વર્તમાનકાળમાં પણ તે તેમને । બધ કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ તે બધ કરશે । એ જ પ્રમાણે અધ્યવસાય વિશેષથી અનુવીર્ણ ને તેમના ઉદયમાં પ્રવેશ કરાવવાની અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં તેમની ઉદીરણા કરી છે વર્તમાનકાળમાં પણ હવે તેમની ઉદીરણા કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ હવે તેની ઉદીરણા કરશે.

એ જ પ્રમાણે હવે તેમના અનુભવનકરણની અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં તેમનું વેદન કર્યું છે વર્તમાનકાળમાં પણ હવે તેમનું વેદન કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ તે તેમનું વેદન કરશે

એ જ પ્રમાણે આત્મપ્રદેશમાંથી તેમને અલગ કરવાની અપેક્ષાએ હવે મૂતકાળમાં તેમની નિર્જરા કરી છે વર્તમાનકાળમાં પણ હવે તેમની નિર્જરા કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ હવે તેમની નિર્જરા કરશે

અધાદિને આમિત કરીને આ અર્થો આથા સૂત્રકારે “વચ ધિજ-ઉવચિગ -વચ-ઉદીરણ-વેદ તહ નિર્જરા વેદ” આ પ્રમાણે કહી છે તેના અર્થ

કર્મ ચ પુદ્ગલાત્મકમિતિ ત્રિસ્થાનકેન પુદ્ગલસ્કન્ધાનાદ—

મૂલમ્—તિપણસિયા સંધા અણંતા પળળતા । એવં જાવ
તિગુણલુક્ખા પોગળા અણંતા પળળતા ॥ સૂ૦ ૧૦૨ ॥

॥ તિટ્ટાણસ્સ ચત્થો ઉદ્દેસો સમત્તો ॥ ૩-૪ ॥

તિટ્ટાણં સમત્તં ॥ ૩ ॥

ઝાયા—ત્રિપદેશિકાઃ સ્કન્ધા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ એવં યાવત્ ત્રિગુણરૂપાઃ
પુદ્ગલા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ॥ સૂ૦ ૧૦૨ ॥

॥ તૃતીયસ્થાનરય ચતુર્ય ઉદ્દેશઃ સમાપ્તઃ ॥ ૩-૪ ॥

ટીકા—‘તિપણસિયા’ ક્ત્યાદિ સુગમમ્ ॥ સૂ૦ ૧૦૨ ॥

ફતિશ્રીવિશ્વવિખ્યાત—જગદ્બ્રહ્મ—પ્રસિદ્ધવાચક—પચ્ચદશભાષાકલિત-
લલિતકલાપાલાપક—પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક—વાદિમા-
નમર્દક શ્રીશાહુચત્રપતિ કોલ્હાપુરરાજપદત્ત ‘જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય’પદ-
ભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજગુરુ વાલ્મીકીચારિ જૈનાચાર્ય—જૈનધર્મ—

દિવાકર—પૂજ્યશ્રી—વાસીલાલવ્રતિચિરચિતાયાં

સ્થાનાન્નસૂત્રસ્ય સુધાખ્યાયાં વ્યાખ્યાયાં

ચતુરુદ્દેશાત્મકં તૃતીયં સ્થાનં સંપૂર્ણમ્ ॥ ૩-૪ ॥

બંધ ઉદીરણ વેદ તદ્ નિજ્જરાં ચેવ ” ફસ પ્રકાર સે કહી હૈ ફસકા અર્થ
હી યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે પ્રકટ કિયા હૈ । તાત્પર્ય કહને કા યહી હૈ કિ-
ચય કી તરહ હી સ્ત્રીવેદ, પુરુષવેદ ઓર નપુંસકવેદરૂપ સે અર્જિત પુદ્ગલોં
કા અશુભ રૂપ સે ઉપચય કિયા હૈ, વન્ધ કિયા હૈ, ઉદીરણ કિયા હૈ,
વેદન કિયા હૈ ઓર નિર્જરા મી કી હૈ ફસી તરહ કા કથન વર્તમાન
કાલ ઓર—અવિષ્ણકાલ સમ્બન્ધી ઉપચયાદિકોં કે આલાપકોં સે મી
કર લેના ચાહિયે ॥ સૂ ૦ ૧૦૧ ॥

પૂર્વેક્ષિતરૂપે ઉપર પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે. આ કથનતુ તાત્પર્ય એ છે કે—

અયની જેમજ સ્ત્રીવેદ, પુરુષવેદ, અને નપુંસકવેદરૂપે અર્જિત પુદ્ગલોના
છવે અશુભરૂપે ઉપચય કર્યો છે, બન્ધ કર્યો છે, ઉદીરણ કર્યું છે અને નિર્જરા
પણ કરી છે. એજ પ્રકારતુ કથન વર્તમાનકાળ અને ભૂતકાળ સંબન્ધી
ઉપચયાદિકોના આલાપકોમા પણ સમજ લેવું નેઈએ ॥ ૧૦૧ ॥

પેનાનુવીર્ણેદિયમવેદનતઃ, ધ અવેદયન્-અનુમયકરણતઃ ૧, નિરમરયન્-આત્મ
મદેશ્વરિશાટનતઃ ૨ । એવ ઘર્ષમાના-નાગતકાલયોરપિ ઘોઘ્યમ્ । ઘયાઘાધિત્પ
ગાયાર્ધમત્ર, યથાહિ—“ચિળ ઉત્તચિળ૦” ઇત્યાદિ । અમ્યાર્યો ઘ્યાહ્યાત-
પૂર્વ એવતિ ॥ સૂ૦ ૧૦૧ ॥

ઉપચય કરતે હૈં ઓર-અધિપ્યત્ મેં મી ઘે ડનકા ઉપચય કરેંગે । હસી
પ્રકાર સે અપને આર્થોં કે અનુસાર ડનકા નિર્માણ કરને સે ડનકા મૂત
કાલ મેં ઘષ કિયા હૈ, ઘર્તમાનકાલ મેં ઘે ડનકા ઘષ કરતે હૈં, આગે
મી ઘે ડનકા ઘષ કરેંગે । હસી તરહ અધ્યયમાય વિશેષ સે અનુવીર્ણ
કો ઉદય મેં પ્રવેશ કરાને સે જીવ ને મૂતકાલ મેં ડનકી ઉદીરણા કી
હૈ ઘર્તમાન મેં ઘે ડનકી ઉદીરણા કરતે હૈં ઓર અધિપ્યત્ મેં ઘે ડનકી
ઉદીરણા કરેંગે । હસી તરહ સે જીવ ને ડનકા અનુમયન કરણ સે ડનકા
મૂતકાલ મેં ઘેદન કિયા હૈ ઘર્તમાન મે ઘે ડનકા ઘેદન કરતે હૈં ઓર
અધિપ્યત્ મે ઘે ડનકા ઘેદન કરેંગે । હસી પ્રકાર આત્મપ્રવેશ સે ડનકે
હટામે સે જીવ ને મૂતકાલ મેં ડનકી નિર્જરા કી હૈ ઘર્તમાન મેં ઘે ડનકી
નિર્જરા કરતે હૈં ઓર અધિપ્યત્ મે ઘે ડનકી નિર્જરા કરેંગે । ઘયાદિ
કો આમિત કરકે યહ આધી ગાયા સૂત્રકાર ને “એવ ચિળ ઉત્તચિળ

અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં પણ તેમને ઉપચય કર્યો છે, વતમાનમાં તે તેમને
ઉપચય કરે છે અને અધિપ્યમાં પણ તેમને ઉપચય કરશે

એ જ પ્રમાણે ધોતાના આવે અનુસાર તેમનું નિર્માણ કરવાની અપે
ક્ષાએ એવે મૂતકાળમાં તેમને બ ધ કર્યો છે વતમાનકાળમાં પણ તે તેમને
બ ધ કરે છે અને અધિપ્યમાં પણ તે બ ધ કરશે એ જ પ્રમાણે અધ્યયમાય
વિશેષથી અનુવીર્ણ ને તેમના ઉદયમાં પ્રવેશ કરાવવાની અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં
તેમની ઉદીરણા કરી છે વતમાનકાળમાં પણ એવ તેમની ઉદીરણા કરે છે અને
અધિપ્યમાં પણ એવ તેની ઉદીરણા કરશે

એ જ પ્રમાણે એવે તેમના અનુમયનકરણની અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં તેમનું
ઘેદન કર્યું છે વતમાનકાળમાં પણ એવ તેમનું ઘેદન કરે છે અને અધિપ્યમાં
પણ તે તેમનું ઘેદન કરશે

એ જ પ્રમાણે આત્મપ્રવેશમાંથી તેમને અલગ કરવાની અપેક્ષાએ એવે
મૂતકાળમાં તેમની નિર્જરા કરી છે, વતમાનકાળમાં પણ એવ તેમની નિર્જરા
કરે છે અને અધિપ્યમાં પણ એવ તેમની નિર્જરા કરશે

ઘયાદિને આમિત કરીને આ અર્થો ગાયા સૂત્રકારે “એવ ચિળ-ઉત્તચિળ
-ઘષ-ઉદીરણ-ઘેદન તદ્દ નિર્જરા એવ” આ પ્રમાણે કહી છે તેને અર્થ

કર્મ ચ પુદ્ગલાત્મકમિતિ ત્રિસ્થાનકેન પુદ્ગલસ્કન્ધાનાહ—

મૂલમ્—તિપણસિયા સંધા અણંતા પળણત્તા । एवं जाव
तिगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पणत्ता ॥ सू० १०२ ॥

॥ तिद्वाणस्स चउत्थो उद्देशो समत्तो ॥ ૩-૪ ॥

તિદ્વાણં સમત્તં ॥ ૩ ॥

જાયા-ત્રિપ્રદેશિકાઃ સ્કન્ધા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ एवं यावत् त्रिगुणरूक्षाः
पुद्गला अनन्ताः प्रज्ञप्ताः ॥ सू० १०२ ॥

॥ तृतीयस्थानस्य चतुर्थ उद्देशः समाप्तः ॥ ૩-૪ ॥

ટીકા-‘ તિપણસિયા ’ ઇત્યાદિ સુગમમ્ ॥ સૂ૦ ૧૦૨ ॥

इतिश्रीविश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलित-
ललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमा-
नमर्दक श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त ‘जैनशास्त्राचार्य’पद-
भूषित-कोल्हापुरराजगुरु बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्म-

દિવાકર-પૂજ્યશ્રી-વાસીલાલવ્રતિચિરચિતાયાં

સ્થાનાન્નમ્નસ્ય સુધાખ્યાયાં વ્યાખ્યાયાં

चतुस्वेगात्मकं तृतीयं स्थानं संपूर्णम् ॥ ૩-૪ ॥

बंध उदीरण वेद तह निज्जरो चेव ” इस प्रकार से कही है इसका अर्थ
ही यह पूर्वोक्तरूप से प्रकट किया है । तात्पर्य कहने का यही है कि-
चय की तरह ही स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदरूप से अर्जित पुद्गलों
का अशुभ रूप से उपचय किया है, बन्ध किया है, उदीरण किया है,
वेदन किया है और निर्जरा भी की है इसी तरह का कथन वर्तमान
काल और-भविष्यकाल सम्बन्धी उपचयादिकों के आलापकों में भी
कर लेना चाहिये ॥ सू० १०१ ॥

પૂર્વેક્તરૂપે ઉપર પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-

ચયની જેમજ સ્ત્રીવેદ, પુરુષવેદ, અને નપુસકવેદરૂપે અર્જિત પુદ્ગલોનો
એવે અશુભરૂપે ઉપચય કર્યો છે, બન્ધ કર્યો છે, ઉદીરણ કર્યું છે અને નિર્જરા
પણ કરી છે એજ પ્રકારનું કથન વર્તમાનકાળ અને ભૂતકાળ સંબંધી
ઉપચયાદિકોના આલાપકોમા પણ સમજી લેવું નેધએ ॥ ૧૦૧ ॥

પેનાનુદીર્ણોદયપ્રવેશનતઃ, ૪ અવેદયન્-અનુમયકરણતઃ ૫, નિર્જરયન-આત્મ
પ્રદેશપરિશટનતઃ ૬ । એષ વર્તમાના-નાગતકાલયોરપિ ઘોષ્યમ્ । ચપાધાધિત્ય
ગાયાર્ષમય્ર, તથાહિ—“ચિળ ઉત્તચિગ૦” ઉત્પાદિ । અમ્યાર્યા મ્યારૂપાત-
પૂર્વં વચતિ ॥ સૂ૦ ૧૦૧ ॥

ઉપચય કરતે હું ઓર-અચિપ્પત્ મેં મી યે ડનકા ઉપચય કરેંગે । હસી
પ્રકાર સે અપને માર્યો કે અનુસાર ડનકા નિર્માણ કરને સે ડનકા મૂત
કાલ મેં ઘષ કિયા હૈ, વર્તમાનકાલ મેં યે ડનકા ઘષ કરતે હું, આગે
મી યે ડનકા ઘષ કરેંગે । હસી તરહ અપ્પચમાય વિશેષ સે અનુદીર્ણ
કો ઉદય મેં પ્રવેશ કરાને સે જીવ ને મૂતકાલ મેં ડનકી ઉદીરણા કી
હૈ વર્તમાન મેં યે ડનકી ઉદીરણા કરતે હું ઓર અચિપ્પત્ મેં યે ડનકી
ઉદીરણા કરેંગે । હસી તરહ સે જીવ ને ડનકા અનુમયન કરણ સે ડનકા
મૂતકાલ મેં વેદન કિયા હૈ વર્તમાન મેં યે ડનકા વેદન કરતે હું ઓર
અચિપ્પત્ મેં યે ડનકા વેદન કરેંગે । હસી પ્રકાર આત્મપ્રવેશ સે ડનકો
હટાને સે જીવ ને મૂતકાલ મેં ડનકી નિર્જરા કી હૈ વર્તમાન મેં યે ડનકી
નિર્જરા કરતે હું ઓર અચિપ્પત્ મેં યે ડનકી નિર્જરા કરેંગે । ચપાદિ
કો આશ્રિત કરકે યહ આધી ગાથા સૂત્રકાર ને “એવં ચિળ ઉત્તચિગ

અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં પણ તેમને ઉપચય કર્યો છે, વર્તમાનમાં તે તેમને
ઉપચય કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ તેમને ઉપચય કરશે

એ જ પ્રમાણે પોતાના ભાવે અનુસાર તેમનું નિર્માણ કરવાની અપે
ક્ષાએ હવે મૂતકાળમાં તેમને બધ કર્યો છે વર્તમાનકાળમાં પણ તે તેમને
બન્ધ કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ તે બધ કરશે એ જ પ્રમાણે અધ્યવસાય
વિશેષથી અનુદીક્ષા ને તેમના ઉદયમાં પ્રવેશ કરાવવાની અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં
તેમની ઉદીરણા કરી છે વર્તમાનકાળમાં પણ હવે તેમની ઉદીરણા કરે છે અને
અવિધ્યમાં પણ હવે તેની ઉદીરણા કરશે

એ જ પ્રમાણે હવે તેમના અનુભવનકરણની અપેક્ષાએ મૂતકાળમાં તેમનું
વેદન કર્યું છે વર્તમાનકાળમાં પણ હવે તેમનું વેદન કરે છે અને અવિધ્યમાં
પણ તે તેમનું વેદન કરશે.

એ જ પ્રમાણે આત્મપ્રવેશમાંથી તેમને અલગ કરવાની અપેક્ષાએ હવે
મૂતકાળમાં તેમની નિર્જરા કરી છે વર્તમાનકાળમાં પણ હવે તેમની નિર્જરા
કરે છે અને અવિધ્યમાં પણ હવે તેમની નિર્જરા કરશે

ચપાદિને આશ્રિત કરીને આ અર્ધો માથા સુત્રકારે “એવં ચિળ-ઉત્તચિગ
-વચ-ઉદીરણ-વેદ તદ નિર્જરા ચેવ” આ પ્રમાણે કહી છે તેનો અર્થ

કર્મ ચ પુદ્ગલાત્મકમિતિ ત્રિસ્થાનકેન પુદ્ગલસ્કન્ધાનાદ—

મૂલમ્—તિપ્પસિયા સ્વંધા અણંતા પપ્પણ્ણા । એવં જાવ
તિગુણલ્લુક્ખા પોગ્ગલા અણંતા પપ્પણ્ણા ॥ સૂ૦ ૧૦૨ ॥

॥ તિદ્ધાણસ્સ ચઉત્થો ઉદ્દેસો સમત્તો ॥ ૩-૪ ॥

તિદ્ધાણં સમત્ત ॥ ૩ ॥

જાયા—ત્રિપદેશિકાઃ મ્હન્ધા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ એવં યાવત્ ત્રિગુણરુદ્ધાઃ
પુદ્ગલા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ॥ સુ૦ ૧૦૨ ॥

॥ તૃતીયસ્થાનસ્ય ચતુર્થ ઉદ્દેશઃ સમાપ્તઃ ॥ ૩-૪ ॥

ટીકા—‘તિપ્પસિયા’ ઇત્યાદિ સ્ત્રુગમમ્ ॥ સુ૦ ૧૦૨ ॥

इतिश्रीविश्वविख्यात-जगद्ब्रह्म-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलित-
ललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमा-
नमर्दक श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजमदत्त ‘जैनशास्त्राचार्य’पद-
भूषित-कोल्हापुरराजगुरु वाकब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्म-

दिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां

स्थानाङ्गसूत्रस्य सुवाख्यायां व्याख्यायां

चतुस्तेशात्मकं तृतीयं स्थानं संपूर्णम् ॥ ૩-૪ ॥

બંધ ઉદીરણ વેદ તહ નિજ્જરો ચેવ ” હસ પ્રકાર સે કહી હૈ હસકા અર્થ
હી યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે પ્રકટ કિયા હૈ । તાત્પર્ય કહને કા યહી હૈ કિ-
ચય કી તરહ હી સ્ત્રીવેદ, પુરુષવેદ ઓર નપુંસકવેદરૂપ સે અર્જિત પુદ્ગલો
કા અશુભ રૂપ સે ઉપચય કિયા હૈ, બન્ધ કિયા હૈ, ઉદીરણ કિયા હૈ,
વેદન કિયા હૈ ઓર નિર્જરા મી કી હૈ હસી તરહ કા કથન વર્તમાન
કાલ ઓર-અવિષ્ણકાલ સમ્બન્ધી ઉપચયાદિકોં કે આલાપકોં મેં મી
કર લેના ચાહિયે ॥ સુ ૦ ૧૦૧ ॥

પૂર્વેક્ષિતરૂપે ઉપર પ્રકટ કરવામા આગ્યો છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે—

ચયની જેમજ સ્ત્રીવેદ, પુરુષવેદ, અને નપુંસકવેદરૂપે અર્જિત પુદ્ગલોના
અવે અશુભરૂપે ઉપચય કર્યો છે, બન્ધ કર્યો છે, ઉદીરણ કર્યું છે અને નિર્જરા
પણ કરી છે. એજ પ્રકારનું કથન વર્તમાનકાળ અને ભૂતકાળ સંબંધી
ઉપચયાદિકોના આલાપકોમા પણ સમજ લેવું જોઈએ ॥ ૧૦૧ ॥

कम पुद्गल स्कन्धरूप होते हैं, अतः -सूत्रकार त्रिस्थान को लेकर पुद्गलस्कन्धों का कथन करते हैं—

“ त्रिपणसिया स्वधा अणता—” इत्यादि । त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अनन्त कहे गये हैं इसी तरह से यावत् त्रिगुणस्कन्ध पुद्गल भी अनन्त कहे गये हैं ॥ १०१ ॥

श्री जेनाचार्य-जैनधर्मविद्याकर-पूज्यश्री घासीलाल प्रतिविरचित स्थानाङ्गसूत्रकी सुधाररूप टीका के चार उद्देशक युक्त तीसरे स्थानक समाप्त ॥ ३-४ ॥

अब पुद्गल स्कन्धरूप होय छे तेथी कवे सूत्रकार त्रिस्थानकानी अपेक्षामे पुद्गल स्कन्ध कथन करे छे—

“ त्रिपणसिया स्वधा अणता ” इत्यादि ।

त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अनन्त कहा छे जे प्रभावे त्रिगुणस्कन्ध पर्यन्तना पुद्गलको पक्ष अनन्त कहा छे ॥ १०२ ॥

श्री जेनाचार्य-जैनधर्मविद्याकर-पूज्यश्री घासीलाल प्रतिविरचित स्थानाङ्गसूत्रकी सुधार नाम्नी टीकाकी चार उद्देशक बाहु त्रीशु स्थानक समाप्त ॥ ३-४ ॥

ॐ

श्रीवीतरागाय नमः ।

अथ चतुर्थं स्थानं प्रारभ्यते

चतुर्थस्थानस्य प्रथमोद्देशः ॥१॥

महावीरं धीरं जितमदनवीरं प्रभुवरं,
कृपापारावारं दलितभवभारं जिनवरम् ॥
त्रिधा वन्दे वन्देलिमपदसरोजं सुरवरै-
स्ततस्तूर्यं स्थानं विवरणपथं प्रापय इदम् ॥१॥

चौथा स्थानक के पहिला उद्देशक प्रारंभ

मङ्गलाचरणम्—

“ महावीरं वीरं ” इत्यादि १ ॥

इस श्लोक का सक्षेप में अर्थ इस प्रकार से है—जिनके चन्दनीय पद कमलों की चन्दना देवेन्द्र करते हैं, जो कृपा के अपार पारावार हैं, जिन्होंने अपना भव भार उतार दिया है, ऐसे धीर वीर प्रभुवर महावीर को कि जिन्होंने मदन-काम जैसे श्रेष्ठ वीर के मद को चूर कर दिया है मैं मन वचन और कायरूप त्रिकरण त्रिभागसे नमस्कार करता हूँ, स्थानाङ्ग सूत्र का यह चतुर्थ स्थान अब विवरण युक्त किया जाता है —

चौथा स्थानનો पहिलો ઉદ્દેશક પ્રારંભ

— મંગલાચરણ —

“ મહાવીર વીર ” ઇત્યાદિ—

આ શ્લોકનો લાવાર્થ સક્ષિપ્તમા પ્રકટ કરવામાં આવે છે—જેમના વન્દનીય ચરણકમલોની વદણ દેવેન્દ્રો પણ કરે છે, જેમની કૃપા પારાવાર છે, જેમણે પોતાનો ભવભાર ઉતારી નાખ્યો છે, જેમણે મદન (કામ) જેવા મહાવીરના મદને—અહંકારને સર્વથા શક્ય કરી નાખ્યો છે એવા ધીર વીર પ્રભુવર મહાવીરને હું મન, વચન અને કાયથી નમન કરું છું.

ગત તૃતીયં સ્થાનં, સમ્પત્તિ ક્રમપાપ્ત ચતુર્થસ્થાન પ્રારમ્ભતે, અસ્ય ચ પૂર્વેન સઠાયમમિસમ્બન્ધ-“ તૃતીયસ્થાને જીવાજીવાદિદ્રવ્યપર્યાયાણાં વૈચિત્ર્યમમિ રિતમશ્રાપિ સદયમિવીયતે ” इत्यमुनासम्बन्धेनाऽऽयावत्स्य चतुर्दशकात्मकस्य चतुर्थस्थानस्य प्रथमोद्देशकस्याऽऽद्य सूत्रमाह—

મૂળમ્—ચત્તારિ અતકિરિયાઓ પળણત્તાઓ ત જહા—તસ્થ
ખલ્લ પઢમા ઇમા અતકિરિયા અપ્પકમ્મપચ્ચાયાપ યાવિ હવ્વહ,
સે ણં મુઢે ભવિત્તા અગારાઓ અળગારિય પઘ્વહ્વ સયમવહુલે
સવરવહુલે સમાહિવહુલે લ્હહે તીરટ્ટી ઉવહાળવ દુક્કલ
ક્કલ્લવે તવસ્સી તસ્સ ણં ણો તહપ્પગારે તવે હવ્વહ, ણો તહપ્પ
ગારા વેયણા હવ્વહ તહપ્પગારે પુરિસજાણ દીહેણ પરિયાપ્પણં
સિજ્જહ વુજ્જહ મુચ્ચહ પરિણિઢ્ઠાહ સવ્વ દુક્કલ્લાણમત્ત કરેહ,
જહા—સે મરહે રાયા ષાઠરત્તચક્કવટ્ટી, પઢમા અતકિરિયા ૧,
અહાવરા દોઢ્ઠા અતકિરિયા મહાકમ્મપચ્ચાયાપ યાવિ મવ્વહ,

તૃતીય સ્થાન મમાસ હો ચુકા, અવ ક્રમ પ્રાપ્ત ચતુર્થ સ્થાન પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ इस स्थान का पूर्वस्थान के साथ ऐसा सम्बन्ध है—“तृतीय
स्थान में जीवाजीवादि द्रव्यों की पर्यायों का वैचित्र्य विविध प्रकार
कहा गया है,—सो यहां पर भी वही कहा जावेगा” इसी सम्बन्ध से
आये हुए इस चार उद्देशात्मक चतुर्थ स्थानके प्रथम उद्देशका यह आद्य
सूत्र कहा जा रहा है—“चत्तारि अत किरियाओ पण्यत्ताओ—” इत्यादि

હવે સ્થાનાંગ સૂત્રના ચોથા સ્થાનનું વિવેચન કરવામાં આવે છે—
ત્રીજા સ્થાનનું વિવરણ પૂર્વે થતું હવે અનુક્રમ પ્રમાણે ચોથા સ્થાનની પ્રકૃષ્ઠા
શરૂ થાય છે આ સ્થાનનો પૂર્વ સ્થાન સાથે આ પ્રકારનો સબન્ધ છે—
ત્રીજા સ્થાનમાં જીવ, જીવાદિ દ્રવ્યોની પર્યાયોનું વૈચિત્ર્ય વિવિધ પ્રકારે પ્રકટ
કરવામાં આવ્યું છે, અહીં પણ જો જીવ વિવરને અનુશક્તીને આર સ્થાનની
અધિક્ષાએ નિરૂપણ કરવામાં આવશે. ચતુર્થ સ્થાનનું પ્રતિષ્ઠાન કરતાં આર
ઉદ્દેશો છે, તેમાંથી પહેલા ઉદ્દેશનું પહેલું સૂત્ર આ પ્રમાણે છે—

“ ચત્તારિ અતકિરિયાઓ પળ્યત્તાઓ ” ઉત્પાદિ—

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संयमवहुले
 संवरवहुले जाव उवहाणवं दुक्खवक्खवे तदस्सी तस्स णं तहप्प-
 गारे तवे भवइ, तहप्पगारा वेयणा भवइ, तहप्पगारे पुरिसजाए
 निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झइ, जाव अंतं करेइ, जहा-से गयसू-
 माले अणगारे, दोच्चा अंतकिरिया २, अहावरा तच्चा अंतकि-
 रिया—महाकम्मपच्चायाए यावि भवइ, से णं मुंडे भवित्ता अगा-
 राओ अणगारियं पव्वइए जहा दोच्चा, नवरं दीहेणं परियाएणं
 सिज्झइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, जहा-से सणंकुमारे राया
 चाउरंतचक्रवट्ठी, तच्चा अंतकिरिया ३, अहावरा चउत्था अंत-
 किरिया—अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ, से णं मुंडे भवित्ता
 जाव पव्वइए संयमवहुले जाव तस्स णं णो तहप्पगारे तवे
 भवइ, णो तहप्पगारा वेयणा भवइ, तहप्पगारे पुरिसजाए निरु-
 द्धेणं परियाएणं सिज्झइ, जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, जहा-
 सा मरुदेवा भगवई, चउत्था अंतकिरिया ४ ॥ सू० १ ॥

छाया—चतस्रोऽन्तक्रियाः प्रज्ञप्ता, तथा—तत्र खलु प्रथमा इयम् अन्त-
 क्रिया—अल्पकर्मप्रत्यायातश्चापि भवति, असौ खलु मुण्डो भूत्वा अगारतोऽनगा-
 रितां प्रव्रजितः संयमवहुलः संवरवहुलः, समाधिवहुलः रूक्षः (बः)
 तीरार्थी तीरस्थायी तीरस्थितिर्वा उपधानवान् दुःखक्षयः तपस्वी, तस्य खलु नो
 तथाप्रकारं तपो भवति, नो तथाप्रकारा वेदना भवति, तथाप्रकारं पुरुषजातं
 दीर्घेण पर्यायेण मिध्यति बुध्यते मुच्यते परिनिर्वाति सर्वदुःखानामन्तं करोति,
 यथा ऽसौ भरतो राजा चातुरन्तचक्रवर्ती, प्रथमाऽन्तक्रिया १, अथापरा द्वितीया
 अन्तक्रिया—महाकर्मप्रत्यायातश्चापि भवति, असौ खलु मुण्डो भूत्वा अगारतोऽन-
 गारितां प्रव्रजितः संयमवहुलः संवरवहुलः यावत् उपधानवान् दुःखक्षयः तपस्वी,
 तस्य खलु तथाप्रकारं तपो भवति, तथाप्रकारा वेदना भवति, तथाप्रकारं पुरुष-

ગત તૃતીય સ્થાન, સમ્પત્તિ ક્રમપાત્ર ચતુર્થસ્થાન પ્રારમ્ભતે, અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમમિસમ્બન્ધ -“ તૃતીયસ્થાને જીવાજીવાદિદ્રવ્યપર્યાયાણાં વૈચિત્ર્યમમિ રિતમત્રાપિ વહેવામિધીયતે ” इत्यमुनासम्बन्धेनाऽऽयातस्य चतुर्दशकस्यात्मकस्य चतुर्थस्थानस्य प्रथमोद्देशकस्याऽऽद्य सूत्रमाह—

મુષ્પ-ચત્તારિ અતકિરિયાઓ પળણત્તાઓ ત જહા-તત્થ સ્વલ્લ પઢમા હમા અતકિરિયા અપ્પકમ્મપચ્ચાયાપ્પ યાવિ હવહ્, સે ણં મુઢે મવિત્તા અગારાઓ અળગારિય પધ્દપ્પ સયમવહુલે સવરવહુલે સમાહિયહુલે લ્હદે તીરટ્ટી ઉવહાળવ દુક્કલ્લ કલ્લવે તવસ્સી તસ્સ ણં ણો તહપ્પગારે તવે હવહ્, ણો તહપ્પ ગારા વેયણા હવહ્ તહપ્પગારે પુરિસજાપ્પ દીહેણ પરિયાપ્પણં સિજ્જહ્, વુજ્જહ્ મુચ્ચહ્ પરિણિવ્વાહ્ સલ્લ દુક્ખાણમત કરેહ્, જહા-સે મરહે રાયા ષાઊરત્તચક્કવટ્ટી, પઢમા અતકિરિયા ૧, અહાવરા દોઢ્વા અતકિરિયા મહાકમ્મપચ્ચાયાપ્પ યાવિ મવહ્,

તૃતીય સ્થાન સમાપ્ત હો ચુકા, અપ ક્રમ પ્રાપ્ત ચતુર્થ સ્થાન પ્રારમ્ભ હોતા હૈં. આ સ્થાનના પૂર્વસ્થાનના સાથે એવો સમ્બન્ધ હૈં—“ તૃતીય સ્થાનમાં જીવાજીવાદિ દ્રવ્યોની પર્યાયોનાં વૈચિત્ર્ય વિવિધ પ્રકાર કહા ગયા હૈં,—સો યહાં પર મી યહી કહા જાયેગા ”. આ સમ્બન્ધ સે આવે હુએ આ ચાર વહેવારમાક ચતુર્થ સ્થાનના પ્રથમ વહેવારમાક આ આપ સૂત્ર કહા જા રહા હૈં—“ ચત્તારિ અતકિરિયાઓ પળણત્તાઓ—” इत्यादि

હવે સ્થાનાગ સૂત્રના યોગ સ્થાનનું વિવેચન કરવામાં આવે છે— ત્રીજા સ્થાનનું વિવરણ પૂર્વે થયું હતું. હવે અનુક્રમ પ્રમાણે ચોથા સ્થાનની પ્રશ્નના શરૂ થાય છે. આ સ્થાનને પૂર્વ સ્થાન સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે— ત્રીજા સ્થાનમાં જીવ, અજીવોદિ દ્રવ્યોની પર્યાયોનાં વૈચિત્ર્ય વિવિધ પ્રકાર પ્રકટ કરવામાં આ યુ છે, અહીં પણ એ જ વિષયને અનુસરીને ચાર સ્થાનની અપેક્ષાએ નિરૂપણ કરવામાં આવશે. ચતુર્થ સ્થાનનું પ્રતિષ્ઠાન કરતાં ચાર ઉદ્દેશો છે તેમાંથી પહેલા બેમાંથી પહેલું સૂત્ર આ પ્રમાણે છે—

‘ ચત્તારિ અતકિરિયાઓ પળણત્તાઓ ’ इत्यादि—

ક્તેયા-અલ્પકર્મપ્રત્યાયાતઃ=અલ્પકર્મા-પૂર્વકૃતશુભકર્મપ્રભાવાલ્લુપ્તકર્મા સન્ પ્રત્યા-
યાતઃ=દેવલોકાદિતઃ સમાયાતો ભવતિ તસ્ય ભવાન્તભવન મગમાઽન્તક્રિયા
ભવતિ, તમેવ પુરુષ વર્ણયતિ- ' સે ' ઇત્યાદિ, મ=લુપ્તકર્મા સ્વલુ મુળઃ=દ્રવ્યતો
લુચિતકેશો ભાવતો દૂરીકૃતરૂપાયો ભૂત્વા અગારતઃ=દ્રવ્યતો ગૃહાત્, ભાવતોઽવિ-
વેકસદનાત્, અનગારિતામ્=અગારં-ગૃહમસ્યાસ્તીત્યગારી-ગૃહી-અમંયતઃ, નાગારી-
ત્યનગારી-સંયત', તસ્ય ભાવોઽનગારિતા, તાં=સાધુતાં, મત્રજિતઃ=પાપ્તઃ, યદ્વા-
" અનગારિય ' ઇત્યત્ર વિભક્તિ ત્રિપરિણામેનાનગારિતયા, મત્રજિતઃ=દીક્ષિતઃ ।
પુનઃ કોદશઃ ? સંયમબહુલઃ=મંયમેન-પૃથિવ્યાદિપદ્મજીવનિકાયરક્ષણરૂપેણ સપ્ત-
દશવિધેન બહુલઃ=પચુરઃ પુનઃ કોદશઃ ? મંવરબહુલઃ=સંવરેણ-આત્મવનિરોધેન,

યહ પ્રથમ અન્તક્રિયા જિસ પુરુષ કી હોતી હૈ અવ ઉસકે વિષય મેં
સૂત્રકાર કથન કરતે હૈ-લુપ્તકર્મા પુરુષ દ્રવ્ય સે લુંચિત કેશવાળા હોકર
ઔર ભાવ સે રૂપાયોં સે રહિત હોકર અનગારાવસ્થા સે-ગૃહસ્થાવસ્થા
સે દ્રવ્ય કી અપેક્ષાં ઘર સે, ઔર ભાવ કી અપેક્ષા અવિવેક રૂપ સે
નિકલ કર અનગારાવસ્થા કો સંયતાવસ્થા કો સાધુતા કો
પ્રાપ્ત હો જાતા હૈ । અથવા-"અનગારિયં" પદકા એસા બી અર્થ
હો સકતા હૈ-ફિ યહ અનગારીરૂપ સે દીક્ષિત હો જાતા હૈ ।
સંયમ બહુલઃ-પૃથિવ્યાદિ પદ્મ જીવનિકાય કી રક્ષા કરને રૂપ ૧૭ પ્રકાર
કે સંયમ સે પ્રચુર હો જાતા હૈ । મંવર બહુલઃ આત્મવ નિરોધરૂપ સંવર
સે, યદ્વા ઉદ્વિય રૂપાય નિગ્રહાદિરૂપ સંવર સે પ્રચુર હો જાતા હૈ, અર્થાત્

પહેલા પ્રકારની અન્તક્રિયા કરનાર પુરુષના વિષયમા અહીં સૂત્રકાર નીચે
પ્રમાણે કથન કરે છે-લુપ્તકર્મા પુરુષ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ લુચિત કેશવાળો થઇને
અને ભાવની અપેક્ષાએ રૂપાયોથી રહિત થઇને અગારાવસ્થાના (ગૃહસ્થા-
વસ્થાના) પરિત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થા-સંયતાવસ્થાને (સધુતાને) પ્રાપ્ત
કરે છે આ પ્રમાણે અણુગારાવસ્થા ધારણ કરવામાં તે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ
સાંસારિક ધરમાથી અને ભાવની અપેક્ષાએ અવિવેક રૂપ ધરમાથી બહાર
નીકળીને સંયતાવસ્થામ પત્ર ખને છે અથવા-"અનગારિય" આ પદનો વિભક્તિ
એવો અર્થ પણ ધર્ષ શકે છે કે " તે અણુગારી રૂપે થઈ નય
છે " " સંયમબહુલ " તે પૃથ્વીકાય આદિ ૭ જીવનિકાયની રક્ષા કરવા
રૂપ ૧૭ પ્રકારના સંયમથી પ્રચુર (ખૂબ જ ચુક્ત) થઈ નય છે " સંવર-
બહુલ " તે આત્મવના નિરોધ રૂપ સંવરથી અથવા ઇન્દ્રિય રૂપાય નિગ્રહાદિ
રૂપ સંવરમા પ્રચુર થઈ નય છે-એટલે કે રૂપાય અને ઇન્દ્રિયનય રૂપ સંવૃત
સ ૪૬

ખાતં નિરુદ્ધેન પર્ણાયેગ મિધ્યતિ યાવત્ અન્ત કરોતિ, યથા ડસૌ ગજસુકુમારઃ
 મનગારાઃ, દ્વિતીયાઽન્તક્રિયા ૨, અપાપરા તૃતીયાઽન્તક્રિયા-મહાક્રમ-પ્રત્યાયાત
 ધ્યાપિ મરતિ, અસૌ સ્વલ્લ મુષ્ઠો મૂત્વા અગારાદ્ મનગારિતાં પ્રવ્રજિત, યથા
 દ્વિતીયા, નયરં દોષેણ પર્ણાયેગ મિધ્યતિ યાવત્ સવદ્ સ્થાનામન્ત કરોતિ, યથા ડસૌ
 સનત્કુમારો રાજા ચાતુરન્તષક્રવર્તી, તૃતીયાઽન્તક્રિયા ૩, અપાપરા ચતુર્વી
 અન્તક્રિયા-અલ્પકર્મપ્રત્યાયાતધ્યાપિ મરતિ, અસૌ સ્વલ્લ મુષ્ઠો મૂત્વા યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ
 સંયમસદ્ગુલ યાવત્ તસ્ય સ્વલ્લ નો તથાપ્રકાર તપો મરતિ, નો તથાપ્રકારા ચેદના
 મરતિ, તથાપ્રકારં પુરુષજાત નિરુદ્ધેન પર્ણાયેગ મિધ્યતિ યાવત્ સર્વદ્ધાસ્થાનામન્ત
 કરોતિ, યથા-સા મરુદેશી મગરતી, ચતુર્વી અન્તક્રિયા ૪ ॥ મૃ૦ ૧ ॥

તીકા—“ ચતારિ ” इत्यादि—एतद्व्यवहितपूर्वप्रतिपादितोद्देशकस्त्वोपान्त्य
 सूत्रे कर्मणश्चादि प्रतिपादितम्, अथ तु कर्मणस्तत्कार्यस्य भवस्य चाऽन्तक्रिया
 प्रतिपाद्यते, चतस्रः=चतुः सस्यकाः, अन्तक्रिया=मवस्थान्तकरणरूपा, प्रवृत्ताः=
 प्रतिपादिता, तपः=चतुर्विधान्तक्रियासु, प्रथमा इयम्=मनुष्यं वक्ष्यमाणा, अन्त

તીકાર્થ—અન્ત ક્રિયાઈ ચાર કહી ગઈ છે, इनमें—प्रथम अन्तक्रिया यह है
 “अल्पकर्म प्रतयायातव्यापि भवति” पूर्वकृत शुभकर्म के प्रभाव से
 लघुकर्मा हुआ जो जीव वैवलोक से यहां आया हुआ होता है इसके
 भव का अन्त होना यह प्रथम अन्तक्रिया है अन्तक्रिया पूर्ण करने का
 भाव इस प्रकार से है कि तृतीयस्थान के उपान्त्य सूत्र में जो कर्म के
 तद्रूप चयादिकोंका कथन किया गया है सो यहां पर कर्मकी और—उसके
 कार्यभूत भव की अन्तक्रिया कहना है, अन्तः—उसका यहां प्रतिपादन
 किया जा रहा है। यह अन्तक्रिया चार प्रकार की कही गई है—उसमें

તીકાર્થ—અન્તક્રિયાઓ ચાર કહી છે તેમાં પ્રથમ અન્તક્રિયા આ છે—“અલ્પકર્મ
 પ્રત્યાયાતવ્યાપિ મરતિ” પૂર્વકૃત શુભકર્મના પ્રભાવથી લઘુકર્મા (લઘુકર્મો)
 બનેલો જે લગ્ન દેવસેકમાંથી અહીં આવ્યો છે તેના ભરનો અન્ત થવો
 તે પ્રથમ અન્તક્રિયા છે

અહીં અન્તક્રિયાનું વર્ણન કરવાનો હેતુ આ પ્રમાણે છે—ત્રીજા સ્થાનના
 ઉપાન્ત્ય (છેલ્લા સૂત્ર પહેલાનું સૂત્ર) સૂત્રમાં કથનના અયાદિકોનું કથન
 કરવામાં આવ્યું છે, ત્યારે અહીં કથનની અને તેના કાર્યભૂત ભરની અન્ત
 ક્રિયાનું કથન કરવાનું છે આ સંબંધને અનુસરીને અહીં અન્તક્રિયાનું પ્રતિ
 પાદન કરવામાં આવે છે તે અન્તક્રિયા ચાર પ્રકારની કહી છે તેમાં આ

ક્ત્રિયા-અલ્પકર્મપ્રત્યાયાતઃ=અલ્પકર્મા-પૂર્વકૃતશુભકર્મપ્રભાવાલ્લુપ્તકર્મા સન્ પ્રત્યા-
યાતઃ=દેવલોકાદિતઃ સમાયાતો ભવતિ તસ્ય ભવાન્તભવન પ્રથમાડન્તક્રિયા
ભવતિ, તમેવ પુરુષં વર્ણયતિ-‘ સે ’ ઇત્યાદિ, સ=લુપ્તકર્મા સ્વલુ મુખ્ડઃ=દ્રવ્યતો
લુચ્ચિતકેશો ભાવતો દૂરીકૃતકપાયો થૂત્વા અગારતઃ=દ્રવ્યતો ગૃહાત્, ભાવતોડવિ-
વેકસદનાત્, અનગારિતામ્=અગારં-ગૃહમસ્યાસ્તીત્યગારી-ગૃહી-અર્મયતઃ, નાગારી-
ત્યનગારી-સંયતઃ, તસ્ય માત્રોડનગારિતા, તાં=સાધુતાં, પ્રવ્રજિતઃ=પ્રાપ્તઃ, યદ્વા-
“ અનગારિય ’ ઇત્યત્ર વિભક્તિ વિપરિણામેનાનગારિતયા, પ્રવ્રજિતઃ=દીક્ષિતઃ ।
પુનઃ કીદ્દશઃ ? સંયમવહુલઃ=સંયમેન-પૃથિવ્યાદિપઙ્ગજીવનિકાયરક્ષણરૂપેણ મપ્ત-
દશવિધેન વહુલઃ=મચુરઃ. પુનઃ કીદ્દશઃ ? સંવરવહુલઃ=સંવરેણ-આસ્રવનિરોધેન,

યહ પ્રથમ અન્તક્રિયા જિસ પુરુષ કી હોતી હૈ અવ ઉસકે વિષય મેં
સૂત્રકાર કથન કરતે હૈં-લુપ્તકર્મા પુરુષ દ્રવ્ય સે લુંચિત કેશવાલા હોકર
ઔર ભાવ સે કપાયોં સે રહિત હોકર અનગારાવસ્થા સે-ગૃહસ્થાવસ્થા
સે દ્રવ્ય કી અપેક્ષાં ઘર સે, ઔર ભાવ કી અપેક્ષા અવિવેક રૂપ સે
નિકલ કર અનગારાવસ્થા કો સંયતાવસ્થા કો સાધુતા કો
પ્રાપ્ત હો જાતા હૈ । અથવા-“ અનગારિયં ” પદકા ઈસા મી અર્થ
હો સકતા હૈ-કિ યહ અનગારીરૂપ સે દીક્ષિત હો જાતા હૈ ।
સંયમ વહુલઃ-પૃથિવ્યાદિ પઙ્ગ જીવનિકાય કી રક્ષા કરને રૂપ ૧૭ પ્રકાર
કે સંયમ સે પ્રચુર હો જાતા હૈ । સંવર વહુલઃ આસ્રવ નિરોધરૂપ સંવર
સે, યદ્વા હૃદ્રિય કપાય નિગ્રહાદિરૂપ સંવર સે પ્રચુર હો જાતા હૈ, અર્થાત્

પહેલા પ્રકારની અન્તક્રિયા કરનાર પુરુષના વિષયમા આહીં સૂત્રકાર નીચે
પ્રમાણે કથન કરે છે-લુપ્તકર્મા પુરુષ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ લુંચિત કેશવાળો થઇને
અને ભાવની અપેક્ષાએ કપાયોથી રહિત થઇને અગારાવસ્થાના (ગૃહસ્થા-
વસ્થાના) પરિત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થા-સંયતાવસ્થાને (સધુતાને) પ્રાપ્ત
કરે છે આ પ્રમાણે અણુગારાવસ્થા ધારણ કરવામા તે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ
સાંસારિક ઘરમાંથી અને ભાવની અપેક્ષાએ અવિવેક રૂપ ઘરમાંથી બહાર
નીકળીને સંયતાવસ્થાસપ્ત બને છે અથવા-“ અનગારિય ” આ પદનો વિભક્તિ
એવો અર્થ પણ ઘઈ શકે છે કે “ તે અણુગારી રૂપે થઈ બળ્ય
છે ” “ સંયમવહુલ ” તે પૃથ્વીકાય આદિ છ જીવનિકાયની રક્ષા કરવા
રૂપ ૧૭ પ્રકારના સંયમથી પ્રચુર (ખૂબ જ સુક્ત) થઈ બળ્ય છે “ સંવર-
વહુલ ” તે આસ્રવના નિરોધ રૂપ સંવરથી અથવા હૃદ્રિય કપાય નિગ્રહાદિ
રૂપ સંવરમાં પ્રચુર થઈ બળ્ય છે એવો અર્થ પણ થઈ શકે છે

યદેન્દ્રિયરૂપાયનિગ્રહાદિના, ઘટુક્ષ્મઃ, તથા સયમમહુલત્વવિશેષણોપાદાન પદ્ધતિરનિકા-
યવિરાપનાચિરમણમુખ્યતા સૂચનાર્થે, યત —

“એકકંચિય એસ્ય યય નિરિદ્ધં જિનવરેહિ સખ્યેરિં ।

પાણાદિપાતચિરમણમયસેસા તસ્સ રક્ષદ્ધા ” ॥૧॥” ઇતિ,

છાયા—“એકમેવાત્ર વ્રત નિરિદ્ધં જિનવરે સર્વેઃ ।

પાણાદિપાતચિરમણમયસેપાણિ તસ્ય રક્ષાર્થમ્ ॥૧॥” ઇતિ,

પરત્સયમમહુલત્વ — સવરમહુલત્વદ્વય રાગાદિરહિતચિત્તવૃત્તેઃ પુરુષસિદ્ધસ્ય
જાપતે, અતઃ આહ—“સમાધિયહુલઃ ” ઇતિ, સમાધિ—ચિત્તસ્વાસ્થ્ય, તેન મહુલઃ,
સમાધિઃ તથા રાગરહિતસ્યેવ મવતીત્યાદ—“રક્ષ ” દ્રવ્યતઃ શરીરે તૈલામ્યજ્ઞ-
વર્જિતત્વેન, માયતઃ કામાદિરહિતત્વેન । કયમસૌ સયમમહુલત્વાદિવિશિષ્ટો મવ

કપાય ઓર ઇન્દ્રિયજયરૂપ સંપૂર્ણ જિસકા પ્રચુર હૈ પેસા હો જાતા હૈ,
પહાં—“સયમમહુલ ” હસ બિદોષણ કા જો ઉપાદાન હુવા હૈ મહ પદ્
જીવનિકાય કી ઘિરાપના સે ચિરમણ હોને કી મુસૂપતા સૂચના કે લિયે
હુવા હૈ । ક્યોં કિ—“એકકંચિય એસ્યયય ” હસ્યાદિ પેસા કહા હૈ કિ
સમસ્ત જિનવરોં ને પ્રાણાતિપાત ચિરમણરૂપ એક હી વ્રત કહા હૈ બાકી
કે જો ઓર ઓર વ્રત હૈ યે સયમ હમી કી રક્ષા કે લિયે કહે ગયે હૈ ।
સયમ મહુલતા ઓર સવર મહુલતા યે દો રાગાદિ રહિત ચિત્તવૃત્તિવાળે
પુરુષસિદ્ધ કો હોતે હૈ । હસીલિયે “સમાધિયહુલ ” પેસા કહા હૈ સમાધિ
ચિત્તસ્વાસ્થ્ય સે જો મહુલ હો જાતા હૈ રક્ષ હો જાતા હૈ દ્રવ્ય સે શરીર
મેં તૈલામ્યજ્ઞ સે વર્જિત હોને કે કારણ તથા માય સે કામાદિ રહિત

એના મવા છે એવો મર્ધ બધ છે અહીં ‘સયમ મહુલ’ આ વિશેષણો
કે પ્રયોગ થયો છે તે મહુલનિગ્રહની વિરાપનાથી ચિરમણ મવાની મુખ્યતાને
પ્રકટ કરવા નિમિત્તે થયો છે, કારણ કે ‘એક કંચિય એસ્ય વયં’ ઇત્યાદિ.

સમસ્ત જિનવરોએ પ્રાણાતિપાત ચિરમણરૂપ એક જ વ્રત કર્યું છે,
બાકીનાં કે મતો છે તે તો આ મતની રક્ષા નિમિત્તે જ કર્યા છે સયમ
મહુલતા અને સવર મહુલતા આ જન્મેનો અદ્ભુત રાગાદિ રહિત ચિત્ત
વૃત્તિયાગ પુરુષસિદ્ધર્થ જ કોઈ શકે છે તેથી જ ‘સમાધિ મહુલ’ આ
વિશેષણો પણ પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે એવું ચિત્ત પ્રચુર સ્વાસ્થ્યમાં
લીન મર્ધ બધ છે તેને સમાધિ મહુલ કહે છે એવો ભૂત હસ મર્ધ બધ છે,
તેલ-માસિશ આદિના ખતાવે તે ડ્ર વની અપેક્ષાએ રક્ષ મર્ બધ છે, અને

તીત્યાહ—“ તીરદ્વી ” “ તીરાર્થી, તીરસ્થાયી, તીરસ્થિતિર્વેતિ ચ્છાયા । તત્
‘ તીરાર્થી ’ તીરં=પારં ભવસાગરસ્યાર્થયત્ત્વમિત્યેવંશીલઃ=સંસાર સમુદ્રધારાભિલાષી,
તીરસ્થાયી=ભવાર્ણવતટમધિષ્ઠાયી, તીરસ્થિતિ-તીરે=ભવસાગરતટે સ્થિતિરવસ્થાનં
યસ્ય સ સંસારસિન્ધુનટે સ્થિત્વમિત્યર્થઃ, અત એવ “ ઉપધાનવાન્ ” પ્રશસ્તમનો-
વાક્યાયયોગવાન્, અત એવ દુઃખક્ષયઃ=દુઃખં-દુઃખજનકત્વાત્ કર્મ, તત્ ક્ષયયતીતિ
દુઃખક્ષયઃ, કર્મક્ષયણં ચ તપોજન્યમિત્યત્ આહ—“ તપસ્વી ”-તિ, તપ આભ્યન્ત-
રિકં કર્મવનભસ્મસાત્કરણદુતાશાયમાનમનશનાદિરૂપ દ્વાદશવિધમસ્યાસ્તીતિ તપ-

હોને કે કારણ રૂઢા હો જાતા, ક્યોં કિ—“ તીરદ્વી—” યહ તીરાર્થી યા
તીરસ્થાયી હોતા હૈ । અથવા તીરસ્થિતિવાલા હોતા હૈ, ભવસાગર કા
પાર જાને કોં કામનાવાલા હોતા હૈ, હસલિયે તો તીરાર્થી યા ભવસાગર
કે તટ પર આકર વહ ઘિલકુલ ખડા હો જાતા હૈ । અતઃ—જબ તીર-
સ્થાયી હોતા હૈ, યા ભવસાગર કે તટ પર હસકો સ્થિતિ અવસ્થાન હો
જાતી હૈ, હસીલિયે યહ તીરસ્થિતિવાલા હો જાતા હૈ । હસી સે યહ
“ ઉપધાનવાન્ ” પ્રશસ્ત મન વચન ઔર કાયવાલા હો જાતા હૈ અત
એવ યહ “ દુઃખક્ષયઃ—” દુઃખ કો દુઃખજનક કર્મ કા ક્ષય કરને લગતા
હૈ ક્યોં કિ—યહ તપસ્વી હોતા હૈ બાહ્ય તપ અનશનાદિ વાલા ઔર—
આભ્યન્તર તપ પ્રાયશ્ચિત્ત આદિવાલા હોતા હૈ । કારણ કિ—યહ હસ બાત
કો અચ્છી તરહ સે સમક્ષ ચુકા હોતા હૈ કિ—બાહ્ય ઔર આભ્યન્તર
તપ હી કર્મરૂપી વન કો ભસ્મસાત્ કરને મે અગ્નિ કા કામ દેતે હૈ ।

ભાવની અપક્ષાએ કામાદિથી રહિત થવાને કારણે તે રક્ષ થઈ નય છે, કારણ
કે તે “ તીરદ્વી ” તીરાર્થી અથવા તીરસ્થાયી હોય છે, અથવા તીર સ્થિતિવાળો
હોય છે, ભવસાગરને પાર કરવાની કામનાવાળો હોય છે, તેથી તેને તીરાર્થી
કહ્યો છે. અથવા ભવસાગરને કિનારે આવીને તે ઊભો જ રહી નય છે તેથી
તેને તીરસ્થાયી કહે છે. જ્યારે તે ભવસાગરને કિનારે આવીને ઊભો રહી
નય છે અથવા ભવસાગરના તટપર તેની સ્થિતિ (અવસ્થાન) થઈ નય છે
ત્યારે તે તીર સ્થિતિવાળો થઈ નય છે તે કારણે જ તે “ ઉપધાનવાન્ ”
એટલે કે પ્રશસ્ત મન, વચન અને કાયવાળો થઈ નય છે. તેથી જ તે
“ દુઃખક્ષયઃ ” દુઃખને દુઃખજનક કર્મનો ક્ષય કરવા માટે છે કેવી રીતે તે
કર્મનો ક્ષય કરે છે તે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—

તે તપસ્વી હોય છે, અનશાદિ બાહ્ય તપ અને પ્રાયશ્ચિત્ત આદિ આભ્ય-
ન્તર તપનો આરાધક હોય છે. તે એ વાતને સંપૂર્ણ રીતે સમજી ગયો હોય
છે કે બાહ્ય અને આભ્યન્તર તપ જ કર્મરૂપી વનને ભસ્મ કરવાને અગ્નિની

સ્ત્રી, યઃ પૂર્વોક્તપ્રકારકા, તસ્ય=પ્રાક્તનવિશેષણવિશિષ્ટસ્ય, ' ણ ' શબ્દપાલકારે, તથાપ્રકાર=તાદૃશ્ય અત્યન્તઘોરમિતિ તદર્થ, ઓર્ધ્વમાનજિનેશ્વર, તપો=અનશનાદિરૂપ, નો=ન, મવતિ, ણ્ય તથાપ્રકારા=અતિધોરોપસર્ગાદિજન્યા, વેદના=પીઠા, નો=ન, મવતિ, યથોપસાનત્યકર્મપ્રત્યાયાતો મવતીતિ, તતમ્ તથાપ્રકારમ્=તથા-પૂર્વોક્ત, પ્રકારા-અલ્પકર્મપ્રત્યાયાતરવાદિરૂપા યસ્ય તાદૃશ્ય=કશ્ચિત્પુરુષ इत्यर्थः, દીર્ઘગ=ચિરકાલિકેન, પર્યાયેણ=પ્રવચન્યારૂપેણ કારણેન સિષ્પતિ=અગ્નિમાદિયોગેન નિષ્ઠિતાર્યો ના વિશેષતઃ સિદ્ધિગમનાર્હો ના જાયતે, સર્વકર્મપ્રધાનમોહનોયસ્યાત્, મુચ્યતે=ધાતિકર્મચતુષ્ટયાપગમેન કેચલી, મવતિ, મુચ્યતે=મધોપગ્રાહિકર્મકળાપામુક્તા મવતિ, પરિનિર્વાતિ=સર્વકર્મજન્યવિકારસમુદાયદ્

યથાપિ-હસ પ્રકાર કે હન પૂર્વોક્ત વિશેષણો સે વિશિષ્ટ અનગાર કે શાશ્વત્ત ઓર આમ્યન્તર તપ, તથાપ્રકાર કે શ્રી ઓર્ધ્વમાન જિનેશ્વર કે તપ કી તરહ અત્યન્ત ઘોર નહીં હોતે હે ' ણ્ય તથા પ્રકારા વેદના નો મવતિ ' અતિ ઘોરોપસર્ગજ-ય વેદના પીઠા મી ઉસે નહીં હોતી હે । કયોં કિ-યહ અલ્પ કર્મ પ્રત્યાયાત હલુકર્મો હોના હૈ, અતઃ-પેસા અલ્પ કર્મ પ્રત્યાયાતતથાદિ પ્રકારવાલા યહ પુરુષ ચિરકાલિક પ્રવચ્યારૂપ કરણ દ્વારા " સિષ્પતિ " અગ્નિમાદિયોગ સે નિષ્ઠિત પ્રયોજનવાલા હો જાતા હે । અથવા-સિદ્ધિગતિ મેં જાને કા પોગ્ય હો જાતા હે, કયોં કિ-હસકા સર્વ કર્મ પ્રધાન મોહનોય કર્મ મટ્ટ હો જાતા હે " મુચ્યતે " ચાર ધાતિકા (ધાતિયા) કર્મોં કે અપગમ સે યહ કેચલી હો જાતા હે " મુચ્યતે " મધોપગ્રાહી કર્મકળાર સે ચાર અધાતિયા કર્મોં સે મુક્ત હો જાતા હે ।

અર્થ યારે છે એ કે સવમ ગદુલ આદિ વિશેષણોવાળા તે અવુખાના બાદ અને આમ્યન્તર તપ શ્રી વધમાન જિનેશ્વરના બાદ અને આમ્યન્તર તપ સમાન અત્યન્ત ઘોર હોવા નથી. પણ તથા પ્રકારા વેદના નો મવતિ " તથા અતિ ઘોર ઉપસાનત્ય વેદના પત્તુ તેમને સહન કરી શકી નથી, કારણ કે તે અલ્પ ક્રમ પ્રત્યાયાત (અલ્પ કર્મોને કારણે) હલુકર્મો (હલુકર્મો) હોય છે તેથી તે હલુકર્મો પુરુષ ચિરકાલિક પ્રવચ્યારૂપ હો કારણ દ્વારા. ' સિષ્પતિ ' અગ્નિમાદિ યોગથી નિષ્ઠિત પ્રયાનવાળો ધર્મ બધ છે, અથવા સિદ્ધિપ્રતિષ્ઠા બધાને પાત્ર ધર્મ બધ છે કારણ કે સવ કર્મોમાં મુચ્ય એવા મોહનોય કર્મોને તે હવ કરી નાખે છે " મુચ્યતે " ચાર ધાતિયા કર્મોના હવ કરીને તે કેચલી ધર્મ બધ છે " મુચ્યતે " મધોપગ્રાહી કર્મકળાપથી-ચાર અધાતિયા કર્મોથી મુક્ત ધર્મ બધ છે, ' પરિનિર્વાતિ ' સવ કર્મજન્ય વિકાર સમુદાય

રીકરણેન શીતલીભવતિ, સર્વદુઃખાનામ્=કાયિકમાનસાનામ્, અન્ત=ક્ષય, કરોતિ, તથાવિધતપોવેદનાઘમાવતો દીર્ઘેનાપિ પર્યાયેણ કોઽપિ સિદ્ધો ભવતિ નવેતિ સંશયં નિરાકર્તુમાહ—“ યથાઽસૌ ભરતો રાજા ” યથા—યેન પ્રકારેણ અસૌ ભરતઃ —તદાશ્ચ ક્રપમદેવજ્યેષ્ઠપુત્રો રાજા, કીદૃશ ઇત્યાહ—‘ ચાતુરન્તચક્રવર્તી ’— ચત્વારોઽન્તાઃ—પર્યન્તાઃ પૂર્વદક્ષિણપશ્ચિમસાગરહિમવદ્રૂપા યસ્યાઃ સા ચતુરન્તા પૃથિવી, ચતુરન્તાયા અયં (સ્વામી) ચાતુરન્તઃ, સ ચાસૌ ચક્રવર્તી ચ ચાતુરન્ત-ચક્રવર્તી, સ ઠિ પૂર્વભવે લઘુકૃતકર્મા સર્વાર્થસિદ્ધિવિમાનાચ્ચ્યુત્વા ચક્રવર્તિત્વેન સમુ-ત્પદ્ય રાજ્યાવસ્થામેવ કેવલજ્ઞાનમુપાર્જ્ય પરિપાલિતપૂર્વલક્ષદોક્ષોઽતથાવિધતપોવે-દન એવ સિદ્ધિ પ્રાપ્ત ઇતિ પ્રથમાઽન્તક્રિયા ॥ સૂં ૧ ॥

“ પરિનિર્વાતિ ” સર્વ કર્મજન્ય વિકાર સમૂહ કે દૂર હો જાને સે શીત-લીભૂત હો જાતા હૈ, ઔર કાયિક એવં માનસિક દુઃખ વિલક્ષુલ નષ્ટ હો જાતે હૈં । યદિ કોઈ યહાં પર એસી શઙ્કા કરે કિ-તથાવિધ તપ, ઔર વેદના આદિ કે અભાવ સે દીર્ઘપર્યાય કા પાલન કરને સે મી કોઈ સિદ્ધ હોતા હૈ ૩ યા નહીં હોતા હૈ ૩ તો ઇસ સંશય મૂલક શઙ્કા કો દૂર કરને કે લિયે સૂત્રકાર ને કહા હૈ કિ એસી વાત નહીં હૈ, દેખો— “ જહા સે મરહે રાયા ચાતુરન્તચક્રવર્તી ” ક્રપમદેવ કે જ્યેષ્ઠ પુત્ર રાજા ભરત જો કિ-પૂર્વ દક્ષિણ પશ્ચિમ સાગર ઔર હિમવાન્ પર્વતરૂપ ચાર પર્યન્તવાલી ભૂમિ કા સ્વામી થે ચક્રવર્તી થે, અર્થાત્-પૂર્વભવમેં લઘુકૃત કર્માં હોકર જો સર્વાર્થસિદ્ધિ વિમાન સે ચ્યુત હોકર ચક્રવર્તીરૂપ સે ઉત્પન્ન હુવે થે । ઁન્હોં ને રાજ્યાવસ્થા મેં હી કેવલજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરકે એક

થઈ જવાને લીધે શીતલીભૂત થઈ જાય છે, અને કાયિક અને માનસિક દુઃખ વિલક્ષુલ નષ્ટ થઈ જાય છે.

શંકા—તે પ્રકારનાં તપ અને તે પ્રકારની વેદના આદિના અભાવમાં પણ દીર્ઘ-પર્યાયનું (આમણ્ય પર્યાયનું) પાલન કરીને કેટલાક જીવો સિદ્ધ થાય છે પણ ખરાં અને કેટલાક સિદ્ધ નથી પણ થતા, તેનું કારણ શું ?

સમાધાન—“ જહા સે મરહે રાયા ચાતુરન્તચક્રવર્તી ” ક્રપમદેવના જ્યેષ્ઠ પુત્ર રાજા ભરત, કે જે “ ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી હતા ” (પૂર્વ, દક્ષિણ અને પશ્ચિમ સાગર તથા હિમવાન પર્વત રૂપ ચાર અન્તવાળી ભૂમિના સ્વામી હતા) એટલે કે પૂર્વભવમા લઘુકર્મા થઈને જેઓ સર્વાર્થસિદ્ધિ વિમાનમાંથી અધીને ચક્રવર્તી રૂપે ઉત્પન્ન થયા હતા, તેમણે રાજ્યાવસ્થામાં જ કેવળજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરીને એક લાખ પૂર્વ પર્યન્ત લીક્ષા પર્યાયનું પાલન કર્યું હતું અને

અથ દ્વિતીયાઞ્તક્રિયા-૨

“મહાધરે”-તિ-અથ-વદનન્તરમ્, અપરા-અથ-પૂર્ણપેત્યા, દ્વિતીયાઞ્ત ક્રિયા-મહાકર્મેત્યાદિ-મહાકર્મમિર્મહાકર્મા સન્નિત્યર્થઃ, પ્રત્યાયાત = દ્વલોકાત્સ માયાતો યઃ સ ત્યાપૂત, તસ્યેતિ-તસ્ય=પૂર્વોક્તસ્ય, મહાકર્મપ્રત્યાયાતત્વેન તત્સ પ્થાય ત્યાપકાર ધોર તપો મન્વતિ, एवं वेदनाऽपि देवाद्युपसर्गाणां तयाप्रकारा तयाकृपा दुस्सहेत्यर्थः भवति । तयाप्रकार=तादृશ પુરુષમાર્ત કોઽપિ પુરુષઃ, “નિરુદ્ધેને”-તિ-અરપેન પમયિણ યયાઽસૌ ગજસુકુમાર=દેવભોક્ષ્યુતો વેષનયા

છાલ પૂર્વતક વીક્ષા પર્યાય કા પોલન, તયાવિષ્ણ તપ ઓર-વેદના કે અભાષ મેં હી સિદ્ધિકો પ્રાપ્ત કિયાૈ ॥ યહ પ્રથમાન્ત ક્રિયા ૬ ॥ ૧૦૧ ॥

દ્વિતીયા અન્તક્રિયા-૨

“મહાધરે” તિ દ્વિતીય અન્તક્રિયા હસ પ્રકાર સે ૬-મહાકર્મો સે મહાકર્મા કોઈ જીવ દેવલોક સે યહાં અત્પન્ન છુયા અથ વહ જીવ જન મહાકર્મો કા ક્ષપણ કરને કે છિયે તયાપકાર કે ધોર તપ કા અનુષ્ઠાન કરતા ૬ ઉસમેં ઉસે દેવાદિપૂજા ઉપસર્ગાજ-અ તયાકૃપા કુસહ વેદના ખી હોતી ૬ એસા વહ પુરુષ નિરુદ્ધ અત્પ પર્વાય સે ગજસુકુમાર મુનિ કી તરહ સિદ્ધિગત હો જાતા ૬ યહાં પર પ્રથમ અન્તક્રિયા મેં કથિત “અસૌ ભલુ મુળ્હો મૂત્થા-” સે હેકર “કુભક્ષવાઃ તપસ્વી” યે સવ વિશેષણ લગા હેતા જાહિયે, હમકી વ્યાખ્યા પૂર્વોક્ત જેસી હી ૬, ગજસુકુમાર

તે પ્રકારનાં તપ અને વેદનાને અભાષ હોરા છતાં પણ સિદ્ધિ પામ્યા હતા એટલે આ બ્રાહ્મણનાં જીવનું સુખમાંથી અને શુભકર્મોમાંથી પણ વિચારનું થયે છે પ્રથમ અન્તક્રિયાનું આ પ્રકારનું સ્વરૂપ છે ॥ ૧૦૧ ॥

— બીજી અન્તક્રિયા —

‘મહાધરે તિ’ બીજી અન્તક્રિયાનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે—મહાકર્મો કોઈ પણ દેવલોકમાંથી અધીને અહીં ઉત્પન્ન થયો છે હવે તે પણ તે મહાકર્મોનું ક્ષપણ કરવાને માટે ઉચિત એવા ધોર તપનું અનુષ્ઠાન કરે છે આ ધોર તપની આશયના કારણે વળને તેને દેવાદિ પૂજા ઉપસર્ગાજ-અ તયાકૃપા કુસહ વેદના પણ સહન કરતી થયે છે એવો તે પુરુષ અત્પકાર પશન્ત શામલ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને, ગજસુકુમાર મુનિની જેમ સિદ્ધપ્રતિભાં પહોંચી અથ છે અહીં પણ પહેલી અન્તક્રિયામાં કથિત “અસૌ ભલુ મુળ્હો મૂત્થા” થી શરૂ કરીને “કુભક્ષવાઃ તપસ્વી” આ સૂત્રપાઠ પર્વન્તના આ અર્થાં વિશે પહોં લગાડવા એમજો તેમની વ્યાખ્યા પહેલાં કર્યા મહાદેવ જ સમજતી.

अङ्गजातः कृष्णलघुभ्राता, स हि भगवतः श्रीमतोऽरिष्टनेमिजिनस्य पार्श्वे दीक्षां गृहीत्वा श्मशानभूमिं कृतकायोत्सर्गात्मकमहातपा मस्तकन्यस्तज्जाज्वल्यमानवह्नि-
जन्यातिवेदनो लक्षोनकोटिभवनसंचितकठोरकर्माणि विशुद्धाध्यवसायेन क्षपयित्वा-
ऽल्पीयसैव पर्यायेण सिद्धिं गत इति, शेषं स्पष्टम् ॥ २ ॥

इति द्वितीयाऽन्तक्रिया ॥ २ ॥

अथ तृतीयाऽन्तक्रिया-३

“अहावरा” इत्यादि-तृतीया महाकर्मविषयाऽन्तक्रिया स्पष्टा । यदिऽसौ सनत्कुमार इति, चतुर्थचक्रवर्ती, स हि महातपाः सप्तशतवर्षाणि यावत् षोडशरो-
मुनि देवलोक से च्युत हुवे थे और देव की कुक्षि से जन्मे थे, ये कृष्ण के लघुभ्राता थे । इन्होंने ने भगवान् अरिष्टनेमि के पास जिन दीक्षा धारण की थी श्मशानभूमि में कायोत्सर्गात्मक महातप इन्होंने ने किया था इनके मस्तक ऊपर जलती हुई खैर की अंगारें रखी गई थी उससे इन्हें अतिघोर वेदना हुई थी इससे इन्होंने ने एक लाख कम करोड भव के संचित कठोर कर्मों का विशुद्ध अध्यवसाय से क्षय कर दिया था इससे वे अल्प ही पर्याय से सिद्धिगति का स्वामी बन गये, इस प्रकार से यह द्वितीय अन्तक्रिया-२

तृतीय अन्तक्रिया-३

“अहावरा” इत्यादि पूर्वभव के महाकर्मों से महाकर्मवाला बना हुआ कोई जीव देवलोक से यहां उत्पन्न हुआ अब यह मुण्डित होकर

गङ्गसुकुमार मुनिनी कथा आ प्रमाणे छे-देवलोकमाथी अयवीने तेओ देवकीनी हूँ भे जन्म्या छता तेओ कृष्णना नाना लाई छता, तेभछे लगवान अरिष्ट नेमिनी पासे जिन दीक्षा अंगीकार करी छती श्मशानभूमिमां तेभछे कायो-
त्सर्गात्मक महातप कथुं छतुं तेमना संसारी ससरा सोभील ब्राह्मणे तेमना मस्तक पर सजगता भेरना अंगारा भूक्या छता ते कारछे तेमने अतिघोर वेदना थई छती समभावपूर्वक ते वेदना सहन करीने तेभछे ६६ लाख भवना संचित कर्मोना विशुद्ध अध्यवसायथी क्षय करी नाभ्यो छने आ रीते अल्प समयनी श्रावण पर्यायनुं पालन करीने तेओ सिद्धिगतिना स्वामी भनी गया छता भीछ अन्तक्रियानु आ प्रकारनुं स्वर्ण समञ्जु. । २ ।

— त्रीछ अन्तक्रिया —

“अहावरा” इत्यादि-पूर्वभवना महाकर्मोथी महाकर्मवाणे भनेलो कौं छव देवलोकमाथी अयवीने आ भनुष्यलोकमां उत्पन्न थाय छे ते मुण्डित

અથ દ્વિતીયાન્તક્રિયા-૨

“ અહાચરે ”-તિ-અથ-ઉદનન્તરમ્, અપરા-અપા પૂર્વાપેક્ષયા, દ્વિતીયાન્તક્રિયા-મહાકર્મેત્યાદિ-મહાકર્મમિમંહાકર્મા સમિત્યર્થઃ, પ્રત્યાયાતઃ=દેવલોકાત્સ માયાતો યઃ સ ત્યામૃતઃ, સસ્યેતિ-તસ્ય=પૂર્વોક્તસ્ય, મહાકર્મપ્રત્યાયાતત્ત્વેન તસ્ય પથાય ત્યામકારં ધોર તપો મયતિ, एवं वेदनाऽपि देवासुपसर्गाणां त्यामकारा तयारूपा दुस्तहेत्यर्थ मयति । त्यामकारं=तारश्च पुरुषमातं कोऽपि पुरुषः, “ નિરુદ્ધેને ”-તિ-અરપેન પર્યામિષ્ય યયાઽસૌ ગજસુકુમારઃ=દેવલોકોદ્ધ્યુતો દેવશ્યા

લાભ પૂર્વતક દીક્ષા પર્યાય કા પોલન, તથાવિધ તપ ઔર-વેદના કે અભાવ મેં હી સિદ્ધિ કો પ્રાપ્ત કિયા હૈ ॥ ચહ પ્રથમાન્ત ક્રિયા હૈ ॥૯૦૧॥

દ્વિતીયા અન્તક્રિયા-૨

“ અહાચરે ” તિ દ્વિતીય અન્તક્રિયા હસ પ્રકાર સે હૈ-મહાકર્મો સે મહાકર્મા કોઈ જીવ દેવલોક સે યહાં ઉત્પન્ન જુયા અથ ચહ જીવ ડન મહાકર્મો કા ક્ષવણ કરને કે લિયે તથાપ્રકાર કે ધોર તપ કા અનુષ્ઠાન કરતા હૈ ઉસમેં ઉસે દેવાદિદૃક્ષા ઉપસર્ગજન્ય તથારૂપ દુઃસહ વેદના મી હોતી હૈ એસા ચહ પુરુષ નિરુદ્ધ અરપ યયાંય સે ગજસુકુમાર મુનિ કી તરહ સિદ્ધિગત હો જાતા હૈ યહાં પર પ્રથમ અન્તક્રિયા મેં કથિત “ અસૌ શ્વલ્લુ મુષ્ણો મૃત્યા-” સે લેકર “ દુઃશ્વક્ષયઃ તપસ્યી ” યે સય વિશેષણ લગા સેના ચાહિયે, ઇનકી વ્યાખ્યા પૂર્વોક્ત જેસી હી હૈ, ગજસુકુમાર

તે પ્રકારનાં તપ અને વેદનાનો અભાવ હોવા છતાં પણ સિદ્ધિ પામ્યા હતા, એટલે આ બાબતમાં છવનું લઘુભાષિણ અને ગુરુક્રમાંણુ પણ વિચારનું પડે છે પ્રથમ અન્તક્રિયાનું આ પ્રકારનું સ્વરૂપ છે ॥ સુ. ૧ ॥

— બીજી અન્તક્રિયા —

‘ અહાચરે તિ ’ બીજી અન્તક્રિયાનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે—મહાકર્મો ડોઈ છવ દેવલોકમાંથી આવ્યોને અહીં ઉત્પન્ન થયો છે હવે તે છવ તે મહાકર્મોનું ક્ષણ કરવાને માટે ઉચિત એવા ધોર તપનું અનુષ્ઠાન કરે છે આ ધોર તપની આશયના કરતી વખતે તેને દેવાદિ દૃક્ષા ઉપસર્ગજન્ય તથારૂપ દુઃસહ વેદના પણ સહન કરવી પડે છે એવો તે પુરુષ અરપકાળ પચન્ત આમશ્ય પર્યાયન પાલન કરીને, ગજસુકુમાર મુનિની જેમ સિદ્ધત્રિતામાં પડોચી આવે છે અહીં પણ પડેલી અન્તક્રિયામાં કથિત ‘ અસૌ રજઃ કુષ્ઠો મૃત્યા ’ થી શરૂ કરીને “ દુઃશ્વક્ષયઃ તપસ્યી ” આ સૂત્રપાઠ પર્વન્તના આ બધાં વિધેયો લગાવ્યા બેઠાં. તેમની વ્યાખ્યા પડેલાં કલા પ્રમાણે જ સમજવી.

अङ्गजातः कृष्णलघुभ्राता, स हि भगवतः श्रीमतोऽरिष्टनेमिजिनस्य पार्श्वे दीक्षां गृहीत्वा श्मशानभूमिं कृतकायोत्सर्गात्मकमहातपा मस्तकन्यस्तज्ज्वल्यमानवह्नि-
जन्यातिवेदनो लक्षोनकोटिभ्रवसंचितकठोरकर्माणि विशुद्धाध्यवसायेन क्षपयित्वा
ऽल्पीयसैव पर्यायेण सिद्धिं गत इति, शेषं स्पष्टम् ॥ २ ॥

इति द्वितीयाऽन्तक्रिया ॥ २ ॥

अथ तृतीयाऽन्तक्रिया-३

“अहावरा” इत्यादि-तृतीया महाकर्मविषयाऽन्तक्रिया स्पष्टा । यदिऽसौ
सनत्कुमार इति, चतुर्थचक्रवर्ती, स हि महातपाः सप्तशतवर्षाणि यावत् षोडशरो-
मुनि देवलोक से च्युत हुवे थे और देव की कुक्षि से जन्मे थे, ये कृष्ण
के लघुभ्राता थे । इन्होंने भगवान् अरिष्टनेमि के पास जिन दीक्षा धारण
की थी श्मशानभूमि में कायोत्सर्गात्मक महातप इन्होंने किया था
इनके मस्तक ऊपर जलती हुई खैर की अगारें रखी गई थी उससे
इन्हें अतिघोर वेदना हुई थी इससे इन्होंने एक लाख कम करोड
भव के संचित कठोर कर्मों का विशुद्ध अध्यवसाय से क्षय कर
दिया था इससे वे अल्प ही पर्याय से सिद्धिगति का स्वामी बन गये,
इस प्रकार से यह द्वितीय अन्तक्रिया-२

तृतीय अन्तक्रिया-३

“अहावरा” इत्यादि पूर्वभव के महाकर्मों से महाकर्मवाला बना
हुवा कोई जीव देवलोक से यहां उत्पन्न हुआ अब यह सुण्डित होकर

गन्धकुमार मुनिनी कथा आ प्रभाण्डे छे-देवलोकभांथी व्यवीने तेजो देवकीनी
इंणे जन्म्या छता तेजो कृष्णना नाना लार्छ छता, तेमण्डे लगवान् अरिष्ट
नेमिनी पासे जिन दीक्षा अगीकार करी छती श्मशानभूमिभां तेमण्डे कायो-
त्सर्गात्मक महातप कथुं छतुं तेमना संसारी ससरा सोभील आक्षण्डे तेमना
मस्तक पर सणगता जेरना अगारा भूक्या छता ते कारण्डे तेमने अतिघोर
वेदना थर्छ छती समभावपूर्वक ते वेदना सहन करीने तेमण्डे दद लाप्प
भवना सचित्त कर्मेनि विशुद्ध अध्यवसायधी क्षय करी नाज्यो छने आ
रीते अल्प समयनी श्रावण्य पर्यायतुं पालन करीने तेजो सिद्धिगतिना स्वामी
बनी गया छता भीण्ड अन्तक्रियानु आ प्रकारनु स्वल्प समज्जु । २ ।

— त्रीण्ड अन्तक्रिया —

“अहावरा” इत्यादि—पूर्वभवना महाकर्मोधी महाकर्मवाणो बनेलो
कोई एव देवलोकभांथी व्यवीने आ मनुष्यलोकभां उत्पन्न थाय छे ते मुण्डित

માતૃકૃપણેન મહાવેદનમ દીર્ઘેણ=દીર્ઘતરણ પર્યાયણ સિદ્ધો જાત, સમુપ સિદ્ધપ
માવેન તૃતીયદેવલોકાચ્ચુસ્વા મહાવિદેહક્ષેત્રે સત્સ્યપરાશ્રિતિ ॥ ૩ ॥

इति तृतीयाऽन्तक्रिया ३ ।

મય ચતુર્થ્યન્તક્રિયા-૪-

“અયાપરા” ઇત્યાદિ-ચતુર્થ્યન્તક્રિયાઽન્યકર્મપ્રત્યાયાતવિપયા, સ્પષ્ટા,
યયાઽસૌ મગવતી મરુદેતી પ્રથમમિનમાતા, સા હિ સ્વપિરાષસ્યામામપિ સ્ત્રીમજા

મગારાષસ્યા સે અનગારાષસ્યા મેં પ્રવજિત કૃષા, યદ્વાં સે આગે કા
ઝૌર સપ કથન પૂર્વોક્તરૂપ સે સમન્ન લેના ચાદિયે । એસા મહાકર્મી
જીવ મહાતપોં કા અનુષ્ઠાન કરતા હૈ, ફિર મી સનત્કુમાર ચતુર્થ ચક્ર
વર્તી કી તરહ યહ દીઘતર પર્યાય સે સિદ્ધિગતિ કો પ્રાપ્ત કરતા હૈ,
સનત્કુમાર ચક્રવર્તી ને ૭૦૦ માત સૌ ચર્યતક મહાતપોં કા પાલન
ક્રિયા હૈ સોલહ ૧૬ રોગાત્કુ હો ગયે હસસે હન્દે મહાવેદના કા
સામના કરના પડા તદુપ મેં હૈ સિદ્ધિગતિ પ્રાપ્ત મહીં દુર્હ અથ યે
દેવલોક સે ચ્યુત હોકર મહાવિદેહક્ષેત્ર મેં ઉત્પન્ન હોગે ઝૌર-વહીં
સિદ્ધિગતિ કો પ્રાપ્ત કરેગે હસ પ્રકાર કી યહ તૃતીય અન્તક્રિયા હૈ ॥ ૩

ચતુર્થ અન્તક્રિયા-૪

“અયાપરા” ઇત્યાદિ-યહ ચતુર્થ અન્તક્રિયા અન્ય કર્મ પ્રત્યાયાત
વિષયવાલી હોતી હૈ હસકે વિષય કા ઝૌર સપ કથન સ્પષ્ટ હૈ યહ

યતિ અત્રાપરસ્થાના પરિભ્રામપૂર્વક અણુત્રાપરસ્થા પાસ્ય કૃદે છે ત્વ રપખીનુ
સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત કથન અનુસાર સમજવું જોવે મહાકર્માં છપ મહાતપોનુ
અનુષ્ઠાન કૃદે છે, છતાં પણ ચોથા ચક્રવર્તી સનત્કુમારની જેમ અતિ દીર્ઘ કાળ
પશન્ત આમરૂપ પર્માણુ પાલન કરીને સિદ્ધિગતિ પ્રાપ્ત કૃદે છે સનત્કુમાર
ચક્રવર્તીજે ૭૦૦ વપ મુખી મહાતપેનુ પાલન કયું હતું. તેમને ૧૬ શતા
વકાનુ વેદન કરવું પડ્યું હતું છતાં પણ તેમને જોજ અવધાં સિદ્ધિગતિની
પ્રાપ્તિ થઈ નહીં. તેઓ યીજા દેવસૌકર્માથી વ્યથીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થયે
અને ત્યાંથીજ સિદ્ધિગતિ પ્રાપ્ત કરશે આ પ્રકારની આ ત્રીજી અન્તક્રિયા છે । ૩ ।

— ચોથી અન્તક્રિયા —

“અયાપરા” ઇત્યાદિ—આ ચોથી અન્તક્રિયા અન્યકર્મ પ્રત્યાયાત
વિષયવાળી હોય છે જોટલે કે અલ્પ કથના કારણે અલ્પકર્મ અનેકા છાની
આ અન્તક્રિયા સમજવી તેના વિષેનુ જાણીનુ અણુ કથન સ્પષ્ટ છે, તેથી
અહીં તેનુ અધિક વિવેચન કહુ નથી. આ ક્રિયા પહેલાં જિનની માતા

સુધા ઢોકા સ્થા. ૪ ૩૦૧ સૂ. ૧ અન્તક્રિયાયા નિરૂપણમ્ (જોય પ્રતિષ્ઠાને)

યકર્મતયાડ્વપકર્મી નિસ્તપોવેદના ચ સિદ્ધિ ગતા, તસ્યા ગૈજવેરાડ્વહ્યાયા
 ઇવાડ્વયુઃ સમાપ્તૌ સિદ્ધત્વાત્ ॥ ૪ ॥

એતેષાં દૃષ્ટાન્તદાષ્ટાન્તિકાનામર્થાનાં સર્વથા સાધર્મ્યં નાન્વેષણીયમ્, દૃષ્ટા
 ન્તાનામેકદેશવર્તિત્વાત્, યતો મરુદેવ્યા કતિપયાનિ 'મુંડે ભવિત્તા' इत्यादि
 વિશેષણાનિ ન ઘટન્તે ॥ ૪ ॥

इति चतुर्थ्यन्तक्रिया ॥ ४ ॥ सू. १ ॥

इतः पूर्वं पुरुषविशेषाणामन्तक्रिया प्रतिपादिता, सम्प्रति तेषामेव स्वरूप-
 दर्शनार्थं षड्विंशति 'दृष्टान्तदाष्टांतिकसूत्राण्याह—

क्रिया प्रथम जिनकी माता मरुदेवी को प्राप्त हुई है, ये स्थविराऽवस्था
 में भी क्षीणप्राय कर्मवाली होने के कारण अल्प कर्मवाली थी एवं-तप
 और वेदना से रहित थी फिर भी सिद्धिगति में गई। जब ये श्रेष्ठ हाथी
 पर चढ़ी जा रही थी तभी इनकी आयु समाप्त हो गई और ये सिद्ध हो गई-४

इन दृष्टान्त और दाष्टांतिकों के अर्थों का सर्वथा साधर्म्य नहीं
 खोजना चाहिये, क्यों कि-दृष्टान्त एकदेशवर्ती होते हैं। इसीलिये
 मरुदेवी में 'मुंडे भवित्ता—' इत्यादि कई विशेषण घटित नहीं होते
 हैं इस प्रकार से यह चतुर्थ अन्तक्रिया है ॥ १ ॥

इस प्रकार से पुरुष विशेषों की अन्तक्रिया का प्रतिपादन करके
 अब सूत्रकार उन्हीं का स्वरूप दिखलाने के लिये २६ दृष्टान्त दृष्टांतिक
 सूत्रों से कहते हैं—“चत्वारि रुक्मा पणत्ता—” इत्यादि—२ सूत्र

મરુદેવીને પ્રાપ્ત થયેલી છે. તેઓ સ્થવિરાવસ્થામાં પણ સામાન્યતઃ ક્ષીણ કર્મ-
 વાળા હોવાને લીધે અલ્પ કર્મવાળા હતાં તપ અને વેદનાથી રહિત હોવા
 છતાં તેઓ સિદ્ધગતિમાં ગયા છે જ્યારે તેઓ શ્રેષ્ઠ હાથીપર આરોહણ કરી
 રહ્યાં હતા, ત્યારે તેમનું આયુષ્ય પૂર થઈ ગયું અને તેઓ સિદ્ધ થઈ ગયાં. ૧૪।

આ દૃષ્ટાન્તો અને દાષ્ટાન્તિકોના અર્થોમાં સર્વથા સાધર્મ્ય શોધવું જોઈએ
 નહીં, કારણ કે દૃષ્ટાન્ત એકદેશવર્તી હોય છે તેથી મરુદેવીમાં “મુંડે
 ભવિત્તા” “મુંડિત થઇને” इत्यादि પૂર્વોક્ત વિશેષણો ઘટાવી શકાતાં નથી.
 આ પ્રકારની આ એથી અન્તક્રિયા છે ॥ સૂ. ૧ ॥

આ પ્રમાણે પુરુષ વિશેષોની અન્તક્રિયાનું પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર
 તેમનું સ્વરૂપ પ્રકટ કરવા નિમિત્તે ૨૬ દૃષ્ટાન્ત-દાષ્ટાન્તિક સૂત્રોનું નિરૂપણ કરે છે—

“चत्वारि रुक्मा पणत्ता” इत्यादि—(सू. २)

सूत्रम्—चत्वारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा-उण्णप् नामेगे
 उण्णप् १ उण्णप् नामेगे पणप् २, पणप् नामेगे उण्णप् ३,
 पणप् नामेगे पणप् ४, १ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया
 पण्णत्ता, त जहा-उण्णप् नामेगे उण्णप् १, तद्देव जाव पणप्
 नामेगे पणप् २ । चत्वारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा-उण्णप्
 नामेगे उण्णयपरिणप् १, उण्णप् नामेगे पणयपरिणप् २, पणप्
 नामेगे उण्णयपरिणप् ३, पणप् नामेगे पणयपरिणप् ४, ३ ।
 एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-उण्णप् नामेगे
 उण्णप् परिणप् चउमगो ४, ४। चत्वारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा-
 उण्णप् नामेगे उण्णयरूवे तद्देव चउमगो ४, ५ । एवामेव
 चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-उण्णप् नामेगे उण्णय
 रूवे १, उण्णयनामेगे पणयरूवे २, पणप् नामेगे उण्णयरूवे
 ३, पणप् नामेगे पणयरूवे ४, ६ । चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त
 जहा-उण्णप् नामेगे उण्णयमणे १, उण्णप् नामेगे पणयमणे
 २, पणप् नामेगे उण्णयमणे ३, पणप् नामेगे पणयमणे ४,
 ७ । एव सकप्पे ८, पन्ने ९, दिट्ठी १०, सीलायारे ११, वषहारे
 १२, परक्कमे १३, एगे पुरिसजाय पढिवक्खो नत्थि । चत्वारि
 रुक्खा पण्णत्ता, त जहा उज्जु नामेगे उज्जु उज्जु नामेगे
 वक्के, चउमगो ४, एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा
 -उज्जु नामेगे ४, एव जहा-उण्णयपरिणप्हिं गमो जहा
 उउज्जुवक्केहिं वि भाणियव्वो, जाय परक्कमे १६। ॥ सू० २ ॥

છાયા—ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતઃ ૧, ઉન્નતો નામૈકઃ પ્રણતઃ ૨, પ્રણતો નામૈક ઉન્નતઃ ૩, પ્રણતો નામૈકઃ પ્રણતઃ ૪, ૧ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તથથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતઃ, તથૈવ યાવત્ પ્રણતો નામૈક પ્રણતઃ ૪, ૨ । ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા—ઉન્નતો નામૈકઃ ઉન્નતપરિણતઃ ૧, ઉન્નતો નામૈકઃ પ્રણતપરિણતઃ ૨, પ્રણતો નામૈક ઉન્નતપરિણતઃ ૩, પ્રણતો નામૈકઃ પ્રણતપરિણતઃ ૪, ૩ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતપરિણતઃ ચતુર્મઙ્ગી ૪, ૪ । ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તા, તથથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતરૂપઃ તથૈવ ચતુર્મઙ્ગી ૪, ૫ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથથા—ઉન્નતો નામૈક ૦ ૪, ૬ । ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તથથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતમનાઃ ૧, ઉન્નતો નામૈકઃ પ્રણતમનાઃ ૨, પ્રણતો નામૈક ઉન્નતમનાઃ ૩, પ્રણતો નામૈકઃ પ્રણતમનાઃ ૪, ૭ । એવં સંકલ્પઃ ૮, પ્રજ્ઞા ૯, દૃષ્ટિ ૧૦, શીલાઽઽચારઃ ૧૧, વ્યવહારઃ ૧૨, પરાક્રમઃ ૧૩ । એકં પુરુષજાતં પ્રતિપક્ષો નાસ્તિ । ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા—ઋજુ-નામૈક ઋજુઃ, ઋજુનામૈકો વક્રઃ ચતુર્મઙ્ગી ૪ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથથા ઋજુનામૈકઃ ૪, એવં યથા—ઉન્નત-પરિણતાભ્યાં ગમઃ, તથા ઋજુ-વક્રાભ્યામપિ ભણિતવ્યઃ, યાવત્ પરાક્રમઃ ॥૨૬॥ સૂ ૨ ॥

ટીકા—“ચત્વારિ” ઇત્યાદિ—ચત્વારઃ=ચતુઃ સંખ્યાકાઃ, વૃક્ષા વૃક્ષન્તિ—સમાચ્છાદયન્તિ રક્ષન્તિ ઞ્છાયાદિના પ્રાણિન ઇતિ વૃક્ષાઃ, પ્રજ્ઞપ્તાઃ તથથા—ઉન્નત

ટીકાર્થ—ચાર પ્રકારકે વૃક્ષ કહે ગયે હૈ—એક વહ જો દ્રવ્યસે ઉત્પન્ન હોતા હુવા જાત્યાદિ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ—૧ દૂસરા વહ જો દ્રવ્ય સે હી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, પરન્તુ—જાત્યાદિ સે પ્રણત હીન હોતા હૈ—૨ તીસરા વહ જો પ્રણત હોતા હૈ, પરન્તુ—જાત્યાદિ સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ—૩ ચૌથા વહ જો દ્રવ્ય સે પ્રણત—હીન હોતા હૈ ઓર—જાત્યાદિ સે બી પ્રણત હીન હોતા હૈ ઇસી તરહ પુરુષ પ્રકાર બી ચાર કહે ગયે હૈ, ઇસ કથન કા તાત્પર્ય એસા

ટીકાર્થ—ચાર પ્રકારના વૃક્ષ કહ્યા છે—એક પ્રકાર એવો છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ ઉન્નત હોય છે અને નતિની અપેક્ષાએ પણ ઉન્નત હોય છે બીજો પ્રકાર એવો છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ ઉન્નત હોય છે, પણ નતિની અપેક્ષાએ પ્રણત (હીન) હોય છે. ત્રીજો પ્રકાર એવો છે કે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પ્રણત હોય છે, પણ નતિની અપેક્ષાએ ઉન્નત હોય છે, અને ચોથો પ્રકાર એવો છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ પ્રણત હોય છે અને નતિની અપેક્ષાએ પણ પ્રણત હોય છે એ જ પ્રમાણે પુરુષોના પ્રકારો પણ ચાર કહ્યા છે. આ કથનનો ભાવર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

मूळम्—चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा-उण्णए नामेगे
उण्णए १ उण्णए नामेगे पणए २, पणए नामेगे उण्णए ३,
पणए नामेगे पणए ४, १ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया
पण्णत्ता, त जहा-उण्णए नामेगे उण्णए १, तद्देव जाव पणए
नामेगे पणए २ । चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा-उण्णए
नामेगे उण्णयपरिणए १, उण्णए नामेगे पणयपरिणए २, पणए
नामेगे उण्णयपरिणए ३, पणए नामेगे पणयपरिणए ४, ३ ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-उण्णए नामेगे
उण्णए परिणए चउभगो ४, ४ । चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, त जहा-
उण्णए नामेगे उण्णयरूवे तद्देव चउभगो ४, ५ । एवामेव
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-उण्णए नामेगे उण्णय
रूवे १, उण्णयनामेगे पणयरूवे २, पणए नामेगे उण्णयरूवे
३, पणए नामेगे पणयरूवे ४, ६ । चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त
जहा-उण्णए नामेगे उण्णयमणे १, उण्णए नामेगे पणयमणे
२, पणए नामेगे उण्णयमणे ३, पणए नामेगे पणयमणे ४,
७ । एव संकप्ये ८, पत्ते ९, दिट्ठी १०, सीलायारे ११, वव्हारे
१२, परक्कमे १३, एगे पुरिसजाए पडिबक्खो नत्थि । चत्तारि
रुक्खा पण्णत्ता, त जहा उज्जू नामेगे उज्जू उज्जू नामेगे
वक्के, चउभगो ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा
-उज्जू नामेगे ४, एव जहा-उण्णयपरिणएहिं गमो जहा
उवज्जुवक्केहिं वि भाणियब्बो, जाव परक्कमे १२६ । ॥ सू० २ ॥

છાયા—ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતઃ ૧, ઉન્નતો નામૈકઃ પ્રણતઃ ૨, પ્રણતો નામૈક ઉન્નતઃ ૩, પ્રણતો નામૈકઃ પ્રણતઃ ૪, ૧ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતઃ, તથૈવ યાવત્ પ્રણતો નામૈક પ્રણતઃ ૪, ૨ । ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—ઉન્નતો નામૈકઃ ઉન્નતપરિણતઃ ૧, ઉન્નતો નામૈકઃ પ્રણતપરિણતઃ ૨, પ્રણતો નામૈક ઉન્નતપરિણતઃ ૩, પ્રણતો નામૈકઃ પ્રણતપરિણતઃ ૪, ૩ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતપરિણતઃ ચતુર્મઙ્ગી ૪, ૪ । ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતરૂપઃ તથૈવ ચતુર્મઙ્ગી ૪, ૫ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—ઉન્નતો નામૈક ૦ ૪, ૬ । ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તથા—ઉન્નતો નામૈક ઉન્નતમના ૧, ઉન્નતો નામૈકઃ પ્રણતમનાઃ ૨, પ્રણતો નામૈક ઉન્નતમનાઃ ૩, પ્રણતો નામૈકઃ પ્રણતમનાઃ ૪, ૭ । एवं संकल्पः ८, प्रज्ञा ९, दृष्टिः १०, शीलाऽऽचारः ११, व्यवहारः १२, पराक्रमः १३ । एकं पुरुषजातं प्रतिपक्षो नास्ति । चत्वारो वृक्षाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—ऋजुर्नामैक ऋजुः, ऋजुर्नामैको वक्रः चतुर्भङ्गी ४ । एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा ऋजुर्नामैकः ४, एवं यथा—उन्नत-परिणताभ्यां गमः, तथा ऋजु-वक्राभ्यामपि भणितव्यः, यावत् पराक्रमः ॥२६॥ सू० २ ॥

ટીકા—“ ચત્તારિ ” ઇત્યાદિ—ચત્વારઃ=ચતુઃ સંખ્યાકાઃ, વૃક્ષા વૃક્ષન્તિ—સમાચ્છાદયન્તિ રક્ષન્તિ ઞ્છાયાદિના પ્રાણિન ઇતિ વૃક્ષાઃ, પ્રજ્ઞપ્તાઃ તથા—ઉન્નત

ટીકાર્થ—ચાર પ્રકારકે વૃક્ષ કહે ગયે હૈં—૧ એક વહ જો દ્રવ્યસે ઉત્પન્ન હોતો હુવા જાત્યાદિ સે ઉત્પન્ન હોતો હૈ—૨ દૂસરા વહ જો દ્રવ્ય સે હી ઉત્પન્ન હોતો હૈ, પરન્તુ—જાત્યાદિ સે પ્રણત હીન હોતો હૈ—૩ તીસરા વહ જો પ્રણત હોતો હૈ, પરન્તુ—જાત્યાદિ સે ઉત્પન્ન હોતો હૈ—૪ ચૌથા વહ જો દ્રવ્ય સે પ્રણત—હીન હોતો હૈ ઓર—જાત્યાદિ સે મી પ્રણત હીન હોતો હૈ હસી તરહ પુરુષ પ્રકાર મી ચાર કહે ગયે હૈં, હસ કથન કા તાત્પર્ય એસા

ટીકાર્થ—ચાર પ્રકારના વૃક્ષ કહ્યા છે—એક પ્રકાર એવો છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ ઉન્નત હોય છે અને નતિની અપેક્ષાએ પણ ઉન્નત હોય છે બીજો પ્રકાર એવો છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ ઉન્નત હોય છે, પણ નતિની અપેક્ષાએ પ્રણત (હીન) હોય છે ત્રીજો પ્રકાર એવો છે કે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પ્રણત હોય છે, પણ નતિની અપેક્ષાએ ઉન્નત હોય છે, અને ચોથો પ્રકાર એવો છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ પ્રણત હોય છે અને નતિની અપેક્ષાએ પણ પ્રણત હોય છે. એ ૪ પ્રમાણે પુરુષોના પ્રકારો પણ ચાર કહ્યા છે. આ કથનનો ભાવ, થ' નીચે પ્રમાણે છે—

ઉપો દ્રવ્યત્વન, 'નામ' તિ સંમાયને 'વા' વાક્યાલક્ષારે, એક=કોડપિ હ્રષ, સ એવ પુનરુક્તઃ=વૃક્ષો જાત્યાદિવોડ્શોકાદિ, ઇતિ પ્રથમો મહ્ ૧ ।

ઉક્તઃ=ઉચ્ચો દ્રવ્યત્વ એવ એક=ઇતર, પ્રથમઃ=પરપેળ નતઃ=જાત્યાદિમિ હીનો નિમ્બાદિ, ઇતિ દ્વિતીયો મહ્ ૨ ॥

મળત=માલુતલક્ષણ, એક કશિવુ વૃક્ષો દ્રવ્યત્વો હ્રસ્વા, સ એવ પુનરુક્તો જાત્યાદિનાડ્શોકાદિ, ઇતિ તૃતીયો મહ્ ॥ ૩ ॥

મળતઃ=દ્રવ્યત્વેન હ્રસ્વા, સ એવ મળતઃ=જાત્યાદિના હીનઃ નિમ્બાદિ, ઇતિ ચતુર્થો મહ્ ॥ ૪ ॥

હે—“વૃક્ષન્તિ સમાચ્છાદયન્તિ રક્ષન્તિ છોપાદિના પ્રાણિનઃ ઇતિ વૃક્ષા” જો પ્રાણિયોં કી છાયા આદિ સે રક્ષા કરતે હેં યે વૃક્ષ હેં યે વૃક્ષ પૂર્વોં કરુપ સે ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હેં । યહાં “નામ” સમ્માવના મેં ઔર “વા” વાક્યાલક્ષાર મેં પ્રયુક્ત હુવે હેં । પ્રથમ પ્રકાર મેં કોઈં એક એસા વૃક્ષ હોતા હેં, જો દ્રવ્યત્વ સે બીં ઝબા હોતા હેં ઔર અપની જાતિ સે બીં ઝબત ઝબા હોતા હેં—૧ જૈસે અશોકાદિવૃક્ષ । દ્વિતીય પ્રકાર મેં ઘહ વૃક્ષ લિયા ગયા હેં જો કેવલ દ્રવ્ય સે હીં ઝબત ઝબા હોતા હેં પરન્તુ-અપની જાતિ સે પ્રળત-હીન હોતા હેં ૨ જૈસે-નિમ્બાદિ વૃક્ષ । તૃતીય પ્રકાર મેં ઘહ વૃક્ષ લિયા ગયા હેં જો દ્રવ્ય સે હ્રસ્વ હોતા હેં પરન્તુ-જાત્યાદિ સે ઝબત ઝબા હોતા હેં જૈસે-અશોક આદિવૃક્ષ ૩ ચતુર્થ પ્રકાર મેં ઘહ વૃક્ષ લિયા ગયા હેં જો દ્રવ્ય સે બીં હ્રસ્વ હોતા હેં ઔર જાતિ સે બીં હીન હોતા હેં ૪ જૈસે-નિમ્બાદિ વૃક્ષ, યદા-કાલ કી

‘વૃક્ષન્તિ-સમાચ્છાદયન્તિ-રક્ષન્તિ-છાયાદિના પ્રાણિનઃ ઇતિ વૃક્ષાઃ’ એ પ્રાણીઓનુ છાયા વગેરે વટે રક્ષણ કરે છે, તેનુ નામ વૃક્ષ છે તે વૃક્ષના પૂર્વોક્ત ચાર પ્રકાર કહ્યા છે એવી “નામ” સમાવનારે અને “વા” વાક્યાલક્ષાર રૂપે પ્રયુક્ત અર્થ છે (૧) પ્રથમ પ્રકારમાં જે વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે કોઈક વૃક્ષ એનુ ઢોલ છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ ઊંચુ ઢોલ છે અને બાકીની અપેક્ષાએ પણ ઊંચુ ઢોલ છે એમકે અયોગ્યવૃક્ષ (૨) બીજા પ્રકારમાં જેવા વૃક્ષનો ઢાળવો આપવામાં આયો છે કે જે કેવળ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ ઊંચુ ઢોલ છે પરન્તુ બાકીની અપેક્ષાએ પ્રચુત (હીન) ઢોલ છે એમકે લીમડો વગેરે. (૩) ત્રીજા પ્રકારમાં જેવા વૃક્ષનુ દેહાન્ત આપવામાં આયુ છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પ્રચુત (હીન નીચુ) ઢોલ છે પણ બાકીની અપેક્ષાએ ઊંચત ઢોલ છે એમકે અયોગ્યવૃક્ષ (૪) ચોથા પ્રકારમાં જેવા વૃક્ષનુ દેહાન્ત આપ્યુ છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ હીન ઢોલ છે અને બાકીની અપેક્ષાએ પણ હીન ઢોલ છે એમકે લીમડો વગેરે વૃક્ષ ।

યદ્વા કાલાપેક્ષયા ચતુર્ભઙ્ગીમાહ ઉન્નત ઉન્નતઃ દ્વિધા ઉન્નતઃ યથા અશોકત્વા-
દિજાત્યા કાલક્રમેણ વિશાલકાયત્વેન ચ ૧, ઉન્નતઃ પ્રણતઃ=અશોકત્વાદિજાત્યા
ઉન્નતઃ, હ્રસ્વકાયત્વેન પ્રણતઃ ૨, પ્રણત ઉન્નતઃ=નિમ્બત્વાદિજાત્યા પ્રણત, વિશાલ
કાયત્વેન ચોન્નતઃ ૩, પ્રણતઃપ્રણતઃ=દ્વિધા પ્રણતઃ=નિમ્બત્વાદિજાત્યા પ્રણતઃ હ્રસ્વ
કાયત્વેન ચેતિ ૪ । ઇતિ દૃષ્ટાન્તસૂત્રમ્ ।

અથ દાર્ષ્ટાન્તિક સૂત્રમાહ—

“એવામેવ” ઇત્યાદિ—એવામેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ વૃક્ષવદેવેત્યર્થઃ, ચત્વારિ
પુરુષજાતાનિ=પુરુષપ્રકારાઃ સાધવો ગૃહિણો વા, પ્રજ્ઞપ્તાનિ. તથા—ઉન્નતઃકુલૈશ્વર્ય-
પ્રમૃતિભિર્લૌકિકૈર્ગુણૈર્ગૃહસ્થપર્યાયે, સ એવ પુનરુન્નતો લોકોત્તરૈર્જ્ઞાનક્રિયાદિભિ-

અપેક્ષા લેકર સૂત્રકાર ને “દ્વિધા ઉન્નતઃ” ઇત્યાદિરૂપ સે ચતુર્ભઙ્ગી કો
કહા હૈ, જૈસે ઉન્નત ઉન્નત, અશોકત્વ આદિ જાતિ સે ઉન્નત એવંકાલ-
ક્રમ કો લેકર વિશાલ કાયરૂપ સે બી ઉન્નત—૧ ઉન્નત પ્રણત, અશો-
કત્વાદિ જાતિ સે ઉન્નત, ઓર—હ્રસ્વ કાયરૂપ સે પ્રણત—૨ પ્રણત ઉન્નત
નિમ્બત્વાદિ જાતિ સે પ્રણત ઓર વિશાલ કાયરૂપ સે ઉન્નત—૩ પ્રણત
પ્રણત નિમ્બત્વાદિ જાતિ સે પ્રણત ઓર હ્રસ્વ કાયરૂપ સે પ્રણત ૪ હસ
પ્રકાર સે યહ દૃષ્ટાન્ત સૂત્ર હૈ ।

દાર્ષ્ટાન્તિક સૂત્ર—

“એવામેવ” ઇત્યાદિ વૃક્ષ કી તરહ હી પુરુષ કે ચાર પ્રકાર કે સાધુ
અથવા—ગૃહીત જન કે ચાર પ્રકાર કહે ગયે હૈ, જૈસે ઉન્નત ઉન્નત જો
ગૃહસ્થ પર્યાય મેં કુલ એશ્વર્ય આદિ લૌકિક ગુણો સે ઉન્નત રહતા હો ૩

અથવા કાળની અપેક્ષાએ સૂત્રકારે “દ્વિધા ઉન્નત” કાળ સમય અને
કામ શરીર “ખન્ને પ્રકારે ઉન્નત” ઇત્યાદિ રૂપ ચાર લાંગા કહ્યા છે.
જેમકે.. (૧) ઉન્નત-ઉન્નત, અશોકત્વ આદિ જાતિની દૃષ્ટિએ ઉન્નત-અને કાલ-
ક્રમની અપેક્ષાએ વિશાલ કાયરૂપે પણ ઉન્નત. (૨) ઉન્નત-પ્રણત-અશોકત્વ
આદિ જાતિની અપેક્ષાએ ઉન્નત અને હ્રસ્વકાય રૂપે પ્રણત, (૩) પ્રણત-ઉન્નત.
નિમ્બત્વ આદિ જાતિની અપેક્ષાએ પ્રણત અને વિશાળ કાયરૂપે ઉન્નત. (૪)
પ્રણત-પ્રણત-નિમ્બત્વ આદિ જાતિની અપેક્ષાએ પણ હીન અને લઘુકાય રૂપે
પણ પ્રણત (હીન) આ પ્રકારનું આ દૃષ્ટાન્તસૂત્ર છે. આ દૃષ્ટાન્ત જેને લાગુ
પડે છે તેનું નામ “દાર્ષ્ટાન્તિક” છે

— દાર્ષ્ટાન્તિક સૂત્ર —

“એવામેવ” ઇત્યાદિ—જેમ વૃક્ષના ચાર પ્રકાર પડે છે, તેમ સાધુ અથવા
ગૃહસ્થજનના પણ ચાર પ્રકાર પડે છે—(૧) ‘ઉન્નત-ઉન્નત’ જે મનુષ્ય ગૃહસ્થ
પર્યાયના કુળ, ‘એશ્વર્ય’ આદિ લૌકિક ગુણોથી ઉન્નત રહ્યો હોય, એજ મનુષ્ય

ઉપો દ્રવ્યત્વેન, 'નામે' તિ સમાવને 'વા' વાચ્યાલકારે, $૫૬=$ કોડપિ દ્રવ્ય-
સ એવ પુનરુત્થત = વૃક્ષો જાત્યાદિતોડશોકાદિ, ઇતિ પ્રથમો મુદ્ધ ૧ ।

ઉત્થત = ઉત્તરો દ્રવ્યત્વ એવ એકા = રૂપ, પ્રજત = પ્રકર્યેણ નત, = ત્રાત્યાદિમિ
હીનો નિમ્બાદિ, ઇતિ દ્વિતીયો મુદ્ધ : ૨ ॥

પ્રજત = પ્રાગુક્તલક્ષણ, એકાકમિત્વ દૃક્ષો દ્રવ્યતા હસ્થા, સ એવ પુનરુત્થતો
ત્રાત્યાદિનાડશોકાદિ, ઇતિ ત્રીતીયો મુદ્ધ : ૩ ॥

પ્રજત = દ્રવ્યત્વેન હસ્થા, સ એવ પ્રજત = ત્રાત્યાદિના હીનઃ નિમ્બાદિ, ઇતિ
ચતુર્થો મુદ્ધ ૪ ॥

૬-“વૃક્ષન્તિ સમાચ્છાદયન્તિ રક્ષન્તિ છોપાદિના પ્રાણિનઃ ઇતિ વૃક્ષાઃ”
જો પ્રાણિયોં કી છાપા આદિ સે રક્ષા કરતે હૈં વે વૃક્ષ હૈં વે વૃક્ષ પૂર્વો
કરુપ સે ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં । યદા “નામ” સમ્ભાવના મેં
ઔર “વા” વાચ્યાલકાર મેં પ્રયુક્ત હુયે હૈં । પ્રથમ પ્રકાર મેં કોઈં એક
એસા વૃક્ષ હોતા હૈં, જો દ્રવ્યત્વ સે બીં ઝુચા હોતા હૈં ઔર અપની જાતિ
સે બીં ઉચ્ચત ઝુચા હોતા હૈં-૧ જેસે અશોકાદિવૃક્ષ । દ્વિતીય પ્રકાર મેં
વહ વૃક્ષ લિયા ગયા હૈં જો કેવલ દ્રવ્ય સે હીં ઉચ્ચત ઝુચા હોતા હૈં
પરન્તુ-અપની જાતિ સે પ્રજત-હીન હોતા હૈં ૨ જેસે-નિમ્બાદિ વૃક્ષ ।
ત્રીતીય પ્રકાર મેં વહ વૃક્ષ લિયા ગયા હૈં જો દ્રવ્ય સે દ્રવ્ય હોતા હૈં
પરન્તુ-જાત્યાદિ સે ઉચ્ચત ઝુચા હોતા હૈં જેસ-અશોક આદિવૃક્ષ ૩
ચતુર્થ પ્રકાર મેં વહ વૃક્ષ લિયા ગયા હૈં જો દ્રવ્ય સે બીં દ્રવ્ય હોતા હૈં
ઔર જાતિ સે બીં હીન હોતા હૈં ૪ જેસે-નિમ્બાદિ વૃક્ષ, યદા-કાલ કી

વૃક્ષન્તિ-સમાચ્છાદયન્તિ-રક્ષન્તિ-છોપાદિના પ્રાણિન ઇતિ વૃક્ષાઃ” એ
પ્રાણીઓનું છાપા વગેરે વડે રક્ષણ કરે છે, તેવું નામ વૃક્ષ છે તે વૃક્ષના
પૂર્વોક્ત ચાર પ્રકાર કહ્યા છે બહીં ‘નામ’ સંભાવનાઈ અને ‘વા’ વાચ્યા
લકારે રૂપે પ્રયુક્ત થયેલ છે (૧) પ્રથમ પ્રકારના જે વાત મહત્તર થાના
આવી છે કે કોઈક વૃક્ષ એવું કોય છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ હીન
કોય છે અને જાતિની અપેક્ષાએ પણ હીન કોય છે જેમકે અશોકવૃક્ષ
(૨) બીજા પ્રકારમાં જેવા વૃક્ષનો કાંઈકો આપવામાં આવ્યો છે કે જે કેવળ
દ્રવ્યની અપેક્ષાએ હીન કોય છે પરન્તુ જાતિની અપેક્ષાએ પ્રયત્ન (હીન)
કોય છે જેમકે લીમટો વગેરે (૩) ત્રીજા પ્રકારમાં જેવા વૃક્ષનું દેહાન્ત આપ
વામાં આવ્યું છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પ્રયત્ન (હીન નીચું) કોય છે
પણ જાતિની અપેક્ષાએ ઉચ્ચત કોય છે જેમકે અશોકાદિ વૃક્ષ (૪) ચોથા
પ્રકારમાં જેવા વૃક્ષનું દેહાન્ત આપ્યું છે કે જે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ પણ હીન
કોય છે અને જાતિની અપેક્ષાએ પણ હીન કોય છે જેમકે લીમટો વગેરે વૃક્ષો.

યદ્વા કાલાપેક્ષયા ચતુર્ભક્તીમાહ ઉન્નત ઉન્નતઃ દ્વિધા ઉન્નતઃ યથા અશોકત્વાદિજાત્યા કાલક્રમેણ વિશાલકાયત્વેન ચ ૧, ઉન્નતઃ પ્રણતઃ=અશોકત્વાદિજાત્યા ઉન્નતઃ, હ્રસ્વકાયત્વેન પ્રણતઃ ૨, પ્રણત ઉન્નતઃ=નિમ્બત્વાદિજાત્યા પ્રણતઃ, વિશાલ કાયત્વેન ચોન્નતઃ ૩, પ્રણતઽપ્રણતઃ—દ્વિધા પ્રણતઃ—નિમ્બત્વાદિજાત્યા પ્રણતઃ હ્રસ્વ કાયત્વેન ચેતિ ૪ । ઇતિ દષ્ટાન્તસૂત્રમ્ ।

અથ દાષ્ટાન્તિક સૂત્રમાહ—

“એવામેવ” ઇત્યાદિ—એવામેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ વૃક્ષવદેવેત્યર્થઃ, ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ=પુરુષપ્રકારા, સાધવો ગૃહિણો વા, પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—ઉન્નતઃ કુલૈશ્વર્ય મમૃતિમિલૌકિકૈર્ગુણૈ ગૃહસ્થપર્યાયે, સ એવ પુનરુન્નતો લોકોત્તરજ્ઞાનક્રિયાદિમિ-

અપેક્ષા લેકર સૂત્રકાર ને “દ્વિધા ઉન્નતઃ” ઇત્યાદિરૂપ સે ચતુર્ભક્તી કો કહા હૈ, જૈસે ઉન્નત ઉન્નત, અશોકત્વ આદિ જાતિ સે ઉન્નત એવં કાલ-ક્રમ કો લેકર વિશાલ કાયરૂપ સે ખી ઉન્નત-૧ ઉન્નત પ્રણત, અશો-કત્વાદિ જાતિ સે ઉન્નત, ઓર-હ્રસ્વ કાયરૂપ સે પ્રણત-૨ પ્રણત ઉન્નત નિમ્બત્વાદિ જાતિ સે પ્રણત ઓર વિશાલ કાયરૂપ સે ઉન્નત-૩ પ્રણત પ્રણત નિમ્બત્વાદિ જાતિ સે પ્રણત ઓર હ્રસ્વ કાયરૂપ સે પ્રણત ૪ ઇસ પ્રકાર સે યહ દષ્ટાન્ત સૂત્ર હૈ ।

દાષ્ટાન્તિક સૂત્ર—

“એવામેવ” ઇત્યાદિ વૃક્ષ કી તરહ હી પુરુષ કે ચાર પ્રકાર કે સાધુ અથવા-ગૃહીત જન કે ચાર પ્રકાર કહે ગયે હૈ, જૈસે ઉન્નત ઉન્નત જો ગૃહસ્થ પર્યાય મેં કુલ એશ્વર્ય આદિ લૌકિક ગુણો સે ઉન્નત રહતા હો ૩

અથવા કાળની અપેક્ષાએ સૂત્રકારે “દ્વિધા ઉન્નત.” કાળ સમય અને કામ શરીર “અને પ્રકારે ઉન્નત” ઇત્યાદિ રૂપ ચાર ભાંગા કહ્યા છે. જેમકે .. (૧) ઉન્નત-ઉન્નત, અશોકત્વ આદિ જાતિની દૃષ્ટિએ ઉન્નત અને કાલ-કમની અપેક્ષાએ વિશાલ કાયરૂપે પણ ઉન્નત. (૧) ઉન્નત-પ્રણત-અશોકત્વ આદિ જાતિની અપેક્ષાએ ઉન્નત અને હ્રસ્વકાય રૂપે પ્રણત, (૩) પ્રણત-ઉન્નત. નિમ્બત્વ આદિ જાતિની અપેક્ષાએ પ્રણત અને વિશાળ કાયરૂપે ઉન્નત. (૪) પ્રણત-પ્રણત-નિમ્બત્વ આદિ જાતિની અપેક્ષાએ પણ હીન અને લઘુકાય રૂપે પણ પ્રણત (હીન) આ પ્રકારનું આ દષ્ટાન્તસૂત્ર છે આ દષ્ટાન્ત જેને લાગુ પડે છે તેનું નામ ‘દાષ્ટાન્તિક’ છે

— દાષ્ટાન્તિક સૂત્ર —

“એવામેવ” ઇત્યાદિ—જેમ વૃક્ષના ચાર પ્રકાર પડે છે, તેમ સાધુ અથવા ગૃહસ્થજનના પણ ચાર પ્રકાર પડે છે—(૧) ‘ઉન્નત-ઉન્નત’ જે મનુષ્ય ગૃહસ્થ પર્યાયમાં કુળ આશ્વર્ય આદિ લૌકિક ગુણોથી ઉન્નત રહ્યો હોય, એજ મનુષ્ય

શુભરૂપમઃ પ્રવ્રજ્યાપર્યાયે ભરતચક્રિવત્, યદ્વા-ઉન્નત-ઉત્તમમયસ્થેન પુનરપ્યુન્નતઃ શુભગતિમાપ્ત્વા આનન્દ-કામદેવાદિષદિત્યકઃ=પ્રથમો મજ્જ ॥ ૧ ॥

તથૈવ=દ્વિતીયપ્રવચિત્ પુરુષાસપ્રમ્, યાવત્="મળતો નામૈકઃ મળતઃ" इति पर्यंतं बोध्यम् । अयं भावः-उन्नतः मणत-यथा-पूर्वमुन्नत श्रद्धादिना, पश्चात् मणत-दुर्गतिगमनादिना सुभूमचक्रिवदिति द्वितीयो मज्जः । २ ।

મળત ઉન્નતઃ-યથા-પૂર્વ જાત્યા શ્રદ્ધાદિના વા મળત=હીન, પશ્ચાદ્ ઉન્નતઃ-શુભગતિગમનાદિના હરિકેશિ-મેતાર્પણદિતિ તૃતીયો મજ્જઃ ॥ ૧ ॥

ઘડી યદિ પ્રવ્રજ્યા પર્ણીય મેં ભરત ચક્રવર્તીં કીં તરહ ઓફોસર જ્ઞાન ક્રિયા આદિ શુભોં સે ઉચ્ચત રહતા હૈ, તો ઘડ ઉચ્ચત ઉચ્ચત પુરુષ પ્રકાર હૈ । અથવા-ઉત્તમ મયસાલા હોને સે જો ઉચ્ચત હો ઘડી આગે શુભગતિ કી પ્રાપ્તિ સે આનન્દ કામદેવ કી તરહ ઉચ્ચત રહતા હૈ તો દેસા ઘડ જીય ઉચ્ચત ઉચ્ચત પ્રથમ મજ્જાલા કહા ગયા હૈ । ઉચ્ચત મળત, હસ દ્વિતીય મજ્જાલા યહ પુરુષ કહા ગયા હૈ, જો પહિછે શ્રદ્ધિ આદિ સે ઉચ્ચત રહા હો, પશ્ચાત્-દુર્ગતિગમનાદિ સે સુભૂમ ચક્રિવર્તીં કી તરહ મળત હો ગયા હો-૨ મળત ઉચ્ચત, હસ તૃતીય મંગલાલા યહ પુરુષ કહા ગયા હૈ, જો પૂર્વ મેં જાતિ સે અથવા-શ્રદ્ધિ આદિ સે મળત-હીન રહા હો, પશ્ચાત્-શુભગતિ મેં ગમનાદિ મેં જો હરિકેશી મેતાર્પ કી તરહ ઉચ્ચત હો ગયા હો-૨ મળત મળત હસ અતુર્ય મજ્જ મેં ઘડ પુરુષ કહા ગયા હૈ

તે આમણ પર્ણાયામાં ભરત ચક્રવર્તીની જેમ હોઠોત્તર જ્ઞાન, ક્રિયા આદિ શુભોની અપેક્ષાએ પણ ઉત્તર રહે તો તેને 'ઉન્નત-ઉન્નત' રૂપ પહેલા પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે અથવા-ઉન્નત ભરવાળો હોવાથી જે ઉન્નત હોય અને ત્યારબાદ શુભગતિની પ્રાપ્તિથી આનન્દ-કામદેવની જેમ ઉન્નત રહ્યો હોય એવા છતાં પણ "ઉન્નત-ઉન્નત" રૂપ પ્રથમ વિશ્લેષમાં મૂકી શકાય છે

(૨) 'ઉન્નત-મણત' જે પુરુષ પહેલાં શ્રદ્ધિ આદિની અપેક્ષાએ ઉન્નત રહ્યો હોય, પણ જે પછીથી દુર્ગતિગમન આદિની અપેક્ષાએ મણત થઈ ગયો હોય એવો સુભૂમચક્રવર્તી જેવો છર આ બીજા ભાગમાં બતાવી શકાય છે

(૩) 'મણત-ઉન્નત' જે પુરુષ પહેલાં જાતિની અપેક્ષાએ અથવા શ્રદ્ધિ આદિની અપેક્ષાએ મણત રહ્યો હોય પણ પછીથી શુભગતિમાં ગમન થવાને કારણે જે હરિકેશી મેતાર્પની જેમ ઉન્નત થઈ ગયો હોય આ પ્રકારના પુરુષનો આ ત્રીજા ભાગમાં પ્રમાણેશ થાય છે

પ્રણતઃ પ્રણતઃ—યથા પૂર્વે પ્રણતો જાત્યાદિના, પશ્ચાદપિ પ્રણતો નરકગમ-
નાદિના કાલશૌકરિકવદિતિ ચતુર્થો ભક્તઃ ॥ ૪ ॥

इति दार्ष्टान्तिकसूत्रम् ।

एवं दृष्टान्तसूत्रं दार्ष्टान्तिकसूत्रं च सामान्यत उपन्यस्य तद्विशेषसूत्राणि
दर्शयति—“चत्वारि रुक्खा” इत्यादि—उन्नतः—जात्यादिना स एव उन्नतपरिणतः
उन्नतत्वेन—उत्तमरसत्वेन परिणतः=परिणामं प्राप्त उन्नतपरिणत, यथाऽऽम्ब्रादिकः

“उष्णम्” इति—उन्नतो जात्यादिना, एकः=कश्चित् स एव प्रणतपरिणतः=
उन्नतत्वावस्थां विहाय प्रणतत्वेनाऽन्नतत्वेन—प्रतिगन्धिकफलादिमत्त्वेन परिणामं
प्राप्तः, यथा शीताऽऽनपादिजनितरोगग्रस्ताऽऽम्ब्रादिका इति द्वितीयो ભક્તઃ ॥ ૨ ॥

જો પહિલે જાત્યાદિ સે પ્રણત—હીન હો, ઓર પશ્ચાત્—ભી કાલશૌકરિક
કી તરહ નરક ગમનાદિ સે હીન હી બના રહા હો—૪

इस प्रकार से दृष्टान्त सूत्र और दार्ष्टान्तिक सूत्र को सामान्य
रूप से कह करके अथ सूत्रकार इनके विशेष सूत्रों को दिखलाने के
अभिप्राय से ऐसा कहते हैं—कि—“चत्वारि रुक्खा—” इ० वृक्ष चार
प्रकार के कहे गये हैं,। एक प्रकार वह है—जो जाति आदि से पहले
उन्नत होता है और—आगे चलकर भी वही उत्तम रसरूप से परिणाम
को प्राप्त होता है, जैसे—आम्र आदिवृक्ष “उन्नतप्रणतपरिणतः” इस
प्रकार में वे वृक्ष आते हैं जो जात्यादिक से उन्नत होने पर भी कारण
वश उन्नत अवस्था का परित्याग कर देते हैं—प्रणत परिणाम हो जाते

(૪) “પ્રણત-પ્રણત” જે પુરુષ પહેલાં જાતિ આદિની અપેક્ષાએ પ્રણત
રહ્યો હોય, અને પછી પણ કાલશૌકરિકની જેમ નરકગમનાદિથી હીન જ
રહ્યો હોય આ પ્રકારના પુરુષને આ ચોથા ભાંગામા મૂકી શકાય છે.
આ પ્રકારે દૃષ્ટાન્ત સૂત્ર અને દાર્ષ્ટાન્તિક સૂત્રનું સામાન્ય રૂપે કથન કરીને હવે
સૂત્રકાર તેમના (તે વૃક્ષોનાં) વિશેષ સૂત્રોને પ્રકટ કરવા નિમિત્તે આ પ્રમાણે
કહે છે—“ચત્તારિ રુક્ષા” ઇત્યાદિ—

વૃક્ષ ચાર પ્રકારનાં કહ્યા છે—(૧) “ઉન્નત-ઉન્નત પરિણત” એક પ્રકાર
એવો છે કે જે જાતિ આદિની અપેક્ષાએ પહેલાં ઉન્નત હોય છે અને આગળ
જતા એક વૃક્ષ ઉત્તમ રસ રૂપ પરિણામને પ્રાપ્ત થાય છે. જેમકે આમ્રાદિ વૃક્ષ.

(૨) “ઉન્નત-પ્રણત પરિણત” આ પ્રકારના એ વૃક્ષોને મૂકી શકાય
છે કે જે જાતિ આદિની અપેક્ષાએ ઉન્નત હોવા છતાં પણ કારણવશ ઉન્નત
અવસ્થાનો પરિત્યાગ કરી દે છે અને પ્રણત રૂપે પરિણત થઈ જાય છે

અથ પુનર્દૃષ્ટાન્તમુત્ર દર્શયતિ-

“ ચત્તારિ સ્વસ્થા ” ઇત્યાદિ-ચત્તારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ સ્વસ્થાર્યા એતે શબ્દાઃ તથા-ઉન્નતઃ=ઉન્નતિ પ્રાપ્તઃ, ઉન્નતરૂપઃ=ઉન્નત રૂપ યસ્ય સ ઉન્નતરૂપઃ સુન્દરસંસ્થાનાવયવ, આકારબોધક્રિયાપરિણામેષ્વાકારમાશ્રિત્ય રૂપઘટિત-સૂત્રમિતિ । તથૈવ=પૂર્વવદેવ ચતુર્ભઙ્ગી ॥ ૫ ॥

“ એવમેવ ” ઇત્યાદિ-એવમેવ=વૃક્ષવદેવ, “ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ ” ઇમાનિ પ્રગિવ વ્યારુપેયાનિ । ૬ ।

“ ચત્તારિ સ્વસ્થા ” ચાર વૃક્ષ કહે ગયે હૈં જૈસે ઉન્નત ઉન્નતરૂપ-૧ ઉન્નત પ્રણતરૂપ-૨ પ્રણત ઉન્નતરૂપ-૩ ઓર પ્રણત પ્રણતરૂપ-૪ इनके प्रथम प्रकार में वह वृक्ष आता है जो उन्नति को प्राप्त हों और सुन्दर संस्थानवाला हो, इसी तरह से आकार बोध क्रिया और परिणाम, इनमें -आकार को आश्रित करके रूप घटित यह सूत्र योजित कर लेना चाहिये । द्वितीय प्रकार में-वह वृक्ष आता है जो उन्नति को प्राप्त हो और आकार आदि में हीन हो । तृतीय प्रकार में वह वृक्ष आता है जो आकार आदि से सुन्दर हो, पर-रूप में उन्नतिवाला हो । तथा चतुर्थ प्रकार में वह वृक्ष आता है जो उन्नति को भी प्राप्त न हो, और संस्थान में भी सुन्दर न हो इस प्रकार से यह चतुर्भङ्गी है-५ । इसी वृक्ष गदित चतुर्भङ्गी की तरह पुरुष प्रकार भी चार कहे गये हैं-६

“ ચત્તારિ સ્વસ્થા ” વૃક્ષ ચાર પ્રકારનાં કહ્યાં છે-(૧) ઉન્નત-ઉન્નતરૂપ, (૨) ઉન્નત-પ્રણતરૂપ, (૩) પ્રણત-ઉન્નતરૂપ અને (૪) પ્રણત-પ્રણતરૂપ.

વૃક્ષોના પહેલા પ્રકારમાં એવા વૃક્ષને ગણાવી શકાય કે જે ઉન્નતિ પામેલું હોય અને સુદર સંસ્થાન (આકારવળું) હોય. આ રીતે આકાર, બોધ, ક્રિયા અને પરિણામ, આ ચારમાંથી આકારને આધારે રૂપઘટિત આ સૂત્ર યોજવું ભેદાયે. (૨) બીજા પ્રકારમાં એવા વૃક્ષને ગણાવી શકાય કે જે ઉન્નત હોય પણ આકાર આદિની અપેક્ષાએ હીન હોય (૩) ત્રીજા પ્રકારમાં એ વૃક્ષને ગણાવી શકાય કે જે ઉન્નત ન હોય પણ જેનો દેખાવ સુદર હોય. (૪) ચોથા પ્રકારમાં એવા વૃક્ષોને ગણાવી શકાય કે જે ઉન્નત પણ ન હોય અને સંસ્થાનમાં પણ સુંદર ન હોય આ પ્રકારની આ ચતુર્ભંગી છે

વૃક્ષની અપેક્ષાએ એવા ચાર ભાગા (વિકલ્પ) પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે, એવા જ ચાર ભાગા મનુષ્યની અપેક્ષાએ પણ સમજવા

અથ ધોધિપરિણામાપેક્ષાત્વારો મદ્વા મોચ્યતે-

“વત્તારિ” इत्यादि-वत्तारि=चतुःसम्पानि, पुरुषजातानि=पुरुषप्रकाराः, मङ्गलानि वक्ष्या-उन्नतो=जात्यादि गुणैरभ्युक्षितः, एक=प्रथमः, उन्नतमनाः, स्वामाधिकौदार्यप्रभृतिगुणयुक्तहृदयो भवति । १। इति प्रथमो मङ्ग । १।

અશિષ્ટાદ્યો મદ્વા યથા-ઉન્નતો નામૈક પ્રણતમના ૨, પ્રણતો નામૈક ઉન્નતમના ૧, પ્રણતો નામૈક પ્રણતમના ૪, इति चतुर्मङ्ग । ७।

અથ સૂત્રકાર ધોધિ પરિણામની અપેક્ષા સેકર ચાર મંગ્ગ કહતે છે પુરુષ પ્રકાર ચાર સરુપાવાલે કહે ગયે છે, જૈસે-ઉન્નત ઉન્નત મનવાલા ૧ ઉન્નત પ્રણત મનવાલા ૨ પ્રણત ઉન્નત મનવાલા ૩ ઓર પ્રણત પ્રણત મનવાલા-૪ इनमें-प्रथम प्रकार का ऐसा सात्पर्य है, जो जाति आदि गुणों से उन्नत होता है-और स्वाभाविक औदार्य आदि गुणों से भी युक्त हृदयवाला होता है-१ द्वितीय प्रकार में वह पुरुष आता है जाति आदि गुणों से तो उन्नत होता है, पर-स्वाभाविक औदार्य आदि गुणों से युक्त हृदय वाला नहीं होता है २ तृतीय प्रकार में वह पुरुष आता है, जो स्वाभाविक औदार्य आदि गुणों से युक्त हृदयवाला तो होतानहीं है पर उसका मन उन्नत होता है-३ तथा चतुर्थ प्रकार में वह पुरुष आता है जो न तो जाति आदि गुणों से ही उन्नत होता है और न औदार्य आदि गुणों से ही युक्त हृदयवाला होता है-४ इस प्रकार से ये चतुर्मङ्ग हैं ॥ ६०७ ॥

હવે સૂત્રકાર યોગપરિણામની અપેક્ષાએ ચાર ભાગનાં કથન કરે છે-

પુરુષોના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પશ્ચ પડે છે-(૧) ઉન્નત ઉન્નત મનવાળો (૨) ઉન્નત પ્રણત મનવાળો, (૩) પ્રણત ઉન્નત મનવાળો અને (૪) પ્રણત પ્રણત મનવાળો

પહેલા પ્રકારમાં જો મનુષ્યને મૂંઝી શકાય કે જે જાતિ આદિની અપેક્ષાએ પણ ઉન્નત હોય છે, અને સ્વાભાવિક ઔદાર્ય આદિ શુદ્ધોથી પણ સંપન્ન હૃદયવાળો હોય છે તો બીજા પ્રકારમાં જો મનુષ્યને મૂંઝી શકાય કે જે જાતિ આદિ શુદ્ધોની અપેક્ષાએ તો ઉન્નત હોય છે, પણ સ્વાભાવિક ઔદાર્ય આદિ શુદ્ધોથી સુષ્ટ હૃદયવાળો હોતો નથી. ત્રીજા પ્રકારમાં જોવા પુરુષને મૂંઝી શકાય કે જે જાતિ આદિ શુદ્ધોથી ઉન્નત હોતો નથી પણ સ્વાભાવિક ઔદાર્ય આદિ શુદ્ધોથી સુષ્ટ હૃદયવાળો હોય છે ચોથા પ્રકારમાં જો મનુષ્યને મૂંઝી શકાય છે કે જે જાતિ આદિ શુદ્ધોની અપેક્ષાએ પણ ઉન્નત હોતો નથી અને ઔદાર્ય આદિ શુદ્ધોથી સુષ્ટ હૃદયવાળો પણ હોતો નથી

“ एवं संकल्पे ” इति-एवमु=पूर्ववत्, संकल्प =संकल्पवदितस्तत्तद्भक्तो मनो-
घटितभङ्गवद् बोध्यः । तथाहि-उन्नतो नामैक उन्नतसंकल्पः १, उन्नतो नामैकः
प्रणतसंकल्पः २, प्रणतो नामैक उन्नतसंकल्पः ३, प्रणतो नामैकः प्रणतसंकल्पः
४। तत्र संकल्पो-मानसं कर्म विचार इत्यर्थः, एवं चोन्नतसंकल्पः । इत्यस्योन्नत-
मानसविचार इत्यर्थः । विचारे औन्नत्यं चौदार्यादिगुणयुक्तत्वेन समीचीनार्थविष-
यत्वेन वा बोध्यम्, तद्वान् पुरुषोऽप्युन्नतोऽभिधीयते । ८ ।

“ पन्ने ” इति-प्रज्ञा-ज्ञान-ज्ञा, प्रकृष्टा चासौ ज्ञा=प्रज्ञा, तद्वदिता अपि भङ्गा
मनोघटितभङ्गवद् बोध्या । तथाहि-उन्नतो नामैक उन्नतप्रज्ञः १, उन्नतो नामैकः
प्रणत प्रज्ञः २, प्रणतो नामैक उन्नतः प्रज्ञः ३, प्रणतो नामैकः प्रणत-प्रज्ञः ४, ९॥

इसी प्रकार से सङ्कल्प को घटित करके भी चतुर्भङ्गी बना लेना
चाहिये, जैसे-कि उन्नत उन्नत सङ्कल्पवाला-१ उन्नत प्रणत सङ्कल्पवाला
-२ प्रणत उन्नत सङ्कल्पवाला-३ और प्रणत प्रणत सङ्कल्पवाला-४
सङ्कल्प नाम मानसिक विचार का है, विचार में औन्नत्य औदार्य आदि
गुणों से युक्त होने से अथवा-समीचीन अर्थ को विषय करने से जानना
चाहिये, ऐसे उन्नत मानसिक विचारों से युक्त हुवा पुरुष भी उन्नत
कहलाते हैं इस चतुर्थभङ्गी का अर्थ स्पष्ट है ८

“ पन्ने ” प्रज्ञा नाम ज्ञान का है प्रकृष्ट ज्ञा का नाम प्रज्ञा है
इसको लेकर भी चार भङ्ग इस प्रकार से बने हैं-उन्नत उन्नत प्रज्ञावाला
-उन्नत प्रणत प्रज्ञावाला-प्रणत उन्नत प्रज्ञावाला-और प्रणत प्रणत
प्रज्ञावाला, यह चतुर्भङ्गी भी सरलता से समझी जा सके ऐसी है

એ જ પ્રમાણે સકલ્પને આધારે પણ ચાર ભાંગા બને છે-એમકે....
(૧) ઉન્નત ઉન્નત સકલ્પવાળો, (૨) ઉન્નત પ્રણત સકલ્પવાળો, (૩) પ્રણત
ઉન્નત સકલ્પવાળો અને (૪) પ્રણત પ્રણત સકલ્પવાળો. ‘સકલ્પ’ એટલે
“ માનસિક વિચાર ”. વિચારમાં ઔદાર્ય આદિ ગુણોથી યુક્તતા હોવાને કારણે
ઉન્નતતા સંભવી શકે છે અથવા સમીચીન અર્થને વિષય કરવાની અપેક્ષાએ
પણ સકલ્પમાં ઉન્નતતા સમજવી જોઈએ એવા માનસિક ઉન્નત વિચારોથી
યુક્ત હોય એવા પુરુષને પણ ઉન્નત કહે છે. આ ચતુર્ભંગીનો અર્થ સ્પષ્ટ છે.

“ પન્ને ” પ્રજ્ઞા એટલે જ્ઞાન-પ્રકૃષ્ટ જ્ઞાનનું નામ પ્રજ્ઞા છે. તે પ્રજ્ઞાની
અપેક્ષાએ પણ નીચે પ્રમાણે ચાર ભાંગા બને છે-(૧) ઉન્નત ઉન્નત પ્રજ્ઞાવાળો,
(૨) ઉન્નત પ્રણત પ્રજ્ઞાવાળો, (૩) પ્રણત ઉન્નત પ્રજ્ઞાવાળો અને (૪) પ્રણત
પ્રણત પ્રજ્ઞાવાળો આ ચતુર્ભંગી પણ સરળતાથી સમજી શકાય એવી છે.

“ દિદ્ધી ” इति-इष्टि-दर्शन इष्टि-चाक्षुषज्ञान, यद्वा-इष्टिः-नयमर्षं, वददृष्टिवाचनानां सङ्गा घोष्याः । यथाहि-उन्नतो नामैक उन्नतइष्टिः १ उन्नतो नामैक प्रणतइष्टिः २, प्रणतोनामैक उन्नतइष्टि ३, प्रणतोनामैक प्रणत-इष्टिः ४ । १० ।

અથ ક્રિયાપેક્ષાણિ ત્રીણિ સૂત્રાણ્યાહ-

“ સીલાયારે ” इति-शीलाऽऽचारः=शीलं-समाधिचित्तस्वास्थ्यमित्यर्थं, यद्वा-सद्वृत्त स्वभावो वा तस्याऽऽचारः=आचरणमनुष्ठानमित्यर्थः, यद्वा-‘ शी-

“ દિદ્ધી ” दर्शन का नाम इष्टि है अर्थात् चक्षु की सहायता से जो ज्ञान होता है वह इष्टि है । अथवा नयों का जो मत है वह इष्टि है, इस इष्टि को लेकर भी चार भङ्ग इस प्रकार से पनते हैं । उन्नत उन्नत इष्टिवाला १ उन्नत प्रणत इष्टिवाला-२ प्रणत उन्नत इष्टिवाला-३ और प्रणत प्रणत इष्टिवाला-४ इनका तात्पर्य ऐसा है कि-एक उन्नत होकर भी उन्नत इष्टिवाला-१ एक उन्नत होकर भी प्रणत इष्टिवाला होता है-२ एक प्रणत होकर भी उन्नत इष्टिवाला होता है और एक प्रणत होकर भी प्रणत इष्टिवाला ही होता है—

ક્રિયાપેક્ષા ત્રીણ સૂત્રાં હસ પ્રકાર સે દે—

“ સીલાયર ” इति-शील नाम समाधि वा है समाधि चित्त स्वा स्वरूप होती है, अथवा-सद्वृत्त, वा स्वभाव का नाम भी शील है इस शील का जो आचार अनुष्ठान है, वह शीलाचार है । अथवा

‘ दिद્ધी ’ दर्शन का नाम इष्टि है अर्थात् चक्षु की सहायता से जो ज्ञान होता है તેનું નામ इष्टि છે અથવા જુદા જુદા નયનો ને મત દેખ છે તેને इष्टि કહે છે આ इष्टિને અનુભવીને પણ ત્રીણ પ્રમાણે ચાર ભાંત્રા બને છે (૧) ઉન્નત ઉન્નત इष्टિવાળો, (૨) ઉન્નત પ્રણત इष्टિવાળો, (૩) પ્રણત ઉન્નત इष्टિવાળો અને (૪) પ્રણત પ્રણત इष्टિવાળો આ ચાર પ્રકારનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—(૧) કોઈ પુરુષ બાળિ આદિની અપેક્ષાએ પણ ઉન્નત દેખ છે અને ઉન્નત इष्टિવાળો પણ દેખ છે (૨) કોઈ પુરુષ ઉન્નત દેખા છતાં પ્રણત इष्टિવાળો દેખ છે (૩) કોઈ પુરુષ પ્રણત દેખા છતાં ઉન્નત इष्टિવાળો દેખ છે (૪) કોઈ પ્રણત પણ દેખ છે અને પ્રણત इष्टિવાળો પણ દેખ છે

દિધાની અપેક્ષાએ પણ સૂત્ર આ પ્રમાણે છે—

‘ સીલાયારે ’ इति-शील अर्थात् समाधि समाधि चित्तની स्वरूपता ३५ પણ દેખ છે અથવા-सद्वृत्ति अथवा स्वभावનું नाम પણ शील છે તે

લેનાઽઽચારઃ શીલાઽઽચારઃ” इति तृतीयातत्पुरुषः, तेन स्वभावेनाऽऽचार इत्यर्थः
एवं च शीलाऽऽचारघटिता अपि चत्वारो भङ्गा बोध्याः । तथाहि—उन्नतो नामैक
उन्नतशीलाऽऽचारः १, उन्नतोनामैकः प्रणतशीलाऽऽचारः २, प्रणतो नामैक
उन्नतशीलाऽऽचारः ३, प्रणतो नामैकः प्रणतशीलाऽऽचारः ४ । ११ ।

“व्यवहार” इति—व्यवहारः=वर्तनमाचरणं वा, स चानेकविधः, तद्वद्विता
अपि चत्वारो भङ्गाः कर्तव्याः, तथाहि—उन्नतो नामैक उन्नतव्यवहारः १, उन्नतो
नामैकः प्रणतव्यवहारः २, प्रणतो नामैक उन्नतव्यवहारः ३, प्रणतो नामैकः प्रण-

—“शीलेन आचारः” शीलाचार इस तृतीयातत्पुरुष समास को लेकर
ऐसा शीलाचार का अर्थ होता है, कि—स्वभाव से जो आचार है वह
शीलाचार है, इस शीलाचार को लेकर भी चार भङ्ग बनते हैं—वे इस
प्रकार से हैं—कोई उन्नत होकर भी उन्नत शीलाचारवाला होता है—१
कोई उन्नत होकर भी प्रणत शीलाचारवाला होता है—२ कोई प्रणत
होकर भी उन्नत शीलाचारवाला होता है—३ और कोई प्रणत होकर
भी प्रणत शीलाचारवाला ही होता है—११

“व्यवहार” इति व्यवहार अथवा वर्तमान आचरण का नाम
व्यवहार है यह व्यवहार अनेक प्रकार का होता है । इस व्यवहार को
लेकर चार भङ्ग इस प्रकार से बनते हैं, एक कोई उन्नत होकर भी उन्नत
व्यवहारवाला होता है—१ कोई उन्नत होकर भी प्रणत व्यवहारवाला
होता है—२ कोई प्रणत होकर भी उन्नत व्यवहारवाला होता है—३

शीलेના જે આચાર (અનુકાન) છે, તેનું નામ શીલાચાર છે અથવા “શીલેન
આચારઃ” આ પ્રમાણે તૃતીયા તત્પુરુષ ‘સમાસ ગણીને શીલાચારનો આ
પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે—“સ્વભાવતઃ” જે આચાર છે તેને શીલાચાર
કહે છે ” આ શીલાચારની અપેક્ષાએ પણ નીચે પ્રમાણે ચાર ભાંગા બને છે.
(૧) કોઈ પુરુષ ઉન્નત પણ હોય છે અને ઉન્નત શીલાચારવાળો પણ હોય
છે (૨) કોઈ પુરુષ ઉન્નત હોવા છતાં પણ પ્રણત શીલાચારવાળો હોય છે.
(૩) કોઈ પ્રણત હોવા છતાં પણ ઉન્નત પ્રણત શીલાચારવાળો હોય છે. (૪)
કોઈ પ્રણત પણ હોય છે અને પ્રણત શીલાચારવાળો પણ હોય છે. ૧૧ ।

“વ્યવહાર” ઇત્યાદિ—વર્તમાન આચરણનું નામ વ્યવહાર છે તે
વ્યવહાર અનેક પ્રકારનો હોય છે તે વ્યવહારની અપેક્ષાએ પણ નીચે પ્રમાણે
ચાર ભાંગા બને છે—(૧) કોઈ જીવ ઉન્નત પણ હોય છે અને ઉન્નત વ્યવ-
હારવાળો પણ હોય છે (૨) કોઈ પુરુષ ઉન્નત હોવા છતાં પણ પ્રણત
વ્યવહારવાળો હોય છે. (૩) કોઈ પ્રણત હોવા છતાં પણ ઉન્નત વ્યવહારવાળો

તથ્યવહારઃ ૪ । તત્ર વ્યવહારે ઠન્નત્વ મ્ણત્વ ચ પ્રશ્નસનીયસ્થાપશ્નસનીયસ્થા
મ્નાં બોધ્યમ્ । ૧૨ ।

“ પરક્રમે ” પરાક્રમ—ઉત્સાહ, સદ્દિત્તા અપિ ચત્વારો મજ્ઞા બોધ્યાઃ ।
તથાહિ—ઠન્નતો નામૈક ઠન્નતપરાક્રમઃ ૧, ઠન્નતો નામૈકઃ મ્ણતપરાક્રમ ૨,
મ્ણતો નામૈક ઠન્નતપરાક્રમઃ ૩, મ્ણતો નામૈક મ્ણતપરાક્રમ ૪ । તત્ર પરાક્રમે
ઠન્નત્વ આપ્રતિહત્વ—સમીચીન વિષયસ્થામ્નાં બોધ્યમ્ । ૧૩ । એવુ સર્વંયુ
મજ્ઞેયુ મ્ણતત્વમુશ્વત્વવિપરીતં બોધ્યમ્ ।

ઔર—કોઈ પ્રણત હોકર બી પ્રણત વ્યવહારવાલા હી હોના હૈ—૪
વ્યવહાર મૈ ઔમ્થ ઔર પ્રણતતા પ્રશ્નસનીયતા ઔર અપ્રશ્નસનીયતા
સે આતી હૈ એસા જાનના ચાહિયે—૧૨

“ પરક્રમે ” ઉત્સાહ કા નામ પરાક્રમ હૈ કમ પરાક્રમ કે ઝો
ચાર મજ્ઞ યનતે હૈ—એ કસ પ્રકાર સે હૈ, કોઈ ડભન હોકર બી ડભત
પરાક્રમવાલા હોના—૧ કોઈ ડભન હોકર બી પ્રણત પરાક્રમવાલા હોના
હૈ—૨ કોઈ પ્રણત હોકર બી ડભન પરાક્રમવાલા હોના હૈ—૩ ઔર કોઈ
પ્રણત હોકર પ્રણત પરાક્રમવાલા હી હોના હૈ ૪ પરાક્રમ મૈ ઔમ્થ
અપ્રતિહતતા ઔર—સમીચીનતા કો હેકર હી હોના હૈ એસા જાનના
ચાહિયે, કન સમસ્ત મજ્ઞો મૈ પ્રણતના ઔમ્થ સે વિપરીત હોતી હૈ એસા
સમજના ચાહિયે ।

હોય છે (૪) કોઈ પુરુષ પ્રણત પણ હોય છે અને પ્રણત અવહારવાળો પણ
હોય છે અવહારમાં ઠન્નતતા અને પ્રણતતા પ્રશ્નસનીયતાથી અને અપ્રશ્ન
સનીયતાથી આવે છે, જોમ સમજવું । ૧૨ ।

“ પરક્રમે ” ઇત્યાદિ—ઉત્સાહને પરાક્રમ કહે છે તે પરાક્રમની અરે
હાએ નીચે પ્રમાણે ચાર ભાગા અને છે—(૧) કોઈ પુરુષ ઠન્નત પણ હોય
છે અને ઠન્નત પરાક્રમવાળો પણ હોય છે (૨) કોઈ પુરુષ ઠન્નત હોવા છતાં
પણ પ્રણત પરાક્રમવાળો હોય છે (૩) કોઈ પુરુષ પ્રણત હોવા છતાં પણ
ઠન્નત પરાક્રમવાળો હોય છે (૪) કોઈ પુરુષ પ્રણત પણ હોય છે અને પ્રણત
પરાક્રમવાળો પણ હોય છે પરાક્રમમાં ઠન્નતતા અપ્રતિહતતા અને સમીચીનતાની
અપેક્ષાએ જ હોય છે જોમ સમજવું આ ચાર ભાગાઓમાં પ્રણતતા ઠન્નત
તાથી વિપરીત હોય છે જોમ સમજવું

“એને પુરિસજાણ” ઇત્યાદિ-એણું મન આદિ પરાક્રમાન્તઘટિતસપ્તચતુર્ભક્તીસૂત્રોપ મધ્યે એકનું=કેવલં પુરુષજાતનું=પુરુષજાતપદં યોજયિત્વા સપ્ત ચતુર્ભક્તીસૂત્રપઠનં કાર્યમ્, યતઃ પ્રતિપક્ષઃ=દ્વિતીયપક્ષો દૃષ્ટાન્તભૂતં વૃક્ષસૂત્રં નાસ્તીતિ દૃષ્ટાન્તતયા વૃક્ષસૂત્રં ન પઠનીયમિતિ, યતોઽન્ન દૃષ્ટાન્તભૂતવૃક્ષેષુ મનઃપ્રમૃતયો દાષ્ટાન્તિકપુરુષધર્મા ન ઘટન્તે, તેષામસંજિત્વાત્ ।

પુનર્દૃષ્ટાન્તસૂત્રમાહ—

“ચત્તારિ” ઇત્યાદિ-ચત્તારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-ઋજુઃ=સરલઃ, એકઃ=કશ્ચિદ્ વૃક્ષઃ વૃક્ષે આર્જવં ચાવિપરીતસ્વભાવેન સમુચિતફલપુષ્પાદિનિષ્પાદનહેતુત્વાદ્ બોધ્યમ્, સ એવ પૂર્વમૃજુરધુનાઽપિઋજુઃ=સરલ ઇતિ પ્રથમો ભક્તઃ ૧।

“એને પુરિસજાણ” ઇત્યાદિ-મનસે લેકર પરાક્રમ તક કી જો ચતુર્ભક્તી કે યે સાત સૂત્ર હૈં ડનમે કેવલ પુરુષજાત પદ કો યોજિત કરકે હી સપ્ત ચતુર્ભક્તી સૂત્રોં કો પઠન કરના ચાહિયે । કયોં કિ-દૃષ્ટાન્તભૂત જો વૃક્ષ સૂત્ર હૈં વહ યહાં નહીં પઢનાં ચાહિયે કારણ હસકા એસા હૈં કિ-દૃષ્ટાન્તભૂત વૃક્ષોં મેં મન આદિ જો દાષ્ટાન્તિક પુરુષ ધર્મ હૈં વે ઘટિત નહીં હોતે હૈં, કયોં કિ-અસંગી હોતે હૈં

“પુનઃ દૃષ્ટાન્ત સૂત્ર કા કથન—”

“ચત્તારિ” ઇત્યાદિ-ચાર પ્રકાર કે વૃક્ષ કહે ગયે હૈં, ઋજુ-૧ સરલ -૨ ઋજુ-૩ સરલ-૪ હસ ભક્ત મેં કોઈ એસા હોતા હૈં, જો પહિલે ભી

“એને પુરિસજાણ” ઇત્યાદિ-મનથી લઈને પરાક્રમ સુધીના ચાર લાંગાવાળા સાત સૂત્રોનું પૂર્વોક્ત પ્રકારે પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું. તે સાતે સૂત્રોના ચાર-ચાર લાંગાઓનું કથન કરતી વખતે દરેક લાંગામા માત્ર પુરુષ પદનો પ્રયોગ કરીને સમસ્ત કથન થવું જોઈએ. એટલે કે દૃષ્ટાન્તરૂપ વૃક્ષ પદનો આ લાંગાઓમા પ્રયોગ કરવો જોઈએ નહીં. ત્યાં વૃક્ષપદનો પ્રયોગ શા માટે થવો ન જોઈએ ? તો તેનો ખુલાસો આ પ્રમાણે સમજવો— દૃષ્ટાન્તભૂત વૃક્ષોમા મન આદિનો સદ્ભાવ હોતો નથી. એટલે કે જે દાષ્ટાન્તિક પુરુષધર્મો છે તેમને વૃક્ષની સાથે ઘટાવી શકાતા નથી, તે કારણે આ સાત સૂત્રોમાં વૃક્ષપદનો પ્રયોગ અસંગત લાગે છે તેથી દૃષ્ટાન્તભૂત વૃક્ષોને બદલે દાષ્ટાન્તિક પુરુષનો જ આ લાંગાઓમાં પ્રયોગ કરવામા આવ્યો છે

દૃષ્ટાન્ત સૂત્રનું વિશેષ કથન—

“ચત્તારિ” ઇત્યાદિ-વૃક્ષોના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પશ્ચ કહ્યા છે—

(૧) ઋજુ-ઋજુ, (૨) ઋજુ-વક્ર, (૩) વક્ર-ઋજુ અને (૪) વક્ર-વક્ર.

ઋતુનામૈકો વક્ર = પૂર્વઋતુઃ પશ્ચાત્, ફલપુષ્પાદિ વિષયે વિપરીતઃ । ઇતિ
 દ્વિતીયો મઠ્ઠ ૧૨ ।

વક્રો નામૈક ઋતુઃ—વક્રઃ=કુટિલઃ, ઋતુઃ=સરલ । ઇતિ તૃતીયો મઠ્ઠઃ । ૧૩ ।
 વક્રો નામૈકોન્વક્રઃ—પૂર્વ વક્રઃ પશ્ચાદપિ વક્ર શ્લેષ માગ્વત્ । ઇતિ ચતુર્થો
 મઠ્ઠઃ । ૧૪ ।

ઇતિ દૃષ્ટાન્તભૂતવૃક્ષસૂત્રમ્ ।

અથ દાષ્ટાન્તિકપુરુષઘાતસૂત્રોપન્યાસ—

“પ્રથમેવ” ઇત્યાદિ—પ્રથમેવ=દૃષ્ટાન્તભૂતવૃક્ષવૈદેન, વસ્વારિ=વનુ-સંસ્થાપાનિ

ઋતુ હોતા હૈ—ઔર ઘાદ મૈં બી ઋતુ ધના રહતા હૈ, વૃક્ષ મૈં શ્રક્ષતા
 અવિપરીત સ્વભાવ કો લેકર, યા સમુચિત ફલ પુષ્પાદિ કો લક્ષ્ય કરને
 કે કારણ કો લેકર જાનની ચાહિયે, પેસા યહ શ્રક્ષ ઋતુ નામ કા પ્રથમ
 મઠ્ઠ હૈ ? ઋતુ વક્ર, યહ દ્વિતીય મઠ્ઠ હૈ—૨ હમમૈં પહલે ઋતુ હોકર
 બી કોઈ વૃક્ષ વક્ર હો જાતા હૈ પેસો કહા ગયા હૈ, ફલ પુષ્પ આદિ કે
 વિષય મૈં વિપરીત હોના હસ્તીકા નામ યહાં વક્ર હૈ । વક્ર ઋતુ—યહ
 તૃતીય મઠ્ઠ હૈ, હસમૈં પહલે વક્ર કુટિલ હુવા કોઈ વૃક્ષ પશ્ચાત્ ઋતુ
 સરલ હો જાતા હૈ યહ પતલાયા ગયા હૈ । વક્ર વક્ર યહ ચતુર્થ મઠ્ઠ હૈ,
 હસમૈં પહિલે સે બી કોઈ વૃક્ષ વક્ર રહતા હૈ ઔર ઘાદ મૈં બી યહ વક્ર
 હી ધના રહતા હૈ હસ પ્રકાર સે યે ચાર મઠ્ઠ હૈ

દાષ્ટાન્તિક પુરુષજાત

“પ્રથમેવ” ઇત્યાદિ—દૃષ્ટાન્ત સ્વરૂપ વૃક્ષ કી તરહ ચાર સંસ્થાવાલે

હવે આ ચાર જાતના દાષ્ટાન્તિકરૂપ રૂપમાં આવે છે—(૧) કોઈ વૃક્ષ
 જોનું કોય છે કે જે પહેલાં પણ ઋતુ કોય છે અને પછી પણ ઋતુ જ રહે
 છે વૃક્ષમાં ઋતુ/તા (સરળતા) અવિપરીત સ્વભાવની અપેક્ષાએ અથવા
 સમુચિત રહ, પુષ્પાદિને લક્ષ્ય કરવાને કારણે સમજની (૨) ‘ઋતુ-વક્ર’
 કોઈ વૃક્ષ પહેલાં ઋતુ કોના છતાં પાછળથી વક્ર થઈ જાય છે રહ-પુષ્પાદિ
 આપનાઈ વૃક્ષ ન્યારે રહ-પુષ્પાદિ આપતું જન્મ થઈ જાય છે ત્યારે તેમાં
 વક્રતા આવી બચાય છે (૩) વક્ર-ઋતુ’ કોઈ વૃક્ષ જોનું કોય છે કે જે
 પહેલાં વક્ર કોય છે પણ પાછળથી ઋતુ બની જાય છે (૪) ‘વક્ર-વક્ર’ કોઈ
 વૃક્ષ પહેલાં પણ વક્ર કોય છે અને પાછળથી પણ વક્ર જ રહે છે આ પ્રકાર
 રના ચાર જાતના જાડી બને છે

દાષ્ટાન્તિક પુરુષ જાત—

“પ્રથમેવ” ઇત્યાદિ—દૃષ્ટાન્તભૂત વૃક્ષની જેમ પુરુષોના પણ ચાર પ્રકાર

પુરુષજાતાનિ=પુરુષપ્રકારાઃ, પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-ઋજુર્નામૈક ઋજુઃ ૧-ઋજુઃ=સરલઃ શરીર-ગતિ-ભાષિત - ચેષ્ટાપ્રવૃત્તિભિર્વહિસ્તાત્, અન્તરપ્યેવમૃજુ=નિશ્ચલઃ સુસાધુવદિતિ પ્રથમો ભગ્નઃ ॥ ૧ ॥

ઋજુર્નામૈકો વક્રઃ ૨-ઋજુઃ, એકઃ=રુશ્ચિત્, વક્રઃ=અન્તર્માયાવિત્ત્વેન કુટિલઃ કારણવશાત્ સરલતાધારિદુર્જનવત્, ઇતિ દ્વિતીયોભગ્નઃ ॥ ૨ ॥

વક્રો નામૈક ઋજુઃ ૩-વક્રઃ=કુટિલઃ શિક્ષાદિકારણવશાદર્શિતવહિરુગ્રસ્વ-ભાવઃ, ઋજુઃ=અન્તઃશ્ચલરહિતઃ પ્રવચન-ગુપ્તિ ત્રયાદિરક્ષકમુનિવત્ ॥ ઇતિ તૃતીયો ભગ્નઃ ॥ ૩ ॥

વક્રો નામૈકો વક્રઃ ૪-વક્રઃ=કુટિલો વહિસ્તાત્કાયચેષ્ટાદિના, સ એવ વક્રઃ=અભ્યન્તરેऽપિ કુટિલઃ, કપટજાલયુક્તગઠવદિતિ ચતુર્થો ભગ્નઃ ૪

ઇતિ દાષ્ટાન્તિકપુરુષજાતસૂત્રોપન્યાસઃ ॥

પુરુષ પ્રકાર કહે ગયે હૈં, इनमें कोई पुरुष सुसाधु की तरह ऐसा होता है जो शरीर गति भाषित एवं चेष्टा आदि में सरल होता है और-भीतर में भी निश्चल होता है, अर्थात्-ऐसा पुरुष बाहर में और भीतर सरलतावाला होता है, यह प्रथम भग है-१ कोई पुरुष ऐसा होता है जो-पहले तो सरल होता है, बाद में कारण वश वह कुटिल-मायावी हो जाने से सरलताधारी दुर्जन की तरह वक्र हो जाता है यह द्वितीय भग है-कोई पुरुष ऐसा होता है जो पहले वक्र होता है शिक्षादि कारण के वश से बाहर में उग्रस्वभाव का प्रदर्शन करनेवाला होता है, बाद में वह वचन गुप्तित्रय आदि की रक्षा करनेवाले मुनि की तरह भीतर में छलविहीन बन जाता है यह तृतीय भग है-३ कोई पुरुष ऐसा होता

કહ્યા છે-પહેલા ભાગે-કોઈ પુરુષ સુસાધુની જેમ શરીર, ગતિ, ભાષા, ચેષ્ટા આદિની અપેક્ષાએ પણ સરલ હોય છે અને તેનું અંતઃકરણ પણ નિશ્ચલ હોય છે. એટલે કે તે બહારથી પણ સરલ હોય છે અને અંદરથી પણ સરલ હોય છે અથવા પહેલાં પણ સરળ હોય છે અને પાછળથી પણ સરલ જ રહે છે. બીજો ભાગે-કોઈ પુરુષ પહેલાં સરલ હોય છે, પરંતુ પાછળથી કોઈ કારણને લીધે તે માયાવી થઈ જવાથી દુર્જનના જેવો વક્ર (કુટિલ) થઈ જાય છે ત્રીજો ભાગે-કોઈ પુરુષ પહેલાં વક્ર (કુટિલ) હોય છે, પરંતુ શિક્ષાદિ કારણને લીધે પાછળથી સરલ સ્વભાવનો બની જાય છે. અથવા કોઈ માણસ ઉગ્ર સ્વભાવ આદિનું પ્રદર્શન કરનારો હોવા છતાં પણ ગુપ્તિત્રય આદિની રક્ષા કરનારા મુનિની જેમ અંદરથી છલરહિત બની ગયેલો હોય છે ચોથો ભાગે-કોઈ પુરુષ શારીરિક ચેષ્ટા આદિની અપેક્ષાએ બહારથી પણ કુટિલ

“પરં નહા” રૂપાદિ-પદમ્-ઇત્યમ્ “ઋજુનામૈક ઋજુઃ” રૂપાદિનાઽ-
મન્તરોપદશ્ચિત્તક્રમેણ, યથા=યેન પ્રકારેણ પરિણતરૂપસ્વાદિ નથ વિશેષમ-દાનેને
સ્પર્શઃ, ઉન્નત-પરિણતામ્યામયોઽન્ય પ્રતિવક્ષ્યમામ્યાં, ગમઃ=સદ્વચ્ચાચપદ
વિરૂપઃ પાઠો વિહિતઃ સથા=તેન પ્રકારેણ અર્થાત્ પરિણત-રૂપ-મન-સકલ્પ-
પ્રજ્ઞા-દષ્ટિ - શીલાઽઽચાર - વ્યવહાર - પરાક્રમરૂપનવવિશેષણયોચિતામ્યામ્,
ઋજુ-ચક્રામ્યામપિ=ઋજુશ્ચ-દેન ચક્રશ્ચ-દેન ચાપિ મણિતવ્ય =ગમ પઠનીયઃ, સ
ગમ કિયાન્ મણિતવ્ય ? રૂપવર્ધિ પ્રદર્શયિતુમાહ-“જાવ પરક્ષમે” રૂપિ,
ઋજુચક્રશ્ચસુખાદારમ્ય પ્રયોદયં મૂર્ધં યાપદ્ ગમો મણિતવ્ય રૂપર્થ ૧-તથા વ
ઋજુ ૨ ઋજુ પરિણત ૨ ઋજુરૂપ ૨ સ્થળાણિ પટ્ સ્થાણિ દૃષ્ટદૃષ્ટાન્ત પુરુષદાર્પા
ન્તિકરૂપાણિ ધોમ્યાણિ, હૃદયિરિક્તાણિ સપ્ત મન પ્રમૃતિપટિતાણિ દૃષ્ટાન્તરાર્હિ

હૈ જો પાહર સે શારીરિક ખેષ્ટાદિ દ્વારા કુટિલ હોના હૈ ખૌર-ખીતર સે
ખી કપટ જાલ યુક્ત શઠ કી તરહ કુટિલ હોતા હૈ યહ ચતુર્થમગ હૈ-૪

“પરં જહા” રૂપાદિ-રૂપ સૂત્ર દ્વારા અવ સૂત્રકાર પદ પ્રકટ
કરતે હૈ કિ-જિસ પ્રકાર ઉન્નત ઔર પ્રણત સમ્પ-ધી સૂત્રોં કૈ સાથ ઉન્નત
પ્રણત પરિણતરૂપ જોડકર દૃષ્ટાન્ત ઔર દાર્પાન્તિક સમ્પ-ધી છઠ્ઠ ૬ સૂત્ર
બનાયે હૈ, તથા-હનકી ઉન્નત પ્રણત શાસ્ત્રોં કૈ સાથ મન સકલ્પ પ્રજ્ઞા
દષ્ટિ શીલાચાર વ્યવહાર શબ્દ જોડકર ૭ સૂત્ર વૃક્ષ દૃષ્ટાન્ત રહિત
કરકે ઔર બનાયે ગયે હૈ, હમ પ્રકાર સે યે તેરહ સૂત્ર બનાયે ગયે હૈ ।
જૈસે-ઉન્નત ઉન્નત-૧ ઉન્નત પ્રણત-૨ પ્રણત ઉન્નત-૧ ઔર પ્રણત પ્રણત
૪ યે ચાર મગ વૃક્ષ સમ્પ-ધી હૈ, યહ પ્રથમ ૧ સૂત્ર હૈ, ઔર રૂપી સૂત્ર
કો દાર્પાન્તિક મૈ ઉન્નત પ્રણત કો યોજિત કરકે દ્વિતીય સૂત્ર પુરુષ

હોય છે અને અઠરથી પણ કપા' બળપુરુષ પુરુષના જેવો કુટિલ જ હોય
છે, અથવા તે પહેલાં પણ કુટિલ હોય છે અને પછી પણ કુટિલ જ રહે છે

‘પરં જહા’ રૂપાદિ-આ સૂત્ર દ્વારા હવે સૂત્રકાર જો પ્રકટ કરે છે
કે-જેમ ઉન્નત અને પ્રણત વિષયક સૂત્રોની સાથે ઉન્નત પ્રણત પરિણત રૂપ
નેદીને દૃષ્ટાન્ત દાર્પાન્તિક સમ્પ-ધી ૬ સૂત્રો બનાવવામાં આવ્યા છે, જે જ
પ્રમાણે ‘ઉન્નત પ્રણત’ શબ્દોની સાથે મન સકલ્પ, પ્રજ્ઞા, દષ્ટિ, શીલાચાર,
વ્યવહાર અને પરાક્રમ, આ સાત પદ નેદીને વૃક્ષના દૃષ્ટાન્ત રહિત બીજ
સાત સૂત્રો પણ બનાવવામાં આવ્યાં છે આ પ્રમાણે કુલ ૧૩ સૂત્રો બના
વવામાં આવ્યાં છે જેમકે (૧) ઉન્નત-ઉન્નત, (૨) ઉન્નત-પ્રણત, (૩) પ્રણત
ઉન્નત અને (૪) પ્રણત-પ્રણત આ ચાર ભાગના વૃક્ષને અનુલક્ષીને બનાવ્યા
છે. આ રીતે વૃક્ષના દૃષ્ટાન્તવાળું આ પ્રથમ સૂત્ર છે

તાનિ મનઃપ્રવૃત્તીનાં ધર્માણામસંજ્ઞિનિ વૃક્ષેઽસમ્ભવાદિતિ સંકલનયા ત્રયોદશ સૂત્રાણિ ૧૩। પ્રામપિ ત્રયોદશેતિ યોજયિત્વા ૨૬ પદ્વિંશતિઃ સૂત્રાણિ ભવન્તિ ।
તત્ર ઋજુવક્રાદિઘટિતત્રયોદશસૂત્રી યથા—

અથ ઋજુવક્રઘટિતદટ્ટાન્તભૂતવૃક્ષસૂત્રમ્-૧

ચત્વારો વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથયા-ઋજુર્નામૈક ઋજુઃ ૧, ઋજુર્નામૈકો વક્રઃ ૨, વક્રો નામૈકો ઋજુઃ ૩, વક્રો નામૈકો વક્રઃ ૪ । ॥૧॥ इति

અથ ઋજુવક્રઘટિતદાટ્ટાન્તિકપુરુષપ્રજાતસૂત્રમ્-૨

एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तथया-ऋजुर्नामैक ऋजुः १, ऋजुर्नामैको वक्रः २, वक्रो नामैक ऋजुः ३, वक्रो नामैको वक्रः ४, २

इति ऋजुवक्र घटितदाट्टान्तिकपुरुषजातसूत्रम् । २ ।

સમ્બન્ધી બનાયા ગયા છે—। ઉન્નત ઉન્નત પરિણત-૧ ઉન્નત પ્રણત પરિણત ૨ પ્રણત ઉન્નત પરિણત-૩ ઔર પ્રણત પ્રણત પરિણત-૪ યે ચાર ભંગ ઉન્નત પ્રણત કે સાથ પરિણત કો યોજિત કર તૃતીય વૃક્ષ સમ્બન્ધી હૈં । યહ સૂત્ર હૈ, ઔર-હસી સૂત્ર કો દટ્ટાન્ત મેં યોજિત કરકે ચતુર્થ સૂત્ર બનાયા ગયા હૈ ઉન્નત ઉન્નત ૧ ઉન્નત પ્રણતરૂપ-૨ પ્રણત ઉન્નતરૂપ-૩ ઔર-પ્રણત પ્રણતરૂપ ૪ યે ચાર ભંગ રૂપ કો લેકર વૃક્ષ સમ્બન્ધી બનાયે ગયે હૈં, યહ પાંચવાં સૂત્ર હૈ, ઔર-હસી સૂત્ર કો દાટ્ટાન્તિક મેં યોજિત કરકે છટ્ટાં ૬ સૂત્ર બનાયા ગયા હૈં હસ તરહ સે યહાં તક તો દટ્ટાન્ત દાટ્ટાન્તિક સમ્બન્ધી ૬ સૂત્ર બનાયે ગયે હૈં । પરન્તુ હનકે સાથ ઉન્નત

અને એ જ પ્રમાણે દાટ્ટાન્તિક પુરુષની સાથે ઉન્નત-ઉન્નત, આદિ ચાર ભાંગાને યોજિત કરીને પુરુષ વિષયક ધીનું સૂત્ર બનાવ્યું છે. (૧) ઉન્નત ઉન્નત પરિણત (૨) ઉન્નતપ્રણતપરિણત, (૩) પ્રણતઉન્નતપરિણત અને (૪) પ્રણત પ્રણત પરિણત, આ ચાર ભાંગા ઉન્નત-પ્રણતની સાથે પરિણતને યોજિત કરીને વૃક્ષને અનુલક્ષીને કહ્યા છે. આ રીતે વૃક્ષ વિષયક ત્રીણુ સૂત્ર બનાવ્યું છે અને આ સૂત્રને દટ્ટાન્તમાં (દાટ્ટાન્તિક પુરુષમાં) યોજિત કરીને પુરુષ વિષયક ચોથું સૂત્ર બનાવ્યું છે. પાચમું સૂત્ર આ પ્રમાણે બનાવ્યું છે-(૧) ઉન્નત ઉન્નતરૂપ, (૨) ઉન્નત પ્રણતરૂપ, (૩) પ્રણત ઉન્નતરૂપ અને (૪) પ્રણત પ્રણતરૂપ આ ચાર ભાંગા સંસ્થાન (આકાર) ની અધેક્ષાએ વૃક્ષને અનુલક્ષીને કહ્યા છે. આ ચારે ભાંગાને દાટ્ટાન્તિક પુરુષને અનુલક્ષીને યોજિત કરવાથી છઠું સૂત્ર બન્યું છે.

અથ ઋજુવક્રપૂર્વકપરિણતપટિતદાષ્ટાન્તિકપુરુષસૂત્રમ્-૧

ચત્વારો દૃશા મદ્યપ્તા, તથા-ઋજુનામૈક ઋજુપરિણતઃ ૧, ઋજુનામૈકો વક્રપરિણતઃ ૨, વક્રો નામૈક ઋજુપરિણતઃ ૩, વક્રો નામૈકો વક્રપરિણતઃ ૪ ॥ ૩ ॥ इति ॥

અથ ઋજુવક્રપૂર્વકપરિણતપટિતદાષ્ટાન્તિકપુરુષસૂત્રમ્-૪

एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि मध्यपानि, तथ्या-ऋजुनामैक ऋजुपरिणतः १, ऋजुनामैको वक्रपरिणतः २, वक्रो नामैक ऋजुपरिणतः ३, वक्रो नामैको वक्रपरिणतः ४। इति ऋजुवक्रपूर्वकपरिणतपटितदाष्टान्तिकपुरुषजातसूत्रम् । ४।

અથ ઋજુવક્રપૂર્વકરૂપપટિતદાષ્ટાન્તિકપુરુષસૂત્રમ્-૫

चत्वारो दृशाः मद्यप्ता, तथ्या-ऋजुनामैक ऋजुरूपः १, ऋजुनामैको वक्ररूपः २, वक्रो नामैक ऋजुरूपः ३, वक्रो नामैको वक्ररूपः ४ इति ५

અથ ઋજુવક્રપૂર્વકરૂપપટિતદાષ્ટાન્તિકપુરુષજાતસૂત્રમ્-૬

एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि मध्यपानि, तथ्या-ऋजुनामैक ऋजुरूपः १, ऋजुनामैको वक्ररूपः २, वक्रो नामैक ऋजुरूपः ३, वक्रो नामैको वक्ररूपः ४। इति प्रयोदशसूत्र्याम् सष्टान्तिकपटसूत्री

પ્રણત કે સાથ મન કો લેકર સંકૂલ્ય કો લેકર પ્રજ્ઞા કો લેકર દષ્ટિ કો લેકર શીલાચાર કો લેકર વ્યવહાર કો લેકર, એ-પરાક્રમ કો લેકર જો ચતુર્મુખી કે સાત સૂત્ર પનાયે ગયે હૈં, એ-ચિના દષ્ટાન્ત કે હી પનાયે ગયે હૈં । ક્યોં કિ-મન આદિ ધર્મ અસજી વૃક્ષોં મેં સમ્માયિત (સમ્પદ) નહીં હોતે હૈં, ચિના દષ્ટાન્ત કે ચતુર્મુખી સમ્પન્ની એ સાત સૂત્ર હસ

આ રીતે પહેલેથી છ મુખીના સૂત્રો તેા અનુક્રમે દર્શાવ અને દાષ્ટાન્તિક પુરુષની અપેક્ષાએ જતાવવામાં આન્ધા છે પરંતુ ઉન્નત પ્રવૃત્તિ સાથે (૧) મન, (૨) સંકલ્પ, (૩) પ્રજ્ઞા, (૪) દષ્ટિ, (૫) શીલાચાર, (૬) વ્યવહાર અને (૭) પરાક્રમ, આ સાતને યોજિત કરીને જે વ્યાર વ્યાર જાગાવાળા સાત સૂત્રો જતાવવામાં આન્ધા છે, તે ચિના દર્શાવ જ જતાવવામાં આન્ધા છે, કારણ કે મન આદિ ઉપરુષ્ટ સાત ધર્મોના અસજી વૃક્ષોમાં સદ્ભાવ ડોર્ધ શકતો નથી.

આ રીતે દર્શાવ ચિના (જેટલે કે માત્ર પુરુષને અનુવર્ણીને) વ્યાર વ્યાર જાગાવાળા જે સાત સૂત્રો જતાવ્યાં છે, તે નીચે પ્રમાણે સમજના—જેટલે કે સાતમાંથી લઈને ૧૩ માં મુખીના સૂત્રોના ભાગ્યંતુ ૨૩૫ અર્ધો પ્રકટ કરવામાં આવે છે.

अथ ऋजुवक्रपूर्वक्रमनोघटितचतुर्भङ्गी-७

ऋजुर्नामैक ऋजुमनाः १, ऋजुर्नामैको वक्रमनाः २, वक्रो नामैक ऋजुमनाः ३, वक्रो नामैको वक्रमनाः ४। ७॥

अथ ऋजुवक्रपूर्वकसंकल्पघटितचतुर्भङ्गी-८

ऋजुर्नामैक ऋजु संकल्पः १, ऋजुर्नामैको वक्र संकल्पः २, वक्रो नामैक ऋजु संकल्पः ३, वक्रो नामैको वक्रसंकल्पः ४। ८॥

अथ ऋजुवक्रपूर्वक प्रज्ञाघटितचतुर्भङ्गी-९

ऋजुर्नामैक ऋजुप्रज्ञः १, ऋजुर्नामैको वक्रप्रज्ञः २, वक्रो नामैक ऋजुप्रज्ञः ३, वक्रो नामैको वक्रप्रज्ञः ४। ९॥

अथ ऋजुवक्र पूर्वकदृष्टिघटितचतुर्भङ्गी-१०

ऋजुर्नामैक ऋजुदृष्टिः १, ऋजुर्नामैको वक्रदृष्टिः २, वक्रो नामैक ऋजुदृष्टिः ३, वक्रो नामैको वक्रदृष्टिः ४। १०॥

प्रकार से हैं—उन्नत उन्नत मन-१ उन्नत प्रणत मन-२ प्रणत उन्नत मन ३ और प्रणत प्रणत मन-४ यह सातवां सूत्र है। ८-आठवां सूत्र इस प्रकार से हैं—उन्नत उन्नत मङ्गल्य-१ उन्नत प्रणत मङ्गल्य-२ प्रणत उन्नत मङ्गल्य-३ और—प्रणत प्रणत मङ्गल्य-४ ९ नववां चतुर्भङ्गी का सूत्र इस प्रकार से हैं—उन्नत उन्नत प्रज्ञा-१ उन्नत प्रणत प्रज्ञा-२ प्रणत उन्नत प्रज्ञा ३ और प्रणत प्रणत प्रज्ञा-४ १० दशवां चतुर्भङ्गी का सूत्र इस प्रकार से है उन्नत उन्नत दृष्टि-१ उन्नत प्रणत दृष्टि-२ प्रणत उन्नत दृष्टि ३ प्रणत प्रणत दृष्टि-४। ग्यारहवां ११ चतुर्भङ्गी का सूत्र इस प्रकार है—उन्नत उन्नत शीलाचार-१ उन्नत प्रणत शीलाचार-२ प्रणत उन्नत

सातवां सूत्रना आर लांगा-(१) उन्नत उन्नत मन, (२) उन्नत-प्रणत मन, (३) प्रणत-उन्नत मन अने (४) प्रणत-प्रणत मन.

आठवां सूत्रना आर लांगा-(१) उन्नत-उन्नत संकल्प, (२) उन्नत-प्रणत संकल्प, (३) प्रणत-उन्नत संकल्प अने (४) प्रणत-प्रणत संकल्प

नववां सूत्रना आर लांगा-(१) उन्नत-उन्नत प्रज्ञा, (२) उन्नत-प्रणत प्रज्ञा, (३) प्रणत-उन्नत प्रज्ञा अने (४) प्रणत-प्रणत प्रज्ञा.

दसवां सूत्रना आर लांगा-(१) उन्नत-उन्नत दृष्टि, (२) उन्नत-प्रणत दृष्टि, (३) प्रणत-उन्नत दृष्टि अने (४) प्रणत-प्रणत दृष्टि.

अगियारवां सूत्रना आर लांगा-(१) उन्नत-उन्नत शीलाचार, (२) उन्नत

अथ ऋजुवक्रपूर्वकशीलाऽऽधारघटितचतुर्भुज-११

ऋजुनामैक ऋजुशीलाऽऽधारः १, ऋजुनामैको वक्रशीलाऽऽधारः २, वक्रो नामैक ऋजुशीलाऽऽधारः ३, वक्रो नामैको वक्रशीलाऽऽधारः ४। ११॥

अथ ऋजुवक्रपूर्वकव्यवहारघटितचतुर्भुज-१२

ऋजुनामैक ऋजुव्यवहारः १, ऋजुनामैको वक्रव्यवहारः २, वक्रो नामैक ऋजुव्यवहारः ३, वक्रो नामैको वक्रव्यवहारः ४। १२॥

अथ ऋजुवक्रपूर्वक पराक्रमघटितचतुर्भुज-१३

ऋजुनामैक ऋजुपराक्रमः १, ऋजुनामैको वक्रपराक्रमः २, वक्रो नामैक ऋजुपराक्रमः ३, वक्रो नामैको वक्रपराक्रमः ४। १३॥

इति ऋजुवक्रादिघटितप्रयोदश सूत्री १३॥

शीलाचार-३ प्रणत प्रणत शीलाचार-४। १२ वां चतुर्भुज का सूत्र इस प्रकार से है-उन्नत उन्नत व्यवहार १ उन्नत प्रणत व्यवहार-२ प्रणत उन्नत व्यवहार-३ और प्रणत प्रणत व्यवहार-४। ११ वां चतुर्भुज का सूत्र इस प्रकार से है उन्नत उन्नत पराक्रम-१ उन्नत प्रणत पराक्रम-२ प्रणत उन्नत पराक्रम-३ प्रणत प्रणत पराक्रम-४ इस प्रकार से उन्नत प्रणत शीलों के साथ मन आदि ७ पदों को जोड़कर ७ चतुर्भुज के सूत्र बने हैं। अथ ऋजु और वक्र पदों के साथ ऋजु वक्र परिणत और रूप पदों को योजित करके दृष्टान्त और दार्ष्टान्तिक सम्बन्धी पहले की तरह ६ सूत्र, और चतुर्भुजवाले ७ सूत्र बिना दृष्टान्त के रचनाय गये हैं, वे इस प्रकार से हैं-ऋजु ऋजु-१ वक्र वक्र २ वक्रऋजु ३ और

प्रखुत शीलाचार, (३) प्रखुत उन्नत शीलाचार અને (४) प्रखुत प्रखुत शीलाचार
आश्मा सूत्रना आश्मा- (१) उन्नत-उन्नत व्यवहार, (२) उन्नत-
प्रखुत व्यवहार, (३) प्रखुत-उन्नत व्यवहार, અને (४) प्रखुत-प्रखुत, व्यवहार
तेश्मा सूत्रना आश्मा- (१) उन्नत-उन्नत पराक्रम, (२) उन्नत-प्रखुत
पराक्रम, (३) प्रखुत-उन्नत पराक्रम અને (४) प्रखुत-प्रखुत पराक्रम

आ प्रभावे उन्नत प्रखुत शब्दोन्नी साथे मन आदि ७ पदोंने लेखने
आश्मा आश्मा शीलावाणा साथ सूत्र जन्मा छे हवे ऋजु (सरण) અને वक्र,
आ मे पदो साथे ऋजु वक्र परिखुत અને इय (सरण) पदोने योजित
करने दृष्टान्त અને दार्ष्टान्तिक सम्बन्धी जीवा ६ सूत्रो जने छे (केतु स्वर्ग
पदोवा छे सूत्रो केतु सम्बन्ध) અને आश्मा शीला सूत्रो ७ सूत्रो बिना दृष्टा
न्तना जनावी शक्य छे (जोर्दो के मात्र पुरुषने व' निरुद्धोने जनावी शक्य
छे) ते सूत्रोना दार्ष्टान्तिक स्वर्ग आ प्रभावे जने छे—

વક્ર વક્ર ૪ । यह चतुर्भङ्गी का प्रथम सूत्र वृक्ष दृष्टान्त सम्बन्धी है । इस चतुर्भङ्गी को जब दार्ष्टान्तिक के साथ योजित करते हैं, तब यह द्वितीय सूत्र बन जाता है—२ । ऋजु ऋजु परिणत १ ऋजु वक्र परिणत २ वक्र ऋजु परिणत—३ और वक्र वक्र परिणत यह चतुर्भङ्गी का तृतीय सूत्र वृक्ष दृष्टान्त सम्बन्धी है और—जब इसी चतुर्भङ्गी को दार्ष्टान्तिक के साथ घटित करते हैं तब यह चतुर्थ सूत्र बन जाता है । ऋजु ऋजु रूप १ ऋजु वक्ररूप २ वक्र ऋजुरूप ३ वक्र वक्ररूप ४ यह वृक्ष दृष्टान्त सम्बन्धी ५ वां सूत्र है, जब इसकी योजना दार्ष्टान्तिक के साथ करते हैं—तब यह ६ छठा सूत्र बन जाता है । बिना दार्ष्टान्त के जो सात सूत्र ऋजु-वक्रपद के साथ मन-सङ्कल्प प्रज्ञा दृष्टि-शीलाचार व्यवहार और पराक्रम पदों को जोड़ कर चतुर्भङ्गीके बनते हैं वे इस प्रकारसे हैं ।
 ऋजुऋजुमन १, ऋजुवक्रमन २, वक्रऋजुमन ३ वक्रवक्रम मन ४ ।
 ७ ऋजुऋजु सङ्कल्प १ ऋजुवक्रसङ्कल्प २ वक्रऋजु सङ्कल्प ३ वक्रवक्रम सङ्कल्प ५ । ८ ।

વૃક્ષ દૃષ્ટાન્ત સંબંધી પહેલા સૂત્રના ચાર ભાગા—(૧) ઋજુ-ઋજુ, (૨) ઋજુ-વક્ર, (૩) વક્ર-ઋજુ અને (૪) વક્ર-વક્ર આ ચતુર્ભંગીને ન્યારે દાર્ષ્ટાન્તિક પુરુષ સાથે યોજિત કરવામાં આવે છે ત્યારે બીજુ સૂત્ર બની જાય છે.

વૃક્ષ દૃષ્ટાન્ત સંબંધી ત્રીજા સૂત્રના ચાર ભાગા—(૧) ઋજુ-ઋજુ પરિણત (૨) ઋજુ વક્ર પરિણત, (૩) વક્ર-ઋજુ પરિણત અને (૪) વક્ર-વક્ર પરિણત. ત્રીજા સૂત્રના ચાર ભાગાને ન્યારે દાર્ષ્ટાન્તિક પુરુષ સાથે યોજિત કરવામાં આવે છે ત્યારે ચોથુ સૂત્ર બની જાય છે.

વૃક્ષ દૃષ્ટાન્ત સંબંધી પાંચમાં સૂત્રના ચાર ભાગા—(૧) ઋજુ-ઋજુ રૂપ, (૨) ઋજુ-વક્ર રૂપ, (૩) વક્ર-ઋજુ રૂપ અને (૪) વક્ર-વક્ર રૂપ.

પાંચમાં સૂત્રના ચાર ભાગને ન્યારે દાર્ષ્ટાન્તિક પુરુષ સાથે યોજિત કરવામાં આવે છે, ત્યારે છઠું સૂત્ર બની જાય છે.

વિના દૃષ્ટાન્તના (એટલે કે માત્ર પુરુષને અનુલક્ષીને જ) ઋજુ-વક્ર પદની સાથે મન, સંકલ્પ, પ્રજ્ઞા, દૃષ્ટિ, શીલાચાર, વ્યવહાર અને પરાક્રમ, આ સાત પદોને અનુક્રમે જોડીને ચાર ચાર ભાગાવાળા સાત સૂત્ર નીચે પ્રમાણે બને છે—

સૂત્ર ૭ માંના ચાર ભાગા—(૧) ઋજુ ઋજુ મન, (૨) ઋજુ-વક્ર મન, (૩) વક્ર-ઋજુ મન, અને (૪) વક્ર-વક્ર મન, હવે આઠમાં સૂત્રના ચાર ભાગા પ્રકટ કરવામાં આવે છે—(૧) ઋજુ ઋજુ સંકલ્પ, (૨) ઋજુ વક્ર સંકલ્પ, (૩) વક્ર ઋજુ સંકલ્પ અને (૪) વક્ર વક્ર સંકલ્પ.

प्रतिमाप्रतिपन्नपुरुषस्य कल्पनीयमापादिक माह—

मूलम्—पडिमापडिवन्नस्त णं अणगारस्स कप्पति चत्तारि
भासाओ भासित्तण, त जहा—जायणी १, पुच्छणी २, अणुस
वणी ३, पुट्टस्स वागरणी ४ । चत्तारि भासाजाया पणत्ता,
तं जहा—सच्चमेग भासज्जाय १, धीय मोस २, तइय सच्च
मोस ३, चउत्थ असच्चमोस ४ ॥ सू०३ ॥

अजु अजु प्रह १, अजुवकप्रह २, वकअजुप्रह ३ और ४ वकवक
प्रह ५ । १० अजुअजुदष्टि १ अजुवकदष्टि २ वकअजुदष्टि ३ और वकवक-
दष्टि ४ । १० अजु शीलाचार—१ अजुवकशीलाचार २ वकअजु शीला
चार ३ और वक वकशीलाचार ४ । ११ अजुअजु व्यवहार १ अजुवक
व्यवहार २ वकअजु व्यवहार ३ वकवकव्यवहार ४ । १२ और अजुअजु
पराक्रम १ अजुवकपराक्रम २ । वकअजुपराक्रम ३ वकवकपराक्रम ४, १३
इस प्रकारसे ये अजुवक पदों के साथ बिना दृष्टान्त के मन आदि पदों
की योजना से ७ सूत्र बने हैं ।

पूर्व के ६, और ७ दोनों मिलकर १३ सूत्र हो जाते हैं । १३
ये, और—पूर्व के वज्रत प्रणत सम्पत्ती १३, सब मिल कर २६ छब्बीस
सूत्र बने हैं ॥ २ ॥ सूत्र समाप्तम् ॥

नवमां सूत्रना आर आत्रा—(१) अजु अजु प्रह, (२) अजु वक प्रह,
(३) वक अजु प्रह अने (४) वक वक प्रह

दसमां सूत्रना आर आत्रा—(१) अजु अजु दष्टि, (२) अजु वक दष्टि,
(३) वक अजु दष्टि अने (४) वक वक दष्टि. अत्रिबारमां सूत्रना आर आत्रा
(१) अजु अजु शीलाचार, (२) अजु वक शीलाचार, (३) वक अजु शीला
आर अने (४) वक वक शीलाचार आरमां सूत्रना आर आत्रा—(१) अजु अजु
व्यवहार, (२) अजु वक व्यवहार, (३) वक अजु व्यवहार अने (४) वक वक
व्यवहार. तेरमां सूत्रना आर आत्रा—(१) अजु अजु पराक्रम, (२) अजु वक
पराक्रम, (३) वक अजु पराक्रम अने (४) वक वक पराक्रम. आ रीते अजु
वक पदोनी साथे बिना दृष्टा तना मन आदि पदो योजवायी ७ सूत्र बने छे

आ १३ सूत्रोमां उन्नत—प्रवृत्त सजोपी आजता ६+७ जेटवे के १३
सूत्रो उभरवायी कुल २६ सूत्र अर्थ जाय छे ॥ सू २ समाप्त ॥

છાયા—પ્રતિમાપ્રતિપન્નસ્ય ચત્તુર અનાગારસ્ય કલ્પન્તે ચતસ્રો ભાષા ભાષિ-
તુમ્, તથા—યાચની ૧, પ્રચ્છની ૨, અનુજ્ઞાપની ૩, પૃષ્ઠસ્ય વ્યાકરણી ૪।
ચત્વારિ ભાષાજાતાનિ, પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—સત્યમેકં ભાષાજાતામ્ ૧, દ્વિતીયં
મૃષા ૨, તૃતીયં સત્યમૃષા ૩, ચતુર્થમસત્યમૃષા ૪। (સૂ૦ ૩)

ટીકા—“પઢિમાપઢિવન્નસ્સ” ઇત્યાદિ—પ્રતિમા=દ્વાદશવિધા ભિક્ષુ-
પ્રતિમાઃ, તાઃ પ્રતિપન્નસ્ય પ્રતિમાપ્રતિપન્નસ્ય, અનાગારસ્ય ચતસ્રઃ=ચતુઃસંખ્યાઃ,
ભાષાઃ ભાષિતું કલ્પન્તે, તથા—“યાચની”—યાચ્યતે કલ્પનીયવસ્તુ યયા-
ઇતિ યાચની ૧, “પ્રચ્છની”—પૃચ્છયતેઽનયેતિ પ્રચ્છની=માર્ગાદીનાં પ્રયોજન-
વશાત્ સૂત્રાર્થયોર્વા પ્રશ્નસાધનીભૂતા ૨, “અનુજ્ઞાપની” અનુજ્ઞાપ્યતે—બોધ્યતેઽન-

અથ સૂત્રકાર પ્રતિમાપન્ન પુરુષકે કલ્પનીય ભાષાદિક્રકા કથન કરતે હૈં।

“પઢિમા પઢિવન્નસ્સ ણં અનાગારસ્સ” ઇત્યાદિ—૩

ટીકાર્થ—પ્રતિમા પ્રતિપન્ન અનાગારકો ચે ચાર પ્રકારકી ભાષાણં બોલના
યોગ્ય હૈ, વે ચાર ભાષાણં ચે હૈં યાચની ૧ પ્રચ્છની ૨ અનુજ્ઞાપની ૩ ઓર
પૃષ્ઠ વ્યાકરણી ૪। ભાષા ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ, એક સત્યભાષા
દ્વિતીયા મૃષાભાષા ૨ તીસરી સત્યમૃષા ૩ ચૌથી અસત્યમૃષા ૪। ભિક્ષુ
પ્રતિમાણં ૧૨ કહી ગઈ હૈ, ઇન પ્રતિમાઓં કો જો પ્રતિપન્ન હૈ—પાલન
કર રહા હૈ—એસે વસ અનાગાર કો ચાર ભાષાણં બોલના કલ્પિત હૈ।
કલ્પનીય વસ્તુ જિસ ભાષા કે સહારે માંગી જા સકે વહ યાચની ભાષા
હૈ। જિસ ભાષાસે માર્ગાદિકોં કા, અથવા—પ્રયોજનવશ સૂત્ર, ઓર અર્થ
કા પૂછના હોતા હૈ વહ પ્રચ્છની ભાષા હૈ। જિસ ભાષા કે દ્વારા અનુ-

પ્રતિમાપન્ન પુરુષે (સાધુએ) કેવી ભાષા બોલવી જોઈએ તે સૂત્રકાર
પ્રકટ કરે છે—“પઢિમાપઢિવન્નસ્સ ણં અનાગારસ્સ” ઇત્યાદિ—

પ્રતિમાપ્રતિપન્ન (પ્રતિમાઓની આરાધના કરતા) અણુગારને માટે આ
ચાર ભાષાઓ બોલવા યોગ્ય કહી છે—(૧) યાચની, (૨) પ્રચ્છની, (૩) અનુ-
જ્ઞાપની અને (૪) પૃષ્ઠ વ્યાકરણી. ભાષા ચાર પ્રકારની કહી છે—સત્ય ભાષા,
(૨) મૃષા ભાષા, (૩) સત્ય મૃષા અને (૪) અસત્ય મૃષા.

ભિક્ષુ પ્રતિમા ૧૨ કહી છે. તે પ્રતિમાઓનું પાલન કરી રહ્યો હોય એવા
અણુગારને આ ચાર પ્રકારની ભાષા બોલવી કહે છે—કલ્પનીય વસ્તુ જે
ભાષાને સહારે માંગી શકાય છે, તે ભાષાને ‘યાચની ભાષા’ કહે છે. જે
ભાષાને સહારે માર્ગાદિકોની પૃચ્છા કરવામાં આવે છે, અથવા પ્રયોજનવશ
સૂત્ર અને અર્થ પૂછવામાં આવે છે, તે ભાષાને ‘પ્રચ્છની ભાષા’ કહે છે.

યેત્યનુજ્ઞાપની=વસત્યાવેરયગ્રહગ્રણરૂપા ૩, “પૃષ્ઠસ્યા વ્યાકરણી”-પૃષ્ઠાર્યો
 ધરમતિપાદની ૪ ।

“પત્ત્વારિ માપાજાતાનિ” ઇતિ-માપામાતાનિ=માપાપ્રકારાઃ, પ્રવ્રતાનિ,
 તથા-સત્ય=સતઃ-મુનયઃ, શુણઃ પદાર્થા યા, તેમ્યો દ્વિતં સત્યમ્, એક=પ્રથમ
 માપાજાતમ્, ‘અસ્ત્યાત્મે’-ત્યાદિવત્ ૧, દ્વિતીય-મૃપા=મિથ્યા, ‘નાસ્ત્યાત્મે’
 -ત્યાદિવત્ ૨, તૃતીય-સત્યમૃપા=સત્યમિથ્યાસ્વભાવમ્ ‘આત્માસત્યકર્તે’-ત્યાદિ
 વત્ ૩, ચતુર્થમ્-અસત્યમૃપા=અસત્યસ્વભાવરહિતં ‘ગ્રામ માગત’ ઇત્યાદિવત્ ૫
 ઇતિ । (સુ૦ ૩)

જ્ઞાપન ક્રિયા જાતા હૈ-વસતિ આદિ કા અયગ્રહ ગ્રહણ ક્રિયા જાતા હૈ
 એસી ઘટ માપા અનુજ્ઞાપની હૈ। પૂછી ગઈ પાતકા વસ્તર ઘેનેરૂપ જો માપા
 હૈ ઘટ પૃષ્ઠવ્યાકરણી હૈ। માપા કે જો ચાર પ્રમેદ કહે ગયે હૈ-उनका
 तात्पर्य ऐसा है सन्त मुनिजनों को, शुणों को अथवा-पदार्थों को द्दित
 करनेवाली जो मापा होती है वह सत्यमापा है। जैसे-“आत्मा है”
 ऐसा प्रतिपादन करनेवाली मापा सत्य है। विद्यमान अर्थ का वर्थापन
 निषेध करनेवाली जो मापा है वह मृपामापा है, जैसे “आत्मा नहीं
 है” ऐसा कहनेवाला वचन असत्यवचन है। जो मापा सत्य मिथ्या
 स्वभाववाली होती है वह सत्य मृपा है, जैसे आत्मा है और वह अकर्ता
 है। यहाँ आत्मा है इतने अंश में तो मापा में सत्यता है और “वह

જે ભાષા દ્વારા અનુજ્ઞાપના કરવામાં આવે છે-એટલે કે ઉદ્યાન આદિના માહિ
 કની અનુજ્ઞા લેવામાં આવે છે, તે ભાષાને ‘અનુજ્ઞાપની ભાષા’ કહે છે
 પૂછવામાં આવેલી વાતને જે ભાષા દ્વારા ઉત્તર દેવામાં આવે છે તે ભાષાને
 ‘પૃષ્ઠવ્યાકરણી ભાષા’ કહે છે

ભાષાના જે ચાર પ્રમેદો કહેવામાં આવ્યા છે, તેનો ભાવાર્થ હવે પ્રકટ
 કરવામાં આવે છે-સતોને (મુનિજનોને), શુણોને અને એવોને માટે જે
 કિતકારી ભાષા છે, તેને સત્ય ભાષા કહે છે જેમકે ‘આત્મા છે,’ આ
 પ્રકારનું પ્રતિપાદન કરનારી ભાષા સત્યભાષા ગણાય છે વિદ્યમાન અર્થનું ઉપા
 દન (નિષેધ) કરનારી જે ભાષા છે, તેને મૃપા ભાષા કહે છે જેમકે....
 “આત્મા નથી”, આ પ્રકારનું પ્રતિપાદન કરનારી ભાષાને મૃપા ભાષા કહે છે

જે ભાષા અશક્ય સત્ય દોષ અને અશક્ય અસત્ય દોષ, એવી ભાષાને
 સત્ય મૃપા ભાષા કહે છે જેમકે “આત્મા છે અને તે અર્જા છે” અર્ધી
 “આત્મા છે” આરણ કથન તો સત્ય જ છે, પણ ‘તે અર્જા છે’ આ

મૂલ્ય-ચત્તારિ વત્થા પળ્લન્તા, તં જહા-સુદ્ધે ણામં एगे
સુદ્ધે, સુદ્ધે ણામં एगे असुद्धे, असुद्धे ણામં एगे सुद्धे,
असुद्धे ણામં एगे असुद्धે ૪ ।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-सुद्धे णामं
एगे सुद्धे चउभंगो ४। एवं परिणयरूवे, वत्था सपडिवक्खा,
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-सुद्धे णामं एगे
सुद्धमणे चउभंगो ४ । एवं संकप्पे जाव परक्कमे ॥ सू० ४॥

છાયા-ચત્તારિ વદ્ધાણિ મજ્જસાનિ, તથા-શુદ્ધં નામૈકં શુદ્ધમ્ ૧, શુદ્ધં
નામૈકમશુદ્ધમ્ ૨, અશુદ્ધં નામૈકં શુદ્ધમ્ ૩, અશુદ્ધં નામૈકમશુદ્ધમ્ ૪। एवमेव
अकर्ता है ” इतने अंश में असत्यता है, क्यों कि-वह कर्ता है । जो
भाषा असत्य मृषा स्वभाववाली होती है अर्थात्-उभय स्वभाव से
रहित होती है वह भाषा असत्य मृषा है, जैसे-“ ग्रामं आगतः ” गांव
आ गया इत्यादि वचन ऐसा वचन न तो सत्य है और न असत्य,
अर्थात् व्यवहार भाषा है ॥ ३ ॥

“ चत्तारि वत्था पण्णत्ता ” इत्यादि ४

સૂત્રાર્થ-વસ્ત્ર ચાર પ્રકાર કે ગયે હૈં, જૈસે શુદ્ધ શુદ્ધ ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ ૨
અશુદ્ધ શુદ્ધ ૩ ઔર-અશુદ્ધ અશુદ્ધ । इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

કથન અસત્ય છે, કારણ કે “ આત્મા કર્તા છે, ” એ વાત જ સત્ય છે. તેથી
આ કથન અશતઃ સત્ય અને અંશત અસત્ય હોવાથી, આ પ્રકારની ભાષાને
‘ સત્ય મૃષા ભાષા ’ કહે છે. જે ભાષા અસત્ય મૃષા સ્વભાવવાળી હોય છે,
એટલે કે બંને સ્વભાવથી રહિત હોય છે, તે ભાષાને અસત્ય મૃષા કહે છે.
જેમકે “ ગ્રામ આગત ” “ ગામ આવી ગયું ” ઇત્યાદિ વચન. આ પ્રકારનાં
વચન સત્ય પણ નથી અને અસત્ય પણ નથી, કારણ કે ગામ તો જડ વસ્તુ
છે-ગામ આવતું નથી પણ આપણે ગામ પાસે જઈએ છીએ છતાં આ પ્રકારનો
ભાષા પ્રયોગ થાય છે. આ અસત્ય મૃષાને વ્યવહાર ભાષા પણ કહે છે ॥ સૂ. ૩ ॥

“ ચત્તારિ વત્થા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-વસ્ત્ર ચાર પ્રકારનાં કહ્યાં છે-(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ, (૩)
અશુદ્ધ શુદ્ધ અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ. એ જ પ્રમાણે પુરુષો પણ ચાર પ્રકારનાં

ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ મજ્જસાનિ, તથા-શુદ્ધો નામૈકઃ શુદ્ધઃ ૧, ચતુર્મજ્જી ૪। એ પરિણતરૂપ, પદ્માણિ સપ્રતિપક્ષાણિ । ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ મજ્જસાનિ, તથા-શુદ્ધો નામૈકઃ શુદ્ધમનાઃ, ચતુર્મજ્જી ૪, એ સકલ્પઃ યાવત્ પરાક્રમઃ । (મૂ० ૪)

ટીકા—અય પુરુષમેદનિરૂપણાય ત્રયોદશસૂત્રીમાહ—“ ચત્વારિ ધત્થા ”
 ઇત્યાદિ-શુદ્ધ=નિર્મલતત્ત્વાદિરવિતત્ત્વાત્ સ્ફીર્ણ પદ્યં સદેવ પુનરાગન્તુક મહામા
 વાચ્છુદમિથિ, યદ્વા-પૂર્વે શુદ્ધમાસીદધુનાઽપિ શુદ્ધમેવ, ઇતિ પ્રથમો મજ્ઞઃ ૧।

કહે ગયે હૈં, શુદ્ધ શુદ્ધ ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ ૨ અશુદ્ધ શુદ્ધ ૩ ઓર અશુદ્ધ
 અશુદ્ધ ૪ । इसी प्रकार से शुद्ध अशुद्ध पदों के साथ परिणत और रूप
 शब्द को जोड़कर बच्चों में चतुर्विधता कहनी चाहिये । इसी इष्टान्त के
 अनुसार पुरुष के भी चार प्रकार होते हैं ऐसा जानना चाहिये । इसी
 प्रकार शुद्ध और अशुद्ध पदों के साथ मन पद को जोड़कर चार भग्न
 करना चाहिये । इसी तरह से सकल रूप प्रज्ञा दृष्टि शीलाचार व्यवहार
 और पराक्रम इन पदों को भी जोड़कर चतुर्भङ्गी बनाना चाहिये ।

इस सूत्र का विस्तृत अर्थ इस प्रकार से है—

ટીકાર્થ—‘ચત્વારિ ધત્થા’ ઇત્યાદિ યહાં જો શુદ્ધ શુદ્ધ ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ ૨
 અશુદ્ધ શુદ્ધ ૩ ઓર અશુદ્ધ અશુદ્ધ ૪ એસે ચાર ભગ્ન કહે ગયે હૈં સો
 ડસકા અમિપ્રાય એસા હૈં જો ધક્ક શુદ્ધ નિર્મલ તન્તુ આદિકોં સે રચિત
 નિર્મિત હોને સે શુદ્ધ હોતા હૈં, ઓર પુનઃ આગન્તુક મલ્લ કે અભાવ સે
 મેલા હોને નહીં પાતા હૈં એસા યહ ધક્ક પ્રથમ ભગ્ન કે મીતર પરિગણિત
 હુવા હૈં । અથવા—જો ધક્ક પહેલે શુદ્ધ થા, અથ મી શુદ્ધ હૈં એસા ધક્ક

રના કલાં છે—(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ અને (૪)
 અશુદ્ધ અશુદ્ધ જે જ પ્રમાણે શુદ્ધ-અશુદ્ધ પદોની સાથે પાંચવડ અને ૩૫,
 આ બે પદોને અનુક્રમે યોજિત કરીને વચ્ચેમાં ચતુર્વિધતાનું કથન થઈ એકબે
 આ ઇષ્ટાન્ત અનુસાર પુરુષોના પણ ચાર પ્રકાર પડે છે, એમ સમજવું
 જે જ પ્રમાણે શુદ્ધ અને અશુદ્ધ પદોની સાથે મન, સકલ્પ, પ્રજ્ઞા, દૃષ્ટિ,
 શીલાચાર, વ્યવહાર અને પરાક્રમ, આ સાત પદોને યોજિત કરીને ચાર ચાર
 ભંગાનું કથન કરવું એકબે

હવે આ સૂત્રનો અર્થ વિસ્તારપૂર્વક સમજાવવામાં આવે છે—વચ્ચની
 અપેક્ષાએ જે ચાર ભંગા કલાં છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ—(૧) ‘શુદ્ધ શુદ્ધ’ જે
 વચ્ચ નિર્ભંગ તન્તુ આદિકે પડે નિર્મિત હોય છે, અને જેમાં મેલના ભાગ
 મનનો અભાવ હોય છે, જેમાં વચ્ચને શુદ્ધ શુદ્ધ નામના પડેલા ભંગામાં

“ શુદ્ધે ” इति-शुद्धं=प्राक् शुद्धं, पश्चान्मलादि सम्पर्कादशुद्धं-मलिनम्, इति द्वितीयो भङ्गः । २ ॥

“ અશુદ્ધમ્ ” इति-प्राग्मलिनम् पश्चाच्छुद्धमिति तृतीयो भङ्गः । ३ ॥

“ અશુદ્ધે ” इति-अशुद्धम्=जीर्णशटित तन्त्वादिरचितत्वात्प्राग्शुद्धं पश्चादपि मलमलिनत्वादशुद्धम् ॥ इति चतुर्थो भङ्गः ॥ ४ ॥

अथ दाष्टीन्तिरस्रत्रमाह —

“ एवामेव ” इत्यादि-एवमेव=वस्त्रवदेव, चत्वारि पुरुषजातानि, तथाहि-शुद्धः=जात्यादिना, स एव पुनः शुद्धो=निर्मलज्ञानादिगुणतया, यद्वा-जातिकाला-

પ્રથમ ભંગ મેં લિયા ગયા હૈ । જો વસ્ત્ર પહેલે શુદ્ધ થા, પશ્ચાત્ વહી વસ્ત્ર મૈલ આદિ કે સર્પર્ક સે અશુદ્ધ મલિન હો ગયા હો એસા વહ વસ્ત્ર દ્વિતીય ભંગ મેં લિયા ગયા હૈ । “ અશુદ્ધ શુદ્ધ ” હસ તૃતીય ભંગ મેં વહ વસ્ત્ર લિયા ગયા હૈ જો પહેલે મલિન હો ઓર વાદ મેં શુદ્ધ સાફ હો ગયા હો । “ અશુદ્ધ અશુદ્ધ ” હસ ચતુર્થ ભંગ મેં વહ વસ્ત્ર ગૃહીત હુવા હૈ જો જીર્ણ શીર્ણ તન્તુ આદિકોં સે વનાને કે કારણ પહેલે મી અશુદ્ધ હો, ઓર પીછે મી મૈલ આદિ સે મલિન હો ગયા હો હસ પ્રકારકી યહ ચતુર્ભંગી વસ્ત્રકી શુદ્ધતા ઓર અશુદ્ધતાકો લેકર પ્રગટ કી ગઈ હૈ ।

તો જિસ પ્રકાર સે ચતુર્ભંગી વસ્ત્રોં મેં યોજિત કી ગઈ હૈ, ઉસી પ્રકાર સે યહી ચતુર્ભંગી પુરુષ કે સાથ મી ઘટિત કી ગઈ હૈ, અર્થાત્-

મૂકી શકાય છે અથવા જે વસ્ત્ર પહેલાં શુદ્ધ હતું અને હાલમાં પણ શુદ્ધ છે, એવાં વસ્ત્રને શુદ્ધ શુદ્ધ કહે છે (૨) “ શુદ્ધ અશુદ્ધ ” જે વસ્ત્ર પહેલાં શુદ્ધ હતું, પણ પછી મેલ આદિના સંપર્કથી અશુદ્ધ થયેલું હોય છે, એવા વસ્ત્રને આ બીજા ભાંગમાં મૂકી શકાય છે. (૩) “ અશુદ્ધ શુદ્ધ ” જે વસ્ત્ર પહેલાં મલિન હોય, પણ ત્યારબાદ શુદ્ધ (નિર્મળ) થઈ ગયું હોય, એવા વસ્ત્રને આ ત્રીજા ભાંગમાં મૂકી શકાય છે (૪) “ અશુદ્ધ અશુદ્ધ ” જે વસ્ત્ર છાણું શીણું તન્તુ આદિકોમાંથી બનાવેલું હોવાને કારણે પહેલાં પણ અશુદ્ધ હોય અને ત્યારબાદ મેલ આદિના સંપર્કને લીધે અધિક અશુદ્ધ બનેલું હોય, એવા વસ્ત્રને આ ચોથા ભાંગના દ્રષ્ટાન્ત રૂપે ગણાવી શકાય છે. આ પ્રકારની આ ચતુર્ભંગી (ચાર ભાંગ) વસ્ત્રની શુદ્ધતા અને અશુદ્ધતાની અપેક્ષાએ પ્રકટ કરવામાં આવી છે

જે રીતે વસ્ત્રોની સાથે આ ચતુર્ભંગીને યોજિત કરવામાં આવી છે, એ જ પ્રમાણે પુરુષોની સાથે પણ આ ચતુર્ભંગીને યોજિત કરીને ચાર પ્રકારના પુરુષોનું હવે પ્રતિપાદન કરવામાં આવે છે—

પેસ્યા દૂપગરહિત ૧। મત્તશિષ્ટાસ્ત્રયો મદ્ધા યયમ્-શુદ્ધો નામેકોઽશુદ્ધઃ ૨, અશુદ્ધો નામેકઃ શુદ્ધ ૩ અશુદ્ધો નામેકોઽશુદ્ધઃ ૪। इति चतुर्भङ्गी ॥

“ યયમ્ ” इत्यादि-ययम्=अनेन प्रकारेण, अर्थात् यथा दृढशब्दानन्तर शुद्धपद पठित्वा चतुर्भङ्गानि दार्ष्टान्तिकसहितानि दृष्टान्तभूतवस्त्राणि कृतानि तथा शुद्धपदपूर्वपदे परिणतपदे रूपपदे च, यस्याणि चतुर्भङ्गानि सप्तविपस्याणि= दार्ष्टान्तिकसहितानि कार्याणि, तथाहि -

चत्वारि वस्त्राणि प्रक्षप्तानि, तद्यथा-शुद्ध નામેક શુદ્ધ પરિણતમ્ ૧, શુદ્ધ નામે કમશુદ્ધપરિણતમ્ ૨, અશુદ્ધ નામેક શુદ્ધપરિણતમ્ ૩, અશુદ્ધ નામેકમશુદ્ધપરિણતમ્ ૪। इति दृष्टान्तसप्तचतुर्भङ्गी ॥

પરં દાર્ષ્ટાન્તિકપુરુષપ્રાત્ત્વપ્રચતુર્ભંગી । તથાહિ —

एतमेव चत्वारि पुरुषनावानि प्रक्षप्तानि, तद्यथा-शुद्धो नामैकः शुद्धपरिणतः

પુરુષ મી ચાર પ્રકાર કે હોતે હેં શુદ્ધ શુદ્ધ ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ ૨ અશુદ્ધ શુદ્ધ ૩ અશુદ્ધ અશુદ્ધ ૪ હસ પુરુષ કી ચતુર્ભંગી મેં પ્રથમ ભગવાણે વે પુરુષ ગૃહીત હૃયે હેં જો પછલે મી જાત્યાદિ સે શુદ્ધ હોતે હેં ઓર નિર્મલ જ્ઞાનાદિ ગુણવાણે હોતે હેં । અથવા જાતિ ક્ષુલ્લ કી અપેક્ષા સે દૂષણ રહિત હોતે હેં । ૧ દ્વિતીયભગ વે પુરુષ ગૃહીત હુવે હેં જો જાત્યાદિક સે શુદ્ધ હોકર પાદ મેં કિમી નિમિત્ત સે અશુદ્ધ ઘોટી આપ્તવાણે હો જાતે હેં-૨ ત્રીય ભગ મેં વે પુરુષ લિયે ગયે હેં, જો જાત્યાદિ સે અશુદ્ધ હોકર મી નિમિત્ત મિલન પર શુદ્ધ જ્ઞાનાદિ સે સમ્પન્ન હો જાતે હેં, ૩ । ચતુર્થભગ મેં વે પુરુષ ગૃહીત હુવે હેં જો જાત્યાદિક સે અશુદ્ધ હોકર

પુરુષોના ચાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે-(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ

પહેલા જાગ્રાનું સ્પષ્ટીકરણ—જે પુરુષો બાતિ આદિની અપેક્ષાએ પહેલાં પણ શુદ્ધ હોય છે અને ત્યારબાદ નિમજ જ્ઞાનાદિ શુભો પણ જેમણે સ પત ઠવાં હોય છે, તેમને ‘શુદ્ધ શુદ્ધ’ રૂપ પહેલા જાગ્રામાં સમાવી શકાય છે. અથવા જે પુરુષો બાતિક્ષણની અપેક્ષાએ પ્રવણ રહિત હોય છે, તેમને આ પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે (૨) ‘શુદ્ધ અશુદ્ધ’ જે પુરુષો પહેલાં બાતિ આદિની અપેક્ષાએ શુદ્ધ હોય છે, પણ પાછળથી ખોટી આદતો, દુર્મુલો આદિને લીધે અશુદ્ધ થઈ બાપ છે તેમને આ બીજા પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે (૩) ‘અશુદ્ધ શુદ્ધ’ જે પુરુષો બાતિ આદિની અપેક્ષાએ અશુદ્ધ હોવા છતાં પણ નિમિત્ત મળવાથી શુદ્ધ જ્ઞાનાદિથી સપત્ત થઈ બાપ છે, તેમને આ આ ત્રીજા પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે (૪) ‘અશુદ્ધ અશુદ્ધ’ જે પુરુષો બાતિ

૧. શુદ્ધો નામૈકોઽશુદ્ધપરિણતઃ ૨, અશુદ્ધો નામૈકઃ શુદ્ધપરિણતઃ ૩, અશુદ્ધો નામૈકોઽશુદ્ધપરિણતઃ ૪॥

અથ દૃષ્ટાન્તવચ્ચમુત્રમ્—

ચત્વારિ વચ્ચાણિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથા—શુદ્ધં નામૈકં શુદ્ધરૂપમ્ ૧, શુદ્ધં નામૈક-મશુદ્ધરૂપમ્ ૨, અશુદ્ધં નામૈકં શુદ્ધરૂપમ્ ૩, અશુદ્ધ નામૈકમશુદ્ધરૂપમ્ ૪।

અથ દાષ્ટાન્તિકરૂપઘટિતપુરુષજાતમુત્રમ્—

एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञातानि तद्यथा—शुद्धो नामैकः शुद्धरूपः १, शुद्धो नामैकोऽशुद्धरूपः २, अशुद्धो नामैकः शुद्धरूपः ३, अशुद्धो नामैकोऽशुद्धरूपः ४ । इति चतुर्भङ्गो ।

एषां परिणतरूपघटितदृष्टान्त-दाष्टान्तिकमुत्राणां व्याख्या प्राग्वद् बोध्या॥

भी અશુદ્ધ હી વને રહતે હૈં જીવન કો શુદ્ધ નહીં વનાતે હૈં ૪ । શુદ્ધ શુદ્ધપરિણત આદિ જો વચ્ચ સમ્યન્ધી ચતુર્ભંગી કહી ગઈ હૈ વહ દાષ્ટાન્તિક પુરુષ મેં भी इस प्रकार से घटित करनी चाहिये । जैसे—शुद्ध शुद्धपरिणत १ शुद्ध अशुद्ध परिणत २ अशुद्ध शुद्ध परिणत ३ और अशुद्ध अशुद्ध परिणत ४ । इसी प्रकार से दृष्टान्तभूत वचन में शुद्धअशुद्ध पदके साथ रूप पदको योजित करके जो चतुर्भङ्गी बनाई गई है, वह दाष्टान्तिक पुरुषमें भी इसी प्रकार से घटित करनी चाहिये, जैसे—शुद्ध शुद्धरूप १, शुद्ध अशुद्धरूप २ अशुद्ध शुद्धरूप ३ और अशुद्ध अशुद्धरूप ४ परिणत और रूपघटित इन दृष्टान्त और दाष्टान्तिकों की चतुर्भङ्गी की व्याख्या पहले ही समझ लेना चाहिये ।

આદિની અપેક્ષાએ અશુદ્ધ હોય છે, અને જીવનને શુદ્ધ બનાવવાને પ્રયત્ન-શીલ થતા નથી, આ કારણે જેઓ કાયમ અશુદ્ધ જ રહે છે, તેમને આ ચોથા પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે.

વચ્ચને અનુલક્ષીને શુદ્ધ-અશુદ્ધ, આ પદો સાથે પરિણત પદને યોજવાથી નીચે પ્રમાણે ચાર ભાગો બને છે—(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ પરિણત, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ પરિણત, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ પરિણત અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ પરિણત.

દાષ્ટાન્તિક પુરુષને અનુલક્ષીને પણ ચાર ભાગોમાં ગ્રહણ કરવા ભોધ્યો. એ જ પ્રમાણે દૃષ્ટાન્તભૂત વચ્ચમાં શુદ્ધ અશુદ્ધ પદની સાથે રૂપ પદને યોજીને જે ચાર ભાગો કથન કરવામાં આવ્યું છે, તે ચાર ભાગો કથન દાષ્ટાન્તિક પુરુષને અનુલક્ષીને પણ થવું ભોધ્યો જેમકે (૧) શુદ્ધ શુદ્ધ રૂપ, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ રૂપ, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ રૂપ અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ રૂપ.

પરિણત અને રૂપઘટિત આ દૃષ્ટાન્ત અને દાષ્ટાન્તિકોની ચતુર્ભંગીની વ્યાખ્યા સૂત્ર જેમાં આપ્યા અનુસાર જ સમજી લેવી.

ત્યં મજ્જકરણાય રીતિં દર્શયિતુમાહ—“વચ્ચારિ” ઇત્યાદિ । શુદ્ધઃ=ચરિસ્તાદ્
પષનાદિના, શુદ્ધમનાઃ પુનરન્તઃ શુદ્ધઃ ૧, શુદ્ધો નામૈકોઽશુદ્ધમનાઃ ૨, અશુદ્ધો
નામૈક શુદ્ધમનાઃ ૩, અશુદ્ધો નામૈકોઽશુદ્ધમના ૪ । ઇતિ ।

“એવં” ઇતિ—અમેન પ્રકારણેત્યર્થઃ, અર્થાદ્ યથા મનોવટિત ચતુર્મજ્જક-
ધૂમધૂક્તે, તથા, “સકલ્પઃ” ઇત્યાદિ—સંકલ્પપદાદારમ્ય પરાક્રમપદપર્યન્ત
દૃષ્ટાન્તમૂતવસ્તુમં વિશાય પુરુષનાત્મસૂત્રાણિ પદ્મ ષોઘ્યાનિ ॥ તથાહિ—

ચત્તારિ પુરુષજ્ઞાતાનિ, મજ્જસાનિ, તથા—શુદ્ધો નામૈક શુદ્ધસકલ્પઃ ૧,
શુદ્ધો નામૈકોઽશુદ્ધસકલ્પઃ ૨, અશુદ્ધો નામૈકઃ શુદ્ધસકલ્પઃ ૩, અશુદ્ધો નામૈકોઽ
શુદ્ધસકલ્પઃ ૪ । ઇતિ ॥

અમ્મ મગ કરનેકો રીતિકો વિશ્વાને કે નિમિત્ત સુવ્વકાર કહતે
હું—“વચ્ચારિ” ઇત્યાદિ “શુદ્ધ શુદ્ધમના” જો વ્યક્તિ બાહર મેં વચન
આદિ સે શુદ્ધ હો ઓર અન્તરરૂમેં મીં શુદ્ધ હો વહ—“શુદ્ધશુદ્ધ મનવાલા”
હસ પ્રથમ મજ્જ મેં પરિણત કિયા ગયા હે ૧ આગે કે ત્રીન મજ્જ—“શુદ્ધ
અશુદ્ધમના” ૨ અશુદ્ધશુદ્ધમનાઃ ૩ ઓર અશુદ્ધ અશુદ્ધમના ૪ હસ પ્રકાર
સે હે । જિસ પ્રકાર સે યહ મનોવટિત ચતુર્મજ્જવાલા સૂત્ર ફહા ગયા હે
છસી પ્રકાર સે—“સકલ્પ” પદ્મ સે છેકર “પરાક્રમ” તક કે પુરુષ
જાત સૂત્ર મીં દૃષ્ટાન્તમૂત વસ્તુ સૂત્રકો ઊઠકર ફહ લેના આદિયે, જૈસે
—પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હે । શુદ્ધશુદ્ધ સકલ્પવાલા ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ સકલ્પ

હવે મન, આદિ પરક્રમ પર્વન્તના સાત પદોને શુદ્ધ અશુદ્ધ પદો સાથે
યોજિત કરીને જે સાત ચતુર્ભંજીએ બને છે, તેનું સૂત્રકાર રખતીકરણ કરે છે

શુદ્ધ અશુદ્ધ પદો સાથે મનને યોજિત કરવાથી ત્રીજે પ્રમાણે ચાર ભાગ
બને છે—(૧) ‘શુદ્ધા શુદ્ધ મના’ જે પુરુષ બહારથી વચન આદિની અપેક્ષાએ
શુદ્ધ હોય, અને જેનું અતઃકરણ પણ શુદ્ધ હોય તેને ‘શુદ્ધ શુદ્ધ મનવાળો’
કહે છે જોય પુરુષને આ પહેલા પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે

બીજો ભાગ—શુદ્ધ અશુદ્ધ મનવાળા (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ મનવાળા અને
(૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ મનવાળા જેવી રીતે શુદ્ધ અશુદ્ધ પદોને મન સાથે
યોજિત કરીને ચાર ભાગવાળું આ સૂત્ર કહેવ.માં આવ્યું છે જે ૪ પ્રમાણે
સકલ્પથી લઈને પરાક્રમ સુધીના ઉપરબુદ્ધિ પદોને પણ શુદ્ધ અશુદ્ધ પદો સાથે
યોજિતે ચાર અર ભાગવાળા બીજા છે સૂત્રો પણ પુરુષ બનને અનુવશીને
કહેવા જોઈએ દૃષ્ટાન્તમૂત વસ્તુમાં મન આદિ સાતે વસ્તુનો અભાવ હોવાથી
તેને અનુવશીને અહીં સૂત્રો બની શકતા નથી જોય સમજવું

एवं शुद्धो नामैकः शुद्धप्रज्ञः १, शुद्धो नामैकोऽशुद्धप्रज्ञः २, अशुद्धो नामैकः शुद्धप्रज्ञः ३, अशुद्धो नामैकोऽशुद्धप्रज्ञः ४ इति ।

एव शुद्धो नामैकः शुद्धदृष्टिः १, शुद्धो नामैकोऽशुद्धदृष्टिः २, अशुद्धो नामैकः शुद्धदृष्टिः ३, अशुद्धो नामैकोऽशुद्धदृष्टिः ४ । इति ॥

एवं शुद्धो नामैकः शुद्धशीलाऽऽचारः १, शुद्धो नामैकोऽशुद्धशीलाऽऽचारः २, अशुद्धो नामैकः शुद्धशीलाऽऽचारः ३, अशुद्धो ना कोऽशुद्धशीलाऽऽचारः ४ इति ॥

एवं शुद्धो नामैकः शुद्धव्यवहारः १, शुद्धो नामैकोऽशुद्ध व्यवहारः २, अशुद्धો नामैकः शुद्धव्यवहार ३, अशुद्धो नामैकोऽशुद्धव्यवहारः ४ । इति ।

વાલા ૨ અશુદ્ધશુદ્ધ સદ્ગુણવાલા ૩ ઓર અશુદ્ધ અશુદ્ધ સદ્ગુણવાલા ૪
હસી પ્રકાર સે શુદ્ધ શુદ્ધ પ્રજ્ઞાવાલા ૧, શુદ્ધ અશુદ્ધપ્રજ્ઞાવાલા ૨
અશુદ્ધ શુદ્ધ પ્રજ્ઞાવાલા ૩ ઓર અશુદ્ધ શુદ્ધ પ્રજ્ઞાવાલા ૪ શુદ્ધ-
શુદ્ધ દ્રષ્ટિવાલા ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ દ્રષ્ટિવાલા ૨ અશુદ્ધ અશુદ્ધ દ્રષ્ટિવાલા ૩
ઓર અશુદ્ધ અશુદ્ધદ્રષ્ટિવાલા ૪ । શુદ્ધ શુદ્ધશીલાચારવાલા ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ
શીલાચારવાલા ૨ અશુદ્ધ શુદ્ધ શીલાચારવાલા ૩ ઓર અશુદ્ધ અશુદ્ધ
શીલાચારવાલા ૩ શુદ્ધ શુદ્ધ વ્યવહારવાલા ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ વ્યવહારવાલા
૨ અશુદ્ધ શુદ્ધ વ્યવહારવાલા ૩ અશુદ્ધઅશુદ્ધ વ્યવહારવાલા ૪ હસી પ્રકાર
સે શુદ્ધ શુદ્ધ પરાક્રમવાલા ૧ શુદ્ધ અશુદ્ધ પરાક્રમવાલા ૨ અશુદ્ધ શુદ્ધ

સંકલ્પ સાથે શુદ્ધ અશુદ્ધ પદને યોજવાથી નીચે પ્રમાણે પુરુષગત
વિષયક ચાર ભાગવાળું સૂત્ર બનશે-(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ સંકલ્પવાળા, (૨) શુદ્ધ
અશુદ્ધ સંકલ્પવાળા, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ સંકલ્પવાળા અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ
સંકલ્પવાળા. પ્રજ્ઞા પદને યોજવાથી આ ચાર ભાગા બને છે-(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ
પ્રજ્ઞાવાળા, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ પ્રજ્ઞાવાળા, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ પ્રજ્ઞાવાળા અને
(૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ પ્રજ્ઞાવાળા દ્રષ્ટિ પદને યોજવાથી આ ચાર ભાગા બને
છે-(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ દ્રષ્ટિવાળો, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ દ્રષ્ટિવાળો, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ
દ્રષ્ટિવાળો અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ દ્રષ્ટિવાળો શીલાચાર પદ યોજવાથી આ
ચાર ભાગા બને છે-(૧) શુદ્ધ શુદ્ધ શીલાચારવાળો, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ શીલા
ચારવાળો, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ શીલાચારવાળો અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ શીલા-
ચારવાળો વ્યવહાર પદ યોજવાથી આ પ્રમાણે ચાર ભાગા બને છે-(૧) શુદ્ધ
શુદ્ધ વ્યવહારવાળો, (૨) શુદ્ધ અશુદ્ધ વ્યવહારવાળો, (૩) અશુદ્ધ શુદ્ધ વ્યવ-
હારવાળો અને (૪) અશુદ્ધ અશુદ્ધ વ્યવહારવાળો. પરાક્રમ પદની સાથે આ

एवं शुद्धो नामैकः शुद्धपराक्रमः १, शुद्धो नामैकोऽशुद्धपराक्रमः २, अशुद्धो नामैकः शुद्धपराक्रमः ३ अशुद्धो नामैकोऽशुद्धपराक्रमः ४ ।

एषु मन्त्रेषु मनस आरभ्य पराक्रमान्तपुरुषधर्माणां वस्त्रेऽमावाद् दृष्टान्तमूढ वस्त्रधर्माणां न घटते । अत-एव-“एव ” मिति यावत् ॥ सू० ४ ॥

पुरुषमेदाधिकार ण्वेदमाह—

मूलम्—चत्वारि सुया पणत्ता, त जहा-अइजाए अणु जाए अवजाए कुर्लिगाले १ । चत्वारि पुरिसजाया पणत्ता, त जहा-सच्चे नाम एगे सच्चे १, सच्चे नाम एगे असच्चे चउ भगो ४ । २ ॥ एव परिणए जाव परक्कमे ११ ॥ चत्वारि वस्था पणत्ता, त जहा-सुई नाम एगे सुइ, सुई नाम एगे असुई चउभगो ४ । १२ ॥ एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पणत्ता-त जहा सुई नाम एगे सुइ चउभगो । एव जहेव सुद्धेणं वस्थेणं भणियं तहेव सुइणावि, जाव परक्कमे २६ । चत्वारि कोरवा पणत्ता, त जहा अवपलव कोरए १, तालपलवकोरए २, वल्लिपलवकोरए ३, मेंढविसाणकोरए ४ । २७ ॥ एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पणत्ता, त जहा अवपलवकोरवसमाणे १, तालपलवकोरवसमाणे २, वल्लिपलवकोरवसमाणे ३, मेंढविसाणपलवकोरवसमाणे ४ । २८ ॥ सू० ५ ॥

पराक्रमयाला ३ अशुद्ध अशुद्ध पराक्रमयाला ४ इम गनसे लेकर पराक्रम सकके पुग्ग अशुद्धी में जो वस्त्र दृष्टान्त को लागू नहीं किया गया है उसका कारण ऐसा है कि-यन्त्र में इस पुरुषधर्मों का अभाव है । इसी लिये-“एव ” ऐसा कहा गया है ॥ सू० ४ ॥

प्रभाषे आर आजा जने से-(१) शुद्ध शुद्ध पराक्रमयाले । (२) शुद्ध अशुद्ध पराक्रमयाले, (३) अशुद्ध शुद्ध पराक्रमयाले अने (४) अशुद्ध अशुद्ध पराक्रमयाले आ मनधी लधने पराक्रम पणत्ताली अशुद्धी पुरे । जतने ज लाजु पाटी शक्य है वन्ने लाजु प नी नहीं करव है वन्ने आ पुरे धर्मेना अभाव होय है जे / पाल सुत्रारे “एव ” इत्यादि कथन द्वारा स्पष्ट करी है ॥ सू० ४ ॥

છાયા-ચત્વારઃ સુતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-અતિજાતઃ (અતિયાતઃ) ૧, અનુજાતઃ (અનુયાતઃ) અપજાતઃ ૨, કુલાદ્વારઃ ૪ । ૧ । ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા-સત્યો નામૈકઃ સત્ય ૧, સત્યો નામૈકોઽસત્યઃ ૨, ચતુર્ભજી ૨ । એવં પરિણતો યાવત્ પરાક્રમઃ ॥ ૧૧ ॥ ચત્વારિ વસ્ત્રાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા-શુચિ નામૈકં શુચિ ૧, શુચિ નામૈકમશુચિ ૨, ચતુર્ભજી ૪ । ૧૨ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા-શુચિર્નામૈકઃ શુચિઃ ચતુર્ભજી ૪ । ૧૩ । એવં યથૈવ શુદ્ધેન વસ્ત્રેણ ભણિતં તથૈવ શુચિનાઽપિ યાવત્ પરાક્રમઃ ॥ ૨૬ ॥ ચત્વારઃ કોરકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-આમ્રપ્રલમ્બકોરકઃ ૧, તાલપ્રલમ્બકોરકઃ ૨, વલ્લીપ્રલમ્બકોરકઃ ૩ મેઢવિપાણકોરકઃ ૪ । ૨૭ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા-આમ્રપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ ૧, તાલપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ ૨, વલ્લીપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ ૩, મેઢવિપાણપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ । ૪ ॥ ૨૮ ॥

પુરુષ ભેદાધિકારમેં હી સૂત્રકારને યહ કહા હૈ ।

“ ચત્તારિ સુયા પળગત્તા ” હત્યાદિ ૫

સૂત્રાર્થ-પુત્ર ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, જૈસે-અભિજાત ૧ (અતિયાત) અનુયાત ૨ (અનુયાત) અપજાત ૩ ઓર કુલાદ્વાર ૪ ચાર પુરુષજાત કહે ગહે ગયે હૈ, જૈસે-સત્યસત્ય ૧ સત્ય અસત્ય ૨ અસત્ય સત્ય ૩ અસત્ય અસત્ય ૪ । વસ્ત્ર ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, જૈસે-શુચિ શુચિ ૧ શુચિ અશુચિ ૨ અશુચિ શુચિ ૩ ઓર અશુચિ અશુચિ ૪ ।

હસી પ્રકારસે પુરુષ ભી ચાર કહે ગયે હૈ, જૈસે-શુચિ શુચિ આદિ । જૈસે શુદ્ધ વસ્ત્રસે કહા ગયા હૈ । ડસી પ્રકાર સે શુચિ સે ભી કહ લેના ઑહિયે, ઓર પરાક્રમ તક કહના ઑહિયે ।

માત્ર પુરુષોના પ્રકારો બતાવવા નિમિત્તે જ આ પાંચમું સૂત્ર કહે છે—

“ ચત્તારિ સુયા પળગત્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-પુત્રના ચાર પ્રકારો કહ્યા છે—(૧) અભિજાત અથવા અતિયાત (૨) અનુજાત, (૩) અપજાત અને (૪) કુલાદ્વાર. પુરુષોના ચાર પ્રકારના કહ્યા છે (૧) સત્ય સત્ય, (૨) સત્ય અસત્ય, (૩) અસત્ય સત્ય અને (૪) અસત્ય અસત્ય વસ્ત્ર ચાર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) શુચિ શુચિ, (૨) શુચિ અશુચિ, (૩) અશુચિ શુચિ અને (૪) અશુચિ અશુચિ એ જ પ્રમાણે પુરુષોના પાંચ ‘શુચિ શુચિ’ આદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે જે રીતે શુદ્ધ વસ્ત્રનું કથન પહેલાના સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન ‘શુચિ-અશુચિ’ની અપેક્ષાએ થવું જોઈએ પુરુષ જાતમાં શુચિ અશુચિ સાથે મનથી લઇને પરાક્રમ પર્યાન્તના સાત પદોને યોજીને ચાર ભાગાવાળા સાત સૂત્રનું કથન થવું જોઈએ

एवं शुद्धो नामैकः शुद्धपराक्रमः १, शुद्धो नामैकोऽशुद्धपराक्रमः २, अशुद्धो नामैकः शुद्धपराक्रमः ३ अशुद्धो नामैकोऽशुद्धपराक्रमः ४ ।

एषु मङ्गेषु मनस आरभ्य पराक्रमान्तपुरुषपर्याणां वस्त्रेऽभावाद् दृष्टान्तभूत वस्त्रमूषमद्वा न घटते । अत-एव-“ एष ” मिति मोक्षम् ॥ सू० ४ ॥

पुरुषमेदाधिकार ण्वेदमाह—

मूलम्—चत्वारि सुया पण्णत्ता, त जहा—अइजाए अणु जाए अवजाए कुलिंगाले १ । चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—सच्चे नाम एगे सच्चे १, सच्चे नाम एगे असच्चे चउ भगो ४ । २ ॥ एव परिणए जाव परक्कमे ११ ॥ चत्वारि वत्था पण्णत्ता, त जहा—सुई नाम एगे सुइ, सुई नाम एगे असुई चउभगो ४ । १२ ॥ एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता—त जहा सुई नाम एगे सुइ चउभगो । एव जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणियं तहेव सुइणावि, जाव परक्कमे २६ । चत्वारि कोरवा पण्णत्ता, त जहा—अवपलव कोरए १, तालपलवकोरए २, वल्लिपलवकोरए ३, मेढविसाणकोरए ४ । २७ ॥ एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा अवपलवकोरवसमाणे १, तालपलवकोरवसमाणे २, वल्लिपलवकोरवसमाणे ३, मेढविसाणपलवकोरवसमाणे ४ । २८ ॥ सू० ५ ॥

पराक्रमवाला ३ अशुद्ध अशुद्ध पराक्रमवाला ४ इन तानसे लेकर पराक्रम तकके पुरुष चतुर्भङ्गी में जो वस्त्र इष्टान्त को लागू नहीं किया गया है उसका कारण ऐसा है कि—वस्त्र में इस पुरुषधर्मों का अभाव है । इसी लिये—“ एष ” ऐसा कहा गया है ॥ सू० ४ ॥

अभावे आर काजा जने छे—(१) शुद्ध शुद्ध पराक्रमवाणे । (२) शुद्ध अशुद्ध पराक्रमवाणे । (३) अशुद्ध शुद्ध पराक्रमवाणे । जने (४) अशुद्ध अशुद्ध पराक्रमवाणे । आ भनधी छधने पराक्रम पय-त्तनी अतुम जी पुरुष जतने व लाशु पाद्री शोध छे वरने लाशु पदती नथी काशु के वरभा आ पुरुष धर्मोना अभाव छे । जे व वात सूत्रअरे “ एवं ” धियादि कथन द्वारा स्पष्ट करी छे ॥ सू० ४ ॥

હાયા-ચત્વારઃ સુતાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-અતિજાતઃ (અતિયાતઃ) ૧, અનુજાતઃ (અનુયાતઃ) અપજાતઃ ૨, કુલાદ્વારઃ ૪ । ૧ । ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-સત્યો નામૈકઃ સત્યઃ ૧, સત્યો નામૈકોઽસત્યઃ ૨, ચતુર્ભક્તી ૨ । એવ પરિણતો યાવત્ પરાક્રમઃ ॥ ૧૧ ॥ ચત્વારિ વસ્ત્રાણિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-શુચિ નામૈકં શુચિ ૧, શુચિ નામૈકમશુચિ ૨, ચતુર્ભક્તી ૪ । ૧૨ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-શુચિર્નામૈકઃ શુચિઃ ચતુર્ભક્તી ૪ । ૧૩ । એવં યથૈવ શુદ્ધેન વસ્ત્રેણ ભણિતં તથૈવ શુચિનાઽપિ યાવત્ પરાક્રમઃ ॥ ૨૬ ॥ ચત્વારઃ કોરકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-આમ્રપ્રલમ્બકોરકઃ ૧, તાલપ્રલમ્બકોરકઃ ૨, વલ્લીપ્રલમ્બકોરકઃ ૩ મેઢવિપાણકોરકઃ ૪ । ૨૭ । એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-આમ્રપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ ૧, તાલપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ ૨, વલ્લીપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ ૩, મેઢવિપાણપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ । ૪ ॥ ૨૮ ॥

પુરુષ ભેદાધિકારમેં હી સૂત્રકારને યહ કહા હૈ ।

“ ચત્વારિ સુયા પળગત્તા ” ઇત્યાદિ ૫

સૂત્રાર્થ-પુત્ર ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, જૈસે-અભિજાત ૧ (અતિયાત) અનુયાત ૨ (અનુયાત) અપજાત ૩ ઓર કુલાદ્વાર ૪ ચાર પુરુષજાત કહે ગહે ગયે હૈ, જૈસે-સત્યસત્ય ૧ સત્ય અસત્ય ૨ અસત્ય સત્ય ૩ અસત્ય અસત્ય ૪ । વસ્ત્ર ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, જૈસે-શુચિ શુચિ ૧ શુચિ અશુચિ ૨ અશુચિ શુચિ ૩ ઓર અશુચિ અશુચિ ૪ ।

હસી પ્રકારસે પુરુષ ભી ચાર કહે ગયે હૈ, જૈસે-શુચિ શુચિ આદિ । જૈસે શુદ્ધ વસ્ત્રસે કહા ગયા હૈ । ડસી પ્રકાર સે શુચિ સે ભી કહ લેના યાહિયે, ઓર પરાક્રમ તરુ કહના યાહિયે ।

માત્ર પુરુષોના પ્રકારો બતાવવા નિમિત્તે જ આ પાંચમું સૂત્ર કહે છે—

“ ચત્વારિ સુયા પળગત્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-પુત્રના ચાર પ્રકારો કહ્યા છે—(૧) અભિજાત અથવા અતિયાત (૨) અનુજાત, (૩) અપજાત અને (૪) કુલાંગાર પુરુષોના ચાર પ્રકારના કહ્યા છે (૧) સત્ય સત્ય, (૨) સત્ય અસત્ય, (૩) અસત્ય સત્ય અને (૪) અસત્ય અસત્ય વસ્ત્રના ચાર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) શુચિ શુચિ, (૨) શુચિ અશુચિ, (૩) અશુચિ શુચિ અને (૪) અશુચિ અશુચિ. એ જ પ્રમાણે પુરુષોના પાંચ ‘શુચિ શુચિ’ આદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે. જે રીતે શુદ્ધ વસ્ત્રનું કથન પહેલાના સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન ‘શુચિ-અશુચિ’ની અપેક્ષાએ થવું જોઈએ પુરુષ જાતમાં શુચિ અશુચિ સાર્થે મનથી લખને પરાક્રમ પર્યાન્તના સાત પદોને ચોળને ચાર ભાગવાળા સાત સૂત્રનું કથન થવું જોઈએ.

टीका—“ चचारि सुया ’ इत्यादि—चत्वार = चतु सख्यकोः, सुया = पुमां,
महता, तद्यथा—अतिजा (या) त—अति—पितृसम्पदमतिक्रम्य जातः—स ह्यतोऽ-
ति जातः, यद्वा—पितृसम्पदमूलकं यथा माप्ता विशिष्टतरसम्पदमित्यवित्यातो
ऽविशेषितसमृद्धिक इत्यर्थः १, अपमवत् १ ।

अनुभा (या) त—अनु=पितुरनुकूपस्तुन्यो जातोऽनुभात, यद्वा—अनुयात’
अनुगतः=पितृविभूत्याऽनुयात इति, पितृरूप इत्यर्थः, महायशोवत्, आदित्यप-
शसा स्वपित्रा सदसत्त्वान्महायशस २ ।

अपजात—अप—पितृसम्पदोऽपसदो हीना जातोऽपजातः विमपेक्षया किञ्चि
दीनगुण इत्यर्थः, आदित्यपशोवत्, मरतापेक्षया तस्येपदीनगुणत्वात् ३ ।

कुलाङ्गार—अङ्गारपदमङ्गारसदृशपरम्, तत्र कुसरूप=वशस्याङ्गार इव कुलाङ्गार
दुरावरणेन कुलरूपकत्वात् परिपीडकत्वाद्वा कुलाङ्गारायमाणः कण्ठीकवत् । ४ ।

कोरक चार कहे गये हैं, जैसे—आम्र प्रलम्ब कोरक ताल प्रलम्ब
कोरक २ यल्ली प्रलम्ब कोरक ३ मेण्ड विपाणप्रलम्ब कोरक समान ४।
इस सूत्र का भावार्थ इस प्रकार से है—पुत्र जो चार प्रकार के कहे
गये हैं उनमें प्रथम प्रकार का पुत्र वह है जो पिता की संपत्ति से भी
अधिक संपत्तिवाला हो जाता है, जैसे भगवान् श्यमदेव १ द्वितीय प्रकार
का पुत्र वह है जो कि पिता का ही अनुरूप होता है अथवा पिता के
जैसी विभूति सम्पत्तिवाला होता है जैसे महायश ये अपने पिता
आदित्यपश के समान ये २ तृतीय प्रकार का पुत्र वह है जो पिता की
अपेक्षा सम्पत्ति में हीन होता है अर्थात् पिता की अपेक्षा गुणों में कुछ
कम होता है जैसे—आदित्यपश ये भरत की अपेक्षा गुणों में हीन
ये ३ चतुर्थ प्रकार का वह पुत्र है जो अपने दुराचारों से कुल का नृपक

कैरक चार कहे हैं—(१) आम्रप्रलम्ब कैरक, (२) यल्लीप्रलम्ब कैरक,
वहलीप्रलम्ब कैरक अने मेण्ड विपाण प्रलम्ब कैरक.

इसे आ सूत्रों के नामों प्रकट करवाया जाने है—(१) अधिकत
(अथवा अतिजात) पुत्र तेने कहे छे के के पिता करतां पक्ष पक्षारे स प
त्तिवालो देव छे के के कमवान कपकदेव. (२) अनुवत् पुत्र तेने कहे छे के
के पिता कोटवी के विभूति (संपत्ति) वालो देव छे के के महायश. ते
तेना पिता आदित्यपश कोटवी के विभूतिवालो देव. अपजात पुत्र = अप
जात पुत्र तेने कहे छे के के पिता करतां न्यून संपत्तिवालो देव अथवा पिता
करतां गुणों में हीन देव के के आदित्यपश ते तेना पिता भरत करतां गुणों में
अपेक्षा के हीन देव. (४) कुलाङ्गार पुत्र तेने कहे छे के के पिता अन्यायवादी

एवं शिष्योऽपि चतुर्विधो बोध्यः, सुतशब्दस्य शिष्यपरताया अपि प्रदर्शनात् । तत्रातिजातः—सिंहगिर्यपेक्षया वज्रस्वामिवत् । अनुजातः—शय्यम्भवपेक्षया यशो-भद्रवत्, अपजातो—जम्बूस्वाम्यपेक्षया प्रभवस्वामिवत्, कुलाद्धारः—कुलवालुकवद् अथवोदायिनृपमारकवदिति । १ ।

હો જાતો હૈ પર કો પીડા દેનેવાલા હોતા હૈ, જૈસે-કળ્ડરીક । યહાં અઙ્ગારવદ અંગાર સદૃશ કા બોધક હૈ । જિસ તરહ પુત્રોં મેં ચતુર્વિધતા પ્રગટ કી ગઈ હૈ ઉસી પ્રકાર શિષ્ય મેં ભી ચતુર્વિધતા હોતી હૈ સુત શબ્દ શિષ્ય અર્થ કા ભી બોધક હોતા હૈ । જો શિષ્ય અપને ગુરુ કી અપેક્ષા અધિક પ્રભાવશાલી હો જાતા હૈ વહ અનિજાત શિષ્ય હૈ, જૈસે સિંહ-ગિરી કી અપેક્ષા વજ્ર સ્વામી । જો શિષ્ય અપને ગુરુ કે જૈસા હી ગુણી હોતા હૈ વહ શિષ્ય અનુજાત શિષ્ય હૈ, જૈસે શય્યંભવ કા યશોભદ્ર । જો શિષ્યગુરુ કે ગુણોં સે હીન ગુણવાલા હોતા હૈ વહ અપજાત શિષ્ય હૈ, જૈસે જમ્બૂસ્વામી કી અપેક્ષા પ્રભવસ્વામી । જો શિષ્ય ગુરુ કા દૂષક હોતા હૈ વહ કુલાંગાર શિષ્ય હૈ, જૈસે કુલવાલુક અથવા ઉદાયન રાજા કો મારનેવાલા ?

“ चत्तारि पुरिसजाया ”

सत्य सत्य आदि के भेद से चार पुरुषजात जो कहे गये हैं उनका

કુળને કલક લગાડે છે, પરને પીડાકારી હોય છે. જેમકે કંડરીક અહીં “ અગાર ” પદ “ અંગાર સમાનનું ” બોધક છે.

અહીં જે પ્રકારે પુત્રમા ચતુર્વિધતા પ્રકટ કરવામાં આવી છે, એ જ પ્રકારે શિષ્યોમાં પણ ચતુર્વિધતા સમજવી, કારણ કે ‘ સુત ’ શબ્દ શિષ્યના અર્થનો પણ બોધક છે. (૧) જે શિષ્ય પોતાના ગુરુ કરતાં પણ અધિક પ્રભાવ-શાળી હોય છે તેને અતિભત શિષ્ય કહે છે. જેમકે સિંહાગિરિ કરતાં વજ્ર-સ્વામી વધારે પ્રભાવશાળી હતા. (૨) જે શિષ્ય પોતાના ગુરુ સમાન ગુણી હોય છે તેને અનુભત શિષ્ય કહે છે. જેમકે શય્યંભવનો શિષ્ય પ્રભવસ્વામી.

(૩) જે શિષ્ય ગુરુ કરતાં હીન ગુણોવાળો હોય છે તેને અપભત શિષ્ય કહે છે, જેમકે જમ્બૂસ્વામી કરતાં પ્રભવસ્વામી હીન ગુણોવાળો હતા (૪) જે શિષ્ય ગુરુનો દૂષક હોય છે તેને કુલાંગાર શિષ્ય કહે છે. જેમકે કુલવાલુક અથવા ઉદાયન રાજાને મારનારો

“ चत्तारि पुरिसजाया ” ध्यादि—

પુરુષોના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પણ કહ્યા છે—(૧) “ સત્ય સત્ય ”

ટીકા—“ ચત્તારિ સુયા ” इत्यादि—चत्वार = चतु सस्यकोः, सुताः=पुत्राः, प्रभृताः, सद्यया—भविजा (या)तः—भति—पितृसम्पदमतिक्रम्य जातः—सदृष्टोऽति जात , यद्वा—पितृसम्पदमुल्लङ्घ्य यातः प्राप्ता विशिष्टतरसम्पदमित्यतिपातोऽतिशयितसमृद्धिक इत्यर्थः १, अपमवत् १ ।

अनुजा (या)त*—अनु=पितरनुरूपस्तुल्यो जातोऽनुजातः, यद्वा—अनुयात* अनुगतः=पितृविभूत्याऽनुयात इति, पितृतुल्य इत्यर्थ , महायश्चोक्त , आदिस्थपक्षस्य स्वपित्रा सदृशत्वान्महायक्षसः २ ।

अपमात —अप—पितृसम्पदोऽपसदो हीनो जातोऽपमातः पित्रपेक्षया किञ्चिद्दीनगुण इत्यर्थ , आदिस्थपक्षोक्त , भरतापेक्षया तस्यपद्मीनगुणत्वात् ३ ।

कुलाङ्गारः—अङ्गारपदमङ्गारसदृશપરમ્, તેન કુલસ્ય=વંશસ્યાઙ્ગાર इष कुलाङ्गारः दुराचरणेन कुलदूषकत्वात् परिपीडकत्वाद्वा कुलाङ्गारापमाणः, कण्ठरीकवत् । ४ ।

કોરક ચાર કહે ગયે હૈં, જેસે—આત્ર પ્રલમ્બ કોરક તાલ પ્રલમ્બ કોરક ૨ યસ્તી પ્રલમ્બ કોરક ૩ મેળદ ચિપાળપ્રલમ્બ કોરક સમાન ૪।

इस सूत्र का भाषार्थ इस प्रकार से है—पुत्र जो चार प्रकार के कहे गये हैं उनमें प्रथम प्रकार का पुत्र वह है जो पिता की संपत्ति से भी अधिक संपत्तियाला हो जाता है, जैसे भगवान् अथर्वभदेव १ द्वितीय प्रकार का पुत्र वह है जो कि पिता का ही अनुरूप होता है अथवा पिता के जैसी विभूति सम्पत्तियाला होता है जैसे महायश ये अपने पिता आदिस्थपक्ष के समान थे २ तृतीय प्रकार का पुत्र वह है जो पिता की अपेक्षा सम्पत्ति में हीन होता है अर्थात् पिता की अपेक्षा गुणों में कुछ कम होता है जैसे—आदिस्थपक्ष ये भरत की अपेक्षा गुणों में हीन थे ३ अतुल्य प्रकार का वह पुत्र है जो अपने दुराचारों से कुल का दूषक

કોરક ચાર કહ્યા છે—(૧) આત્રપ્રલમ્બ કોરક (૨) યાસ્ત્રપ્રલમ્બ કોરક, ૫૬૬ીપ્રલમ્બ કોરક અને ૩૬ ચિપાળા પ્રલમ્બ કોરક

હવે આ સૂત્રના ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—(૧) અભિજાત (અથવા અતિયાત) પુત્ર તેને કહે છે કે જે પિતા કરતાં વધુ વધારે સંપત્તિવાળો હોય છે જેમકે ભગવાન અર્ષભદેવ. (૨) અનુજાત પુત્ર તેને કહે છે કે જે પિતાના જેટલી જ વિભૂતિ (સંપત્તિ) વાળો હોય છે જેમકે મહાયશ. તે તેના પિતા આદિસ્થપક્ષના જેટલી જ વિભૂતિવાળો હતો. “અપમાત પુત્ર” અપમાત પુત્ર તેને કહે છે કે જે પિતા કરતાં ન્યૂન સંપત્તિવાળો હોય અથવા પિતા કરતાં ગુણોમાં હીન હોય જેમકે આદિસ્થ પક્ષ તે તેના પિતા ભરત કરતાં ગુણોની અપેક્ષાએ હીન હોય. (૪) કુલાંગાર પુત્ર તેને કહે છે કે જે પિતાના અનાચારથી

एवं शिष्योऽपि चतुर्विधो बोध्यः, सुतशब्दस्य शिष्यपरताया अपि प्रदर्शनात् । तत्रातिजातः-सिंहगिर्यपेक्षया वज्रस्वामिवत् । अनुजातः-शय्यम्भवापेक्षया यशो-भद्रवत्, अपजातो-जम्बूस्वाम्यपेक्षया प्रभवस्वामिवत्, कुलाङ्गारः-कुलवालुकवद् अथवोदायिनृपमारकवदिति । १ ।

हो जातो है पर को पीडा देनेवाला होता है, जैसे-कण्ठरीक । यहां अङ्गारपद अंगार सदृश का बोधक है । जिस तरह पुत्रों में चतुर्विधता प्रगट की गई है उसी प्रकार शिष्य में भी चतुर्विधता होती है सुत शब्द शिष्य अर्थ का भी बोधक होता है । जो शिष्य अपने गुरु की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हो जाता है वह अनिजात शिष्य है, जैसे सिंह-गिरी की अपेक्षा वज्र स्वामी । जो शिष्य अपने गुरु के जैसा ही गुणी होता है वह शिष्य अनुजात शिष्य है, जैसे शय्यम्भव का यशोभद्र । जो शिष्यगुरु के गुणों से हीन गुणवाला होता है वह अपजात शिष्य है, जैसे जम्बूस्वामी की अपेक्षा प्रभवस्वामी । जो शिष्य गुरु का दूषक होता है वह कुलाङ्गार शिष्य है, जैसे कुलवालुक अथवा उदायन राजा को मारनेवाला ?

“ चत्तारि पुरिसजाया ”

सत्य सत्य आदि के भेद से चार पुरुषजात जो कहे गये हैं उनका कुणने कलंक लगाडे છે, પરને પીડાકારી હોય છે. જેમકે કંઠરીક અહીં “ અંગાર ” પદ “ અંગાર સમાનનું ” બોધક છે.

અહીં જે પ્રકારે પુત્રમાં ચતુર્વિધતા પ્રકટ કરવામાં આવી છે, એ જ પ્રકારે શિષ્યોમાં પણ ચતુર્વિધતા સમજવી, કારણ કે ‘ સુત ’ શબ્દ શિષ્યના અર્થનો પણ બોધક છે. (૧) જે શિષ્ય પોતાના ગુરુ કરતાં પણ અધિક પ્રભાવ-શાળી હોય છે તેને અતિજાત શિષ્ય કહે છે. જેમકે સિંહાગિરિ કરતાં વજ્ર-સ્વામી વધારે પ્રભાવશાળી હતા. (૨) જે શિષ્ય પોતાના ગુરુ સમાન ગુણી હોય છે તેને અનુજાત શિષ્ય કહે છે. જેમકે શય્યમ્ભવનો શિષ્ય પ્રભવસ્વામી.

(૩) જે શિષ્ય ગુરુ કરતાં હીન ગુણોવાળો હોય છે તેને અપજાત શિષ્ય કહે છે, જેમકે જમ્બૂસ્વામી કરતાં પ્રભવસ્વામી હીન ગુણોવાળો હતા. (૪) જે શિષ્ય ગુરુનો દૂષક હોય છે તેને કુલાંગાર શિષ્ય કહે છે. જેમકે કુલવાલુક અથવા ઉદાયન રાજાને મારનારો.

“ ચત્તારિ પુરિસજાયા ” ઇત્યાદિ—

પુરુષોના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પણ કહ્યા છે—(૧) “ સત્ય સત્ય ”

“વષારિ પુરિસજાયા” રૂપાદિ-વષારિ પુરુષજાતાનિ પ્રવ્રણાનિ, ઇયથા સત્ય =યથાવસ્થિતવસ્તુપરિકલ્પનાત્ પ્રતિજ્ઞાતાનુસારેણ કર્તૃત્વાન્ સત્ય પુરુષ, સ યથા પુનઃ સત્યો =સદ્વ્યથો દિતઃ =સયમધારિત્વેન જગન્મિપ્રથૂત, યદ્વા-પૂર્વ સત્ય આસીત્ પદ્માદિપિ સત્ય પદ્મેતિ । ૧ ।

‘સત્યો નામૈકોઽસત્ય’ ” રૂપિ-પૂર્વ સત્યઃ પદ્માત્કાલક્રમેણાસત્યોઽયથાવ વસ્તુપરિકલ્પનાત્ પ્રતિજ્ઞાતમુદ્ધરુષ્ય પ્રવર્તનાથ ૨ । શેષો મજ્ઞૌ યથા — અસત્યો નામૈકઃ સત્યઃ ૩, અસત્યો નામૈકોઽસત્યઃ ૪ । રૂપિ ચતુર્મજ્ઞી ।

અભિપ્રાય એસા છે, જો પુરુષ યથાવસ્થિત વસ્તુ કા કલ્પન કરનેવાલા હોતા છે યથા પ્રતિજ્ઞાત કે અનુસાર કરનેવાલા હોતા છે, ત્થ સત્ય પુરુષ કહા ગયા છે, એસા ત્થ પુરુષ આગે ચલકર સયમ કો ધારણ કરકે જગત કા મિત્ર (મૃત) બન જાતા છે તો ત્થ સત્ય સત્ય રૂપ પ્રથમ ભગ મેં પરિ ગણિત હોતા છે । અથવા જો પહેલે ત્થ સત્ય હો ઓર પાદ મેં ત્થ બના રહતા હો, ત્થ સત્ય સત્ય છે । સત્ય અસત્ય ત્થ છે જો પહેલે સત્ય હો ઓર પાદ મેં કાલક્રમ સે યથા વસ્તુ કે પરિકલ્પન સે યા પ્રતિજ્ઞાત અર્થ કા વસ્તુલંચન કરને સે અસત્યરૂપ બના ગયા હો મિથ્યામાયી હો ગયા હો । યહાં ચોપ કો ભગ રૂપ પ્રકાર સે છે-અસત્ય સત્ય, ઓર અસત્ય અસત્ય ।

જે પુરુષ યથાવસ્થિત (જેવું હોય એવું જ) વસ્તુનું કલ્પન કરનાર હોય છે અને પ્રતિજ્ઞા અનુસાર જ કરનાર હોય છે, એવા તે પુરુષને સત્ય પુરુષ કહે છે એવા તે પુરુષ અત્રગ જતાં સયમ ધારણ કરીને જગતના મિત્રરૂપ બની જાય છે એવા પુરુષને ‘સત્ય સત્ય’ નામના પહેલા પ્રકારના પુરુષેર્થ ગણવી શકાય છે અથવા જે પહેલા પશુ સત્યનો આશયક હોય અને પાછા જમી પશુ સત્યનો આશયક જ બાહ્ય રહે છે, તેને ‘સત્ય સત્ય’ રૂપ પહેલા પ્રકારમાં ગણવી શકાય છે (૨) સત્ય અસત્ય જે પુરુષ પહેલા સત્યનો પાછક હોય, પશુ પાછજમી અથવા વસ્તુના પરિચય દ્વારા અથવા પ્રતિજ્ઞાત અથવા ઉદ્દેશ્ય કરવાને કારણે અસત્ય રૂપ બની ગયો હોય તેને સત્ય અસત્ય પુરુષ કહે છે બાહીના બે ભાગો આ પ્રમાણે છે (૩) અસત્ય સત્ય અને (૪) અસત્ય અસત્ય. આ બંનેનો કાવાય ઉપરના બે ભાગોના કાવાયને આધાર સમજાવેલો.

“ એવ ” મિત્યાદિ—એવમ્-અનેન પ્રકારેણ, અર્થાદ્ યથા સત્યાસત્ય ઘટિત ચતુર્ભંગી કૃતા તથા, “ પરિણતઃ ” પરિણતપદાદારમ્બ્ય પરાક્રમપદપર્યન્તં યોજયિત્વા તત્તચ્ચતુર્ભંગી કાર્યા । ૧૧ ।

અથ દૃષ્ટાન્તભૂતવસ્ત્રસૂત્રમ્—

“ ચત્તારિ વત્થા ” ઇત્યાદિ—ચત્તારિ વસ્ત્રાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્વથા—“શુચિ

જિસ પ્રકાર સે સત્યાસત્ય પદ ઘટિત યહ ચતુર્ભંગી બની હૈ ઉસી પ્રકાર સે હન પદ કે સાથ પરિણત આદિ પદોં કો ઘટિત કરકે પરાક્રમ પદ તક ૪-૪ ચતુર્ભંગી બનાના ચાહિયે ।

“ ચત્તારિવત્થા ” ઇત્યાદિ હસ સૂત્ર દ્વારા જો શુચિ શુચિ-શુચિ અશુચિ-અશુચિશુચિ ઓર અશુચિ અશુચિ વસ્ત્ર કે યે ચાર ભંગ કહે ગયે હૈં, હસી પ્રકાર સે પુરુષ કે બી ચાર પ્રકાર રૂપ ભંગ કહે ગયે હૈં શુચિ શુચિ ૧ શુચિ અશુચિ ૨ અશુચિ શુચિ ૩ ઓર અશુચિ અશુચિ હસી પ્રકાર સે હન શુચિ અશુચિ કે સાથ પરિણત-રૂપ મન સંકલ્પ પ્રજ્ઞા દૃષ્ટિ શીલાચાર વ્યવહાર ઓર પરાક્રમ પદોં કો જોડકર ૪-૪ ચતુર્ભંગી બના લેની ચાહિયે । જો વસ્ત્ર સ્વભાવ સે પવિત્ર હો ઓર આગે બી વહ સંસ્કાર સે અથવા કાલભેદ સે પવિત્ર બના રહા હૈ, જૈસા કિ શુદ્ધ વસ્ત્ર કે પ્રકરણ મેં પ્રગટ કર દિયા ગયા હૈં તો ઈસા વહ વસ્ત્ર

જે પ્રકારે સત્યાસત્ય પદઘટિત આ ચતુર્ભંગી કહેવામાં આવી છે, એ જ પ્રકારે આ પદોની સાથે પરિણત આદિ પરાક્રમ પર્યન્તના પૂર્વોક્ત પદોને યોજિત કરીને ચાર ચાર ભાંગાવાળા સૂત્રોનું કથન થવું જોઈએ

“ ચત્તારિ વત્થા ” ઇત્યાદિ—

આ સૂત્ર દ્વારા વસ્ત્રના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહેવામાં આવ્યા છે. (૧) શુચિ શુચિ, (૨) શુચિ અશુચિ, (૩) અશુચિ શુચિ અને (૪) અશુચિ અશુચિ. એ જ પ્રમાણે પુરુષના પણ નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે— (૧) શુચિ શુચિ, (૨) શુચિ અશુચિ, (૩) અશુચિ શુચિ અને (૪) અશુચિ અશુચિ. એ જ પ્રમાણે શુચિ અશુચિ પદની સાથે પરિણત, રૂપ, મન, સંકલ્પ, પ્રજ્ઞા, દૃષ્ટિ, શીલાચાર, વ્યવહાર અને પરાક્રમ આ પદોને જોડીને ચાર ચાર ભાંગાવાળા સૂત્રોનું કથન થવું જોઈએ જે વસ્ત્ર સ્વભાવથી પવિત્ર હોય અને આગળ જતાં પણ સંસ્કારની અપેક્ષાએ અથવા કાળભેદની અપેક્ષાએ પવિત્રજ રહે છે, એવા વસ્ત્રને શુચિ શુચિ રૂપ પહેલા પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે. શુદ્ધ વસ્ત્રના પ્રકરણમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું કથન શુચિવસ્ત્ર વિષે

નામૈક શુચિ ” ૧ । શુચિ=સ્વભાવેન પવિત્ર, સદેષ પુનઃ શુચિ=સસ્કારેણ કાસ મદેન વા શુચિ ૧, શુચિ=સ્વામાયિકશુદ્ધિમત્, પુનઃ કાલમદેન અશુચિ=અપવિત્રમ્ ૨, એવમ્-અશુચિ નામૈકં શુચિ ૩, અશુચિ નામૈકમશુચિ ૪ ।

इति चतुर्मेढ्री ।

अथ वाप्टौन्तिकपुरुषजातसूत्रम्—

“एवमेवे”—त्यादि—एवमेव=दृष्टा तद्भूतस्त्वपदेवेत्यर्थ, चत्वारि पुरुष जातानि प्रकृतानि, तत्रया—शुचिः=स्वभावेन पवित्र, पुरुषः, स एव पुनः शुचिः=सदाचारपालकतया पवित्रः १, शुचिर्नामैकोऽशुचिः २, अशुचिर्नामैकः शुचिः ३, अशुचिर्नामैकोऽशुचिः ४ । इति चतुर्मेढ्री ॥ ११ ॥

શુચિ શુચિ કહા ગયા હે । સ્વભાવતઃ શુદ્ધ દુષ્ટા બી જો આગે ચલ્લકર અપવિત્ર હો ગયા હો વહ શુચિ અશુચિ અઘવાળા વચ્ચ કહા ગયા હે । હસી પ્રકાર જો વચ્ચ અશુચિ હોકર શુચિ ધન જાતા હે ઓર જો અશુચિ ધના દુષ્ટા અશુચિ હી ધના રહતા હે વહ વચ્ચ સુમીય ઓર ચતુર્થ ભગ ઘાલા હે । જિસ પ્રકાર સે વહ શુચિ અશુચિ સમ્પન્ની ચતુર્મેઘી વચ્ચ મેં યોજિત કર પ્રગટ કી ગઈ હે, ઘસી પ્રકાર સે વહી ચતુર્ભંગી પુરુષ મેં બી યોજિત કર છેના જાહિયે, ઓર વહ હમ પ્રકાર સે હે—જો મનુષ્ય સ્વભાવતઃ પવિત્ર હો ઓર આગે બી સદાચાર કા પાલન કરને સે પવિત્ર ધના રહતા હે તો વહ “શુચિ શુચિ” હસ પ્રથમ ભંગ કા અન્તર્ગત હે—અન્તર્મૂલ કિયા ગયા હે । પ્રથમતઃ પવિત્ર ધનકર બી આગે જો વહ નિમિત્ત ઘણાત્ અસદાચાર પાલન સે અપવિત્ર ધન જાતા હે તો

પણ પ્રકરણ ૩૨વું ભેદબે. જે વચ્ચ સ્વભાવતઃ શુદ્ધ દોષા છતાં પાછળથી અપવિત્ર થઈ અપ છે, એવા વચ્ચને શુચિ અશુચિ રૂપ બીજા પ્રકારમાં અજાતી શકાય છે. જે વચ્ચ અશુચિ (અપવિત્ર) દોષા છતાં પાછળથી શુચિ બની અપ છે તેને અશુચિ શુચિ રૂપ ત્રીજા પ્રકારમાં જાણી શકાય છે અને જે વચ્ચ અશુચિ અવસ્થામાં જ કાલમ વાણ રહે છે તેને અશુચિ અશુચિ રૂપ ચોથા પ્રકારમાં મૂંઝી શકાય છે. વચ્ચને જનુલક્ષીને શુચિ અશુચિની અપેક્ષાએ જે ચાર ભાંજાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે એવાં જ ચાર ભાંજાનું કથન પુરુષના વિષયમાં પણ શુદ્ધ ભેદબે—મનુષ્ય વિષયક ચાર ભાંજા આ પ્રમાણે બનશે—(૧) જે મનુષ્ય સ્વભાવતઃ પવિત્ર દોષ અને સદાચારનું પાલન કરવાને લીધે પવિત્ર જ રહે છે, તેને ‘શુચિ શુચિ’ રૂપ પડેલા ભાગમાં મૂંઝી શકાય છે. (૨) જે પુરુષ પડેલાં પવિત્ર દોષ, પણ અનિષ્ઠમાં કોઈ કારણને લીધે અસદાચારી બની અપ છે એવા પુરુષને ‘શુચિ અશુચિ’ રૂપ બીજા

“ एवं जहेवे ”-त्यादि-एवम्=अनेन प्रकारेण, अर्थाद् यथा शुच्यशुचिघटिता सदाष्टान्तिकदृष्टान्तवस्त्रचतुर्भङ्गी कृता तथा शुचिपूर्वपदकपरिणत-रूप-मनः-संकल्प-प्रज्ञा-दृष्टि-शीलाऽऽचार-व्यवहार-पराक्रमघटिता नत्तच्चतुर्भङ्गी कार्या । तत्र परिणत-रूपघटिततत्तच्चतुर्भङ्गीद्वयं दृष्टान्तदाष्टान्तिकसहितं कर्तव्यम् मन-आदि पराक्रमान्तसप्तकघटितं तु दृष्टान्तवर्जितमेव चतुर्भङ्गीसप्तकं करणीयम्

ऐसा वह मनुष्य द्वितीयभंग में परिगणित हुवा है इसी तरह स्वभावतः अपवित्र व्यक्ति आगे चलकर सदाचार आदि के पालन से पवित्र बन जाता है तो वह तृतीयभंग में गिना गया है, और जो अशुचि का अशुचि ही बना रहता है तो वह चतुर्थभंग में परिणत हुवा है ।

“ एवं जहेव इत्यादि-जिस पद्धति से यह शुचि अशुचि सम्बन्धी दृष्टान्त दाष्टान्तिक सहित प्रगट की गई है, उसी प्रकार से शुचि अशुचि पदों के साथ परिणत, रूप, मन, सङ्कल्प आदि पूर्वोक्त पदों को जोड़कर ४-४ चतुर्भंगी बना लेना चाहिये । इनमें शुचि अ चि पदों के साथ परिणत और रूपपद घटितकर जो चतुर्भङ्गी बनाई जावे-उसमें वस्त्र का दृष्टान्त देकर दाष्टान्तिक के साथ भी वे चतुर्भङ्गी घटित कर लेना चाहिये क्योंकि इन चतुर्भंगों की दोनों में समानता मिल जाती है परन्तु-मन सङ्कल्प प्रज्ञा दृष्टि शीलाचार व्यवहार और पराक्रम इन

પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે. (૩) જે પુરુષ પહેલાં અસદાચારના પાલનને લીધે અપવિત્ર હોય, પણ પાછળથી સદાચાર આદિના પાલનને કારણે પવિત્ર બની ગયો હોય, તેને “ અશુચિ શુચિ ” રૂપ ત્રીજા પ્રકારમાં સમાવી શકાય છે. (૪) જે પુરુષ પહેલાં પણ અસદાચારના પાલનને લીધે અપવિત્ર હોય અને પછી પણ એવો જ અપવિત્ર રહે છે તેને “ અશુચિ અશુચિ ” રૂપ ચોથા પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે

“ एवं जहेव ” इत्यादि-ये पद्धतिથી આ શુચિ અશુચિ દૃષ્ટાન્તરૂપ વૃક્ષ અને દાષ્ટાન્તિક પુરુષની અપેક્ષાએ પ્રકટ કરવામાં આવી છે, એ જ પ્રમાણે શુચિ-અશુચિ પદોની સાથે પરિણત રૂપ, મન, સંકલ્પ આદિ પૂર્વોક્ત પદોને જોડીને ચાર ચાર ભાંગાનું પ્રત્યેકમાં કયન યથુ જોઈએ શુચિ અશુચિ પદોની સાથે ‘ પરિણત ’ અને ‘ રૂપ ’ પદને યોગ્યવાર્થી દૃષ્ટાન્તભૂત વસ્ત્રની અપેક્ષાએ જે ચતુર્ભંગી બનશે અને દાષ્ટાન્તિક પુરુષની અપેક્ષાએ પણ જે ચતુર્ભંગી

મેઘવિષાણપ્રલમ્બકોરકઃ=મેઘશૃંગતુલ્યફલા વનસ્પતિજાતિઃ, તસ્યાઃ પ્રલમ્બ
કોરકઃ મેઘવિષાણા ફલકલિકેત્યર્થ. ૪ ॥ ૨૭ ॥

અથ દાષ્ટાન્તિકપુરુષજાતસૂત્રમ્—

“એનામેદે”-ત્યાદિ-એવમેદ=દષ્ટાન્તભૂતકોરકવદેવેત્યર્થઃ, ચતારિ પુરુષ-
જાતાનિ પ્રસ્તાનિ, તથા-આન્નપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ આન્નપ્રલમ્બકોરકેણ સમાનઃ
=સદૃશઃ, યથાઽઽન્નપ્રલમ્બકોરકઃ સેવ્યમાનઃ સન્નુચિત્તસમયે સમુચિતં સ્વાદુફલં
દદાતિ તથા પુરુષોઽપિ પરિચર્યદાણઉચિતકાલે સમુચિતમુપકારફલં જનયતીતિ
સ પુરુષ આન્નપ્રલમ્બકોરકસમાનો ગીયતે । ૧ ॥

તાલપ્રલમ્બકોરકસમાનઃ-યથા તાલપ્રલમ્બકોરકઃ રવં ચિરં સેવમાનસ્ય પુરુ-

ષ્ઠા અર્થ હે વલ્ગોકલિકા તથા મેઘવિષાણપ્રલમ્બકોરક શબ્દ કા
અર્થ હે મેઘવિષાણાફલકલિકા, । મેઘશૃંગતુલ્ય ફલવાલી વનસ્પતિ
હૈ હસ્યે પ્રલમ્બ કા ફલ કાં જો કોરક હોતા હૈ વહ્ યહાં મેઘવૃષાણ
પ્રલમ્બકોરક સે લિયા ગયા હૈ ।

અવ હન ચાર પ્રકાર કે કોરકોં કા સાધર્મ્ય દાષ્ટાન્તિકભૂત
પુરુષોં સે ઘટિત સૂત્રકાર ને હસ પ્રકાર સે કિયાહૈ-સેવાં કિયા ગયા
જો પુરુષ ઉચિત સમય મેં સમુચિત ઉપકારફલ કો દેતા હૈ વહ
પુરુષ આન્ન ફલ કે કોરક કે સમાન હૈ, જૈસે - આન્ન ફલ
કા કોરક સેવિત રક્ષિત કિયે જાને પર ઉચિત સમય મેં સમુચિત સ્વા-
દુવાલે ફલ કો દેતા હૈ ? જો પુરુષ ચિરકાલ તક સેવિત હોને પર ખી
કષ્ટ સે પુષ્કલ ઉપકાર કે ફલ કો દેતા હૈ વહ પુરુષ તાલપ્રલમ્બ કોરક

અને મેઠ વિષાણુ પ્રલમ્બ કોરક શબ્દનો અર્થ ‘મેઠ વિષાણુ ફલ કલિકા’
થાય છે. ઘેટાના શિંગડાના આકારના ફલવાળી એક વનસ્પતિ થાય છે (કદાચ
ખીજડા માટે આ શબ્દ વપરાતો હોય), તેના પ્રલમ્બનો (ફલનો) ને શેરક
(શિંગ) હોય છે તેને અહીં મેઘવૃષાણુ પ્રલમ્બ કોરક પદ દ્વારા બ્રહ્મ કરવામાં
આવેલ છે. આ ચાર પ્રકારના કોરકો અને દાષ્ટાન્તિક પુરુષો વચ્ચે શી સમા-
નતા છે તે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—

(૧) જેમ આન્નફલ કોરકનું રક્ષણ કરવામાં આવે તો ઉચિત સમયે
સમુચિત સ્વાદવાળા ફળ આવે છે, તેમ કેટલાક પુરુષો એવા હોય છે કે
તેમની સેવા કરવામાં આવે તો ઉચિત સમયે સમુચિત ઉપકાર રૂપ ફલનું
પ્રદાન કરે છે, એવા પુરુષોને પહેલા પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે. (૨) તાલ
પ્રલમ્બ કોરકની દીર્ઘકાળ પર્યાન્ત રક્ષા કરવામાં આવે, તો મહાસુશ્કેલીએ ફલની
પ્રાપ્તિ થાય છે, એ જ પ્રમાણે કેટલાક પુરુષો દીર્ઘકાળ પર્યાન્ત સેવિત થયા

પસ્ય કપ્ટેન મહસ્ત્ત્વ દદાતિ, તથા પુરુષોઽપિ ચિરકાલસેવનાત્ કપ્ટેન પુષ્કલ
 સ્વપ્રકારફલં સમ્પાદયતીતિ સ પુરુષસ્તજુર્યોઽમિધીયતે । ૨૥ ॥

ચલ્લીમલમ્બકોરકસમાનઃ—લતાફલકલિકાતુલ્ય , યથા ચલ્લીમલમ્બકોરકો
 વિનાઽપિ વલ્લેશ સ્ત્રી ફલ પ્રયચ્છતિ, તથા યઃ પુરુષોઽવલ્લેશેન સ્ત્રીપ્રમુખપ્રકારફલં
 દદાતિ સ તથામૂત ઉદીર્યતે । ૩ ॥

મેષ્ઠવિપાણામલમ્બકોરકસમાનઃ—મેષ્ઠવિપાણાફલકલિકાતુલ્ય , યથા
 મેષ્ઠવિપાણામલમ્બકોરકો જનેન સેવ્યમાનોઽપિ દ્વિતર્ક ફલ ન દદાતિ, અત્યાય
 ફલદાયકત્વાત્, તથા યઃ પુરુષઃ પરિવર્યમાણોઽપિ મૃદુવચનાપેત્ર વક્ત્રિ ન વ
 કમ્બનોપકારફલં કરોતીતિ સ તત્સદૃશ ઉચ્યતે । ૪ । ૨૮ । (સૂ ૫)

કે સમાન છે જૈસે તાલમલમ્બકોરક ચિરકાલ તક અપની રક્ષા કરને
 ઘાલે કો કપ્ટ સે મહાફલ દેતા છે । જો અવલેશ સે વિના કિસી વલ્લેશ
 કા હી સ્ત્રીપ્ર ઉપકાર કે ફલ કો દેતા છે વહ પુરુષ—ચલ્લી મલમ્બકોરક
 સમાન છે, જૈસે ચલ્લી મલમ્બ કોરક વિના કિસીવલ્લેશ કા સ્ત્રીપ્ર હી
 ફલ દેતા છે । તથા જો પુરુષ સેવિત ક્રુયા મી અપને સેવક જન કે લિપે
 દ્વિતર્ક ફલ નહીં દેતા છે કેવલ મીઠીર વાતેં હી બનાતા છે, મીઠા મીઠા
 વચન હી પોલતા છે ઉપકાર કા કુછ મી ફલ પ્રદાન નહીં કરતા છે
 યેસા વહ પુરુષ મેષ્ઠવિપાણામલમ્બકોરક કા સમાન છે જૈસે મેષ્ઠવિ
 પાણામલમ્બકોરક જન કે દ્વારા રક્ષિત હોતા ક્રુયા મી દ્વિતર્ક ફલ નહીં
 દેતા છે ક્યોં કિ—ઉસકા વહ ફલ વિના સ્વાદ કા હોતા છે । ૪ । ૨૮ સૂ ૫ ॥

આઠ મહામુરદેલીએ ઉપકારનું ફલ દેનારા હોય છે તેમને બીજા પ્રકારમાં મૂકી
 શકાય છે (૩) ને પુરુષ વિના મુરદેલી જગદીમાં જગદી ઉપકારને બહોલ
 વાળી આપે છે, તેને વલ્લી પ્રત્યક્ષ દેશક સમાન ગણાય છે કારણ કે વલ્લી-
 પ્રત્યક્ષ દેશક થોડા સમય સુધી સેવિત થવા છતાં પણ સીમગ્રામી ફલપ્રદાન
 કરે છે (૪) ને પુરુષની સેવા કરવા છતાં પણ સેવા કરનાર પુરુષને કોઈ
 લાભ થતો નથી, માત્ર મીઠા મીઠા વચન જ સંભળાવ્યા કરે છે, એવા પુરુષને
 મેન વિપાણા પ્રત્યક્ષ દેશક સમાન કહ્યો છે મેનવિપાણ પ્રત્યક્ષ દેશકની રક્ષા
 કરવા છતાં પણ વચનને દ્વિતર્ક રાજની પ્રાપ્તિ થતી નથી, કારણ કે તેનાં ફળ
 સ્વાદરહિત હોય છે આ પ્રમાણે ઉપકારને બહોલ ન વાળી આપનારને આ
 મોઢા પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે । ૪ । ૨૮ ॥ સૂ ૫ ॥

पुरुषाधिकार एव घुणदृष्टान्त दाढ्यान्तिक सूत्रमाह —

मूलम्—चत्वारि घुणा पणत्ता, तं जहा-तयक्खाए १, छल्लि-
क्खाए २, कट्ठक्खाए ३, सारक्खाए ४ । एवामेव चत्वारि
भिक्षागा पणत्ता, तं जहा तयक्खायसमाणे जाव सारक्खा-
यसमाणे । तयक्खायसमाणस्स णं भिक्षागस्स सारक्खायस-
माणे तवे पणत्ते, छल्लिक्खायसमाणस्स णं भिक्षागस्स
कट्ठक्खायसमाणे तवे पणत्ते, कट्ठक्खायसमाणस्स णं भिक्षा-
गस्स छल्लिक्खायसमाणे तवे पणत्ते ॥ सू० ६ ॥

छाया—चत्वारो घुणाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—त्वक्खादः १, छल्लीखादः २,
काष्ठखादः ३, सारखादः ४। एवमेव चत्वारो भिक्षाकाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—त्वक्खाद-
समानः १, यावत् सारखादसमानः ४। त्वक्खादसमानस्य खलु भिक्षाकस्य
सारखादसमानं तपः प्रज्ञप्तम्, सारखादसमानस्य खलु भिक्षाकस्य त्वक्खादस-
मानं तपः प्रज्ञप्तम्, छल्लीखादसमानस्य खलु भिक्षाकस्य काष्ठखादसमानं तपः
प्रज्ञप्तम्, काष्ठखादसमानस्य खलु भिक्षाकस्य छल्लीखादसमानं तपः प्रज्ञप्तम् (सू० ६)

अब सूत्रकार इस पुरुषाधिकार में ही घुण दृष्टान्त दाढ्यान्तिक सूत्र
कहते हैं—“चत्वारि घुणा पणत्ता” इत्यादि ।

सुत्रार्थ—घुण चार प्रकार के कहे गये हैं, जैसे—त्वक्खाद १
छल्लीखाद २ काष्ठखाद ३ और सारखाद ४ इसी तरह से चार
भिक्षाक कहे गये हैं, जैसे त्वक्खादसमान यावत् सारखाद समान
४ त्वक्खाद समानभिक्षाक का सारखादसमान तप कहा गया
है सारखाद समान भिक्षाकका त्वक्खाद समान तप कहा
है छल्लीखादसमान भिक्षाक का काष्ठखाद समान तप कहा गया है
और काष्ठखादसमान भिक्षाक का छल्लीखाद समान तप कहा गया है

इसे सूत्रकार घुषु (डीडा) ना दृष्टान्त द्वारा चार प्रकारना पुरुषोनुं
निर्दिष्ट करे छे—“चत्वारि घुणा पणत्ता” इत्यादि—

सुत्रार्थ—घुषु ओटले डीडा. घुषु चार प्रकारना कहा छे—जेभके (१) त्वक् भाद,
(२) छल्ली भाद, (३) काष्ठ भाद अने (४) सार भाद. जेभ प्रमाणे चार
प्रकारना भिक्षाक (भिक्षुक) कहा छे—(१) त्वक् भाद समान, (२) छल्ली भाद
समान, (३) काष्ठ भाद समान अने (४) सार भाद समान.

त्वक्भाद समान भिक्षुकनुं तप सारभाद समान कहुं छे. सारभाद समान

ત્રીકા—‘ ચાર યુગ ’ इत्यादि-उत्तरा = तत् सख्या , ध्रुवाः = ताष्ट
 वेधका दीर्घा इषा , प्रज्ञा तथथा-तत्सखाद-तत्स खादतीति तत्सखारी
 वासच्छब्दीभक्त १, छद्मीन्वा - छद्मीं स्वातीनि छद्मीन्वादः = भाष्यन्तरच्छब्दी
 वादः २, काष्ठवाद् = गणित ३ मारवाद् = बाष्पमयभागखादनी यज्ञसु
 खयुग इत्यर्थ ४ ।

अथ तावदातिशयमिच्छाकृष्णमाह—

“ एवामय ” इत्यादि-उत्तरा = युगवदपत्यर्थः , चरमारो मित्ताका - मिद्ध
 णशीका - मिथुना इत्यर्थ , प्रज्ञा , तथथा-तत्सखादसमान - ‘ ज्ञात ’ इति

इम સૂત્ર કા તાત્પર્યાથ પેના છે કાષ્ટયેધકા ફીટકા નામ યુગ હૈ યે યુગ
 ને ચાર પ્રકાર ક રહ ગય છે ઉમકા અમિપ્રાય પેસા હૈ-કિ જો યુગ
 બાહર ફી છલ્લી વા મક્ષણ કરતા હૈ વહ સ્વક્રમાદ યુગ હૈ ૧ જો યુગ
 માંતર ફી છલ્લી વો ગ્યામા હૈ વા છલ્લીઆદ યુગ હૈ ૨ જો યુગ દેવલ
 વાષ્ટ વા વ્યાગા હૈ વા કાષ્ટઆદ યુગ હૈ ૩ ઓર જો કાષ્ટ ક માર ભાગ
 વો ગ્યાગા હૈ વદ મારઆદ યુગ હૈ ૪ । કાષ્ટ કા જો મયમોગ દાતા હૈ
 દસકા નામ નાર હૈ । મારઆદ કા દુસરા નામ વજ્રહુલ યુગ હૈ અવ
 યુગ કે યે વાર લાઈલિતર મિક્ષાક નૂત્ર ક સપ્થ ઘટિન વારને કે લિપે
 સૂત્રકાર “ એવામય ” इत्यादि સૂત્ર કહતે હૈ-इससे प एसा प्रगट करते
 हैं-कि जैसे य युग ४ प्रकार पतलाये गये ए एसे ही वार प्रकार मिक्षाक

જિહ્વકતુ ત્વજ્ઞ ૪ । ન તપ ક્ષુ છે, છઠ્ઠી ખાદ સમાન જિહ્વકતુ કાષ
 ખાદ સમાન તપ ક્ષુ છે અને કાષખાદ સમાન જિહ્વકતુ છઠ્ઠી ખાદ
 સમાન તપ ક્ષુ છે આ સૂત્રના વાવાચ નીચે પ્રમાણે છે—

કાષ્ટરથક ક્રી ન યુગ કહે છે તે યુગના ૪ ચાર નકર કદા છે-તેનું
 સ્વપ્તીકરણ ની ૧ પ્રમાણ છે—(૧) જે યુગ વૃક્ષની છાવના બહારના ભાગનું
 ભાગ કર છે, તેને ત્વજ્ઞાદ યુગ કહે છે (૨) જે યુગ છાવની બહારના ભાગનું
 મધ્યનું કહે છે તેને છઠ્ઠીખાદ યુગ કહે છે (૩) જે યુગ કેવલ કષ્ટનું જ
 બધનું કહે છે તેને કાષ્ટખાદ યુગ કહે છે (૪) યુગ કષ્ટના ચાર ભાગ
 નું જ બધનું કહે છે તેને ચારખા યુગ કહે ૧ કાષ્ટના મધ્ય પ્રમાણે તેના
 ચાર ભાગ કહે છે સરખાઈનું બીજું નામ વજ્રહુલ યુગ ૨

હવે યુગના વ્યા ચારે પ્રક ન ફા તિત્તિ નિ ક સૂત્ર (િમુક સૂત્ર)
 સાથે પાવવા નિમિત્તે આ ૨ વ્યાખ્યાન ના છે આ ૧૪
 દ્વારા જે સૂત્ર ૧૨ એ નામ મ રે જુ ૧ ૧૨ ૪ પ્રાર વા છે,
 એવા ચાર પ્રકર (૧) કના પળ પની શક છે તિહુન નિદ્રાક પળ કહે છે

વાચસ્પત્યેન “ છલ્લીખાદ સમાનઃ ૨, કાઠખાદ સમાનઃ ૩, સારખાદ સમાનઃ ૪ ”
 इति, તત્ત્વજ્ઞાનરૂપે જીવન સમાન-સદૃશઃ ત્વક્ખાદ સમાન ત્વક્ખાદ સમાન
 च भिक्षुकेऽल्पावस्यमाणः १, अन्तर्ग्रान्तरुक्षतुच्छा-
 रसनिर्वाधाहारकत्वात्, छल्लीखादसमानः-आश्वत्थं वल्कलक्षकधुणसदृशः शुष्क-
 नीरसाद्यलेपाऽऽहारकत्वात् २, काष्ठखादसमानः = काष्ठमक्षतुल्यो निर्विकृति-
 काऽऽहारकत्वात् ३, सारखादसमानः=काष्ठमध्यमक्षकमदृशः सर्वकामगुणाऽऽहार
 कत्वादिति ४ ॥

एषां चतुर्विधभिक्षाकाणां तपोविशेषकथनमुत्रसाह-“ त्वक्खायसमाणरसे ”
 त्यागि-त्वक्खादसमानस्य-त्वक्खसदृशाभारमोक्षुर्भिक्षो, ग्लु सारखादसमान-
 के भी कहे जाये हैं। जैसे-त्वक्खाद समान भिक्षाक १ शिथुक् का नाम
 भिक्षाक है यावत् छल्लीखादसमान भिक्षाक २ काठखादसमान भिक्षाक
 ३ और सारखादसमान भिक्षाक ४ इनमें त्वक्खाद घुग लगान वह
 भिक्षाक है जो अत्यन्त सन्तोषी होने के कारण आचामल आंचिल
 (आमिल) आदि तपस्या है, अन्त प्रान्त रुक्ष तुच्छ अरु, और-
 विरस आहार करता है। छल्लीखाद घुग लगान वह भिक्षाक है जो शुष्क
 नीरस आदि अल्प आहार करता है। काठखाद घुग लगान वह भिक्षा
 है जो निर्विकृतिक (विगय) अर्थात्-दूध दही घृत तेल और मधुर
 रहित आहार करता है। तथा-सारखाद घुग लगान वह भिक्षाक है
 जो सर्वकाम घुग आहार करता है वह काष्ठके मध्य मक्षक समान
 भिक्षाक है।

ते भिक्षुका यार प्रकार नीचे प्रमाणे છે-() ત્વક્ખાદ સમાન ભિક્ષુક, (૨)
 છલ્લીખાદ સમાન ભિક્ષુક, (૩) કાઠખાદ સમાન ભિક્ષુક અને (૪) સારખાદ સમાન
 ભિક્ષુક ત્વક્ખાદ ઘુણુ સમાન ભિક્ષુક એ છે કે જે અત્યન્ત સંતોષી હોવાને
 કારણે આશ્મિગલ આદિ તપસ્યાઓ કરે છે, અને અન્ત, પ્રાન્ત, રુક્ષ, તુચ્છ,
 અરસ અને વિરસ આહાર જ લે છે છલ્લીખાદ ઘુણુ સમાન ભિક્ષુક એ છે
 કે જે શુષ્ક, નીરસ આદિ અલ્પ આહાર જ કરે છે કાઠખાદ ઘુણુ સમાન
 ભિક્ષુક એ છે કે જે નિર્વિકૃતિક (વિગય) એટલે કે દૂધ, દહી, ઘી, તેલ
 અને મધુરતા રહિત આહાર કરે છે સારખાદ ઘુણુ સમાન ભિક્ષુક એ છે કે
 જે સર્વકામ ઘુણુસપત્ર આહાર કરે છે તે કાષ્ઠના મધ્ય ભાગનું ભક્ષણ કર-
 કનાર ઘુણુ સમાન ગણાય છે

હવે મૂળકાર આ ચારે પ્રકારના ભિક્ષુકોના તપોવિશેષનું કથન કરે છે
 “ ત્વક્ખાનસમાનસ ” इति ।

સારસ્વાદો વજ્રમુલધુળમ્તત્સમાન-તપુલ્પ વજ્રસારમતિતીવ્ર તપો મવતીત્યાશ્રયે નોઽઽ- 'સારસ્વાદે' -ત્યાદિ, વજ્રસારતપઃ નિઃસજ્જસ્ત્વેન કમમેદકત્વાદ્ ઘોષ્યમ્ । અપમાન-યથા સારસ્વાદો ધુળઃ કઠિન કાષ્ઠમથ મિનતિ તથા ત્વક્ત્વાદો મિશ્નુરપિ મવાનુવષિ કઠિનતરમપિ કર્મ મિનતીતિ સાદૃશમિત્તો સાર સ્વાદસમાનં તપો મવતીતિ પ્રણવ્યં=કથિતમ્ । ૧ ।

“સારસ્વાદસમાનસ્તે”-ત્યાદિ - સારસ્વાદસમાનસ્ય - કાષ્ઠમથમસ્રક- ધુળસદૃશસ્ય ત્વક મિત્તાકસ્ય ત્વક્ત્વાદસમાન = શાશ્વત્કક્ત્વાદકપુમશ્વદૃશ તપો મવતિ, અપમાન-યથા ત્વક્ત્વાદો ધુળ કાષ્ઠસારમેદને સમર્થો ન મવતિ

અથ સુવ્રકાર દ્વન ચતુર્ધિષ મિશ્નુ કે તપોવિશેષ કા કપન કરને કે નિમિત્ત સૂત્ર કહતે હૈ-“તપકલાણસમાનસ્ત” ઇત્યાદિ

જો મિશ્નુકત્વફલે જેસે સાર પદાર્થકા મોજન કરતા હૈ સમકા તપ વજ્ર મુલ્ધ ધુળ કે સમાન વજ્ર અતિતીવ્ર હોતા હૈ, વજ્રસાર તપ નિઃસજ્જ હોને કે કારણ કર્મમેદક હોતા હૈ । તાત્પર્ય એસા હૈ જેસે સારસ્વાદધુળ કઠિન મી કાષ્ઠ મધ્ય કો ઘિદ્રિત કર દેતા હૈ ઉસે મેદ દેતા હૈ, વસી પ્રકાર ત્વક્ત્વાદ મિશ્નુક મી મવાનુવષિ કઠિનતર મી કર્મકો મેદ ચાલતા હૈ, અતઃ-એસે મિશ્નુકકા તપ સારસ્વાદકે સમાન હોતા હૈ એમા કહા ગયાહૈ?

“સારસ્વાદસમાનસ્ત” ઇત્યાદિ, કાષ્ઠ મધ્ય મસ્રક ધુળ કી સમાનતાવાલે મિશ્નુ કા તપ “ત્વક્ત્વાદ સમાન” શાશ્વત્કલ છોલકો ત્વાનેવાલે ધુળ કે સમાન હોતા હૈ । ઇસકા આશય એમા હૈ જેસે ત્વક્ત્વાદધુળ કાષ્ઠ સાર કો મેદને મેં સમર્થ નહીં હોતા હૈ ક્યોં કિ વહ તો

જે મિશ્નુક ત્વક્ત્વાદ સમાન સાર પદાર્થોનુ મોજન કરે છે તેનુ તપ વજ્ર મુલ્ધ ધુળના જેવુ છે વજ્ર-અતિ તીવ્ર હોય છે, વજ્રસાર તપ નિઃસજ્જ હોવાને કારણે કર્મમેદક હોય છે આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

જેમ સારસ્વાદ ધુળ (કાષ્ઠના મધ્ય ભાગનુ ભક્ષણ કરનાર) કીટા) કહ્યુમાં કહ્યુ કાષ્ઠને સોડીને તેના મધ્ય ભાગમાં પહોંચી બાક છે બને તે મધ્ય ભાગનુ જ ભક્ષણ કરે છે એ જ પ્રમાણે ત્વક્ત્વાદ ધુળ સમાન મિશ્નુક પણ ભવાનુષ ધી કહ્યુમાં કહ્યુ કીટાને પણ સોડી નાજે છે તે કારણે જોય મિશ્નુકના તપને સારસ્વાદ ધુળના તપ સાથે સરખા યુ છે....૨

સારસ્વાદસમાનસ્ત કાષ્ઠના મધ્યભાગનુ ભક્ષણ કરનાર ધુળની સમાનતાવાળા મિશ્નુ તપ “ત્વક્ત્વાદસમાન” કાષ્ઠના બાહ્યભાગનુ ભક્ષણ કરનાર ધુળના સમાન હોય છે આ કથનનો ભાવાર્થ એવો છે કે ત્વક્ત્વાદ ધુળ (બાહ્ય ત્વચાનુ ભક્ષણ કરનાર કીટા) કાષ્ઠકારને (કાષ્ઠના મધ્ય ભાગને)

ત્વચ્ચાદકત્વાદેવ હેતોઃ, તથા તાદૃશસ્ય મિશ્રુકસ્ય કર્મસારભેદનેઽ સમર્થમેવ તપો
ભવતિ, યતઃ સર્વકામગુણાઽઽહારકરૂપઃ સારચ્ચાદસમાનો મિશ્રુકો ભવતીતિ । ૨ ।

“છલ્લિકચ્ચાચમાણસે”-ત્યાદિ - છલ્લીચ્ચાદસમાનસ્ય=આશ્વ્યન્તરભાગ-
મક્ષકઘુણતુલ્યસ્ય મિશ્રાકસ્ય કાષ્ઠચ્ચાદસમાન=કાષ્ઠમક્ષકઘુણતુલ્યં તપો ભવતિ,
અર્થ ભાવઃ-છલ્લીચ્ચાદસમાનસ્ય સાધોસ્ત્વચ્ચાદઘુણસમાનસંયતાપેક્ષયા કિચ્ચિ-
દ્વિશિષ્ટભોજિત્વેન કિચ્ચિત્સસજ્જત્વાત્, સારચ્ચાદ-કાષ્ઠચ્ચાદ ઘુણસમાનસંયતાપે-
ક્ષયા ત્વસારભોજિત્વેન નિઃસજ્જત્વાચ્ચ કર્મભેદને કાષ્ઠચ્ચાદ ઘુણસમાનં તપો ભવતિ,

ત્વચ્ (છાલ) કો હી ચ્ચાનેચાલા હોતા હૈ અતઃ એસા જો મિશ્રુક હોતા
હૈ ઉસ મિશ્રુક તપ મી કર્મસાર ભેદને મેં સમર્થ નહીં દાતા હૈ કિન્તુ-
અસમર્થ હી રહતા હૈ, ક્યોં કિ-યહ મિશ્રુક સારચ્ચાદ સમાન મિશ્રાક
સર્વકામ ગુણાહારક હોતા હૈ—૨

“છલ્લિકચ્ચાચમાણસ” ઇત્યાદિ જો મિશ્રુક આશ્વ્યન્તર ભાગ
કા ચ્ચાનેચાલા ઘુણ કે સમાન હોતા હૈ ઉસકા તપ કાષ્ઠમક્ષક ઘુણ કે
તુલ્ય હોતા હૈ, । ઇસકા ભાવ એસા હૈ-જો મિશ્રુક છલ્લીચ્ચાદ સમાન
હોતા હૈ, એસે મિશ્રાક કા તપ ત્વચ્ચાદ ઘુણ સમાન સંયત કી અપેક્ષા
કિચ્ચિદ્વિશિષ્ટ ભોજી હોને કે કારણ કિચ્ચિત્ સસજ્જ હોને સે તથા સાર
ચ્ચાદ કાષ્ઠચ્ચાદઘુણ સમાન સંયત કી અપેક્ષા અસાર ભોજી હોને કે
કારણ નિઃસજ્જ હોને સે કર્મ કે ભેદનમેં કાષ્ઠચ્ચાદ ઘુણ સમાન હોતા હૈ ।
ઇસકા અર્થ એસા હૈ-કાષ્ઠચ્ચાદ ઘુણ જેસા મધ્યમ કા ભેદન કરતા હૈ

લેદવાને સમર્થ હોતો નથી, પણ માત્ર બાહ્ય છાલને જ ખાનારો હોય છે.
એ જ પ્રમાણે ત્વચ્ચાદ મિશ્રુક તપ પણ કર્મસારને લેદવાને સમર્થ બની
શકતું નથી-પણ અસમર્થ જ રહે છે, કારણ કે તે સારચ્ચાદ સમાન મિશ્રુક
સર્વકામ ગુણાહારક હોય છે

“છલ્લિકચ્ચાચમાણસ” ઇત્યાદિ—જે મિશ્રુક છાલના આશ્વ્યન્તર ભાગને
ખાનારા ક્રીડા જેવો હોય છે, તેનું તપ કાષ્ઠમક્ષક ક્રીડાતુલ્ય હોય છે આ
કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—જે મિશ્રુક છલ્લીચ્ચાદસમાન (આશ્વ્યન્તર
છાલ ખાનાર ક્રીડા સમાન) હોય છે, તે મિશ્રુક ત્વચ્ચાદ ઘુણ સમાન સંયત
કરતાં અમુક અશે વિશિષ્ટ પ્રકારના આહારનું સેવન કરનારો હોવાથી દેટલેક
અશે સસંગ અથવા અધિક તપને કારણે અધિક કર્મભેદન કરનારો હોવાથી
તથા સારચ્ચાદ ઘુણ સમાન સંયત કરતા અસારભોજી હોવાને કારણે નિઃસંગ
હોવાથી, કર્મના ભેદનમાં કાષ્ઠચ્ચાદ ઘુણ સમાન હોય છે એટલે કે કાષ્ઠચ્ચાદ

અયમર્થ—કાષ્ઠસ્વાદો ઘુણો યયા મધ્યમ મેદને કરોતિ, તયા તસ્ય તપો મધ્યમ મશતિ, નાતિતીવ્ર સારસ્વાદઘુણશ્ચ, નાતિમન્દ સ્વચ્છલીસ્વાદઘુણશ્ચદિતિ ॥૩॥

“કટુશ્વાયસમાનસ્તે”—અર્થાદિ—કાષ્ઠસ્વાદસમાનસ્ય=કાષ્ઠમસકઘુણ સ્વચ્છસ્પ મિત્તોદ્યમ્ય છછ્છીસ્વાદસમાનમ્=આભ્યન્તરબલ્કમસકઘુણતુલ્ય તપઃ પ્રાપ્તમ્, અયમર્થઃ—અયા છછ્છીસ્વાદો ઘુણઃ કાષ્ઠસારમેદને સમર્થો ન મશતિ, તયા તદશ્ચો મિશ્તુરપિ કર્મમેદને સમર્થો ન મશતિ અય માથઃ—કાષ્ઠસ્વાદસમાનસ્ય મિત્તોઃ સારસ્વાદઘુણસમાનસાષ્વપેક્ષયાઽસારમોજિત્વેન નિઃસદ્ગત્વાત્ સ્વચ્છસ્તી સ્વાદઘુણસમાનમાષ્વપેક્ષયા સારતરમોજિત્વેન સસદ્ગત્વાપ્ચ ઉચ્છ્લોસ્વાદઘુણશ્ચ તપઃ

હસલિયે—ત્સકા તપ મધ્યમ હોતા હૈ, કર્યો કિ—સારસ્વાદઘુણ કી તરહ વહ અતિતીવ્ર નહીં હોતા હૈ ઓર સ્વચ્છ્છલીસ્વાદ ઘુણ કી તરહ વહ અતિમન્દ મી નહીં હોતા હૈ અત—વહ મધ્યમ હોતા હૈ—૩

“કટુશ્વાય સમાનસ્તે”—અર્થાદિ જો મિશ્તુક કાષ્ઠસ્વાદ ઘુણ કે જૈસા હોતા હૈ ત્સકા તપ આભ્યન્તર બલ્કલકે અક્ષક ઘુણ તુલ્ય હોતા હૈ હસકા અર્થ ઈસા હી હૈ જૈસે છસ્લીસ્વાદ ઘુણ કાષ્ઠસાર મેદને મેં સમર્થ નહીં હોતા હૈ । ડસી પ્રકાર ઈસા મિશ્તુક મી કર્મમેદન મેં સમર્થ નહીં હોતા હૈ હસકા માથ યહ હૈ—કાષ્ઠસ્વાદ મિશ્તુ કા તપ સાધારણ કહા ગયા હૈ, કર્યો કિ—સારસ્વાદ ઘુણ સમાન સાધુ કી અપેક્ષા યહ અસાર મોજી હોને કે કારણ નિઃસદ્ગ હોતા હૈ ઓર—સ્વચ્છ્છલીસ્વાદઘુણ સમાન સાધુ કી અપેક્ષા યહ સારતર મોજી હોને કે કારણ સસગ હોતા હૈ ।

ધુણ મધ્યમનો સેહ હોય છે અને તે કારણે તેનું તપ પણ મધ્યમ હોય છે, કારણ કે કારણાદ ધુણની જેમ તે અતિશય તીવ્ર પણ હોતું નથી અને ત્વચ્છ આદ ધુણની જેમ તે અતિશય મન્દ પણ હોતું નથી તે કારણે તેના તપને મધ્યમ કહ્યું છે...૩

‘કટુશ્વાયસમાનસ્તે’—અર્થાદિ—જો મિશ્તુક કાષ્ઠસ્વાદ ધુણના જેવો હોય છે, તેનું તપ આભ્યન્તર બલ્કલક ધુણના જેવું હોય છે આ કથનનો આવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—જેમ આભ્યન્તર બલ્કલક કીયે કાષ્ઠસારને સેહ વાને અક્ષમર્થ જ હોય છે એ જ પ્રમાણે જોવો મિશ્તુક પણ કર્મનું સેહન કરવાને અમર્થ હોતો નથી. એટલે કે કાષ્ઠાદ મિશ્તુના તપને સાધારણ કહ્યું છે, કારણ કે કારણાદ ધુણ સમાન સાધુની અપેક્ષાએ તે અસારશેષ હોવાને કારણે નિઃસગ હોય છે, અને બાકી કાષ્ઠ (ત્વચ્છ) ના અક્ષક ધુણના જેવા સાધુની અપેક્ષાએ તે સારતરશેષ હોવાને કારણે સસગ હોય છે તે કારણે

કર્મભેદને સારલાદ-કાણલાદધુગવન્નાતિસમર્થ, ત્વક્લાદધુગવન્નાતિમન્દ કિન્તુ સાધારણં પ્રજ્ઞમિતિ । એવન્ન પ્રથમસ્યાતિતીવ્રં પ્રધાનતરં તપઃ ૧, દ્વિતીયસ્યાપ્રધાનતરમ્ ૨, તૃતીયસ્ય પ્રધાનમ્ ૩, ચતુર્થસ્ય મિશ્રુકસ્યાપ્રધાનમિત્યુપસંહારઃ૪॥સૂ.૬॥

પૂર્વ વનસ્પત્યવ્યવલાદકા ઘુના નિરૂપિતા ઇતિ વનસ્પતિમેવ પ્રરૂપયન્નાહ-

મૂલપ્-ચડવિહા તળવળસસડકાઈયા પળળત્તા, તં જહા-અગ્ગવીયા ૧, મૂલવીયા૨, પોરવીયા૩, સંધવીયા ૪ ॥ સૂ.૭ ॥

ચડહિં ઠાળેહિં અહુળોવવળળે ળેરડૈ ળેરડૈયલોગંસિ ઇચ્છેજ્ઞા માનુનં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ, ળો ચેવ ળં સંચાણ્ડ હવ્વમાગચ્છિત્તણ, તં જહા-અહુળોવવળળે નેરડૈ ળિરયલોગંસિ સમુવ્મૂયં વેયળં વેયમાળે ઇચ્છેજ્ઞા માણુતંલોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ ળો ચેવ ળં સંચાણ્ડ હવ્વમાગચ્છિત્તણ ૧, અહુળોવવળ્લે ળેરડૈ ળિરયલોગંસિ ળિરયપાલેહિં મુજ્જોર, અહિટ્ઠિજ્ઞમાળેર ઇચ્છેજ્ઞા માણુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ, ળો ચેવ ળં સંચાણ્ડ હવ્વમાગ-

હસલિયે છલ્લીલાદ ઘુગ કે સમાન વહ ઉસકા તપ કર્મભેદન મેં સાર-લાદ કાણલાદ ઘુગ કી તરહ અતિ સમર્થ નહીં હોતા હૈ એવં ત્વક્લાદ ઘુગ કી તરહ અતિમન્દ મી નહીં હોતા હૈ હસલિયે હસે સાધારણ કહા ગયા હૈ । હસ તરહ પ્રથમ કા અતિતીવ્ર પ્રધાનતર તપ હોતો હૈ ૧ દ્વિતીય કા અપ્રધાનતર ઓર તૃતીય કા પ્રધાન ૩ તથા ચતુર્થ મિશ્રુક કા અપ્રધાન તપ હોતા હૈ, યહી ઉપસંહાર હસ કથન કા હૈ ૪—સૂ. ૬॥

છલ્લી ખાદ ઘુણુ સમાન તેનુ તે તપ કર્મનું લેહન કરવામા કાણખાદ ઘુણુની જેમ અતિ સમર્થ પણ નીવડતું નથી, અને ત્વક્ખાદ ઘુણુના જેવું અતિ મન્દ પણ હોતું નથી, તેથી તેના તપને સાધારણ કહેવામાં આવ્યું છે. આ રીતે પહેલા પ્રકારના સાધુનું તપ અતિ તીવ્ર અથવા અતિ તીવ્ર પ્રધાનતર હોય છે, બીજા પ્રકારના સાધુનું તપ પ્રધાનતર અથવા મધ્યમ હોય છે, ત્રીજા પ્રકારના સાધુનું તપ પ્રધાન અથવા સાધારણ હોય છે અને ચોથા પ્રકારના સાધુનું તપ અપ્રધાન હોય છે. ॥ સૂ. ૬ ॥

અપમર્થ:-કાષ્ઠશ્વાદો ઘુગો યથા મધ્યમ મેદન કરોતિ, તથા તસ્ય તપો મધ્યમ મરતિ, નાતિવીઘ્ર સારશ્વાદઘુગશ્ચ, નાતિમન્દં ત્વચ્છટ્ટીશ્વાદઘુગાશ્ચિતિ ॥૩॥

“કટુશ્વાયસમાગસ્તે”-અર્થાદિ - કાષ્ઠશ્વાદસમાનસ્ય=કાષ્ઠમસકઘુગ સદ્યસ્ય મિસ્રાકસ્ય છટ્ટીશ્વાદસમાનમ્=આમ્યન્તરબલ્કમમકઘુગતુલ્ય તપઃ મદ્ય પ્તમ્, અપમર્થ:-યથા છટ્ટીશ્વાદો ઘુગઃ કાષ્ઠશ્વાદમેદને સમર્થો ન મરતિ, તથા તદ્વશો મિશ્તુરપિ કર્મમેદને સમર્થો ન મરતિ અય માત્ર - કાષ્ઠશ્વાદસમાનસ્ય મિસ્રોઃ સારશ્વાદઘુગસમાનસાધ્વપેક્ષયાઽસારમોજિત્વેન નિઃસદ્શ્વાત્ સ્વચ્છત્તી શ્વાદઘુગસમાનમાધ્વપેક્ષયા સારતરમોજિત્વેન સસદ્શ્વાત્ચ્છત્તીશ્વાદઘુગશ્ચ તત્તપઃ

इसलिये-उसका तप मध्यम होता है, क्योंकि-सारश्वदघुग की तरह यह अतितीव्र नहीं होता है और त्यक् छल्लीश्वद घुग की तरह यह अतिमन्द भी नहीं होता है अतः-यह मध्यम होता है-३

“कटुश्वायसमाणस्म-” इत्यादि जो मिश्रुक काष्ठश्वद घुग के जैसा होता है उसका तप आभ्यन्तर बलके भक्षक घुग तुल्य होता है इसका अर्थ ऐसा ही है जैसे छल्लीश्वद घुग काष्ठसार मेदने में समर्थ नहीं होता है। उसी प्रकार ऐसा मिश्रुक भी कर्ममेदन में समर्थ नहीं होता है इसका भाव यह है-काष्ठश्वद मिश्रुक का तप साधारण कहा गया है, क्योंकि-सारश्वद घुग समान साधु की अपेक्षा यह असार भोजी होने के कारण निःसद् होता है और-त्यक् छल्लीश्वद घुग समान साधु की अपेक्षा यह मंदतर भोजी होने के कारण समग होता है।

પુણ મધ્યમનો બોલ દોષ છે અને તે કારણે તેનું તપ પણ મધ્યમ દોષ છે કારણ કે સારશ્વાદ પુણની જેમ તે અતિથય તીવ્ર પણ હોતું નથી અને ત્વચ્છટ્ટીશ્વાદ પુણની જેમ તે અતિથય મદ્ય પણ હોતું નથી તે કારણે તેના તપને મધ્યમ કહ્યું છે...૩

“કટુશ્વાયસમાગસ્તે” અર્થાદિ-જે મિશ્રુક કાષ્ઠશ્વાદ પુણના જેવો દોષ છે, તેનું તપ આભ્યન્તર બલભક્ષક પુણના જેવું હોય છે આ કથનનો આવાય નીચે પ્રમાણે છે-જેમ આભ્યન્તર બલભક્ષક કીટો કાષ્ઠશ્વારને ભેડવાને અશ્મરથ જ દોષ છે એ જ પ્રમાણે એવો મિશ્રુક પણ કમનું ભેડવવાને અશ્મર થોતો નથી એટલે કે કાષ્ઠશ્વાદ મિશ્રુકના તપને સાધારણ કહ્યું છે, કારણ કે સારશ્વાદ પુણ સમાન સાધુની અપેક્ષાએ તે અસારને છોડવાને કારણે નિઃસમ દોષ છે અને બાકી હાથ (ત્વચ્છટ્ટી) ના ભક્ષક પુણના જેવા સાધુની અપેક્ષાએ તે સારતરભોજી હોવાને કારણે સમગ દોષ છે તે કારણે

કર્મભેદને સારલાદ-કાષ્ઠલાદધુગચ્છનાતિસમર્થ, ત્વક્લાદધુગચ્છનાતિમન્દ કિન્તુ સાધારણ પ્રજ્ઞસમિતિ । એવન્ન પ્રથમસ્થાવિતીત્રં પ્રધાનતરં તપઃ ૧, દ્વિતીયસ્થાપ્રધાનતરમ્ ૨, તૃતીયસ્ય પ્રધાનમ્ ૩, ચતુર્થસ્ય મિશ્રકસ્યાપ્રધાનગિત્યુપગદ્ધારઃ ૪ ॥ સૂ. ૬ ॥

પૂર્વે વનસ્પત્યવચ્ચલાદકા ઘુના નિરૂપિતા ઇતિ વનસ્પતિમેવ પ્રરૂપયન્નાહ-

મૂલમ્-ચટ્વિહા તળવળસસદ્કાઢ્યા પળજ્ઞા, તં જહા-અગવીયા ૧, મૂલવીયાર, પોરવીયા૩, સંધવીયા ૪ ॥ સૂ. ૭ ॥

ચટ્વિહિં ઠાળેહિં અહુળોવવળે ણેરદ્દા ણેરદ્દયલોગંસિ ઇચ્છેજ્ઞા માનુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ, ણો ચેવ ણં સંચાણ્ઢ હવ્વમાગચ્છિત્તણ, તં જહા-અહુળોવવળે નેરદ્દા ણિરયલોગંસિ સમુવ્વમૂયં વેયણં વેયમાળે ઇચ્છેજ્ઞા માણુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ ણો ચેવ ણં સંચાણ્ઢ હવ્વમાગચ્છિત્તણ ૧, અહુળોવવળે ણેરદ્દા ણિરયલોગંસિ ણિરયપાલેહિં મુજ્જોર, અહિટ્ઢિજ્ઞમાળેર ઇચ્છેજ્ઞા માણુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ, ણો ચેવ ણં સંચાણ્ઢ હવ્વમાગ-

હસલિયે છલ્લીલાદ ઘુગ કે સમાન વહ ઉસકા તપ કર્મભેદન મેં સારલાદ કાષ્ઠલાદ ઘુગ કી તરહ અતિ સમર્થ નહીં હોતા હૈ એવં ત્વક્લાદ ઘુગ કી તરહ અતિમન્દ મી નહીં હોતા હૈ હસલિયે હસે સાધારણ કહા ગયા હૈ । હસ તરહ પ્રથમ કા અતિતીત્ર પ્રધાનતર તપ હોતા હૈ ૧ દ્વિતીય કા અપ્રધાનતર ઓર તૃતીય કા પ્રધાન ૩ તથા ચતુર્થ મિશ્રક કા અપ્રધાન તપ હોતા હૈ, યહી ઉપસંહાર હસ કથન કા હૈ ૪—સૂ. ૬ ॥

છલ્લી ખાદ ઘુણુ સમાન તેનુ તે તપ કર્મનું ભેદન કરવામા કાષ્ઠખાદ ઘુણુની જેમ અતિ સમર્થ પણ નીવડતું નથી, અને ત્વક્ખાદ ઘુણુના જેવું અતિ મન્દ પણ હોતુ નથી, તેથી તેના તપને સાધારણ કહેવામાં આવ્યુ છે. આ રીતે પહેલા પ્રકારના સાધુનુ તપ અતિ તીવ્ર અથવા અતિ તીવ્ર પ્રધાનતર હોય છે, બીજા પ્રકારના સાધુનું તપ પ્રધાનતર અથવા મધ્યમ હોય છે, ત્રીજા પ્રકારના સાધુનું તપ પ્રધાન અથવા સાધારણ હોય છે અને ચોથા પ્રકારના સાધુનુ તપ અપ્રધાન હોય છે. ॥ સૂ. ૬ ॥

छिच्छत् २, अद्गुणोववन्ने णेरह्ण णिरयवेयणिज्जसि कम्मसि
अक्खीणसि अवेह्यसि अणिज्जिन्नसि इच्छेज्जा माणुसं लोमं
हव्वमागच्छित्तप णो चेव णं सचापइ हव्वमागच्छित्तप ३।
एव निरयाउयसि कम्मसि अक्खिणंसि जाव णो चेव ण
सचापइ हव्वमागच्छित्तप ४, इच्छेहि चउहि ठाणेहि अद्गुणो
ववन्ने नेरह्ण जाव णो चेव णं सचापइ हव्वमागच्छित्तप ४॥ सू० ७

प्रति-

छाया—चतुर्विधास्तृणवनस्पतिकामिका प्रकृताः, तृणमा—अप्रवीणाः १,
मूलवीजाः २, पर्ववीजाः ३, स्कन्धवीजा ४ (सू० ७) ।

चतुर्भिः स्थानैरधुनोप १ नैरयिकः नैरयिकलाक इच्छेद् मानुषं लोकं इत्य-
मागन्तुम्, नो चेव खलु शक्नोति इत्यमागन्तुम्, तृणमा—अधुनोपपन्नो नैरयिको
निरपलोके तमुद्भूतां वेदनां वेदयमान इच्छेद् मानुषं लोकं इत्यमागन्तुम् १,

इस प्रकार से वनस्पति स्त्रावक घुणों का निरूपण करके अब सूत्र
कार वनस्पति की प्ररूपणा करते हैं—

“चउम्बिहा तणयणस्सइकाइया पण्णत्ता” इत्यादि ७

सुप्रार्थ—तृण वनस्पतिकामिका चार प्रकार के कहे गये हैं,
जैसे—अप्रवीज १ मूलवीज २ पर्ववीज ३ स्कन्धवीज ४। चार कारणों से
अधुनोपपन्नक तत्काल उत्पन्न हुये नैरयिक नरक से मनुष्यलोक में
आना चाहता है वे चार कारण इस प्रकार से हैं एक कारण इन्हीं
ऐसा है कि नरक में तत्काल उत्पन्न हुआ जो नैरयिक है यह जब उस
लोक में उत्पन्न वेदना को भोगता है तब वह मनुष्यलोक में आने की

आ शीते वनस्पतिसंज्ञकं क्रीडातु निरूपयुः कशीने हवे सूत्रकार वनस्पतिनी
प्ररूपणा करे ७— चउम्बिहा तणयणस्सइकाइया पण्णत्ता” इत्यादि—

तृण वनस्पतिकामिकानां नीचैः प्रभावे चार प्रकार कहे ७—(१) अप्रवीज
(२) मूलवीज, (३) पर्ववीज અને (४) स्कन्धवीज

अधुनोपपन्नक (तत्काल उत्पन्न यथेष्टी) नारक एव नीचिना चार भर
होने की व नरकभांसी मनुष्यलोकभां आवणा पादे ७—(१) नरकभां तत्काल
उत्पन्न यथेष्टी नैरयिक (नारक एव) चार ते लोकभां उत्पन्न यथेष्टी वेदना
भोगते ७ त्वारे तेने मनुष्यलोकभां आवणानी छिज्जा माय ७ (२) चार ते

ત્વક્વાદકન્યાદેવ હેતોઃ, તથા તાદૃશસ્ય મિશ્રુકસ્ય કર્મસારભેદનેઽ સમર્થમેવ તપો ભવતિ, યતઃ સર્વકામગુણાઽઽહારકરૂપઃ સારવાદસમાનો મિશ્રુકો ભવતીતિ । ૨ ।

“ છલ્લિક્ષાયામમાણસે ”—ત્યાદિ — છલ્લીઆદસમાનસ્ય=આભ્યન્તરભાગ-મક્ષકધુણતુલ્યસ્ય મિશ્રાકસ્ય કાષ્ઠવાદસમાન=કાષ્ઠમક્ષકધુણતુલ્યં તપો ભવતિ, અયં ભાવઃ—છલ્લીઆદસમાનસ્ય સાધોસ્ત્વક્વાદધુણસમાનસંયતાપેક્ષયા કિચ્ચિ-દ્વિશિષ્ટભોજિત્વેન કિચ્ચિત્સસજ્જત્વાત્, સારવાદ-કાષ્ઠવાદ ઘુણસમાનસંયતાપે-ક્ષયા ત્વસારભોજિત્વેન નિઃસજ્જત્વાચ્ચ કર્મભેદને કાષ્ઠવાદ ઘુણસમાનં તપો ભવતિ, ત્વક્ (છાલ) કો હી ગ્વાનેવાલા હોતા હૈ અતઃ એસા જો મિશ્રુક હોતા હૈ ઉસ મિશ્રુક તપ મી કર્મસાર ભેદને મેં સમર્થ નહીં હાતા હૈ કિન્તુ-અસમર્થ હી રહતા હૈ, ક્યોં કિ-યહ મિશ્રુક સારવાદ સમાન મિશ્રાક સર્વકામ ગુણાહારક હોતા હૈ—૨

“ છલ્લિક્ષાયામમાણસ ” ઇત્યાદિ જો મિશ્રુક આભ્યન્તર ભાગ કા ઘાનેવાલા ઘુણ કે સમાન હોતા હૈ ઉસકા તપ કાષ્ઠમક્ષક ઘુણ કે તુલ્ય હોતા હૈ, । હસકા ભાવ એસા હૈ—જો મિશ્રુક છલ્લીઆદ સમાન હોતા હૈ, એસે મિશ્રાક કા તપ ત્વક્વાદ ઘુણ સમાન સંયત કી અપેક્ષા કિચ્ચિદ્વિશિષ્ટ ભોજી હોને કે કારણ કિચ્ચિત્ સસજ્જ હોને સે તથા સાર વાદ કાષ્ઠવાદધુણ સમાન સંયત કી અપેક્ષા અસાર ભોજી હોને કે કારણ નિઃસજ્જ હોને સે કર્મ કે ભેદનમેં કાષ્ઠવાદ ઘુણ નમાન હોતા હૈ । હસકા અર્થ એસા હૈ—કાષ્ઠવાદ ઘુણ જૈસા મધ્યમ કા ભેદન કરતા હૈ

લેદવાને સમર્થ હોતો નથી, પણ માત્ર બાહ્ય છાલને જ ખાનારો હોય છે. એ જ પ્રમાણે ત્વક્ખાદ મિશ્રુક તપ પણ કર્મસારને લેદવાને સમર્થ બની શકતું નથી—પણ અસમર્થ જ રહે છે, કારણ કે તે સારખાદ સમાન મિશ્રુક સર્વકામ ગુણાહારક હોય છે

“ છલ્લિક્ષાયામમાણસ ” ઇત્યાદિ—જે મિશ્રુક છાલના આભ્યન્તર ભાગને ખાનારા ક્રીડા જેવો હોય છે, તેનું તપ કાષ્ઠમક્ષક ક્રીડાતુલ્ય હોય છે આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—જે મિશ્રુ છલ્લીઆદસમાન (આભ્યન્તર છાલ ખાનારા ક્રીડા સમાન) હોય છે, તે મિશ્રુ ત્વક્ખાદ ઘુણ સમાન સંયત કરતા અમુક અગે વિશિષ્ટ પ્રકારના આહારનું સેવન કરનારો હોવાથી કેટલેક અંશે સસંગ અથવા અધિક તપને કારણે અધિક કર્મલેદન કરનારો હોવાથી તથા સારખાદ ઘુણ સમાન સંયત કરતા અસારભોજી હોવાને કારણે નિઃસંગ હોવાથી, કર્મના લેદનમા કાષ્ઠખાદ ઘુણ સમાન હોય છે એટલે કે કાષ્ઠખાદ

અયમર્થઃ—કાષ્ઠસ્વાદો ધુણો યથા મધ્યમ મેદન કરોતિ, તથા તસ્ય તપો મધ્યમ મશતિ, નાતિવીઘ્ર સારસ્વાદધુગચ્ચ, નાતિમન્દ ત્વચ્છલીસ્વાદધુણાદિતિ ॥૩॥

“કઢ્ઢસ્વાયસમાખસ્તે” — સ્વાદિ — કાષ્ઠસ્વાદસમાનસ્ય = કાષ્ઠમસ્રકધુણ સદ્વસ્ત્ય મિષ્ઠાદસ્ય છછીસ્વાદસમાનમ્ = આશ્વ્યન્તરવન્કમક્ષકધુણતુલ્ય તપઃ મદ્ પ્તમ્, અયમર્થઃ—યથા છછીસ્વાદો ધુણઃ કાષ્ઠસારમેદને સમર્થો ન મશતિ, તથા સાદ્વસ્તો મિષ્ઠુરપિ કર્મમેદને સમર્થો ન મશતિ અય માત્રઃ — કાષ્ઠસ્વાદસમાનસ્ય મિષ્ઠોઃ સારસ્વાદધુણસમાનસાધ્વપેક્ષયાઽસારમોજિત્વેન નિઃમદ્સ્વાદ્ ત્વચ્છલી સ્વાદધુણસમાનસાધ્વપેક્ષયા સારવરમોજિત્વેન સસજ્જત્વાન્ચ ઉચ્છીસ્વાદધુણવત્ તથાપઃ

इसलिये—उसका तप मध्यम होता है, क्योंकि—सारस्वादधुण की तरह वह अतिमीघ्र नहीं होता है और त्वक् छल्लीस्वाद धुण की तरह वह अतिमन्द भी नहीं होता है अतः—वह मध्यम होता है—३

“कड्डुस्वायसमाणस्त—” इत्यादि जो मिष्ठुक काष्ठस्वाद धुण के जैसा होता है उसका तप आश्व्यन्तर घल्गल्के भक्षक धुग तुल्य होता है इसका अर्थ ऐसा ही है जैसे छल्लीस्वाद धुण काष्ठसार मेदने में समर्थ नहीं होता है। वसी प्रकार ऐसा मिष्ठुक भी कर्ममेदन में समर्थ नहीं होता है इसका भाव यह है—काष्ठस्वाद मिष्ठुक का तप साधारण कहा गया है, क्योंकि—सारस्वाद धुण समान साधु की अपेक्षा यह असार भोजी होने के कारण नि सज्ज होता है और—त्वक् छल्लीस्वाद धुण समान साधु की अपेक्षा यह सारसर भोजी होने के कारण ससज्ज होता है।

પુણ મધ્યમનો સેદક હોય છે અને તે કારણે તેનું તપ પણ મધ્યમ હોય છે, કારણ કે સારસ્વાદ પુણની જેમ તે અતિમય વીઘ્ર પણ હોતું નથી અને ત્વચ્છલી પુણની જેમ તે અતિમય મદ્ પણ હોતું નથી તે કારણે તેના તપને મધ્યમ કહ્યું છે...૩

‘કઢ્ઢસ્વાયસમાખસ્ત’ ઇત્યાદિ—જે મિષ્ઠુક કાષ્ઠસ્વાદ પુણના જેવો હોય છે, તેનું તપ આશ્વ્યન્તર ઇતલજક્ષક પુણના જેવું હોય છે આ કથનનો સાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—જેમ આશ્વ્યન્તર ઇતલજક્ષક ક્રીડા કાષ્ઠસારને સેદવાને અજ્ઞમય જ હોય છે, એ જ પ્રમાણે એવો મિષ્ઠુક પણ કમનું સેદન કરવાને અમર્થ હોતો નથી એટલે કે કાષ્ઠસ્વાદ મિષ્ઠુના તપને સાધારણ કહ્યું છે કારણ કે સારસ્વાદ પુણ સમાન સાધુની અપેક્ષાએ તે અસારથોળ હોવાને કારણે નિસજ્જ હોય છે અને બાહ્ય ઇવ (ત્વક્) ના ભક્ષક પુણના જેવા સાધુની અપેક્ષાએ તે સારવરથોળ હોવાને કારણે સસજ્જ હોય છે તે કારણે

કર્મભેદને સારલાદ-કાષ્ઠલાદધુગચ્છનાતિસમર્થ, ત્વક્લાદધુગચ્છનાતિમન્દં કિન્તુ સાધારણં પ્રજ્ઞસમિતિ । એવચ્ચ પ્રથમસ્યાતિતીવ્રં પ્રધાનતરં તપઃ ૧, દ્વિતીયસ્યાપ્રધાનતરમ્ ૨, તૃતીયસ્ય પ્રધાનમ્ ૩, ચતુર્થસ્ય મિશ્રુકસ્યાપ્રધાનમિત્યુપસઠારઃ ૪ ॥ સૂ. ૬ ॥

પૂર્વ વનસ્પત્યવયવલાદકા ઘુના નિરૂપિતા ઇતિ વનસ્પતિમેવ પ્રરૂપયન્નાહ-

મૂલમ્-ચડવિવહા તળવળસસઙ્કાઙ્કાયા પળળત્તા, તં જહા-અગ્ગવીયા ૧, મૂલવીયા ૨, પોરવીયા ૩, સંધવીયા ૪ ॥ સૂ. ૭ ॥

ચડહિં ઠાળેહિં અહુળોવવળળે ળેરઙ્કા ળેરઙ્કાલોગંસિ ઇચ્છેજ્ઞા માનુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ, ળો ચેવ ળં સંચાણ્ઙ્કા હવ્વમાગચ્છિત્તણ, તં જહા-અહુળોવવળળે નેરઙ્કા ળિરયલોગંસિ સમુવ્વમૂયં વેયળં વેયમાળે ઇચ્છેજ્ઞા માણુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ ળો ચેવ ળં સંચાણ્ઙ્કા હવ્વમાગચ્છિત્તણ ૧, અહુળોવવળળે ળેરઙ્કા ળિરયલોગંસિ ળિરયપાલેહિં મુજ્જોર, અહિટ્ઠિજ્ઞમાળેર ઇચ્છેજ્ઞા માણુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તણ, ળો ચેવ ળં સંચાણ્ઙ્કા હવ્વમાગ-

હસલિયે છલ્લીલાદ ઘુગ કે સમાન વહ ઉસકા તપ કર્મભેદન મેં સારલાદ કાષ્ઠલાદ ઘુગ કી તરહ અતિ સમર્થ નહીં હોતા હૈ એવં ત્વક્લાદ ઘુગ કી તરહ અતિમન્દ મી નહીં હોતા હૈ હસલિયે હસે સાધારણ કહા ગયા હૈ । હસ તરહ પ્રથમ કા અતિતીવ્ર પ્રધાનતર તપ હોતો હૈ ૧ દ્વિતીય કા અપ્રધાનતર ઓર તૃતીય કા પ્રધાન ૩ તથા ચતુર્થ મિશ્રુક કા અપ્રધાન તપ હોતા હૈ, યહી ઉપસંઠાર હસ કથન કા હૈ ૪—સૂ. ૬ ॥

છલ્લી ખાદ ઘુણુ સમાન તેનુ તે તપ કર્મનું લેહન કરવામા કાષ્ઠખાદ ઘુણુની જેમ અતિ સમર્થ પણ નીવડતું નથી, અને ત્વક્ખાદ ઘુણુના જેવું અતિ મન્દ પણ હોતું નથી, તેથી તેના તપને સાધારણ કહેવામા આવ્યું છે. આ રીતે પહેલા પ્રકારના સાધુનું તપ અતિ તીવ્ર અથવા અતિ તીવ્ર પ્રધાનતર હોય છે, બીજા પ્રકારના સાધુનું તપ પ્રધાનતર અથવા મધ્યમ હોય છે, ત્રીજા પ્રકારના સાધુનું તપ પ્રધાન અથવા સાધારણ હોય છે અને ચોથા પ્રકારના સાધુનું તપ અપ્રધાન હોય છે. ॥ સૂ. ૬ ॥

અવપર્યઃ—કાષ્ઠશ્વાદો ધુળો યથા મધ્યમ મેદન કરોતિ, તથા તસ્ય તપો મધ્યમ મરતિ, નાતિવીર્ય સારશ્વાદધુનશ્ચ, નાતિમન્દ ત્વચ્છટ્ટીશ્વાદધુનશ્ચદિતિ ॥૩॥

“કઠ્ઠુશ્ચાયસમાગસ્તે”—આદિ — કાષ્ઠશ્વાદસમાનસ્ય=કાષ્ઠમસકધુન સદસ્ય મિશ્રાકસ્ય છટ્ટીશ્વાદસમાનમ્=આમ્યન્તરબલ્લકમક્ષકધુનતુલ્ય તપઃ મઃ પ્તમ્, અવપર્યઃ—યથા છટ્ટીશ્વાદો ધુનઃ કાષ્ઠશ્વારમેદને સમર્થો ન મરતિ, તથા શ્વાદો મિશ્નુરપિ કર્મમેદને સમર્થો ન મરતિ અય માત્રઃ — કાષ્ઠશ્વાદસમાનસ્ય મિશ્નોઃ સારશ્વાદધુનસમાનસાધ્વપેક્ષયાઽસારમોજિત્વેન નિ સજ્જત્વાત્ દ્વચ્છટ્ટી શ્વાદધુનસમાનમાધ્વપેક્ષયા સારતરમોજિત્વેન સસજ્જત્વાન્ચ છટ્ટીશ્વાદધુનશ્ચ તપઃ

इसलिये—उसका तप मध्यम होता है, क्योंकि—सारश्वदधुन की तरह यह अतिवीर्य नहीं होता है और स्वक् छल्लीश्वद धुन की तरह यह अतिमन्द भी नहीं होता है अतः—यह मध्यम होता है—३

“कठुशाय समानस्त—” इत्यादि जो मिश्रक काष्ठश्वद धुन के जैसा होता है उसका तप आभ्यन्तर बल्लकके भयक् धुन तुल्य होता है इसका अर्थ ऐसा ही है जैसे छल्लीश्वद धुन काष्ठसार मेदने में समर्थ नहीं होता है। वसी प्रकार ऐसा मिश्रक भी कर्ममेदन में समर्थ नहीं होता है इसका भाव यह है—काष्ठश्वद मिश्र का तप साधारण कहा गया है, क्योंकि—सारश्वद धुन समान साधु की अपेक्षा यह असार भोजी होने के कारण निःसज्ज होता है और—स्वक् छल्लीश्वदधुन समान साधु की अपेक्षा यह सारतर भोजी होने के कारण ससज्ज होता है।

પુણ મધ્યમનો બેઠક ડોય છે, અને તે કારણે તેનું તપ પણ મધ્યમ ડોય છે, કારણ કે સારશ્વાદ પુણની જેમ તે અતિચત્ત તીવ્ર પત્ર ડોતું નથી અને ત્વચ્છ ષ્વાદ પુણની જેમ તે અતિચત્ત મદ પણ ડોતું નથી તે કારણે તેના તપને મધ્યમ કહ્યું છે...૩

“કઠુશાયસમાગસ્ત” — ઇત્યાદિ—જે મિશ્રક કાષ્ઠશ્વાદ પુણના જેવો ડોય છે, તેનું તપ આભ્યન્તર બાલબલક પુણના જેવું ડોય છે આ કથનનો આવાય નીચે પ્રમાણે છે—જેમ આભ્યન્તર બાલબલક ક્રિયા કાષ્ઠસારને ભેગ વાને અસમર્થ જ ડોય છે એ જ પ્રમાણે એવો મિશ્રક પણ કમનું ભેગ કરવાને અમર્થ ડોતો નથી એટલે કે કાષ્ઠશ્વાદ મિશ્રના તપને સાધારણ કહ્યું છે, કારણ કે સારશ્વાદ પુણ સમાન સાધુની અપેક્ષાએ તે અસારભોજી ડોવાને કારણે નિઃસજ્જ ડોય છે અને બાહ્ય ભાગ (ત્વચ્છ) ના અક્ષક પુણના જેવા સાધુની અપેક્ષાએ તે સારતરભોજી ડોવાને કારણે સસજ્જ ડોય છે તે કારણે

કર્મભેદને સારલાદ-કાષ્ટલાદધુણગ્નાતિસમર્થ, ત્વક્લાદધુણગ્નાતિમન્દ કિન્તુ સાધારણ પ્રજ્ઞમિતિ । એવન્ન પ્રથમસ્યાતિતીવ્રં પ્રધાનતરં તપઃ ૧, દ્વિતીયસ્યાપ્રધાનતરમ્ ૨, તૃતીયસ્ય પ્રધાનમ્ ૩, ચતુર્થસ્ય ભિક્ષુકસ્યાપ્રધાનમિત્યુપસંહારઃ ૪ ॥ સૂ. ૬ ॥

પૂર્વે વનસ્પત્યવચનલાદકા ઘુણા નિરૂપિતા ઇતિ વનસ્પતિમેવ પ્રરૂપયન્નાદ-

મૂલપ્-ચડવિવહા તળવળસ્સડકાડયા પળ્ળતા, તં જહા-
અગવીયા ૧, મૂલવીયા ૨, પોરવીયા ૩, લંધવીયા ૪ ॥ સૂ. ૭ ॥

ચડહિં ઠાળેહિં અહુળોવવળે ણેરડ્ઢ ણેરડ્ઢલોગંસિ
ઇચ્છેજ્ઞા માનુવં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તપ્, ણો ચેવ ણં સંચાણ્ઢ
હવ્વમાગચ્છિત્તપ્, તં જહા-અહુળોવવળે નેરડ્ઢ ણિરયલોગંસિ
સમુવ્મૂયં વેયણં વેયમાળે ઇચ્છેજ્ઞા માણુતં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તપ્
ણો ચેવ ણં સંચાણ્ઢ હવ્વમાગચ્છિત્તપ્ ૧, અહુળોવવળે નેરડ્ઢ
નિરયલોગંસિ ણિરયપાલેહિં ભુજ્જોર, અહિટ્ઢિજ્ઞમાળેર ઇચ્છેજ્ઞા
માણુસં લોગં હવ્વમાગચ્છિત્તપ્, ણો ચેવ ણં સંચાણ્ઢ હવ્વમાગ-

હસલિયે છલ્લીલાદ ઘુણ કે સમાન વહ ઉસકા તપ કર્મભેદન મેં સાર-
લાદ કાષ્ટલાદ ઘુણ કી તરહ અતિ સમર્થ નહીં હોતા હૈ એવં ત્વક્લાદ
ધુણ કી તરહ અતિમન્દ મી નહીં હોતા હૈ હસલિયે હસે સાધારણ કહા
ગયા હૈ । હસ તરહ પ્રથમ કા અતિતીવ્ર પ્રધાનતર તપ હોતા હૈ ૧
દ્વિતીય કા અપ્રધાનતર ઓર તૃતીય કા પ્રધાન ૩ તયા ચતુર્થ ભિક્ષુક
કા અપ્રધાન તપ હોતા હૈ, યહી ઉપસંહાર હસ કયન કા હૈ ૪—સૂ. ૬ ॥

છલ્લી ખાદ ધુણુ સમાન તેનુ તે તપ કર્મનું ભેદન કરવામા કાષ્ટખાદ ધુણુની
જેમ અતિ સમર્થ પણ નીવડતું નથી, અને ત્વક્ખાદ ધુણુના જેવું અતિ મન્દ
પણ હોતું નથી, તેથી તેના તપને સાધારણ કહેવામાં આવ્યું છે. આ રીતે
પહેલા પ્રકારના સાધુનુ તપ અતિ તીવ્ર અથવા અતિ તીવ્ર પ્રધાનતર હોય
છે, બીજા પ્રકારના સાધુનું તપ પ્રધાનતર અથવા મધ્યમ હોય છે, ત્રીજા પ્રકાર-
ના સાધુનું તપ પ્રધાન અથવા સાધારણ હોય છે અને ચોથા પ્રકારના
સાધુનુ તપ અપ્રધાન હોય છે. ॥ સૂ. ૬ ॥

છિત્તપ્ ૨, અદુણોવવન્ને નેરહપ્ ગિરયવેયણિજ્ઞસિ કમ્મસિ
અક્લીણસિ અવેદ્યસિ અણિજ્ઞિન્નસિ ઇચ્છેજ્ઞા માણુમ લોગ
હવ્વમાગચ્છિત્તપ્ ૧૦ ચેવ ૧૦ સચાપહ્ હવ્વમાગચ્છિત્તપ્ ૩।
પવ નિરયાડયસિ કમ્મસિ અધિસ્ત્વણંસિ જાવ ૧૦ ચેવ ૧૦
સચાપહ્ હવ્વમાગચ્છિત્તપ્ ૪, ઇચ્છેપહ્ ચિહ્નિ ઠાણેહ્ અદુણો
વવન્ને નેરહપ્ જાવ ૧૦ ચેવ ૧૦ સચાપહ્ હવ્વમાગચ્છિત્તપ્ ૪। સૂ. ૭

મર્ક-૧

છાયા—ચતુર્વિધાસ્તુબ્ધવનસ્પતિકાધિકા મહત્ત્વા, તથા—અપ્પીમાઃ ૧,
મૂલવીમા ૨, પર્વવીમા ૩, સ્કન્ધવીમા ૪ (સૂ. ૭) ।

ચતુર્મિઃ સ્થાનૈરધુનોપપ ૧ નૈરયિકઃ નૈરયિકછાયા ઇચ્છેદ્ માણુપ લોકં રમ્પ-
માગન્તુમ્, નો ચેવ સ્વલુ ધવનોતિ રમ્પમાગન્તુમ્, તથા—અધુનોપપક્ષો નૈરયિકો
નિરયલોકે સમુદ્ભૂતાં વેદનાં વેદયમાન ઇચ્છેદ્ માણુપ લોકં રમ્પમાગન્તુમ્ ૧,

હસ પ્રકાર સે વનસ્પતિ સાદક ધુર્ણો કા નિરુપણ કરકે અથ સૂત્ર-
કાર વનસ્પતિ કી પ્રરુપણા કરતે હિ—

“ અઽસ્મિહા તણ્ણણસ્સહકાર્યા પણ્ણણા ” ઇત્યાદિ ૭

સૂત્રાર્થ—તુણ વનસ્પતિકાધિક વાર પ્રકાર કે કહે ગયે હિ,
ત્રિસે—અપ્પીમા ૧ મૂલવીમા ૨ પર્વવીમા ૩ સ્કન્ધવીમા ૪ । વાર કારણો સે
અધુનોપપત્તક તત્કાલ ઉત્પન્ન હુવે નૈરયિક નરક સં મનુષ્યલોક મેં
આના આહતા હે યે વાર કારણ હસ પ્રકાર સે હિ એક કારણ હન્ને
એસા હે કિ નરક મેં તત્કાલ ઉત્પન્ન હુવા જો નૈરયિક હે વપ્ જબ હસ
લોક મેં ઉત્પન્ન વેદના કો મોગતા હે તથ વહ મનુષ્યલોક મેં આને કી

આ રીતે વનસ્પતિકાધિકા ધીરાણુ નિરુપણ કરીને હવે સૂત્રકાર વનસ્પતિની
પ્રરુપણા કરે છે— અઽસ્મિહા તણ્ણણસ્સહકાર્યા પણ્ણણા ” ઇત્યાદિ—

તુણ વનસ્પતિકાધિકના નીચે પ્રમાણે વાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અપ્પીમા
(૨) મૂલવીમા (૩) પર્વવીમા અને (૪) સ્કન્ધવીમા

અધુનોપપત્તક (તત્કાલ ઉત્પન્ન થયેલો) નારક છપ નીચેના વાર કર
જોને થીપે નરકમાથી મનુષ્યલોકમાં આવવા બાદે છે—(૧) નરકમાં તત્કાલ
ઉત્પન્ન થયેલો નૈરયિક (નારક છપ) બ્યારે તે લોકમાં ઉત્પન્ન થયેલી વેદનાને
જામવે છે, બ્યારે તેને મનુષ્યલોકમાં આવવાની ઇચ્છા થાય છે (૨) બ્યારે તે

अधुनोपपन्नो नैरयिको निरयलोके निरयपालैः भूयो भूयः अधिष्ठीयमानः २
इच्छेद् मानुषं लोकं हव्यमागन्तुम्, नो चैव खलु शक्नोति हव्यमागन्तुम् २,
अधुनोपपन्नो नैरयिको निरयवेदनीये कर्मणि अक्षीणे अवेदिते अनिर्जीर्णे इच्छेत्
मानुषं लोकं हव्यमागन्तुम्, नो चैव खलु शक्नोति हव्यमागन्तुम् ३, एवं निर-
याऽऽयुष्के कर्मणि अक्षीणे यावत् नो चैव खलु शक्नोति हव्यमागन्तुम् ४, इत्ये-
तैश्चतुर्भिः स्थानैरधुनोपपन्नो नैरयिकः यावत् नो चैव खलु शक्नोति हव्यमाग-
न्तुम् ४ (सू० ८) ।

कल्पन्ते निर्ग्रन्थीनां चतस्रः सङ्घाट्यो धारयितुं वा परिधर्तुम्, तद्यथा एका
द्विहस्तविस्तारा १, द्वे त्रिहस्तविस्तारे ३, एका चतुर्हस्तविस्तारा ४ । (सू० ९) ।

चाहना करता है। पर वहां से आ नहीं सकता है। दूसरा कारण ऐसा
है कि जब वह अधुनोपपन्नक नैरयिक उस निरयलोक में परमाधार्मिक
द्वारा बार २ आक्रम्यमाण हन्यमान होता है तब वह मनुष्यलोक में
आने की चाहना करता है पर वहां से आ नहीं सकता है। तृतीय कारण
ऐसा है कि अधुनोपपन्नक नैरयिक निरय में ही वेदनीय वेदन करने
योग्य जो कर्म है उसे वहां ही जब तक भोग नहीं लेगा, तब तक वह
मनुष्यलोक में नहीं आ सकता है। चौथा कारण ऐसा है कि—जब तक
निरयायुष्क पूर्ण नहीं हुआ है तब तक वह मनुष्यलोक में आने की
चाहना करता हुआ भी नहीं आ सकता है, इस प्रकार से ये चार कारण
ऐसे हैं जो मनुष्यलोक में उस अधुनोपपन्नक नैरयिक को आने की
चाहना उत्पन्न कराते हैं परन्तु फिर भी वह मनुष्यलोक में नहीं आ
सकता है ८ । निर्ग्रन्थियों को चार सङ्घाटियों (चादर) धारण करने योग्य

नैरयिकपर परमाधार्मिक नामना असुरकुमार देवे। बारवार आक्रमण करे छे,
बार बार छे, तयारे पणु तेने मनुष्यलोकमा आववानी धरछा थाय छे, पणु
ते त्यांथी मनुष्यलोकमा आवी शक्ते नथी (३) नरकमा भोगववा योग्य
कर्मांतुं जयां सुधी ते अधुनोपपन्नक नारक छव नरकमा न रहने पूरेपूरे वेदन
करी देतो नथी त्या सुधी ते आ मनुष्यलोकमा आवी शक्ते नथी (४) जयां
सुधी ते निरयायुष्क (नरक गति संजधी आयुष्य) पूरेपूरे भोगवी देतो
नथी—त्यांनी आयुस्थिति पूरी करतो नथी—त्यां सुधी ते आहना करवा छता
पणु मनुष्यलोकमा आवी शक्ते नथी आ प्रकारना आ चार कारणोंने वीधे
ते अधुनोपपन्नक नारक छव नरकमांथी मनुष्यलोकमा आववानी धरछा थावा
छतां मनुष्यलोकमा आवी शक्ते नथी.

निर्ग्रन्थीआने माटे चार सङ्घाटीओ (वस्त्र विशेष) धारण करवा योग्य
कही छे—(१) जे हाथप्रमाण विस्तारवाणी ओक सङ्घाटी,—चादर(२) त्रय हाथप्रमाण

ટીકા—“ ચતુષ્વિદા ” इत्यादि - चतुर्विधा = चतुष्पकाराः, तृणवनस्पति
 कायिका - तृणप्रकारा वनस्पतिकायिकास्तृणवनस्पतिकायिका = तृणरूपा वनस्प
 तिकायिका वादरा इत्यर्थं पक्ष्मपाः तृणवा-अग्रबीजाः-अग्रोऽग्र वा बीज येषां ते
 तयामृता ग्रीष्मादय १, मूलबीजा-मूलमेव बीज येषां ते मूलबीजा-कमलक
 न्दादयः २, पर्वबीजाः-पर्व बीज येषां ते तथाभूता इत्यादयः ३, स्कन्धबीजाः-
 स्कन्धः-धुबं, स एव बीज येषां ते तथाभूता सल्लखादयः ४ (सू० ७) ।

પૂર્વ વનસ્પતિકાયિકમીઝાનાં ચતુઃસ્થાનક મોક્ત, સમ્પતિ તગ્ગીવત્ત-મધ-
 કહો ગઈ છે, જૈસે-૧૬ સઘાટી દો હાથ વિસ્તારવાલી? દો સઘાટી ત્રીન
 હાથ વિસ્તારવાલી ૩ ઓર ચાર હાથ વિસ્તારવાલી ૪૬ ૧ ।

સ્વપ્રાર્થ—તૃણરૂપ જો પાદર વનસ્પતિકાયિક છે ત્યાં તૃણવનસ્પ
 તિકાયિક શબ્દ સે ગૃહીત હુય છે । યે તૃણવનસ્પતિકાયિક જો ચાર
 પ્રકાર કે કહે ગયે પ્રગટ કિયે છે ઉનકા અભિપ્રાય એના છે કે-જિનકા
 આગે કા ભાગ જિનકે અગ્ર-ભાગ સે બીજ હોતા છે એસે ગ્રીષ્મી આદિક
 તૃણ વનસ્પતિકાયિક અગ્ર-બીજ છે જિનકા મૂલ હો બીજ હોતા છે ય મૂલ
 બીજ છે । જૈસે-કમલકન્દુ આદિ પર્વ હો જિનકા બીજ હોતા છે-એસે
 હસ્તુ આદિક પર્વ-બીજ વનસ્પતિકાયિક છે । સ્કન્ધ ધૂબ વડ હો જિનકે
 બીજ છે એસે સલ્લકી આદિક સ્કન્ધ-બીજ વનસ્પતિકાયિક છે ૭

इस प्रकार से वनस्पतिकायिक जीवों के ये चार स्थान कहे गये,

विस्तारवाणी के सघाटी અને (૪) આર હાથપ્રમાણ વિસ્તારવાળી એક સઘાટી

આ સૂત્રનું વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ—તૃણ રૂપ કે બાદર વનસ્પતિકાયિક છે
 તે અહીં તૃણ વનસ્પતિકાયિક પદ્યો ગૃહીત થઈ છે તે તૃણ વનસ્પતિકાયિકના
 કે આર પ્રકાર કહ્યા છે, તેનું સ્પષ્ટીકરણ કહે કરનામાં આવે છે—

(૧) અગ્રબીજ ' એના અગ્ર-ભાગમાં બીજ હોય છે એવાં ૫૨૨ આદિ
 તૃણ વનસ્પતિકાયિકોને આ પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે

(૨) મૂલબીજ " એમનાં મૂળ જ બીજરૂપ હોય છે એવા કમલકન્દ
 આદિને આ પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે

(૩) ' પર્વબીજ " પર્વ જ એમના બીજરૂપ હોય છે એવી ચેરડી આદિને
 પર્વબીજ વનસ્પતિકાયિક કહે છે

(૪) સ્કન્ધબીજ એનું સ્કન્ધ જ બીજરૂપ હોય છે એવી સલ્લકી
 આદિ વનસ્પતિને સ્કન્ધબીજ વનસ્પતિકાયિક કહે છે

આ પ્રમાણે વનસ્પતિકાયિક જીવોનાં ચાર સ્થાનનું નિરૂપણ કરીને કહે

દધાનાસ્તદ્વિરાધકાથ મહાઽઽરમ્મમહાપરિગ્રહત્વેન નરકે ગચ્છન્તીતિ નારકજી
વાનાશ્રિત્ય તદાહ—“ ચઉર્ધ્વિ ” इत्यादि—चतुर्भिः=चतुःसंख्येः, स्थानैः, अधुनो-
पपन्नः=तत्कालोपपन्नः, नैरयिकः—अयः—शुभं सुखं, निर्गतमयो यस्मादिति निरयो-
नरकस्तत्र भवो नैरयिकः=नारकः, तस्यान्यत्र गमना-सामर्थ्यं दर्शयितुमाह—
“ णेरइयलोगंयी ” – ति नैरयिकलोके=नारकलोके स्थितः सन् मानुषं लोकं
' हव्यं ' इति वाक्यालङ्कारे, आगन्तुम् इच्छेत् किन्तु आगन्तुम् नो चैव=नैव,

અવ સૂત્રકાર યહ પ્રકટ કરતે હૈં કિ જો જીવ इनमें जीव हँ ऐसी बात
पर विश्वास नहीं करते हैं तथा—इनकी विरोधना करते हैं वे जीव
महारम्भ महापरिग्रहवाले होने के कारण नरक में जाते हैं। वहां जाकर
वे नारक जीव इस लोक में मनुष्यलोक में किन कारणों से आने की
चाहना करते हैं ३ यहां मनुष्यलोक में उनके आने की चाहना का कारण
ऐसा है कि—जो नया नारक जीव वहां उत्पन्न होता है वह वहां रहता
हुवा जो वहां, की अतिप्रबल रूप से उत्पन्न असातवेदनीयरूप वेदना
को अनुभव करता है, तब—वह यहां मनुष्यलोक में आने की कामना
करता है परन्तु—शीत उष्ण आदि तीव्र वेदना से युक्त होने के
कारण वह यहां नहीं आ सकता है ? जहां से अय-शुभ-सुख निर्गत
हो गया है वह निरय नरक है इस निरय में जो उत्पन्न होता है वह
नैरयिक है, यहां सूत्र में “ हव्य ” यह पद वाक्यालङ्कार में प्रयुक्त हुवा

સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરે છે કે—કેટલાક જીવો વનસ્પતિઠાચિકામા જીવે છે,
એ વાતને શ્રદ્ધાની નજરે જોતા નથી. તેઓ તેમની વિરોધના કર્યા કરે છે.
એવા જીવો મહારમ્ભ અને મહાપરિગ્રહવાળા હોવાને કારણે નરકમાં જાય છે,
ત્યાં ઉત્પન્ન થયા બાદ તે નારક જીવો કયા કયા કારણોને લીધે આ મનુષ્ય
લોકમાં આવવાની ઇચ્છા કરે છે, તે વાત હવે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—

પહેલું કારણ આ પ્રમાણે છે—નરકમાં ઉત્પન્ન થયેલો નવો જીવ ત્યાં
ઉત્પન્ન થતાની સાથે જ ત્યાંની અતિ પ્રબલ અસાતાવેદનીય રૂપ વેદનાનો
અનુભવ કરે છે આ વેદના સહન નહીં થઈ શકવાને કારણે તે આ મનુષ્ય-
લોકમાં આવવાની ઇચ્છા કરે છે, પરન્તુ શીત ઉષ્ણ આદિ તીવ્ર વેદનાથી
અભિભૂત હોવાને કારણે તે અહીં આવી શકતો નથી.

બીજાથી અય એટલે કે શુભ-સુખ નિર્ગત થઈ ગયું હોય છે, એવા
સ્થાનનું નામ નિરય (નરક) છે તે નિરયમા ઉત્પન્ન થતા જીવને નૈરયિક
કહે છે, અહીં સૂત્રમા “ હવ્ય ” આ પદ વાક્યાલંકાર રૂપે વપરાયું છે

શકનોતિ=સમર્થો મવતિ, તથા હેતુમાહ—“ત અહતિ-તથા”-અપુનોપપન્ન
 તત્કાલોપપન્ના, નૈરયિકા, નિરયલોકે સમુદ્ભૂતાં-સમ્=અતિમનઃપ્રવૃત્તયા, ઉદ્ભૂતામ્
 =ઉત્પન્નાં, મનન્તાશ્રાવણેદનીયરૂપાં, વેદ્યમાનાઃ=અનુમવન્ માનુષ લોકમ્ આમન્તુ
 મિન્છેત્ કિન્તુ આગન્તુ નૈવ શકનોતિ, શ્રીતોષ્ણાદિતીવ્રવેદનાઽમિમૂતત્વાત્ ૧,
 તથાઽપુનોપપન્નો નૈરયિકો નિરયલોકે નિરયપાસૈ =અમ્ભામ્બરીપાદિભિઃ પરમાધ્યા
 મિકૈર્મૂયો મૂયાઃ=પુનઃ પુનઃ, અધિષ્ઠીયમાનાઃ=આક્રમ્યમાણો હન્યમાન इत्यર્થઃ,
 માનુષ લોકં હૃષ્યમાગન્તુમિન્છેત્, કિન્તુ આગન્તુ નૈવ શકનોતિ, નિરયપાસૈ=યતિ
 રહ્યમાનત્વાત્ ૨,

પુનર્નરકાન્મનુષ્યલોકે નૈરયિકસ્વાઽગમનાસમર્થત્વે કારણમાહ—“અહુષો
 વવન્ને” ઇત્યાદિ-અપુનાપપન્નો નૈરયિકો નિરયવેદનીય-વદિતું યોમ્યં વેદવીયં,
 નિરયે વેદનીય નિરયવેદનીય=નરકાનુમવનોય તસ્મિન્ કર્મભિ, અધીણે=અન્ટે
 હૈ દ્વિતીય કારણ મેં જો નિરયપાલ કહે ગયે હિં તરવ્ય અમ્બરીય ખાદિ
 પરમાધાર્મિક દેવ હિં ઓર-યે અસુરકુમાર જાતિ કે દેવ હોતે હિં । જબ
 કોઈ નવા નારક નરકલોક મેં સ્થપા હોતા હૈ તો યે ડસ પર આક્રમણ
 કરતે રહતે હું મારતે હિં આપસ મેં એક બુસર નારકોં કો કુસોં કી
 માતિ લડાતે હિં, અત -જય ઘહ ઘહાં કી એસી સ્થિતિ વેલતા હૈ તો વહ
 હસ મનુષ્યલોક મેં આને કી જામના કરતા હૈ પરન્તુ જો નહીં આ સક્તા
 હૈ ડસકા ઘહ બુસરા કારણ હૈ કિ-ડસે યે પરમાધાર્મિક નિરયપાલ રોક
 લેતે હિં હસલિયે ડનકે દ્વારા પ્રતિકુદ્રમાન હોને મેં વહ ઘહાં મનુષ્યલોક
 મેં ઘાહતા છુવા ખી નહીં આ પાતા દૈ ૨ । તીરાગ કારણ એમા હૈ કિ-
 નરક મેં ભોગને યોગ્ય જિસ કર્મ કા પાંચ જીવને ડસ નવે નારકી ને

બીજા કારણતુ નિરૂપણ-તે નરકોના અધિપતિ અમ્ભ, અમ્બરીય આદિ
 પરમાધાર્મિક દેવો હોય છે તેઓ અસુરકુમાર વ્રતિના દેવો છે જ્યારે મોઢ
 નવો નારક નરકમાં ઉત્પત્ત થાય છે ત્યારે તે પરમાધાર્મિક દેવો તેના ઉપર
 આક્રમણ કરે છે-તેને મારે છે તેઓ કૃતશબ્દોની જેમ નારકોને અદૃશ્ય અદૃ
 વશને છે નરકમાં આ પ્રકારની સ્થિતિ બોધને તે અપુનોપપન્ના નારકને આ
 મનુષ્યલોકમાં આવવાની ઇચ્છા થાય છે પરન્તુ તે અહીં અપી શકતો નથી,
 તેનું કારણ બે છે કે તેને પરમાધાર્મિક નિરયપાલો દેહી શખે છે આ રીતે
 તેમના દ્વારા પ્રતિકુદ્રમાન થવાને કારણે તે મનુષ્યલોકમાં આવવાની ઇચ્છા
 થવા છતાં અપી શકતો નથી.

ત્રીજા કારણતુ સ્પષ્ટીકરણ-નરકમાં લોભવવા ચોગ્ય એ કમનો બાપ તે
 નવા નારકે ક્યો હોય છે તેને બ્યાં મુખી તે જુલુકે લોભનીને નિમૂલ કરી

અવેદિતે=અનનુભૂતે અત એવ અનિર્જીર્ણે=જીવપ્રદેશેભ્યોઽપરિશટિતેઽપૃથક્ભૂતે સતિ માનુષં લોકં હવ્યમાગન્તુમિચ્છેત્ પરન્તુ માનુષં લોકં હવ્યમાગન્તું નૈવ શક્નોતિ, અવશ્યવેદનીયનારકકર્મનિગડનિવદ્ધત્યાત્ ૩ ।

તથા “ એવ ”-મિત્યાદિ-એવમ્=અનેન પ્રકારેણ, અધુનોપપન્નો નૈરયિકો નિરયાયુષ્કે-નિરયો-નરકસ્તદ્ભોગ્યાયાયુઃ=પ્રાણધારણાવધિકાલો यस્ય તન્નિરયા-ઽઽયુષ્કં તસ્મિન્ નિરયાઽઽયુષ્કે કર્મણિ અક્ષીણેઽવેદિતેઽનિર્જીર્ણે ચ સતિ નિર-યાન્માનુષં લોકમાગન્તુમિચ્છતિ, પરન્તુ માનુષં લોકમાગન્તું નૈવ શક્નોતિ, સ્વોપા-ર્જિતકર્મણોઽક્ષીણત્વાનનુભૂત - ત્વાન્નિર્જીર્ણત્વેન વદ્ધકર્મણોઽવશ્યભોગ્યત્નાદિતિ પરમાર્થઃ ૪ ।

“ ઇચ્છેદ્દિ ”-ઇત્યેતૈઃ, ચતુર્મિશનન્તરોક્તૈઃ સ્થાનૈઃ, અધુનોપપન્નો નૈરયિકો નૈરયિકલોકે સ્થિતઃ સન્ માનુષં લોકં હવ્યમાગન્તુમિચ્છેત્ પરન્તુ નૈવ હવ્યમા-ગન્તું શક્નોતિ, ઉક્તકારણકલાપાત્ ।

પૂર્વે નારકાણાં સ્વરૂપમુક્ત, તે ચ નારકા અસંયમજનકપરિગ્રહ-વશાદુત્પદ્યન્તે હિતિ તદ્વિપક્ષભૂતં પરિગ્રહવિશેષં વર્જિતું સાધ્વીનાં કલ્પનીયવત્ત્રવિશેષં દર્શયિતુમાહ-કિયા હૈ જવ તક ઉસે વહ પૂર્ણ રૂપ સે ભોગકર નિર્જીર્ણ નહીં કર દેતા હૈ તથ તક વહ નરકલોક સે નહીં નિકલ સકતા હૈ, કયોં કિ-વહ અવશ્ય વેદનીય નારક કર્મરૂપી નિગડ વેડી સે જકડા રહતા હૈ । તથા ચતુર્થ કારણ એસા હૈ કિ-જો ડન બચે નારકી ને વહાં કી આયુ કા બન્ધ કિયા હૈ ઉસે ભોગે વિના વહ વહાં સે નહીં નિકલ સકતા હૈ । ઇસ તરહ વદ્ધ કર્મ અવશ્ય ભોગ્ય હોને સે વહ વહીં રહતા હૈ વહાં સે બાહર નહીં આ સકતા હૈ । ૮

જીવ અસયમ જનક પરિગ્રહ કે વશ સે નારક રૂપ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઇસલિયે પરિગ્રહ રહિત સાધ્વી કા કથન સૂત્રકાર પ્રગટ કરતે હૈં-“ કપ્પંતી ” ઇત્યાદિ—

નાખતો નથી, ત્યા સુધી તે નરકલોકમાથી નીકળી શકતો નથી, કારણ કે અવશ્ય વેદનીય નારક કર્મરૂપ બેડીથી તે બંધાયેલો રહે છે

એથા કારણતુ નિરૂપણ—તે નવા નારકે નરકાયુનો બે બન્ધ કર્યો હોય છે તેને ભોગવ્યા વિના તે ત્યાંથી નીકળી શકતો નથી આ રીતે બદ્ધ કર્મ અવશ્ય ભોગ્ય હોવાને લીધે તેને ત્યાંજ રહેવું પડે છે-ગમે તેટલી ઇચ્છા કરવા છતાં તે અહીં આવી શકતો નથી

અસયમજનક પરિગ્રહને કારણે જીવ નારક રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે. હવે તેનાથી વિપરીત એવી પરિચક્રરહિત સાધ્વીનું સૂત્રકાર કથન કરે છે—

“ કર્ણંતી ”-ત્યાદિ-“ નિર્ગ્રન્થીનામ્ ” પ્રત્યા વચ્ચે - હિરણ્યસુવર્ણાદિર્મિ
 ધ્યાત્વાદિથ સ્માન્નિષ્કાન્તા નિર્ગ્રંધ્ય (શાર્ફરનાવેરાકૃતિગણતયા કીન)
 તાસાં નિર્ગ્રન્થીનાં=સાધ્વીનાં, વત્સા=વત્સ સપ્તાઃ, સપાટયા=ઉત્તરીયવચ્ચવિશેષાઃ,
 ધારયિતું કર્યન્તે इत्यन्यथक्रम, સાધ્વતુર્વિધા સજ્ઞાટીઃ ક્રમેણોપદર્શયિતુમાઈ-
 “ તથા ”-ત્યાદિ, પદ્યા=પ્રથમા સપાટી, દ્વિસ્તવિસ્તારા-ત્રી દસ્તી વિસ્તાર
 આપામો દૈર્ઘ્યં યસ્યાઃ સા સપામૃતા, સા વચ્ચતે ૧, પર્વ ‘ વો -દ્રે, “ વિસ્ત
 યિત્યારા ”-ત્રિસ્તવિસ્તારે-ત્રિસ્તપ્રમાણાડ્ડયામ સપાટયી ધારયિતું કર્યવે
 इत्यर्थः ૧, “ પ્રગાચઉત્તરયિત્યારા ”-પદ્યા=અપરા ચતુર્સ્તવિસ્તારા ધારયિતું
 કર્યવે, ત્રપ્ર પ્રથમા દ્વિસ્તવિસ્તારા સપાટી-ઉપાધ્યે ધારણીયા ૧, ત્રિતોય-
 ત્વોયે-ત્રિસ્તવિસ્તારે દ્રે કયિતે ત્રૈકા મિસાટનઠાછે ધાર્યા, અપરાચ સ્થષ્ઠિ

હિરણ્ય સુવર્ણ આવિરૂપ યાજ્ઞ પરિગ્રહ ઔર-મિધ્યાત્માદિરૂપ
 અન્તરંગ પરિગ્રહ इन दोनों प्रकार के परिग्रह से साध्वीजन निष्कान्त
 રહિત હોતે હિં અતઃ યે નિર્ગ્રન્થી કહલાતી હિં। સાધ્વીજનોં કો
 ચાર ઉત્તરીય વચ્ચવિશેષ આદર કલ્પનીય કહે ગયે હિં। વો હાથ કી
 લમ્પાઈ ચૌકાઈ હોતી હિં પેસા જો ઉત્તરીય વચ્ચ-આદર હિં વહ પ્રથમ
 સજ્ઞાટી મેં લિયા ગયા હિં। ત્રીન હાથ કી જિનકી લમ્પાઈ ચૌકાઈ હિં પેસે
 વો વચ્ચ ત્રિતીય ઔર તૃતીય સજ્ઞાટી મેં લિયે ગયે હિં। ચાર હાથ જિનકી
 લમ્પાઈ ચૌકાઈ હોતી હિં-પેસા એક વચ્ચ ચૌધી સજ્ઞાટી મેં લિયા ગયા
 હિં। યે ચાર આદર સાધ્વીજનોં કો ધારણ કરને કે યોગ્ય કહે ગયે હિં,
 इनमें जो प्रथम प्रकार की सज्ञाटी है वह तो उन्हें उपोध्य में ही धारण
 કરને યોગ્ય કહી ગઈ હિં। ત્રિતીય ઔર તૃતીય પ્રકાર કી જો સજ્ઞાટી
 હિં इन दोनों में एक मिश्राटन के समय में धारण करने योग्य कही गई

કર્ણંતી ” ઇત્યાદિ-હિરણ્ય સુવર્ણ આદિ રૂપ આજ્ઞ પરિગ્રહથી અને
 મિધ્યાત્મ આદિ રૂપ અન્તરંગ પરિગ્રહથી સાધ્વીજો રહિત હોય છે, તેથી તે
 સાધ્વીજોને નિર્ગ્રંથીજો કહેવામા આવે છે તે સાધ્વીજોને ચાર ઉત્તરીય વચ્ચ
 વિશેષ (આદર) કહે છે તેમને જે ચાર સપાટીજો (આદર) કહે છે
 તેનું સુત્રાકર કહે નિરૂપણ કરે છે—

(૧) જે હાથની લગાઈવાળા ઉત્તરીય વ અને (આદરને) પ્રથમ સપા
 ટીમાં પરિવ્રજિત કરવામાં આવ્યું છે (૨) ત્રણ હાથની લગાઈવાળા બે વચ્ચોને
 દ્વિતીય અને તૃતીય સપાટીમાં ગણાવવામાં આવેલ છે (૩) ચાર હાથની
 લગાઈવાળા એક વચ્ચને ચોથી સપાટીમાં ગણાવવામાં આવેલ છે આ ચાર
 પ્રકારની આદર સાધ્વીજોને ધારણ કરવા યોગ્ય કહી છે તેમાંથી ૧ પહેલા
 પ્રકારની સપાટી કહી છે તે તે તેમને ઉપાધ્યમાં જ ધારણ કરવા યોગ્ય કહી
 છે બીજા અને ત્રીજા પ્રકારની જે બે સપાટીજો કહી છે તેમાંથી એક મિશ્ર

લભૂમિગમનકાળે ૩, ચતુર્થી ચતુર્હસ્તવિસ્તારા સમવસરણે ધારણીયા, તદુક્તં ચ—
“ સંઘાડીઓ ચરો, તત્થ દુહ્તથા ઉવસયંમિ । દુગ્ગિ તિહ્તથાયામા મિલ્લસદ્ધા
એ એ ઉચ્ચારે । ઓસરણે ચરુહ્તથા નિસણપચ્છાયણી ણેયા । ૧ । ” ઇતિ, સૂ. ૮

છાયા-સંઘાટચત્તરસ્ત્રસ્ત્ર દ્વિહસ્તા ઉપાશ્રયે । દ્વે ત્રિહસ્તાઽઽયાને મિલ્લાયે
एका उच्चारे चैका अवसरणे चतुर्हस्ता निषण्णप्रच्छादनी ज्ञेया । १ । ” ઇતિ,

નારકત્વં ધ્યાનવિશેષજનિતં, તં જનયિતું ચ સઙ્ગાટ્યાદિગ્રહણમિતિ પ્રસજ્ઞા-
દ્ધ્યાનસ્વરૂપમાદ —

મૂલમ્—ચત્તારિ જ્ઞાણા પળ્લક્ષણા, તં જહા—અદે જ્ઞાણે ૧, રોદ્દે
જ્ઞાણે ૨, ધમ્મે જ્ઞાણે ૩, સુક્કે જ્ઞાણે ૪, અદે જ્ઞાણે ચઉઠ્ઠિવહે પળ્લક્ષણે
તં જહા—અમણુદ્ધસંપઓગસંપઉત્તે તસ્સ વિપ્પઓગસદ્ધસમળ્લક્ષણા-
ગણ યાવિ ભવઈ ૧, મણુદ્ધસંપઓગસંપઉત્તે તસ્સ અવિપ્પઓગ-
સદ્ધસમળ્લક્ષણાગણ યાવિ ભવઈ ૨, આયંકસંપઓગસંપઉત્તે તસ્સ
વિપ્પઓગસદ્ધસમળ્લક્ષણાગણ યાવિ ભવઈ ૩, પરિજુસિયકામભોગ-
સંપઓગસંપઉત્તે તસ્સ અવિપ્પઓગસદ્ધસમળ્લક્ષણાગણ યાવિ ભવઈ
૪ । અદ્દસ પં જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ લક્ષણા પળ્લક્ષણા, તં જહા—
કંદળયા ૧, સોયળયા ૨, તિપ્પળયા ૩, પરિદેવળયા ૪ । સદ્દે જ્ઞાણે
ચઉઠ્ઠિવહે પળ્લક્ષણે, તં જહા—હિંસાણુબંધિ ૧, મોસાણુબંધિ ૨,
તેણાણુબંધિ ૩, સારલક્ષણાણુબંધિ ૪ । રુદ્ધસ પં જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ
લક્ષણા પળ્લક્ષણા, તં જહા—ઓસળ્લક્ષણો ૧, બહુલો ૨, અન્ના-

है और—दूसरी स्थण्डिलभूमि में गमन करने के समय में धारण करने
योग्य कही गई है । और चौथी सङ्घाटी समवसरण में धारण करने
योग्य कही गई है । उक्तञ्च—“ संघाडीओ चरओ तत्थ ” इत्यादि ॥ ८ ॥

તને સમયે ધારણ કરવા યોગ્ય કહી છે અને બીજી સ્થંડિલભૂમિમાં ગમન
કરતી વખતે ધારણ કરવા યોગ્ય કહી છે, અને ચોથી સંઘાટી સમવસરણમાં
ધારણ કરવા યોગ્ય કહી છે કહું પણ છે કે “ સંઘાડીઓ ચરો તત્થ ” ઇત્યાદિ—સૂ. ૮

ળદોસે૩, આમરળતદોસે ૪ । ધમ્મે જ્ઞાણે ચત્તવિહે ચત્તપ્પહો
યારે પળ્લત્તે, ત જહા-આળાવિચપ્પ ૧, અવાયવિચપ્પ૨, વિવા
ગવિચપ્પ૩ સઠાળવિચપ્પ ૪ । ધમ્મસ્સ ણ જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ
લક્ષણા પળ્લત્તા, ત જહા આળારુઠ્ઠ ૧, નિસમ્મરુઠ્ઠ૨, સુત્તરુઠ્ઠ
ઓગાદરુઠ્ઠ ૪ । ધમ્મસ્સ ણ જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ આલવળા પળ્લત્તા,
ત જહા-વાયળા ૧, પહ્ધિપુચ્છળા ૨, પરિયટ્ટળા૩, અણુપ્પેહા૪ ।
ધમ્મસ્સ ણ જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ અણુપ્પેહાઓ પળ્લત્તાઓ, ત જહા
-પગાણુપ્પેહા ૧, અણિચ્ચાણુપ્પેહા૨, અસરળાણુપ્પેહા૩, સસારા
ણુપ્પેહા ૪ । સુક્કે જ્ઞાણે ચત્તવિહે ચત્તપ્પહોઆરે પળ્લત્તે, તં
જહા-પુહુત્તવિયક્કસવિયાર ૧, પગત્તવિયક્ક અવિયાર ૨, સુહુ
મકિરિય અણિયટ્ટી ૩, સમુચ્છિન્નકિરિય અપ્પહિવાર્ઠ ૪ । સુક્કસ્સ
ળ જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ લક્ષણા પળ્લત્તા, ત જહા - અવ્વહે ૧,
અસમ્મોહે ૨, વિવેગે ૩, વિડસ્સગ્ગે ૪ । સુક્કસ્સ ણ
જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ આલવળા પળ્લત્તા, ત જહા - સ્વત્તી ૧, મુત્તી ૨,
અજ્જવે ૩, મહવે ૪ । સુક્કસ્સ ણ જ્ઞાણસ્સ ચત્તારિ અણુપ્પેહાઓ
પળ્લત્તાઓ, ત જહા-અળંતવત્તિયાણુપ્પેહા ૧, વિપ્પરિણામાણુ
પ્પેહા ૨, અસુમાણુપ્પેહા ૩, અવાયાણુપ્પેહા ૪ ॥ સૂ. ૧ ॥

નારકત્વ ધ્યાનવિશેષ થી જનિત થોતા હે અતઃ ઉત્ત ધ્યાનવિશેષ
કો ઉત્પન્ન કરન કે સઘાટી આદિ મેં મમતા મૂઢ્ઢી રત્ત્વને સે થોતા હે
સો ઇમ પ્રસંગ કો લેકર અય સૂત્રકાર ધ્યાન કા સ્વરૂપ કરતે હે—

નારકત્વ ધ્યાનવિશેષથી જનિત થોય છે અને તે ધ્યાનવિશેષને ઉત્પન્ન
કરનાર સઘાટી (વશવિશેષ) આદિમાં મમતા-મૂઢ્ઢી સંજ્ઞાથી તે ધ્યાનની
ઉત્પત્તિ થાય છે આ સંજ્ઞાને અનુભવીને હવે સૂત્રકાર ધ્યાનના સ્વરૂપ
નિરૂપણ કરે છે—“ ચત્તારિ જ્ઞાણા પળ્લત્તા ” ઇત્યાદિ—

छाया—चत्वारि ध्यानानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—आर्तं ध्यानं १ रौद्रं ध्यानं २, धर्मं ध्यानं ३, शुक्लं ध्यानम् ४। आर्तं ध्यानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा—अमनोज्ञसंप्रयोगसंप्रयुक्तः, तस्य विप्रयोगस्मृतिसमन्वागतं चापि भवति १, मनोज्ञसंप्रयोगसम्प्रयुक्तः, तस्य अविप्रयोगस्मृतिसमन्वागतं चापि भवति २, आतङ्कसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तः, तस्य विप्रयोगस्मृतिसमन्वागतं चापि भवति ३, परिजृष्टकामभोगसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तः, तस्य अविप्रयोगस्मृतिसमन्वागतं चापि भवति ४। आर्तस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—क्रन्दनता १, शोचनता २, तेपनता ३, परिदेवनता ४। रौद्रं ध्यानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा—हिंसाऽनुबन्धि १

“चत्वारि ज्ञाणा पणत्ता” इत्यादि—१०

सूत्रार्थ—ध्यान चार कहे गये हैं, जैसे आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ और शुक्लध्यान ४, इनमें आर्तध्यान चार प्रकार का कहा गया है जैसे अमनोज्ञ वस्तुओं का सम्प्रयोग सम्बन्ध होनेपर जो उसके साथ वियोग के लिये बार २ चिन्तन होता है वह आर्तध्यान का प्रथम भेद है १ मनोज्ञ वस्तुओं का वियोग न होनेका बार २ चिन्तन करना यह आर्तध्यान का दूसरा भेद है २। आतङ्क से युक्त होने पर उससे वियोग होने का बार २ चिन्तन करना यह तृतीय कक्षा का आर्तध्यान है ३। प्राप्त हुवे कामभोग का अविनाश की तथा—नहीं प्राप्त हुवे पदार्थों की प्राप्ति के लिये बार २ चिन्तन करना यह चतुर्थ भेदवाला आर्तध्यान है ४। आर्तध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, जैसे क्रन्दनता १ शोचनता २ तेपनता ३ और परिदेवनता ४। रौद्रध्यान चार प्रकार का कहा गया है, जैसे—

सूत्रार्थ—ध्यान चार प्रकारनुं कहुं छे—(१) आर्तध्यान, (२) रौद्रध्यान, (३) धर्मध्यान अने (४) शुक्लध्यान तेमांथी आर्तध्यानना पञ्च चार प्रकार कहुं छे। (१) अमनोज्ञ वस्तुओंना संप्रयोग अथवा प्राप्ति थवाथी, तेनाथी वियोग थाय (तेनाथी छुटी जवाय) ओबुं जे बारबार चिन्तन थया करे छे, ते प्रकारना आर्तध्यानने पछेला अकारमां भूझी शकय छे (२) मनोज्ञ वस्तुना कही वियोग न थाय ओबुं बारबार चिन्तन करवु ते आर्तध्यानना भीजे लेह छे (३) कोई पञ्च प्रकारना आर्तक (रोगादि) थी युक्त थयेला ओव तेमांथी छुटवा भाटे बारबार जे चिन्तन करे छे तेने आर्तध्यानना त्रीज लेहमां भूझी शकय छे (४) प्राप्त थयेला कामलेगोना अविनाश भाटे अने अप्राप्त काम लेगोनी प्राप्ति भाटे बारबार चिन्तन करवु ते आर्तध्यानना योथो लेह छे आर्तध्यानना चार लक्षण कहुं छे—(१) क्रन्दनता, (२) शोचनता, (३) तेपनता अने (४) परिदेवनता.

મુપાન્નુવચિ? સ્તેપાનુવચિ, સરક્ષણાનુવચિ ઠા રોદ્રસ્ય સ્વલુ ધ્યાનસ્ય ચત્વારિ
 લખણાનિ મદ્ધાનિ, તથા-અવસન્નદોષઃ ૧, ચતુદોષઃ ૨, અજ્ઞાનદોષઃ ૩, આમ
 રણાન્તદોષઃ ઠા ધર્મ્ય ધ્યાન ચતુર્વિધ ચતુષ્પત્યવતારં મદ્ધપ્તમ્, તથા-આજ્ઞાવિ
 ચય ૧, અપાયવિચય ૨, વિપાકવિચય ૩, સસ્થાનવિચયમ્ ઠા ધર્મ્યસ્ય સ્વલુ
 ધ્યાનસ્ય ચત્વારિ લખણાનિ મદ્ધપ્તાનિ, તથા-આજ્ઞારુચિઃ ૧, નિર્સર્ગરુચિ ૨,
 સૂત્રરુચિ ૩, અવગાઢરુચિ ઠા ધર્મ્યસ્ય સ્વલુ ધ્યાનસ્ય ચત્વાર્પાલ્મ્બનાનિ મદ્ધ
 પ્તાનિ, તથા-વાચના ૧, પરિપ્રચ્છના ૨, પરિવર્તના ૩ અનુપ્રેક્ષા ઠા ધર્મ્યસ્ય
 સ્વલુ ધ્યાનસ્ય ચત્વોઽનુપ્રેક્ષાઃ મદ્ધપ્તા, તથા-પ્રકાનુપ્રેક્ષા ૧, અનિત્યાનુપ્રેક્ષા
 ૨, અશરણાનુપ્રેક્ષા ૩ સસારાનુપ્રેક્ષા ઠા શુક્લં ધ્યાનં ચતુર્વિધ ચતુષ્પત્યવતારં
 મદ્ધપ્તમ્, તથા-પૃથક્સ્વચિત્કર્ત્તસંવિચાર ૧, એકસ્વચિત્કર્ત્તસંવિચારં ૨, સૂક્ષ્મ

દ્વિસાનુબંધી ૧ મુપાનુબંધી ૨ સ્તેનાનુબંધી ૩ ઔર સરક્ષણાનુબંધી ૪।
 હવ રોદ્રધ્યાન કે ચાર લક્ષણ હૈં, અવસન્નદોષ ૧ ચતુદોષ ૨ અજ્ઞાનદોષ
 ૩ ઔર આમરણાન્તદોષ ૪। ધર્મધ્યાન કે ચાર પ્રકાર કહે ગયે હૈં,
 આજ્ઞાવિચય ૧ અપાયવિચય ૨ વિપાકવિચય ૩ ઔર સસ્થાનવિચય ૪।
 હવ ધર્મધ્યાન કે ચાર લક્ષણ કહે ગયે હૈં, જૈસે-આજ્ઞારુચિ ૧ નિર્સર્ગ
 રુચિ ૨ સૂત્રરુચિ ૩ ઔર-અવગાઢરુચિ ૪। ધર્મધ્યાન કે ચાર અવલમ્બન
 કહે ગયે હૈં, જૈસે-વાચના ૧ પરિપ્રચ્છના ૨ પરિવર્તના ૩ અનુપ્રેક્ષા ૪।
 ધર્મધ્યાન કી ચાર અનુપ્રેક્ષાઈ કહી गई હૈં, જૈસે-પ્રકાનુપ્રેક્ષા ૧ અનિ
 ત્યાનુપ્રેક્ષા ૨ અશરણાનુપ્રેક્ષા ૩ ઔર સસારાનુપ્રેક્ષા ૪

શ્રોત્રધ્યાન પણ ચાર પ્રકારનુ હલુ છે-(૧) દ્વિસાનુબંધી, (૨) મુપાનુબંધી
 (૩) સ્તેનાનુબંધી અને (૪) સરક્ષણાનુબંધી. આ શ્રોત્રધ્યાનના ચાર લક્ષણ
 નીચે પ્રમાણે છે-(૧) અવસન્નદોષ, (૨) ચતુદોષ (૩) અજ્ઞાનદોષ અને (૪)
 (૪) આમરણાન્તદોષ ધર્મધ્યાનના પણ ચાર પ્રકાર હલ્યા છે-(૧) આજ્ઞાવિચય
 (૨) અપાયવિચય, (૩) વિપાકવિચય અને (૪) સસ્થાનવિચય. આ ધર્મ
 ધ્યાનના નીચે પ્રમાણે ચાર લક્ષણ હલ્યા છે-(૧) આજ્ઞારુચિ, (૨) નિર્સર્ગરુચિ
 (૩) સૂત્રરુચિ અને (૪) અવગાઢરુચિ. ધર્મધ્યાનના ચાર અવલમ્બન (આધાર)
 હલ્યા છે-(૧) વાચના, (૨) પરિપ્રચ્છના (૩) પરિવર્તના અને (૪) અનુપ્રેક્ષા.
 ધર્મધ્યાનની ચાર અનુપ્રેક્ષાઓ હલ્યા છે-(૧) પ્રકાનુપ્રેક્ષા, (૨) અનિત્યાનુપ્રેક્ષા
 (૩) અશરણાનુપ્રેક્ષા અને (૪) સસારાનુપ્રેક્ષા.

શુક્લધ્યાનના પણ ચાર પ્રકાર હલ્યા છે-(૧) પૃથક્સ્વચિત્ત સંવિચાર, (૨)

ક્રિયાઽનિવર્તિ ૩, સમુચ્છિન્નક્રિયાઽપ્રતિપત્તિ ૪। શુક્લસ્ય સ્વલુ ધ્યાનસ્ય ચત્વારિ લક્ષણાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તદ્વથા-અવ્યયમ્ ૧, અસમ્મોહં ૨, વિવેકઃ ૩, વ્યુત્સર્ગઃ ૪। શુક્લસ્ય સ્વલુ ધ્યાનસ્ય ચત્વાર્યાલમ્બનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્વથા-ક્ષાન્તિ ૧, મુક્તિઃ ૨, આર્જવં ૩, માર્દવમ્ ૪। શુક્લસ્ય સ્વલુ ધ્યાનસ્ય ચત્સોઽનુપ્રેક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-અનન્તવર્તિતાઽનુપ્રેક્ષા ૧, વિપરિણામાનુપ્રેક્ષા ૨, અશુભાનુપ્રેક્ષા ૩ અપાયાનુપ્રેક્ષા ૪। (સુ. ૧૦) ॥

“ ચત્વારિ જ્ઞાણા ” इत्यादि-चत्वारि=चतुःसंख्यानि, ध्यानानि ध्यायते-चिन्तयते वस्तु यैरिति ध्यानानि=अन्तर्मुहूर्तमात्र कालं चित्तस्थिरतारूपाणि, उक्तं च-“ अंतोमुहुत्तमित्तं चित्तावस्थाणमेववत्पुष्पि । छउमत्थाणं, ज्ञाणं जोगनिरोहो जिणाणं तु । १ । ” इति,

શુક્લધ્યાન ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, જૈસે-પૃથક્ત્વવિતર્ક સવિચાર ૧ એકત્વવિતર્કવિચાર ૨ સૂક્ષ્મક્રિયાઽનિવર્તિ ૩ ઔર સમુચ્છિનક્રિયાઽપ્રતિપત્તિ ૪। इस शुक्लध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, जैसे-अव्यय १ असम्मोह २ विवेक ३ और व्युत्सर्ग ४। शुक्लध्यान के चार आलम्बन कहे गये हैं, जैसे-क्षान्ति १ मुक्ति २ आर्जव ३ और मार्दव ४। शुक्लध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ कही गई हैं, जैसे-अनन्तवर्तिताऽनुप्रेक्षा १ विपरिणामाऽनुप्रेक्षा २ अशुभाऽनुप्रेक्षा ३ और अपायाऽनुप्रेक्षा ४।

વિશેષાર્થ—“ ધ્યાયતે વસ્તુ અનેનેતિ ધ્યાનં—” इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिसके द्वारा वस्तु का चिन्तन किया जाता है वह ध्यान है ध्यान एक अन्तर्मुहूर्त काल तक चित्त की स्थिरतारूप रहता है। कहा भी है-अंतो मुहुत्तमित्तं इत्यादि

એકત્વ વિતર્કવિચાર, (૩) સૂક્ષ્મક્રિયા અનિવર્તિ અને (૪) સમુચ્છિન ક્રિયા અપ્રતિપત્તિ શુક્લધ્યાનના ચાર લક્ષણ નીચે પ્રમાણે કહ્યા છે-(૧) અવ્યય, (૨) અસમોહ (૩) વિવેક અને (૪) વ્યુત્સર્ગ

શુક્લધ્યાનના નીચે પ્રમાણે ચાર અલંબન કહ્યા છે-(૧) ક્ષાન્તિ, (૨) મુક્તિ, (૩) આર્જવ અને (૪) માર્દવ શુક્લધ્યાનની ચાર અનુપ્રેક્ષાઓ કહી છે-(૧) અનન્તવર્તિતા અનુપ્રેક્ષા, (૨) વિપરિણામાનુપ્રેક્ષા, (૩) અશુભાનુપ્રેક્ષા અને (૪) અપાયાનુપ્રેક્ષા

વિશેષાર્થ—“ ધ્યાયતે વસ્તુ અનેન इति ध्यानम् ” આ વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે જેના દ્વારા વસ્તુનું ચિન્તન કરાય છે, તેનું નામ ધ્યાન છે તે ધ્યાન એક અન્તર્મુહૂર્તકાલ સુધીની ચિત્તની સ્થિરતારૂપ હોય છે કહ્યું પણ છે કે— “ અંતો મુહુત્તમિત્તં ” ઇત્યાદિ—

જાયા—મન્ત્રમુહર્ત્તે માર્થં વિધાવસ્થાનમેકસ્તુનિ । છઠ્ઠસ્થાનાં ધ્યાન
યોગવિરોધો જિનાતો વુ ॥૧॥ પ્રશ્નપ્તાનિ, તથા—“ મદ્દે ”-માર્તમ્-ધુત-દુ સમ્
ચરીરં માનસ ય, તપચારાદ્દુ સ્તનિમિષ વા, તપ મરમાર્તમ્, ધ્યાનમ્-ધ્યયત્રિપયે
અધિષ્ઠિતતૈલધારાવન્નિર-તરચિત્તચ્છિન્નવા ૧, ‘ રોદે ’-રોદયત્યપરાનિતિ
રુદ્રો દુઃસ્વહેતુસ્તન કૃતં તત્કર્મ વા રોદ્ર=દિસાપતિક્રીયાંતુગત ધ્યાનમ્ ૨,

ધ્યાન જો ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હે ઉસમેં સર્વ પ્રથમ જો આર્ત
ધ્યાનરૂપ પદલા મેદ પતલાયા ગયા હે ઉસકા તાત્પર્યે પેસા હે ફિ-જો
ધ્યાન શારીરિક યા માનસિક દુઃખ કે સમય મેં, યા શારીરિક માન
સિક દુઃખ કે નિમિષ મેં હોતા હે વહ-આર્તધ્યાન હે । યેવ પદાર્થ કે
વિષય મેં અધિષ્ઠિતરૂપ સે તૈલધારા કી તરહ જો ચિત્તવૃત્તિ કા પ્રવાહ
હે, વહ ધ્યાન હે । યહ ધ્યાન સમસ્ત સમારી જીવોં કો હોતા હે ધ્યાન
અન્તમુહૂત તક હી હે હસકે યાદ ચિત્તવૃત્તિ કી ધારા પદલ જાતી હે ।
ક્ષત નામ દુઃખ કા હે જિસ ધ્યાન કે હોન મેં દુઃખ કા ઉદ્દેગ યા તીવ્રતા
નિમિષ હે વહ આતધ્યાન હે । રોદ્ર નામ દુર પરિણામોં કો હે જો ધ્યાન
દુર પરિણામોં કે નિમિષ સે હોતા હે યદ રોદ્રધ્યાન હે, યહી યાત
“રોદયતિ પરાન્ હતિરુદ્રઃ દુઃખહતુઃ, તેન મૂલ તત્કર્મ વા રોદ્ર” જો દુસરોં
કો કતાતા હે, વહ રુદ્ર હે દુઃખ કા હતુ હે હસસે ક્રિયા ગયા અથવા
હસકા જો કમ હે વહ રોદ્ર હે । પેસા રોદ્રધ્યાન દિસા આદિ અતિદુર

ધ્યાના ચાર પ્રકાર કહા છે તેમને આતધ્યાન નમને એ પહેલો
પ્રકાર છે તેનું કહે નિરુપ્ત કરવામાં આવે છે-“ જે ધ્યાન શારીરિક અથવા
માનસિક દુઃખને વખતે-અથવા શારીરિક કે માનસિક દુઃખને નિમિષ યાવ
છે તે ધ્યાનનું નામ આતધ્યાન છે યેવ પદાર્થના વિષયમાં અતુલ તેજની
પ્રકાશ એવો જે ચિત્તવૃત્તિનો પ્રવાહ છે તેને ધ્યાન કહે છે આ ધ્યાનને સહ
આજ સમય સુધી લોકોમાં કોય છે તેનો કોણ અન્તમુહૂત પદાનો કો
કહ્યો છે, ત્યારબાદ ચિત્તવૃત્તિની ધારા બદલાઈ આવે છે દુઃખને ‘ ક્ષત ’ કહે
છે જે ધ્યાન યાવમાં જન (દુઃખ) નો ઉદ્દામ કે નીતિ નિમિષાવ છે, તે
ધ્યાનનું નામ આતધ્યાન છે દુર પરિણામને (અન્તમાત્માને) રોદ્ર કહે છે
જે ધ્યાન દુર પરિણામને નિમિષ યાવ છે તે ધ્યાનને રોદ્ર ધ્યાન કહે છે
જે જ વખત ધિવન્દ્ય સુવમા પ્રકટ કરી છે- ‘ રોદયતિ પરાન્ હતિરુદ્રઃ દુઃખહતુઃ,
તદ્દે જા તત્કર્મ વા રોદ્ર ’ જે અર્થને કાઢી છે તે રુદ્ર છે દુઃખના કારણરૂપ
છે તેના કારણે કરવામાં આવે છે અથવા તેનું જે કમ છે તે રોદ્ર છે
એનું રોદ્રધ્યાન દિસા આદિ અતિદુર પરિણામોં નિમિષને લીધે થયે છે

ધર્મ્યમ્-ધર્મોદનપેતં=યુક્તં ધર્મ્યં = શ્રુતચરણાદિધર્મોપેતમિત્યર્થઃ, ધ્યાનમ્
શુક્લમ્-શોધયત્યષ્ટપ્રકારં કર્મમલં, શુચં-શોકં વા કલમયત્યપનયતીતિ નિરૂક્ત્યા
શુક્લં=મોક્ષાદિફલસાધકં ધ્યાનમ્ ૪।

તત્રાઽઽતૈ ધ્યાનં ચતુર્વિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્યથા-અમનોજસમ્પ્રયોગસમ્પ્રયુક્તઃ-
અનિષ્ટશબ્દાદિ સમ્બન્ધજનિતઃ સમ્પ્રયોગઃ-સમ્બન્ધસ્તેન સમ્પ્રયુક્તઃ-સહિતો યઃ
પુરુષસ્તસ્ય યત્ “ વિપ્પબોગે ”-ત્યાદિ-વિપ્રયોગસ્મૃતિસમન્વાગતં-વિપ્રયોગઃ-
અનિષ્ટશબ્દાદિવિયોગઃ, તસ્ય સ્મૃતિઃ-ચિન્તા વિપ્રયોગસ્મૃતિઃ, તસ્યાઃ સમન્વાગતં-
સમન્વાગમનં-સંપ્રાપ્તિર્ભવતિ તત્ “ ચાપિ ” ઇતિ વાક્યાલઙ્કારે એવં સર્વત્ર ૧

પરિણામોં કે નિમિત્ત સે હોતા હૈ । इस कथन द्वारा व्यक्त की गई है ।
जो ध्यान शुभराग और सदाचरण का पोषक होता है वह धर्मध्यान है,
अर्थात्-श्रुत और चारित्र धर्म से सहित जो ध्यान है वह धर्मध्यान है
मन की अत्यन्त निर्मलता होने पर जो एकाग्रता होती है वह शुक्ल-
ध्यान है “ शुक्लं शोधयति अष्टप्रकारं कर्ममलं शुचं शोकं वा कलम-
यति अपनयति शुक्लम् ” जो आठ प्रकार के कर्ममल की शुद्धि कर देता
है, अथवा-शोक को दूर कर देता है वह शुक्ल है, ऐसा जो ध्यान है
वह शुक्लध्यान है यह ध्यान मोक्ष आदि फल का साधक होता है ।
आर्तध्यान जो चार प्रकार का कहा गया है उसका वाच्यार्थ ऐसा है
“अमनोज्ञ संप्रयोगसंप्रयुक्तः” इत्यादि, अमनोज्ञ अनिष्ट जो शब्दादिकका
संप्रयोग सम्बन्ध इस सम्बन्ध से सम्प्रयुक्त-सहित जो पुरुष ऐसे पुरुष
को दूर करने के लिये जो मन में एक प्रकार की निश्चलता का आना

જે ધ્યાન શુભરાગ અને સદાચરણનું પોષક હોય છે, તે ધ્યાનને ધર્મ-
ધ્યાન કહે છે. એટલે કે શ્રુત અને ચરિત્રધર્મથી યુક્ત જે ધ્યાન છે તેનું નામ
ધર્મધ્યાન છે. મનની અત્યન્ત નિર્મળતાને સદ્ભાવ હોય ત્યારે જે એકાગ્રતા
થાય છે તેનું નામ શુક્લધ્યાન છે “ શુક્લં-શોધયતિ-અષ્ટપ્રકારં કર્મમલં-શુચં
શોક વા કલમયતિ-અપનયતિ શુક્લમ્ ” જેના દ્વારા આઠ પ્રકારના કર્મમલની
શુદ્ધિ થાય છે, અથવા જેના દ્વારા શોકને દૂર કરાય છે એવા ધ્યાનનું નામ
શુક્લધ્યાન છે. તે ધ્યાન મોક્ષ આદિ ફલને પ્રાપ્ત કરાવનાર છે

હવે આર્તધ્યાનના ચાર પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

“ અમનોજ્ઞસમ્પ્રયોગસમ્પ્રયુક્ત ” ઇત્યાદિ—

અમનોજ્ઞ (અનિષ્ટ-અણુગમતા) શબ્દાદિકના સંપ્રયોગથી (સંબંધથી)
યુક્ત જે પુરુષ હોય, એવા પુરુષના ચિત્તમાં તે અમનોજ્ઞ વસ્તુને દૂર કરવા
સ ૫૫

અવમર્શ-અવનોદ્ધાનો-અમ્-સ્વર્ગ-રસ-ગ-ધરૂપાણામનિદાનાં સમ્પયોગે-ધોષ-
સ્વપ્રમના-ગ્રાગ-ચક્ષુરિન્દ્રિયે સહ સમ્બન્ધે તદ્વિપયોગાય=અનિદ્રાદિવિષયકરી
કરમાય યા સ્મૃતિસમન્વાહાર-સ્મર્યત્ત્વમ્મિતિ સ્મૃતિર્થન, તસ્યા પ્રજિધાનરૂપાયાઃ
સમન્વાહાર-સમન્નોદરણમવનોદ્ધાદિ વિષયાપગમોપાયે મનસો નિષ્કલ્પ વ્યવ
સ્થાપન કેનોપાયન અવશ્યનિષ્કલ્પવિષયેભ્યો વિયોગઃ સ્થાદિત્યેકતાનમનોનિબે
ધન-અર્થાર્થધ્યાનમિતિ પ્રથમો મેદઃ ૧।

૧૫૫ મનોદ્વસપયોગસમયુક્તસ્ય પુરુષસ્ય મનોદ્વસપદ્માદૈરવિપયોગસ્મૃતિસમન્વા
ગતરૂપમાર્ત્તધ્યાનં વિદ્યેયમિતિ દ્વિતીયો મેદઃ ૧૨।

“આયકે”-ત્યાદિ-આત્મસમ્પયોગસમયુક્ત-આત્મકૃપતે કપ્તેન જીવ્ય
તેજતેનેત્યાત્મકો-રોગઃ, તસ્ય સમ્પયોગઃ=શરણપિત્તકફજનિતસમ્બન્ધસ્તેન સમ્પ
યુક્ત-સચિત્તો યા પ્રાણી ભવતિ તસ્ય યત્ “વિપયોગસ્મૃતિસમન્વાગત”-
હોતા હૈ (જે તદ્વિપયોગસ્મૃતિસમન્વાહાર હૈ હસમે એસા ધ્યાન
હોતા હૈ) કિસ પ્રકાર સે અનિદ્રા શબ્દાદિક વિષયો સે મેરા સમ્બન્ધ
છુટ્ટે, હસકે લિયે જો મન મેં એક પ્રકાર કી એકતાનતા એકાગ્રતા પ્રાપ્તી
હૈ, જી, હસ આર્તધ્યાન કા પ્રથમ મેદ હૈ। તાત્પર્યકેવલ હસકા એસા હૈ
હૈ કિ અનિદ્રા શબ્દાદિક કા અન્નિયાદિ કે સાથ સમ્પર્ક હો જાને પર
જનકે વિયોગ કે લિયે ચિન્તાસાત્ત્વ કા હોના યહી પ્રથમ આર્તધ્યાન હૈ
મનોદ્વસ શબ્દાદિક કા વિયોગ હો જાને પર જનકી પ્રાપ્તિ કે લિયે સતત
ચિન્તા કરતે રહના યહ દુસરા આર્તધ્યાન હૈ। આત્મ પિત્ત કફ જનિત
રોગ સે યુક્ત હુવે પ્રાણી કા જો વસ કો દૂર કરને કે લિયે સતત

માટે જો કે પ્રકારની નિષ્કલ્પતા આવી જાય છે (જે જે તદ્વિપયોગ સ્મૃતિ
સમન્વાહાર છે, તેમાં આ પ્રકારનું ધ્યાન થાય છે) તેના મનમાં જોયો વિચાર
આવ્યા કરે છે કે કેવી રીતે આ અવનોદ્ધાન શબ્દાદિકની સાથેના આદ્ય સંબંધ
છૂટી જાય. તેને માટે મનમાં જે જો કે પ્રકારની જોડાણતા આવી જાય છે, જોય
આ આર્તધ્યાનનો પહેલો ભેદ છે આ અવનોદ્ધાનના બાવાઈ આ પ્રમાણે છે—
અનિદ્રા શબ્દાદિકનો અન્નિયાદિકની સાથે સંપર્ક થવાથી તેમના વિયોગને
માટે તેમાંથી મુક્ત થવાને માટે ચિત્તમાં જો કે પ્રકારની ચિન્તાવળા સતત આવ્યા
કરે છે જે જે આત્મધ્યાનના પ્રથમ ભેદરૂપ છે

આત્મધ્યાનનો બીજો ભેદ—અવનોદ્ધાન શબ્દાદિકનો વિયોગ થવાથી તેમની
પ્રાપ્તિને માટે સતત ચિન્તાવળા કર્યા કરે તે આર્તધ્યાનના બીજા ભેદરૂપ સમજવું

આત્મધ્યાનનો ત્રીજો ભેદ—વાત પિત્ત અને કફજનિત રોગથી પીડાતો
પુરુષ તેમાંથી મુક્ત થવા માટે જે સતત ચિન્તાવળા કર્યા કરે છે (માથા આ

વિપયોગઃ—કાસશ્વાસાદ્યાતઙ્કસ્ય પરિહારઃ, તસ્મૈ યા સ્મૃતિઃ—“ મમાડ્ડતઙ્કસ્યાયં સમ્પ્રયોગઃ કથં નચ્યે—” દિત્વાદિરૂપા ચિન્તા, તસ્યાઃ સમન્વાગતં=સમ્પ્રાપ્તં ભવતિ, તત્ તૃતીયમાર્તધ્યાનમ્, અયમર્થઃ—કાસશ્વાસાદ્યાતઙ્કવિપયાણાં વિયોજને-દૂરીકરણે યા સ્મૃતિશ્ચિન્તા તસ્યાઃ સમન્વાગતં-સમન્વાહારઃ ‘કેનોપાયેનાનિષ્ટકા સશ્વાસાદ્યાતઙ્કેભ્યો વિયોગઃ સ્યા ’-દિત્યેક્તાનમનોનિવેશનં તત્ તૃતીયમાર્તધ્યાનમિત્યર્થઃ ૩।

“ પરિજુસિયે ”—ત્યાદિ—તથા પરિજુષ્ટકામભોગસંપ્રયોગસંપયુક્તઃ—કામ્યન્તે—પ્રાર્થ્યન્તે इति कामा=કમનોયાઃ શબ્દાદયઃ પરિજુષ્ટાઃ=નિષેવિતાશ્ચ તે કામાઃ પરિજુષ્ટકામાસ્તેષાં ભોગઃ=અનુભવસ્તત્ય સમ્પ્રયોગ સમ્બન્ધસ્તેન સમ્પયુક્તઃ સહિતઃ, યદ્વા—કામ્યેતે इति कामौ—શબ્દરૂપે, તૌ ચ મુજ્યન્તે—ગ્રાણાદિવિપયી-ક્રિયન્તે इति भोगाઃ=ગન્ધ-રસ-સ્પર્શાદિવેતિ કામભોગાઃ, પરિજુષ્ટાશ્ચ તે કામભો-

ચિન્તા કરના કિ યહ રોગ અવ મેરા કૈસે નષ્ટ હોગા યહ તૃતીય આર્ત-ધ્યાન હૈ તાત્પર્ય ઇસકા એસા હૈ—કિ કાસ શ્વાસ આદિ આનદ્વોં કે આ જાને પર ઉનકો દૂર કરને કે લિયે એસા વિચાર વાર ૨ આતા હૈ કિ યહ રોગ કિસ ઉપાય સે શાન્ત હોગા ઇસ પ્રકાર સે જો મન મેં એકા-ગ્રતા (એકતાનતા) આતી હૈ વહ તૃતીય આર્તધ્યાન હૈ। જો પુરુષ-નિષેવિત શબ્દાદિરૂપ કામોં કે અનુભવ સે સમ્બદ્ધ હોતા હૈ એસે પુરુષોં કી ઉનકે અનવગમ નિમિત્ત જો વાર ૨ વિચારવારા આતી હૈ વહ આર્ત-ધ્યાન કા ચાથા ભેદ હૈ, અથવા—કામ શબ્દ સે શબ્દ ઔર રૂપ તથા ભોગ શબ્દ સે ગન્ધ રસ, ઔર સ્પર્શ ઇનકા ગ્રહણ હુવા હૈ સો ઇસ

રોગ કેવી રીતે નષ્ટ થશે, હુ ક્યારે આ રોગમાંથી છૂટીશ ઇત્યાદિ રૂપ તેની વિચારધારા સમજવી) તેને આ ત્રીજા ભેદમાં મૂકી શકાય છે. એટલે કે, હમ, જવર આદિ રોગોથી પીડાતી વ્યક્તિના મનમાં એવા વિચારો વારંવાર આવ્યા કરે છે કે “ મારો આ રોગ કયા ઉપાયથી શાન્ત થશે ”, તેના મનમાં આ પ્રકારની એકાગ્રતા આવી જાય છે મનની આ પ્રકારની એકાગ્રતાને આર્ત-ધ્યાનના ત્રીજા ભેદરૂપે અહીં પ્રકટ કરવામા આવેલ છે

આર્તધ્યાનના ચોથા ભેદ—મનોરૂ શબ્દાદિરૂપ કામભોગોથી યુક્ત પુરુષ, તે મનોરૂ કામભોગોને કદી પણ વિયોગ ન થાય—તે મનોરૂ કામભોગો સાથેના પોતાનો સબધ હંમેશા ચલુ જ રહે, એવું જે વારંવાર ચિન્તવન કર્યા કરે છે, તેને અહીં આર્તધ્યાનના ચોથા ભેદરૂપે પ્રકટ કરવામા આવેલ છે.

અથવા—કામપદથી શબ્દ અને રૂપ ગૃહીત થયેલ છે અને ભોગ શબ્દથી ગન્ધ, રસ અને સ્પર્શ ગૃહીત થયેલ છે. આ પ્રકારના કામભોગોથી યુક્ત

માણ્વેતિ પરિણુષ્ટકામમોગાસ્તેષાં સમ્પયોગઃ પરિણુષ્ટકામમોગસમ્પયોગસ્તેન સમ્પયુક્તો યઃ સ તથામૂતઃ પુરુષસ્તસ્ય યત્ “ અવિમયોગસ્મૃતિસમન્વાગતમ્ ” —અવિમયોગઃ—કામમોગાનામનપગમઃ સયોગ इत्यर्थः, તસ્મૈ યા સ્મૃતિમિન્તા, તસ્યા યત્ સમન્વાગત—સમન્વાગમનામિતિ ચતુર્થમાસધ્યાનમિતિ ચતુર્થો ભેદઃ ૨ ।

અર્થાઽઽર્તધ્યાનસ્ય લક્ષણાન્યાહ—“ અદ્યસ્તે ”—ત્યાદિ—આર્તસ્ય તદ્વદ્ધ્યા નસ્ય ચત્વારિ લક્ષણાનિ મદ્વસાનિ, તથા—કન્દનતા—શીત્કારઃ ‘ હા માતઃ ! હા તાત ! ’ इत्यादिरूपा, લીમશ્ચન્દન વિલપનમિત્યર્થઃ ૧ ।

શોચનતા—શોચસીતિ શોચનસ્તસ્ય માત્ શોચનતા—શોકકરણમ્ ૨ ।

તેપનતા—અભ્યુષિમોષનમ્, તિપેઃ છરણાર્થત્વાત્ ૩ ।

પરિવેનતા—રોદનપૂર્વકસમાપણમિતિ ૪ ।

एतानि च लक्षणानीष्टवियोगानिष्टसयोगरागवेदनाजनितशोकमुक्तस्य पुरुषस्य भवन्ति, यत आह—

“ तत्सर्वकर्मसंयोग-परिवेषण-ताडनाद् विगाह ।

પાપકર્મ ૩ શ્રદ્ધાવિદ્વિયોગાવિયોગ વિયગાનિમિષાહ ૧ ૧ । ” इति,

તરહ પરિણુષ્ટ કામ ધોર મોગોં કે સમ્પય સે યુક્ત મનુષ્ય કા ઉનસે સંયોગ નિમિત્ત જો પાર ૨ ચિન્તન કરના હે વદ આર્તધ્યાન કા ચોયા ભેદ હે । આર્તધ્યાન ક યે ચાર લક્ષણ કહે ગયે હે, હા માતઃ ૧ હા પિતઃ ૧ इत्यादिरूप जो शीत्कार है उसका नाम कन्दनता है कन्दन में दीर्घ शब्द से विलाप होता है । शोक करना इसका नाम शोचनता है यह इसका दूसरा लक्षण है । अशुभा (आशुभा) का घटाना जिसमें होता है उसका नाम तेपनता है । रोते रोते समापण करना इसका नाम परि

મનુષ્ય, તેમના સંયોગ નિમિત્તે જે ચારવાર ચિન્તન કર્યા કરે છે, તે આર્તધ્યાનના ચોથા લેહમાં પરિવર્તિત થાય છે

આર્તધ્યાનના નીચે પ્રમાણે ચાર લક્ષણ હતાં છે—(૧) ‘ કન્દનતા ’ “ હ મા ! હે મા ! ” इत्यादि रूप के चिन्तन થાય છે તેનું નામ કન્દનતા છે આ કન્દનમાં લીર્ષ શબ્દથી વિલાપ થતો હોય છે (૨) ‘ શોચનતા ’—શોચનતા એટલે શોક કરવો તે આર્તધ્યાનનું બીજું લક્ષણ છે (૩) ‘ તેપનતા ’ ‘ તેપન ’ એટલે અશુભ સારવાની ક્રિયા આ આશુ સારવાની ક્રિયાએ તેપનતા આર્તધ્યાનનું ત્રીજું લક્ષણ છે (૪) ‘ પરિવેશનતા ’ શતાં શતાં સમાપણ કરવું તેનું નામ પરિવેશન છે આ લક્ષણોના સફળાવ બદલો વિયોગ, અનિયમે

છાયા—“ તસ્યાઽઽક્રન્દન-શોચન-પરિદેવન-તાડનાનિ લિઙ્ગાનિ ।

ઈષ્ટાનિષ્ટવિયોગાવિયોગવેદનાનિમિત્તાનિ । ૧ ।

ઈતિ,

અથ રૌદ્રધ્યાનં વિભજતે—“ રોદ્ધે જ્ઞાણે ” ઇત્યાદિ—રૌદ્રં ધ્યાનં ચતુર્વિધં પ્રજ્ઞ-
સમ્, તથા—હિંસાઽનુવન્ધિ-હિંસામનુવન્ધનાતીત્યેવંશીલં હિંસાઽનુવન્ધિ=પ્રાણિપો-
ડાસતતપ્રવૃત્તિકરણશીલં પ્રણિધાનમિત્યર્થઃ, યદ્વા-અનુવન્ધનમનુવન્ધઃ, હિંસાયા
અનુવન્ધઃ=સમ્વન્ધઃ હિંસાઽનુવન્ધઃ સોઽસ્ત્યસ્મિન્નિતિ હિંસાઽનુવન્ધિ રૌદ્રધ્યાનમ્,

દેવનતા હૈ, યે લક્ષણ ચિહ્ન ઇષ્ટ વિયોગ તથા-અનિષ્ટ સંયોગઔર રોગ
વેદના સે જનિત શોક સે યુક્ત પુરુષકો હોતે હૈ । સો હી કહા ગયો હૈ—
“ તસ્સ વ્કંદણસોયણ ” ઇત્યાદિ ?

રૌદ્રધ્યાન કે વિષય મેં કથન “ રોદ્ધે જ્ઞાણે ” ઇત્યાદિ

રૌદ્રધ્યાન જો હિંસાનુવન્ધી આદિ કે ભેદ સે ચાર પ્રકાર
કા કહા ગયા હૈ સો ડનકા અભિપ્રાય ઇસા હૈ જિસ પ્રકાર
આર્તધ્યાન કા મુખ્ય આધાર પીડા હૈ યહ પીડા અનિષ્ટ વસ્તુ કા સંયોગ
ઈષ્ટ વસ્તુ કા વિયોગ ઔર પ્રતિકૂલ વેદના આદિ કારણોં મેં સે કિસી
ઇક કે નિમિત્ત સે હુવા કરતી હૈ । ઇસલિયે નિમિત્ત સે આર્તધ્યાન કે
ચાર ભેદ કહે ગયે હૈ, ઇસી પ્રકાર સે રૌદ્રધ્યાન કા મૂલ આધાર કૂરતા
હૈ । જિસકા ચિત્ત કૂર કઠોર હોતા હૈ વહ રુદ્ર હૈ, ઇસા જો ધ્યાન
હૈ વહ રૌદ્રધ્યાન હૈ । ઇસ કૂરતા કો આત્મા મેં ઉત્પન્ન કરનેવાલે હિંસા
ચોરી ઔર વિષય સંરક્ષણ યે ચાર નિમિત્ત લિયે ગયે હૈ । ઇસીલિયે
રૌદ્રધ્યાન કે ચાર ભેદ હુવે હૈ, જિસ ધ્યાન મેં પ્રાણિયોં કો પીડા દેને મેં

સયોગ અને રોગવેદનાથી જનિત શોકયુક્ત મનુષ્યમાં હોય છે એ જ વાત
“ તસ્સ વ્કંદણસોયણ ” ઇત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત થઇ છે.

રૌદ્રધ્યાનનુ નિરૂપણ—રૌદ્રધ્યાનના હિંસાનુવન્ધી આદિ ચાર ભેદ છે.
“ રોદ્ધે જ્ઞાણે ” ઇત્યાદિ—જેમ આર્તધ્યાનનો મુખ્ય આધાર પીડા છે અને તે
પીડા અનિષ્ટ વસ્તુઓનો સયોગ, ઇષ્ટ વસ્તુઓનો વિયોગ, અને પ્રતિકૂળ વેદના
આદિ કારણોમાંથી કોઈ એક કારણે થયા કરે છે, અને તેથી નિમિત્તભેદની
અપેક્ષાએ આર્તધ્યાનના ચાર પ્રકાર કહેવામાં આવ્યા છે, એ જ પ્રમાણે રૌદ્ર
ધ્યાનનો મુખ્ય આધાર કૂરતા છે જેનું ચિત્ત કૂર (કઠોર) હોય છે તે રુદ્ર
કહેવાય છે. અને તે પ્રકારના આત્મધ્યાનને રૌદ્રધ્યાન કહે છે આત્મામાં આ
કૂરતા ઉત્પન્ન કરનારા હિંસા, ચોરી, અસત્ય અને વિષય-સંરક્ષણરૂપ ચાર
નિમિત્ત બતાવ્યાં છે. તે કારણે રૌદ્રધ્યાનના ચાર ભેદ પડે છે. જે ધ્યાનમાં
હુવેને પીડા પહોંચાડવાનો વિચાર (પ્રણિધાન) નિરન્તર આદ્યા કરે છે.

ઉક્તમ્—“ સત્ત્વરહર્યવંષણસહજકળમારણાદ્યપરિહારણં ।

અફ્રોહમાસ્ત્ય ણિમ્બિનમણસોઽહમવિવાગ ॥૧૧॥ ” ઇતિ,

છાયા—“ સત્ત્વરપવેષ-મન્થન-દહનાઽદ્ધન-મારણાદિ પ્રણિધાનમ્ ।

અતિક્રોધપ્રહસ્ત નિર્ઘ્વનમનસોઽપમવિપાકમ્ । ૧ । ” ઇતિ ।

“ મૃપાઽનુવધિ ”—મૃપાઽનુવધનાસીત્યેવશીલ=પિશુનાઽસમ્પાઽસવ્મૂતાદિમિ-
ધંચનવિશેષૈરસત્પાનુવધિ પ્રણિધાનમ્, તદાહ ચ—

“ પિશુનાઽસ-માસન્મૂયધાયાઙ્ગવચ્ચપરિહારણં ।

માયાવિણોઽતિ સઘણપરસ્ત પ્રચ્છન્નપાપસ્ત । ૧ । ઇતિ ।

છાયા—“ પિશુનાઽસમ્પાઽસવ્મૂતપાતાદિ વચનપ્રણિધાનમ્ ।

માયાવિનોઽતિસન્ધ્યાનપરસ્ય પ્રચ્છન્નપાપસ્ય । ૧ । ” ઇતિ ।

“ સ્તેયાનુવધિ ”—સ્તેન-ચૌસ્તસ્ય માયા કર્મ યા સ્તેયમ્, તદનુવધના
તીત્યેવશીલં તથામૂતમ્ = તીવ્રક્રોધાપાકુલતયા ચૌર્યાનુવધનશીલમિત્યર્થ,
તથા ચોક્તમ્—

નિરન્તર પ્રણિધાન (વિચાર) હોતા હૈ અથવા હિંસા કા અનુચિત સમ્બંધ
જિસ ધ્યાન મેં હોતા હૈ, પેસા વહ ધ્યાન હિંસાનુષંગી રોદ્રધ્યાન હૈ ।
તાત્પર્ય યહ હૈ કિ હિંસા કરને મેં આનંદ માનના યહ-હિંસાનુષંગી
આર્તધ્યાન હૈ, કહા મી હૈ—“ સત્ત્વરહર્યવંષણ ” ઇત્યાદિ ૧

પિશુન-અસમ્ય અસવ્મૂત આદિ વચન વિશેષોં દ્વારા અસત્પાનુ-
ષંગી જો પ્રણિધાન (ચિન્તન) હૈ યહ મૃપાનુષંગી દ્વિતીય આર્તધ્યાન
હૈ । કહા મી હૈ—“ પિશુનાઽસમ્પાસમ્મૂય ” ઇત્યાદિ ૧

સ્તેયાનુષંગી-સ્તેન નામ ચોર કા હૈ, હસ ચોર કા જો આવ અથવા કર્મ હૈ
વહ સ્તેય હૈ હસ સ્તેય કા અનુચિતવાસા જો પ્રણિધાન ચિન્તન હૈ વહ-સ્તેયાનુ

અથવા જો ધ્યાનમાં હિંસાનો અનુબંધ (સંબંધ) સતત ચલુ રહે છે, તે
ધ્યાનને ‘ હિંસાનુષંગી રોદ્રધ્યાન ’ કહે છે આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે
હિંસા કરવામાં આનંદ માનવો, તે હિંસાનુષંગી આર્તધ્યાન છે કહું પણ છે
કે—“ સત્ત્વરહર્યવંષણ ” ઇત્યાદિ.... ૧ ।

પિશુન-અસમ્ય-અસવ્મૂત આદિ વચન વિશેષોં દ્વારા અસત્પાનુષંગી જો
પ્રણિધાન (ચિન્તન) થાય છે, તેને મૃપાનુષંગી રોદ્રધ્યાન કહે છે આ રોદ્ર
ધ્યાનનો બીજો ભેદ સમજવો કહું પણ છે કે— પિશુના ઽસમ્પાસમ્મૂય ’ ઇત્યાદિ-૩

(૩) સ્તેયાનુષંગી-સ્તેન એટલે ચોર. તે ચોરના કાર્યને સ્તેય કહે છે
આ સ્તેય (ચોરી) ના અનુબંધવાળુ જો પ્રણિધાન (ચિન્તન) છે, તેને
સ્તેયાનુષંગી રોદ્રધ્યાન કહે છે આ ધ્યાનને રોદ્રધ્યાનનો ત્રીજો ભેદ સમજવો
કહું પણ છે કે—“ તદાહિત્તકોદ્ધોદા ” ઇત્યાદિ—

“ તહ તિવ્વકોહ્લોહાહાલસસ ભૂતોવધાયણમણઝં ।

પરદવ્વહરણચિત્તં પરલોગાવાયનિરવેવલ્લ । ૧ ।” ઇતિ,

છાયા—“ તથા તીવ્રક્રોધલોભાઽઽકુલસ્ય ભૂતોપઘાતનમનાયમ્ ।

પરદ્રવ્યહરણચિત્તં પરલોકાપાયનિરપેક્ષમ્ । ૧ ।” ઇતિ, ૩

“ સંરક્ષણાનુવન્ધિ ”—સંરક્ષણં-સં-સમ્યક્ - સર્વોપાયૈઃ રક્ષણં-પરિત્રાણ, તત્ર વિષયસાધનધનરયાનુવન્ધઃ સંરક્ષણાનુવન્ધઃ, સોઽત્યસ્મિન્નિતિ સંરક્ષણાનુવન્ધિ રૌદ્રધ્યાનમ્, તદુક્તમ્—

“ સદાહ વિસયસાહણધનસંરક્ષણપરાયણમણિટ્ઠં ।

સવ્વાહિસંકળપરોવધાયકલુસાહલ ચિત્તં । ૧ ।” ઇતિ ।

છાયા—“ શબ્દાદિવિષયસાધનધનસંરક્ષણપરાયણમણિટ્ઠમ્ ।

સર્વાભિશઙ્કનપરોપઘાતકલુપાઽઽકુલ ચિત્તમ્ । ૧ ।” ઇતિ ૪ ।

અથ રૌદ્રધ્યાનસ્ય લક્ષણાન્યાહ—“ રુદ્ધસ ણં ” ઇત્યાદિ — રૌદ્રસ્ય સ્વલ્પ ધ્યાનસ્ય ચત્ત્વારિ લક્ષણાનિ પ્રજ્ઞમાનિ, તદ્યથા—ઓસન્નદોષઃ—‘ ઓસન્નમ્ ’ ઇતિ પ્રચુરાર્થવાચકો દેશીયશબ્દસ્તેન હિંસામૃપાદીનામન્યતમસ્મિન્ પ્રવૃત્તેઃ પ્રાચુર્ય, તદેવ

વન્ધી આર્તધ્યાનકા તૃતીય ભેદ હૈ । કહા ખી હૈ—“ તહ તિવ્વકોહ્લોહા ” ઇત્યાદિ ૧ તાત્પર્ય ઇસકા એસા હૈ કિ તીવ્ર ક્રોધ માન માયા એવં લોભ સે આકુલ હુવે પુરુષ કા જો ચોરી કરને કા અનુવન્ધશીલ પ્રણિધાન (પરિણામ) હૈ વહ સ્તેયાનુવન્ધી આર્તધ્યાન હૈ ઇસ આર્તધ્યાનવાલા પ્રાણી ચોરી કરને મેં હી આનન્દ માનતા હૈ । જિસ ધ્યાન મેં વિષય સાધનભૂત ધન કે સંરક્ષણ કરને કા અનુવન્ધ રહતા હૈ એસા વહ ધ્યાન સંરક્ષણાનુવન્ધી રૌદ્રધ્યાન હૈ । કહા ખી હૈ—“ સદાહ વિસયસાહણ ” ઇત્યાદિ રૌદ્રધ્યાન કે લક્ષણ ઇસ પ્રકાર સે હૈ—“ ઓસન્ન દોષઃ ” હિંસાદિક પાપોં મેં સે કિસી એક મેં પ્રવૃત્તિ કી પ્રચુરતા કા હોના યહ ઓસન્ન

આ સૂત્રનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—તીવ્ર, ક્રોધ, માન, માયા અને લોભથી આકુળવ્યાકુળ થયેલા પુરુષનું જે ચોરી કરવાના અનુબન્ધશીલ પ્રણિધાન (પરિણામ) છે, તેને સ્તેયાનુબન્ધી રૌદ્રધ્યાન કહે છે. આ રૌદ્રધ્યાનવાળો માણસ ચોરી કરવામાં જ આનન્દ માને છે (૪) જે ધ્યાનમાં વિષયસાધનભૂત ધનના સંરક્ષણને અનુબન્ધ રહે છે, તે ધ્યાનને સંરક્ષણાનુબન્ધી રૌદ્રધ્યાન કહે છે કહ્યું પણ છે કે—“ સદાહ વિસયસાહણ ” ઇત્યાદિ—

રૌદ્રધ્યાનનાં લક્ષણો નીચે પ્રમાણે છે—“ ઓસન્નદોષઃ ” હિંસાદિક પાપોમાંથી કોઈ એકમાં પ્રવૃત્તિની પ્રચુરતા હોવી, તેનું નામ ‘ઓસન્નદોષ’ છે.

દોષઃ=રૂપણમ્=હિંસાદોષકરસ્મિન્ પ્રવૃત્તિરૂપો દોષ इत्यर्थः ૧, बहुदोषः-हिंसा-
मृपादिसर्वेषु दोषः-प्रवृत्तिरूपः स तथा २, अज्ञानदोषः-अज्ञानात्-कुशास्त्रसत्काराद्
हिंसामृपादिष्वधर्मस्वरूपेषु नरकादिकारणेषु धर्मशुद्धयाऽभ्युदयाय प्रवृत्ति-
रूपोऽज्ञानदोषः, यथा — हिंसादिप्रवृत्तिलक्षणमज्ञानमेष दोषोऽज्ञानदोषः ३,
“आमरणान्तदोषः-” मरणमेवान्तो मरणान्तः, तमभिध्याप्याऽऽमरणान्तात्-
मरणपर्यन्तमित्यर्थः, असमुत्पन्नपञ्चाशापस्य कालसौकरिकादेरिव या हिंसादिषु
प्रवृत्तिः सैष दोष आमरणान्तदोषः ४ ।

अथ धर्मध्यानस्वरूपमाह—“ धर्मे ज्ञाने ” इत्यादि-धर्म्य ध्यान बहु
विध चतुष्पत्यवतार-चतुर्षु-मेदस्वरूपाऽऽत्ममનાऽનુપ્રેક્ષારૂપેषુ પદાર્થેષુ પ્રત્યક્-
દોષ છે । “ ઓસણ ” यह प्रचुरताय वाचक देदीय शब्द है, । “ बहु
દોષઃ ” हिंसाविक समस्त पापों में प्रवृत्ति का होना यह बहुदोष है,
“ अज्ञानदोषः ” अज्ञान से कुशास्त्र के सत्कार से अधर्मरूप तथा-
नरकादि गतियों के कारणभूत ऐसे हिंसाविक पापों में धम समझ कर
अपने अभ्युदय के निवृत्ति प्रवृत्ति का होना यह अज्ञान दोष है, अथवा
-हिंसाविकों में जो प्रवृत्ति होती है वही अज्ञानरूप दोष है ।

“आमरणान्तदोषः” કાલ સૌકરિક નામકે કસાર્થ આદિ સદૃશ અસ
મુત્પન્ન પંચાસાપવાલોંકા મરણ પયન્ત હિંસાદિકોંમિં પ્રવૃત્તિકા હોતે રહના
यह आमरणान्तदोष है ।

ધર્મધ્યાન કા સ્વરૂપ મેદ લક્ષણ આલમ્બન ઔર અનુપ્રેક્ષા
इन चार पदार्थों में विचारणीयहोने से चतुष्पत्यवतार
ચાલા (ચાર મેદસ્વરૂપચાલા) કહા છે । इसके ये चार मेद है आज्ञाविषय,

‘ ઓસણ ’ આ પદ પ્રચુરતાના અથર્થાં જામઢી આપ્યાર્થાં વપરાય છે ‘ बहुदोषः ’
હિંસાદિક સમસ્ત પાપેર્માં પ્રવૃત્ત ચતુ તેનું નામ ‘ बहुदोष ’ છે ‘ अज्ञानदोषः ’
અજ્ઞાનને કારણે-કુશાસ્ત્રના સત્કારના કારણે નરકાદિ અતિયોના કારણરૂપ હિંસા
દિક પાપેને ધર્મ માનીને તેનું આચરણ કરવું-એવા અધર્મરૂપ કાર્યોર્માં પ્રવૃત્ત
ચતુ તેનું નામ અ-જ્ઞાનદોષ છે અથવા હિંસાદિકોર્માં ને પ્રવૃત્તિ થાય છે તેનું
નામ જ અજ્ઞાનદોષ છે ‘ आमरणान्तदोषः ’ કાલસૌકરિક અર્થિની જેમ અસ
મુત્પન્ન પંચાસાપવાળાની (જેમને હિંસાદિક કરવા માટે પંચાસાપ જ થતો નથી
એવાની) મરણ પર્યન્ત હિંસાદિકોર્માં ને પ્રવૃત્તિ રહે છે તેનું નામ
આમરણાન્તદોષ છે

ધર્મધ્યાનનું નિરૂપણ—ધર્મધ્યાનનું સ્વરૂપ ભેદ, લક્ષણ આલમ્બન અને
અનુપ્રેક્ષા આ ચાર બાબતેની અપેક્ષાએ વિચારણીય હોવાની તેને ચાર
ભેદવાળું પ્રકરણમાં આણ્યું છે

તારઃ=સમવતારો વિચારણીયત્વેન યસ્ય તત્તથોક્તં, પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્વથા-આજ્ઞાવિચ-
યમ્=આ-અભિવિધિનાઽર્થા જ્ઞાયન્તેઽનયા સાઽઽજ્ઞા=સર્વજ્ઞપ્રવચનં, સા વિચીયતે
યસ્મિન્નિત્યાજ્ઞાવિચયં ધર્મધ્યાનમ્, “આજ્ઞા વિજયમ્” इतिच्छायापक्षे तु—
આજ્ઞા વિચીયતે-અધિગમદ્વારેણ પરિચીયતે યસ્મિન્નિતિ તથાભૂતમ્ ૧,

અપાયવિચય, વિપાકવિચય, ઔર સંસ્થાનવિચય આજ્ઞા અપાય વિપાક
ઔર સંસ્થાન, इनकी विचारणा के निमित्त जो मन को एकाग्र करना
होता है वह धर्मध्यान है इन निमित्तों के भेद से ये धर्मध्यान के ४
भेद हुवे हैं। આજ્ઞાવિચય મેં આ-જ્ઞા-વિચય એસે ચે ત્રીન શબ્દ હૈં, આ-
અભિવિધિ અર્થ મેં પ્રયુક્ત હુવા હૈં। जिसके द्वारा अभिविधि (विधि
पूर्वक) पदार्थ जाने जाते हैं वह आज्ञा है ऐसी वह आज्ञा सर्वज्ञ प्रव-
चनरूप यहां गृहीत हुई है जिस ध्यान में यह सर्वज्ञ प्रवचनरूप आज्ञा
विचारी जाती है ऐसा वह ध्यान आज्ञाविचय नाम का धर्मध्यान है।
કિસી ઓ પદાર્થ કા વિચાર કરતે સમય એસા મનન કરના કિ ઇસ
વિષય મેં જો જિનદેન કી આજ્ઞા હૈં વહ પ્રમાણ હૈં, અથવા એસા પતા
લગાને કે લિયે કિ-વીતરાગ તથા સર્વજ્ઞ પુરુષ કી ક્યા આજ્ઞા હૈં ૩ ઔર
કૈસી હોની (ખી) ચાહિયે ઇસકી પરીક્ષા કરને કે લિયે જો મનોયોગ
દિયા જાવેગા વહ આજ્ઞાવિચય ધર્મધ્યાન હૈં। એસા યહ અર્થ “ આજ્ઞા-

ધર્મધ્યાનના ચાર ભેદ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) આજ્ઞાવિચય (૨) અપાય-
વિચય, (૩) વિપાક વિચય અને (૪) સંસ્થાન વિચય એટલે કે આજ્ઞા, અપાય,
વિપાક અને સંસ્થાનની વિચારણા નિમિત્તે મનને જે એકાગ્ર કરવામાં આવે
છે, તે એકાગ્રતાનું નામ જ ધર્મધ્યાન છે આ નિમિત્તોના ભેદથી તેના ચાર
પ્રકાર કહ્યા છે

આ + જ્ઞા + વિચય = આજ્ઞાવિચય “ આ ” અભિવિધિ અર્થમાં
પ્રયુક્ત થયો છે ‘ જ્ઞા ’ એટલે જાણવું જેના દ્વારા પદાર્થને વિધિપૂર્વક જાણી
શકાય છે, તેનું નામ “ આજ્ઞા ” છે. એવી તે આજ્ઞાને અહીં સર્વજ્ઞપ્રવચન
રૂપે ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે જે ધ્યાનમાં આ સર્વજ્ઞપ્રવચન રૂપ આજ્ઞાનો
વિચાર કરવામાં આવે છે, એવા ધ્યાનને આજ્ઞાવિચય નામનું ધર્મધ્યાન કહે છે.
અથવા-કોઈ પણ પદાર્થનો વિચાર કરતી વખતે એવું મનન કરવું કે આ
વિષયમાં જિનદેવની જે આજ્ઞા છે, એ જ પ્રમાણભૂત છે, અથવા તે વિષે
સર્વજ્ઞ પુરુષની શી આજ્ઞા છે અથવા શી આજ્ઞા હોવી જોઈએ તેની ખાતરી
કરવા માટે મનમાં જે વિચારધારા (પ્રશ્નધ્યાન) ચાલુ થાય છે તેને જ આજ્ઞા

“અપાયવિષયમ્”-અપાયા-વિષયઃ શરીરમાનસાનિ દુસ્વાનીત્યર્થઃ, તે વિષયયત્તે-પર્વાલોચયત્તેડરિમશ્ચિત્યપાયવિષયમ્ = પ્રાણિનાં રાગદ્વેષાદિભ્રનિતૈ રિક્તપારલૌકિકાનર્થવિચારાડઅયીમૂતમ્ ૨,

“વિપાકવિષયમ્”-વિષિષ્ટ પાકો વિપાકઃ-જ્ઞાનાવરણીયાદિ કમર્ષાં કલ્મસ, સ વિષયયત્તેડશ્ચિત્તિ તથામૂતમ્-કમકલવિષેષનાડઅયીમૂતમિત્યયઃ ૧,

વિષય” હસ છાયા પક્ષ કો આધિત કરકે કિયા ગયા હૈ, શારીરિક એવં માનસિક કુઃશ્ચોં કા નામ અપાય હૈ યે અપાય જિસમેં પર્વાલોચિત્ત હોતે હૈં એસા વહ ધ્યાન અપાયવિષય ધર્મધ્યાન હૈં । અર્થાત્ જન શારીરિક એવ માનસિક કષ્ટોં સે છુટકારા કેસે હોં હસ ચિન્ચાર મેં મનોયોગ વેના યહ દ્વિતીય મેદ ધર્મધ્યાન કા હૈં । તાત્પર્ય હસકા એસા હૈં કિ જીવોં કોં જો શારીરિક એવ માનસિક કુઃશ્ચાવિ હોતે હૈં વે કેવલ રાગદ્વેષ આદિ સે હોતે હૈં ઓર યે રાગદ્વેષ આદિ સય્ હસ જીવ કોં હસ લોક મેં ઓર પરલોક મેં અનર્થ ઉત્પાદક હોતે હૈં હસ પ્રકાર કા વિચારવાલા ધર્મધ્યાન કા દ્વિતીય મેદ હોતા હૈં । અથવા-જો સ-માર્ગ પર ન હોકર મિથ્યામાર્ગ પર સ્થિત હૈં ઇસકા મિથ્યામાર્ગ સે છુટકારા કેસે હોં ? હસ વિશ્વા મેં સતત ચિન્ચાર કરના યહ ત્રી અપાયવિષય ધર્મધ્યાન હૈં । વિશિષ્ટ પરિશીલન (વિપાક) કા નામ વિપાક હૈં અર્થાત્ જ્ઞાનાવરણીય આદિ

વિષય ધર્મધ્યાન કહે છે ‘ આજ્ઞા વિજય ’ આ પ્રકારની આજ્ઞાવિષયની સંસ્કૃત છાયાને આધારે આ અર્થ નક્કી કરવામાં આવ્યો છે

। શારીરિક અને માનસિક કુઃખોનુ નામ અપાય ’ છે તે અપાયનુ બે ધ્યાનમાં પ્રવિધાન (ચિન્તન) કરવામાં આવે છે, તે ધ્યાનને અપાયવિષય ધર્મધ્યાન કહે છે. એટલે કે આ શારીરિક અને માનસિક કુઃખોમાંથી કેવી મુક્તિ મુક્ત થઈ શકાય તેના વિચાર કરવામાં ચિન્તને એકાગ્ર કરવુ તેનુ નામ અપાયવિષય ધર્મધ્યાન છે આ અપાયવિષય ધર્મધ્યાનમાં જીવને એવો વિચાર થવા કરે છે કે ‘ રાગદ્વેષ આદિને કારણે જ આ શારીરિક અને માનસિક કુઃખો ઉત્પન્ન થાય છે આ રાગદ્વેષ જ આલોક અને પરલોકમાં જીવનુ અસ્થાવ્યુ કરે છે તેને કારણે જ અનેક પ્રકારના અનર્થ પેદા થાય છે ” આ પ્રકારનુ બે ધ્યાન છે તેને પણ અપાયવિષય ધર્મધ્યાન કહે છે અથવા-જે જીવ સ માર્ગને બદલે મિથ્યામાર્ગે ચડેલો હોય, એવો જીવ મિથ્યામાર્ગેથી છુટવાને માટે મનમાં જે સતત વિચાર કર્યા કરે છે તેને પણ અપાયવિષય ધર્મધ્યાન કહે છે

“સંસ્થાનવિચયમ્” ઇતિ-સંસ્થાનાનિ-લોકસ્ય દ્વીપસમુદ્રાણાં ચાઽઽકાર-
વિશેષાઃ, તાનિ વિચીયન્તે-ચિન્ત્યન્તેઽત્રેતિ તથાભૂતં ધર્મ્યધ્યાનમ્ ૪। ઉક્તં ચાત્ર-

“આસવચનં પ્રવચનમાજ્ઞાવિચયસ્તદર્થનિર્ણયમ્ ।

આશ્રવવિકથાગૌરવ પરિપહાદ્યૈરપાયસ્તુ । ૧ ।

અશુભશુભકર્મપાકાનુચિન્તનાર્થો વિપાકવિચયઃ સ્યાત્ ।

દ્રવ્યક્ષેત્રાકૃત્યનુગમનં સંસ્થાનવિચયસ્તુ । ૨ ।” ઇતિ ।

અથ ધર્મ્યધ્યાનલક્ષણાન્યાહ—“ધર્મસ્સ ઇત્યાદિ-ધર્મસ્ય સ્વલુ ધ્યાનસ્ય

કર્મોં કે ફલ કો જિસમેં વિચાર હોતા હૈ એસા વહ ધ્યાન વિપાક વિચય
હૈ તાત્પર્ય હસકા એસા હૈ કિ અનુભવ મેં આને વાલે વિપાકોં મેં સે કૌન
કૌનસા વિપાક કિસ કિસ કર્મ કા ફલ હૈ, તથા અમુક કર્મ કા અમુક
વિપાક સંભવ હૈ હસ પ્રકાર કે વિચારાર્થ લગાના, અથવા-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર
કાલ ભવ ઔર ભાવ હનકી અપેક્ષા કર્મ કૈસે કૈસે ફલોં કો દેતે, હૈ
હસકા સતત વિચાર કરના યહ વિપાકવિચય હૈ । સંસ્થાનવિચય લોક
કા ઔર દ્વીપસમુદ્રોં કા જો આકાર વિશેષ હૈ હસકા નામ સંસ્થાન હૈ
યે સંસ્થાન જિસ ધ્યાન મેં સતત વિચારે જાતે હૈ વહ ધ્યાન સંસ્થાન
વિચય નામ કા ધર્મધ્યાન હૈ તાત્પર્ય યહ હૈ કિ-લોક આદિ કા સ્વરૂપ
વિચાર કરને મેં મનોયોગ દેના હસકા નામ સંસ્થાન વિચય હૈ । કહા
મી હૈ “આસવચનમ્” ઇત્યાદિ, ઓજ્ઞારુચિ આદિ જો હસકે ચારલક્ષણ

વિશિષ્ટ પરિશીલન (૩૫) નુ નામ વિપાક છે. એટલે કે જ્ઞાનાવરણીય

આદિ કર્મોના ઇળનો જેમાં વિચાર થાય છે, એવા ધ્યાનને વિપાકવિચય ધર્મ-
ધ્યાન કહે છે. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-જે જે વિપાકનો અનુભવ
કરવામાં આવે તે તે વિપાકને અનુલક્ષીને એવો વિચાર કરવો કે કયા કર્મના
ફલસ્વરૂપે હું આ વિપાક (ફલ) અનુભવી રહ્યો છું, તથા અમુક કર્મના
અમુક વિપાક સંભવી શકે છે, આ પ્રકારના વિચારમાં મનને એકાગ્ર કરવું
તેનું નામ વિપાકવિચય ધર્મધ્યાન છે અથવા-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભવ અને
જ્ઞાવની અપેક્ષાએ કર્મ કેવાં કેવાં ઇળ આપે છે તેનો સતત વિચાર કરવો
તેનું નામ વિપાકવિચય ધર્મધ્યાન છે “સંસ્થાનવિચય” લોકનો તથા દ્વીપ
સમુદ્રોનો જે આકારવિશેષ છે, તેનું નામ સંસ્થાન છે. જે ધ્યાનમાં તે સંસ્થાનનો
સતત વિચાર કરવામાં આવે છે, તે ધ્યાનને સંસ્થાનવિચય ધર્મધ્યાન કહે છે.
એટલે કે લોક આદિના સ્વરૂપનો વિચાર કરવામાં મનને એકાગ્ર કરવું તેનું
નામ ‘સંસ્થાનવિચય’ છે. કહ્યું પણ છે કે-“આસવચનમ્” ઇત્યાદિ-

પસ્વારિ લક્ષણાનિ મહપ્તાનિ, તથા—આદ્વારુચિઃ—આદ્વાયામ્—અથ સૂત્રતદુમયમ્—
અપાનલક્ષણાયાં રુચિઃ—અદ્વા=આદ્વારુચિઃ યદ્વા—આદ્વાયા રુચિરાદ્વારુચિઃ ૧ ।

“નિસર્ગરુચિઃ” —નિસર્ગણ—સ્વમાયેન રુચિર્નિસર્ગરુચિ ૨,

“સૂત્રરુચિઃ” —સૂત્ર—સર્વજ્ઞપ્રણીત આગમસ્તત્ર તસ્માદ્વા રુચિઃ સૂત્રરુચિઃ ૩,

“અવગાદરુચિઃ” —અવગાદનમવગાદ=દ્વાદશાદ્વાયગાદન, તેન રુચિરવગા
દરુચિઃ, યદ્વા મવગાદઃ=સાધુમસ્થાસન્નસ્તસ્ય રુચિઃ=સાધુપદેશાચ્છદ્વા અવગાદરુચિઃ
ઉક્તમ્—“આગમતલ્લપસેણ, નિસર્ગમ્બોર્જં જિણ્ણપ્પણીયાર્ણં ।

માવાર્ણં સદ્દર્શણં, ધર્મ્મજ્ઞાણસ્સ સ લિંગં । ૧ ।”

છાયા—“આગમોપદેશેન નિસર્ગતો યજ્ઞિનપ્રણીતાનામ્ ।

માવાનાં મદ્વાન ધર્મ્મજ્ઞાણસ્ય તલ્લિજ્ઞમ્ ।”

અથ ધર્મ્મજ્ઞાણસ્યાઽઽલ્લમ્બનાન્યાદ—‘ધર્મ્મસ્સ’

ધર્મ્મસ્ય તલ્લ મ્બાનસ્ય ત્સાર્ણાલ્લમ્બનાનિ મહપ્તાનિ, તથા—‘વાચના’

વાચનં વાચના—વિનીતશિષ્યપાપ ધર્મ્મનિર્જરણાર્થં સૂત્રોપદેશદાનાદિ ૧,

“પ્રતિપચ્છના” —પ્રતિપચ્છનં પ્રતિપચ્છના=પૂર્વાચીતે શક્તિતે સુનાદી તપ્પિ

ષારણાય દુર પ્રતિ પ્રચ્છનમ્ ૨,

કહે ગયે છે ઉનકા અભિપ્રાય પેસા છે, આજ્ઞા મેં અર્થ સૂત્ર ઓર તદુમય
મેં અદ્વા રચના, અથવા મગવાન કી આજ્ઞા મેં રુચિ હોના यह आज्ञा
'રુચિ' છે ૧ । સ્વમાયતાઃ જો અર્થ સૂત્ર આદિ મેં રુચિ હોતી છે, वह निस
'ર્ગ'રુચિ' છે ૨ । સર્વજ્ઞ પ્રણીત આગમ સે, या आगम મેં જો રુચિ હોતી છે
वह सूत्र રુચિ' છે ૩ । સાધુ કે ઉપદેશ સે જો રુચિ હોતી છે यह अवगा
'રુચિ' છે ૪ । કહા મી છે—“આગમ તલ્લપસેણ”

પ્રત્યાદિ ૧ ધર્મજ્ઞાણ કે

આલમ્બન ચાર છે વાચના ૧ વિનીત શિષ્ય કે લિપે ધર્મનિર્જરણ
સૂત્રોપદેશ આદિ હોના यह वाचना છે । પૂર્વાચીત સૂત્ર મેં શક્તિ સ્થલ
ધર્મજ્ઞાણના આલમ્બન (આધાર) ચાર છે—(૧) “વાચના” વિનીત
શિષ્યને ધર્મનિર્જરણ સૂત્રોપદેશ આદિ હોના નામ વાચના છે (૨)
પદેશાં હેતુ અલમ્બન કમ્ હોવા જોવા સૂત્રમાં જે જે શક્યો ઉદ્ભવે તે તે
શક્યો શુરુ પાસે પ્રકટ કરીને તેમજ નિવારણ કરવું તેન નામ પ્રચ્છના છે.
(૩) પૂર્વાચીત સૂત્ર વિસ્મૃત થઈને બાક તે માટે કરી કરીને તેન પાન કરવા
રહેવું તેન નામ પરિવર્તના છે (૪) સૂત્રમાં સબધી વિચારને અનુમેક્ષ

ધર્મજ્ઞાણના આલમ્બન (આધાર) ચાર છે—(૧) “વાચના” વિનીત

શિષ્યને ધર્મનિર્જરણ સૂત્રોપદેશ આદિ હોના નામ વાચના છે (૨)
પદેશાં હેતુ અલમ્બન કમ્ હોવા જોવા સૂત્રમાં જે જે શક્યો ઉદ્ભવે તે તે
શક્યો શુરુ પાસે પ્રકટ કરીને તેમજ નિવારણ કરવું તેન નામ પ્રચ્છના છે.
(૩) પૂર્વાચીત સૂત્ર વિસ્મૃત થઈને બાક તે માટે કરી કરીને તેન પાન કરવા
રહેવું તેન નામ પરિવર્તના છે (૪) સૂત્રમાં સબધી વિચારને અનુમેક્ષ

“ પરિવર્તના ”—પૂર્વાધીતસૂત્રાદેરવિસ્મરણાર્થમભ્યાસઃ ૩,

“ અનુપ્રેક્ષા ”—અનુ-પશ્ચાત્ પ્રેક્ષણં પ્રેક્ષા=પર્યાલોચનમનુપ્રેક્ષા=સૂત્રાર્થાનુસ્મરણમ્ ૪।

અથાનુપ્રેક્ષાયાશ્ચતુરો ભેદાનાહ—“ ધમ્મસ્સ ” ઇત્યાદિ—ધર્મ્યસ્ય સ્વલુ ધ્યાનસ્ય ચતસ્રોઽનુપ્રેક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—એકાનુપ્રેક્ષા—અનન્તરોક્તરીત્યાઽઽત્મન એકસ્ય—એકાકિનોઽસહાયસ્યેત્યર્થઃ, અનુપ્રેક્ષા=ભાવના=એકાનુપ્રેક્ષા, સા ચૈવમ્—

“ એગોઽહં નત્થિમે કોઈ, નાહમન્નસ્સ કસ્સવિ ।

ન તં પસ્સામિ જસ્સાહં, ણામૂ ભાવોતિ જો મમ । ૧ । ” ઇતિ,

છાયા—“ એકોઽહં નાસ્તિ મે કથિત્, —નાહમન્યસ્ય કસ્યચિત્ ।

ન તં પશ્યામિ યસ્યાહં, નાસૌ ભાવીતિ યો મમ । ૧ । ” ઇતિ, ૧,

તથા—“ અનિત્યાનુપ્રેક્ષા ”—અનિત્યસ્ય જીવિતાદેરનુપ્રેક્ષા=ભાવનાઽનિત્યાનુપ્રેક્ષા, સા ચૈવમ્—

“ કાયઃ સન્નિહિતાપાયઃ, સમ્પદઃ પદમાપદામ્ ।

સમાગમાઃ સાપગમાઃ, સર્વમુત્પાદિ મહ્ગુરય્ ૧૧ । ” ઇતિ, ૨,

કો ગુરુ સે પૂછના ઓર ડસ શઙ્કા કો દૂર કરના હસકા નામ પ્રચ્છના હૈ ૨ । પૂર્વાધીત સૂત્ર વિસ્મૃત ન હો જાય હસ નિમિત્ત સે પુનઃ પુનઃ ડસકા અભ્યાસ કરના પરિવર્તના હૈ (૩) સૂત્રાર્થકા પુનઃ પુનઃ વિચાર કરતે રહના હસકા નામ અનુપ્રેક્ષા ૪ હૈ ।

હસ અનુપ્રેક્ષા કે ચાર ભેદ હૈ, જૈસે—એકાનુપ્રેક્ષા આત્મા એક હૈ અસહાય એસી ભાવના રખના હસકા નામ એકાનુપ્રેક્ષા હૈ વહ એકાનુપ્રેક્ષા હસ પ્રકારસે હૈ—“ એગોઽહં નત્થિમે કોઈ ” ઇત્યાદિ સંસાર કે જિતને ભી પદાર્થ હૈ વે સવ પર્યાયદૃષ્ટિ સે અનિત્ય હૈ એસી ભાવના કા નામ અનિત્યાનુપ્રેક્ષા હૈ ।

કહા હૈ—“ કાયઃ સન્નિહિતાપાયઃ ” ઇત્યાદિ હસ સંસાર મેં મેરે

કહે છે. તે અનુપ્રેક્ષાના પશુ ચાર ભેદ છે—(૧) એકાનુપ્રેક્ષા—આત્મા એક છે, અસહાય છે એવી ભાવના રાખવી તેનું નામ એકાનુપ્રેક્ષા છે તે એકાનુપ્રેક્ષા આ પ્રકારની કહી છે—“ એગોઽહં નત્થિ મે કોઈ ” ઇત્યાદિ—(૨) સંસારના જેટલા પદાર્થો છે તે બધાં પર્યાયદૃષ્ટિએ અનિત્ય છે એવી ભાવનાનું નામ અનિત્યાનુપ્રેક્ષા છે. કહ્યું પશુ છે કે—“ કાયઃ સન્નિહિતાપાયઃ ” ઇત્યાદિ. (૩)

તથા " અશરણાનુમેક્ષા " - અશરણસ્થ=નામરહિતસ્થાઽશ્રમનોઽનુમેક્ષા=માવ
નાઽશરણાનુમેક્ષા, સા પૈવમ્—

" જન્મપ્રરામરણમપૈરમિદ્રુતે વ્યાધિવદનાપ્રસ્તે ।

જિનચરણચનાદયમ્ નાસ્તિ શરણ ક્વચિલ્લોકે ।૧। " રૂતિ ૩,

તથા=" સસારાનુમેક્ષા " - સસારઃ-ચત્સ્યુ ગતિયુ સર્વાવસ્થાસુ જીવાનાં
સરણ-ગમન ધ્રમણ, તસ્માનુમેક્ષા=મોચના સસારાનુમેક્ષા, સા પૈવમ્—

" માતા મૃત્વા દુહિતા મગિની માર્યાં ચ મરતિ સંસારે ।

પ્રગતિ સુતઃ પિતૃતાં ધ્રાતૃતાં પુનઃ સ્મૃતાંચૈવ ।૧। " રૂતિ ૪।

અય ચતુર્વિધ શુક્લસ્થાનમાહ—" સુકે " રૂત્યાદિ-શુક્લસ્થાનં ચતુર્વિધ
ચતુષ્પત્યચતારં-ચતુર્પુ=મેદ-લક્ષણા-ઽઽસ્મ્યના-ઽનુમેક્ષારૂપે પદાર્થેષુ પત્યચ
તાર=સમવતારો વિચારણીયસ્થન યસ્ય તત્તથોક્તમ્, મમ્મતમ્, તથા—" પૃથ

આત્મા કા કોઈ મી રક્ષક નહીં હૈ એસા વિચાર કરના રૂત્યાદિ નામ
અશરણાનુમેક્ષા હૈ । કહા મી હૈ—" જન્મ જરા " રૂત્યાદિ યદ્ જીવ કમ
વશ હોકર ચાર ગતિરૂપ રૂત્ય સસાર મેં પરિભ્રમણ કર રહા હૈ એસા
વિચાર કરના રૂત્યાદિ નામ સસારાનુમેક્ષા હૈ । કહા મી હૈ—" માતા
મૃત્વા " રૂત્યાદિ ? ૪ સસારાનુમેક્ષા મેં એસા કોઈ મી પયાય નહીં યદ્વા
હૈ કિ-જહાં આત્મા કા જન્મ મરણ નહીં જુવા હૈ એસા વિચાર પ્રધાન
રહતા હૈ યદ્વા યાત રૂત્ય શ્લોક મેં કહી હૈ । મેદ લક્ષણ આલમ્બન ઓર
અનુમેક્ષા રૂપ ચાર પદાર્થો મેં વિચારણીયરૂપ હોન સે રૂત્યાદિ સમવતાર
જુવા હૈ એસા વદ્ શુક્લસ્થાન મી ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ । વસકે

આ સસારમાં આત્માને કોઈ રક્ષક નથી, એ પ્રકારની ભાવના રાખવી તેનું
નામ અશરણાનુમેક્ષા છે. કહ્યું પણ છે—" જન્મ જરા " રૂત્યાદિ (૪) આ છપ
કર્મને અર્ધીને રહીને ચાર ગતિવાળા સસારમાં પરિભ્રમણ કરી રહ્યો છે, એવો
વિચાર કરવો તેનું નામ સસારાનુમેક્ષા છે. કહ્યું પણ છે કે—" માતા મૃત્વા "
રૂત્યાદિ. " એવી કોઈ પણ પર્માય નથી કે આ આત્માએ જન્મ-મરણ
અનુભવ્યા ન હેય, " આ પ્રકારની ભાવના સસાર અનુમેક્ષામાં પ્રધાન રહે
છે. એ જ વાત ' મતા મૃત્વા ' રૂત્યાદિ મેં કર્મમાં પ્રકટ કરવામાં આવી છે.

હવે શુક્લસ્થાનનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે-લેક, લક્ષણ, આલમ્બન
અને અનુમેક્ષારૂપ ચાર બાજોની અપેક્ષાએ વિચારણીય કોવાથી તેના ચાર
પ્રકાર કહ્યા છે. શુક્લસ્થાનના પૃથક્ત્વવિત્કે સચિચાર આદિ ચાર પ્રકારનું હવે
નિરૂપણ કરવામાં આવે છે—

કૃત્વવિતર્ક સવિચારમ્ ” પૃથક્-ભિન્નમ્, તસ્ય ભાવઃ પૃથક્ત્વમ્-ભેદોઽનેકત્વ-
મિત્યર્થઃ, તેન સહ ગતો વિતર્કઃ=પૂર્વાગતશ્રુતાઽલમ્બનો નાનાનયાનુસરણરૂપો
વિકલ્પો યત્ર તત્ તથા, एवं च “ पृथक्त्ववितर्कम् ”=एकद्रव्याश्रितानामुत्पाद-
व्ययध्रौव्यरूपपर्यायाणामनेकत्वेन विकल्पाश्रयीभूतं च तत्, “ सविचारम् ”-
विचरणं विचारः, स चार्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिरूपः, तत्रार्थः=परमाण्वादिः,
व्यञ्जन-व्यञ्जयति-अर्थं प्रकटयतीति व्यञ्जनम्=अर्थप्रकाशकं पदं, शब्दो वाचक
इति पर्यायाः, योगाः-मनोवाक्यरूपास्तेषु संक्रान्तिः-संक्रमणम् अन्यतमस्मा
दन्यतमस्मिन्नेकद्रव्ये गमनं, तेन सह वर्तत इति सविचारं चेति तथोक्तम् उक्तंच-
“ उप्पायठिर्भंगाइ पज्जयाणं जमेगद्वंमि ।

નાણાનયાનુસરણં પુઞ્વગયસુયાણુસારેણં । ૧ ।

વે પ્રકાર યે હૈં પૃથક્ત્વ ચિતર્ક સવિચાર આદિ હસ પૃથક્ત્વવિતર્ક
સવિચાર મેં શ્રુતજ્ઞાન કા આલમ્બન લેકર વિવિધ દૃષ્ટિયોં-સે વિચાર
કિયા જાતા હૈં હસલિયે તો યહ પૃથક્ત્વવિતર્ક હુવા હૈં ? ઓર હસમેં
અર્થ વ્યજ્જન તથા સંક્રમણ હોતા રહતા હૈં હસલિયે યહ વિચાર સહિત
હુવા હસ પ્રકાર હસ ધ્યાન કા પૂરા નામ “ પૃથક્ત્વવિતર્કસવિચાર ”
પડા હૈં । હસી વાત કો ટીકાકાર ને પૃથક્ ભિન્નમ્ તસ્ય ભાવઃ પૃથક્ત્વમ્,
ભેદોઽનેકત્વમ્, વિતર્કઃ પૂર્વગત શ્રુતાલમ્બનઃ નાનાનયાનુરૂપઃ વિકલ્પોયત્ર
તત્ તથા, હત્યાદિ પદોં દ્વારા પ્રગટ કિયા હૈં । વિતર્ક નામ શ્રુત કા હૈં
ઓર અર્થસંક્રાન્તિ, વ્યજ્જનસંક્રાન્તિ ઓર યોગસંક્રાન્તિ કા નામ
વિચાર હૈં, હસ પ્રકાર વિચાર ઓર વિતર્ક કા અર્થ સમજ કર હન ભેદોં

આ પૃથક્ત્વવિતર્ક સવિચારમાં શ્રુતજ્ઞાનનો આધાર લઈને વિવિધ દૃષ્ટિ
ઓથી વિચાર કરવામાં આવે છે, તેથી તેને પૃથક્ત્વવિતર્ક રૂપે પ્રકટ કર્યું છે.
અને તેમાં અર્થ, વ્યજ્જન આદિની અપેક્ષાએ સંક્રમણ થતું જ રહે છે, તેથી
તે ‘ વિચારસહિત ’ વિશેષણ લગાડવાને પાત્ર બન્યું છે આ રીતે આ ધ્યાનનું
પૂર્ણ નામ ‘ પૃથક્ત્વવિતર્ક સવિચાર ’ પડ્યું છે. એ જ વાતને સૂત્રકારે આ
સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરી છે—

“ પૃથક્-ભિન્નમ્ તસ્ય ભાવઃ પૃથક્ત્વમ્ ભેદોઽનેકત્વમ્, વિતર્ક પૂર્વગત-
શ્રુતાલમ્બન નાનાનયાનુરૂપ-વિકલ્પો યત્ર તત્તથા ” ઇત્યાદિ.

વિતર્ક એટલે શ્રુત એટલે અર્થ સંક્રાન્તિ, વ્યજ્જન સંક્રાન્તિ અને યોગ
સંક્રાન્તિનું નામ વિચાર છે આ પ્રમાણે વિચાર અને વિતર્કનો ભેદ સમજા-
વવામાં આવે તો આ ભેદોનું સ્પષ્ટીકરણ થઈ જાય છે. કહ્યું પણ છે કે—

સવિયારમત્થ ધર્મજોગંતરઓ સય પદમસુલ્લં ।

હોઈ પુત્રુત્તવિયકં, સવિયારમરાગમાવસં । ૨ । "ઈતિ,

હાયા—“ઉત્પાદસ્થિતિમજ્ઞાદિ પર્યાયાણાં યથેક્ષ્ણ્યે ।

નાનાનયાનુસર્ણં પૂર્વગતશ્રુતાનુસારેણ । ૧ ।

સવિચારમર્થવ્યજ્ઞનયોગાન્તરતસ્તત્ પ્રથમશુક્લમ્ ।

મયતિ પૃથક્સ્થિતિકં સવિચાર મરાગમાવસ્ય । ૨ । "ઈતિ

ઈતિ શુન્સભ્યાનસ્ય મયમો મેદઃ

કા સ્પષ્ટીકરણ હો જાતા હૈં । સ્કન્ધ—“ઉપ્પાય ઠિઈ મંગાઈ” હત્યાદિ
હસ કથન કા તાત્પર્ય યહ હૈં—કિ જય સપ્તમમેણી યા ક્ષવકમેણી પર
આરોહણ કરનેલા કોઈ એક પૂર્વજ્ઞાનધારી મનુષ્ય શ્રુતજ્ઞાન કે થસ સે
કિસી ધી પરમોણુ આદિ જહ યા આત્મરૂપ ચેતનદ્રવ્ય કા ચિન્તન કરતા
હૈં ઓર પેસા કરતે હુએ જહ સસકા દ્રવ્યાર્થિકદૃષ્ટિ સે યા પર્યાયાર્થિક
દૃષ્ટિ સે ચિન્તન કરતા હૈં । દ્રવ્યાસ્થિકદૃષ્ટિ સે ચિન્તન કરતા હુવા
જહ પુત્રલાદિ વિવિધ દ્રવ્યોં મેં કિસ દૃષ્ટિ સે સામ્ય હૈં ઓર इनके
અચાન્તર મેદ ધી કિસ પ્રકાર સે હો સકતે હૈં હત્યાદિ વાતોં કા વિચાર
કરતા હૈં । પર્યાયાર્થિકદૃષ્ટિ સે વિચાર કરતા હુવા જહ उनकी वर्तमान
કાલિક વિવિધ અવસ્થાઓં કા વિચાર કરતા હૈં । ઓર શ્રુતજ્ઞાન કે
આધાર સે કમી યહ જીવ કિસી એક દ્રવ્યરૂપ અર્થ પર સે વસરે દ્રવ્ય
રૂપ અર્થ પર એક દ્રવ્યરૂપ અર્થ પર સે કિસી એક પર્યાયરૂપ અર્થ પર
એક પર્યાયરૂપ અર્થ પર સે વસરે પર્યાયરૂપ અર્થ પર યા એક પર્યાયરૂપ

ઉપ્પાય ઠિઈ મંગાઈ ” ઇત્યાદિ—

આ કથનના અર્થ નીચે પ્રમાણે છે—ઉપધમ એવી ક્ષવક એવીપર
આરોહણ કરનારે કોઈ એક પૂર્વજ્ઞાનધારી મનુષ્ય શ્રુતજ્ઞાનને આધારે કોઈ
પણ પરમાણુ આદિ જહનું અથવા આત્મારૂપ ચેતનદ્રવ્યનું ચિન્તન કરે છે અને
એવું કરતો તે મનુષ્ય તેનું દ્રવ્યાર્થિક દૃષ્ટિથી કે પર્યાયાર્થિક દૃષ્ટિથી ચિન્તન
કરે છે દ્રવ્યાર્થિક દૃષ્ટિએ વિચાર કરતી વખતે તે પુત્રલાદિ દ્રવ્યોમાં કઇ દૃષ્ટિએ
આત્મ છે અને તેમના અચાન્તર એટલે (પ્રસેદો) પણ કઇ રીતે થઈ શકે છે,
ઇત્યાદિ વાતોનો વિચાર કરે છે પર્યાયાર્થિક દૃષ્ટિએ બ્યારે તે તેમનો વિચાર
કરે છે ત્યારે તે તેમની વર્તમાનકાલિક વિવિધ અવસ્થાઓનો વિચાર કરે છે
અને શ્રુતજ્ઞાનને આધારે તે છત્ર ક્યારેક એક દ્રવ્યરૂપ અર્થપરથી બીજા અર્થ
પર, એક દ્રવ્યરૂપ અર્થપરથી કોઈ એક પર્યાયરૂપ અર્થપર, એક પર્યાયરૂપ
અર્થપરથી બીજા પર્યાયરૂપ અર્થપર અથવા એક પર્યાયરૂપ અર્થપરથી કોઈ

“ એગત્તવિચક્ક ” इत्यादि-एकत्ववितर्कऽविचारम्-एकस्य भाव एकत्वं, तेनैकत्वेन=अभेदेनोत्पादव्ययश्रौव्यादि पर्यायाणामन्यतमैकरूपर्यायाऽऽलम्बनतया, वितर्कः=पूर्वगतश्रुताश्रयो व्यञ्जनरूपो वा यस्य तदेकत्ववितर्क, तच्च तद् अविचारम्-अविद्यमानो विचार=अर्थव्यञ्जनयोगानामन्यतमस्मादन्यतमस्मिन् संक्रान्तिरूपो निर्वातस्थानस्थित-दीपवद् यस्मिन् तदविचारमिति तत्तथोक्तम्, उक्तं च-

अर्थ पर से किसी एक द्रव्यरूप अर्थ पर ज्ञानधारा को संक्रमित करके चिन्तन के लिये प्रवृत्त होता है। इसी प्रकार कभी अर्थ पर से व्यञ्जन-अर्थ प्रकाशक शब्द पर और शब्द पर से अर्थ पर या-किसी एक शब्द पर से दूसरे शब्द पर चिन्तन के लिये प्रवृत्त होता है तथा-ऐसा करता हुवा वह कभी मनोयोग आदि तीनों में से किसी एक योग का आलम्बन लेता है और-फिर उसे छोड़कर अन्ययोग का आलम्बन लेता है तब उसको होनेवाला वह ध्यान पृथक्त्ववितर्कसविचार कहा जाता है। “ एगत्तवियक्क ” इत्यादि जिस ध्यान में पूर्वगत श्रुत के आधार से उत्पात आदि किसी एक पर्याय को या द्रव्य का ही चिन्तन किया जाता है और चिन्तन करते समय वह जिस द्रव्य या-पर्याय या शब्द, या योग का आलम्बन किये रहता है वह जिसमें नहीं बदलता है ऐसा वह ध्यान एकत्ववितर्कसविचार कहा गया है। जिस प्रकार निर्वात स्थान में रखा हुवा दीपक अविचलित शिखा होता है उसी प्रकार से

એક દ્રવ્યરૂપ અર્થપર જ્ઞાનધારાને સંક્રમિત કરીને ચિન્તનને માટે પ્રવૃત્ત થાય છે. એ જ પ્રમાણે ક્યારેક અર્થપરથી વ્યંજન (અર્થ પ્રકાશક શબ્દ) પર, અને શબ્દપરથી અર્થપર, અથવા કોઈ એક શબ્દપરથી બીજા શબ્દ પર ચિન્તનને માટે પ્રવૃત્ત થાય છે. તથા એવું કરતો તે મનુષ્ય ક્યારેક મનોયોગ આદિ ત્રણે યોગોમાથી કોઈ એક યોગનું આલંબન (અવલંબન-આધાર) લે છે, વળી તેને છોડી દઈને અન્ય યોગનું આલંબન લે છે, વળી તેને છોડીને બીજા કોઈ યોગને આધાર લે છે, ત્યારે તેના દ્વારા જે સતત ચિન્તન કરવામાં આવે છે તેને ‘ પૃથક્ત્વ વિતર્ક સવિચાર ’ કહે છે

“ એગત્ત વિચક્ક ” ઇત્યાદિ—

જે ધ્યાનમાં પૂર્વગત શ્રુતને આધારે ઉત્પાત આદિ કોઈ એક પર્યાયનું અથવા દ્રવ્યનું જ ચિન્તન કરવામાં આવે છે, અને તે ચિન્તન કરતી વખતે તે જીવે જે દ્રવ્ય કે પર્યાય કે શબ્દ અથવા યોગનું આલંબન લીધું હોય તે જેમાં બદલતો નથી, એવા ધ્યાનને ‘ એકત્વ વિતર્ક સવિચાર ’ કહે છે. જેવી રીતે નિર્વાત સ્થાનમાં રાખેલા દીપકની જ્યોત અવિચલિત રહે છે, એ જ

“ જ પુણ સુનિષ્પર્કવ નિવાયટાપ્ત્યર્થવિધિ ચિત્ત ।

ઉપ્પાયઠિ મંગાદયાણમેગમિ પઞ્ચાણ । ૧ ।

અવિચારમત્પરવજ્ઞાણમોગતરઓ તય વિદ્યસુક ।

પુન્નગયસુયાસંઘણમેગતચિચક્ષમવિચાર । ” ઇતિ,

છાયા—“ યત્નના સુનિષ્પર્કમ્પ નિવાતસ્થાનમશીપ ઇવ ચિત્તમ્ ।

ઉત્પાદસ્થિતિમજ્ઞાદીનામેકસ્મિન્ પર્યાયે । ૧ ।

અવિચારમર્થમ્પ્રજ્ઞાનયોગાન્તરતસ્તવ્ દ્વિતીયં શુક્લમ્ ।

પૂર્વગતધુતાડ્ડલમ્પનમેકસ્વચિત્તર્કમવિચારમ્ । ” ઇતિ,

ઇતિ શુક્લધ્યાનસ્ય દ્વિતીયો ભેદઃ । ૨ ।

તથા—“ સૂક્ષ્મક્રિયાઽનિર્વર્તિ ”—સૂક્ષ્મા—કાયિકચુષ્કવાસાદિકા ક્રિયા યસ્મિ
સ્તત્ સૂક્ષ્મક્રિયમ્, एतद् निर्वाणमनकाष्ठे निश्चमनोषाम्योगस्याર્दनिक્ષુદ્રકાય
इसमें ध्यानी का ध्यान एकसी [समान] पड़ता है । कहा है—“ ज पुण
सुनिष्पकर्प—” इत्यादि ?

; तात्पर्य—इसका ऐसा है कि जब जीव क्षीणमोह गुणस्थान को प्राप्त
होकर सुतरूप चित्तर्क के आधार से किसी एक द्रव्य या पर्याय का
चिन्तन करता है और—चिन्तन करते समय जो अर्थ, व्यञ्जन या
योग का अवलम्बन लिये था उसमें सफ़मण होना नहीं है इस ध्यान के
फलसे यह जीव यातक कर्मोंकी शेष (सपूर्ण) प्रकृतियोंका विनाश कर
केवलज्ञान प्राप्त करता है । इस प्रकार से यह द्वितीय शुक्लध्यान का
स्वरूप है “सूक्ष्मक्रियाऽनिर्वर्ति” जिस ध्यान में कायिकी क्रिया
वह्वाप्त आदिक सूक्ष्म रहती है अर्थात् सर्वज्ञ देव योग निरोध करते

પ્રમાણે આ પ્રકારના ધ્યાનીના ધ્યાનની ધારા એક સરખી વહેતી રહે છે. કહ્યું પણ છે
કે—“ જ પુણ સુનિષ્પર્કવ ” ઇત્યાદિ. આ કથનનો શાબ્દાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

ધ્યાને એવ ક્ષીણમોહ સુલ્લસ્થાનને પ્રાપ્ત કરીને સુતરૂપ વિતર્કને આધારે
કેઈ એક દ્રવ્ય અથવા પર્યાયનું ચિન્તન કરે છે, અને ચિન્તન કરતી વખતે
તેણે એ અર્થ, વ્યજન કે યોગનું અવલમ્બન લીધું હોય તેમાંથી શકમણ
કરતો નથી, ત્યારે તેના તે ધ્યાનને “ એકત્વ વિતર્ક શુક્લ ધ્યાન ” કહે છે
આ ધ્યાનના પ્રભાવથી એવ યાતિકર્મોની શેષ પ્રકૃતિઓનો શૂન્ય કરીને કેવલજ્ઞાન
પ્રાપ્ત કરે છે. આ પ્રકારના શુક્લધ્યાનનું આ બીજા પ્રકારનું સ્વરૂપ છે

“સૂક્ષ્મક્રિયા ઽ નિર્વર્તિ—એ ધ્યાનમાં ઉચ્ચવાશ આદિ કાયિકીક્રિયા સૂક્ષ્મ
રહે છે—એટલે કે અર્થજ્ઞ દેવ યોગનિરોધ કરતી વખતે બીજા બધા યોગોનો

યોગસ્ય કેવલિનો ભવતિ, તત્ત્વ તદ્ “ અનિવર્તિ ”—નિવર્તત્ इत्येवं शीलं निवर्ति,
न निवर्ति=अनिवर्ति=प्रवर्द्धमानतरपरिणामादव्यावर्ति चेति तत्तथोक्तम्, उक्तं च—

“ निव्वाणगमणकाले, કેવલિનો દરનિરુદ્ધયોગસ્સ ।

સુહુમક્રિયાઽનિવર્તિ, તદયં તણુકાયક્રિયસ્સ । ૧ । ” इति,
છાયા—“ નિર્વાણગમનકાલે, કેવલિનોઽર્દ્ધનિરુદ્ધયોગસ્ય ।

સૂક્ષ્મક્રિયાઽનિવર્તિ તૃતીયં તનુ (સૂક્ષ્મ) કાયક્રિયસ્વ । ૧ । ” इति,

इति शुक्लध्यानस्य तृतीयो भेदः । ३ ।

“ સમુચ્છિન્નક્રિયાઽપ્રતિપાતિ ”—સમુચ્છિન્ના=પ્રક્ષીણા ક્રિયા = કાયાદિ-
વ્યાપારરૂપા શૈલેશીકરણે નિરુદ્ધયોગત્વેન યસ્મિન્સત્ સમુચ્છિન્નક્રિયં, તત્ત્વ તદ્
હુવે દૂસરે સવ યોગોં કા અભાવ કર સૂક્ષ્મ કાયયોગ કો પ્રાપ્ત હોતે હૈં
તત્ સૂક્ષ્મક્રિયાઅનિવર્તિ ધ્યાન હોતા હૈ, તત્ કાયવર્ગણાઓં કૈ નિમિત્ત
આત્મ પ્રદેશોંકા અતિ સૂક્ષ્મ પરિસ્પન્દ શેષ રહતા હૈં હસલિયે—હસકા નામ
સૂક્ષ્મક્રિયાઽનિવર્તિ ધ્યાન હૈ । યહ ધ્યાન નિર્વાણગમન કાલ મૈં મન
વચન યોગ કા નિરોધ હો જાને પર ઓર કાયયોગ કા અર્ધ નિરોધ
હોને પર કેવલી જીવ કો હોતા હૈ । યહ ધ્યાન હોકર છૂટના નહીં હૈ
ક્યોં કિ—હસમૈં પ્રવર્દ્ધમાનતર પરિણામ હોને સે અવ્યાવર્તિ યહ અનિ-
વર્તિરૂપ કહા ગયા હૈ । ઉક્તં ચ—“ નિવ્વાણગમણકાલે—” इत्यादि
“ સમુચ્છિન્નક્રિયાઽપ્રતિપાતિ ” શૈલેશીકરણ મૈં નિરુદ્ધ યોગ હોને કૈ
કારણ જિસ ધ્યાન મૈં કાયિક આદિ વ્યાપારરૂપ ક્રિયા સમુચ્છિન્ન બિલ-
કુલ ક્ષીણ હો જાતી હૈ—ઓર યહ ધ્યાન અપ્રતિપાતિ હોતા હૈ પ્રતિપત્તન

અભાવ કરીને માત્ર સૂક્ષ્મકાય યોગમાજ પ્રવૃત્ત રહે છે, ત્યારે સૂક્ષ્મક્રિયા
નિવર્તિધ્યાન થાય છે. ત્યારે કાયવર્ગણાઓના નિમિત્તરૂપ આત્મપ્રદેશોનો અતિ
સૂક્ષ્મ પરિસ્પન્દજ બાકી રહે છે, તેથી તેનું નામ ‘સૂક્ષ્મક્રિયાનિવર્તિધ્યાન’
પડ્યું છે. નિર્વાણગમન કાળે મનવચન યોગનો નિરોધ થઈ જવાથી અને કાય-
યોગને અર્ધનિરોધ થઈ જવાથી કેવલીનો જીવ આ પ્રકારના ધ્યાનથી યુક્ત
બને છે. આ ધ્યાનની ધારા છૂટતી નથી, કારણ કે તેમાં પ્રવર્દ્ધમાનતર પરિ-
ણામ હોવાથી તે ધ્યાન એકવાર પ્રાપ્ત થયા બાદ છૂટી જતું નથી તે ધ્યાનને
અનિવર્તિરૂપ કહ્યું છે—કહ્યું પણ છે કે—“ નિવ્વાણ ગમણકાલે ” इत्यादि—

હવે સમુચ્છિન્ન ક્રિયાતિપાતિ શુક્લધ્યાનના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરવામાં
આવે છે—શૈલેશીકરણમા યોગોનો નિરોધ થવાને કારણે જે ધ્યાનમા કાયિક
આદિ વ્યાપારરૂપ ક્રિયા સમુચ્છિન્ન (બિલકુલ ક્ષીણ) થઈ જાય છે, તે ધ્યાનને

“અપતિપાતિ”-પતિપતતીત્વચંચીલં પ્રતિપાતિ, ન પ્રતિપાત્યપ્રતિપાતિ=પતિપ-
તનસ્વભાવરહિતમનુપરતિ સ્વમાનમિત્યર્થઃ, એતિ તથોક્તમ્, ઉચ્ચત ચ—

“તસ્સેષ સેષેસીગયસ્સ સેલન્વનિષ્કયસ્સ ।

યોચ્છિન્નકિરિયમપ્પઢિવાઈ ણાણ પરમસુલ્લં ૧૧ ।” ઇતિ,

છાયા—“તસ્યૈવ શ્રેષ્ઠેશીગતસ્ય શ્રેષ્ઠવદિષ્વકમ્પસ્ય ।

બ્યુન્નિભક્રિયમપ્રતિપાતિ ધ્યાનં પરમશુસ્લમ્ ૧૨ ।” ઇતિ,

ઇતિ શુક્લધ્યાનસ્ય ચતુર્થો મેઢઃ ૧૪ ।

અર્ધિમ્માન્તિમે શુક્લધ્યાનમેઢદ્વયેડપ ક્રમા-કેપલી કિલાન્તર્ધર્ત્તમાધિમિ
પરમપદે મધોપગ્રાહિ-વેદનીયાડચ્યુનાંમગોપ્રાકયેપુ પદ્ધર્તુકર્મસુ સમુદ્ધાતવો
નિસર્ગેષ વા સમસ્થિતિકેપુ સસુ યોગનિરોષ કરોતિ, તથ ચ ક્રમા-

“પઞ્ચમમેષસન્નિસ્સ ખતિયાઈ જહન્નમોગિસ્સ ।

હોતિ મળોદબ્બાઈ સબ્બાવારો ય જમ્મચો ૧૧ ।

તદસત્ત્વણનિરીણે સમપ સમપ નિરુપમાણો સો ।

મમસો સમ્મનિરોહ કુમાઈ અસલ્લેચ્છસમપઈ ૧૨ ।

સ્વભાવ સે રહિત હોતા હૈ । સો હી કહા હૈ-“તસ્સેષ સેષેસી ગયસ્સ”
હસ્યાદિ હસ ધ્યાન કા ઉવચ હોતે હી સાતાવેદનીય કર્મ કા આલ્લવ રુક
જાતા હૈ । ઓર અન્ત મેં ચોપ સય કર્મ ક્ષીણ હો જાને સે મોક્ષ પ્રાપ્ત હો
જાતા હૈ । હસ અન્તિમ શુક્લધ્યાન ઢય મેં દેસા ક્રમ હૈ કલ્પી મગવાન્
અન્તર્ધર્ત્ત માવી પરમપદ કે હોને પર મધોપગ્રાહિ વેદનીય આયુ નામ
મોક્ષ જન ચાર કર્મો કે સમુદ્ધાત સે, અથવા, -નિસર્ગ સે સમસ્થિતિક
હો જાને પર યોગનિરોષ કરતે હૈ । યહા કા ક્રમ હસ પ્રકાર સે હૈ-
“પઞ્ચમમેષસન્નિસ્સ ખેસ્સ-” હસ્યાદિ

સમુચ્છિન્ન ક્રિયાતિપાતિધ્યાન કહે છે આ ધ્યાન પ્રતિપતનના સ્વભાવથી પણ
ચક્રિત હોય છે, તેથી તેને અપતિપ્રતિધ્યાન કહ્યું છે એ જ વાત સૂત્રકારે
“તસ્સેષ સેષેસીગયસ્સ” ઇત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરી છે

આ ધ્યાનનો ઉદય થતાની સાથે જ સાતાવેદનીય કર્મનો આલ્લવ બંધ
થઈ જાય છે અને આખરે જાણીતા સમસ્ત કર્મોનો તાલ થઈ જવાથી મોક્ષ
પ્રાપ્ત થઈ જાય છે આ ઉદ્ધવા બે શુદ્ધધ્યાનમાં એવો ક્રમ છે કે કેવલી
અમધાન અન્તર્ધર્ત્ત માવી પરમપદના સદ્ભાવમાં બેવોપગ્રાહિ-વેદનીય, આયુ,
નામ અને ઝોત્ર આ ચાર કર્મોના સમુદ્ધાત દ્વારા અથવા નિસર્ગ થી (નેવ
ત્રિંક શીતે) સમસ્થિતિક થઈ જાય ત્યારે યોગનિરોષ કરે છે તે ક્રમ આ પ્રમાણે
છે-“પઞ્ચમમેષ સમિરણ” ઇત્યાદિ-નીલ એકતે પવત. વિચાજતા ઉચ્ચર્ધ

पञ्चतमेतविंदिय-जहन्नवज्ञोगपञ्जया जे उ ।
तदसंख्यगुणविहीणे समए समए निरुंभंतो । ३ ।
संख्यवज्ञोगरोहं संखातीएहिं कुणइ समएहिं ।
तत्तो असुद्धमपणगस्त पढमसमओववन्नस्त । ४ ।
जो किर जहन्नजोगो तदसंखेज्जगुणहीणमेक्केके ।
समए निरुंभमाणो देहतिभागं च मुंचंतो । ५ ।
रुंभइ स कायजोगं संखाईएहिं चेव समएहिं ।
तो कयजोगनिरोहो सेलेसीभावणामेइ । ६ ।
हस्तसक्खराइं मज्जेण जेण कालेण पंच भन्नंति ।
अच्छइ सेलेसिगओ तत्तियमेत्तं तओ कालं । ७ ।
तणुरोहारंभाओ सायइ मुहुभकिरियाणियट्ठिं सो ।
वोच्छिन्नकिरियमप्पडिवाइं सेलेसिकालंमि । ८ । ” इति,

छाया—पर्याप्तमात्रसंज्ञिनः यावन्ति जघन्ययोगिनः ।

भवन्ति मनोद्रव्याणि तद्व्यापारश्च यावन्मात्रः । १ ।
तदसंख्यगुणविहीनानि समये समये निरुन्धन् सः ।
मनसः सर्वनिरोधं करोत्यसंख्यातसमयैः । २ ।
पर्याप्तमात्र द्वीन्द्रियस्य जघन्यवाग्योगपर्यया ये तु ।
तदसंख्यगुणविहीनान् समये समये निरुन्धन् । ३ ।
सर्ववाग्योगरोधं संख्यातीतैः करोति समयैः ।
ततश्च सूक्ष्मपनकस्य प्रथमसमयोत्पन्नस्य । ४ ।
यः किल जघन्ययोगस्तदसंख्येय गुणहीनमेकैकस्मिन् ।
समये निरुन्धन् देहत्रिभागं च मुञ्चन् । ५ ।
रुणद्वि स काययोगं संख्यातीतैश्च समयैः ।
ततः कृतयोगनिरोधः शैलेशीभावनामेति । ६ ।
येन मध्येन कालेन पञ्च हस्वाक्षराणि भण्यन्ते ।
तावन्मात्रं कालं ततः शैलेशीगतस्तिष्ठति । ७ ।
तदनुरोधाऽऽरम्भाद् ध्यायति सूक्ष्मक्रियानिवर्त्ति सः ।
व्युच्छिन्नक्रियमप्रतिपाति शैलेशीकाले । ८ । ” इति,

शैलाः—पर्वताः, तेषाम् ईशः=स्वामी बृहत्त्वादिगुणवत्त्वात् शैलेशः—मेरुः,
तस्येव यन्निष्प्रकम्पत्वं यत्र सा शैलेशी, तद्रूपा भावना—अवस्था शैलेशी भावना,
ताम् एति=प्राप्नोतीति तदर्थः ।

અથ શુક્લધ્યાનસ્ય લક્ષણાન્યાહ-“ સુક્લસ્ય ” इत्यादि-शुक्लस्य खलु ध्यानस्य चत्वारि लक्षणानि प्रदत्तानि, तद्यथा-“ अव्ययम् ”-इति-व्यथाया अभावोऽव्ययम्=देवादि-कृतोपसर्गादि जनितमय-विचलनाभावः, इति प्रथमः १।

तथा-असम्मोहः-सम्मोहः=मूढता, न सम्मोहोऽसम्मोहः=देवादि-कृतमायाजनितायाः सूक्ष्मपदार्थविषया वा मूढताया अभावः, इति द्वितीयः । २ ।

तथा-“ विवेके ” इति-विवेकः=इसक्त સૌરનીરન્યાયેન સ્વમુદ્ધયા વેદાશ-ત્મન આત્મત્વ સર્વસયોગાનાં વા વિવેચન પૃથક્કરણમિત્યર્થઃ । इति तृतीयः ३।

શૌલનામ પર્વત કા હૈ વૃદ્ધસ્વાદિ ગુણ યુક્ત હોને સે જો પર્વતોં કા સ્વામી હો વહ શૌલેશ હૈ એસા મેઠ હૈ, હસ મેઠ કે સમાન જિસ ભાવના મેં નિષ્પ્રકરખન હો વહ શૌલેશી ભાવના હૈ શૌલેશી અવસ્થા હૈ યોગ સે નિષેધિત સકલ વ્યાપારચાલા જીય હી હસ શૌલેશી અવસ્થા કો પ્રાપ્ત કરતા હૈ । શુક્લધ્યાન કે લક્ષણ હસ પ્રકાર સે હૈ-“ અવ્યયમ્ ” વ્યયા કા અભાવ હો જાના દેવાદિકૃત જો ઉપસર્ગ વહી વ્યયા હૈ ઉસ અવ સે વિચલિત નહીં હોના શુક્લધ્યાન કા પહલા લક્ષણ અવ્યય હૈ-૧ “ અસમ્મોહઃ ” મૂઢતા કા નામ સમ્મોહ હૈ હસકા અભાવ અસમ્મોહ હૈ અર્થાત્-દેવાદિકૃત માયાજનિત મૂઢતા કા યા સૂક્ષ્મ પદાર્થ વિષયક મૂઢતા કા અભાવ હો જાના હસકા નામ અસમ્મોહ હૈ ૨ “ વિવેકઃ ” જિસ પ્રકાર હસ પાની સે વૃદ્ધ કો અલગ કર લેતા હૈ વસી પ્રકાર મુદિ

આદિની અપેક્ષાએ જે સમગ્ર પર્વતોના સ્વામી છે-સમગ્ર પર્વતોમાં શ્રેષ્ઠ છે, તેને શૌલેશ કહે છે એવો પર્વત મેઠ છે જે ભાવનામાં (અવસ્થામાં) તે મેઠ સમાન નિષ્પ્રકરખન હોય છે, તે ભાવનાને શૌલેશી ભાવના અથવા શૌલેશી અવસ્થા કહે છે મન, વચન અને કાવચ સહજ વ્યાપારોના એવું નિષેધ કર્યો હોય છે એવો એવ જ શૌલેશી અવસ્થા પ્રાપ્ત કરી શકે છે

શુક્લધ્યાનના લક્ષણો આ પ્રમાણે છે-(૧) “ અવ્યયમ્ ” આ ધ્યાન વખતે ધ્યાનીની વ્યયાનો અભાવ થઈ જાય છે દેવાદિકૃત ઉપસર્ગને જ અહીં વ્યયા સમજવી જોઈએ. તે સમયે વિચલિત ન થવું તે શુક્લધ્યાનનું પહેલું લક્ષણ છે, અહીં તે લક્ષણને “ અવ્યય ” પદથી પ્રકટ કર્યું છે

(૨) ‘ અસમ્મોહઃ ’ મૂઢતાનું નામ સમ્મોહ છે, અને તેના અભાવને અસમ્મોહ કહે છે એટલે કે દેવાદિકૃત માયાજનિત મૂઢતાનો અભાવ સૂક્ષ્મ પદાર્થ વિષયક મૂઢતાનો અભાવ થઈ જવો તેનું નામ અસમ્મોહ છે

“ વિવેક ” જેમ કે સ પાણીમાંથી રૂપને અલગ કરી નાખે છે, એ જ

તથા=“ વિડસગો ” ઇતિ-વ્યુત્સર્ગ:-વિ-વિશેષણ સર્વવિષયનિઃસંજ્ઞત્વેન
ઉત્સર્ગ:-દેહોપધીનાં ત્યાગો વ્યુત્સર્ગઃ । ઇતિ ચતુર્થઃ । ૪ ।

અત્ર ગાથેયમ્-“ ચાલિજ્જહ વીમેહ વ ધીરો ન પરીસહોવસગેહિં ।

સુદમેસુ ન સંમુજ્જહ ભાવેસુ ન દેવમાયાસુ । ૧ ।

દેહવિવિત્તં પેચ્છહ અપ્પાણં તહ ય સવ્વસંજોગે ૩ ।

દેહોવહિવુસ્સગં નિસંસગો સવ્વહા કુણહ । ૨ । ” ઇતિ,

છાયા-“ ચાલ્યતે વિમેતિ વા ધીરો ન પરિપહોપસર્ગઃ ।

સૂક્ષ્મેષ્વપિ ભાવેષુ ન સંમુહ્યતિ ન દેવમાયાસુ । ૧ ।

દેહવિવિત્તં પ્રેક્ષતે આત્માનં તથા ચ સર્વસંયોગાન્ ૩ ।

દેહોપધિવ્યુત્સર્ગ નિઃસર્ગઃ સર્વથા કરોતિ । ૨ । ” ઇતિ,

અથ શુક્લધ્યાનસ્યાઽઽલમ્બનાન્યાદ-“ સુક્કસ્સ ” ઇત્યાદિ-શુક્લસ્ય ચલુ
ધ્યાનત્ય ચત્વારિ આલમ્બનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-“ ચંતી ” ઇતિ-ક્ષાન્તિઃ=ક્ષમા,
૧, “ મુક્તિઃ ”-નિર્લોભતા ૨, “ આર્જવ ”-સરલતા ૩, “ માર્દવ ”-મૃદુતા
૪ ઇતિ । અત્ર ગાથા-

દ્વારા દેહ સે આત્મા કો એવં આત્મા સે સર્વ સંયોગોં કો અલગ કર
રખના વિવેક હૈ ૩ તથા “ વિડસગો ” વ્યુત્સર્ગ:-વિશેષરૂપ સે સર્વ
વિષયોં મેં નિસર્ગ હો જાને કે કારણ દેહ ઓર ઉપધિયોં કા ત્યાગના
વ્યુત્સર્ગ હૈ-૪ યહાં એસી ગાથાએં હૈ-“ ચાલિજ્જહ વીમેહ વ ધીરો ” ઇત્યાદિ
શુક્લધ્યાન કે આલમ્બન હસ પ્રકાર સે હૈ-“ સુક્કસ્સ ” ઇત્યાદિ ૫૨ ॥
“ ચંતી ” ક્ષાન્તિઃ ક્ષમા ૧ મુક્તિ નિર્લોભતા ૨ “ આર્જવ ” સરલતા
૩ ઓર “ માર્દવ મૃદુતા ૪ ગાથા “ અહ ચંતિ મહવજ્જવ ” ઇત્યાદિ

પ્રમાણે બુદ્ધિ દ્વારા ઢેહથી આત્માને અલગ કરવો, અને આત્મામાંથી સર્વ
સંયોગોને અલગ કરી નાખવા તેનું નામ વિવેક છે.

(૪) “ વિડસગો-વ્યુત્સર્ગ ”- વિશેષ રૂપે સર્વ વિષયોમાંથી નિઃસંજ
થઈ જવાને કારણે ઢેહ અને ઉપધિઓનો ત્યાગ કરવો તેનું નામ વ્યુત્સર્ગ છે.
અહીં આ પ્રકારની ગાથાઓ છે-“ ચાલિજ્જહ વીમેહ વ ધીરો ” ઇત્યાદિ.

શુક્લધ્યાનના આ ચાર અવલંબનો કહ્યા છે-“ સુક્કસ્સ ” ઇત્યાદિ
(૧) “ ચંતી ” ક્ષાન્તિ (ક્ષમા), (૨) મુક્તિ-નિર્લોભતા, (૩) આર્જવ-સરલતા
અને (૪) માર્દવ-મૃદુતા એ જ વત નીચેની ગાથા દ્વારા સૂત્રકરે પ્રકટ કરી
છે-“ અહચંતિ-મહવ-જ્જવ ” ઇત્યાદિ-

“અહ સ્થિતિ-મદ્ય-જ્જવ-મુતીઓ ઝિળમયળદાણાઓ ।

માલરણાઃ જેદિ ડ મુક્કજ્ઞાણ સમારુદ્ધ । ૧ । ” શ્લોક,

છાયા—અય જ્ઞાન્તિ-માર્દવા-ડડર્મવ મુક્તય ત્રિનમતમધાના ।

આલમ્બનાનિ ચૈસ્તુ શુષ્કલઘ્યાન સમારોહતિ । ૧ । ” શ્લોક ।

અય શુક્લધ્યાનસ્થાનુમેષા આર-“મુક્કસ્ત” શ્લોક—શુક્લસ્ય સલ્લ
ધ્યાનસ્ય ચતસ્રોડનુમેષાઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા—અનન્તવર્તિતાડનુમેષા—અનન્ત યથા
સ્થાપયા વર્તેત ઇત્યેવંશીલોડનન્તવર્તો મધ્યમવાદસ્તસ્ય માથોડનન્તવર્તિતા, તસ્મા-
નુમેષા=માથના=અનન્તવર્તિતાડનુમેષા,

યદ્ય-‘અનન્તવૃત્તિતાડનુમેષા’ તિરુછાયા, તથાચમર્થ—અર્થિતમાનોડન્તો યસ્યાઃ
સાડનન્તા, સા વૃત્તિર્પસ્ય મધ્યસન્તાનસ્ય સોડનન્તવૃત્તિસ્તસ્ય માથોડનન્તવૃત્તિતા=
નિરવધિકવર્વનવક્ત્રમ્, તસ્યા અનુમેષા=અનન્તવૃત્તિતાનુડમેષા જીવસ્ય મધ્યમમા-
નુચિન્તનમિત્યર્થઃ, યથા—

શુક્લધ્યાન સમ્પન્ની અનુમેષાર્થે ઇસ પ્રકાર હૈ—અનન્તવર્તિતા ૧ ચિપ
રિણામાનુમેષા ૨ અશુભાનુમેષા ૩ ઓર અપાયાનુમેષા ૪ અનન્ત શોકસ
જો રહતા હૈ વહ અનન્તવર્તી હૈ એસા અનન્તવર્તી મધ્યમવાદ હૈ ઇસ મધ્ય
મવાદ કા જો માથ હૈ વહ અનન્તવર્તિતા હૈ ઇસ અનન્તવર્તિતા કી જો
માથના હૈ વહ—અનન્તવર્તિતાનુમેષા હૈ । અથવા “અનન્તવૃત્તિતાનુમેષા”
ઇસ છાયા પક્ષ મૈં એસા અર્થ હોતા હૈ જિસકા અન્ત અવિચમાન હો વહ
અનન્ત હૈ એસી અનન્તરૂપ વૃત્તિ જિસ મધ્યસન્તાન પરમ્પરા કી હૈ વહ
અનન્તવૃત્તિ હૈ ઇસકા જો માથ હૈ વહ અનન્તવૃત્તિતા હૈ ઇસ અનન્તવૃ-

શુક્લધ્યાન સમ્પન્ની અનુમેષાઓ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) અનન્તવર્તિતા,

(૨) ચિપરિણામાનુમેષા, (૩) અશુભાનુમેષા અને (૪) અપાયાનુમેષા. અનન્ત
વૃત્તિ જે રહે છે તે અનન્તવર્તી છે એવો અનન્તવર્તી મધ્યમવાદ છે તે ભવ
પ્રવાહનો જે ભાવ છે તે અનન્તવર્તિતા છે તે અનન્તવર્તિતાની જે ભાવના છે
તેનું નામ જ અનન્તવર્તિતા અનુમેષા છે. અથવા “અનન્તવૃત્તિતાનુમેષા” આ
પ્રકારની અનન્તવર્તિતા અનુમેષાની સર્જીત છાયાની અપેક્ષાએ તેના અર્થનો
વિચાર કરવામાં આવે તો તેનો આ પ્રમાણે અર્થ થશે—

એનો અન્ત અવિચમાન હોય તેને અનન્ત કહે છે એવી અનન્ત રૂપ જે
વૃત્તિ જે ભવસન્તાન પરમ્પરાની છે, તેનું નામ અનન્તવૃત્તિ છે. તેનો જે ભાવ
છે તેનું નામ અનન્તવૃત્તિતા છે તે અનન્તવૃત્તિતાની જે અનુમેષા છે તેનું નામ
“અનન્તવૃત્તિતા અનુમેષા” છે એટલે કે અનન્ત ભવપ્રમાણનો વારવાર

“એસ અણાઈ જીવો સંસારો સાગરોવ્વ દુત્તારો ।

નારયત્તિરિયનરામરભવેસુ પરીહિંડણ જીવો । ૧ । ” ઇતિ,

ઝાયા—“એષ જીવોઽનાદિઃ સાગર ઇવ સંસારો દુરુત્તારઃ ।

નારક-તિર્યગ્-નરા-ઽમરભવેષુ પરિહિંડતે જીવઃ । ૧ । ” ઇતિ,

ઇતિ શુક્લધ્યાનરય પ્રથમાઽનુપ્રેક્ષા । ૧ ॥

“વિપ્પરિણામાણુપ્પેહા ” ઇતિ-પરિણમનં - પરિણામઃ = અવસ્થાઽન્તરપ્રાપ્તિઃ, વિ-વિવિધઃ=અનેકપ્રકારઃ પરિણામો વિપરિણામઃ, તમ્યાનુપ્રેક્ષા=ભાવના=વિપરિ-ણામાનુપ્રેક્ષા=પદાર્થાનાં પ્રતિક્ષણવિવિધપરિણામાઽનુચિન્તનમિત્યર્થઃ । યથા-

“સવ્વઢ્ઢાણાઈ અસાસયાઈ” ઇહ ચૈવ દેવલોગે ય ।

સુરઅસુરનરાઈણં રિદ્ધિવિસેસા સુઢાઈ” ચ । ૧ । ” ઇતિ,

ઝાયા—“સર્વસ્થાનાનિ અશાશ્વતાનિ ઇહ ચૈવ દેવલોકે ચ ।

સુરાસુરનરાદીનામ્ ઋદ્ધિવિશેષાઃ સુખાનિ ચ । ૧ । ઇતિ

ઇતિ દ્વિતીયાઽનુપ્રેક્ષા । ૨ ॥

ત્તિતા કી જો અનુપ્રેક્ષા હૈ વહ અનન્તવૃત્તિતાનુપ્રેક્ષા હૈ । હસકા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ-જીવ કે ભવભ્રમણ કા બાર બાર વિચાર કરના યહી અનન્તવૃત્તિતા, યા-અનન્તવર્તિતા અનુપ્રેક્ષા હૈ । યથા-એસ અણાઈ જીવો ” ઇત્યાદિ યહ જીવ અનાદિ હૈ ઓર યહ સંસાર દુસ્તર સાગર જૈસા હૈ યહ જીવ અનાદિકાલ સે નારક તિર્યક-મનુષ્ય ઓર દેવગતિયોં મેં ચક્રકર લગાતા હૈ એસા વિચાર હી અનન્તવૃત્તિતાનુપ્રેક્ષા હૈ ।

“વિપ્પરિણામાણુપ્પેહા ” અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિ કા નામ પરિણામ હૈ અનેક પ્રકારકે જો પરિણામહૈં વે વિપરિણામહૈં હન વિપરિણામોંકે પદાર્થોં કી વિવિધ અવસ્થાઓં કા જો કિ પ્રતિક્ષણ હનમેં હો રહી હૈ ચાર ચાર વિચાર કરના યહ વિપરિણામાઽનુપ્રેક્ષા હૈ । જૈસે-“સવ્વઢ્ઢાણાઈ” ઇત્યાદિ

વિચાર કર્વા કરવેા એ જ અનંતવૃત્તિતા અથવા અનંતવર્તિતા અનુપ્રેક્ષા છે.

જેમકે “એસ અણાઈ જીવો ” ઇત્યાદિ-આ જીવ અનાદિ છે, અને આ સંસાર દુસ્તર સાગર જેવો છે આ જીવ અનાદિકાળથી નારક, તિર્યચ, મનુષ્ય અને દેવગતિમાં ભ્રમણ કર્યા કરે છે, આ પ્રકારના વિચારને જ અનંતવૃત્તિતા અનુપ્રેક્ષા કહે છે. આ પ્રમાણે અનુપ્રેક્ષાના પહેલા ભેદનું કથન કરીને હવે બીજા ભેદનું નિરૂપણ કરવામા આવે છે-“વિપ્પરિણામાણુપ્પેહા ” વિપરિણામાનુપ્રેક્ષા-

અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિ નામ પરિણામ છે. અનેક પ્રકારના જે પરિણામ છે તેમનું નામ વિપરિણામ છે આ વિપરિણામોની અપેક્ષાએ પદાર્થોની વિવિધ અવસ્થાઓનો- (કે જે પ્રતિક્ષણ તે પદાર્થોમાં થઈ રહી હોય છે) વિચાર કરવેા તેનું નામ “વિપરિણામા અનુપ્રેક્ષા ” છે. જેમકે “સવ્વઢ્ઢાણાઈ” ઇત્યાદિ-

“ અસુહાણુપ્પેહા ” इति-अशुमानुप्रेक्षा भुव = समीचीन , न शुभोऽशुमः-
अशुमत्वमित्यर्थः, अशुमस्तदोऽशुमत्वपरः, तस्यानुप्रेक्षाऽशुमानुप्रेक्षा = संसारस्या-
समीचीनत्वमात्रनेत्यर्थः, यथा—

“ ची संसारो अ जुयाणओ परमरूपगव्वियमो ।

मरिक्ख जायइ किमी, तत्थेव कळेवरे नियप । १ ।

જાપા—“ પિરુ સસાર યસ્મિન્ યુવા પરમરૂપગર્વિત્ ।

સૂત્વા જાયતે કમિ , તથૈવ કલેવરે નિજે । ૧ । ” इति,

इति तृतीयाऽनुप्रेक्षा । १ ॥

“ અવાયાણુપ્પેહા ” इति-अपायानुप्रेक्षा-अपायः-अपगमः, स च कायवा
कुम्भनोयोगकक्षणाऽऽस्रवाणा बोध्य , तस्यानुप्रेक्षा-मास्त्रनिवारणाभावेनेत्यर्थः,
अपायानां=प्राणातिपातायास्रवजनितानर्थानामनुप्रेक्षा = अनुक्षिप्तनमपायानुप्रेक्षा,
यथा—

“ कोहो य माणो य अण्णिग्गहोया, माया य कोमो य प्पद्दમાणा ।

चत्तारि एए कसिप्पा कसाया, सिंचति मूळाए पुण्णमवस्स । १ । ” इति,

“ અસુહાણુપ્પેહા ” ૧-શુભ નામ પ્રશસ્તિ કા હે જો એસા નહીં હે ત્થ
અશુભ હે ત્થ અશુભ શબ્દ અશુભતા કા લાચક હે ત્થ સ્ત્રી જો અનુ
પ્રેક્ષા હે ત્થ અશુમાનુપ્રેક્ષા હે । યથા-“ ધી સસારો-” इत्यादि, “ अवा-
याणुप्पेहा ” ૨-મનોયોગ લલનયોગ ઓર કાયયોગરૂપ આલ્લવોં કે
અપગમન કી જો માલના હે ત્થ અપાયાનુપ્રેક્ષા હે । અથવા પ્રાણાતિપાત
આદિ મારા કુલે કમોલવોં કે અનર્થોં કા પાર પાર જો ચિન્તન હે ત્થ-
અપાયાનુપ્રેક્ષા હે । યથા-“ कोहोय माणो य ” इत्यादि अर्थात्-कोम,

‘ અસુહાણુપ્પેહા ’ અશુભા અનુપ્રેક્ષા ” ને સાચાથ જા પ્રમાણે જે
પ્રશસ્તને શુભ કહે છે તે અનુ પ્રશસ્ત નથી તેને અશુભ કહે છે તે અશુભ
શબ્દ અશુભતાને વાચક છે તે અશુભતાની જે અનુપ્રેક્ષા છે તેને ‘ અશુભા
અનુપ્રેક્ષા કહે છે જેમકે ‘ ધી સસારો ’ इत्यादि—

હવે એથા પ્રકારની અનુપ્રેક્ષા પ્રકટ કરવામાં આવે છે-“ અવાયાણુપ્પેહા ”
અપાયાનુપ્રેક્ષા-મનોચેત્ત, વચ્ચનચેત્ત અને કાયચેત્ત રૂપ આલ્લવોના અપગમનની
(નિરોધની) જે લાવના છે તે લાવનાને ‘ અપાયા અનુપ્રેક્ષા ’ કહે છે.
અથવા-પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રાયા મયેથા કમોલવોના અનર્થોના વારવાર જે
વિચાર કરવામાં આવે છે, તેને અપાયાનુપ્રેક્ષા કહે છે જેમકે “ कोहोयमाणोय ”

છાયા—“ ક્રોધશ્ચ માનશ્ચાનિગૃહીતૌ, માયા ચ લોભશ્ચ પ્રવર્દ્ધમાનો ।

ચત્વાર एते कृत्स्नाः कषायाः, सिञ्चन्ति मूलानि पुनर्भवस्य । ૧ । इति,

इति चतुर्थ्यनुपेक्षा । ૪ ॥

इति ध्यानचतुष्टयस्वरूपम् ॥ (સૂ. ૯)

ધ્યાનાદ્ દેવત્વમપિ સ્યાદતો દેવસ્થિતિ સમેદામાહ—

મૂલમ્—ચઝવિહા દેવાણં ઠિઈ પળણત્તા, તં જહા—દેવે ણામમેગે ૧, દેવસિનાણે ણામમેગે ૨, દેવપુરોહિણે ણામમેગે ૩, દેવપજ્જલણે ણામમેગે ૪ । ચઝવિહે સંવાસે પળણત્તે, તં જહા—દેવે ણામમેગે દેવીણે સહ્ધિં સંવાસં ગચ્છેજ્જા, દેવે ણામમેગે છવીણે સહ્ધિં સંવાસં ગચ્છેજ્જા, છવી ણામમેગે દેવીણે સહ્ધિં સંવાસં ગચ્છેજ્જા, છવી ણામમેગે છવીણે સહ્ધિં સંવાસં ગચ્છેજ્જા ॥ સૂ. ૧૦ ॥

છાયા—ચતુર્વિધા દેવાનાં સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા, તથા—દેવો નામૈકઃ ૧, દેવસ્નાતકો નામૈકઃ ૨, દેવપુરોહિતો નામૈકઃ ૩, દેવપ્રજ્વલનો નામૈકઃ ૪ । ચતુર્માન, માયા, ઓર લોભ, યે ચાર કષાય પુનર્ભવ કે મૂલ કો સીંચતે હૈં—૪ ઇસ પ્રકાર સે યહ ધ્યાન ધ્યાન ચતુષ્ટય કા સ્વરૂપ હૈ ॥ સૂ. ૯ ॥

ધ્યાન સે દેવપદ કી ભી પ્રાપ્તિ જીવ કો હોતી હૈ અતઃ—અથ સૂત્રકાર સમેદ સે દેવસ્થિતિ કા વર્ણન કરતે હૈ—

“ ચઝવિહા દેવાણં ઠિઈ પળણત્તા ” ઇત્યાદિ

સૂત્રાર્થ—દેવોંકી સ્થિતિ ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ, જૈસે—દેવ ૧ દેવસ્નાતક ૨ દેવપુરોહિત ૩ ઓર દેવપ્રજ્વલન ૪ । સંવાસ ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા

ઈત્યાદિ—એટલે કે ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ, આ ચાર કષાયો પુનર્ભવના મૂલનું સિંચન કરે છે, આ પ્રકારની ભાવનાનું નામ જ અપાયાનુપેક્ષા છે આ પ્રકારે સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં ચતુર્વિધ ધ્યાનનું નિરૂપણ કર્યું છે. ॥ સૂ. ૯ ॥

ધ્યાનના પ્રભાવથી જીવને દેવપદની પણ પ્રાપ્તિ થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર દેવસ્થિતિના ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ ચઝવિહા દેવાણં ઠિઈ પળણત્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—દેવોની સ્થિતિ ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) દેવ, (૨) દેવસ્નાતક, (૩) દેવપુરોહિત અને (૪) દેવપ્રજ્વલન.

વિષ: સવાસ: પ્રગ્વડા, તથા-વેવો નામેકો વેવ્યા સાર્દ સવાસ ગચ્છેત્, વેવો નામેક: છવ્યા સાર્દ સવાસ ગચ્છેત્, છવિનામેકો વેવ્યા સાર્દ સવાસ ગચ્છેત્, છવિનામેક:છવ્યા સાર્દ સવાસ ગચ્છેત્ (સુ. ૧૦) ।

ટીકા—“ વડચ્ચિદા ” ઇત્યાદિ-વેવાનાં સ્થિતિ:મયાદા, વતુવિષા પ્રગ્વડા =કથિતા, તથા-‘ વેવે ’ ઇત્યાદિ-૧ક:કથિત્, વેવ:સામાન્ય: મુર:, “ નામે ”-તિ વાક્યાલક્ષ્ણે, ૧, ૧ક:કથિત્, વેવસ્નાતક:=વેવધાસો સ્નાતક:=મધાનો વેવસ્નાતક:, યદ્વા-વેવાનાં મધ્યે સ્નાતક:=મધાનો વેવસ્નાતક: ૨, ૧ક:કથિત્, વેવાનાં પુરોહિત:=શાન્તિપ્રમૃતિકર્મકારીતિ વેવ પુરોહિત ૩, ૧ક =કથિત્, વેવમન્વલન:-મન્વલયતિ-દીપયતીતિ મન્વલન, વેવાનાં મન્વલનો વેવ મન્વલન =માગધચ્ચ વેવસ્તુતિપાઠક: મન્વલ: ૪।

વેવસ્થિતિસ્તાવાવેવવિશેષસવાસમાદ - “ વડચ્ચિદે ” ઇત્યાદિ, વેવો વેવ્યા સાર્દ સવાસ=મૈયુનાપરે સદાવસ્થાન ગચ્છેત્=પાપ્તુપાત્ ૧, ૧ક:કથિત્, હૈ, જૈસે-૧ક વેવ કા ૧ક વેવી કે સાપ સવાસ ૧ ૧ક વેવ કા છવિ કે સાપ સવાસ ૨ છવિ કા વેવી કે સાપ સવાસ-૩ ઓર છવિ કા છવિ કે સાપ સવાસ ૪ ।

વિશેષાર્થ-યહાં સ્થિતિ શબ્દ સે આયુ કા ગ્રહણ નહીં જુવા હૈ કિન્તુ-મયાદા કા ગ્રહણ જુવા હૈ વેવોં કી યહ મયાદારૂપ સ્થિતિ ૪ પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ ઓ હસ પ્રકાર હૈ-કોઈ ૧ક વેવ સામાન્યમુર ૧ દુસરા કોઈ વેવસ્નાતક પ્રધાનવેવ ૨ કોઈ ૧ક વેવોં કા પુરોહિત શાન્તિ આદિ કર્મકારી વેવ પુરોહિત ૩ ઓર કોઈ ૧ક માગધ કી તરફ વેવસ્તુતિપાઠક વેવ પ્રવલન-૪ । વેવવિશેષ

સવાસ આર પ્રકારનો કહ્યો છે-(૧) એક વેવનો એક વેવીની સાથે સવાસ, (૨) એક વેવનો છવિની (શરીરમુદ્રા નારીની) સાથે સવાસ. (૩) છવિનો (વેદિય શરીરનો) વેવીની સાથે સવાસ અને (૪) છવિનો (વેદિય શરીરનો) છવિ સાથે (વેદિય શરીર સાથે) સવાસ.

વેવે આ સૂત્રનો બાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—અહીં “ સ્થિતિ ” યહ આયુના અર્થમાં વપરાયું નથી, પણ મયાદાના અર્થમાં વપરાયું છે. વેવોની આ મયાદારૂપ સ્થિતિ આર પ્રકારની કહી છે (૧) કોઈ એક સામાન્ય વેવ અહીં નામ ” યહ વાક્યાલક્ષણે વેવે વપરાયું છે. એ જ પ્રમાણે આગળ પણ સમજાવેલું (૨) વેવસ્નાતક એટલે પ્રધાન (મુખ્ય) વેવ. એમકે ઇન્દ્રાદિને આ પ્રકારમાં મૂકી શકાય. (૩) કોઈક વેવ વેવોનો પુરોહિત પણ કોણ છે શાન્તિ આદિ કર્મકારી વેવપુરોહિત કોણ છે. (૪) વેવસ્તુતિ પાઠક વેવને વેવ પ્રવલન કહે છે

દેવઃ, છવ્યા=છવિઃ=ત્વક્, તથોગાદૌદારિકશરીરં, શરીર-શરીરવતોરભેદોપચારા-
 ચ્છવિરપિ ચ્છવિમતી નારી તિરશ્ચી વા, તયા સાર્દ્ધ=સહ, સંવાસં ગચ્છેત્ ૨, એકઃ
 =કથિદેવઃ, છવિઃ=વૈક્રિયશક્ત્યૌદારિક-શરીરવાન્ નરસ્તિર્યગ્વા ભૂત્વા દેવ્યા
 સાર્દ્ધ સંવાસં ગચ્છેત્ ૩, એકઃ=કથિદેવઃ, છવિઃ=વૈક્રિયશક્ત્યા ઔદારિકશરીરવાન્

સંવાસ દેવ કા દેવી કે સાથ મૈથુન કર્મ કરને કે લિયે જો સહાવસ્થાન
 હોતા હૈં ઉસકા નામ સંવાસ હૈં, યહ સંવાસ ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા
 હૈં, એક પ્રકાર કો સંવાસ પૂર્વોક્તરૂપ સે હી હૈં, અર્થાત્-કિસી એક
 દેવ કા દેવી કે સાથ મૈથુન આદિ સેવન કરને નિમિત્ત જો સહાવસ્થાન
 હોતા હૈં વહ-પ્રથમ પ્રકાર કા સંવાસ હૈં ૧ દ્વિતીય પ્રકાર કા સંવાસ
 એસો હૈં હસ સંવાસ મેં છવિ શબ્દ સે શરીર ઔર-શરીરવાલોં મેં અભેદ
 સમ્બન્ધ લેકર છવિમતી નારી યા-તિરશ્ચી, લી ગઈ હૈં, એસે તો છવિ
 શબ્દ કા અર્થ ત્વચા હૈં પરન્તુ-ત્વચા કે યોગ સે ઔદારિક શરીર કા
 ગ્રહણ હોતા હૈં યહ ઔદારિક શરીર નારી ઔર તિર્યક્ષ્ત્રિયોં કો હોતા
 હૈં કોઈ એક દેવ નારી, યા તિરશ્ચી [તિર્યગ્જાતિ કી સ્ત્રી] કે સાથ સંવાસ
 કર સકતા હૈં ૨ તૃતીય પ્રકાર કે સવાસ મેં કોઈ એક દેવ વૈક્રિય શક્તિ
 દ્વારા ઔદારિક શરીરવાન્ નર, યા તિર્યશ્ચ હોકર દેવી કે સાથ સંવાસ
 કર સકતા હૈં-૩ તથા ચતુર્થ પ્રકાર કે સંવાસ મેં એક કોઈ દેવ વૈક્રિય

દેવવિશેષના સવાસનુ નિરૂપણુ—દેવનુ દેવીની સાથે મૈથુન સેવન કરવા
 માટે જે સહાવસ્થાન થાય છે, તેનું નામ સંવાસ છે તે સંવાસના નીચે
 પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) કોઈ એક દેવનું કોઈ એક દેવી સાથે મૈથુન
 સેવન કરવા માટે જે સહાવસ્થાન થાય છે તેને પ્રથમ પ્રકારનો સંવાસ કહે છે.
 હવે બીજા પ્રકારના સંવાસનુ નિરૂપણુ કરવામા આવે છે—આ સંવાસમાં
 “ છવિ ” પદ શરીરના અર્થમાં વપરાયું છે શરીર અને શરીરવાળાની વચ્ચે
 અસેદ સંબંધની અપેક્ષાએ ‘ છવિ ’ પદનો અર્થ અહીં શરીરવાળી નારી અથવા
 તિર્યંચિણી સમજવો જોઈએ. આમ તો ‘ છવિ ’ પદનો અર્થ ત્વચા આમડી
 થાય છે, પરન્તુ ત્વચાના યોગથી અહીં ઔદારિક શરીર જ ગ્રહણ થવું જોઈએ.
 આ ઔદારિક શરીરનો સફલાવ સ્ત્રી અને તિર્યંચિણીમાં જ હોય છે. એટલે
 બીજા પ્રકારનો સંવાસ આ પ્રકારનો સમજવો—

કોઈક દેવ મનુષ્ય નતિની સ્ત્રી અથવા તિર્યંચિણી (તિર્યંચ નતિની સ્ત્રી)
 સાથે સંવાસ કરે છે. (૩) કોઈક દેવ પોતાથી વૈક્રિય શક્તિથી ઔદારિક શરીર-
 ધારી પુરુષ અથવા તિર્યંચનું રૂપ ધારણ કરીને દેવીની સાથે સંવાસ કરી
 શકે છે. (૪) સંવાસનો ચોથો પ્રકાર-કોઈ એક દેવ વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા ઔદાર-

नरस्तिर्यग् वा भूत्वा छप्पा=वैक्रियश्चत्वा निष्कृषितया, तिर्यग्लोकगतया वा औदारिकशरीरवत्त्या नार्था तिरम्भ्या वा सार्द्धं सवास गच्छेत् ४ (सू० १०) ।

इतोऽनन्तर सवास उक्तः, स च वेदकृत्तमोहोदयान्नवस्यतः प्रसङ्गान्मोह विशेषभूतकृपायं समेद निरूपयितुमाह—

मूलम्—चत्वारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—कोहकसाए, १, माणकसाए २, मायाकसाए ३, लोहकसाए ४, एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण २४, चउप्पइट्ठिएकोहे पण्णत्ते, त जहा—आय पइट्ठिए १, परपइट्ठिए २, तवुभयपइट्ठिए ३, अप्पइट्ठिए ४ । एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण २४, एव जाव लोहे जाव वेमाणियाण २४ । चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया, त जहा—खेत्त पड्डच्च, वत्थु पड्डच्च, सरीर पड्डच्च, उवहिं पड्डच्च । एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण २४, एव जाव लोहुप्पत्ती वेमाणियाण २४, चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, त जहा अणताणुवधी कोहे १, अपच्चक्खाणे कोहे २, पच्चक्खाणावरणे कोहे ३, सजलणे कोहे ४ । एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण २४, एव जाव लोहे जाव वेमाणियाण २४ । चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, त जहा—आमोगणि व्वत्तिए १, अणाभोगणिव्वत्तिए २, उवसते ३, अणुवसते ४ । एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण २४ । एव जाव लोह जाव वेमाणियाण २४ ॥ सू० ११ ॥

शक्ति द्वारा औदारिक शरीर युक्त मनुष्य या तिर्यग्न होकर वैक्रिय शक्ति से निष्कृषित हुई के साथ, अथवा तिर्यग्लोक में गत औदारिक शरीर वाली नारी के साथ, या तिर्यग्ननीके साथ संवास कर सकता है ॥ सू १० ॥

वि० शरीरवागा मनुष्य अथवा तिर्यग्मनु इय लोके वैक्रियशक्ति द्वारा निष्कृषित होती हैवीनी साथे, अथवा तिर्यग्लोकमें रहेवी औदारिक शरीरवागी नारीनी साथे अथवा तिर्यग्मित्री साथे संवास करी शके छे ॥ सू १० ॥

હાયા—ચત્વારઃ કષાયાઃ પ્રજ્ઞતા, તદ્વથા—ક્રોધકષાયઃ ૧, માનકષાયઃ ૨, માયાકષાયઃ ૩, લોભકષાયઃ ૪। एवं नैरयिकाणां यावत् वैमानिकानाम् ૨૪।
 ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતઃ ક્રોધઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા—આત્મપ્રતિષ્ઠિતઃ ૧, પરપ્રતિષ્ઠિતઃ ૨, તદુભયપ્રતિષ્ઠિતઃ ૩, અપ્રતિષ્ઠિતઃ ૪। एवं नैरयिकाणां यावत् वैमानिकानाम् ૨૪।
 एवं यावत् लोभः यावत् वैमानिकानाम् ૨૪। चतुर्भिः स्थानैः क्रोधोत्पत्तिः स्यात्,
 તદ્વથા—ક્ષેત્રં પ્રતીત્ય, વસ્તુ પ્રતીત્ય, શરીરં પ્રતીત્ય, ઉપધિં પ્રતીત્ય । एवं नैरयि-

સંવાસ જો કહા ગયા હૈ વહ વેદરૂપ મોહ કે ઉદય સે હોતા હૈ, અતઃ—અથ સૂત્રકાર હસી પ્રસન્ન સે મોહ કે વિષયભૂત કષાય કા ભેદ સહિત કથન કરતે હૈ—“ ચત્તારિ કસયા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ

સૂત્રાર્થ—કષાય ચાર કહી ગઈ હૈ, જૈસે—ક્રોધ કષાય માન કષાય માયા કષાય ઓર લોભ કષાય યે કષાય નારક સે લેકર યાવત્—વૈમાનિક તક કો હોતી હૈ । ક્રોધ કષાય ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિત કહા ગયા હૈ જૈસે—આત્મ પ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ પરપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ તદુભયપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ ઓર અપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ, હસી તરહ કા કથન નૈરયિક સે લેકર વૈમાનિક તક કે જીવોં મેં જ્ઞાનના ચાહિયે । હસી તરહ સે ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિત યાવત્ લોભ કષાય તક કહ લેની ચાહિયે, ઓર—સબ કી ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિત નારક સે લેકર વૈમાનિક તક મેં હૈ એસા જ્ઞાનના ચાહિયે, । ક્રોધ કી ઉત્પત્તિ ચાર કારણોં સે હોતી હૈ, જૈસે—ક્ષેત્ર કો લેકર, વસ્તુ કો લેકર, શરીર કો લેકર, ઓર—ઉપધિ કો લેકર । હસી પ્રકાર ક્રોધ કી ઉત્પત્તિ કે હન

ઉપરના સૂત્રમા જે સંવાસનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તે વેદરૂપ ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે. આ સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર મોહના વિષયભૂત કષાયના ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે—“ ચત્તારિ કસયા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

કષાયના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) ક્રોધકષાય, (૨) માનકષાય, (૩) માયાકષાય અને (૪) લોભકષાય. આ ચારે કષાયોનો સદ્ભાવ નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના જીવોમાં હોય છે. ક્રોધકષાય ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિત કહ્યો છે—જેમકે (૧) આત્મપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ, (૨) પરપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ, (૩) તદુભય પ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ અને (૪) અપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ. એ જ પ્રકારનું કથન નારકથી લઈને વૈમાનિકો પર્યન્તના જીવોમાં સમજી લેવું. એ જ પ્રમાણે માનકષાય, માયાકષાય અને લોભકષાયને ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિત કહ્યા છે. નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના જીવોમાં આ ચારે કષાયોની ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતતાનો સદ્ભાવ સમજી લેવો જોઈએ

ક્રોધની ઉત્પત્તિ ત્રીણેના ચાર કારણે થાય છે—(૧) ક્ષેત્રને લઈને, (૨) વસ્તુને લઈને, (૩) શરીરને લઈને અને (૪) ઉપધિને લઈને. ક્રોધની ઉત્પત્તિના

કાળો યાવત્ વૈમાનિકાનામ્ ૨૪। એવ યાવત્ સોમોત્પત્તિઃ વૈમાનિકાનામ્ ૨૪।
 ચતુર્વિધઃ ક્રોધઃ પ્રજ્ઞસ્તઃ, તથા-અનન્તાનુવન્ધી ક્રોધઃ ૧, અપ્રત્યાખ્યાનાઃ ક્રોધઃ
 ૨, પ્રત્યાખ્યાનાવરણઃ ક્રોધઃ ૩, સજ્વલનઃ ક્રોધઃ ૪। એવં નૈરયિકાણાં યાવત્
 વૈમાનિકાનામ્ ૨૪। એવ યાવત્ સોમઃ વૈમાનિકાનામ્ । ચતુર્વિધઃ ક્રોધઃ પ્રજ્ઞસ્તઃ,
 તથા-આમોગનિર્વર્તિતઃ ૧, અનામોગનિર્વર્તિતઃ ૨, ઉપશાન્તઃ ૩, અનુપશાન્તઃ ।
 ૪। એવં નૈરયિકાણાં યાવત્ વૈમાનિકાનામ્ ૨૪। એવં યાવત્ સોમઃ યાવત્ વૈમા-
 નિકાનામ્ ૨૪। (સૂ૦ ૧૧)

ચાર કારણોં કા કયન નૈરયિક સે લેકર વૈમાનિક તક કે જીયોં મેં કહ
 હેના ચાહિયે । હસી તરફ સે સોમોત્પત્તિ કે સમ્બધ મેં મી જાનના
 ચાહિયે । યાવત્-વૈમાનિક તક જાનના ચાહિયે । ક્રોધ ચાર પ્રકાર કા
 કહા ગયા હૈ, જૈસે-અનન્તાનુવન્ધી ક્રોધ ૧ અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધ ૨
 પ્રત્યાખ્યાનસમ્બધી ક્રોધ-૩ ઓર સજ્વલનસમ્બધી ક્રોધ ૪ । હસી
 તરફ ક્રોધ કી પદ્ ચતુષ્પ્રકારતા નૈરયિક સે લેકર યાવત્ વૈમાનિક
 તક કે જીયોં મેં મી જાનની ચાહિયે, તથા યાવત્ સોમ તક કી ચતુ
 ષ્પ્રકારતા મી યાવત્ વૈમાનિક તક મેં જાનની ચાહિયે । ક્રોધ હસ પ્રકાર
 સે મી ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, જૈસે-આમોગનિર્વર્તિત ૧ અના
 મોગ નિર્વર્તિત ૨ ઉપશાન્ત ઓર અનુપશાન્ત ૪ હસી પ્રકાર કા કયન
 નૈરયિક સે લેકર યાવત્ વૈમાનિકોં તક મેં જાનના ચાહિયે । હસી તરફ
 સે યાવત્-સોમ કે મી ચાર મેવ હૈ, ઓર વે યાવત્ વૈમાનિક તક મેં હૈ । ૨૪।

આ ચાર કારણોંનુ કયન નાશકથી લઇને વૈમાનિકો પદ્વન્તનાં લયોને વિષે
 પણ જલ્પુ કરવું એકજે. જે જ પ્રમાણે માન, માયા અને લોભનાં ઉપત્તિનાં
 કારણોં પણ સમજવા વૈમાનિક પદ્વન્તનાં લયોને આ કયન લાગુ પાડી શકાય
 તે બીજી રીતે પણ કોઇ ચાર પ્રકારનો કરી છે-(૧) અનન્તાનુવન્ધી ક્રોધ, (૨)
 અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધ (૩) પ્રત્યાખ્યાન સમ્બધી ક્રોધ અને (૪) સજ્વલન સમ્બધી
 ક્રોધ જે જ પ્રમાણે માન, માયા અને લોભનાં પણ ચાર પ્રકાર સમજવા
 ક્રોધથી લઇને માન પદ્વન્તનાં કયાયોની આ ચતુષ્પ્રકારતાનો નાશકથી લઇને
 વૈમાનિકો પદ્વન્તનાં લયોમાં સદ્ભાવ સમજવો

કોઇના આ રીતે પણ ચાર પ્રકાર પડે છે-(૧) આલોચનિર્વર્તિત, (૨)
 અનામોગનિર્વર્તિત (૩) ઉપશાન્ત અને (૪) અનુપશાન્ત. આ પ્રકારનુ કયન
 નાશકથી લઇને વૈમાનિકો પદ્વન્તનાં લયો વિષે પણ સમજવું જે જ પ્રમાણે
 માન, માયા અને લોભનાં પણ ચાર પ્રકાર સમજવા આ ચતુષ્પ્રકારતાનો
 સદ્ભાવ નાશકથી લઇને વૈમાનિકો પદ્વન્તનાં લયોમાં પણ સમજવો

ટીકા—“ ચત્તારિ ” ઇત્યાદિ-ચત્તારઃ=ચતુઃ સંખ્યાઃ, ‘ કપાયાઃ-કુપન્તિ-વિલિખન્તિ [કર્મક્ષેત્રં સુખદુઃસ્વરૂપફલયોગ્ય કુર્વન્તિ, વા-જીવં કલુપયન્તીતિ નિરુત્તચા કપાયાઃ, ઉક્તં ચ-“ સુહદુઃસ્વરૂપફલયોગ્ય કુર્વન્તિ તે યસ્માત્ । કલુપયન્તિ યચ્ચ જમ્હા । કલુસંતિ જં ચ જીવં તેણ કસાયત્તિ બુચ્ચંતિ । ૧ । ”

છાયા—સુખદુઃસ્વરૂપફલયોગ્ય કર્મક્ષેત્રં કુર્વન્તિ તે યસ્માત્ । કલુપયન્તિ યચ્ચ જીવં તેન કપાયા ઇતિ ઉચ્યન્તે ॥ ૧ ॥ ”

યદ્વા-કષતિ-પ્રાણિનં હિનસ્તીતિ કષ કર્મ ભવો વા, તસ્યાડયો લાભઃ કપાયઃ ક્રોધાદિભેદઃ કર્મહેતુર્ભવહેતુર્વા, કર્મભવાન્યતરપ્રાપ્તિલક્ષણકપાયકાર્યં પ્રતિ ક્રોધા-દીનાં કારણત્વેન કાર્યકારણયોરભેદોપચારાત્ કપાયપદેન ક્રોધાદિર્ગૃહ્યતે, અથવા-કષઃ કર્મ ભવો વા તમ્ આયયતિ પ્રાણિનઃ પ્રાપયન્તીતિ કપાયાઃ=પ્રાણિનાં કર્મ-ભવપ્રાપ્તકાઃ, તે ચ ક્રોધાદયો વક્ષ્યન્તે, ઉક્તં ચ-“ કમ્મં કસં ભવો વા કસમા-બોસિં જાઓ કસાયાઓ । કસમાયયતિ વા જાઓ ગમયંતિ કસં કસાયત્તિ । ૧ । ”

જો કર્મરૂપી ક્ષેત્ર કો સુખદુઃસ્વરૂપ ફલ કે યોગ્ય બનાતી હૈ વે કષાય હૈ । અથવા-જો જીવ કો કલુષિત મલિન બનાતી હૈ, વે કષાય હૈ । ઉક્ત મી હૈ-“ સુહદુઃસ્વરૂપફલયોગ્ય ” ઇત્યાદિ ? અથવા પ્રાણી કી હત્યા જો કરતા હૈ વે કષાય હૈ । અથવા-કષ કર્મ યા ભવ કા જિસસે આય લાભ હોતા હૈ વે કષાય હૈ । યે કષાય ક્રોધ આદિ ભેદવાલા હૈ ઔર-કર્મ કા, યા ભવ કા હેતુ હૈ । કર્મ, ઔર ભવ ઇનમેં સે કિસી એક કી પ્રાપ્તિકારક કાર્ય કે પ્રતિ ક્રોધાદિક કારણ હોતે હૈ, ઇસલિયે કાર્ય કારણ મેં અભેદોપચાર સમ્યન્ધ કો લેકર કષાય પદ સે ક્રોધાદિક ગૃહીત હોતે હૈ । અથવા-જો જીવ કો કષ કર્મ યા ભવ કી પ્રાપ્તિ કરતે હૈ વે કષાય હૈ, યે કષાય ક્રોધાદિકરૂપ હૈ । કહા મી હૈ-“ કમ્મં કસં ભવો

વિશેષાથ—જે કર્મરૂપી ક્ષેત્રને સુખદુઃસ્વરૂપ ફલને યોગ્ય બનાવે છે, તે કષાય છે. અથવા જે જીવને કલુષિત (મલિન) બનાવે છે, તે કષાય છે. કલુપયણ છે કે-“ સુહદુઃસ્વરૂપફલયોગ્ય ” ઇત્યાદિ. ૧ । ૧ ।

અથવા જે પ્રાણીની હત્યા કરે છે, તે કષાય છે. અથવા “ કષ ” એટલે કર્મ અથવા ભવ અને “ આય ” એટલે લાભ, આ રીતે કર્મ અથવા ભવનો જેનાથી લાભ થાય છે તેને કષાય કહે છે તે કષાયના ક્રોધાદિ ભેદો છે અને તે કર્મ અથવા ભવના ઠરણરૂપ છે કર્મ અને ભવ, આ બંનેમાંથી કોઈ પ્રાપ્તિકારક કાર્યમાં ક્રોધાદિક કારણભૂત બને છે, તેથી કાર્યકારણમાં અભેદોપચાર સમ્યન્ધને અનુલક્ષીને કષાય પદથી ક્રોધાદિક ગૃહીત થયેલ છે અથવા જે જીવને કષ (કર્મ અથવા ભવ) ની પ્રાપ્તિ કરાવે છે, તેનું નામ કષાય છે.

“લોહકસાણ”-લોભનમ્=અમિકાક્ષણં લોભઃ, યદ્વા-લુપ્તયતેડનેનેતિ લોભઃ, સ ચાસૌ કષાયો લોભકષાયઃ=લોભમોહનીયોદયજનિતો જીવસ્યાસન્તોષાત્મકઃ પરિણામવિશેષઃ ૪।

“एव”-મિતિ-અનેન પ્રકારેણ અર્થાદ્ યથા સામાન્યતશ્ચત્વારઃ કષાયાઃ પ્રજ્ઞસાસ્તથા, ‘જેરડ્યાણં’ ઇતિ-નૈરયિકાણાં=નારકાણાં યાવદ્વૈમાનિકાનામિતિ ભવનપતિમારમ્ય વૈમાનિકપર્યન્ત ચતુર્વિંશતિદણ્ડકોક્તાનાં વિજ્ઞેયમ્ ૨૪।

“चउप्पइट्ठिए” इत्यादि-चतुष्प्रतिष्ठितः-चतुर्षु प्रतिष्ठितः-आश्रितः=चतुष्प्रतिष्ठितः, क्रोधः = क्रोधरूपः प्रथमकषायः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-आत्मप्रतिष्ठितः-आत्मनि=स्वस्मिन् स्वापराधवंशेनૈહિકिकपारलौकिकापायप्रदर्शनादुत्पन्नतया प्रतिष्ठितः-प्रविष्टःआत्मप्रतिष्ठितः=आत्मविषय इत्यर्थः १, “परप्रतिष्ठितः”—

કષાય-યહ કષાય લોભ મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે જાયમાન જીવ કા જો અસન્તોષરૂપ પરિણામ હોતો હૈ તદ્રૂપ હૈ ૪। સામાન્યરૂપ સે યે ચાર કષાય જિસ પ્રકાર પ્રતિપાદિત હૈ, ઇસી પ્રકાર સે ઇન કષાયો કા સમ્બન્ધ નૈરયિક સે લેકર વૈમાનિક પર્યન્ત ચૌદીસ દણ્ડક મેં જાનના ચાહિયે। ક્રોધરૂપ જો પ્રથમ કષાય હૈ વહ ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિત હૈ ડસકા તાત્પર્ય ઇસા હૈ કિ યહ ક્રોધરૂપ કષાય આત્મપ્રતિષ્ઠિત તવ હોતા હૈ કિ જવ યહ જીવ અપને અપરાધ કે વશ સે ઇહલોક સમ્બન્ધી અપાયોં ઓર પરલોક સમ્બન્ધી અપાયોં કો દેખતા હૈ તવ ઇસે અપને ક્રુત્સિત કર્તવ્યોં કે પ્રતિ ઇક પ્રકાર કી ઝુંઝલાહટ સી છૂટતી હૈ, ઇસ પ્રકાર સે સ્વ કી ઓર ઝુંઝલાહટ છૂટને રૂપ જો યહ ક્રોધ કષાય હૈ વહ આત્મપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધકષાય હૈ। તાત્પર્ય ઇસ કથન કા કેવલ યહી હૈ કિ આત્મા જવ

લોભકષાય-આ કષાય લોભમોહનીય કર્મના ઉદયથી જનિત જીવના અસન્તોષ પરિણામરૂપ હોય છે. આ ચારે પ્રકારના કષાયોનો સંદ્ભાવ નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના ૨૪ દંડકના જીવોમાં હોય છે.

ક્રોધરૂપ પ્રથમ કષાય નીચેનાં ચાર સ્થાનોમાં પ્રતિષ્ઠિત થયેલો છે—
(૧) આત્મપ્રતિષ્ઠિત-જીવ જ્યારે પોતાના અપરાધને કારણે પેદા થનારા આલોક સંબંધી અપાયોને અને પરલોક સંબંધી અપાયોને સમજી શકે છે, ત્યારે તેને પોતાના હુકુત્યો પ્રત્યે એક પ્રકારનો અણુગમો ઉત્પન્ન થાય છે, આ રીતે પોતાની જાત પ્રત્યે જ તિરસ્કાર થવા રૂપ, અથવા પોતાના આત્માને જ ઠપકો આપવા રૂપ જે ક્રોધ ઉત્પન્ન થાય છે તેને આત્મપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ કહે છે. આ કથનનું તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે—

પરેષ=મન્યેન આપાદિનોત્પાદિતતથા પ્રતિષ્ઠિતઃ=પરપ્રતિષ્ઠિતઃ, પરચિપય इत्यर्थः ૨,

“તદુભયપ્રતિષ્ઠિત” ઉમાચયનો यस્ય સ ઉભયઃ, સમુદાય, સયોરાસ્મ-
પરયોરુભયસ્તદુભયસ્તપ્ર પ્રતિષ્ઠિતસ્તદુભયપ્રતિષ્ઠિતઃ = આત્મ - પરપ્રતિષ્ઠિતઃ =
આત્મપરચિપય इत्यर्थः ૩,

“અપ્રતિષ્ઠિત”-આક્રોધાદિકારણનિરપેક્ષઃ ક્રોધમોહનીયોદયમાત્રમન્યથ
મુર્યઃ ક્રોધો મવતિ। યદ્યપિ-અર્થ ક્રોધસ્ય ચતુર્યૌ મેદો બીયપ્રતિષ્ઠિતો મવતિ।
તથાપિ આત્માદિચિપયેऽનુત્પન્નત્વાદપ્રતિષ્ઠિત ઉક્તઃ, ન તુ સર્વથા અપ્રતિષ્ઠિતઃ,

કિસી અકૃત્ય કાર્ય કી ઓર શુકલા હૈ યા કર લેતા હૈ ત્બ અપને
આપકે ઊપર જો એક પ્રકાર કી એસી ક્રોધમરી પરિણતિ ઉત્પન્ન હોતી હૈ
કિ “મેં અથ એસા નહીં કરુગા” યહ શુદ્ધે નહીં કરના યા “મેંને વજા
અપરાધ કિયા હૈ” હસ પ્રકાર સે અપને ઊપર એક પ્રકાર કી ક્રોધ જૈસી
પરિણતિ જગતી હૈ ઘડી ક્રોધકપાય આત્મપ્રતિષ્ઠિત હૈ।

પરપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધકપાય ઘહ હૈ જો શાપ આદિ દ્વારા પર મેં ઉત્પન્ન
કરાઈ જાતી હૈ તથા-જો ક્રોધકપાય અપને મેં, ઓર પર મેં, ઘોનોં મેં
પ્રતિષ્ઠિત હોતી હૈ યહ તદુભયપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ કપાય હૈ-૩ તથા અપ્રતિ-
ષ્ઠિત ક્રોધ કપાય ઘહ હૈ જો આક્રોધ આદિ કારણોં સે નિરપેક્ષ બનકર
કેવલ ક્રોધ મોહનીય કે ઉદય સે જન્ય હોતી હૈ। યદ્યપિ-ક્રોધ કા યહ
ચતુર્ય મેદ બીય મેં પ્રતિષ્ઠિત હોતા હૈ તો મી આત્માદિ ચિપય મેં અનુ-
ત્પન્ન હોને કે કારણ હી અપ્રતિષ્ઠિત કહા ગયા હૈ સર્વથા રૂપ સે અપ્ર-
તિષ્ઠિત નહીં કહા ગયા હૈ। યદિ યહ સર્વથા અપ્રતિષ્ઠિત હોતા તો-

આત્મા આદિ ઠા. ૬ કુપ્યુત્ય કરવાનું વલણ જતાવે છે, અથવા ઠા. ૬ કુપ્યુત્ય
કરી નાખે છે ત્યારે અપને પોતાની આત પ્રત્યે જ એવી ક્રોધમરી પરિણતિ
ઉત્પન્ન થાય છે કે ‘મેં આ શું કહું ? આ પ્રકારનું કૃત્ય મને શોભતું નથી.’
પોતાના આત્મા પ્રત્યે જ આ પ્રકારની ક્રોધમરી પરિણતિ ઉત્પન્ન થવી એનું
નામ જ આત્મપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધ છે

પરપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધકપાયનું નિરૂપણ-શાપ આદિ દ્વારા પરમાં જે ક્રોધકપાય
ઉત્પન્ન થાય છે તેને પરપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધકપાય કહે છે

જે ક્રોધકપાય પોતાની અંદર અને પરની અંદર એમ ૨૪-૫૨ બંનેમાં
પ્રતિષ્ઠિત હોય છે તેને તદુભય પ્રતિષ્ઠિત ક્રોધકપાય કહે છે

જે ક્રોધકપાય આક્રોધ આદિ કારણોની અપેક્ષા રાખ્યા વિના, માત્ર
ક્રોધમોહનીયતા ઉદયથી જનિત હોય છે, તેને અપ્રતિષ્ઠિત ક્રોધકપાય કહે છે.
એ કે ક્રોધને આ ચતુર્થ લેહ અપમા પ્રતિષ્ઠિત હોય છે, છતાં પણ આત્માદિ
ચિપયમાં અનુત્પન્ન હોવાને કારણે જ તેને અપ્રતિષ્ઠિત કહ્યો છે. સુ. યા ૩૫

પદિ સર્વથા અપ્રતિષ્ઠિતઃ સ્થાત્તદા “ ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતઃ ક્રોધઃ ” ઇતિ પ્રતિજ્ઞા-
વાક્યમસન્નતં સ્યાદિતિ । એકેન્દ્રિય-વિકલેન્દ્રિયાણાં કોપસ્યાઽઽત્માદિપ્રતિષ્ઠિતત્વં
પૂર્વભવે ક્રોધપરિણામપરિણતમરણેનોત્પન્નાનામિતિ ।

‘એવં જોરૂપાણં જાવ વેમાણિયાણં’ ઇતિ । એવમ્ અનેન પ્રકારેણ ક્રોધાદિ
ચત્વારઃ કપાયા નૈરયિકાદારમ્ય વૈમાનિકપર્યન્તં વિજ્ઞેયા ઇતિ ।

“ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણં ” ઇતિ-એવમ્=અનેન પ્રકારેણ યથા ક્રોધ-
તુષ્પ્રતિષ્ઠિત ઉક્તસ્તથા માન-માયા-લોભા અપિ ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતાઃ, નારકાદિ
વૈમાનિકપર્યન્તચતુર્વિંશતિદણ્ડકેષુ વિજ્ઞેયા : ।

“ ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિત ક્રોધઃ ” એસા ગ્રહ કહના અસંગત હો જાતા હૈ । એકેન્દ્રિય
ઔર વિકલેન્દ્રિય જીવોં કે કોપ મેં આત્માદિ પ્રતિષ્ઠિતતા ડનકો ક્રોધ
પરિણામ સે પરિણામ હુવે મરણ સે ઉત્પન્ન હોને કે કારણ સે જાનની
ચાહિયે । ઇસી પ્રકાર સે નૈરયિક સે લેકર યાવત્ વૈમાનિક તક કે
ચતુર્વિંશતિ ૨૪ ચોવીસ ઢણ્ડકોં મે રહને વાલે જીવોં કે ક્રોધ મેં ઔ
ચાર કારણ જાનના ચાહિયે । તથા ઇન સવ મેં ક્રોધાદિ ચાર
કપાયોં કા સદ્ભાવ જાનના ચાહિયે ।

જિસ પ્રકાર સે ક્રોધ મેં ચાર કારણ કહા હૈ, ડસી પ્રકાર
સે-“ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણ ” નાન માયા ઔર લોભ મેં ઔ ચતુ-
ષ્પ્રતિષ્ઠિતતા જાનની ચાહિયે । ઔર ગ્રહ ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતા નારકાદિ વૈમાનિક
પર્યન્ત ચોવીસ ઢણ્ડકોં મે રહનેવાલે જીવોં કે માનાદિક કપાયોં મેં હૈ
એસા સમજના ચાહિયે ।

અપ્રતિષ્ઠિત કહ્યો નથી. જો તે સર્વથા અપ્રતિષ્ઠિત હોત તો “ ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતઃ
ક્રોધ ” આ કથન અસંગત બની જાત એકેન્દ્રિય અને વિકલેન્દ્રિય જીવોમાં
ક્રોધની આત્મપ્રતિષ્ઠિતતા આદિના સદ્ભાવ ક્રોધપરિણામથી પરિણત થયેલા
મરણથી ઉત્પન્ન થવાને કારણે સમજવો જોઈએ એ જ પ્રમાણે નારકથી લઈને
વૈમાનિક પર્યન્તના ૨૪ ઢણ્ડકના જીવોમાં ક્રોધમા પણ ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતતા સમજવી
જોઈએ અને તેઓમા ક્રોધાદિ ચાર કપાયોના સદ્ભાવ સમજવો જોઈએ.

“ એવ જાવ લોહે વેમાણિયાણ ” જે પ્રકારે ક્રોધમાં ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતતા પ્રકટ
કરવામાં આવી છે, એ જ પ્રમાણે માન, માયા અને લોભમા પણ ચતુષ્પ્રતિ-
ષ્ઠિતતા સમજવી, અને નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના જીવોમાં માન, માયા
અને લોભરૂપ કપાયોની અપેક્ષાએ પણ તે ચતુષ્પ્રતિષ્ઠિતતાનો સદ્ભાવ સમજવો.

ક્રોધાદયઃ ક્ષણાયા ઉક્તાસ્ત્ર ક્રોધ કિં કિમાભિત્યોત્પત્તે ? इत्या—
“चउर्हि” इत्यादि-चतुर्भिः स्यनैः क्रोधोत्पत्ति स्यात्, तद्यथा-क्षेत्र-नारक-
दीनां स्यान्=मतीत्य=आभित्य क्रोधः स्यात् ? ,

वस्तु=सचेतनादि पदार्थम्, मतीत्य क्रोधः स्यात्, यद्वा-चास्तु=शब्दभूमि
मतीत्य क्रोधः स्यात् २, शरीर=काय दुरवस्थां प्राप्तं बिरुध्य वा मतीत्य क्रोधः
स्यात् ३, उपधिम्=उपकरणं मतीत्य क्रोधः स्यात् ४ । एकेन्द्रियाणां जीवानां
भवान्तरपेक्षया क्रोधोत्पत्ति स्यात् ।

“एव णेरइयाण” इत्यादि-अनेन प्रकारेण, નૈરયિકાણામિત્યારમ્ય વૈમા
નિકાનામિતિ ચતુર્વિંશતિવદ્વક્રપર્યન્તં પઠનીયમ્ ।

અય સૂત્રકાર યહ પ્રગટ કરતે હે કિ-ક્રોધ કિસ કિસ કારણ કો
આશ્રિત કરકે ઉત્પન્ન હોતા હે-“ચઉર્હિ” इत्यादि, જે હસ સૂત્ર દ્વારા
યહ પ્રગટ કર રહે હૈ-કિ હન ચાર કારણોં સે ક્રોધ કો ઉત્પત્તિ હોતી હે
જે ચાર કારણ હસ પ્રકાર સે હૈ-હનમે એક કારણ હે ક્ષેત્ર તારકાદિક
રૂપ ક્ષેત્ર કો આશ્રિત કરકે ક્રોધ હો સકતા હે ૧ સચેતનાદિ પદાર્થરૂપ,
વસ્તુ કો હેકર ક્રોધ હો સકતા હે-૨ દુરવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુવે શરીર કો
હેકર યા વિરૂપાવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુવે શરીર કા હેકર જીવ કો ક્રોધ હો
સકતા હે ૩ યા ઉપકરણ રૂપ ઉપધિ કો હેકર ક્રોધ હો સકતા હે ૪
એકેન્દ્રિય જીવોં મેં ક્રોધ કી ઉત્પત્તિ ભવાન્તર કો અપેક્ષા સે જાનની
આહિયે । “एव णेरइयाण” इत्यादि, इसी प्रकार से क्रोधोत्पत्ति के
कारणों का कथन नैरइक से लेकर वैमानिक तक के चतुर्विंशति वृद्ध
कस्य जीवों में भी जानना आहिये ।

કહે સૂત્રકાર જે વાતને પ્રગટ કરે છે કે ક્રોધ કયા કયા કારણોને લીધે
ઉત્પન્ન થાય છે-“ચઉર્હિ” इत्यादि નીચેના ચાર કારણોને લીધે ક્રોધની
ઉત્પત્તિ થાય છે

- (૧) ક્ષેત્ર-નારકાદિક રૂપ ક્ષેત્રને કારણે ક્રોધ ઉત્પન્ન થાય છે
- (૨) સચેતનાદિ પદાર્થરૂપ વસ્તુને કારણે પણ ક્રોધ ઉત્પન્ન થાય છે
- (૩) દુરવસ્થા યામેલા શરીરને કારણે અથવા વિરૂપાવસ્થા યામેલા
શરીરને કારણે પણ ક્રોધ ઉત્પન્ન થાય છે
- (૪) ઉપકરણ રૂપ ઉપધિને કારણે પણ ક્રોધ ઉત્પન્ન થાય છે

એકેન્દ્રિય એવામાં ક્રોધની ઉત્પત્તિ ભવાન્તરની અપેક્ષાને સમજવી
એકાંકે. “एव णेरइयाण” इत्यादि-ક્રોધોત્પત્તિના આ ચાર કારણોનું કથન
નારકથી લઈને વૈમાનિક ખખંતના એવાના વિષયમાં પણ શક્ય થયું છે.

“ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણં ” ઇતિ-અનેન પ્રકારેણ અર્થાદ યથા ક્ષેત્રાદિકં પ્રતીત્ય ક્રોધોત્પત્તિઃ કથિતા, તથા માન-માયા-લોભા અપિ ક્ષેત્રાદિક-માશ્રિત્ય સમુત્પદ્યન્ત ઇતિ તૈરપિ લોભાન્તં પદં યોજયિત્વા વૈમાનિકાનામિત્યન્તં તત્તદ્દષ્ટકં પઠનીયમિત્યર્થઃ ૨૪ ।

પુનઃ ક્રોધાદિ ચાતુર્વિધ્યં નિરૂપયતિ—“ ચતુર્વિધે કોહે ” ઇત્યાદિ—
ચતુર્વિધઃ ક્રોધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદ્યથા-અનન્તાનુવન્ધી ક્રોધઃ-અવિદ્યમાનોઽવધિર્યસ્ય સોઽનન્તઃ સંસારઃ, તમનુવધ્નાતીત્યેવંશીલોઽનન્તાનુવન્ધી, સ ક્રોધોઽનન્તાનુવન્ધી

“ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણં ” જિસ પ્રકાર ક્ષેત્રાદિ કો આશ્રિત કરકે ક્રોધ કી ઉત્પત્તિ હો સકને કા કથન કિયા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર સે માન માયા ઓર લોભ બી ક્ષેત્રાદિક કો આશ્રિત કરકે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ઇસલિયે-ક્ષેત્ર કો આશ્રિત કરકે, વસ્તુ કો આશ્રિત કરકે, શરીર કો આશ્રિત કરકે, ઓર ઉપધિ કો આશ્રિત કરકે, એસે પદ ઉનકે સાથ જોડકર માન સે લેકર લોભ તક કી ઉત્પત્તિ હો સકને કા કથન કર લેના ચાહિયે એસા યહ કથન નારક સે લેકર વૈમાનિક તક કે સમસ્ત જીવોં કે ક્રોધાદિકોં કી ઉત્પત્તિ કે સમ્બન્ધ મેં કર લેના ચાહિયે ।

અંચ સૂત્રકાર પુનઃ ક્રોધાદિકોં મેં ચતુર્વિધતા કા કથન ઇસ પ્રકાર સે કરતે હૈ—“ ચતુર્વિધે કોહે ” અનન્તાનુવન્ધી ક્રોધ આદિ “ અવિદ્યમાનોઽવધિર્યસ્ય સોઽનન્તઃ ” જિસકો અવધિ વિદ્યમાન નહીં હૈ વહ અનન્ત હૈ એસા અનન્ત સંસાર હૈ એસે સંસાર કા સમ્બન્ધ કરને કા જિસે સ્વ-

“ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણં ” જે પ્રમાણે ક્ષેત્રાદિકનેા આધાર લઈને ક્રોધની ઉત્પત્તિના ચાર કારણોનું કથન—કરવામાં આવ્યું છે, એ જ પ્રમાણે માન, માયા અને લોભની ઉત્પત્તિ પણ ક્ષેત્રાદિક ચાર કારણોને લીધે જ થાય છે એમ સમજવું એટલે કે માન, માયા અને લોભની ઉત્પત્તિના પણ નીચે પ્રમાણે ચાર કારણો જ સમજવા જોઈએ—(૧) નારકાદિ ક્ષેત્રરૂપ કારણ, (૨) વસ્તુરૂપ કારણ, (૩) શરીરરૂપ કારણ અને (૪) ઉપધિરૂપ કારણ આ કથન નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના સમસ્ત જીવોના ક્રોધાદિક કથાઓની ઉત્પત્તિના કારણો વિશે શ્રદ્ધણુ થવું જોઈએ.

હવે સૂત્રકાર ક્રોધાદિકોમાં ચતુર્વિધતાનું કથન બીજી રીતે કરે છે—
“ ચતુર્વિધે કોહે ” ક્રોધના બીજી રીતે પણ ચાર પ્રકાર પડે છે—

(૧) અનન્તાનુવન્ધી ક્રોધ—“ અવિદ્યમાનોઽવધિર્યસ્ય સોઽનન્તઃ ” જેની અવધિ વિદ્યમાન નથી તેને ‘અનન્ત’ કહે છે એવો અનન્ત સંસાર છે, એવા

ક્રોધઃ યદ્વા—અનન્તાસાનુષ્ઠી મયપરમ્પરાસ્પોડનન્તાનુષ્ઠ, સોડસ્ય સ્વત્પનન્તાનુષ્ઠી, સ ક્રોધોડનન્તાનુષ્ઠી ક્રોધ ૧,

“અપચ્છાણે ક્રોધે” ઇતિ—અપ્રત્યાક્ષ્યાનઃ ક્રોધઃ અવિચિન્ત્યમાન પ્રત્યાક્ષ્યાનમ્=અણુઘટાદિરુપ યસ્મિન્ સોડપ્રત્યાક્ષ્યાન=વેશચિરત્યાગરકા, ॥ ક્રોધોડ પ્રત્યાક્ષ્યાનઃ ક્રોધ ૨ ।

“પચ્છાણાચરણે ક્રોધે” ઇતિ—પ્રત્યાક્ષ્યાનાડડચરણ-પ્રત્યાક્ષ્યાન=સર્વ ચિરતિરુપમ્, આ-મયાદયા, ઘ્ણોતિ = આચ્છાદયતીતિ પ્રત્યાક્ષ્યાનાડડચરણઃ સર્વચિરતિનિરોધક, ક્રોધ ૩

માય હોતા હૈ યહ અનન્તાડનુષ્ઠી હૈ, એમા અનન્તાડનુષ્ઠી જો ક્રોધ હૈ વહ અનન્તાનુષ્ઠી ક્રોધ હૈ । અથવા—મયપરમ્પરાસ્પ અનન્તાનુષ્ઠ જિસકે કારણ સે જીવ કો દો જાતા હૈ વહ અનન્તાનુષ્ઠી હૈ એસા જો અનન્તાનુષ્ઠી ક્રોધ હૈ યહ અનન્તાનુષ્ઠી ક્રોધ હૈ “અપચ્છાણે ક્રોધે” જિસમેં અણુઘટાદિરુપ પ્રત્યાક્ષ્યાન અવિચિન્ત્યમાન હોતા હૈ વહ અપ્રત્યાક્ષ્યાન હૈ, અર્થાત્—જો ક્રોધ વેશચિરતિ કા આધારક હોતા હૈ વહ ક્રોધ અપ્રત્યાક્ષ્યાન ક્રોધ હૈ । “પચ્છાણાચરણે ક્રોધે” ઇતિ સર્વ ચિરતિરુપ પ્રત્યાક્ષ્યાન કો જો આચ્છાદિત કરતા હૈ યહ પ્રત્યાક્ષ્યાના ચરણ ક્રોધ હૈ । અર્થાત્ સર્વચિરતિ કા નિરોધ કરનેવાસા હૈ । “સજલણે ક્રોધે” જો ક્રોધ યથાસ્માત્ચારિત્ર કા નિરોધક હોતા હૈ વહ સજલણ

સસારમાં અમણુ કારણવાનો એનો સ્વભાવ છે તેને અનવાનુભવી કહે છે એવો અનવાનુભવી ને ક્રોધ છે તેને અનવાનુભવી ક્રોધ કહે છે અથવા મયપરમ્પરા રૂપ અનવાનુભવ એના કારણે એવને સર્વભાવ છે તેને અનવાનુભવી કહે છે તે અનવાનુભવના કારણભૂત ને ક્રોધ છે તેને અનવાનુભવી ક્રોધ કહે છે

(૨) અપચ્છાણે ક્રોધે” અપ્રત્યાક્ષ્યાન ક્રોધનું નિરૂપણ—એ એવામાં અણુઘટાદિ પ્રત્યાક્ષ્યાનનો સમૂહ ન હોતો નથી, તે એવને અપ્રત્યાક્ષ્યાન કહે છે એવા એવા ક્રોધને અપ્રત્યાક્ષ્યાન ક્રોધ કહે છે એટલે કે ને ક્રોધ દેશ વિરતિનો અવારક (નિરોધક) હોય છે તે ક્રોધને અપ્રત્યાક્ષ્યાન ક્રોધ કહે છે

(૩) ‘પચ્છાણાચરણે ક્રોધે’ પ્રત્યાક્ષ્યાનાવરણ ક્રોધ—સર્વચિરતિ રૂપ પ્રત્યાક્ષ્યાનને ને આચ્છાદિત કરે છે તે પ્રત્યાક્ષ્યાનાવરણ ક્રોધ છે એટલે કે સર્વચિરતિનો નિરોધ કરનારો ને ક્રોધ છે તેને પ્રત્યાક્ષ્યાનાવરણ ક્રોધ કહે છે

“ સંજલણે કોહે ” ઇતિ—સમ્-ઈપત્, જ્વલતિ=દીપ્યત ઇતિ સંજ્વલનઃ= અલ્પતરઃ, ક્રોધઃ=યથાખ્યાતચારિત્રાઽઽવારકઃ કપાયવિશેષ इत्यर्थः ૪ ।

“ એવં ” ઇતિ-એવમ્=અનેન પ્રકારેણ યત્ ક્રોધસ્યાનન્તાનુવન્ધિપ્રશ્રુતિભેદ- ચતુષ્ટયમુક્તં તત્ ‘ નેરઙ્યાણં જાવ વેમાણિયાણં ’ ઇતિ નૈરયિકાદારભ્ય વૈમાનિક- પર્યન્તચતુર્વિંશતિ દણ્ડકેષુ વિજ્ઞેયમ્ ।

“ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણં ” ઇતિ-એવમ્=અનેન પ્રકારેણ અર્થાદ્ યથા ક્રોધસ્યાનન્તાનુવન્ધિપ્રશ્રુતિ ભેદચતુષ્ટયમુક્તં તથા માન-માયા-લોભાનામપિ પ્રત્યેક મનન્તાનુવન્ધ્યાદિભેદચતુષ્ટયં નૈરયિકાદિ વૈમાનિકપર્યન્તં પઠનીયમિતિ ૨૪ ।

અનન્તાનુવન્ધિપ્રશ્રુતીનામિયં નિરુક્તિઃ—

“ અનન્તાન્યનુવધ્નન્તિ, યતો જન્માનિ ભૂતયે । અતોઽનન્તાનુવન્ધ્યાખ્યા, ક્રોધાઘાઽઽઘેષુ દર્શિતા (સઙ્ગા) । ૧ । નાલ્પમપ્યુત્સદેહેષાં પ્રત્યાખ્યાનમિહો- ક્રોધ હૈ, સંજ્વલન શબ્દ કા અર્થ અલ્પતર હૈ યહ ક્રોધ યથાખ્યાત ચારિત્ર કો નહીં હોને દેતા હૈ । ઇસ પ્રકાર સે ચાર ભેદોંવાલે અનન્તાનુવન્ધી ક્રોધ “ નેરઙ્યાણં જાવ વેમાણિયાણં ” નૈરયિક સે લેકર યાવત્-વૈમા- નિક તક કે ચતુર્વિંશતિ દણ્ડકોં મેં જાનના ચાહિયે, અર્થાત્-યે અન- ન્તાનુવન્ધી આદિ ક્રોધ કે ભેદ ચતુર્વિંશતિ દણ્ડકસ્થ સમસ્ત જીવોં મેં હોતે હૈ । “ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણં ” જિસ પ્રકાર સે ક્રોધ કે અન- ન્તાનુવન્ધી આદિ ચાર ભેદ કહે ગયે હૈ, ઉસી પ્રકાર સે માન માયા ઓર લોભ કે ભી ચાર ૨ ભેદ હોતે હૈ, એસા કહ લેના ચાહિયે ઓર-યે પ્રત્યેક કપાય કે અનન્તાનુવન્ધી આદિ ચાર ચાર ભેદ નૈરયિક સે લેકર વૈમા- નિક તક કે જીવોં મેં હૈ એસા જાનના ચાહિયે—૨૪

(૪) “ સજલણે કોહે ” સંજ્વલન ક્રોધ—જે ક્રોધ યથાખ્યાત ચારિત્રનો નિરોધક હોય છે તેને સંજ્વલન ક્રોધ કહે છે. “ સંજ્વલન ” ઓટલે “ અલ્પતર ” આ ક્રોધ યથાખ્યાત ચારિત્રનો સદ્ભાવ થવા દેતો નથી. “ નેરઙ્યાણ જાવ વેમાણિયાણ ” આ પ્રકારના અનન્તાનુબંધી આદિ ચાર ભેદ વાળા ક્રોધનો સદ્ભાવ નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યંતના ૨૪ ઢંડકના શ્રવેભાં પણ હોય છે, એમ સમજવું. “ એવં જાવ લોહે વેમાણિયાણ ” જેમ ક્રોધના અનન્તાનુબંધી આદિ ચાર ભેદ કહ્યા છે, તેમ માન, માયા અને લોભના પણ અનન્તાનુબંધી આદિ ચાર ચાર ભેદો સમજવા, અને તે પ્રત્યેક કપાયના આ ચારે ભેદોનો સદ્ભાવ નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યંતના જ ઢંડકોના શ્રવેભાં પણ હોય છે, એમ સમજવું જોઈએ.

વપાત્ । અપ્રત્યાસ્થાનસદ્ધાઽતો દ્વિતીયેષુ નિવેશિતા । ૨ । સર્વસાધ્યવિરતિઃ
પ્રત્યાસ્થાનમુદાહરત્ । સદાવરણસદ્ધાઽતરસૃતીયેષુ નિવેશિતા । ૩ । શબ્દાદીન્
વિપયાન્ પ્રાપ્ય, સમ્વસન્તિ યતો મુહુઃ । અતઃ સંજ્વલનાદ્દાન ચતુર્થાનામિદ્રોપ્યતે । ૪ ।

પુનઃ ક્રોધં વિમજ્જતે—“ ચતુર્થિહે ” इत्यादि — चतुर्विधः=चतुष्प्रकाराः,
क्रोधः मङ्गलः, तद्यथा-आमोगनिर्वर्तितः-आमोग=अनुमयो ज्ञानमित्यर्थः, तेन
निर्वर्तितः=निष्पादितः, यं क्रोधं प्राणी जानन् करोति सः १ ।

“ અપ્રામોગણિષ્યસિષ ” इति-अनामोगनिर्वर्तितः-अनामोगोऽज्ञानम्, तेन
निर्वर्तितः=अज्ञानेन कृता, यं क्रोधमजानन् प्राणी करोति सः २ । “ उपसंते ”

अनन्तानुषङ्गी आदिकों की निरुक्ति ऐसी है—“ अनन्तान्यनुष
न्वन्ति ” इत्यादि इन श्लोकों का तात्पर्य स्पष्ट है, अर्थात्—ऊपर में इनके
सम्यग् में जैसा कहा गया है वैसा ही है जीव जिनके उदय में अपने
संसार को अनन्त कर खेता है वह अनन्तानुषङ्गी क्रोधादि कपाय है,
तथा जिसके उदय में आवक का देशविरतिरूप चारित्र नहीं होता है
वह अप्रत्यास्थान क्रोधादिकपाय है सर्वविरतिरूप चारित्र को जो होने
देता है वह प्रत्यास्थान क्रोधादिकपाय है और जो यथास्थानचारित्र
को होने से रोकता है वह संज्वलन क्रोधादि कपाय है ।

अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि ये क्रोधादि कपाय इस प्रकार
से भी चार भेदवाला है “ अणामोगणिष्यसिष ” इति अनामोग नाम
अज्ञान का है इस अज्ञान से जो क्रोध निर्वर्तित उत्पन्न होता है वह

अनन्तानुषङ्गी आदिનું સ્પષ્ટીકરણ કરતી આવાળા નીચે પ્રમાણે છે—
“ અવન્તાન્યનુષન્વન્તિ ” આ આવાળાને આવાર્થ ઉપર સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો
છે છતાં અહીં તેમને આવાર્થ સહિતમાં આપવામાં આવે છે—અવ એમના
ઉદયમાં પોતાના સંસારને અનન્ત કરી નાખે છે, તે અનન્તાનુષંગી ક્રોધાદિ
કથાયો જ છે એના ઉદયમાં આવકના દેશવિરતિ રૂપ ચારિત્રને સદ્ભાવ રહેતો
નથી, તેનું નામ અપ્રત્યાસ્થાન ક્રોધાદિ કથાયો છે એને કારણે આવકના દેશ
વિરતિરૂપ ચારિત્રનો સદ્ભાવ રહેતો નથી તેનું નામ પ્રત્યાસ્થાન ક્રોધાદિ કથાયો
છે એના કારણે યથાસ્થાત ચારિત્રને સદ્ભાવ રહેતો નથી એવાં સંજ્વલન
ક્રોધાદિ કથાયો છે

કવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરે છે કે ક્રોધાદિક કથાયોના નીચે પ્રમાણે
ચાર પ્રકાર પદ્ય પડે છે—(૧) આલોચનિવર્તિત—“ અણામોગણિષ્યસિષ ” ઈત્યાદિ—
(૨) અનાલોચન નિવર્તિત ક્રોધ-અનાલોચન એટલે અજ્ઞાન તે અજ્ઞાનને લીધે
જે ક્રોધ નિવર્તિત (ઉત્પન્ન) થાય છે, તે ક્રોધને અનાલોચન નિવર્તિત ક્રોધ

इति-उपशान्तः=अनुदयावस्थः, यश्च बहिर्न प्रकाशतेऽन्तरेव तिष्ठति सः ३ ।
 “अणुवसंते” इति-अनुपशान्तः=उपशान्तोऽनुदयावस्थः, नोपशान्तोऽनुपशान्त
 उदयावलिका प्रविष्टः, यश्च क्रोधो बहिः प्रकाशते सः ४ । एकेन्द्रियादीनां
 जीवानामाभोगनिर्वर्तितः क्रोधः संज्ञिपूर्वभवापेक्षया बोध्यः, अनाभोगनिर्वर्तितस्तु
 तद्भवोपेक्षयाऽपि भवितुमर्हति ज्ञानविकलत्वात् । उपशान्तः क्रोधो नारकादीनां
 जीवानां विशिष्टोदयाभावात् प्रत्येतव्यः, अनुपशान्तः क्रोधो निर्विचार प्राणिष्वेव
 जायत इति पर्यवसितम् ।

अनाभोग निर्वर्तित क्रोध है इस अनाभोगनिर्वर्तित क्रोध को प्राणी नहीं जानता हुवा करता है । तात्पर्य इसका यही है कि-अज्ञान अवस्था में जो क्रोध होता है वह अनाभोग निर्वर्तितक्रोध है जो क्रोध अनुदय अवस्थावाला होता है वह क्रोध उपशान्त क्रोध है ऐसा यह क्रोध बाहर में नहीं होता है, किन्तु-भीतर में बना रहता है । जो क्रोध उदयाव-लिका में प्रविष्ट होता है वह अनुपशान्त क्रोध है ऐसा क्रोध बाहर प्रगट हो जाता है । एकेन्द्रिय आदि जीवों में अनाभोगनिर्वर्तितक्रोध संज्ञी पूर्वभव की अपेक्षा से जानना चाहिये तथा अनाभोग निर्वर्तित क्रोध तद्भव की अपेक्षा से जानना चाहिये । क्योंकि-ये ज्ञानविकल होते हैं । उपशान्त क्रोध नारकादि जीवों में विशिष्ट उदय के अभाव से जानना चाहिये । अनुपशान्त क्रोध विचार विहीन प्राणियों में ही होता है यह क्रोध चतुष्टय तैरयिक से लेकर वैमानिक तक में होता

કહે છે એવ અજ્ઞાતાવસ્થામાં આ પ્રકારનો ક્રોધ કરે છે. આ રીતે અજ્ઞાતા-વસ્થામાં જે ક્રોધ થાય છે તેને અનાભોગ નિવર્તિત ક્રોધ કહે છે.

જે ક્રોધ અનુદય અવસ્થાવાળો હોય છે, એવા ક્રોધને ઉપશાન્ત ક્રોધ કહે છે. એવો ક્રોધ બહાર પ્રકટ થતો નથી પણ અંદરને અંદર જ પડ્યો રહે છે.

જે ક્રોધ ઉદયાવલિકામાં પ્રવિષ્ટ થયેલો હોય છે, તે ક્રોધને અનુપશાન્ત ક્રોધ કહે છે, એવો ક્રોધ બહાર પ્રકટ થઈ જાય છે.

એકેન્દ્રિયાદિક જીવોમાં આભોગનિવર્તિત ક્રોધનો સદ્ભાવ સંજ્ઞી પૂર્વ-ભવની અપેક્ષાએ જાણવો જોઈએ. અને અનાભોગ નિવર્તિતનો સદ્ભાવ તદ્ભવ (એજ ભવ) ની અપેક્ષાએ સમજવો જોઈએ, કારણ કે તેઓ જ્ઞાનરહિત હોય છે. નારકાદિ જીવોમાં ઉપશાન્ત ક્રોધનો સદ્ભાવ વિશિષ્ટ ઉદયના અભાવને લીધે સમજવો. અનુપશાન્ત ક્રોધનો સદ્ભાવ વિચારવિહીન પ્રાણીઓમાં જ હોય છે. આ ચારે પ્રકારના ક્રોધનો સદ્ભાવ નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્થ-

“ एवं ” इति-एवं=क्रोधचतुष्टयं नैरयिकादि वैमानिकपर्यवसितम् ।

“ एषम् ” इति, एवं=क्रोधवत् मान-माया-लोभषिय पदमयं संयोज्य
नैरयिकादि वैमानिकपर्यन्त चतुर्विंशतिदण्डकेषु पठनीयम् ॥ सू० ११ ॥

इदानीं कपायाणामेव काव્યत्रयवर्तिनः फलविशेषानाह—

मूलम्—जीवा ण चउर्हि ठाणेहि अट्ट कम्मपगढीओ चिणि सु,
त जहा—क्रोधेण १, माणेण २, मायाए ३, लोभेण ४ । एव जाव
वेमाणियाण २४, एव चिणाति एए दढओ, एव चिणिस्सति
एस दढओ, एवमेएणं अभिलावेणं तिन्नि दढगा, एव उव-
चिणि सु उवाचिणाति उवचिणिस्सति, वधि सु ३ उदीरि सु ३
वेप सु ३ निज्जरे सु णिज्जरेति निज्जरिस्सति, जाव वेमाणि
याणं, एवमेक्केके पदे तिन्नि २ दढगा भाणियव्वा, जाव
निज्जरिस्सति ॥ सू० १२ ॥

ઝાયા—જીવાઃ સહ ચતુર્મિઃ સ્થાને અષ્ટ કર્મ પ્રકૃતીઃ અવિન્નન્, તથા-
ક્રોધેન ૧, માનેન ૨, માયયા, ૩, લોભેન ૪। એવં યાવત્ વૈમાનિકાનામ્ ૨૪,
હૈ । જિસ પ્રકાર ક્રોધ કે યે અનામોગનિવર્તિત આદિ ચાર મેદ પ્રકટ
કિયે ગયેહેં ઢસી પ્રકાર માન માયા લોભ ત્રી ચાર ચાર પ્રકારકે હોતેહેં
એસા જાનના ચાહિયે, ઓર યે અનામોગ આદિ માન માયા લોભ નૈર
યિક સે છેકર વૈમાનિક તક સમસ્ત જીવોં મેં હોતે હેં એસા સમજના
ચાહિયે ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

અમ સૂચકાર કપાયોં કા હી કાલત્રયવર્તી જીવ કે ફલ વિશેષ
કા કપન કરતે હૈ—“ જીવાણં ચઉર્હિ ઠાણેહિ—” इत्यादि—

સુત્રાર્થ—જીવોં ને ચાર કારણોંસે પહેલે અષ્ટ કર્મ પ્રકૃતિયોંકા ઉપાર્જન

ન્ટના છવેમાં હોય છે એમ કે ધના આસોગનિવર્તિત, અનાસોગનિવર્તિત
આદિ ચાર લેક હયા છે, એ જ પ્રમાણે માન, માયા અને લોભના પણ ચાર
ચાર લેક પડે છે. તે આસોગ, અનાસોગ આદિ માન, માયા અને લોભના
પણ નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના છવેમાં સદૃશ્ય હોય છે ॥ સૂ. ૧૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ક્ષાયોના કાલત્રયવર્તી હલવિશેષનું નિરૂપણ કરે છે—
“ જીવાણં ચઉર્હિ ઠાણેહિ ” इत्यादि—

છવેાંએ ચાર કારણોંને લીધે આઠ કમ પ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કર્યું છે.

एवं चिन्वन्ति एतद् दण्डकम्, एवं चेष्यन्ति एतद् दण्डकम्, एवमेतेनाभिला-
पेन त्रीणि दण्डकानि, एवम् उपाचिन्वन् उपचिन्वन्ति उपचेष्यन्ति, अवधन् ३
उदैरयन् ३ अवेदयन् ३ निरजरयन् ३ निर्जरयन्ति निर्जरयिष्यन्ति, यावत् त्रैमा-
निकानाम्, एकमेकैकस्मिन् पदे त्रीणि त्रीणि दण्डकानि भणितव्यानि, यावत्
निर्जरयिष्यन्ति ॥ सू० १३ ॥

टीका—“ जीवा णं ” इत्यादि—जीवाः खलु चतुर्भिः—चतुःसंख्यैः स्थानैः=
क्रोधादिभिश्चतुर्भिः अष्ट कर्मप्रकृतीः—कर्मणां प्रकृतयः=ज्ञानावरणीयादिरूपाः,

કિયા હૈ વે ચાર કારણ હસ પ્રકાર સે હૈ—ક્રોધ ૧ માન ૨ માયા ૩ ઔર
લોભ ૪ હસી તરહ કા કથન યાવઢૈમાનિક જીવોં તક કર લેના ચાહિયે,
હન્હીં ચાર કારણોં કો લેકર જીવ વર્તમાન મેં ભી જ્ઞાનાવરણીયાદિ અષ્ટ
કર્મ પ્રકૃતિયોં કા ઉપાર્જન કરતે હૈં ઔર આગે ભી કરેંગે । હસ તરહ
હન દોનોં વર્તમાન ભવિષ્યત્ કાલ સમ્બન્ધી દણ્ડકોં કો જાનના ચાહિયે ।
હસી તરહ જીવ પૂર્વકાલ મેં ભી હન્હીં ક્રોધાદિ ચાર કારણોં સે જ્ઞાના-
વરણીયાદિ અષ્ટ કર્મ પ્રકૃતિયોં કા સંચય કર રહ્યા હૈ । હસી તરહ
જીવોં ને હન્હીં ચાર કારણોં કો લેકર પૂર્વ મેં જ્ઞાનાવરણીયાદિક આઠ
કર્મ પ્રકૃતિયોં કા બન્ધ કિયા હૈ, વર્તમાન મેં ભી કરતે હૈં ઔર આગે
ભી હન્હીં કારણોં કો લેકર હનકા બન્ધ કરેંગે ।

હસી તરહ સે જીવોં ને હન્હીં ચાર કારણોં કો લેકર પૂર્વ મેં જ્ઞાના-
વરણાદિક આઠ કર્મપ્રકૃતિ કો ઉદીરણા કી હૈ વર્તમાન મેં ભી કરતે હૈં

તે ચાર કારણો આ પ્રમાણે છે—(૧) ક્રોધ, (૨) માન, (૩) માયા અને (૪) લોભ.
આ પ્રકારનું કથન ગૈમાનિક પર્યન્તના ૨૪ ઠંડકના જીવો વિષે સમજાવું
આ ચાર કારણોને લીધે જ જીવો વર્તમાનમાં પણ જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ
કર્મપ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કરે છે આ ચાર કારણોને લીધે જ જીવ ભવિષ્યમાં
પણ આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કરશે. આ પ્રકારના વર્તમાન અને ભવિ-
ષ્યકાળ સંબંધી ઠંડકો ઉપચયના વિષયમાં પણ સમજવા. એ જ પ્રમાણે જીવો
ભૂતકાળમાં પણ ક્રોધાદિક ચાર કારણોને લીધે જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ કર્મ-
પ્રકૃતિઓનો ઉપચય કરી રાખેલો જ હોય છે.

આ ચાર કારણોને લીધે જ જીવોએ ભૂતકાળમાં જ્ઞાનાવરણીય આદિ
આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ કર્યો છે, વર્તમાનમાં પણ કરે છે અને
ભવિષ્યમાં પણ કરશે.

એ જ પ્રમાણે આ ચાર કારણોને લીધે જીવોએ ભૂતકાળમાં જ્ઞાનાવરણીય
આદિ આઠ કર્મપ્રકૃતિઓની ઉદીરણા કરી છે, વર્તમાનમાં પણ કરે છે અને

“ एवं ” इति—एवं=क्रोधवत्पुष्टय नैरयिकादि वैमानिकपर्यवसितम् ।

“ एवंम् ” इति, एव=क्रोधवत् मान-माया-लोभविषय पदप्रयं संयोज्य नैरयिकादि वैमानिकपर्यन्त क्तुर्विशिष्टदृष्टकेषु पठनीयम् ॥ सू० ११ ॥

इदानीं कथायाषामेव કાલત્રયવર્તિનઃ ફલવિશેષાનાહ—

મૂલમ્—જીવા ણ ચઢહિં ઠાળેહિ અટ્ટ કમ્મપગઢીઓ ચિણિસુ, ત જહા—કોહેણ ૧, માળેણ ૨, માયાણ ૩, લોભેણ ૪ । એવ જાવ વેમાણિયાણ ૨૪, એવ ચિણતિ ઇણ દઢઓ, એવ ચિણિસ્સતિ ઇસ દઢઓ, એવમેણં અમિલાવેણં તિન્નિ દઢગા, એવ ઉવ-ચિણિસુ ઉવચિણતિ ઉવચિણિસ્સતિ, વધિસુ ૩ ઉદીરિસુ ૩ વેપસુ ૩ નિજ્જરેસુ ણિજ્જરેતિ નિજ્જરિસ્સતિ, જાવ વેમાણિયાણં, એવમેક્કેકે પદે તિન્નિ ૨ દઢગા માણિયઢ્ઢા, જાવ નિજ્જરિસ્સતિ ॥ સૂ० ૧૨ ॥

જાયા—જીવાઃ સહ ચતુર્મિઃ સ્યામે અષ્ટ કર્મ પ્રકૃતીઃ અચિન્તન્, વધયા-ક્રોધેન ૧, માનેન ૨, માયયા, ૩, લોભેન ૪। એવં યાવત્ વૈમાનિકાનામ્ ૨૪, હૈ । જિસ પ્રકાર ક્રોધ કે યે અનામોગનિવર્તિત આદિ ચાર મેદ પ્રકટ ક્રિયે ગયેહિં ડસી પ્રકાર માન માયા લોભ મી ચાર ચાર પ્રકારકે હોતેહિં એસા જાનના વાહિયે, ઓર યે અનામોગ આદિ માન માયા લોભ નૈરયિકા સે હેકર વૈમાનિક તક સમસ્ત જીવોં મેં હોતે હિં એસા સમજના વાહિયે ॥ સૂ० ૧૧ ॥

અય સૂત્રકાર કથાપોં કા હી કાલત્રયવર્તી જીવ કે ફલ વિશેષ કા કથન કરતે હૈ—“ જીવાણં ચઢહિં ઠાળેહિં—” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—જીવોં ને ચાર કારણોંસે પહુલે અષ્ટ કર્મ પ્રકૃતિયોંકા ઉપાર્જન

નના લોભાં ઢોય છે એમ કેપના આલોચનિવર્તિત, અનાલોચનિવર્તિત આદિ ચાર લેહ કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે માન, માયા અને લોભના પણ ચાર ચાર લેહ પડે છે તે આલોચ, અનાલોચ આદિ માન, માયા અને લોભને પણ નારકથી લઇને વૈમાનિક પર્યન્તના લોભાં સદૂભાવ ઢોય છે ॥ સૂ ૧૨ ॥

હવે સૂત્રકાર કથાપોના કાલત્રયવર્તી જીવવિશેષનું નિરૂપણ કરે છે—

“ જીવાણં ચઢહિં ઠાળેહિં ” ઇત્યાદિ—

લોભાં અને ક્રોધાંને લીધે આઠ કમ પ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કર્યું છે

ભવિષ્યત્કાલિકં પદં યોજયિત્વૈતદ્દણ્ડકં પઠનીયમ્ । “એવમ્”=“ઇત્યમ્”, “એતેન”
-ભૂત-વર્તમાન-ભવિષ્યત્કાલિકપદયોજનાત્રયરૂપેણાભિલાપેન ત્રીણિ=ત્રિસંખ્યાનિ
દ્વણ્ડકાનિ સમ્પદ્યન્તે, એવં ચ ક્રોધાદિ ચતુષ્ટયેન સહ ભૂત-વર્તમાન-ભવિષ્યત્પ્રયો-
ગઘટિતદ્વણ્ડકત્રયસ્ય ચતુર્ગુણીકરણેન દ્વાદશ દ્વણ્ડકાનિ ભવન્તિ । “એવં ઉત્ત-
ર્ચિણિસુ” ઇત્યાદિ-એવં=યથા ચયનસૂત્રમુક્તં, તથોપચયનસૂત્રમપિ ક્રોધ-માન-
માયા-લોભૈઃ સહ કાલત્રયવિષયં દ્વણ્ડકં બોધ્યમ્ । તત્ર ચયન-કષાયપરિણત
જીવસ્ય કર્મદલિકગ્રહણમાત્રમ્ । ઉપચયનં તુ-ચિત્તસ્ય ગૃહીતકર્મદલિકસ્યાવા-

પદ કો ઘટિત કરકે, વર્તમાન કાલિક ઔર ભવિષ્યત્કાલિક દ્વણ્ડક કહ
લેના ચાહિયે । ઇસ પ્રકાર ભૂત વર્તમાન ઔર ભવિષ્યત્ કાલિક ત્રીણ
પદોં કી યોજનાવાલે આલાપકોં સે ત્રીણ દ્વણ્ડક બન જાતે હૈં । ક્રોધાદિ
ચતુષ્ટય કે સાથ ઇન ભૂત વર્તમાન ઔર ભવિષ્યત્ પ્રયોગ ઘટિત કરકે
દ્વણ્ડકત્રય કો ચૌગુન કરને સે ૧૨ દ્વણ્ડક હો જાતે હૈં । જિસ પ્રકાર
યહ ચયન સૂત્ર કહા ગયા હૈં ઉસી પ્રકાર સે ઉપચયન સૂત્ર ભી જાનના
ચાહિયે ઇસ ઉપચયન સૂત્ર મેં ભી ભૂત વર્તમાન ભવિષ્યત્ કાલિક
પદ યોજનાત્રય સે ત્રીણ દ્વણ્ડક હોતે હૈં, ઔર ક્રોધાદિ ચતુષ્ટય કે સાથ
ઈન્હેં ચૌગુના કરને સે કાલત્રય વિષયક ૧૨ દ્વણ્ડક હોતે હૈં । કષાય સે
પરિણત હુવે જીવ કે દ્વારા જો કર્મદલિકોં કા ગ્રહણ કરના માત્ર હોતા
હૈં વહ-ચયન હૈં ગૃહીત હુવે કર્મદલિક કા અવાધાકાલ કો છોડકર જો

કાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કરીને ભવિષ્યકાલિક દ્વંડક કહેવું જોઈએ આ પ્રમાણે
ભૂત, વર્તમાન અને ભવિષ્યકાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કરવાથી ત્રણ આલાપક
રૂપ ત્રણ દ્વંડક બની જાય છે ક્રોધાદિ ચતુષ્ટય (ચાર) ની સાથે ભૂત, વર્તમાન
અને ભવિષ્યકાળ વિષયક કુલ ૧૨ દ્વંડક થાય છે, કારણ કે ત્રણ કાળની
અપેક્ષાએ પ્રત્યેકના ત્રણ ત્રણ દ્વંડક થતા હોવાથી ક્રોધ, માન, માયા અને
લોભ આ ચારના કુલ $૩ \times ૪ = ૧૨$ દ્વંડક થાય છે.

જે રીતે આ ચયન સૂત્રનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એ જ પ્રમાણે
ઉપચયન સૂત્રનું પણ કથન થવું જોઈએ. આ ઉપચયન સૂત્રમાં પણ ભૂત,
વર્તમાન અને ભવિષ્યકાળ વિષયક ક્રિયાપદ ચોજવાથી ક્રોધ આદિ પ્રત્યેકના
ત્રણ દ્વંડક થાય છે. ક્રોધાદિ ચાર કષાયો વડે તેને ગુણવાથી ચારે કષાયોના
કુલ બાર દ્વંડક થાય છે

કષાયથી પરિણત થયેલા જીવ દ્વારા જે કર્મદલિકોનું માત્ર ગ્રહણ જ
થાય છે, તેને ચયન કહે છે. ગૃહીત થયેલા કર્મદલિકો અવાધાકાળને છોડીને
જે જ્ઞાનાવસ્થાકિ રૂપે પરિણત થાય છે તેને ઉપચયન કહે છે, તેનું નામ જ

તાઃ, અચિન્નન્=મૂતકાલે ઉપાર્જયન્, તથા—તાન્યેષ સ્થાનાન્યાસ—ક્રોધેન ૧, માનેન ૨, માયયા ૩, સોમેન ૪। एवं यावद् वैमानिकानां विषये विव्रेषम्। एव वर्तमाने चिन्वन्ति, भविष्यन्ति च वेष्यन्तीति।

“ एवं ચિન્વતિ ” इत्यादि—एषम्=अनेन प्रकारेण, अर्थात् यथा भूतकालिक ‘ मचिन्वन् ’ इति पद घटयित्वा दण्डकमुक्तं तथा ‘ चिन्वन्ति ’ इति वर्तमानकालिक पद घटयित्वैतद्=अनन्तरोक्त दण्डकं पठनीयम्, तथा—‘ वेष्यन्ति ’ इति आगे भी करेंगे। इसी प्रकार जीवों ने इन्हीं चार कारणों को लेकर पूर्व में ज्ञानाधरणीयादिक आठ कर्मप्रकृतियों का वेदन किया है वर्तमान में भी करते हैं और आगे भी करेंगे। इसी प्रकार जीवों ने इन चार कारणों को लेकर इन कर्मप्रकृतियों की निर्जरा की है अब भी वे करते हैं और आगे भी करेंगे, ऐसा यह कथन यावत् वैमानिक जीवों तक में जानना चाहिये इस प्रकार एक २ पद में तीन २ दण्डक यावत् निर्जरा पद तक कहना चाहिये। विद्योपाय—नारक से लेकर वैमानिक तक के जीवों ने क्रोध मोन माया और लोभ इन चार कारणों को आश्रित करके पहले भूतकाल में उपाजंन किया है ऐसा यह भूतकालिक दण्डक है, क्योंकि—“ अचिन्वन् ” पद है इस भूतकालिक पद को घटित करके यह दण्डक बनाया गया है। इसी तरह से “ चिन्वन्ति ” वर्तमानकालिक पद को घटित करके, और “ वेष्यन्ति ” भविष्यत्कालिक

ભવિષ્યર્માં પણ કરશે. આ ચાર કારણોને લીધે જ ભૂતકાળમાં એવોએ જ્ઞાન વરણીય આદિ આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનું વેદન કર્યું છે, વર્તમાનમાં પણ કરે છે અને ભવિષ્યમાં પણ કરશે. કોષાદિક આ ચાર કારણોને લીધે એવોએ જ્ઞાન વરણીય આદિ આઠ કર્મપ્રકૃતિઓની ભૂતકાળમાં નિર્જરા કરી છે. વર્તમાનમાં પણ કરે છે અને ભવિષ્યમાં પણ કરશે. આ પ્રકારે જનન વૈમાનિક પચન્ત્યા અમરતા એવોમાં પણ સમજવું જોઈએ. આ પ્રકારે પ્રત્યેક પદના ત્રણ ત્રણ દંડક નિર્જરા પચન્ત્યા પૂર્વોક્ત પદ સાથે સમજવા જોઈએ.

વિશેષાર્થ—“ નારકથી લઈને વૈમાનિક પચન્ત્યા એવોએ ક્રોધ, માન, માયા અને લોભરૂપ ચાર કારણોને લીધે જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનું ભૂતકાળમાં ઉપાર્જન કર્યું છે, ” આ ભૂતકાલિક દંડક છે કારણ કે “ અચિન્વન્ ” આ ભૂતકાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કરીને આ દંડક બનાવવામાં આવ્યું છે એ જ પ્રમાણે ‘ ચિન્વન્તિ ’ આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કરીને વર્તમાનકાલિક દંડક કહેવું જોઈએ, અને “ વેષ્યન્તિ ” આ ભવિષ્ય

ભવિષ્યત્કાલિકં પદં યોજયિત્વૈતદ્દણ્ડકં પઠનીયમ્ । “એવમ્”=“इत्यम्”, “एतेन”
-ભૂત-વર્તમાન-ભવિષ્યત્કાલિકપદયોજનાત્રયરૂપેનામિલાપેન ત્રીણિ=ત્રિસંખ્યાનિ
દ્વણ્ડકાનિ સમ્પદ્યન્તે, એવં ચ ક્રોધાદિ ચતુષ્ટયેન સહ ભૂત-વર્તમાન-ભવિષ્યત્પ્રયો-
ગઘટિતદ્વણ્ડકત્રયસ્ય ચતુર્ગુણીકરણેન દ્વાદશ દ્વણ્ડકાનિ ભવન્તિ । “એવં ઉવ-
ચિર્ણિસુ” ઇત્યાદિ-એવં=યથા ચયનસૂત્રમુક્તં, તથોપચયનસૂત્રમપિ ક્રોધ-માન-
માયા-લોભૈઃ સહ કાલત્રયવિષયં દ્વણ્ડકં બોધ્યમ્ । તત્ર ચયન-કષાયપરિણત
જીવસ્ય કર્મદલિકગ્રહણમાત્રમ્ । ઉપચયનં તુ-ચિતસ્ય ગૃહીતકર્મદલિકસ્યાવા-

પદ કો ઘટિત કરકે વર્તમાન કાલિક ઓર ભવિષ્યત્કાલિક દ્વણ્ડક કહ
લેના ચાહિયે । ઇસ પ્રકાર ભૂત વર્તમાન ઓર ભવિષ્યત્ કાલિક ત્રીણ
પદોં કી યોજનાવાલે આલાપકોં સે ત્રીણ દ્વણ્ડક બન જાતે હૈં । ક્રોધાદિ
ચતુષ્ટય કે સાથ ઇન ભૂત વર્તમાન ઓર ભવિષ્યત્ પ્રયોગ ઘટિત કરકે
દ્વણ્ડકત્રય કો ચૌગુન કરને સે ૧૨ દ્વણ્ડક હો જાતે હૈં । જિહ પ્રકાર
યહ ચયન સૂત્ર કહા ગયા હૈં ડસી પ્રકાર સે ઉપચયન સૂત્ર બી જાનના
ચાહિયે ઇસ ઉપચયન સૂત્ર મેં બી ભૂત વર્તમાન ભવિષ્યત્ કાલિક
પદ યોજનાત્રય સે ત્રીણ દ્વણ્ડક હોતે હૈં, ઓર ક્રોધાદિ ચતુષ્ટય કે સાથ
ઈન્હેં ચૌગુના કરને સે કાલત્રય વિષયક ૧૨ દ્વણ્ડક હોતે હૈં । કષાય સે
પરિણત હુવે જીવ કે દ્વારા જો કર્મદલિકોં કા ગ્રહણ કરના માત્ર હોતા
હૈં વહ-ચયન હૈં ગૃહીત હુવે કર્મદલિક કા અવાધાકાલ કો છોડકર જો

કાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કરીને ભવિષ્યકાલિક દંડક કહેવું જોઈએ. આ પ્રમાણે
ભૂત, વર્તમાન અને ભવિષ્યકાલિક ક્રિયાપદનો પ્રયોગ કરવાથી ત્રણ આલાપક
રૂપ ત્રણ દંડક બની જાય છે. ક્રોધાદિ ચતુષ્ટય (ચાર) ની સાથે ભૂત, વર્તમાન
અને ભવિષ્યકાળ વિષયક કુલ ૧૨ દંડક થાય છે, કારણ કે ત્રણ કાળની
અપેક્ષાએ પ્રત્યેકના ત્રણ ત્રણ દંડક થતા હોવાથી ક્રોધ, માન, માયા અને
લોભ આ ચારના કુલ ૩×૪=૧૨ દંડક થાય છે.

જે રીતે આ ચયન સૂત્રનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એ જ પ્રમાણે
ઉપચયન સૂત્રનું પણ કથન થવું જોઈએ. આ ઉપચયન સૂત્રમાં પણ ભૂત,
વર્તમાન અને ભવિષ્યકાળ વિષયક ક્રિયાપદ ચોત્રવાથી ક્રોધ આદિ પ્રત્યેકના
ત્રણ દંડક થાય છે. ક્રોધાદિ ચાર કષાયો વડે તેને શુભવાથી ચારે કષાયોના
કુલ ચાર દંડક થાય છે

કષાયથી પરિણત થયેલા જીવ દ્વારા જે કર્મદલિકોનું માત્ર ગ્રહણ જ
થાય છે, તેને ચયન કહે છે. ગૃહીત થયેલા કર્મદલિકો અબાધાકાળને છોડીને
જે જ્ઞાનાવસ્થાકે રૂપે પરિણત થાય છે તેને ઉપચયન કહે છે, તેનું નામ જ

જ્ઞાનાવસ્થાવરણાદિત્યા પરિણમનમ્ । તદેવ નિપેક્ષ સ્થુત્યપે ।
 આયનસ્થાયાં જીવા પ્રચુરતર કર્મદલિક નિપિચ્છન્તિ, દ્વિતીયાવસ્થાયાં વિશેષ
 હીનમ્, યથ યાવદ્દુષ્ટાવસ્થાયાં વિશેષહીન કર્મદલિક નિપિચ્છન્તિ, ઉક્ત ષ-
 “ મોક્ષ સંગમવાદ ધર્મવાદ ઠિર્થ વદુતર દશ્વ । સસે વિસેસદીપે જાતુકોસંતિ
 સમ્બેસિ । ૧ । ” इति, છાયા-“ મુક્ત્યા સ્વકામનાર્થા પ્રયત્નાયાં સ્વિતૌ વદુતર
 દ્રશ્યમ્ । શેપાયાં વિશેષહીન યાવદ્દુષ્ટમિતિ સર્વાસામ્ । ૧ । ” इति,

“ વર્ષિસુ ૩ ”-‘ અવધન્ બધ્નન્તિ મત્સ્યન્તિ ’ इत्यर्था, જીવા ક્રોધેન
 કર્મપ્રકૃતીઃ અવધન્, બધ્નન્તિ મત્સ્યન્તિ, इति सम्बन्धः । તમ બધ્નન ચિત્તસ્ય
 કર્મજો જ્ઞાનાવરણીયાદિત્યા નિપિચ્છત્ય સતઃ પુનરપિ કપાય-પરિણામવિશેષા
 નિક્ષાત્તનમ્, एवं मान-माया-लोमैरपि विक्षेपम् ।

જ્ઞાનાવરણાદિરૂપ સે પરિણત્ત હોતા હૈ વહ ઉપચયન હૈ હસી કા નામ
 નિપેક્ષ હૈ । જીવ આથ અવસ્થા મેં પ્રચુરતર કર્મદલિક કા નિપેક્ષ કરતે
 હૈ ઔર દ્વિતીય અવસ્થા મેં વિશેષ હીન કર્મદલિક કા નિપેક્ષ ઉપચયન
 કરતે હૈ । હસ પ્રકાર યે યાવત્ દુષ્ટાવસ્થા મેં વિશેષ હીન કર્મદલિક
 કા નિપેક્ષ કરતે રહતે હૈ । કહા મી હૈ-“ મોક્ષ સંગમવાદ ” इत्यादि
 “ वषिसु ३ ” जीवों ने पूर्वकाल में कर्मप्रकृतियों का क्रोध से बाध किया
 है, अब भी वे करते हैं और आगे भी वे करेंगे । જ્ઞાનાવરણીયાદિરૂપ
 સે નિપિચ્છત્ત હુવે કર્મ કા પુનઃ જો કપાયવિશેષ સે નિક્ષાત્તન હોતા હૈ
 વહ વધ હૈ, જિસ પ્રકાર યહ વધ ક્રોધ સે હોતા હૈ હસી પ્રકાર માન
 માયા ઔર લોમ સે મી હોતા હૈ યેસા જાનના વાહિયે । “ उदीरिसु ३ ”

નિપેક્ષ છે એવો આથ અવસ્થામાં પ્રચુરતર કર્મદલિકને નિપેક્ષ કરે છે અને
 દ્વિતીય અવસ્થામાં વિશેષ હીન કર્મદલિકને નિપેક્ષ (ઉપચય) કરે છે
 આ રીતે તેઓ (યાવત્) દુષ્ટાવસ્થામાં વિશેષ હીન કર્મદલિકને નિપેક્ષ
 કરતાં રહે છે કહું પણ છે કે-“ મોક્ષ સંગમવાદ ” इत्यादि—

“ વર્ષિસુ ૩ ” ક્રોધને કારણે એવોએ જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ કર્મપ્રકૃતિ
 યોગે બધ કર્યો છે, વર્તમાનમાં પણ કરે છે અને ભવિષ્યમાં પણ કરશે.
 જેમ આ બધ ક્રોધથી થાય છે, એ જ પ્રમાણે માન, માયા અને લોભથી પણ
 થાય છે તેથી ક્રોધને બદલે આ ત્રણ પદોને ક્રમશઃ પ્રયોગ કરીને ત્રણ કળ-
 વિપલક આલાપક બનાવી શકાય છે જ્ઞાનાવરણીય આદિ રૂપે નિપિચ્છ (ઉપચયિત)
 થયેલાં કર્મનું ફરી એ કપાયવિશેષ વડે નિક્ષાત્તન થાય છે, તેનું નામ બધ છે.

“જાવ વેમાણિયાણ ” ઇતિ-વૈમાનિકપર્યન્તં તત્તદ્દશકં પઠનીયમ્ ।

“પદમેકેકે પદ ” ઇત્યાદિ-પદમ્=ઉક્તપ્રકારેણ યથાઽધિન્વન્નાદિપદ્ધટિતં તત્તદ્દશકપ્રયમુક્ત તથા અવગ્નન્નાદિપદ્ધટિતમપિ તત્તદ્દશકં પઠનીયમ્, એતદેવ સ્પષ્ટયતિ-“ પદ્મેકે પદે ” ઇત્યાદિના, એકેકસ્મિન્=પ્રત્યેકમ્, ઇત્યર્થઃ, અયં માત્રઃ-“ અવગ્નન્ ” ઇતિ પદે યોજિતે સતિ શ્રીણિ વણ્ઠકાનિ, પુનઃ ‘ વગ્નન્તિ ’ ઇતિ પદે યોજિતે સતિ શ્રીણિ વણ્ઠકાનિ । તથા ‘ મંત્સ્યન્તિ ’ ઇતિ પદે યોજિતે સતિ શ્રીણિ વણ્ઠકાનિ, અનેન ક્રમેણ ‘ ઉદૈરયન્, ઉદીરયન્તિ ઉદીરયિમ્પન્તિ ’ ઇત્યાદિ મૂલવર્તમાનમત્રિવિધત્કાલિકતત્તત્તયોગયોજનનૈકસ્મિન્નેકસ્મિન્ પદે શ્રીણિ

હુઈ હૈ, સર્વનિર્જરા નહીં ગૃહીત હુઈ હૈ । ક્યોં કિ-ચતુર્વિંશતિ વણ્ઠકોં મેં હસ નિર્જરા કા અસદ્ભાવ હૈ । “ જાવ વેમાણિયાણ ” વૈમાનિક પર્યન્ત વહ વણ્ઠક પઠનીય હૈ । “ પદમેકેકેકે પદે-” જૈસે-“ અધિન્વન્ ” આદિ પદ્ધટિત વણ્ઠકત્રય કહે ગયે હૈં વૈસે હી “ અવગ્નન્ ” આદિ પદ્ધટિત શ્રી વણ્ઠકત્રય કલ્પના સે યનાના ગ્રાહિયે । હસી કા સ્પષ્ટીઃ કરણ સૂત્રકાર અથ “ એકેકે પદે-” ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા કરતે હૈ, હસમેં કન્હોં ને કહા હૈ કિ-“ અવગ્નન્ ” હસ પદ કો યોજિત કરને પર માન માયા ઓર છોમ સમ્યગ્ની પદ કે આધાર પર મૂલકાલ કો લેકર ૩-૩ વણ્ઠક હોતે હૈ । જૈસે-જીષોં ને માન સે મૂલકાલ મેં અષ્ટ પ્રકૃતિયોં કા પદ કિયા હૈ ૧ માયા સે હનકા મૂલકાલ સે બંધ કિયા હૈ ૨, ઓર છોમ સે હનકા વન્ધ મૂલકાલ સે કિયા હૈ ૩ । હસ પ્રકાર સે “ અથ

ગૃહીત વર્ષ છે, સવનિર્જરા ગૃહીત વર્ષ નથી, કારણ કે ચાવીસ હડકાનાં એવામાં સવનિર્જરાનો સદ્ભાવ નથી.

“ જાવ વેમાણિયાણ ” વૈમાનિક પર્યન્તના એવામાં આ હડકાનું કથન થયું છે. “ પદમેકેકેકે પદે ” એમકે “ અધિન્વન્ ” આદિ પદ્ધટિત ત્રણ હડકા કહેવામાં આવ્યા છે, એવાં જ “ અવગ્નન્ ” આદિ પદ્ધટિત પણ ત્રણ ત્રણ હડકા કલ્પનાથી બનાવી લેવાં છે. એ જ વાતનું સૂત્રકાર હવે “ એકેકે પદે ” ઇત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા સ્પષ્ટીકરણ કરે છે—

આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકાર એમ કહે છે કે “ અવગ્નન્ ” આ પદને યોજિત કરીને માન, માયા અને લોકા સહજી પદને આધારે મૂલકાળની અપેક્ષાએ ત્રણ ત્રણ હડકા થાય છે એમકે (૧) એવાએ માનને કારણે મૂલ કાળમાં આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનો બન્ધ કર્યો છે (૨) એ જ પ્રમાણે માયાના કારણે પણ તેમનો મૂલકાળમાં બન્ધ કર્યો છે, અને (૩) લોકાને કારણે પણ મૂલ કાળમાં તેનો બન્ધ કર્યો છે. આ પ્રમાણે “ અવગ્નન્ ” આ મૂલકાળનું ૨૫

ત્રીણિ દણ્ડકાનિ મણિતવ્યાનિ । તાનિ ચ કિમ્પદપર્યન્તમિતિ દર્શયતિ—“ જાત્ર નિજ્જરિસસન્તિ ” ઇતિ, “ નિર્જરયિષ્યન્તિ ” ઇતિાદપર્યન્ત ત્રીણિ ત્રીણિ દણ્ડકાનિ પ્રત્યેકં પદે મણિતવ્યાનીત્યર્થઃ । (સ. ૧૩ ॥

બન્” પદ કે ત્રીન દણ્ડક માન માયા ઓર લોભ કષાય કો લેકર ભૂતકાલ મે હોતે હૈં । ઁસી પ્રકાર સે “ વન્નન્તિ ” પદ કો યોજિત કરને પર માન માયા ઓર લોભ કો લેકર ત્રીન દણ્ડક હોતે હૈં । અર્થાત્-માન કષાય કો લેકર તથા માયા કષાય કો લેકર ઁવ લોભ કષાય કો લેકર જીવ વર્તમાન મે અષ્ટ કર્મપ્રકૃતિયોં કા વન્ધ કરતે હૈં । ઁસ પ્રકાર સે “ વન્નન્તિ ” પદ કો યોજિત કરને પર વર્તમાનકાલ સમ્બન્ધી ઁ ત્રીન દણ્ડક હોતે હૈં ।

ઁસી તરહ સે “ મન્તસ્યન્તિ ” મવિષ્યત્ કાલિક પદ કો યોજિત કરકે મી મવિષ્યત્કાલ સમ્બન્ધી ત્રીન દણ્ડક હો જાતે હૈં ઁસી કરમ સે “ ઉદૈરયન્-” મૂતકાલિક પદ કો યોજિત કરને પર માન સે મૂતકાલ મેં જીવોં ને અષ્ટકર્મપ્રકૃતિયોં કી ઉદીરણા કી હૈ, માયા સે ઉદીરણા કી હૈ, ઓર લોભ સે ઁનકી ઉદીરણા કી હૈ ઁસ પ્રકાર કે ઁ ત્રીન દણ્ડક મૂતકાલ સમ્બન્ધી બન જાતે હૈં । “ ઉદીરયન્તિ-” ઁસ વર્તમાન કાલિક

વાપરીને માન, માયા અને લોભ, આ ત્રણ કષાયોના ભૂતકાળ સંબંધી ત્રણ દંડક બને છે એ જ પ્રમાણે “ વન્નન્તિ.” આ વર્તમાનકાળના ક્રિયાપદનું રૂપ વાપરીને માન, માયા અને લોભરૂપ કારણવાળાં ત્રણ દંડક આ પ્રમાણે બને છે. (૧) જીવો માનને કારણે અષ્ટકર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ કરે છે, (૨) માયાના કારણે પણ જીવો અષ્ટકર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ કરે છે. (૩) લોભને કારણે પણ જીવો અષ્ટકર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ કરે છે. એ જ પ્રમાણે ભવિષ્યકાળ સંબંધી ત્રણ દંડક આ પ્રમાણે સમજવા—(૧) માનને કારણે જીવો ભવિષ્યમા આઠ કર્મપ્રકૃતિઓ બંધ કરશે, (૨) માયાને કારણે જીવો આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ કરશે અને (૩) લોભને કારણે જીવો આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનો બંધ કરશે. ક્રોધના કારણવાળા ત્રણ દંડક તો આગળ આપવામાં આવ્યા છે. આ રીતે ચાર કષાય વિષયક ત્રણે કાળસંબંધી કુલ ૧૨ દંડક “ બન્ધ ” પદ સાથે બને છે.

ઉદીરણા વિષયક આલાપકો—“ ઉદૈરયન્ ” આ ભૂતકાલિન ક્રિયાપદના પ્રયોગથી આ પ્રમાણે ત્રણ આલાપક બનશે—(૧) ભૂતકાળમાં જીવોએ માનને કારણે આઠ કર્મપ્રકૃતિઓની ઉદીરણા કરી છે, (૨) માયાથી પણ ઉદીરણા કરી છે અને (૩) લોભથી પણ ઉદીરણા કરી છે. આ રીતે ભૂતકાળ સંબંધી ત્રણ

પૂર્વ નિર્નરોક્તા, સા ચ પ્રતિમાપારણાદિશિષ્ટા મતસ્યત પ્રતિમાં સુપ્રવચ્યે
દર્શયિતુમાહ—

મૂલપ્-ચત્તારિ પદિમાઓ પળ્લવ્તાઓ, તં જહા—સમાહિપ
દિમા ૧, ઉવદ્ધાણ પદિમા ૨, વિવેગપદિમા ૩, વિડસ્સગ્ગપદિમા ૪।

ચત્તારિ પદિમાઓ પળ્લવ્તાઓ, ત જહા મહા ૧, સુમહા ૨,
મહામહા ૩, સઠ્ઠવઓમહા ૪। ચત્તારિ પદિમાઓ પળ્લવ્તાઓ,
તં જહા—ખુદ્ધિયા મોયપદિમા ૧, મહલ્લિયા મોયપદિમા ૨, જવ
મજ્જા ૩, વડ્ડરમજ્જા ૪ । સુ. ૧૪ ॥

પદ્મ કો યોજિત કરને પર ત્રીન વળ્લક વર્તમાનકાલ સમ્યન્થી બન જાતે
હૈં, ઔર હવીરપિચ્છન્તિ હસ અવિચ્છન્તકાલિક પદ્મ કો યોજિત કરને પર
૩ વળ્લક અવિચ્છન્તકાલ સમ્યન્થી બન જાતે હૈં । હસ પ્રકાર સે યે ત્રીન
વળ્લક “ જાવ નિઝરિસ્સતિ ” યાવત્ નિર્જરા કરે ગે યહાં તક કહ
હેના ચાહિયે । હસ તરહ સે પ્રત્યેક પદ્મ મે યે ત્રીનો વળ્લક અણિતવ્ય
વતલાયે ગયે હૈં ॥ સુ. ૧૩ ॥

નિર્જરા ઝો કહી ગઈ હૈં યહ પ્રતિમા ધારણ કરને સે વિશિષ્ટ હોતી
હૈં, અતઃ અય સૂત્રકાર પ્રતિમા કા કથન સૂત્રવચ્ચ સે કરતે હૈં—

“ ચત્તારિ પદિમાઓ પળ્લવ્તાઓ ” હત્પાદિ-૧૪

૬૬૪ બની બધ છે “ હવીરપિચ્છ ” “ હવીરપિચ્છ કરે છે ” આ વર્તમાનકાલનું
કિયાપદ યોજવાથી ત્રણ ૬૬૪ વર્તમાનકાલ સબથી બની જશે અને “ હવી-
રપિચ્છન્તિ ”—“ હવીરપિચ્છ કરશે ”

આ અવિચ્છન્તકાલ સબથી કિયાપદ યોજવાથી અવિચ્છન્તકાલ સબથી ત્રણ ૬૬૪
બની જશે. “ જાવ નિઝરિસ્સતિ ” આ કથને અનુસરીને બારે કથાઓ સબથી
ત્રિકાલ વિષયક ૧૨-૧૨ ૬૬૪ બનાવી શકશે. નિર્જરા વિષયક હેતુ બાર
૬૬૪ આ પ્રમાણે બનશે. છવે (૧) કીધને કારણે (૨) માનને કારણે, (૩)
માયાને કારણે અને (૪) લોકને કારણે આઠ કર્મપ્રકૃતિઓની અવિચ્છન્તમાં પણ
નિર્જરા કરશે આ બાર ૬૬૪ અવિચ્છન્તકાલની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યા છે ॥ સુ. ૧૩ ॥

પહેલાં જે નિર્જરાની વાત કરવામાં આવી, તે પ્રતિમા ધારણ કરવાથી
વિશિષ્ટ થાય છે તેથી હવે સૂત્રકાર પ્રતિમાની પ્રકૃતિ કરવા નિમિત્તે ત્રણ
સૂત્રોનું કથન કરે છે—“ ચત્તારિ પદિમાઓ પળ્લવ્તાઓ ” હત્પાદિ—

છાયા—ચતસ્રઃ પ્રતિમાઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તદ્યથા—સમાધિપ્રતિમા ૧, ઉપધાન-પ્રતિમા ૨, વિવેકપ્રતિમા ૩, વ્યુત્સર્ગપ્રતિમા ૪।

ચતસ્રઃ પ્રતિમાઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તદ્યથા—ભદ્રા ૧, સુભદ્રા ૨, મહાભદ્રા ૩, સર્વતો-ભદ્રા ૪। ચતસ્રઃ પ્રતિમાઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તદ્યથા—ક્ષુદ્રિકામોકપ્રતિમા ૧, મહતિકામોકપ્રતિમા ૨, યવમધ્યા ૩, વજ્રમધ્યા ૪ ॥ સુ. ૧૪ ॥

ટીકા—“ચત્તારિ પઢિમાઓ” ઇત્યાદિ—ચતસ્રઃ પ્રતિમાઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તદ્યથા—સમા-ધિપ્રતિમા—સમાધિઃ—શ્રુતં ચરિત્રં ચ, તદ્વિષયા પ્રતિમા=પ્રતિજ્ઞા અભિગ્રહઃ=સમા-ધિપ્રતિમા શ્રુતચારિત્રવિષયકપ્રતિજ્ઞેત્યર્થઃ ૧।

“ઉપપ્રધાનપ્રતિમા”—ઉપધાનં—તીવ્રં તપઃ, તસ્ય પ્રતિમોપધાનપ્રતિમા તિવ્ર-તપો વિષયાભિગ્રહ ઇત્યર્થઃ ૨।

સૂત્રાર્થ—પ્રતિમા ચાર કહી गई हैं, जैसे—समाधिप्रतिमा १ उपधान-प्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ और व्युत्सर्गप्रतिमा—४

इस प्रकार से भी चार प्रतिमाएं कही गई हैं, जैसे—भद्रा १ सुभद्रा २ महाभद्रा ३ और सर्वतोभद्रा—४

इस प्रकार से भी प्रतिमा चार कही गई हैं जैसे—क्षुद्रिकामोक प्रतिमा १ महतिकाभोकप्रतिमा २ यवमध्या ३ और वज्रमध्या—४

विशेषार्थ—શ્રુત ઓર ચારિત્ર કા નામ સમાધિ હૈં ઇસ શ્રુતચારિત્રરૂપ સમાધિ વિષયવાળી જો પ્રતિમા હૈં અભિગ્રહ હૈં વહ સમાધિ પ્રતિમા હૈં, પ્રતિમા શબ્દ કા વાચ્યાર્થ યહાં અભિગ્રહ લિયા ગયા હૈં । ઇસકા તાત્પર્ય યહી હૈં કિ શ્રુત ચારિત્ર વિષયક જો પ્રતિમા અભિગ્રહ હૈં વહી સમાધિ પ્રતિમા હૈં ૧ । તીવ્રતપ કા નામ ઉપધાનં હૈં. ઇસ ઉપધાન

સૂત્રાર્થ—પ્રતિમા ચાર કહી છે—(૧) સમાધિ પ્રતિમા, (૨) ઉપધાન પ્રતિમા, (૩) વિવેક પ્રતિમા અને (૪) વ્યુત્સર્ગ પ્રતિમા. પ્રતિમાના આ પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પણ કહ્યા છે—(૧) ભદ્રા, (૨) સુભદ્રા (૩) મહાભદ્રા અને (૪) સર્વતોભદ્રા. પ્રતિમાના આ પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) ક્ષુદ્રિકામોકપ્રતિમા, (૨) મહતિકામોકપ્રતિમા, (૩) યવમધ્યા અને (૪) વજ્રમધ્યા.

વિશેષાર્થ—શ્રુત અને ચારિત્રનું નામ સમાધિ છે. આ શ્રુતચારિત્ર રૂપ સમાધિ વિષયવાળી જે પ્રતિમા (અભિગ્રહ) છે, તેનું નામ સમાધિપ્રતિમા છે. અહીં “પ્રતિમા” પદનો વાચ્યાર્થ “અભિગ્રહ” ગ્રહણ કરવાનો છે. તેનું તાત્પર્ય એ છે કે શ્રુતચારિત્ર વિષયક જે અભિગ્રહ છે, તેનું નામ સમાધિ પ્રતિમા છે. ૧ ૧ ।

તીવ્ર તપને ઉપધાન કહે છે. તે ઉપધાનની જે પ્રતિમા છે—એટલે કે

“વિવેકપ્રતિમા”-વિવેચન વિવેકા=શુદ્ધાશુદ્ધકલ્પનીયાકલ્પનીયમક્ત પાનવસ્ત્રાદિમધ્યાશુદ્ધાકલ્પનીયપરિહારપૂર્વક શુદ્ધકલ્પનીયપ્રહણમ્, તસ્ય પ્રતિજ્ઞા=અભિગ્રહઃ ૩।

“વ્યુત્સર્ગપ્રતિમા”-વ્યુત્સર્ગઃ - વિશેષેષ મનોવાકનિરોધેનાનુષ્ઠેયવિષયા-તિરિક્તાવિષયાત્ કાયસ્ય ઉત્સર્ગ=વિમુક્તીકરણમ્, કાયોત્સર્ગ ઇત્યર્થઃ, તદ્વિષયા પ્રતિમેતિ ૪।

પુનરપિ પ્રતિમાચતુષ્ટયમાહ-“ચચારિપદિમાઓ” ઇત્યાદિ-ચતસ્ર પ્રતિમાઃ, પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-મદ્રા-પૂર્વાદિચતુર્દિગમિમુક્તસ્ય સપતસ્ય પૂર્વાદિદિશ્ચતુષ્ટયે પ્રત્યેકં ચતુર મદ્રાન્ યાવત્ કાયોત્સર્ગરૂપા, ઇયં દ્વામ્પામહોરાત્રામ્પ્યાં સમ્પૂર્ણા મવતિ ૧।

કો જો પ્રતિમા છે વહ ઉપધાન પ્રતિમા છે । અર્થાત્-તીવ્રતપ વિષયક જો અભિગ્રહ છે વહ-ઉપધાન પ્રતિમા છે-૨ । શુદ્ધ અશુદ્ધ ઓર અકલ્પનીય કા સ્થાગ કર કેવલ શુદ્ધ કલ્પનીય મક્ત પાન આદિ કો પ્રહણ કરને કો પ્રતિજ્ઞા કરના અભિગ્રહ ધારણ કરના હસકા નામ વિવેક પ્રતિજ્ઞા છે ૩ મનોવાક કા નિરોધ કરતે જુએ અનુષ્ઠેય વિષય સે અતિરિક્ત વિષય સમ્પર્ક સે કાય કો વિમુક્ત કરના હસકા નામ કાયોત્સર્ગ છે કાયોત્સર્ગ વિષયક જો પ્રતિજ્ઞા છે વહ કાયોત્સર્ગ પ્રતિમા છે ૪

પ્રકારાન્તર સે જો મદ્રા આદિ પ્રતિમાપં કહી ગઈ છે, ઇનકા અભિગ્રાપ પેસા છે-પૂર્વાદિ ચારો દિશાઓ મેં સપત કો પ્રત્યેક દિશા મેં ચાર ૨ પ્રકાર તક કાયોત્સર્ગ કરના હસકા નામ મદ્રાપ્રતિમા છે । વહ દો રાત મેં સમ્પૂર્ણ હોતી છે ૧ મદ્રા પ્રતિમા હી પ્રવર્ધમાન પરિણામ સે

તીન તપવિષયક કે અભિગ્રહ છે તેનું નામ ઉપધાન પ્રતિમા છે । ૨ ।

શુદ્ધ-અશુદ્ધ અને અકલ્પનીયના ત્યાગ કરીને માત્ર શુદ્ધ કલ્પનીય ભક્તપાન આદિ ગ્રંથ કરવાની કે પ્રતિજ્ઞા (અભિગ્રહ) ધારણ કરવામાં આવે છે તેનું નામ વિવેકપ્રતિમા છે । ૩ ।

મનોવાકનો નિરોધ કરીને અનુધાનના વિષય વિવાચના વિષયોના અપેક્ષી કાયાને વિમુખ રાખવી તેનું નામ કાયોત્સર્ગ છે આ કાયોત્સર્ગ વિષયક કે પ્રતિમા છે, તેને કાયોત્સર્ગ પ્રતિમા કહે છે । ૪ ।

બીજી રીતે પણ પ્રતિમાના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—

(૧) મદ્રા પ્રતિમા—પૂર્વાદિ ચારે દિશાઓ તરફ ગ્રામ રાખીને પ્રત્યેક દિશામાં ચાર-ચાર મદ્રા પથ્થર કે કાયોત્સર્ગ સપત દિશા કરવામાં આવે

“ સુભદ્રા ”—પ્રવર્ધમાનપરિણામેન જાયમાના ભદ્રૈવેતિ ૨।

“ મહાભદ્રા ”—પૂર્વાદિ દિક્ચતુષ્ટયાભિમુલ્કસ્ય પ્રત્યેકં દિશિ પ્રહરાષ્ટકં યાવત્ કાયોત્સર્ગલક્ષણા, ઇય ચતુર્ભિરહોરાત્રૈઃ સમાપ્યા ભવતિ । ૩ ।

“ સર્વતોભદ્રા ”—દશસુ દિક્ષુ પ્રત્યેકમહોરાત્રપ્રમાણઃ કાયોત્સર્ગઃ, ઇયં ચ દશભિરહોરાત્રૈઃ સમાપ્યતે । ૪ ।

પુનઃ પ્રતિમાં વિભજતે—“ ચત્તારિ પઢિમાઓ ” ઇત્યાદિ—ચતસ્ર—પ્રતિમાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ, તદ્વથા—હુદ્રિકામોકપ્રતિમા ૧, મહતિકામોકપ્રતિમા ૨, અનયોઽર્વાખ્યાનમન્યતોઽવસેયમ્ । યવમધ્યા ૩, વજ્રમધ્યા ૪ ચેતિ । અનયોઽર્વાખ્યા દ્વિતીય-સ્થાને ગતેતિ ॥ સૂ ૧૪ ॥

જવ સાધિત હોતી હૈ તો સુભદ્રાપ્રતિમા કહી ગઈ હૈ ૨ મહાભદ્રા—પ્રત્યેક દિશા કી ઓર મુંઢ કરકે પ્રત્યેક દિશા મેં આઠ ૨ પ્રહર તક કાયોત્સર્ગ કરના સો મહાભદ્રાપ્રતિમા હૈ । યહ ચાર અહોરાત્ર દિનરાત મેં સમાપ્ત હોતી હૈ ૩ દશ દિશાઓં મેં પ્રત્યેક દિશા મેં એક અહોરાત્ર તક કાયો-ત્સર્ગ કરના ઉસકા નામ સર્વતોભદ્રા પ્રતિમા હૈ—૪ હુદ્રિકામોકપ્રતિમા આદિ કે ભેદ સે જો ૪ પ્રતિમાઈ પ્રકારાન્તર સે ચતલાઈ ગઈ હૈ સો—હુદ્રિકામોક પ્રતિમા ૧ ઓર મહતિકાપ્રતિમા—૨ इन दोनों का व्याख्यान अन्य स्थानों से जानना चाहिये । तथा—यवमध्या और वज्रमध्या ये जो दो प्रतिमाएँ हैं, इसकी व्याख्या द्वितीय स्थान में की जा चुकी है, सो वहाँ से जान लेनी चाहिये ॥ सू १४ ॥

છે, તેનું નામ ભદ્રા પ્રતિમા છે. (૨) પ્રવર્ધમાન પરિણામ પૂર્વક બ્યારે ભદ્રા પ્રતિમાની સાધના કરવામાં આવે છે, ત્યારે તેને સુભદ્રા પ્રતિમા કહે છે.

(૩) મહાભદ્રા પ્રતિમા—પ્રત્યેક દિશા તરફ મુખ રાખીને આઠ આઠ પ્રહર પર્યન્ત જે કાયોત્સર્ગ કરવામાં આવે છે તેનું નામ મહાભદ્રા પ્રતિમા છે. આ પ્રતિમાની આસાધના કરવામાં ચાર દિનરાત જેટલો સમય લાગે છે.

(૪) સર્વતોભદ્રા પ્રતિમા—દસ દિશાઓમાંની પ્રત્યેક દિશા તરફ એક એક અહોરાત્ર (દિન—રાત) પર્યન્ત મુખ રાખીને કાયોત્સર્ગ કરવો તેનું નામ સર્વતોભદ્રા પ્રતિમા છે.

બીજી રીતે પણ પ્રતિમાના હુદ્રિકામોકપ્રતિમાઆદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે (૧) હુદ્રિકા મોકપ્રતિમા, (૨) મહતિકા મોકપ્રતિમા, આ બન્નેનું સ્પષ્ટીકરણ અન્ય સ્થાનોમાથી જાણી લેવું. ‘યવમધ્યા અને ‘વજ્રમધ્યા’ આ બે પ્રતિમાઓનું નિરૂપણ દ્વિતીય સ્થાનમાં કરવામાં આવ્યું છે, તો ત્યાંથી તે વાંચી લેવું. ॥ સૂ. ૧૪ ॥

પૂર્વે પ્રતિમા પ્રોક્તા, સા વ બીજાસ્થિકાયાઃ, એવ સમ્મવર્તીતિ તદ્વિપરીગાજી
પાસ્થિકાયા સમેદ નિરુપયતિ—

મૂલમ્—ચત્તારિ અસ્થિકાયા અજીવકાયા પળ્લગ્ગા, ત જહા—
ધમ્મસ્થિકાયા ૧, અધમ્મસ્થિકાયા ૨, આગાસસ્થિકાયા ૩,
પોગ્ગલસ્થિકાયા ૪ ॥

ચત્તારિ અસ્થિકાયા અરુપિકાયા પળ્લગ્ગા, ત જહા—
ધમ્મસ્થિકાયા ૧, અધમ્મસ્થિકાયા ૨, આગાસસ્થિકાયા ૩,
જીવસ્થિકાયા ૪ ॥ સૂ. ૧૫ ॥

છાયા—ચત્તારોઽસ્થિકાયાઃ અજીવકાયાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ, તથા—ધર્માસ્થિકાયાઃ
૧, અધર્માસ્થિકાયા ૨, આકાશાસ્થિકાયા ૩, પુદ્ગલાસ્થિકાયા ૪ ॥

ચત્તાર અસ્થિકાયાઃ અરુપિકાયાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ તથા—ધર્માસ્થિકાયા ૧, અધર્માસ્થિકાયા ૨, આકાશાસ્થિકાયા ૩, જીવાસ્થિકાયા ૪ ॥ સૂ. ૧૫ ॥

ટીકા—“ચત્તારિ અસ્થિકાયા” ઇત્યાદિ—“અસ્તિ” ઇતિ વિમક્ષિપ્રવિરુ-
પકમવ્યયમ્, તથા ત્રિકાલવાચકમ્, તેન “અસ્તિ” ઇત્યસ્ય “અયુવન્ ભવન્તિ

“ચત્તારિ અસ્થિકાયા અજીવકાયા પળ્લગ્ગા” ઇત્યાદિ ૧૫

સૂત્રાર્થ—ચાર અસ્થિકાયા અજીવકાયા કહે ગયે છે, જैसे—ધર્માસ્થિકાયા-૧
અધર્માસ્થિકાયા ૨ આકાશાસ્થિકાયા ૩ અને પુદ્ગલાસ્થિકાયા-૪

ચાર અસ્થિકાયા અરુપિકાયા કહે ગયે છે, જैसे—ધર્માસ્થિકાયા ૧
અધર્માસ્થિકાયા ૨ આકાશાસ્થિકાયા ૩ અને જીવાસ્થિકાયા ૪

હસમે જો કહે છે હોતે છે અને હોંગે, એ અસ્તિ છે એસા અર્થ નિકળતા
છે. પ્રદેશોંકી રાશિકા નામ કાયદે, મૂલકાલમેં વર્તમાનકાલમેં અને સર્વિ

“ચત્તારિ અસ્થિકાયા-અજીવકાયા પળ્લગ્ગા” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—ચાર અસ્થિકાયા-અરુપિકાયા કહ્યા છે—(૧) ધર્માસ્થિકાયા, (૨) અધર્મા-
સ્થિકાયા, (૩) આકાશાસ્થિકાયા અને (૪) પુદ્ગલાસ્થિકાયા.

ચાર અસ્થિકાયા અજીવકાયા કહ્યા છે—જેમકે (૧) ધર્માસ્થિકાયા, (૨)
અધર્માસ્થિકાયા, (૩) આકાશાસ્થિકાયા અને (૪) જીવાસ્થિકાયા.

વિશેષાર્થ—“જે થયા છે થાય છે અને થશે, તેમનું નામ અસ્તિ છે.”
પ્રદેશોંકી રાશિકા નામ કાયદે મૂલકાલમેં વર્તમાનકાલમેં અને સર્વિ

મવિવ્યન્તિ ” इति विवरणम् , चीयतेऽत्रेति कायाः-राशयः, अस्ति च ते कायाश्च=प्रदेशानां राशयश्च इति अस्तिकायाः=भूतभवद्भविष्यत्प्रदेशराशय इत्यर्थः । कचित् अस्तिपदेन प्रदेशा उच्यन्ते, तत्पक्षे-अस्ति-प्रदेशानां काया अस्तिकायाः=प्रदेशराशय इत्यर्थः, तादृशा अजीवकायाः-जीवन्ति-प्राणान् धरन्तीति जीवाः, न जीवा अजीवास्तेषां कायाः=राशयोऽजीवकाया, चत्वारः=चतुःसंख्याः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-धर्मास्तिकायः १, अधर्मास्तिकायः २, आकाशास्तिकायः ३, पुद्गलास्तिकायः ४, एषां व्याख्या प्रथमस्थाने गता । सू० १५ ॥

વ્યત્કાલ મેં જિનમેં પ્રદેશોં કો રાશિ છુઈ હૈ-હોગી, વે અસ્તિકાય હૈં અર્થાત્-જો વહુપ્રદેશી હૈં વે અસ્તિકાય હૈં । કહીં કહીં પર “અસ્તિ” પદ સે પ્રદેશ કહે ગયે હૈં, સો ઉસ પક્ષ મેં પ્રદેશોં કા જો કાય હૈ વહ અસ્તિકાય હૈ । ઇસકાં મી અર્થ પ્રદેશરાશિ હૈ, એસે અસ્તિકાય ચાર હી અજીવકાય કહે ગયે હૈં, અજીવ હોતે હુવે જો વહુપ્રદેશી હૈં વે અજીવકાય હૈં । યદ્યપિ-જીવ મી અસ્તિકાય હૈં, પરન્તુ-વહ અજીવ નહીં હૈં, ઇસલિયે-વહ મી અજીવકાય નહીં હૈં ઇસ પ્રકાર અજીવ હોકર જિનમેં કાયતા હૈ વે ચાર હૈં, ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય, આકાશાસ્તિકાય ઓર પુદ્ગલાસ્તિકાય જો પ્રાણોં કો ધારણ કરતે હૈં વે જીવ હૈં, જો જીવ નહીં હૈં વે અજીવ હૈં અજીવોં કા જો કાય હૈ રાશિ હૈ વહ-અજીવકાય હૈ । ધર્માસ્તિકાય આદિ કી વ્યાખ્યા પ્રથમ સ્થાન મેં કી ગઈ હૈ । યે ચાર

વર્તમાનકાળમાં પણ જેમાં પ્રદેશોની રાશિ થાય છે અને ભવિષ્યમાં પણ જેમાં પ્રદેશોની રાશિ હશે, તેમને અસ્તિકાય કહે છે. એટલે કે જે બહુપ્રદેશી છે તેમને અસ્તિકાય કહે છે કોઈ કોઈ જગ્યાએ “અસ્તિ” પદથી “પ્રદેશ” ગૃહીત થયેલ છે આ દૃષ્ટિએ વિચારવામાં આવે તો પ્રદેશોનો જે કાય છે તેનું નામ જ અસ્તિકાય છે તેનો અર્થ પણ ‘પ્રદેશરાશિ’ જ થાય છે. એવા અસ્તિકાય રૂપ ચાર અણુવકાયને જ કહ્યા છે. અણુવ હોવા છતાં જે બહુપ્રદેશી છે, તેમને અણુવકાય કહે છે. જે કે અણુ પણ અસ્તિકાય છે, પરંતુ તે અણુવ નથી, તેથી તેને અણુવકાય કહેલ નથી આ રીતે અણુવ હોવા છતાં જેમાં કાયતાનો સદ્ભાવ છે એવા ચાર અણુવકાય નીચે પ્રમાણે છે— (૧) ધર્માસ્તિકાય, (૨) અધર્માસ્તિકાય, (૩) આકાશાસ્તિકાય અને (૪) પુદ્ગલાસ્તિકાય. જે પ્રાણોને ધારણ કરે છે તેમને અણુવ કહે છે, અને જે પ્રાણોને ધારણ કરતા નથી તેમને અણુવ કહે છે. અણુવોની જે રાશિ છે તેને અણુવકાય કહે છે. ધર્માસ્તિકાય આદિની વ્યાખ્યા પ્રથમ સ્થાનમાં આપવામાં આવી છે. અરૂપી

અનન્તરં જીવાસ્તિકાય ઉક્ત, ધરિત્રેયમૃતપુરુષાન્ ફલદ્યાન્ત પૂર્વક નિરૂપયતિ-
મૂલમ્-ચત્તારિ ફલા પળ્લતા, ત જહા-આમે ણામમેગે
આમમહુરે ૧, આમે ણામમેગે પક્કમહુરે ૨, પક્કે ણામમેગે આમ
મહુરે ૩, પક્કે ણામમેગે પક્ક મહુરે ૪।

પદામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયાપળ્લતા, ત જહા-આમે ણામ
મેગે આમમહુરફલસમાળે ૧, આમે ણામેગે પક્કમહુરફલસમાળે
૨, પક્કે ણામમેગે આમમહુરફલસમાળે ૩, પક્કે ણામમેગે પક્ક
મહુરફલસમાળે ૪ ॥ ૧૬ ॥

છાયા-ચત્તારિ ફલાનિ પ્રજ્ઞાનિ, તથા-આમ નામ એકમ્ આમમધુરમ્ ૧,
આમે નામ એક પક્કમધુરમ્ ૨, પક્ક નામ એકમ્ આમમધુરમ્ ૩, પક્ક નામ એક
પક્કમધુરમ્ ૪।

અસ્તિકાય અરૂપિકાય હૈં, અરૂપી હોકર જો કાપ હૈં બહુપ્રદેશી હૈં વે
અરૂપિકાય હૈં, યહાં પુલ્લાસ્તિકાય કો જો નહીં લિયા ગયા હૈં ઉનકા
કારણ ઉસકા રૂપી હોના હૈ પુલ્લાસ્તિકાય અરૂપી નહીં હોતા હૈ।
જીવાસ્તિકાય કો જો અરૂપિકાય મેં ગૃહીત કર લિયા હૈ વહ મૂલરૂપ મેં
ઉસકા અરૂપી હોના હૈ। ધર્માસ્તિકાય આદિ યે સવ અરૂપી હૈં। ફલિયે
ફળ અસ્તિકાયોં કો અરૂપીકાય મેં પરિગણિત કિયા ગયા હૈ ॥ સુ ૧૫ ॥

અય સૂત્રકાર ઉક્ત જીવાસ્તિકાય કે વિશેષમૂત પુરુષો કા દષ્ટાન્ત
પૂર્વક નિરૂપણ કરતે હૈં-“ ચત્તારિ ફલા પળ્લતા ” इत्यादि १६

સુમાર્થ-ફલચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈં, જેસે-એક વહ ફલ જો અપક્વ હોતા
હુયા આમકા જેસા કિચિત્ મધુર હોતા હૈ ૧ દુસરા વહ જો અપક્વ હોતા
હુયા પકે ફલ કા જેસા અત્યન્ત મધુર હોતા હૈ ૨ તીસરા વહ જો પકા
હુયા હોકર આમ જેસા કિચિત્ મધુર હોતા હૈ-૩ ઓર ચોથા વહ ફલ

હોવા છતાં એ બહુપ્રદેશી હૈ તેમને અરૂપીકાય કહે ॥ એવા અરૂપીકાય ચાર
કલાં છે-(૧) ધર્માસ્તિકાય (૨) અધર્માસ્તિકાય, (૩) આકાશસ્તિકાય અને
અવસ્તિકાય. અહીં પુલ્લાસ્તિકાયને અરૂપીકાય નહીં કહેવાનું કારણ એ છે
કે તે રૂપી પદાર્થ છે-અરૂપી નથી. અવસ્તિકાયને અરૂપીકાય કહેવાનું કારણ
એ છે કે મૂળરૂપે તે અરૂપી છે ધર્માસ્તિકાય આદિ આ ચાર પદાર્થો અરૂ
પી ન હોય તેથી આ અસ્તિકાયોને અરૂપીકાયમાં ગણવામાં આવ્યા છે ॥ સુ ૧૫ ॥

એ સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત અવસ્તિકાયનું-વિશેષમૂત પુરુષોના દષ્ટાન્તપૂર્વક
નિરૂપણ કરે છે-“ ચત્તારિ ફલા પળ્લતા ” इत्यादि-

સુમાર્થ-ફલોના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કલાં છે-(૧) કાચુ ફોલા છતાં પક્વ
કેરીના જેવું થકેજ અપુરત પુક્ત ફળ. (૨) કાચુ ફોલા છતાં પાકા ફળ

एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-आमो नाम एकः आममधुरफलसमानः १, आमो नामैकः पक्वमधुरफलसमानः २, पक्वो नामैकः आममधुरफलसमानः ३, पक्वो नामैकः पक्वमधुरफलसमानः ४ । सू० १६ ॥

टीका—“ चत्वारि फला ” इत्यादि-चत्वारि=चतुः संख्यानि, फलानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-आमम्=अपक्वम् सत् आममधुरम्-आममिव किञ्चित्मधुरम् एकं=किञ्चित्फलं भवति, ‘ नामे ’ ति चतुर्ष्वपि भक्षेण वाक्यालङ्कारे १, तथा-आमम्=अपक्वं सत् पक्वमधुरम्=पक्वमिमात्यन्तं मधुरम्, एकं=कश्चित् फलं भवति २, तथा-पक्वं-परिपाकप्राप्तं सत् आममधुरम्=आममिव किञ्चित्मधुरम्, एकं फलं भवति ३, तथा-पक्व=परिणतं सत् पक्वमधुरम्=पक्वमिवोत्कृष्टमधुरमेकं फलं भवति ४।

જો પક જાને પર પકે હુવે ફલ કા જૈસા ઉત્કૃષ્ટ મધુર હોતા હૈ ૪ इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, एक वह जो आम मधुर फल का समान होता है १ दूसरा वह जो पक्व मधुर फल का समान होता है-२ तीसरा वह जो पक जाने पर भी अपक्व आम फल के समान होता है ३ चौथा वह जो कि- पक्व हुवे पक्व फल का जैसा ही होता है ४ यहां-आम शब्द से अपक्व फल लिया गया है और-पक्व शब्द से पका हुवा फल लिया गया है “ नाम ” पद सर्वत्र वाक्यालङ्कार में प्रयुक्त हुवा है। एक फल ऐसा होता है जो आम होता हुवा आम जैसा ही मधुर होता है, अर्थात्-किञ्चित् मधुर होता है-१ एक फल ऐसा होता है जो आम होता हुवा भी पके हुवे फल जैसा अत्यन्त

જેવું અત્યન્ત મધુર હોય એવું ફળ (૩) પાકું હોવા છતાં કેરીના જેવું સહેજ મધુર ફળ. (૪) પાકીને ઉત્કૃષ્ટ રૂપે મધુર થયેલું ફળ. એ જ પ્રમાણે પુરુષોના પણ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અપકવ કેરીના જેવા (૨) અપકવ હોવા છતાં પકવ મધુર ફળ સમાન, (૩) પકવ હોવા છતાં અપકવ ફળ સમાન અને (૪) પકવ થઈને પકવ ફળસમાન મધુર. આ સૂત્રમાં “ આમ ”—“ કેરી ” આ પદ દ્વારા ‘ ફળ ’ ગૃહીત ‘ થયેલ છે. ‘ પકવ ’ પદથી પાકેલું ફળ ગૃહીત થયેલ છે. હવે ફળોના ચાર પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

(૧) કોઈ ફળ એવું હોય છે કે તે જ્યારે અપકવ (કાચું) હોય છે ત્યારે આમ (કેરી) જેવું જ મધુર હોય છે—એટલે કે સહેજ મધુર હોય છે.

(૨) કોઈક ફળ એવું હોય છે કે જે અપકવ હોવા છતાં પણ પકવ ફળના જેવું અત્યંત મધુર હોય છે.

◁દાંર્ષાન્તિકપુરુષજાતમૂળમાહ—▷

“પશામેવે”-ત્યાદિ-અર્થમ્=અનન્તરોક્તદૃષ્ટાન્તમૂલફલબદ્ધેત્યર્થઃ, ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રાપ્તાનિ, તથાપા-આમાઃ=અપરિપક્વાઃ-વયઃ શ્રુતામ્યા-મખ્યકૃત્ત્યર્થઃ યદ્વ ન વયોદૃદ્ધો ન ચ જ્ઞાનદૃદ્ધઃ સ પુરુષાઃ, આમમધુરફલ-સમાન-અપક્વ ફલવત્કિચિન્મધુરિમયુક્ત ફલ તુરયાઃ, અર્થાધ્યાઽમમધુરફલ સ્વલ્પમાધુર્યયુક્ત મવતિ તયૈકઃ કચિત્ પુરુષોઽપિ સ્વલ્પમાત્રો-પદ્મમાદિ રૂપમાધુર્યયુક્તો મવતિ કિચિદુપન્નમાદિમાન્ કચિત્પુરુષો મવતીતિ પર્યવસિતોઽર્થઃ, “નામે”-તિ સર્વત્ર

મધુર હોતા હૈ-૨ એક ફલ એસા હોતા હૈ જો પક જાને પર ખી પકે હુવે ફલ જૈસા કિચિત્ હી મધુર હોતા હૈ-૩ તથા-એક ફલ એસા હોતા હૈ જો પક જાને પર હી પકે હુવે ફલ સદશા વહુત અધિક મધુર હોતા હૈ ૪ હસ પ્રકાર સે ફલ કી ચતુષ્પ્રકારતા કા કથન કરકે અવ સૂત્રકાર હસ ચતુષ્પ્રકારતા કી મમતા પુરુષો કે સાથ ઘટાને કે લિયે દાંર્ષાન્તિક પુરુષજાત સૂત્ર કા કથન કર રહે હૈ-હસમેં વે વહ પ્રદર્શિત કરતે હૈ કિ-દૃષ્ટાન્ત સ્વરૂપ ફલ સદશા હી ચાર પુરુષજાત કહે ગયે હૈ હનમેં એક વહ જો આમ મધુર ફલ કા સમાન હોતા હૈ અર્થાત્-એસા વહ પુરુષ નતો વયોદૃદ્ધ હોતા હૈ ઓર ન જ્ઞાનદૃદ્ધ હોતા હૈ ? કોઈ એક આમ મધુર ફલ અપક્વ અવસ્થા મેં ખી કિચિત્ મધુરિમા યુક્ત (સ્વલ્પ મધુરિમા સે યુક્ત) હોતા હૈ, ઊસી પ્રકાર કોઈ એક પુરુષ ખી સ્વલ્પમાત્રા મેં વપ શમાદિરૂપ માધુર્ય સે યુક્ત હોતા હૈ-૧ અર્થાત્-કોઈ એક પુરુષ એસા

(ક) કેઈકે ફળ એવુ હોય છે કે જે પકવ થવા છતાં પણ અત્યન્ત મધુર હોતું નથી પણ સહેજ મધુર હોય છે

(ઘ) કેઈકે ફળ એવુ હોય છે કે જે ખાંડુ હોય ત્યારે ખાંડી કેરીના જેવુ અત્યવ મધુર હોય છે

આ રીતે ક્યોના ચાર પ્રકારનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર આ ચતુ પ્રકારતાની સમાનતા પુરુષોની સાથે ઘટાવવા નિમિત્તે દાંર્ષાન્તિક પુરુષ નામ વિષયક સૂત્રનું નિરૂપણ કરે છે—

દર્ષાન્તરૂપ ફળ સરખા ચાર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે.

(૧) અપક્વ સહેજ મધુર ફળસમાન પુરુષ-જે પુરુષ વયોદૃદ્ધ પણ ન હોય અને જ્ઞાનદૃદ્ધ પણ ન હોય, તેને આ પ્રકારમાં મૂઢી શકાય છે અથવા જેમ કેઈ ફળ (ઘ. વ. કેરી) અપકવાવસ્થામાં પણ અજેષ પ્રમાણમાં મધુરતા મુક્ત હોય છે, એ જ પ્રમાણે કેઈ કેઈ પુરુષ અજેષ માત્રામાં ઉપચમાદિ રૂપ

મંત્રેષુ વાક્યાલક્ષારે ૧। તથા-“ આમ ” ઇત્યાદિ-૧કઃ=કથિત્ પુરુષઃ આમઃ-
વયશ્રુતાભ્યામવ્યક્તઃ સન્નેવ પક્વમધુરફલસમાનઃ-પરિપક્વફલવત્ પ્રધાનોપશમા-
દિગુણાલક્ષ-તત્વાદત્યન્તમધુરસ્વભાવઃ ૨, તથા-“ પક્વ ” ઇત્યાદિ-૧કઃ=
કથિત્પુરુષઃ, પક્વઃ=વયઃશ્રુતાભ્યાં પરિણતઃ સન્ આમમધુરફલસમાનઃ=સ્વલ્પમા-
ત્રોપશમાદિગુણરૂપમાધુર્યવાન્ ભવતિ ૩, તથા-“ પક્વો નામ ” ઇત્યાદિ-૧ક =
કથિત્પુરુષઃ પક્વઃ=વયઃશ્રુતાભ્યાં પરિણતઃ પક્વમધુરફલસમાનઃ-પ્રધાનોપશમાદિ
ગુણવિભૂષિતત્વાદત્યન્તમધુરસ્વભાવો ભવતિ । ૪ । । સૂ ૧૬ ॥

હોતા હૈ જો કુછ ૨ ઉપશમ આદિ ગુણવાલા હોતા હૈ । ૧ક કોઈ દૂસરા
પુરુષ એસાં હોતા હૈ જો-વય ઓર શ્રુત इनसे अव्यक्त हुवा वयोवृद्ध
ज्ञानवृद्ध नहीं हुवा भी प्रधान उपशमादि गुणों से युक्त होने के कारण
अत्यन्त मधुर स्वभाववाला होता है-ऐसा वह पुरुष आम .पक्व मधुर
फल के समान होता है । कोई १क तीसरे प्रकार का पुरुष ऐसा होता
है कि जो वय और श्रुत से परिणत होता हुवा वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध
होता हुवा भी स्वल्पमात्रा में ही उपशमादि गुणरूप माधुर्यवाला होता
है ऐसी वह पुरुष पक्व आम मधुर फल के समान होता है-३ और
कोई १क चौथे प्रकार का पुरुष ऐसा होता है जो वयोवृद्ध और श्रुत
इनसे परिणत होने पर पक्वमधुर फल के समान प्रधान उपशमादि गुण
विभूषित होने के कारण अत्यन्त मधुर स्वभाववाला होता है ४ ॥सू. १६॥

માધુર્યથી યુક્ત હોય છે એટલે કે કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે અલ્પ
માત્રામાં જ ઉપશમ આદિ ગુણોથી યુક્ત હોય છે.

(૨) અપક્વ હોવા છતાં અતિ મધુર ફળ સમાન પુરુષ-કોઈ પુરુષ
એવો હોય છે કે વયોવૃદ્ધ અને જ્ઞાનવૃદ્ધ નહીં હોવા છતાં પણ ઉપશમાદિ ગુણોથી
યુક્તહોવાને કારણે અત્યન્ત મધુરસ્વભાવવાળો હોય છે, એવા પુરુષને આ પ્રકાર
માં ગણવી શકાય છે.

(૩) પક્વ છતાં અલ્પ માત્રામાં માધુર્ય યુક્ત ફળસમાન-કોઈ પુરુષ
એવો હોય છે કે જે વયોવૃદ્ધ અને જ્ઞાનવૃદ્ધ હોવા છતાં પણ અલ્પ પ્રમાણમાં
ઉપશમાદિ ગુણરૂપ માધુર્યવાળો હોય છે, એવા પુરુષને આ ત્રીજા પ્રકારમાં
મૂકી શકાય છે.

(૪) અતિશય માધુર્ય યુક્ત પક્વ ફળ સમાન પુરુષ-કોઈ પુરુષ એવો
હોય છે કે વયોવૃદ્ધ અને જ્ઞાનવૃદ્ધ (શ્રુત આદિમાં પારંગત) પણ હોય છે
અને ઉપશમાદિ પ્રધાન ગુણોથી વિભૂષિત હોવાને કારણે અત્યન્ત મધુર
સ્વભાવવાળો હોય છે. ॥ સૂ. ૧૬ ॥

પૂર્વે પચમધુરુક્ત, સ્ત્ર ચ સત્ય ગુણયોગાગ્રજાયત્વ ઇતિ સત્યં તદ્વિપરીતં ચ મૃષા તથા સ્ત્યાસત્યનિમિત્ત પ્રશિષાન ચ નિરુપયતિ—

મૂલમ્—ચતુર્વિદ્ધે સન્ધે પળ્લભે, ત જહા—કાઠઝ્જુયયા ૧, માસુઝ્જુયયા ૨, માવુઝ્જુયયા ૩, અવિસવાયનાજોગે ૪। ચતુર્વિદ્ધે મોસે પળ્લભે, ત જહા કાય અણુઝ્જુયયા ૧, માસ અણુઝ્જુયયા ૨, માવ અણુઝ્જુયયા ૩, વિસવાયનાજોગે ૪। ચતુર્વિદ્ધે પળિહાણે પળ્લભે, ત જહા—મળપળિહાણે ૧, વદ્પળિહાણે ૨, કાયપળિહાણે ૩, ઉવગરણપળિહાણે ૪। યવ જેરઙ્ગયાણ પચિદિયાણ જાવ વેમાળિયાણ ૨૪। ચતુર્વિદ્ધે સુપ્પળિહાણે પળ્લભે, ત જહા મળસુપ્પળિહાણે ૧, વદ્સુપ્પળિહાણે ૨, કાયસુપ્પળિહાણે ૩, ઉવગરણસુપ્પળિહાણે ૪। યવ સજયમણુસ્સાવિ ।

ચતુર્વિદ્ધે દુપ્પળિહાણે પળ્લભે, ત જહા મળાદુપ્પળિહાણે ૧, વદ્દુપ્પળિહાણે ૨, કાયદુપ્પળિહાણે ૩, ઉવગરણદુપ્પળિહાણે ૪। યવ જેરઙ્ગયાણ પચિદિયાણ જાવ વેમાળિયાણ ૨૪ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

છાયા—ચતુર્વિધ સત્યં પ્રથમમ્, તથા—કાયઋજુકતા ૧, માપ ઋજુકતા ૨, માવ ઋજુકતા ૩, અવિસવાદનાયોગઃ ૪। ચતુર્વિધ મૃષા પ્રથમમ્, તથા—કાયાનુજુકતા ૧, માપાનુજુકતા ૨, માવાનુજુકતા ૩, વિસવાદનાયોગઃ ૪।

“ચતુર્વિદ્ધે સન્ધે પળ્લભે” ઇત્યાદિ—૧૭

મુશર્થ—સત્ય ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હે, જેસે - કાયઋજુકતા ૧ માપઋજુકતા ૨ માવઋજુકતા ૩ ઓર અવિસવાદનાયોગ ૪। મૃષાવાદ ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હે, જેસે કાયાનુજુકતા ૧ માપાનુજુકતા ૨ માવાનુજુકતા ૩ ઓર વિસવાદ

“ચતુર્વિદ્ધે સન્ધે પળ્લભે” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાચ—સત્યના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહા છે—(૧) કાયઋજુકતા, (૨) માપઋજુકતા, (૩) માવઋજુકતા અને (૪) અવિસવાદનાયોગ.

મૃષાવાદના ચાર પ્રકાર કહા છે—(૧) કાયાનુજુકતા, (૨) માપાનુજુકતા, (૩) માવાનુજુકતા અને (૪) વિસવાદનાયોગ.

ચતુર્વિધં પ્રાણિધાનં પ્રજ્ઞસમ્, તથા-મનઃપ્રણિધાનં ૧, વાક્પ્રણિધાનં ૨, કાયપ્રણિધાનમ્ ૩, ઉપકરણપ્રણિધાનમ્ ૪। एवं नैरयिकाणां पञ्चेन्द्रियाणां यावद् वैमानिकानाम् २४। चतुर्विधं सुप्रणिधानं प्रज्ञसमम्, तथ्या-मनःसुप्रणिधानं १, वाक्सुप्रणिधानं २, कायसुप्रणिधानम् ३, उपकरणसुप्रणिधानम् ४। एवं संयतमनुष्याणामेव।

ચતુર્વિધં દુષ્પ્રણિધાન પ્રજ્ઞસમ્, તથા-મનોદુષ્પ્રણિધાનં ૧, વાગ્દુષ્પ્રણિધાનં ૨, કાયદુષ્પ્રણિધાનમ્ ૩, ઉપકરણદુષ્પ્રણિધાનમ્ एवं नैरयिकाणां पञ्चेन्द्रियाणां यावद् वैमानिकानाम् २४। (सू० १८)

ટીકા-“ ચડન્વિદે ” ઇત્યાદિ-ચતુર્વિધં=ચતુષ્પ્રકારં સત્યં પ્રજ્ઞસમ્, તથા-કાય-ઋજુકતા-ઋજુઃ-સરલઃ સ એવ ઋજુકસ્તસ્ય ભાવઃ ઋજુકતા, કાયસ્ય ઋજુકતા

નાયોગ ૪। પ્રણિધાન ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, જૈસે-મનઃ પ્રણિધાન ૧ વાક્ પ્રણિધાન-૨ કાય પ્રણિધાન-૩ ઓર ઉપકરણ પ્રણિધાન ૪। હસ પ્રણિધાન કા હોના નારક પંચેન્દ્રિય સે લેકર યાવત્ વૈમાનિક તૈક સમાન જાનના ચાહિયે। સુપ્રણિધાન ચાર પ્રકાર કા હોતા હૈ જૈસે-મનઃ સુપ્રણિધાન ૧ વાક્ સુપ્રણિધાન ૨ કાય સુપ્રણિધાન ૩ ઓર ઉપકરણ સુપ્રણિધાન ૪ યહ સુપ્રણિધાન સંયત મનુષ્યો કો હી હોતા હૈ। દુષ્પ્રણિધાન ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, જૈસે-મનોદુષ્પ્રણિધાન ૧ વાગ્દુષ્પ્રણિધાન ૨ કાયદુષ્પ્રણિધાન ૩ ઓર-ઉપકરણ દુષ્પ્રણિધાન ૪ યહ દુષ્પ્રણિધાન નૈરયિક પંચેન્દ્રિયસે લેકર યાવત્ વૈમાનિક તૈકકો હોતા હૈ।

સત્ય કાયઋજુકતા આદિ ભેદ સે ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ હસકા તાત્પર્ય એસા હૈ-ઋજુ નામ સરલતા હૈ ઋજુ હી ઋજુક હૈ ઋજુક

પ્રણિધાનના પણ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) મનઃપ્રણિધાન, (૨) વાક્પ્રણિધાન, (૩) કાયપ્રણિધાન અને (૪) ઉપકરણ પ્રણિધાન. આ પ્રણિધાનનો નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યંતના સમસ્ત જીવોમાં સદ્ભાવ સમજવો.

સુપ્રણિધાનના પણ નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પડે છે-(૧) મનઃસુપ્રણિધાન, (૨) વાક્ સુપ્રણિધાન, (૩) કાય સુપ્રણિધાન અને (૪) ઉપકરણ સુપ્રણિધાન. આ સુપ્રણિધાનનો સદ્ભાવ સંયત મનુષ્યોમાં જ હોય છે.

દુષ્પ્રણિધાનના પણ ચાર પ્રકાર છે-(૧) મનોદુષ્પ્રણિધાન, (૨) વાગ્દુષ્પ્રણિધાન, (૩) કાયદુષ્પ્રણિધાન અને (૪) ઉપકરણ દુષ્પ્રણિધાન. આ દુષ્પ્રણિધાનનો સદ્ભાવ નારક પંચેન્દ્રિયથી લઈને વૈમાનિક પર્યંતના જીવોમાં હોય છે.

વિશેષાર્થ-સત્યના ચાર ભેદોનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે-
‘ઋજુ’ એટલે સરલ. ઋજુને જ ઋજુક કહે છે, ઋજુકના ભાવને ઋજુકતા કહે છે, કાયની સાથે જ જેનો સંબંધ છે એવી ઋજુકતાનું નામ કાયઋજુકતા

કાયશ્ચજુક્તા=કુટિલપથાન્ કાયસ્ય વિમુક્તીકરણેન યથાર્થમાર્ગપ્રવૃત્તિરિતિ માત્રઃ
૧, માત્ર જુક્તા-સત્યમાપણપ્રવૃત્તિઃ ૨, માત્ર જુક્તા-મામ્પતે-પદાર્થમિ
ન્યતેઽનેનેતિ માત્રો મનસ્તસ્ય જુક્તા=સરલતા તથોક્તા=મનસઃ શુદ્ધપ્રવૃત્તિઃ
૩, તથા-અવિસવાદનાયોગઃ-અનામોગાદિના ગત્તાદિકમસાદિકં યદ્વદતિ સા
વિસવાદના, યદ્વા-કસ્મૈષિઞ્જનાપ ક્લિષ્ટિસ્વીકૃત્ય યમ્ ક્રિયતે સા વિસવાદના,
ન વિસવાદના અવિસવાદના, તસ્યા યોગઃ=સમ્બન્ધઃ અવિસવાદના યોગઃ ૪।

"ચઠધિહે મોસે" इत्यादि-सूपा चतुर्विधं प्रवृत्तिमित्यन्वयः, तद्यथा-

કા માત્ર જુક્તા છે કાય સે સમ્યક્ હોના કાયશ્ચજુક્તા છે કુટિલ
માર્ગ સે શરીર કો વિમુક્ત કરના ઓર હસે યથાર્થમાર્ગ મેં હે જાના
હસકા નામ-કાયશ્ચજુક્તા છે ૧। સત્ય માપણ મેં પ્રવૃત્તિ કા હોના યહ
માપજુક્તા છે-૨ પદાર્થો કા ચિન્તન જિસકે નિમિત્ત સે ક્રિયા જાતા
છે હસકા નામ માત્ર છે-મન છે હસકી જો જુક્તા સરલતા છે યહ
માત્રજુક્તા છે, યહ-માત્રજુક્તા મન કી શુદ્ધ પ્રવૃત્તિરૂપ હોતી છે
૩ તથા અનામોગ આદિ કારણ સે જો ગાય આદિ કો અહવાદિ કહ
દિયા જાય યહ વિસવાદના છે। અથવા-જિસ કિસી જન કે લિપે કુછ
કરના સ્વીકાર કરકે ખી જો નહીં ક્રિયા જાતા છે યહ વિસવાદના છે
એસી વિસવાદના કા નહીં હોના યહ અવિસવાદના છે હસ અવિસવાદના
કા યોગ સમ્યક્ અવિસવાદના ૪। ચાર પ્રકાર કા જો કાયાશ્ચજુક્તા
આદિ મેદ સે સૂપા કહી ગઈ છે, હસકા તાત્પર્ય એસા છે-શરીર કી જો

છે ' કુટિલ માર્ગથી શરીરને વિમુક્ત કરવું અને તેને યથાર્થ માર્ગે લઈ
જવું તેનું નામ કાયશ્ચજુક્તા છે " । ૧ ।

સત્ય ભાષામાં પ્રવૃત્તિ થવું-સત્ય બોલવું તેનું નામ માપજુક્તા છે । ૨ ।

પદાર્થોનું ચિન્તન જેની મદદથી હરવામાં આવે છે તેનું નામ માત્ર
(મન) છે તે માત્ર અથવા મનની જો સરલતા છે તેને માત્રજુક્તા કહે છે,
તે માત્રજુક્તા મનની શુદ્ધ પ્રવૃત્તિરૂપ હોય છે । ૩ ।

અનામોગ (અજ્ઞાન) આદિ કારણોને લીધે ગાય આદિને અત્યાદિ કહી
રેવામાં આવે-આ પ્રકારની વિસવાદિતાનું નામ વિસવાદના છે અથવા કેટલું
કાંઈ કહી આપવાનું સ્વીકારીને, તે કાંઈ ન કરી આપવું તેનું નામ વિસવાદના
છે આ પ્રકારની વિસવાદનાનો અભાવ હોવો, તેનું નામ અવિસવાદના છે
આ અવિસવાદનાના યોગ (સમ્બન્ધ) ને અવિસવાદના યોગ કહે છે । ૪ ।

કાયાનૃજકતા—કાયરય-શરીરસ્ય અનૃજકતા=અસરજતેતિ કાયાનૃજકતા=શરીર-
સ્યાયથાવસ્થિતપ્રવૃત્તિઃ ૧, આપાઽનૃજકતા—ત્રાયોઽયથાર્થબોધનાર્થા પ્રવૃત્તિઃ ૨,
ભાવાનૃજકતા—મનમોઽયથાર્થપદાર્થચિન્તનપ્રવર્તના ૩, વિમત્વાદનાયોગઃ—પ્રતિ-
જ્ઞાતપદાર્થાઽકરણસમ્બન્ધઃ, કરમૈચિત્ત્વિચ્છિત્તપ્રતિજ્ઞાય ‘મયેદં ન પ્રતિજ્ઞાત’—
મિત્યાકારકવિસંવાદનાયોગઃ ૪।

“ચતુર્વિદ્ધે પળિહાણે” ઇત્યાદિ—પ્રણિધાન—પ્રણિધિઃ પ્રયોગ ઇત્યર્થઃ, તન્વ-
તુર્વિધં પ્રજ્ઞપ્ત્વ, તદ્વથા—મનઃપ્રણિયાન—મનસઃ=ચિત્તસ્ય પ્રણિધાનમ્=આર્ત—રૌદ્ર—

અનૃજકતા અસરતા છે. દહ કાયાઽનૃજકતા છે. હસમેં શરીર કી અય-
થાવસ્થિતરૂપ સે પ્રવૃત્તિ રહતી છે—૧ વચન કી અયથાર્થ કો બોધન કરને
મેં જો પ્રવૃત્તિ હોતી છે. વહ આપાઽનૃજકતા છે—૨ મન કી પ્રવૃત્તિ અયથાર્થ
પદાર્થ કે ચિન્તન કરને મેં જો હોતી તો વહ ભાવાઽનૃજકતા છે—૩ તથા
પ્રતિજ્ઞાત અર્થ કા નહીં કરના. વહ વિસંવાદનાયોગ છે “મૈ તુમ્હારા
અમુક કાર્ય કરૂંગા” એવી પ્રતિજ્ઞા કરકે ખી ફિર ઉસસે એસા
કહના કિ મૈને એસા કરના સ્વીકાર નહીં કિયા (થા) છે. ઇત્યાકારક
યહ વિસંવાદનાયોગ હોતા છે ।

“ચતુર્વિદ્ધે પળિહાણે” ઇત્યાદિ પ્રણિધાન શબ્દ કા અર્થ લગાના,
ઉસ વિષય મેં ઉસે જોડના । યહ પ્રણિધાન ચાર પ્રકાર કા જો કહા
ગયા છે. ઉસકા અભિપ્રાય એસો છે—આર્ત, રૌદ્ર, ધર્મ્ય, ઔર શુન્કલ ચે

હવે મૃધાવાદના ચાર ભેદોનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવે છે—

(૧) કાયાનૃજકતા—શરીરની જે અનૃજકતા (અસરતા) હોય છે તેને કાયા
નૃજકતા કહે છે. કુટિલ કાર્યોમાં પ્રવૃત્ત થવું અને શરીરથી અયથાર્થ પ્રવૃત્તિ
કરવી તેનું નામ કાયાનૃજકતા છે. (૨) અસત્ય વચનને ભાષા અનૃજકતા કહે
છે—વચનની અયથાર્થનું બોધન કરવાની જે પ્રવૃત્તિ થાય છે તેનું નામ ભાષા
અનૃજકતા છે. (૩) અયથાર્થ પદાર્થનું ચિન્તન કરવા રૂપ મનની જે પ્રવૃત્તિ
થાય છે તેને ભાષા અનૃજકતા કહે છે (૪) પ્રતિજ્ઞાત અર્થનું પાલન ન કરવું
તેનું નામ વિસંવાદનાયોગ છે જેમકે “હું તમારૂં આ કાર્ય કરી દઈશ” આ
પ્રકારનું વચન આપ્યા પછી તે વચનનું પાલન ન કરવું અને “મેં એવી વાત
કહી કરી જ નથી,” આ પ્રમાણે કહેવું, તે વિસંવાદનાયોગ રૂપ ગણાય છે.

હવે પ્રણિધાનના ચાર પ્રકારોનું નિરૂપણ કરવામા આવે છે—

“ચતુર્વિદ્ધે પળિહાણે” ઇત્યાદિ—પ્રણિધાન એટલે લગાડવું—પરોવવું, અથવા
અમુક વિષયમાં જોડવું તે પ્રણિધાનના ચાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે કહ્યા છે—

ધર્મ્ય-શુન્દરરૂપતયા વ્યવિધ્ બ્યાપ્તીકરણમ્ ૧, વાક્યપ્રણિધાનમ્=વાચાઃ-વચનસ્ય પ્રણિધાનમ્-આત્મીયરૂપતયા સંભાષણમ્ ૨, કાયપ્રણિધાન-શરીરસ્ય કવિવાર્તા વિરૂપતયા સંલગ્નીકરણમ્ ૩, ઉપકરણપ્રણિધાનમ્-ઉપકરણસ્ય સામાન્યવિશિષ્ટ વસ્તુપ્રાપ્તપ્રવૃત્તેઃ પ્રણિધાન-મ્યાપરણમ્ ૪।

“ एवं ” इति-अनेन प्रकारेणेत्यथा, अर्थाद् यथा सामान्यतः सर्वसाधारणं प्रणिधानमुक्तं तथा, ‘ जेरइयाण ’ इत्यादि-नैरयिकाणां पञ्चेन्द्रियाणां चतुर्विंशतिदृष्टकोक्तानां मध्ये ये पञ्चेन्द्रियाः सन्ति मनुष्यतिर्यङ्मस्तेषां मनआदिप्रणिधानं बोध्यम् । तस् किंपर्यन्तानामिति निर्दिशति-‘ वाच वैमाणियाण ’ इति-यावद् वैमानिकानाम्-वैमानिकपर्यन्तानाम्, एकेन्द्रियविकलेन्द्रियासङ्घेन्द्रियाणां तु न मनःप्रवृत्तिप्रणिधानं भवितुमिति, तेषां मनोवाक्योपकरणप्रणिधानासम्भवात् ।

જો ચાર ધ્યાનહૈં इनमेंसे किसी एक ध्यान रूपमें मनको व्यापृत करना (लगाना) यह मनःप्रणिधान है आर्त आदिरूप से सभाषण करना यह वाक्यप्रणिधान है शरीर को आत्मीयरूप से किसी काम में लगाना यह कायप्रणिधान है सामान्य या विशिष्ट वस्तु प्राप्त आदि का जो व्यापारित करना लगाना है वह उपकरण प्रणिधान है, यह प्रणिधान सामान्यरूप से समस्त जीवों में होता है । परन्तु मनः प्रणिधान आदि तीन प्रणिधान एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय और-असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों को नहीं होते हैं । क्यों कि-मन वचन और-उपकरणों की वहाँ असम्भ-वता है नैरयिकों में पञ्चेन्द्रियों में यावत् वैमानिकों में ये सब प्रणिधान

(૧) મનપ્રણિધાન-આર્ત, શીઠ, ધર્મ અને શુદ્ધ, આ બે ચાર ધ્યાન છે તેમાંથી કોઈ પણ એક ધ્યાનમાં મનને લગાડવું (એકાગ્ર કરવું) તેનું નામ મનપ્રણિધાન છે. (૨) આર્ત આદિ રૂપે સભાષણ કરવું તેનું નામ વાક્ય પ્રણિધાન છે. (૩) શરીરને આત્મીય રૂપે કોઈ કામમાં પ્રવૃત્ત કરવું તેનું નામ કાયપ્રણિધાન છે. (૪) સામાન્ય અથવા વિશિષ્ટ વસ્તુ આદિ ઉપકરણના પ્રણિધાનનું નામ ઉપકરણ પ્રણિધાન છે. કાયપ્રણિધાનનો સદ્ભાવ સામાન્ય રૂપે સમસ્ત જીવોમાં હોય છે. પરન્તુ મનપ્રણિધાન આદિ બાકીના ત્રણ પ્રણિધાનનો સદ્ભાવ એકેન્દ્રિય, વિકલેન્દ્રિય અને અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોમાં હોતો નથી, કારણ કે મન, વચન અને ઉપકરણોની તે જીવોમાં સંભાવના હોતી નથી. નારકોમાં, સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોમાં અને વૈમાનિકો પચન્તના જીવોમાં આ ચાર પ્રણિધાનોનો સદ્ભાવ હોય છે.

“ ચતુર્વિધં સુપ્રણિધાન ”—મિત્યાદિ—સુપ્રણિધાનં=શોભનપ્રયોગઃ, ચતુર્વિધં પ્રજ્ઞસમ્, તદ્યથા—મનઃસુપ્રણિધાનં—મનસઃ સુષ્ટુ પ્રયોગઃ=ચિત્તસ્ય ધર્મધ્યાનાદિના સુચારુવ્યાપરણમ્ । એવ વાક્યાયોપકરણસુપ્રણિધાનાનિ વોધ્યાનિ ।૪।

“ એવં સંજયમણુસ્તાણવિ ” ઇતિ—એવમ્=ઈદ્દશં સુપ્રણિધાનચતુષ્ટયમ્, સંયત-મનુષ્યાણામેવ—સંયતાશ્ચ તે મનુષ્યાઃ સંયતમનુષ્યાસ્તેપામેવ=ધૃતસંયમમનુષ્યાણામેવ મનઃપ્રવૃત્તિસુપ્રણિધાનં ભવતિ નાન્યેષામિત્યર્થઃ, સુપ્રણિધાનસ્ય ચારિત્રપરિણતિ-સ્વરૂપત્વાત્ ।

“ ચઙવિવહે દુષ્પ્રણિહાણે ” ઇત્યાદિ—દુષ્પ્રણિધાનમ્=અશોભનપ્રયોગઃ, તત્ત્વ-હોતે હૈં । “ ચતુર્વિધ સુપ્રણિધાનમ્ ” ઇત્યાદિ શોભન પ્રયોગ કા નામ સુપ્રણિધાન હૈં યહ સુપ્રણિધાનકા મનઃ સુપ્રણિધાન આદિ ચાર ભેદ કહા ગયા હૈં ઉસકા તાત્પર્ય એસા હૈં કિ—ચિત્ત કો ધર્મધ્યાન આદિ દ્વારા સુચારુરૂપ સે વ્યાપૃત કરના લગાના, યહ મન કા સુપ્રણિધાન હૈં ઇસી પ્રકાર વાક્ સુપ્રણિધાન કાય સુપ્રણિધાન ઓર ઉપકરણ સુપ્રણિધાન કે સમ્બન્ધ મેં ભી જાનના ચાહિયે । “ એવં સંજયમણુસ્તાણવિ—” યહ સુપ્રણિધાન ચતુષ્ટય સંયત્તમનુષ્યોં કો (સંયતશીલકો) હી હોતાહૈં, અન્ય મનુષ્યોં કો નહીં । ક્યોંકિ—સુપ્રણિધાન ચારિત્ર પરિણતિરૂપ હોતા હૈં ।

“ ચઙવિવહે દુષ્પ્રણિહાણે—” ઇત્યાદિ અશોભન પ્રયોગ કા નામ દુષ્પ્રણિધાન હૈં યહ—મનોદુષ્પ્રણિધાન આદિ ભેદોં સે જો ચાર પ્રકાર કહા ગયા હૈં ઉસકા તાત્પર્ય એસા હૈં કિ ચિત્ત કો આર્ત રોદ્ર આદિરૂપ સે પરિણત કરના ઇસકા નામ—મનોદુષ્પ્રણિધાન હૈં, ઇસી પ્રકાર કા કથન

“ ચતુર્વિધ સુપ્રણિધાનમ્ ” ઇત્યાદિ—

શોભન પ્રયોગનું નામ સુપ્રણિધાન છે, તે સુપ્રણિધાનના પણ મનઃસુપ્રણિધાન આદિ ચાર ભેદ કહ્યા છે—(૧) મનઃસુપ્રણિધાન—ચિત્તને ધર્મધ્યાન આદિ શુભ પ્રવૃત્તિમાં લીન કરવું તેનું નામ મન-સુપ્રણિધાન છે. એ જ પ્રમાણે વાક્સુપ્રણિધાન, કાયસુપ્રણિધાન અને ઉપકરણ સુપ્રણિધાનના અર્થ પણ જાતે જ સમજી શકાય એવા હોવાથી અહીં તેમનું અધિક સ્પષ્ટીકરણ કર્યું નથી. “ એવં સંજયમણુસ્તા વિ ” આ ચાર સુપ્રણિધાનનો સદ્ભાવ સંયત (સયમ-શીલ) મનુષ્યોમાં જ હોય છે—અન્ય અસંયત મનુષ્યોમાં તેમનો સદ્ભાવ હોતો નથી, કારણ કે સુપ્રણિધાન ચારિત્ર પરિણતિ રૂપ હોય છે.

“ ચઙવિવહે દુષ્પ્રણિહાણે ” ઇત્યાદિ અશોભન પ્રયોગનું નામ દુષ્પ્રણિધાન છે. તેના મનોદુષ્પ્રણિધાન આદિ ચાર ભેદ કહ્યા છે.

તુર્વિધં પ્રવ્રણ્ણમ્, તથા-મનોદુષ્પ્રણિધાનં=ચિત્તસ્યાઽઽચરૌદ્રાદિક્ષતયા પ્રયોગઃ
૧, એવ શાકાઓપકરણદુષ્પ્રણિધાનાન્યપિ વિશેષાનિ ડા

“ એવ ”-મિતિ, એવમ્=ઇદમ્ મનઃપ્રવૃત્તિદુષ્પ્રણિધાનં નૈરયિકાણાં પચ્ચેન્દ્રિ
યાણા-સન્નિમનુષ્ય વિરથા, યાપદ્ વૈમાનિકાનાં=વૈમાનિકપર્યન્તાનાં ભવતિ, ન ત્વેકે
ન્દ્રિયવિક્ષેત્રેન્દ્રિયાસંપ્રિપચ્ચેન્દ્રિયાણામ્, તેષાં મન પ્રવૃત્તિ પ્રણિધાનાસમ્ભવાત્ ॥ ૧૭ ॥

પુરુષાધિકારાદેવાન્યપ્રકારાણિ ધનુર્દશ્વપુરુષમૂયાણ્યાદ-

મૂલમ્-ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, ત જહા-આવાયમહપ્
ળામમેગે સવાસમહપ્ ૧, સવાસમહપ્ ળામમેગે ળો આવાયમ
હપ્ ૨, પગે આવાયમહપ્વિ સવાસમહપ્વિ ૩, પગે ળો આવા
યમહપ્ ળો વા સવાસમહપ્ ૪ ૧ ।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, ત જહા-અપ્પળો ળામમેગે
વજ્જ પાસહ્ ળો પરસ્સ ૧, પરસ્સ ળામમેગે વજ્જ પાસહ્ ળો
અપ્પળો ૨, અપ્પળો ળામમેગે વજ્જ પાસહ્ પરસ્સવિ ૩, અપ્પળો
ળામમેગે વજ્જ ળો પાસહ્ ળો પરસ્સવિ ૪ ૨ ।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, ત જહા અપ્પળો ળામમેગે
વજ્જ ઉદારેહ્ ળો પરસ્સ ૪ ૩ ।

ધાર્મદુષ્પ્રણિધાન-ઔર કાયદુષ્પ્રણિધાન ઠ સન્યષ મેં બીજાનના આશિષે,
એસા યહ મનોદુષ્પ્રણિધાન આદિ નૈરયિકોં મેં પચ્ચેન્દ્રિય મનુષ્ય તિર્યચોં
મેં યાવત્ વૈમાનિકોં મેં હોતો હે । પચ્ચેન્દ્રિય વિક્ષેત્રેન્દ્રિય ઔર અસહી
પચ્ચેન્દ્રિયોં મેં મનોદુષ્પ્રણિધાન વચનદુષ્પ્રણિધાન આદિ નહીં હોતે । પર્યો
કિ-હમમે હનકા ઇમાષ કહા ગયા હે ॥ સૂ ૧૭ ॥

ચિત્તને આત, ઔદ્ર આદિ રૂપે પરિવૃત કરવુ તેનુ નામ મનોદુષ્પ્રણિધાન
છે એ જ પ્રકારનુ કથન કાયદુષ્પ્રણિધાન, વાહુદુષ્પ્રણિધાન અને ઉપકરણ દુષ્પ્ર
ણિધાનના વિવચમાં પણ જમલ છેવુ આ દુષ્પ્રણિધાનોનો સહભાવ નારકોમાં,
પચ્ચેન્દ્રિય મનુષ્ય અને તિર્યચોમાં તથા વૈમાનિક પણ ત્યાં હવોમાં હોય
છે પરંતુ એકેન્દ્રિય વિક્ષેત્રેન્દ્રિય અને અસહી પચ્ચેન્દ્રિય હવોમાં મનોદુષ્પ્ર
ણિધાન, વચનદુષ્પ્રણિધાન આદિનો સહભાવ હોતો નથી, કારણ કે તે હવોમાં
મન, વચન અને ઉપકરણનો અભાવ થયો છે ॥ સૂ ૧૭ ॥

અપ્પળો ગામમેગે વજ્જં ઉવસામેઇ ણો પરસ્સં ૪૧ ૪૧

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લતા, તં જહા--અબ્બુદ્દેઇ ગામમેગે

ણો અબ્બુદ્દાવેઇ ૪૧ ૫૧

एवं वंदइ गाममेगे णो वंदावेइ ४१ ६१ एवं सक्कारेइ ७,
सम्माणेइ ८, पूएइ ९, वाएइ १०, पुच्छइ ११, पडिपुच्छइ १२,
वागरेइ १३, सुत्तधरे गाममेगे णो अत्थधरे १, अत्थधरे गाम-
मेगे णो सुत्तधरे २, सुत्तधरे गाममेगे अत्थधरे वि ३, णो
सुत्तधरे गाममेगे णो अत्थधरे वि ४। १४। ॥ सू० १८॥

જાયા—ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથા—આપાતભદ્રકો નામૈકઃ
સંવાસભદ્રકઃ ૧, સંવાસભદ્રકો નામૈકો નો આપાતભદ્રકઃ ૨, એક આપાતભદ્રકો-
ઽપિ સંવાસભદ્રકોઽપિ ૩, એકો નો આપાતભદ્રકો નો વા સંવાસભદ્રકઃ ૪। ૧।

ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથા—આત્મનો નામૈકોઽવધં પશ્યતિ નો
પરસ્ય ૧, પરસ્ય નામૈકોઽવધં પશ્યતિ નો આત્મનઃ ૨, આત્મનો નામૈકોઽવધં
પશ્યતિ પરસ્યાપિ ૩, આત્મનો નામૈકોઽવધં નો પશ્યતિ નો પરસ્યાપિ ૪। ૨।

પુરુષ અધિકાર કો લેકર હી અવ સૂત્રકાર અન્ય પ્રકાર સે ૧૪ પુરુષ
સૂત્રોં કા કથન કરતે હૈ—“ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લતા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—પુરુષજાત ચાર કહે ગયેહૈજેસે-આપાતભદ્રક સંવાસભદ્રક ૧ સંવા-
સભદ્રક નો આપાતભદ્રક ૨ આપાતભદ્રકમી સંવાસભદ્રકમી ૩ ઓર-
નો આપાતભદ્રક નો સંવાસભદ્રક ૪। (પ્રથમ) ૧ ચાર પુરુષજાત કહે
ગયે હૈ, જો અપના અવચ-પાપ દેખતા હૈ, પર કા નહીં-૧ જો દૂસરોં કા
અવચ દેખતા હૈ અપના નહીં-૨ જો અપના મી દૂસરોં કા મી અવચ

પુરુષ અધિકાર ચાલુ છે, તેથી સૂત્રકાર હવે પુરુષ વિષયક ૧૪ સૂત્રોતું
નિરૂપણ કરે છે—“ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લતા ” ઇત્યાદિ—

પુરુષોના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) આપાત ભદ્રક-નો સંવાસ ભદ્રક,
(૨) સંવાસ ભદ્રક-નો આપાત ભદ્રક, (૩) આપાત ભદ્રક-સંવાસ ભદ્રક અને
(૪) નો આપાત ભદ્રક-નો સવાસ ભદ્રક । ૧ ।

નીચે પ્રમાણે પશુ ચાર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે—(૧) પોતાના અવચ
(પાપ) ને જોનાર-અન્યના પાપને નહીં જોનાર, (૨) અન્યનું પાપ જોનાર,
પોતાનું નહીં જોનાર, (૩) પોતાનું પાપ પશુ જોનાર અને અન્યનું પાપ પશુ

સૂત્રધરો નામૈકો નો અર્થધરઃ ૧, અર્થધરો નામૈકો નો સૂત્રધરઃ ૨, સૂત્રધરો નામૈકઃ અર્થધરોઽપિ ૩, નો સૂત્રધરો નામૈકઃ નો અર્થધરોઽપિ ૪। ૧૪। સૂ૦ ૧૮।

ટીકા—“ ચત્તારિ પુરિસજાયા ” ઇત્યાદિ—પુરુષજાતાનિ=પુરુષપ્રકારાઃ, ચત્તારિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા—આપાતભદ્રકઃ=આપતનમાપાતઃ=આકસ્મિકસજ્જમઃ, તત્ર ભદ્રકઃ=કલ્યાણકરો દર્શનાઽઽલાપાદિના સુખસમ્પાદકત્વાત્, “ નામે ”—તિ સર્વત્ર વાક્યાલક્ષારે, એકઃ—કથિતપુરુષો ભવતિ, કિન્તુ નો સંવાસભદ્રકઃ—સંવાસઃ=સહ-

જાનના ચાહિયે ૧-૨-૩-૪। ૧ એસે હી “ વાચયતિ ” કે સમ્બન્ધ મે ભી જાનના ચાહિયે ૧-૨-૩-૪ ૧૦ પૃચ્છતિ ૧૧ પરિપૃચ્છતિ-૧૨ વ્યાકરોતિ इनके विषय में भी इसी उपर्युक्त प्रकार से जानना चाहिये।

ચાર પુરુષજાત કહે ગયે હૈં, જૈસે-કોઈ એક એસા હોતા હૈ જો સૂત્રધર હોતા હૈ અર્થધર નહીં હોતા હૈ—૧ દૂસરા કોઈ એક એસા હોતા હૈ કિ-અર્થધર હોતા હૈ સૂત્રધર નહીં—૨ તૈસરા વહ જો સૂત્રધર ભી હોતા હૈ ઓર અર્થધર ભી ૩ ચૌથા વહ હૈ જો સૂત્રધર ભી નહીં હોતા હૈ ઓર અર્થધર ભી નહીં ૪।

इन सब का स्पष्टीकरण इस प्रकार है — प्रथम सूत्र में जो पुरुषजात पुरुषप्रकार चार कहे गये हैं उनका तात्पर्य ऐसा है कोई एक पुरुष ऐसा होता है जो “आपातभद्रक-” होता है आकस्मिकसज्जम में दर्शन आलाप आदि द्वारा सुख सम्पादक होने से

સન્માનને અનુલક્ષીને પણ એવાં જ ચાર પ્રકાર સમજવા । ૮ ।

પૂલસકારને અનુલક્ષીને પણ એવા જ ચાર પ્રકાર સમજવા । ૯ ।

“ વાચયતિ ” ના સંબંધમાં અથવા વાચનાના સંબંધને અનુલક્ષીને પણ પુરુષોના એવા જ ચાર પ્રકાર સમજવા. । ૧૦ ।

। ૧૧ । પૃચ્છા અને । ૧૨ । પરિપૃચ્છાને અનુલક્ષીને પણ ચાર-ચાર પ્રકાર સમજવા. । ૧૩ । નિષ્ણંયને અનુલક્ષીને પણ ચાર પ્રકારના પુરુષો સમજ લેવા. । ૧૪ । પુરુષોના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે--(૧) કોઈ પુરુષ સૂત્રધર હોય છે પણ અર્થધર હોતો નથી, (૨) કોઈ પુરુષ અર્થધર હોય છે, પણ સૂત્રધર હોતો નથી, (૩) કોઈ સૂત્રધર પણ હોય છે અને અર્થધર પણ હોય છે. (૪) કોઈ સૂત્રધર પણ નથી હોતો અને અર્થધર પણ નથી હોતો.

વિશેષાર્થ—પહેલા સૂત્રમાં પુરુષોના જે ચાર પ્રકાર બતાવ્યા છે, તેનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે--(૧) “ આપાત ભદ્રક-નો સંવાસ ભદ્રક ” આકસ્મિક સંગમમાં દર્શન, આલાપ આદિ દ્વારા જે પુરુષ સુખદાયક અથવા કલ્યાણકર હોય છે તેને આપાત ભદ્રક પુરુષ કહે છે. કોઈક પુરુષ આ પ્રમાણે

વાસસ્ત્ર મદ્રકાઃ—શ્વેતપાણકારી ન મવતિ, ક્રૂરત્વાત્ સસારકારણનિયોજકત્વાદા ૧,

“ સવાસમરણ ” इत्यादि—संवासमद्रक—एकः—कथित्पुरुषो भवति सवस-
तामस्पन्तोपकारित्वात्, किन्तु आपातमद्रको न भवति, अनात्तापरूपाऽऽत्तापा-
दिना सुखकरो न भवतीति भावः २, एवमन्यमद्रक्यमपि त्रिवेपम् ४। १।

“ चचारि ” इत्यादि—पुनश्चत्वारि पुरुषजातानि प्रप्टानि, तद्यथा—एकः=
कथित्पुरुषः, आत्मन—स्वस्य स्वसम्बन्धीत्यर्थः, प्राकृतत्वाद् ‘ वज्र ’—मित्यस्य
कृत्वाऽकारस्य “ अवच ”—भित्तिच्छाया भवितुमर्हति, अवच—पार्थ कर्म पश्यति,
यद्वा—वर्ज्य—वर्जितुं याम्यं वर्ज्यं—सर्वस्याज्यं कर्म पश्यति=दशर्हानसामान्यार्थत्वा

કલ્યાણ કરતા હોતા હૈ, કિન્તુ—નો “ સવાસમદ્રક ” સવાસમદ્રક
નહીં હોતા હૈ, સવાસ મે સહવાસ મેં મદ્રક કલ્યાણકારી નહીં હોતા
હૈ । ક્યોં કિ પેસા વહ પુરુષ (પ્રાયઃ) ક્રૂર હોતા હૈ—ઝોર સસાર કારણ
મેં નિયોજક હોતા હૈ—૧ યહાં સર્વત્ર “ નામ ” શાક્યાલ્ક્રુતર મે હૈ ।
૧ “ સવાસમરણ ” इत्यादि कोई एक दृमरा पुरुष ऐसा होता है जो
सवास में तो मद्रक होता है पर वह आपातमद्रक नहीं होता है,
आलाप आदि द्वारा सुख सम्पादक नहीं होने से कल्याण कर नहीं
होता है—२ ऐसे ही अन्य दो मद्रकों के सम्बन्ध में भी समझ लेना चाहिये
४। “ चचारि ” इत्यादि इस द्वितीय सूत्र में जो चार पुरुष प्रकार
कहे गये हैं उनका तात्पर्य इस प्रकार है कोई एक पुरुष ऐसा होता है
जो स्वसम्बन्धी पापकर्म (अवच) को, अथवा—सर्वस्याज्य कर्म को, या
—हिंसो अचूत आदि पापकर्म को देखता है जानता है । परन्तु—पर के
प्रति उदासीन होने से उसके अवच को नहीं देखता है नहीं जानता

આપાત ભદ્રક તો હોય છે પરન્તુ સવાસ (સહવાસ) ભદ્રક હોતો નથી
એટલે કે તેનો સહવાસ સુખદાયક કે કલ્યાણકારક નિવડતો નથી, કારણ કે
એવો પુરુષ સામાન્યતા ક્રૂર હોય છે અને સસાર કારણમાં નિયોજક હોય છે
(૨) ‘ સવાસ ભદ્રક—નો આપાત ભદ્રક ’ કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે
સવાસ (સહવાસ) માં તો ભદ્રક (સુખદાયક) હોય છે પણ આલાપ આદિ
દ્વારા સુખસંપાદક નહીં હોવાથી કલ્યાણકારક હોતો નથી બાકીના બે પુરુષોનું
કથન પણ આ કથનને આધારે સરળતાથી સમજી શકાય એવું છે

બીજા સૂત્રમાં પુરુષોના જે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે તેનું હવે સ્પષ્ટીકરણ
કરવામાં આવે છે—(૧) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના અવગને
પાપક્રમને અથવા ત્યાગ્યક્રમને અવગા દિશા, અચત્ય આદિ પાપક્રમોને જેને

જ્ઞાનાતીત્યર્થઃ, કિન્તુ પરસ્ય=અન્યસ્યાઽવ્યં વર્જ્યં વા નો પશ્યતિ, યદ્વા-વજ્ર-મિતિચ્છાયા, તદર્થશ્ચ વજ્રવદ્ વજ્રં વા ગુરુત્વાદ્ હિંસાઽનૃતાદિ પાપં કર્મેતિ ભવતિ, તત્ કશ્ચિત્પુરુષઆત્મનઃ-સ્વસમ્બન્ધિ કલદ્વાઽઽદૌ પશ્ચાત્તાપયુત્તત્વાત્ પશ્યતિ, નો

હૈ । યહાં “વજ્જ” પદ મેં પ્રાકૃત હોને કે કારણ “અ” કા લોપ હો ગયા હૈ ફસલિયે ફસકી છાયા સંસ્કૃત મેં “અવચ” હો સકતી હૈ, અવચનામ પાપકર્મ કા હૈ । યદ્વા-“વજ્જ” કી સંસ્કૃતચ્છાયા વર્જ્ય ભી હો સકતી હૈ, અતઃ ફસ પક્ષ મેં “વર્જિતું યોગ્યં વર્જ્ય” ફસ નિરુક્તિ કે અનુસાર જો સર્વત્યાજ્ય હોતા હૈ વહ વર્જ્ય હૈ, વર્જ્ય કર્મ હૈ । અથવા “વજ્જ” કી સંસ્કૃતચ્છાયા “વજ્ર” ભી હોતી હૈ ફસકા અર્થ ઁસા હોતા હૈ કિ અનૃત આદિ પાપ ગુરુ હોને સે વજ્ર જૈસે હોતે હૈં । “પશ્યતિ” ક્રિયાપદ હૈ ફસકા ભી અર્થ ઁસા હો જાતા હૈ કિ-કોઈ ઁક પુરુષ ઁસા હોતા હૈ જો સ્વસમ્બન્ધી અવચ કો પાપકર્મ કો હી દેલતા હૈ પરસમ્બન્ધી પાપકર્મ કો નહીં દેલતા હૈ । ક્યોં કિ-વહ ઁસકે પ્રતિ ઁદાસીન હોના હૈ, તથા જવ “વર્જ્ય” સર્વત્યાજ્ય કર્મ ફસ પક્ષ મેં અર્થ ક્રિયા જાતા હૈ તવ કોઈ ઁક પુરુષ ઁસા હોતા હૈ જો અપને સમ્બન્ધી કર્મ કો જાનતા હૈ યહાં દશ ધાતુકા અર્થ જ્ઞાનાર્થ પરક લિયા ગયા હૈ પરકે વર્જ્ય કર્મકો

છે (જાણુ છે), પરંતુ અન્યના પ્રત્યે ઉદાસીન વૃત્તિવાળો હોવાથી અન્યના પાપકર્મેની દેખતો (જાણતો) નથી અહીં “વજ્જ” પ્રાકૃત પદ છે. તેમાં ‘અ’ નો લોપ થઈ ગયો હોવાથી તેની સંસ્કૃત છાયા ‘અવચ’ થઈ શકે છે આ અવચ પદ પાપકર્મ માટે વપરાયું છે. અથવા ‘વજ્જ’ આ પદની સંસ્કૃત છાયા ‘વર્જ્ય’ પણ થઈ શકે છે આ દષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે તો “વર્જિતું યોગ્ય વર્જ્ય” આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર જે સર્વત્યાજ્ય હોય છે તેને વર્જ્ય-વર્જ્યકર્મ કહે છે.

અથવા “વજ્જ” આ પદની સંસ્કૃત છાયા “વજ્ર” પણ થાય છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-અનૃત આદિ પાપ ગુરુ હોવાથી વજ્ર સમાન હોય છે. “પશ્યતિ” એટલે દેખે છે કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના અવધને-પાપકર્મને જ દેખે છે, પરંતુ અન્યના પાપકર્મને દેખતો નથી-અન્યના પાપકર્મ પ્રત્યે ઉદાસીન રહે છે.

ત્યારે “વર્જ્ય” એટલે સર્વત્યાજ્ય કર્મ, આ દષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે-“કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના સર્વત્યાજ્ય કર્મને જાણુ છે, પણ અન્યના સર્વત્યાજ્ય કર્મને જાણતો નથી. અહીં “દશ” ધાતુનો અર્થ ‘જાણુ’ લીધો છે, કારણ કે

પરસ્ય=મન્યસમ્બન્ધિ સન્ન પશ્યતિ પર પ્રત્યુદાસીનત્વાત્ ૧. પૃષ્ઠાન્કશ્ચિત્તુ પરસ્યા
 વ્યં વર્ણ્યં વચ્ચવ્ વજ્ર વા કર્મ પશ્યતિ, નો આત્મનઃ, સામિમાનત્વાત્ ૩તિ
 દ્વિતીયો મજ્ઞઃ ૨। एवं क्षेपमङ्गद्वयमपि विज्ञेयम् ॥૪ ૨।

“વચ્ચારિ” ઇત્યાદિ—પુનઃ પુરુષજાતાનિ વચ્ચારિ મજ્ઞસાનિ, તથા—પૃષ્ઠા
 કશ્ચિત્પુરુષા, આત્મનઃ—સ્વસમ્બન્ધિ અવચ પાપં કર્મ, તદીરયતિ=અનુવીર્ણં કર્મ
 છોષતપશ્વર્યાદિમિશ્રદયાત્તથિકાયાં મથેશ્ચયથિ, કિન્તુ પરસ્ય=અન્યસમ્બન્ધિ અવચ
 નો તદીરયતિ, પરં પ્રત્યુદાસીનત્વાત્ ૧, અન્યવ્ મજ્ઞપ્રથમં યથા—“પરસ્ય ગામમેમે
 નહીં જાનતાહૈ । ઇતી પ્રકાર કોઈ પુરુષ એસા હોતાહૈ જો સ્વસમ્બન્ધી વજ્ર
 (વર્જનીય કર્મ) કો શુરુ હોનેસે હિંસાદિક પાપકર્મકો દેખતા હૈ, વર્ણો કિ
 વજ્ર ઉસકે પ્રતિ ઉદાસીન હોતા હૈ વજ્ર એસા પ્રથમ મજ્ઞ હૈ—૧ ત્રિતીય
 મજ્ઞ ઇસ પ્રકાર સે હૈ કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો પરકે અવચ કો,
 યા—વર્ણ્ય કો, અથવા—વજ્ર એસા વજ્ર કર્મ કો દેખતા હૈ ઓર—અપને
 અવચ કો, યા—વર્ણ્ય કો, યા—વચ્ચવત્ વજ્ર કર્મ કો નહીં દેખતા હૈ । ઇતી
 પ્રકાર ક્ષેપ મજ્ઞદ્વય મી સમજાને યોગ્ય હૈ ૪ । ૨ । “વચ્ચારિ” ઇત્યાદિ
 રૂપ જો તૃતીય સૂત્ર કહા ગયા હૈ ઉસકા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ—કોઈ એક
 પુરુષ એસા હોતા હૈ જો અપને અવચ પાપકર્મ કો ઉદીરિત કરતા હૈ
 અનુવીર્ણં હુવે કર્મ કો છોષ, તપશ્વર્યા આદિ દ્વારા ઉદ્યાવલિકા મે
 પ્રવિષ્ટ કરતા હૈ । કિન્તુ અન્ય સમ્બન્ધી અવચ કો પરકે પ્રતિ ઉદાસીન

અહીં તે જ્ઞાતાહૈ વપશ્ચેષ છે અથવા વજ્ર 'લેવામાં આવે તે બધા પ્રમાણે
 અર્થ થશે—કોઈ પુરુષ જેવો હોય છે કે જે પોતાના વચ્ચને (દિશાદિક પાપ
 કર્મો શુરુ હોવાથી અહીં વજ્ર રૂપે પ્રકટ કર્યા છે) બાજુ છે પણ અન્યના
 વચ્ચને અણુતે નથી, કારણ કે અન્યના વચ્ચ પ્રત્યે તે તે ઉદાસીન જ રહે છે

હવે પુરુષનો બીજો પ્રકાર પ્રકટ કરવામાં આવે છે—કોઈ પુરુષ જેવો
 હોય છે કે જે અન્યના અવચને, અથવા વચ્ચને અથવા વજ્ર સમાન શુરુ
 કર્મને દેખે છે, પણ પોતાના અવચને, અથવા વચ્ચને અથવા વજ્ર સમાન
 શુરુ કર્મને દેખતો નથી—પોતાના પાપકર્મો તરફ તે તે ઉદાસીન રહે છે.
 જે જ પ્રમાણે બાહ્યના બે જાંજાઓ પુરુષ પ્રકારોનું કથન પણ અમલ લેવું

હવે સૂત્રનો બાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—“વચ્ચારિ” ઇત્યાદિ—
 પુરુષોના બીજે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પણ કથા છે—(૧) કોઈ પુરુષ જેવો હોય
 છે કે જે પોતાના અવચ (પાપકર્મ) ને ઉદીરિત કરે છે એટલે કે અનુવીર્ણં
 અવચ્યાવાજા કર્મને લોચ, તપશ્વર્યા આદિ દ્વારા ઉદ્યાવલિકામાં પ્રવિષ્ટ કરાવે
 છે, પરંતુ અન્યના અવચને ઉદીરિત કરતો નથી, કારણ કે અન્યના પાપકર્મો

વજ્જં ઉદીરેહ્ જો અપ્પણો ૨, અપ્પણો જામમેગે વજ્જં ઉદીરેહ્ પરસ્સવિ ૩, અપ્પણો જામમેગે વજ્જં જો ઉદીરેહ્ જો પરસ્સવિ ” ૪!

एकः=कश्चित्पुरुषः, परस्य=अन्यसम्बन्धि अवद्यम् उदीरयति उपदेशादिनां, नो आत्मनः, आत्मकल्याणभावना रहितत्वात् २, एकः-कश्चित् स्व-परयोरवद्यम् उदीरयति, स्व-परकल्याणभावनावत्त्वात् ३, एकः=अपरः पुरुष आत्म-परयोरवद्यादि नो उदीरयति विमूढत्वात् ४। ३।

“ चत्तारि ” इत्यादि-पुनः पुरुषजातानि चत्वारि भङ्गज्ञानि, तद्यथा-एकः-कश्चित्पुरुषः, आत्मनः-स्वस्य अवद्यं-पापं कर्म उपशमयति=उपशान्तं करोति,

હોને સે ઉદીરિત નહીં કરતા હૈ ૧ હસમેં અન્ય ભઙ્ગત્રય હસી પ્રકાર સે ઉદ્ધાવિત કર લેના ચાહિયે “પરસ્સ જામમેગે વજ્જં ઉદીરેહ્, જો અપ્પણો” ૨ “અપ્પણો જામમેગે વજ્જં ઉદીરેહ્ પરસ્સ વિ-” ૩ અપ્પણો જામમેગે વજ્જં જો ઉદીરેહ્ જો પરસ્સ વિ-૪ । કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો દૂસરોં કે અવચ્ચ કો ઉપદેશ આદિ દ્વારા ઉદીરિત કર દેતા હૈ પર અપને કર્મ કો આત્મકલ્યાણ કરને કી ભાવના સે રહિત હોને કે કારણ ઉદીરિત નહીં કરતા હૈ-૨ તથા કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો સ્વ ઓર પર દોનોં કે અવચ્ચ કો ઉદીરિત કરતા હૈ । ક્યોં કિ-એસા પુરુષ સ્વ ઓર-પર દોનોં કા કલ્યાણ કાશુક હોતા હૈ ૩ એક કોઈ પુરુષ એસા હોતા હૈ જો ન અપને અવચ્ચ કો ઉદીરિત કરતા હૈ, ઓર ન પરકે અવચ્ચ કો ઉદીરિત કરતા હૈ । ક્યોં કિ-વહ વિમૂઢ (વિવેક વિકલ) હોતા હૈ । ૪ ૩ । “ચત્તારિ” હ્યાદિ હસ સૂત્ર દ્વારા જો ચાર પ્રકારકે પુરુષ પ્રગટ કિયે ગયે હૈ

પ્રત્યે તે ઉદાસીનવૃત્તિ રાખતો હોય છે. એ જ પ્રમાણે વિચાર કરીને બાકીના ત્રણ પ્રકારોનું પણ અહીં કથન થતું જોઈએ.

તે ત્રણ ભાંગા (પ્રકારો) આ પ્રમાણે છે—“ પરસ્સ જામમેગે વજ્જં ઉદીરેહ્, જો અપ્પણો ” (૨) કોઈ પુરુષ અન્યના અવધને ઉપદેશ આદિ વડે ઉદીરિત કરે છે, પણ પોતાના અવધને ઉદીરિત કરતો નથી કારણ કે તેનામાં આત્મકલ્યાણની ભાવનાનો જ અભાવ હોય છે “ અપ્પણો જામમેગે વજ્જં ઉદીરેહ્, પરસ્સ વિ ” (૩) કોઈ પોતાના અવધને પણ ઉદીરિત કરે છે અને અન્યના અવધને પણ ઉદીરિત કરે છે, કારણ કે તે સ્વ અને પરનું કલ્યાણ ધ્યાનમાં લે છે. “ અપ્પણો જામમેગે વજ્જં જો ઉદીરેહ્, જો પરસ્સ વિ ” કોઈ પુરુષ પોતાના અવધને પણ ઉદીરિત કરતો નથી અને અન્યના અવધને પણ ઉદીરિત કરતો કરતો નથી, કારણ કે તે વિમૂઢ હોય છે.

પરસ્પર વદ નો ઉપશમયતિ, પરં મત્યુદાસીનત્વાત્ ૧, અપરે જ્ઞપો મજ્ઞા પરમ્-
 “પરસ્પર જ્ઞામમેગે વજ્ઞ ઉવસામેઈ જ્ઞો અપ્પજો ૨, અપ્પજો જ્ઞામમેગે વજ્ઞ ઉવ
 સામેઈ પરસ્પરિ ૩, અપ્પજો જ્ઞામમેગે વજ્ઞ જ્ઞો ઉવસામેઈ જ્ઞો પરસ્પરિ ” ૪।
 તમ દ્વિતીયમજ્ઞસ્વાયમર્થઃ-૧૬-કથિત્યુરુપઃ પરસ્પરાર્થ ઉપશમયતિ, નો
 આત્મનસ્તુપશમયતિ, આત્મહિતમાત્રનારહિતજ્ઞાત્ ૨। ૧૬-૧ પુરુષઃ આત્મન પર-
 સ્પાપિ અવધનુપશમયતિ, સ્વપરહિતામિત્રાપિત્ત્વાત્ ૩। ૧૬-૨ પુરુષ આત્મનઃ પર
 સ્પાપિ અવધ નો ઉપશમયતિ નિમૂઢતાત્ ૪। ૧૬-૪।

લક્ષ્મી તાત્પર્ય એસા છે, કોઈ એક પુરુષ એસા હોતાં છે જો-અપને હી અવધ
 પાપ કો ઉપશાન્ત કરતા છે, પરકે પ્રતિ ઉદાસીન હોને સે ઉસકે અવધ
 કો ઉપશાન્ત નહીં કરતા છે ૧ હસ સમ્યન્ધ મેં-અન્ય ૨ જગ એસે હૈ
 “પરસ્પરજ્ઞામમેગે વજ્ઞ ઉવસામેઈ, જ્ઞો અપ્પજો ” ૨ અપ્પજો જ્ઞામમેગે
 વજ્ઞ ઉવસામેઈ પરસ્પરિ ૩ “અપ્પજો જ્ઞામમેગે વજ્ઞ જ્ઞો ઉવસામેઈ,
 જ્ઞો પરસ્પરિ-” ૪ હસકા અર્થ એસા છે દ્વિતીયા જગલા કોઈ એક
 પુરુષ એસા હોતા છે જો ઉપદેશ પ્રદાન આદિ દ્વારા પરકે અવધ પાપકર્મ
 કો તો શાન્ત કર દેતા છે, પર આત્મહિતમાત્રનારહિત હોને કે કારણ
 અપને અવધ કો ઉપશમિત નહીં કરતા છે-૨ તૃતીયા જગલા કોઈ
 એક પુરુષ એસા હોતા છે જો સ્વ ઓર પરકે હિત કા અમિલાપી હોને કે
 કારણ દોનો કે અવધ પાપકર્મ કો ઉપશાન્ત કર દેતા છે-૩ તથા-ચોથે
 જગ કા કોઈ પુરુષ જો કિ-ધિમૂઢ હોને કે કારણ ન અપને ન પરકે
 અવધ કો ઉપશાન્ત કરતા છે-૪-૪।

હવે યોગ સૂત્રના બાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે-“વચારિ” ઇત્યાદિ
 આ સૂત્ર દ્વારા પણ નીચે પ્રમાણે આર પ્રકરના પુરુષે કહ્યા છે-(૧) કોઈ
 પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના જ અવધને (પાપકર્મને) ઉપશાન્ત કરે
 ૭ પણ અન્યના વરુ ઉદાસીન હોવાથી અન્યના અવધને ઉપશાન્ત કરતો
 નથી. આ સિવાયના ત્રણ ભાગ (વિકલ્પો) નીચે પ્રમાણે છે-

પરસ્પર જ્ઞામમેગે વજ્ઞ ઉવસામેઈ જ્ઞો અપ્પજો ૨, અપ્પજો જ્ઞામમેગે વજ્ઞ
 ઉવસામેઈ પરસ્પરિ ૩, અપ્પજો જ્ઞામમેગે વજ્ઞ જ્ઞો ઉવસામેઈ, જ્ઞો પરસ્પરિ ૪”

બીજો ભાગ-કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે ઉપદેશ આદિ દ્વારા
 પરાના અવધને (પાપકર્મને) ઉપશાન્ત કરી નાખે છે પણ આત્મહિતમાત્રની
 ભાવનાથી રહિત હોવાને કારણે પોતાના અવધને ઉપશાન્ત કરતો નથી.

ત્રીજો ભાગ-કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે સ્વ અને પરાના દ્વિતી
 અમિલાપવાળો હોવાથી પોતાના અને અન્યના અવધને ઉપશમિત કરી નાખે છે

ચોથો ભાગ-કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાની વિમૂઢતાને

“ચત્તારિ” ઇત્યાદિ-પુનઃ પુરુષજાતાનિ ચત્તારિ પ્રજ્ઞાનિ, તથા-
 “અભ્યુત્તિષ્ઠતે”-एक-कश्चित्पुरुषः स्वयं क्वचित्कार्ये अभ्युत्तिष्ठते-उद्यतते
 સોત્સાહતાત્ પ્રવર્તત ઇત્યર્થઃ, કિં તુ પરં નો ઉત્થાપયતિ-ન પ્રવર્તયતિ પરં પ્રત્યુપ-
 દાસીનત્વાત્, યદ્વા-‘અબ્ધુદેઈ’ ઇત્યસ્ય ‘અભ્યુત્તિષ્ઠતિ’ ઇતિ છાયા, તદર્થશ્ચ
 -અભ્યુત્થાનં કરોતીતિ, કિન્તુ પરં નો ઉત્થાપયતિ, एतादृशउत्कृष्टाऽऽचारपक्ष-
 પાતી લઘુપર્યાયો વા ભવતિ ૧, શેપાસ્ત્રયો મજ્ઞા એવમ્-“અબ્ધુદાવેઈ જામમેગે
 જો અબ્ધુદેઈ ૨, અબ્ધુદેઈ જામમેગે અબ્ધુદાવેઈ ૩, જો અબ્ધુદેઈ જામમેગે જો
 અબ્ધુદાવેઈ ૪” ઇતિ, एषां व्याख्या-एकः-कश्चित्पुरुषः अभ्युत्थापयति शिष्या-

“ચત્તારિ” ઇત્યાદિ હસ પચ્ચમ સૂત્ર દ્વારા જો ચાર પ્રકાર કે પુરુષ કહે ગયે હૈં
 उस सम्बन्धमें स्पष्टीकरण करते हुवे सूत्रकार कहते हैं-कोई एक पुरुष स्वयं
 હી આત્મહિત સાધક કાર્યમેં સોત્સાહ હોકર પ્રવૃત્ત હોના હૈ પર પ્રતિ ઉદા-
 સીનતા સે ઉત્સાહ કે સાથ પ્રવૃત્ત નહીં હોતા હૈ-૧ યદ્વા-“અબ્ધુદેઈ”
 કી છાયા “અભ્યુત્તિષ્ઠતિ” હૈ, હસકા અર્થ અભ્યુત્થાન કરના હૈ એસા
 પુરુષ ઉત્કૃષ્ટ આચાર કા પક્ષપાતી હોતા હૈ, વા લઘુપર્યાયવાલા હોતા
 હૈ। શેષ ત્રીન ભંગ એસે હૈ-“અબ્ધુદાવેઈ જામમેગે જો અબ્ધુદેઈ” ૨
 અબ્ધુદેઈ જામમેગે અબ્ધુદાવેઈ ૩ જો અબ્ધુદેઈ જામમેગે જો અબ્ધુદા-
 વેઈ-૪ હસકી વ્યાખ્યા હસ પ્રકાર સે હૈ દ્વિતીય મજ્ઞવાલા કોઈ એક

કારણે પોતાના પાપકર્મને પણ ઉપશાન્ત કરતો નથી અને પરના પાપકર્મને
 પણ ઉપશાન્ત કરતો નથી.

હવે પાંચમાં સૂત્રનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે. આ સૂત્રમાં પુરુ-
 ષોના જે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે આત્મહિતસાધક કાર્યમાં ઉત્સાહ-
 પૂર્વક લાગ લે છે, પરંતુ અન્ય પ્રત્યે ઉદાસીન હોવાને કારણે અન્યને તે કાર્ય
 કરવાને ઉત્સાહિત કરતો નથી. અથવા “અબ્ધુદેઈ” ની છાયા “અભ્યુત્તિષ્ઠતિ”
 થાય છે. આ દષ્ટિએ વિચારવામાં આવે તો તેનો અર્થ “અભ્યુત્થાન કરવું”
 થાય છે એવો પુરુષ ઉત્કૃષ્ટ આચારનો પક્ષપાતી હોય છે, અથવા લઘુ પર્યા-
 યવાળો હોય છે આ દષ્ટિએ વિચારતા પહેલો ભાગો આ પ્રમાણે બને છે—
 કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાનું અભ્યુત્થાન કરે છે, પણ અન્યનું
 અભ્યુત્થાન કરતો નથી. બાકીના ત્રણ ભાગો નીચે પ્રમાણે બને છે—

“અબ્ધુદાવેઈ જામમેગે, જો અબ્ધુદેઈ ૨, અબ્ધુદેઈ જામમેગે અબ્ધુદાવેઈ ૩,
 જો અબ્ધુદેઈ જામમેગે જો અબ્ધુદાવેઈ ૪”

વિકં ન પુનઃ સ્વયમભ્યુચિષ્ઠતિ ગુરુસ્થાત્ ૨, એકા-કથિત્ સ્વયમભ્યુચિષ્ઠતિ
 પરમપ્યમ્યુત્પાપયતિ, ઠમયત્ત્વચિત્તાત્ ત્રીયક્કુરગ્ગધારાવિષત્ ૩, એક-કથિત્
 રુપો ન સ્વયમભ્યુચિષ્ઠતિ ન પરમભ્યુત્પાપયતિ, તાદૃશો જિનકલ્પિકોઽવિનીતો
 વા પુરુષો દ્વેષઃ ૪। ૧। ૫ર્થં વન્દનાદિદુષ્ટેષ્વપિ તત્ત્વસુરુપા ઘન્દનાદિવિધાપક
 વિધાપકા ઘોષ્યા, હત્યગર-“ વંદદ ” ઇત્યાદિ-પદમ્=મનન્તરોક્તામ્યુત્પા
 નાદિદુષ્ટવત્, “ વંદદ ” ઇત્યારમ્બ ‘ વાગરેદ ’ પર્યન્તાન્યષ્ટમાપિ ઘોષ્યાનિ।
 તથાહિ=“ વન્દતે નામૈકા ”-એકા-કથિત્ પુરુષો ઘન્દતે-દ્વાદશાન્તર્વાદિના
 વન્દન કરોતિ, કિન્તુ પરેણ ન વન્દયતિ ૬। ધૃષ્ટા મહાઃ સ્વયમૂષ્ઠા । “ પદમ્ ”

પુરુષ એસા હોતા હૈ જો અપને શિષ્ય આદિ કો હી ઉઠતા હૈ સ્વય ગુરુ
 હોને કે કારણ ઉઠતા નહીં હૈ-૨ તૃતીયમજ્જ કા કોઈ એક પુરુષ તીર્થક્કુર
 ગણધર આદિ જૈસે સ્વય મ્હી ઉઠતા હૈ ઓર પરકો મ્હી ઉઠાતા હૈ-૩
 ચૌથે મગ કા કોઈ એક એસા હોતા હૈ જો ન સ્વય ઉઠતા હૈ ન દુસરે
 કો ઉઠાતા હૈ-૪ એસા પુરુષ જિનકલ્પિક વા અવિનીત હોના હૈ। ૫ હસી
 તરહ કા મજ્જ કથન ઘેદનાદિ સૂત્રો કે સમ્પન્ન મેં મ્હી કર હેના ચાહિયે,
 અર્થાત્-વન્દનાદિક સૂત્રો મેં મ્હી તત્ત્વસુરુપ ઘન્દનાદિવિધાપક ઓર
 વિધાપક હોતે હૈં। અતઃ-“ વંદદ ” સૂત્ર સે લેકર “ વાગરેદ ” સૂત્ર તક
 ઓઠ સૂત્રો કો અનન્તરોક્ત અમ્યુત્પાન આદિ સૂત્ર સમાન જાનના
 ચાહિયે। હસ વિષય મેં આલાપક હસ પ્રકાર સે હૈં-“ વંદતે નામૈકા ”
 એકા કથિત્ પુરુષો ઘન્દતે દ્વાદશાઽઽવર્તાર્થિના ઘન્દન કરોતિ કિન્તુ

આ ત્રણ ભાગ્યોની બાજ્યા નીચે પ્રમાણે સમજવી—

મીને ભાગ્ય—કેઈ પુરુષ જોવો હોય છે કે જે પોતાના સિધ્ધાદિકાનું
 અમ્યુત્પાન કરે છે, પરંતુ પોતે શુરુ (દીર્ઘકાળ) હોવાને કારણે પોતાનું
 અમ્યુત્પાન કરતો નથી.

ત્રીને ભાગ્ય—કેઈ પુરુષ જોવો હોય છે કે જે પોતાનું પણ ઉત્પાન કરે
 છે અને અન્યનું પણ ઉત્પાન કરે છે જેમકે તીર્થંકર, ગણધર વગેરે.

ધૃષ્ટા ભાગ્ય—કેઈ પુરુષ જોવો હોય છે કે જે પોતાનું પણ ઉત્પાન
 કરતો નથી અને પરંતુ પણ ઉત્પાન કરતો નથી. જોવો પુરુષ જિનકલ્પિક
 અથવા અવિનીત હોય છે

હવે “ વંદદ ” થી લઇને “ વાગરેદ ” પર્યન્તના આઠ સૂત્રોનું ૨૫૫
 કરણ કરવામાં આવે છે—

ખૂં સુત્રનું ૨૫૫મીકરણ—“ વંદતે નામૈકા ”-“ એકા કથિત્ પુરુષો
 દ્વાદશાઽઽવર્તાર્થિના ઘન્દન કરોતિ, કિન્તુ પરેણ ન વન્દયતિ ”

-અનેન પ્રકારેણ, “ સકારેઈ ”-સ્વયં. સત્કરોતિ=સત્પાત્રાદિદાનેન પરસ્ય સત્કારં કરોતિ, કિન્તુ અન્યેન સ્વાત્માનં નો સત્કારયતિ ૧, શેષા ભજ્ઞા ઝહનીયાઃ ।૭।

“ સમ્માણેઈ ”—‘ સમ્માણેઈ જામમેગે જો સમ્માણાવેઈ ’-૧કઃ-કથિત્પુરુષઃ પરં સમ્માનયતિ-સ્તુત્યાદિગુણોન્નતિકરણેન, કિન્તુ પરેણ સ્વાત્માનં નો સમ્માનયતિ ન સમ્માનં કારયતિ ૧, શેષા ભજ્ઞાઃ સ્વયમૂહ્યાઃ ૪। ૮।

“ પૂજેઈ ”-‘ પૂજેઈ જામમેગે જો પૂજાવેઈ ’-૧કઃ-કથિત્પુરુષઃ સ્વયમન્યં પૂજયતિ-આદરણીયત્વેન સ્વીકરોતિ કિન્તુ પરેણ સ્વાત્માનં નો પૂજયતિ ૧, શેષા ભજ્ઞાઃ સ્વયમૂહનીયાઃ ।૪। ૯।

પરેણ ન વન્દયતિ ૬ કોઈ ૧ક પુરુષ દ્વાદશ આવર્ત આદિ શાસ્ત્ર સંકેતિત વિધાન સે વન્દના કરતો હૈ, કિન્તુ દૂસરોં સે અપની વન્દના નહીં કરાતા હૈ ૧ વાકી તીન ભજ્ઞ અપને આપ સમજ્ઞ લેના ચાહિયે ૪ । એસે હી સત્કાર કે સમ્બન્ધ મેં ચાર ભજ્ઞોં કો સમજ્ઞ લેના ચાહિયે, જેસે “ સકારેઈ ” કોઈ ૧ક પુરુષ એસા હૈ જો પાત્ર વસ્ત્ર આદિ પ્રદાન પૂર્વક પરકા સત્કાર કરતા હૈ કિન્તુ અન્ય સે અપના સત્કાર નહીં કરવાતા હૈ ૧ યહાં વાકી કે ૩ ભજ્ઞોં કો વના લેના ચાહિયે ૪-૭ ।

૮—“ સમ્માણેઈ-સમ્માણેઈ જામમેગે જો સમ્માણાવેઈ ” કોઈ ૧ક પુરુષ એસા હોના હૈ, જો દૂસરોંકા સમ્માન કરતા હૈ પર-દૂસરોંસે અપના સમ્માન નહીં કરાતા હૈ-૧ યહાંમી અવશિષ્ટ તીન ભજ્ઞોંકી કલના યથાવત્ કર લેની ચાહિયે-૪ ।

(૧) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે દ્વાદશ (બાર) આવર્ત આદિ શાસ્ત્રોક્ત વિધિપૂર્વક વંદણા કરે છે, પણ પોને બીજા પાસે પોતાને વંદણા કરાવતો નથી (૨) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતે શાસ્ત્રોક્ત વિધિ-પૂર્વક વંદણા કરતો નથી પણ અન્યની પાસે એવી વંદણા કરાવે છે

એ જ પ્રમાણે બાકીના બે ભાંગાઓનું કથન પણ જાતે જ સમજી લેવું વંદણાથી લઇને “ વાગરેઈ ” ‘ નિષ્કૃંચ કરે છે ’ પર્યંતના સૂત્રોના ચાર ભાંગાઓનું કથન પૂર્વોક્ત અભ્યુત્થાન સૂત્ર પ્રમાણે જ સમજી લેવું.

સાતમું સૂત્ર—સત્કારના વિષયમાં પણ એવા જ ચાર ભાંગા સમજી લેવા જેમકે કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે વસ્ત્ર, પાત્ર આદિના પ્રદાન-પૂર્વક અન્યનો સત્કાર કરે છે, પણ અન્યની પાસે પોતાનો સત્કાર કરાવતો નથી બાકીના ત્રણ ભાંગા જાતે જ સમજી લેવા.

આઠમું સૂત્ર—“ સમ્માણેઈ જામમેગે જો સમ્માણાવેઈ ” ઇત્યાદિ—કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે અન્યનું સન્માન કરે છે, પણ અન્યની મારફત પોતાનું સન્માન કરાવતો નથી. બાકીના ત્રણ ભાંગાઓ પૂર્વોક્ત કેમ અનુસાર સમજી લેવા.

તદ્વિવરણમ્—એકઃ—કશ્ચિત્પુરુષઃ સૂત્રાદિ પૃચ્છતિ=પ્રશ્નયતિ, કિન્તુ પરેણ નો પૃચ્છયતિ—૧। શેષા ભક્તાઃ સ્વયમૂહનીયાઃ ૪। ૧૧।

“પડિપુચ્છહ” ઇતિ—‘પડિપુચ્છહ ણામમેગે ણો પડિપુચ્છાવેહ’, ઇતિ પ્રથમભક્તસ્વરૂપમ્, એકઃ—કશ્ચિત્ સૂત્રાર્થો પ્રતિપૃચ્છતિ=પૃષ્ટપ્રશ્ન કરોતિ, નો પરેણ પ્રતિપૃચ્છયતિ ૧, શેષા ભક્તાઃ સ્વયમૂહાઃ ૪। ૧૨।

“વાગરેહ” ‘વાગરેહ ણામમેગે ણો વાગરાવેહ’ ઇતિ પ્રથમભક્તસ્વરૂપમ્, અસ્યાયમર્થઃ—એકઃ=કશ્ચિત્પુરુષઃ સૂત્રાદિકં સ્વયં વ્યાકરોતિ=નિર્ણયતિ, કિન્તુ પરેણ નો વ્યાકારયતિ ૧। શેષા ભક્તાઃ સ્વયમૂહાઃ ૪। ૧૩।

“સુત્તધરે” ઇત્યાદિ—એકઃ—કશ્ચિત્પુરુષઃ સૂત્રધરઃ—ધરતીતિ ધરઃ સૂત્રસ્ય

૩ ભક્ત અપને આપ ઉદ્ભવિત કર લેના ચાહિયે-૪। “પડિપુચ્છહ” પડિપુચ્છહ ણામમેગે, ણો પડિપુચ્છાવેહ—પુરુષ ચાર પ્રકારકે હૈં જિનમેં એક પ્રકારકા વહ હૈં જો—સૂત્રાર્થ કો સ્વયં પ્રદિનત કરતા હૈં પર દૂસરોંસે પ્રદિનત નહીં કરવાતા હૈં—૧ યહાં પર ખી આગેકે ૩ ભક્તોંકો બના લેના ચાહિયે-૪/૧૩ “વાગરેહ” વાગરેહ ણામમેગે, ણો વાગરાવેહ—પુરુષ ચાર ભેદકે હૈં, ઇનમેં કોઈ એક તો એસા હોતા હૈં જો સ્વયં નિર્ણય કરતા હૈં પરસે નિર્ણય નહીં કરાતા હૈં—૧ યહ પહલા ભક્ત હૈં આગેકે ત્રીન ભક્તોંકો અપને આપ બના લેના-૪

૧૪ સુત્તધરે—ઇત્યાદિ પુરુષ ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈં, ઇનમેં કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈં જો કેવલ સૂત્રધર હોતા હૈં અર્થધર નહીં હોતા

જે પોતે જ સૂત્રાદિકોનો અર્થ પૂછે છે, અન્યની પાસે પૂછાવતો નથી બાકીના ત્રણ ભાંગા પણ પૂર્વોક્ત ક્રમ અનુસાર બનાવી લેવા.

હવે ખાસમાં સૂત્રનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—“પડિપુચ્છહ” ઇત્યાદિ—“પડિપુચ્છહ ણામમેગે ણો પડિપુચ્છાવેહ” ચાર પ્રકારના પુરુષોમાંથી પહેલા પ્રકારનો પુરુષ એવો હોય છે કે જે સૂત્રાર્થને પોતે જ પ્રશ્નિત કરે છે, પણ બીજા લોકો પાસે પ્રશ્નિત કરાવતો નથી. અહીં પણ બાકીના ત્રણ ભાંગા પૂર્વોક્ત ક્રમાનુસાર બનાવી લેવા જોઈએ.

તેમાં સૂત્રનું સ્પષ્ટીકરણ—“વાગરેહ” ઇત્યાદિ—“વાગરેહ ણામમેગે ણો, વાગરાવેહ” પુરુષના ચાર પ્રકાર છે. (૧) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતે જ નિર્ણય કરે છે, પણ અન્યની પાસે નિર્ણય કરાવતો નથી. આ પહેલો પ્રકાર છે, બાકીના ત્રણ પ્રકાર બીજા જ સમજી લેવા.

હવે ૧૪ માં સૂત્રનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—“સુત્તધરે” ઇત્યાદિ—પુરુષોના ચાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે કહ્યા છે—(૧) કોઈ એક પુરુષ

પરઃ સૂત્રપરો મવતિ, કિન્તુ અર્થપરો ન મવતિ ૧। એક-કથિતુ અર્થપરો મવતિ
 ન તુ સૂત્રપરઃ ૨, સૂત્રપરો નામૈકોડર્થપરોડપિ ૩, એકો નો સૂત્રપરો નો અર્થપરઃ
 ૪। તૃતીય-ચતુર્થમજ્જયોસ્વાહરણદ્વય-મેધાવિ-જઙ્ઘરૂપ મવતિ ૪। ૧૪। સુ. ૧૮।

પુરુષાધિકારાદેવ દેવવિશેષ-પુરુષવિશેષનિસ્પષ્ટાણિ લોકપાલાદિ-સૂત્રાણ્ય-

મૂલ્ય-ચમરસ્સ ણ અસુરિંદસ્સ અસુરકુમારરન્નો ચત્તારિ

લોકપાલા પળ્લણ્ણા, ત જહા-સોમે ૧, જમે ૨, વરુણે ૩, વેસ
 મળે ૪। એવ વલિસ્સવિ-સોમે ૧, જમે ૨, વેસમળે ૩, વરુણે ૪।
 ધરણસ્સ-કાલ્પાલે ૧, કોલપાલે ૨, સેલપાલે ૩, સલ્લપાલે ૪।
 એવ મૂયાણંદસ્સ ચત્તારિ-કાલપાલે ૧, કોલપાલે ૨, સલ્લપાલે
 ૩, સેલપાલે ૪। વેણુદેવસ્સ-ચિત્તે ૧, વિચિત્તે ૨, ચિત્તપક્ષ્વે ૩,
 વિચિત્તપક્ષ્વે ૪। વેણુદાલિસ્સ ચિત્તે ૧, વિચિત્તે ૨, વિચિત્તપક્ષ્વે
 ૩, ચિત્તપક્ષ્વે ૪। હરિકતસ્સ-પમે ૧, સુપ્પમે ૨, પમકતે ૩,
 સુપ્પમકતે ૪। હરિસહસ્સ-પમે ૧, સુપ્પમે ૨, સુપ્પમકતે ૩,
 પમકતે ૪। અગ્ગિસિહસ્સ-તેજ ૧, તેજસિહે ૨, તેજકતે ૩, તેજ
 પ્પમે ૪। અગ્ગિમાળવસ્સ તેજ ૧, તેજસિહે ૨, તેજપ્પમે ૩, તેજકતે
 ૪। પુળ્લણ્ણસ્સ રૂપ ૧, રૂપંસે ૨, રૂપકતે ૩, રૂપપ્પમે ૪।

હે-૧ દ્વિતીય કોઈ અર્થપર હોતા હે સૂત્રપર નહીં હોતા હે-૨ કોઈ એક
 ત્રીસરા પુરુષ એસા હે જો સૂત્રપરમી હોતા હે ઓર અર્થપરમી હોતા
 હે-૩ તથા-ચતુર્થ પ્રકારકા કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હે જો નતો સૂત્ર
 પરમી હોતા હે ન અર્થપરમી હોતા હે-૪ યહાં-તૃતીય ઓર ચતુર્થ મજ્જકે
 ઉદાહરણ મેધાવી ઓર જઙ્ઘ પુરુષ હોતે હે ॥ સુ. ૧૮ ॥

એવો એવ છે કે એ માત્ર સૂત્રપર જ એવ છે પણ અર્થપર હોતો નથી.
 (૨) એક પુરુષ માત્ર અર્થપર જ એવ છે પણ સૂત્રપર હોતો નથી. (૩)
 એક પુરુષ સૂત્રપર પણ એવ છે અને અર્થપર પણ એવ છે એમકે એક
 મેધાવી પુરુષ. (૪) એક પુરુષ એવો એવ છે કે એ સૂત્રપર પણ હોતો નથી
 અને અર્થપર પણ હોતો નથી એમકે જઙ્ઘ પુરુષ. ॥ સુ. ૧૮ ॥

એવં વિસિટ્વસ્સ-રૂપ ૧, રૂયંસે ૨, રૂયપ્પમે ૩, રૂયકંતે ૪।
જલકંતસ્સજલે ૧, જલરૂપ ૨, જલકંતે ૩, જલપ્પમે ૪। જલપ્પહસ્સ-
જલે ૧, જલરૂપ ૨, જલપ્પહે ૩, જલકંતે ૪। અમિયગ્ગસ્સ-તુરિયગ્ગે
૧, સ્વિપ્પગ્ગે ૨, સીહગ્ગે ૩, સીહવિક્કમગ્ગે ૪। અમિયવાહણસ્સ-
તુરિયગ્ગે ૧, સ્વિપ્પગ્ગે ૨, સીહવિક્કમગ્ગે ૩ સિંહગ્ગે ૪। વેલંવસ્સ-
કાલે ૧, મહાકાલે ૨, અંજણે ૩, રિટ્ઠે ૪। પમંજણસ્સ-કાલે ૧,
મહાકાલે ૨, રિટ્ઠે ૩, અંજણે ૪। ઘોસસ્સ-આવત્તે ૧, વિયાવત્તે ૨,
નંદિયાવત્તે ૩, મહાણંદિયાવત્તે ૪। મહાઘોસસ્સ-આવત્તે ૧, વિયા-
વત્તે ૨, મહાણંદિયાવત્તે ૩, ણંદિયાવત્તે ૨૦, ૪। સક્કસ્સ-સોમે
૧, જમે ૦, વરુણે ૩, વેસમણે ૪। ઈસાણસ્સ-સોમે ૧, જમે ૨, વેસ-
મણે ૩, વરુણે ૪। એવં-એગંતરિયા જાવસ્સચુયસ્સ ।

ચડવિહા વાડકુમારા પળ્લન્તા, તં જહા-કાલે ૧, મહા-
કાલે ૬, વેલંવે ૩, પમંજણે ૪।

ચડવિહા દેવા પળ્લન્તા, તં જહા-ભવળવાસી ૧, વાળર્મ-
તરા ૬, જોડસિયા ૬, વિમાળવાસી ૫। સૂ. ૧૧ ॥

ઢાયા-ચમરસ્સ સ્વહુ અસુરેન્દ્રસ્સ અસુરકુમારાજસ્સ ચત્ત્વારો લોકપાલાઃ
મજ્જતાઃ, તથયા-સોમઃ ૧, યમઃ ૨, વરુણઃ ૩, વૈશ્રવણઃ ૪। એવં વલેરપિ સોમઃ

પુરુષાધિકારકો લેકર હી અવ સૂત્રકાર દેવવિશેષ-પુરુષવિશેષ
નિરૂપક લોકપાલ આદિ સૂત્રોંકા કથન કરતે હૈ-“ ચમરસ્સ ણં અસુ-
રિંદસ્સ અસુરકુમારન્નો ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ — અસુરેન્દ્ર અસુરકુમારાજ ચમર કે ચાર

પુરુષાધિકાર ચાલી રહ્યો છે. તેથી હવે સૂત્રકાર દેવવિશેષ-પુરુષવિશેષ
નિરૂપક લોકપાલ આદિ વિષયક સૂત્રોનું કથન કરે છે—

“ ચમરસ્સ ણં અસુરિંદસ્સ અસુરકુમારન્નો ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—અસુરેન્દ્ર, અસુરકુમારાજ ચમરના ચાર લોકપાલ છે. તેમના
નામ આ પ્રમાણે છે-(૧) સોમ, (૨) યમ, (૩) વરુણ અને (૪) વૈશ્રવણ.

૧, યમા ૨, વૈભવણઃ ૧, વરુણઃ ૪। વરુણસ્ય-કાલપાલ ૧, કોલપાલઃ ૨, શૈલપાલ ૩, શક્તપાલ ૪। एवं भूतानन्वस्य चत्वारः-કાલપાલઃ ૧, કોલપાલઃ ૨, શક્તપાલ ૩, શૈલપાલઃ ૪। वेणुदेवस्य-चित्रः ૧, વિચિત્રઃ ૨, ચિત્રપક્ષઃ ૧, વિચિત્રપક્ષઃ ૪। वेणुदाले-चित्रः ૧, વિચિત્રઃ ૨, વિચિત્રપક્ષઃ ૧, ચિત્રપક્ષઃ ૪। हरिकान्तस्य-प्रमः ૧, સુપ્રમઃ ૨, પ્રમકાન્તઃ ૩, સુપ્રમકાન્તઃ ૪। हरिसहस्य-प्रमः ૧, સુપ્રમઃ ૨, સુપ્રમકાન્તઃ ૩, પ્રમકાન્તઃ ૪। अग्निशिलस्य तेजः ૧, તેજઃશિલ ૨, તેજઃકાન્તઃ ૩, તેજઃપ્રમ ૪। अग्निमाणवस्य-तेजः ૧, તેજઃશિલઃ

લોકપાલ હોતે હે, એસે-૧ સોમ, ૨ યમ, ૩ વરુણ ઓર ૪ વૈભવણ । હસી પ્રકાર ચલિકે ખી સોમ-યમ-વરુણ-ઓર વૈભવણ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હે-વરુણકે લોકપાલોમે કાલપાલ ૧, કોલપાલ ૨, શૈલપાલ ૩, ઓર શક્તપાલ ૪, યે ચાર કહે ગયે હે । હસી તરફ મૂતા નમ્વકે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હે, એસે-કાલપાલ-૧ કોલપાલ-૨ શૈલપાલ-૩ ઓર શક્તપાલ-૪ । वेणुदेवके चित्र-१ विचित्र २ चित्रपक्ष-१ और विचित्रपक्ष-४ ये चार लोकपाल कहे गये हैं । वेणुदालिके चित्र-१ विचित्र २ विचित्रपक्ष-३ और चित्रपक्ष-४ ये चार लोकपाल कहे गये हैं । हरिकान्तके प्रम-१ सुप्रम-२ प्रमकान्त-३ और सुप्रमकान्त-४ ये चार लोकपाल कहे गये हैं । हरिसहके प्रम-१ सुप्रम-२ सुप्रमकान्त-३ और प्रमकान्त ४ ये चार लोकपाल कहे गये हैं ।

એ જ પ્રમાણે જલિના પશુ સોમ યમ, વરુણ અને વૈભવણ નામના ચાર લોકપાલ હતા છે પરંતુના ચાર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—
(૧) કાલપાલ, (૨) કોલપાલ (૩) શૈલપાલ અને (૪) શક્તપાલ. એ જ પ્રમાણે મૂતાનન્વના પશુ ચાર લોકપાલ હતા છે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—
(૧) કાલપાલ (૨) કોલપાલ (૩) શૈલપાલ અને શક્તપાલ.

વેણુદેવના ચિત્ર, વિચિત્ર, ચિત્રપક્ષ અને વિચિત્રપક્ષ નામના ચાર લોકપાલો હતા છે વેણુદાલિકના (૧) ચિત્ર, (૨) વિચિત્ર, (૩) વિચિત્રપક્ષ, અને (૪) ચિત્રપક્ષ એ નામના ચાર લોકપાલો હતા છે.

હરિકાન્તના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) પ્રમ, (૨) સુપ્રમ, (૩) પ્રમકાન્ત અને (૪) સુપ્રમકાન્ત. હરિસહના ચાર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) પ્રમ, (૨) સુપ્રમ, (૩) સુપ્રમકાન્ત, અને (૪) પ્રમકાન્ત.

૨, તેજઃપ્રભઃ ૩, તેજઃકાન્તઃ ૪। પૂર્ણસ્ય-રૂપઃ ૧, રૂપાંશઃ ૨, રૂપકાન્તઃ ૩, રૂપપ્રભઃ ૪। एवं विशिष्टस्य-रूपः १, रूपांश २, रूपप्रभः ३, रूपकान्तः ४। जलकान्तस्य-जल १, जलरूपः २, जलकान्तः ३, जलप्रभः ४। जलप्रभस्य-जलः १, जलरूपः २, जलप्रभः ३, जलकान्तः ४। अमितगते-त्वरितगतिः १, क्षिप्रगतिः २, सिंहगतिः ३, सिंहविक्रमगतिः ४। अमितवाहनस्य-त्वरितगतिः १, क्षिप्रगतिः २, सिंहविक्रमगतिः ३, सिंहगतिः ४। वेलम्बस्य-कालः १, महा-

અગ્નિશિખાકે તેજ-૧ તેજશિખા-૨ તેજઃકાન્ત-૩ ઓર તેજઃ પ્રભ-૪ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં । અગ્નિમાળવકકે તેજાઃ-૧ તેજઃશિખા-૨ તેજઃપ્રભ-૩ ઓર તેજઃકાન્ત ૪ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં । પૂર્ણકે રૂપ-૧ રૂપાંશ-૨ રૂપકાન્ત-૩ એવં રૂપપ્રભ-૪ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં । વશિષ્ઠકે રૂપ ૧, રૂપાંશ ૨, રૂપપ્રભ ૩, ઓર રૂપકાન્ત ૪ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં । જલકાન્તકે જલ-૧ જલરૂપ-૨ જલકાન્ત-૩ ઓર જલપ્રભ-૪ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં ।

જલપ્રભકે જલ-૧ જલરૂપ-૨ જલપ્રભ ૩ ઓર જલકાન્ત ૪ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં । અમિતગતિકે ત્વરિતગતિ-૧ ક્ષિપ્રગતિ-૨ સિંહ-વિક્રમગતિ-૩ ઓર સિંહગતિ-૪ યે ચાર લોકપાલ કહે ગયે હૈં ।

અગ્નિશિખના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે--(૧) તેજ, (૨) તેજઃશિખ, (૩) તેજઃકાન્ત અને (૪) તેજઃપ્રભ.

અગ્નિમાણવના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે--(૧) તેજ, (૨) તેજઃશિખ, (૩) તેજઃપ્રભ અને (૪) તેજઃકાન્ત.

પૂર્ણના લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે--(૧) રૂપ, (૨) રૂપાંશ, (૩) રૂપકાન્ત અને (૪) રૂપપ્રભ વશિષ્ઠના ચાર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે--(૧) રૂપ, (૨) રૂપાંશ, (૩) રૂપપ્રભ અને રૂપકાન્ત જળકાન્તના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે--(૧) જલ, (૨) જલરૂપ, (૩) જલકાન્ત અને (૪) જલપ્રભ

જલપ્રભના ચાર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે--(૧) જલ, (૨) જલરૂપ, (૩) જલપ્રભ અને (૪) જલકાન્ત.

અમિતગતિના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે--(૧) ત્વરિતગતિ, (૨) ક્ષિપ્રગતિ, (૩) સિંહગતિ, અને (૪) સિંહવિક્રમગતિ અમિતવાહનના ચાર લોકપાલો ત્વરિતગતિ, ક્ષિપ્રગતિ, સિંહવિક્રમગતિ અને સિંહગતિ છે.

કાલઃ ૨, મહાકાલઃ ૧, રિષ્ટઃ ૪। પ્રમહાનસ્ય-કાલઃ ૧, મહાકાલઃ ૨, રિષ્ટઃ ૪, મહાકાલઃ ૪। ઘોષસ્ય-આવર્તઃ ૧, વ્યાવર્તઃ ૨, નન્દિકાવર્તઃ ૩, મહાનન્દિકાવર્તઃ ૪। મહાઘોષસ્ય-આવર્તઃ ૧, વ્યાવર્તઃ ૨, મહાનન્દિકાવર્તઃ ૩, નન્દિકાવર્તઃ ૨૦। શકસ્ય-સોમ ૧, યમ ૨, વરુણ ૩, વૈભવણ ૪। ઈશાનસ્ય-સોમ ૧, યમઃ ૨, વૈભવણઃ ૩, વરુણ ૪। एवम् एकान्तरित्वा यावत् अभ्युतस्य।

चतुर्विधा वायुकुमाराः प्रश्रुताः, तपया=काल १, महाकाल २, वेल्म्भा ३ १ प्रमहजनः ४।

વેલમ્બકે કાલ-૧ મહાકાલ-૨ મહાજન-૩ રિષ્ટ-૪ એ ચાર લોકપાલ કહે ગયે હોં ।

પ્રમહજનકે કાલ-૧ મહાકાલ-૨ રિષ્ટ-૩ ઓર અજન-૪ એ ચાર લોકપાલ કહે ગયે હોં । ઘોષકે આવર્ત-૧ વ્યાવર્ત-૨ નન્દિકાવર્ત-૩ ઓર મહાનન્દિકાવર્ત-૪ એ ચાર લોકપાલ કહે ગયે હોં । મહાઘોષકે આવર્ત-૧ વ્યાવર્ત-૨ મહાનન્દિકાવર્ત-૩ નન્દિકાવર્ત-૪ એ ચાર લોકપાલ કહે ગયે હોં । શકકે સોમ-યમ-વરુણ-ઓર વૈભવણ એ ચાર લોકપાલ કહે ગયે હોં । ઈશાનકે સોમ, યમ, વૈભવણ, વરુણ લોકપાલમેં એ ચાર હોં । इसी तरहसे एकान्तरित करके यावत् अभ्युत तक लोकपाल कह लेना चाहिये ।

વાયુકુમાર ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હોં—જેસે કાલ-૧ મહાકાલ-૨ વેલમ્બ-૩ ઓર પ્રમહજન-૪ । એ ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હોં—નવન

વેલમ્બના આર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) કાલ, (૨) મહાકાલ, (૩) મહાજન અને (૪) રિષ્ટ.

પ્રમહજનના આર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે, (૧) કાલ, (૨) મહાકાલ, (૩) મહાજન અને (૪) રિષ્ટ.

ઘોષના આર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) આવર્ત (૨) વ્યાવર્ત (૩) નન્દિકાવર્ત અને (૪) મહાનન્દિકાવર્ત. મહાઘોષના આર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) આવર્ત, (૨) વ્યાવર્ત (૩) મહાનન્દિકાવર્ત, (૪) નન્દિકાવર્ત.

શકના સોમ, યમ, વરુણ અને વૈભવણ, એ આર લોકપાલો છે. ઈશાનના પદ્મ સોમ, યમ, વૈભવણ અને વરુણ આ નામના આર લોકપાલો છે. એ જ પ્રમાણે કમણાં બેકાંતરિત કરીને અભ્યુત પચન્તના ધન્ત્રોના લોકપાલોનું કથન અહીં કર્યું છે.

વાયુકુમાર આર પ્રાણના કથા છે—(૧) કાલ, (૨) મહાકાલ, (૩) વેલમ્બ અને (૪) પ્રમહજન. તે જ પ્રકારના કથા છે—(૧) મહાજનપાલી, (૨) પાન-અન્તર, (૩) ભીતિપ અને (૪) વૈમાનિક.

ચતુર્વિધા દેવાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-ભવનવાસિનઃ ૧, વાનવ્યન્તરાઃ ૨, જ્યોતિષ્કાઃ ૩, વિમાનવાસિનઃ ૪।। સૂ૦ ૧૯।

ટીકા—“ ચમરસ્સ ” ઇત્યાદિ-ચમરસ્ય-તદાખ્યસ્ય “ સ્વલુ ” ઇતિ વાવથા લુક્કારે, અસુરેન્દ્રસ્ય અસુરકુમારરાજસ્ય દક્ષિણાત્યાસુરકુમારાધિપસ્ય ચત્વારઃ= ચતુઃસંખ્યાઃ, લોકપાલાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-સોમઃ ૧, યમઃ ૨, વરુણઃ ૩, વૈશ્રવણઃ ૪।

“ એવં વલિસ્સવિ ” ઇત્યાદિ-એવં=ચમરસ્યેવેત્વર્થઃ, વલેરપિ-તદાખ્યસ્યૌદી-વ્યાસુરકુમારરાજસ્યાપિ ચત્વારો લોકપાલાઃ પ્રજ્ઞતાઃ इत्यર્થઃ, તે ચ ક્રમાત્-સોમઃ ૧, યમઃ ૨, વૈશ્રવણઃ ૩, વરુણઃ ૪। ઇતિ । અત્ર ચમરેન્દ્રસ્ય યશ્ચતુર્થો લોકપાલઃ સોઽસ્ય તૃતીયઃ, યોઽસ્ય તૃતીયઃ સ તસ્ય ચતુર્થ ઇતિ વિશેષઃ । એવમગ્રેઽપિ સર્વત્ર વિજ્ઞેયમ્ ।

“ ધરણસ્સે ”-સ્યાદિ-ધરણસ્ય-તદાખ્યસ્ય દક્ષિણાત્યાનાગકુમારરાજસ્ય વાસી-૧ વાન વ્યન્તર-૨ જ્યોતિષ્ક-૩ ઔર વિમાનવાસી વૈમાનિક-૪ ।

વ્યાખ્યા—અસુરેન્દ્ર અસુરકુમારરાજ ચમર દક્ષિણાર્ધકા અધિપતિ હૈ । હસકે લોકપાલોમે સોમ-યમ આદિક હૈ જો કિ-પહલેહી સૂત્રાર્થમે પ્રકટિત કિયે ગયે હૈ । વલિ અસુરેન્દ્ર ઉત્તરાર્ધકે અધિપતિ હૈ । હનકેમી ચાર લોકપાલ હૈ જો-મૂલાર્થમે લિખે જા ચુકે હૈ । ચમરેન્દ્રકા ચૌથા યહાં તિસરા લોકપાલ હૈ ઔર—યહાંકા તિસરા વહાંકા ચૌથા લોકપાલ હૈ । હસી તરહ આગેમી સર્વત્ર જાનના ચાહિયે ।

ધરણ—ઔર ભૂતાનન્દ યે દો હન્દ્ર નાગકુમારોમે હોતે હૈ, ધરણ દક્ષિણાર્ધકા ઔર ભૂતાનન્દ ઉત્તરાર્ધકા અધિપતિ હૈ હનકે લોકપાલ વર્ણિત હો ગયે હૈ । ચમર ઔર વલિકે લોકપાલ જૈસેહી હનકે લોક-

વિશેષાર્થ—અસુરેન્દ્ર, અસુરકુમારરાજ ચમર દક્ષિણાર્ધનો અધિપતિ છે. તેના લોકપાલોનાં નામ સોમ, યમ આદિ સૂત્રાર્થમાં લખ્યાનુસાર સમજવા. બલિ અસુરેન્દ્ર ઉત્તરાર્ધનો અધિપતિ છે તેના ચાર લોકપાલોનાં નામ સૂત્રાર્થમાં પ્રકટ કરવામાં આવ્યાં છે ચમરેન્દ્રનો ચોથો લોકપાલ અહીં ત્રીજો લોકપાલ છે અને બલ્લીન્દ્રનો ચોથો લોકપાલ ચમરેન્દ્રનો ત્રીજો લોકપાલ છે—એટલે કે બન્નેના ત્રીજા અને ચોથા લોકપાલનાં નામે ઊલટાસૂતરી સમજવાં. એ જ પ્રમાણે આગળનું કથન પણ સમજવું.

ધરણ અને ભૂતાનન્દ, આ બે નાગકુમારોના ઈન્દ્ર છે. ધરણ દક્ષિણાર્ધનો અને ભૂતાનન્દ ઉત્તરાર્ધનો અધિપતિ છે તેમના લોકપાલોનાં નામ સૂત્રાર્થમાં આપી દીધા છે. ચમર અને બલિના લોકપાલોમા જેમ ત્રીજા અને ચોથા

‘ચત્વારો લોકપાલાઃ પ્રજ્ઞાઃ’-સ્થાનુવર્તેતે તે યથા-કાલપાલઃ ૧, કોલપાલઃ ૨, ક્ષેલપાલઃ ૩, શક્તપાલઃ ૪। ઇતિ ।

“પદ્મ ધ્યાનવસ્તે”-સ્થાદિ-પદ્મ-અનન્તરોક્તધરણેન્દ્રસ્યેષ, ધ્યાનન્દસ્ય-તદાસ્યસ્પૃધીન્યનામકુમારારામસ્ય, ચત્વારો લોકપાલાઃ પ્રજ્ઞા, તે યથા-કાલપાલઃ ૧ કોલપાલઃ ૨, ક્ષેલપાલ ૩, શક્તપાલ ૪। ઇતિ ।

“વેણુદેવસ્તે”-સ્થાદિ-વેણુદેવસ્ય-તન્માન્નો દક્ષિણાસ્યસુપર્ણકુમારેન્દ્રસ્ય ચત્વારો લોકપાલાઃ પ્રજ્ઞાઃ તે યથા-ચિત્રઃ ૧, વિચિત્ર ૨, ચિત્રપક્ષઃ ૩ વિચિત્રપક્ષઃ ૪। ઇતિ ।

“વેણુદાલિસ્તે”-સ્થાદિ-વેણુદાલે-તદાસ્યસ્પૃધીન્યનામકુમારેન્દ્રસ્ય ચત્વારો લોકપાલાઃ પ્રજ્ઞા, તે યથા-ચિત્રઃ ૧, વિચિત્રઃ ૨, વિચિત્રપક્ષઃ ૩, ચિત્રપક્ષઃ ૪। ઇતિ ।

“હરિકાન્તસ્તે”-સ્થાદિ-હરિકાન્તસ્ય-તદાસ્યસ્ય દક્ષિણાસ્યવિષ્ણુકુમારેન્દ્રસ્ય ચત્વારો લોકપાલાઃ પ્રજ્ઞા, તે યથા-પ્રમઃ ૧, સુપ્રમઃ ૨, પ્રમકાન્તઃ ૩, સુપ્રમકાન્તઃ ૪। ઇતિ ।

પાલોમેં સરુપાકા આગે પીછે કુપ્ય હૈ, ધરણકા તીસરા દૌલપાલ યહાં ચૌથે સ્થાનપર હૈ ઓર યહાંકે ચૌથે સ્થાનકા લોકપાલ ઘર્હા તીસરે સ્થાનપર આપા હૈ । વેણુદેવ-ઓર વેણુદાલિ યે દો ઇન્દ્ર સુપર્ણકુમારોમેં હોતે હૈ, દક્ષિણાર્થકે અધિપતિ વેણુદેવકે લોકપાલોમેં ચિત્ર-વિચિત્ર ચિત્રપક્ષ-વિચિત્રપક્ષ હૈ । તથા વેણુદાલિ જોકિ ઉત્તરાર્થકે અધિપતિ હૈ હસકે લોકપાલ ચિત્ર-વિચિત્ર-વિચિત્રપક્ષ ચિત્રપક્ષ હૈ યહાંમી પહેલેકા ચૌથા વૃસરેકા તીસરા હોગયા હૈ ।

હરિકાન્ત-ઓર હરિસહ પદ્મ દો ઇન્દ્ર વિષ્ણુકુમારોમેં હૈ, હનકે લોકપાલોકે નામ પ્રમ ૧, સુપ્રમ ૨, સુપ્રમકાન્ત ૩ ઓર પ્રમકાન્ત હૈ ।

લોકપાલોનાં નામ જિઠરા સુલટી કરવાનુ કહ્યુ છે તેમ અહીં પણ કહ્યુ બેઇએ. એટલે કે ધરણના ત્રીજે લોકપાલ (ચેલપાલ) ભૂતાનદનો ચાથો લોકપાલ છે અને ધરણના ચાથો લોકપાલ ભૂતાનદનો ત્રીજે લોકપાલ છે. વેણુદેવ અને વેણુદાલિ, આ બે સુપર્ણકુમારોના ધન્ત્રો છે. દક્ષિણાર્ધના અધિપતિ વેણુદેવના લોકપાલોનાં નામ ચિત્ર, વિચિત્ર, ચિત્રપક્ષ અને વિચિત્રપક્ષ છે અને ઉત્તરાર્ધના અધિપતિ વેણુદાલિના લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે-ચિત્ર વિચિત્ર, વિચિત્રપક્ષ અને ચિત્રપક્ષ. અહીં પણ ત્રીજા અને ચાથા લોકપાલોનાં નામ ઉપર સુખમ જિઠરા સુલટી સમજાયા.

હરિકાન્ત અને હરિસહ, આ બે ધન્ત્રો વિષ્ણુકુમારોના છે. હરિકાન્ત દક્ષિણાર્ધના અધિપતિ છે અને હરિસહ ઉત્તરાર્ધના અધિપતિ છે તેમનાં

“હરિસહસ્રે”-ત્યાદિ-હરિસહસ્ર-તદાખ્યસ્ય ઔદીચ્યવિદ્યુત્કુમારેન્દ્રસ્ય લોકપાલાશ્વત્વારો જ્ઞેયાઃ, તે યથા-પ્રભઃ ૧, સુપ્રભઃ ૨, સુપ્રભકાન્ત ૩, પ્રભ-કાન્તઃ ૪। ઇતિ ।

“અગ્નિસિહસ્રે”-ત્યાદિ-અગ્નિશિખસ્ય-તદાખ્યસ્ય દાક્ષિણાત્યાગ્નિકુમારેન્દ્રસ્ય લોકપાલાશ્વત્વારઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તે યથા-તેજાઃ ૧, તેજશિખઃ ૨, તેજઃકાન્તઃ ૩, તેજઃપ્રભઃ ૪। ઇતિ ।

“અગ્નિમાણસે”-ત્યાદિ-અગ્નિમાણવસ્ય-તદાખ્યસ્ય ઔદીચ્યાગ્નિકુમારેન્દ્રસ્ય લોકપાલાશ્વત્વારઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તે યથા-તેજાઃ ૧, તેજઃશિખઃ ૨, તેજઃપ્રભઃ ૩, તેજઃકાન્તઃ ૪। ઇતિ ।

“પુણસે”-ત્યાદિ-પૂર્ણસ્ય-તદાખ્યસ્ય દાક્ષિણાત્યદ્વીપકુમારેન્દ્રસ્ય લોકપાલાશ્વત્વારઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તે યથા-રૂપઃ ૧, રૂપાંશઃ ૨, રૂપકાન્તઃ ૩, રૂપપ્રભઃ ૪। ઇતિ ।

હરિકાન્ત દક્ષિણાર્ધકા અધિપતિ હૈ-ઔર હરિસહ ઉત્તરાર્ધકા । હરિસહકે લોકપાલોંકે ભી યેહી નામ હૈં પરન્તુ પ્રભકાન્ત યહાં ચૌથા હૈ ઔર સુપ્રભકાન્ત તીસરા હૈ । અગ્નિશિખ ઔર અગ્નિમાણવ યે દો ઇન્દ્ર અગ્નિકુમારોંકે હૈં, હનમેં અગ્નિશિખ દક્ષિણાર્ધકા ઔર અગ્નિમાણવ ઉત્તરાર્ધકા અધિપતિ હોતે હૈં । અગ્નિશિખકે લોકપાલ તેજાઃ-તેજઃશિખ તેજઃકાન્ત-તેજઃપ્રભ, યેહી-અગ્નિમાણવકે ભી લોકપાલ હૈં કેવલ-પહેલેકે ચૌથે યહાંકા તીસરા હો જાતા હૈં ઔર-વહાંકે તીસરા યહાંકા ચૌથા હો જાતા હૈં ઔર-વહાંકે તીસરા યહાંકા ચૌથા હોજાતે હૈં ।

પૂર્ણ-ઔર વસિષ્ઠ યે દો ઇન્દ્ર દ્વીપકુમારોંમેં હૈં હનમેં પહલા દક્ષિણાર્ધકા, ઔર-દ્વિતીય ઉત્તરાર્ધકા અધિપતિ હૈં । પૂર્ણકે ચાર લોકપાલ

લોકપાલોનાં નામ-(૧) પ્રભ, (૨) સુપ્રભ, (૩) સુપ્રભકાન્ત અને (૪) પ્રભકાન્ત છે. બન્નેનાં લોકપાલોનાં નામ સરખા છે. પણ ત્રીજા અને ચોથા લોકપાલનાં નામે ઉલ્ટાસુલ્ટી છે. હરિકાન્તના ત્રીજા લોકપાલનું નામ પ્રભકાન્ત છે ન્યારે હરિસહના ચોથા લોકપાલનું નામ પ્રભકાન્ત છે હરિકાન્તના ચોથા લોકપાલનું નામ સુપ્રભકાન્ત છે, ન્યારે હરિસહના ત્રીજા લોકપાલનું નામ સુપ્રભકાન્ત છે.

અગ્નિશિખ અને અગ્નિમાણવ એ અગ્નિકુમારોના ઇન્દ્રો છે. અગ્નિશિખ દક્ષિણાર્ધના અધિપતિ છે તેના લોકપાલો (૧) તેજઃ (૨) તેજશિખ, (૩) તેજઃકાન્ત અને (૪) તેજઃપ્રભ છે. અગ્નિમાણવ ઉત્તરાર્ધના અધિપતિ છે. તેના લોકપાલોનાં નામ (૧) તેજઃ, (૨) તેજશિખ, (૩) તેજઃપ્રભ અને (૪) તેજઃકાન્ત છે.

અહીં પણ ત્રીજા અને ચોથા લોકપાલનો ક્રમાંક ફરી બદલ્યો છે. દ્વીપકુમારોના એ ઇન્દ્રોનું નામ પૂર્ણ અને વસિષ્ઠ છે. દક્ષિણાર્ધના અધિપતિ

“૧૪ વસિષ્ઠસ્તે”-ત્યાદિ-૧૪મ્=મનનતરોક્તપૂર્ણસ્થેઃ, વસિષ્ઠસ્ય=તદા
રૂપસ્ય ઔશીન્યદીપકુમારેન્દ્રસ્ય લોકપાલાશ્વત્થારઃ પ્રજ્ઞતાઃ તે યથા-રૂપ ૧,
રૂપાંશઃ ૨, રૂપમમઃ ૩, રૂપકાન્તઃ ૪। ઇતિ ।

“જલકતસ્તે”-ત્યાદિ-જલકાન્તસ્ય-સન્ધામકસ્ય દાક્ષિનાત્યોદધિકુમારે
ન્દ્રસ્ય લોકપાલાશ્વત્થારઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તે યથા-જલઃ ૧, જલરૂપ ૨, જલકાન્તઃ
૩, જલમમઃ ૪। ઇતિ ।

“જલપ્પદસ્તે”-ત્યાદિ-જલપ્રમસ્ય-તદાલ્પસ્યૌશીન્યોદધિ-કુમારેન્દ્રસ્ય
લોકપાલાશ્વત્થારઃ પ્રજ્ઞતાઃ તે યથા-જલઃ ૧, જલરૂપ ૨, જલમમઃ ૩, જલ
કાન્તઃ ૪। ઇતિ ।

“અમિતગત્તે”-ત્યાદિ-અમિતગતેઃ-તદાલ્પસ્ય દાક્ષિનાત્યસ્ય દિક્કુ-
મારેન્દ્રસ્ય લોકપાલાશ્વત્થારઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તે યથા-સ્થિતિગતિઃ ૧, સ્થિતિગતિ ૨,
સિદ્ધિગતિઃ ૩, સિદ્ધિવિક્રમગતિઃ ૪। ઇતિ ।

હસ પ્રકારસે હૈં-રૂપ ૧, રૂપાંશ ૨, રૂપકાન્ત ૩, ઔર રૂપમમ ૪, ।
પેહી-લોકપાલ વસિષ્ઠકે હૈં, પર તીસરેમેં ઔર ચૌથેમેં હેરફેર હુવા હૈં ।
પૂર્ણકા જો ચૌથા લોકપાલ હૈં વહ યહાં તીસરા પરિગણિત હુવા હૈં ।
ઔર જો તીસરા લોકપાલ હૈં વહ ચૌથા પરિગણિત હુવા હૈં ।
જલકાન્ત ઔર જલપ્રમ પે દો હન્દ્ર પ્રવધિકુમારોમેં હૈં । इनमें जलकान्त
दक्षिणाधिका और जलप्रम उत्तराधिका अधिपति हॆं जलकान्तके जल १,
जलरूप २, जलकान्त ३, और जलप्रम पे चार लोकपाल हॆं, पर वहाँ
जो चौथा है वही यहाँ तीसरा होता है और-जो वहाँ तीसरा है वह
यहाँ चौथा है । अमितगति और अमितवाहन पे दो हन्द् दिककुमारोमें

પૂજા અને ઉત્તરાધીના અધિપતિ વસિષ્ઠ છે પૂજાના ચાર લોકપાલો આ
પ્રમાણે છે—(૧) રૂપ, (૨) રૂપાંશ, (૩) રૂપકાન્ત અને (૪) રૂપમમ.

વસિષ્ઠના લોકપાલોનાં નામ પણ પૂજાના લોકપાલો જેવા જ છે માત્ર
ત્રીજા અને ચોથાનો ક્રમ ફરી બદલ છે.

દક્ષિકુમારેના બે હન્દ્રોના નામ જલકાન્ત અને જલપ્રમ છે જલકાન્ત
દક્ષિણાધીનો અધિપતિ છે અને જલપ્રમ ઉત્તરાધીનો અધિપતિ છે

જલકાન્તના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) જલ, (૨)
જલરૂપ, (૩) જલકાન્ત અને (૪) જલમમ. જલપ્રમના લોકપાલોના નામ પણ

જલકાન્તના લોકપાલો જેવા જ છે પણ ત્રીજા અને ચોથાનો ક્રમ ફરી બદલ છે

દિક્કુમારેના બે હન્દ્રોના નામ અમિતગતિ અને અમિતવાહન છે

અમિતગતિના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) સ્થિતિગતિ, (૨)

“अमियवाहनस्से”-त्यादि-अमितवाहनस्य = तदाख्यास्यौदीच्यदिवकुमारेन्द्रस्य लोकपालाश्चत्वारः प्रज्ञप्ताः, ते यथा-त्वरितगतिः १, क्षिप्रगतिः २, सिंहविक्रमगतिः ३, सिंहगतिः ४। इति ।

“वेलम्बस्से”-त्यादि-वेलम्बस्य-तदाख्यस्य दक्षिणात्यवायुकुमारेन्द्रस्य लोकपालाश्चत्वारः प्रज्ञप्ताः, ते यथा-कालः १, महाकालः २, अञ्जनः ३, रिष्टः ४। इति ।

“प्रभञ्जनस्से”-त्यादि - प्रभञ्जनस्य = तदाख्यस्यौदीच्यवायुकुमारेन्द्रस्य लोकपालाश्चत्वारः प्रज्ञप्ताः, ते यथा-कालः १, महाकालः, रिष्टः ३, अञ्जनः ४। इति ।

“घोसस्से”-त्यादि-घोषस्य-तदाख्यस्य दक्षिणात्य - स्तनितकुमारेन्द्रस्य लोकपालाश्चत्वारः प्रज्ञप्ताः, ते यथा-आवर्तः १, व्यावर्तः २, नन्दिकावर्तः ३, महानन्दिकावर्तः ४ ।

हैं, अमिगतिके लोकपाल त्वरितगति-क्षिप्रगति-सिंहगति और सिंहविक्रमगति हैं तथा अमितवाहनके भी येही लोकपाल हैं केवल अन्तर इतनाही है-कि वहाँ जो सिंहविक्रमगति चौथा है वही यहाँ तीसरा लोकपाल हो जाता है और वहाँ जो तीसरा है वह यहाँ चौथा बन जाता है ।

वेलम्ब और प्रभञ्जन ये दो इन्द्र वायुकुमारोंमें हैं । इनमें वेलम्ब दक्षिणार्धका और प्रभञ्जन उत्तरार्धका अधिपति हैं, वेलम्बके लोकपालोंमें काल १, महाकाल २, अञ्जन ३ और रिष्ट हैं । और प्रभञ्जनके भी येही लोकपाल हैं अन्तर इतनाही है कि वेलम्बका चौथा जो रिष्ट लोकपाल है वह अञ्जनका तीसरा है । घोष और महाघोष ये दो इन्द्र स्तनितकुमारोंमें हैं इनमें घोष दक्षिणार्धका और महाघोष उत्तरार्धका अधिपति हैं, घोषके लोकपालोंमें आवर्त-व्यावर्त-नन्दिकावर्त और महा-

क्षिप्रगति, (३) सिंहगति अने (४) सिंहविक्रमगति. अमितवाहनना लोकपालाना नाम पणु अथा ४ छे पणु अर्ही (३) सिंहविक्रमगति ने त्रीणि समञ्जो अने (४) सिंहगति ने योथो समञ्जो. वायुकुमारोना भे धन्द्रोनां नाम वेलम्ब अने प्रभञ्जन छे. वेलम्ब दक्षिणार्धना अधिपति छे अने प्रभञ्जन उत्तरार्धना अधिपति छे वेलम्बना लोकपालानां नाम--(१) काल, (२) महाकाल, (३) अञ्जन अने (४) रिष्ट छे. प्रभञ्जनना लोकपालानां नाम पणु काल, महाकाल, रिष्ट अने अञ्जन छे. अर्ही त्रीणि अने योथा लोकपालना कर्म करी गयो छे

स्तनितकुमारोना भे धन्द्रोनां नाम घोष अने महाघोष छे. घोष दक्षिणार्धना अधिपति छे अने महाघोष उत्तरार्धना अधिपति छे. घोषना चार लोकपालानां नाम आ प्रमाणे छे--(१) आवर्त, (२) व्यावर्त, (३) नन्दिकावर्त

“મહાઘોસસ્તે”—ત્યાદિ-મહાઘોષસ્ય = તદાકપસ્યૌઘીષ્યસ્તનિતકુમારે
ન્દ્રસ્ય લોકપાલામત્સારઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તે યયા-આવર્તઃ ૧, ધ્યાવર્તઃ ૨, મહાનન્દિકા
વર્તઃ ૩, મન્દિકાવર્તઃ ૪। દશમવનપતીનાં દક્ષિણોચરમેદેન વિશ્વતેરિન્દ્રાનામેતે
લોકપાલા વર્ણિતાઃ । ૨૦। ૩તિ ।

“સહસ્તે”—ત્યાદિ-શકસ્ય-સૌષર્મેન્દ્રસ્ય લોકપાલામત્સારઃ પ્રજ્ઞતાઃ તે
યયા-સોમઃ ૧, યમઃ ૨, વરુણઃ ૩, વૈશ્રવણઃ ૪। એવં એ લોકપાલાઃ સનત્કુમાર
બ્રહ્મલોકમદાશુકમાજતેન્દ્રાણામપિ ઘોષ્યાઃ । ૩તિ ।

“ઈસાનસ્તે”—ત્યાદિ-ઈશાનસ્ય-દ્વિતીયદેવલોકેન્દ્રસ્ય લોકપાલામ
ત્સારઃ પ્રજ્ઞતા તે યયા-સોમઃ ૧, યમઃ ૨, વૈશ્રવણ ૩, વરુણ ૪ । ૩તિ ।

નન્દિકાવર્ત હૈં મહાઘોષકે મી યેહી લોકપાલ હોતે હૈં કેવલ અન્તર યહી
હૈં કિ-ઘોષકા તોસરા લોકપાલ મહાઘોષકા ઘોષા થન જાતા હૈં ઓર
મહાઘોષકા ઘોષા લોકપાલ ઘોષકા તોસરા ગિના જાતા હૈં । હસ પ્રકાર
૧૦-મવનપતિયોકે ૨૦ બીસ ઇન્દ્રોકે-લોકપાલ કહ વિચે ગયે, અવ-શક-
વિકે લોકપાલ કહે જાતે હૈં-યહ શક સૌષર્મકા ઇન્દ્ર હૈં હસકે લોકપાલ
ચાર કહે ગયે હૈં જૈસે—સોમ ૧, યમ ૨, વરુણ ૩, ઓર વૈશ્રવણ ૪ ।
યેહી લોકપાલ તોસરે સનત્કુમારકે, ૫-વે બ્રહ્મલોકકે, ૭-વે મહાશુકકે,
ઓર ૧૦-દશવે પ્રાણતેન્દ્રકે મી લોકપાલ હોતે હૈં એસા જાનના ચાહિયે ।
“ઈસાનસ્તે”—ઈત્યાદિ । ઈશાન નામકા જો દ્વિતીય દેવલોકેન્દ્ર હૈં, હસકે
લોકપાલ ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-સોમ ૧, યમ ૨, વૈશ્રવણ ૩, વરુણ ૪ ।
“એવં પગતરિયા”—ઈત્યાદિ ।

અને (૪) મહાન ટીકાવડ મહાઘોષના લોકપાલોનાં નામ, પણ ઘોષના લોક-
પાલો એવા જ છે પણ મહાઘોષના ત્રીજા અને ચોથા લોકપાલોનાં નામ મહા-
નન્દીકાવડ અને નન્દિકાવડ છે આમ ત્રીજા અને ચોથાનો કમ ફરી બધ છે.

આ રીતે હસ ભરનપતિઓનાં ૨૦ ઇન્દ્રોના લોકપાલોનું કથન કરીને
હવે શકાદિના લોકપાલોનાં નામ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—

શક સૌષર્મકથનો ઇન્દ્ર છે તેના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ પ્રમાણે
છે—(૧) સોમ, (૨) યમ, (૩) વરુણ અને (૪) વૈશ્રવણ.

ત્રીજા સનત્કુમારના, પાશ્વર્માં બ્રહ્મલોકના, ચાતર્માં મહાશુકના અને ૧૦
માં પ્રાણતેન્દ્રના લોકપાલોના નામ પણ શકના લોકપાલો એવા જ છે. ઈશાન
નામના બીજા દેવલોકના ઇશાનેન્દ્ર નામના ઇન્દ્રના ચાર લોકપાલોનાં નામ આ
પ્રમાણે છે—(૧) સોમ, યમ, (૩) વૈશ્રવણ અને (૪) વરુણ.

“ एवं एगंतरिया ” इत्यादि—एकान्तरिताः—अन्तरं—व्यवधानं, तज्जात-
मेवा—मित्यन्तरिताः, एकेनान्तरिता एकान्तरिताः=एकव्यवहिता लोकपालाश्च-
त्वारश्चत्वारो ‘ यावद् अच्युतस्य ’—अच्युतपर्यन्तानां=शक्रेशानातिरिक्तानां सनत्कु-
मारादारभ्याच्युतपर्यन्तानामष्टानामिन्द्राणां शक्रेशानयोः प्रत्येकं यथाक्रमात् सोम-
यम-वरुण-वैश्रवणाः सोम-यम-वैश्रवण-वरुणा उक्तास्तथा प्रत्येकं बोध्याः, अर्थाग्रथा
शक्रस्य तथेशानमन्तरीकृत्य सनत्कुमारस्य, यथेशानस्य तथा सनत्कुमारमन्तरी-
कृत्य माहेन्द्रस्य, एवमेकैकमन्तरीकृत्य शक्रेशानवदच्युतपर्यन्तेन्द्राणां चत्वारश्च-
त्वारो लोकपाला बोध्याः, तथा च—शक्रश्च—सनत्कुमार ब्रह्म-महाशुक प्राणतेन्द्रा-

શક—ઔર ईशानसे अतिरिक्त सनत्कुमारसे लेकर अच्युत पर्यन्त
आठ इन्द्रोंके, और शक, एवं—ईशानके प्रत्येकका, जैसे—क्रमसे सोम,
यम, वरुण और वैश्रवण । सोम, यम, वैश्रवण और वरुण ये लोकपाल
कहे गये हैं वैसेही प्रत्येकके लोकपालों को जानना चाहिये । तात्पर्य इस
कथनका ऐसा है कि—शक के जो लोकपाल कहे गये हैं वेही लोकपाल
ईशानको अन्तरित करके सनत्कुमारके हैं ऐसा कहना चाहिये । तथा—जैसे
लोकपाल ईशानके कहे गये हैं वैसेही लोकपालको ‘अन्तरित करके
माहेन्द्रके हैं ऐसे कहे गये हैं । इस तरह एक एकको अन्तरित करके
शक और ईशानके जैसे अच्युत पर्यन्त इन्द्रोंके चार—२ लोकपाल
जानना चाहिये । तथाच—शकके सदृश सनत्कुमार, ब्रह्म, महाशुक,
और प्राणत इन इन्द्रोंके लोकपाल हैं । और ईशान सदृश माहेन्द्र,

“ एवं एगंतरिया ” इत्यादि—

શક અને ઈશાન સિવાયના સનત્કુમારથી લઇને અચ્યુત પર્યન્તના આઠ
ઈન્દ્રોના લોકપાલોનાં નામો અત્યુકમે શક અને ઈશાનના લોકપાલનાં નામો
પ્રમાણે સમજવા એટલે કે ત્રીજાના (સનત્કુમારના) ચાર લોકપાલોનાં નામ
સોમ, યમ, વરુણ અને વૈશ્રવણ છે, માહેન્દ્ર (ચોથા દેવલોકનો ઈન્દ્ર) ના
લોકપાલો સોમ, યમ, વૈશ્રવણ અને વરુણ છે આ રીતે એક એક દેવલોકને
અન્તરિત કરીને બે લોકપાલોનાં નામો આપવામાં આવે, તો તે નામો સરખાં
આવે છે જેમકે શકની જેમ સનત્કુમાર, બ્રહ્મ, મહાશુક અને પ્રાણત, આ
ચાર દેવલોકના ઈન્દ્રોના લોકપાલોનાં નામ સોમ, યમ, વરુણ અને વૈશ્રવણ
છે. અને માહેન્દ્ર, લાન્તક, સહસ્રાર અને અચ્યુતના ઈન્દ્રોના લોકપાલોનાં નામ

છાયા—ચતુર્વિધં પ્રમાણં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથથા—દ્રવ્યપ્રમાણં ૧, ક્ષેત્રપ્રમાણં ૨, કાલપ્રમાણં ૩, ભાવપ્રમાણમ્ ૪।। સૂ. ૨૦।

ટીકા—“ ચતુર્વિધે પ્રમાણે ”. ઇત્યાદિ-પ્રમાણં-પ્રમાણમ્, યદ્વા-પ્રમીયતે=પરિચ્છિદ્યતેઽનેનેતિ પ્રમાણં, તત્ચતુર્વિધં-ચતુષ્પ્રકારં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથથા-દ્રવ્યપ્રમાણં, ક્ષેત્રપ્રમાણં, કાલપ્રમાણં, ભાવપ્રમાણમ્। તત્ત્વ દ્રવ્યપ્રમાણમ્-દ્રવ્ય-મેવ પ્રમાણં દ્રવ્યપ્રમાણમ્, યદ્વા-દ્રવ્યેણ દળાદિના પ્રમાણં પરિચ્છેદ ઇતિ, યથા દળાદિના દ્રવ્યેણ ધનુરાદિના વા શરીરાદે પ્રમાણં ક્રિયતે, યદ્વા-દ્રવ્યસ્ય જીવાદે પ્રમાણમ્, યદ્વા-પરમાણ્વાદૌ દ્રવ્યે પર્યાયાણાં પ્રમાણમ્-દ્રવ્યપ્રમાણામ્, તત્ત્વ દ્રવ્ય પ્રમાણં દ્વિવિધં-પ્રદેશનિષ્પન્નં ૧, વિભાગનિષ્પન્નં ૨ ચ, તત્ત્વાઽઽર્થ-પરમાણ્વાથ-

સૂત્રાર્થ-પ્રમાણ ચાર પ્રકારકા કહા ગયાહૈ, જૈસે-દ્રવ્યપ્રમાણ, ક્ષેત્રપ્રમાણ, કાલપ્રમાણ ઔર ભાવપ્રમાણ।

ટીકાર્થ — પ્રમાણ (જાનના) કા નામ પ્રમાણ હૈ અથવા-જિસ્કે દ્વારા જાના જાતા હૈ વહ પ્રમાણ હૈ। યહ પ્રમાણ દ્રવ્ય આદિકે ભેદસે જો ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ ઉસ્કા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ દ્રવ્યરૂપ જો પ્રમાણ હૈ વહ દ્રવ્યપ્રમાણ હૈ અથવા-દળાદિ દ્રવ્યસે જો પરિચ્છેદ હોતા હૈ વહ દ્રવ્યપ્રમાણ હૈ જૈસે દળાદિ દ્રવ્યસે, અથવા ધનુષ આદિસે શરીરકા માપ કિયા જાતા હૈ, અથવા-જીવાદિ દ્રવ્યકા જો પ્રમાણ હૈ વહ દ્રવ્યપ્રમાણ હૈ। અથવા-પરમાણુ આદિમેં પર્યાયોંકે પ્રમાણ હૈ વહ દ્રવ્યપ્રમાણ હૈ। પ્રદેશ નિષ્પન્ન ઔર વિભાગ નિષ્પન્નકે ભેદસે દ્રવ્યપ્રમાણ દો પ્રકારકા કહા ગયા હૈ। પરમાણુસે લેકર અનન્ત પ્રદેશવાલે દ્રવ્ય તત્કાલ જો પ્રમાણ હૈ વહ પ્રદેશ નિષ્પન્ન દ્રવ્ય પ્રમાણ હૈ।

સૂત્રાર્થ-પ્રમાણના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે, તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) દ્રવ્યપ્રમાણ, (૨) ક્ષેત્રપ્રમાણ, (૩) કાલપ્રમાણ અને (૪) ભાવપ્રમાણ

ટીકાર્થ-પ્રમાણને પ્રમાણ કહે છે ‘ પ્રમાણિતિ ’ એટલે જાણવું તે. જેના દ્વારા જાણી શકાય છે, તે પ્રમાણ છે હવે તેના ચાર ભેદોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે-દ્રવ્યરૂપ જે પ્રમાણ છે તેને દ્રવ્યપ્રમાણ કહે છે. અથવા દંડાદિ દ્રવ્યથી (પદાર્થથી) જે પરિચ્છેદ (જ્ઞાન-જનકારી) થાય છે તેનું નામ દ્રવ્ય પ્રમાણ છે જેમકે-દંડ આદિ દ્રવ્યથી અથવા ધનુષ આદિથી શરીર આદિનું માપ જાણી શકાય છે, તે માપ દ્રવ્યપ્રમાણ રૂપ ગણાય છે. અથવા-જીવાદિ દ્રવ્યનું જે પ્રમાણ છે, તે દ્રવ્યપ્રમાણ છે અથવા પરમાણુ આદિમાં પર્યાયોનું જે પ્રમાણ છે તે દ્રવ્યપ્રમાણ છે પ્રદેશનિષ્પન્ન અને વિભાગ નિષ્પન્નના ભેદથી દ્રવ્યપ્રમાણ બે પ્રકારનું કહ્યું છે. પરમાણુથી લઈને અનન્ત પર્યાયના પ્રદેશવાળા દ્રવ્યનું જે

નન્ત્રપ્રદેશિકાન્ત ૧, દ્વિતીયં પચ્ચત્તિષ-માનો-ન્માના ડચમાન ગણિત પ્રતિમાનમેવાત્,
તત્ર માન-ધાન્યાદિમાન સટિકાધિરૂપમ્ ૧, ઠન્માન-તુલા કર્પાદિકમ્ ૨, અ-
માન-હસ્તચિતસ્પ્યાદિકમ્ ૩, ગણિતમ્-एकादिकम् ૪, પ્રતિમાન-ગુનાચ્છાદિ-
કમ્ ૫ । इति द्रव्यप्रमाणम् । ૧ ।

“ક્ષેત્રપ્રમાણમ્”—ક્ષેત્રસ્ય=આકાશસ્ય પ્રમાણ્ય ક્ષેત્રપ્રમાણમ્, તથા ત્રિવિધ-
પ્રદેશનિષ્પન્ન ૧, વિભાગનિષ્પન્ન ૨, ચ, તથા પ્રદેશનિષ્પન્નમ્-एकप्रदेशावगाढ-
सख्येयप्रदेशावगाढान्तम् ૧, વિભાગનિષ્પન્નમ્ - अङ्गुल्यादिकम् ૨ । इति
क्षेत्रप्रमाणम् । ૨ ।

વિભાગ નિષ્પન્ન દ્રવ્ય પ્રમાણ પાંચ પ્રકારકા છે, માન ઠન્માન, અવમાન,
ગણિત ઓર પ્રતિમાન “સેર”—આદિ માપનરૂપસે ઘડ ધાન્ય इतना
હે હસ પ્રકાર નિર્ણાયક પ્રમાણ હોતા હે । તુલા-કર્પ આદિ ઠન્માન હોતા
હે । હસ્ત-ચિતસ્તિ આદિક અવમાન હોતા હે । એક દો આદિ સંખ્યા
ગણિત હોતા હે । ગુંજા-(કરજની) આદિ પ્રતિમાન હોતા હે, હસ પ્રકાર
સે ઘડ દ્રવ્યપ્રમાણ હે—૧

આકાશકા જો માપ (કૂર તકકા હિમાવ) હે ઘડ ક્ષેત્રપ્રમાણ હે ।
ઘડ ક્ષેત્રપ્રમાણની પ્રદેશનિષ્પન્ન ઓર વિભાગનિષ્પન્નકે મેટ્રસે દો પ્રકાર
રકા હે એક પ્રદેશાવગાહસે લેકર અસંખ્યાત પ્રદેશાવગાહ તક જો ક્ષેત્ર
હે ઘડ પ્રદેશનિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ હે । અંગુલી આદિ જો પ્રમાણ હે ઘડ
વિભાગનિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ હે ।

પ્રમાણ છે, તેનું નામ પ્રદેશ નિષ્પન્ન દ્રવ્યપ્રમાણ છે વિભાગ નિષ્પન્ન દ્રવ્ય
પ્રમાણના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર છે—માન ઓ માન અવમાન, ગણિત અને
પ્રતિમાન. ચેર આદિ માનરૂપ દ્રવ્યપ્રમાણ છે તેની મદદથી ‘આ ધાન્ય
આટલું છે ’ આ પ્રકારનું નિર્ણાયક પ્રમાણ નીચે છે. તુલા-કર્પ આદિ ઠ માન
રૂપ હોય છે હસ્ત, અંગુ આદિ રૂપ અવમાન હોય છે એક દો આદિ સંખ્યા
રૂપ ગણિત હોય છે ગુંજા (કરજની) આદિ રૂપ પ્રતિમાન હોય છે
આકાશનું જે માપ (કૂર મુખીનો હિસાબ) છે તેને શેત્રપ્રમાણ કહે છે તે
ક્ષેત્રપ્રમાણના પાંચ પ્રદેશ નિષ્પન્ન અને વિભાગ નિષ્પન્ન નામના બે લેક ૫૦
છે એક પ્રદેશાવગાહથી લઈને અસંખ્યાત પ્રદેશાવગાહ પશ્ચન્તનું જે ક્ષેત્ર છે
તેને પ્રદેશ નિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ કહે છે અંગુલી (આંગળી) આદિ ૭ પ્રમાણ
છે તેને વિભાગ નિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ કહે છે

“કાલપ્રમાણમ્”—કાલસ્ય — સમયસ્ય પ્રમાણ-માનં કાલપ્રમાણમ્, તદ્વિવિધં-પ્રદેશનિષ્પન્નં ૧ વિભાગનિષ્પન્નં ૨ ચ, તત્રાઽઽઘમ્-એકસમયસ્થિત્યાચ-સંખ્યેયસમયસ્થિત્યન્તમ્ ૧, દ્વિતીયં-સમયાવલિકાદિકમ્ ।

નનુ દ્રવ્યપ્રમાણમેવોચ્યતાં દ્રવ્યત્વેન ક્ષેત્ર-કાલયોરપિ ગ્રહણસમ્ભવેન તત્પ્રમાણયોરપ્યત્રૈવાન્તર્ભાવાત્ પૃથક્ તદુપન્યાસો વ્યર્થ इति चेदुચ્યતે-જીવાદિદ્રવ્યવિશેષકત્વેન ક્ષેત્ર-કાલયોસ્તત્પર્યાયત્વેન દ્રવ્યાત્ ક્ષેત્ર-કાલયોર્વિશિષ્ટતાઽસ્તીતિ દ્રવ્યત્વેનૈકત્વેઽપિ પર્યાયત્વેન તયોર્ભેદં સૂચયિતું ક્ષેત્રકાલયોઃ પ્રમાણે પૃથગુપન્યન્તે । ૩ । इति कालप्रमाणम् । ३ ।

સમયકા જો પ્રમાણ હૈ વહ કાલપ્રમાણ હૈ, યહ કાલપ્રમાણભી દો પ્રકારકા હૈ । એક પ્રદેશનિષ્પન્ન કાલપ્રમાણ ઔર દૂસરા વિભાગનિષ્પન્ન કાલપ્રમાણ હૈ, इनमें-एक समयकी स्थितिसे लेकर जो असंख्यान समय तककी स्थिति है वह प्रदेशनिष्पन्न कालप्रमाण है । तथा-समय आवलिका आदिक जो प्रमाण है वह विभागनिष्पन्न कालप्रमाण है ।

શબ્દા—કેવલ એક દ્રવ્યપ્રમાણહી કહના ચાહિયે-૩ ક્યોંકિ-દ્રવ્યત્વ રૂપસે ક્ષેત્ર ઔર કાલ इनका भी ग्रहण होही जायगा तो फिर इनका प्रमाण भी यहाँ पर अन्तर्भूत हो जायगा । अतः-पृथक् रूपसे इनका उपन्यास व्यर्थ है—३

૭૦—ક્ષેત્ર ઔર કાલ જીવાદિ દ્રવ્યોંકે વિશેષક હોનેસે उनके पर्याय रूप होते हैं, अतः—द्रव्यसे क्षेत्रकालमें विशिष्टता है, इसलिये

સમયતું જે પ્રમાણ છે તેને કાળપ્રમાણ કહે છે તે કાળપ્રમાણ પણ બે પ્રકારતું છે-(૧) પ્રદેશ નિષ્પન્ન કાળપ્રમાણ અને (૨) વિભાગ નિષ્પન્ન કાળ પ્રમાણ. એક સમયની સ્થિતિથી લઇને જે અસંખ્યાત સમય પર્યાન્તની સ્થિતિ હોય છે તેને પ્રદેશ નિષ્પન્ન કાળપ્રમાણ કહે છે તથા સમય, આવલિકા આદિ રૂપ જે કાળપ્રમાણ છે તેને વિભાગ નિષ્પન્ન કાળપ્રમાણ કહે છે.

શંકા—પ્રમાણના ચર પ્રકાર કહેવાની શી જરૂર છે માત્ર દ્રવ્યપ્રમાણ રૂપ એક જ પ્રમાણ કહેવું નેઇએ, કારણ કે દ્રવ્યત્વરૂપે ક્ષેત્ર અને કાળ પણ ગ્રહણ થઇ જાય છે, તેથી તેમનું પ્રમાણ પણ દ્રવ્યપ્રમાણમાં જ અન્તર્ભૂત થઇ જવું નેઇએ. છતાં અહીં અલગ અલગ પ્રકાર રૂપે તેમની પ્રરૂપણા શા માટે કરવામાં આવી છે ?

ઉત્તર—ક્ષેત્ર અને કાળ જીવાદિ દ્રવ્યોના વિશેષક હોવાથી તેમની પર્યાય રૂપ હોય છે. તેથી દ્રવ્ય કરતાં ક્ષેત્ર અને કાળમાં વિશિષ્ટતા છે. તે કારણે

નન્તપ્રદેશિકાન્ત ૧, ત્રિતીય પચ્ચચિષ-માનો-ન્માના ડવમાન ગણિત પ્રતિમાનપ્રેદાદ, તપ માન-ધાન્યાદિમાન સટિકાદિસ્વપ્ ૧, ઉન્માન-તુલા કર્પાદિકમ્ ૨, અન્માન-સ્તવિતસ્સ્યાવિકમ્ ૩, ગણિતમ્-एकादिकम् ૪, પ્રતિમાન-શુમારણાદિકમ્ ૫ । इति द्रव्यप्रमाणम् । ૧ ।

“ ક્ષેત્રપ્રમાણમ્ ”—ક્ષેત્રસ્ય=આકાશસ્ય, પ્રમાણ્ય ક્ષેત્રપ્રમાણમ્, તથા ત્રિવિધ-પ્રદેશનિષ્પન્ન ૧, વિભાગનિષ્પન્ન ૨ વ, તપ પ્રદેશનિષ્પન્નમ્—एकप्रदेशावगाढासप्तव्येषप्रदेशावगाढान्तम् ૧, વિભાગનિષ્પન્નમ્—अङ्गुल्यादिकम् ૨ । इति क्षेत्रप्रमाणम् । ૨ ।

વિભાગ નિષ્પન્ન દ્રવ્ય પ્રમાણ પાંચ પ્રકારકા હૈ, માન, ઉન્માન, અવમાન, ગણિત ઓર પ્રતિમાન “ સેર ”—આદિ માપનરૂપસે યહ ધાન્ય, રતના હૈ રસ પ્રકાર નિર્ણાયક પ્રમાણ હોતા હૈ । તુલા—કર્પ આદિ ઉન્માન હોતા હૈ । રસ્ત—વિતસ્તિ આદિક અવમાન હોતા હૈ । પક દો આદિ સવ્યા ગણિત હોતા હૈ । શુંઝા—(કરજની) આદિ પ્રતિમાન હોતા હૈ, રસ પ્રકારસે યહ દ્રવ્યપ્રમાણ હૈ—૧

આકાશકા જો માપ (વૂર તકકા હિસાબ) હૈ યહ ક્ષેત્રપ્રમાણ હૈ । યહ ક્ષેત્રપ્રમાણમી પ્રદેશનિષ્પન્ન ઓર વિભાગનિષ્પન્નકે મેદસે દો પ્રકારકા હૈ । એક પ્રદેશાવગાહસે લેકર અસવ્યાત પ્રદેશાવગાહ તક જો ક્ષેત્ર હૈ યહ પ્રદેશનિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ હૈ । અઙ્ગુલી આદિ જો પ્રમાણ હૈ યહ વિભાગનિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ હૈ ।

પ્રમાણ છે, તેનું નામ પ્રદેશ નિષ્પન્ન દ્રવ્યપ્રમાણ છે । વિભાગ નિષ્પન્ન દ્રવ્યપ્રમાણના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર છે—માન, ઉન્માન, અવમાન, ગણિત અને પ્રતિમાન । યેર આદિ માનરૂપ દ્રવ્યપ્રમાણ છે, તેની મરદમી “ આ માન આટલું છે, ” આ પ્રકારનું નિર્ણાયક પ્રમાણ નીચે છે । તુલા-કર્પ આદિ ઉન્માન રૂપ હોય છે । રસ્ત, યુક્તિ આદિ રૂપ અવમાન હોય છે । બેક બે આદિ ગણિત રૂપ ગણિત હોય છે । શુંઝા (કરજની) આદિ રૂપ પ્રતિમાન હોય છે । આકાશનું ને માપ (ફૂર મુખીનો હિસાબ) છે તેને ક્ષેત્રપ્રમાણ કહે છે । તે ક્ષેત્રપ્રમાણના પાંચ પ્રદેશ નિષ્પન્ન અને વિભાગ નિષ્પન્ન નામના બે લોક પડે છે । બેક પ્રદેશાવગાહથી લઈને અસવ્યાત પ્રદેશાવગાહ પર્વતનું ને ક્ષેત્ર છે । તેને પ્રદેશ નિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ કહે છે । અઙ્ગુલી (આંગળી) આદિ ને પ્રમાણ છે તેને વિભાગ નિષ્પન્ન ક્ષેત્રપ્રમાણ કહે છે ।

વિજ્ઞુકુમારિમહત્તરિયાઓ પળ્લન્તાઓ, તં જહા-ચિત્તા ૧, ચિત્ત-
કળ્લગા ૨, સતેરા ૩, સોત્તામળી ૪ । સૂ. ૨૧ ॥

સક્કસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરત્તો મજ્ઞિપરિસાણ દેવાણં ચત્તારિ-
પલિઓવમાઈં ઠિઈં પળ્લન્તા । ઈસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવ-
રન્નો મજ્ઞિમપરિસાણ દેવીણં ચત્તારિપલિઓવમાઈં ઠિઈં
પળ્લન્તા ॥ સૂ. ૨૨ ॥

ચત્તવિહે સંસારે પળ્લન્તે, તં જહા-દવ્વસંસારે ૧, ચેત્ત-
સંસારે ૨, કાલસંસારે ૩, ભાવસંસારે ૪ । સૂ. ૨૩ ।

હાયા—ચત્તસો દિક્કુમારીમહત્તરિકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—રૂપા ૧, રૂપાંશા
૨, સુરૂપા ૩, રૂપાવતી ૪ । ચત્તસો વિદ્યુત્કુમારીમહત્તરિકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—
ચિત્રા ૧, ચિત્રકનકા ૨, શતેરા ૩, સૌત્રામણિઃ ૪ । સૂ. ૨૧ ।

શક્રસ્ય સ્વલ્લ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય મધ્યમપરિપદિ દેવાનાં ચતુઃ-પલ્લયોપમા
સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા । ઈશાનસ્ય સ્વલ્લ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય મધ્યમપરિપદિ દેવીનાં
ચતુઃપલ્લયોપમા સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા । સૂ. ૨૨ ।

દેવાધિકારકો લેકર હી અવ સૂત્રકાર દિક્કુમારિ મહત્તરિકાઓંકા
નિરૂપણ ઇસ ચાર સૂત્રોંસે કરતે હૈં ।

“ચત્તારિ દિસાકુમારિમહત્તરિયાઓ પળ્લન્તાઓ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—દિક્કુમારિ મહત્તરિકાઈં ચાર પ્રકારકી કહી ગઈં હૈં । જૈસે—રૂપા ૧,
રૂપાંશા ૨, સુરૂપા ૩ ઓર રૂપાવતી ૪ । (૨૧) વિદ્યુત્કુમારી મહત્તરિ-
કાઈં ચાર પ્રકારકી કહી ગઈં હૈં । જૈસે—ચિત્રા ૧, ચિત્રકનકા ૨ શતેરા ૩,
ઓર સૌત્રામણિ ૪, । દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રકી મધ્યમ પરિપદામેં દેવોંકી

દેવાધિકારની અપેક્ષાએ હવે સૂત્રકાર દિક્કુમારી મહત્તરિકાઓંનું નિરૂપણ
આ ચાર સૂત્રો દ્વારા કરે છે—“ચત્તારિ દિસાકુમારી મહત્તરિયાઓ પળ્લ-
ન્તાઓ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—દિક્કુમારિ મહત્તરિકાઓ ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) રૂપા, (૨) રૂપાંશા
(૩) સુરૂપા અને (૪) રૂપાવતી વિદ્યુત્કુમારી મહત્તરિકાઓ પણ નીચે પ્રમાણે
ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) ચિત્રા, (૨) ચિત્રકનકા, (૩) શતેરા અને (૪)
સૌત્રામણિ. દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રની મધ્યમ પરિપદામાં દેવોની ચાર પલ્લયોપમની

“માવપમાણ” — માવ એ માવાનો વા પ્રમાણ માવપમાણ, તથા ત્રિવિધ-
 ગુણ-નય-સંસ્થામેદાત્, સપ્ત ગુણા-જીવસ્ય જ્ઞાન વર્ણન-ચારિત્રાભિ, સપ્ત જ્ઞાન-
 પ્રત્યક્ષા ડ્ઞુમાનો-પમાના-ડ્ઞગમરૂપ પ્રમાણમિતિ, વર્ણન-તત્ત્વમદ્ધાનમ્, ચારિત્ર-
 સાધ્યવિરતિસ્પમ્, નયમ-નૈગમાદયઃ, સંસ્થા-અકાશિત્રિવિધતુરાદિકેતિ માવપમા-
 નમ્ ॥૧॥ સુ. ૨૦ ।

વેદાધિકારાદેવેદં વિચકુમારીમહત્તરિકા નિરૂપકસૂત્રચતુષ્ટયમાદ—

મૂલમ્—ચત્તારિ વિસાકુમારિમહત્તરિયાઓ પળ્લેતાઓ,
 તે જહા-કયા ૧, કયાસા ૨, સુરુવા ૩, કયાવર્ધ ૪, ચત્તારિ
 દ્રવ્યસ્વકી અપેક્ષા એક હોને પર ખી પર્યાયકી અપેક્ષા બન લોનોમેં દ્રવ્યમેં
 ઔર પર્યાયમેં મેદ હોતા હૈ હસ વાતકી સૂચનાકે નિમિત્ત ક્ષેત્ર ઔર
 કાલ (એ લોનો) પૃથક્ પૃથક્ પ્રમાણ કહે ગયે હૈ ।

માવરૂપ જો પ્રમાણ હૈ વહ, અથવા માવોંકા જો પ્રમાણ હૈ વહ માવ
 પ્રમાણ હૈ । વહ માવપ્રમાણ ત્રીન પ્રકારકા કહા ગયા હૈ । ગુણ-નય
 ઔર સંસ્થા, જનમેં ગુણરૂપ માવપ્રમાણ જીવકે જ્ઞાન-વર્ણન ઔર ચારિત્ર
 હૈ, પ્રત્યક્ષ અનુમાન આગમ ઔર ઉપમાન એ જ્ઞાનરૂપ માવપ્રમાણ હૈ ।
 તત્ત્વોંકા અદ્ધાન કરના વહ વર્ણનરૂપ માવપ્રમાણ હૈ । સાધ્ય કાર્યોંસે
 વિરતિ હોના વહ ચારિત્રરૂપ માવપ્રમાણ હૈ । નૈગમાદિ જો નય હૈ એ
 નયરૂપ માવપ્રમાણ હૈ । એક-લો આદિ જો સંસ્થા હૈ વહ સંસ્થારૂપ
 માવપ્રમાણ હૈ । હસ પ્રકારસે વહ પ્રમાણકા નિરૂપણ કિયા ॥ સુ. ૨૦ ॥

દ્રવ્યની અપેક્ષાએ એક હોવા છતાં પણ પર્યાયની અપેક્ષાએ તે બન્નેમાં
 (દ્રવ્યમાં અને પર્યાયમાં) ભેદ હોય છે આ વાતને પ્રકટ કરવા નિમિત્તે
 ક્ષેત્ર અને કાળ (જે બન્ને) ને પૃથક્ પૃથક્ (છતાં જુદાં) પ્રમાણ કહ્યાં છે
 ભાવરૂપ એ પ્રમાણ છે તેને અથવા ભાવોનું એ પ્રમાણ છે તેને ભાવપ્રમાણ
 કહે છે તે ભાવપ્રમાણ ત્રણ પ્રકારનું કહ્યું છે—(૧) સ્વ, (૨) નય અને
 (૩) સંખ્યા ભવના જ્ઞાન વર્ણન અને ચારિત્ર એ સ્વરૂપ ભાવપ્રમાણ ॥ પ્રત્યક્ષ
 અનુમાન, આગમ અને ઉપમાન તે જ્ઞાનરૂપ ભાવપ્રમાણ છે તત્ત્વો પ્રત્યે મદ્ધા
 રાખવી તે દશનરૂપ ભાવપ્રમાણ છે અને સાધ્ય કાર્યોંમાંથી વિરતિ થવી તેનું
 નામ ચારિત્રરૂપ ભાવપ્રમાણ છે નૈગમ આદિ એ નય છે તે નયરૂપ ભાવ
 પ્રમાણ છે એક એ આદિ એ સંખ્યા છે તે સંખ્યારૂપ ભાવપ્રમાણ છે. આ
 રીતે અઢી પ્રમાણનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે ॥ સુ. ૨૦ ॥

વિજ્ઞુકુમારિમહત્તરિયાઓ પળ્લન્તાઓ, તં જહા-ચિત્તા ૧, ચિત્ત-
કળ્લગા ૨, સતેરા ૩, સોત્તામણી ૪। સૂ૦ ૨૧ ॥

સક્કસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરત્તો મજ્ઞિમપરિસાણ દેવાણં ચત્તારિ-
પલિઓવમાઈં ઠિઈં પળ્લન્તા । ઈંસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવ-
રત્તો મજ્ઞિમપરિસાણ દેવીણં ચત્તારિપલિઓવમાઈં ઠિઈં
પળ્લન્તા ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

ચત્તવિવહે સંસારે પળ્લન્તે, તં જહા-દવ્વસંસારે ૧, સ્વેત્ત-
સંસારે ૨, કાલસંસારે ૩, ભાવસંસારે ૪। સૂ૦ ૨૩ ।

છાયા—ચત્તસો દિક્કુમારીમહત્તરિકાઃ પ્રત્તપ્પાઃ, તથયા-રૂપા ૧, રૂપાંશા
૨, સુરૂપા ૩, રૂપાવતી ૪। ચત્તસો વિદ્યુત્કુમારીમહત્તરિકાઃ પ્રત્તપ્પાઃ, તથયા-
ચિત્ત્રા ૧, ચિત્રકનકા ૨, શતેરા ૩, સૌત્રામણિઃ ૪। સૂ૦ ૨૧ ।

શક્રસ્ય સ્વલ્લ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય મધ્યમપરિપદિ દેવાનાં ચતુ-પલ્લોપમા
સ્થિતિઃ પ્રત્તપ્પા । ઈંસાણસ્ય સ્વલ્લ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય મધ્યમપરિપદિ દેવીનાં
ચતુ-પલ્લોપમા સ્થિતિઃ પ્રત્તપ્પા । સૂ૦ ૨૨ ।

દેવાધિકારકો લેકર હી અવ સૂત્રકાર દિક્કુમારિ મહત્તરિકાઓંકા
નિરૂપણ ઇસ ચાર સૂત્રોંસે કરતે હૈં ।

“ચત્તારિ દિસાકુમારિમહત્તરિયાઓ પળ્લન્તાઓ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—દિક્કુમારિ મહત્તરિકાએં ચાર પ્રકારકી કહી ગઈં હૈં । જૈસે-રૂપા ૧,
રૂપાંશા ૨, સુરૂપા ૩ ઓર રૂપાવતી ૪ । (૨૧) વિદ્યુત્કુમારી મહત્તરિ-
કાએં ચાર પ્રકારકી કહી ગઈં હૈં । જૈસે-ચિત્રા ૧, ચિત્રકનકા ૨ શતેરા ૩,
ઓર સૌત્રામણિ ૪, । દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રકી મધ્યમ પરિપદામેં દેવોંકી

દેવાધિકારની અપેક્ષાએ હવે સૂત્રકાર દિક્કુમારી મહત્તરિકાઓંનું નિરૂપણ
આ ચાર સૂત્રો દ્વારા કરે છે—“ચત્તારિ દિસાકુમારી મહત્તરિયાઓ પળ્લ-
ન્તાઓ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—દિક્કુમારિ મહત્તરિકાઓ ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) રૂપા, (૨) રૂપાંશા
(૩) સુરૂપા અને (૪) રૂપાવતી વિદ્યુત્કુમારી મહત્તરિકાઓ પણ નીચે પ્રમાણે
ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) ચિત્રા, (૨) ચિત્રકનકા, (૩) શતેરા અને (૪)
સૌત્રામણિ. દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રની મધ્યમ પરિપદામાં દેવોની ચાર પદ્ધતિઓ

ષટ્તર્વિષઃ સસારઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—દ્રવ્યસસારઃ ૧, ક્ષેત્રસસાર ૨, કાલ-
સસાર ૩, માયસસાર ૪ । સુ. ૨૧ ।

ટીકા—“ ચત્તારિ વિશ્વો ” ઇત્યાદિ—ચતસ્ર, વિશ્વકુમારીમહાચરિકાઃ—
વિશ્વો કુમાર્યો વિશ્વકુમાર્યસ્તાથ સાઃ મહાચરિકાઃ—પ્રધાનતમા—વિશ્વકુમારી મહાચ-
રિકાઃ, યદ્વા વિશ્વકુમારીણાં મહાચરિકા વિશ્વકુમારીમહાચરિકાઃ, પ્રજ્ઞસાઃ, તથા—
રૂપા ૧, રૂપાંશા ૨, સુરૂપા ૩, રૂપાવતી ૪ । एतावतस्तो मध्यकक्षीपके मध्यमे
ર્હतोमातमाप्रस्य नासकर्तनादिकं कुर्वन्तीति ।

“ ચત્તારિ વિજ્ઞુ ” ઇત્યાદિ—ચતસ્રો વિશ્વકુમારીમહાચરિકા* પ્રજ્ઞપ્તાઃ,
તથા—ચિત્રા ૧, ચિત્રકનકા ૨, ચતુરા ૩, સૌષ્ઠામણિ* ૪ । एतावतस्तो विदि-
म्वकनिशसिन्यो भगवतः श्रीमतोऽहतो मातमाप्रस्य चतस्रमपि विष्णु स्थिता
दीपिकाइस्ता गायन्तीति । સુ. ૨૧ ।

ચાર પલ્લોપમકી સ્થિતિ કહી ગઈ છે । દેવેન્દ્ર દેવરાજ હંશાનની મધ્યમ
પરિપદામેં દેવિયોંકી ચાર પલ્લોપમકી સ્થિતિ કહી ગઈ છે (૨૨) સંસાર
ચાર પ્રકારકા કહા ગયા છે, જૈસે—દ્રવ્યસસાર ૧, ક્ષેત્રસસાર ૨, કાલ-
સસાર ૩ ઓર માયસસાર ૪ (૨૩)

ટીકાર્થ — વિશ્વાઓંકી જો કુમારિકાપ છે એ વિશ્વકુ-
મારિકા છે, એ પ્રધાનતમ હોનેસે મહાચરિકા કહી ગઈ છે ।
યદ્વા-વિશ્વકુમારિયોંકી જો મહાચરિકાપ એ વિશ્વકુમારી મહાચરિકા છે ।
इनके नाम रूपा-१, रूपांशा-२ आदि हैं । ये चारों कक्षकक्षीपके मध्यमें
रहती हैं । जय अहंत उत्पन्न होते हैं तथ ये उनके नाल आदिको काट
नेका काम करती हैं । चित्रा-१ चित्रकनका आदिके सेवसे जो चार
विष्णुकुमारिकाएं कही गई हैं । ये कक्षकक्षीपकी विविधाओंमें रहती है ।

સ્થિતિ કહી છે દેવેન્દ્ર દેવરાજ હંશાનની મધ્યમ પરિપદામાં દેવીઓની ચાર
પલ્લોપમની સ્થિતિ કહી છે ॥ સુ. ૨૧-૨૨ ॥

સસાર ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) દ્રવ્યસસાર, (૨) ક્ષેત્રસસાર (૩)
કાલસસાર અને (૪) માયસસાર ॥ સુ. ૨૩ ॥

સુત્ર ૨૧ અને ૨૨ નો વિશેષાર્થ—વિશ્વકુમારીઓને વિશ્વકુમારીઓ કહે
છે તેઓ પ્રધાનતમ હોવાથી તેમને મહાચરિકાઓ કહી છે અથવા વિશ્વકુમા-
રીઓની એ મહાચરિકાઓ છે તેમને વિશ્વકુમારી મહાચરિકાઓ કહે છે તેમનાં
નામ રૂપા રૂપાંશા, સુરૂપા અને રૂપાવતી છે તે ચારે કક્ષકક્ષીપની મધ્યમાં
રહે છે અથવા અહંન્ત ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે તેમની નાલ વગેરે કાપવાનું
કામ તેઓ કરે છે ચિત્રા, ચિત્રકનકા આદિના લેહથી એ ચાર વિશ્વકુમારિ-
કાઓ કહી છે, તેઓ કક્ષકક્ષીપની વિવિધાઓમાં રહે છે અથવા અહંન્ત પ્રમુને ।

“ સકસે ”-ત્યાદિ—શક્રેશનયોઃ સૂત્રદ્વયં સુગમમ્ । સૂ. ૨૨ ।

દેવાથ સંસારિણ इति संसारसूत्रमाह—“ चउव्विहे संसारे ” इत्यादि-
સંસારણં-પરિભ્રમણં સંસારઃ, સ ચતુર્વિધઃ-દ્રવ્યસંસારઃ ૧, ક્ષેત્રસંસારઃ ૨, કાલ-
સંસારઃ ૩, ભાવસંસારઃ ૪ । તત્ત્વ દ્રવ્યાણાં જીવપુદ્ગલક્ષણાનાં સંસારઃ-પરિભ્રમણં
દ્રવ્યસંસારઃ ૧ । ક્ષેત્રસંસારઃ-ચતુર્દશરજ્જ્વાત્મકઃ, યદ્વા-યત્ર ક્ષેત્રે સંસારો વ્યાખ્યા-
યતે તદેવ ક્ષેત્રં ક્ષેત્રરૂપાધિકરણ સંસારરૂપાધેયયો (ક્ષેત્ર-સંસારયો) રમેદોપચા-
રાત્ સંસારશબ્દેન વ્યવહિગતે ૨ ।

જવ અર્હન્ત પ્રમુકા જન્મ હોતા હૈ તવ યે ચારોં દિશાઓંમ્ સ્હડી હોકર
મજવાનકે પાસ હાથોંમ્ દીવ લિયે ગીતોંકો ગાતી હૈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

શક્ર ઓર ઈશાન સમ્બન્ધી સૂત્ર સુગમ સુવોધ હૈ । દેવ સંસારી
હોતે હૈ, અતઃ—इसी बात को लेकर सूत्रकारने यह संसारसूत्र कहा है ।
પરિભ્રમણકા નામ સંસાર હૈ । યહ સંસાર દ્રવ્યસંસાર આદિકે મેડસે
જો ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ—उसका अभिप्राय है कि जीव और
પુદ્ગલોંકે પારસ્પરિક સમ્બન્ધકા નામ સંસાર હૈ । જીવ જવ પુદ્ગલકે
સમ્બન્ધરૂપ બન્ધનસે મુક્ત હો જાતા હૈ તવ વહ મુક્ત જીવ કહા જાતા
હૈ । અથવા—पुद्गलरूप कर्मके सम्बन्धसे जो जीवका चार गतियोंमें परि-
ભ્રમણ હોતા હૈ વહ સંસાર હૈ । ૧૪ રાજૂ પ્રમાણ જો ક્ષેત્ર હૈ વહ ક્ષેત્ર
સંસાર હૈ, અથવા—जिस क्षेत्रमें संसार परिभ्रमण व्याख्यात होता है
વહ ક્ષેત્ર સંસાર હૈ । યહાં ક્ષેત્રરૂપ અધિકરણ ઓર સંસારરૂપ આધેયમ્
અમેદોપચારસે ક્ષેત્રકો સંસાર શબ્દસે વ્યવહન કિયા ગયા હૈ ।

જન્મ થાય છે, ત્યારે આ ચારે વિદ્યુત્કુમારીઓ હાથમાં હીપક લઇને ગીતો
ગાતી ગાતી ભગવાનની પાસે બિમ્બી રહે છે ॥ સૂ. ૨૧ ॥

શક્ર અને ઇશાન સંબંધી સૂત્ર સુગમ હોવાથી અહીં તેના વિશેષાર્થ
આપ્યો નથી. દેવ સંસારી હોય છે, આ સંબંધને અનુલક્ષીને સૂત્રકારે આ
સંસારસૂત્રનું કથન કર્યું છે. પરિભ્રમણનું નામ સંસાર છે, તેના દ્રવ્યસંસાર
આદિ બે ચાર ભેદ કહ્યા છે, તેનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

જીવ અને પુદ્ગલોના પારસ્પરિક સંબંધનું નામ સંસાર છે. જીવ જ્યારે
પુદ્ગલોના સંબંધ રૂપ બન્ધનમાંથી મુક્ત થઈ જાય છે ત્યારે તેને મુક્ત જીવ
કહેવાય છે. અથવા પુદ્ગલરૂપ કર્મના સંબંધથી જીવને ચાર ગતિઓમાં બે
ભ્રમણ કરવું પડે છે તેનું નામ સંસાર છે. ૧૪ રાજૂ પ્રમાણ બે ક્ષેત્ર છે તેને
ક્ષેત્રસંસાર કહે છે. અથવા બે ક્ષેત્રમાં સંસાર પરિભ્રમણ બ્યાખ્યાત થાય છે
તે ક્ષેત્રનું નામ ક્ષેત્રસંસાર છે અહીં ક્ષેત્રરૂપ અધિકરણ અને સંસારરૂપ આધે-
યમાં અમેદોપચારની અપેક્ષા બે ક્ષેત્રને સંસાર શબ્દથી વ્યવહૃત કરવામાં આવેલ છે.

ચતુર્થિયઃ સસાર મહત્તાઃ, તથા—દ્રવ્યસસારઃ ૧, ક્ષેત્રસસાર ૨, કાલ સસારઃ ૩, માત્રસસારઃ ૪ । સૂ. ૨૧ ।

ટીકા—“ ચતારિ વિસાં ” ઇત્યાદિ—ચતસ્ર, વિશ્વકુમારીમહાચરિકાઃ— વિશા કુમાર્યો વિશ્વકુમાર્યસ્તામ તાઃ મહાચરિકા=મધાનતમા—વિશ્વકુમારી મહાચરિકાઃ, યદ્વા વિશ્વકુમારીણાં મહાચરિકા વિશ્વકુમારીમહાચરિકાઃ, મહત્તાઃ, તથા— રૂપા ૧, રૂપાંશા ૨, સુરૂપા ૩, રૂપાવતી ૪ । एतावतस्तो मध्यकक्षीपस्तस्या अर्हतो जातमात्रस्य नास्त्वर्कस्य नादिकं कुर्वन्तीति ।

“ ચતારિ વિજ્ઞુ ” ઇત્યાદિ—ચતસ્રો વિશ્વકુમારીમહાચરિકાઃ મહત્તાઃ, તથા—ચિત્રા ૧, ચિત્રકનકા ૨, હલેરા ૩, સૌભામણિઃ ૪ । एतावतस्तो भिदि मध्यकक्षीपस्यो भगवतः श्रीमतोऽर्हतो जातमात्रस्य चतसृष्वपि दिक्षु स्थिता दीपिकाहस्ता गायन्तीति । સૂ. ૨૧ ।

ચાર પલ્લોપમકી સ્થિતિ કહી ગઈ છે । દેવેન્દ્ર દેવરાજ જ્ઞાનની મધ્યમ પરિપદામેં દેવિયોંકી ચાર પલ્લોપમકી સ્થિતિ કહી ગઈ છે (૨૨) સંસાર ચાર પ્રકારકા કહા ગયા છે, જૈસે—દ્રવ્યસસાર ૧, ક્ષેત્રસસાર ૨, કાલ સસાર ૩ ઓર માત્રસસાર ૪ (૨૧)

ટીકાર્થ — વિશાઓંકી જો કુમારિકાં છે તે વિશ્વકુમારિકા છે, જે પ્રધાનતમ હોનેસે મહાચરિકા કહી ગઈ છે । યદ્વા—વિશ્વકુમારિયોંકી જો મહાચરિકાં જે વિશ્વકુમારી મહાચરિકા છે । इनके नाम रूपा-१, रूपांशा-२ आदि हैं । ये चारों कक्षक्षीपके मध्यमें रहती हैं । जय अर्हन्त उत्पन्न होते हैं तब वे उनके नाव आदिको काट नेका काम करती हैं । चित्रा-१ चित्रकनका आदिके भेदसे जो चार विश्वकुमारिकाएं कही गई हैं । ये कक्षक्षीपकी विविधाओंमें रहती हैं ।

સ્થિતિ કહી છે । દેવેન્દ્ર દેવરાજ જ્ઞાનની મધ્યમ પરિપદામાં દેવીજ્ઞાની ચાર પલ્લોપમની સ્થિતિ કહી છે ॥ સૂ. ૨૧-૨૨ ॥

સસાર ચાર પ્રકારના કહી છે—(૧) દ્રવ્યસસાર, (૨) ક્ષેત્રસસાર (૩) કાલસસાર અને (૪) માત્રસસાર ॥ સૂ. ૨૩ ॥

સૂત્ર ૨૧ અને ૨૨ નો વિશેષાર્થ—વિશ્વકુમારીજ્ઞાને વિશ્વકુમારીજ્ઞા કહે છે તેજ્ઞા પ્રધાનતમ હોવાથી તેમને મહાચરિકાજ્ઞા કહી છે અથવા વિશ્વકુમારીજ્ઞાની જે મહાચરિકાજ્ઞા છે તેમને વિશ્વકુમારી મહાચરિકાજ્ઞા કહે છે તેમનાં નામ રૂપા, રૂપાંશા, સુરૂપા અને રૂપાવતી છે તે ચારે રુચકક્ષીપની મધ્યમાં રહે છે અથવા અર્હન્ત ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે તેમની નાવ વગેરે કાપવાનું કામ તેઓ કરે છે ચિત્રા, ચિત્રકનકા આદિના ભેદથી જે ચાર વિશ્વકુમારિકાજ્ઞા કહી છે, તેઓ રુચકક્ષીપની વિવિધાઓમાં રહે છે. અથવા અર્હન્ત પ્રભુને

“ સક્કસે ”—ત્યાદિ—શક્રેશાનયોઃ સૂત્રદ્વયં સુગમમ્ । સૂ. ૨૨ ।

દેવાથ સંસારિણ इति संसारसूत्रमाह—“ चउन्दिहे संसारे ” इत्यादि—
સંસારણ-પરિભ્રમણ સંસાર; સ ચતુર્વિધઃ—દ્રવ્યસંસારઃ ૧, ક્ષેત્રસંસારઃ ૨, કાલ-
સંસારઃ ૩, ભાવસંસારઃ ૪ । તત્ત્વ દ્રવ્યાણાં જીવપુદ્ગલભ્રમણાનાં સંસારઃ—પરિભ્રમણ
દ્રવ્યસંસારઃ ૧ । ક્ષેત્રસંસારઃ—ચતુર્દશરજ્જ્યાત્મકઃ, યદ્વા-યત્ર ક્ષેત્રે સંસારો વ્યાખ્યા-
યતે તદેવ ક્ષેત્રં ક્ષેત્રરૂપાધિકરણ સંસારરૂપાધેયયો (ક્ષેત્ર-સંસારયો) રભેદોપચા-
રાત્ સંસારશબ્દેન વ્યવહિગતે ૨ ।

જવ અર્હન્ત પ્રભુકા જન્મ હોતા હૈ તવ ચે ચારોં દિશાઓમેં સ્વહી હોકર
ભગવાનકે પાસ હાથોમેં દીવ લિયે ગીતોંકો ગાતી હૈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

શક્ર ઓર ઈશાન સમ્બન્ધી સૂત્ર સુગમ સુચોધ હૈ । દેવ સંસારી
હોતે હૈ, અતઃ—इसी बातको लेकर सूत्रकारने यह संसारसूत्र कहा है ।
પરિભ્રમણકા નામ સંસાર હૈ । યહ સંસાર દ્રવ્યસંસાર આદિકે ભેડસે
જો ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ—उसका अभिप्राय है कि जीव और
પુદ્ગલોંકે પારસ્પરિક સમ્બન્ધકા નામ સંસાર હૈ । જીવ જવ પુદ્ગલકે
સમ્બન્ધરૂપ બન્ધનસે સુક્ત હો જાતા હૈ તવ વહ સુક્ત જીવ કદા જાના
હૈ । અથવા—पुद्गलरूप कर्मके सम्बन्धसे जो जीवका चार गतियोंमें परि-
ભ્રમણ હોતા હૈ વહ સંસાર હૈ । ૧૪ રાજૂ પ્રમાણ જો ક્ષેત્ર હૈ વહ ક્ષેત્ર
સંસાર હૈ, અથવા—जिस क्षेत्रमें संसार परिभ्रमण व्याख्यात होता है
વહ ક્ષેત્ર સંસાર હૈ । યહાં ક્ષેત્રરૂપ અધિકરણ ઓર સંસારરૂપ આધેયમેં
અભેદોપચારસે ક્ષેત્રકો સંસાર શબ્દસે વ્યવહન કિયા ગયા હૈ ।

જન્મ થાય છે, ત્યારે આ ચારે વિષ્ણુકુમારીઓ હાથમાં હીપક લઇને ગીતો
ગાતી ગાતી ભગવાનની પાસે ભમી રહે છે. ॥ સૂ. ૨૧ ॥

શક્ર અને ઈશાન સંબંધી સૂત્ર સુગમ હોવાથી અહીં તેના વિશેષાર્થ
આપ્યો નથી. દેવ સંસારી હોય છે, આ સંબંધને અનુલક્ષીને સૂત્રકારે આ
સંસારસૂત્રનું કથન કર્યું છે. પરિભ્રમણનું નામ સંસાર છે, તેના દ્રવ્યસંસાર
આદિ ને ચાર ભેદ કહ્યા છે, તેનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

જીવ અને પુદ્ગલોના પારસ્પરિક સંબંધનું નામ સંસાર છે. જીવ જ્યારે
પુદ્ગલોના સંબંધ રૂપ બન્ધનમાંથી મુક્ત થઈ બચે છે ત્યારે તેને મુક્ત જીવ
કહેવાય છે. અથવા પુદ્ગલરૂપ કર્મના સંબંધથી જીવને ચાર ગતિઓમાં ને
ભ્રમણ કરવું પડે છે તેનું નામ સંસાર છે. ૧૪ રાજૂ પ્રમાણ ને ક્ષેત્ર છે તેને
ક્ષેત્રસંસાર કહે છે. અથવા ને ક્ષેત્રમાં સંસાર પરિભ્રમણ વ્યાખ્યાત થાય છે
તે ક્ષેત્રનું નામ ક્ષેત્રસંસાર છે. અહીં ક્ષેત્રરૂપ અધિકરણ અને સંસારરૂપ આધે
યમાં અભેદોપચારની અપેક્ષાએ ક્ષેત્રને સંસાર શબ્દથી વ્યવહૃત કરવામાં આવેલ છે.

‘કાલસંસારઃ’—કાલસ્ય-સમયાવલિકાવિલક્ષણસ્ય સંસારઃ-ચક્રન્યાયેન પરિભ્રમણ, પર્યોપમાદિકાલવિશેષવિશેષિતં વા યદ્ ભ્રમણ કસ્યાપિ જીવસ્ય નરકાદિષુ સ કાલસંસારઃ, યદ્વા-યસ્મિન્ પૌરુષ્યાદિકે કાલે સંસારો વ્યાખ્યાયતે સ કોલોઽપિ સંસાર ઉચ્યતે, અમેદાત્ ૩ ।

‘માનસંસાર’-માયાનામૌદયિકાદીનાં વર્ણાદીનાં વા સંસારઃ-સંસારપરિભ્રામો માનસંસાર इति । સૂં ૨૩ ।

પૂર્વે દ્રવ્યાદિ સંસાર ઉક્તઃ, સ ચાનેકનયૈર્દષ્ટિવાદે વિવિચ્યત इति દષ્ટિનાર્દ સમદ નિષ્કપિદુમાહ —

મૂલ્મ—ચતુર્વિદ્દે દિદ્વિવાપ પળળત્તે, ત જહા-પરિકર્મ્મ ૧, સુત્તાઈ ૨, પુલ્લગપ ૩, અણુજોગે ૪ । । સૂં ૨૪ ।

છાયા—ચતુર્વિધો દષ્ટિવાદ* મહત્ત્વઃ તથા-પરિકર્મ્મ ૧, ધર્માભિ ૨, પૂર્વ ગતમ્ ૩, મનુષ્યોગ ૪ ॥ સૂં ૨૪ ॥

સમયાવલિકાદિ રૂપ કાલકા જો શક્ર યાયસે પરિભ્રમણૈ વહ કાલસંસાર હૈ । અથવા-નરકાદિકોમેં કિસી જીવકા પર્યોપમા આદિ રૂપકાલ વિશેષ સે વિશેષિત જો પરિભ્રમણ હૈ વહ-સંસાર હૈ । અથવા-જિસ પૌરુષી આદિક કાલમેં સંસાર વ્યવહાર હોતા હૈ વહ કાલમીઅમેદ ઉપચારસે કાલ કહા ગયા હૈ । ઔદયિક (ઔદાયિક) આદિ ભાવોકા અથવા વર્ણોદિ રૂપ ગુણોકા જો પરિભ્રમણરૂપ પરિભ્રમણ હૈ વહ ભાવસંસાર હૈ ॥ સૂં ૨૩ ॥

કથિત દ્રવ્યાદિ સંસાર અનેક નયોસે દષ્ટિવાદ મેં વિચલિત પુવા હૈ-મતઃ અથ સૂત્રકાર મેદ સહિત ઠસી દષ્ટિવાદકા નિરૂપણ કરતે હૈ

“ચતુર્વિદ્દે દિદ્વિવાપ પળળત્તે” इत्यादि—

સમય, આવલિકા આદિ રૂપ કાળનું જે શક્ર ન્યાયથી પરિભ્રમણ છે, તે કાળસંસાર છે, અથવા નરકાદિકોમાં કોઈ જીવનું પર્યોપમા આદિ કાળવિશેષ મુદ્દા જે પરિભ્રમણ છે, તેનું નામ કાળસંસાર છે અથવા જે પ્રકાર આદિ કાળથી સંસાર-વ્યવહાર ચાલે છે, તે કાળને પણ અલેદોપચારથી કાળસંસાર કહ્યો છે ઔદયિક આદિ ભાવોનું અથવા વર્ણોદિ રૂપ ગુણોનું જે પરિભ્રમણરૂપ પરિભ્રમણ છે, તે ભાવસંસાર છે. ॥ સૂ. ૨૪ ॥

પહેલાના સૂત્રમાં દ્રવ્યાદિ સંસારનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું, તે સંસારની અનેક નયો દ્વારા દષ્ટિવાદમાં વિચારણા થઈ છે, તેથી હવે સૂત્રકાર દષ્ટિવાદનું સંદેશદિત નિરૂપણ કરે છે—“ચતુર્વિદ્દે દિદ્વિવાપ પળળત્તે” इत्यादि—

ટીકા—“ ચતુર્વિધે દિઢિવાપ ” इत्यादि—दृष्टिवादः—दृष्टयो दर्शनानि—
नैगमादयो नयाः, तानि उद्यन्ते—उच्यन्तेऽत्रेति दृष्टिवादः । यद्वा ‘ दृष्टिपात ’
इतिच्छाया, तत्पक्षे दर्शनानि पतन्ति—अगतरन्ति यत्रेति दृष्टिपातो—द्वादशमङ्गम्,
स चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—“ परिकर्म ”—सूत्रादिग्रहणयोग्यतासम्पादनसमर्थ
कर्म परिकर्म कथ्यते, गणितादिकर्मवत्, तच्च सिद्धश्रेणिकादि ।

“ सूत्राणि ”—ऋजुसूत्रप्रभृतीनि द्वाविंशतिः, इह सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थ—
सूचनात्सूत्राणि कथ्यन्ते ।

“ पूर्वगतम् ”—तत्र पूर्वाणि—सर्वश्रुतात्पूर्वं क्रियमाणत्वात्पूर्वाणि, तानि
चोत्पादप्रभृतीनि चतुर्दश, तत्र गतं—प्रविष्टं यत् श्रुतं तत् पूर्वगतम्, पूर्वगतशब्देन

સૂત્રાર્થ—દૃષ્ટિવાદ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા છે । જૈસે—પરિકર્મ ૧, સૂત્ર ૨,
પૂર્વગત ૩ ઓર અનુયોગ ૪ ।

ટીકાર્થ — નૈગમાદિનયોંકા નામ દૃષ્ટિ છે, જન દૃષ્ટિયોંકા
જિસમેં વર્ણન છે વૃહ—દૃષ્ટિવાદ છે । અથવા—“ દિઢિવાપ ” કી
સંસ્કૃતચ્છાયા દૃષ્ટિવાદ છે । હિસ પક્ષમેં દર્શનોંકા જિસમેં સ્વરૂપ કથન
હો એસા ૧૨ વાં સૂત્ર દૃષ્ટિપાત છે । યહ દૃષ્ટિવાદ પરિકર્મ આદિકે ભેદસે
જો ચાર પ્રકારકા કહા ગયા છે ઊન પ્રત્યેકકા તાત્પર્ય એસા છે—જો કર્મ
ગણિતાદિ કર્મકી તરહ સૂત્રાદિ ગ્રહણ કરનેકી યોગ્યતાકા સમ્પાદન
કરનેમેં સમર્થ હોતા છે વહ પરિકર્મ છે । યહ પરિકર્મ સિદ્ધશ્રેણિકાદિ
રૂપ છે । ઋજુસૂત્ર આદિ ૨૨—સૂત્ર છે । યે ૨૨ સૂત્ર સર્વદ્રવ્ય, સર્વપર્યાય,
નય, આદિરૂપ અર્થકા સૂચન કરતે છે હિસલિયે સૂત્ર કહે ગયે હૈં ।
“ પૂર્વગત ”—સર્વશ્રુતકે પૂર્વ કિયે ગયે હોનેસે ઉત્પાત આદિ ૧૪ પૂર્વોંકો

સૂત્રાર્થ—દૃષ્ટિવાદના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પરિકર્મ, (૨) સૂત્ર
(૩) પૂર્વગત અને (૪) અનુયોગ.

ટીકાર્થ — નૈગમાદિ નયોંનું નામ દૃષ્ટિ છે. તે દૃષ્ટિઓનું જેમાં
વર્ણન છે તે દૃષ્ટિવાદ છે અથવા “ દિઢિવાપ ” આ પદની સંસ્કૃત
છાયા ‘ દૃષ્ટિવાદ ’ છે આ દૃષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે તો દર્શનોના સ્વરૂપ
પતું જેમાં કથન થયું છે એવું બારમું અંગ દૃષ્ટિવાદ છે. તે દૃષ્ટિવાદને પરિકર્મ
આદિના લેહથી જે ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે પ્રકારોનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કર-
વામાં આવે છે—જે કર્મ ગણિતાદિ કર્મની જેમ સૂત્રાદિ ગ્રંથો કરવાની
યોગ્યતા પ્રાપ્ત કરાવવાને સમર્થ હોય છે, તે કર્મનું નામ પરિકર્મ છે. તે
પરિકર્મ સિદ્ધશ્રેણિકાદિ ૩૫ છે ઋજુ સૂત્ર આદિ ૨૨ સૂત્ર છે તે ૨૨ સૂત્ર
સર્વદ્રવ્ય, સર્વપર્યાય, નય આદિ ૩૫ અર્થનું સૂચન કરે છે, તેથી તેમને સૂત્ર
કહેવામાં આવેલ છે. “ પૂર્વગત ” સર્વશ્રુત કરતાં પૂર્વે (પહેલાં) કરાયેલ

પૂર્વાણ્યયોચ્યન્તે, પૂર્વમષિષ્ટ્વાત્, યથા હસ્તાપક્ષમષિષ્ટમરુગુન્યાદિકમદ્વયદેવેન
મ્યવહ્રિયતે ૩ ।

“અનુયોગઃ”-યોગ્યત્વં યોગ, અનુરૂપોડનુકૂલો વા સુપ્રસપ સ્વકીયાર્થેન
સહ યોગ-સમ્પદ્મ ઇત્યનુયોગ ૪૧ યપાં ચતુર્ણાં વિસ્તરતાં વિષરણ નન્દીવૃક્ષસ્ય
મસ્કૃતાયાં જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકાયામવલોકનીયમિતિ । સૂ૦ ૨૪ ।

અનન્તર પૂર્વમતમુક્તં, સત્ર પ્રાયશ્ચિષ્ઠમરુપણાસસ્વાત્ પ્રાયશ્ચિષ્ઠ સુષ્ઠ્વેન
નિરૂપયિતુમાદ—

મૂલપ્-ચડધિદે પાયચ્છિત્તે, પળ્લણત્તે ત જહા-ળાળપાયચ્છિત્તે ૧,
વસળ પાયચ્છિત્તે ૨, ચરિત્તપાયચ્છિત્તે ૩, વિયત્તકિચ્વપાયચ્છિત્ત ૪ ।

ચડધિદે પાયચ્છિત્તે પળ્લણત્તે, ત જહા-પહિસેવળા પાય
ચ્છિત્તે ૧, સજોયળાપાયચ્છિત્તે ૨, આરોવળાપાયચ્છિત્તે ૩ પલિ
ઉચળાપાયચ્છિત્તે ૪ । સૂ૦ ૨૫ ।

પૂર્વ કહા ગયા હૈ । હસ પૂર્વમેં જો શ્રુત પ્રવિષ્ટ હૈ વહ શ્રુત પૂર્વધુત હૈ ।
પૂર્વગત શબ્દસે પૂર્વહી કહે જાતે હૈ કપોકિ-સમસ્ત શ્રુત પૂર્વમેં પ્રવિષ્ટ
હૈ, જૈસે—હસ્ત આદિ અક્ષમેં અગ્રકુલી આદિ અક્ષ શબ્દસે કહે જાતે હૈ
૩ । “અનુયોગ ” સૂત્રકા અપને અર્થકે સાથ જો અનુરૂપ વા-અનુકૂલ
સમ્પદ્મ હૈ વહ અનુયોગ હૈ । જન ચારોંકા વિસ્તારસે વર્ણન (વિષરણ) નન્દી
સૂત્રકી જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકામેં કિયા હૈ સો વહાસે દેવ લેના ચાહિયે ॥૬ ૨૪॥

અનન્તર વક્ત પૂર્વગતમેં પ્રાયશ્ચિષ્ઠી પ્રરૂપણાકા સત્રાય હોનેતે

(રચિત) દેવાધી વત્પાદ આદિ ૧૪ પૂર્વેનિ પૂર્વ કહે છે તે પૂર્વમાં જે ૧૮
પ્રવિષ્ટ છે તે યતને પૂર્વશ્રુત કહે છે ‘પૂર્વગત’ યાથી ‘પૂર્વ’ જ અર્પીત
થાય છે, કારણ કે સમસ્ત શ્રુત પૂર્વમાં પ્રવિષ્ટ છે જેમ હસ્તાદિ અક્ષમાં
આંગળી આદિ અંગનો સમાવેશ થઈ જાય છે—“હસ્ત” શબ્દથી આંગળી આદિ
અંગો પણ પ્રમખ થઈ જાય છે તેમ પૂર્વગત પદથી પૂર્વ જ અર્પીત થાય છે
“અનુયોગ”-સૂત્રનો પોતાના અર્થની સાથે જે અનુરૂપ અથવા અનુકૂળ
સંબંધ છે તેનું નામ અનુયોગ છે આ ચારેનું સંવિસ્તર વર્ણન ન દીસતી
જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકામાં કરવામાં આવ્યું છે, તે જિજ્ઞાસુ પાઠકોએ ત્યાંથી તે
વાંચી લેવું ॥ ૨૪ ॥

પદોત્પાદ સૂત્રમાં જે પૂર્વગતી પ્રરૂપણા કરવામાં આવી, તે પૂર્વગતમાં

છાયા—ચતુર્વિધં પ્રાયશ્ચિત્તં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્વથા—જ્ઞાનપ્રાયશ્ચિત્તં ૧, દર્શનપ્રાય-
શ્ચિત્તં ૨, ચારિત્રપ્રાયશ્ચિત્તં ૩, વ્યક્તકૃત્યપ્રાયશ્ચિત્તમ્ ૪ ।

ચતુર્વિધં પ્રાયશ્ચિત્તં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્વથા—પ્રતિસેવના પ્રાયશ્ચિત્તં ૧, સંયોજના
પ્રાયશ્ચિત્તમ્ ૨, આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્તં ૩, પરિકુચ્ચના પ્રાયશ્ચિત્તમ્ ૪ । સુ. ૨૫ ॥

ટીકા—“ ચતુર્વિધે પ્રાયશ્ચિત્તે ” इत्यादि—પ્રાયશ્ચિત્તં—પ્રાયઃ—પાપં, તસ્ય
ચિત્તં—વિશોધનમિતિ પ્રાયશ્ચિત્તમ્, “ પ્રાયઃ પાપં વિજાનીયાચિત્તં તસ્ય વિશોધ-
નમિ ”—ત્યુક્તેઃ, યદ્વા—પાપો બાહુલ્યેન ચિત્તમન્તઃકરણં સ્વેન રૂપેણ તિષ્ઠત્ય-
સ્મિન્ સતીતિ પ્રાયશ્ચિત્તમ્—અનુષ્ઠાનવિશેષઃ, તચ્ચતુર્વિધં—ચતુષ્પ્રકારં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્વથા
—જ્ઞાન પ્રાયશ્ચિત્તં—જ્ઞાનવિષયકાતિચારસંશોધનમ્, એવં દર્શન—ચારિત્રયોરપિ વિજ્ઞેયમ્,

અવ સૂત્રકાર દો સૂત્રોસે પ્રાયશ્ચિત્તકા નિરૂપણ કરતે હૈં ।

“ ચતુર્વિધે પ્રાયશ્ચિત્તે પળ્લગત્તે ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—પ્રાયશ્ચિત્ત ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે—જ્ઞાન પ્રાયશ્ચિત્ત ૧,
દર્શન પ્રાયશ્ચિત્ત ૨, ચારિત્ર પ્રાયશ્ચિત્ત ૩ ઓર વ્યક્તકૃત્ય પ્રાયશ્ચિત્ત ૪ ।
હસ તરહસે ઓ પ્રાયશ્ચિત્ત ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ । જૈસે પ્રતિસેવના
પ્રાયશ્ચિત્ત ૧, સંયોજના પ્રાયશ્ચિત્ત ૨, આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત ૩, ઓર
પ્રતિકુચ્ચના પ્રાયશ્ચિત્ત ૪ । હસ સૂત્રકા સ્પષ્ટાર્થ હસ પ્રકારસે હૈ—
પ્રાયઃ—નામ પાપકા હૈ ઓર પાપકા જો વિશોધન હૈ વહ ચિત્ત હૈ,
તથાચ—પાપકા વિશોધન જિસસે હોતા હૈ વહ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ । કહાબી
હૈ—“ પ્રાયઃ પાપં વિજાનીયાત્—ચિત્તં તસ્ય વિશોધનમ્ ” । અથવા—પ્રાયઃ
બાહુલ્યસે અન્તઃકરણ અપને સ્વરૂપસે જિસકે હોનેપર ઠહરતા હૈ વહ

પ્રાયશ્ચિત્તની પ્રજ્ઞપણાને સદ્ભાવ હોવાથી હવે સૂત્રકાર જો સૂત્રો દ્વારા પ્રાય-
શ્ચિત્તનું નિરૂપણ કરે છે—“ ચતુર્વિધે પ્રાયશ્ચિત્તે પળ્લગત્તે ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—પ્રાયશ્ચિત્તના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) જ્ઞાનપ્રાયશ્ચિત્ત,
(૨) દર્શન પ્રાયશ્ચિત્ત, (૩) ચારિત્ર પ્રાયશ્ચિત્ત અને (૪) વ્યક્તકૃત્ય પ્રાયશ્ચિત્ત.
પ્રાયશ્ચિત્તના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) પ્રતિસેવના પ્રાયશ્ચિત્ત,
(૨) સંયોજના પ્રાયશ્ચિત્ત (૩) આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત અને (૪) પરિકુચ્ચના પ્રાયશ્ચિત્ત

હવે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—“ પ્રાય. ” એટલે
‘ પાપ ’ અને પાપના વિશોધનનું નામ ‘ ચિત્ત ’ છે ‘ પાપનું ’ વિશોધન (શુદ્ધિ)
જેના દ્વારા થાય છે તેનું નામ જ પ્રાયશ્ચિત્ત છે કહ્યું પણ છે કે—“ પ્રાય. પાપં
વિજાનીયાત્—ચિત્તં તસ્ય વિશોધનમ્ ” અથવા “ જેના સદ્ભાવને લીધે અંત કરણ
પોતાના મૂળ સ્વરૂપના સામાન્યતાઃ સ્થિર રહે છે તેનું નામ પ્રાયશ્ચિત્ત છે. તે

પૂર્વાણ્યધોચ્યન્તે, પૂર્વમણિષ્ટત્વાત્, યયા હસ્તાચક્ષુમણિષ્ટમસ્તુન્યાદિકમક્ષ્મ્મ દેન
ધ્યવદ્વિયતે ૩ ।

“અનુયોગઃ”-યોગનં યોગઃ, અનુરૂપોઽનુકૂલો યા સૂત્રસ્ય સ્વકીયાર્થેન
સહ યોગઃ=સમ્યગ્ ઇત્યનુયોગ ૪। ઇત્યાં ચતુર્ણાં વિસ્તરતો વિચરણ નન્દીસૂત્રસ્ય
મસ્કૃતાયાં જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકાયામલોકનોપમિતિ । સૂ. ૨૪ ।

અનન્તર પૂર્વમ્મતમુક્ત, તત્ર પ્રાયશ્ચિત્તમરૂપણાસપ્ચાત્ પ્રાયશ્ચિત્ત સૂત્રપ્રયેન
નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલ્ક-ચઙ્ચિદ્દે પાયચ્છિન્તે, પળ્લન્તે ત જહા-ળાળપાયચ્છિન્તે ૧,
દસળ પાયચ્છિન્તે ૨, ચરિત્તપાયચ્છિન્તે ૩, વિયત્તકિલ્લપાયચ્છિન્તે ૪।

ચઙ્ચિદ્દે પાયચ્છિન્તે પળ્લન્તે, તં જહા-પહિસેવળા પાય
ચ્છિન્તે ૧, સજોયળાપાયચ્છિન્તે ૨, આરોવળાપાયચ્છિન્તે ૩ પહિ
ઉંચળાપાયચ્છિન્તે ૪ । સૂ. ૨૫ ।

પૂર્વ કહા ગયા હૈ । હસ પૂર્વમેં જો મુત પ્રવિષ્ટ હૈ વહ મુત પૂર્વમુત હૈ ।
પૂર્વગત શબ્દસે પૂર્વહી કહે જાતે હૈ કયોંકિ-સમસ્ત મુત પૂર્વમેં પ્રવિષ્ટ
હૈ, જૈસે—હસ્ત આવી અન્નમેં અગ્નિહી આદિ અન્ન શબ્દસે કહે જાતે હૈ
૩ । “અનુયોગ ” સૂત્રકા અપને અર્થકે સાથ જો અનુરૂપ વા-અનુકૂલ
સમ્યગ્ હૈ વહ અનુયોગ હૈ । જન ચારોંકા વિસ્તારસે વર્ણન (વિચરણ) નન્દી
સૂત્રકી જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકામેં કિયા હૈ સો ઘટાંસે દેખ લેના ચાહિયે ॥૫ ૨૪॥

અનન્તર ઉક્ત પૂર્વગતમેં પ્રાયશ્ચિત્તસહી પ્રરૂપણાકા સન્નાય હોનેસે

(રચિત) હે.વાથી ઉત્પાદ આદિ ૧૪ પૂવેનિ પૂર્વ કહે છે તે પૂર્વમાં જે ૧૮
પ્રવિષ્ટ છે તે યતને પૂર્વમુત કહે છે ‘ પૂર્વગત ’ પદથી ‘ પૂર્વ ’ જ ગૃહીત
થાય છે, કારણ કે સમસ્ત મુત પૂર્વમાં પ્રવિષ્ટ છે જેમ હસ્તાદિ અન્નમાં
આંગળી આદિ અન્નનો સમાવેશ થઈ જાય છે—“ હસ્ત ” શબ્દથી આંગળી આદિ
અન્નો પદ્ય ગ્રંથક થઈ જાય છે તેમ પૂર્વગત પદથી પૂર્વ જ ગૃહીત થાય છે
“ અનુયોગ ”-સૂત્રનો પોતાના અર્થની સાથે જે અનુરૂપ અથવા અનુકૂળ
સંબંધ છે તેનું નામ અનુયોગ છે આ ચારેનું સંવિસ્તર વર્ણન નન્દીસૂત્રની
જ્ઞાનચન્દ્રિકા ટીકામાં કરવામાં આવ્યું છે, તે જિજ્ઞાસુ પાઠકોએ ત્યાંથી તે
વાંચી લેવું ॥ ૫ ૨૪ ॥

પહેલાના સૂત્રમાં જે પૂર્વગતની પ્રકરણા કરવામાં આવી, તે પૂર્વ ૧૧માં

“ આલોચન ૧-પડિકમણે ૨ મીસ ૩-વિવેગે ૪ તદ્વા વિડસ્સગે ૫।

તવ દ્-છેપ ૭ મૂલ ૮ અણવટ્ટપ્પા ૯, પારંચિ ૧૦ ચેવ ૧૧। ”

ઝાયા—આલોચન ૧ પ્રતિક્રમણ ૨ મિશ્ર ૩ વિવેક ૪ સ્તથા વ્યુત્સર્ગઃ ૫।

તપ દ્-શ્લેદ ૭ મૂલ ૮-ડનવસ્થાપ્યાતિ ૯ પારાશ્ચિત્ત ૧૦ ચેવ ૧૧। ”

इति प्रतिसेवनाप्रायश्चित्तम् । १।

“ સંયોજનાપ્રાયશ્ચિત્તમ્ ”—સંયોજનં સંયોજના, સા ચૈરુજાતીયા-તિચાર-મીલનં, યથા-શય્યાતરપિણ્ડો ગૃહીતઃ, સોડપિ જલાર્દહસ્તાદિના, સોડપ્યભ્યાહતઃ, સોડપ્યાધાકર્મિકસ્ત્ર યત્ પ્રાયશ્ચિત્તં તત્ સંયોજનાપ્રાયશ્ચિત્તમ્ । ૨।

“ આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્તમ્ ”—આરોપણમ્—एकापराधप्रायश्चित्तं पुनः पुनरा-
सेवनेन विजातीयप्रायश्चित्तस्यारोपणमारोपणा, યથા પશ્ચાદોરાત્રપ્રાયશ્ચિત્તં પ્રાપ્તઃ

है। इस प्रतिसेवनाको दूर करनेके लिये शास्त्रीय प्रतिक्रियाको प्रतिसेवना प्रायश्चित्त कहा है। यह प्रायश्चित्त आलोचना आदिके भेदसे १० प्रकारका होना है। जैसे—“ आलोचनपडिकमणे ” इत्यादि। “ संयोजना प्रायश्चित्त ” एक जातीय अतिचारोंका मिलना इसका नाम-संयोजना है, जैसे-शय्यातरका पिण्ड लिया और वह भी जलार्द हस्तादिसे दिया गया हो, अभ्याहत लिया वह भी-आधाकर्मिक, यहां जो प्रायश्चित्त है वह संयोजना प्रायश्चित्त है।

“ આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત ”—एक अपराधके प्रायश्चित्तमें पुनः पुनः
उसीके आसेवनसे विजातीय प्रायश्चित्तका अध्यारोपण करना इसका

તે પ્રાયશ્ચિત્તના આરોપણના આદિ ૧૦ પ્રકાર છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ આલોચન પડિકમણે ” ઇત્યાદિ.

સંયોજના પ્રાયશ્ચિત્ત—એક જાતીય અતિચારોનો સંયોગ થવો તેનું નામ સંયોજના છે. જેમકે શય્યાતરપિંડ ગ્રહણ કરવામાં આવે તો અતિચાર લાગે અને એ જ શય્યાતરપિંડ લીના હોયે અપાયો હોય તો તેથી પણ અતિચાર લાગે. અભ્યાહત પિંડ ગ્રહણ કરવામાં આવે અને તે પણ આધા-કર્મ હોયયુક્ત હોય તો ત્યાં પણ એક જાતના અતિચારોનું સંયોજન થયું ગણાય તેની વિશુદ્ધિ નિમિત્તે જે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવામાં આવે છે, તેને સંયોજના પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

“ આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત ” એક જ જાતના અપરાધનું વારંવાર આસેવન થવાથી વિજાતીય પ્રાયશ્ચિત્તનું અધ્યારોપણ કરવું તેનું નામ આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત છે. એટલે કે હોષ માટે પહેલાં અમુક પ્રકારનું પ્રાયશ્ચિત્ત આપવામાં આવે, અને ફરીથી એ જ હોષનું આસેવન કરવામાં આવે તો બીજી જાતનું પ્રાયશ્ચિત્ત

“વિયત્તકિષ્કપાયચ્છિન્ન” ઇતિ—અ્યક્તકૃત્યપ્રાયશ્ચિન્ન—અ્યક્તકૃત્ય—અ્યક્તકૃત્ય—માવતો ગીતાર્થસ્ય કૃત્ય—કરણીય અ્યક્તકૃત્ય, તદેવ પ્રાયશ્ચિન્ન, ગીતાર્થો દિ ગુરુભાષણપર્યાલોચનેન યત્ કિચ્છનપ્રાયશ્ચિન્ન વદાતિ સત્તર્વે પ્રાયશ્ચિન્નમકમેવ મમતીતિ । ૪ ।

પુનઃપુનઃ પ્રાયશ્ચિન્નમાદ—“અતઃકિ” ઇત્યાદિ—અતઃકિ પ્રાયશ્ચિન્ન પ્રક્રમત્, તથા—પ્રતિસેવનાપ્રાયશ્ચિન્ન—પ્રતિસેવના પ્રતિસેવના—મહત્સ્યાસસેવનામિત્યર્થ, તસ્યા પ્રાયશ્ચિન્ન પ્રતિસેવના પ્રાયશ્ચિન્ન, તદાલોચનાદિક દશવિધં ત્યાદિ—

પ્રાયશ્ચિન્ન છે । યહ પ્રાયશ્ચિન્ન અનુષ્ઠાન વિશેષરૂપ હોતા છે, હસે જો જ્ઞાનપ્રાયશ્ચિન્ન આવિકે મેવસે ચાર પ્રકારકા કહા ગયા છે હસકા તાત્પર્ય એસા છે—જ્ઞાન સમ્બધી અતિચારોકા સશોષન કરના યહ જ્ઞાન પ્રાયશ્ચિન્ન છે । દર્શન સમ્બધી અતિચારોકા સશોષન કરના દર્શન પ્રાયશ્ચિન્ન છે । તથા ચરિત્ર સમ્બધી અતિચારોકા સશોષન કરના યહ ચારિત્ર પ્રાયશ્ચિન્ન છે ।

“વિયત્તકિષ્કપાયચ્છિન્ન” ઇત્યાદિ—

ગીતાર્થ ગુરુભાષણની પર્યાલોચના કર જો કુછ પ્રાયશ્ચિન્ન દેતે છે વહ સપ વાપ વિશેષકહી હોતા છે । એસા યહ પ્રાયશ્ચિન્ન અ્યક્તકૃત્ય પ્રાયશ્ચિન્ન છે ક્યોંકિ—અ્યક્ત નામ ગીતાર્થકા છે, હનકે દ્વારા જો કરણીય હોતા છે વહ—કૃત્ય છે । હસ અ્યક્તકૃત્ય રૂપ જો પ્રાયશ્ચિન્ન છે વહ અ્યક્ત કૃત્ય પ્રાયશ્ચિન્ન છે । ૪ અ્યક્તકૃત્યકા સેવન કરના હસકા નામ પ્રતિસેવના

પ્રાયશ્ચિન્ન અનુષ્ઠાન વિશેષરૂપ હોય છે હવે તેના ચાર લેટેનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—જ્ઞાન સમ્બધી અતિચારોનુ વિશેષન કરનું તેનુ નામ જ્ઞાન પ્રાયશ્ચિન્ન છે દર્શન સમ્બધી અતિચારોનુ વિશેષન કરનું તેનુ નામ દર્શનપ્રાયશ્ચિન્ન છે ચારિત્રવિષયક અતિચારોનુ વિશેષન કરનું તેનુ નામ ચારિત્ર પ્રાયશ્ચિન્ન છે

“વિયત્તકિષ્કપાયચ્છિન્ન” ઇત્યાદિ—ગીતાર્થ ગુરુભાષણની પર્યાલોચના કરીને જે કોઇ પ્રાયશ્ચિન્ન છે તે પ્રાયશ્ચિન્નકા હોય છે એનું તે પ્રાયશ્ચિન્ન અ્યક્તકૃત્ય પ્રાયશ્ચિન્ન છે ક્યોંકિ—અ્યક્ત નામ ગીતાર્થનું છે તેમના દ્વારા જે કરણીય હોય છે તેનું નામ કૃત્ય છે આ અ્યક્તકૃત્ય રૂપ જે પ્રાયશ્ચિન્ન છે તેને અ્યક્તકૃત્ય પ્રાયશ્ચિન્ન કહે છે

અ્યક્તનું સેવન કરનું તેનું નામ પ્રતિસેવના છે તે પ્રતિસેવનાને દૂર કરવા માટેની જે સાચીય પ્રતિક્રિયા છે તેનું નામ પ્રતિસેવના પ્રાયશ્ચિન્ન છે

“ દ્રવ્યે લેત્તે કાલે ભાવે પલિત્તંચગા ચડવિયપ્પા ” ઇતિ,

છાયા—“ દ્રવ્યે ક્ષેત્રે કાલે ભાવે પરિકુચ્ચના ચતુર્વિકલ્પા । ” ઇતિ,
તથાહિ—સચ્ચિત્તે અચિત્તં ૧ જળત્રયપડિસેવિયં ચ અદ્ધાણે ૨।

સુઘ્મિક્ષે ય દુઘ્મિક્ષે ૩ હટ્ટેણ તદા ગિલાણેણ ।૧। ” ઇતિ,

છાયા—“ સચ્ચિત્તમચિત્તં જનપદપ્રતિસેવિતં ચાધ્વનિ ।

સુઘ્મિક્ષે દુઘ્મિક્ષે ચ હટ્ટેન તથા ગ્લાનેન ।૧। ” ઇતિ,

સચિત્તાદિ વિષયે માયાભિરચિત્તાદિરૂપેણ કથનમ્, તસ્યાઃ પ્રાયશ્ચિત્તં પરિ-
કુચ્ચના પ્રાયશ્ચિત્તમ્ ।૪। સૂ૦ ૨૫ ।

પ્રાયશ્ચિત્તં ચ કાલાપેક્ષયા દીયત ઇતિ કાલં નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલમ્—ચડવિહે કાલે પળ્લન્તે, તં જહા--પમાણકાલે ૧,
અહાઉયનિવાત્તિકાલે ૨, મરણકાલે ૩, અદ્ધાકાલે ૪ । સૂ૦ ૨૬ ।

છાયા—ચતુર્વિધઃ કાલઃ પ્રજ્ઞતઃ, તથા—પ્રમાણકાલઃ ૧, યથાઽઽયુષ્કનિ-
ર્વાત્તિકાલઃ ૨, મરણકાલઃ ૩, અદ્ધાકાલઃ ૪ । સૂ૦ ૨૬ ।

માયા હૈ । કહા ખી હૈ—“ દ્રવ્યે લેત્તે કાલે ભાવે ” ઇત્યાદિ ।
દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ ઓર ભાવમેં જો પરિકુચ્ચના ચાર પ્રકારકી કહી ગઈ
હૈ વહ્ ઇસ પ્રકાર હૈ । “ સચ્ચિત્તે અચિત્તં ” ઇત્યાદિ । સચિત્તાદિકે
વિષયમેં માયાચારિસે અચિત્તાદિ રૂપસે કથન કરના યહ સચ પરિકુચ્ચના
હૈ, ઇસકા જો પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ વહ્ પરિકુચ્ચના પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ ॥ સૂ૦ ૨૫ ॥

કથિત પ્રાયશ્ચિત્ત કાલકી અપેક્ષાસે દિયા જાતા હૈ । ઇસ વિષયકો
લેકર અચ સૂત્રકાર કાલકી પ્રરૂપણા કરતે હૈ । “ ચડવિહે કાલે
પળ્લન્તે ” ઇત્યાદિ—

“ પરિકુચ્ચના પ્રાયશ્ચિત્ત ” પરિકુચ્ચન એટલે માયા. એટલે કે
દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવત્રયબધી અપરાધોને છુપાવવા-જે અપરાધો કયા
હોય તેમને અન્ય રૂપે પ્રકટ કરવા તેનું નામ માયા છે કહ્યું પણ છે કે
“ દ્રવ્યે લેત્તે કાલે ભાવે ” ઇત્યાદિ—દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની અપેક્ષાએ
પરિકુચ્ચનાના જે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—“ સચ્ચિત્તે
અચિત્તં ” ઇત્યાદિ—સચિત્તાદિના વિષયમાં માયાચારીથી અચિત્તાદિ રૂપે કથન
કરવું તેનું નામ પરિકુચ્ચના છે. તેનું જે પ્રાયશ્ચિત્ત છે, તેને પરિકુચ્ચના
પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે. ॥ સૂ. ૨૫ ॥

પૂર્વેક્ત પ્રાયશ્ચિત્તકાળની અપેક્ષાએ આપવામાં આવે છે. આ સંબંધને
અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર કાળની પ્રરૂપણા કરે છે—“ ચડવિહે કાલે પળ્લન્તે ”
ઇત્યાદિ.

પુનસ્તસ્તેનને વશાહોરાત્રાન્, પુન પચ્ચદશાહોરાત્રાનેર્વ પખ્માસી યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્તં
વાતમ્ય મયતિ, તતોર્ઘિકં તપોદેય ન મયતિ, મહાધીરશાસને તપસઃ પખ્માસાન્ત
ત્વાદિતિ, ઉક્ત ચ—

“ પંચાદ્યારોધન, નેયન્વા જાન હોસિ છમ્માસા ।

તેણ પરમાસિયાષ છન્નુનરિં છોસણ કુચ્ચા ।૧। ” ઈતિ,

છાયા—“ પચ્ચાટ્ટિકારોપણા જ્ઞાતમ્યા યાવત્ મવન્તિ પખ્માસા ।

તતઃ પરં માસાનાં પખ્ખામ્પરિ છોપણાં કુચ્ચાત્ ।૧। ” ઈતિ,

તયા પ્રાયશ્ચિત્તમારોપણાપ્રાયશ્ચિત્તમિતિ ।૧।

તયા—“ પરિકુચ્ચનાપ્રાયશ્ચિત્તમ્ ”—પરિકુચ્ચનં પરિકુચ્ચના-માયા, અપ
રાધાનાં દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર-કાલ-માવસસ્વન્ધિનાં ગોપનમ્-અન્યથા વિચમાનાનામન્યથા
કયનમ્, ઉક્તચ—

નામ આરોપણા હૈ । જેસે કોઈ સાધુ પચ મહોરાત્રકા પ્રાયશ્ચિત્ત લેતા હૈ
અથ વહ પુનઃ વહ વસી દોષકા આસેવન કરને લગતા હૈ, તચ વહ વસકા
વશ અહોરાત્ર પ્રાયશ્ચિત્ત લે લેતા હૈ । પુનઃ વહ પન્નદ્વ દિનકા પ્રાયશ્ચિત્ત
લે લેતા હૈ યેસે વહ છદ્દ માસ તકકા પ્રાયશ્ચિત્ત લેવા રહતા હૈ । હસકે
યાદ વસે તપ નહીં દિયા જાતા હૈ । કયોંકિ મહાધીરકે શાસનમેં તપકી
અન્તિમા સીમા છદ્દ માસ તકહી હૈ । કહામી હૈ કિ—“ પંચાદ્યારોધન ”
હસ્યાદિ । હસ તરહકી અરોપણાસે જો પ્રાયશ્ચિત્ત દિયા જાય વહ-આરો
પણા પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ । તથા—“ પરિકુચ્ચના પ્રાયશ્ચિત્ત ”—પરિકુચ્ચન નામ
માયાકા હૈ । અર્થાત્—દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ ઓર માય સસ્વન્ધી અપરાધોં કા
ગોપન કરના, કિયે ગયે અપરાધોંકો અ-યરુપસે કહના હસ કા નામ

આપવામાં આવે, તો તેનું નામ આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત સમજવું એમકે ૩૧૪
શાધુને અમુક દોષને માટે પાંચ દિનરાત્રનું પ્રાયશ્ચિત્ત આપવામાં આવે છે.
જે જ સાધુ બીજા ૧૧ તે દોષનું આસેવન કરે તો તેને ૬૪ દિનરાત્રનું પ્રાય
શ્ચિત્ત આપવામાં આવે છે ત્રીજી વખત જો દોષનું આસેવન કરવા માટે ૧૫
દિનરાત્રનું પ્રાયશ્ચિત્ત અપાય છે. આ પ્રમાણે ૭ માસ સુધીનું પ્રાયશ્ચિત્ત તે
ભરૂં થકે છે ત્યારબાદ વધુ સમજનું પ્રાયશ્ચિત્ત (પ્રાયશ્ચિત્ત નિમિત્તક તપ)
તેને અપાતું નથી. કારણ કે મહાધીર પ્રજા ૧૧ શાસનમાં તપની આ ત્રીમ સીમા
૭ માસ સુધીની જ હતી છે. હવે પછી છે કે—“ પંચાદ્યારોધન ” ઇત્યાદિ.
આ પ્રકારની આરોપણાથી જે પ્રાયશ્ચિત્ત કેવામાં આવે તેનું નામ
આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત છે

યથાઽઽયુષ્કનિર્વૃત્તિકાલ; યદ્વા-યથાઽઽયુષો નિર્વૃત્તિસ્તથા યઃ કાલો નારકાદિ-
ભવેઽસ્થાનં સ યથાઽઽયુષ્કનિર્વૃત્તિકાલઃ, આયુષ્કર્માનુભવવિશિષ્ટઃ, સકલસંસારિ
જીવાનાં વર્તનાદિરૂપ ઇતિ, ઉક્તં ચ—

“ આઝયમેત્તવિસિદ્ધો સ એવ જીવાણ વત્તણાદિમઓ ।

મન્નઈ અહાઝકાલો વત્તઈ જો જચ્ચિરં જેણં । ૧ । ” ઇતિ,

છાયા—“ આયુર્માત્રવિશિષ્ટઃ સ એવ જીવાનાં વર્તનાદિમયઃ ।

મ્ભવ્યતે યથાઽઽયુષ્કાલો વર્તતે યો યચ્ચિરં યેન । ૧ । ” ઇતિ,

તથા—“ મરણકાલઃ ”-મરણસ્ય-મૃત્યોઃ કાલઃ-સમયો મરણકાલઃ, યદ્વા-
મરણવિશિષ્ટઃ કાલો મરણકાલઃ । અથવા-મરણમેવ કાલો મરણકાલઃ, મરણપ-
ર્યાયત્વાદિતિ, ઉક્તં ચ—

“ કાલોત્તિ મયં મરણં જહેહ મરણં ગઓત્તિ કાલગમ્મો ।

તસ્મા સ કાલકાલો જો જસસ ગમ્મો મરણકાલો । ૧ । ”

છાયા—“ કાલ ઇતિ મતં મરણં યથેહ મરણં ગત ઇતિ કાલગતઃ ।

તસ્માત્ સ કાલકાલો યો યસ્ય ગતો મરણકાલઃ । ૧ । ” ઇતિ,

યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાલ હૈ । અથવા-જિતની જહાંકી આયુકા બન્ધ જિસ
જીવકો હુવા હૈ उसीके प्रमाणमें उन नारकादि भवोंमें जीवोंका जो
वहाँ अवस्थान है वह यथायुष्क निर्वृत्तिकाल है । तात्पर्य इस कथनका
यह है कि जितनी जीस जीवने जिस पर्यायकी आयुका बन्ध किया है
उस जीवका उतने समय तक उस पर्यायमें बने रहना यही यथायुष्क
निर्वृत्तिकाल है । कहाभी है—“ आऊयमेत्तविसिद्धो ’ इत्यादि ।

“ મરણકાલ ”-મૃત્યુકા જો કાલ હૈ વહ મરણકાલ હૈ । અથવા મરણ-
રૂપ જો કાલ હૈ વહ મરણકાલ હૈ । कहाभी है—“ कालोत्ति मयंमरणं ”

જે સ્થિતિ છે, તેને યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાળ કહે છે અથવા-જે જીવે જે ગતિના
જેટલા આયુનો બંધ કર્યો હોય તેટલા પ્રમાણમાં તે નારકાદિ ગતિમાં જીવનું
જે અવસ્થાન થાય છે તે અવસ્થાન કાળને (તે ભવસબંધી આયુસ્થિતિને)
યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાળ કહે છે. આ કથનનું તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે—
જીવે જે પર્યાયના જેટલા આયુનો બંધ કર્યો હોય, તે પર્યાયમાં જેટલા સમય
સુધી જીવને જે રહેવું પડે છે, તેનું નામ જ યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાળ છે.
કહ્યું પણ છે કે—“ આઝયમેત્તવિસિદ્ધો ” ઇત્યાદિ.

“ મરણકાળ ” મૃત્યુનો જે કાળ છે તેનું નામ મરણકાળ છે. અથવા
મરણ-વિશિષ્ટ જે કાળ છે તે મરણકાળ છે અથવા મરણરૂપ જે કાળ છે તે
મરણકાળ છે. કહ્યું પણ છે કે—“ કાલો ત્તિ મય મરણ ” ઇત્યાદિ.

ટીકા—“ ઘડિયો કાલે ” इत्यादि—कालः—वर्तनालक्षण स, चतुर्विधः प्रज्ञः
तथा — प्रमाणकालः — प्रतीयते—परिच्छिद्यतेऽप्येन वर्षक्षतपत्न्योपमादिकमिति,
प्रमाणं, तदेव काल प्रमाणकाल, स च दिवसादिलक्षणो मनुष्यक्षेत्रान्तरतीति,
तत्तं च—

“ ઘડિયો પમાણકાલો, દિવસપમાણં ચ દોઢ રાઈ ય ।

ઘડપોરિસિયો દિવસો, રાઈ ઘડપોરિસી ચેવ । ૧ । ” इति,

છાયા—“ ધ્રિષિષઃ પ્રમાણકાલો દિવસપમાણો યપતિ રાત્રિય ।

ચતુષ્પૌરુષિકો દિવસો રાત્રિયતુષ્પૌરુષી ચેવ । ૧ । ”

“ યથાઽઽયુક્તિર્નિર્વૃત્તિકાલ ” યથા—યથાકારં નારકાદિમેદેનાઽઽયુક્તર્મયિ
ક્ષેપો યથાઽઽયુઃ, તદેવ યથાઽઽયુક્ત, તસ્ય રૌદ્રાદિપ્યાનાદિના નિર્વૃત્તિઃ—ચર્ચ
યથાઽઽયુક્તિર્નિર્વૃત્તિઃ, તસ્યા સકાશઘઃ કાલો નારકાદિત્વન જોડાનાં સ્થિતિઃ સ

સૂત્રાર્થ—કાલ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા છે, જૈસે—પ્રમાણકાલ ૧, યથાયુક્ત
નિર્વૃત્તિકાલ ૨, મરણકાલ ૩ ઓર અદ્વાકાલ ૪ ।

ટીકાર્થ — કાલકા લક્ષણ વર્તના કહા છે, કહાની
છે - “ દશ્વપરિઘટુલ્લો ” इत्यादि । વર્તના લક્ષણવાલા એસા
કાલ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા છે, જૈસે—પ્રમાણકાલ આદિ પ્રિસ
કાલસે વર્ષશત પત્ન્યોપમા આદિક જાના જાતા છે એવ પ્રમાણકાલ છે,
એવ પ્રમાણકાલ દિવસ આદિ રૂપ હોતા છે ઓર મનુષ્યક્ષેત્રવર્તી હોતા
છે । કહાની છે—“ ઘડિયો પમાણકાલો ” इत्यादि । યથાયુક્ત નિર્વૃત્તિ
કાલ નારક આદિ પર્યાયોક્તી જોતની આયુ છે એવ યથાયુક્ત છે ।
રૌદ્રપ્યાન આદિ દ્વારા હસ આયુકા યાંચના એવ—યથાયુક્ત નિર્વૃત્તિ છે ।
હસ યથાયુક્તકે અનુસાર જો નારકાદિ રૂપસે જોયોંકી સ્થિતિ છે, એવ

સૂત્રાર્થ—કાલ ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે ચાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) પ્રમાણકાલ, (૨) યથાયુક્ત નિર્વૃત્તિકાલ, (૩) મરણકાલ અને (૪) અદ્વાકાલ.

ટીકાર્થ—કાલનું લક્ષણ “વર્તના” કહ્યું છે કહ્યું પણ છે કે—“દશ્વપરિઘટુલ્લો” ઇત્યાદિ
વર્તના લક્ષણવાળા તે કાળના પ્રમાણકાલ આદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે જે કાળની
મરણથી વર્ષશત, પત્ન્યોપમા આદિ બાબી ચકાસે છે તે કાળનું નામ પ્રમાણકાલ
છે તે પ્રમાણકાલ દિવસ આદિ રૂપ હોય છે, અને મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં જ તેનું
અસ્તિત્વ હોય છે કહ્યું પણ છે કે— ઘડિયો પમાણકાલો ” ઇત્યાદિ.

‘ યથાયુક્ત નિર્વૃત્તિકાલ ’—નારક આદિ પપથિનું જેટલું આયુષ્ય છે,
તેટલા આયુષ્યનું નામ યથાયુક્ત છે રૌદ્રપ્યાન આદિ દ્વારા તે આયુ બાબત
તેનું નામ યથાયુક્ત નિર્વૃત્તિ છે. આ યથાયુક્ત અનુસાર નારકાદિ રૂપે જીવેલાની

યથાઽઽયુષ્કનિર્વૃત્તિકાલઃ, યદ્વા-યથાઽઽયુષો નિર્વૃત્તિસ્તથા યઃ કાલો નારકાદિ-
ભવેઽસ્થાનં સ યથાઽઽયુષ્કનિર્વૃત્તિકાલઃ, આયુષ્કર્માનુભવવિશિષ્ટઃ, સકલસંસારિ
જીવાનાં વર્તનાદિરૂપ ઇતિ, ઉક્તં ચ—

“ આઝમેત્તવિસિદ્ધો સ એવ જીવાણ વત્તણાદિમઓ ।

મન્નહ અદાઝકાલો વત્તહ જો જન્નિરં જેણં । ૧૧ ” ઇતિ,

છાયા—“ આયુર્માત્રવિશિષ્ટઃ સ એવ જીવાનાં વર્તનાદિમયઃ ।

ભળ્યતે યથાઽઽયુષ્કાલો વર્તતે યો યન્નિરં યેન । ૧૧ ” ઇતિ,

તથા—“ મરણકાલઃ ”—મરણસ્ય-મૃત્યોઃ કાલઃ—સમયો મરણકાલઃ, યદ્વા-
મરણવિશિષ્ટઃ કાલો મરણકાલઃ । અથવા—મરણમેવ કાલો મરણકાલઃ, મરણપ-
ર્યાયત્વાદિતિ, ઉક્તં ચ—

“ કાલોત્તિ મયં મરણં જહેહ મરણં ગઓત્તિ કાલગઓ ।

તસ્મા સ કાલકાલો જો જસ્સ ગઓ મરણકાલો । ૧૧ ”

છાયા—“ કાલ ઇતિ મતં મરણં યથેહ મરણં ગત ઇતિ કાલગત ।

તસ્માત્ સ કાલકાલો યો યસ્ય ગતો મરણકાલઃ । ૧૧ ” ઇતિ,

યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાલ હૈ । અથવા—જિતની જહાંકી આયુકા બન્ધ જિસ
જીવકો હુવા હૈ ડસીકે પ્રમાણમેં ડન નારકાદિ ભવોમેં જીવોંકા જો
વહાં અવસ્થાન હૈ વહ યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાલ હૈ । તાત્પર્ય હસ કથનકા
યહ હૈ કિ જિતની જીસ જીવને જિસ પર્યાયકી આયુકા બન્ધ કિયા હૈ
હસ જીવકા ડતને સમય તક ડસ પર્યાયમેં ઘને રહના યહી યથાયુષ્ક
નિર્વૃત્તિકાલ હૈ । કહામી હૈ—“ આઝમેત્તવિસિદ્ધો ” ઇત્યાદિ ।
“ મરણકાલ ”—મૃત્યુકા જો કાલ હૈ વહ મરણકાલ હૈ । અથવા મરણ-
રૂપ જો કાલ હૈ વહ મરણકાલ હૈ । કહામી હૈ—“ કાલોત્તિ મયંમરણ ”

જે સ્થિતિ છે, તેને યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાળ કહે છે અથવા—જે જીવે જે ગતિના
જેટલા આયુનો બંધ કર્યો હોય તેટલા પ્રમાણમાં તે નારકાદિ ગતિમાં જીવતું
જે અવસ્થાન થાય છે તે અવસ્થાન કાળને (તે ભવસબંધી આયુસ્થિતિને)
યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાળ કહે છે. આ કથનનું તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે—
જીવે જે પર્યાયના જેટલા આયુનો બંધ કર્યો હોય, તે પર્યાયમાં જેટલા સમય
સુધી જીવને જે રહેવું પડે છે, તેનું નામ જ યથાયુષ્ક નિર્વૃત્તિકાળ છે.
કહ્યું પણ છે કે—“ આઝમેત્તવિસિદ્ધો ” ઇત્યાદિ.

“ મરણકાળ ” મૃત્યુનો જે કાળ છે તેનું નામ મરણકાળ છે. અથવા
મરણ-વિશિષ્ટ જે કાળ છે તે મરણકાળ છે અથવા મરણરૂપ જે કાળ છે તે
મરણકાળ છે. કહ્યું પણ છે કે—“ કાલોત્તિ મયં મરણ ” ઇત્યાદિ.

તથા—“ અદ્વાકાલ ” અદ્વા-સમયાવલિકાદિ કાલવિશેષ; તદ્વૃપ કાલો-
 ડ્વાકાલ; કાલો હિ ઘર્ણપમાણકાલાદિવ્યપિ ધર્ષતે, તસ્માત્ સોડ્વાઘ્વદેન
 વિશિષ્યતે । અય ચ સૂર્યક્રિયાવિશિષ્ટો મનુષ્યક્ષેપ્રાન્યર્થર્થો વિષસાદિસમયરૂપો
 જ્ઞેયઃ । ઉક્ત ધ—

“ સૂરકિરિયાવિસિદ્ધો ગોદોદાદિકિરિયાસુ નિરપેક્ષો ।

અદ્વાકાલો મગ્નઃ સમયક્ષેત્રેષામિ સમયાર્ધ । ૧ ।

સમયાવલિયમુદ્ગુચા દિવસમદોરચપત્તમાસા ય ।

સત્ત્વરજુગપલિયા સાગર ઓસપિપરિયદ્વા । ૨ । ”

છાયા—“ સૂર્યક્રિયાવિશિષ્ટો ગોદોદાદિક્રિયાસુ નિરપેક્ષઃ ।

અદ્વાકાલો મગ્નઃ સમયક્ષેત્રે સમયાર્ધ । ૧ ।

સમયાવલિકામુદ્ગુચા દિવસાદોરાષ પત્તમાસામ ।

સત્ત્વરજુગપલિયા સાગરોત્સર્પિણીપરાવર્તા । ૨ । ” इति,

સર્વોડપિ કાલોડ્વાકાલવિશેષપૃષ્ઠ, કિન્તુ ચ ચતુઃસ્થાનાનુરોપાત્ શિષ્ય
 બુદ્ધિવૈશ્વપાર્યં વા ચતુર્વિધઃ પ્રોક્તઃ ।

इति कालनिरूपणम् । (सू० २६)

इत्यादि । तथा—“ अद्वैकाल ” समय आवलिका आविरूप जो काल है
 वह अद्वैकाल है । कालका विशेषण जो अद्वै रम्भा है वह घर्ण परि
 णाममें आगत कालरूप घर्णकी व्यापृत्तिके लिये रखवा गया है । यह
 अद्वैकाल सूर्यकी क्रियासे जाना जाता है और साइ दीपमें ही इसका
 सद्भाव कहा गया है, यह विषसादिरूप होता है । कहाँमी है—
 “ सूरकिरियाविसिद्धो ” इत्यादि । जितनाभी काल है वह अद्वैकाल
 विशेषरूप ही है, किन्तु—यहाँ चतुःस्थानके अनुरोधसे धा-शिष्य
 बुद्धिके वैशद्यके लिये उसे चार प्रकारका कहा गया है ॥ सू० २६ ॥

“ अद्वैકाल ”—अथ, आवलिका आदि रूप के अण के तेज नाम
 अद्वैकाल के जहाँ अणनु विशेषण अद्वै राणवाद्य कारण के के के वरुं
 परिणाममा के कारण (अण) वरुं आवे के तेनी व्यापृत्ति (निराण) ने
 निमित्त आ विशेषण अण साथे योजनार्थ आभ्युं के आ अद्वैकाल सूर्यनी
 क्रियायी बाणी शक्य के, जने अदी दीपमा के तेनी सद्भाव होय के त
 दिवस आदि रूप होय के । इह पण के के—“ सूरकिरिया विसिद्धो ” इत्यादि
 केटल अण के ते अद्वैकाल विशेषण के के, पण जहाँ चार स्थानकेने
 अधिकार आवतो होवायी अथवा शिष्यबुद्धिना वैशद्यने भाटे तेने चार
 प्रकारने होये के ॥ सू २६ ॥

પૂર્વ દ્રવ્યપર્યાયભૂતસ્ય કાલસ્ય ચતુઃસ્થાનકમુક્તમ્, અધુના પર્યાયાધિકારાત્ પુદ્ગલાનાં પર્યાયભૂતસ્ય પરિણામસ્ય ચતુઃસ્થાનકમાહ—

મૂલમ્—ચતુર્વિહે પોગલપરિણામે પળ્લન્તે, તં જહા--વત્તપરિણામે ૧, ગન્ધપરિણામે ૨, રસપરિણામે ૩, ફાસપરિણામે ૪। સૂ ૦૨૭।

છાયા—ચતુર્વિધઃ પુદ્ગલપરિણામઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—વર્ણપરિણામઃ ૧, ગન્ધપરિણામઃ ૨, રસપરિણામઃ ૩, સ્પર્શપરિણામઃ ૪। સૂ ૦ ૨૭ ।

ટીકા—“ ચતુર્વિહે પોગલ ” इत्यादि—પુદ્ગલપરિણામઃ—પુદ્ગલાનાં—પૂરણ-ગલનધર્માણાં સ્પર્શરસગન્ધવર્ણશબ્દમૂર્તસ્વભાવકાનાં પરિણામઃ—અવસ્થાતોડવસ્થા-ન્ટરગમનં પુદ્ગલપરિણામ, ઉત્તં ચ—

“ પરિણામો હ્યર્થાન્તરગમનં ન તુ સર્વથા વ્યવસ્થાનમ્ ।

ન ચ સર્વથા વિનાશઃ પરિણામસ્તદ્વિદામિષ્ટઃ । ૧ । ” इति,

“ હસ પ્રકારસે દ્રવ્ય પર્યાયરૂપ કાલમે ચતુઃસ્થાનકતા કા કથન કરકે અવ સૂત્રકાર પર્યાયાધિકારકો લેકર પુદ્ગલોકે પર્યાયરૂપ પરિણામ કી ચતુઃસ્થાનકતાકા કથન કરતે હૈં ।

“ ચતુર્વિહે પોગલપરિણામે પળ્લન્તે ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—પુદ્ગલ પરિણામ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈં । જૈસે—વર્ણ પરિણામ ૧ ગન્ધ પરિણામ ૨, રસ પરિણામ ૩ ઓર સ્પર્શ પરિણામ ૪ ।

ટીકાર્થ—પુદ્ગલ—પૂરણ ગલન સ્વભાવવાલે હોતે હૈં ઓર—રૂપ, રસ, ઓર ગન્ધ, વર્ણ એવ સ્પર્શવાલે હોતે હૈં । અતઃ—યે સૂત્ર કહે ગયે હૈં । હનકા એક અવસ્થાસે જો અવસ્થાન્ટરમે ગમન હોતા હૈ વહી પરિણામ હૈ । કહાભી હૈ—“ પરિણામો હ્યર્થાન્તર ગમનમ્ ” इत्यादि । પુદ્ગલપરિણામ ચાર પ્રકારકા જો કહા ગયા હૈ ડસકા અભિપ્રાય એસા હૈ ।

આ પ્રમાણે દ્રવ્યપર્યાયરૂપ કાળમા ચતુર્વિધતાનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર પર્યાયાધિકારના સંબંધને અનુલક્ષીને પુદ્ગલોના પર્યાયરૂપ પરિણામની ચતુર્વિધતાનું કથન કરે છે—“ ચતુર્વિહે પોગલપરિણામે પળ્લન્તે ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—પુદ્ગલ પરિણામ ચાર પ્રકારનું કહ્યું છે (૧) વર્ણ પરિણામ, (૨) ગન્ધ પરિણામ, (૩) રસ પરિણામ અને (૪) સ્પર્શ પરિણામ

ટીકાર્થ—પુદ્ગલ પૂરણ અને ગલન સ્વભાવવાળાં હોય છે, અને રૂપ, રસ, ગન્ધ, વર્ણ અને સ્પર્શવાળા હોય છે, તેથી તેમને મૂર્ત કહેવામાં આવ્યાં છે. તેમનું એક અવસ્થામાથી બીજી અવસ્થામાં જે ગમન થાય છે, તેનું નામ જ પરિણામ છે કહ્યું પણ છે કે—“ પરિણામો હ્યર્થાન્તરગમનમ્ ” इत्यादि. હવે પુદ્ગલ પરિણામના જે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે.

સ ચતુર્વિધ = ચતુષ્પ્રકાર, પ્રથમ, તથા-વર્ણપરિણામ - ધર્મસ્ય ક્ષાત્તાદેઃ
પરિણામઃ-અન્યથામનન વર્ણપરિણામઃ ૧। વ્ય-ગન્ધપરિણામ - ગન્ધસ્ય-પરિણામઃ-
પરિવર્તન સુરમેદૂરમીમવર્તન, દુરમ સુરમીમવનમિત્યર્થઃ ૨। “ રસપરિણામ ”-
રસસ્ય-મધુરાદિરૂપસ્ય પરિણામઃ=ફટુકાદિરૂપસ્ય પરિણમન રસપરિણામ ૩।
“ સ્પર્શપરિણામ ”-સ્પર્શસ્ય-શીતાદિરૂપસ્ય પરિણામઃ-ઉષ્ણાદિરૂપેણ પરિણમન
સ્પર્શપરિણામઃ ૧૪। ॥ સૂ૦ ૨૭ ॥

इति परिणामनिरूपणम् ।

पूर्वतन्जीवद्रव्यपरिणाम उक्तः, मम्मति तु जीव द्रव्यपरिणामान् निरूपयितुमाह-

मृम्भ-भरहेरवपसु णं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झि
मगा यावीस अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्म पण्णवेति, त
जहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ
वेरमणं, सव्वाओ अदिस्सादाणाओ वेरमण, सव्वाओ वहिद्धादा
णाओ वेरमण १। सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहता भगवतो
चाउज्जाम धम्म पण्णवेति, त जहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ
वेरमण, जाव सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमणं ॥ सू० २८ ॥

કાલાદિકૃત પાંચ પ્રકારકે ઘર્ણોક્તા જો અન્યથા હોજાના પરિણામ
હૈ । યહ-વર્ણરૂપ પરિણામ હૈ, ગન્ધ ગુણમે જો પરિણમન હૈ । જૈસે—
સુરમિ ગન્ધકા દુરમિ ગન્ધ રૂપસે પરિણમન હોના, દુરમિ ગન્ધકા
સુરમિ ગન્ધ રૂપસે પરિણમન હોના । યહ સય ગન્ધ ઓર ગુણકા પરિ
વર્તન ગન્ધ પરિણમન હૈ । મધુરાદિ રસોક્તા જો પરિણમન હૈ—જૈસે મધુર
રસકા ફટુક રસમે પરિવર્તન હો જાના । ફટુક રસકા મધુર રસમે
પરિણમન આદિ સય રસ પરિણામ હૈ । તથા-શીતાદિ સ્પર્શોક્તા જો
ઉષ્ણાદિ રૂપસે પરિણમન હોતા હૈ, યહ સ્પર્શ પરિણામ હૈ ॥ સૂ૦ ૨૭ ॥

મળો અહિ પાસ વણુ કહ્યા છે કેઈ વણુ એક વજુનુ અન્ય વણુ રૂપે પરિ
ણમન યહ વજુ તેનુ નામ વણુરૂપ પરિણામ છે । જ મ અણુના પરિણમનને
અન્ય પરિણામ કહે છે જેમકે સુરભિન ધનુ દુ નિમ ધ (દુન મ) રૂપે
અથવા દુરભિન ધનુ સુરભિ જ મ રૂપે પરિણમન યહુ તેનુ નામ અન્ય પરિ
ણામ છે । મધુરાદિ રસોનુ કહ્યા અહિ રસ રૂપે પરિણમન યહુ અથવા ફટુક
રસનુ મધુરાદિ રસ રૂપે પરિણમન યહુ તેનુ નામ રસ પરિણામ છે । શીતાદિ
સ્પર્શોનુ ઉષ્ણાદિ રૂપરૂ રૂપે પરિણમન યહુ તેનુ નામ સ્પર્શ પરિણામ છે ॥ સૂ. ૨૭ ॥

છાયા—ભરતૈરવતયોઃ સ્વલુ વર્પયોઃ પૂર્વપશ્ચિમવર્જા મધ્યમકા દ્વાવિંશતિ-
રહન્તો ભગવન્તશ્ચાતુર્યામ ધર્મ પ્રજાપયન્તિ, તથા—મર્વસ્માન્ પ્રાણાતિપાતાન્ વિર-
મણમ્, સર્વસ્માન્ મૃષાવાદાન્ વિરમણમ્, સર્વસ્માન્ અદત્તાદાનાન્ વિરમણમ્,
સર્વસ્માન્ વહિર્દ્વાદાનાન્ વિરમણમ્ ૧। સર્વેષુ સ્વલુ મહાવિદેહેષુ અર્હન્તો ભગવન્તઃ
ચાતુર્યામ ધર્મ પ્રજાપયન્તિ, તથા—સર્વસ્માન્ પ્રાણાતિપાતાન્ વિરમણમ્, યાવત્
સર્વસ્માન્ વહિર્દ્વાદાનાન્ વિરમણમ્ । સુ. ૨૮ ॥

ટીકા—“ ભરહેરવણ્સુ ” ઇત્યાદિ—ભરતૈરવતયો = એનદાસ્યયોઃ ‘ સ્વલુ ’
વાક્યાલક્ષારે, વર્પયો = ક્ષેત્રયોર્મધ્યે પૂર્વપશ્ચિમવર્જાઃ—પૂર્વપશ્ચિમવર્તિનો વિહાય મધ્ય-
મકાઃ—મધ્યે મવા મધ્યમાન્ત એવ મધ્યમકા = મધ્યવર્તિનઃ, દ્વાવિંશતિઃ = દ્વાવિંશતિ-
સંખ્યકાઃ અર્હન્તઃ = તીર્થઢ્કરાઃ, ચાતુર્યામ—યમાઃ—સાવધવિરતિક્ષણાઃ, ત એવ

અજીવ દ્રવ્યકા પરિણામ કહકર અવ સૂત્રકાર જીવ દ્રવ્યકે પરિ-
ણામોકા કાથન કરતે હૈ—“ ભરહેરવણ્સુણં વાસેસુ પુરિમપચ્છિમ-
વજ્જા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—ભરત—એરવત ક્ષેત્રમે પૂર્વ—પશ્ચિમકે તીર્થકરોંકો છોડકર ચીચકે
૨૨તીર્થઢ્કરોંને ચાતુર્યામ ધર્મકી પ્રજાપના કી હૈ । વહ ચાતુર્યામ ધર્મ હસ
પ્રકારસે હૈ—સમસ્ત પ્રાણાતિપાતસે વિરમણ—૧, સમસ્ત મૃષાવાદસે
વિરમણ—૨, સમસ્ત અદત્તાદાનસે વિરમણ—૩, એવ-ધર્મોપકરણકે સિવાય
સમસ્ત પરિગ્રહસે વિરમણ—૪ । સમસ્ત મહાવિદેહોંમે અર્હન્ત—ભગવન્તોંને
જો ચાતુર્યામ ધર્મકી પ્રજાપના કી હૈ વહ ચાતુર્યામ ધર્મ પૂર્વોક્ત સમસ્ત
પ્રાણાતિપાત આદિસે વિરમણ રૂપહી હૈ ।

ટીકાર્થ—યહાં—“ ણ ” પદ વાક્યાલક્ષારમે પ્રયુક્ત હૈ । પૂર્વ—પશ્ચિ-

અણવ દ્રવ્યના પરિણામનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર અણવ દ્રવ્યના
પરિણામનું નિરૂપણ કરે છે “ભરહેરવણ્સુણ વાસેસુ પુરિમપચ્છિમવજ્જા” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—ભરત અને એરવત ક્ષેત્રમા પહેલા અને છેલ્લા તીર્થ કરો સિવાયના
તીર્થ કરોએ એટલે કે વચ્ચેના ૨૨ તીર્થ કરોએ ચાતુર્યામ ધર્મની પ્રજાપના
કરી છે તે ચાતુર્યામ ધર્મનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે—(૧) સમસ્ત પ્રાણાતિ-
પાતથી વિરમણ, (૨) સમસ્ત મૃષાવાદથી વિરમણ, (૩) સમસ્ત અદત્તાદાનથી
વિરમણ અને (૪) ધર્મોપકરણ સિવાયના સમસ્ત પરિગ્રહથી વિરમણ સમસ્ત
મહાવિદેહોમા અર્હન્ત ભગવન્તોએ જે ચાતુર્યામ ધર્મની પ્રજાપના કરી છે તે
ચાતુર્યામ ધર્મ પૂર્વોક્ત સમસ્ત પ્રાણાતિપાત આદિથી વિરમણ રૂપ જ છે.

ટીકાર્થ—અહી “ળ” પદ વાક્યાલક્ષારમા વપરાયુ છે. ‘પૂર્વ’ અને ‘પશ્ચિમ’ પદો
દ્વારા અહીં પ્રથમ તીર્થ કર આદિનાય અને છેલ્લા તીર્થ કર મહાવીર પ્રભુ

યામાઃ, ચત્વારો યામા યસ્મિન્ સ ચતુર્થામ સ એવ ચાતુર્થામસ્ત ચાતુર્થામ=ચતુર્થ
 મહાવ્રતરૂપ, ધર્મ-દર્શનિગર્ભનિપતજનનુજાતપ્રાણદાનસમત્સરણ, પ્રજ્ઞપવન્તિ-ઉપ
 દિશન્તિ, સ્વયં-સર્વસ્માત્ પ્રાણાતિપાતાત્ વિરમણ-નિરૂત્તિ, સર્વસ્માત્ સ્વાપ-
 દાત્, વિરમણમ્, સર્વસ્માત્ અદ્વિત્યાદાનાત્-અદ્વચગ્રહણાત્, વિરમણમ્ સર્વસ્માત્
 અદિદ્વાદાનાત્ વિરમણમ્-આદીયત્ ઇત્યાદાન-પરિગ્રાહ્ય નસ્તુ તથા ધર્માપકરણ
 મપિ મવતીત્યત્ આદિ-‘અદિદે’-ત્યાદિ-અદિસ્થાત્-ધર્મોપકરણાત્ અદિર્ભૂત યદ્
 આદાનં તદ્ અદિદ્વાદાન-ધર્મોપકરણાતિરિક્તવસ્તુગ્રહણે, તસ્માત્ વિરમણમિત્યર્થઃ
 ક્વ ચ મૈથુન પરિગ્રહેન્તર્ભવતિ, યતોઽપરિગ્રહીતા સ્ત્રી ન મુન્યત્ ઇતિ સ્ત્રિયા અપિ
 ધર્મોપકરણાતિરિક્તત્વેન પ્રત્યાસ્યેયત્વે સિદ્ધે તત્પ્રત્યાસ્યાનાય વિશેષઃ પ્રયાસા
 કરમાત્પ્રત્યાસ્યેયસ્ય પ્રાણાતિપાતપ્રવૃત્તેષ્વાતુર્વિધ્યાદર્મસ્ય ચાતુર્થામતૈષ ।

મત્સે યદ્વાં પ્રથમ તીર્થંકુર આદિનાથ ઔર અન્તિમ તીર્થંકુરમહાવીર ગૃહીત
 હુયે હૈં । કુર્ગતિમેં વતિત્ત હોનેસે જીવોંકો જાં પચાતા હૈં વહ-ધર્મ હૈં ।
 સાવધ કર્મોંસે [કાર્યોંસે] ચિરતિ હોના યહ-યમ હૈં, યમહી યામ હૈં ।
 ચાર યામ જિસમેં હો વહ ચાતુર્થામ હૈં । ચાર મહાવ્રત રૂપ યમહી ચાતુ
 થામ હૈં યેસા જો ગ્રહણ કિયા જાતા હૈં વહ-આદાન હૈં । યેસા આદાન
 પરિગ્રાહ્ય-ગ્રહણ કરને યોગ્ય પદાર્થ હૈં । હસ તરહસે ધર્મોપકરણમી
 આદાનમેં આજાતા હૈં, અતા-આદાનમેં વહ પરિગ્રહીત (ગુપ્તા હુવા)
 ન હો હસલિયે “અદિદ્વ” પદ્ દિયા ગયા હૈં । ધર્મોપકરણસે અદિર્મૂત
 પદાર્થોંકા જો આદાન હૈં વહ અદિદ્વાદાન હૈં । મૈથુનકો પરિગ્રહમેં
 અન્તર્મૂત કર લિયા ગયા હૈં । ક્યોંકિ-અપરિગ્રહીત સ્ત્રી યોગ્ય
 નહીં હોતી હૈં હસલિયે સ્ત્રીમી ધર્મોપકરણસે અતિરિક્ત હોનેસે છોડને
 યોગ્ય કહી ગઈ હૈં અતાઃ વસમેં પ્રત્યાસ્યેયતા સિદ્ધ હોને પર વસકા

ગૃહીત થયા છે એવોને કુર્ગતિમાં પદ્ધતિ એ બધાવે છે તે ધર્મ છે.

સાવધ કર્મોંથી (પાપપુણ્ય કાર્યોંથી) વિરતિ થતી તેમ જ નામ ‘યમ’
 છે, તે યમતુ નામ જ ‘ચાર’ છે જેમાં ચાર ચાર ક્રમ તેને ચાતુર્થામ કહે
 છે ચાર મહાવ્રત રૂપ યામ જ ચાતુર્થામ છે એવું એ ગ્રહણ કરવામાં આવે
 છે તેનું નામ આદાન છે એવું આદાન પરિગ્રાહ્ય (ગ્રહણ કરવા યોગ્ય)
 પદાર્થ છે આ રીતે ધર્મોપકરણ પદ્ધતિ આદાનમાં આવી જાય છે તેથી આદા
 નમાં તેને પરિગ્રહીત નહીં કરવાને માટે જ ‘અદિદ્વ’ પદ્ મૂકવામાં આવ્યું
 છે ધર્મોપકરણ સિવાયના પદાર્થોંને એ આદાન છે તેને ‘અદિદ્વાદાન’
 અદિદ્વાદાન કહે છે તેના ગ્રહણને ચતુર્થામ ધર્મમાં નિરોધ કર્યો છે મૈથુનને
 પરિગ્રહમાં જ સમાવી લીધું છે કારણ કે અપરિગ્રહીત સ્ત્રી યોગ્ય કહેતી નથી,
 તેથી સ્ત્રીના પદ્ધતિ ધર્મોપકરણ સિવાયની વસ્તુઓમાં સમાવેશ થાય છે તે કારણે

“ સન્વેસુ ” इत्यादि—सर्वेषु ‘ खलु ’ वाक्यालङ्कारे, महाविदेहेषु भगवन्तो-
ऽर्हन्तश्चातुर्यामं धर्मं प्रज्ञपयन्ति—प्ररूपयन्ति, तद्यथा—‘ सर्वस्मात् प्राणातिपाताद्-
विरमणम् ’ इत्यारभ्य ‘ बहिर्द्वाऽऽदानाद्विरमणम् ’ इति पर्यन्तम् ।

अत्रायं विचारः—द्वाविंशतितीर्थङ्कराणां, महाविदेहकानां च चातुर्यामधर्मस्य,
पूर्व—पश्चिमतीर्थङ्करयोस्तु पञ्चयामधर्मस्य प्ररूपणा, सा च शिष्यापेक्षा भवति,
वस्तुतस्तु सर्वेषामपि पञ्चयामस्यैव धर्मस्य प्ररूपणा, यतः प्रथमतीर्थङ्करस्य साधव
ऋजुजडाः, चरमस्य तु वक्रजडा भवन्तीति ।

પ્રત્યાખ્યાન કરનેકે લિયે સ્વતન્ત્ર પ્રયાસ નહીં કિયા જાતા હૈ । ક્યોંકિ
વહ પ્રત્યાખ્યેય પ્રાણાતિપાત આદિકે ખીતર આગત પરિગ્રહમેં અન્તભૂતં
હોજાનેસે પ્રત્યાખ્યેય સ્વતઃ હોજાતી હૈ । ઇસ તરહ પ્રાણાતિપાન વિરમણ
આદિકી ચતુર્વિધતાસે ધર્મમેં ચાતુર્યામતા હૈ ।

“ સન્વેસુ ” इत्यादि—यहां “ खलु ” शब्द वाक्यालङ्कारमें प्रयुक्त
है । समस्त महाविदेहोंमें भगवान् अर्हन्तने इसी चातुर्याम धर्मकी
प्ररूपणा की है । इसी बातको “ सर्वस्मात्प्राणातिपाताद् विरमणम्—”
से लेकर “ बहिर्द्वादानाद्विरमणम् ” पद तक पुनः प्रकट किया है ।
यहां ऐसा विचार है—द्वाविंशति तीर्थङ्करोंकी और महावीदेहके तीर्थ-
ङ्करोंकी चातुर्याम धर्मकी तथा पूर्व पश्चिम तीर्थङ्करोंकी पञ्चयाम धर्मकी
प्ररूपणा है । यह ऐसी जो प्ररूपणा है वह शिष्यकी अपेक्षासे है ऐसा

અને પણ છોડવા યોગ્ય કહી છે આ રીતે તેમાં પ્રત્યાખ્યેયતા સિદ્ધ થતી
હોવાથી તેના પ્રત્યાખ્યાન કરવાના સ્વતન્ત્ર પ્રયાસની આવશ્યકતા રહેતી નથી,
કારણ કે પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ ચાર યામોમાં જે પરિગ્રહ વિરમણ
નામનું ચોથું વ્રત છે તેમાં મૈથુન વિરમણનો પણ સમાવેશ થાય છે. આ
રીતે પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિની ચતુર્વિધતાને લીધે ધર્મમાં ચતુર્યામતા જ
છે. “ સન્વેસુ ” इत्यादि અહીં ‘ ખલુ ’ શબ્દ વાક્યાલંકારમાં વપરાયો છે
સમસ્ત મહાવિદેહોમાં અર્હન્ત ભગવન્તોએ આ ચતુર્યામ ધર્મની જ પ્રરૂપણા
કરી છે, એ જ વાત “ सर्वस्मात्પ્રાણાતિપાતાદ્ વિરમણમ્ ” થી લઇને
“ बहिर्द्वादानाद्विरमणम् ” અહીં સુધીના સૂત્રપાઠ દ્વારા ફરી પ્રકટ કરી છે.
પહેલા અને છેલ્લા તિર્થંકરો સિવાયના બાવીસ તિર્થંકરોએ અને મહાવિદેહના
તિર્થંકરોએ ચાતુર્યામ ધર્મની પ્રરૂપણા કરી છે, પરન્તુ પહેલા તિર્થંકર આદિ-
નાથ અને છેલ્લા તિર્થંકર મહાવીર પ્રભુએ પંચયામ ધર્મની પ્રરૂપણા કરી છે.
એવી આ જે પ્રરૂપણા છે તે શિષ્યની અપેક્ષાએ સમજવી જોઇએ. વાસ્તવમાં

તયારિ—પ્રથમસ્ય જિનસ્ય સાધવ ઋજુઝઠા ઇતિ પ્રકૃત્યા ઋજુવો મદ્યા,
 બુદ્ધ્યા તુ ઝઠા -મન્દા ઇતિ તેષાં ધર્મસ્થાવરોષા દુર્લભઃ । ચરમજિનસ્ય તુ વ્ર-
 જઠાઃ, પ્રકૃત્યા વ્રજા, બુદ્ધ્યા તુ ઝઠા ઇતિ તેષાં ધર્મસ્ય પાલન દુષ્કરમ્ । અજિ-
 તાદિદાર્થિચરિજિનાનાં સાધવ ઋજુપાઠાઃ, પ્રકૃત્યા ઋજુવઃ બુદ્ધ્યા માઠા ઇતિ તેષાં
 ધર્મસ્થાવરોષ પાલનં ચ દ્રવ્યમપિ સુધર મવતીતિ ધર્મો દિવિષ- પ્રોક્તઃ । તદુક્ત ચ-

“પુરિમા ઉઝ્જુઝઠા ડ વ્રજઝઠા ચ પચ્છિમા ।

મજ્જિમા ઉઝ્જુપથા ડ તેષ ધર્મ્મે દુશ્ચ કપ । ૧ ।

પુરિમાણં દુષ્ણિસોજ્જો ડ, ચરિમાણં દુરુપપાલમો ।

કપ્પો મજ્જિમગાણં તુ સુવિસુજ્જો સુપાલમો । ૨ ।”

છાયા—“ પૂર્વા ઋજુઝઠાસ્તુ વ્રજઝઠાથ મધિમા ।

મધ્યમા ઋજુપાઠાસ્તુ તેન ધર્મો દિશા કુતઃ । ૧ ।

પૂર્વેષાં દુર્વિસોપ્યસ્તુ, ચરમાણાં દુરુપપાલકઃ ।

કલ્પો મધ્યમકાનાં તુ સુવિસોપ્ય સુપાલકઃ । ૨ ।” ઇતિ, । ૨૮ ।

જાનના આશિયે, ઘાસ્તયમેં તો સવહી તીર્થકુરોને પચ્છપામહી ધર્મકી
 પ્રરૂપણાકી હૈ । કયોંકિ—પ્રથમ તીર્થકુરોને સાધુ ઋજુ જઠ યે, હસકા
 ખાવ યહ હૈ કિ વે પ્રકૃતિસે ઋજુ-મદ્ય યે ઓર બુદ્ધિસે
 જઠ યે, મન્દ યે, હસલિયે ઉનકો ધર્મકા અવપોષ દુર્લભ થા, તયા
 ચરમ જિનકે સાધુ પ્રકૃતિસે વ્રજ યે ઓર બુદ્ધિસે જઠ યે, અતઃ ઉન્ને
 ધર્મકા પાલન દુષ્કર થા । ૨૨ તીર્થકુરોંકિ અજિતાદિ મગયન્તોંકિ સાધુ
 ઋજુ-માઠ યે, પ્રકૃતિસે ઋજુ ઓર બુદ્ધિસે માઠ નિપુણ યે, હસલિયે
 ઉનકો ધર્મકા જ્ઞાન ઓર ઉસકા પાલન યે દોનોંમી સુકર યે । હસલિયે
 ધર્મ દો પ્રકારકા કહા ગયા હૈ । કહામો હૈ—“ પુરિમા ઉઝ્જુ ઝઠા ડ ”
 હસ્યાદિ । સુ ૦ ૨૮ ॥

તો સવળા તીર્થકરોને પચ્છપામ ધર્મની જ પ્રરૂપણા કરી છે કારણ કે
 પહેલા તીર્થકરના સાધુ ઋજુ જઠ હતા, એટલે કે તેઓ પ્રકૃતિની અપેક્ષાએ
 ઋજુ (ભદ્ર-સરળ) હતા પણ બુદ્ધિની અપેક્ષાએ જઠ (મદ્ય બુદ્ધિવાળા)
 હતા, તે કારણે તેમને ધર્મનો અવપોષ થયો દુર્લભ હતો અન્તિમ તીર્થ
 કરના સાધુઓ પ્રકૃતિની અપેક્ષાએ વ્રજ અને બુદ્ધિની અપેક્ષાએ જઠ હતા, તેથી
 તેમને માટે પણ ધર્મપાલન દુષ્કર હતું પરંતુ વચ્ચેના અજિતાદિ ૨૨ તીર્થ કર
 ભગવન્તોના સાધુઓ ઋજુ પ્રકૃતિવાળા અને તીર્થ બુદ્ધિવાળા એટલે કે ઋજુ
 પ્રારંભ હતા તેથી તેમને માટે ધર્મનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાનું કામ તથા ધર્મ
 પાલનનું કાર્ય સુલભ હતું તેથી જ ધર્મના બે પ્રકાર પણ કહ્યા છે—(૧) અતુર્વામ ધર્મ
 અને (૨) પથ્યામ ધર્મ હતું પણ છે કે— પુરિમા ઋજુ ઝઠા ડ” હતાદિ ॥ સુ ૨૮ ॥

અનન્તરોક્ત પ્રાણાતિપાતાદિભ્યોઽનુપરતોપરતાનાં દુર્ગતિઃ સુગતિશ્ચ ભવતિ, તદ્વન્તશ્ચ તે દુર્ગતાઃ સુગતાશ્ચ ભવન્તીતિ દુર્ગતિસુગત્યાત્મકપરિણામયોદુર્ગતસુગતાનાં ચ ભેદાન્ નિરૂપયિતુ મૂત્રચતુષ્ટયમાહ—

મૂલપ્—ચત્તારિ દુર્ગઈઓ પળ્લતાઓ, તં જહા--ળૈરઙ્ગદુર્ગઈ ૧, તિરિવ્વજોણિયદુર્ગઈ ૨, મળ્લુસસદુર્ગઈ ૩, દેવદુર્ગઈ ૪, ૧।

ચત્તારિ સુગઈઓ પળ્લતાઓ, તં જહા--સિદ્ધસુગઈ ૧, દેવસુગઈ ૨, મળ્લુયસુગઈ ૩, સુકુલપચ્ચાયાઈ ૪, ૨।

ચત્તારિ દુર્ગયા પળ્લતા, તં જહા--ળૈરઙ્ગદુર્ગયા ૧, તિરિવ્વજોણિયદુર્ગયા ૨, મળ્લુસસદુર્ગયા ૩, દેવદુર્ગયા ૪, ૩।

ચત્તારિ સુગયા પળ્લતા, તં જહા--સિદ્ધસુગયા ૧, જાવ સુકુલપચ્ચાયાયા ૪। સૂ. ૨૧।

જાયા--ચત્તારો દુર્ગતયઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તથા--નૈરયિકદુર્ગતિઃ ૧, તિર્યગ્યોનિકદુર્ગતિઃ ૨, મનુષ્યદુર્ગતિઃ ૩, દેવદુર્ગતિઃ ૪, ૧।

અનન્તરોક્ત પ્રાણાતિપાત આદિકોસે ઉપરત દુર્ગતિ મનુષ્યોંકી સુગતિ હોતી હૈ ઓર નહીં ઉપરત દુર્ગતિ મનુષ્યોંકી દુર્ગતિ હોતી હૈ, હસ સુગતિ-વાલે જીવ સુગત ઓર દુર્ગતિ વાલે જીવ દુર્ગત કહલાતે હૈં। હસલિયે અવ મૂત્રકાર દુર્ગતિ ઓર સુગતિ રૂપ પરિણામોંકે એવં-દુર્ગત ઓર સુગતોંકે ભેદોંકા નિરૂપણ ચાર સૂત્રોંસે કરતે હૈં। “ ચત્તારિ દુર્ગઈઓ પળ્લતાઓ ” ઇત્યાદિ।

મૂત્રાર્થ-દુર્ગતિયોં ચાર કહી ગઈ હૈં, જૈસે નૈરયિક દુર્ગતિ ૧, તિર્યગ્યોનિક દુર્ગતિ ૨, મનુષ્ય દુર્ગતિ ૩, ઓર દેવ દુર્ગતિ ૪।

પ્રાણાતિપાત આદિનો પરિત્યાગ કરનાર મનુષ્યો દુર્ગતિમાં જાય છે, તેથી સુગતિવાળા જીવને સુગત અને દુર્ગતિવાળા જીવને દુર્ગત કહે છે તેથી હવે મૂત્રકાર દુર્ગતિ અને સુગતિ રૂપ પરિણામોના ભેદોનું અને દુર્ગતિ અને સુગતના ભેદોનું નિરૂપણ ચાર સૂત્રો દ્વારા કરે છે

“ ચત્તારિ દુર્ગઈઓ પળ્લતાઓ ” ઇત્યાદિ—

મૂત્રાર્થ-દુર્ગતિ ચાર કહી છે—(૧) નૈરયિક દુર્ગતિ, (૨) તિર્યગ્યોનિક દુર્ગતિ, (૩) મનુષ્ય દુર્ગતિ, અને (૪) દેવ દુર્ગતિ.

તથાહિ—મયમસ્ય જિનસ્ય સાધવ શ્વજ્જહા ઇતિ પ્રકૃત્યા શ્વજ્જહો મદ્દાઃ, બુદ્ધયા તુ જહા -મન્દા ઇતિ તેપાં ધર્મસ્યાવબોધા વુર્લમઃ । ચરમજિનસ્ય તુ વક્ક-જહાઃ, પ્રકૃત્યા વક્કા, બુદ્ધયા તુ જહા ઇતિ તેપાં ધર્મસ્ય પાલનં વુષ્કરમ્ । અભિ-તાવિદ્ધાનિસિતિમિનાનાં સાધવ શ્વમાજ્ઞાઃ, પ્રકૃત્યા શ્વજ્જહો બુદ્ધયા માજ્ઞા ઇતિ તેપાં ધર્મસ્યાવબોધ પાલન ચ દ્વયમપિ સુફર મવતીતિ ધર્મો દ્વિવિધ મોક્કઃ । તદુક્ત વ-

“પુરિમા ઉજ્જુજહા ઠ વક્કજહા ય પચ્છિમા ।

મજ્ઞિમા ઉજ્જુપમા ઠ તેણ ધમ્મે તુદ્ધા ક્વ । ૧ ।

પુરિમાણં વુમ્મિસોગ્ગો ઠ, ચરિમાણં પુરણુપાલમો ।

કલ્પો મજ્ઞિમમાણં તુ સુયિસુ-જ્ઞો સુપાલમો । ૨ ।”

છાયા—“ પૂર્વા શ્વજ્જહાસ્તુ વક્કજહામ મજ્ઞિમા ।

મધ્યમા શ્વમાજ્ઞાસ્તુ તેન ધર્મો દ્વિધા કુત । ૧ ।

પૂર્વેપાં વુર્પિષોગ્ગસ્તુ, ચરમાણાં પુરણુપાલકઃ ।

કલ્પો મધ્યમકાનાં તુ સુયિષોગ્ગ સુપાલકઃ । ૨ ।” ઇતિ । સુ ૨૮

જાનના આશિયે, વાસ્તવ્યમે તો સપહી તીર્થંકરોને પશ્ચપામહી ધર્મકી પ્રરુપણાકી હૈ । કયોંકિ—મધ્યમ તીર્થંકરકે સાધુ ક્ષુ જહ થે, હસકા માથ યહ હૈ કિ થે પ્રકૃતિસે ક્ષુ-મદ્દ થે ઓર બુદ્ધિસે જહ થે, મન્દ થે, હસલિયે ઉનકો ધર્મકા અવબોધ વુર્લમ થા, તથા ચરમ જિનકે સાધુ પ્રકૃતિસે વક્ક થે ઓર બુદ્ધિસે જહ થે, અતઃ વર્ને ધર્મકા પાલન વુષ્કર થા । ૨૨ તીર્થંકરોકિ અજિતાદિ મગવન્તોકિ સાધુ ક્ષુ-માજ્ઞ થે, પ્રકૃતિસે ક્ષુ ઓર બુદ્ધિસે માજ્ઞ નિપુણ થે, હસલિયે ઉનકો ધર્મકા જ્ઞાન ઓર ઉસકા પાલન થે દોનોમી સુકર થે । હસલિયે ધર્મ દો મકારકા કહા ગયા હૈ । કહામી હૈ—“ પુરિમા ઉજ્જુ જહાઠ ” ઇત્યાદિ । સુ ૨૮ ॥

તો સ્વયં તીર્થંકરોને પશ્ચપામ ધર્મની જ પ્રજ્ઞા કરી છે. કારણ કે પહેલા તીર્થંકરના સાધુ ક્ષુ જહ હતા એટલે કે તેઓ પ્રકૃતિની અપેક્ષાએ ક્ષુ (બદ્ધ-સરળ) હતા પણ બુદ્ધિની અપેક્ષાએ જહ (મદ્દ બુદ્ધિવાળા) હતા, તે કારણે તેમને ધર્મનો અવબોધ થયો ફર્લમ હતા અન્તિમ તીર્થંકરના સાધુઓ પ્રકૃતિની અપેક્ષાએ વક્ક અને બુદ્ધિની અપેક્ષાએ જહ હતા તેથી તેમને માટે પણ ધર્મ પાલન વુષ્કર હતું પરંતુ વચ્ચેના અજિતાદિ ૨૨ તીર્થંકર ભગવન્તોના સાધુઓ ક્ષુ પ્રકૃતિવાળા અને તીર્થ બુદ્ધિવાળા એટલે કે ક્ષુ પ્રાપ્ત હતા. તેથી તેમને માટે ધર્મનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાનું કામ તથા ધર્મ પાલનનું કાર્ય સુકલ હતું તેથી જ ધર્મના બે પ્રકાર પણ કહ્યા છે—(૧) અતુર્વામ ધર્મ અને (૨) પશ્ચપામ ધર્મ હતું પણ છે કે— પુરિમા ઉજ્જુ જહાઠ ’ ઇત્યાદિ ॥ સુ ૨૮ ॥

અનન્તરોક્ત પ્રાણાતિપાતાદિભ્યોઽનુપરતોપરતાનાં દુર્ગતિઃ સુગતિશ્ચ ભવતિ, તદ્વન્તશ્ચ તે દુર્ગતાઃ સુગતાશ્ચ ભવન્તીતિ દુર્ગતિસુગત્યાત્મકપરિણામયોદુર્ગતસુગતાનાં ચ ભેદાન્ નિરૂપયિતું સૂત્રચતુષ્ઠ્યમાદ્ય—

મૂલમ્—ચત્તારિ દુગ્ગઈઓ પળ્લન્તાઓ, તં જહા-ખૈરઈયદુગ્ગઈ ૧, તિરિન્નલ્લજોણિયદુગ્ગઈ ૨, મળ્લુસ્સદુગ્ગઈ ૩, દેવદુગ્ગઈ ૪, ૧।

ચત્તારિ સુગ્ગઈઓ પળ્લન્તાઓ, તં જહા-સિદ્ધસુગ્ગઈ ૧, દેવસુગ્ગઈ ૨, મળ્લુયસુગ્ગઈ ૩, સુકુલપચ્ચાયાઈ ૪, ૨।

ચત્તારિ દુગ્ગયા પળ્લન્તા, તં જહા-ખૈરઈયદુગ્ગયા ૧, તિરિન્નલ્લજોણિયદુગ્ગયા ૨, મળ્લુસ્સદુગ્ગયા ૩, દેવદુગ્ગયા ૪, ૩।

ચત્તારિ સુગ્ગયા પળ્લન્તા, તં જહા-સિદ્ધસુગ્ગયા ૧, જાવ સુકુલપચ્ચાયાયા ૪। સૂ. ૨૯।

છાયા--ચત્તસો દુર્ગતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-નૈરયિકદુર્ગતિઃ ૧, તિર્યગ્યોનિકદુર્ગતિઃ ૨, મનુષ્યદુર્ગતિઃ ૩, દેવદુર્ગતિઃ ૪, ૧।

અનન્તરોક્ત પ્રાણાતિપાત આદિકોસે ઉપરત દ્રુવે મનુષ્યોંકી સુગતિ હોતી હૈ ઓર નહીં ઉપરત દ્રુવે મનુષ્યોંકી દુર્ગતિ હોતી હૈ, ઇસ સુગતિ-વાલે જીવ સુગત ઓર દુર્ગતિ વાલે જીવ દુર્ગત કહલાતે હૈં। ઇસલિયે અવ સૂત્રકાર દુર્ગતિ ઓર સુગતિ રૂપ પરિણામોંકે એવં-દુર્ગત ઓર સુગતોંકે ભેદોંકા નિરૂપણ ચાર સૂત્રોંસે કરતે હૈં। “ ચત્તારિ દુગ્ગઈઓ પળ્લન્તાઓ ” ઇત્યાદિ।

સૂત્રાર્થ-દુર્ગતિર્થા ચાર કહી ગઈ હૈં, જૈસે નૈરયિક દુર્ગતિ ૧, તિર્યગ્યોનિક દુર્ગતિ ૨, મનુષ્ય દુર્ગતિ ૩, ઓર દેવ દુર્ગતિ ૪।

પ્રાણાતિપાત આદિનેા પરિત્યાગ કરનાર મનુષ્યોા દુર્ગતિમા ન્તય છે, તેથી સુગતિવાળા જીવને સુગત અને દુર્ગતિવાળા જીવને દુર્ગત કહે છે તેથી હવે સૂત્રકાર દુર્ગતિ અને સુગતિ રૂપ પરિણામોના ભેદોનું અને દુર્ગતિ અને સુગતના ભેદોનું નિરૂપણ ચાર સૂત્રો દ્વારા કરે છે.

“ ચત્તારિ દુગ્ગઈઓ પળ્લન્તાઓ ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-દુર્ગતિ ચાર કહી છે—(૧) નૈરયિક દુર્ગતિ, (૨) તિર્યગ્યોનિક દુર્ગતિ, (૩) મનુષ્ય દુર્ગતિ, અને (૪) દેવ દુર્ગતિ.

चतस्रः सुगतयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—सिद्ध सुगति १, देवसुगतिः २, मनुष्य सुगतिः ३, सुकुलप्रत्यायातिः ४, २।

चत्वारो दुर्गताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—नैरयिकदुर्गताः १, तिर्यग्योनिकदुर्गताः २, मनुष्यदुर्गताः ३, देवदुर्गताः ४ ३।

चत्वारः सुगताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—सिद्धसुगताः १, यावत् सुकुलप्रत्यायाताः ४, ४। सू० २९।

टीका—“ चत्वारि दुर्गार्थो ” इत्यादि, सुगमं, नरं दुष्टा—निन्दिता गतयो दुर्गतय, तद्यथा प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—नैरयिकदुर्गतिः=निरये—नरके मत्वा नैरयिका जीवाः तत्सम्बन्धिनी दुर्गतिः । १, “ तिर्यग्योनिकदुर्गतिः ”—सूक्ष्मा दियोनिजन्मापेक्षया विज्ञेया २। “ मनुष्यदुर्गतिः—कुपनुष्यापेक्षया बोध्या ३, “ देवदुर्गतिः ”—किरिषपिकादिदेवापेक्षया बोध्या ४, १।

सुगतिर्चा चार कही गई हैं, जैसे—सिद्ध सुगति १, देव सुगति २, मनुष्य सुगति ३, और सुकुल प्रत्यायाति ४-२

चार दुर्गत कहे गये हैं, जैसे—नैरयिक दुर्गत १, तिर्यग्योनिक दुर्गत २ मनुष्य दुर्गत ३, और देव दुर्गत ४।

चार सुगत कहे गये हैं, जैसे—सिद्ध सुगत १, यावत् सुकुल प्रत्या यात ४-४।

विशेषार्थ—निन्दित जो गतियां हैं वे दुर्गतिर्चा हैं, इनमें नैरयिक सम्बन्धिनी जो गति है वह नैरयिक दुर्गति है। सूक्ष्म आदि योनिमें जन्म धारण करनेकी अपेक्षा तिर्यग्योनिक दुर्गति है। मनुष्यकी अपेक्षासे मनुष्य दुर्गति है, तथा—किरिषपिकादि देवोंकी अपेक्षासे देव

चार सुगति कही छे—(१) सिद्ध सुगति, (२) देव सुगति (३) मनुष्य सुगति અને (४) सुकुल प्रत्यायाति।

चार दुर्गत कही छे—(१) नैरयिक दुर्गत, (२) तिर्यग्योनिक दुर्गत, (३) मनुष्य दुर्गत અને (४) देव दुर्गत

चार सुगत कही छे—(१) सिद्ध सुगत (२) देव सुगत (३) मनुष्य सुगत અને (४) सुकुल प्रत्यायात सुगत

विशेषार्थ—वे गतिथो निन्दित छे तेमने दुर्गति कहे छे। नैरयिक सम्बन्धी वे गति छे तेने नैरयिक दुर्गति कहे छे सूक्ष्म (सूक्ष्म) आदि योनिमा जन्म धारण करवाणी अपेक्षाजे तिर्यग्योनिने दुर्गतिरूप कही छे अक्षुब्ध आदिमा जन्म अपेक्षाजे मनुष्यगतिने पण दुर्गतिरूप कही छे किरिषपिकादि देवोमा जन्मणी अपेक्षाजे देवगतिने पण दुर्गतिरूप कही छे

“ ચત્તારિ સુગર્હો ” इत्यादि-सुष्ठु-प्रशस्ता गतयः सुगतयस्ताश्चतस्रः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सिद्धसुगतिः-सिद्धपदप्राप्तिरूपा सुगतिः १, “ देवसुगतिः ”= इन्द्रत्वादिप्राप्तिरूपा सुगतिः २, “ मनुष्यसुगतिः ”-कर्मभूम्यार्यदेशभवमनुजत्व-प्राप्तिलक्षणा सुगतिः ३, सुकुलप्रत्यायातिः-सु-सुष्ठु-प्रशस्तं च तत् कुलं च सुकुलम्-इक्ष्वाकुप्रभृतिवंशस्तत्र देवलोकादितः प्रत्यायातिः-मनुष्यरूपेण प्रत्या-गमनम्, ननु मनुष्यसुगतिरेवोच्यतां तत्रैव सुकुलप्रत्यायातेरपि मनुष्यसुगतित्वे नान्तर्भावः स्यादेव सुकुलप्रत्यायातेः पृथगुपादानं किमर्थमिति चेदत्रोच्यते-मनु-ष्यसुगतिश्च कर्मभूम्यार्यदेशभवमनुजत्वरूपा, सा च साधारणजीवानामपि भवति,

दुर्गति है ४-१ । प्रशस्त गतियोंका नाम सुगतिर्घा है । जैसे-सिद्ध सुगति आदि सिद्धपद प्राप्तिरूप जो गति है वह सिद्ध सुगति है । इन्द्रत्वादि पद प्राप्तिरूप जो गति है वह देव सुगति है २ । कर्मभूमिमें अवतरित होकर आर्य देशमें मनुष्यभवकी प्राप्ति होना यह मनुष्य सुगति है । इक्ष्वाकु आदि वंशमें देवलोकसे अवतरित होकर जो मनुष्यरूपसे जन्म प्राप्त होता है वह-सुकुल प्रत्यायाति है ।

शङ्का—मनुष्य सुगतिमें ही सुकुल प्रत्यायातिका अन्तर्भाव होजाता है, क्योंकि-सुकुल प्रत्यायाति मनुष्य सुगति रूपही होता है, अतः इसका पृथक् कथन क्यों किया ३-९ ।

उ०--इस शङ्काका समाधान ऐसा है कि मनुष्य सुगति कर्मभूमिके आर्य देशमें मनुष्यभव ग्रहण करने रूप है, अतः-यह मनुष्य सुगति साधारण जीवोंको भी होती है । किन्तु-सुकुलप्रत्यायाति तीर्थङ्कर

प्रशस्त गतिઓનું નામ સુગતિ છે, તેના ચાર પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ — સિદ્ધપદ પ્રાપ્તિરૂપ જે ગતિ છે, તેનું નામ સિદ્ધ સુગતિ છે ઇન્દ્રત્વ પદ પ્રાપ્તિરૂપ જે ગતિ છે તેનું નામ દેવ સુગતિ છે કર્મભૂમિમાં અવતરિત થઈને આર્ય દેશમાં મનુષ્યભવની પ્રાપ્તિ થવી તેનું નામ મનુષ્ય સુગતિ છે દેવલોકમાંથી અધીને ઈક્ષ્વાકુ આદિ ઉત્તમ વંશમાં મનુષ્ય રૂપે જે જન્મ પ્રાપ્ત થાય છે તેને સુકુલ પ્રત્યાયાતિ કહે છે

શંકા—સુકુલ પ્રત્યાયાતિનો મનુષ્ય સુગતિમાં સમાવેશ થઈ જાય છે, કારણ કે સુકુલ પ્રત્યાયાતિ મનુષ્ય સુગતિ રૂપ જ હોય છે છતાં અહીં તેમને અલગ અલગ સુગતિરૂપ શા માટે કહેલ છે ?

ઉત્તર—મનુષ્ય સુગતિ કર્મભૂમિના આર્ય દેશમાં મનુષ્યભવ ગ્રહણ કરવા રૂપ હોય છે, તેથી સાધારણ જીવો પણ તેની પ્રાપ્તિ કરી શકે છે પરંતુ

સુકુલપ્રત્યાયાનિસ્તુ વિષિષ્ટપુરુષાણાં નીચકુલપ્રત્યાયાનમેવ મનતિ ન સાધારણાના મિતિ મનુષ્યસુગમિતઃ સુકુલપ્રત્યાયાનિર્મિતેતિ પ્રત્યેતથ્યમ્ ॥૪॥ ૨।

‘વત્તારિ દુગ્ગયા’—દુર્ગતિરસ્ત્યેષામિતિ દુર્ગતાઃ=દુર્ગતિમન્ત્વ ઇત્યર્થઃ, તે વત્તારઃ પ્રવ્રતાઃ, તથા—નૈરયિકદુર્ગતાઃ—નૈરયિકરૂપેષુ દુગ્ગતા તરકમીલા ઇત્યર્થઃ ૧, તિર્યગ્ચોનિકદુર્ગતાઃ—શૂકરાદિયોનિગતાઃ ૨, મનુષ્યદુર્ગતાઃ—રોગાદિ પ્રસ્તર્યાદ નીચકુલોત્પન્નતાદ્યા ૩, વેદદુર્ગતાઃ—કિન્ચિપિદ્વાવિરૂપત્વાત્ ૪। ૩।

‘વત્તારિ સુગયા’ ઇત્યાદિ—સુગતા—સુગતિપ્રાપ્તાઃ સુસ્થા વા, તે વત્તારઃ પ્રવ્રતાઃ તથા—સિદ્ધમરૂપેષુ સુગતાઃ ૧। ઇત્યાદ્ય

આદિ જસ વિવિધ જીવાંકા હા હોના હૈં, સાધારણ જીવોં કો નહોં, હસ તરહ સુકુલ પ્રત્યાયાનિ મનુષ્ય સુગતિસે મિત્ત હૈં પેસા જાનના વાહિયે ૨- ।

‘વત્તારિ દુગ્ગયા’ ઇત્યાદિ—દુર્ગતિ હૈં જિન જીવોંતો વે દુર્ગત હૈં, અર્થાત્-દુર્ગતિવાલે જો જીવ હૈં વે દુર્ગત હૈં । વે દુર્ગત નૈરયિક દુર્ગત આદિક મેદસે જો વાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈં વનકા સાત્કર્ય પેમા હૈં જો જીવ નૈરયિક રૂપસે દુર્ગતિવાલે હૈં વે નૈરયિક દુર્ગત હૈં । શૂકર આદિ હૈં દુવે જીવ-તિર્યગો નહ દુર્ગત હૈં । રોગાદિવે પ્રસ્ત હોનેકે કારણ અથવા—નીચ કુલમેં ઉત્પન્ન હોનેકે કારણ મનુષ્ય જીવ મનુષ્ય દુર્ગત હૈં । કિન્ચિપિક આદિ પર્માયમેં રહે દુવે જીવ વેદ દુર્ગત હૈં ।

‘વત્તારિ સુગયા’ ઇત્યાદિ—સુગતિ પ્રાપ્ત અથવા સુસ્થ જો જીવ હૈં વે સુગત હૈં, જેસે-સિદ્ધ સુગત આદિ । જનમેં જો સિદ્ધરૂપસે સુગતિ પ્રાપ્ત હૈં વે સિદ્ધ સુગત હૈં, યહાં યાવત્ પદસે વેદ સુગત-મનુષ્ય

સુકુલ પ્રત્યાયાનિ. સદ્ધાર વે વીધેકર આદિ વિષિષ્ટ લવેભાંજ સજની શકે છે સાધારણ લવેભાંજ સજની શકેતો નથી. આ રીતે સુકુલ પ્રત્યાયાનિ અને મનુષ્ય સુગતિમાં ભિન્નતા સમજવી. ‘વત્તારિ દુગ્ગયા’ ઇત્યાદિ—

દુર્ગતિવાળા જે લવે છે તેમને દુર્ગત કહે છે તેના નૈરયિક દુર્ગત આદિ જે વાર લેહ કહ્યા છે તેનું સ્પર્શકરણ નીચ પ્રમાણે છે જે લવ નૈરયિક હવ દુર્ગતિવાળો છે તેને નૈરયિક દુર્ગત કહે છે સુવર આદિ તિષ્ઠ્યોનિક દુર્ગતિવાળા લવને તિષ્ઠ્યોનિક દુર્ગત કહે છે. શાઆદિથી પ્રસ્ત થવાને કારણે અથવા નીચ કુલમાં ઉત્પન્ન થવાને કારણે મનુષ્ય લવ પણ મનુષ્ય દુર્ગત કહેઈ શકે છે. કિન્ચિપિક આદિ પર્માયમાં રહેલા રેવોને વેદ દુર્ગત કહે છે.

‘વત્તારિ સુગયા’ ઇત્યાદિ—સુગતિમાં ગમેલા લવેને સુગત કહે છે તેના સિદ્ધ સુગત આદિ વાર પ્રકાર છે સિદ્ધરૂપ સુગતિ જેમણે પ્રાપ્ત કરી

“ જાવ સુકુલપત્યાયા ” इति—‘ यावत् सुकुलप्रत्यायाताः ’ इत्यन्त
પઠનીયમ્ તથા ચ-દેવસુગતાઃ ૨, મનુજસુગતાઃ ૩ સુકુલપ્રત્યાયાતાઃ ૪, ૫૧
વ્યાખ્યા સુવોધેતિ । મૂ. ૨૧ ॥

અનન્તરં સિદ્ધસુગતા ઉક્તાઃ, તે ચાષ્ટવિધકર્મક્ષયાદ્યન્તીતિ ક્ષયપરિણામસ્ય
ક્રમં નિરૂપયિતુમાદ--

મૂલમ્-પદમસમયજિણસ્સ ણં ચત્તારિ કમ્મંસા સ્વીણા
ભવંતિ--નાનાવરણિજ્ઞં ૧, દંસણાવરણિજ્ઞં ૨, મોહણિજ્ઞં ૩,
અંતરાદ્યં ૪। ૧।

ઉપ્પણનાણદંસણધરે ણં અરહાજિણે કેવલી ચત્તારિ
કમ્મંસે વેદેદ્, તં જહા--વેયણિજ્ઞં ૧, આઉયં ૨, ણામં ૩,
ગોત્તં ૪, ૨।

પદમસમયસિદ્ધસ્સ ણં ચત્તારિ કમ્મંસા જુગત્તં સ્વિજ્ઞંતિ,
તં જહા--વેયણિજ્ઞં ૧, આઉયં ૨, ણામં ૩, ગોત્તં ૪। ૩। મૂ. ૩૦ ॥

છાયા--પ્રથમસમયજિનસ્ય સ્વલુ ચત્તારઃ કર્માશાઃ ક્ષીણાઃ પ્રગ્ન જ્ઞાના
ડડવરણીયં ૧, દર્શનાડડવરણીય ૨, મોહનીયમ્ ૩, આન્તગાયિકમ્ ૪ ૧

સુગત હન દોનોં સુગતોંકા ગ્રહણ હુવા હૈ । હન દોકી ઓર-સુકુલ
પ્રત્યાયાત હસકી વ્યાખ્યા સુગમ હૈ ॥ મૂ. ૨૧ ॥

કથિત સિદ્ધ સુગત અષ્ટવિધ કર્મકે ક્ષયસેહી હોતે હૈ, અતઃ-અવ
સૂત્રકાર ક્ષય પરિણામકા ક્રમ નિરૂપણ કાતે હૈ ।

“ પદમસમયજિણસ્મ ણં ચત્તારિ કમ્મંસા ” इत्यादि—

પ્રથમ સમય જિનકે ચાર કર્મા શ ક્ષીણ હોતે હૈ, જો હસ પ્રકારસે હૈ ।

છે, તેમને સિદ્ધ સુગત કહે છે અહીં “ ય વત્ ” પદ્ધતી દેવ સુગત અને
મનુષ્ય સુગત ગ્રહણ કરવા બોલ્યો આ મન્ને પઢને. તથા સુકુલ પ્રત્યય તનો
બાવાર્થ સુગમ હોવાથી અહીં તેમનું વધુ વિવેચન થયું નથી ॥ મૂ. ૨૬ ॥

ઉપરના સૂત્રમા સિદ્ધ સુગતની વાત કરવામા આવી છે આઠે પ્રકારના
કર્મોના ક્ષયથી જ જીવ સિદ્ધ સુગત બની શકે છે તેથી હવે સૂત્રકાર ક્ષય
પરિણામના ક્રમનું નિરૂપણ કરે છે— ‘ પદમસમયજિણસ્સ ણ ચત્તારિ કમ્મંસા ’
ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ--પ્રથમ સમય જિનના ચાર કર્મોશો ક્ષીણ થાય છે. તે ચાર કર્મોશોનાં

ઉત્પન્નજ્ઞાનદર્શનપર સ્વદ્વ અર્હન્ જિનઃ કેવલી ચતુરઃ કર્માજ્ઞાન્ વેદયતિ,
તથા-વેદનીયમ્ ૧, આયુષ્ક ૨ નામ ૩, ગોત્રમ્ ૪। ૨।

પ્રથમસમયસિદ્ધસ્ય સ્વદ્વ ચત્વારઃ કર્માજ્ઞાઃ યુગપત્ સ્તીયન્તે, તથા-વેદ
નીયમ્ ૧, આયુષ્ક ૨, નામ ૩, ગોત્રમ્ ૪। મૂ. ૩ ॥

ટીકા—“પ્રથમસમયજિનસ્”-સ્થાવિ-પ્રથમઃ સમયો યસ્યાસો પ્રથમ-
સમયઃ, સ વાસો જિનમેતિ પ્રથમસમયજિન-સંયોગિકેવલી, તસ્ય પ્રથમસ્મય-
જિનસ્ય ચત્વારઃ-સ્મુષ્પકારાઃ-જ્ઞાનાવરણીય-દર્શનાવરણીય-મોહનીયા અન્તરાય
ક્રપાઃ કર્માજ્ઞાઃ-કર્મણઃ-સામાન્યસ્ય અજ્ઞાઃ-મેદાઃ-ઇતિ કર્માજ્ઞાઃ, સ્ત્રીણા મયન્તિ।

“ઉત્પન્નજ્ઞાને”-સ્થાવિ ઉત્પન્ને-આવરણસ્થાવરણીયુક્તે ચ તે જ્ઞાન-
દર્શને વેત્યુત્પન્નજ્ઞાનદર્શને તયોર્ધરઃ ધારકઃ-ઇતિ તથા-વૈ-વિષ્ણુષામાન્યં શોષ-
સ્વજ્ઞાનદર્શનધારકાઃ, અર્હન્, જિન કેવલી ચતુરઃ કર્માજ્ઞાન્ વેદયતિ-અતુ

જ્ઞાનાવરણીય ૧, દર્શનાવરણીય ૨, મોહનીય ૩, ઓર અન્તરાયિક ૪।
ઉત્પન્ન જુદે જ્ઞાન ઓર દર્શનકો ધારણ કરનેવાળા અર્હન્ત જીન કેવલી
ધાર કર્માજ્ઞાના વેદન કરતા હૈ। જૈસે-વેદનીય ૧, આયુષ્ક ૨, નામ ૩
ઓર ગોત્ર ૪-૨।

ટીકાર્થ—પ્રથમ સમય સિદ્ધકે ચાર કર્માજ્ઞા એક સાથ ક્ષીણ
હોતે હૈ, જૈસે-વેદનીય, આયુષ્ક, નામ ઓર ગોત્ર-૪ પ્રથમ સમય હૈ
જિસકા પેસા જો જિન હૈ વહ પ્રથમ સમય જિન હૈ પેસા વહ સંયોગી
કેવલી હોતા હૈ। હસ પ્રથમ સમય જિનકે ચાર પ્રકારક કર્માજ્ઞા ક્ષીણ
હોતે હૈ જૈસે-જ્ઞાનાવરણીય ૧, દર્શનાવરણીય ૨, મોહનીય ૩, અન્ત
રાયિક ૪। સામાન્ય કર્મકે જો મેદ હૈ વે કર્માજ્ઞા હૈ। આવરણકે ક્ષયસે
પ્રકટીભૂત જો જ્ઞાન ઓર દર્શન હૈ, હનકા ધારક અર્હન્ત કેવલી જિન

નામ આ વમાણે છે—(૧) જ્ઞાનાવરણીય, (૨) દર્શનાવરણીય, (૩) મોહનીય
અને (૪) અન્તરાયિક ઉત્પન્ન થયેલા જ્ઞાન અને દર્શનને ધારક કે નાર અર્હન્ત
જિન કેવલી નીચેના આર કર્માજ્ઞાનું વેદન કરે છે—(૧) વેદનીય, (૨) આયુષ્ક,
નામ અને (૪) ગોત્ર પ્રથમ સમય સિદ્ધતા નીચેના આર કર્માજ્ઞા એક સાથે
ક્ષીણ થાય છે—(૧) વેદનીય, (૨) આયુષ્ક, (૩) નામ અને (૪) ગોત્ર

વિશેષાર્થ—જિનપદની પ્રાપ્તિને પ્રથમ સમય કહે છે એવા જિનને
પ્રથમ સમય જિન કહે છે સંયોગી કેવલી એવા પ્રકારમાં પ્રક્ટી થાય છે,
તે પ્રથમ સમય જિનના આ આર પ્રકારના કર્માજ્ઞાનો ક્ષય થાય છે—(૧)
જ્ઞાનાવરણીય, (૨) દર્શનાવરણીય (૩) મોહનીય અને (૪) અન્તરાયિક
સામાન્ય કર્મના કો વેદ છે તેમનું નામ કર્માજ્ઞા છે આવરણના ક્ષયને કારણે
પ્રકટ થયેલા જ્ઞાન અને દર્શનના ધારક અર્હન્ત જિન કેવલી નીચેના આર

ભવતિ, તદ્વથા-વેદનીયમ્-વેદ્યતે યત્તતથા ૧, આયુષ્કમ્ ૨, નામ-પરં પ્રતિ પદાર્થબોધનાય સંજ્ઞા, તત્ત્વ કાર્ય, તસ્ય કારણં કર્મેતિ કાર્ય-કારણયોરભેદોપચારાનામાપિ કર્મ ૩, તથા-‘ગોત્રમ્’ ઇક્ષ્વાકુસમ્બન્ધ્યાદિકુલં, તત્ત્વ કાર્ય, તસ્ય કારણં કર્મેતિ કાર્ય કારણયોરત્રાપ્યભેદોપચારાદ્ ગોત્રં કર્મ ભવતિ ૧૪૨૧

“પ્રથમસમયસિદ્ધસ્યે”-ત્યાદિ-પ્રથમસમયસિદ્ધસ્ય યુગપત્ ચત્વારિ પૂર્વોક્તાનિ કર્માણિ ક્ષીયન્તે-ક્ષયં યાન્તિ, યસ્મિન્ સમયે સિદ્ધતા ભવતિ તસ્મિન્નેવ સમયે કર્મક્ષયોઽપિ ભવતીતિ સિદ્ધત્વ-કર્મક્ષયયોયોગપદ્યસમ્ભવાદિતિ ૧૩ સુ ૩૦૧

ચાર કર્મોશોકા વેદન કરતા હૈ । અનુભવ કરતા હૈ, જૈસે-વેદનીય આદિ જો વેદન કિયા જાતા હૈ, વહ વેદનીય હૈ । અર્થાત્-જિસસે જીવોંકો સુખ દુઃખકા અનુભવ હોતા હૈ વહ કર્મ વેદનીય કર્મ હૈ । જિસસે ભવ ધારણ હોતા હૈ વહ આયુષ્ક હૈ । દૂસરોંકો પદાર્થ સમજાનેકે લિયે જો સંજ્ઞા કી જાતી હૈ વહ નામ કર્મ હૈ । યહાં નામકો કર્મ કહા હૈ, કાર્ય કારણમેં અભેદકે ઉપચારસે હૈ, તાત્પર્ય એસા હૈ કિ વિશિષ્ટ ગતિ-જાતિ આદિકી પ્રાપ્તિ જિસસે જીવકો હોતી હૈ વહ નામ-કર્મ હૈ । ઇક્ષ્વાકુ સમ્બન્ધી આદિ જો કુલ હૈ, યે કુલ જિસકે કાર્ય હૈ હસકા જો કારણ કર્મ હૈ વહ કાર્યકારણમેં અભેદ ઉપચારસે કહા હૈ ૪-૨ । પ્રથમસમયસિદ્ધસ્ય-ઈત્યાદિ । પ્રથમ સમય સિદ્ધકે (૧) સાથ ચાર પૂર્વોક્ત કર્મ નષ્ટ હોતે હૈ, એસા કહનેકા તાત્પર્ય હૈ । જિસ

કર્મોશોકા વેદન કરે છે--(૧) વેદનીય, (૨) આયુષ્ક, (૩) નામ અને (૪) ગોત્ર જેનાથી જીવોને સુખદુઃખનો અનુભવ થાય છે તે કર્મોનું નામ વેદનીય કર્મ છે. જે કર્મને લીધે ભવધારણ કરવો પડે છે તે કર્મને આયુષ્ક કર્મ કહે છે. અન્યને કોઈ પદાર્થ સમજાવવા નિમિત્તે જે સંજ્ઞા કરાય છે તેનું નામ નામ કર્મ છે. અહીં કાર્ય કારણમાં અભેદોપચારની અપેક્ષાએ નામને કર્મ કહ્યું છે. એટલે કે વિશિષ્ટ ગતિ-જાતિ આદિની પ્રાપ્તિ જેના દ્વારા જીવને થાય છે, તે કર્મને નામ કર્મ કહે છે ઇક્ષ્વાકુ આદિ કુળની પ્રાપ્તિ થવાના કારણભૂત જે કર્મ છે તેને ગોત્ર કર્મ કહે છે કાર્યકારણમાં અભેદોપચારની અપેક્ષાએ અહીં તેને ગોત્રકર્મ રૂપે પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે.

“પ્રથમસમયસિદ્ધસ્ય” ઇત્યાદિ—

પ્રથમ સમય સિદ્ધતા ઉપર્યુક્ત ચાર કર્મોશો એક સાથે નષ્ટ થાય છે, એટલે કે જે સમયે સિદ્ધત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે એ જ સમયે કર્મક્ષય પણ

ઠકાઃ સિદ્ધાઃ, તદ્વિપરીતા અસિદ્ધાઃ, તેષાં હાસ્યાદયો વિકારા મન્વન્તીતિ
હાસ્યકારણામિ નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલ્મ—ચઠર્હિ ઠાળેર્હિ હાસુપ્પત્તી સિયા, ત જહા—પાસિત્તા
૧, માસેત્તા ૨, સુળેત્તા ૩, સમરેત્તા ૪। સૂ૦ ૩૧ ॥

ઘાયા—ચતુર્મિઃ સ્થાનૈઃ હાસોત્પત્તિઃ સ્પાત્, તથા—૧૬૫ ૧, માપિત્તા ૨,
મુત્વા ૩, સ્પૃત્વા ૪। સૂ૦ ૩૧ ॥

ટીકા—“ચઠર્હિ” ઇત્યાદિ—ચતુર્મિઃ—ચતુઃસંખ્યૈઃ સ્થાનૈઃ હાસોત્પત્તિઃ સ્પાત્,
તથા—૧૬૫—હાસ્યજનકભાષ્યવિરૂપકમશ્વતિષેષ્ટાં નિરીક્ષ્ય હાસ્યોત્પત્તિર્મશ્વતિ
૧। તથા—માપિત્વા—હાસ્યજનક સ્વપરવચનમુક્ત્યા હાસ્યોત્પત્તિઃ સ્પાત્ ૨। તથા—
મુત્વા—પરોદિત હાસ્યજનક વચને કળગોચરીકૃત્ય હાસ્યોત્પત્તિઃ સ્પાત્ ૩। તથા—
સ્પૃત્વા—વિરૂપકાદિષેષ્ટાનાવયમમૃતિ વિન્નયિત્વા હાસ્યોત્પત્તિઃ સ્પાવિતિ। एव च
इति—भाष्य ध्वन्य स्मरणानि हास्यकारणानि मन्वन्तीति पर्यवसितोऽर्थः ४।सू० ३१।

સમયમેં સિદ્ધતા હોતી હૈ વસી સમયમેં કર્મક્ષય ખી હોતા હૈ, હસસે
સિદ્ધત્વ ઓર કર્મક્ષયમેં યોગયજ સમ્મય હોતા હૈ ॥ સૂ૦ ૩૦ ॥

સિદ્ધોસે વિપરીત અસિદ્ધ હોતે હૈ ઓર હનકો હાસ્યાદિ વિકાર
હોતે હૈ, અતઃ—અય સૂત્રકાર હન હાસ્યાદિક વિકારોંકે કારણોંકા નિરૂ-
પણ કરનેકે લિપે સૂત્ર કહતે હૈ । “ચઠર્હિ ઠાળેર્હિ હાસુપ્પત્તી” ઇત્યાદિ—

ચાર કારણોંસે હાસ્યકી ઉત્પત્તિ હોતી હૈ, જૈસે—હાસ્યજનક ભાષ્ય
વિરૂપક આદિ જનોંકી શેષ્ટાકો દેશ્વકર—૧ હાસ્યજનક ભાષાકા પ્રયોગ
કર—૨ નૃમરોંકે દ્વારા કથિત હાસ્યજનક વચનકો સુનકર—૩ ઓર
વિરૂપક આદિ કોંકી શેષ્ટાઓંકો યા—उनके वाक्योंको याद कर हास्यकी

યાદ છે આ રીતે સિદ્ધતા અને કર્મક્ષયમાં મુગ્ધપત્વા (એકી ભાવ) બન્ને
એક સાથે થવાને કારણે સમય થકે છે ॥ સૂ ૩૦ ॥

સિદ્ધ કરતાં વિપરીત હોય એવાં છવને અસિદ્ધ કહે છે અસિદ્ધ
છવેમાં હાસ્યાદિક વિકારોના સદ્ભાવ હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર તે હાસ્યા-
દિક વિકારોનાં કારણોનું નિરૂપણ કરવા માટે “ચઠર્હિ ઠાળેર્હિ હાસુપ્પત્તી”
ઇત્યાદિ સૂત્રનું કથન કરે છે—પ્રથેના ચાર કારણોને વીરે હાસ્યની ઉત્પત્તિ
થાય છે—(૧) વિરૂપક આદિની હાસ્યજનક શેષ્ટાએ બોલાયી, (૨) હાસ્યજનક
ભાષાનો પ્રયોગ કરવાયો, (૩) અન્યના દ્વારા કથિત હાસ્યજનક વચનોનું
શ્રવણ કરવાયો અને (૪) વિરૂપક આદિની શેષ્ટાએને કે તેમનાં વાક્યોને યાદ

દૃષ્ટાન્તદાર્શનિકપ્રદર્શનપૂર્વકમન્તરસૂત્રમાહ—

મૂલમ્—ચઙવિવેહે અંતરે પળણત્તે, તં જહા—કટ્ટંતરે ૧, પમ્હંતરે ૨
લોહંતરે ૩, પત્થરંતરે ૪। એવામેવ પુરિસસ્સ વા ઇત્થિણ વા ચઙવિવેહે
અંતરે પળણત્તે, તં જહા—કટ્ટંતરસમાણે ૧, પમ્હંતરસમાણે ૨,
લોહંતરસમાણે ૩, પત્થંતરસમાણે ૪। સૂ. ૩૨।

છાયા—ચતુર્વિધમન્તરં પ્રજ્ઞસમ્, તથા—કાષ્ઠાન્તરં ૧, પક્ષમાન્તરં ૨, લોહા-
ન્તરં ૩, પ્રસ્તરાન્તરમ્ ૪। એવમેવ પુરુષસ્ય વા સ્ત્રિયા વા ચતુર્વિધમન્તરં પ્રજ્ઞસમ્,
તથા—કાષ્ઠાન્તરસમાનઃ ૧, પક્ષમાન્તરસમાનઃ ૨, લોહાન્તરસમાનઃ ૩, પ્રસ્ત-
રાન્તરસમાનઃ ૪। સૂ. ૩૨ ॥

ટીકા—“ચઙવિવેહે અંતરે” ઇત્યાદિ—ચતુર્વિધમન્તરં—ભેદઃ, પ્રજ્ઞસમ્, તથા—
કાષ્ઠાન્તરં—કાષ્ઠયોરન્તરં—યથા—એકં ચન્દનાદિરૂપમ્ અન્યદ્ વર્તુરાદિરૂપમ્ ૧,
પક્ષમાન્તરં—યથા—એકં પક્ષમ—અર્કતૂલાદિરૂપમપરમુષ્ટાજાદિ પક્ષમ (રોમ) રૂપમ્
ઉત્પત્તિ હોતી હૈ, હસ તરહ દર્શન બાષળ શ્રવળ સ્મરળ યે હાસ્ય
કારળ હોતે હૈ ॥ સૂ. ૩૧ ॥

અવ સૂત્રકાર દૃષ્ટાન્ત દાર્શનિક પ્રદર્શક અન્તર સૂત્રકા કથન કરતે હૈ।

“ચઙવિવેહે અંતરે પળણત્તે” ઇત્યાદિ—

અન્તર ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ। જૈસે—કાષ્ઠાન્તર ૧, પક્ષમાન્તર ૨,
લોહાન્તર ૩, ઓર પ્રસ્તરાન્તર ૪। ભેદકા નામ અન્તર હૈ। દો કાષ્ઠોંકે
બીચકા જો અન્તર હૈ વહ કાષ્ઠાન્તર હૈ, જૈસે—એક વચૂલવગૈરહકા કાષ્ઠ ઓર
ચન્દન આદિ વૃક્ષકા અન્તરહી કાષ્ઠાન્તરસે યહાં ગૃહિત હુવા હૈ ૧। પક્ષમ—

કરવાથી આ રીતે દર્શન, બાષણ, શ્રવણ અને સ્મરણરૂપ ચાર કારણોથી હાસ્ય
ઉત્પન્ન થાય છે. ॥ સૂ. ૩૧ ॥

હવે સૂત્રકાર દૃષ્ટાન્ત અને દાર્શનિકના પ્રદર્શનપૂર્વક અન્તરસૂત્રનું કથન
કરે છે. “ચઙવિવેહે અંતરે પળણત્તે” ઇત્યાદિ—

અંતરના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) કાષ્ઠાન્તર, (૨) પક્ષમા-
ન્તર, (૩) લોહાન્તર અને (૪) પ્રસ્તરાન્તર ભેદનું નામ અંતર છે એ કાષ્ઠો
વચ્ચેનું એ અંતર છે તેને કાષ્ઠાન્તર કહે છે જેમકે બાવળ આદિ વૃક્ષના
અને ચન્દનાદિ વૃક્ષના એ કાષ્ઠો વચ્ચેના અન્તર કહેવામા

૨, સોહાન્તર=યથા-૧કો લોહઃ સજ્ઞાદિકરૂપોઽન્યઃ કિઠ્ઠરૂપઃ ૧, પ્રસ્તરાન્તર-યથા-૧કઃ પ્રસ્તરઃ સ્પર્શમળ્યાદિરૂપાઃ, અપર ઊપર પ્રસ્તરરૂપઃ ૪।

અથ દષ્ટાન્તસૂત્રમુક્ત્વા દાષ્ટાન્તિકમૂલમાહ-

“૧વામેય” ઇત્યાદિ-૧૪મેય-અનેનૈવ પ્રકારેણ પુરુષસ્ય વા સ્ત્રિયા વા ચતુર્થિપમન્તરં પ્રદ્યુત, તથા-કાષ્ઠાન્તરસમાનઃ-અન્યત્કાષ્ઠ કાષ્ઠાન્તરં તેન સમાનસ્તુલ્યઃ કાષ્ઠાન્તરસમાનઃ=વર્ણાદિભિન્નચન્દનસમાનઃ સત્પુરુષઃ, ચન્દનાદિ ભિન્નવર્ણસમાનઃ કાપુરુષાદિ યથા-૧કઃ કશ્ચિત્ પુરુષ ભૌદાર્યગામ્ભીર્યાદિગુણ સમ્પન્નત્વેન વાદનાદિસમાન, અન્યઃ પરપીઢનાદિદુર્ગુણવશ્વેન વર્ણુગાદિસદ્ધઃ ૧,

રોમકો છેકર જો અન્તર આતા હૈ વહ પદ્માન્તર હૈ, જૈસે-અકતૂલ આદિકે રેશોમેં ઔર સદ્દુ અજા આદિકે રોમોમેં જો અન્તર હૈ વહ પદ્માન્તર હૈ ૨। ૧ક લોહા સજ્ઞાદિરૂપ હોતા હૈ, દૂસરા કિઠ્ઠરૂપ હોતા હૈ એસા લોહેકા જો પરસ્પરમેં અન્તર હૈ વહ લોહાન્તર હૈ ૩। પ્રસ્તરાન્તર-પત્થ રોમેં જો અન્તર હૈ વહ પ્રસ્તરાન્તર હૈ, જૈસે-૧ક પ્રસ્તર સ્પર્શ મળ્યાદિ રૂપ હોતા હૈ ઔર દૂસરા ઊપર પ્રસ્તરરૂપ હોતા હૈ ૪।

હસ પ્રકારસે દષ્ટાન્તસૂત્ર કહકર અથ સૂત્રમાકર દાષ્ટાન્તિક સૂત્ર કહો હૈં । “૧વામેય” ઇત્યાદિ-હસી પ્રકારસે પુરુષકા ઔર સ્ત્રીકા અન્તર ચાર પ્રકારકા હૈં । જૈસે-જો સત્પુરુષ હૈં વહ ચમૂલ આદિસે ભિન્ન ચન્દનકે સમાન હૈં, તથા-જો કાપુરુષ-કાપર હૈં વહ ચન્દનાદિસે ભિન્ન

આત્મું છે ૫૪મ (૩૪વી) વચ્ચેના અતરને પદ્માન્તર કહે છે જેમકે આકાશ આદિના રેશા અને ઊંટ, બકરી આદિની ૩૪વી વચ્ચે જે અતર હોય છે તેને પદ્માન્તર કહે છે

“લોહાન્તર” એક લોહુ પદ્મારૂપ હોય છે અને બીજુ લોહુ ઠારરૂપ હોય છે, આ પ્રકારના લોહાનુ જે પરસ્પર વચ્ચેનુ જે અતર છે તેને લોહાન્તર કહે છે

“પ્રસ્તરાન્તર” પ્રસ્થ (૫૩) વચ્ચેનુ જે અતર છે તેને પ્રસ્થાન્તર કહે છે જેમકે જમીનનુ એક પ્રસ્થ સ્પર્શમળિ આદિરૂપ હોય છે તે બીજુ પ્રસ્થ ઊપર પ્રસ્થરૂપ હોય છે

આ પ્રમાણે દષ્ટાન્ત સૂત્રનુ કથન કરીને હવે સુવચાર દાષ્ટાન્તિક સૂત્રનુ કથન કરે છે- ‘૧વામેય’ ઇત્યાદિ-

જે જ પ્રમાણે પુરુષનુ અને સ્ત્રીનુ અતર ૫૫ ચાર પ્રકારનુ હોય છે (૧) જે સત્પુરુષ હોય છે તે બાવળ આદિથી ભિન્ન એવાં સદન સમ્પન્ન હોય છે અને જે કપુરુષ હોય છે (શાપર પુરુષ) હોય છે તે ચન્દનાદિથી ભિન્ન

પદ્માન્તરસમાનઃ પુરુષો યથા-એકઃ કશ્ચિત્ પરમકારુણ્યાદિગુણત્વેનાર્કતૂલાદિસદૃશઃ, અપરઃ કર્કશઃ કઠોરપ્રકૃતિકૃત્વેનોદ્ગ્રાજાદિપદ્મસદૃશઃ ૨, લોહાન્તરસમાનઃ પુરુષો યથા-એકઃ કશ્ચિત્ પુરુષઃ પરીપક્ષોપસર્ગાદિમહિંણુત્વેન સ્વદ્વાદિલોહસદૃશઃ અપરોભયકાતરત્વાદિમત્ત્વેન કિટ્લોહસદૃશઃ ૩,

પ્રસ્તરાન્તરસમાનઃ પુરુષો યથા-એકઃ કશ્ચિત્ પુરુષ આમર્શોપધ્યાદિ-લઘ્વિમત્ત્વેન સ્પર્શમણિસદૃશઃ, અપરો દૈન્યદારિદ્ર્યાદિમત્ત્વેનોપરપ્રસ્તરસદૃશઃ ૪। एवं स्त्रिया अपि स्यन्तरमपेक्ष्यान्तरं बोध्यम् । सू० ३२ ॥

વબૂલકે સમાન હૈ, તથા કોઈ એક પુરુષ જો ઔદાર્ય આદિ ગુણોસે સમ્પન્ન હોતા હૈ વહ ચન્દનાદિકે સમાન હૈ, ઔર જો પીડનાદિ દુર્ગુણોવાલા હોતા હૈ વહ વબૂલ આદિકે જૈસા હોતા હૈ, ઇસલિયે ઇન્હેં કાષ્ટાંતર સમાન કહા ગયા હૈ । ૧ યહ એક પુરુષકા દૂસરે પુરુષસે અન્તર કહા હૈ, ઇસી પ્રકારસે આગેમી જાનના ચાહિયે ।

“પદ્માન્તર સમાન”-વહ પુરુષ કહા ગયા હૈ જો પરમ કારુણ્યાદિ ગુણવાલા હોતા હૈ એસા વહ પુરુષ અર્કતૂલાદિ સદૃશ હૈ, તથા-જો કર્કશ કઠોર પ્રકૃતિવાલા હોતા હૈ વહ-ઉદ્ગ્રાજા આદિકા પદ્મ જૈસા હોતા હૈ ૨ । લોહાન્તર સમાન વહ પુરુષ હૈ જો પરીપક્ષ ઔર ઉપસર્ગ આદિકો સહનેમેં સહિંણુ હોતા હૈ એસા વહ પુરુષ સ્વદ્વાદિ લોહકા જૈસા હોતા હૈ, દૂસરા ભયસે કાતર આદિ પ્રકૃતિવાલા હોતા હૈ એસા વહ પુરુષ કિટ્લોહ સદૃશ હોતા હૈ ૩ । પ્રસ્તરાન્તર સમાન વહ પુરુષ હૈ,

‘એવાં બાવળ સમાન હોય છે તથા કેઈ એક પુરુષ જે ઔદાર્ય આદિ ગુણોથી યુક્ત હોય છે, તે ચન્દન સમાન હોય છે, પણ જે પરીપીડનાદિ દુર્ગુણોથી યુક્ત હોય છે તે બાવળાદિના જેવો હોય છે આ રીતે આ બન્ને પુરુષ વચ્ચેના અંતરને કાષ્ટાન્તર સમાન કહેવામાં આવ્યું છે આ રીતે એક પુરુષનું બીજા પુરુષથી અંતર (બન્ને વચ્ચેનો તફાવત) પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે “પદ્માન્તર સમાન પુરુષ” જે પુરુષ કરુણા આદિ ગુણોવાળો હોય છે તે અર્કતૂલાદિ સમાન ગણાય છે-એટલે કે આકડા વગેરેના જેસા સમાન ગણાય છે, પણ જે પુરુષ કઠોર હોય છે તેને ઊંટ, બકરી આદિના પદ્મ (રોમ-રંવાટી) સમાન ગણાય છે.

“લોહાન્તર સમાન પુરુષ”-જે પુરુષ પરીપક્ષ અને ઉપસર્ગ આદિ સહન કરવામાં સહિંણુ હોય છે, એવા પુરુષને બડગાદિ લોહ સમાન કહ્યો છે. જે પુરુષ પરીપક્ષ, ઉપસર્ગ આદિ સહન કરવાને સમર્થ હોતો નથી, એવા કાયર સ્વભાવના પુરુષને કિટ્લોહ સમાન કહ્યો છે.

મનન્તરમન્તર નિરૂપિતમ્, અધુના પુરુષવિશેષાન્તર નિરૂપયિતું મૃતકં સમેદ નિરૂપયિતમાહ—

મૂલ્ય—ચત્તારિ મયગા પળ્લન્તા, ત જહા—દિવસમય ૧, જન્તામય ૨, ઊચ્ચત્તમય ૩, કઠ્વાલમય ૪। સૂ૦ ૩૨ ॥

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, ત જહા—સપાગડપડિસેવી ણામમેગે ણો પચ્છન્નપડિસેવી ૧, પચ્છન્નપડિસેવી ણામમેગે ણો સપાગડપરિસેવી ૨, પગે સપાગડપડિસેવીત્રિ પચ્છન્નપડિસેવીવિ ૩, પગે ણો સપાગડપડિસેવી ણો પચ્છન્નપડિસેવી । સૂ૦ ૩૩ ॥

જાયા—ચત્તારો મૃત્કાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—વિષમમૃતકઃ ૧, યાત્રામૃતકઃ ૨, વચ્ચતામૃતકઃ ૩, કઠ્વાલમૃતકઃ ૪। સૂ૦ ૩૨ ॥

જો આમર્શ ઓપધિ આદિ લગ્નિયોસે યુક્ત હોતા હૈ પેસા વહ પુરુષ સ્પર્શમણિ જેસા હોતા હૈ, તથા—જો પુરુષ વૈન્ય કારિય આલિચાલા હોતા હૈ વહ વધર પ્રસ્તર જેસા હૈ ૪। ફસી તરહસે એક સ્ત્રીકા એક ફસવી સ્ત્રીસે બી અન્તર સમજા સેના ॥ સૂ૦ ૨ ॥

અવ મૂલ્યકાર પુરુષ વિશેષકા અન્તર નિરૂપિત કરનેકે લિયે મેદ સહિત મૃતકકા નિરૂપણ કરસે હૈ । “ ચત્તારિ મયગા પળ્લન્તા ” ફરયાદિ—

ચાર મૃતક કહે ગયે હૈ, જેસે—વિષમ મૃતક ૧, યાત્રા મૃતક ૨, વચ્ચતા મૃતક ૩, ઓર કઠ્વાલ મૃતક ૪ । ચાર પ્રકારકે પુરુષ કહે ગયે હૈ, જેસે—સંપ્રકટ પ્રતિસેવી નો પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી ૧, પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી નો

“ પ્રસ્તરાન્તર સમાન પુરુષ ”—જે પુરુષ આમર્શ ઓપધિ આદિ લગ્નિય ઓધી યુક્ત હોય છે તેને સ્પર્શમણિ પ્રસ્તર સમાન કહે છે, પણ ધીનતા, કારિય, આદિથી યુક્ત હોય એવા મનુષ્યને ઊપર પ્રસ્તર સમાન કહ્યો છે એવ પ્રમાણે એક સ્ત્રી અને બીજી સ્ત્રી વચ્ચેનું આ ૧૨ પાડ સમજવું ॥ સૂ ૩૨ ॥

દવે પુરુષ વિશેષતા અન્તરનું નિરૂપણ કરવા નિમિત્તે સૂત્રકાર મૃતકના ચાર સેરોનું નિરૂપણ કરે છે ‘ ચત્તારિ મયગા પળ્લન્તા ’ ઇત્યાદિ—

મૃતક (નેકર) ના ચાર પ્રકાર કયા છે—દિવસમય, (૨) યાત્રા મૃતક (૩) ઉચ્ચતા મૃતક અને (૪) કઠ્વાલ મૃતક ચાર પ્રકારના પુરુષ કયા છે, (૧) સંપ્રકટ પ્રતિસેવી, નો પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી, (૨) પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી, નો સંપ્રકટ

ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—સંપ્રકટપ્રતિસેવી નામૈકો નો પ્રચ્છન્નપ્રતિસેવી ૧, પ્રચ્છન્નપ્રતિસેવી નામૈકો નો સંપ્રકટપ્રતિસેવી ૨, એકઃ સંપ્રકટપ્રતિસેવ્યપિ પ્રચ્છન્નપ્રતિસેવ્યપિ ૩, એકો નો સંપ્રકટપ્રતિસેવી નો પ્રચ્છન્નપ્રતિસેવી ૪ ॥ સૂ. ૩૩ ॥

ટીકા—“ ચત્વારિ મયગા ” ઇત્યાદિ—મ્રિયન્તે—પોષ્યન્તે ઇતિ મૃતાસ્ત એવ મૃતકા—કર્મકરા ઇત્યર્થઃ, તે ચત્વારઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તે કે ચત્વારઃ ? ઇતિ પ્રદર્શયતિ ‘ તથથે ’—ત્યાદિના, તે યથા—દિવસમૃતકઃ—દિવસે—દિને દિને મૃતક ઇતિ દિવસ-મૃતકઃ=પ્રતિદિનં નિયતજીવિકાદાનેન યઃ કર્મ કર્તું ગૃહ્યમાણઃ સઃ ૧,

યાત્રામૃતકઃ—પરદેશગમનતદવધિકસ્વદેશાડગમનરૂપયાત્રાયાં સહાયતયા યો વેતનેન પોષ્યમાણઃ સઃ ૨, ઉચ્ચતામૃતકઃ—ઉચ્ચઃ—અપરાપેક્ષયા શ્રેષ્ઠસ્તસ્ય માત્ર ઉચ્ચતા, તયા મૃતકઃ—વેતન-સમયો નિયમય્ય નિશ્ચિતોચિતાવસરે કર્મણિ યો નિયુક્તઃ

સંપ્રકટપ્રતિસેવી ૨, સંપ્રકટપ્રતિસેવીભી પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવીભી ૩, નો સંપ્રકટ પ્રતિસેવી નો પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી ૪ ।

“મ્રિયન્તે” ઇતિ મૃતકાઃ જો પોષ્ય હોતેહૈં, કર્મકર હોતેહૈં વે મૃતક હોતેહૈં । યે મૃતક જો ચાર પ્રકારકે કહે ગયેહૈં, ઊનકા તાત્પર્ય એસા હૈ—

દિવસ મૃતક—પ્રતિદિનકા પારિશ્રમિક લેકર જો કામ કરનેકે લિયે રખા જાતા હૈ વહ દિવસ મૃતક હૈ, યહ દિવસ મૃતક કેવલ દિનમેં હી કામ કરતા હૈ । હસલિયે હસે દિવસ મૃતક કહા ગયા હૈ ૧ । યાત્રા મૃતક—વહ હૈ જો પરદેશ જાને તક ઔર ફિર વહાસે અપને દેશમેં લૌટ આને તકકે લિયે જો નોકર રખા જાતા હૈં વહ યાત્રા મૃતક હૈ ૨ । ઉચ્ચતા મૃતક—વહ હૈ જો વેતન ઔર અમુક સમય તક કામ કરનેકા

પ્રતિસેવી, (૩) સંપ્રકટ પ્રતિસેવી, પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી (૪) નો સંપ્રકટ પ્રતિસેવી નો પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી

વિશેષાર્થ—“ મ્રિયન્તે ઇતિ મૃતકાઃ ” જેઓ પોષ્ય હોય છે, કર્મકર હોય છે તેમને મૃતક કહે છે મૃતકના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—

(૧) દિવસ મૃતક—‘દરરોજનુ મહેનતાણુ’ (રોજ) નક્કી કરીને કામ કરવાને માટે જે નોકર રાખવામાં આવે છે તેને દિવસ મૃતક કહે છે. તે માત્ર દિવસે જ કામ કરે છે, તે કારણે તેને દિવસ મૃતક કહે છે -

(૨) યાત્રા મૃતક—પરદેશની યાત્રા વખતે જે નોકરને યાત્રાસમય સુધી નોકરીએ રાખવામાં આવે છે તેને યાત્રામૃતક કહે છે પરદેશ જાય ત્યારથી સ્વદેશમાં પાછા ફરે ત્યાં સુધીના સમય સુધી જ આ નોકર રાખવામાં આવે છે.

(૩) ઉચ્ચતા મૃતક—અમુક સમયને માટે જ અમુક પગાર નક્કી કરીને જે નોકર રાખવામાં આવે છે તેને ઉચ્ચતા મૃતક કહે છે.

सः ३, कम्पाहमृतकः—कम्पाहो देखीयः शब्द स च नियतसम्बन्धमये मूल्ये यथा नियमस्य परिमितभूमिसमानकवाची, स चासौ मृतकः—'इयती भूमिस्त्वया इत्या काष्ठेन स्तनितव्या इयत् तन्मूल्यं दास्यामीति नियमेन नियोनित कर्मकर इति पर्यवसितोऽर्थः ४। उक्त च—

विषसमयओ उ घेप्पइ छिनेण पणेण विषसद्वसय ।

जघाउ होइ गमण उमय वा एत्तिपणणेण । १ ।

कम्पाह ओढमाई इत्यमियं कम्म एत्तिपणणेण ।

एधिरकालुज्जवे कायस्य कम्म अ वेति । २ । ”

जाया—“ विषसमृतकस्तु यद्यपि छिनेन घनेन विषसद्वसिका ।

यात्रा तु भवति गमनम् उमय वा (गमनाऽऽगमनकर्म) इयता घनेन । १।

कम्पाह ओढादिः इत्यमित कर्म इयता घनेन ।

इयत्कालमुपस्थे कर्तव्यं कर्म यद् गवीति । २। ” इति, सू० १२।

पूर्व लौकिकपुरुषविशेषस्यान्तरं निरूपितम्, अधुना लोकोत्तरपुरुषस्यान्तरं निरूपयितुमाह—

निश्चय करके रम्बा जाता है ३। कम्पाह मृतक—बह है जो “तू इतनी जमीन खोद लेगा इतने समयमें तो मैं तुझे इतना पारिश्रमिक इसका दूंगा” ऐसी बोली करके कामपर नियुक्त किया जाता है ४।

कहामी है—“ विषसमयओ उघेप्पइ ” इत्यादि—

“कम्पाह” यह देखीय शब्द है और यह नियत समयमें मूल्यकी इयत्ताका (मर्यादा) निर्धारण करके परिमित भूमिको खोदनेवालेका वाचक है, इस प्रकारसे लौकिक पुरुष विशेषका अन्तर निरूपण करके अब सूत्रकार लोकोत्तर पुरुषका अन्तर निरूपित करने के लिये कहते हैं ।

“अस्सारि पुरिसजाया” इत्यादि—

(४) कम्पाह मृतक— जे तु आट्ठा समयमा आट्ठी जमीन जोड़ी आपीय, ते तने आट्ठुं भेजेतवाइ आपीय ” आ प्रकारनी शरत करीने जेने जामे बदावणामा आवे छे जेवा नोकरने कम्पाह मृतक कहे छे

कम्पाह पणु छे छे— विषसमयओ उघेप्पइ इत्यादि—

कम्पाह आ शण्ड जामडी बाणामा पपणाय छे. ‘नियत समयमा नियत वेतन छनि नियत प्रमाणवाणी भूमिने जोड़ी आपनारने ते बावक छे ” आ रीते लौकिक पुरुष विशेषना अन्तरनु निरूपण करीने जेने सूत्रकार लोकोत्तर पुरुषना अन्तरनु निरूपण करे छे—

“ ચત્તારિ પુરિસજાયા ” इत्यादि—पुरुषजातानि-पुरुषप्रकाराः, चत्वारि
प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—एकः—कश्चित् संप्रकटप्रतिसेवी—साध्वादिसमक्षकल्प्यभक्तपाना-
दिकं प्रतिसेवितुं—भोक्तुं शीलमस्येति संप्रकटप्रतिसेवी—दूषितभक्तपानादिप्रकट-
सेवी भवति, किन्तु प्रच्छन्नप्रतिसेवी न भवति, उभयलोकभयवर्जितत्वात् । १।
एकः—कश्चित् प्रच्छन्नप्रतिसेवी भवति, किन्तु सम्प्रकटप्रतिसेवी नो भवति । २।
एकः—कश्चित् संप्रकटप्रतिसेव्यपि प्रच्छन्नप्रतिसेव्यपि भवति । ३। एकः—कश्चित्
नो सम्प्रकटप्रतिसेवी, नापि च प्रच्छन्नप्रतिसेवी भवति, आत्मार्थित्वात् । ४। एषु
चतुर्थोभङ्गः शुद्धः । सू. ३३ ॥

इस सूत्र द्वारा जो पुरुष प्रकार चार कहे गये हैं, उनका तात्पर्य
ऐसा है—संप्रकटप्रतिसेवी नो प्रच्छन्नप्रतिसेवी ? वह है जो साधु
आदिके समक्ष अकल्प्य भक्त पानादिक सेवन करनेका स्वभाववाला
होता है, परन्तु प्रच्छन्न रूपसे उसका प्रतिसेवी नहीं होता है । क्योंकि
ऐसा पुरुष उभय लोकके भयसे वर्जित होता है यह प्रथम विकल्प है ।
तथा—कोई एक दूसरा ऐसा होता है जो प्रच्छन्न प्रतिसेवी होता है ।
किन्तु प्रकटमें प्रतिसेवी नहीं होता है, यह—द्वितीय विकल्प है । तथा
कोई एक तीसरा पुरुष ऐसा है कि प्रकटमेंभी अकल्प्य भक्तपानादिकका
प्रतिसेवी होता है और प्रच्छन्न रूपमेंभी, यह तृतीय विकल्प भङ्ग है ।
कोई एक चौथा ऐसा है जो न प्रकटमें अकल्प्य भक्त पानादिकका प्रतिसेवी

“ चत्तारि पुरિસજાયા ” ઇત્યાદિ—આ સૂત્ર દ્વારા જે ચાર પુરુષ પ્રકારો
કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—

(૧) “ સંપ્રકટપ્રતિસેવી—નો પ્રચ્છન્નપ્રતિસેવી ”—જે પ્રકટ રીતે—સાધુ
આદિની સમક્ષ અકલ્પ્ય ભક્તપાનાદિકનું સેવન કરનારો હોય છે, પણ પ્રચ્છન્ન
(છૂપી) રીતે તેનું પ્રતિસેવન કરનારો હોતો નથી, એવા પુરુષને આ પહેલા
પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે, એવો પુરુષ ઉભયલોકના ભયથી વિહીન હોય છે.
કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પ્રચ્છન્નરૂપે અકલ્પ્ય આહારાદિનું પ્રતિસેવન
કરનારો હોય છે, પણ પ્રકટમાં તેનું સેવન કરતો નથી, આ બીજો વિકલ્પ છે.
(૨) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે જે પ્રકટ રૂપે પણ અકલ્પ્ય આહારાદિનું સેવન
કરે છે અને પ્રચ્છન્ન રૂપે પણ તેનું પ્રતિસેવન કરે છે. આ પ્રકારના પુરુષને
ત્રીજા પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે. (૩) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે
પ્રકટ રૂપે પણ અકલ્પ્ય આહારાદિનું પ્રતિસેવન કરતો નથી અને પ્રચ્છન્ન રૂપે

पूर्वोक्तचतुर्थभक्ष्यालक्षो देवत्वं प्राप्नोतीति देववक्तव्यतामाह—

मूक्ष्म—चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा-कणगा १, कणगलया २, चित्तगुत्ता ३, वसुहरा ४। एव जमस्स, वरुणस्स, वेसमणस्स,

वलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा-सित्तगा १, सुमहा २, विज्जुत्ता ३, असणी ४। एव जमस्स, वेसमणस्स, वरुणस्स,

धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा असोगा १, विमला २, सुप्पमा ३, सुदसणा ४। एव जाव सखवालस्स।

भूयाणदस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा-सुणदा १, सुमहा २ सुजाया ३, सुमणा ४। एव जाव सेलवालस्स जहा धरणस्स । एव सव्वेसिं दाहिणिंदलोगवालान् जाव घोसस्स, जहा भूयाणदस्स, एव जाव महाघोसस्स लोगवालान्,

कालस्स णं पिसाहदस्स पिसायरन्नो चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा-कमला १, कमलप्पमा २, उप्पला ३, सुदसणा ४। एव महाकालस्सवि । सुरूवस्स णं भूहदस्स भूयरन्नो होता हे न प्रच्छन्नमे ही कपोकि-वेसा पुरुष आत्मार्थी होता हे । इन भक्तेमे यह चोपा भक्त शुद्ध हे ॥ सू० ३३ ॥

पय्य देव सेवन कस्ते नही कश्चि के जेवे पुरुष आत्मार्थी होय छे आचार्य आचार्यार्थी जेवे नही शुद्ध छे ॥ सू. ३३ ॥

चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा-रुववई १, वहरुवा २, सुरुवा ३, सुभगा ४। एवं पडिरुवस्सवि । पुण्णभइस्स णं जक्खि-
दस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिस्सीओ, पणत्ताओ तं जहा-पुत्ता १, बहुपुत्तिया २, उत्तमा ३, तारगा ४। एवं माणिभइस्सवि ।

भीमस्स रक्खासिंदस्स रक्खसरन्नो चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा-पडमा १, वसुमई २, कणगा ३, रयणप्पभा ४। एवं महाभीमस्सवि । किंनरस्स णं किंनरिंदस्स किन्नररन्नो चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा-वडैसा १, केउमई २, रइसेणा ३, रइप्पभा ४। एवं किंपुरिसस्सवि । सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स किंपुरिसरन्नो चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा-रोहिणी १, णवमिया २, हिरी ३, पुप्फवई ४। एवं महापुरिसस्सवि ।

अइकायस्स णं महोरगिंदस्स महोरगरन्नो चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा-भुयगा १, भुयगवई २, महाकच्छा ३, फुडा ४। एवं महाकायस्सवि,

गीयरइस्स णं गंधविंदस्स गंधवरन्नो चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा-सुघोसा १, विमला २, सुस्सरा ३, सरस्सई ४। एवं गीयजसस्सवि । चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा-चंदप्पभा १, दोसिणाभा २, अच्चिमाली ३, पभंकरा ४। एवं सूरस्सवि, णवरं सूरप्पभा १, दोसिणाभा २, अच्चिमाली ३, पभंकरा ४।

इगालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पण्ण-
त्ताओ, त जहा विजया १, वेजयती २, जयती ३, अपराजिया
४। एव सव्वेस्सि महागहाणां जाव भावकेउस्स,

सक्कस्स णं देवि दस्स देवरत्तो सोमस्स महारत्तो चत्तारि
अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, त जहा रोहिणी १, मयणा २, चित्ता
३, सोमा ४। एव जाव वेसमणस्स,

ईसाणस्स णं देवि दस्स देवरन्तो सोमस्स महारन्तो चत्तारि
अग्गमहिस्सीओ पणत्ताओ, त जहा पुढवी १, राई २, रयणी ३,
विज्जू ४। एव जाव वरुणस्स ॥ सू० ३४ ॥

छाया—चमस्य सल्ल असुरेन्द्रस्य असुरकुमारराजस्य सोमस्य महाराजस्य
चत्वारोऽग्रमहिष्यः मङ्गलाः, तथा—कनका १, कनकलता २, चित्रगुप्ता ३, वसु-
धरा ४। एव यमस्य, वरुणस्य, वैभवणस्य ॥

इस वक्त चतुर्थ मङ्गला पालक देवत्व पक्षको प्राप्त करता है।
अतः—अथ सूत्रकार इसी सम्बन्धको छेत्तर देव वक्तव्यताके विषयमें
सूत्र कहते हैं—“अमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमारराजो” इत्यादि।

सुप्रार्थ—असुरेन्द्र असुरकुमारराज अमरके जो लोकपाल सोमराज हैं
उनकी चार अग्रमहिषियां कही गई हैं, जैसे—कनका १, कनकलता २,
चित्रगुप्ता ३ और वसुधरा ४। इस तरहका कथन अमरके लोकपाल
जो यम वैभवण और वरुण हैं, उनकी अग्र महिषियोंके सम्बन्धमें भी
जानना चाहिये। वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बुद्धिके लोकपाल जो सोमराज

पूर्वोक्त विष्णु वर्णनागे पालक पुरुष देवत्वने प्राप्त करे छे आ सम्बन्धने
असुरक्षीने छे सूत्रकार देववक्तव्यता विषयक सूत्रानुं कथन करे छे

३। “अमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमारराजो” इत्यादि—

सुप्रार्थ—असुरेन्द्र असुरकुमारराज अमरना सोम नामना लोकपालने चार अग्र
महिषीको छे तेमनां नाम आ प्रमाणे छे—(१) कनका, (२) कनकलता, (३)
चित्रगुप्ता अने (४) वसुधरा। अमरना यम, वैभवण अने वरुण नामना
जीस प्रसु लोकपालोनी अग्रमहिषीकोना विषयमां पक्ष जेनुं कथन सम्बन्ध-
न

बलेः खलु वैरोचनेन्द्रस्य वैरोचनराजस्य सोमस्य महाराजस्य चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-मित्रगा १, सुभद्रा २, विद्युत् ३, अशनी ४। एवं यमस्य, वैश्रवणस्य, वरुणस्य,

धरणस्य खलु नागकुमारेन्द्रस्य नागकुमारराजस्य कालपालस्य महाराजस्य चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-अशोका १, विमला २, सुप्रभा ३, सुदर्शना ४। एवं यावत् शङ्खपालस्य ।

भूतानन्दस्य खलु नागकुमारेन्द्रस्य नागकुमारराजस्य कालपालस्य महाराजस्य चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सुनन्दा १, सुभद्रा २, सुजाता ३, सुमनाः ४। एवं यावत् शैलपालस्य यथा धरणस्य, एवं सर्वेषां दक्षिणेन्द्रलोकपालानां यावद् घोषस्य, यथा भूतानन्दस्य, एवं यावत् महाघोषस्य लोकपालानाम् ।

हैं उनकी अग्र महिषियां कही गई हैं, उनके नाम इस प्रकारसे हैं। मित्रगा १, सुभद्रा २, विद्युत् ३ और अशनी ४। ऐसेही इनके लोकपाल जो यम वैश्रवण और वरुण हैं, -उनकी अग्र महिषियोंके सम्बन्धमें भी जानना चाहिये ।

नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज जो धारण हैं उनके लोकपाल जो कालपाल महाराज हैं। उनकी चार अग्र महिषियां कही गई हैं, जैसे-अशोका १, विमला २, सुप्रभा ३, और सुदर्शना ४। इस तरह का कथन यावत् शङ्खपालकी अग्र महिषियोंके सम्बन्धमें भी जानना चाहिये । नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज भूतानन्दके लोकपाल महाराज कालपाल हैं। उनकी अग्र महिषियां हैं, सुनन्दा १, सुभद्रा २, सुजाता ३ और सुमना ४। ऐसाही कथन इनके यावत्-जो शैलपाल हैं, उनके

रौचनेन्द्र वैरोचनराय अलिना सोम नामना लोकपालने चार अग्रमहिषीओ छे, तेमनां नाम आ प्रमाणे छे-(१) मित्रगा, (२) सुभद्रा, (३) विद्युत् अने (४) अशनी अलिना यम, वैश्रवण अने वरुण नामना भील त्रणु लोकपालोनी अग्रमहिषीओना विषयमां पणु ओवुं न कथन समनु.

नागकुमारेन्द्र नागकुमारराय धरणना लोकपाल कालपाल महाराजने चार अग्रमहिषीओ छे. तेमना नाम आ प्रमाणे छे-(१) अशोका, (२) विमला, (३) सुप्रभा अने (४) सुदर्शना धरणना शङ्खपाल पर्यन्तना भील त्रणु लोकपालोनी अग्रमहिषीओ विषे पणु आ प्रकारनु न कथन समनु देवु

नागकुमारेन्द्र नागकुमारराय भूतानन्दना कालपाल नामना लोकपालनी चार अग्रमहिषीओनां नाम आ प्रमाणे छे-(१) सुनन्दा, (२) सुभद्रा, (३) सुजाता अने (४) सुमना. भूतानन्दना शैलपाल पर्यन्तना भील त्रणु लोक

કાલસ્ય સ્વલુ પિશાચેન્દ્રસ્ય પિશાચરાજસ્ય ચતસ્રોઽગ્રમહિવ્યઃ મઘ્નતાઃ, તથા-કમલા ૧, કમલપ્રમા ૨, વસ્ત્રા ૩, સુવર્ણના ૪। એ મહાકાલસ્યાપિ।

સુરુપસ્ય સ્વલુ ભૂતેન્દ્રસ્ય ભૂતરાજસ્ય ચતસ્રોઽગ્રમહિવ્ય મઘ્નતાઃ, તથા-રૂપાવતી ૧, વદુરૂપા ૨, સુરૂપા ૩, સુમગા ૪। એ પ્રતિરૂપસ્યાપિ,

પૂર્ણમઘ્નસ્ય સ્વલુ યક્ષેન્દ્રસ્ય યક્ષરાજસ્ય ચતસ્રોઽગ્રમહિવ્ય મઘ્નતાઃ, તથા-પુષ્પા ૧, વદુપુષ્પિકા ૨, ઉષ્મા ૩, તારકા ૪। એ માઘિમઘ્નસ્યાપિ,

અગ્ર મહિવિયોકે સમ્પન્નચર્મેભી જાનના ચાહિયે। યહાં યાયત્ શન્દસે કોલપાલ ઓર શક્તિપાલ જન દોનો લોકપાલોકા મહાજન હુવા હૈ। જસ તરહ-સમસ્ત દક્ષિણેન્દ્રકે લોકપાલોકી અગ્ર મહિવિયોકે સમ્પન્નચર્મે યાયત્-દક્ષિણેન્દ્ર ઘોષકે લોકપાલોકી અગ્ર મહિવી તક સમસ્ત લેના ચાહિયે। જસ તરહસે ઉત્તરાર્ધકે અધિપતિ જો યાયત્ મહાધોષ હૈ જનકે લોકપાલોકી અગ્ર મહિવિયોકે સમ્પન્નચર્મેભી જાનના ચાહિયે। પિશાચેન્દ્ર પિશાચરાજકાલકી અગ્રમહિવિયાં ચે ચાર હૈ, કમલા ૧, કમલપ્રમા ૨, વસ્ત્રા ૩ ઓર સુવર્ણના ૪। જસી તરહસે મહાકાલકી અગ્રમહિવિયોકે સમ્પન્નચર્મેભી જાનના ચાહિયે। ભૂતેન્દ્ર-ભૂતરાજ સુરુપકીભી ચાર અગ્ર મહિવિયાં હૈ, જેસે-રૂપાવતી ૧, વદુરૂપા ૨, સુરૂપા ૩ ઓર સુમગા ૪। જેસેહી પ્રતિરૂપકી અગ્રમહિવિયોકે સમ્પન્નચર્મે જાનના।

યક્ષેન્દ્ર-યક્ષરાજ પૂર્ણમઘ્નકી ચાર અગ્રમહિવિયાં જેસે-પુષ્પા ૧, વદુપુષ્પિકા ૨, ઉષ્મા ૩, તારકા ૪ ચે હૈ। જસી તરહસે માઘિમઘ્નકી

પાઠોની અગ્રમહિવિયો વિશે પજુ જો જ પ્રમાણે કથન સમજવું અહીં 'પચન્ત' પદથી કોલપાલ અને શક્તિપાલ નામના બે લોકપાલો બહુજી કથના બેઠાં છે.

જો જ પ્રમાણે યોગ પચન્તના સમસ્ત દક્ષિણેન્દ્રોના લોકપાલોની અગ્ર મહિવિયોજન કથન અહીં કથન બેઠાં છે. જો જ પ્રમાણે મહાધોષ પચન્તના ઉત્તરાર્ધના ઇન્દ્રોના લોકપાલોની અગ્રમહિવિયોજન કથન પજુ અહીં કથન બેઠાં છે.

પિશાચો દ્ર પિશાચરાજ કાળની ચાર અગ્રમહિવિયોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) કમલા, (૨) કમલપ્રમા, (૩) વસ્ત્રા અને (૪) સુવર્ણના જો જ પ્રમાણે મહાકાલની અગ્રમહિવિયો વિશે પજુ સમજવું ભૂતેન્દ્ર ભૂતરાજ મુરખની ચાર અગ્રમહિવિયોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) રૂપાવતી (૨) વદુરૂપા (૩) સુરૂપા અને (૪) સુમગા પ્રતિરૂપની અગ્રમહિવિયો વિશે પજુ જો જ કથન સમજવું યક્ષેન્દ્ર યક્ષરાજ પૂર્ણમઘ્નની ચાર અગ્રમહિવિયોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) પુષ્પા (૨) વદુપુષ્પિકા (૩) ઉષ્મા અને (૪) તારકા જો જ પ્રમાણે કથન માઘિમઘ્નની અગ્રમહિવિયો વિશે પજુ સમજવું

भीमस्य खलु राक्षसेन्द्रस्य राक्षसराजस्य चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-
पद्मा १, वसुमती २, कनका ३, रत्नप्रभा ४। एवं महाभीमस्यापि, किन्नरस्य खलु
किन्नरेन्द्रस्य किन्नरराजस्य चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-अवतंसा १,
केतुमती २, रतिसेना ३, रतिप्रभा ४। एवं किंपुरुषस्यापि,

सत्पुरुषस्य खलु किंपुरुषेन्द्रस्य किंपुरुषराजस्य चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः,
तद्यथा-रोहिणी १, नवमिका २, ह्रीः ३, पुष्पावती ४। एवं महापुरुषस्यापि ।
अतिकायस्य खलु महोरगेन्द्रस्य महोरगराजस्य चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-
भुजगा १, भुजगावती २, महाकच्छा ३, स्फुटा ४। एवं महाकायस्यापि ।

अग्रमहिषियोंके सम्बन्धमें जानना चाहिये । राक्षसेन्द्र - राक्षसराज
भीमकी चार अग्रमहिषियां कही गई हैं, जैसे-पद्मा, वसुमती, कनका,
रत्नप्रभा ४ । इसी तरह महाभीमकी अग्रमहिषियोंको जानना चाहिये ।
किन्नरेन्द्र-किन्नरराज किन्नरकी महिषियां अवतंसा १, केतुमती २,
रतिसेना ३, रतिप्रभा ४ चार कही गई हैं । ऐसेही किंपुरुषकी चार
अग्रमहिषियोंको जानना चाहिये । किंपुरुषेन्द्र-किंपुरुषराज सत्पुरुषकी
रोहिणी १, नवमिका २, ह्री ३, और पुष्पावती ४ ये चार अग्रमहि-
षियां हैं । इसी तरह महापुरुषकीभी अग्रमहिषियोंको जानना चाहिये ।
महोरगेन्द्र -महोरगराज अतिकायकी चार अग्रमहिषियां हैं, भुजगा १,
भुजगावती २, महाकच्छा ३ और स्फुटा ४ । इसी तरहसे महाकायकी
अग्रमहिषियोंके सम्बन्धमें जानना चाहिये । गन्धर्वेन्द्र-गन्धर्वराज

राक्षसेन्द्र राक्षसराज भीमની ચાર અગ્રમહિષીઓનાં નામ આ પ્રમાણે
છે--(૧) પદ્મા, (૨) વસુમતી, (૩) કનકા અને (૪) રત્નપ્રભા. મહાભીમની
અગ્રમહિષીઓ વિષે પણ એવું જ કથન સમજવું

કિન્નરેન્દ્ર કિન્નરરાજ કિન્નરની ચાર અગ્રમહિષીઓનાં નામ આ પ્રમાણે છે
(૧) અવતંસા, (૨) કેતુમતી, (૩) રતિસેના અને (૪) રતિપ્રભા એવાં જ
કિંપુરુષની ચાર અગ્રમહિષીઓના નામો પણ સમજવા.

કિંપુરુષેન્દ્ર કિંપુરુષરાજ સત્પુરુષની ચાર અગ્રમહિષીઓના નામ આ પ્રમાણે
છે--(૧) રોહિણી, (૨) નવમિકા, (૩) હ્રી, અને (૪) પુષ્પાવતી મહાપુરુષની
અગ્રમહિષીઓનાં પણ એ જ પ્રમાણે નામો સમજવા.

મહોરગેન્દ્ર મહોરગરાજ અતિકાયની ચાર અગ્રમહિષીઓના નામ આ
પ્રમાણે છે--(૧) ભુજગા, (૨) ભુજગાવતી, (૩) મહાકચ્છા, અને (૪) સ્ફુટા એ
જ પ્રમાણે મહાકાયની અગ્રમહિષીઓ વિષે પણ સમજવું

ગીતરતે: સ્વલ્લ ગન્ધર્વેન્દ્રસ્ય ગન્ધર્વરામસ્ય ચતસ્રોઽગ્રમહિષ્યઃ પ્રશ્નતા: તથા-
સુધોપા ૧, વિમલા ૨, સુસ્વરા ૩, સરસ્વતી ૪। એવ ગીતયજ્ઞસોઽપિ। વન્દ્રસ્ય
સ્વલ્લ જ્યોતિષેન્દ્રસ્ય જ્યોતિષરાજસ્ય ચતસ્રોઽગ્રમહિષ્યઃ પ્રશ્નતા: તથા-ચન્દ્રપ્રમા
૧, જ્યોત્સ્નામા ૨, અર્ચિર્માલી ૩, પ્રમજ્જરા ૪। એવ ચૂરસ્થાપિ, નવરં સૂત્રપ્રમા ૧,
જ્યોત્સ્નામા ૨, અર્ચિર્માલી ૩, પ્રમજ્જરા ૪। અદ્વારસ્ય સ્વલ્લ મહાગ્રહસ્ય ચતસ્રોઽ-
ગ્રમહિષ્યઃ પ્રશ્નતા: તથા-વિજયા, ૧, વૈશ્યવન્તી ૨, જયન્તી ૩, અપરાજિતા ૪।
એવં સર્વા મહાગ્રહાણાં યાવદ્ માવકેતો: ।

શુક્રસ્ય સ્વલ્લ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય સોમસ્ય મહારામસ્ય ચતસ્રોઽગ્રમહિષ્યઃ
પ્રશ્નતા, તથા-રોહિણી ૧, મદના ૨, ચિત્રા ૩, સોમા ૪। એવ યાવદ્ વૈશ્યવસ્ય।

ગીતરતિકે અગ્રમહિષિયોર્મે સુધોપા ૧, વિમલા ૨, સુસ્વરા ૩, સરસ્વતી ૪ એ ચાર હૈં। હસી પ્રકારસે ગીતયજ્ઞકી અગ્રમહિષિયોર્મે
વિષયર્મે સી જાનના ચાહિયે।

જ્યોતિષેન્દ્ર-જ્યોતિષરાજ ચન્દ્રકી ચાર અગ્રમહિષિયાં ચન્દ્રપ્રમા ૧,
જ્યોત્સ્નામા ૨, અર્ચિર્માલી ૩, પ્રમજ્જરા ૪ હૈં। અજ્ઞારક નામક મહા
ગ્રહકી ચાર અગ્રમહિષિયાં હૈં। વિજયા ૧, વૈજયન્તી ૨, જયન્તી ૩,
અપરાજિતા ૪। એસાહી કથન માવકેતુકે સમસ્ત મહાગ્રહોંકી અગ્ર
મહિષિયોર્મે સમ્યગર્મે જાનના ચાહિયે। દેવેન્દ્ર-દેવરાજ શક્રકે લોક
પાલ સોમ મહારાજકી અગ્રમહિષિયાં ચાર હૈં, રોહિણી ૧, મદના ૨,
ચિત્રા ૩, સોમા ૪। હસી પ્રકાર વૈશ્યવસ્ય લોકપાલકી અગ્ર મહિષિયોર્મે
સમ્યગર્મે જાનના ચાહિયે। દેવેન્દ્ર દેવરાજ હૈંશાનકે લોકપાલ સોમ મહા

ગાધર્વેન્દ્ર અશ્વર્શાય ગીતરતિની ચાર અગ્રમહિષિયોના નામ નીચે
પ્રમાણે છે-(૧) સુધોપા (૨) વિમલા, (૩) સુસ્વરા અને (૪) સરસ્વતી. એજ
પ્રમાણે ગીતયજ્ઞની અગ્રમહિષિયો વિષે પણ સમાજ્યુ

જ્યોતિષેન્દ્ર જ્યોતિષરાજ ચન્દ્રની ચાર અગ્રમહિષિયોનાં નામ આ
પ્રમાણે છે-(૧) ચન્દ્રપ્રમા (૨) જ્યોત્સ્નામા, (૩) અર્ચિર્માલી અને (૪) પ્રમજ્જરા.
અમારક (મગ્ધ) નામના મહાગ્રહની ચાર અગ્રમહિષિયોનાં નામ આ પ્રમાણે
છે (૧) વિજયા (૨) વૈશ્યવન્તી, (૩) જયન્તી અને (૪) અપરાજિતા. એવુજ
કથન માવકેતુ આદિ સમસ્ત મહાગ્રહોંની અગ્રમહિષિયો વિષે પણ સમાજ્યુ

દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રના લોકપાલ સોમ મહારાજની ચાર અગ્રમહિષિયોનાં
નામ આ પ્રમાણે છે- (૧) રોહિણી, (૨) મદના (૩) ચિત્રા, અને (૪) સોમા.
એજ પ્રમાણે વૈશ્યવસ્ય લોકપાલની અગ્રમહિષિયો
વિષે પણ સમાજ્યુ દેવેન્દ્ર દેવરાજ હૈંશાનના લોકપાલ સોમ મહારાજને ચાર

ઈશાનસ્ય સ્વહૃદે દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય સોમસ્ય મહારાજસ્ય ચતસ્રોઽગ્રમહિષ્યઃ
પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-પૃથિવી ૧, રાત્રી ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪। યાવદ્ વરુણસ્ય । સૂ ૩૪ ॥

ટીકા—“ ચમરસે ”—ત્યાદિ-ચમરસ્ય-તદાખ્યસ્ય, ‘ સ્વહૃદે ’ વાક્યા-
લક્ષારે, અસુરેન્દ્રસ્ય અસુરકુમારરાજસ્ય-તત્સમ્બન્ધિનઃ સોમસ્ય-તદાખ્યલોકપાલસ્ય
ચતસ્રોઽગ્રમહિષ્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-કનકા ૧, કનકલતા ૨, ચિત્રશુપ્તા ૩,
વસુન્ધરા ૪। એવં-સોમવત્, યમસ્ય વરુણસ્ય વૈશ્રવણસ્ય ચ પ્રત્યેકં ચતસ્રોઽગ્રમ-
હિષ્યો બોધ્યાઃ। એવં સર્વત્રેશાનપર્યન્તાનાં સર્વેષામિન્દ્રાણાં-તત્તલ્લોકપાલાના પ્રત્યેકં
તત્તન્નામ્ન્યોઽગ્રમહિષ્યો બોધ્યાઃ । સૂ ૩૪ ।

પૂર્વં દેવવક્તવ્યતા પ્રોક્તા, દેવત્વં ચ વિકૃતિત્યાગાદ્ભવતીતિ સૂત્રત્રયેણ વિકૃ-
તિસ્વરૂપમાહ—

મૂઢમ્-ચત્તારિ ગોરસવિગર્દ્ધો પળ્લતાઓ, તં જહા-સીરં ૧,
દહિં ૨, સપ્પિં ૩, ણવળીયં ૪। ૧।

ચત્તારિ સિળેહવિગર્દ્ધો પળ્લતાઓ, તં જહા-સેહ્લં ૧, ઘયં
૨, વસા ૩, ણવળીયં ૪। ૨।

ચત્તારિ મહાવિગર્દ્ધો પળ્લતાઓ, તં જહા-મહું ૧, મસં
૨, મજ્જં ૩, ણવળીયં ૪। ૩ । સૂ ૩૫ ॥

રાજકી ચાર અગ્રમહિષિયાં પૃથિવી ૧ રાત્રી ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્
૪ હૈં । એસે इनके लोकपाल वरुण तक प्रत्येककी चार चार अग्र महि-
षियोंको जानना चाहिये ॥ સૂ ૩૪ ॥

કથિત દેવત્વ વિકૃતિકે ત્યાગસે હોતા હૈ । અતઃ-અથ સૂત્રકાર
વિકૃતિકા સ્વરૂપ ત્રીન સૂત્રોસે પ્રગટ કરતે હૈ ।

“ ચત્તારિ ગોરસવિગર્દ્ધો પળ્લતાઓ ” ઇત્યાદિ—

અગ્રમહિષીઓ છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે-(૧) પૃથિવી, (૨) રાત્રી, (૩)
રજની અને (૪) વિદ્યુત્ તેમના વરુણ પર્યન્તના બીજા ત્રણ લોકપાલોની
અગ્રમહિષીઓ વિષે પણ એવું જ કથન સમજવું. ॥ સૂ. ૩૪ ॥

ઉપર્યુક્ત દેવત્વની પ્રાપ્તિ વિકૃતિના ત્યાગથી થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર
ત્રણ સૂત્રો દ્વારા વિકૃતિનું સ્વરૂપ પ્રકટ કરે છે

“ ચત્તારિ ગોરસવિગર્દ્ધો પળ્લતાઓ ” ઇત્યાદિ—

છાયા—ચતસ્રો ગોરસચિકૃતયઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—સીર ૧, દધિ ૨, સર્પિઃ ૩, નવનીતમ્ ૪। ૧। ચતસ્રઃ સ્નેહચિકૃતયઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—તેલ ૧, ઘૃતં ૨, વસા ૩, નવનીતમ્ ૪। ૨। ચતસ્રો મહાચિકૃતયઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—મધુ ૧, માંસ ૨, મઘ ૩, નવનીતમ્ ૪। ૩। સૂ. ૩૫ ॥

ટીકા—“વચારિ” ઇત્યાદિ—ગોરસચન્દ્રો રૂઢ્યા ગોમદિષ્પાદિદુગ્ધમ્
ધૃતિરસચક્રઃ, ગર્ભાં રસ ઇતિ વ્યુત્પત્તયા યોગાર્થો નામ સ્વીકૃતઃ, તદ્વૃષા પિઠ
તયો ગોરસચિકૃતયઃ તામ્રતસ્રઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—સીર—દુગ્ધ ૧, દધિ ૨, સર્પિઃ
—ઘૃતમ્ ૩, નવનીતં—‘મન્સન’ ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્ ૪। ૧ ॥

“વચારિ સિનેહ” ઇત્યાદિ—ચતસ્રઃ સ્નેહચિકૃતયઃ, પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—
તેલ ૧, ઘૃતં ૨, વસા—‘ચર્ચા’ ઇતિ ભાષામસિદ્ધા ૩, નવનીતમ્ ૪। ૨।

“વચારિ મદે” —સ્વાદિ—ચતસ્રો મહાચિકૃતયઃ પ્રજ્ઞતાઃ તથા—મધુ ૧,
માંસ ૨, મઘ ૩, નવનીત ચેતિ ૪। ૩। સૂ. ૩૫ ॥

ગોરસ ચિકૃતિયા ચાર કહી ગઈ છે, દૂધ—દહી—ધી મન્સન ૪।

સ્નેહ ચિકૃતિયાં ચાર છે—તેલ—ધી—વસા—નવનીત ૪।

ચાર મહાચિકૃતિયાં છે, મધુ—માંસ—મઘ—મન્સન ૪।

“ગર્વારસઃ” —ગાયકા જો રસ હૈ વહ ગોરસ હૈ, ऐसी व्युत्पत्ति
योगार्थं यहां नहीं लिया गया है। ગોરસ રૂપ જો ચિકૃતિ હૈ વહ ગોરસ
ચિકૃતિ હૈ। ये गोरस चिकृतियां क्षीर-दूध आदिक रूप है। स्नेह
चिकृतियोंमें जो वसा चिकृति आई है उसका अर्थ चर्चा है ॥ सू. ३५ ॥

અમ વ્યવકાર છૂટાગારકો ઓર છૂટાગારશાલાકો દષ્ટાન્ત રૂપસે
તથા પુરુષ પર્વ સ્ત્રીકો વાર્ષાન્તિક રૂપસે કહીનેકી ઇચ્છાસે ચાર સૂત્રોક્ત

ગોરસ વિદ્યુતિયો ચાર કહી છે—દૂધ, દહીં, ધી અને માખણ

સ્નેહ વિદ્યુતિયો પચ્ચ ચાર કહી છે—તેલ, ધી, વસા (ચર્ચા)
અને નવનીત (માખણ)

ચાર મહાવિદ્યુતિયો કહી છે—મધ, માંસ, મઘ અને માખણ.

ગોરસ ચન્દ્ર ઇન્દિગત રૂપે ગાય, લેધ આદિના દુગ્ધાદિ રસનો વાચક
છે “ગર્વારસઃ” “ગાયનો જે રસ તેનું નામ ગોરસ” એવી વ્યુત્પત્તિ દ્રાશ
પ્રાપ્ત થતો અથવા અહીં લેવાનો નથી ગોરસ રૂપ જે વિદ્યુતિ છે તેનું નામ
ગોરસ વિદ્યુતિ છે તે ગોરસ વિદ્યુતિયો દૂધ આદિ રૂપ છે સ્નેહ વિદ્યુતિયોના
પ્રકારમાં જે ‘વસા’ ચન્દ્ર પદ આ પું છે તેનો અર્થ ‘ચર્ચા’ ગાય છે ॥ સૂ. ૩૫ ॥

હવે સૂત્રકાર ફૂટાગારને અને ફૂટાગારશાલાને દષ્ટાન્ત રૂપે અને પુરુષ
તથા સ્ત્રીને વાર્ષાન્તિક રૂપે પ્રકટ કરવાના હેતુથી ચાર સૂત્રોક્ત કથન કરે છે

કૂટાગારં કૂટાગારશાલાં ચ દૃશાન્તતયા પુંલ્લિયૌ ચ દાર્શનિકતયા વક્તુ-
કામઃ સૂત્રચતુષ્ટયમાહ—

મૂલમ્—ચત્તારિ કૂટાગારા પળ્લન્તા, તં જહા-ગુત્તે ણામમેગે
ગુત્તે ૧, ગુત્તે ણામમેગે અગુત્તે ૨, અગુત્તે ણામમેગે ગુત્તે ૩, અગુત્તે
ણામમેગે અગુત્તે ૪। એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં
જહા-ગુત્તે ણામમેગે ગુત્તે ૧, ગુત્તે ણામમેગે અગુત્તે ૨, અગુત્તે
ણામમેગે ગુત્તે ૩, અગુત્તે ણામમેગે અગુત્તે ૪।

ચત્તારિ કૂટાગારસાલાઓ પળ્લન્તાઓ, તં જહા-ગુત્તાણામ-
મેગા ગુત્તદુવારા ૧, ગુત્તા ણામમેગા અગુત્તદુવારા ૨, અગુત્તા
ણામમેગા ગુત્તદુવારા ૩, અગુત્તા ણામમેગા અગુત્તદુવારા ૪। એવા-
મેવ ચત્તારિ ઇત્થીઓ પળ્લન્તાઓ, તં જહા-ગુત્તા ણામમેગે ગુત્તિંદિયા
૧, ગુત્તા ણામમેગા અગુત્તિંદિયા ૨, અગુત્તા ણામમેગા ગુત્તિંદિયા
૩, અગુત્તા ણામમેગા અગુત્તિંદિયા ૪ ॥ સૂ. ૩૬ ॥

છાયા—ચત્તારિ કૂટાગારાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-ગુપ્તં નામૈકં ગુપ્તમ્ ૧,
ગુપ્તં નામૈકમણ્ણમ્ ૨, અગુપ્તં નામૈકં ગુપ્તમ્ ૩, અગુપ્તં નામૈકમણ્ણમ્ ૪। એવ-
કથન કરતે હૈં । “ ચત્તારિ કૂટાગારા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—ચાર કૂટાગાર કહે ગયેહૈં, એક કૂટાગાર એસા હોતા હૈં જો પ્રાકાર
આદિસે વેષ્ટિત હોતા હૈં ઓર-દ્વાર આદિખી જિસકે બન્દ રહતે હૈં ૧ ।
એક કૂટાગાર એસા હોતા હૈં જો પ્રાકાર આદિસે વેષ્ટિત હોતા હૈં, પર
દ્વાર આદિ જિસકે બન્દ નહીં હોતા હૈં, કોઈ કૂટાગાર એસા હોતા હૈં કિ જો
પ્રાકાર આદિ સે વેષ્ટિત નહીં હોતા હૈં, પરન્તુ-દ્વાર આદિ જિસકે બન્દ

“ ચત્તારિ કૂટાગારા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—કૂટાગારના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) કોઈ કૂટાગાર એવું હોય છે કે જે
પ્રાકાર (કોટ) આદિથી વેષ્ટિત હોય છે અને જેના દ્વારાદિ પણ બંધ રહે
છે (૨) કોઈ કૂટાગાર એવું હોય છે કે જે પ્રાકાર આદિથી વેષ્ટિત હોય છે
પણ તેના દ્વારાદિ બંધ હોતાં નથી. (૩) કોઈ કૂટાગાર એવું હોય છે કે જે
પ્રાકાર આદિથી વેષ્ટિત હોતું નથી પણ તેનાં દ્વારાદિ બંધ હોય છે. (૪) કોઈ

મેવ ચત્વારિ પુરુષપ્રાતાનિ પ્રગ્નપ્તાનિ, તથા-ગુપ્તો નામૈકો ગુપ્ત ૧, ગુપ્તો નામૈકોઽગુપ્ત ૨, અગુપ્તો નામૈકો ગુપ્તઃ ૩, અગુપ્તો નામૈકોઽગુપ્તઃ ૪।

ચતસ્રઃ કૃતાઽઽકારશાખાઃ પ્રગ્નપ્તાઃ તથા-ગુપ્તા નામૈકા ગુપ્તદ્વારા ૧, ગુપ્તા નામૈકાઽગુપ્તદ્વારા ૨, અગુપ્તા નામૈકા ગુપ્તદ્વારા ૩, અગુપ્તા નામૈકાઽગુપ્તદ્વારા ૪।

एवमेव चतस्रः स्त्रियः प्रग्नपत्ताः, तथ्या-गुप्ता नामैका गुप्तेन्द्रिया १, गुप्ता नामैकाऽगुप्तेन्द्रिया २, अगुप्ता नामैका गुप्तेन्द्रिया ३, अगुप्ता नामैकाऽगुप्तेन्द्रिया ४। सू० ३६।

टीका—“ चचारि कृतागारा ” इत्यादि—चत्वारि कृतागाराणि-स्त्रिय युक्तगुणानि, प्रग्नपत्तानि, तथ्या-गुप्त-प्राकारमसृष्टिना वेष्टित कोपगृहादिक तदेव पुनर्गुप्त-पिहितद्वारतया, एकं भवति, ‘नामे’ ति पाचालङ्कारे एवमग्रेऽपि। इत्येषावन्निष्ठास्त्रयो भङ्गा पिष्टेयाः। १४ इति स्थान्तभूतकृतागारमृषम् ॥

રહતે હે ૩। તથા ચૌધા કૃતગાર પેસા હોના હે કિ જો ન તો પ્રાકાર આદિસે વેષ્ટિત હોના હે ઓર ન તો ધાર આદિ હી ઉતકે પડ રહતે હે ૪। હમી તરહસે ચાર પુરુષજાત કહે ગયે હે। જૈસે-ગુપ્ત ગુપ્ત, ગુપ્ત અગુપ્ત, અગુપ્ત ગુપ્ત ઓર અગુપ્ત અગુપ્ત ૪। ચાર કૃતગારશાખાપ કહી ગઈ હે, ગુપ્તા ગુપ્તદ્વારા, ગુપ્તા અગુપ્તદ્વારા, અગુપ્તા ગુપ્તદ્વારા, અગુપ્તા અગુપ્ત દ્વારા ૪। શિશ્વરયુક્ત ગૃહકા નામ કૃતાગાર હે। જિસકા કોપગૃહ આદિ પ્રાકાર આદિસે વેષ્ટિત હોતા હે। તથા સ્વયંબી જો પિહિત દ્વારવાસી હોતા હે, પેસા વહ કૃતાગાર ગુપ્ત હે। હસી તરહ આગેની જાનના વાહિયે। અવશિષ્ટ ઓર ત્રીન ભક્ષમી સ્વયં વરપ્રક્ષિત કર લેના વાહિયે।

ચેચાર કૃતાગાર જૈસે કહે ગયે હે—ત્રમી પ્રકારસે પુરુષ જાતની ચાર કહે ગયે હે। ડનમેં કોઈ એક પુરુષ પેસા હોતા હે જો વક્ત્રાદિસે આચ્છા-

કૃતાગાર એવુ કોય છે કે જે પ્રાકારાદિથી વેષ્ટિત પણ કોનું નથી અને તેના દ્વારાદિ પણ બંધ હોતાં નથી।

જે ન પ્રમાણે ચાર પુરુષજાત કહી છે—(૧) ગુપ્ત ગુપ્ત, (૨) ગુપ્ત અગુપ્ત, (૩) અગુપ્ત ગુપ્ત અને (૪) અગુપ્ત અગુપ્ત

ચાર કૃતાગારશાખાઓ કહી છે—(૧) ગુપ્તા ગુપ્તદ્વારા, (૨) ગુપ્તા અગુપ્ત દ્વારા, (૩) અગુપ્તા ગુપ્તદ્વારા અને (૪) અગુપ્તા અગુપ્તદ્વારા

શિશ્વરયુક્ત ગૃહનું નામ કૃતાગાર છે જે કૃતાગાર પ્રાકાર (કોટ) આદિથી પરિવેષ્ટિત કોય છે અને જેનાં દ્વાર પણ બંધ કોય છે એવા તે કૃતાગારને ગુપ્ત ગુપ્ત રૂપ પહેલા પ્રકારમાં મૂકી શકાય છે જે ન પ્રમાણે બાકીના ત્રણ પ્રાકારો પણ બંધ ન સમજી શકાય એવાં ॥

અથ દાષ્ટાન્તિકપુરુષજાતમુત્રમ્—

“ એવમેવે ”—ત્યાદિ—એવમેવ—કૂટાગારવદેવ, પુરુષજાતાનિ ચત્વારિ પ્રજ્ઞ-
પ્તાનિ, તથા—એકઃ કશ્ચિત્ પુરુષઃ, ગુપ્તઃ—વસ્ત્રાદિનાઽઽચ્છાદિતઃ સ- એવ પુનઃ
ગુપ્તઃ—જિતેન્દ્રિયતયા કૃતાઽઽત્મરક્ષો ભવતિ, યદ્વા—કાલાપેક્ષયા પૂર્વ ગુપ્તો—ગુપ્તે-
ન્દ્રિયોઽધુનાઽપિ પુનર્ગુપ્તઃ ૧, એવમપરેઽપિ મજ્ઞા ઝહનીયાઃ ૧૪૥૥ ઇતિ,

અથ દૃષ્ટાન્તભૂતકૂટાઽઽકારશાલામુત્રમ્—

“ ચત્તારિ કૂટાગારે ”—ત્યાદિ—કૂટસ્ય—શિખરસ્યાઽઽકાર ઇવ આકારો
યાસાં સ્તાઃ કૂટાઽઽકારાઃ તાશ્વતાઃ શાલાઃ કૂટાઽઽકારશાલાઽશિખરાઽઽકારગૃહ-
વિશેષઃ, તાઃ, ચતુસઃ—ચતુઃસંખ્યકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, અથ દાષ્ટાન્તિકસ્ત્રીવિવેક્ષયા
તત્સાધર્મ્યપ્રદર્શનાય ‘ કૂટાઽઽકારશાલે ’—ત્યસ્ય સ્ત્રીત્વેન નિર્દેશઃ । તથા—
ગુપ્તા—પ્રાકારાદિના વૃતા, સૈમ પુનર્ગુપ્તા—પિહિતદ્વારતયા, એકા—કાચિત્ કૂટાઽઽ-
કારશાલા ભવતિ, એવમપરેઽપિ મજ્ઞા વિવેચનીયાઃ ૪૧

દિત હોતા હુવામી જિતેન્દ્રિય હોકર આત્મરક્ષાવાલા હોતા હૈ, અથવા
જો કાલકી અપેક્ષા પહેલે ગુપ્ત-ગુપ્તેન્દ્રિયવાલા હોતા હૈ ઓર અથમી ગુપ્ત
હૈ । યહાં ઓર જો ત્રીન મજ્ઞ હૈ વે સ્વયં ઝહસે જાનના ચાહિયે ।

“ ચત્તારિ કૂટાગારે ” ત્યાદિ । શિખરકે આકાર જૈસા આકાર
જિન શાલાઓંકા હોતા હૈ વે કૂટાગારશાલાં હૈ, એસી કૂટાગાર-
શાલાં શિખરોંકે આકાર જૈસે ગૃહવિશેષ રૂપ હોતી હૈ । કૂટાગાર
સદૃશ સ્ત્રીયાંમી ચાર પ્રકારકી હોતી હૈ, અર્થાત્—જૈસે કોઈ એક કૂટા-
ગારશાલા પ્રાકાર આદિસે વેષ્ટિત હોની હૈ ઓર પિહિતદ્વારવાલી હોતી
હૈ, ડસી પ્રકારસે કોઈ એક સ્ત્રીમી એસી હોતી હૈ જો પરિવાર આદિસે

કૂટાગારનાં જેવા ચાર પ્રકાર કહ્યા છે, એવાં જ ચાર પ્રકારના પુરુષો
પણ હોય છે (૧) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે વસ્ત્રાદિથી આગ્રહાદિન
હોવા છતાં પણ જિતેન્દ્રિય હોવાથી આત્મરક્ષક હોય છે. અથવા કોઈ પુરુષ
એવો હોય છે કે જે કાળની અપેક્ષાએ પહેલાં પણ ગુપ્ત (ગુપ્તેન્દ્રિયવાળો)
હોય છે અને હાલમાં પણ ગુપ્ત હોય છે બાકીના ત્રણ ભાગાઓનું કથન
પણ આ પ્રથમ ભાગાને આધારે સમજી શકાય એવું છે

“ ચત્તારિ કૂટાગારે ” ઇત્યાદિ શિખરના જેવો જે શાલાઓનો આકાર
હોય છે તેને કૂટાગાર શાલાઓ કહે છે એવી કૂટાગાર શાલાઓ શિખરના
આકાર જેવા ગૃહવિશેષ રૂપ હોય છે. કૂટાગાર શાલાઓની જેમ સ્ત્રીઓ પણ
ચાર પ્રકારની હોય છે. એટલે કે જેમ કોઈ એક કૂટાગારશાલા પ્રાકાર આદિથી

અથ દાષ્ટાન્તિકસ્રીયમ્—

“પ્રવામેર ચધારિશ્ત્યોમો” ઇત્યાદિ—પ્રવામેર—કૃત્તાડ્ઠકારણાભરદેવ, શિય ચતસ્રઃ મમ્મપ્તાઃ, તથા—ગુપ્તા—પરિવાર્યેષ્ટિતા ગેદમધ્યગતા વસ્ત્રાડ્ઠપ્તા દિતાક્ષી ગૃહસ્થમાત્રા વા, સૈર પુનર્ગુપ્તન્ત્રિયા—અનુચિતાડ્ઠચરણાન્નિવર્તિતેન્ત્રિયા, પક્ષા—કાષિત્ સ્ત્રી મયતિ, શ્લેષમદ્ગેર્યપ્યેવમવ યયાનર્થઃ સ્વયમૂઘાઃ । ઘૃ૦ ૧૬ ।

અનન્તર ગુપ્તેન્દ્રિયત્તમુક્ત, તપ્તેન્દ્રિયાણિ ચાત્રગાહનાડ્ઠધયામીત્યવમાર્તાનિ નિરૂપયિતુમાઃ—

મૂલમ્—ચત્વરિહા ઓગાહના પળ્લન્તા, તં જહા-દઘ્વાગા હના ૧, સ્વેત્તોગાહના ૨, કાલોગાહના ૩, માવોગાહના ૫। સૂ ૩૭।

છાયા—ચતુર્વિધા અવગાહના મમ્મપ્તા, તથા—દ્રવ્યાવગાહના ૧, ક્ષેત્રાવગાહના ૨, કાલ્પાવગાહના ૩, માવાવગાહના ૪। ઘૃ૦ ૩૭ ।

યેષ્ટિત હોતી હૈ, વા-ધરકે મીતર રહતી હૈ, યા અચ્છે—૨ વસ્ત્રોસે આચ્છાદિત રહતી હૈ અથવા—ગૃહ સ્વભાવવાલી હોતી હૈ । પેસી વહ સ્ત્રી ગુપ્તા સ્ત્રી હૈ ઓર વહ સ્ત્રી અનુચિત આચરણસે નિવર્તિત ઇન્દ્રિયવાલી હોતી હુઈ ગુપ્તેન્દ્રિયા કહી ગઈ હૈ । યહ પ્રથમ મત્ત હૈ, યાકી ત્રીન મત્ત ઉદ્ધાયિત કર હેના ચાહિયે । જૈસે—ગુપ્તા અગુપ્તેન્દ્રિયા ૨, અગુપ્તા ગુપ્તેન્દ્રિયા ૩ અગુપ્તા અગુપ્તેન્દ્રિયા ૪ ॥ સૂ૦ ૩૯ ॥

ઇન્દ્રિયા અવગાહનાવાલી હોતી હૈ, અતઃ—અથ સૂત્રકાર અવગાહના કા નિરૂપણ કરતે હૈ । “ચત્વરિહા ઓગાહના પળ્લન્તા” ઇત્યાદિ ।

પરિવેષિત પલ્લુ હોય છે અને બધે દાસવાળી પલ્લુ હોય છે તેમ કોઇ સ્ત્રી એવી હોય છે કે જે પરિવાર આદિથી વેષિત હોય છે, અથવા ધરની અદર રહે છે, અથવા સુરે સુરે વસ્ત્રોથી આપ્તહિત રહે છે અથવા ગૃહ સ્વભાવવાળી હોય છે એવી તે સ્ત્રી ગુપ્તા સ્ત્રી કહેવાય છે, અને તે સ્ત્રી અનુચિત આચરણ દ્વારા નિવર્તિત ઇન્દ્રિયોવાળી પલ્લુ બનેલી હોય તો તેને ગુપ્તેન્દ્રિયા પલ્લુ કહી શકાય છે આ ગુપ્તા ગુપ્તરૂપ પહેલો વિકલ્પ સમજવો, બાકીના જે ત્રણ ભાગાઓ છે તેમનો ભાવાય પલ્લુ આ પ્રથમ ભાગાને આધારે સમજી લેવો બીજો ભાગો—ગુપ્તા અગુપ્તેન્દ્રિયા, ત્રીજો ભાગો—અગુપ્તા ગુપ્તેન્દ્રિયા અને ચોથો ભાગો—અગુપ્તા અગુપ્તેન્દ્રિયા ॥ સૂ. ૩૯ ॥

ઇન્દ્રિયો અવગાહનાવાળી હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર અવગાહનાનું નિરૂપણ કરે છે । “ચત્વરિહા ઓગાહના પળ્લન્તા” ઇત્યાદિ—

ટીકા—“ ચતુર્વિદ્યા યોગાહના ” इत्यादि — अवगाहना — अवगाहन्ते-
आसते यत्र, अथवा-अवगाहन्ते-आश्रयन्ति जीवा यां सा अवगाहना-शरीरम्,
सा अवगाहना चतुर्विधा, प्रज्ञाः, तद्यथा-द्रव्यावगाहना-द्रव्यतोऽवगाहना-अन-
न्तद्रव्यरूपा १, क्षेत्रावगाहना-क्षेत्रतोऽवगाहनाऽसंख्येयप्रदेशावगाहना २, काला-
वगाहना-कालतोऽवगाहनाऽसंख्येयसमयस्थितिका ३, भावावगाहना-भावतोऽ-
वगाहना वर्णाद्यनन्तगुणरूपा ४ । सू. ३७ ॥

સૂત્રાર્થ-અવગાહના ચાર પ્રકારની કહી ગઈ છે, જैसे-દ્રવ્યાવગાહના ૧,
ક્ષેત્રાવગાહના ૨, કાલાવગાહના ૩, ભાવાવગાહના ૪ ।
ટીકાર્થ-જીવોંકા જિસમેં રહના હોતા હૈ, અથવા જીવ જિસકા આશ્રય કરતે
હૈ, વહ અવગાહના હૈ । અવગાહનાના તાત્પર્ય શરીર હૈ । યહ અવગાહના
દ્રવ્યાવગાહનાદિ એદોંસે ચાર પ્રકારસે વિભક્ત હૈ । ઉસકા સારાંચ એસા હૈ
કિ દ્રવ્યકો આશ્રિત કરકે જો અવગાહના હૈ વહ દ્રવ્યાવગાહના હૈ ૧ ।
ક્ષેત્રકો લેકર જો અવગાહના હૈ વહ ક્ષેત્રાવગાહના હૈ ૨ । કાલકો
આશ્રિત કરકે જો અવગાહના હૈ વહ કાલાવગાહના હૈ ૩ । ઓર ભાવકો
આશ્રિત કરકે જો અવગાહના હૈ વહ ભાવાવગાહના હૈ ૪ । દ્રવ્યાવ-
ગાહના અનન્ત દ્રવ્યરૂપ હોતી હૈ, ક્ષેત્રાવગાહના-અસંખ્યાત પ્રદેશાવગાહ
રૂપ હોતી હૈ । કાલાવગાહના-અસંખ્યાત સમયકી સ્થિતિરૂપ હૈ, ઓર
ભાવાવગાહના-વર્ણાદિ અનન્ત ગુણરૂપ હોતી હૈ ॥ સૂ. ૩૭ ॥

સૂત્રાર્થ-અવગાહના ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) દ્રવ્યાવગાહના, (૨) ક્ષેત્રાવ-
ગાહના, (૩) કાલાવગાહના અને (૪) ભાવાવગાહના

ટીકાર્થ—જીવોંતુ જેમાં રહેવાતુ થાય છે અથવા જીવોં જેનો આશ્રય
કરે છે તે અવગાહના છે અવગાહનાનો ભાવાર્થ શરીર છે. તે અવગાહનાના
દ્રવ્યાવગાહના આદિ જે ચાર ભેદ કહ્યા છે તેમતુ હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં
આવે છે—દ્રવ્યને આશ્રિત કરીને જે અવગાહના થાય છે તેને દ્રવ્યાવગાહના
કહે છે. ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ જે અવગાહના થાય છે તેને ક્ષેત્રાવગાહના કહે છે.
કાળની અપેક્ષાએ જે અવગાહના થાય છે તેને કાલાવગાહના કહે છે અને
ભાવની અપેક્ષાએ જે અવગાહના થાય છે તેને ભાવાવગાહના કહે છે. દ્રવ્યા-
વગાહના અનન્ત દ્રવ્યરૂપ હોય છે, કાલાવગાહના અસંખ્યાત સમયની સ્થિતિ
રૂપ હોય છે ક્ષેત્રાવગાહના અસંખ્યાત પ્રદેશાવગાહ રૂપ હોય છે, અને ભાવા-
વગાહના વર્ણાદિ અનન્ત ગુણરૂપ હોય છે. ॥ સૂ. ૩૭ ॥

પૂર્વમવગાહના નિરૂપિતા, સા ચ પ્રજ્ઞપ્તિયુ ભવતીતિ પ્રજ્ઞપ્તિસ્થાનકચતુષ્ટયે
નિરૂપયિતુમાર—

મૂલ્—ચત્તારિ પળ્લવ્વત્તીઓ અગધાહિરિયાઓ પળ્લવ્વત્તીઓ,
ત જહા ચ્દપળ્લવ્વત્તી ૧, સૂરપળ્લવ્વત્તી ૨, જલુહીવપળ્લવ્વત્તી ૩,
દીવસાગરપળ્લવ્વત્તી ૪ સૂ. ૩૮ ॥

છાયા—ચત્તાર પ્રજ્ઞપ્તયોઽજ્ઞાણાઃ પ્રજ્ઞપ્તા તથા ચન્દ્રપ્રજ્ઞપ્તિ ૧, સૂ
પ્રજ્ઞપ્તિઃ ૨, જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિઃ ૩, દ્વીપસાગરપ્રજ્ઞપ્તિ ૪ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

ટીકા—“ચત્તારિ પળ્લવ્વત્તીઓ” ઇત્યાદિ—અજ્ઞાણા—અજ્ઞાનિ—આચાર
જ્ઞાદીનિ, તેમ્નો વર્ધિર્મવા ધાણાઃ—અજ્ઞાણાઃ—આચારાજ્ઞાદિ પૃથગ્મૂતા, પ્રજ્ઞપ્ત-
પ્રજ્ઞાપ્ય-તે—પ્રકર્ષેજ શોષ્ય-તેઽર્થો યત્રેતિ પ્રજ્ઞપ્તય, યદ્વા જ્ઞપ્તિઃ—અર્થોનાં બોધ,
પ્રકૃષ્ટા જ્ઞપ્તિર્યત્ર તાઃ પ્રજ્ઞપ્તયઃ, તામ્બતસ—ચતુઃસમ્યક્ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—ચન્દ્રપ્ર-
જ્ઞપ્તિ—કાલિકશ્રુતરૂપા ૧, ‘સૂરપ્રજ્ઞપ્તિઃ, તથા જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિઃ’ इमे સ્ત્રીયા-

નિરૂપિત યહ અવગાહના પ્રજ્ઞપ્તિયોમેં હોતી હૈં । ઇસલીયે અય સૂત્રકર
ચાર પ્રજ્ઞપ્તિયોંકા નિરૂપણ કરતે હૈં । ‘ચત્તારિ પળ્લવ્વત્તીઓ’ ઇત્યાદિ ।

સૂત્રાર્થ—ચાર પ્રજ્ઞપ્તિયાં અજ્ઞાણા કહી ગઈ હૈં, જેસે—ચન્દ્ર પ્રજ્ઞપ્તિ ૧, સૂર
પ્રજ્ઞપ્તિ ૨, જમ્બૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ ૩ ઓર દ્વીપસાગર પ્રજ્ઞપ્તિ ૪ ।

ટીકાર્થ અજ્ઞાણાકા તાત્પર્ય હૈં જો આચારાજ્ઞાદિસે વાહિર હો-વે, વે પ્રજ્ઞપ્તિયાં
આચારાજ્ઞાદિ પૃથગ્મૂત કહી ગઈ હૈં । પ્રકર્ષ સ્વસે અર્થ-વદાર્થ જહાં જાનેં જાત
હૈં, વે પ્રજ્ઞપ્તિયાં હૈં । અથવા—પ્રકૃષ્ટ સ્વસે અર્થોંકા બોધ જહાંપરસે હો જાતા હૈં
વહ પ્રજ્ઞપ્તિ હૈં, વેસી પ્રજ્ઞપ્તિયાં ચાર જો કહી ગઈ હૈં ડનમેંસે ચન્દ્રપ્રજ્ઞપ્તિ
કાલિક શ્રુતરૂપ હૈં ૧ તથા—સૂર પ્રજ્ઞપ્તિ પ્રકીર્ણ સ્વ હૈં । જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ

આ અવગાહનાનું પ્રજ્ઞપ્તિમાં નિરૂપણ કરવામાં આ નું છે તેથી હવે
સૂત્રકર ચાર પ્રજ્ઞપ્તિઓનું નિરૂપણ કરે છે ‘ચત્તારિ પળ્લવ્વત્તીઓ’ ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—આ ચાર પ્રજ્ઞપ્તિઓને અગમ્યા કહી છે જેમકે (૧) ચન્દ્ર પ્રજ્ઞપ્તિ,
(૨) સૂર પ્રજ્ઞપ્તિ, (૩) જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ અને (૪) દ્વીપસાગરપ્રજ્ઞપ્તિ.

ટીકાર્થ—“અગમ્યા આ પદનો શાબ્દ” નીચે પ્રમાણે છે—આચારાંમ આદિ
અબોમાં જેમનો સમાવેશ થતો નથી એવી પ્રજ્ઞપ્તિઓને અગમ્યા પ્રજ્ઞપ્તિઓ
કહી છે ચન્દ્ર પ્રજ્ઞપ્તિ આદિ ચારને આચારાંનાદિથી પૃથગ્મૂત કહી છે અથવા
અર્થ—પદાર્થનો બોધ વ્યાપી પ્રકર્ષ રૂપે યામ છે તેનું નામ પ્રજ્ઞપ્તિ છે અર્થો
જે ચાર પ્રજ્ઞપ્તિઓ કહી છે તેમાંથી ચન્દ્રપ્રજ્ઞપ્તિ કાલિકશ્રુત રૂપ છે, તથા

ચતુર્થ્યો પશ્ચમ-પષ્ઠાઙ્ગયોરુપાઙ્ગભૂતે સ્તઃ, અપરે દ્વે તુ પ્રકોર્ણરૂપે ૩, દ્વીપસાગર-
પ્રજ્ઞપ્તિઃ । ૪ । વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિઃ પશ્ચમી વિધતે, સા ચાઙ્ગપ્રવિષ્ઠા, તેનાત્ર નોપા-
ત્તેતિ । સૂ ૩૮ ॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्गुह्य-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदश भाषाकलितललितकला-
पालापक-प्रविशुद्ध गङ्गपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक श्रीशाहूछत्र-
पति कोल्हापुर राजप्रदत्त ' जैन शास्त्राचार्य ' पद्मभूषित-कोल्हापु-
रराजगुरु वालप्रह्लाद-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री --
वासीलाल त्रतिविरचितायां स्थानाङ्गसूत्रस्य सुधाख्यायां
व्याख्यायाम् चतुर्थं स्थानस्य प्रथमोद्देशः समाप्त ॥ ४-१ ॥

और द्वीपसागरप्रज्ञप्ति ये दो प्रज्ञप्तियां पांचवे और छठे अङ्गके
(अङ्ग अर्थात्) उपाङ्ग हैं ।

यद्यपि-व्याख्याप्रज्ञप्तिभी पांचवी है, पर वह अङ्गप्रविष्ट है, इस-
लिये-उसका यहां ग्रहण नहीं हुवा है । प्रथम प्रज्ञप्ति-और द्वितीय
प्रज्ञप्ति ये दो प्रज्ञप्तियां प्रकीर्ण हैं । और तीसरी तथा चौथी प्रज्ञप्तियां
पांचवे-छठे अङ्गके उपाङ्ग रूप हैं ॥ सू ३८ ॥

श्री जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री वासीलाल त्रतिविरचित
स्थानाङ्गसूत्रकी सुधानामक टीकार्थके चौथे स्थान का प्रथम उद्देशक
समाप्त ॥ ४-१ ॥

- સૂત્રપ્રજ્ઞપ્તિ પ્રકીર્ણરૂપ છે જ'બુદ્ધીપ્રજ્ઞપ્તિ અને દ્વીપસાગર પ્રજ્ઞપ્તિ, એ બન્ને
પ્રજ્ઞપ્તિયો પાંચમાં અને છઠ્ઠા અંગના ઉપાંગરૂપ છે.

એ કે વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિ પણ પાંચમી છે, પણ તે અંગપ્રવિષ્ટ છે, તેથી
અહીં તેને ગ્રહણ કરવામાં આવી નથી. પ્રથમપ્રજ્ઞપ્તિ અને દ્વિતીયપ્રજ્ઞપ્તિ,
એ બે પ્રજ્ઞપ્તિયો પ્રકીર્ણ છે ત્રીજી અને ચોથી પ્રજ્ઞપ્તિ પાંચમાં અને છઠ્ઠા
અંગના ઉપાંગરૂપ છે. ॥ સૂ. ૩૮ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય-જૈન ધર્મ દિવાકર-પૂજ્ય શ્રી વાસીલાલ મુનિ વિરચિત સ્થાનાંગ
સૂત્રની ટીકાર્થના ચોથા સ્થાનકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥ ૪-૧ ॥

અથ ત્રિતીયોદેશ પ્રારંભતે

પૂર્વ ચતુઃસ્થાનકસ્ય પ્રથમોદેશો વ્યાખ્યાતઃ, સામ્પ્રત ત્રિતીયોદેશો વ્યાખ્યાતમારંભતે, તથા પૂર્વોદેશેન સહાસ્વાય સમ્મતઃ-અનન્તરોક્તોદેશ જીવાદિ દ્રવ્ય પર્યાયાણાં ચતુઃસ્થાનકમભિદિતમભાપિ વેપાભેન સવેષાભિધીયત, તથા પૂર્વસૂત્રેણ સ્વાયં સમ્મત્યઃ-અનન્તરસૂત્રે પ્રણયમ ઉક્તાઃ, સાધ્ય પ્રતિસલીનૈરેવ ધ્યાન્ય રિતિ પ્રતિસલીનોઽવધિપરીણાઽપ્રતિસલીનોઽથ નિરૂપયિતુ સૂત્રચતુષ્ટયમાહ—

મૂલ્ક-ચત્તારિ પદિસલીના વળ્લસા, ત જહા-કોહપદિસલીને
૧, માળપદિસલીને ૨, માયાપદિસલીને ૩, લોમપદિસલીને ૪ ॥૧૧॥

—: ચોથે સ્થાનકકા વૃત્તરા-ઉદ્દેશક :—

इस प्रकार चतुःस्थानकका प्रथम उद्देशक कहा । अब द्वितीय उद्देशक प्रारंभ होता है । इसका पूर्व उद्देशकके साथ ऐसा सम्मत्त है । अनन्तर उद्देशकमें जीवाविद्रव्य और उनकी पर्यायोका चतुःस्थानक कहा गया है सो यहाँ पर भी उन्हींका बड़ी कहा जावेगा । पूर्व सूत्रके साथ यहाँ ऐसा सम्मत्त है कि-अनन्तर सूत्रमें जो प्रशस्तियाँ कही गई हैं, वे प्रतिसलीनों द्वारा जानी जाती हैं । अतः-अब सूत्रकार प्रतिसलीनोंका और उनसे विपरीत अप्रतिसलीनोंका निरूपण चार सूत्रोंसे करते हैं । “ चत्वारि पदिसलीना वल्लसा ” इत्यादि—

ચોથા સ્થાનકનો બીજો ઉદ્દેશક—

ચતુઃસ્થાનના પહેલા ઉદ્દેશાની પ્રકૃષ્ણા પૂરી થઈ હવે સૂત્રકાર બીજા ઉદ્દેશાની પ્રકૃષ્ણાનો પ્રારંભ કરે છે પહેલા ઉદ્દેશ સાથે આ ઉદ્દેશનો આ પ્રકારનો સબંધ છે-પહેલા ઉદ્દેશમાં છવાઈ દ્રવ્ય અને તેમની પર્યાયોના આ સ્થાનકોની અપેક્ષાએ નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે આ ઉદ્દેશમાં પણ તેમનું જ આર આર સ્થાનકોને આધારે નિરૂપણ કરવામાં આવશે પૂર્વસૂત્ર સાથે અહીં આ પ્રકારનો સબંધ છે-પહેલા સૂત્રમાં પ્રતિસલીનો નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું તે પ્રશસ્તિઓ પ્રતિસલીનો દ્વારા જણી શકાય છે તેથી હવે સૂત્રકાર પ્રતિસલીનોના વધુ વધુ તેમનાથી વિપરીત બીજાં અપ્રતિસલીનોના આર સૂત્રો દ્વારા નિરૂપણ કરે છે “ ચત્તારિ પદિસલીના વળ્લસા ” ઇત્યાદિ—

ચત્તારિ અપડિસંલીના પળ્લન્તા, તં જહા-કોહઅપડિસંલીને
જાવ લોભઅપડિસંલીને । ૨ ॥

ચત્તારિ પડિસંલીના પળ્લન્તા, તં જહા-મળપડિસંલીને ૧,
વાઇપડિસંલીને ૨, કાયપડિસંલીને ૩, ઇન્દિયપડિસંલીને ૪।૩॥

ચત્તારિ અપડિસંલીના પળ્લન્તા, તં જહા-મળઅપડિસંલીને
૧, જાવ ઇન્દિયઅપડિસંલીને ૪। ૪। ॥ સૂ० ૩૯ ॥

છાયા—વત્ત્વારઃ પ્રતિસંલીનાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા—ક્રોધપ્રતિસંલીનઃ ૧, માન-
પ્રતિસંલીનઃ ૨, માયાપ્રતિસંલીનઃ ૩, લોભપ્રતિસંલીનઃ ૪ । ૧ ।

ચત્ત્વારોઽપ્રતિસંલીનાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા—ક્રોધાપ્રતિસંલીનઃ યાવત્ લોભા
પ્રતિસંલીનઃ ૪ । ૨ ।

ચત્ત્વારઃ પ્રતિસંલીનાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા—મનઃપ્રતિસંલીનઃ ૧, વાક્પ્રતિસંલીનઃ
૨, કાયપ્રતિસંલીનઃ ૩, ઇન્દ્રિયપ્રતિસંલીનઃ । ૪ । ૩ ।

ચત્ત્વારોઽપ્રતિસંલીનાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા—મનોઽપ્રતિસંલીનઃ યાવત્ ઇન્દ્રિયા-
પ્રતિસંલીનઃ ૪ । ૪ । સૂ० ૩૯ ।

સૂત્રાર્થ—ચાર પ્રતિસંલીન કહે ગયે હૈં, જૈસે—ક્રોધ પ્રતિસંલીન ૧, માન
પ્રતિસંલીન ૨, માયા પ્રતિસંલીન ૩, ઓર લોભ પ્રતિસંલીન ૪ ।

ચાર અપ્રતિસંલીન કહે ગયે હૈં, જૈસે—ક્રોધ અપ્રતિસંલીન ૧ યાવત્
લોભ અપ્રતિસંલીન ૪ । હસ પ્રકારસે ખી ચાર પ્રતિસંલીન કહે ગયે હૈં,
જૈસે—મનઃ પ્રતિસંલીન ૧, વચન પ્રતિસંલીન ૨, કાય પ્રતિસંલીન ૩,
ઓર ઇન્દ્રિય પ્રતિસંલીન ૪ । ચાર હસ પ્રકારસે ખી અપ્રતિસંલીન કહે
હૈં, જૈસે—મનોઽપ્રતિસંલીન ૧, યાવત્ ઇન્દ્રિય અપ્રતિસંલીન ૪ ।

ચાર પ્રકારના પ્રતિસંલીનો કહ્યા છે—(૧) ક્રોધ પ્રતિસંલીન, (૨) માન
પ્રતિસંલીન, (૩) માયા પ્રતિસંલીન અને (૪) લોભ પ્રતિસંલીન એ જ પ્રમાણે
ચાર પ્રકારના અપ્રતિસંલીનો કહ્યા છે—(૧) ક્રોધ અપ્રતિસંલીન, (૨) માન
અપ્રતિસંલીન, (૩) માયા અપ્રતિસંલીન અને (૪) લોભ અપ્રતિસંલીન. આ
પ્રકારે યજ્ઞ ચાર પ્રતિસંલીન કહ્યા છે—(૧) મન પ્રતિસંલીન, (૨) વાક્ પ્રતિ-
સંલીન, (૩) કાય પ્રતિસંલીન અને (૪) ઇન્દ્રિય પ્રતિસંલીન એ જ પ્રમાણે
ચાર પ્રકારના અસંલીન નીચે પ્રમાણે કહ્યા છે—(૧) મન અપ્રતિસંલીન આદિ
ઇન્દ્રિય અપ્રતિસંલીન

ટીકા—“ ચતારિ પઢિસલીના ” इत्यादि—प्रतिसलीनाः-प्रति-वस्तु वस्तु प्रतिसलीना =आत्मसगोपकाः प्रतिसलीनाः, ते चत्वारः प्रज्ञाः, तद्यथा-क्रोधप्रतिसलीन-क्रोधं प्रति उदयनिरोधेनोदयविफलीकरणेन च प्रतिसलीनः क्रोधप्रतिसलीन उक्त च—

“ उदयस्तेषां निरोधो उदयपक्षाण वाऽफलीकरणं ।

अं एष कषायसलीनता एता । १ । ”

छाया—“ उदयस्यैव निरोध उदयपक्षाणा वाऽफलीकरणम् ।

यद्यप कषायाणा कषायसलीनता । १ ”

एवं मानादिष्वपि विज्ञेयम् ।

“ चतारि अपઢિસલીના ” इत्यादि — अप्रतिसलीनाश्चत्वारः प्रज्ञाः, तद्यथा-क्रोधाप्रतिसलीन-क्रोधं प्रति अप्रतिसलीनः-सम्यक्निरोधरहितः १, एवं मानादिष्वपि विज्ञेयम् । २ ।

ટીકાર્થ—હર એક વસ્તુકે પ્રતિ જો આત્મસગોપક હોતેહैं, તે પ્રતિસલીન હैं । ये प्रतिसलीन जो क्रोधं प्रतिमलीन आदिके भेदसे चार कहे गये हैं उनका अमिप्राय ऐसा है—जो उदित हुये क्रोधको विफल कर देते हैं या उसके उदयका निरोध कर देते हैं, ये क्रोध प्रतिसलीन हैं । कहामी है

“ उदयस्तेषां निरोधो ” इत्यादि ।

કષાયોંકે ઉદયકા નિરોધ કરના અથવા-ઉદય પ્રાપ્ત કષાયોંકો વિફલ કરના યહ કષાય સલીનતા હૈ । इस तरहका कथन मान आदि क्रोमें भी समझ लेना चाहिये । चतारि अपઢિસલીના-इत्यादि । क्रोध अप्रतिमलीन आदिके भेदसे जो अप्रतिसलीन चार प्रकारके कहे गये हैं, उनका तात्पर्य ऐसा है—ये क्रोध अप्रतिसलीन हैं, इसी तरहका कथन मान आदिकोमें भी जानना चाहिये ।

ટીકાર્થ—એક વસ્તુ પ્રત્યેથી આત્માને વાળી લેનારને પ્રતિસલીન કહે છે જે માણસ ઈચ્છિત વ્યવેશ ક્રોધને વિદેશ કરી નાખે છે અથવા તેના ઉદયનો નિરોધ કરી નાખે છે તેને ક્રોધ પ્રતિસલીન કહે છે કહ્યું પણ છે કે—
“ ઉદયસ્તેષાં નિરોધો ઇત્યાદિ—કષાયોના ઉદયનો નિરોધ કરવો અથવા ઉદય પ્રાપ્ત કષાયોને વિદેશ કરવા તેનું નામ કષાય સલીનતા છે આ પ્રકરણ કથન માન, માયા અને લોકા વિષે પણ સમજવું

ચતારિ અપઢિસલીના ” ઇત્યાદિ. અપ્રતિસલીનતા-ક્રોધ અપ્રતિસલીન આદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે ઉદય પ્રાપ્ત ક્રોધનો નિરોધ નહીં કરનારને ક્રોધ અપ્રતિસલીન કહે છે જે જ પ્રમાણે બાહ્યના ત્રણ અપ્રતિસલીનનો સાવાઈ પણ બાકે જ સમજ લેવો.

“ ચત્તારિ પઢિસંલીના ” इत्यादि—पुनः प्रतिसंलीनाश्चत्वारः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-मनःप्रतिसंलीनः-कुशलमनस उदीरणेन अकुशलमनसो निग्रहेण च प्रतिसंलीन-संनिरुद्धं मनः-चित्तं यस्य स तथा । एवं वाक्काययोरपि बोध्यम् । तथा-इन्द्रियप्रतिसंलीनो-मनोज्ञमनोज्ञशब्दादिविषयेषु रागद्वेषनिवारकः, उक्तं च—

“ अपसत्थाण निरोहो जोगाणमुदीरणं च कुसलाणं ।

कज्जंमि य विही गमणं जोगे संलीणया भणिया । १ । ”

सदेसु य भद्दयपावएसु सोयविसमुवागएसु ।

तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥ २ ॥ ”

छाया—“ अप्रशस्तानां निरोधो योगानामुदीरणं च कुशलानाम् ।

कार्ये च विधिना गमनं योगे संलीनता भणिता । १ ।

शब्देषु भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।

तुष्टेन वा रुष्टेन वा श्रमणेन सदा न भवितव्यम् । २ । ” इति,

૩। एवं શેષેન્દ્રિયેષ્વપિ પ્રતિસંલીનતા વોધ્યા ।

“ ચત્તારિ પઢિસંલીના ” इत्यादि—

પુનઃ પ્રતિસંલીન જો મનઃ પ્રતિસંલીન આદિકે ભેદસે ચાર કહે ગયે હૈ, ડનકા અભિપ્રાય એસા હૈ કિ કુશલ મનકે ડદીરણસે ઓર અકુશલ મનકે નિગ્રહસે જિસને અપને મનકો પ્રતિસંલીન કર લિયા (રોકદિયા) હૈ વહ “ પ્રતિસંલીન મનાઃ ” હૈ । ઇસી તરહસે વચન ઓર કાયકે સમ્બન્ધમેં ભી જાનના ચાહિયે । તથા ઇન્દ્રિયસંલીન વહ હૈ જો મનોજ્ઞ ઓર અમનોજ્ઞ શબ્દાદિ વિષયોમેં રાગ-દ્વેષકા નિવારક હોતા હૈ । કહાભી હૈ “ અપસત્થાણ નિરોહો ” इत्यादि । ઇસી પ્રકારસે શેષ ઇન્દ્રિયોમેં ભી પ્રતિસંલીનતાકી વ્યારુધા કર લેની ચાહિયે ।

‘ ચત્તારિ પઢિસંલીના ’ इत्यादि—प्रतिसंलीनना मनः प्रतिसंलीन आदि जे चार बेद कहे छे तेनुं स्फुटीकरण-कुशल मनना उदीरणथी अने अकुशल मनना निग्रहथी जेले पोताना मनने प्रतिसंलीन करी दीधुं छे, तेने ‘ प्रतिसंलीनमनाः ’ कहे छे. जे ज प्रमाणे वचन अने कायने विषे पणु समजवुं इन्द्रिय प्रतिसंलीन जे छे ते जे मनोज्ञ अने अमनोज्ञ शब्दादि विषयोभां राग द्वेषनो निवारक होय छे कहुं पणु छे ते—“ अपसत्थाणनिरोहो ” इत्यादि.

जे ज प्रमाणे णाडीनी इन्द्रियोभां पणु प्रतिसंलीनतानी

“ચત્તારિ અપહિસલીના” इत्यादि—अप्रतिसलीनामत्वारः प्रकृताः तदभा-
मनोऽप्रतिसलीनः—मनःसम्पद् निरोधरहितः । एष वाक्यायेन्द्रियेष्वपि शान्त्यम् ।
॥ सू० ३९ ॥

પૂર્વમપ્રતિસલીનાઃ પ્રોક્તાઃ, સ્તુ દીન એ મરતીતિ દીનં ચતુર્મઙ્ગણા નિરુપવર
સપ્તશ્વસ્રીમાદ—

મૂલ્ય—ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્ળત્તા, ત જહા—દીળ નામ
મેગે દીળે ૧, દીળે નામમેગે અદીળે ૨, અદીળે નામમેગે દીળે
૩, અદીળે નામમેગે અદીળે ૪ । ૧ ।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્ળત્તા, ત જહા—દીળે નામમેગે દીળ
પરિળતે ૧, દીળે નામમેગે અદીળપરિળતે ૨, અદીળે નામમેગે
દીળપરિળતે ૩, અદીળે નામમેગે અદીળપરિળતે । ૪ । ૨ ।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્ળત્તા, ત જહા—દીળે નામમેગે દીળ
રૂવે ૧, હ ૧૪ । ૩ । એવ દીળમળે ૪, ૪, દીળસકવ્યે ૪, ૫, દીળ
પન્ને ૪, ૬, દીળદિટ્ટી ૪, ૭, દીળસીલાયારે ૪, ૮, દીળવવહારે ૪, ૯ ।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્ળત્તા, ત જહા—દીળે નામમેગે દીળ

“ચત્તારિ અપહિસલીના” इत्यादि । यहाँ जो पुनः मनो प्रतिसलीन
आदि के भेदसे चार अप्रतिसलीन कहे गये हैं । उनका तात्पर्य ऐसा है जो
मनको सम्पद् प्रकारसे निरोध करनेसे रहित है, यह मनः अप्रति
सलीन है इसी तरहका कथन वाक्-काय एवम् इन्द्रियोंके निरोध
सम्पन्नमें भी कर लेना चाहिये ॥ सू० ३९ ॥

તેવી. “ચત્તારિ અપહિસલીના” ઇત્યાદિ—અપ્રતિસલીનના મના અપ્રતિસલીન
આદિ ચાર ભેદ કહ્યા છે, તે ચાર ભેદનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—

જે મનને સમ્પદ પ્રકારે નિર્લાય (નિબદ્ધ) કરવાથી રહિત હોય છે,
તેને મના અપ્રતિસલીન કહે છે જે ૪ પ્રકારનું કથન વાક્ય કાય અને ઇન્દ્રિ
યોના નિર્લાય વિશે પણ સમાલ તેનું બોધબે. ॥ સૂ. ૩૬ ॥

પરક્રમે, દીણે ણામમેગે અદીણ ૦ હ ૧૪। ૧૦, એવં સવ્વેસિં ચડ-
ભંગો ભાણિયવ્વો,

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, તં જહા દીણે ણામમેગે દીણ-
વિત્તી ૪, ૧૧, એવં દીણજાઈ ૧૨, દીણભાસી ૧૩, દીણોભાસી ૧૪,

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, તં જહા—દીણે ણામમેગે
દીણસેવી હ ૧૪। ૧૫, દીણે ણામમેગે દીણપરિયા ૧૬, દીણે
ણામમેગે દીણ પરિયાલે હ ૧૪। ૧૭ સવ્વત્થ ચડભંગો ॥ સૂ ૪૦ ॥

છાયા—ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—દીનો નામૈકો દીનઃ ૧,
દીનો નામૈકોડદીનઃ ૨, અદીનો નામૈકો દીનઃ ૩, અદીનો નામૈકોડદીનઃ ૪, ૧।

ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—દીનો નામૈકો દીનારિણતઃ ૧,
દીનો નામૈકોડદીનપરિણતઃ ૨, અદીનો નામૈકો દીનપરિણતઃ ૩. અદીનો નામૈ-
કોડદીનપરિણતઃ ૪। ૨।

ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—દીનો નામૈકો દીનરૂપઃ હ (૪) ૩,

જો અપ્રતિસંલીન કહા ગયા હૈ, વહ તો દીનહી હોતા હૈ અતઃ અવ
સૂત્રકાર ચતુર્ભેદી દ્વારા દીનકા નિરૂપણ કરને નિમિત્ત ૧૭ સૂત્રોંકા
કથન કરતે હૈં । “ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—પુરુષ ચાર કહે ગયેહૈં । દીન દીન ૧, દીન અદીન ૨, અદીન દીન ૩,
ઔર અદીન અદીન ૪—૧ । પુરુષજાત ચાર હૈં । દીન દીનપરિણત ૧,
દીન અદીનપરિણત ૨, અદીન દીનપરિણત ૩, અદીન અદીનપરિણત ૪ ૨ ।
પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં । દીન દીનરૂપ ૧, દીન અદીનરૂપ ૨, અદીન

પહેલાના સૂત્રમા જે અપ્રતિસંલીન કહેવામા આવ્યા, તે તો દીન જ હોય
છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ચતુર્ભેદી દ્વારા દીનનું નિરૂપણ કરવા માટે ૧૭ સૂત્રોનું
કથન કરે છે. “ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન, (૨) દીન અદીન, (૩)
અદીન દીન અને (૪) અદીન અદીન । ૧ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—
(૧) દીન દીન પરિણત, (૨) દીન અદીન પરિણત, (૩) અદીન દીન પરિણત
અને (૪) અદીન અદીન પરિણત । ૨ ।

પર દીનમનાઃ ૪, ૪, દીનસકલ્પઃ ૪, ૫, દીનપદ્મઃ ૪, ૬, દીનદષ્ટિઃ ૪, ૭, દીનશીલાચારઃ ૪, ૮, દીનવ્યવહારઃ ૪, ૯,

દીનરૂપ ૩ ઓર અદીન અદીનરૂપ ૪ ૩ । ચાર પુરુષજાત હૈં—દીન દીનમન ઘાલા ૧, દીન અદીન મનવાલા ૨, અદીન દીન મનવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન મનવાલા ૪-૪ । પુરુષજાત ચાર હૈં । દીન દીન સકલ્પવાલા ૧, દીન અદીન સકલ્પવાલા ૨, અદીન દીન સકલ્પવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન સકલ્પવાલા ૪-૫ । પુરુષજાત ચાર હૈં । દીન દીન પ્રજ્ઞાવાલા ૧, દીન અદીન પ્રજ્ઞાવાલા ૨, અદીન દીન પ્રજ્ઞાવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન પ્રજ્ઞાવાલા ૪-૬ । પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં । દીન દીન દષ્ટિવાલા ૧, દીન અદીન દષ્ટિવાલા ૨, અદીન દીન દષ્ટિવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન દષ્ટિવાલા ૪-૭ । પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં । દીન દીન શીલાચાર ઘાલા ૧, દીન અદીન શીલાચારવાલા ૨, અદીન દીન શીલાચારવાલા ૩, ઓર અદીન અદીન શીલાચારવાલા ૪-૮ । પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં । દીન દીન વ્યવહારવાલા ૧, દીન અદીન વ્યવહારવાલા ૨, અદીન દીન વ્યવહારવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન વ્યવહારવાલા ૪-૯ । પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં । દીન દીન પરાક્રમવાલા ૧, દીન અદીન પરાક્રમવાલા

પુરુષજાત ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) દીન દીનરૂપ, (૨) દીન અદીનરૂપ, (૩) અદીન દીનરૂપ અને (૪) અદીન અદીનરૂપ । ૩ । પુરુષજાત ચાર કહી છે—(૧) દીન દીન મનવાળો, (૨) દીન અદીન મનવાળો, (૩) અદીન દીન મનવાળો અને (૪) અદીન અદીન મનવાળો । ૪ ।

ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—દીન દીન સકલ્પવાળો, (૨) દીન અદીન સકલ્પવાળો, (૩) અદીન દીન સકલ્પવાળો અને (૪) અદીન અદીન સકલ્પવાળો । ૫ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન પ્રજ્ઞાવાળો, (૨) દીન અદીન પ્રજ્ઞાવાળો, (૩) અદીન દીન પ્રજ્ઞાવાળો અને (૪) અદીન અદીન પ્રજ્ઞાવાળો । ૬ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન દષ્ટિવાળો, (૨) દીન અદીન દષ્ટિવાળો, (૩) અદીન દીન દષ્ટિવાળો અને (૪) અદીન અદીન દષ્ટિવાળો । ૭ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન શીલાચારવાળો, (૨) દીન અદીન શીલાચારવાળો, (૩) અદીન દીન શીલાચારવાળો અને (૪) અદીન અદીન શીલાચારવાળો । ૮ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન વ્યવહારવાળો, (૨) દીન અદીન વ્યવહારવાળો, (૩) અદીન દીન વ્યવહારવાળો અને (૪) અદીન અદીન વ્યવહારવાળો । ૯ । ચાર પ્રકારના

ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—દીનો નામૈકો દીનપરાક્રમઃ, દીનો નામૈકોડદીનપરાક્રમઃ ૬ (૪) ૧૦, એવં સર્વેષાં ચતુર્મઙ્ગી મણિતવ્યા,

ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—દીનો નામૈકો દીનવૃત્તિઃ ૪, ૧૧, એવં દીનજાતિઃ ૧૨, દીનભાષી ૧૩, દીનાવભાષી (પી) ૧૪,

ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—દીનો નામૈકો દીનસેવી ૬ (૪) ૧૫, એવં દીનો નામૈકો દીનપર્યાયઃ ૧૬, દીનો નામૈકો દીનપરિવારઃ ૬ (૪) ૧૭ સર્વત્ર ચતુર્મઙ્ગી । સૂ ૪૦ ।

૨, અદીન દીન પરાક્રમવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન પરાક્રમવાલા ૪ ૧૦ પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં । દીન દીન વૃત્તિવાલા ૧, દીન અદીન વૃત્તિવાલા ૨, અદીન દીન વૃત્તિવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન વૃત્તિવાલા ૪-૧૧ પુરુષજાત ચાર હૈં । દીન દીન જાતિવાલા ૧, દીન અદીન જાતિવાલા ૨, અદીન દીન જાતિવાલા ૩ ઓર અદીન અદીન જાતિવાલા ૪-૧૨ । પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં । દીન દીનભાષી ૧, દીન અદીનભાષી ૨, અદીન દીનભાષી ૩ ઓર અદીન અદીનભાષી ૪-૧૩ । પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં—દીન દીનાડવભાષી-૧ દીન અદીનાવભાષી-૨ અદીન દીનાડવભાષી-૩ ઓર અદીન અદીનાડવભાષી-૪-૧૪ પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં—દીન દીનસેવી-૧ દીન અદીનસેવી-૨ અદીન દીનસેવી-૩ ઓર અદીન અદીનસેવી-૪, ૧૫, પુરુષ જાતિ ચાર કહે ગયે હૈં—

પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન પરાક્રમવાળો, (૨) દીન અદીન પરાક્રમવાળો, (૩) અદીન દીન પરાક્રમવાળો, (૪) અદીન દીન પરાક્રમવાળો અને (૪) અદીન અદીન પરાક્રમવાળો । ૧૦ ।

ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન વૃત્તિવાળો, (૨) દીન અદીન વૃત્તિવાળો, (૩) અદીન દીન વૃત્તિવાળો, અને (૪) અદીન અદીન વૃત્તિવાળો । ૧૧ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન જાતિવાળો, (૨) દીન અદીન જાતિવાળો, (૩) અદીન દીન જાતિવાળો અને (૪) અદીન અદીન જાતિવાળો । ૧૨ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન ભાષી, (૨) દીન અદીન ભાષી, (૩) અદીન દીન ભાષી અને (૪) અદીન અદીન ભાષી । ૧૩ । ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીનાવભાષી, (૨) દીન અદીનાવભાષી, (૩) અદીન દીનાવભાષી અને (૪) અદીન અદીનાવભાષી । ૧૪ ।

ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન સેવી, (૨) દીન અદીન સેવી, (૩) અદીન દીન સેવી અને (૪) અદીન અદીન સેવી । ૧૫ ।

ટીકા—“ ચત્વારિ પુરિસજાયા ” ક્યાલિ—ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ—પુરુષ પ્રકારાઃ, પ્રજ્ઞા, સઘયા—અર્થ—કશ્ચિત્ પુરુષો દીન—પૂર્વે દૈયવાન્, ઉપાર્જિત ધનાદેઃ સ્ત્રીજાતિ પદ્માદિપિ દીનઃ, પુનર્ધનાધાગમામાવાત્, યદ્વા—દીનો શરિર્હિંસ્યા નિસ્તેજશરીરત્વાત્, સ પુનર્દીનોઽન્તર્વૃત્તયા કલુપિતચિત્તવૃત્તિભ્રતાત્, इति प्रथमो मङ्गः १।

દીન દીન પર્યાય-૧ દીન અદીન પર્યાય-૨ અદીન દીન પર્યાય-૩ અદીન અદીન પર્યાય-૪, ૧૬ પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હે—દીન દીન પરિવાર-૧ દીન અદીન પરિવાર-૨ અદીન દીન પરિવાર-૩ ઓર—અદીન અદીન પરિવાર-૪, ૧૬ યહ ચાલીસર્વા સૂત્ર હે હસકે અન્ત મંત્ર યે-૧૭ સૂત્ર હે, इनके द्वारा जो सत्रह चतुर्भङ्गी प्रतिपादित की गई है उस-प्रत्येक का भाव इस प्रकारसे है—

પુરુષ જાત કા તાત્પર્ય પુરુષ પ્રકારસે હે, હસ પ્રકાર મેં કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હે જો પહિછે કે ઉપાર્જિત ધન કે ક્ષય સે દીન હો જાતા હે ઓર—પદ્માત્ મી ધનાદિ કે અમાય સે દીન હી બના રહતા હે અથવા—નિસ્તેજ શરીર ચાલા હોને કે કારણ કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હે—જો પહિર્હૃત્તિ સે મી દીન હોતા હે ઓર—અન્તઃસૃત્તિ સે મી કલુપિત ચિત્ત વૃત્તિવાલા હોને કે કારણ દીન બના રહતા હે, એસા યહ-૧ મંત્ર હે । तथा—कोई एक दूसरा पुरुष ऐसा भी होता है जो

આ પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન પર્યાય, (૨) દીન અદીન પર્યાય, (૩) અદીન દીન પર્યાય અને (૪) અદીન અદીન પર્યાય । ૧૬ ।

આ પ્રકારના પુરુષ કહ્યા છે—(૧) દીન દીન પરિવાર, (૨) દીન અદીન પરિવાર, (૩) અદીન દીન પરિવાર અને (૪) અદીન અદીન પરિવાર । ૧૭ ।

આ ૪૦ માં સૂત્રમાં જે ૧૭ સૂત્રો આપ્યા છે, તેમાં ૧૭ ચતુર્ભંગી આપી છે તેમનું કહે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવી છે—

પુરુષજાત જોડેલે પુરુષના પ્રકારો તે પ્રકારો અહીં ૧૭ સૂત્રો અને ૧૭ ચતુર્ભંગીઓ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આયા છે (૧) કોઈ જોડે પુરુષ જોડે દોષ છે કે જે ઉપાર્જિત ધનના યુગમી દીન થઈ ગયો દોષ છે, અને ત્યાર બાદ પણ ધનાદિના અભાવે દીન હસામાં જ રહે છે અથવા—નિસ્તેજ શરીર વાળો દોષને કારણે કોઈ માણસ જડિયુત્તિની અપેક્ષાએ પણ દીન દોષ છે અને કલુપિત ચિત્તવાળો દોષને કારણે અન્તઃસૃત્તિની અપેક્ષાએ પણ દીન દોષ છે

તથા-૧કઃ-કશ્ચિત્ પૂર્વ દીનઃ, જન્મનો દરિદ્રતાત્ પશ્ચાદ્ અદીનઃ, સમુપાર્જિતસમ્પત્તિક્તવાત્, યદ્વા-દીનઃ, વહિર્વૃત્ત્યા મ્લાનમુલયુક્તવાત્ અદીનઃ અન્તર્વૃત્ત્યા ઔદાર્યાદિગુણવત્તવાત્, ઇતિ દ્વિતીયો ભક્તઃ । ૧ ।

તથા-૧કઃ-અપરઃ પુરુષઃ પૂર્વમ્ અદીનઃ, સમ્પત્ત્યાદિશાલિતવાત્, પશ્ચાદ્ દીનો વિનષ્ટસમ્પત્ત્યાદિતવાત્, યદ્વા-દીનઃ, વહિર્વૃત્ત્યા સુન્દરાઽઽકારત્વાત્, દીનઃ, અન્તર્વૃત્ત્યા કલુષિતચિત્તવાત્, ઇતિ તૃતીયો ભક્તઃ । ૩ ।

તથા-૧કઃ-કશ્ચિત્ પુરુષઃ પૂર્વમ્ અદીનઃ, ધનાદિસમ્પન્નત્વાત્, પશ્ચાદપિ અદીનઃ, તદ્વૃદ્ધિમત્તવાત્, યદ્વા-અદીનઃ, વહિર્વૃત્ત્યા હૃષ્ટપુણ્ણરીરત્વાત્, પુનરપ્યદીનઃ અન્તર્વૃત્ત્યા પ્રશસ્તભાવત્તવાત્, ઇતિ ચતુર્થો ભક્તઃ ૪૧૧ ।

જન્મ સે દરિદ્ર હોને કે કારણ પહેલે તો-દીન હોતા હૈ પશ્ચાત્ અપને પુરુષાર્થ સે અર્જિત સમ્પત્તિ વાલા હો જાને સે દીન નહીં રહતા હૈ, અથવા-મ્લાન મુલ્લ સે યુક્ત હોને કે કારણ કોઈ એક મનુષ્ય વહિર્વૃત્તિ સે તો દીન હોતા હૈ, ઔર ઔદાર્ય આદિ ગુણો સે યુક્ત હોને કે કારણ અન્તર્વૃત્તિ સે અદીન હોતા હૈ. એસા યહ-દ્વિતીય ભક્ત હૈ । તથા-કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો-સમ્પત્તિ આદિ સે યુક્ત હોને કે કારણ પહેલે અદીન હોતા હૈ ઔર-પશ્ચાત્ વિનષ્ટ સમ્પત્તિવાલા હો જાને સે દીન હો જાતા હૈ, અથવા-બાહર મેં સુન્દરાકાર વાલા હોને સે કોઈ એક પુરુષ પહેલે અદીન હોતા હૈ ઔર બાદ મેં કલુષિત ચિત્તવૃત્તિવાલા હોને કે કારણ અન્તરજ્ઞ સે દીન હોતા હૈ એસા યહ તૃતીય ભક્ત હૈ-૩ । તથા-કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો-પહેલે ભી ધનાદિ સમ્પન્ન હોને કે

બીજે ભાગો-કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે જન્મથી દરિદ્ર હોવાને કારણે પહેલાં તો દીન હોય છે, પણ પાછળથી પુરુષાર્થ દ્વારા ધનાપાજ્ઞન કરવાને કારણે દીન રહેતો નથી અથવા મ્લાન મુખાકૃતિથી યુક્ત હોવાને કારણે કોઈ એક પુરુષ બાહ્યવૃત્તિથી તો દીન લાગતો હોય છે, પણ ઔદાર્ય આદિ ગુણોથી યુક્ત હોવાને લીધે અન્તર્વૃત્તિથી અદીન હોય છે

ત્રીજે ભાગો-કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે સંપત્તિશાળી હોવાને કારણે પહેલાં તો અદીન હોય છે, પણ પાછળથી તેની સંપત્તિનો નાશ થઈ જવાથી દીન અવસ્થાવાળો થઈ ગયો હોય છે. અથવા સુદર મુખાકૃતિ આદિને કારણે કોઈ માણસ બાહ્યદૃષ્ટિએ ભેતાં તો અદીન લાગે છે, પણ કલુષિત ચિત્તવાળો હોવાને લીધે અન્તર્વૃત્તિથી દીન હોય છે

ચોથો ભાગો-કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પહેલાં પણ ધનાદિથી સંપન્ન હોવાને કારણે અદીન હોય છે અને ત્યારબાદ ધનાદિની

“ સ્વારિ ” ઇત્યાદિ-વસ્વારિ પુરુષપ્રાતાનિ-ચત્વારઃ પુરુષપ્રહારાઃ, પ્રજ્ઞાનિ, સ્વપ્ના-દીનો નામૈકો દીનપરિણતઃ, દીનો જાત્યાદિદીનઃ, દીનપરિણતઃ-દીનત્વેન પરિણતઃ હિંસાદિકર્મકારિત્વાત્, ઇતિ પ્રથમો મજ્ઞઃ। એવં ચતુર્મજ્ઞી વિદ્યેયામ્।

અનયા રીત્યા રૂપ મનઃ સકલ્ય પ્રજ્ઞા દષ્ટિ શીલાસ્વાચાર વ્યવહાર-પરાક્રમ-વૃષ્ટિ-જાતિ માધ્ય-માસિ સેવિ પર્યાય પરિવારેતિચન્દ્રાનાં દીનશબ્દેન સયોમનેન પ્રત્યેકે ચતુર્મજ્ઞી ઓધ્યા। એવાં કયાક્યાસ્થૈવ ચતુર્થેસ્થાનસ્ય પ્રથમોદેશે દ્વિતીયદેશે ત્રિતીયદેશે ચિત્તોક્ત્રીયા। સુ. ૪૦।

કારણ અદીન હોતા હૈ ઓર-ગમ્યાત્ મી ધનાદિ કી વૃદ્ધિ હો જાને કે કારણ અદીન પના રહતા હૈ-૪ એસા વહ ચોપા મજ્ઞ હૈ। વહ પ્રથમ સૂત્રગત મજ્ઞ ચતુષ્ઠય કા ભાગ હૈ-દ્વિતીય સૂત્રગત જો-મજ્ઞ ચતુષ્ઠય હૈ ઠસકા ભાગ હસ પ્રકાર સે હૈ-કોઈ પદ પુરુષ એસા હોતા હૈ જો-જાત્યાદિ સે પહેલે સે હી દીન દીન હોતા હૈ ઓર વાદ મેં મી હિંસ કાર્યકારી હો જાને સે દીનતા સે પરિણત હો જાતા હૈ એસા વહ-પ્રથમ મજ્ઞ હૈ-૧ હસી પ્રકાર સે હસ સૂત્ર કે અવશિષ્ટ ત્રીન મજ્ઞ મી અપને જાપ સમજના ચાહિયે-૪। હસી રીતિ સે રૂપ-મન-સકલ્ય-પ્રજ્ઞા-દષ્ટિ-શીલાચાર-વ્યવહાર-પરાક્રમ-વૃષ્ટિ-જાતિ-માધી-અજમાપી-સેવી-પર્યાય ઓર-પરિવાર इन शब्दों को द्वािन शब्द के साथ जोड़

વૃદ્ધિ થવાને કારણે અદીન જ રહે છે અથવા ધન રૂપાદિતિ આદિને કારણે બ્રાહ્મવૃત્તિથી પણ અદીન હોય છે અને ઓધાય' આદિ યુક્તોથી યુક્ત હોવાને કારણે અન્તર્વૃત્તિથી પણ અદીન જ હોય છે આ રીતે પહેલા સૂત્રના ચાર વિકલ્પોના ભાવાર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે.

બીજા સૂત્રના ચાર ભાગ્યોના ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) “ દીન દીન પરિણત ” કોઈ જોઈ પુરુષ જોવો હોય છે કે જે બલિ આદિની અપેક્ષાએ પહેલાં પણ દીન હોય છે અને ત્યારબાદ હિંસ પ્રવૃત્તિથી પડી જવાને કારણે દીનતા પરિણત થઈ ગયો હોય છે, જોવો આ પહેલાં બાકી સમજવો. જે જ પ્રમાણે આ સૂત્રના આઠીના ત્રણ ભાગા પણ બલે જ સમજી લેવા. જે જ પ્રમાણે રૂપ, મન સકલ્ય પ્રજ્ઞા, દષ્ટિ શીલાચાર, વ્યવહાર, પરાક્રમ, વૃત્તિ બલિ, આપી અજમાપી સેવી પર્યાય અને પરિવાર આ ચૌદોને દીન શબ્દ સાથે ઉપરના કેમ પ્રમાણે જોડીને જે ચતુર્મજ્ઞીઓ અન્યથામાં આવી છે, તેમનો ભાવાર્થ પણ પહેલાં અને બીજાં સૂત્રમાં કરેલા

પુરુષજાતાધિકારાદેવાષ્ટાદશસૂત્રીમાહ—

મૂલમ્—ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં જહા-અજ્જે
ળામમેગે અજ્જે ૪, ૧,

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં જહા-અજ્જે ળામમેગે અજ્જ-
પરિણ ૪, ૨। એવં અજ્જરૂવે ૩, અજ્જમળે ૪, અજ્જસંકપ્પે ૫, અજ્જ-
પલ્લે ૬, અજ્જદિટ્ઠી ૭, અજ્જસીલાયારે ૮, અજ્જવંવહારે ૯, અજ્જપર-
ક્કમે ૧૦, અજ્જવિત્તી ૧૧, અજ્જજાઈ ૧૨, અજ્જભાસી ૧૩, અજ્જઓ-
ભાસી ૧૪, અજ્જસેવી ૧૫, એવં અજ્જપરિયાણ ૧૬, અજ્જપરિયાલે
૧૭ એવં સત્તર આલાવગા ૧૭ જહો દીળેણં ભળિયા, તહા
અજ્જેળાવિ ભાળિયઠ્ઠા,

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં જહા-અજ્જે ળામમેગે અજ્જ-
ભાવે ૧, અજ્જે ળામમેગે અળજ્જભાવે ૨, અળજ્જે ળામમેગે અજ્જ-
ભાવે ૩, અળજ્જે ળામમેગે અળજ્જભાવે ૪, ૧૮ । સૂ. ૪૧ ।

છાયા—ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથા-આર્યો નામૈક આર્યઃ ૪, ૧,
ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-આર્યો નામૈક આર્યપરિણતઃ ૪, ૨।

કર પ્રત્યેક કી ચતુર્ભજ્ઞી બના લેના ચાહિયે । હન પદોં કી વ્યાખ્યા
હસી ચતુર્થ સ્થાનકે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં દ્વિતીય સૂત્ર મેં દેખ લેના ચાહિયે ॥૪૦

પુરુષજાત કે અધિકાર કો લેકર અબ સૂત્રકાર અષ્ટાદશ સૂત્રીકા
કથન કરતે હૈ—“ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા ”—હસ્યાદિ—૪૧

સ્પષ્ટીકરણને આધારે સમજ લેવો. આ પદોંની વ્યાખ્યા ચતુર્થ સ્થાનના
પહેલા ઉદ્દેશના બીજા સૂત્રમાં આપવામાં આવી છે, તે ત્યાંથી વાંચી લેવી ॥સૂ. ૪૦॥

પુરુષ જાતનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે, તે સંબંધને અનુલક્ષીને સૂત્રકાર
૧૮ સૂત્રો દ્વારા પુરુષ પ્રકારોનું કથન કરે છે.

‘ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

“ સ્થારિ ” इत्यादि-वत्वारि पुरुषजातानि-वत्वारोः पुरुषप्रकाराः, मनुष्यानि, तद्यथा-दीनो नामैको दीनपरिणतः, दीनो जात्यादिहीनः, दीनपरिणतः-दीनत्वेन परिणतः हिंसादिकर्मकारित्वात्, इति प्रथमो मन्त्रः। एव चतुर्मही विप्रपाश

અનયા રીત્યા રૂપ મનઃ સકલ્પ પ્રજ્ઞા દષ્ટિ શીલાડ્ઘાર વ્યવહાર-પરાક્રમ-વૃત્તિ જાતિ માપ્ય-અમાપ્તિ સેવી પર્યાય પરિવારેતિશુદ્ધાનાં દીનશબ્દેન સંયોજનન સ્ત્યેકં ચતુર્મહી બોધ્યા । ણ્ણાં ઘ્યાબ્યાડ્ઘ્યેષ ચતુર્થસ્થાનસ્ય પ્રથમોરેણે દ્વિતીયણે વિમ્બોકનીયા । સૂ. ૪૦ ।

કારણ અદીન હોતા હૈં ઓર-ગમ્યાત્ મ્હી ધનાદિ કી વૃદ્ધિ હો જાને કે કારણ અદીન પના રહતા હૈં-૪ એસા વહ યૌષા મજ્જ હૈં । પહ પ્રથમ સૂત્રગત મજ્જ ચતુષ્ઠય કા માવ હૈં-—દ્વિતીય સૂત્રગત જો-મજ્જ ચતુષ્ઠય હૈં ઘસકા માવ હસ પ્રકાર સે હૈં-—કોઈં એક પુરુષ એસા હોતા હૈં જો-આત્યાદિ સે પહલે સે હી દીન દીન હોતા હૈં ઓર વાદ મેં મ્હી હિંસ કાર્યકારી હો જાને સે દીનતા સે પરિણત હો જાતા હૈં એસા યહ-પ્રથમ મજ્જ હૈં-૧ હસી પ્રકાર સે હસ સૂત્ર કે અવશિષ્ટ ત્રીન મજ્જ મ્હી અપને આપ સમજના ચાહિયે-૪ । હસી રીતિ સે રૂપ-મન-સકલ્પ-પ્રજ્ઞા-દષ્ટિ-શીલાધાર-વ્યવહાર-પરાક્રમ-વૃત્તિ - જાતિ-માપી - અવમાપી-સેવી-પર્યાય ઓર-પરિવાર હન શબ્દોં કો દીન શબ્દ કે સાથ જોડ

વૃદ્ધિ થવાને કારણે અદીન જ રહે છે અથવા કુદર મુખ્યપ્રતિ આદિને કારણે આશ્રવૃત્તિથી પણ અદીન હોય છે અને બીજાએ આદિ શુભોથી મુક્ત હોવાને કારણે અન્તવૃત્તિથી પણ અદીન જ હોય છે આ રીતે પહેલા સૂત્રના આર વિકલ્પોનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે.

બીજા સૂત્રના આર ભાગ્યજોનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) “ દીન દીન પરિણત ” કોઈં જોક પુરુષ જોવો હોય છે કે જે ભતિ આદિની અપેશાએ પહેલાં પણ દીન હોય છે અને ત્યારબાદ હિંસ પ્રવૃત્તિમાં પડી જવાને કારણે દીનતા પરિણત થઈ ગયો હોય છે, જોવો આ પહેલાં ભગ્નિ સમજવો, જે જ પ્રમાણે આ સૂત્રના બાકીના ત્રણ ભાગા પણ ભતે જ સમજી લેવા. જે જ પ્રમાણે કૃપ, મન, સકલ્પ પ્રજ્ઞા દષ્ટિ શીલાધાર, અવહાર, પરાક્રમ, વૃત્તિ ભતિ, ભાપી અવમાપી, સેવી, પર્યાય અને પરિવાર આ મુદ્દોને દીન શબ્દ સાથે ઉપરના ક્રમ પ્રમાણે જોડીને જે ચતુર્મહીજીના બનાવવામાં આવી છે, તેમનો ભાવાર્થ પણ પહેલાં અને બીજા સૂત્રમાં કરતા

પુરુષજાતાધિકારાદેવાષ્ટાદશસૂત્રીમાહ—

મૂલમ્—ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં જહા—અજ્જે
ળામમેગે અજ્જે ૪, ૧,

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં જહા—અજ્જે ળામમેગે અજ્જ-
પરિણ ૪, ૨। એવં અજ્જરૂવે ૩, અજ્જમળે ૪, અજ્જસંકપ્પે ૫, અજ્જ-
પન્ને ૬, અજ્જદિટ્ઠી ૭, અજ્જસીલાયારે ૮, અજ્જવવહારે ૯, અજ્જપર-
ક્કમે ૧૦, અજ્જવિત્તી ૧૧, અજ્જજાઈ ૧૨, અજ્જમાસી ૧૩, અજ્જઓ-
માસી ૧૪, અજ્જસેવી ૧૫, એવં અજ્જપરિયાણ ૧૬, અજ્જપરિયાલે
૧૭ એવં સત્તર આલાવગા ૧૭ જહા દીળેળં મળિયા, તહા
અજ્જેળાવિ માળિયઠ્ઠા,

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, તં જહા—અજ્જે ળામમેગે અજ્જ-
માવે ૧, અજ્જે ળામમેગે અળજ્જમાવે ૨, અળજ્જે ળામમેગે અજ્જ-
માવે ૩, અળજ્જે ળામમેગે અળજ્જમાવે ૪, ૧૮। સૂ. ૪૧।

છાયા—ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—આર્યો નામૈક આર્યઃ ૪, ૧,
ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—આર્યો નામૈક આર્યપરિણતઃ ૪, ૨।

કર પ્રત્યેક કી ચતુર્મઙ્ગી બના લેના યાહિયે। ઇન પદો કી વ્યાખ્યા
હસી ચતુર્થ સ્થાનકે પ્રથમ ઉદ્દેશક મેં દ્વિતીય સૂત્ર મેં દેખ લેના યાહિયે ॥૪૦

પુરુષજાત કે અધિકાર કો લેકર અબ સૂત્રકાર અષ્ટાદશ સૂત્રીકા
કથન કરતે હે—“ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા ”—ઇત્યાદિ—૪૧

સ્પષ્ટીકરણને આધારે સમજી લેવો. આ પદોની વ્યાખ્યા ચતુર્થ સ્થાનના
પહેલા ઉદ્દેશાના બીજા સૂત્રમાં આપવામાં આવી છે, તે ત્યાંથી વાંચી લેવી ॥સૂ. ૪૦॥

પુરુષ જાતનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે, તે સંબંધને અનુલક્ષીને સૂત્રકાર
૧૮ સૂત્રો દ્વારા પુરુષ પ્રકારોનું કથન કરે છે.

‘ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા ’ ઇત્યાદિ—

પરમાર્યરૂપ ૩, આર્યમનાઃ ૪, આર્યસકલ્પ ૫, આર્યપ્રજ્ઞઃ ૬, આર્યદૃષ્ટિઃ ૭, આર્યશીમાડ્ઽવારઃ ૮, આર્યવ્યવહારઃ ૯ આર્યપરાક્રમઃ ૧૦ આર્યવૃત્તિઃ ૧૧, આર્યજાતિ ૧૨, આર્યમાયી ૧૩, આર્યાવમાસી ૧૪ આર્યસેવી ૧૫, પરમાર્ય પર્વાયઃ ૧૬, આર્યપરિવારઃ ૧૭, એવં સત્ત્વશ્ચાડ્ઽઆપકા ૧૭ યથા દીનેન મણિતા, તથાડ્ઽર્યેણાપિ મણિતમ્યા,

ચત્તારિ પુરુષપ્રાણાજિ, પ્રજ્ઞાજિ, તથા—આર્યો નામૈક આર્યભાષઃ ૧, આર્યો નામૈકોડ્ઽનાર્યમાષઃ ૨, અનાર્યો નામૈક આર્યભાષઃ ૩, અનાર્યો નામૈકોડ્ઽનાર્યમાષઃ ૪, ૧૮ । સૂ ૪૧ ।

ચાર પ્રકારકે પુરુષ કહે છે એ હસ પ્રકાર સે છે,

આર્ય નામ ઘાલા છે ઓર આર્ય છે ૪-૧

ચાર પ્રકાર કે પુરુષ કહે છે—આર્ય નામ ઘાલા આર્ય પરિણત છે ૪-૨, હસી તરહ સે આર્ય રૂપ, ઘાલા ૩, આર્ય મન ઘાલા ૪, આર્ય સકલ્પ ઘાલા ૫, આર્ય પ્રજ્ઞા ઘાલા ૬, આર્ય દૃષ્ટિ ઘાલા ૭, આર્ય શીલ ઘાલા ૮, આર્ય વ્યવહાર ઘાલા ૯, આર્ય પરાક્રમ ઘાલા ૧૦, આર્ય વૃત્તિ ઘાલા ૧૧, આર્ય જાતિ ઘાલા ૧૨, આર્ય માયા ઘાલા ૧૩, આર્યાવમાસી ૧૪, આર્યસેવી ૧૫, આર્ય પર્વાય ઘાલા ૧૬, આર્ય પરિવાર ઘાલા ૧૭, હસ પ્રકાર કે સત્ત્વ આલ્પાપક હોતે છે, જેસે કીનકે સાથ કે ઘાલા પક કહે છે વૈસે હી આર્ય કે સાથ ની કહના ચાહિયે

પુરુષજાત ચારે કહે ગયે છે જેસે—આર્ય આર્ય ભાવ ઘાલા-૧ આર્ય અનાર્ય ભાવ ઘાલા-૨ અનાર્ય આર્ય ભાવ ઘાલા-૩ ઓર-અનાર્ય અનાર્ય

આર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે, જેવી રીતે કે આર્ય નામ ઘાલા છે અને આર્ય છે ૪-૧ ।

આર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે—આર્ય નામ ઘાલા છે અને આર્ય પરિણત છે ૪-૨ એ જ રીતે આર્ય રૂપ ઘાલા ૩ આર્ય મન ઘાલા ૪, આર્ય સકલ્પ ઘાલા ૫, આર્ય પ્રજ્ઞા ઘાલા ૬ આર્ય દૃષ્ટિ ઘાલા ૭, આર્ય શીલ ઘાલા ૮ આર્ય વ્યવહાર ઘાલા ૯, આર્ય પરાક્રમ ઘાલા ૧૦, આર્ય વૃત્તિ ઘાલા ૧૧, આર્ય જાતિ ઘાલા ૧૨ આર્ય માયા ઘાલા ૧૩, આર્યાવમાસી ૧૪, આર્ય સેવી ૧૫, આર્ય પર્વાય ઘાલા ૧૬, આર્ય પરિવાર ઘાલા ૧૭ એ રીતે સત્ત્વ આલ્પાપકો અને છે જેવી રીતે કીનકી સાથેના આલ્પાપકો કહ્યા છે તેવી જ રીતે આર્યની સાથેના આલ્પાપકો પણ કહેવા જોઈએ ।

આર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે—(૧) આર્ય આર્ય ભાવ ધુજ, (૨) આર્ય અનાર્ય ભાવ ધુજ, (૩) અનાર્ય આર્ય ભાવ ધુજ અને (૪) અનાર્ય અનાર્ય

ટીકા—“ ચત્તારિ પુરિસજ્ઞાયા ” इत्यादि—तत्राऽऽर्यो नवविधः, यदाह—

“ खेत्ते जाईकुलकम्मसिप्पभासाइ नाणचरणे-य ।

दंसण आरिय णवहा मिच्छा सगज्जवणखसमाई । १ । ” इति,

छाया—“ क्षेत्रे जातिकुलकर्मशिल्पभाषे ज्ञानचरणे च ।

दर्शने आर्यो नवधा म्लेच्छाः शक-यवन-खसादयः । २ । ”

तत्र क्षेत्राऽऽर्यः—पापकर्मरहितो विशुद्ध इत्यर्थः, तथा—आर्यभावः—क्षायिकादि-
ज्ञानादिगुणसम्पन्नः, अनार्यभावश्च—क्रोधादिकलुषित इति । शेषं सुगमम् । सू० ४१ ।

भाववाલા—૪ इस सूत्र में जो आर्य कहा गया है, वह नौ प्रकारका कहा गया है—खेत्ते, जाई, कुल, कम्म, इत्यादि. क्षेत्रार्य—१ जात्यार्य—२ कुलार्य—३ कर्मार्य—४ शिलार्य—५ भाषार्य—६ ज्ञानार्य—७ चारित्र्यार्य—८ और—दर्शनार्य—९. तथा, म्लेच्छ, शक, यवन, और खस आदि ये अनार्य कहे गये हैं । जो क्षेत्र आर्य होता है. वह—पाप रहित होता है: विशुद्ध होता है, तथा—क्षायिक आदि ज्ञानादि गुणों से सम्पन्न होता है. और—अनार्य भाव जो, क्रोधादिक है उनसे भी कलुषित होता है । वाकी का सब कथन सुगम है तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि—जो क्षायादि ज्ञानादि भावों से युक्त होता है वह—“ आर्यभाव ” से, और—जो क्रोध आदि से कलुषित होता है वह—“ अनार्यभाव ” से लिया गया है इस तरह इन शब्दों को समझ कर ये—आर्य—अनार्य आदि चारों भङ्ग सुगम रीति से समझे जा सकते हैं ॥ सू० ४१ ॥

ભાવયુક્ત આ સૂત્રમા જે આર્ય કહેનામા આવેલું છે, તે નવ પ્રકારના સંમ
જવા. જેમકે—“ખેત્તે-જાઈ-કુલ-કમ્મ” ઇત્યાદિ—(૧) ક્ષેત્રાર્ય, (૨) જાત્યાર્ય,
(૩) કુલાર્ય, (૪) કર્માર્ય, (૫) શિલ્પાર્ય, (૬) ભાષાર્ય, (૭) જ્ઞાનાર્ય, (૮) ચારિત્ર્યાર્ય
અને (૯) દર્શનાર્ય. એ રીતે દર્શનશાસ્ત્રમાં આર્ય નવ પ્રકારનાં કહ્યા છે. શક,
યવન અને ખસ આદિને મ્લેચ્છ, અનાર્ય કહ્યા છે જે ક્ષેત્રાર્ય હોય છે તે પાપ
રહિત (વિશુદ્ધ) હોય છે અને ક્ષાયિક આદિ જ્ઞાનાદિ ગુણોથી યુક્ત હોય છે,
અને ક્રોધાદિક જે અનાર્યભાવ છે તેનાથી પણ કલુષિત હોય છે, બાકીનું કથન
સુગમ છે. આ કથનનો સંક્ષિપ્ત ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—ક્ષાયિક આદિ જ્ઞાનાદિ
ભાવોથી યુક્ત પુરુષને આર્યભાવ યુક્ત કહ્યો છે, અને ક્રોધાદિથી કલુષિત
ભાવયુક્ત પુરુષને અનાર્ય ભાવયુક્ત કહ્યો છે. આ રીતે આ શબ્દોને સમજ-
વાથી આર્ય-અનાર્ય આદિ ચારે ભાંગા સરળતાથી સમજી શકાય છે. ॥ સૂ. ૪૧ ॥

दाष्टान्तिरुभूतपुरुषप्राप्तमेव वृषमृष्टा तेन निरूपयितुमाह—

मूषम्—चत्वारि उत्सभा पण्णत्ता, त जहा—जाइसपण्णे १,
कुलसपण्णे २, धलसंपण्णे ३, रुवसपण्णे ४।

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जाइसपण्णे
१, जाव रुवसंपण्णे ४। १।

चत्वारि उत्सभा पण्णत्ता, त जहा—जाइसपण्णे णाममेगे णो
कुलसपण्णे १, कुलसपण्णे णाममेगे णो जाइसपण्णे २, एगे
जाइसपण्णे वि कुलसपण्णे वि ३, एगे णो जाइसपण्णे णा
कुलसपण्णे ४।

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा जाइसपण्णे
णाममेगे ४, १।

चत्वारि उत्सभा पण्णत्ता, त जहा—जाइसपण्णे णाममेगे
णो धलसपण्णे ४,

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा जाइ
सपण्णे ४, ३।

चत्वारि उत्सभा पण्णत्ता, त जहा—जाइसपण्णे णाममेगे
णा रुवसपण्णे ४,

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—जाइसपण्णे
णाममेगे णो रुवसपण्णे, ४, ३।

चत्वारि उत्सभा पण्णत्ता, त जहा—कुलसपण्णे णाममेगे
णो धलसपण्णे ४, एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त
जहा—कुलसपण्णे णाममेगे णो धलसपण्णे ४, ५,

ચત્તારિ ઉસમા પળ્લજ્જા, તં જહા-કુલસંપળ્લે ણામમેગે
ળો રૂવસંપળ્લે ૪, ઇવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લજ્જા, તં
જહા-કુલ ૪, ૬,

ચત્તારિ ઉસમા પળ્લજ્જા, તં જહા-વલસંપળ્લે ણામમેગે
ળો રૂવસંપળ્લે ૪, ઇવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લજ્જા, તં
જહા-વલસંપળ્લે ણામમેગે ૪, ૭ । સૂ ૪૨ ।

છાયા—ચત્તાર વૃષભાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-જાતિસમ્પન્નઃ ૧, કુલસમ્પન્નઃ ૨,
વલસમ્પન્નઃ ૩, રૂપસમ્પન્નઃ ૪ ।

ઇવામેવ ચત્તારિ પુલ્લજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-જાતિસમ્પન્નો યાવદ્ રૂપ-
સમ્પન્નઃ ૪, ૧ ।

ચત્તાર વૃષભા પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-જાતિસમ્પન્નો નામૈકો નો કુલસમ્પન્નઃ ૧,
કુલસમ્પન્નો નામૈકો નો જાતિસમ્પન્ન ૨, એકો જાતિસમ્પન્નોઽપિ કુલસમ્પન્નોઽપિ
૩, એકો નો જાતિસમ્પન્નો નો કુલસમ્પન્ન ૪,

અવ સૂત્રકાર દાર્ઘ્યાન્તિક ભૂત પુરુષ જાત કો હી વૃષભ દ્વ્યાન્ત
સે નિરૂપિત-કરતે હૈં—“ ચત્તારિ ઉસમા પળ્લજ્જા ”—ઇત્યાદિ ॥૪૨॥

સૂત્રાર્થ-વૃષભ ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં—જાતિ સમ્પન્ન-૧ કુલસ-
મ્પન્ન-૨ વલ સમ્પન્ન-૩ ઓર-રૂપ સમ્પન્ન-૪ હસી પ્રકાર સે પુરુષ મી ચાર
પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં—જાતિ સમ્પન્ન, યાવત્ રૂપ સમ્પન્ન-૪, ૧ । પુનઃ—
બૈલ ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં, જાતિ સમ્પન્ન નો કુલસમ્પન્ન, ૧ કુલ
સમ્પન્ન નો જાતિસમ્પન્ન, ૨ જાતિ સમ્પન્ન મી કુલસમ્પન્ન મી, ૩ ઓર

હવે સૂત્રકાર વૃષભના દ્વ્યાન્ત દ્વારા દાર્ઘ્યાન્તિક પુરુષભૂતોનુ નિરૂપણ કરે છે.

“ ચત્તારિ ઉસમા પળ્લજ્જા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-વૃષભ (બળદ) ચાર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) જાતિ સંપન્ન, (૨) કુલ
સંપન્ન, (૩) બલ સંપન્ન, (૪) રૂપ સંપન્ન. એ જ પ્રમાણે પુરુષના પણ જાતિ
સંપન્ન આદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે.

વૃષભના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પણ કહ્યા છે—(૧) જાતિ સંપન્ન,
નો કુલ સંપન્ન, (૨) કુલ સંપન્ન નો જાતિ સંપન્ન, (૩) જાતિ સંપન્ન-કુલ

एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रवृत्तानि, तद्यथा-जातिसम्पन्नो नामैक ४, २।
चत्वार ऋषयः प्रवृत्ताः, तद्यथा-जातिसम्पन्नो नामैको नो बलसम्पन्न ४,
एवं चत्वारि पुरुषजातानि प्रवृत्तानि, तद्यथा-जातिसम्पन्नः ४, ३,

चत्वार ऋषयः प्रवृत्ताः, तद्यथा-जातिसम्पन्नो नामैको नो रूपसम्पन्न
४, एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रवृत्तानि, तद्यथा-जातिसम्पन्नो नामैको नो
रूपसम्पन्नः, ४, २।

चत्वार ऋषयः प्रवृत्ताः, तद्यथा-कुलसम्पन्नो नामैको नो बलसम्पन्नः ४,
एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रवृत्तानि, तद्यथा-कुलसम्पन्नो नामैको नो बल
सम्पन्नः ४, ५।

नो जातिसम्पन्न नो कुलसम्पन्न, ४ इसी प्रकार से पुरुष भी चार प्रकार
के कहे गये हैं-जाति सम्पन्न नो कुलसम्पन्न, १ यावत् नो जाति सम्पन्न
नो कुल सम्पन्न, ४। पुनश्च-बैल चार प्रकार के कहे गये हैं-जाति सम्पन्न
नो बलसम्पन्न, १ बलसम्पन्न नो जातिसम्पन्न, २ जाति सम्पन्न भी
बल सम्पन्न भी, ३ तथा-नो जातिसम्पन्न नो बलसम्पन्न, ४। पुनः-
बैल चार प्रकारके कहे गये हैं, जातिसम्पन्न नो रूपसम्पन्न, १ रूप
सम्पन्न नो जातिसम्पन्न, २ जाति सम्पन्न भी रूप सम्पन्न भी, ३ नो
जाति सम्पन्न नो रूप सम्पन्न, ४ इसी प्रकार से पुरुष भी चार प्रकार
के कहे गये हैं, जाति सम्पन्न नो रूप सम्पन्न-१ यावत्-नो जातिसम्पन्न
नो रूपसम्पन्न-४। पुनश्च-बैल चार प्रकारके कहे गये हैं, कुलसम्पन्न
नो बलसम्पन्न, १ बल सम्पन्न नो कुलसम्पन्न, ३ कुलसम्पन्न भी
बलसम्पन्न भी, ३ तथा-नो कुलसम्पन्न नो बलसम्पन्न, ४ इसी

संपन्न (४) नो जाति संपन्न-नो कुल संपन्न जो व प्रमाणे पुरुषना पञ्च
(१) जाति संपन्न नो कुल संपन्न, वगैरे आर प्रमाण समझना

बील शीते पञ्च वृषणना आर प्रमाण कहा है-(१) जाति संपन्न नो
बल संपन्न (२) बल संपन्न नो जाति संपन्न, (३) जाति संपन्न बल संपन्न
(४) नो जाति संपन्न नो बल संपन्न जो व प्रमाणे पुरुषना पञ्च आर
प्रमाण समझना वृषणना नीचे प्रमाणे आर प्रमाण पठे है-(१) जाति
संपन्न नो रूप संपन्न, (२) रूप संपन्न नो जाति संपन्न, (३) जाति संपन्न
रूप संपन्न, (४) नो जाति संपन्न नो रूप संपन्न पुरुषना पञ्च जो व
आर प्रमाण समझना वृषणना पञ्च नीचे प्रमाणे आर प्रमाण कहा है-(१) कुल
संपन्न नो बल संपन्न, (२) बल संपन्न नो कुल संपन्न, (३) कुल संपन्न
बल संपन्न, (४) कुल संपन्न नो बल संपन्न, वगैरे आर प्रमाण

ચત્વાર ઋપભાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથથા-કુલસમ્પન્નો નામૈકો નો રૂપસમ્પન્નઃ ૪, એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથથા-કુલ ૦ ૪, ૬।

ચત્વાર ઋપભાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથથા-વલસમ્પન્નો નામૈકો નો રૂપસમ્પન્નઃ ૪, એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથથા-વલસમ્પન્નો નામૈકઃ ૪, ૭ સુ. ૪૨।

ટીકા—“ ચત્વારિ ઉસમા ” ઇત્યાદિ—ઋપભાઃ-વલીવર્દાઃ ચત્વારઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથથા-જાતિસમ્પન્નાઃ-જાતિઃ-ગુણવન્માતૃકતા, તથા સમ્પન્ન-યુક્તઃ ૧, કુલસમ્પન્નઃ-કુલં-ગુણવત્પિતૃકત્વં, તેન સમ્પન્નઃ ૨, વલસમ્પન્ન-વલં-ભારવહનાદિ-સામર્થ્ય, તેન સમ્પન્નઃ ૩, રૂપસમ્પન્નઃ-રૂપં-શરીરસૌન્દર્ય, તેન સમ્પન્નઃ ૪।

પ્રકાર સે પુરુષ મી ચાર પ્રકારકે કહે ગયેહૈં, જૈસે-કુલ સમ્પન્ન નો વલ સમ્પન્ન, ૧ આદિ-૪। પુનઃચ-વૈલ ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈં, વલ સમ્પન્ન નો રૂપ સમ્પન્ન-૧ ઇત્યાદિ-૪ હસી પ્રકાર સે પુરુષ મી ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં-વલ સમ્પન્ન નો રૂપસમ્પન્ન-૧ આદિ-૪, ૭

ટીકાર્થ-વૃષભસૂત્રમ્ જો ચાર પ્રકારકે વલીવર્દ પ્રગટ કિયે ગયેહૈં ઉનકા તાત્પર્ય એસાહૈ-જાતિ સમ્પન્ન આદિ માતૃ પક્ષકા નામ જાતિહૈ, પિતૃ પક્ષકા નામ કુલ હૈ. જિસ વૈલ કી જાતિ ગુણયુક્ત માતાવાલીહૈ, એસી ગુણયુક્ત માતા કી જાતિ સે જો યુક્ત હોતા હૈ વહ-વૈલ જાતિ સમ્પન્ન કહા ગયા હૈ, તથા-ગુણવાન્ પિતાકા જિસકા કુલ હૈ એસા વહ વૈલ કુલ સમ્પન્ન કહા જાતા હૈ। ભારવહન શક્તિ કા નામ વલ હૈ. જો-વૈલ હસ વલ સે સમ્પન્ન હોતા હૈ વહ વૈલ વલ સમ્પન્ન કહા જાના હૈ। શારીરિક સૌન્દર્ય કા નામ રૂપ હૈ. હસ રૂપ સે જો વૈલ સમ્પન્ન હોતા હૈ વહ-વૈલ રૂપ સમ્પન્ન કહા જાતા હૈ। હસી તરહ સે પુરુષ મી ચાર પ્રકાર કે કહે

ઉપર મુજબ સમજવા બળદના પશુ નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પશુ કહ્યા છે. (૧) બલ સંપન્ન-નો રૂપ સંપન્ન, ઇત્યાદિ ચાર પ્રકાર સમજ લેવા પુરુષના પશુ બલ સંપન્ન-નો રૂપ સંપન્ન આદિ ચાર પ્રકાર સમજવા.

ટીકાર્થ-વૃષભસૂત્રમાં જે ચાર પ્રકારના બળદ કહ્યા છે તે ચાર પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ—માતૃપક્ષનું નામ જાતિ છે, પિતૃપક્ષનું નામ કુલ છે જે બળદની માતા ગુણસંપન્ન હોય છે તે બળદને જાતિસંપન્ન કહે છે. જે બળદનો પિતા ગુણસંપન્ન છે, તે બળદને કુલસંપન્ન કહે છે. ભારવહન કરવાની શક્તિનું નામ બળ છે જે બળદ ભારવહન કરવાની શક્તિવાળો હોય છે તેને બળસંપન્ન કહે છે. શારીરિક સૌન્દર્યને રૂપ કહે છે, આ રૂપથી જે બળદયુક્ત હોય છે, તેને રૂપસંપન્ન કહે છે. એ જ પ્રમાણે પુરુષ પશુ ચાર પ્રકારના હોય છે-વિશુદ્ધ

“એવામેવે”-ત્યાદિ-એવમેવ - અપમવમેવ, પુરુષજાતાનિ ચત્વારિ મહાધાનિ, તદ્વધા-પુરુષો જાતિસમ્પન્નઃ-વિશુદ્ધમાતૃવંશયુક્તો મવતિ, એવં કુલમજ્જકરુણેત્વમિ મહા ધોષ્યાઃ । इदं दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकरूपं सामान्यसूत्रम् ? ।

“ચત્વારિ યસમા”-ત્યાદિ-અપમાથત્વાતઃ મહાધાતાઃ, તદ્વધા-એકા-કથિવ્ અપમો જાતિસમ્પન્નો મવતિ, કિન્તુ કુલસમ્પન્નો નો મવતિ ? , એવં મહાધય સુગમમ્ ।

ગયે હૈ-વિશુદ્ધ માતૃવંશ સે જો પુરુષ યુક્ત હોતા હૈ વહ-પુરુષ જાતિ સમ્પન્ન કહા ગયા હૈ । વિશુદ્ધ પિતૃવંશ સે જો પુરુષ યુક્ત હોતા હૈ વહ-કુલ સમ્પન્ન કહા ગયા હૈ । આરવહન આદિ કરનેકી શક્તિ સે જો યુક્ત હોતા હૈ વહ-પુરુષ થલ સમ્પન્ન કહા ગયા હૈ, । તથા શારીરિક સૌન્દર્ય સે જો યુક્ત હોતા હૈ વહ-રૂપ સમ્પન્ન કહા ગયા હૈ, વહ દૃષ્ટાન્ત ઔર દાર્ષ્ટાન્તિક રૂપ સૂત્ર સામાન્ય હૈ । આર પ્રકાર કે વેલ જો-
“જાતિ સંપન્ન નો કુલ સમ્પન્ન”-ત્યાદિ રૂપ સે પ્રકટ કિયે ગયે હૈ યનકા ખાસ એસા હૈ કિ-કોઈ એક વેલ એસા હોતા હૈ જો ગુણવાતી માતાકી જાતિ મેં તો હોતા હૈ કિન્તુ-કુલ-ગુણવાન પિતા કે વંશ કા નહીં હોતા હૈ । સે પ્રકાર કા વહ પ્રથમ ભગ હૈ-? । હસી પ્રકાર સે શેષ મજ્જ ત્રય મી સમજ લેના આહિયે । જિસ પ્રકાર સે યે વેલ સમ્પન્ની આર પ્રકાર કહે ગયે હૈ હસી પ્રકાર સે પુરુષોં કે મી આર

માતૃવંશથી જે પુરુષ યુક્ત હોય છે તેને જાતિસંપન્ન કહે છે વિશુદ્ધ પિતૃવંશથી જે પુરુષ યુક્ત હોય છે તેને કુલસંપન્ન કહે છે આરવહન આદિ કરવાની શક્તિથી જે પુરુષ યુક્ત હોય છે તેને બલસંપન્ન કહે છે તથા શારીરિક સૌન્દર્યથી જે પુરુષ યુક્ત હોય છે તેને રૂપસંપન્ન કહે છે આ દૃષ્ટાન્ત અને દાર્ષ્ટાન્તિક રૂપ સામાન્ય સૂત્ર છે

બળદના “જાતિ સંપન્ન-નો કુલ સંપન્ન” ઇત્યાદિ જે આર પ્રકાર કહ્યા છે તેને સ્પષ્ટીકરણ—

પહેલો જાતિ—કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે શુભવતી માતાની અપેક્ષાએ તો જાતિસંપન્ન હોય છે પણ શુભવાન પિતાના વંશમાં જન્મ નહીં થવાને કારણે કુલસંપન્ન હોતો નથી, એ જ પ્રમાણે બાકીના ત્રણે જાતિના પણ સમજ લેવા, જેવી રીતે બળદના આ આર પ્રકાર કહ્યા છે, એ જ પ્રમાણે

“ एवामेवे ”—त्यादि—एवमेव—ऋषभदेव, पुरुषजातानि चत्वारि प्रज्ञानि, तद्यथा—एकः—ऋषित् पुरुष, जातिसम्पन्नो भवति किन्तु कुल सम्पन्नो नो भवति, शेषं भङ्गत्रयं सुगमम्, इत्यमेवाग्रिमदृष्टान्तसूत्राणि सशर्ष्टान्तिकानि पञ्च बोध्यानि । तत्र जातिकुलसंयुक्तसूत्रवत् जातिवल-जातिरूपसंयोगेन सूत्रद्वयम् २। तथा-कुल-वल कुलरूपसंयोगेन सूत्रद्वयम् ४। पुनश्च-वलरूपसंयोगेनैकं सूत्रमिति पञ्च ५। एवं सामान्यसूत्र-जातिकुलसंयुक्तसूत्रसंमेलनेन सप्त सूत्राणि ७ जातानि । सू ४२ ।

प्रकार कहे गये हैं । इन में कोई एक पुरुष ऐसा होता है माता की विशुद्ध जाति वाला तो होना है पर-विशुद्ध पिता के वंश वाला नहीं होता है, यह-प्रथम भङ्ग है, इसी प्रकार से शेष तीन भङ्गों को भी जान लेना चाहिये; क्योंकि-वे सुगम हैं । इसी प्रकार से आगे के दृष्टान्त सूत्र ५-भी दार्ष्टान्तिक सूत्रों के साथ घटा लेना चाहिये । जाति-और कुल इनके संयुक्त सूत्रों की तरह जाति-वल, जाति-रूप के संयोग से भङ्गा बनाने के लिये २-दो सूत्र हैं, पुनः-कुल वल-कुल-रूप इनके संयोग से २-दो सूत्र हैं, पुनः-वल-रूप, के संयोग से एक सूत्र हैं, इस प्रकार से ये ५-सूत्र हैं । इसी तरह से सामान्य सामान्य सूत्र जाति-कुल-संयुक्त सूत्रों को सम्मिलित हो जाने से ये-७ सात सूत्र हो जाते हैं । सू ४२ ।

પુરુષતા પણ “ જાતિસંપન્ન-નો કુલસંપન્ન ” ઇત્યાદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—
(૧) કેઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે માતાની અપેક્ષાએ તો વિશુદ્ધ જાતિ વાળો હોય છે, પણ પિતાની અપેક્ષાએ વિશુદ્ધ જાતિવાળો હોતો નથી આ પહેલો વિકલ્પ છે, બાકીના ત્રણે વિકલ્પોનો ભાવાર્થ પણ એ જ પ્રમાણે સમજી લેવો એ જ પ્રમાણે પછીના પાંચ દ્રષ્ટાન્તસૂત્રોને પણ દાર્ષ્ટાન્તિક પુરુષ સાથે ઘટાવી દેવા જાતિ અને કુલના યોગથી ચાર ભાંગા બને છે જાતિ અને બળના યોગથી ચાર ભાંગા બને છે અને જાતિ અને રૂપના યોગથી ચાર ભાંગા બને છે. આ રીતે જાતિ સાથે અનુક્રમે કુલ, બળ અને રૂપના યોગ-વાળા ત્રણ સૂત્ર છે એ જ પ્રમાણે કુળ અને બળના યોગથી તથા કુળ અને રૂપના યોગથી ચાર ચાર ભાગવાળા બે સૂત્ર બને છે અને બલ અને રૂપના સંયોગથી ચાર ભાગવાળું એક સૂત્ર બને છે આ રીતે ૧ સામાન્ય સૂત્ર, જાતિ સાથે કુળ, બલ અને રૂપના યોગવાળાં ૩ સૂત્ર, કુળ સાથે બળ અને રૂપના યોગવાળાં બે સૂત્ર અને બળ સાથે રૂપના યોગવાળું ૧ સૂત્ર મળીને કુલ ૭ સૂત્ર થાય છે. આ વાત ટીકામાં આપેલ કોઠામાં સમજાવી છે—

જાતિ, કુળ, બળ અને રૂપ આ પ્રત્યેકના એક એક ભાગવાળું સામાન્ય સૂત્ર, તેનો ક્રમાંક પહેલો સમજવો. ॥ સૂ. ૪૨ ॥

सूत्रपदकस्थापना यथा—

मङ्गल	सूत्रसंख्या	सामान्य—	
आति-कुल	४-१	कुल-बल	४-१
आति-बल	४-१	कुल-रूप	४-५
आति-रूप	४-१	बल-रूप	४-९

जात्यादि बहुष्ययुक्तं सामान्य सूत्रम् १ सक्रमितवृत्ताणि सप्त ७
अथ हस्तिदृष्टान्तेन माह —

मूत्रम्—चत्वारि हृत्थी पण्णत्ता, त जहा—भदे १, मदे २,
मिष ३, सकिण्णे ४।

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—भदे १,
मदे २, मिष ३, सकिण्णे ४। १।

चत्वारि हृत्थी पण्णत्ता, त जहा—भदे णाममेगे भदमणे १,
भदे णाममेगे मंदमणे २, भदे णाममेगे मियमणे ३, भदे णाम
मेगे सकिण्णमणे ४, एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त
जहा—भदे णाममेगे भदमणे १, भदे णाममेगे मंदमणे २, भद
णाममेगे मियमणे ३, भदे णाममेगे सकिण्णमणे ४, २।

चत्वारि हृत्थी पण्णत्ता, त जहा—मदे णाममेगे भदमणे १,
मदे णाममेगे मंदमणे २, मदे णाममेगे मियमणे ३, मंदे णाम
मेगे सकिण्णमणे ४, एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त
जहा—मदे णाममेगे भदमणे, त चेव । ३ ।

चत्तारि हत्थी पणत्ता, तं जहा—मिए णाममेगे भद्दमणे १,
मिए णाममेगे मंदमणे २, मिए णाममेगे मिथमणे ३, मिए
णाममेगे संकिण्णमणे ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पणत्ता,
तं जहा—मिए णाममेगे भद्दमणे तं चेव ।। ४ ।

चत्तारि हत्थी पणत्ता, तं जहा—संकिण्णे णाममेगे भद्द-
मणे १, संकिण्णे णाममेगे मंदमणे २, संकिण्णे णाममेगे मिथ-
मणे ३, संकिण्णे णाममेगे संकिण्णमणे ४, एवामेव चत्तारि
पुरिसजाया पणत्ता, तं जहा—संकिण्णे णाममेगे भद्दमणे तं
चेव जाव संकिण्णे णाममेगे संकिण्णमणे,—। ५ ।

गाहाश्री —

मधुगुलियपिंगलक्खो, अणुपुवसुजायदीहणंगूलो ।

पुरओ उदग्गधीरो, सवंगसमाहिओ भद्दो । १ ।

चलवहलंविसमन्नम्मो, थूलसिरो थूलएण पेएण ।

थूलणहदंतवालो, हरिपिंगललोयणो मंदो । २ ।

तणुओ तणुयग्गीवो, तणुयतओ तणुयदंतणहवालो ।

भीरू तत्थुव्विग्गो, तासी य मवे मिए णामं । ३ ।

एएसि हत्थीणं, थोवं थोवं तु जो हरइ हत्थी ।

रूवेण व सीलेण व, सो संकिण्णोत्ति णायव्वो । ४ ।

भद्दो मज्जइ सरए, मंदो उण मज्जए वसंतंमि ।

मिउ मज्जइ हेमंते, संकिण्णो सव्वकालंभि । ५ । सू० ४३ ।

છાયા—ચત્વારો હસ્તિનાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા મદ્રઃ ૧, મન્દ ૨, મૃગ ૩, સક્ષીર્ણઃ ૪।
 એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—મદ્રઃ ૧, મન્દઃ ૨, મૃગઃ
 ૩ સક્ષીર્ણઃ ૪। (૧)

ચત્વારો હસ્તિનાઃ પ્રજ્ઞતા, તથા—મદ્રો નામૈકો મદ્રમના ૧, મદ્રો નામૈકો
 મન્દમનાઃ ૨, મદ્રો નામૈકો મૃગમનાઃ ૩, મદ્રો નામૈક સક્ષીર્ણમનાઃ ૪, એવમેવ
 ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ, પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—મદ્રો નામૈકો મદ્રમના ૧, મદ્રો નામૈકો
 મન્દમનાઃ ૨, મદ્રો નામૈકો મૃગમનાઃ ૩, મદ્રો નામૈકઃ સક્ષીર્ણમના ૪, (૨)

ચત્વારો હસ્તિનાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—મન્દો નામૈકો મન્દમના ૧, મન્દો નામૈકો
 મન્દમના ૨, મન્દો નામૈકો મૃગમનાઃ ૩, મન્દો નામૈકો સક્ષીર્ણમનાઃ ૪, એ

અથ સૂત્રકાર દ્વાપી કે દૃષ્ટાન્ત સે પુરુષોં કી ચતુષ્પ્રકારતાકા કપન
 કરતે હું—“ચત્વારિ હસ્તી પળ્ળતા” —હત્યાદિ । ૪૨ ॥

સૂત્રાર્થ—દ્વાપી ચાર પ્રકારકે કહે ગયે જેસે મદ્ર ૧ મન્દ-૧ મૃગ-૩ ઓર
 સક્ષીર્ણ-૪ હસી પ્રકાર સે પુરુષ પ્રકાર સી ચાર કહે ગયે હું જેસે, મદ્ર,
 મન્દ, મૃગ, સક્ષીર્ણ-૧ પુનઃ—દ્વાપી ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હું જેસે—
 એક મદ્ર મદ્ર મનવાલા, ૧ મદ્ર મન્દ મનવાલા, ૨ મદ્ર મૃગ મનવાલા, ૩
 ઓર—મદ્ર સક્ષીર્ણ મનવાલા-૪ હસી તરહ સે ચાર પુરુષ જાત કહે ગયે
 હું જેસે—કોઈ એક મદ્ર મદ્ર મનવાલા પુરુષ-૧ મદ્ર મન્દ મનવાલા
 કોઈ દુસરા પુરુષ-૨ મદ્ર મૃગ મનવાલા કોઈ એક તીસરા પુરુષ-૩
 તથા—મદ્ર ઓર સક્ષીર્ણ મનવાલા કોઈ એક ચોથા પુરુષ-૪

પુનઃ—ચાર પ્રકાર કે દ્વાપી કહે ગયે હું જેસે—કોઈ એક મન્દ-ઓર
 મદ્ર મનવાલા-૧ મન્દ ઓર મન્દ મનવાલા ૨ મન્દ ઓર મૃગ મનવાલા ૩

હવે સૂત્રકાર દ્વાપીના દૃષ્ટાન્ત દ્વારા પુરુષની ચતુર્વિધતાનું નિર્દેશ કરે છે

“ચત્વારિ હસ્તી પળ્ળતા” —હત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—દ્વાપીના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) ભદ્ર, (૨) મન્દ, (૩)
 મૃગ અને (૪) સક્ષીર્ણ જે જ પ્રમાણે પુરુષના પશુ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—

(૧) ભદ્ર, (૨) મન્દ, (૩) મૃગ અને (૪) સક્ષીર્ણ । ૧ ।

દ્વાપીના આ પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પશુ કહ્યા છે—(૧) ભદ્ર ભદ્રમનવાળો, (૨)
 (૨) ભદ્ર મન્દ મનવાળો, (૩) ભદ્ર મૃગ મનવાળો અને (૪) ભદ્ર સક્ષીર્ણ
 મનવાળો જે જ પ્રમાણે પુરુષના પશુ નીચે સૂચન ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—

(૧) ભદ્ર ભદ્ર મનવાળો, (૨) ભદ્ર મન્દ મનવાળો, (૩) ભદ્ર મૃગ મનવાળો
 અને (૪) ભદ્ર સક્ષીર્ણ મનવાળો । ૨ ।

દ્વાપીના આ પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પશુ કહ્યા છે—(૧) મન્દ અને ભદ્ર મનવાળો
 (૨) મન્દ અને મન્દ મનવાળો, (૩) મન્દ અને મૃગ મનવાળો અને (૪)

મેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ, પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-મન્દો નામૈકો ભદ્રમનાઃ, તદેવ (૩)

ચત્વારો હસ્તિનઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-મૃગો નામૈકો ભદ્રમનાઃ ૧, મૃગો નામૈકો મન્દમનાઃ ૨, મૃગો નામૈકો મૃગમનાઃ ૩, મૃગો નામૈકઃ સઙ્કીર્ણમનાઃ ૪। એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-મૃગો નામૈકો ભદ્રમનાઃ, તદેવ (૪)

ચત્વારો હસ્તિનઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-સઙ્કીર્ણો નામૈકો ભદ્રમનાઃ ૧, સઙ્કીર્ણો નામૈકો મન્દમનાઃ ૨, સઙ્કીર્ણો નામૈકો મૃગમનાઃ ૩, સઙ્કીર્ણો નામૈકઃ સઙ્કીર્ણમનાઃ ૪, એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-સઙ્કીર્ણો નામૈકો ભદ્રમનાઃ, તદેવ યાવત્ સઙ્કીર્ણો નામૈકઃ સઙ્કીર્ણમનાઃ ૪, (૫)

તથા-મન્દ ઓર સઙ્કીર્ણ મન વાલા-૪ હસી પ્રકાર સે પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-કોઈ એક મન્દ-ઓર ભદ્ર મનવાલા પુરુષ-૧ આદિ આદિ ૩-ભજ્જ જો અવશિષ્ટ હૈં પૂર્વોક્ત રૂપ સેં હી હૈં-૩ પુનઃચ-હાથી ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈં, જૈસે-મૃગ ઓર ભદ્ર મનવાલા-૧ મૃગ ઓર મન્દ મનવાલા-૨ મૃગ ઓર મૃગ મનવાલા-૩ તથા-મૃગ ઓર સઙ્કીર્ણ મનવાલા-૪ હસી તરહસે પુરુષ જાત મી ચાર કહે ગયેહૈં, જૈસે-મૃગ ઓર ભદ્ર મનવાલા-૧ અવશિષ્ટ ૩ ભજ્જ પૂર્વોક્ત રૂપસે હીહૈ-૪-૧।

પુનઃચ-હાથી ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈં, જૈસે-સઙ્કીર્ણ ઓર ભદ્ર મનવાલા-૧ સઙ્કીર્ણ ઓર મન્દ મનવાલા-૨ સઙ્કીર્ણ ઓર મૃગમનવાલા-૩ તથા-સઙ્કીર્ણ ઓર સઙ્કીર્ણ મનવાલા-૪ હસી તરહ સે પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-કોઈ એક સઙ્કીર્ણ ઓર ભદ્ર મનવાલા પુરુષ-૧ યાવત્ સઙ્કીર્ણ ઓર સઙ્કીર્ણ મનવાલા પુરુષ-૪-૧ ૫। ગાથા-“ મધુ

મન્દ અને સંકીર્ણ મનવાળો. એ જ પ્રમાણે પુરુષના ચાર પ્રકાર પડે છે—
(૧) કે.ઈ પુરુષ મન્દ અને ભદ્ર મનવાળો હોય છે, ઇત્યાદિ ચાર પ્રકાર ઉપર મુજબ જ બની શકે છે. ૧ ૩ ।

એ જ પ્રમાણે હાથીના આ ચાર પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) મૃગ અને ભદ્ર મનવાળો, (૨) મૃગ અને મન્દ મનવાળો, (૩) મૃગ અને મૃગ મનવાળો અને (૪) મૃગ અને સંકીર્ણ મનવાળો એ જ પ્રમાણે પુરુષના પણ “ મૃગ અને ભદ્ર મનવાળો ” ઇત્યાદિ ચાર પ્રકાર સમજી લેવા. ૧ ૪ ।

હાથીના આ પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પડે છે—(૧) સંકીર્ણ અને ભદ્ર મનવાળો, (૨) સંકીર્ણ અને મન્દ મનવાળો, (૩) સંકીર્ણ અને મૃગ મનવાળો અને (૪) સંકીર્ણ અને સંકીર્ણ મનવાળો. એ જ પ્રમાણે પુરુષના પણ “ સંકીર્ણ અને ભદ્ર મનવાળો ” ઇત્યાદિ ચાર પ્રકાર પડે છે. ૧ ૫ ।

ગાયા:—મધુગુટિકાપિઙ્ગાક્ષઃ, ચાતુર્ધ્યમુનાસદીર્ઘકાઙ્ગુનઃ ।

પુરત ઉદમપીરઃ સર્પાક્ષમાહિતો મદ્રઃ । ૧ ।

ચલવદ્ધવિપમચર્મા, સ્પૂલશિરાઃ સ્પૂલકેન પેષકેન ।

સ્પૂલનસદન્તવાહો, હરિપિઙ્ગલોચનો મન્દઃ । ૨ ।

તનુકસ્તનુઙ્ગીય, સ્તનુકલ્પક તનુકદ-તનસલાલ ।

મીઠસ્તમોદ્દિગ્ન, શ્વાસી ચ મવેદ્ મુગો નામ । ૩ ।

પ્રતેષાં ચ હસ્તિનાં, સ્તોક સ્તોકં તુ યો હરતિ હસ્તી ।

રૂપમ વા શોષેન વા, સઙ્કીર્ણે હિતિ શાત્પથઃ । ૪ ।

મદ્રો માયતિ શરદિ મન્દઃ પુનર્માયતિ વસન્તે ।

મુગો માયતિ હેમ-વે સઙ્કીર્ણઃ સર્વકાલે । ૫ । સૂ. ૪૩ ।

ટીકા—“ ચતારિ હત્યો ” ઇત્યાદિ—હસ્તિનઃ ચત્વારઃ મદ્રતાઃ, તથા—મદ્ર ૧, મન્દ ૨, મુગઃ ૩, સઙ્કીર્ણ ૪, તથા મદ્રો હસ્તી મદ્ર એવ ધૈર્યશૌર્યાદિગુણસમ્પન્નત્વાત્ ૧, મન્દો મન્દ એવ મન્દીભૂત ધૈર્યશૌર્યાદિગુણવત્ત્વાત્ ૨, મુગઃ—મુગસદ્ધસઃ, તત્સાદૃશ્ય ચ કુશલમીઠવાદિપર્મેષ ૩ સઙ્કીર્ણઃ—કિંચિદ્મદ્રાદિગુણસમ્પન્નત્વાત્ સઙ્કીર્ણ એવ ૪ । હિતિ દૃષ્ટાન્તહસ્તિસૂત્રમ્ ।

ગુટિકા પિઙ્ગાક્ષ ”—ઇત્યાદિ—હાંસ સૂત્ર કે દૃષ્ટાન્ત મેં ચાર પ્રકાર કે હાથી કહે ગયે હેં ધનકા તાત્પર્ય એસા હે—જો હાથી ધૈર્ય—શૌર્ય આદિ ગુણોં સે બિમૂપિત હોતા હે વહ મદ્ર હાથી કહા ગયા હે—૧ મન્દીમૂત ધૈર્ય શૌર્ય આદિ ગુણોં સે જો યુક્ત હોતા હે વહ હાથી મન્દ કહા ગયા હે—૨ મુગ એસા જો હાથી કુશતા એવં—મીઠતા આદિ ધર્મ વાલા હોતા હે વહ હાથી મુગ કા એસા મુગ કહા ગયા હે—૩ તથા—જો હાથી કુછ કુછ મદ્રાદિ ગુણોં સે સમ્પન્ન—યુક્ત હોતા હે વહ—સઙ્કીર્ણ કહા ગયા હે તો એસે વે હાથી કે ચાર પ્રકાર કહે ગયે હેં એસે હી પ્રકાર વાણે મનુષ્ય

ગાયા—“ મધુગુટિકા પિઙ્ગાક્ષ ” ઇત્યાદિ

હાથીનાં દૃષ્ટાન્તસૂત્રમાં ચાર પ્રકારનાં હાથી કહ્યાં છે તે ચાર પ્રકારનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—જે હાથી ધૈર્ય, શૌર્ય આદિ ગુણોથી યુક્ત હોય છે, તેને મદ્ર હાથી કહે છે મ મન્દીમૂત ધૈર્ય, શૌર્ય આદિથી જે યુક્ત હોય છે તેને મન્દ હાથી કહે છે જે હાથી મુગના જેવી કુશલા, મીઠતા આદિ ધર્મોથી સંપન્ન હોય છે તે હાથીને મુગ હાથી કહે છે. જે હાથી મીઠા મીઠા ભદ્રાદિ ગુણોથી સંપન્ન હોય છે તેને સઙ્કીર્ણ કહે છે. જેમ હાથીનાં આ ચાર પ્રકાર કહ્યાં છે, એ જ પ્રમાણે મનુષ્યનાં પણ ચાર પ્રકાર કહ્યાં છે (૧) કેરલાદ

“ એવામેવે ”—ત્યાદિ—એવમેવ—હસ્તિવદેવ પુરુષજાતાનિ ચત્વારિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—ભદ્રઃ ૧, મન્દઃ ૨, મૃગઃ ૩, સઙ્કીર્ણથ ૪ । એવાં વિવરણં હસ્તિસૂત્રવદ્-વોધ્યમ્ । ૧ । અગ્રે વક્ષ્યમાણાનિ ચત્વારિ સૂત્રાણિ તુ સદાર્પાન્તિકાનિ ભદ્રાદિપ-દચતુષ્ટયયોજનેન “ ભદ્રો નામૈકો ભદ્રમનાઃ ” इत्यादि—રીત્યા પ્રત્યેકં ભજ્જચતુષ્ટયં કૃત્વા વોધ્યાનિ । તત્ર ભદ્રો નામ પ્રશસ્તો જાત્યાऽऽકારેણ ચ, ભદ્રમનાઃ—પ્રશસ્ત-ચિત્તઃ, યદ્વા—ભદ્રસ્ય મન ઇવ મનો यस્ય સ ભદ્રમનાઃ—ધીર इत्यर्थः, મન્દમનાઃ—

બી હોતે હૈં, કિતને મનુષ્ય એસે હોતે હૈં જો—આપત્તિ આદિ કે સમય મેં બી ધૈર્ય—શૌર્ય આદિ ગુણોં સે વિભૂપિન ચને રહતે હૈં એસે મનુષ્ય ભદ્ર કહલાતે હૈં । કિતનેક મનુષ્ય તો એસે હોતે હૈં જો—આપત્તિ—વિપત્તિ કે સમય મેં (અવસર પર) મન્દીભૂત ધૈર્ય—શૌર્ય આદિ ગુણવાળે હો જાતે હૈં એસે મનુષ્ય મન્દ કહાતે હૈં । કિતનેક મનુષ્ય એસે હોતે હૈં જો—શારીરિક કૃશતા એવં ભોરતા સે યુક્ત હોતે હૈં એસે મનુષ્ય મૃગ કે જૈસે મૃગ કહાતે હૈં, તથા—કુછ કુછ ભદ્રાદિ ગુણોં સે યુક્ત જો મનુષ્ય હોતે હૈં વે સઙ્કીર્ણ કહાતે હૈં । તથા—દાર્પાન્તિક સૂત્રોં સહિત સૂત્ર હૈં ઉનકા અભિપ્રાય એસા હૈં—“ ભદ્ર ભદ્ર મનવાલા ”—જાતિ—ઔર આકાર સે જો પ્રશસ્ત હોતા હૈ વહ—ભદ્ર હૈ । તથા—પ્રશસ્ત જિસ કા ચિત્ત હોતા હૈ, અથવા—ભદ્ર મનકા જૈસા જિસકા મન હોતા હૈ વહ ભદ્ર

માણસો એવાં હોય છે કે જેઓ આપત્તિ કાળે ધૈર્યાદિ ગુણોના ત્યાગ કરતા નથી, એવાં મનુષ્યોને ‘ ભદ્ર ’ કહે છે. (૨) કેટલાક માણસો એવાં હોય છે કે જેઓ આપત્તિ—વિપત્તિના સમયે ધૈર્ય—શૌર્ય આદિ ગુણો બતાવી શકતા નથી. આ ગુણોની અપેક્ષાએ તેઓ મન્દ હોવાથી તેમને ‘ મન્દ ’ કહે છે (૩) કેટલાક માણસો શારીરિક કૃશતાથી યુક્ત હોય છે અને મૃગ સમાન ડરપોક હોય છે, તેથી તેમને મૃગ સમાન કહ્યા છે. (૪) કેટલાક મનુષ્યો થોડા થોડા પ્રમાણમાં ભદ્રાદિ ગુણોથી યુક્ત હોય છે, તેથી તેમને સંકીર્ણ કહે છે. આ પહેલું સામાન્ય સૂત્ર છે.

બીજા સૂત્રનો ભાવાર્થ—આ દષ્ટાન્તસૂત્રમાં હાથીના “ ભદ્ર—ભદ્ર મનવાળો ” ઇત્યાદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે જાતિ અને આકૃતિની અપેક્ષાએ પ્રશસ્ત હોય એવા હાથીને ભદ્ર કહે છે, અને જેનું ચિત્ત પ્રશસ્ત હોય અથવા ભદ્ર (ધીર) જેનું મન હોય એવા હાથીને ‘ ભદ્ર ભદ્રમનવાળો ’ કહે

મન્દીભૂતચિત્ત, યદ્વા-મન્દજનનમનસ્તુલ્યમનાઃ-નાસ્ત્યન્તધીર, एवं मृगमना-
 एगस्य मन इव मनो यस्य स मृगमनाः=एगमन स्तदृग्मनाः-भीरु, एगस्य मनस्य
 चञ्च मयतीति पुरुषम्यापि हस्त्यचिदेव सदिति दृष्टान्तसाधर्म्यमत्र बोध्यम्,

सङ्कीर्णमना-मद्रादिकिञ्चिल्लक्षणमम्यन्नमना-विचित्रमना इत्यर्थः, पुरुषास्तु
 मध्यमाणमद्रादिलक्षणमनुसृत्य मद्रस्तापमद्रस्ताप बोध्याः ।

મનવાલા-ધીર છે । કિતનેક મનુષ્ય એસે હોતે હેં જો જાતિ એવં-આકાર
 સે બી પ્રશસ્ત હોતે હેં ઓર-મનસે પ્રશસ્ત-ધીર હોતે હેં એસા યહ મધમ
 મદ્ર કા અર્થ છે । જિસકા ચિત્ત મન્દીભૂત હોના છે અથવા મન્દજનકે
 મન જેમા જિસ કા મન હોતો છે વહ-“મદમના” છે યહ મનુષ્ય
 અત્યન્ત ધીર નહીં હોના છે । તથા-સુગ કે મન જેસા જિસકા મન હોતા
 છે વહ મનુષ્ય “સુગમના” છે, એસા મનુષ્ય મીઠા સ્વભાવ કા હોતા
 છે, અર્થાત્-મૃગકા મન ચચલ હોતા છે હસી તરફ સે કિસી મનુષ્ય
 કા મન બી ચચલ હોતા છે હસ તરફ સે મનુષ્યોં મેં જન દૃષ્ટાન્તોં કી
 સાધર્મ્યતા ઘટતી છે । જિસકા મન મદ્રાદિકે કુછ કુછ લક્ષણોંવાલા
 હોના છે અર્થાત્-જો વિચિત્ર મન વાલા હોના છે વહ-“સઙ્કીર્ણમના”
 -પુરુષ છે । જન મદ્રાદિકોં કે કથિત લક્ષણ અનુસાર પુરુષોં મેં પ્રશસ્તતા
 ઓર અપ્રશસ્તતા જાનની જાહિય । મદ્રાદિકાં કે લક્ષણ ગાથા ચતુષ્ઠય
 સે હસ પ્રકાર કહે ગયે હેં-મદ્ર લક્ષણ, મધુગુટિકા, હસ્તાદિ જિસકે નેત્ર

ઉ. દાષ્ટાન્તિકા સૂત્રમ્ તેના આ પ્રમાણે અર્થ પ્રદાવી શકાય-કેટલાક માણસો
 એવાં હોય છે કે જેઓ જાતિ અને આકારની અપેક્ષાએ પણ પ્રશસ્ત હોય
 છે અને ધીર મનવાળા હોય છે, એવાં માણસોને ‘મદ્ર-મદ્રમનવાળા’ કહે છે

બીજા ભાગને આવાર્થ-કેટલાક માણસો મન્દીભૂત ચિત્તવાળા (ધેર
 આદિ શબ્દોથી સંદિત) હોય છે, તેમને મદ્રમનવાળા કહે છે, એવા મનુષ્યો
 અત્યન્ત ધીર હોતા નથી. જે માણસનું મન મૃગના જેવું બીરુ અને બચળા
 હોય છે એવા માણસને મૃગમના કહેવામાં આવે છે એવો મનુષ્ય ટરપોક
 અને બચળા વૃત્તિવાળો હોય છે આ રીતે મનુષ્યમાં આ દૃષ્ટાન્તોની સાધ
 મ્યતા ધરાવી શકાય છે જે માણસનું મન મદ્રાદિક લક્ષણોથી યોગ્ય યોગ્ય
 પ્રમાણમાં મુક્ત હોય છે તે માણસને સઙ્કીર્ણ મનવાળો’ કહે છે એટલે કે
 જે વિચિત્ર મનવાળો હોય છે તેને આ પ્રકારમાં અવાવી શકાય છે આ
 મદ્રાદિકોના કથિત લક્ષણો અનુસાર પુરુષોમાં પ્રશસ્તતા અને અપ્રશસ્તતા
 સમજવી. મદ્રાદિકોનાં લક્ષણ વાચ ગાથા વાંચા આ પ્રમાણે હતા છે—

પૂર્વોક્તભદ્રાદિલક્ષણં ગથાચતુષ્ટયેનાઽઽહ-તત્ર ભદ્રલક્ષણમ્-“મધુગુલિય”
 इत्यादि-मधुगुटिकापिङ्गलाक्षः-मधुन-गुटिका-वटिका मधुगुटिका, तद्वत् पिङ्गले-
 पिङ्गलवर्णे अक्षिणी-नेत्रे यस्य स मधुगुटिका पिङ्गलाक्षः, आनुपूर्व्यसुजातदीर्घला-
 ङ्गुलः-आनुपूर्व्येण-स्थूलसूक्ष्मसूक्ष्मतररूपक्रमेण सुजातं-सौन्दर्येण संस्थितं दीर्घ-
 वृहत् लाङ्गूलं-पुच्छं यस्य स तथा भूतः, पुरतः-अग्रे-अग्रभागे उदग्रः-उन्नतः-
 अग्रदेशावच्छेदेनोन्नतः-उन्नताग्रभाग इति यावत्, धीरः-धैर्यवान् क्षोभरहितः,
 सर्वाङ्गसमाहितः-सर्वाणि अङ्गानि सम्-सम्पक् प्रमाणलक्षणसम्पन्नत्वेन आहितानि-
 व्यत्रस्थितानि यस्य स तथाभूतो गजः भद्रः-भद्रपदवाच्यो भवति । १ । इति,

इति भद्रलक्षणम् । १ ।

अथ मन्दलक्षणम् २-

“चलवहले”-त्यादि-चलवहलविषमचर्मा-चलं वहलं विषमं चर्म यस्य
 स तथाभूतः-श्लथस्थूलवालयुक्तचर्मवान्, स्थूलशिराः-विशालललाटः-वृहत्कुम्भ-
 स्थल इत्यर्थः, स्थूलकेन-स्थूलेन पेचकेन-पुच्छमूलेन सहितः स्थूलनखदन्तवालः-
 स्थूला नखदन्तवाला यस्य स तथाभूतः, हरिपिङ्गललोचनः-हरेः-सिंहस्य पिङ्गले-
 श्वेतरक्तवर्णे लोचने इव लोचने यस्य स तथाभूतो गजो मन्दः-मन्दपदवाच्यो भवति २।

इति मन्दलक्षणम् । २ ।

મધુ(શહદ) ગુટિકા જેસે પીલે(જાઈવાલે) હોતેહૈ, સ્થૂલ, સૂક્ષ્મ ઓર સૂક્ષ્મ-
 તરૂપ સે ક્રમશઃ જિસકી પૂંછ દીર્ઘદીર્ઘતર તથા-સુન્દરતા ભરી હોતી
 હૈ. તથા-જિસકે સમસ્ત અંગ અપને પ્રમાણ લક્ષણ સે યુક્ત હોતે હૈ
 એસા વહ ગજ ભદ્ર કહા ગયા હૈ-૧

મન્દલક્ષણ-“ચલવહલે”-ઇત્યાદિ. વહુત વહે ચઝલ મોટે
 ચાલોં સે જિસકી ચમડી યુક્ત હોતી હૈ. કુમ્ભસ્થલ જિસકા વિશાલ
 હોતા હૈ પુચ્છ કા મૂલ ભાગ જિસકા સ્થૂલ હોતા હૈ. નખ-દાંત ઓર
 ચાલ જિસકે સ્થૂલ હોતે હૈ. ઓર આંચે જિસકી સિંહ કી આંચોં જેસી
 શ્વેત-રક્તવાલી હોતી હૈ એસા વહ હાથી મન્દ કહા ગયા હૈ-૨ ।

ભદ્રલક્ષણ-“મધુગુટિકા” ઇત્યાદિ-જેનાં નેત્ર મધુગુટિકા સમાન પીળા વર્ણના
 હોય છે, સ્થૂલ, સૂક્ષ્મ અને સૂક્ષ્મતર રૂપે જેની પૂંછડી દીર્ઘ, દીર્ઘતર તથા
 સુંદરતાભરી હોય છે, તથા જેનાં સમસ્ત અંગ સપ્રમાણ હોય છે એવા
 હાથીને ભદ્રગજ કહે છે.

મન્દ લક્ષણ-“ચલવહલે” ઇત્યાદિ-વહુત ચ ચળ અને બડા વાળથી યુક્ત
 ત્વચાવાળા, વિશાળ કુમ્ભસ્થળવાળા, જેની પૂંછડીનો મૂળ ભાગ સ્થૂલ હોય
 થા ૭૭

મન્વીમૂલચિન્તા, યદ્વા-મન્દજનમનસ્તુરપમના-નાત્યન્તધીરઃ, एवं मृगमना-
 मृगस्य मन इव मनो यस्य स मृगमना = मृगमन स्तद्वृगमना-भीरु, मृगस्य मनस्य
 श्रुत्वा मपतीति पुराणेष्वपि कस्यचिदेवं तदिति दृष्टान्तसाधर्म्यमत्र बोध्यम्,

सङ्कीर्णमनाः-भद्रादिकिञ्चिद्विच्छिन्नसम्पन्नमना-विचित्रमना इत्यर्थः, पुरुषास्तु
 नक्षयमाणभद्रादिसप्तमनुसृत्य मन्त्रस्थापन्नस्वरूपा बोध्याः ।

મનવાલા-ધીર છે । કિતનેક મનુષ્ય એસે હોતે હેં જો જાતિ અર્થ-આશ્ચર્ય
 સે બી પ્રશસ્ત હોતે હેં ઓર-મનસે પ્રશસ્ત-ધીર હોતે હેં એસા યદ્ મયમ
 મજ્જા ફા અર્થ છે । જિસકા ચિત્ત મન્વીમૂલ હોના છે અથવા મન્દજનકે
 મન જેસા જિસ કા મન હોતો હેં યદ્-“મન્દમના” છે યદ્ મનુષ્ય
 અત્યન્ત ધીર નહીં હોના છે । તથા-મૃગ કે મન જેસા જિસકા મન હોતો
 હેં યદ્ મનુષ્ય “મૃગમના” છે, એસા મનુષ્ય મીરુ સ્વમાવ કા હોતો
 છે, અર્થાત્-મૃગકા મન અશ્રુત હોતો છે इसी तरह से किसी मनुष्य
 का मन भी अश्रुत होता है इस तरह से मनुष्यों में इन दृष्टान्तों की
 साधर्म्यता घटती है । जिसका मन भद्रादि के कुछ कुछ लक्षणोंवाला
 होता है अर्थात्-जो विचित्र मन वाला होता है यद्-“सङ्कीर्णमना”
 -પુરુષ છે । इन भद्रादिकों के कथित लक्षण अनुसार पुरुषों में प्रशस्तता
 और अप्रशस्तता जाननी चाहिये । भद्रादिकों के लक्षण गाथा चतुष्टय
 से इस प्रकार कहे गये हैं-भद्र लक्षण, मधुगुटिका, इत्यादि जिसके नेत्र

છે શાશ્વન્તિઃ સૂત્રમાં તેને બા પ્રમાણે અર્થ બતાવી શકાય-દેહલાઠ માણસો
 જોવાં હોય છે કે જેઓ જાતિ અને આકારની અપેક્ષાએ પણ પ્રશસ્ત હોય
 છે અને ધીર મનવાળા હોય છે, જોવાં માણસોને ‘ભદ્ર-ભદ્રમનવાળા’ કહે છે

બીજા ભાગ્યને બાવાજ-દેહલાઠ માણસો મન્વીમૂલ ચિત્તવાળા (પૈર્થ
 આદિ શુદ્ધોદી સંકેત) હોય છે, તેમને મન્દ મનવાળા કહે છે જોવા મનુષ્યો
 અત્યન્ત ધીર હોતા નથી જે માણસનું મન મૃગના જેવું બીરુ અને અલગ
 હોય છે જોરા માણસને મૃગમના કહેવામાં આવે છે જોવા મનુષ્ય મર્યાદા
 અને અમર્યાદ વૃત્તિવાળો હોય છે આ રીતે મનુષ્યમાં બા દૃષ્ટાન્તોની સાધ
 અર્થતા બતાવી શકાય છે જે માણસનું મન ભદ્રાદિક લક્ષણોથી યોગ્ય થોડા
 પ્રમાણમાં સુક્ત હોય છે તે માણસને ‘સંકીર્ણ મનવાળો’ કહે છે જેટલે કે
 જે વિચિત્ર મનવાળો હોય છે તેને બા પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે આ
 ભદ્રાદિકોના કથિત લક્ષણો અનુસાર પુરુષોમાં પ્રશસ્તતા અને અપ્રશસ્તતા
 અમલની ભદ્રાદિકોનાં લક્ષણો વાચ બાધા દ્વારા બા પ્રમાણે કહ્યા છે—

પૂર્વોક્તભદ્રાદિલક્ષણં ગથાચતુષ્ટયેનાઽઽહ-તત્ર ભદ્રલક્ષણમ્—“ મધુગુલિય ”
 इत्यादि-मधुगुटिकापिङ्गलाक्षः-मधुनः-गुटिका-वटिका मधुगुटिका, तद्वत् पिङ्गले-
 पिङ्गलवर्णे अक्षिणी-नेत्रे यस्य स मधुगुटिका पिङ्गलाक्षः, आनुपूर्व्यसुजातदीर्घला-
 ङ्गूलः-आनुपूर्व्येण-स्थूलसूक्ष्मसूक्ष्मतररूपक्रमेण सुजातं-सौन्दर्येण संस्थितं दीर्घं-
 बृहत् लाङ्गूलं-पुच्छं यस्य स तथा भूतः, पुरतः-अग्रे-अग्रभागे उदग्रः-उन्नतः-
 अग्रदेशावच्छेदेनोन्नतः-उन्नताग्रभाग इति यावत्, धीरः-धैर्यवान् क्षोभरहितः,
 सर्वाङ्गसमाहितः-सर्वाणि अङ्गानि सम्-सम्पक्व प्रमाणलक्षणसम्पन्नत्वेन आहितानि-
 व्यवस्थितानि यस्य स तथाभूतो गजः भद्रः-भद्रपदवाच्यो भवति । १ । इति,
 इति भद्रलक्षणम् । १ ।

अथ मन्दलक्षणम् २—

“ चलबहुले ”—त्यादि-चलबहुलविषमचर्मा-चलं बहलं विषमं चर्म यस्य
 स तथाभूतः-श्लथस्थूलवालयुक्तचर्मवान्, स्थूलशिखाः-विशालललाटः-बृहत्कुम्भ-
 स्थल इत्यर्थः, स्थूलकेन-स्थूलेन पेचकेन-पुच्छमूलेन सहितः स्थूलनखदन्तवालः-
 स्थूला नखदन्तवाला यस्य स तथाभूतः, हरिपिङ्गलोचनः-हरेः-सिंहस्य पिङ्गले-
 श्वेतरक्तवर्णे लोचने इव लोचने यस्य स तथाभूतो गजो मन्दः-मन्दपदवाच्यो भवति २।
 इति मन्दलक्षणम् । २ ।

મધુ (શહદ) ગુટિકા જેસે પીલે (જાઈવાલે) હોતેહैं, સ્થૂલ, સૂક્ષ્મ ઔર સૂક્ષ્મ-
 તર રૂપ સે ક્રમશઃ જિસકી પૂંછ દીર્ઘ દીર્ઘતર તથા-સુન્દરતા ભરી હોતી
 હૈ. તથા-જિસકે સમસ્ત અંગ અપને પ્રમાણ લક્ષણ સે યુક્ત હોતે હૈં
 એસા વહ ગજ ભદ્ર કહા ગયા હૈ—૧

મન્દલક્ષણ—“ ચલબહુલે ”—इत्यादि. बहुत बड़े चञ्चल मोटे
 बालों से जिसकी चमड़ी युक्त होती है. कुम्भस्थल जिसका विशाल
 होता है पुच्छ का मूल भाग जिसका स्थूल होता है. नख-दांत और
 बाल जिसके स्थूल होते हैं. और आंखें जिसकी सिंह की आंखों जैसी
 श्वेत-रक्तवाली होती है ऐसा वह हाथी मन्द कहा गया है-२ ।

ભદ્રલક્ષણ—“ મધુગુટિકા ” ઇત્યાદિ-જેનાં નેત્ર મધુગુટિકા સમાન પીળા વર્ણના
 હોય છે, સ્થૂલ, સૂક્ષ્મ અને સૂક્ષ્મતર રૂપે જેની પૂંછડી દીર્ઘ, દીર્ઘતર તથા
 સુંદરતાભરી હોય છે, તથા જેનાં સમસ્ત અંગ સપ્રમાણ હોય છે એવા
 હાથીને ભદ્રગજ કહે છે.

મન્દ લક્ષણ—“ ચલબહુલે ” ઇત્યાદિ-બહુત ચંચળ અને બડા વાળથી યુક્ત
 તથાવાળા, વિશાળ કુમ્ભસ્થળવાળા, જેની પૂંછડીનો મૂળ ભાગ સ્થૂલ હોય
 યા ૭૩

-1 अथ सुगन्धस्थानम् २—

“तनुश्रो” इत्यादि—तनुक-तनुः-कश्च स एव तनुकः, तनुकप्री-
कश्चकृष्टः, तनुकत्वक-कश्चचमौ, तनुकदन्तनस्वयाल-कश्चदन्तनस्वकेषः, मीर-
भयक्षीलः, स्वभावतः, भयहेतुवशात् स्तम्भकर्णहरणादिजघनयुक्तो मीर एव
तत्र-कृष्टविचारणादौ उद्विग्न-उद्वेगपान् प्राप्ती-व्रतनस्वभावः, यो मजः स मृगा-
मृगपदवाच्यो भवति । ५ ।

इति सुगलक्षणम् ॥

अथ सङ्कीर्णवृत्तसप्तमः ४—

“पश्यति” इत्यादि-यस्तु एतेषां-मत्र मन्द मृगरूपाणां हस्तिनां स्तोत्रं स्तोत्र-स्वरूप स्वरूपं मद्रत्वादिगुण हरति-धारयति, तथा रूपेण-धरीराऽऽकृत्वा

मृग लक्षण—“तनुको”—इत्यादि जो शरीरसे पतला होता है, कण्ठ जिसका कृश होता है, चमड़ा जिसका पतला होता है, दाँत, नख, केश भी जिसके कृश-पतले होते हैं स्वभावतः जो भीड़-उरपोक होता है अस्व-अप-के कारणों से, जो, जल्दी डर जाता है, अर्थात्—जिसके कान स्तब्ध स्थिर हो जाते हैं जो—अपने कानों को स्तब्ध स्थिर करने रूप लक्षणों से युक्त होता है कण्ठ विचारणा आदि में उद्वेग वाला बन जाता है तथा—ग्रासी अस्त्रन स्वभाव वाला होता है ऐसा वह गज मृगपद वाच्य होता है—१। सङ्कीर्ण लक्षण “पपत्ति”—इत्यादि जिस हाथी में भद्र-मन्त्र और मृग हाथी के थोड़े—२ लक्षण मिलते हैं, अर्थात्—जो भद्रादि हाथियों के भद्रत्वादि गुणों को थोड़े

જોવા, જેના નખ ઘાત જીતે વાળ સ્વસ્થ હોય જોવો, અને સિંહના સમાન
પ્રવેશ-સ્વસ્થવાળી આંખોવાળો, જે હાથી-હોય છે તેને 'મ હમમ' કહે છે.

મુગ લક્ષણ-‘વનુકો’-પ્રત્યાહિનેનું શરીર પાતળ હોય છે, જેના કંઠકૃય હોય છે, જેની ત્વચા પાતળી હોય છે જેનાં હાંત નખ અને વાળ પાતળા (કૃશ) હોય છે જે સ્વભાવે બીજા (કરપોષક) હોય છે, ગ્રસ્ત-બળને કારણે જે જલ્દી ઠરી જાય છે-બોટસે કે બળને કારણે જેના કાન સ્તબ્ધ (ચિર) થઈ જાય છે, જે પોતાના કાનોને સ્તબ્ધ રિચર કરવાના લક્ષણોથી મુક્ત હોય છે જે કષ્ટ વિચારણા આદિમાં ઉદ્વેગમુક્ત થઈ જાય છે તથા જે ત્રાસી (ત્રસન બુવધી મુક્ત) હોય છે એવા કાશીને મૃગગજ (મૃગ સમાન ગજ) કહે છે.

સહીય લક્ષણ—“અપચિ” ઇત્યાદિ-ને હાથીમાં ભદ્ર, મન્દ અને મૃગમજ્જના થોડા થોડા લક્ષણોના સદ્ભાવ હોય છે, જ્યેષ્ઠે કે ને ભદ્રાદિ હાથીઓના મ કત્વ જ્યાદિ જુઓને થોડા થોડા પ્રમાણમાં ધારણ કરનારો હોય

શીલેન-સ્વભાવેન ચ સઙ્કીર્ણઃ-ભદ્ર મન્દમૃગસ્વભાવમિશ્રો ભવતિ સ ગજઃ
'સઙ્કીર્ણઃ' -સઙ્કીર્ણપદવાચ્યો ભવતીતિ જ્ઞાતવ્યઃ-વૌધ્યઃ ૪૧

અથ ભદ્રાદીનાં મદસમયમાહ—

“ ભદ્રો મઞ્જઙ્ ” ઇત્યાદિ-ભદ્ર-પ્રાગુક્તો ગજઃ, શરદિ-શરદતૌ, માઘતિ-મદોન્મત્તો ભવતિ । મન્દઃ પુનર્વસન્તે માઘતિ । મૃગો હેમન્તે માઘતિ । સઙ્કીર્ણઃ-સર્વકાળે-ઋતુપટ્ટકે માઘતિ । ૫

તત્ર ભદ્રાદીનાં પ્રહરણપ્રકારો યથા—

“ દંતેહિં હળઙ્ ભદ્રો, મંદો હત્યેળ આહળઙ્ હત્યો ।

ગત્તાધરેહિ ય મિઓ, સંકિળ્ળો સન્વઓ હળઙ્ । ૧ । ” ઇતિ,
છાયા—“ દન્તૈર્હન્તિ ભદ્રો, મન્દો હસ્તેનાઽઽહન્તિ હસ્તી ।

ગાત્રાધરાભ્યાં મૃગઃ, સઙ્કીર્ણઃ સર્વૈર્હન્તિ । ૧ । સૂ ૦ ૪૩ ।

પૂર્વ 'સઙ્કીર્ણઃ સઙ્કીર્ણમનાઃ' ઇત્યત્ર મનઃસ્વરૂપમુક્તમ્, અથ વાચઃ સ્વરૂપનિરૂપયિતું વિકથાકથાં પ્રકપતે—

મૂલમ્—ચત્તારિ વિકહાઓ પળત્તાઓ, તં જંહા-ઇતિયકહા ૧,
મત્તકહા ૨, દેસકહા ૩, રાયકહા ૪ । ૧ । ઇતિયકહા ચઙ્ગિહા

—૨ રૂપમેં અપને મેં ધારણ કરતા હૈ. તથા-રૂપ શરીરાકૃતિ સે एवं શીલ સ્વભાવ સે જો સઙ્કીર્ણ હોતા હૈ ભદ્ર-મન્દ ઓર મૃગકે સ્વભાવ સે મિલતા હૈ એસા વહ ગજ સઙ્કીર્ણ કહા ગયા હૈ । ભદ્ર હાથી શરદ ઋતુમેં મદોન્મત્ત (મદમસ્ત) હોતા હૈ, મન્દ હાથી વસન્ત મેં, મૃગ હાથી હેમન્ત મેં, ઓર સઙ્કીર્ણ હાથી છ વો ઋતુવોં મેં મદોન્મત્ત હોતા હૈ ।

“ દંતેહિં હળઙ્ ભદ્રો ઇત્યાદિ

ભદ્ર હાથી દાંતો સે, મન્દ હાથી સૂઢ સે, મૃગ હાથી શરીર-ઔર અધરોષ્ઠ સે, સઙ્કીર્ણ હાથી અપને સમસ્ત અંગોંસે પ્રહાર કરતા હૈ—॥૪૩॥

• છે, તથા શરીરાકૃતિ અને શીલ સ્વભાવની અપક્ષાએ સંકીર્ણ હોય છે, ભદ્ર, મન્દ અને મૃગના સ્વભાવ સાથે જેનો સ્વભાવ મળતો આવે છે, એવા હાથીને 'સંકીર્ણગજ' કહે છે ભદ્ર હાથી શરદ ઋતુમાં મદોન્મત્ત થાય છે, મન્દ હાથી વસન્તમાં, મૃગ હાથી હેમન્તમાં અને સંકીર્ણ હાથી છએ ઋતુમાં મદોન્મત્ત થાય છે

“ દંતેહિં હળઙ્ ભદ્રો, ઇત્યાદિ

ભદ્ર હાથી પોતાના દંતશૂળેથી, મન્દ હાથી પોતાની સૂઢથી, મૃગ હાથી શરીર અને અધરોષ્ઠથી અને સંકીર્ણ હાથી પોતાના સમસ્ત અંગોથી પ્રહાર કરે છે ॥ સૂ. ૪૩ ॥

पणत्ता, त जहा-इस्थीणं जाइकहा १, इस्थीणं कुलकहा २,
इस्थीणं रूवकहा ३, इस्थीणं णेवत्थकहा ४ ॥२॥ भत्तकहा चउ
विहा पणत्ता, त जहा-भत्तस्स आवाक्कहा १, भत्तस्स णिवा
क्कहा २, भत्तस्स आरम्भकहा ३, भत्तस्स णिट्ठाणकहा ४। ३।
देसकहा चउविहा पणत्ता, त जहा-देसविहिक्कहा १, देसविक
प्पकहा २, देसच्छदकहा ३, देसणेवत्थकहा ४ ॥४॥

रायकहा चउविहा पणत्ता, त जहा-रन्नो अइयाणकहा
१, रन्नो निज्जाणकहा २, रन्नो घलवाइणकहा ३, रन्नो कोस
कोट्टागारकहा ४। ॥ ५ ॥

चउविहा धम्मकहा पणत्ता, त जहा-अक्खेवणी १, विक्खे
वणी २, सवेयणी ३, णिव्वेयणी ४। १। अक्खेवणीकहा चउ
विहा पणत्ता, त जहा आयार अक्खेवणी १, ववहार अक्ख
वणी २, पणत्ति अक्खेवणी ३, दिट्ठिवाय अक्खेवणी ४ ॥२॥
विक्खेवणी कहा चउविहा पणत्ता, त जहा-ससमय कहेइ,
ससमय कहित्ता परसमय कहेइ १, परसमय कहित्ता ससमय
ठावपित्ता भवइ २, सम्मावाय कहेइ, सम्मावाय कहित्ता मिच्छा
वाय कहेइ ३, मिच्छावाय कहित्ता सम्मावाय ठावइत्ता भवइ
४। ३। सवेयणी कहा चउविहा-पणत्ता, त जहा-इहलोग
संवेयणी १, परलोगसंवेयणी २ आयसरिरसवेयणी ३, परसरिर
सवेयणी ४। ४ ॥

निव्वेयणी कहा चउव्विहा पणत्ता, तं जहा--इहलोए
दुच्चिन्ना कम्मा इहलोए दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति १, इह-
लोए दुच्चिन्ना कम्मा परलोए दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति २,
परलोए दुच्चिन्ना कम्मा इहलोए दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति
परलोए दुच्चिन्ना कम्मा परलोए दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति४।

इहलोए सुच्चिन्ना कम्मा इहलोए सुहफलविवागसंजुत्ता
भवंति १, इहलोए सुच्चिन्ना कम्मा परलोए सुहफलविवागसं-
जुत्ता भवंति २, एवं चउभंगो ४ ॥ सू० ४४ ॥

छाया—चतस्रो विकथाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—स्त्रीकथा १, भक्तकथा २, देश-
कथा ३, राजकथा ४। १। स्त्रीकथा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—स्त्रीणां जातिकथा
१, स्त्रीणां कुलकथा २, स्त्रीणां रूपकथा ३, स्त्रीणां नेपथ्यकथा ४। २। भक्तकथा
चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—भक्तस्याऽऽवापकथा, १, भक्तस्य निर्वापकथा २, भक्त-
स्याऽऽरम्भकथा ३, भक्तस्य निष्ठानकथा ४। ३॥

देशकथा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—देशविधि कथा १, देशविकल्पकथा २,
देशच्छन्दःकथा ३, देशनेपथ्यकथा ४। ४। राजकथा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—
राज्ञोऽतियानकथा १, राज्ञो निर्याणकथा २, राज्ञो वलवाहनकथा ३, राज्ञः
कोशकोष्ठागारकथा ४। ५।

चतुर्विधा धर्मकथा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—आक्षेपणी १, विक्षेपणी २, संवेदनी ३,
निर्वेदनी ४। १। आक्षेपणी कथा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—आचाराऽऽक्षेपणी १
व्यवहाराऽऽक्षेपणी २ प्रज्ञप्त्याक्षेपणी ३ दृष्टिवादाऽऽक्षेपणी ४। २। विक्षेपणी
कथा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—स्वसमयं कथयति, स्वसमयं कथयित्वा परसमयं
कथयति १, परसमयं कथयित्वा स्वसमयं स्थापयिता भवति २, सम्यग्वादं कथ-
यति, सम्यग्वादं कथयित्वा मिथ्यावादं कथयति ३, मिथ्यावादं कथयित्वा सम्य-
ग्वादं स्थापयिता भवति ४। ३। संवेदनी कथा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—इहलो-
कसंवेदनी १, परलोकसंवेदनी २, आत्मशरीरसंवेदनी ३, परशरीरसंवेदनी ४। ४।

निर्वेदनी कथा चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—इहलोके दुश्चीर्णानि कर्माणि इह-
लोके दुःखफलविपाकसंयुक्तानि भवन्ति १, इहलोके दुश्चीर्णानि कर्माणि परलोके

पण्णत्ता, त जहा-इत्थीणं जाइकहा १, इत्थीणं कुलकहा २, इत्थीणं रूवकहा ३, इत्थीणं णेवत्थकहा ४ ॥२॥ भत्तकहा चउ विहा पण्णत्ता, त जहा-भत्तस्स आवायकहा १, भत्तस्स णिवा वकहा २, भत्तस्स आरम्भकहा ३, भत्तस्स णिट्ठाणकहा ४। ३। देसकहा चउविहा पण्णत्ता, त जहा-देसविहिक्कहा १, देसविक प्पकहा २, देसच्छदकहा ३, देसणेवत्थकहा ४ ॥४॥

रायकहा चउविहा पण्णत्ता, त जहा-रन्तो अइयाणकहा १, रन्तो निज्जाणकहा २, रन्तो बलवाहणकहा ३, रन्तो फोस कोट्टागारकहा ४। ॥ ५ ॥

चउविहा धम्मकहा पण्णत्ता, त जहा-अक्खेवणी १, विक्ख वणी २, सवेयणी ३, णिव्वेयणी ४। १। अक्खेवणोकहा चउ विहा पण्णत्ता, त जहा-आयार अक्खेवणी १, ववहार अक्ख वणी २, पण्णत्ति अक्खेवणी ३, विट्ठिवाय अक्खेवणी ४ ॥२॥ विक्खेवणी कहा चउविहा पण्णत्ता, त जहा-ससमय कहेइ, ससमय कहित्ता परसमय कहेइ १, परसमय कहित्ता ससमय ठावयित्ता भवइ २, सम्मावाय कहेइ, सम्मावाय कहित्ता मिच्छा वाय कहेइ ३, मिच्छावाय कहित्ता सम्मावाय ठावइत्ता भवइ ४। ३। सवेयणी कहा चउविहा-पण्णत्ता, त जहा-इहलोग सवेयणी १, परलोगसवेयणी २ आयसरीरसवेयणी ३, परसरीर सवेयणी ४। ४ ॥

“ઈત્યિક્કહા” ચઝન્વિહા” ઇત્યાદિ—સ્ત્રીકથા ચતુર્વિધા જાત્યાદિભેદેન, તત્ર સ્ત્રીણાં જાતિકથા—જાત્યા જાતેર્વા કથા—બ્રાહ્મણીપ્રભૃતીનામન્યતમાયાઃ પ્રશંસા નિન્દા વા ૧, એવં સ્ત્રીણાં કુલકથા—ઉત્કૃષ્ટાપકૃષ્ટકુલજાતાનાં સ્ત્રીણાં કસ્યાશ્ચિત્ સ્ત્રિયાઃ પ્રશંસા કસ્યાશ્ચિન્નિન્દા વા ૨, તથા સ્ત્રીણાં રૂપકથા—આન્ધ્રીપ્રભૃતીનાં મધ્યે કસ્યાશ્ચિદ્ રૂપસ્ય પ્રશંસા નિન્દા વા ૩, તથા—સ્ત્રીણાં નેપથ્યકથા—મહારાષ્ટ્રીપ્રભૃતીનાં સ્ત્રીણાં કસ્યાશ્ચિત્ કચ્છચન્ધનાદિવેષસ્ય પ્રશંસા નિન્દા વા ૪।

સ્ત્રીકથાયાં ચૈતે દોષાઃ—“આયપરમોહુદીરણં ઉઢાહો સુત્તમાઈ પરિહાણી। વંભવયસ્સ અગુત્તી પસંગદોસા ય ગમણાદો। ૧।”

દેશ સમ્બન્ધી કથાકા નામ-દેશ કથા હૈ ઓર રાજસમ્બન્ધી કથા કા નામ રાજકથા હૈ। “ઈત્યિક્કહા ચઝન્વિહા”—ઈત્યાદિ, સ્ત્રી કથા ચાર પ્રકારકી હૈ—જૈસે-સ્ત્રિયોં કી જાતિ કી કથા, ૧ સ્ત્રિયોં કી કુલ કી કથા, ૨ સ્ત્રિયોં કી રૂપ કી કથા, ૩ ઓર-સ્ત્રિયોં કી નેપથ્યકી કથા, ૪। બ્રાહ્મણી આદિ કિસી એક કી પ્રશંસા, અથવા નિન્દા કરના યહ-સ્ત્રી કથાકા પ્રથમ ભેદ હૈ, ૧। ઉત્કૃષ્ટ-અપકૃષ્ટ કુલ મેં ઉત્પન્ન હુઈ સ્ત્રિયોં મેં સે કિસી એક કી પ્રશંસા-વા-નિન્દા કરના યહ-સ્ત્રી કથાકા દ્વિતીય ભેદ હૈ। આન્ધ્રી (આન્ધ્ર પ્રદેશમેં જન્મી હુઈ) સ્ત્રિયોં મેં સે કિસી એક સ્ત્રી કી રૂપકી પ્રશંસા-અથવા નિન્દા કરના યહ-સ્ત્રી કથાકા તીસરા ભેદ હૈ—૩ તથા-મહારાષ્ટ્રી આદિક સ્ત્રિયોં મેં સે કિસી એક સ્ત્રીકે કચ્છ ચન્ધનાદિ વેષ કી પ્રશંસા કરના અથવા કિસી કી વેષ કી નિન્દા કરના યહ-સ્ત્રી કથા કા ચતુર્થ ભેદ હૈ-૪। સ્ત્રી કથા મેં-ચે દોષ હૈ—“આય પરમોહુદીરણં”—ઈત્યાદિ—

અને રાજા વિષેની કથાને રાજકથા કહે છે. “ઈત્યિક્કહા ચઝન્વિહા” ઇત્યાદિ. સ્ત્રીકથા ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) સ્ત્રીઓની ભતિની કથા, (૨) સ્ત્રીઓના કુળની કથા, (૩) સ્ત્રીઓના રૂપની કથા અને (૪) સ્ત્રીઓના નેપથ્યની કથા.

બ્રાહ્મણી આદિ એક ભતિની સ્ત્રીની પ્રશંસા અથવા નિન્દા કરવી તેનું નામ સ્ત્રીવિષયક ભતિકથા છે. ઉત્તમ અથવા નીચ કુળની વાત કરીને કોઈ કુળમાં જન્મેલી સ્ત્રીની પ્રશંસા કરવી અને કોઈ કુળમાં જન્મેલી સ્ત્રીની નિન્દા કરવી, તેને સ્ત્રીવિષયક કુળકથા કહે છે. સ્ત્રીના રૂપની પ્રશંસા અથવા નિન્દા કરવી તેનું નામ રૂપકથા છે. (૪) મહારાષ્ટ્રીય આદિ સ્ત્રીઓની વેષભૂષાની પ્રશંસા કરવી અને કોઈ બીજી સ્ત્રીના વેષની નિન્દા કરવી તેનું નામ નેપથ્ય કથા છે. સ્ત્રીકથામાં જે દોષો છે તે આ ગાથામાં પ્રકટ કર્યા છે—

“આય પરમોહુદીરણ” ઇત્યાદિ—

दुःस्वफलविपाकसयुक्तानि भवन्ति २ परलोके दुःखीर्णानि कर्माणि इहलोके दुःस्व
फलविपाकसयुक्तानि भवन्ति ३, परलोके दुःखीर्णानि कर्माणि परलोके दुःस्वफल
विपाकसयुक्तानि भवन्ति ४।

इहलोक दुःखीर्णानि कर्माणि इहलोके सुस्वफलविपाकसयुक्तानि भवन्ति १,
इहलोक दुःखीर्णानि कर्माणि परलोके सुस्वफलविपाकसयुक्तानि भवन्ति २, एवं
चतुर्मेव ४। १। सू०। ४४।

टीका—“वचारि विक्रमाभो” इत्यादि—विक्रया—विक्रया—समयवाच
कतया प्रतिपक्षीयताः, कथा—वचनपद्धतय इति विक्रयाः, तावत्स पद्धताः,
तपसा—स्त्रीकथा—स्त्रीणां स्त्रीषु वा कथा स्त्रीकथा, स्त्रीकथायां विक्रयात्त व समय
परिपन्थित्वादोषम् १।

एव भक्तकथा—भक्त—भोजनं तस्य कथा २, देशकथा—३ राजकथा—४।

“सङ्कीर्ण—सङ्कीर्णमना” —इस पाठ में मनका स्वरूप कह दिया
है इसलिये अब सूत्रकार वचन का स्वरूप प्रकट करने के लिये विक्रयाका
व्ययन करते हैं—“वचारि विक्रमाभो पण्यताभो” —इत्यादि—४४

टीकार्थ—चार विक्रयाएँ कही गई हैं, जैसे—स्त्री कथा, १ भक्त कथा, २ देश
कथा, ३ और राजकथा ४, । समय में बाधक होने के कारण जो उसका
प्रतिपक्ष होती है ऐसी वचन पद्धतियाँ विक्रया हैं। स्त्रियों की कथा
करना या स्त्रियों में बैठ कर कथा करना ही स्त्री कथा है। स्त्री कथा
को विक्रया कहने का कारण यह है कि—बहु समय का परिपन्थी विपक्ष
है। भक्त नाम भोजन का है, भोजन की कथाका नाम भक्त कथा है।

“सङ्कीर्ण—सङ्कीर्णमना” आ सूत्रपाठ श्रुत्य भवन्तु स्वयं प्रकट भव
ते हवे सूत्रकार वचनानु स्वयं प्रकट करवा निमित्ते विक्रया—कथानु स्वयं
प्रकट करे ३ “वचारि विक्रमाभो पण्यताभो” इत्यादि—

टीकार्थ—चार विक्रयाओं कही ३—(१) स्त्रीकथा (२) भक्तकथा, (३) देशकथा
अने (४) राजकथा आ आरे प्रकटनी कथाओं सम्बन्धना पाठनमां व्यापकस्व
होवाने कारणे तेभने विक्रयाओं कही ३ स्त्रीकथा विषे पाठो करनी अथवा
स्त्रीकथा वचने कथीने पाठो करनी तेजु नाम स्त्रीकथा ३ स्त्रीकथाने विक्रया
कहेवानु कारण जे ३ के ते सम्बन्धी परिपन्थी (विपक्षभूत) ३ “भक्त”
कहेवे भोजन—भोजन सम्बन्धी पाठोने भक्तकथा कहे ३ देश विषेनी कथाने

સંપદ્યન્તે નાલ્પવક્ષિતાપેનેત્યાદિરૂપા ૩, ભક્તસ્ય નિષ્ઠાનકથા-નિષ્ઠાનં શતસહસ્ર-
પ્રમૃતિ દ્રવ્યં તસ્ય કથા “ અમુકભોજને एतावद् द्रव्यमुपयुज्यते ’ इत्येवंરૂપા
નિષ્ઠાન કથેતિ ૪। અત્ર ચૈતે દોષા:-

“ આહારમંતરેણ વિ ગેહીઓ જાડે સડેગાલં ।

અજિંદિય ઓદરિયાવાઓ ડ અણુન્નદોસાય । ૧ । ”

છાયા-“ આહારમન્તરેણાપિ મૃદ્ધયા જાયતે સાઙ્ગારમ્

અજિતેન્દ્રિયતા ઔદરિકવાદસ્તુ અનુજ્ઞાદોષાથ ૧૧। ઇતિ, ૪।

“ દેસકહા ચડવિહા ” ઇત્યાદિ-દેશસ્ય મગધાદેઃ કથા દેશકથા,
સા ચતુર્વિધા પ્રજ્ઞા, તદ્વથા-દેશવિધિકથા-દેશે-મગધપ્રમૃતૌ વિધિઃ-વિરચના-
ભોજનમણિમયભૂમિકાદીનાં નિર્માણં, તસ્ય કથા તથા ૧,

તાપ સે અચ્છી બનતી હૈં, ઓર-અલ્પ અગ્નિ તાપ સે અચ્છી નહીં બનતી
હૈ ઇત્યાદિ, યહ ભોજન કથાકા તૃતીય ભેદ હૈ-૩ । શત-સહસ્ર આદિ
દ્રવ્યકા નામ નિષ્ઠાન હૈ, હસ દ્રવ્ય કી કથા કરના કિ અમુક ભોજનમેં
હતના દ્રવ્ય ટર્ચ જાય (ટર્ચ કિયા જાય) તમી વહ ટીક-૨ બનતા
હૈ, યહ ભક્તકા ચૌથા ભેદ હૈ-૪ હસ ભક્ત કથા મેં હતને દોષ હૈ-
“ આહારમંતરેણ વિ ”-ઇત્યાદિ । દેસ કહા ચડવિહા-” ઇત્યાદિ--
મગધ આદિ દેશ કી કથા કરના, યહ-દેશકથા હૈ, જો કિ ચાર
પ્રકાર કહી ગઈ હૈ, જૈસે-દેશવિકથા-૧ દેશવિકલ્પ કથા-૨ દેશ-
ચ્છન્દ કથા-૩ ઓર દેશનેપથ્ય કથા-૪ । મગધ આદિ દેશ મેં ભોજન-
મણિમય ભૂમિ આદિ કા નિર્માણ અચ્છા હોતા હૈ, યા-ચુરા હોતા હૈ

વસ્તુઓ આટલી અગ્નિના તાપથી સારી બને છે-ઓછાં તાપથી સારી બનતી
નથી, આ પ્રકારની કથાને ત્રીજા ભેદમાં ગણાવી શકાય છે

ભોજનના નિષ્ઠાનની કથા-શત, સહસ્ર આદિ દ્રવ્યનું નામ નિષ્ઠાન છે.
અમુક ભોજનમાં આટલું દ્રવ્ય ખર્ચ કરવામાં આવે, તો જ તે ભોજન સાડ
બને છે, અથવા અમુક માણસે અમુક ભોજન સમારંભમાં આટલું દ્રવ્ય
વાપર્યું, આ પ્રકારની કથાને આ ચોથા ભેદમાં મૂકી શકાય છે.

આ ભક્તકથામાં આટલા દોષ છે-“ આહારમંતરેણ વિ ” ઇત્યાદિ.

“ દેસકહા ચડવિહા ” ઇત્યાદિ-મગધ દેશની કથા કરવી તેનું નામ
દેશકથા છે દેશકથાના ત્રીજે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) દેશ વિધિ કથા,
(૨) દેશ વિકલ્પ કથા, (૩) દેશ છન્દ કથા, અને (૪) દેશ નેપથ્ય કથા.

(૧) મગધ આદિ દેશમાં ભોજન, મણિમય ભૂમિ આદિનું નિર્માણ
સાડ થાય છે કે નરસુ થાય છે, એવી જે વાત કરાય છે તેને દેશ વિધિ
સ ૭૮

છાયા—“ આત્મપરમોદોદીરણા ઉદ્ધાત્ઃ સુખાદિપરિહાસિ ।

પ્રશ્નવત્સ્યાગુપ્તિઃ પ્રસન્નદોષાશ્ચ ગમનાવયઃ ।૧૧” इति,

“મત્તકદા પડવિદ્યા”—ઈત્યાદિ—મત્તકદા પડવિદ્યા પ્રજ્ઞા, તથા—મત્તકસ્ય—આવાપકયા—આવાપ—શાકઘૃતાદિ, તસ્ય કયા—અમુકરસવત્પામિયમ્નિ શાકઘૃતાદીન્યુપયુગ્યન્ત ઇત્યેવે રૂપા કયા ૧, મત્તકસ્ય નિર્વાપકયા—નિર્વાપ—પક્વા પક્વ આહાર, તસ્ય કયા—અમુકરસવત્પામેતાવન્તઃ પક્વાપન્થાન્નમ્પશ્ચનચિદેષા ઉપયુજ્યન્ત ઇત્યેષલક્ષણા કયા ૨, મત્તકસ્ય આરમ્ભકયા—આરમ્ભ—અમ્ભાપારમ્ભા તસ્ય કયા—પતાવતા પદ્ધિતાપેન સંયાવાદિવસ્તુનિ (શ્વચાદિ પ્રસિદ્ધઃ) પશ્ચસ્તાનિ

“મત્ત કદા પડવિદ્યા”—ઈત્યાદિ, મત્તકદા ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ છે, જેસે મત્ત કે આવાપકી કયા, ૧' મત્ત કે નિર્વાપકી કયા, ૨ મત્ત કે આરમ્ભ કી કયા, ૩' ઓર મત્ત કે નિષ્ઠાન કી કયા, ૪ । શાક ઘૃત આદિ કા નામ આવાપ છે, મત્ત સમ્બંધી શાક ઘૃતાદિ કી કયા કરના કિ—અમુક રસવન્તી મેં (રસોઈ મેં) ઇતને શાક-પા એસે ૨ શાક ઘૃતાદિ ઉપમોગ મેં લાવે જાતે હિં, એસી કયા મત્ત કયા કા પ્રથમ મેદ છે । પક્વા ઉપકવ આહારકા નામ નિર્વાપ છે, ઇસ મોજન સમ્બંધી નિર્વાપ કી કયા કરના કિ—અમુક “રસવન્તી” મેં ઇતને પક્વાપ્ત ઓર—ઇતને અપક્વાપ્ત ઉપયુક્ત હોતે હિં એસી કયા મોજન કયા કા દ્વિતીય મેદ હિં । મોજન કે વિષય મેં અગ્નિ આદિક કે આરમ્ભ કી કયા કરના કિ—સંયાવ—“શ્લુષા” અદિ વસ્તુપ ઇતને અગ્નિ કે

‘મત્તકદા પડવિદ્યા’ इति इति—मत्त कथानां पञ्च व्याख्यानं नीचे प्रभाष्ये कथा छे—(१) मत्तना आवापनी कथा, (२) मत्तना निर्वापनी कथा, (३) मत्तना आरम्भनी कथा અને (४) मत्तना निष्ठाननी कथा

“મત્તના આવાપની કયા”—શાક થી આદિનું નામ ‘આવાપ’ છે અમુક ભોજનમાં આટલાં શાક, આટલાં મૃતાદિ ઉપયોગમાં લીધાં હતાં આ પ્રકારની ભોજનના વિષયમાં જે વાતો કરવામાં આવે છે, તેને ભોજનના આવાપની કયા કહે છે

(૨) ‘ભોજનના નિર્વાપની કયા’—પક્વાપકવ આહારને નિર્વાપ કહે છે અમુક ભોજન સમારંભમાં આટલા પક્વાપ અને આટલા અપક્વાપ ઉપયોગમાં લેવાય છે અથવા લેવામાં આ પા હતા, આ પ્રકારની કથાને આ બીજા ભેદમાં મૂકી શકાય છે.

(૩) ભોજનના આરંભની કયા—ભોજનના વિષયમાં અગ્નિ આદિના આરંભની વાત કરવી તેનું નામ આરંભની કયા છે જેમકે ચીરો આદિ

સંપદ્યન્તે નાલ્પવહ્નિનાપેનેત્યાદિરૂપા ૩, ભક્તસ્ય નિષ્ઠાનકથા-નિષ્ઠાનં શતસહસ્ર-
પ્રમૃતિ દ્રવ્યં તસ્ય કથા “ અમુકભોજને एतावद् द्रव्यमुपयुज्यते ’ इत्येवંરૂપા
નિષ્ઠાન કથેતિ ૪। અત્ર ચૈતે દોષા:-

“ આહારમંતરેણ વિ ગેહીઓ જાણે સર્વગાલં ।

અજિંદિય ઓદરિયાવાઓ ડ અણુન્નદોસાય । ૧ । ”

છાયા--“ આહારમન્તરેણાપિ મૃદ્ધયા જાયતે સાજ્ઞાસ્ય

અજિતેન્દ્રિયતા ઔદરિકવાદસ્તુ અનુજ્ઞાદોષાશ્ચ । ૧। ઇતિ, ૪।

“ દેસકહા ચડવિહા ” ઇત્યાદિ-દેશસ્ય મગધાદેઃ કથા દેશકથા,
સા ચતુર્વિધા પ્રજ્ઞાતા, તથા-દેશશ્રિધિકથા-દેશે-મગધપ્રમૃતૌ વિધિઃ-વિરચના-
ભોજનમણિમયભૂમિકાદીનાં નિર્માણં, તસ્ય કથા તથા ૧,

તાપ સે અચ્છી બનતી હૈં, ઔર-અલ્પ અગ્નિ તાપ સે અચ્છી નહીં બનતી
હૈ ઇત્યાદિ, યહ ભોજન કથાકા તૃતીય ભેદ હૈ-૩ । શત-સહસ્ર આદિ
દ્રવ્યકા નામ નિષ્ઠાન હૈ, હસ દ્રવ્ય કી કથા કરના કિ અમુક ભોજનમેં
હતના દ્રવ્ય ટ્વર્ચા જાય (ટ્વર્ચ કિયા જાય) તખી યહ ઠીક-૨ બનતા
હૈ, યહ ભક્તકા ચૌથા ભેદ હૈ-૪ હસ ભક્ત કથા મેં હતને દોષ હૈં—
“ આહારમંતરેણ વિ ”—ઇત્યાદિ । દેસ કહા ચડવિહા-” ઇત્યાદિ—
મગધ આદિ દેશ કી કથા કરના, યહ-દેશકથા હૈ, જો કિ ચાર
પ્રકાર કહી ગઈ હૈ, જૈસે—દેશવિકથા-૧ દેશવિકલ્પ કથા-૨ દેશ-
ચ્છન્દ કથા-૩ ઔર દેશનેપથ્ય કથા-૪ । મગધ આદિ દેશ મેં ભોજન-
મણિમય ભૂમિ આદિ કા નિર્માણ અચ્છા હોતા હૈ, યા-બુરા હોતા હૈ

વસ્તુઓ આટલી અગ્નિના તાપથી સારી બને છે-ઓછાં તાપથી સારી બનતી
નથી, આ પ્રકારની કથાને ત્રીજા ભેદમાં ગણાવી શકાય છે

ભોજનના નિષ્ઠાનની કથા—શત, સહસ્ર આદિ દ્રવ્યનું નામ નિષ્ઠાન છે.
અમુક ભોજનમાં આટલું દ્રવ્ય ખર્ચ કરવામાં આવે, તો જ તે ભોજન સાચું
બને છે, અથવા અમુક માણસે અમુક ભોજન સમારંભમાં આટલું દ્રવ્ય
વાપર્યું, આ પ્રકારની કથાને આ ચોથા ભેદમાં મૂકી શકાય છે.

આ ભક્તકથામાં આટલા દોષ છે—“ આહારમંતરેણ વિ ” ઇત્યાદિ.

“ દેસકહા ચડવિહા ” ઇત્યાદિ—મગધ દેશની કથા કરવી તેનું નામ
દેશકથા છે દેશકથાના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) દેશવિધિ કથા,
(૨) દેશ વિકલ્પ કથા, (૩) દેશ છન્દ કથા, અને (૪) દેશ નેપથ્ય કથા.

(૧) મગધ આદિ દેશમાં ભોજન, મણિમય ભૂમિ આદિનું નિર્માણ
સાચું થાય છે કે નરસુ થાય છે, એવી જે વાત કરાય છે તેને દેશ વિધિ

દશવિકલ્પકથા—દેશે વિકલ્પાઃ—સત્યાદિનિષ્પત્તિ, ચમકૂપતઢાગમચનપદ્ધતિ
નિર્માણલક્ષણમ્ દેશવિકલ્પાઃ, તસ્ય કથા ૨,

દેશચ્છન્દ કથા—દેશે છન્દ—ગમ્યાગમ્યવિમાગ, યથા ‘ છાટ ’ દેશે માતુઃ
કન્યા ગમ્યા વચિન્માતુલમગિની ચ, તદ્વપદશઽગમ્યા સેતિ દેશચ્છન્દઃ, તસ્ય
કથા દેશચ્છન્દઃકથા ૨૬ ।

દેશનેપથ્યકથા—દેશે નેપથ્યસ્ય સ્ત્રીપુરુષાણાં સ્વાભાવિકસ્ય વેપસ્ય તથાઽઽ
ક્ષારરચિતસ્યઃ ચ કથો દેશનેપથ્યકથા ૪। ૩૬ ચેતે વોપાઃ—

“ રાગદોસુપ્પત્તી સપત્તવરપક્ષમ્થો ય મહિગરમ્ ।

બહુગુણ ઇમોષિ વૈસો સોઽ ગમર્ણં ચ અન્નેસિં । ૧ । ” ઇતિ,

છાયા—“ રાગદોસુપ્પત્તિઃ સ્વપ્તઃ—પરપક્ષાભ્યામવિકરણમ્ ।

બહુગુણ એવ ઇતિ દેશઃ શ્રુત્વા ગમન ચાન્વેપામ્ । ૧ । ”

એસી કથા કરને । કા નામ—દેશવિકલ્પા હૈ—૧ મગધાદિ દેશ મેં
ચાન્ય ઉત્પાદન વિધાન કી કથા, એ—યમ કૂપ તઢાગ મધન માદિ
કે નિર્માણ કી કથા કરના યહ દેશવિકલ્પા હૈ—૨ દેશચ્છન્દ
કથા—દેશાદિ કો લેકર ગમ્યાઽગમ્ય આદિ કી કથા કરના, જેસે—
છાટ દેશ મેં મામા કી કન્યા ગમ્ય હોતી હૈ, કહીં મામાકી બાન
ગમ્ય સેવનીય હોતી હૈ, ઔર—ઇમસે વિમિષ દેશ મેં મગમ્યા હોતી
હૈ—૩ દેશનેપથ્ય કથા—દેશકો લેકર સ્ત્રી પુરુષોં કે સ્વાભાવિક વેપ
શૂયા આદિ કી કથા કરના, જેસે—મમુક દેશમેં સ્ત્રી પુરુષોં કી વેપ
વિશૂયા હસ પ્રકાર કી હોતી હૈ, મમુક દેશ મેં હસ પ્રકાર કી—૪ હસ
કથા મેં એસે વોપ હૈ—“ રાગદોસુપ્પત્તી ”—ઇત્યાદિ । “ રાયકહા બડ

કથા કહે છે (૨) મગધ આદિ દેશમાં અન્યથા વગેરેના ઉત્પાદનની કથા તથા
કૃષા, વાવ તાપાવ, કારન આદિના નિર્માણની કથાને દેશ વિકલ્પ કથા કહે છે
(૩) દેશાદિની અપેક્ષાએ ‘ અમ્ય-અગમ્ય આદિની કથા કરતી તેનું નામ દેશ
છન્દ કથા છે ” । ૩૬ ” એટલે સેવનીય અને ‘ અમ્ય ’ એટલે અસેવનીય.
એમકે “ છાટાદિ દેશમાં મામાની દીકરી અમ્ય (સેવનીય) હોય છે, અને
અન્ય દેશમાં મામાની દીકરી અગમ્ય હોય છે, ” આ પ્રકારની કથાને દેશ
ચ્છન્દ કથા કહે છે (૪) મમુક દેશમાં સ્ત્રી-પુરુષોની વેપશૂયા આ પ્રકારની
હોય છે આ પ્રકારની કોઈ દેશના સ્ત્રીપુરુષોના સ્વાભાવિક વેપશૂયાની કથાને
દેશ નેપથ્ય કથા કહે છે આ દેશકથાના દોષો આ આધારમાં પ્રકટ કર્યા છે
‘ રાગદોસુપ્પત્તી ’ ઇત્યાદિ—

“ રાયકહા ચઢવિહા ” ઇત્યાદિ-રાજકથા ચતુર્વિંશ પ્રજ્ઞા, તથા-રાજો-
અતિયાનકથા-રાજઃ-અતિયાનં-નગરાદૌ પ્રવેશઃ, તસ્ય કથા અતિયાનકથા ૧,
તથા-રાજો નિર્માણકથા-નિર્માણં-નગરાદ્ નિઃસરણ, તસ્ય કથા નિર્માણકથા ૨,
રાજો વલવાહનકથા-વલં હસ્ત્યાદિ, વાહનં-વેસરાદિ, તદુભયકથા વલવાહનકથા ૩,
રાજઃ કોશકોષ્ટાગારકથા-કોશ-નિધિઃ-સુવર્ણાદિભાણ્ડાગાર, કોષ્ઠં કુન્દ-
લાદિ, તદ્રૂપમગારં ધાન્યાગારમિત્યર્થઃ, તદુભયકથા કોશકોષ્ટાગારકથા ૪। इह
चारकचोरादिशङ्कारूपा अनेके दोषा भवन्ति, उक्तं च—

“ हियत्थस्स भवे चोरो, मारियस्स णु हिंसगो ।

रहस्सभेदगो वेमो, इह संका पजायए । १ । ”

છાયા-“ હુતાર્થસ્ય ભવેચ્ચોરો, મારિતસ્ય તુ હિંસકઃ ।

રહસ્યભેદકો વાડય-મિતિ શઙ્કા પ્રજાયતે । ૧ । ” ઇતિ ।

વિવિહા ”-ઇત્યાદિ-રાજકથા ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ-જૈસે-રાજા
કી અતિયાન કથા-૧ રાજા કી નિર્માણ કથા-૨ રાજા કી વલવાહન
કથા-૩ રાજા કી કોષ્ટાગાર કોષ કથા-૪ इन में राजा के नगर आदि
में प्रवेश करने की जो-कथा है वह-राजा की अतियान कथा है-१
राजा के नगर से बाहर निकलते समय की जो कथा है वह-राजा की
निर्माण कथा है-२ राजा के वल-सैन्य-की वाहन-हस्त्यादि की,
तथा-दोनों वल-वाहनों की कथा करना यह राजा की वल वाहन कथा
है-३ राजा के सुवर्णादि भाण्डारकी एवं-धान्यागारकी कथा तथा
इन दोनों की कथा करना सो यह-राजा की कોषागार कथा है-४ ।
यहाँ-चारक चोर आदि शङ्का रूप अनेक दोष होते हैं । उक्तञ्च—
“ हियत्थस्स भवे चोरो ”-इत्यादि । “ धम्मकहा चडविहवा ”—

“ રાયકહા ચઢવિહા ” ઇત્યાદિ—રાજકથા ચાર પ્રકારની કહી છે-(૧)
રાજાની અતિયાન કથા, (૨) રાજાની નિર્માણ કથા, (૩) રાજાની બલવાહન
કથા, (૪) રાજાની કોષ્ટાગાર કોષ કથા । (૧) રાજાના નગર પ્રવેશ વિષયક
કથાને ‘ રાજાની અતિયાન કથા ’ કહે છે. (૨) રાજા નગરની બહાર વિજ્યાદિ
નિમિત્તે જે પ્રયાણ કરે છે તેની કથાને ‘ રાજાની નિર્માણ કથા ’ કહે છે (૩)
રાજાના સૈન્ય, હાથી, घोडा आदि वाहन अथवा भन्नेनी (બલ વાહનોની)
કથા કરવી તેનું નામ ‘ બલવાહન કથા ’ છે (૪) રાજાના સુવર્ણાદિ કોષની
ધાન્ય ભંડારની કથાને ‘ કોષ્ટાગાર કોષ કથા ’ કહે છે. અહીં ચારક (ચોર)
આદિ શંકાસ્પ અનેક દોષ હોય છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ हियत्थस्स भवे चोरो ” ઇત્યાદિ—

અથ ધર્મકથા—

“વડચિહ્ના ધર્મકથા” ઇત્યાદિ—ધર્મકથા — ધરતિ—ભવનલપો નિષ્વત્
મમ્મનાતં ધારયતિ—પ્લવ્વ ઇવ તારયતિ શુભસ્થાન પ્રાપયતીતિ ધર્મઃ, તસ્ય કથા—
મગ્નરેશનાલક્ષણો વાચ્યપ્રમચ્ચો ધર્મકથા । યદ્વા—શુભાશુભકર્મવિપાકોપદર્શન
ધર્મકથા । સા ચતુર્વિધા મહત્તા, સઘથા—આશ્લેષણી—આસિપ્પત—મોહં નિરાકર
તત્ત્વ ધારિત્રિ વા પ્રતિ સમાક્રુપ્યતે ભોતાઙ્ગયેતિ આશ્લેષણી । ઉક્ત ચ—

“સ્થાપ્યતે સત્પથે ભોતા, યથા સાઽઽશ્લેષણી કથા ।

યયેષુકારં કમલા—વતી ધર્મે વ્યતિષ્ઠિત્વત્ । ૧ । ઇતિ, ૧ ।

તથા—વિશ્લેષણી—વિસિપ્પતે—સમ્યગ્બાદગુણોત્કર્ષપદર્શનેન મિષ્ટવાવાદવસા-
પતં ભોતાઙ્ગયેતિ વિશ્લેષણી, ઉક્તં ચ—

ઈત્યાદિ—જો ભવ જલધિ મેં દૂપતે કુલે પ્રાણિયોં કો ઉત્તસે નૌક્ય કી
તરહ પાર લગા દેતા હૈ—શુભસ્થાન મેં પટુચા દેતા હૈ ઉત્તસા નામ-
ધર્મ હૈ, હસ ધર્મકી જો—કથા હૈ વહ—ધર્મ કથા હૈ । અર્થાત્—મગ્નવાદકી
વેદાનારૂપ જો વાચ્ય પ્રમચ્ચ હૈ વહ—ધર્મકથા હૈ, અથવા—શુભાશુભ
કર્મ કે વિપાક ફલ કો ઉપદર્શન કરાને વાલી જો કથા હૈ વહ—ધર્મ
કથા હૈ । વહ ધર્મકથા ચાર પ્રકાર કી ફહી ગઈ હૈ, જૈસે—આશ્લેષણી—
૧ વિશ્લેષણી—૨ સયેદની—૩ ઓર નિયેદની—૪ । જનમેં—જિસ કથા સે
ઓતા જીય મોહ સે દૂર કરા ફર તત્ત્વ કે પ્રતિ, અથવા—ધારિત્રિ કે
પ્રતિ આકૃષ્ટ કિયા જાતા હૈ વહ—કથા આશ્લેષણી હૈ । કહા મી —

“સ્થાપ્યતે સત્પથે ભોતા”—ઈત્યાદિ । “વિશ્લેષણી”—સમ્યગ્બાદ
ગુણ કે ઉત્કર્ષ કે પ્રદર્શન સે ભોતા જિસ કથા દ્વારા મિષ્ટવાવાદ સે

“ધર્મકથા વડચિહ્ના” ઇત્યાદિ—ધર્મકથા ચાર પ્રકારની હોય છે એવ
સામગ્રમાં દૂજતા એવાને જે નીકાતી જેમ પાર કાચી રે છે શુભ સ્થાનમાં
પડેલાથી રે છે, તેનું નામ ધર્મ છે તે ધર્મ વિષયક જે કથા છે તેને ધર્મ
કથા કહે છે એટલે કે મગ્નવાદની દેશના રૂપ જે વાચ્યપ્રમચ્ચ છે, તેને ધર્મ
કથા કહે છે અથવા શુભાશુભ કર્મના વિપાક ફળનું ઉપદર્શન કરાવનારી જે
કથા છે તેને ધર્મકથા કહે છે તેના ચાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે—(૧) આશ્લે
ષણી, (૨) વિશ્લેષણી (૩) સયેદની અને (૪) નિયેદની

જે કથા દ્વારા ભોતાના આત્માને મોહથી દૂર કરીને તરત પ્રત્યે અપચ
ધારિત્ર પ્રત્યે આકૃષ્ટ કરવામાં આવે છે તે કથાને આશ્લેષણી કથા કહે છે
હવે ખબર છે કે “સ્થાપ્યતે સત્પથે ભોતા” ઇત્યાદિ—

“ સમ્યગ્વાદપ્રકર્ષેણ મિથ્યાવાદસ્ય સ્ખન્ડનમ્ ।

યયા વિક્ષેપણી સૈવ, યથા કેશી પ્રદેશિનમ્ ।૨। ઇતિ, ૨।

તથા-સંવેદની-સંવેદ્યતે-સંસારાસારતાપ્રદર્શનેન મોક્ષાભિલાષ ઉત્પાદ્યતેઽન-
યેતિ સંવેદની, ઉક્તં ચ-

“ યસ્યાઃ શ્રવણમાત્રેણ મુક્તિવાચ્છા પ્રજાયતે ।

સવેદની યથા મહી, પદ્મ નૃપાન્ પ્રત્યવોધયત્ ।૩। ” ઇતિ, ૩।

તથા-નિર્વેદની-નિર્વેદ્યતે=વિષયેભ્યો વિરજ્યતે શ્રોતાઽનયેતિ નિર્વેદની,

ઉક્તંચ-“ યદાકર્ણનમાત્રેણ વૈરાગ્યમુપજાયતે ।

નિર્વેદની યથા શાલિ-ભદ્રો વીરેણ વોધિતઃ ।૪। ઇતિ,

અત્રત્ય દૃષ્ટાન્તચતુષ્ટયમસ્મત્કૃતાયામાચારાન્નમૂત્રસ્યાઽઽચારચિન્તામણિટી-
કાયાં વિશેષજિજ્ઞાસુભિરવલોકનીયમ્ । ૪ ।

અથાઽઽક્ષેપણી-

“ અક્ષેવણી કહા ચઽન્વિહા ” ઇત્યાદિ-આક્ષેપણી કથા ચતુર્વિધા પ્રજ્ઞતા,
તદ્યથા-આચારાઽઽક્ષેપણી-આચારઃ-લોચાઽસ્નાનાદિઃ, સ અક્ષિપ્યતે, -પ્રકાશિતઃ
સન્ સ્થાપ્યતેઽનયેત્યાચારાઽઽક્ષેપણી ૧ ।

દૂર ક્રિયા જાતા હૈ વહ વિક્ષેપણો કથા હૈ । કહા ભી હૈ-“ સમ્યગ્વાદ-
પ્રકર્ષેણ ”-ઇત્યાદિ. જો કથા શ્રોતાકો સંસાર કી અસારતા દિલાતી
હુઈ મોક્ષ કી અભિલાષા ઉત્પન્ન કરાતી હૈ વહ-સંવેદની હૈ । કહાભી
હૈ-“ યસ્યાઃશ્રવણમાત્રેણ ”-ઇત્યાદિ, જો-કથા શ્રોતા કે વિષયાનુરાગ
કો ધ્વસ્ત (નષ્ટ) કરતી હુઈ ડન ડન વિષયોસે ડસે વિરક્ત વના દેતીહૈ
વહ-કથા નિર્વેદિની હૈ । કહા ભી હૈ-“ યદા કરણમાત્રેણ ”-ઇત્યાદિ ।

આક્ષેવણી કહા ચઽન્વિહા, ઇત્યાદિ, આક્ષેપણી કથા
ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ, જૈસે — આચારાક્ષેપણી, ૧ વ્યવહા-

“ વિક્ષેપણી ” સમ્યગ્વાદ શુભના ઉત્કર્ષના પ્રદર્શનથી શ્રોતા જે કથા
દ્વારા મિથ્યાવાદને ત્યાગ કરી નાખે છે, તે કથાને વિક્ષેપણી કથા કહે છે.
કહ્યું પણ છે કે “ સમ્યગ્વાદપ્રકર્ષેણ ” ઇત્યાદિ—

જે કથા શ્રોતાને સંસારની અસારતા બતાવીને તેને મોક્ષાભિલાષી બનાવે
છે, તે કથાને ‘ સંવેદની કથા ’ કહે છે. કહ્યું પણ છે કે “ યસ્યાઃ શ્રવણમાત્રેણ ” ઇત્યાદિ—

જે કથા શ્રોતાના વિષયાનુરાગને ધ્વસ (નાશ) કરીને, તે વિષયોથી
તેને વિરક્ત કરી નાખે છે, એવી કથાને ‘ નિર્વેદિની કથા ’ કહે છે. કહ્યું
પણ છે કે-“ યદા કરણ માત્રેણ ” ઇત્યાદિ—

“ આક્ષેવણી કહા ચઽન્વિહા ” ઇત્યાદિ. આક્ષેપણી કથાના ત્રીયે પ્રમાણે

અથ ધર્મકથા—

“વડગ્નિહા ધર્મકથા” ઇત્યાદિ—ધર્મકથા — પરતિ—મવનલપી નિષ્ણત મમ્પનાત ધારયતિ=પ્રજ્ઞ શ્વ તારયતિ શુભસ્થાન પ્રાપયતીતિ ધર્મ, તસ્ય કથા—મગવદેશનાલક્ષણો ધાનપ્રપચન્ધો ધર્મકથા । યદ્વા—શુભાશુભકર્મવિપાકોપદર્શન ધર્મકથા । સા વતુર્નિષા મદ્વ્રતા, તથા—આક્ષેપની—આક્ષિપ્યત—મોહ નિરાકૃત્ત તત્ત્વ ધારિત્રિ શા પ્રતિ સમાકૃપ્યતે ભોતાન્નયતિ આક્ષેપની । ઉક્ત ધ—

“સ્થાપ્યતે સત્પથે ભોતા, યથા સાઽઽક્ષેપની કથા ।

યથેષ્ટુકારં કમલા—ચતી ધર્મે વ્યતિષ્ઠિતૃ । ૧ । ઇતિ, ૧ ।

તથા—વિક્ષેપની—વિક્ષિપ્યતે=સમ્યગ્વાદગુણોત્કર્ષમદર્શનેન મિથ્યાવાદાદવસા યતે ભોતાન્નયેતિ વિક્ષેપની, ઉક્ત ધ—

ઈત્યાદિ—જો અથ જલધિ મેં ફૂપતે જુલે પ્રાણિયોં કો ઉસસે નૌક્ય કી તરહ પાર લગા દેતા હૈ—શુભસ્થાન મેં પહુચા દેતા હૈ સસકા નામ—ધર્મ હૈ, હસ ધર્મકી જો—કથા હૈ વહ—ધર્મ કથાહૈ । અર્થાત્—મગવાનકી વેશનારૂપ જો વાક્ય પ્રવચ હૈ વહ—ધર્મકથા હૈ, અથવા—શુભાશુભ કર્મ કે વિપાક ફલ કો ઉપદર્શન કરાને વાલી જો કથા હૈ વહ—ધર્મ કથા હૈ । યહ ધર્મકથા ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ, જૈસે—આક્ષેપની—૧ વિક્ષેપની—૨ સચેદની—૩ ઓર નિચેદની—૪ । इनमें—जिस कथा से भोता जीव मोह से दूर करा कर तत्त्व के प्रति, अथवा—चारित्र्य के प्रति आकृष्ट किया जाता है वह—कथा आक्षेपणी है । कथा भी —

“સ્થાપ્યતે સત્પથે ભોતા”—ઈત્યાદિ । “વિક્ષેપની”—સમ્યગ્વાદ ગુણ કે ઉત્કર્ષ કે પ્રદર્શન સે ભોતા જિસ કથા દ્વારા મિથ્યાવાદ સે

“ધર્મકથા વડગ્નિહા” ઇત્યાદિ—ધર્મકથા ચાર પ્રકારની કહી છે એ જ અર્થમાં હવતા હોવાને એ નૌકાની જેમ પાર કરાવી દે છે શુભ સ્થાનમાં પહોંચાડી દે છે, તેનું નામ ધર્મ છે તે ધર્મ વિષયક એ કથા છે તેને ધર્મ કથા કહે છે એટલે કે અમવાનની રેશના રૂપ એ વાક્યપ્રવચ છે, તેને ધર્મ કથા કહે છે. અથવા શુભાશુભ કર્મના વિપાક ફળનું ઉપદર્શન કરાવનારી એ કથા છે તેને ધર્મકથા કહે છે. તેના ચાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે—(૧) આક્ષેપણી, (૨) વિક્ષેપણી, (૩) સચેદની અને (૪) નિચેદની.

એ કથા દ્વારા ભોતાના આત્માને મોહથી દૂર કરીને તત્ત્વ પ્રત્યે અથવા ચારિત્ર પ્રત્યે આકૃષ્ટ કરવામાં આવે છે તે કથાને આક્ષેપણી કથા કહે છે કહ્યું પણ છે કે ‘સ્થાપ્યતે સત્પથે ભોતા’ ઇત્યાદિ—

“ સમ્યગ્વાદપ્રકર્ષેણ મિથ્યાવાદસ્ય સ્વપ્હનમ્ ।

યયા વિક્ષેપણી સૈવ, યથા કેશી પ્રદેશિનમ્ ।૨। ઇતિ, ૨।

તથા-સંવેદની-સંવેદ્યતે-સંસારાસારતાપ્રદર્શનેન મોક્ષાભિલાષ ઉત્પાદ્યતેऽન-
યેતિ સંવેદની, ઉક્તં ચ-

“ યસ્યાઃ શ્રવણમાત્રેણ મુક્તિવાઙ્છા પ્રજાયતે ।

સંવેદની યથા મલ્લી, પદ્મ નૃપાન્ પ્રત્યવોધયત્ ।૩। ” ઇતિ, ૩।

તથા-નિર્વેદની-નિર્વેદ્યતે=વિષયેભ્યો વિરજ્યતે શ્રોતાઽનયેતિ નિર્વેદની,

ઉક્તંચ-“ યદાકર્ણનમાત્રેણ વૈરાગ્યમુપજાયતે ।

નિર્વેદની યથા શાલિ-ભદ્રો વીરેણ વોધિતઃ ।૪। ઇતિ,

અત્રત્ય દૃષ્ટાન્તચતુષ્ટયમસ્મત્કૃતાયામાચારાઙ્ગમૂત્રસ્યાઽઽચારચિન્તામણિટી-
કાયાં વિશેષજિજ્ઞાસુભિરવલોકનીયમ્ । ૪ ।

અથાઽઽક્ષેપણી-

“ અક્ષેવણી કહા ચઽન્વિહા ” ઇત્યાદિ-આક્ષેપણી કથા ચતુર્વિધા પ્રજ્ઞતા,
તથા-આચારાઽઽક્ષેપણી-આચારઃ-લોચાઽસ્નાનાદિઃ, સ અક્ષિપ્યતે, -પ્રકાશિતઃ
સન્ સ્થાપ્યતેઽનયેત્યાચારાઽઽક્ષેપણી ૧ ।

દૂર ક્રિયા જાતા હૈ વહ વિક્ષેપણો કથા હૈ । કહા ભી હૈ-“ સમ્યગ્વાદ-
પ્રકર્ષેણ ”-ઇત્યાદિ. જો કથા શ્રોતાકો સંસાર કી અસારતા દિશ્વાતી
હુઈ મોક્ષ કી અભિલાષા ઉત્પન્ન કરાતી હૈ વહ-સંવેદની હૈ । કહાભી
હૈ-“ યસ્યાઃશ્રવણમાત્રેણ ”-ઇત્યાદિ, જો-કથા શ્રોતા કે વિષયાનુરાગ
કો ધ્વસ્ત (નષ્ટ) કરતી હુઈ ઉન ઉન વિષયોંસે ઉસે વિરક્ત બના દેતીહૈ
વહ-કથા નિર્વેદની હૈ । કહા ભી હૈ-“ યદા કરણમાત્રેણ ”-ઇત્યાદિ ।

આક્ષેવણી કહા ચઽન્વિહા, ઇત્યાદિ, આક્ષેપણી કથા
ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈ, જૈસે — આચારાક્ષેપણી, ૧ વ્યવહા-

“ વિક્ષેપણી ” સમ્યગ્વાદ શુભુતા ઉત્કર્ષના પ્રદર્શનથી શ્રોતા જે કથા
દ્વારા મિથ્યાવાદનો ત્યાગ કરી નાખે છે, તે કથાને વિક્ષેપણી કથા કહે છે.
કહ્યું પણ છે કે “ સમ્યગ્વાદપ્રકર્ષેણ ” ઇત્યાદિ—

જે કથા શ્રોતાને સંસારની અસારતા બતાવીને તેને મોક્ષાભિલાષી બનાવે
છે, તે કથાને ‘ સંવેદની કથા ’ કહે છે. કહ્યું પણ છે કે “ યસ્યાઃ શ્રવણમાત્રેણ ” ઇત્યાદિ—

જે કથા શ્રોતાના વિષયાનુરાગનો ધ્વસ (નાશ) કરીને, તે વિષયોથી
તેને વિરક્ત કરી નાખે છે, એવી કથાને ‘ નિર્વેદની કથા ’ કહે છે. કહ્યું
પણ છે કે-“ યદા કરણ માત્રેણ ” ઇત્યાદિ—

“ આક્ષેવણી કહા ચઽન્વિહા ” ઇત્યાદિ. આક્ષેપણી કથાના નીચે પ્રમાણે

ઘ્યવહારાઽઽક્ષેપણી-ઘ્યવહાર-કથાશ્રિદાગત દોષ દૂરીકરણાય પ્રાપચિત્ત
રૂપ, સ આશિષ્યતેઽનયેતિ ઘ્યવહારાઽઽક્ષેપણી ૨।

મગ્નપ્ત્યાક્ષેપણી-મગ્નપ્તિ-સશયચતઃ ધોતુઃ પ્રિયવચનૈઃ પ્રવોચન, સાઽઽશિષ્ય-
તેઽનયતિ મગ્નપ્ત્યાક્ષેપણી ૩।

દૃષ્ટિવાદાઽઽક્ષેપણી-દૃષ્ટિવાદઃ-ઓતારમુદિચય નયાનનુસૃત્ય મૂલમગ્નપ્તિ-
માત્રમતિપાદનમ્, આક્ષેપણ્યાશ્રાયં રસઃ--

“ વિજ્ઞાચરણ ચ તવો, પુરિસકારો ય સમિદ્ગુચીઓ ।

ઉપસ્સઃ સ્વહ બં સો, પદ્માય અક્ષેવણીયદ્સો । ૧ । ”

છાયા—“ વિષાચરણ ચ તપ પુરુષાકારશ્ચ સમિતિગુપ્તયઃ ।

ઉપવિચયતે સ્વહુ યત્ સ કથાયા આક્ષેવણ્યા રસઃ । ૧ । ” इति ४।

इत्याक्षेपणी ।

રાક્ષેપણી, ૨ મગ્નપ્ત્યાક્ષેપણી, ૩ ઓર દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી,
૪ જિસ કથા કે દ્વારા છોષ આદિ કા કરના, ઓર સ્નાન આદિ નહીં
કરના યહ વિષય પ્રદર્શિત હોતા હુવા સ્થાપિત કિયા જાતા હૈ વહ કથા
' આક્ષેપણી ' હૈ, ૧ કથાશ્રિત્ આગત દોષ કો દૂર કરને કે લિયે પ્રાપ
ચિત્ત રૂપ જિસ કથા કે દ્વારા પ્રકાશિત કિયા જાતા હૈ વહ-કથા ઘ્યવ
હારાક્ષેપણી હૈ, ૨ સશયચાલી પુરુષ, સશયચાત્ ઓતાકો પ્રિય વચનો
દ્વારા યોષ દેનેવાલી જિસ કથા કે દ્વારા પ્રકાશિત કરી જાતી હૈ
પેમ્ની વહ કથા, મગ્નપ્ત્યાક્ષેપણી હૈ, ૩ ઓતાકે અનુસાર નયોં કો હેકર,
નયોં કા આમ્રય કરકે, જો સૂક્ષ્મ જીવ આદિ પદાર્થોં કે 'માત્રોં' કા
પ્રતિપાદન જિસ કથા સે કિયા જાતા હૈ વહ કથા દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી હૈ,
૪। આક્ષેપણી કથાકા યહ રસ હૈ—“વિજ્ઞાચરણં ચ તવો”—इत्यादि ।

બાર પ્રકાર કથા છે-(૧) આચારાક્ષેપણી, (૨) ઘ્યવહારાક્ષેપણી, (૩) મગ્નપ્ત્યા
ક્ષેપણી, અને (૪) દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી.

જે કથા દ્વારા લોચ આદિ કરવાનું અને સ્નાન આદિ નહીં કરવાનું પ્રતિ
પાદન કરવામાં આવે છે તે કથાને આચારાક્ષેપણી કથા કહે છે ઠાકી પદ્ય
પ્રકારે થઈ ગયેલા હોવાને કારણે કરવા માટેના પ્રાપચિત્ત આદિનું જે કથા દ્વારા
પ્રદર્શન થાય છે તે કથાને ઘ્યવહારાક્ષેપણી કથા કહે છે સશયચુક્ત ઓતાને
પ્રિયવચનો દ્વારા મગ્નપ્તિ રૂપ પ્રગટિનું જે કથા દ્વારા પ્રદર્શન થાય છે તે
કથાને મગ્નપ્તિ આક્ષેપણી કથા કહે છે નયોના આમ્રય લઈને સૂક્ષ્મ જીવો
પદાર્થોનાં જાણવાનું પ્રતિપાદન જે કથા દ્વારા કરવામાં આવે છે તે કથાને
દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી કથા કહે છે આક્ષેપણી કથાના લાભને આ આચારા દ્વારા પ્રકટ
કરવામાં આવેલ છે “ વિજ્ઞાચરણં ચ તવો ” इत्यादि.

“વિક્ષેપણી કહા” ઇત્યાદિ-વિક્ષેપણી કથા ચતુર્વિધા પ્રજ્ઞા, તથા-
સ્વસમય-સ્વસ્ય સમય:-સિદ્ધાન્તઃ સ્વસમયઃ, તે સ્વસમય કથયતિ=વર્ણયતિ-
તદ્ગુણાન્ પ્રકાશયતિ પ્રાક્, તતઃ સ્વસમય કથયિત્વા પાસમયમ્=અન્યસિદ્ધાન્તં
કથયતિ-પરકીયસિદ્ધાન્તદોષપ્રદર્શનપૂર્વકં પ્રતિપાદયતીત્યર્થઃ । ૧ ।

इति प्रथमा विक्षेपणी कथा १ ।

પરસમય-પરકીયસિદ્ધાન્ત કથયિત્વા-તદ્દોષપ્રદર્શનપુરસ્સરં પ્રતિપાદ્ય સ્વસ
મય-સ્વકીયસિદ્ધાન્ત-તદ્ગુણપ્રદર્શનપુરસ્સરં સ્થાપયિતા-સ્વસિદ્ધાન્તસ્ય સ્થાપના-
શીલો ભવતિ ૨। ઇતિ દ્વિતિયાવિક્ષેપણી કથા । ૨ ।

सम्यग्वादं-परसिद्धान्तेष्वपि गुणाक्षरन्यायेन यो यावान् जिनागमतत्त्ववाद-
समानतया सम्यक्-समीचीनोऽविरोधितत्त्वानां वादः सम्यग्वादः, તે સમ્યગ્વાદં
કથયતિ, સમ્યગ્વાદં કથયિત્વા મિથ્યાવાદં-જિનોક્તતત્ત્વવિરુદ્ધરૂપં કથયતિ-તદ્દો-
ષપ્રદર્શનપૂર્વકં પ્રતિપાદયતિ, ઇતિ તૃતીયાવિક્ષેપણી કથા ૩।

“વિક્ષેપણી કહા ચતુર્વિધા” —ઇત્યાદિ, વિક્ષેપણી કથા ચાર
પ્રકારની કહી ગઈ છે, જો કથા પહેલે સ્વ સમય કો, અપને સિદ્ધાન્ત
ગુણો કો દિખાતે હુવે અન્ય સિદ્ધાન્ત કો, ઉસકે દોષો કો પ્રગટ કરતે
હુવે કહી જાતી છે વહ કથા વિક્ષેપણી કથા છે, ઓર યહ પહેલે પ્રકાર
કો વિક્ષેપણી કથા છે । જો કથા પર સિદ્ધાન્ત ગત દોષો કો પ્રગટ
કરતે હુવે અપને સિદ્ધાન્ત કે ગુણો કો પ્રકાશિત કરતે હુવે કહી જાતી
છે વહ-દ્વિતીય પ્રકાર કો વિક્ષેપણી કથા છે । જો કથા પર સિદ્ધાન્તો
મેં ઓ ગુણાક્ષર ન્યાય સે જિતના સમ્યગ્વાદ છે જિનાગમન કે તાત્ત્વિક
વિવેચન સે મિલતા હુવા કથન છે, ઉસે પ્રકટ કરતી છે, ઓર જિતના
ઉસ મેં મિથ્યાવાદ છે જિનોક્તતત્ત્વ સે વિપરીત કથન છે ઉસે પ્રકટ
કરતી છે હસ દ્રઙ્ સે જો કથા કહી જાતી છે વહ તૃતીય પ્રકાર કો

“વિક્ષેપણી કહા ચતુર્વિધા” ઇત્યાદિ વિક્ષેપણી કથા ચાર કહી છે-
જે કથામાં પહેલાં સ્વસમયના (જેન સિદ્ધાન્તના) ગુણોને પ્રકટ કરવામાં
આવે છે, અને ત્યારબાદ અન્ય સિદ્ધાન્તોના દોષો પ્રકટ કરવામાં આવે છે,
તે કથાને પહેલા પ્રકારની વિક્ષેપણી કથા કહે છે

જે કથામાં પહેલા પર સિદ્ધાન્તગત દોષોને પ્રકટ કરીને સ્વસિદ્ધાન્તના
ગુણોને પ્રકાશિત કરવામાં આવે છે, તે કથાને બીજા પ્રકારની વિક્ષેપણી કહે છે.

જે કથા પર સિદ્ધાન્તોમાં જેટલો સમ્યગ્વાદ છે-જિનાગમના તાત્ત્વિક
વિવેચન સાથે મળતું આવે એવું કથન છે-તેને પણ પ્રકટ કરે છે અને તેમાં
જેટલો મિથ્યાવાદ-જિનોક્ત તત્ત્વ કરતા વિપરીત કથન છે, તેને પણ પ્રકાશિત
કરે છે, તે કથાને ત્રીજા પ્રકારની વિક્ષેપણી કથા કહે છે.

અવહારાઽઽક્ષેપણી-અવહાર-કથાશ્રિદાગત, દોષ દૂરીકરણાય પ્રાયશ્ચિત્ત-રૂપઃ, સ આશિષ્યતેઽનયેતિ અવહારાઽઽક્ષેપણી ૨।

મદ્ગપ્ત્યાક્ષેપણી-મદ્ગપ્તિ-સશયવચનઃ શ્રોતુ પ્રિયવચનૈઃ પ્રવોધન, સાઽઽશિષ્ય-તેઽનયતિ મદ્ગપ્ત્યાક્ષેપણી ૩।

દૃષ્ટિવાદઃ(ઽઽક્ષેપણી-દૃષ્ટિવાદઃ-શ્રોતારમુદિશ્ય નયનનુસૃત્ય સૂક્ષ્મજીવપ્રવૃત્તિ-માનપતિપાદનમ્, આક્ષેપણ્યાશ્રાય રસઃ-

“ વિજ્ઞાચરણ ચ તવો, પુરિસકારો ચ સમિદ્ગુત્તીયો ।

ઉવશ્સહ સ્વસ્થ મં સો, ક્ષણ્ય અક્ષેવણીયશ્ચ સો ।૧। ”

છાયા-“ વિજ્ઞાચરણ ચ તપ પુરુષાકારમ્ સમિતિગુપ્તયઃ ।

અપદિશ્યતે સ્વત્વ યત્ સ કથાયા આક્ષેવણ્યા રસઃ ।૧। ” ઇતિ ૪।

ઈત્યાક્ષેપણી ।

રાક્ષેપણી, ૨ મદ્ગપ્ત્યાક્ષેપણી, ૩ ઓર દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી, ૪ જિસ કથા કે દ્વારા લોચ માદિ કા કરના, ઓર સ્નાન આદિ નહીં કરના યહ વિષય પ્રદર્શિત હોતા છુવા સ્થાપિત કિયા જાતા હૈ વહ કથા ‘ આક્ષેપણી ’ હૈ, ૧ કથાશ્રિત્ આગત દોષ કો દૂર કરને ક તિયે પ્રાયશ્ચિત્ત રૂપ જિસ કથા કે દ્વારા પ્રકાશિત કિયા જાતા હૈ વહ-કથા અવહારાક્ષેપણી હૈ, ૨ સશયવાલી પુરુષ, સદાયવાન્ શ્રોતાકો પ્રિય વચનો દ્વારા વોધ દેનેવાલી જિસ કથા કે દ્વારા પ્રકાશિત કી જાતી હૈ એમી વહ કથા, મદ્ગપ્ત્યાક્ષેપણી હૈ, ૩ શ્રોતાકે અનુસાર નયોં કો લેકર, નયોં કા આશ્રય કરકે, જો સૂક્ષ્મ જીવ આદિ પદાર્થોં કે ભાવોં કા પ્રતિપાદન જિસ કથા સે કિયા જાતા હૈ વહ કથા દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી હૈ, ૪ । આક્ષેપણી કથાકા યહ રસ હૈ-“વિજ્ઞાચરણ ચ તવો”-ઈત્યાદિ ।

આર પ્રકાર કક્ષા છે-(૧) આભાસાક્ષેપણી, (૨) અવહારાક્ષેપણી, (૩) મદ્ગપ્ત્યાક્ષેપણી, અને (૪) દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી.

જે કથા દ્વારા લેખ આદિ કરવાનું અને સ્નાન આદિ નહીં કરવાનું પ્રતિષ્ઠાન કરવામાં આવે છે તે કથાને આભાસાક્ષેપણી કથા કહે છે કારણકે પ્રકારે થઈ ગયેલા હોયને દૂર કરવા માટેના પ્રાયશ્ચિત્ત આદિનું જે કથા દ્વારા પ્રદર્શન થાય છે તે કથાને અવહારાક્ષેપણી કથા કહે છે સશયમુદ્ધ શ્રોતાને પ્રિયવચનો દ્વારા પ્રવોધન રૂપ પ્રદર્શનું જે કથા દ્વારા પ્રદર્શન થાય છે તે કથાને મદ્ગપ્તિ આક્ષેપણી કથા કહે છે નયોના આશ્રય લઇને સૂક્ષ્મ જીવ આદિ પદાર્થોનાં ભાવોનું પ્રતિપાદન જે કથા દ્વારા કરવામાં આવે છે તે કથાને દૃષ્ટિવાદાક્ષેપણી કથા કહે છે આક્ષેપણી કથાનાં લાજને આ ભાષા દ્વારા પ્રદર્શ કરવામાં આવેલ છે “ વિજ્ઞાચરણ ચ તવો ” ઇત્યાદિ.

પરલોકસંવેદની—પરલોકઃ—દેવાદિભવઃ, તસ્ય સ્વભાવસ્ય સંવેદની-હ્યાપની તથા, યથા—‘ દેવા અપ્યમૂયેર્ધ્યાસ્પર્ધા ભયવિયોગ ક્રોધશોક મોહકામમદાદિજનિત-દુઃસ્વાભિભૂતાઃ સન્તિ કિં પુનસ્તિર્યગાદયઃ ’ इत्येवंरूपा २।

આત્મશરીરસંવેદની—આત્મનઃ—સ્વરૂપ શરીરં—કાયઃ—આત્મશરીરં તસ્ય અશુ-ચિનિમિત્તોત્પન્નત્વ—સ્રવ્નમલદ્વારાઽઽકુલત્વાશુચિદ્વારનિઃસ્રુતત્વેઽપિ પુરુષાર્થસાધનેઽ-તિવન્ધકૃત્વાદિસ્વરૂપસ્ય સંવેદની-હ્યાપની તથા ।

एवं परशरीरसंवेदनी—इयं चाऽऽत्मशरीरसंवेदनीमनुसृत्य बोध्या ।४।

इति संवेदनी ।

પરલોક સંવેદની—પરલોક સે યહાં દેવાદિકૉં કા ભવ લિયા ગયા હસ પરલોક કૈ સ્વભાવ કૉ હ્યાપન કરને વાલી જો કથા હૈ, જૈસે—દેવ ભી અસૂયા, ઈર્ષ્યા સ્પર્ધા, ભય, વિયોગ, ક્રોધ, શોક, મોહ, મદ, આદિ દુઃખૉં સે અભિભૂત હૈં, તો ફિર—તિર્યગાદિ કૉં કી કથા હી વ્યા, ૩ એસી કથા પરલોક સંવેદની હૈ । આત્મશરીર સંવેદની—જો આત્મ-સ્વ શરીર કી અશુચિતા કૈ નિમિત્ત કૉ પ્રકટ કરતી હો વહતે હુવે નવમલ દ્વારૉં સે જો ઘિનાચની હુઈ હૈ વહ-અશુચિ દ્વાર સે નિકલા હૈ, અતઃ—સ્વયં અપવિત્ર હૈ એસા કથન જો કરતી હો, ઔર—યહ પુરુષાર્થ સાધન મેં જીવકો શિથિલ બનોયે હુવે—પ્રમાદ પતિત હુવે હૈં હત્યાદિ વાતૉં કો સમજાતી હો એસી વહ કથા આત્મશરીર સંવેદની હૈ । તાત્પર્ય યહી હૈ કિ યહ દેહ હર તરહ સે અપવિત્ર—અશુચિ ઔર

પરલોકસંવેદની—પરલોકથી અહીં દેવભવ આદિ ગૃહીત થયેલ છે. આ પરલોકના સ્વરૂપને પ્રકટ કરનારી જે કથા છે તેને ‘ પરલોકસંવેદની કથા ’ કહે છે. જેમકે “ દેવો પશુ અસૂયા, ઇર્ષ્યા, સ્પર્ધા, ભય, વિયોગ, ક્રોધ, શોક, મોહ, મદ આદિ દુઃખોથી અભિભૂત છે, તો તિર્યગાદિના દુઃખની તો વાત જ શી કરવી ! ” આ પ્રકારની કથાને પરલોક સંવેદની કથા કહે છે.

આત્મશરીર સંવેદની—જે કથા આત્મશરીરની (સ્વ શરીરની) અશુ-ચિતાના નિમિત્તોને પ્રકટ કરતી હોય તે કથાને આત્મશરીર સંવેદની કહે છે “ વહેલા નવમળ દ્વારોથી જે અશુચિ વધારે ઘાટી બની છે, અશુચિ દ્વાર-માંથી આ શરીર ઉત્પન્ન થયેલું છે, તેથી તે પોતે જ અપવિત્ર છે, ” એવું કથન જે કથામાં થાય છે તેને ‘ આત્મશરીર સંવેદની ’ કથા કહે છે આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે આ દેહ દરેક રીતે અપવિત્ર-અશુચિ અને કલુષિત

મિથ્યાવાદ - પરમયેષ્વેઝ જિનોક્તત્ત્વચિક્ષ્ઢરૂપ મિથ્યાવાદ કથયિત્તા સમ્યગ્વાદ સ્થાપયિત્તા મત્તિ । યદ્વા-નાસ્તિકવાદિસમયં કથયિત્તા આસ્તિકવાદિસમયં કથયતીતિ ચતુર્થી વિશેષણી કથા લોખ્યા ધ ।

इति चतुर्थी विशेषणी कथा । इति विशेषणी कथा । २

अथ संवेदनी—

“ સંવેદની કહા ચતુર્થિહા ”—ઈત્યાદિ—સંવેદની કથા ચતુર્વિધા મહાશા, તથા—ઈલોકસંવેદની-ઈલોકા-મનુષ્યલોકા, પરત્થમ લક્ષણવા મનુષ્યજન્મ વૃક્ષતે, તસ્ય સ્વરૂપરૂપાપનવા સંવેદની-સંવેદની, યથા-‘ ઈદં માનુષત્વમસાર મનિસ્ય મેઘમણ્ડલસખિમ’મિત્યાદિકથા । ૧ ।

વિશેષણી કથા હે, પર સમયો મેં હી જિનોક્ત તથ ચિક્ષ્ઢરૂપ મિથ્યાવાદ કર કે સમ્યગ્વાદ કી સ્થાપક હોતી હે, અથવા-નાસ્તિકવાદી કે સમય કો કહ કર કે આસ્તિકવાદી કે સિદ્ધાન્ત કો સ્થાપિત કરતી હે વહ ચૌથે પ્રકાર કી વિશેષણી કથા હે ।

“ સંવેદની કહા ચતુર્થિહા ”—ઈત્યાદિ, સંવેદની કથા ચાર પ્રકાર કી કહી ગઈ હે, જેસે-ઈલોક સંવેદની, ૧ પરલોક સંવેદની, ૨ આત્મશરીર સંવેદની, ૩ ઓર પરશરીર સંવેદની, ૪ જો કથા હે લોક કે લક્ષણ સે મનુષ્ય જન્મ કે સ્વરૂપ પર પ્રકાશ ચાલતી હે, જેસે—પદ મનુષ્ય જન્મ અસાર હે, અનિત્ય હે, મેઘમણ્ડલ કે જેસા દેવતે દેસતે ચિલીન હો જાતા હે, ઈત્યાદિ,

જે કથા પર સમયોમાં (સિદ્ધાન્તોમાં) જે નિષ્પાત્ત છે તેને પ્રકટ કરીને સમ્યગ્વાદનું પ્રતિપાદન કરે છે તેને બાયા પ્રકારની વિશેષણી કથા કહે છે । અથવા જે કથા નાસ્તિકવાદીના સિદ્ધાન્તોનું ખંડન કરીને આસ્તિકવાદના સિદ્ધાન્તોનું પ્રતિપાદન કરે છે, તે કથાને બાયા પ્રકારની વિશેષણી કથા કહે છે ।

‘ સંવેદની કહા ચતુર્થિહા ’—ઈત્યાદિ-સંવેદની કથા ચાર પ્રકારની કહી છે (૧) ઈલોકસંવેદની, (૨) પરલોક સંવેદની, (૩) આત્મશરીર સંવેદની અને (૪) પરશરીર સંવેદની ।

જે કથા આ લોકના લક્ષણ દ્વારા મનુષ્ય જન્મના સ્વરૂપ પર પ્રકાશ નામે છે, એવી કથાને ‘ ઈલોક સંવેદની કથા ’ કહે છે જેમકે “ આ મનુષ્ય જન્મ અસાર છે, અનિત્ય છે મેઘમણ્ડલની જેમ જોતજોતામાં વિલીન થઈ જાય છે ” આ પ્રકારની કથાને ઈલોક સંવેદની કથા કહે છે ।

સુધા ટોકા સ્થાન ૪૦૨ સુ ૪૪ વિકાસસ્વરૂપનિરૂપણમ્

પરલોકસંવેદની—પરલોક:—દેવાદિભવઃ, તસ્ય સ્વભાવસ્ય સંવેદની-રૂપાપની તથા, યથા—‘ દેવા અપ્યમૃદ્યેર્ધ્વાસ્પર્ધા ભયવિયોગ ક્રોધશોક મોહકામમદાદિજનિત-દુઃસ્વામિભૂતાઃ સન્તિ કિં પુનસ્તિર્યગાદયઃ ’ इत्येवंरूपा २।

આત્મશરીરસંવેદની—આત્મનઃ—સ્વસ્થ શરીરં—કાયઃ—આત્મશરીરં તસ્ય અશુચિનિમિત્તોત્પન્નત્વ—સ્રવન્મલદ્વારાઽઽકુલતાશુચિદ્વારનિઃસ્રુતત્વેઽપિ પુરુષાર્થસાધનેઽતિવન્ધકત્વાદિસ્વરૂપસ્ય સંવેદની-રૂપાપની તથા ।

एवं परशरीरसंवेदनी—इयं चाऽऽत्मशरीरसंवेदनीमनुसृत्य बोध्या ।४।
इति संवेदनी ।

પરલોક સંવેદની—પરલોક સે યહાં દેવાદિકોં કા ભવ લિયા ગયા
इस परलोक के स्वभाव को रूपापन करने वाली जो कथा है, जैसे—
દેવ ભી અસૂયા, ઈર્ષ્યા સ્પર્ધા, ભય, વિયોગ, ક્રોધ, શોક, મોહ, મદ,
આદિ દુઃખોં સે અભિભૂત હૈં, તો ફિર—તિર્યગાદિ કોં કી કથા હી કયા,
ऐसी कथा परलोक संवेदनी है । आत्मशरीर संवेदनी—जो आत्म-
સ્વ શરીર કી અશુચિતા કે નિમિત્ત કો પ્રકટ કરતી હો વહતે હુવે
नवमल द्वारों से जो घिनावनी हुई है वह अशुचि द्वार से निकला
અતઃ—સ્વયં અપવિત્ર હૈં એસા કથન જો કરતી હો, ઓર—યહ
वार्थ साधन में जीवको शिथिल बनाये हुवे—प्रमाद पतित हुवे हैं
ત્યાદિ વાતોં કો સમજાતી હો એસી વહ કથા આત્મશરીર સંવેદની
। तात्पर्य यही है कि यह देह हर तरह से अपवित्र-अशुचि और

પરલોકસંવેદની—પરલોકથી અહીં દેવભવ આદિ ગૃહીત થયેલ છે. આ
પરલોકના સ્વરૂપને પ્રકટ કરનારી જે કથા છે તેને ‘ પરલોકસંવેદની કથા ’
કહે છે. જેમકે “ દેવા પશુ અસૂયા, ઇર્ષ્યા, સ્પર્ધા, ભય, વિયોગ, ક્રોધ, શોક,
મોહ, મદ આદિ દુ ખોથી અભિભૂત છે, તો તિર્યગાદિના દુ ખની તો વાત જ
શી કરવી ! ” આ પ્રકારની કથાને પરલોક સંવેદની કથા કહે છે.

આત્મશરીર સંવેદની—જે કથા આત્મશરીરની (સ્વ શરીરની) અશુ-
ચિતાના નિમિત્તોને પ્રકટ કરતી હોય તે કથાને આત્મશરીર સંવેદની કહે છે
“ વહેલા નવમળ દ્વારોથી જે અશુચિ વધારે ઘાડી ખની છે, અશુચિ દ્વાર-
માંથી આ શરીર ઉત્પન્ન થયેલું છે, તેથી તે પોતે જ અપવિત્ર છે, ” એવું
કથન જે કથામાં થાય છે તેને ‘ આત્મશરીર સંવેદની ’ કથા કહે છે આ
કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે આ દેહ દરેક રીતે અપવિત્ર-અશુચિ અને કલુષિત

અથ નિર્વેદની—

“ ણિચ્ચેયણી કથા ચત્થિહા ”—ઇત્યાદિ—નિર્વેદની કથા ચતુર્થિયા મહત્તા, તથા—ઇલોકે—મનુષ્યમથે બુધ્ધીર્ણાનિ—દુ—દુષ્ટુ—નિન્દિતાનિ ચીર્ણાનિ—કૃતાનિ બુધ્ધીર્ણાનિ—દુષ્ટકૃતાનિ સ્તેયપમ્સુવીનિ પાપાનિ, કર્માણિ—ક્રિયાઃ, ઇલોકે—મનુ ધિના યને સ્વરૂપવાલા હૈ, इसकी उत्पत्ति के जो कारण कलाप हैं वे स्वयं अशुचि धिनायने और अपवित्र हैं माताके अपवित्र योनि द्वारासे यह निकलता है, अतः—ऐसे अपवित्र शरीर के मोक्ष में पड़कर जो जीव पुरुषार्थ साधन से मोक्ष साधन भूत सम्पद्दर्शनादिकों के सेवन से वञ्चित बन जाते हैं उनकी यह बड़ी भारी भूल है, इस प्रकार आत्मा को देखका स्वरूप देखनेवाली जो कथा है वह—आत्मशरीर सवेदनी कथा है। इसी प्रकार से परशरीर परसवेदनी कथा के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये, यह कथा आत्मसवेदनी का अनुसरण करती है, अर्थात्—जिस प्रकार से हमें प्रतिकूल व्यवहार से अशान्ति होती है उसी प्रकार से पर शरीर के साथ किये गये प्रतिकूल व्यवहार से उसे भी अशान्ति होती है, इसी बात को स्थापन करने वाली कथा पर शरीर सवेदनी कथा है। अथवा—जिस तरह से वह आत्म कथा शरीर है, वसी प्रकार से परशरीर भी है इस बात को स्थापन करने वाली कथा परशरीर सवेदनी कथा है—४।

“ ણિચ્ચેયણી ચત્થિહા ”—इत्यादि। निर्वेदनी कथा चार प्रकार की कही गई है, जैसे—जो-स्तेय आदिक पापकर्म जीव इस मनुष्य

બનેલા સ્વરૂપવાળો છે તેની કૃત્તિના જે કારણો છે તે કારણો જ અશુચિ યુક્ત અને અપવિત્ર છે માતાના અપવિત્ર થે નિદારમાંથી તે નીકળે છે એવા અપવિત્ર શરીરના આકર્ષા પછીને જે છવ પુરુષાર્થ સાધનો દ્વારા મોક્ષ સાધનભૂત સમ્પદ્દર્શનાદિકોના સેવનથી વાંચિત જ રહે છે તે મોટી ભૂલ કરેલા હોય છે આ પ્રકારે આત્માને દેહનું સ્વરૂપ બતાવનારી જે કથા છે તેને આત્મશરીર સવેદની કથા કહે છે

એ જ પ્રમાણે ‘પરશરીર સવેદની’ કથા વિષે પણ સમજવું ‘જેમ આપણું શરીર સાથે મથેલાં પ્રતિકૂળ અવધારથી આપણને અશાન્તિ થાય છે, એ જ પ્રમાણે અન્યના શરીર સાથે પ્રતિકૂળ અવધારથી તેને પણ અશાન્તિ થાય છે’ આ પ્રકારની વાતનું પ્રતિપાદન કરનારી કથાને પરશરીર સવેદની કથા કહે છે “ ણિચ્ચેયણી ચત્થિહા ”—ઇત્યાદિ—

નિર્વેદની કથા ચાર પ્રકારની કહી છે, જેમકે ધારી આદિ જે પાપ કર્મ છવ આકર્ષામાં કરે છે, તેનું ફળ આ લોકમાં પણ પ્રાપ્ત કરે છે અને

ધ્યમવે દુઃખફલવિપાકસંયુક્તાનિ-દુઃખ-કષ્ટં, તદેવ ફલં કર્મતત્તજન્યં, તસ્ય વિપાકઃ-વિપચનં વિપાકઃ-અનુભવો દુઃખફલવિપાકઃ, તેન સંયુક્તાનિ-દુઃખફલ-વિપાકસંયુક્તાનિ-કષ્ટરૂપફલાનુભવવન્તિ ભવન્તિ, ચોરાદીનામિવ । ૧ ॥ એવમ્-હલોકે દુશ્ચીર્ણાનિ કર્માણિ પરલોકે-નરકાદિલોકે-દુઃખફલવિપાકસંયુક્તાનિ ભવન્તિ નારકાદીનામિવ । ૨ ।

તથા પરલોકે-દેવાદિભવે દુશ્ચીર્ણાનિ-દુઃકૃતાનિ ભોગેર્ણારૂપાણિ કર્માણિ હલોકે દુઃખફલવિપાકસંયુક્તાનિ ભવન્તિ આજન્મવ્યાધિદારિદ્ર્યાદિ પીડિતમનુ-ષ્યતિરશ્ચામિવ । ૩ ।

લોક મેં કરતા હૈ, વહ ડસકા ફલ હસ ભવ મેં તો પાતા હી હૈ, ક્યોકિ-યે સ્વયંહી દુઃખરૂપ વિપાક ફલવાલે હોતે હૈં, અતઃ—ઈન્હેં જો મનુષ્ય સેવન કરતા હૈ વહ નિયમસે ચોર આદિકોંકી તરહ નાના પ્રકારકે કષ્ટોંકો તો ભોગતાહી હૈ તથા પરભવમેંભી, નરકાદિ લોકમેંભી, નારકાદિ જીવોંકી તરહ વહ इनके દુઃખરૂપ આદિ અનેક ફલોંકો ભોગના હૈ । તાત્પર્ય યહી હૈ કિ-હિંસાદિક અધર્મ કર્મ જીવકો હસલોકમેંભી ઓર પરલોકમેંભી દોનોં લોકોંમેં વિવિધ પ્રકારકે કષ્ટાદિ ફલોંકે પ્રદાતા હોતે હૈં । તથા-જિન દુશ્ચીર્ણ દુઃકૃતોંકો અમૂય ઈર્ણ્યા આદિરૂપ પાપ કર્મોંકો યહ જીવ પરલોકમેં દેવાદિક ભવોંમેં અર્જિત કરતા હૈ વે કર્મ દુઃખ ફલરૂપ વિપાક સંયુક્ત હસલોકમેં હોતે હૈં । જૈસે હસ મનુષ્ય-લોકમેં આજન્મવ્યાધિ દારિદ્ર્ય આદિસે પીડિત હુવે મનુષ્યોંકે ઓર તિર્યંચોંકે કર્મ દુઃખ ફલરૂપ વિપાકસે સંયુક્ત દેખે જાતે હૈં ૩ । તથા

પરલોકમાં પણ પ્રાપ્ત કરે છે, કારણ કે તેનુ સેવન કરનાર માણસ ચોરાદિની જેમ આ ભવમાં પણ વિવિધ પ્રકરના દુઃખો સહન કરે છે અને નારકાદિ ગતિમાં ઉત્પન્ન થઈને તે ગતિના વિવિધ કષ્ટો પણ સહન કરે છે

આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે હિંસા, ચોરી આદિ પાપકૃત્યોના ફલ વિપાક જીવને આલોકમાં પણ ભોગવવો પડે છે અને પરલોકમાં પણ ભોગવવો પડે છે. આ પાપકૃત્યોના વિપાક રૂપે તેમને ઉભય લોકના કષ્ટો સહન કરવા પડે છે.

તથા જે દુશ્ચિર્ણ દુઃકૃત્યોનુ, અસૂયા, ઈર્ણ્યા આદિ રૂપ પાપકર્મોનું જીવ પરલોકમાં (દેવાદિક ભવોમાં) ઉપાર્જન કરે છે, તે કર્મોના દુઃખફલરૂપ વિપાક જીવને આલોકમાં ભોગવવો પડે છે. જેમકે આ મનુષ્યલોકમાં આજન્મ વ્યાધિ, દારિદ્ર્ય આદિથી પીડાતા મનુષ્યો અને તિર્યંચો ભોવા મળે છે. તેઓ પરભવકૃત પાપકર્મોના દુઃખફલરૂપ વિપાક જ ભોગવી રહ્યા હોય છે.

પરલોકે-તિર્યંગાદિમત્તે દુઃખીર્ણાણિ કર્માણિ પરલોકે-મનુષ્યાદિમત્ત કૃત્વા પુનસ્તિર્યંગાદિમત્તે એવં દુઃસ્વફલવિપાકસંયુક્તાણિ મવન્તિ, મનુષ્યાદિમત્તે તત્કર્મણા મુદયાવલિકાપાપનનુપવિષ્ટત્વાત્ । ૪ ।

इहलोके सुखीर्णानि—सुकृतानि दानादीनि पष्ठाष्टमाशीनि च कर्माणि इहलोके सुखफलविपाकसंयुक्तानि भवन्ति, तीर्यकरादिसुपात्रदानेन वसुधारादिवृष्टिर्नर, पष्ठाष्टमादिमिथ-आमर्शौषध्यादिलब्धिप्राप्तिश्च । २ । एव शेषमङ्गमय विवेचनीयम् परलोकमें तिर्यंगादि भवमें दुःखीर्ण कर्म तिर्यंगादि भवमेंही दुःस्व फल विपाक संयुक्त होते हैं, मनुष्यादि भवमें नहीं । क्योंकि वे कर्म मनुष्यादि भवमें उदयावलिकामें अननुप्रविष्ट होते हैं ४ । तथा इस लोकमें सुखीर्ण-अच्छी तरहसे किये गये दानादिक कर्म पष्ठ अष्टम आदि तपस्वरूप कर्म इहलोकमें सुखफल विपाक संयुक्त होते हैं । जैसे-तीर्यङ्कर आदिरूप सुपात्र दानसे वसुधारा आदिकी वृष्टि होती है । तथा-पष्ठ अष्टम आदिकी तपस्यासे आमर्श औषधि आदि लब्धिकी प्राप्ति होती है । इसी तरहसे शेष अङ्गमी विवेचित करलेना चाहिये । यहाँ-प्रथम अङ्ग तथा द्वितीय अङ्ग ये दो अङ्गही कहे गये हैं ।

द्वितीय अङ्ग इस प्रकारसे है, इसलोकमें सुखीर्ण कर्म परलोकमें सुख फलरूप विपाकसे संयुक्त होते हैं । जैसे-साधु आचर आदि द्वारा वृत्त सुखीर्ण कर्म-शेष दो अङ्ग इस प्रकारसे हैं-परलोक सुखीर्ण कर्म

तथा-परલોકમાં તિર્યંગાદિ ભવમાં દુઃખીર્ણ કર્મફળેણુ દુઃખવિપાક રૂપ ફલ તિર્યંગાદિ ભવમાં જ લોગવનુ પડે છે મનુષ્યાદિ ભવમાં લોગવનુ પડતુ નથી, કારણ કે તે કર્મો મનુષ્યાદિ ભવમાં ઉદયાવલિકામાં પ્રવિષ્ટ થતાં નથી

તથા આલોકમાં સારી રીતે જેની આરાધના થઈ હોય એવા દાનાદિ કર્મ અને છત્ર-અટ્ટમ તપસ્ચારૂપ કર્મ આ લોકમાં જ મુખ વિપાકરૂપ ફળ આપનારા હોય છે જેમકે તીર્થંકર આદિરૂપ સુપાત્રને દાન દેવાથી વસુધરા (ધન) ની વૃદ્ધિ થાય છે તથા છત્ર-અટ્ટમ આદિ તપસ્ચારોથી આમર્ય ઔષધિ આદિ લબ્ધિની પ્રાપ્તિ થાય છે એ જ પ્રમાણે આદિના નિઃકરણનું વિવેચન પણ સમજાવેલું અહીં પહેલો અને બીજો લોક જ કહેવામાં આવ્યો છે

બીજો લોક આ પ્રમાણે છે—આલોકમાં મુખીર્ણ કર્મ (ઉપાનિષદ શ્રુતિમાં) પરલોકમાં પણ મુખરૂરૂપ વિપાકવાળાં હોય છે જેમકે સાધુ, માનવ આદિ દ્વારા પૂર્વ મુખીર્ણ કર્મ

૪। અત્ર પ્રથમમજ્જાઃ પ્રોક્તઃ ૧। દ્વિતીયમજ્જે સાધુશ્રાવકાદિઃ ૨। તૃતીયે મજ્જે તીર્થંકરઃ ૩। ચતુર્થમજ્જે વદ્ધતીર્થંકર નામગોત્રકર્મા દેવભવસ્થસ્તીર્થંકરઃ ૪। સૂ. ૪૪।

પૂર્વે કથારૂપો વાગ્વિશેષ ઉક્તઃ, સામ્પતં પુરુષજાતપદ્માનતયા કાયાવિશેષમાહ—

મૂલમ્—ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, તં જહા—કિસે ણામમેગે કિસે ૧, કિસે ણામમેગે દઢે ૨, દઢે ણામમેગે કિસે ૩, દઢે ણામમેગે દઢે ૪ ૧।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, તં જહા—કિસે ણામમેગે કિસસરીરે ૧, કિસે ણામમેગે દઢસરીરે ૨, દઢે ણામમેગે કિસસરીરે ૩, દઢે ણામમેગે દઢસરીરે ૪ ૧ ૨। ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા, તં જહા—કિસસરીરસ્સ ણામમેગસ્સ ણાણદંસણે સમુપ્પજ્જઈ ણો દઢસરીરસ્સ ૧, દઢસરીરસ્સ ણામમેગસ્સ ણાણદંસણે સમુપ્પજ્જઈ ણો કિસસરીરસ્સ ૨, એગસ્સ કિસસરીરસ્સ ણાણદંસણે સમુપ્પજ્જઈ દઢસરીરસ્સવિ ૩, એગસ્સ ણો કિસસરીરસ્સ ણાણદંસણે સમુપ્પજ્જઈ ણો દઢસરીરસ્સ ૪ ૧ સૂ. ૪૫ ॥

છાયા—વત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—કુશો નામૈકઃ કુશ ૧, કુશો નામૈકો દઢઃ ૨, દઢો નામૈકઃ કુશઃ ૩, દઢો નામૈકો દઢઃ ૪ ૧।

इहलोकमें सुख फलरूप विपाकत्रे संयुक्त होते हैं, जैसे तीर्थङ्कर नाम कर्म ३, तथा परलोकमें सुचीर्णकर्म परलोकमें सुख फलरूप विपाकसे संयुक्त होते हैं, जैसे—वद्व तीर्थङ्कर गोत्र कर्मवाला देव भवस्थ तीर्थङ्कर ॥सू० ४४॥

“ इस प्रकारसे कथारूप वाग् विशेष कहकर अब सूत्रकार पुरुष जातकी प्रधानतासे कायविशेषका कथन करते हैं ।

ત્રીજો ભાગો—પરલોકમાં સુચીર્ણ કર્મ પરલોકમાં સુખફલરૂપ વિપાકથી યુક્ત હોય છે. જેમકે તીર્થંકર નામ કર્મ.

ચોથો ભાગો—પરલોકના સુચીર્ણ કર્મ પરલોકમાં સુખફલરૂપ વિપાકથી યુક્ત હોય છે જેમકે વદ્ધ તીર્થંકર ગોત્ર કર્મવાળો દેવ ભવસ્થ તીર્થંકર. ॥સૂ. ૪૪॥

આ રીતે કથારૂપ વાગ્વિશેષનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર પુરુષજાતની પ્રધાનતાની અપેક્ષાએ કાયાવિશેષનું કથન કરે છે.

ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રશ્નતાનિ, તથા—કૃશો નામૈક કૃશચરીરઃ ૧ કૃશો નામૈકો દૃઢચરીરઃ ૨, દૃઢો નામૈક કૃશચરીરઃ ૩, દૃઢો નામૈકો દૃઢચરીરઃ ૪. ૧।
 ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રશ્નતાનિ, તથા—કૃશચરીરસ્ય નામૈકસ્ય જ્ઞાનદર્શન સમુત્પ
 પતે નો દૃઢચરીરસ્ય ૧, દૃઢચરીરસ્ય નામૈકસ્ય જ્ઞાનદર્શન સમુત્પપતે નો કૃશચરી
 રસ્ય ૨, એકસ્ય કૃશચરીરસ્યાપિ જ્ઞાનદર્શન સમુત્પપતે દૃઢચરીરસ્યાપિ ૩, એકસ્ય
 નો કૃશચરીરસ્ય જ્ઞાનદર્શન સમુત્પપતે નો દૃઢચરીરસ્ય ॥ ૪। સુ. ॥૪૫॥

“ ચત્વારિ પુરિસજાયા પળજા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—ચાર પુરુષજાત કહે ગયે છે, જૈસે—કૃશ કૃશ ૧, કૃશ દૃઢ ૨, દૃઢ
 કૃશ ૩ ઓર દૃઢ દૃઢ ૪। પુનઃ—ચાર પુરુષજાત કહે ગયે છે, જૈસે—કૃશ
 કૃશ શરીરવાલા ૧, કૃશ દૃઢ શરીરવાલા ૨, દૃઢ કૃશ શરીરવાલા ૩,
 તથા દૃઢ દૃઢ શરીરવાલા ૪। પુનઃ—ચાર પુરુષજાત કહે ગયે છે, જૈસે
 કૃશ શરીરવાળે કિસી એક પુરુષકો જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન હોતે છે, દૃઢ
 શરીરવાળે પુરુષકો નહીં ૧। દૃઢ શરીરવાળે કિસી એક પુરુષકો
 જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન હોતે છે, કૃશ શરીરવાળે પુરુષકો નહીં ૨। કિસી
 એક કૃશ શરીરવાળે પુરુષકોની જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન હોતે છે તથા દૃઢ
 શરીરવાળે પુરુષકોની જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન હોતે છે ૩। તથા જો કૃશ
 શરીરવાળા પુરુષ છે ત્તકોની જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન નહીં હોતે છે ઓર જો
 દૃઢ શરીરવાળા છે ત્તકોની જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન નહીં હોતે છે ૪।

“ ચત્વારિ પુરિસજાયા પળજા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—ચાર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે—(૧) કૃશ કૃશ, (૨) કૃશ દૃઢ, (૩) દૃઢ
 કૃશ અને (૪) દૃઢ દૃઢ બીજી રીતે પણ ચાર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે—
 (૧) કૃશ કૃશ શરીર મુખ્ય, (૨) કૃશ દૃઢ શરીર મુખ્ય, (૩) દૃઢ કૃશ શરીર
 મુખ્ય તથા (૪) દૃઢ દૃઢ શરીર મુખ્ય

વળી આ પ્રમાણે પણ ચાર પુરુષ પ્રકારો કહ્યા છે—(૧) કૃશ શરીર
 વાળા કોઈ એક પુરુષને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે જ્યારે દૃઢ શરીરવાળા
 કોઈ એક પુરુષને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થતાં નથી. (૨) દૃઢ શરીરવાળા કોઈ
 એક પુરુષને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે, જ્યારે કૃશ શરીરવાળા કોઈ એક
 પુરુષને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થતાં નથી. (૩) કોઈ એક કૃશ શરીરવાળા પુરુષને
 પણ જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે અને કોઈ એક દૃઢ શરીરવાળા પુરુષને પણ
 જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થાય છે (૪) કોઈ એક કૃશ શરીરવાળા પુરુષને પણ
 જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થતાં નથી અને કોઈ એક દૃઢ શરીરવાળાને પણ જ્ઞાન
 દર્શન ઉત્પન્ન થતાં નથી.

ટીકા—“ચત્તારિ” ઇત્યાદિ—પુરુષજાતાનિ ચત્તારિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—પૂર્વં કેવલં ભાવમાશ્રિત્ય ચતુર્થમ્બ્રહ્માદિ—एकः—कश्चित् पुरुषः कृशः—भावत. पूर्वं कृतः, तुच्छ-प्रकृतित्वात्, स पश्चादपि कृशः तादृशभावात् १, तथा एकः—कश्चित् पूर्वं कृशः पश्चाद् दृढः, संजातस्थिरपरिणामत्वात् २, एवं शेषमङ्गद्वयं बोध्यम् ॥ ४ ॥

અવ કેવલં શરીરમાશ્રિત્ય ચતુર્થમ્બ્રહ્માદિ—एकः—कश्चित् पुरुषः कृशो जन्म-जातशरीरेण दुर्बलः, स पश्चादपि कृतः रोगादिग्रस्तत्वात् १, एकः—कश्चित् पूर्वं कृशः, पश्चाद् दृढः, रोगाभावेन पुष्टशरीरत्वात्, एवमत्रापि शेषमङ्गद्वयं संयोज्यम् ॥ ४ ॥

इस कथनका तात्पर्य ऐसा है—यहां जो कृश कृश आदिरूपसे चतुर्भङ्गी कही गई है वह भावको आश्रित करके कही गई है। जैसे कोई पुरुष पहलेभी भावकी अपेक्षा कृश होता है, तुच्छ प्रवृत्तिवाला होता है। वह बादमें भी ऐसेही भावके सद्भाव रहनेके कारण कृश तुच्छ प्रवृत्तिवाला बना रहता है १। कोई एक पुरुष ऐसा होता है जो पहले तो कृश तुच्छ प्रवृत्तिवाला होता है और बादमें निमित्तादिके मिलनेसे उस प्रकृतिका त्याग कर देनेके कारण दृढ-स्थिर परिणामरूप अतुच्छ प्रकृतिवाला होता है २, दृढ कृश ३ और दृढ दृढ ऐसे ये दो भङ्ग सहजज्ञेय (जानने योग्य) हैं ४।

अब केवल शरीरको आश्रित करके सूत्रकार चतुर्भङ्गीका कथन करते हैं, जैसे—कोई एक पुरुष ऐसा होता है जो जन्मजात शरीरसे

विશેષાર્થ—આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—અહીં જે ‘કૃશ કૃશ’ આદિ રૂપ ચતુર્ભંગી કહી છે તે ભાવને આશ્રિત કરીને કહેવામાં આવી છે. એટલે કે કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પહેલાં પણ ભાવની અપેક્ષાએ કૃશ (તુચ્છ પ્રવૃત્તિવાળો) હોય છે, અને પાછળથી પણ એ જ પ્રકારના ભાવનો સદ્ભાવ રહેવાથી કૃશ (તુચ્છ પ્રવૃત્તિવાળો) જ રહે છે. (૨) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પહેલાં તુચ્છ પ્રવૃત્તિવાળો હોય છે, પણ ત્યારબાદ કોઈ પણ નિમિત્તાદિના સદ્ભાવે કરીને તે પ્રવૃત્તિનો ત્યાગ કરી દેવાને કારણે દૃઢ-સ્થિર પરિણામ રૂપ અતુચ્છ પ્રકૃતિવાળો બને છે.

(૩) દૃઢ-કૃશ અને (૪) દૃઢ-દૃઢ આ બંને ભાંગાનો ભાવાર્થ પહેલાં તથા બીજા ભાગાને આધારે સમજી શકાય એવો છે

હવે કેવળ શરીરનો આધાર લઈને સૂત્રકાર ચતુર્ભંગીનું કથન કરે છે—

(૧) “કૃશ-કૃશ શરીરવાળા” —કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે જન્મથી કૃશ શરીરવાળો હોય છે અને ત્યારબાદ રોગાદિને કારણે કૃશ શરી-

“ ચત્તારિ ” इत्यादि—चत्तारि पुरुषावातानि पञ्चतानि, तद्यथा—कृशो नामैकः कृश शरीरः—एकः—कश्चित् पुरुषः कृशो भावतो दुर्बलः, कृशशरीरः—शरीरतोऽपि कृशो दुर्बलः १। एक—कश्चिद् भावतः कृशः, इदंशरीर—शरीरतो इदं, तद्वत्शरीरत्वात्, एवं शेषमङ्गद्वयं बोध्यम् । ४ ।

જ્ઞાનદર્શનોત્પત્તિ ચતુર્મંજીષાડર — “ ચત્તારિ પુરિસજાપા ” इत्यादि स्पष्टम् । कृशशरीरस्य—कृश—दृग्भवात्ता दुर्बल शरीर यस्य स कृशशरीर—स्तस्य कृश दुर्बल रहता है और पश्चात् भी रोगाकान्त होजानेसे कृशही बना रहता है १ । तथा कोई पुरुष ऐसा होना है जो पड़ेले तो कृश होता है और पश्चात् रोगामाव होजानेसे पुष्ट शरीरबाला होजाता है २ । अवशिष्ट मङ्ग द्वयमी इसी रीतिसे विवेचित किये जा सकते हैं १ ।

પુનઃ—પુરુષ જાન જો કૃશ કૃશ શરીર આકારરૂપસે ચાર કહે ગયે છે, જનકા ભાવ પેલા છે, કોઈ એક પુરુષ પેલા હોના છે જો ભાવકો અપેક્ષા બીં દુર્બલ હોતા છે અને શરીરકી અપેક્ષામી દુર્બલ કમજોર હોતા છે ૧ । તથા—કોઈ એક પુરુષ પેલા હોના છે જો ભાવસે તો કૃશ હોતા છે, પરંતુ શરીરસે હજી મજબૂત હોતા છે ૨ । इसी प्रकारसे भव शिष्ट मङ्गद्वय भी समझ लेना चाहिये ४ ।

અવ સૂત્રકાર જ્ઞાનદર્શનોત્પત્તિરૂપ ચતુર્મંજીસે પુરુષ જાતકે પ્રકારોંકા કવન કરતે છે, જેસે—કોઈ એક પુરુષ પેલા હોના છે કિં જિસકા શરીર દુર્બલ કઠિન તપસે દુર્બલ હોતા છે । પરંતુ જસ પુરુષકો શુભ

સ્વાભાવ જો આશુ રહે છે (૧) “ કૃશ—દૃઢ શરીરસ્વાભાવ ”—કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે અમી કૃશ શરીરસ્વાભાવ હોય છે પણ શાગ્રહિતા અભાવ વગેરે કારણોને કીપી પાછળથી પુષ્ટ શરીરસ્વાભાવ થઈ આવે છે આક્રિતા બે ભાગોને ભાવથી પણ આ બે ભાગોને આધારે સમજી લેવો

વળી “ કૃશ કૃશ શરીરશુદ્ધ ” આદિ ચાર પ્રકારોંનું આ પ્રમાણે પણ સ્પષ્ટીકરણ થઈ શકે છે—(૧) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે આવની અપેક્ષાએ પણ કમજોર હોય છે અને શરીરની અપેક્ષાએ પણ કમજોર (દુર્બળ) હોય છે (૨) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે આવની અપેક્ષાએ કૃશ હોય છે પણ શરીરની અપેક્ષાએ દૃઢ (મજબૂત) હોય છે એ જ પ્રમાણે આક્રિતા બે વિશ્લેષનો ભાવાર્થ પણ જાતે જ સમજી લેવો.

કેવે સૂત્રકાર જ્ઞાન અને દર્શનની ઉત્પત્તિની અપેક્ષાએ ચાર પ્રકારના પુરુષોનું નિરૂપણ કરે છે—પહેલા ભાગનું સ્પષ્ટીકરણ—કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જેનું શરીર કઠિન તપને કારણે કૃશ (દુર્બળ) હોય છે, પણ એવા તે પુરુષમાં

શુભપરિણામસમ્ભવેન જ્ઞાન દર્શનાઽઽરણક્ષયક્ષયોપશમાદિમત્ત્વાત્ જ્ઞાનદર્શન-જ્ઞાન
ચ દર્શનં ચાનયોઃ સમાહારસ્તત્ સમુત્પદ્યતે-સંજાયતે, કિન્તુ દૃઢશરીરમ્-તપો
વિમુક્તત્વા દૃઢ-સવલે શરીર યસ્ય સ દૃઢશરીરસ્તસ્ય પુરુષસ્ય પુષ્કલમોહતયા
જ્ઞાનદર્શનજનકશુભપરિણામાભાવેન જ્ઞાનદર્શનાઽઽરણક્ષયક્ષયોપશમાદિ વિગ્ધાજ્ઞા-
નદર્શનં નો સમુત્પદ્યતે ૧। તથા-एकस्य-कस्यचिद् दृढशरीरस्य-वज्रकृपभनाराच-
संहननधरस्य शिथिलमोहस्य पुरुषस्य ज्ञानदर्शनं स्वस्थशरीरत्वेन मनस्वास्थ्यस-
द्भावेन ज्ञानदर्शनजनकशुभपरिणामोदयात् तदावरणक्षयक्षयोपशमादिसत्त्वात् समु-
त्पद्यते-संजायते । २ ।

પરિણામકે હોનેસે જ્ઞાન ઓર દર્શનકો આવરણ ક્ષય હોજાતા હૈ ।
ક્ષયોપશમાદિવાલા હોજાતા હૈ । ઇસ કારણ ડસકો જ્ઞાન ઓર દર્શન
ઉત્પન્ન હોજાતે હૈ, તથા-કોઈ ઇક પુરુષ ઇસા હોતા હૈ જો દૃઢ શરીર-
વાલા હોતા હૈ, ઇસે ડસ પુરુષકો પુષ્કલ મોહ હોનેકે કારણ જ્ઞાનદર્શન
જનક શુભ પરિણામકે અભાવસે જ્ઞાનદર્શનકા આવરણ ક્ષય-ક્ષયો-
પશમાદિ વિશિષ્ટ નહીં હોતા હૈ । અતઃ-ડસકે ચિરહસે જ્ઞાનદર્શન
ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈ ૧ । તથા કોઈ ઇક પુરુષ ઇસા હોતા હૈ જો દૃઢ
શરીરવાલા હોતા હૈ-વજ્ર કૃપભનારાચ સંહનનકા ધારી હોતા હૈ । ઇસે
ડસ પુરુષ કે મોહકો શિથિલતા હોનેપર સ્વસ્થ શરીરકે સદ્ભાવસે ઓર
મનઃ સ્વાસ્થ્યકે સદ્ભાવસે જ્ઞાનદર્શનજનક શુભ પરિણામકા ઉદય હો
જાતા હૈ, ઇસસે જ્ઞાનાવરણ ઓર દર્શનાવરણ કર્મકા ક્ષય ક્ષયોપશમાદિ
હોજાનેસે જ્ઞાન ઓર દર્શન ઉત્પન્ન હોજાતે હૈ ૨ । તથા-કિસી કૃશ

શુભ પરિણામનો સદ્ભાવ હોવાથી તેના જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનાવરણીય
કર્મોનો ક્ષય થઈ જવાથી તેને જ્ઞાન અને દર્શન ઉત્પન્ન થાય છે, પણ કોઈ
એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે દૃઢ શરીરવાળો હોય છે, પણ પુષ્કળ મોહના
સદ્ભાવને લીધે જ્ઞાનદર્શનજનક શુભ પરિણામના અભાવને કારણે તેના જ્ઞાના-
વરણીય અને દર્શનાવરણીય કર્મોનો ક્ષય કે ક્ષયોપશમ થતો નથી તે કારણે
તેને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થતાં નથી. (૨) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે
દૃઢ શરીરવાળો હોય છે, પણ કૃપભનારાચ સંહનને ધારણ કરનારો હોય છે,
એવા તે પુરુષના મોહની શિથિલતા થઈ જવાને લીધે સ્વસ્થ શરીર અને
સ્વસ્થ મનના સદ્ભાવને લીધે જ્ઞાનદર્શનજનક શુભ પરિણામનો ઉદય થઈ
જાય છે તે કારણે જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનાવરણીય કર્મોનો ક્ષય ક્ષયોપશમ
આદિ થઈ જવાને લીધે તેને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થઈ જાય છે જ્યારે કોઈ

તથા-एकस्य=एकस्यचित् कृद्भ्रशरीरस्यापि दृढशरीरस्यापि पुंस्यस्य ज्ञानदर्शनं समुत्पद्यते, विशिष्टसंज्ञनस्य स्वल्पमोहस्योभयथाऽपि शुभपरिणामोदयात् शरीर काश्यदादर्थसत्त्वेऽपि ज्ञानदर्शनोत्पत्तौ तदपक्षाऽभावेन तदावरणक्षयक्षयोपशमादि सम्भवात् तज्जायते । ३। तथा-एकस्य=एकस्यचित् कृद्भ्रशरीरस्य दृढशरीरस्येति इय स्यापि ज्ञानदर्शनं नोत्पद्यते, तयोर्विशिष्टसंज्ञनाभावतया तथाविधशुभपरिणामामाप्ता दिति चतुर्थो मङ्गः । ४। सू० ४५ ॥

पूर्व જ્ઞાન-રશ્મનયોસ્તપચિક્ષા, સામ્પ્રત સદ્વ્યાપાતમાહ—

मूकम्-घडहिं ठाणेहिं निग्गथाण वा निग्गथीण वा अस्सिं समयमि अइसेसे णाणदसणे समुप्पज्झिउकामवि न समुप्पज्जेज्जा, शरीरवाले पुरुषकोमी और दृढ शरीरवाले पुरुषकोमी ज्ञान दर्शन उत्पन्न होजाते हैं । क्योंकि-विशिष्ट संज्ञनवाला जीव यदि तृप्त्य मोहवाला होता है, तो चाहे उसमें कृशता या दृढता क्यों न हो, फिरभी शुभ परिणामके सत्तावसे उसको तदावरण कर्मके क्षय क्षयोपशमादिसे ज्ञान और दर्शन उत्पन्न होजाते हैं १ । तथा-चाहे कोई कृश शरीरवाला भी हो, या दृढ शरीरवाला भी हो । कोई-२ जीव ऐसा भी होता है कि जिसको विशिष्ट संज्ञन होनेके कारण तथाविध शुभ परिणामोके अभावसे ज्ञानावरणादिकका क्षय क्षयोपशमादि नहीं हो सकनेसे ज्ञान और दर्शन उत्पन्न नहीं होते हैं । इस प्रकारसे यह चतुर्थी है ॥ सू० ४५ ॥

એક દ્રુશ શરીરવાળા પુરુષને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થતાં નથી, તેનું કારણ પહેલા ભાગમાં બતાવ્યા પ્રમાણે સમજવું (૩) કેાઈ દ્રુશ શરીરવાળા અને દૃઢ શરીર વાળા પુરુષને પણ જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થઈ શકે છે તેનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—વિશિષ્ટ સંજ્ઞનવાળો પુરુષ એ સ્વસ્થ મોહવાળો હોય તેા શુભ પરિણામના સદ્ભાવને લીધે જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનાવરણીય કર્મના ક્ષય અને ક્ષયોપશમાદિથી જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન કરી શકે છે તેમાં શરીરની દ્રુશતા કે દૃઢતા બાધક નિવડતી નથી. (૪) છતાં જો દ્રુશ શરીરવાળો હોય કે દૃઢ શરીરવાળો હોય પણ કેાઈ કેાઈ ભવ એવો પણ હોય છે કે જે વિશિષ્ટ સંજ્ઞનવાળો હોવાને કારણે તે પ્રકારના શુભ પરિણામના અભાવને લીધે જ્ઞાનાવરણાદિકનો ક્ષય ક્ષયોપશમાદિ કરી શકતો નથી, તે કારણે એવા પુરુષોને જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન થતાં નથી આ પ્રકરની આ ચતુર્થી સમજાવી ॥ સુ. ૪૫ ॥

તં જહા--અભિક્ષણં અભિક્ષણમિત્થિકહં ૧ ભક્તકહં ૨ દેસકહં
૩ રાયકહં ૪ કહેતા ભવઈ ૧, વિવેગેણ વિડસ્સગ્ગેણં ણો સમ્મ-
મપ્પાણં ભાવિતા ભવઈ ૨, પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસમયંમિ ણો ધમ્મ-
જાગરિયં જાગરિત્તા ભવઈ ૩, ફાસુયસ્સ એસણિજ્જસ્સ ઉંછસ્સ
સામુદાણિયસ્સ ણો સમ્મં ગવેસિયા ભવઈ ૪। ઇચ્છેણહિં ચડહિં
ઠાણેહિં ણિગંથાણ વા ણિગંથીણ વા જાવ ણો સમુપ્પજ્જેજ્જા ।

ચડહિં ઠાણેહિં ણિગંથાણ વા ણિગંથીણ વા અડ્ડસેસે
ણાણદંસણે સમુપ્પજ્જિતકામે સમુપ્પજ્જેજ્જા, તં જહા--ઈત્થિકહં ૧
ભક્તકહં ૨ દેસકહં ૩ રાયકહં ૪ ણો કહેતા ભવઈ ૧, વિવેગેણ
વિડસ્સગ્ગેણં સમ્મમપ્પાણં ભાવેત્તા ભવઈ ૨, પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસ-
મયંમિ ધમ્મજાગરિયં જાગરિતા ભવઈ ૩, ફાસુયસ્સ એસણિજ્જસ્સ
ઉંછસ્સ સામુદાણિયસ્સ ગવેસિયા ભવઈ ૪। ઇચ્છેણહિં ચડહિં ઠાણેહિં
ણિગંથાણ વા ણિગંથીણ વા જાવ સમુપ્પજ્જેજ્જા ।સૂ ૦ ૪૬।

છાયા—ચતુર્ભિઃ સ્થાનૈઃ નિર્ગ્રન્થાનાં વા નિર્ગ્રન્થીનાં વા અસ્મિન્ સમયે અતિ-
શેષં જ્ઞાન-દર્શનં સમુત્પત્તુકામમપિ ન સમુત્પદ્યતે, તદ્વથા—અમીક્ષણમમીક્ષણં સ્ત્રીકથાં

હસ પ્રકારસે જ્ઞાનદર્શનકી ઉત્પત્તિકા કથનકર અથ સુઅકાર હનકે
વ્યાધાતોંકા કથન કરતેહૈં । “ચડહિં ઠાણેહિં નિગંથાણવા” હત્યાદિ—

ચાર કારણોસે નિર્ગ્રન્થોં વા નિર્ગ્રન્થિયોંકો હસ સમયમેં અતિશેષ
જ્ઞાન દર્શન ઉત્પત્તિ હોનેકે યોગ્યં હોને પરમી ઉત્પન્ન નહીં હોતે હૈં, વે
ચાર કારણ હસ પ્રકારસે હૈં । યે નિર્ગ્રન્થ આદિ ચાર-૨ નિરન્તર
સ્ત્રી કથાકો-ભક્ત કથાકો-દેશકથાકો ઓર રાજ કથાકો કરતે

આ રીતે જ્ઞાનદર્શનની ઉત્પત્તિનુ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તેમના
વ્યાધાતોનુ કથન કરે છે “ચડહિં ઠાણેહિં નિગંથાણ વા ” ઇત્યાદિ—

નીચેના ચાર કારણોથી નિર્ગ્રંથો અથવા નિર્ગ્રંથીઓને આ સમયમાં,
ઉત્પત્તિને યોગ્ય હોવા છતાં પણ અતિશેષ જ્ઞાનદર્શનની ઉત્પત્તિ થતી નથી.
(૧) તે નિર્ગ્રંથો અને નિર્ગ્રંથીઓ

અતિ-અતિક્રાન્ત - સર્વાનબોધપ્રવૃત્તિગુણર્થેત્ તદ્વતિશેષમ્-અતિશયશાશ્વિ, કેવલ મિત્તર્યઃ, જ્ઞાનદર્શન ચેત્યુભયં મદ્વત્પશુકામમપિ-ઉત્પશુમિચ્છદપિ-જ્ઞાનાધરમિતા પામાનાડુસ્તપર્હમપીત્તર્યઃ, ન સમુત્પપતે-ન સંમાપત, સાનિ પત્વારિ સ્થાનાન્યાહ- 'તથાચે'—ત્યાદિ-અમીક્ષમમીક્ષમ્-પુનઃ પુનઃ, સ્ત્રીકથા, તથા-ભક્તકથા, તથા-દેશકથા, તથા-રાજકથા ચ-પૂર્વેન્યાસ્યાનરૂપા, યો મનઃ કથયિતા તત્કથાકથ્ય નશીલો મવતિ, તસ્ય જ્ઞાનદર્શને સમુત્પત્ત્યર્હમપિ નો સમુત્પપત્તિરિતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ ૧।

તથા 'વિવેકેણે'—ત્યાદિ વિવેકેન-શુદ્ધાશુદ્ધમધ્યાદ્ નીરક્ષીરન્યાપતોઽ શુદ્ધાઽઽહારાદિપરિત્યાગેન, તથા-ચ્યુત્સર્ગેણ-કાયોત્સર્ગેણ યોજન આત્માનં સમ્યક્ કૂર્મં ક્ષેત્રિયાણિ સંપત્ત્ય માવપિતા નો મવતિ ૨।

મનુષ્યોંકો 'મી' જો પશ્ચમ આરકકે સમયમેં ઉત્પન્ન હોને યોગ્ય અતિશેષ કેવલજ્ઞાન એવ કેવલદર્શન ઉત્પન્ન નહીં હોતે હેં, ઉત્પન્ન કારણ એક તો યહ હેં કિ એ નિરન્તર પુનઃ પુનઃ સ્ત્રીકથા કરનેમેં લગે રહતે હેં । ભક્ત કથાસે લગે રહતે હેં, દેશકથા ઓર રાજકથાઓમેં નિરત રહતે હેં । અતઃ-અતિશેષ કેવલજ્ઞાન, કેવલદર્શન ઉત્પાદક ભાવકે અભાવ હોનેકે કારણ ઉત્પન્ન નહીં હોને પાતે ૧ । ક્ષીર નીર વિવેચન ન્યાય જૈસા શુદ્ધા શુદ્ધ આહારપાનમેંસે અશુદ્ધાહાર ત્યાગ કરના ઓર કાયોત્સર્ગસે કૂર્મની તરહ અપને ક્ષેત્રિયોંકો સંપત્તિ કરના કમલાઃ વિવેક ચ્યુત્સર્ગ હેં । હસ વિવેક ઓર ચ્યુત્સર્ગસે અપને આપકો એ સમ્યક્ રૂપસે માણિત (યુક્ત) નહીં કરતે હેં-૨ । હસ કારણસે 'મી' એ અતિશેષ જ્ઞાનદર્શનસે વાણિત રહતે હેં । "પુન્ધરસ" હત્યાદિ-રાત્રિકે પ્રથમ પ્રહરકો પૂર્વ

જન્મેલા મનુષ્યેને પણ એ પાંચમાં આશમાં ઉત્પન્ન થવા પોત્તર છે એવું કેવળ જ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થતું નથી. તે ઉત્પન્ન ન થવાના કારણે નીચે પ્રમાણે છે—(૧) તેઓ નિરંતર સ્ત્રીકથામાં નિસ્ત રહે છે, વારંવાર ભક્ત (લોકજનની) કથામાં લીન રહે છે, દેશકથા અને રાજકથામાં પણ નિસ્ત રહે છે; તે કારણે અતિશેષ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થવાનો તેમનામાં અભાવ રહે છે તે કારણે તેઓ તેમને ઉત્પન્ન કરી શકતા નથી. (૨) ક્ષીર નીર ન્યાયનો તેમનામાં અભાવ હોય છે—શુદ્ધાશુદ્ધ આહારમાંથી અશુદ્ધાહારનો ભાગ કરવા કેવળ વિવેકનો તેમનામાં અભાવ હોય છે કાયોત્સર્ગથી કૂર્મ (કાચળા) ની જેમ પોતાની ક્ષેત્રિયોને સંપત્તિ કરવી તેનું નામ ચ્યુત્સર્ગ છે તેઓ આ વિવેક અને ચ્યુત્સર્ગથી પોતાના આત્માને સમ્યક્ રીતે ભાવિત (યુક્ત) કરવા નથી તે કારણે પણ તેઓ અતિશેષ જ્ઞાનદર્શનથી વાણિત રહે છે

तथा—“ पुञ्चरत्ने ”—इत्यादि—पूर्वरात्रापररात्रकालसमये—पूर्वरात्रः—रात्रेः पूर्वः—
प्रथमभागः पूर्वरात्रः, अपररात्रः—रात्रेः पश्चिमभागः—चतुर्थप्रहरलक्षणः, तावेव
कालः स एव समय—असारः पूर्वरात्रापररात्रकालसमयस्तस्मिन्—रात्रेः
पश्चिमभागे इत्यर्थः, मूले रलोप आर्षत्वात् । धर्मजागरिकां—धर्मप्रधाना जाग-
रिका—जागर्तिः—निद्राक्षयेण प्रबोधो धर्मजागरिका—कुटुम्बादि चिन्तापरित्यागेन
धर्मचिन्तनरूपा भावप्रत्युपेक्षेत्यर्थः, तां जागरिता—कर्ता न भवति । तत्र भावप्र-
त्युपेक्षा यथा—

“ कडं मए किं नरदेहभाया, सेसं च किं मे करणिज्जमत्थि ।

तवामि णाहं समये सुजोग्गे, बुद्धस्स भावप्पडिलेहणेयं ।१। ”

छाया—“ कृतं मया किं नरदेहभाजा, शेष च किं मे करणीयमस्ति ।

तवामि नाहं समये सुयोग्ये, बुद्धस्य भावप्रतिलेखनेयम् ।१। ” इति,

अथवा—

“ कालोऽस्थि मे कोऽस्स च किं च जोग्गं, असारभूया विसया समत्ता ।

विणाससीला विरसावसाना, मच्चू सया संनिहिओऽस्थि घोरो ।२। ”

छाया—“ कालोऽस्ति मे कोऽस्य च किं च योग्यम्, असारभूता विषयाः समस्ताः।

विनाशशीला विरसावसाना, मृत्युः सदा संनिहितोऽस्ति घोरः ।२। ” इति,

रात्र और चतुर्थ प्रहरको अपररात्र कहा है । इस पूर्वरात्रमें और अपर-
रात्रमें जो धर्मप्रधान जागरिकासे कुटुम्ब आदिकी चिन्ताका परित्याग
नहीं करते हैं, कुटुम्ब आदिकी चिन्ताका परित्यागकर वे धर्मचिन्ता-
रूप भाव प्रत्युपेक्षाका कर्त्ता नहीं होते हैं, इस कारण वे केवलज्ञान
और केवलदर्शनरूप अतिशेषको उत्पन्न करनेवाले शुभ भावके अभा-
वसे उन्हें प्राप्त नहीं करपाते हैं । भावानुपेक्षाका स्वरूप इस प्रकारसे
है “ कडं मए किं नरदेहभाया ” इत्यादि अथवा—“ कालोऽस्थि मे
कोऽस्स च ” इत्यादि । तथा “ फासुयस्स ” इत्यादि

(३) “ पुञ्चरत्ने ” इत्यादि—रात्रिना प्रथम प्रहरने पूर्वरात्रि कडे छे
अने यथा प्रहरने अपररात्रि कडे छे ते पूर्वरात्रिनी पछीनी अपररात्रिभां
अर्थात् रात्रिना पाछला भागभां जेओ धर्मजागरण द्वारा कुटुम्बादिनी चिन्ताने परि-
त्याग करता नथी ओटले के कुटुम्ब विषयक चिन्ताने परित्याग करीने जेओ धर्म चिन्ता
इय भावप्रत्युपेक्षाना कर्त्ता बनता नथी, तेओ केवलज्ञान अने केवलदर्शन इय अति
शेषने उत्पन्न करनाश शुभ भावना अभावने लीधे ज्ञानदर्शन उत्पन्न करी
शकता नथी । भावानुपेक्षानु स्वइय आ प्रकारनु छे—“ कडं मए किं नरदेहभाया ”
इत्यादि अथवा “ कालोऽस्थि मे कोस्स च ” इत्यादि तथा “ फासुयस्स ” इत्यादि,

૧ મક્તકયાં ૨ વેણકયાં ૩ રાજકયાં ૪ કવચિતા મવતિ ૧, વિવેકેન બ્યુત્સર્ગેણ નો સમ્યગાત્માને માવચિતા મવતિ ૨, પૂર્વરાત્રાપરરાત્રકાલસમયે નો ધર્મજાગરિકાં જાગરિતા મવતિ ૩, પ્રાસુકસ્ય ઇપળીયસ્ય ઉચ્છસ્ય સામુદાનિકસ્ય નો સમ્યગ્ ગવેપચિતા મવતિ ૪।

इत्येतैश्चतुर्मिः स्थानैः निर्ग्रन्थानां वा निर्ग्रन्थीनां वा यावत् नो समुत्पद्यते।

चतुर्मिः स्थानैः निर्ग्रन्थानां वा निर्ग्रन्थीनां वा अतिशेष ज्ञानदर्शन समुत्प
 बुक्काम समुत्पद्यते, तद्यथा—स्त्रीकयां १ मक्तकयां २ वृक्षकयां ३ रात्रकयां ४
 नो कवचिता मवति १, विवेकेन व्युत्सर्गेण सम्यगात्मान मावचिता मवति २,
 पूर्वरात्रापररात्रकालसमये धर्मजागरिकां जागरिता मवति ३, प्रासुकस्य एपणीयस्य
 रहते हैं १। विवेक पक्ष व्युत्સર્ગસે યે મક્કી રીતિસે અપને આત્માકા
 માવચિતા નહીં હોતે હોતે ૨। પૂર્વરાત્રી ઓર અપરરાત્રીકે કાલમે [સમયમે]
 વે ધર્મજાગરણા નહીં કરતે હોતે ૩। પ્રાસુક, એપળીય, ઉચ્છ જોકિ અનેક
 ઘરોસે ગૃહીત હોતા હૈ। ઉમકા સમ્યક્ ગવેપચિતા નહીં હોતે હોતે ૪।

પુનઃ—इन चार कारणोंसे निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थियोंको (ही)
 अतिशेष ज्ञान दर्शन उत्पत्तिके योग्य होते हैं। अतः—वे उत्पन्न होते
 हैं, ऐसे निर्ग्रन्थ भावि (साधु) जन स्त्रीकथाको, भक्त कथाको, वेश
 कथाको और राजकथाको नहीं करते हैं १ विवेक और व्युत्सर्गसे
 सम्यक् रूपमें अपने आत्माका आवचिता होते हैं २ पूर्वरात्र और अपर
 रात्रके समयमें वे धर्मजागरिकाको करते हैं ३ तथा प्रासुक, एपणीय,

રાજકથા કરતા રહે છે (૨) તેઓ પોતાના આત્માને વિવેક અને બ્યુત્સર્ગથી
 સારી રીતે ભાવિત કરતા નથી (૩) પૂર્વરાત્રિ અને અપરરાત્રિના સમયે
 તેઓ ધર્મજાગરણ કરતા નથી (૪) પ્રાસુક—ઝેપળીય અને ઉચ્છ આદાર કે
 જે અનેક ઘરોમાંથી બહાર કરવામાં આવે છે, તેના સમયે ગવેપચિતા
 તેઓ હોતા નથી

નીચેના ચાર કારણોથી નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થીઓ અતિશેષ જ્ઞાનકથા ન
 ઉત્પન્ન કરવાને પાત્ર અને છે અને તેથી તેઓ તેને પ્રાપ્ત કરે છે

તે ચાર કારણો આ પ્રમાણે છે—(૧) જોઈ નિર્ગ્રન્થી સ્ત્રીકથા, ભક્તકથા,
 વેશકથા અને રાજકથા કરતા નથી. (૨) તેઓ વિવેક અને બ્યુત્સર્ગથી
 પોતાના આત્માને સારી રીતે ભાવિત કરે છે (૩) તેઓ પૂર્વરાત્રિ અને
 અપરરાત્રિને સમયે ધર્મજાગરણ કરે છે પ્રાસુક, ઝેપળીય અને ઉચ્છ આદાર

ઉચ્છસ્ય સામુદાનિકસ્ય ગવેષયિતા ભવતિ ૪। इत्येतैश्चतुर्भिः स्थानैः निर्ग्रन्थानां वा निर्ग्रन्थीनां वा यावत् समुत्पद्यते । सू ० ४६ ॥

ટીકા—“ ચઉર્હિ ઠાળેર્હિ ” इत्यादि-चतुर्भिः-चतुःसंख्यैः स्थानैः-अनु पदं वक्ष्यमाणैः स्यादि कथाचतुष्टयरूपकारणैः, निर्ग्रन्थानां-साधूनां वा, निर्ग्रन्थीनां वा-साध्वीनां वा, अस्मिन्-चतुर्थारकलक्षणे उपलक्षणाच्चतुर्थारकजन्मवर्ता पञ्चमारकलक्षणेऽपि च समये, अतिशेपं-शेषाणि-मतिप्रभृति चक्षुर्दर्शनादीनि,

उच्छ जोकि अनेक घरोंसे संगृहीत होता है उसका सम्पक् गवेषयिता होते हैं ४ । इस प्रकारके इन चार कारणोंसे निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियोंको ज्ञानदर्शन उत्पन्न होते हैं ।

ટીકાર્થ-યર્હા ચાર સ્થાનરૂપ કારણ સ્ત્રીકથા આદિ લિખે ગયે હૈં “ હસ સમય ” પદસે આરકકા સમય ઓર ચૌથે આરકમે ઉત્પન્ન હુવે મનુષ્યોંકા સમય પશ્ચમ આરકકા લિયા ગયા હૈં જો જ્ઞાનદર્શન સર્વાંશ્વબોધ આદિ ગુણોં દ્વારા મતિ આદિ જ્ઞાનોંસે, તથા-ચક્ષુ દર્શન આદિ દર્શનોંસે વિશિષ્ટ હોતા હૈં । વહ અતિશેષપદસે ગૃહીત હુવા હૈં, એસા વહ અતિશેષ જ્ઞાન દર્શન ઓર કેવલ દર્શનરૂપ હોતા હૈં । “ સમુત્પત્તુકામમ્ ” એસા જો પદ યર્હાં આયા હૈં ઉસકા તાત્પર્ય ઉત્પન્ન હોનેકી હચ્છાવાલા હોતા હૈં । પરન્તુ જ્ઞાનાદિકોંમે અભિલાષાકા અભાવ રહતા હૈં । અતઃ— હસ પદસે ઉત્પત્તિકે યોગ્ય હોતે હુવે એસા અર્થ લિયા ગયા હૈં, તથાચ ચતુર્થ આરકકે સમયમે ઓર ઉપલક્ષણસે ચતુર્થ આરકમે જન્મે હુવે

કે જે અનેક ઘરોમાંથી ગ્રંથ કરવામાં આવે છે તેના તેઓ સમ્યક્ ગવેષયિતા હોય છે

ટીકાર્થ—નિર્ગ્રન્થાદિમાં જ્ઞાનદર્શન ઉત્પન્ન ન થવાના સ્ત્રીકથા આદિ કારણો બતાવ્યાં છે “ આ સમય ” પદ દ્વારા આરાનો સમય તથા ચોથા આરામાં ઉત્પન્ન થયેલા અને પાંચમાં આરામાં પણ હૈંયાતિ (અસ્તિત્વ) ધરાવતા માણસનો સમય ગૃહીત થયો છે જે જ્ઞાનદર્શન સર્વ અવબોધ આદિ ગુણો દ્વારા મતિજ્ઞાન આદિ જ્ઞાનોથી અને ચક્ષુદર્શન આદિ દર્શનોથી ગુર્હ પડે છે એવા જ્ઞાનને ‘ અતિશેષ ’ પદ દ્વારા ગ્રંથ કરવામાં આવ્યું છે. એવું તે અતિશેષ જ્ઞાનદર્શન કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન રૂપ હોય છે. “ સમુત્પત્તુકામમ્ ” આ જે સૂત્રપાઠ અહીં આવ્યો છે તેનો અર્થ “ ઉત્પન્ન થવાની ઇચ્છાવાળો ” થાય છે પરંતુ જ્ઞાનાદિકોમાં અભિલાષાનો અભાવ હોય છે, તે કારણે તેનો અર્થ “ ઉત્પત્તિને યોગ્ય હોવા છતાં ” લેવામાં આવેલ છે. ચોથા આરાના સમયમાં અને ઉપલક્ષણની અપેક્ષાએ ચોથા આરામાં

અતિ-અતિક્રાન્ત - સર્વાંશોષપ્રમૃતિગુર્ભૈર્ત્વ તદતિશેષમ્-અતિષ્ઠયશ્ચક્રિ, કેવલ મિત્યર્થ, જ્ઞાનદર્શનં ચેત્યુભય સમુત્પન્નકામમપિ-ઉત્પન્નમિષ્ટદપિ-જ્ઞાનાદેરમિલા પામોષાદુક્ષ્ણ્યર્થમપીત્યર્થઃ, ન સમુત્પન્નયતે-ન સંજાયતે, તાનિ ત્સારિ સ્થાનાન્યાહ-
'તથાથે'—ત્યાદિ-અમીક્ષ્યમમીક્ષ્યમ્-પુનઃ પુનઃ, સ્ત્રીકથાં, તથા-મક્તકથાં, તથા-
દેશકથાં, તથા-રાજકથાં ચ-પૂર્વમ્યાસુવાનરૂપાં, યો જનઃ કથયિતા-ઉત્ક્રંચાક્ર્મ
નશીલો મન્વતિ, તસ્ય જ્ઞાનદર્શનં સમુત્પન્ન્યર્થમપિ નો સમુત્પન્નયતે इति પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ!।

તથા 'વિવેકેણે'—ત્યાદિ વિવેકેન-શુદ્ધાશુદ્ધમન્યાદ્ નીર સ્તીરન્યાયસોઽ
શુદ્ધાઽઽહારાદિપરિત્યાગેન, તથા-ચ્યુત્સર્ગેણ-કાયોત્સર્ગેણ યોજન આત્માને સમ્યક્
કૂર્મં હવેન્દ્રિયાણિ સયમ્ય માવયિતા નો મન્વતિ ૨।

મનુષ્યોંકો 'મી' જો પશ્ચમ આરકકે સમયમેં ઉત્પન્ન હોને યોગ્ય અતિશેષ
કેવલજ્ઞાનં एवं કેવલદર્શનં ઉત્પન્ન નહીં હોતે હેં, વસકા કારણ એક તો
યહ હે કિ ઘે નિરન્તર પુનઃ પુનઃ સ્ત્રીકથા કરનેમેં લગે રહતે હેં । મક્ત
કથાસે લગે રહતે હેં, દેશકથા ઓર રાજકથાઓમેં નિરત રહતે હેં ।
અતઃ-અતિશેષ કેવલજ્ઞાન, કેવલદર્શન ઉત્પાદક 'માવકે' અમાવ હોનેકે
કારણ ઉત્પન્ન નહીં હોને પાતે ૧ । સ્તીર નીર વિવેચન ન્યાય જેસા શુદ્ધા
શુદ્ધ આહારપાનમેંસે અશુદ્ધાહાર ત્યાગ કરના ઓર કાયોત્સર્ગસે કૂર્મંકી
તરહ અપને હન્દ્રિયોંકો સયમિત કરના ક્રમશઃ વિવેક ચ્યુત્સર્ગ હેં ।
હસં વિવેક ઓર ચ્યુત્સર્ગસે અપને આપકો ઘે સમ્યક્ રૂપસે 'માવિત
(યુક્ત) નહીં કરતે હેં-૨ । હસ કારણસે 'મી' ઘે અતિશેષ જ્ઞાનદર્શનસે
વર્જિત રહતે હેં । "પુમ્હરસ" इत्यादि-રાત્રિકે પ્રથમ પ્રહરકો પૂર્વ

અમીક્ષા મનુષ્યોને પણ એ પાંચમાં આરામાં ઉત્પન્ન થવા યોગ્ય છે એવું કેવળ
જ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થતું નથી. તે ઉત્પન્ન ન થવાના કારણે નીચે
પ્રમાણ છે—(૧) તેઓ નિરન્તર સ્ત્રીકથામાં નિરત રહે છે, વારવાર ભગવ
(સોજનની) કથામાં લીન રહે છે દેશકથા અને રાજકથામાં પણ નિરત રહે
છે તે કારણે અતિશેષ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પાદક બાવને તેમનામાં
અભાવ રહે છે તે કારણે તેઓ તેમને ઉત્પન્ન કરી શકતા નથી. (૨) સ્તીર
નીર ન્યાયને તેમનામાં અભાવ હોય છે-શુદ્ધાશુદ્ધાહારમાંથી અશુદ્ધાહારને
ભ્રમ કરવા રૂપ વિવેકને તેમનામાં અભાવ હોય છે કારણેત્સર્ગથી કૂર્મ
(કાચળા) ની જેમ પાવાની હન્દ્રિયોને સયમિત કરવી તેનું નામ ચ્યુત્સર્ગ
છે તેઓ આ વિવેક અને ચ્યુત્સર્ગથી પાવાના આત્માને સમ્યક્ રીતે બાવિત
(યુક્ત) કરતા નથી તે કારણે પણ તેઓ અતિશેષ જ્ઞાનદર્શનથી વર્જિત રહે છે

तथा—“ पुञ्वरत्ने ”—इत्यादि—पूर्वरात्रापररात्रकालसमये-पूर्वरात्रः-रात्रेः पूर्वः—
प्रथमभागः पूर्वरात्रः, अपररात्रः-रात्रेः पश्चिमभागः—चतुर्थप्रहरलक्षणः, तावेव
कालः स एव समयः—अवसरः पूर्वरात्रापररात्रकालसमयस्तस्मिन्—रात्रेः
पश्चिमभागे इत्यर्थः, मूले रलोप आर्षत्वात् । धर्मजागरिकां—धर्मप्रधाना जाग-
रिका—जागर्तिः—निद्राक्षयेण प्रबोधो धर्मजागरिका—कुटुम्बादि चिन्तापरित्यागेन
धर्मचिन्तनरूपा भावप्रत्युपेक्षेत्यर्थः, तां जागरिता—कर्ता न भवति । तत्र भावप्र-
त्युपेक्षा यथा—

“ कडं मए किं नरदेहभाया, सेसं च किं मे करणिज्जमत्थि ।

तवामि णाहं समये सुजोगे, बुद्धस्स भावप्पडिलेहणेयं । १ । ”

छाया—“ कृतं मया किं नरदेहभाजा, शेषं च किं मे करणीयमस्ति ।

तवामि नाहं समये सुयोग्ये, बुद्धस्य भावप्रतिलेखनेयम् । १ । ” इति,

अथवा—

“ कालोऽस्ति मे कोऽस्स च किं च जोगं, असारभूया विसया समत्ता ।

विणाससीला विरसावसाना, मच्चू सया संनिहिओऽस्ति घोरो । २ । ”

छाया—“ कालोऽस्ति मे कोऽस्य च किं च योग्यम्, असारभूता विषयाः समस्ताः ।

विनाशशीला विरसावसाना, मृत्युः सदा संनिहितोऽस्ति घोरः । २ । ” इति,

रात्र और चतुर्थ प्रहरको अपररात्र कहा है । इस पूर्वरात्रमें और अपर-
रात्रमें जो धर्मप्रधान जागरिकासे कुटुम्ब आदिकी चिन्ताका परित्याग
नहीं करते हैं, कुटुम्ब आदिकी चिन्ताका परित्यागकर वे धर्मचिन्ता-
रूप भाव प्रत्युपेक्षाका कर्ता नहीं होते हैं, इस कारण वे केवलज्ञान
और केवलदर्शनरूप अतिशेषको उत्पन्न करनेवाले शुभ भावके अभा-
वसे उन्हें प्राप्त नहीं करपाते हैं । भावानुपेक्षाका स्वरूप इस प्रकारसे
है “ कडं मए किं नरदेहभाया ” इत्यादि अथवा—“ कालोऽस्ति मे
कोऽस्स च ” इत्यादि. तथा “ फासुयस्स ” इत्यादि

(३) “ पुञ्वरत्ने ” इत्यादि—रात्रिना प्रथम प्रहरने पूर्वरात्रि कडे छे
अने सोथा प्रहरने अपररात्रि कडे छे ते पूर्वरात्रिनी पछीनी अपररात्रिमां
अर्थात् रात्रिना पाछवा भागमां जेओ धर्मजागरण द्वारा कुटुम्बादिनी चिन्तानो परि-
त्याग करता नथी ओटले के कुटुम्ब विषयक चिन्तानो परित्याग करीने जेओ धर्म चिन्ता
इय भावप्रत्युपेक्षाना कर्ता बनता नथी, तेओ केवजज्ञान अने केवजदर्शन इय अति
शेषाने उत्पन्न करनारा शुभ भावना अभावने लीधे ज्ञानदर्शन उत्पन्न करी
शकता नथी. भावानुपेक्षानु रूप इय आ प्रकारनु छे—“ कडं मए किं नरदेहभाया ”
इत्यादि अथवा “ कालोऽस्ति मे कोऽस्स च ” इत्यादि तथा “ फासुयस्स ” इत्यादि.

તથા—“કામુયસ્સે”-ત્યાદિ પ્રાસુકસ્ય અચિત્તસ્ય, એપનીયસ્ય વ્યવસ્થે ગચ્છેત્યત્ત ઉત્તમાદિદોષનિર્મિતત્વેનેત્યપનીયઃ-કલ્પ્યસ્તસ્ય, તથા-ઉચ્ચસ્ય-ઉચ્ચત્વે-અત્યાલ્પરત્વન યુગ્મત્ત ઇત્યુચ્ચ-ચક્તપાનાદિઘતુર્વિધાઽઽહારસ્તસ્ય, કીદૃશસ્યે ત્યાહ-“સામુદાનિકસ્ય”-અનેકયુગ્મહીતસ્ય સમ્પક્-સવિધિ ગચ્છેપયિતા-અન્વેપયિતા નો ભવતિ ઇ.

“ચૃદિ” ઇત્યાદિ—ઇત્યેતૈઃ-અનન્તરોક્તૈઃ, ચતુર્મિઃ સ્યાનેઃ નિર્ગ્રન્થાનાં વા નિર્ગ્રન્થીનાં વા ‘ચાચત્’ નો સમુત્પચ્ચતે’ ઇતિપર્યન્ત વાચ્યમ્.

“ચૃદિ ઠાણેદિ” ઇત્યાદિ વિપર્યયમૂળં સ્વપ્તમ્. સૂત્રે નિર્ગ્રન્થીપદોપાદાનાત્ સ્ત્રીબોધામાશ્રમવિપાદક મતં નિરસ્તમ્. સૂ. ૪૬ ॥

પ્રાસુક—અચિત્ત ઉત્તમાદિ દોષ ચર્જિત હોનસે એપનીય-કલ્પનીય એસે અલ્પ અલ્પમાત્રામેં યુક્તિ કયે ગયે અનેક ઘરોંસે ખાનીત ખાહારકો વેસવિધિ ગચ્છેપણા નહોં કરતે હિં. ઇસ કારણસે ખી વે અતિશેષ કેવલજ્ઞાન ઓર કેવલદર્શનકો પ્રાપ્ત કરને નહોં પાતે હિં ૪.

ઇસ પ્રકારકે ઇન ચાર કારણોંકો હેકર નિર્ગ્રન્થ-નિર્ગ્રન્થિયોંકો ઉત્પત્તિ યોગ્ય ખી અતિશેષ કેવલજ્ઞાન ઓર કેવલદર્શન ઉત્પન્ન હોને નહોં પાતે હિં. “ચૃદિ ઠાણેદિ” ઇત્યાદિ—ઉપસે યહ પ્રકટિત કિયા ગયા હે કિ ઇન પૂર્વોક્ત કારણોંસે વિપરીત કારણોંકો હેકર નિર્ગ્રન્થ-નિર્ગ્રન્થિયોંકો કેવલજ્ઞાન ઓર કેવલદર્શન ઉત્પન્ન કર હેતે હિં. યહાં “નિર્ગ્ર-ધી” પદકે ઉપાદાનસે સ્ત્રીકો મુક્તિ નહોં માનનેવાલોંકા મત નિરસ્ત કિયા ગયા હે ॥ સૂ. ૪૬ ॥

(૪) પ્રાસુક અચિત્ત, ઉત્તમાદિ દોષથી રહિત હોવાને કારણે એપનીય (કલ્પ) એવા અલ્પ અલ્પ માત્રામાં અનેક પ્રદોષોથી રહિત્વ કશયેલા આકાશની તેજો વિધિચક્રિત ગચ્છેલા કરતા નથી, તે કારણે પણ તેજો અતિશેષ કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શનને પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી. આ પ્રકારની આ આશ કરણોને લીધે નિર્ગ્રન્થો અને નિર્ગ્રન્થીઓ ઉત્પત્તિ થોમ્સ એવા અતિશેષ કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શનને ઉત્પન્ન કરી શકતા નથી.

“ચૃદિ ઠાણેદિ” ઇત્યાદિ—ઉપર જે કારણો પ્રકટ કરવામાં આવી છે તે કારણો કરતાં વિપરીત કારણોને લીધે નિર્ગ્રન્થો અને નિર્ગ્રન્થીઓ અતિશેષ કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શન ઉત્પન્ન કરી શકે છે અહીં નિર્ગ્રન્થી’ આ પદના પ્રયોગ દ્વારા ‘હીને મુક્તિ પ્રાપ્ત થતી નથી’ આ પ્રકારની માન્યતા પ્રચલિતના અત્યુ અન કરીને જે વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે હીને પણ મુક્તિ મળી શકે છે ॥ સૂ. ૪૬ ॥

નિર્ગ્રન્થપ્રસ્તાવાત્સ્વાધ્યાયસ્યાકર્તવ્યકર્તવ્યત્રિપયકં સૂત્રત્રયમાહ—

મૂળમ્-નો કપ્પઙ્ નિર્ગંથાણ વા નિર્ગંથીણ વા ચઉહિં મહા-
પઢિવણ્હિં સજ્ઞાયં કરિત્તણ, તં જહા-આસાઢપાઢિવણ ૧, ઇંદ-
મહપાઢિવણ ૨, કત્તિયપાઢિવણ ૩, સુગિમ્હપાઢિવણ ૪। ણો
કપ્પઙ્ નિર્ગંથાણ વા નિર્ગંથીણ વા ચઉહિં સંજ્ઞાહિં સજ્ઞાયં
કરિત્તણ, તં જહા-પઢમાણ ૧, પચ્છિમાણ ૨, મજ્ઞણહે ૩, અદ્ધુરત્તે
૪। કપ્પઙ્ નિર્ગંથાણ વા નિર્ગંથીણ વા ચાઉક્કાલં સજ્ઞાયં કરિ-
ત્તણ, તં જહા-પુવ્વણહે ૧, અવરણહે ૨, પઓસે ૩, પચ્ચૂસે ૪। સૂ ૦ ૪૭ ॥

છાયા—નો કલ્પતે નિર્ગ્રન્થાનાં વા નિર્ગ્રન્થીનાં વા ચત્તસુ મહાપ્રતિપત્તુ
સ્વાધ્યાયં કર્તુમ્, તથા-આપાઢપ્રતિપત્ ૧, ઇન્દ્રમહપ્રતિપત્ ૨, કાર્તિકપ્રતિપત્
૩, સુગ્રીમ્પ્રતિપત્ ૪। નો કલ્પતે નિર્ગ્રન્થાનાં વા નિર્ગ્રન્થીનાં વા ચત્તસુ
સન્ધ્યાસુ સ્વાધ્યાયં કર્તુમ્, તથા-પ્રથમાયામ્ ૧, પશ્ચિમાયામ્ ૨, મધ્યાહ્ને ૩,

નિર્ગ્રન્થકે પ્રકરણસે અવ સૂત્રકાર સ્વાધ્યાયમેં કર્તવ્યતા-અકર્તવ્યતા
વિષયક્ત સૂત્રત્રયકા કથન કરતે હૈં ।

“ નો કપ્પઙ્ નિર્ગંથાણ વા નિર્ગંથીણ વા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-ચાર મહાપ્રતિપદાઓમેં (એકમમેં) નિર્ગ્રન્થ-નિર્ગ્રન્થિયોંકો
સ્વાધ્યાય કરના યોગ્ય નહીં હૈ, જૈસે-આષાઢકી પ્રતિપદામેં ૧, ઇન્દ્ર-
મહકી પ્રતિપદામેં ૨, કાર્તિકકી પ્રતિપદામેં ૩ ઓર સુગ્રીમ્પ્રતિપદામેં ૪ ।

ચાર સન્ધ્યાઓમેં નિર્ગ્રન્થ-નિર્ગ્રન્થિયોંકો સ્વાધ્યાય કરના યોગ્ય
નહીં હૈ । જૈસે-પ્રથમ સન્ધ્યામેં ૧, પશ્ચિમ સન્ધ્યામેં ૨, મધ્યાહ્નમેં ૩,
ઓર અર્ધરાત્રમેં ૪-૨

નિર્ગંથાના અધિકાર ચાલુ હોવાથી હવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરે છે
કે નિર્ગંથ-નિર્ગંથીઓએ ક્યારે સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ અને ક્યારે ન કરવો
જોઈએ “ નો કપ્પઙ્ નિર્ગંથાણ વા નિર્ગંથીણ વા ” ઇત્યાદિ—

ચાર મહાપ્રતિપદાઓમાં (વડ એકમે) નિર્ગંથ અને નિર્ગંથીઓએ
સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં (૧) અષાઢી પડવે, (૨) આસો માસના પડવે,
(૩) કાર્તિક માસના પડવે અને સુગ્રીમ્પ્રતિપદા-ચૈત્રના પડવે.

ચાર સંધ્યાઓમાં નિર્ગંથ-નિર્ગંથીઓએ સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં.
(૧) પ્રથમ સંધ્યામાં, (૨) છેલ્લી સંધ્યામાં, (૩) મધ્યાહ્ને અને (૪) અર્ધરાત્રે

अर्द्धरात्रे वा २। कर्त्तरते निर्ग्रन्थानां वा निर्ग्रन्थीनां वा चतुष्कालं स्वाध्यायं
कर्त्तुम्, तस्या-पूर्वदि १, अपराह्ण २, प्रदोष ३, प्रत्यूषे ४। ३। मू० ४७॥

टीका—“नो कण्वद्” इत्यादि-चतसृषु महाप्रतिपद्यु-महोत्सवानन्तर
रुचिस्वनोत्सवानुष्ठानाऽनतिष्ठप्रतिपदमेषिलग्नतया महत्यथ ताः प्रतिपदी
महाप्रतिपदस्यासु महाप्रतिपद्यु, स्वाध्यायम्-आचाराद्वादि मूकपाठपठनस्य,
कर्त्तुं निर्ग्रन्थानां वा निर्ग्रन्थीनां वा नो कर्त्तरते, उत्सवानुष्ठानां स्वाध्यायसिद्धि
सम्पत्ताय 'ताधनम आह-“तथ”-ति-आपाद प्रतिपद्यु-भाषास्य पौर्णमास्या
अनन्तरा प्रतिपद्यु १ इन्द्रमहप्रतिपद्यु-इन्द्रमह-मन्थगुरोर्णमासी, तस्यानन्तरा
प्रतिपद्यु इन्द्रमहप्रतिपद्यु २, कार्तिकप्रतिपद्यु-कार्तिकपौर्णमास्यनन्तरप्रतिपद्यु ३।
गुप्तीप्सप्रतिपद्यु-गुप्तीप्स-चैत्रपौर्णमासी तस्या अनन्तरा प्रतिपद्यु गुप्तीप्सप्रतिपद्यु ४।

निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थीणां चारकान्तर्मे स्वाध्याय करना योग्य है।
जैसे-पूर्वाह्णमें १, अपराह्णमें २, प्रदोषमें ३ और प्रत्यूषमें ४ ३।

टीका-चार प्रतिपद्यु-तिथिमें स्वाध्याय निमित्त करनका कारण यह है कि
वसयमें पशुधा पिप्प सम्भायना यनी रहती है। आचाराद्वादिना मूठ
पाठको स्वाध्याय शब्दसे लिया है। इन प्रतिपदाओंको “महा” शब्दसे
विशेषित किया गया है।

आपादी पूर्णिमाके बाद जो पहिया तिथि आती है। यह
प्रतिपदा उसी मासक कृष्णपक्षमें आती है, इसे कृष्णपक्षकी एकम
तिथि कहते हैं। आश्विन मासकी पूर्णिमाके अनन्तर ११ उसी मासकी
कृष्णपक्षकी एकम तिथि है यह इन्द्रमहकी प्रतिपद्यु है। कार्तिक पूर्णिमा के
बाद जो प्रतिपदा तिथि आती है यह कार्तिक प्रतिपदा है। और गुप्तीप्स

तिथि में निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्
१। ३। मू० ४७—(१) पूर्वाह्ण (२) अपराह्ण (३) प्रदोष और (४) प्रत्यूष

टीका—२२ प्रतिपदा (२२ तिथि) निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्
निमित्त १। ३। मू० ४७ के निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्
१। ३। मू० ४७ के निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्
१। ३। मू० ४७ के निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्

म. २२ पूर्णिमा १३ के निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्
१। ३। मू० ४७ के निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्
१। ३। मू० ४७ के निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्
१। ३। मू० ४७ के निमित्त होने के कारण निर्ग्रन्थीनां चतुष्कालं स्वाध्यायं कर्त्तुम्

“ નો કપ્પઃ ” ઇત્યાદિ, નો કલ્પને નિગ્રન્થાનાં નિગ્રન્થીનાં ચતસ્રુ સન્ધ્યાસુ સ્વાધ્યાયં કર્તુમ્ । તથા-પ્રથમાયામ્-પ્રથમા-અનુદિતે સૂર્યેર્ધમુહૂર્ત-પૂર્વે યા સન્ધ્યા ભવતિ સા પ્રથમા, તસ્યામ્, ઉદિતેઽપ્યર્ધમુહૂર્તપર્યન્તમિતિ ભાવઃ ૧।

તથા—પશ્ચિમાયામ્-પશ્ચાદ્ ભવા પશ્ચિમા-અસ્તં ગતે સૂર્યે યા સન્ધ્યા ભવતિ સા, તસ્યામ્, સૂર્યાસ્તાત્પ્રાર્દ્રમુહૂર્તાદારભ્ય યાવદ્ દિગ્ગુણિમાનં ભજતે તાવદિ-તિભાવઃ ૨। તથા મધ્યાહ્ને-અહ્નોમધ્યો મધ્યાહ્નસ્તસ્મિન્-પૂર્વાહપરાહ્નોયોઃ સન્ધિભાગ ઇત્યર્થઃ, પૂર્વાહસ્યાન્ત્યર્ધમુહૂર્તમ્, અપરાહ્નસ્ય ચાઽઽધ્યર્ધમુહૂર્તમિતિ મુહૂર્તમેકં યાવદિતિ ભાવઃ ૩। તથા-અર્ધરાત્રે-રાત્રેરર્ધમર્ધરાત્રસ્તસ્મિન્-અત્રાપિ મધ્યાહ્નત્

ચૈત્ર પૂર્ણિમાકે અનન્તર જો પ્રતિપત્ તિથિ આતી હૈ વહ સુગ્રીભ્મ પ્રતિ-પત્ હૈ । ઇસી પ્રકાર ચાર સન્ધ્યાઓમૈ સ્વાધ્યાયકા જો નિપેધ કિયા હૈ વહમી કેવલ વિઘ્ન આનેકી સમ્ભાવનાસે હૈ, યહાં પ્રથમ સન્ધ્યાસે વહ સમયલિયા ગયા હૈ જો સૂર્યોદયસે પહેલે આધે મુહૂર્તકા રહતા હૈ । અર્થાત્-સૂર્યોદય હોજાને પરમી અર્ધમુહૂર્ત તક સ્વાધ્યાય નહીં કરના ચાહિયે । પશ્ચિમાસન્ધ્યા વહ હૈ જો સૂર્યકે અસ્તઙ્ગત હોને પર હોતી હૈ, સૂર્ય અસ્ત હોંગે ડસસે પહેલે કે અર્ધ મુહૂર્તસે લેકર જવ તક દિશાણં લાલ બની રહતી હૈ તવ તકકા વહ સમય પશ્ચિમ સન્ધ્યા હૈ તવ મી સ્વાધ્યાય નહીં કરના ચાહિયે । પૂર્વાહ-ઑર અપરાહ્નકા સન્ધિ ભાગ મધ્યાહ્ન હૈ । પૂર્વાહકે અન્તકા આધામુહૂર્ત ઑર અપરાહ્ન કે આદિ કા આધા મુહૂર્ત ઇસ પ્રકાર ઇસ એક મુહૂર્ત તક સ્વાધ્યાય નહીં કરના

ચૈત્રી પૂર્ણિમા પછી જે વડ એકમની તિથિ આવે છે, તેને ‘ સુગ્રીભ્મ પ્રતિપદા ’ કહે છે. આ ચારે પ્રતિપદાની તિથિઓમાં સ્વાધ્યાયનો નિપેધ છે

એ જ પ્રમાણે ચાર સન્ધ્યાઓમાં સ્વાધ્યાયનો જે નિપેધ કર્યો છે, તે પણ વિઘ્ન આવવાની સંભાવનાથી જ કર્યો છે. પ્રથમ સન્ધ્યા એટલે સૂર્યોદય પહેલાં અર્ધા મુહૂર્તનો અને સૂર્યોદય બાદ અર્ધા મુહૂર્તનો સમય પશ્ચિમ સન્ધ્યા એટલે સૂર્યાસ્ત પહેલાનો અર્ધા મુહૂર્તનો સમય તથા સૂર્યાસ્ત બાદ જ્યાં સુધી દિશાઓ લાલીમા યુક્ત રહે છે ત્યાં સુધીનો સમય આ બન્ને સન્ધ્યામાં સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં । પૂર્વાહ્ણ અને અપરાહ્ણના સંધિ-કાળને મધ્યાહ્ણ કહે છે । પૂર્વાહ્ણના અન્તે અર્ધા મુહૂર્ત સુધી અને અપરાહ્ણની શરૂઆતના અર્ધા મુહૂર્ત સુધીના કાળમાં પણ સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં. રાત્રિનો પણ એ જ પ્રકારનો જે મધ્ય ભાગ છે, તે મધ્યરાત્રિ ૩૫ કાળમા

કાલપરિમાણં ધોષ્યમ્ ૪। આસુ સન્ધ્યાસુ સ્વાધ્યાયં કર્તુ ન કલ્પયેત્ । મધ્યાહ્નપ્ર-
રાત્રયોઃ સન્ધ્યાત્વ ચાર્ધત્વરૂપસન્ધ્યપેક્ષયા ધોષ્યમ્ ૨।

અય સ્વાધ્યાયકરમકાલમાહ—“ કલ્પય ” इत्यादि—चतुष्कालः—चतुर्णां
कालानां समाहारश्चतुष्कालः, सप्त मघो यः स तथा तं स्वाध्यायं कर्तुं निर्गन्तव्यानां
निर्गन्तव्यानां वा कल्पयते, तथया—पूर्वाह्नि—अह्नः पूर्वः पूर्वाह्न—दिनाऽऽपमहरा,
तस्मिन् १, अपराह्नः—अह्नोऽपरः—अपराह्नः—दिनचरमपहरा, तस्मिन् २, प्रदोषे—
रात्रेः प्रथमपहरे १, मत्सूपे—रात्रेऽधरमपहरे ४। १। सू० ४७ ॥

पूर्व સ્વાધ્યાયકાલ ઉક્તઃ, ફરની સ્વાધ્યાયમત્સૂપસ્ય લોકસ્થિતિપરિજ્ઞાન
મત્સૂપેતિ તાં મતિપાદયમાહ—

મૃચ્—અઝઘિહા લોગટિર્ષ પળ્ણત્તા, ત જહા—આગાસપઙ્
ટિષ્ વાપ્ ૧, વાયપઙ્ટિષ્ ઉદહી ૨, ઉદહિપઙ્ટિયા પુઢવી ૩,
પુઢવિપઙ્ટિયા તસા થાવરા પાળા ૪ ॥૪૮॥

આહિયે । તથા રાત્રિકા જો અર્ધમાગ હૈ ઉસમેં ખી સ્વાધ્યાય નહીં કરના
આહિયે । યહાં મધ્યાહ્નકા જેસાહી સમયકા પરિમાણ જાનના આહિયે ।
इन चार संध्याओंमें स्वाध्याय वर्जित है । मध्याह्नमें और अर्धरात्रमें
सन्ध्याका व्यवहार सचिकी अपेक्षासे जानना चाहिये २ । सूत्रकारने
स्वाध्याय करनेका जो पूर्वाह्न आदिकाल कहा है, उसका मास ऐसा
है—दिनका आद्य प्रहर पूर्वाह्न है, दिनका अन्तिम प्रहर अपराह्न है एवं—
रात्रिका प्रथम प्रहर प्रदोषकाल है और चरम प्रहर मत्सूपकाल है । सू० ४७

સ્વાધ્યાયકાલ કહકર અય સૂત્રકાર સ્વાધ્યાયમે પ્રવૃત્ત જુવે સાધુ

પણ સ્વાધ્યાય કરવો એકજ નહીં અહીં પણ મધ્યાહન એવુ જ તે કાળનું
પ્રમાણ સમજવું આ રીતે આ ચાર સંધ્યાઓમાં સ્વાધ્યાયનો નિષેધ કરમાયો
છે મધ્યાહ અને મધ્ય રાત્રિમાં એ સંધ્યાનો વ્યવહાર થયો છે, તે સંધિ
કાળની અપેક્ષાએ થયો છે

સૂત્રકારે સ્વાધ્યાય કરવાને યોગ્ય એ પૂર્વાહ્ન આદિ કાળ બતાવ્યા છે,
તેનું કવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

दिवसस्या पहेला प्रहरने पूर्वाह्ण कहे छे दिवसस्या ऐह्य प्रहरने
अपराह्ण कहे छे रात्रिना प्रथम प्रहरने प्रदोषकाज कहे छे, अने रात्रिना
ऐह्य प्रहरने मत्सूप कहे छे आ चारे कालने स्वाध्याय करवा भटेल्य योच्य
समय अहो कहा छे ॥ सू ४७ ॥

સ્વાધ્યાયના કાળનું નિરૂપણ કરુ સ્વાધ્યાયમાં પ્રવૃત્ત થતાં સાધુ આદિ

છાયા-ચતુર્વિધા લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞા, તથા-આકાશપ્રતિષ્ઠિતો વાતઃ ૧, વાતપ્રતિષ્ઠિત ઉદધિઃ ઉદધિપ્રતિષ્ઠિતા પૃથિવી પૃથિવીપ્રતિષ્ઠિતા-સ્રમાઃ સ્થાવરાઃ પ્રાણાઃ ૪। સૂ ૦ ૪૮ ॥

ટીકા—“ ચંડવિવહા લોગટ્ટિર્હિ ” इत्यादि—लोकस्य-क्षेत्ररूपस्य स्थितिः-व्यवस्था लोकस्थितिः, सा चतुर्विधा प्रज्ञा, तथ्या-आकाशप्रतिष्ठितः-आकाशे-प्रतिष्ठितः-व्यवस्थित आकाशप्रतिष्ठितः, वातः-तनुवातघनवातरूपः पवनः ?, तथा वातप्रतिष्ठितः-वायुप्रतिष्ठितः, उदधिः-समुद्रः घनोदधिरूपः २, उदधिप्रतिष्ठिता-घनोदधिव्यवस्थिता पृथिवी-रत्नप्रभादिका, पृथिवीप्रतिष्ठिताः व्रसाः-आदिको जो लोकस्थितिका परिज्ञान होता है, इस बातको प्रकट करते हैं, अर्थात्-कालस्थितिका कथन करते हैं।

“ चंડवિवहा लोगट्टिर्ह पणत्ता ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ-લોકસ્થિતિ ચાર પ્રકારની કહી गई है, जैसे-आकाश प्रतिष्ठितवात १, वातप्रतिष्ठित उदधि २, उदधि प्रतिष्ठित पृथिवी, ३, पृथिवी प्रतिष्ठित व्रस स्थावरजीव ४।

ટીકાર્થ-क्षेत्ररूप लोककी व्यवस्थाका नाम लोकस्थिति है, यह लोकस्थिति भी चार प्रकार कही गई है, उसका भाव ऐसा है—आकाशमें-तनुवात और घनवातरूप जो पवन प्रतिष्ठित है, वह आकाश प्रतिष्ठितवात है। घनोदधिरूप समुद्र जो वायुप्रतिष्ठित है, वह वात प्रतिष्ठित उदधि है, तथा-घनोदधि व्यवस्थित जो रत्नप्रभा आदिक पृथिवियां हैं वे उदधि प्रतिष्ठित पृथिवी है। तथा पृथिवी प्रतिष्ठित जो एकेन्द्रिय और द्वीन्द्रियादिक जीव हैं वे पृथिवी प्रतिष्ठित व्रस स्थावर

કોને લોકસ્થિતિનું પરિજ્ઞાન હોય છે આ સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર લોકસ્થિતિનું કથન કરે છે “ ચંડવિવહા લોગટ્ટિર્હિ પણત્તા ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-લોકસ્થિતિ ચાર પ્રકારની કહી છે. જેમકે-(૧) આકાશ પ્રતિષ્ઠિતવાત, (૨) વાતપ્રતિષ્ઠિત ઉદધિ, (૩) ઉદધિ પ્રતિષ્ઠિત પૃથ્વી અને (૪) પૃથ્વી પ્રતિષ્ઠિત વ્રસ સ્થાવરજીવ

ટીકાર્થ-क्षेत्ररूप लोकनी व्यवस्थानु नाम लोकस्थिति છે. તે લોકસ્થિતિ પણ ચાર પ્રકારની કહી છે, તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—

(૧) આકાશમાં તનુવાત અને ઘનવાત રૂપ જે વાયુપ્રતિષ્ઠિત છે, તેનું નામ આકાશ પ્રતિષ્ઠિતવાત છે (૨) ઘનોદધિ રૂપ સમુદ્ર જે વાયુપ્રતિષ્ઠિત છે, તેનું નામ વાતપ્રતિષ્ઠિત ઉદધિ છે (૩) ઘનોદધિ વ્યવસ્થિત જે રત્નપ્રભા આદિ પૃથ્વીઓ છે, તેમને ઉદધિ પ્રતિષ્ઠિત પૃથ્વી કહે છે. (૪) પૃથ્વી પ્રતિષ્ઠિત

ગ્રીન્ત્રિયમમૃતય, ચે પુનર્ગ્રીન્ત્રિયાદયો રત્નમમાદિ પૃથિવીપ્ત્વપ્રતિષ્ઠિતાસ્તેઽપિ
પર્વતવિમાનાદિકૃપપૃથિવીપ્રતિષ્ઠિતત્વાત્પૃથિવી પ્રતિષ્ઠિતા એવ સન્તિ । વિમાન
પૃથિવીનાં ઘાડ઼કાદ્યપ્રતિષ્ઠિતસ્વ યથાસમ્મથ ઓખ્યમ્ ।

યદ્વા—વિમાનગતદેવાદિવ્રસાનાભિશાવિવક્ષસિ । સ્થાવરા રૂઢ વાદરવનસ્વ
સ્થાદયો ઓખ્યાઃ, સૂક્ષ્માણાં છુ સર્વલોકપ્રતિષ્ઠિતત્વાત્, માણાઃ—ઝીરા । લોક-
સ્થિતેર્વિશેષવ્યાસશ઼ડસ્વેષ તૃતીયસ્થાને દ્વિતીયોદ્દેશે ઇકોનવત્વારિણતમમૂઢે રૂઢ-
વ્યેતિ । । સૂ. ૪૮ ।

અનન્તર પ્રસાઃ પ્રાણા ઉક્તાઃ, સમ્પતિ ત્રસમાયવિશેષસ્ય સ્વસ્ત્યં વર્ષયિતું
તતુર્મંદ્રીસૂત્રચતુષ્ટયમાહ—

મૂક્ષ્મ—ચત્તારિ પુરિસજાયા પપ્પણ્ણા, ત જહા—તહે ણામ-
મેગે ૧, ણો તહે ણામમેગે ૨, સોવત્થિપ્પ ણામમેગે ૩, પહ્હાણે
ણામમેગે ૪ ॥ ૧ ॥

જીવ હૈં । તથા—જો ગ્રીન્ત્રિયાદિક જીવ રત્નપ્રમા આદિ પૃથિવિયોર્મિ
અપ્રતિષ્ઠિત [એસે] હૈં વે ઝી પર્વત વિમાન આદિકૃપસે પૃથિવિયોર્મિ
પ્રતિષ્ઠિત હોનેકે કારણસે પૃથિવી પ્રતિષ્ઠિતહી હૈં । વિમાન—પ્રથં પૃથિવી
આદિકૃપેર્મિ આકાશ પ્રતિષ્ઠિતતા યથાસમ્મથ જાનની આહિયે । વિમાન
ગત દેવાદિવ્રસોંકી યહાં વિવક્ષા નહીં કુર્હૈં હૈ, સ્થાવર શમ્બસે યહાં વાદર
વનસ્પતિ આદિક સમજના આહિયે, કયોંકિ—જો સૂક્ષ્મજીવ હૈં વે સર્વ
લોકેર્મિ પ્રતિષ્ઠિત હૈં । લોકસ્થિતિ સમ્પન્નિની વ્યાસથા હસી સૂત્રકે
તૃતીય સ્થાનગત દ્વિતીય ઉદ્દેશેર્મિ ૩૯ વે સૂત્રમેર્મિ વિશેષરૂપસે દેવ્ય છેત્રી
આહિયે ॥ સૂ. ૪૮ ॥

જે ઝોઢેન્ત્રિય, ગ્રીન્ત્રિય આદિકે એવ છે તેમજુ નામ પૃથ્વી પ્રતિષ્ઠિત સ્થાવર
એવ છે તથા જે ગ્રીન્ત્રિયાદિકે એવો રત્નપ્રમા આદિ પૃથ્વીયોર્મિ અપ્રતિષ્ઠિત
જેવાં છે, તેઓ પણ વિમાનાદિકે પૃથ્વીયોર્મિ પ્રતિષ્ઠિત હોવાને કારણે પૃથ્વી
પ્રતિષ્ઠિત જ છે વિમાન અને પૃથ્વી આદિકેર્મિ આકાશ પ્રતિષ્ઠિતતા મથ.સ.મ.વ
સમજવી જોઈએ. વિમાનગત દેવાદિકે ત્રસોત્તી વાત અહીં કરી નથી. સ્થાવર
પૃથ્વી અહીં વાદર વનસ્પતિકાપિક આદિકે સમજવા જોઈએ, કારણ કે જે એવો
સૂક્ષ્મ છે, તે તો સર્વલોકેર્મિ પ્રતિષ્ઠિત છે લોકસ્થિતિની સવિસ્તર પ્રકરણા
ગ્રીન્ત્રિય સ્થાનના બીજા ઉદ્દેશના ઉદ્ધર્મા સૂત્રમા કરવાર્મિ આવી છે તો ત્યાંથી
જાંચી લેવી. ॥ સૂ. ૪૮ ॥

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળત્તા, તં જહા-આયંતકરે ણામમેગે
 ણો પરંતકરે ૧, પરંતકરે ણામમેગે ણો આયંતકરે ૨, એગે આયં-
 તકરેવિ પરંતકરેવિ ૩, એગે ણો આયંતકરે ણો પરંતકરે ૪ । ૨ ।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળત્તા, તં જહા-આયંતમે ણામમેગે
 ણો પરંતમે ૧, પરંતમે ૪ । ૩ ।

ચત્તારિ પુરિસજાયા પળત્તા, તં જહા-આયંદમે ણામમેગે
 ણો પરંદમે ૦ ૪, । ૪ । સૂ ૦ ૪૧ ॥

છાયા—ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથથા-તથો નામૈકઃ ૧, નોતથો
 નામૈકઃ ૨, સૌવસ્તિકો નામૈકઃ ૩, પ્રધાનો નામૈકઃ ૪, (૧)

ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથથા-આત્માન્તકરો નામૈકો નો પરાન્તકરઃ
 ૧, પરાન્તકરો નામૈકો નો આત્માન્તકરઃ ૨, એક આત્માન્તકરોઽપિ પરાન્તક-
 રોઽપિ ૩, એકો નો આત્માન્તકરો નો પરાન્તકરઃ ૪ । ૨ ।

ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથથા-આત્મતમો નામૈકો નો પરતમઃ ૧,
 પરંતમ ૦ ૪, । ૩ ।

અવ સૂત્રકાર ત્રસ પ્રાણવિશેષકા સ્વરૂપ દિઠ્ઠાનેકે લિયે ચતુર્મઙ્ગી રૂપ
 ચાર સૂત્રસે કથન કરતે હૈં । “ચત્તારિ પુરિસજાયા પળત્તા” ઇત્યાદિ—

પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હૈં । જૈસે—કોઈ એક તથા ૧, કોઈ એક નો
 તથા ૨, કોઈ એક સૌવસ્તિક ૩ ઓર કોઈ એક પ્રધાન ૪ ।

પુનશ્ચ—પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે—એક આત્માન્તકર નો
 પરાન્તકર ૧, કોઈ એક પરાન્તકર નો આત્માન્તકર ૨, કોઈ એક આત્મા-
 ન્તકરેમી ઓર પરાન્તકરેમી ૩, તથા કોઈ એક નો આત્માન્તકર નો
 પરાન્તકર ૪ । પુનશ્ચ—પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે—કોઈ એક

હવે સૂત્રકાર ત્રસ પ્રાણવિશેષના સ્વરૂપનું ચતુર્મઙ્ગીયુક્ત ચાર સૂત્રો દ્વારા
 નિરૂપણ કરે છે “ચત્તારિ પુરિસજાયા પળત્તા” ઇત્યાદિ—

પુરુષના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) તથા પુરુષ (આજ્ઞાકારી), (૨) નો
 તથા (આજ્ઞા ઉત્થાપનાર) (૩) સૌવસ્તિક (સ્તુતિ કરનાર) (૪) પ્રધાન પુરુષ । ૧ ।

આ રીતે પણ ચાર પુરુષ કહ્યા છે—(૧) આત્માન્તકર નો પરાન્તકર,
 (૨) પરાન્તકર નો આત્માન્તકર, (૩) આત્માન્તકર અને પરાન્તકર. (૪) નો
 આત્માન્તકર નો પરાન્તકર. । ૨ ।

ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ મજ્ઞતાનિ, તથા-આત્મવદ્મો નામૈકો નો પરદમ. ૪,
। સુ. ૪૯॥

ટીકા—“ ચત્વારિ પુરિસજાયા ” इत्यादि-પુરુષજાતાનિ ચત્વારિ મજ્ઞ
તાનિ તથા-તથા-સેવકઃ સન્ યથૈવાડિશ્યતે તથૈવ યઃ કર્મણિ પ્રવર્તતે સ
તથાસ્ત્યુચ્યતે, તાદૃશ એકઃ-કથિત્ પુરુષો મયસિ, સ્વામ્યાજ્ઞાકારકુ इत्यर्थः ૧,

એકઃ-અપરઃ પુરુષો નોતય -સેવકઃ સન્ યથાડિશ્યતે તથા યો ન પ્રવ
ર્તતે સ પુરુષો નોતયઃ કથ્યતે-સ્વામ્યાજ્ઞાપરિવર્તીત્યર્થ ૨,

એકઃ-કથિત્પુરુષઃ સૌવસ્તિક-સ્વસ્તીતિ કલ્યાણવાચકં શબ્દ મયસિ યદ્વા
આત્મતમ નો પરતમ ૧, કોઈ એક પરતમ નો આત્મતમ ૨, इत्यादि
રૂપ ૩-૪ । પુનઃ-પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હૈ, એસે-કોઈ એક આત્મ
વદ્મ નો પરદમ ૧ इत्यादि ।

યહાં પ્રથમ સુત્ર કે પ્રથમ મંત્રમે “ તથા ” શબ્દ વસ
સેવક પુરુષ કા વાચક હૈ કિ જો એસા કામ કરનેકો કહા
જાતા હૈ, વૈસાહી કામ કરતા હૈ । અર્થાત્-કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા
હૈ જો અપને સ્વામીકી આજ્ઞાકા પાલક હોના હૈ ૧, કોઈ એક એસા
હોના હૈ જો વસસે એસા કામ કરનેકો કહા જાતા હૈ વહ વૈસા કામ
નહીં કરતા હૈ, અર્થાત્-અપને સ્વામીકી આજ્ઞાકા પરિવર્તી હોતા હૈ ૨
ત્રીસરા કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો અપને સ્વામીકી સ્તુતિ કરતા

આ રીતે પણ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) આત્મતમ નો પરતમ,
(૨) પરતમ નો આત્મતમ (૩) આત્મતમ અને પરતમ, (૪) નો આત્મતમ
નો પરતમ । ૩ ।

આ રીતે પણ ચાર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે—(૧) આત્મતમ નો પરતમ,
(૨) પરતમ નો આત્મતમ, (૩) આત્મતમ અને પરતમ, (૪) નો આત્મતમ,
નો પરતમ । ૪ ।

વિશેષાય—પહેલા સૂત્રના પહેલા ભાગમાં ‘ તથા ’ પદ એના સેવક
પુરુષનું વાચક છે કે જેને જે કામ કરવાનું કહેવામાં આવે તે કામ કરે છે
એટલે કે કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞાનું પાલન
કરનારો હોય છે

૨ (૨) “ નો તથા ” બીજા ભાગમાં ‘ નો તથા ’ પદ એ પ્રકર કરે છે કે
કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞાને પાલક હોતો નથી,
તેને જેનું કામ કરવાનું કહેવામાં આવે તેનું કામ કરતો નથી

કલ્યાણં સમાચરતિ સ સૌવસ્તિકઃ, एतादृशो माङ्गलिकवृत्ता मागधप्रभृतिर्भवति३,
 एकः-कश्चित् पुरुषः प्रधानः-मुख्यः स्वामीत्यर्थः सेवकप्रभृतिजनाऽऽरा-
 धकत्वात् भवति ४। १।

“વત્તારિ પુરિસજાયા ” ઇત્યાદિ-સ્પષ્ટમ્, નવરમ્-આત્માન્તકરઃ-અત્ર
 ‘આત્મ’ શબ્દેન આત્મકર્મ ગૃહ્યતે, આત્મનોઽન્તાભાવાત્, તેન-આત્મનઃ-આત્મ-
 કર્મણોઽન્તમ્-અવસાનં કરોતીત્યેવંશીઝ આત્માન્તકરઃ-સ્વકીયકર્મક્ષયકરો ભવતિ
 કિન્તુ નો પરાન્તકરઃ-પરાકીયકર્મક્ષયકરો નો ભવતિ ધર્મદેશનાદિરઠિતઃ પ્રત્યેક-
 બુદ્ધપ્રભૃતિરિવ । ૧।

તથા-एकः-कश्चित् पुरुषः अपरान्तकरो भवति किन्तु आत्मान्तकरो नो
 है, मङ्गलवाचक होता है, जैसे-मागध आदि पुरुष ३ (स्तुतिपाठक)
 तथा कोई एक चौथा पुरुष ऐसा होता है जो प्रधान स्वामी होता है,
 सेवक आदिजन जिसकी आराधना-सेवा आदि करते हैं ४ ।

પુનઃ—द्वितीय सूत्रमें जो पुरुषजात चार कहे गये हैं, उसका
 अभिप्राय ऐसा है । कोई एक पुरुष ऐसा होता है जो आत्मान्तकर होता
 है, यहां आत्म शब्दसे अपना कृतकर्म लिया गया है । क्योंकि आत्म
 द्रव्यका अभाव नहीं होता है । ऐसा पुरुष वह होता है जो प्रत्येक
 बुद्धकी तरह अपनेही कर्मोंका नाशक-क्षयकर्त्ता होता है, परके
 कर्मोंका नहीं क्योंकि-वह धर्मदेशना आदिसे रहित होता है १ ।
 कोई एक पुरुष ऐसा होता है जो परान्तकर होता है आत्मान्तकर नहीं
 होता है, ऐसा वह पुरुष ब्रव्यलिङ्गी मुनिकी तरह अथवा-अचरम शरी-

(૩) કેાઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના સ્વામીની સ્તુતિ કરનારો
 હોય છે, મંગલવાચક હોય છે, જેમકે માગધ આદિ પુરુષ.

(૪) કેાઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પ્રધાન સ્વામી હોય છે. એટલે
 કે સેવક આદિજન તેની સેવા કરતા હોય છે.

બીજા સૂત્રનો ભાવાર્થ-પહેલા ભાંગાનો ભાવાર્થ—કેાઈ પુરુષ એવો
 હોય છે કે જે આત્માન્તકર હોય છે અહીં ‘આત્મ’ પદથી પોતાના કૃતકર્મ
 ગૃહીત થયેલ છે, કારણ કે આત્મદ્રવ્યનો અભાવ હોતો નથી આત્માન્તકર
 પુરુષ તેને કહે છે કે જે પ્રત્યેકબુદ્ધની જેમ પોતાના જ કર્મોનો ક્ષયકર્તા
 હોય છે, પરના કર્મોનો ક્ષયકર્તા હોતો નથી, કારણ કે તે ધર્મદેશનાદિથી
 રહિત હોય છે

બીજા ભાંગાનું સ્પષ્ટીકરણ—કેાઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પરાન્તકર
 હોય છે પણ આત્માન્તકર હોતો નથી. દ્રવ્યલિંગી મુનિ અને અચરમ શરીર-

મરણિ, મરમરમરીર આચાર્યાદિરિવ ।૨।

તથા-૫૬-કમિત્ પુરુષઃ આત્માન્તકરોઽપિ મરણિ પરાન્તકરોઽપિ મરણિ
તીર્થકરાદિરિવ ।૩।

તથા-૫૬-કમિત્ પુરુષઃ આત્માન્તકરો નો મરણિ પરાન્તકરોઽપિ નો
મરણિ જિનાશ્ચાવિરુદ્ધપ્રકરણકાઽઽધ્યાય ૩૫ ।૪।

રણાલે આચાર્યની તરફ હોતા હૈ ક્યોંકિ-હસકી ધર્મવેશનાસે વસરે
જીવ અપને કર્મોંકા નાશક હોજાસે હૈ-પર ચહ સ્વર્થ અપને કર્મોંકા
નાશક નહીં હોતે હૈ ૧ । તથા-કોઈ એક પુરુષ એસા મી હોતા હૈ જો
આત્માન્તકર મી ઓર પરાન્તકર મી હોતા હૈ ૩ । એસા પુરુષ તીર્થક્રુ
જેસે હોતે હૈ ક્યોંકિ-હનકી ધર્મવેશનાસે અન્ય ઓતા પુરુષ અપને ૨
અર્જિત કર્મોંકા ક્ષય કર લેતે હૈ-ઓર ચે સ્વર્થ મી અપને કર્મોંકા
ક્ષયકર્તા બનતે હૈ । તથા કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો આત્માન્તકર
નહીં હોતા હૈ ઓર ન પરાન્તકર હી હોતા હૈ । એસા પુરુષ ચહ હોતા હૈ
જો જિનાશ્ચા વિરુદ્ધ પ્રકરણ કરનેવાલે આચાર્યની તરફ અપની રજ્ઞ-
નુસાર પ્રકરણ કરતા હૈ, પશ્ય સ્વરૂપકા ચહ ચપાર્ય વિવેચક નહીં
હોતા હૈ । યદ્યા-આત્માન્તકર શબ્દ જો અપને પર્વાયકા બિનાશક હોતા
હૈ એસે આત્મચાતી પુરુષકા ચાચક હૈ ।

જાણ આચાર્યને આ પ્રકારમાં જણાવી શકાય છે કારણ કે તેમની દેશનાથી
અન્ય જોડે પોતાના કર્મોના ક્ષય કરે છે પણ તેઓ પોતે પોતાનાં કર્મોના
ક્ષયકર્તા થતાં નથી.

ત્રીજા ભાગનાં સ્પષ્ટીકરણ—કોઈ પુરુષ આત્માન્તકર (પોતાના કર્મોના
ક્ષય કરનાર) પણ કોય છે અને પરાન્તકર (અન્યના કર્મોના ક્ષય કરનાર)
પણ કોય છે એમકે લીધેકેશ. તેઓ પોતે પણ પોતાના કર્મોના ક્ષય કરી
નાખે છે અને તેમની દેશનાના પ્રમાણથી અન્ય પુરુષે પણ પોતાના કર્મોના
ક્ષય કરી નાખે છે

ચોથા ભાગનાં સ્પષ્ટીકરણ—કોઈ જોડે પુરુષ જોડે કોય છે કે જે
આત્માન્તકર પણ કોડો નથી અને પરાન્તકર પણ કોડો નથી. જિનાશ્ચ
વિરુદ્ધની પ્રકરણ કરનાર આચાર્યને આ ભાગમાં મૂકી શકાય છે, કારણ કે
તે પોતાની ઈચ્છાનુસાર પ્રકરણ કરતો કોનાથી પદાથના સ્વરૂપનુ ચચાક
પ્રતિપાદન કરનાર કોડો નથી. તેથી તે પોતે પણ પોતાના કર્મોના ક્ષય કરી
શકતો નથી અને ઓતાઓના કર્મોના ક્ષય પણ કરાવી શકતો નથી.

યદ્વા-આત્માન્તકર:-આત્મન:-સસ્યાન્ત-મરણં કરોતીત્યેવંશીલ આત્માન્ત-
કર:-આત્મઘાતી, તથા-નો પરાન્તકર:-નો પરઘાતીતિ પ્રથમ: ૧।

દ્વિતીયસ્તુ પરવધક:, તૃતીય આત્મ પરવધક:, ચતુર્થસ્તુ નો આત્મવધકો નો
પરવધક इत्यर्थो बोध्य: ૪। ॥૨॥

“ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા ” ઇતિ સ્પષ્ટમ્ । નવરમ્-એક:-કથિત્ આત્મ-
તમ:-આત્માનં તમયતિ-ખેદયતીત્યાત્મતમ:, કિન્તુ નો પરતમ:-પરં શિષ્યાદિકં
તમયતીતિ પરતમ: નો ભવતિ ૧। એવં શેષભદ્રત્રયં बोध्यम् ૪।

અત:-કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો આત્મઘાતી હોતા હૈ પર-
ઘાતી નહીં હોતા હૈ । તથા કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો આત્મઘાતી
ન હોકર પરઘાતી હોતા હૈ, જૈસે-શિકારી પુરુષ । તથા-કોઈ એક
તીસરા પુરુષ એસા હોતા હૈ જો અપનાભી ઘાત કરતા હૈ ઓર પરકાભી
ઘાત કરતા હૈ । કોઈ એક ચૌથા પુરુષ એસા હોતા હૈ જો ન અપના ઘાત
કરતા હૈ ઓર ન પરકા ઘાત કરતા હૈ ૨ ।

“ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા ” યહાં જો આત્મતમ આદિરૂપસે
પુરુષજાત ચાર પ્રગટ કિયે ગયે હૈં, ઉનકા તાત્પર્ય એસા કિ-કોઈ એક
પુરુષ એસા હોતા હૈ જો અપને આપકોહી ખેદયુક્ત કરતા હૈ, શિષ્યાદિ-
રૂપ પરકો નહીં ૧ । ઇસી પ્રકારસે ઓર ત્રીન ભદ્રાંકોભી સમજ્ઞ લેના
ચાહિયે । પુનશ્ચ-જો આત્મદમ આદિ પ્રકારસે પુરુષ કહે ગયે હૈં ।

અથવા-“ આત્માન્તકર ” પદ પોતાની પર્ચાયના વિષેદકનુ-આત્મ-
ઘાતીનું વાચક છે. આ દષ્ટિએ વિચારવામાં આવે તો પહેલા ભાંગાનો ભાવાર્થ
આ પ્રમાણે થશે-કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે આત્મઘાતી હોય
છે, પણ પરઘાતી હોતો નથી. (૨) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે
પરઘાતી હોય છે, પણ આત્મઘાતી હોતો નથી. (૩) કોઈ એક પુરુષ એવો
હોય છે કે જે પોતાનો પણ ઘાતક હોય છે અને પરનો પણ ઘાતક હોય
છે. (૪) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાનો પણ ઘાતક હોતો
નથી અને પરનો પણ ઘાતક હોતો નથી. ૧ ૨ ।

ત્રીજા સૂત્રનો ભાવાર્થ-“ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળગત્તા ” ઇત્યાદિ.
આત્મતમ આદિ રૂપે પુરુષના જે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ-
(૧) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના મનને જ ખેદયુક્ત કરે
છે, શિષ્યાદિ રૂપ પરને ખેદયુક્ત કરતો નથી. એ જ પ્રમાણે બાકીના ત્રણ
ભાંગાનો ભાવાર્થ પણ સમજી લેવો. ૧ ૩ ।

“ચતારિ” ઇત્યાદિ સ્પષ્ટમ્ । નવરમ્-પદ્મ-કથિત્ પુરુષઃ માત્મદમા-
આત્માન-સ્થ દમપતિ-દમવન્ત્ કરોતીત્યાત્મદમો મવતિ, કિન્તુ પરદમો ડ્યન્યદમકો
ન મવતિ ? એવ શ્લેષમદ્વત્રિકેડપિ વિવરણમૂઢમ્, અત્ર પરશ્ચન્દેન ક્ષિપ્યદુરગાદિર્વા
સુઘટે । ૪૧ । ૪૧ સૂ. ૪૯ ॥

પૂર્વે દમ ઉક્ત, સ ચ ગર્હણીયગર્હાંતો મવતીતિ ગર્હાં નિરૂપયિતુમાહ—
મૂલમ્—ચતુર્વિદ્યા ગરહ્યા પળ્લવતા, ત જદ્યા ઉવસપજ્જામિ
ત્તેગા ગરહ્યા ૧, વિતિગિષ્ઠામિત્તેગા ગરહ્યા ૨, જં કિંચિમિન્છા
મિત્તેગા ગરહ્યા ૩, યવવિ પલ્લવત્તેગા ગરહ્યા ૪ । સૂ. ૫૦ ।

છાયા—ચતુર્વિદ્યા ગર્હાં પ્રજ્ઞા, તથા-ઉપસપયે-ઇત્યેકા ગર્હાં ૧, મિચિ
ક્લિસામિ ઇત્યેકા ગર્હાં ૨, યત્કિચ્ચિત્ મિચ્યા મે ઇત્યેકા ગર્હાં ૩, યવમપિ
મજ્જતેકા ગર્હાં ૪ । સૂ. ૪૯ ।

ટીકા—“ચતુર્વિદ્યા ગરહ્યા” ઇત્યાદિ-ગર્હાં-શુદ્ધસાક્ષિકા આત્મનો નિન્દા,
સા ચતુર્વિદ્યા પ્રજ્ઞા, તથા-ઉપસપયે-શુદ્ધમાધ્યામિ સ્વરોપ નિવદયિતુ, શુદ્ધાપિ
ઉનકા તાત્પર્ય એસા છે કે કોઈ એક પુરુષ એસા છે જો સ્વયંકો દમવાલા
કરતા છે, વ્યાપ્તા છે, વશમાં કરતા છે, પરશિષ્ય આદિકો નહીં ? હસી
સરહસે અવશિષ્ટ ત્રીન અજ્ઞાં ઓર સમજા છેના જાહિયે । યહાં પરશન્દસે
શિષ્ય અથવા દુરગ-ધોષા આદિકા પ્રજ્ઞા ક્રુપા છે ॥ સૂ. ૪૯ ॥

દમકે વિષયમેં જો કહ્યા ગયા છે સો વદ્ ગર્હણીયકો ગર્હાંસે હોતા
છે । અતઃ-અવ સૂત્રકાર ગર્હાંકા નિરૂપણ કરસે છે ।

“ચતુર્વિદ્યા ગરહ્યા પળ્લવતા” ઇત્યાદિ—
ટીકાર્ય-ગર્હાં ચાર પ્રકારકી હોતી છે, શુદ્ધ સાક્ષિકા આત્મનિન્દાકા નામ ગર્હાં
છે । ઇનમેં એક ગર્હાં એસી હોતી છે જો અપને દોષકો નિબેદન કરનેકે

ચોથા સૂત્રમાં આત્મદમ આદિ ને આર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે તેનું
સ્પષ્ટીકરણ—(૧) કોઈ એક પુરુષ એવો કોણ છે કે જે પોતાને જ દમે છે,
વશમાં રાખે છે, અન્યને હમતા વશમાં રાખતો નથી. એ જ પ્રમાણે બાકીના
ત્રણ ભાંગાનો આવાર્થ પણ બંધે જ સમજી લેવો. ॥ સૂ. ૪૯ ॥

પહેલા સૂત્રને અન્તે ને હમનુ કથન કયુ તે ગર્હણીયની ગર્હાંથી જ
અભવી શકે છે તેથી હવે સૂત્રકાર ગર્હાંનું નિરૂપણ કરે છે—

‘ચતુર્વિદ્યા ગરહ્યા પળ્લવતા’ ઇત્યાદિ—

ટીકા—ગર્હાં ચાર પ્રકારની હતી છે. શુદ્ધની સમજ અથવા શુદ્ધસાક્ષિકા આત્મ
નિન્દાને ગર્હાં કહે છે. એક ગર્હાં એવી કોણ છે કે જે આ પ્રકારના આત્મ-

વા સમુચિતં પ્રાયશ્ચિત્તમ્, इत्येवं प्रकारः परिणामः, एका-प्रथमा गर्हा भवति । यद्यपि 'उपसंपद्ये' इति गर्हायाः कारणभूत आत्मनः परिणामस्तथापि कारण-भूते तस्मिन्नात्मपरिणामे कार्यभूता गर्हा आरोप्यत इति कारणे कार्योपचारादुप-संपत्तिरूप आत्मपरिणामोऽपि गर्हा, गर्हासमानफलत्वाद् वा य आत्मपरिणामो गृहेति । गर्हासंपन्नस्य तथाविधात्मपरिणामसंपन्नस्य चेत्युभयोरप्याराधकत्वं समानम् । तत्र गर्हासम्पन्नस्याराधकत्वं 'गरहणयाएणं भंते' इत्यादिना उत्तराध्ययनमूत्रस्यैकोनत्रिंशदध्ययनोक्तवचनेनाऽनन्तधातिपर्यवक्षपकत्वात् प्रसिद्धमेव ।

લિયે મેં ગુરુકે પાસ જાતા હું, અથવા उनसे समुचित समुचित प्रायश्चित्त लेता हूं' इस प्रकारके परिणामरूपिणी होती है । यद्यपि—“उपसंपद्ये” इस क्रियापदसे वह प्रगट किया गया है कि गर्हाका कारणभूत आत्माका परिणाम होता है । फिरभी यहां जो उस परिणामको गर्हा कहा गया है सो उस परिणाममें कार्यभूत गर्हाका आरोप किया गया है । इस-लिये कारणमें कार्यका उपचार (करने) से उपसंपत्तिरूप आत्मपरि-णामभी गर्हा कह दिया गया है । अथवा—यह परिणाम गर्हाका जैसा फलवाला होता है इसलियेभी उसे गर्हा कह दिया गया है, जो गर्हासे संपन्न होना है । उसमें, और गर्हाका परिणामवाला होता है, उसमें आराधकता समान होती है ।

गर्हा संपन्नमें आराधकता “ गरहणयाएणं भंते १ इत्यादि ।

જો यह सूत्ररूप वचन उत्तराध्ययन सूत्रके २९ वें अध्ययनमें कहा गया है उससे प्रसिद्धही है । क्योंकि—गर्हा सम्पन्न प्राणी अनन्त आत्मगुण-

परિણામરૂપ હોય છે—“હું મારા દોષોને પ્રકટ કરવા માટે ગુરુની પાસે જઈ છું” અને થોડા પ્રાયશ્ચિત્ત લઉં છું.” એ કે “ઉપસંપદ્યે” આ ક્રિયાપદથી એ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે કે આત્માનું પરિણામ ગર્હાના કારણભૂત હોય છે, છતાં અહીં તે પરિણામને જે ગર્હારૂપે પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે તે આ પરિણામમાં કાર્યભૂત ગર્હાના આરોપણની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યું છે. કારણમાં કાર્યનો ઉપચાર કરીને ઉપસંપત્તિ રૂપ આત્મપરિણામને પણ ગર્હારૂપે પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે. અથવા તે પરિણામ ગર્હાના જેવા ફળવાળું હોય છે તેથી પણ તેને ગર્હારૂપ કહેવામાં આવ્યું છે. જે ગર્હાથી સંપન્ન હોય છે તેમાં અને જે ગર્હાના પરિણામવાળા હોય છે તેમાં આરાધકતા સમાન હોય છે. “ગરહણયાએણં મંતે” ઇત્યાદિ જે સૂત્રપદ ઉત્તરાધ્યાયન સૂત્રના ૨૬ માં અધ્યયનમાં આવવામાં આવ્યો છે, તેના દ્વારા ગર્હા સંપન્નમાં આરાધકતાનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, કારણ કે ગર્હાસંપન્ન જીવ અનન્ત

તયાવિધાત્મપરિણામસપક્ષસ્ય તુ આરાધકત્વ મગવતીસૂત્રે પ્રોક્તમ્, તથારિ—
 “નિગ્ગયેમ ય ગાહાવહકુલં પિંડનાયપદિયાપ પચિદ્ધેષ અન્નપરે અકિંચદ્વાણે પદિ
 સેવિપ, તસ્સ ણં પવ મયહ—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि, पदि
 कमामि, निशमि, गरिहामि, विउट्टामि, विसोहेमि अकरणयाए अम्मुडेमि, आह-
 रिह पायच्छिच तवोकम्मं पडिवज्जमामि, तमो पच्छा थेराणं अतिय आलोए
 स्सामि चाप तवोकम्म पडिवज्जिस्सामि । से य संपट्टिए असपत्ते थेरा य पुग्गा
 मेव अमुहा सिया, से ण મંતે । किं आराहए विराहए ?, गोयमा । आराहए नो
 विराहए ” १। इत्यादि (भगवती ० सू० ८ उ० ६ सू० ३)

છાયા—નિર્ગ્ગયેન ચ ગાયાપતિકુલ પિંડનાયપદિયયા પચિદ્ધેન અન્યતદ્
 અક્ષપસ્યાનં પ્રતિસેવિત, તસ્ય સરવેવ મવતિ—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स
 घातिक कमा शौका नाश करनेवाला होता है । तथा—गहाँ परिणामसे
 सपक्वप्राणीमें आराधकता भगवती सूत्रमें कही गई है वहाँका वह पाठ
 इस प्रकारसे है । “निगगयेण य गाहावहकुलं पिंढनायपदियाए पचिद्वणं
 अन्नपरे अकिञ्चद्वाणे पडिसेविप तस्सण पव मयह । इहेव ताव अहं
 एयस्स ठाणस्स आलोएमि—पडिक्कम्मामि—निशमि—गरिहामि—विउट्टामि
 विसोहेमि अकरणयाए अम्मुडेमि आहारिह, पायच्छिचं तवोकम्मं
 पडिवज्जिस्सामि । सेय सपट्टिए असपत्ते थेराय पुग्गामेव अमुहा सिया
 सेणं मंते १, किं आराहए विराहए ३, गोयमा १, आराहए नो विराहए
 १ इत्यादि (भगवती शा ८ उ ६ सू० ३)

इस भगवतीके पाठसे यह प्रतिपादित किया गया है कि—किसी
 पुरुषके यहां आहार ग्रहण करनेके लिये प्रविष्ट हुये साधु द्वारा यदि

આમશુભાતિક કર્માશ્યેનો નાશ કરનારો હોય છે તથા અહીં પરિણામથી
 સંપત્તિ એવામાં આરાધકતાનું પ્રતિપાદન ભગવતી સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે,
 ત્યાં આ પ્રકારનો સૂત્રપાઠ આવ્યો છે—“નિગ્ગયેણ ય ગાહાવહકુલં પિંડનાય
 પદિયાપ પચિદ્ધેણં અન્નપરે અકિંચદ્વાણે પદિસેવિપ, તસ્સ ણં પવં મયહ—इहेव ताव
 अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्कम्मामि, निशमि, गरिहामि, विउट्टामि,
 विसोहेमि अकरणयाए अम्मुडेमि, आहारिह पायच्छिचं तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि ।
 सेय सपट्टिए असपत्ते थेराय पुग्गामेव अमुहा सिया । सेणं मंते ! किं आराहए
 विराहए गोयमा । आराहए नो विराहए ” इत्यादि. (भगवती सू. सू. ८ उ. ६ सू. ३)

ભગવતી સૂત્રના આ સૂત્રપાઠનો જાનાર આ પ્રમાણે છે—“હે ભગવન્!
 હેય એક પુરુષને ત્યાં આહાર અન્ન કરવા નિમિત્તે ગયેલા સાધુ પદે હોય

આલોચયામિ, પ્રતિક્રમામિ, નિન્દામિ, ગર્હે, વિત્રોટયામિ, વિશોધયામિ, અકર-
ણતયાઽમ્યુત્તિષ્ઠે, યથાહં પ્રાયશ્ચિત્તં તપઃકર્મ પ્રતિપન્ને, તતઃ પશ્ચાત્ સ્થવિરાણામ-
ન્તિકે આલોચયિष્યામિ યાવત્ તપઃકર્મ પ્રતિપત્સ્યે । સ ચ સંપ્રસ્થિતઃ અસંપ્રાપ્તઃ
સ્થવિરાશ્ચ પૂર્વમેવ અમુખાઃ સ્યુઃ, સ લલુ ભદન્ત । કિમારાધકો વિરાધકઃ ?,
ગૌતમ ! આરાધકો નો વિરાધકઃ । ૧।

સ્થવિરાઃ-અમુખા-નિર્વાચઃ-વાતાદિવ્યાધિના મૂકત્વં પ્રાપ્તા इत्यर्थः । एवं
સ્થવિરામુખવત્ સ્વામુખ-સ્વમરણ-સ્થવિરમરણ-સ્વસ્થવિરોભયમરણ-રૂપાઽઽભાવક
કિસા અકૃત્ય સ્થાનકા સેવન હોજાતા હૈ તો વહ એસા શોચતા હૈ કિ
મૈં હસ અકૃત્ય સ્થાનકી આલોચના કરતા હૂં, નિન્દા કરતા હૂં । હસકે
વાદ “ મૈં સ્થવિરોંકે પાસ આલોચના આદિ કર લૂગા ” હસ પ્રકારકો
વિચારકર વહ વહાંસે ચલ દેતા હૈ । ઉસકે આનેસે પહલેહી વે સ્થવિર
(જિનકે પાસ આરહા હૈ) વાતાદિ વ્યાધિકે કારણ યદિ મૂક હોજાવે
તો એસી સ્થિતિમૈં વહ આરાધક હૈ ૩ યા વિરાધક હૈ ૩ । ઉત્તરમૈં પ્રશ્ન
કહતે હૈ-હે ગૌતમ ! વહ આરાધક હૈ વિરાધક નહીં હૈ ઇત્યાદિ ।

સ્થવિરામુખ સ્થવિર અમુખ હો જાવે અર્થાત્ વાતાદિ વ્યાધિસે મૂક
હા જાવે, હસી પ્રકાર યદિ સ્થવિરકે પાસ જાનેવાલા મુનિ સ્વયં અમુખ
હો જાવે ૧, મર જાવે ૨, અથવા સ્થવિરકા મૃત્યુ હો જાવે ૩, અથવા અપને

અકૃત્ય સ્થાનનું (અતિચારનું) સેવન થઈ જાય છે. તે સાધુ એવો વિચાર
કરે છે કે “ હુ આ અકૃત્ય સ્થાનની આલોચના કરું છું, નિન્દા, ગર્હા આદિ
કરું છું, ત્યારબાદ હુ સ્થવિરો પાસે આલોચના આદિ કરી લઇશ. ” આ
પ્રકારનો વિચાર કરીને તે ત્યાંથી નીકળી પડે છે. પણ તે સ્થવિરની પાસે
પહોંચે તે પહેલાં તો તે સ્થવિર વાતાદિને કારણે નિર્વાક (મૂક) થઈ જાય
છે. તો આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં તે સાધુને આરાધક ગણવો કે વિરાધક ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-“ હે ગૌતમ ! તે આરાધક જ ગણાય,
વિરાધક નહીં ” ઇત્યાદિ.

સ્થવિર મુખ, સ્થવિર અમુખ થઈ જાય અર્થાત્ વાતાદિ વ્યાધિથી મૂંગા
થઈ જાય, તેવી જ રીતે સ્થવિરની પાસે આવનાર મુનિ પોતે જ અમુખ
(મૂંગા) થઈ જાય ૧, મરી જાય ૨, અગર સ્થવિરનું મરણ થઈ જાય ૩,
અથવા પોતાનું અને સ્થવિરનું એમ બન્નેનું મરણ થઈ જાય, એ ચાર આલા-
પકો પણ અહીં સમજી લેવા જોઈએ. આ પૂર્વોક્ત પાંચે આલાપકોમાં તથા-

ચતુષ્ટય વિશેષમ્ । एतेषु पञ्चस्वप्नालापकेषु तथाविधात्मपरिणामसप्तमस्याऽऽरा
पकसमेव भगवता भगवतीसूत्रेऽष्टमस्तके पठोद्देशे प्रतिपादितमिति ।

તથા-વિચિકિત્સામિ-ચિ-વિશેષેણ વિવિધપ્રકારેભૌ ચિકિત્સામિ પ્રતિક-
રોમિ-દૂરીકરોમિ ગર્હણીયાન્ દોષાનિત્યેષં ત્રિચારરૂપા એકા-અપરા દ્વિતીયા ગર્હ
મયતિ ૨ ।

તથા-પલ્લિચિત્-અનુચિત-સયમવિરુદ્ધમવિચારાદિકર્ત્ત્વં યદ્ મિથ્યા નિષ્કલ્પ-
મયતુ મે મમ, इत्येवं विचारस्तथा एका-मन्या द्वीया गर्हा मयति ३ ।

તથા-પદ્યમપિ-एवंजातीयेन मन्येनापि सेवितदोषपक्षापक्षरूप-गर्हणे
तुभूतात्मपरिणामप्रकारेण एका-अ-या चतुर्थी गर्हा प्रकृता-कृतिता जिनैः ।
अपमपि प्रकारो गर्हादेतत्त्वाद् गर्हेति । सू० ५० ।

और स्थविर दोनोंको मृग्यु हो जाये ४ । ये चार आलापक भी यहाँ
जान लेना चाहिये । इन पूर्वोक्त पाँचों आलापकों में तथाविध-शुद्ध
आत्मपरिणति संपन्न मुनिको भगवानने भगवती सूत्रके आठवें शतक
के छठे उद्देशे में आराधक ही कहा है, विराधक नहीं ।

તથા-“ વિચિકિત્સામિ ” મેં વિશેષ રૂપસે, અથવા-વિવિધ પ્રકાર
રોસે ગર્હણીય દોષોનો દૂર કરતા હું એલા વિચાર સ્વરૂપ દ્વિતીય ગર્હા
હોતી હૈ ૨ । તથા-જો મેં સયમ વિરુદ્ધ અતિચાર આદિ કિયે હૈ ' હે
સયમકે સહ મિથ્યા નિષ્કલ્પ હો જાવ ' એસી વિચારધારાવાળી તીસરી
ગર્હા હૈ ૩ । તથા-સેવિત દોષોને પ્રતિ પ્રત્યાસાપ કરના એલા આત્મ
પરિણામથી ચતુર્થી ગર્હા હૈ ॥ સૂ० ૫૦ ॥

વિધ શુદ્ધ આત્મપરિણતિ સંપન્ન મુનિને ભગવાને ભગવતી સૂત્રના આઠમા
શતકના છઠ્ઠા ઉદ્દેશમાં આરાધક જ કહ્યા છે, વિરાધક નહીં

(૨) તથા “ વિચિકિત્સામિ ” હું વિશેષ રૂપે અથવા વિવિધ પ્રકારે
અર્હણીય દોષોને દૂર કરું છું, આ પ્રકારના વિચારસ્વરૂપ દ્વિતીય ગર્હા હોય છે

(૩) ‘ મેં હે સયમ વિરુદ્ધના અતિચારોનું સેવન કરું ’ છે તે બાદ
મિથ્યા નિર્ણય બની બાબતો, ” આ પ્રકારની વિચારધારાવાળી ત્રીજી ગર્હા છે

(૪) સેવિત દોષોને આટલે પ્રત્યાસાપ કરવો, આ પ્રકારનું હે આત્મ
પરિણામ છે તેને ચતુર્થો ગર્હા પ્રકાર કહે છે ॥ સૂ. ૫૦ ॥

पूर्व गहीं प्रोक्ता, सा च दोषत्यागिन एव सम्यग् भवति नान्यस्येति दोष-
त्यागि जीवस्वरूपं निरूपयितुं सप्तदश चतुर्भङ्गीमूत्राण्याह—

मूलम्—चत्तारि पुरिसजाया पणत्ता, तं जहा--अप्पणो णाम-
मेगे अलमंथू भवइ णो परस्स १, परस्स णाममेगे अलमंथू भवइ
णो अप्पणो २, एगे अप्पणोवि अलमंथू भवइ परस्सवि ३, एगे
णो अप्पणो अलमंथू भवइ णो परस्स ।४। १।

चत्तारि मग्गा पणत्ता, तं जहा-उज्जू णाममेगे उज्जू १, उज्जू
णाममेगे वंके २, वंके णाममेगे उज्जू ३, वंके णाममेगे वंके ४। १२।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पणत्ता, तं जहा--उज्जू णाममेगे
उज्जू० ४।३।

चत्तारि मग्गा पणत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमे १,
खेमे णाममेगे अक्खेमे० ।४। १४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया
पणत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे० ।४। १५।

चत्तारि मग्गा पणत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे०
४, १६। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पणत्ता, तं जहा—खेमे
णाममेगे खेमरूवे० ४ ।७।

चत्तारि संबुक्का पणत्ता, तं जहा--वामे णाममेगे वामावत्ते
१, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते २, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते ३,
दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ४, ।८। एवामेव चत्तारि पुरिस-
जाया पणत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते० ।४। १९।

चत्तारि धूमसिहाओ पणत्ताओ, तं जहा—वामा णाम-

मेगा वामावृत्ता ४, १२०। एवमेव चत्वारिस्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा-वामा णाममेगा वामावृत्ता० १११।

चत्वारि अग्गिसिंहाओ पण्णत्ताओ, त जहा-वामा णाम मेगा वामावृत्ता ४, ११४। एवमेव चत्वारिस्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा वामा णाममेगा वामावृत्ता० ४, ११५।

चत्वारि वायमंडलिया पण्णत्ताओ, त जहा-वामा णाम मेगा वामावृत्ता० ४, ११४। एवमेव चत्वारिस्थीओ पण्णत्ताओ, त जहा-वामा णाममेगा वामावृत्ता० ४, ११५।

चत्वारि वणसडा पण्णत्ता, त जहा वामे णाममेगे वामा वृत्ते० ४ १२६। एवमेव चत्वारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-वामे णाममेगे वामावृत्ते० ४, ११७ ॥ सू० ५१॥

छाया—चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तथया—आत्मनो नामैकोऽब्जमस्तु भवति नो परस्य १, परस्य नामैकोऽब्जमस्तु भवति नो आत्मनः २, एक आत्मनोऽपि भज्जमस्तु भवति परस्यापि ३, एको नो आत्मनोऽब्जमस्तु भवति नो परस्य ॥ १ ॥

चत्वारो मार्गाः प्रज्ञप्ताः, तथया—ऋजुनामैक ऋजुः १, ऋजुनामैको वक्रः २, वक्रो नामैक ऋजुः ३, वक्रो नामैको वक्रः ४ ॥ २॥ एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तथया—ऋजुनामैक ऋजुः ४, १२।

चत्वारो मार्गाः प्रज्ञप्ताः, तथया—क्षेमो नामैकः क्षेमः १, क्षेमो नामैकोऽक्षेमः ४, १४। एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तथया—क्षेमो नामैकः क्षेमः ४, १५।

चत्वारो मार्गाः प्रज्ञप्ताः, तथया—क्षेमो नामैकः क्षेमरूपः, क्षेमो नामैकोऽक्षेम रूपः ४, १६। एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तथया—क्षेमो नामैकः क्षेमरूपः ४, १७।

चत्वारः क्षन्तूकाः प्रज्ञप्ताः तथया—वामो नामैको वामाऽऽवर्तः १, वामो नामैको दक्षिणाऽऽवर्तः २, दक्षिणो नामैको वामाऽऽवर्तः ३, दक्षिणो नामैको दक्षिणाऽऽवर्तः ४, १८। एवमेव चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि, तथया—वामो नामैको वामाऽऽवर्तः ४, १९।

ચતસ્રો ધૂમશિખાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ તદ્યથા-વામા નામૈકા વામાઽઽવર્તો ૪, ૧૧૦ ।
 એવમેવ ચતસ્રઃ સ્ત્રિયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-વામા નામૈકા વામાઽઽવર્તો ૪, ૧૧૧ ।
 ચતસ્રોઽગ્નિશિખાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-વામા નામૈકા વામાઽઽવર્તો ૪, ૧૧૨ ।
 એવમેવ ચતસ્રઃ સ્ત્રિયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ તદ્યથા-વામા નામૈકા વામાઽઽવર્તો ૪, ૧૧૩ ।
 ચતસ્રો વાતમણ્ડલિકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-વામા નામૈકા વામાઽઽવર્તો ૪, ૧૧૪ ।
 ૧૪૧ એવમેવ ચતસ્રઃ સ્ત્રિયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-વામા નામૈકા વામાઽઽવર્તો ૪, ૧૧૫ ।
 ચત્વારો વનલખ્ણ્વાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ તદ્યથા-વામા નામૈકો વામાઽઽવર્તો ૪, (૧૬) ।
 એવમેવ ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા-વામા નામૈકો વામાઽઽવર્તો ૪
 (૧૭) સૂ૦ ૫૧

ટીકા-“ચત્તારિ પુરિસજાયા ” ઇત્યાદિ=સ્પષ્ટમ્-નવરમ્ એકઃ-કથિત્ પુરુષઃ
 આત્મનઃ-સ્વસ્ય દુર્નયેષુ પ્રવર્તમાનસ્ય અલમસ્તુ=નિષેધકો ભવતિ । યદ્વા-સમય-
 પરિભાષયા-‘અલમત્યુ’ ઇતિ શબ્દઃ સમર્થાર્થકઃ, તત્તથાયમર્થઃ-એકઃ-કથિત્
 પુરુષઃ આત્મનઃ-સ્વસ્ય નિગ્રહે સમર્થઃ-કુશલો ભવતિ, કિન્તુ પરસ્ય અન્યસ્ય અલ-

યહ ગર્હા દોષત્યાગી કો હી સમીચીન હોતી હૈ અન્યકો નહીં, હસકે
 લિયે અવ સૂત્રકાર દોષત્યાગી જીવ સ્વરૂપકા નિરૂપણ ચતુર્ભજીવાલે
 ૧૭ સૂત્રોંકો કહતે હૈં । “ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્ણપ્તા ” ઇત્યાદિ--
 ટીકાર્થ-પુરુષ જાત ચાર કહે ગયેહૈં જૈસે-કોઈ એક પુરુષ એસા હોતાહૈં જો
 દુર્નયમેં પ્રવૃત્ત અપને આપકા “અલમસ્તુ” નિષેધક હોતા હૈં, અથવા
 કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈં જો અપને આપકા નિગ્રહ કરનેમેં કુશલ
 સમર્થ હોતા હૈં । યહાં-“અલમસ્તુ” શબ્દકા અર્થ સમય ભાષાકે અનુ-
 સાર સમર્થ હોતા હૈં, કુશલ હોતા હૈં, કિન્તુ-“જો પરસસ ” પરકા
 નિષેધક વા ડસકા નિગ્રહ કરનેમેં સમર્થ નહીં હોતા હૈં ૧, એસા પુરુષ

આ ગર્હા દોષત્યાગીને જ સમીચીન થાય છે-અન્યને નહીં તે કારણે
 હવે સૂત્રકાર ચતુર્ભજીવાળા ૧૭ સૂત્ર દ્વારા દોષત્યાગી જીવનું સ્વરૂપ પ્રકટ
 કરે છે. “ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્ણપ્તા ” ઇત્યાદિ--

ચાર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે-(૧) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે
 જે દુર્નયમાં પ્રવૃત્ત પોતાની જાતને “અલમસ્તુ” રાખવાને સમર્થ હોય છે,
 અથવા કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પોતાના આત્માને અથવા
 ઇન્દ્રિયોને નિગ્રહ કરવાને સમર્થ હોય છે, પણ “જો પરસસ ” પરનો નિષે-
 ધક હોતો નથી, અથવા પરનો નિગ્રહ કરવાને સમર્થ હોતો નથી (અહીં
 ‘અલમ્’ પદનો અર્થ સમય પરિભાષા અનુસાર ‘સમર્થ-કુશલ’ થાય છે)
 એવો પુરુષ મૌનવ્રતી સાધુરૂપે હોય છે.

મસ્તુ-નિપેક્ષકા સમર્થો યા ન મત્તિ । एतज्जातीयः पुरुषो मौनवृत्तिसाधुमभृति ।
 एवं शेषमङ्गत्रिकं विवरणीयम् ४ । ૧ ।

મૌનવ્રતી સાધુરૂપ હોતા હૈ । “ પરસ્સ જામ મેગે અલમયૂ મવહ, જો અપ્પજો ૨ ” તથા કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો પરકા દુર્નયમે પ્રવર્તમાન વૃસરે પુરુષકા નિપેક્ષક હોતા હૈ, અથવા-તસકે નિમ્મહ કરનેમે સમર્થ, યા કુશલ હોતા હૈ, અપને આપકા નિમ્મહ કરનેમે સમર્થ યા કુશલ નહીં હોતા હૈ ।

“ एगे अप्पजो वि अलमयू मवह परस्स वि ३ ” કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો દુર્નયાદિમે પ્રવર્તમાન અપને આપકામી નિપેક્ષક હોતા હૈ । યા અપને આપકા મી નિમ્મહ કરનેમે સમર્થ-કુશલ હોતા હૈ ઓર વૃસરેકામી નિપેક્ષક હોતા હૈ, યા તસકે નિમ્મહ કરનેમેમી કુશલ હોતા હૈ ૩ । “ एगे जो अप्पजो अलमयू मवह जो परस्स ४ ” તથા-કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો દુર્નયમે પ્રવર્તમાન અપને આપકામી નિપેક્ષક નહીં હોતા હૈ, યા નિમ્મહ કરનેમે સમર્થ નહીં હોતા હૈ ઓર વૃસરેકામી નિપેક્ષક નહીં હોતા હૈ, યા નિમ્મહ કરનેમે સમર્થ નહીં હોતા હૈ ।
 હસ પ્રકારસે યે પુરુષજાત ચાર હોતે હૈ ।

(૨) ‘ परस्स जाममेगे अलमयू मवह, जो अप्पजो ’ કેઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે દુર્નયમમાં પ્રવૃત્તમાન એવા અન્ય પુરુષનો નિપેક્ષક હોય છે અથવા અન્યનો નિમ્મહ કરાવવામાં કુશળ અથવા સમર્થ હોય છે, પણ પોતાનો નિમ્મહ કરવાને સમર્થ અથવા કુશળ હોતો નથી.

(૩) “ एगे अप्पजो वि अलमयू मवह परस्स वि ” કેઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે દુર્નયાદિમાં પ્રવૃત્તમાન પોતાના આત્માનો પણ નિપેક્ષક હોય છે, અને પરનો નિપેક્ષક હોય છે અથવા પોતાના આત્માનો નિમ્મહ કરવામાં પણ સમર્થ અથવા કુશળ હોય છે અને પરનો નિમ્મહ કરવામાં પણ સમર્થ અથવા કુશળ હોય છે.

(૪) “ एगे जो अप्पजो अलमयू मवह, जो परस्स ” કેઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે દુર્નયમમાં વર્તમાન એવા પોતાના આત્માનો નિપેક્ષક હોતો નથી અથવા નિમ્મહ કરવાને સમર્થ હોતો નથી, અને પરનો નિપેક્ષક પણ હોતો નથી, અથવા નિમ્મહ કરાવવાને સમર્થ હોતો નથી. આ પ્રમાણે આર પુરુષ પ્રકાર કલ્પા છે । ૧ ।

“ ચત્તારિ મગ્ગા ” ઇત્યાદિ-માર્ગચિત્ત્વારઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-एकः-कश्चित्-मार्गः ऋजुः-आदितोऽनन्तश्चापि ऋजुः-सरलः, यद्वा-दृष्टौ ऋजुः प्रतिभाति यथार्थरूपपरिचयेनापि ऋजुरेव=सरल एव भवति । शेषं भद्रत्रय सुबोधम् । २

“ एवामेवे ”-ત્યાદિ-एवमेव=मार्गवदेव, पुरुषज्ञातानि चत्वारि प्रज्ञप्तानि, तथા-एकः-कश्चित् पुरुषः पूर्वमृजुः पश्चादपि ऋजुरिति कालमपेक्ष्य व्याख्येयम् । यद्वा-एकः पुरुषः आन्तरतोऽपि ऋजुः बाह्यतोऽपि च ऋजुर्भवतीति व्याख्येयम् । शेषभङ्गत्रिकं सुगमम् । ३

“ ચત્તારિ મગ્ગા પળ્લત્તા ” ચાર માર્ગ કહે ગયે હૈં, જૈસે-ઋજુ ઋજુ ૧, ઋજુ વક્ર ૨, વક્ર ઋજુ ૩ ઓર વક્ર વક્ર ૪ । ઇસમેં જો માર્ગ આદિસે અન્ત તક સરલ હોતા હૈ, અથવા જો દેખનેમેં સરલ લગતા હૈ યથાર્થરૂપસે પરિચયમેં મી સરલહી હોતા હૈ, વહ ઋજુ ઋજુ માર્ગ હૈ । જો માર્ગ ઋજુ દિખને પરમી યા સરલ હોને પરમી વાદમેં વક્ર દેઢામેઢા હો જાતા હૈ વહ ઋજુ વક્ર માર્ગ હૈ ૨ । જો માર્ગ પહેલે વક્ર હો વાદમેં ઋજુ હો તો એસા વહ માર્ગ વક્ર ઋજુ કહા જાતા હૈ, તથા પહેલેહી સે જો માર્ગ વક્ર હો ઓર વાદમેં મી વહ વક્ર વક્ર માર્ગ કહા જાતા હૈ ૨ ।

“ एवामेव ” ઇત્યાદિ. ઇસી તરહસે ઇસ માર્ગકી તરહસે હી પુરુષ જાત ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-कोई एक पुरुष पहले ऋजु प्रकृतिसे सरल होता है और बादमें मी वह सरलका सरलही बना रहता है, यह कालकी

“ ચત્તારિ મગ્ગા પળ્લત્તા ” ઇત્યાદિ ચાર પ્રકારના માર્ગ કહ્યા છે—
(૧) ઋજુ ઋજુ, (૨) ઋજુ વક્ર, (૩) વક્ર ઋજુ અને (૪) વક્ર વક્ર. જે માર્ગ આદિથી અંત સુધી સરળ હોય છે, અથવા જે દેખાવમાં પણ સરળ લાગે છે અને યથાર્થ રૂપ પરિચયમાં પણ સરળ જ બચાય છે, તેને ‘ ઋજુ ઋજુ માર્ગ ’ કહે છે. (૨) જે માર્ગ શરૂઆતમાં સરળ દેખાતો હોવા છતાં પણ પાછળથી વક્ર (વાંકો ચૂકો-ખાડા ટેકરાવાળો) લાગે છે, તે માર્ગને ‘ ઋજુ વક્ર માર્ગ ’ કહે છે. (૩) જે માર્ગ પહેલાં વક્ર લાગતો હોય પણ પછી સરળ બની જાય છે, તે માર્ગને ‘ વક્ર ઋજુ માર્ગ ’ કહે છે. (૪) જે માર્ગ પહેલાં પણ વક્ર હોય અને પછી પણ વક્ર જ હોય, તે માર્ગને ‘ વક્ર વક્ર માર્ગ ’ કહે છે. ૧૨ ।

“ एवामेव ” ઇત્યાદિ. એ જ પ્રમાણે પુરુષો પણ ચાર પ્રકારના કહ્યા છે.

(૧) કોઈ એક પુરુષ પહેલાં ઋજુ પ્રકૃતિને લીધે સરળ હોય છે અને પછી પણ તે સરળ જ રહે છે. કાળની અપેક્ષાએ આ પહેલો ભાગો બને છે. અથવા કોઈ એક પુરુષ આન્તરિક રીતે પણ સરળ હોય છે અને બહારથી

“ ચતારિ મમા ” इत्यादि-मार्गाश्चत्वारः प्रज्ञाताः, तथया-एक-कश्चि मार्गः आदौ निरुपद्रवतया क्षेम-कल्याणकरो भवति पुनरन्ते च क्षमो भवति, यद्वा-सोकमक्षयायौ क्षेमः पुनस्तत्त्वतोऽपि क्षेमो भवतीति व्याख्येयम् । एवं शेष-भङ्गश्रिक बोध्यम् । ४ ।

“ एवामेवे ” त्यादि-एवमेव मार्गवदेव चत्वारि पुरुषमातानि प्रज्ञातानि, तथया-एकः कश्चित्पुरुषः क्रोधाधुपद्रवरहितत्वेन क्षेम स एव पुनः पश्चादपि क्षेमः शेषं भङ्गप्रयं सुगमम् । ५ ।

અપેક્ષા કરકે પ્રથમ મદ્દ છે । યદ્વા-કોઈ એક પુરુષ અન્તરજ્ઞની અપેક્ષા મ્ની હસી તરહસે વ્યાખ્યાત કર લેના ચાહિયે । ૩ ॥

“ ચત્તારિ મમા ” પુનઃ—માર્ગ ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-ક્ષેમ ક્ષેમ ૧, ક્ષેમ અક્ષેમ ૨, અક્ષેમ ક્ષેમ ૩ ઓર અક્ષેમ અક્ષેમ ૪ । જો માર્ગ પહલેમી નિરુપદ્રવ હોનેસે કલ્યાણકર હોતા હૈ । પુનઃ-અન્તર્મ્નેમી વહ નિરુપદ્રવ હોનેસે કલ્યાણકર હોતા હૈ, એમા માર્ગ ક્ષેમ ક્ષેમ હસ પ્રથમ મંગમે પરિગણિત ક્રુવા હૈ । યદ્વા-જૈસા વહ પરલોકમે પ્રવ્યાત હોતાહૈ વેસાહી વહ વાસ્તવમેમી હોતાહૈ, હસ તરહસેમી વહ ક્ષેમ ક્ષેમ રુપ હોતા હૈ । અવશિષ્ટ ત્રીન મંગ મ્ની હસી પ્રકારસે સમજ લેના ચાહિયે ।

હસી પ્રકારસે પુરુષ જાતમી ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો ક્રોધાધિરુપ ઉપદ્રવસે રહિત હોનેકે કારણ ક્ષેમરુપ

પણ સરલ જ હોય છે એ જ પ્રમાણે જાહીના ત્રણ ભાગ પણ વ્યતે જ સમજ શકાય એવા છે । ૩ ।

“ ચત્તારિ મમા ” ઇત્યાદિ માર્ગના આ પ્રમાણે પણ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) ક્ષેમ ક્ષેમ, (૨) ક્ષેમ અક્ષેમ, (૩) અક્ષેમ ક્ષેમ (૪) અક્ષેમ અક્ષેમ. એ માર્ગ શરૂઆતમાં પણ ઉપદ્રવ રહિત હોવાને બીજી કલ્યાણકારક હોય છે અને અન્તરજ્ઞ તર્ક પણ ઉપદ્રવ રહિત જ હોય છે એવા માર્ગને ક્ષેમ ક્ષેમ માર્ગ કહે છે અથવા તે માર્ગની ઉપદ્રવ રહિત માર્ગ તરીકેની એવી ખ્યાલિ હોય છે, એવો જ ઉપદ્રવ રહિત તે વાસ્તવમાં પણ હોય છે તે કારણે પણ તેને ક્ષેમ ક્ષેમ૩૫ માર્ગ કહે છે એ જ પ્રમાણે જાહીના ત્રણ ભાગના ભાવાય પણ સમજવો । ૪ ।

એ જ પ્રમાણે પુરુષોના પણ ‘ ક્ષેમ ક્ષેમ ’ આદિ ચાર પ્રકાર પડે છે. જેનું સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે ક્રોધાદિ ૩૫ ઉપદ્રવથી રહિત હોવાથી ક્ષેમ૩૫ હોય છે, અને આગળ તર્ક

“ ચત્તારિ મગ્ગા ” ઇત્યાદિ-સ્પષ્ટમ્ । એકો માર્ગો ભાવતોઽનુપદ્રવત્વેન ક્ષેમઃ સ એવ દ્રવ્યત આકૃત્યા ક્ષેમરૂપઃ-સુન્દરો ભવતિ । શેષં ભગ્નત્રિકં સુવોધમ્ । ૬ ।

“ એવામેવે ” ત્યાદિ-એવમેવ-માર્ગવદેવ પુરુષજાતાનિ ચત્તારિ મગ્ગાનિ, તથા-એકઃ પુરુષઃ પ્રથમં ક્રોધાદ્યુપદ્રવરહિતતયા ક્ષેમઃ સ એવ પશ્વાદપિ આકારે-નાપિ ક્ષેમરૂપઃ-સુન્દરઃ, ભાવદ્રવ્યલિજ્ઞયુક્તઃ સાધુઃ । ઇતિ પ્રથમો ભગ્નઃ ૧ ।

એકઃ પુરુષો ભાવતઃ ક્ષેમઃ, દ્રવ્યતસ્તુ અક્ષેમઃ રાજાદિકારણવશાદ્ દ્રવ્યલિજ્ઞ-રહિતઃ સાધુરિતિ દ્વિતીયઃ ૨ । એકઃ-કશ્ચિત્પુરુષો ભાવતોઽક્ષેમઃ, દ્રવ્યતઃ ક્ષેમઃ

હોતા હૈ, વહી પુનઃ આગે ચલકરમી ક્ષેમરૂપહી વનો રહતા હૈ । હસી પ્રકારસે શેષ ત્રીન ભગ્નમી સમજા લેના ચાહિયે ૫ ।

પુનઃ—“ ચત્તારિ મગ્ગા ” ઇત્યાદિ માર્ગ ચાર રૂપ કહે ગયે હૈ, જૈસે-ક્ષેમ ક્ષેમરૂપ ૧, ક્ષેમ અક્ષેમરૂપ ૨, અક્ષેમ ક્ષેમરૂપ ૩ ઓર અક્ષેમ અક્ષેમરૂપ ૪ । કોઈ માર્ગ એસા હોના હૈ જો ભાવતઃ અનુપદ્રવ રૂપસે ક્ષેમરૂપ હોતા હૈ ઓર વહી દ્રવ્યસે આકૃતિસેમી ક્ષેમરૂપ સુન્દર હોતા હૈ ૧ બાકીકે ત્રીન ભગ્ન સુવોધ હૈ ।

“ એવામેવ ” ઇત્યાદિ—હસી પ્રકારસે પુરુષજાત-પુરુષ પ્રકારમી ચાર કહે ગયે હૈ, જૈસે-કોઈ એક પુરુષ પહેલેસે મી ક્રોધાદિરૂપ ઉપદ્રવસે રહિત હોનેસે ભાવદ્રવ્ય લિજ્ઞસે યુક્ત સાધુકી તરહ ક્ષેમરૂપ હોતા હૈ ઓર પશ્ચાત્મી આકારસે ક્ષેમરૂપ સુન્દર હોતા હૈ, યહ પ્રથમ ભગ્ન હૈ । કોઈ એક પુરુષ ભાવકી અપેક્ષા ક્ષેમરૂપ હોતા હૈ પર દ્રવ્યકી અપેક્ષા

પશુ ક્ષેમરૂપ જ ચાલુ રહિ છે. એ જ પ્રમાણે બાકીના ત્રણ ભાગા પશુ જાતે જ સમજી લેવા. । ૫ ।

વળી માર્ગના આ પ્રમાણે ચાર પ્રકાર પશુ કહ્યા છે—(૧) ક્ષેમ ક્ષેમરૂપ, (૨) ક્ષેમ અક્ષેમરૂપ, (૩) અક્ષેમ ક્ષેમરૂપ, (૪) અક્ષેમ અક્ષેમરૂપ.

આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—(૧) કોઈ માર્ગ ભાવની અપેક્ષાએ ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી ક્ષેમરૂપ હોય છે અને એ જ માર્ગ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ આકૃતિ (સ્વરૂપ) ની અપેક્ષાએ પશુ ક્ષેમરૂપ જ હોય છે. બાકીના ત્રણ ભાગાનો અર્થ પશુ પહેલા ભાગાને આધારે સમજી લેવો. । ૬ ।

“ એવામેવ ” ઇત્યાદિ એ જ પ્રમાણે પુરુષ પ્રકાર પશુ ચાર કહ્યા છે—(૧) કોઈ એક પુરુષ પહેલા પશુ ક્રોધાદિ રૂપ ઉપદ્રવથી રહિત હોવાને કારણે ભાવ દ્રવ્યલિગથી યુક્ત સાધુની જેમ ક્ષેમરૂપ હોય છે અને પાછળથી પશુ આકારની અપેક્ષાએ ક્ષેમરૂપ જ સુન્દર હોય છે (૨) કોઈ એક પુરુષ ભાવની અપેક્ષાએ ક્ષેમરૂપ હોય છે પશુ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ તે રાજાદિકારણોને લીધે અર્થાત

સાધુવેષધારી નિહર । ઇતિ તૃતીય ૩ । તથા-એકઃ પુરુષો માવતોઽપ્યક્ષેમોદ્રવ્ય
તોઽપ્યક્ષેમ , અન્યતીર્થિકો ગૃહસ્થાએતિ ચતુર્થઃ । ૪ ।

“ ચત્તારિ સંયુક્તા ,” इत्यादि शब्दयुक्ता-शब्दाः चत्वार मङ्गलाः, तद्यथा-
एकः-ऊर्ध्ववत् शब्दयुक्तः (शब्दः) वाम-वामपार्श्वव्यवस्थितत्वात् मतिकूलगुणत्वाद्वा,
स एव पुनर्वामाऽऽवर्तोभवति १, एकः शब्दो वामः सन् दक्षिणाऽऽवर्तो भवति २,
एकः शब्दो दक्षिणः दक्षिणपार्श्वनियुक्तत्वादनुकूलगुणत्वाद्वा सन् वामाऽऽवर्तो भवति
३ । तथा - एकः शब्दो दक्षिणो दक्षिणाऽऽवर्तो भवति ४ ।

যহ রাজাদি কারণবশে অধীত মিথ্যাસ્বী রাজা কে कारण
द्रव्यलिङ्ग रहित साधुकी तरह अक्षेपरूप हो जाता है २,
कोई पुरुष ऐसा होता है जो भावकी अपेक्षा अक्षेपरूप होता
है और द्रव्यकी अपेक्षा अक्षेपरूप होता है । जैसे-साधु वेषधारी निहव ३
तथा कोई एक पुरुष ऐसा होता है जो भावसेमी अक्षेपरूप होता है
और द्रव्यसेमी अक्षेपरूप होता है जैसे अन्यतीर्थिक अथवा गृहस्थजन ४

“ चत्तारि शयुक्ता ” चाद्र चार प्रकारके कहे गये हैं, जैसे-कोई
एक शब्द वाम पार्श्वमें व्यवस्थित होनेसे अथवा प्रतिकूल गुणवाला
होनेसे वाम होता है वही पुनः-वाम आवर्तवाला होता है, यह
“ वामवामावर्त ” ऐसा पहला मङ्ग है । कोई एक शब्द ऐसा होता है
जो वाम होता हुआ दक्षिणावर्तवाला होता है २ कोई एक शब्द ऐसा
होता है जो दक्षिण पार्श्वमें नियुक्त होनेसे अथवा-अनुकूल गुणवाला

મિથ્યાસ્વી રાજાને કારણે દ્રવ્યલિંગ રહિત સાધુની જેમ અક્ષેપરૂપ થઈ જાય છે (૩) કોઈ
એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે ભાવની અપેક્ષાએ અક્ષેપરૂપ હોય છે, પણ દ્રવ્યની
અપેક્ષાએ અક્ષેપરૂપ હોય છે એમકે સધુ વેષધારી નિહવ. (૪) કોઈ પુરુષ
એવો હોય છે કે જે ભાવની અપેક્ષાએ પણ અક્ષેપરૂપ હોય છે અને દ્રવ્યની
અપેક્ષાએ પણ અક્ષેપરૂપ ન હોય છે એમકે અન્ય તીર્થિક અથવા ગૃહસ્થજન. ૪ ।

“ चत्तारि शयुक्ता ” इत्यादि शय चार प्रकारના કેહ્યા છે—(૧) “ વામ
વામાવર્ત ” કોઈ એક શય વામપાર્શ્વમાં વ્યવસ્થિત હોવાથી અથવા પ્રતિકૂળ
ગુણવાળો હોવાથી ‘વામ’ હોય છે એ જ શય વળી ‘વામ આવતવાળો
હોવાથી ‘વામ વામાવર્ત’ રૂપ પહેલા પ્રકારનો હોય છે (૨) “ વામ
દક્ષિણવર્ત ”-કોઈ એક શય એવો હોય છે કે જે વામ હોવા છતાં પણ
દક્ષિણાવતવાળો હોય છે (૩) ‘દક્ષિણ વામાવર્ત’ કોઈ એક શય એવો
હોય છે કે જે દક્ષિણપાર્શ્વમાં નિયુક્ત હોવાથી અનુકૂળ ગુણવાળો હોય છે,
પણ વામ આવતવાળો હોવાથી તેને ‘દક્ષિણ વામાવર્ત’ રૂપ ત્રીજા પ્રકારમાં

“ એવામેવ ”-ત્યાદિ-એમેવ-શમ્બૂકવદેવ, પુરુષજાતાનિ ચત્વારિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-એકઃ કઙ્ચિત્પુરુષો નામ્ના વામઃ સ એવ પ્રતિકૂલસ્વભાવત્વાદ્ વામાઽઽવર્તઃ--વિપરીતપ્રવૃત્તિકારકો ભવતિ ૧ । તથા એકઃ કઙ્ચિત્પુરુષો નામ્ના વામઃ સ એવાનુ-કૂલસ્વભાવત્વાદ્ દક્ષિણાઽઽવર્તઃ-અનુકૂલપ્રવૃત્તિકારકો ભવતિ ૨ । એકઃ-અન્યઃ પુરુષો નામ્ના દક્ષિણઃ, સ એવ પ્રતિકૂલસ્વભાવત્વાદ્ વામાઽઽવર્તઃ-વિપરીતપ્રવૃત્તિ-કારકો ભવતિ ૩ । એકઃ કઙ્ચિત્પુરુષો નામ્ના દક્ષિણઃ સ એવાનુકૂલસ્વભાવત્વાદ્ દક્ષિણાઽઽવર્તઃ-અનુકૂલપ્રવૃત્તિકારકો ભવતિ ૪ ૧૯ ।

હોનેસે વામ આવર્તવાલા હોતા હૈ ૩ તથા-કોઈ એક શબ્દ એસા હોતા હૈ જો દક્ષિણ હોતા હુવા દક્ષિણ આવર્તવાલા હોના હૈ ૪ ।

“ એવામેવ ” ઇત્યાદિ—હસી તરહસે પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈં, કોઈ એક પુરુષ નામસે વામ હોના હૈ । વહી પ્રતિકૂલ સ્વભાવવાલા હોનેસે વામાવર્ત વિપરીત પ્રવૃત્તિકારક હોતા હૈ ૧, તથા-કોઈ એક પુરુષ નામસે વામ હોતા હૈ વહી અનુકૂલ સ્વભાવવાલા હોનેસે દક્ષિણાવર્ત અનુકૂલ પ્રવૃત્તિકારક હોતા હૈ ૨, કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો નામસે દક્ષિણ હોતા હૈ વહી પ્રતિકૂલ સ્વભાવવાલા હોનેસે વામાવર્ત વિપરીત પ્રવૃત્તિકારક હોતા હૈ ૩, તથા કોઈ એક પુરુષ એસા હોતા હૈ જો નામસે દક્ષિણ હોતા હૈ વહી અનુકૂલ સ્વભાવવાલા હોનેસે દક્ષિણા-વર્ત અનુકૂલ પ્રવૃત્તિકારક હોતા હૈ ૪-૯

ગણ્યાન્યો છે (૪) દક્ષિણ દક્ષિણાવર્ત-કોઈ એક શબ્દ દક્ષિણપાર્શ્વમાં (જમણી બાજુ) નિયુક્ત હોય છે અને દક્ષિણાવર્તવાળો હોય છે. । ૮ ।

“ એવામેવ ” ઇત્યાદિ એ જ પ્રમાણે પુરુષ પ્રકાર પણ ચાર કહ્યા છે—
(૧) કોઈ એક પુરુષ નામની અપેક્ષાએ વામ હોય છે. અને પ્રતિકૂળ સ્વભાવવાળો પણ હોવાથી વામાવર્ત-વિપરીત પ્રવૃત્તિકારક પણ હોય છે.

(૨) કોઈ એક પુરુષ નામની અપેક્ષાએ વામ હોય છે, પણ અનુકૂળ સ્વભાવવાળો હોવાને કારણે દક્ષિણાવર્ત-અનુકૂળ પ્રવૃત્તિકારક હોય છે (૩) કોઈ એક પુરુષ નામની અપેક્ષાએ દક્ષિણ હોય છે પણ પ્રતિકૂળ સ્વભાવવાળો હોવાથી વામાવર્ત-વિપરીત પ્રવૃત્તિવાળો હોય છે (૪) કોઈ પુરુષ નામની અપેક્ષાએ દક્ષિણ હોય છે અને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિવાળો હોવાને કારણે દક્ષિણાવર્ત-અનુકૂળ પ્રવૃત્તિવાળો હોય છે. (અહીં ‘ વામ ’ અશુભ નામ સૂચક અને ‘ દક્ષિણ ’ શુભ નામ સૂચક છે)

“ ચત્તારિ ધૂમસિદ્ધાઓ ”—ઇત્યાદિ-ધૂમશિસ્તાઃ—ધૂમઘેનયઃ, તાદૃશત્ત્વઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા—एका—કાચિદ્ ધૂમશિસ્તા વામા—વામભાગસ્થા સતી પુનઃ વામાઽઽવર્તા વામપાર્શ્વવર્તિત્વેન પ્રતિકૂલસ્ત્વેન વા વામતો ચલનાદ્ વામત્વ દ્વાયર્થત્વ ઇતિ વામાઽઽવર્તા, તાદૃશી મન્વતિ, એવમેવ શ્લેષ મજ્જમય સ્વરૂપદ્ બ્યાસ્યેયમ્ ૪, ૧૦

“ એવામેવ ” ત્યાદિ એવમેવ—ધૂમશિસ્તાવદેય સ્થિતિવત્ત્વઃ પ્રજ્ઞાઃ તથા—एका કાચિત્ સ્ત્રી નામ્ના વામા સા એષ પ્રતિકૂલસ્વભાવતયા વામાઽઽવર્તા=વિપરીતાઽઽચરણશીલા મન્વતિ, એવ શ્લેષ મજ્જમય પુરુષવદ્ બ્યાસ્યેયમ્ । ૪ । શમ્બુક દૃષ્ટાન્તે સત્યપિ ધૂમશિસ્તાદૃષ્ટાન્તસ્ય પૃથગ્વપાદાન દાષ્ટાન્તિકપૂઠાયાઃ સ્થિતિો સિદ્ધિસાધર્મ્યમર્થકનાથમિતિ ॥ ૧૧ ॥

“ ચત્તારિ ધૂમસિદ્ધાઓ ”—ઇત્યાદિ, ધૂમશિસ્તા એ ધૂમઘેનિયાં ચાર પ્રકારની કહી ગઈ છે, જેસે—કોઈ એક ધૂમશિસ્તા એસી होती है जो વામભાગસ્થ होती हुई પુનઃ—વામાઽઽવર્તા, વામપાર્શ્વવર્તિની होने से, અથવા પ્રતિકૂલ होनेસે વામાવર્તા, પાંચે ઓર હી મુકનેવાલી होती है, ૧ હસી પ્રકારસે શોષ ત્રીન મજ્જા મી શાકુ કે જેસે જાન લેનાં જોઈયે ૪।૧૦

“ એવામેવ ” ઇત્યાદિ, ધૂમશિસ્તા કી તરફ હી ચાર સ્થિતિયાં કહી ગઈ છે જેસે કોઈ એક સ્ત્રી એસી होती है जो નામસે વામા होती है वही प्रतिकूल स्वभाववाली होने से वामावर्ता—विपरीताचरणा होती है, ૧ હસી તરફસે શોષ ત્રીન મજ્જા મી પુરુષ કી તરફ જાન લેના જોઈયે । શમ્બુક—શાકુ દૃષ્ટાન્ત કે होने પર મી જો ધૂમશિસ્તા દૃષ્ટાન્ત કા પૃથક્ વપાદાન ક્રિયા ગયા છે વહ દાષ્ટાન્તિક રૂપમે સ્થિતિો કે લક્ષણ

‘ ચત્તારિ ધૂમસિદ્ધાઓ ’ ઇત્યાદિ—ધૂમશિષ્યાઓ—ધૂમ ઘેનિયો ચાર પ્રકારની કહી છે “ વામા વામાવર્તા ” ઇત્યાદિ ચાર ભાગા યાંજ પ્રમાણે જ સમજવા (૧) કોઈ એક ધૂમશિષ્યા એવી હોય છે કે જે—વામપાર્શ્વવર્તિની હોવાથી અથવા પ્રતિકૂલ હોવાથી વામ ભાગસ્થ હોય છે અને વામાવર્તા પણ હોય છે એ જ પ્રમાણે બાકીના ત્રણ ભાગા પણ સમજી લેવા । ૧૦ ।

‘ એવામેવ ’ ઇત્યાદિ. ધૂમશિષ્યાની જેમ સ્ત્રીઓ પણ ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) ‘ વામા વામાવર્તા ’ કોઈ એક સ્ત્રી નામની અપેક્ષાએ પણ વામા હોય છે અને પ્રતિકૂલ સ્વભાવવાળી હોવાથી વામાવર્તા—વિપરીત આવ રજવાત્રી પણ હોય છે એ જ પ્રમાણે બાકીના ત્રણ ભાગા પણ યાંજ દાષ્ટાન્તિક પુરુષ પ્રમાણે સમજી લેવા યાંજનું દૃષ્ટાન્ત આપ્યા પછી ધૂમશિષ્યાનું અલગ દૃષ્ટાન્ત આપવાનું કારણ એ છે કે અહીં દાષ્ટાન્તિક રૂપે સ્ત્રીઓના વર્ણનની

“ચત્તારિ અગ્નિસિદ્ધાઓ” ઇત્યાદિ । એતત્સૂત્રં ધૂમશિખાસૂત્રવદ્ વ્યાખ્યે-
યમ્ । एवं दाष्टान्तिकस्त्रीसूत्रमपि । (૧૨, ૧૩)

“ચત્તારિ વાયમંડલિયા” ઇત્યાદિ । વાતમણ્ડલિકાઃ-મણ્ડલ્યઃ-સમૂહાઃ, તા
એવ મણ્ડલિકાઃ, વાતાનાં-વાયુનાં મણ્ડલિકા વાતમણ્ડલિકાઃ-મણ્ડલેનોર્ધ્વપ્રવૃત્તા
વાયવઃ, તાશ્ચતસ્રઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-एका-काचिद् વાતમણ્ડલિકા વામા=વામા-
ऽऽवर्ता च भवति, શેષં ચ ધૂમશિખાવત્ । एवं दाष्टान्तिकस्त्रीसूत्रमपि । इह च
स्त्रियो मालिन्योपतापचापल्यस्वभावा भवन्तीत्यभिप्रायेण स्त्रीषु धूमशिखावातम-
ण्डलिकेति स्त्रीलिङ्गदृष्टान्तत्रयमुपन्यस्तम् ।

કી સમાનતા કો દિશાને કે લિયે કિયા ગયા હૈ । “ચત્તારિ અગ્નિસિ-
દ્ધાઓ”-ઇત્યાદિ અગ્નિશિખાં ચાર કહીહૈં ધૂમશિખા સૂત્રકી તરહ વ્યાખ્યાત
કર લેનાં ચાહિયે । તથા ઇસી તરહસે દાષ્ટાંતિક સૂત્ર બી વ્યાખ્યાત કર
લેનાં ચાહિયે । “ચત્તારિ વાય મંડલિયા”-ઇત્યાદિ વાયુ મણ્ડલિકા
ચાર પ્રકારકી કહી ગઈ હૈં, મણ્ડલાકારરૂપમેં-ગોલરૂપમેં જો વાયુ ઉપર
કી ઓર જાતી હૈ એસી વહ વાયુમણ્ડલિકા કોઈ એક એસી હોતી હૈ જો
વામા-और वामावर्ता होती है । यहां अवशिष्ट तीन अङ्ग धूमशिखा
जैसा जान लेना चाहिये । तथा-दाष्टान्तिक सूत्र भी इसी तरह जान
लेना चाहिये, स्त्रियां मलिन स्वभाववाली-उपताप स्वभाववाली और
चपल स्वभाववाली होती हैं । इसी अभिप्राय से यहां स्त्रियोंके विषयमें
धूमशिखा-अग्निशिखा और वातमण्डलिका ये तीन स्त्रीलक्षणवाले
दृष्टान्त दिये गयेहैं । कहा भीहै-“जहा धूमसिद्हागेहं-” इत्यादि । जैसे धूम-

સમાનતા પ્રકટ કરવા માટે નારી જાતિના દષ્ટાન્તનો ઉપયોગ થવો જોઈએ. । ૧૧ ।

“ચત્તારિ અગ્નિસિદ્ધાઓ” ઇત્યાદિ.-ધૂમશિખાના જેવાં જ અગ્નિશિખાના
પશુ ચાર ભાંગા સમજવા । ૧૨ ।

એ જ પ્રમાણે દાષ્ટાંતિક સ્ત્રી સૂત્રનાં ભાંગાઓ અને તેમનો ભાવાર્થ
સમજી લેવો. । ૧૩ ।

“ચત્તારિ વાયમંડલિયા” ઇત્યાદિ. વાયુમંડલિકા ચાર પ્રકારની કહી છે
ચક્કર ચક્કર ફરતો જે વંટોગિયો ચડે છે તેને વાયુમંડલિકા કહે છે કોઈ
એક વાયુમંડલિકા વામા અને વામાવર્તા હોય છે. બાકીના ત્રણ (અંગ) ધૂમશિખા
જેવાં સમજવા. । ૧૪ ।

દાષ્ટાંતિક સૂત્રમાં પશુ આ પ્રકારના જ ચાર ભાંગા સમજવા. । ૧૫ ।

સ્ત્રીઓ મલિન સ્વભાવવાળી, ઉપતાપ (ઉત્પાન) સ્વભાવવાળી અને
અને ચંચળ વૃત્તિવાળી હોય છે, તેથી જ અહીં ધૂમશિખા, અગ્નિશિખા અને
વાયુમંડલિકા, આ ત્રણ સ્ત્રી લક્ષણવાળાં દષ્ટાન્તો આપવામાં આવ્યાં છે.

“ ચત્તારિ ધૂમસિંહાઓ ”—ઈત્યાદિ-ધૂમશિલાઃ - ધૂમમેળિયાઃ, તાદૃષતસઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-एका-काचित् धूमशिला वामा-वामभागस्या सती पुनः वामाऽऽवर्ता वामपार्श्ववर्तित्वेन प्रतिकूलत्वेन वा वामतो चलनात् वामत एवावर्त इति वामाऽऽवर्ता, तादृशी भवति, एवमेव शेषं भङ्गत्रयं शङ्कत् व्याख्येयम् ४, १०

“ एवामेव ”—ત્યાદિ-एवमेव-धूमशिलावदेव स्त्रियश्चतस्रः प्रज्ञताः तथા-एका काचित् स्त्री नाम्ना वामा सा एव प्रतिकूलस्वभावतया वामाऽऽवर्ता=विपरीताऽऽवरणशीला भवति, एव शेषं भङ्गत्रयं पुरुषवद् व्याख्येयम् । ४ । शम्भूक-दृष्टान्ते सत्यपि धूमशिलादृष्टान्तस्य पृथग्पादान् दाष्टान्तिकभूतायाः स्त्रियो डिङ्साधर्म्यमदर्शनावमिति ॥ ११ ॥

“ ચત્તારિ ધૂમસિંહાઓ ”—ઈત્યાદિ, ધૂમશિલાએ ધૂમમેળિયાં ચાર પ્રકારની કહી गई हैं, जैसे—कोई एक धूमशिला ऐसी होती है जो वामभागस्थ होती हुई पुनः-वामाऽऽवर्त्ता, वामपार्श्ववर्तिनी होने से, अथवा प्रतिकूल होनेसे वामावर्त्त, पाई ओर ही मुड़नेवाली होती है, १ इसी प्रकारसे शेष तीन भङ्ग भी शङ्क के जैसे जान लेना चाहिये ४।१०

“ एवामेव ”—ઈત્યાદિ, ધૂમશિલાની તરફ હી ચાર સ્ત્રિયાં કહી गई हैं जैसे कोई एक स्त्री ऐसी होती है जो नामसे वामा होती है वही प्रतिकूल स्वभाववाली होने से वामावर्त्ता-विपरीतावरणा होती है, १ इसी तरहसे शेष तीन भङ्ग भी पुरुष की तरह जान लेना चाहिये । शम्भूक-दादृष्टान्त के होने पर भी जो धूमशिला दृष्टान्त का पृथक् उपादान किया गया है वह दाष्टान्तिक रूपमें स्त्रियों के लक्षण

‘ ચત્તારિ ધૂમસિંહાઓ ’—ઈત્યાદિ-ધૂમશિખાઓ-ધૂમ મેલિઓ વ્યાખ્યાનની ઠઠી છે ‘ વામા વામાવર્તા ’—ઈત્યાદિ વ્યાખ્યાનમાં યાજ્ઞ પ્રમાણે જ સમજવા. (૧) કેાઇ એક ધૂમશિખા એવી હોય છે કે જે-વામાપાર્શ્વવર્તિની હોવાથી અથવા પ્રતિકૂળ હોવાથી વામા ભાગસ્થ હોય છે અને વામાવર્ત પણ હોય છે એ જ પ્રમાણે બાકીના ત્રણ ભાગ પણ સમજ લેવા. ૧ ૧૦ ।

‘ एवामेव ’—ઈત્યાદિ, ધૂમશિખાની જેમ સ્ત્રીઓ પણ ચાર પ્રકારની ઠઠી છે—(૧) ‘ વામા વામાવર્તા ’ કેાઇ એક સ્ત્રી નામની અપેક્ષાએ પણ વામા હોય છે અને પ્રતિકૂળ સ્વભાવવાળી હોવાથી વામાવર્ત-વિપરીત આવરણવાળી પણ હોય છે એ જ પ્રમાણે બાકીના ત્રણ ભાગ પણ યાજ્ઞ દાષ્ટાન્તિક પુરુષ પ્રમાણે સમજ લેવા. યાજ્ઞનું દષ્ટાન્ત આપ્યા પછી ધૂમશિખાનું અલગ દષ્ટાન્ત આપવાનું કારણ એ છે કે અહીં દાષ્ટાન્તિક રૂપે સ્ત્રીઓના લક્ષણ

સુધાદીકા સ્થા. ૪૩ ૨૬ ૫૨ કારણેનિર્ગ્રન્થ્યાસ ૬ પ્રાલાપાદૌ સાધોરાધકવમૂ ૬૨૯

વા ૨, અસપાં વા પાપાં લાઙ્મં વા સાઙ્મં વા દલેમાણે વા ૩,
દલાવમાણે વા ૪ ॥ સૂ. ૫૨ ॥

છાયા—ચતુર્મિઃસ્થાનૈઃ નિર્ગ્રન્થો નિર્ગ્રન્થીમાલપન્ વા સંલપન્ વા નાતિક્રા-
મતિ, તથા—પન્થાનં પૃચ્છન્ વા ૧, પન્થાનં દેશયન્ વા ૨, અશનં વા પાનં વા
સ્વાદં વા સ્વાદં વા દદદ્ વા ૩, દાપયદ્ વા ૪ ॥ સૂ. ૫૨ ॥

ટીકા—“ ચઠ્ઠિ ઠાણેહિ ” ઇત્યાદિ—

ચતુર્મિઃ—ચતુઃસંખ્યૈઃ અનુપદં વક્ષ્યમાણૈઃ સ્થાનૈઃ નિર્ગ્રન્થ-સાધુઃ, નિર્ગ્રન્થી-
સાધ્વીમ્, આલપન્-નિર્ગ્રન્થ્યા સદૈકવારં વાર્તાલાપં કુર્વન્ સંલપન્-અનેકવારં
વાર્તાલાપં કુર્વન્ વા નાતિક્રામતિ-નોલ્હણપતિ જિનાઽઽજ્ઞામ્ । તથા—પન્થાનં-
માર્ગં પૃચ્છન્ નિર્ગ્રન્થો જિનાજ્ઞાં નાતિક્રામતીત્યન્વયઃ તત્ત્વ પ્રવ્યસાધર્મિક ગૃહસ્થ
પુરુષાદીનામભાવે આર્યિકાસત્ત્વે તાં પ્રતિ-“ હે આર્યે । મયાઽમુકગ્રામે કેન માર્ગેન

પુરુષ-અનુકૂલ સ્વભાવવાળે ઔર-અનુકૂલ પ્રવૃત્તિવાળે હોતે હૈં ।
એસા કહા ગયા હૈ, સો અવ સૂત્રકાર યહ પ્રગટ કરતે હૈ-કિ જો એસા
નિર્ગ્રન્થ કારણવશ નિર્ગ્રન્થી કે સાધ વાતચીત કરતા હૈ તો વહ
જિનાજ્ઞા કા અતિક્રમણ નહીં કરતા હૈ-“ ચઠ્ઠિ ઠાણેહિ ણિગંગથે
ણિગંગથિ-” ઇત્યાદિ-૫૨

ટીકાર્થ-ચાર કારણોં કો લેકર યદિ નિર્ગ્રન્થ નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી
કે સાથે એક ધાર વાતચીત કરતા હૈ તો વહ જિનાજ્ઞા કા ઉલ્લં-
ઘન નહીં કરતા હૈ । વે ચાર કારણ યે હૈ, યદિ પ્રવ્યસાધર્મિક ગૃહસ્થ
પુરુષ આદિક ન હોં ઔર આર્યિકા હી હોં તો વહ (પરિક) ડસ આર્યિકા
સે એસા પૂછ સકતા હૈ, હે આર્યે ? મુઝે અમુક ગ્રામ જાના હૈ કિસ રાસ્તે

અનુકૂળ સ્વભાવ અને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિવાળા પુરુષો પશુ હોય છે. એવા
અનુકૂળ સ્વભાવ અને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિવાળો કોઈ નિર્ગ્રન્થ નો કોઈ નિર્ગ્રન્થી
સાથે કોઈ ઉચિત કારણે વાતચીત કરે તો તે જિનાજ્ઞાનું અતિક્રમણ કરતો
નથી હવે સૂત્રકાર એવા ચાર કારણોં નિરૂપણ કરે છે.

“ ચઠ્ઠિ ઠાણેહિ ણિગંગથે ણિગંગથી ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-નીચે દર્શાવેલાં ચાર કારણોંને લીધે નો નિર્ગ્રન્થ (સાધુ) નિર્ગ્રન્થી
(સાધ્વી) સાથે એક વાર અથવા વારંવાર વાતચીત કરે છે, તો તે જિના-
જ્ઞાનું ઉલ્લંઘન કરતો નથી. (૧) કોઈ માર્ગે વિહાર કરતી વખતે કોઈ સાધ-
ર્મિક ગૃહસ્થ આદિ પુરુષ રસ્તાપર ન મળે અને તે કારણે કોઈ ગામ તરફ
જવાનો રસ્તો બાણવાની જરૂર પડે, તો કોઈ નિર્ગ્રન્થીને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન
પૂછવામાં આવે કે “ હે આર્યે ! મારે અમુક ગામ જવું છે, તો કયા રસ્તેથી

તત્સ ચ— “અહા ધૂમસિદ્ધા ગેહ, મલિનીકુલ્લવ સયા ।
 ઘણિયા ધિ તદા ઓપ, નરાણ, નિમ્મલં મળ ॥ ૧ ॥
 પસતવરયં સંત, સતાવેદ ચ દેહિણ ।
 સોગેઝાલસિદ્ધિચિત્તી, દદમમ્મર્ફણચિ ॥ ૨ ॥
 અહા રુસલાળ સાદગા, વાઓસી અદિકપદ ।
 તદેવ જ્ઞાણમેરુ યી, અદિકપેદ સન્નદા ॥ ૩ ॥ ”

છાયા—યથા ધૂમસિદ્ધા ગેહં મલિની કુલલે સદા ।
 વનિતાઽપિ તથા લોકે, નરાણાં નિર્મલં મનઃ ॥ ૧ ॥
 પ્રશ્નન્તરત્રય સ્વાન્તં, સન્તાપયતિ ચ દેહિનામ્ ।
 સોકેઝનલસિલેવ સ્ત્રી, દમ્પર્મે રુચીનામપિ ॥ ૨ ॥
 યથા વૃક્ષાણાં શાસ્ત્રાગ્રં, વાતાસી અધિકમ્પયતિ ।
 તયૈવ જ્ઞાનમેરુ સ્ત્રી, અધિકમ્પયતિ સર્વયા ॥ ૩ ॥ इति । १४-१५ ।

“ચત્તારિ વળસદ્ધા ” ઇત્યાદિ—શિલામૂલ્યવિદં સુધ ચ્યાસ્યેયમ્, અથ
 કેવલં ચામાઽઽવર્ત —ચામવલ્લમેન જાતસ્વાદ્ વાયુના ચામતા પ્રકુમ્પમાનત્વાદ્
 ચામાઽઽવર્તો ભવતિ । ઇતિ, (૧૬) પુરુષસ્તુ પ્રાગ્બદ્ (૧૭) ॥ સૂ. ૫૧ ॥

ઇતઃ પૂર્વં પુરુષોઽનુકુલસ્વભાવોઽનુકુલપ્રવૃત્તિષ્ઠ નિકુપિતઃ તારણ્ય નિર્ગન્ધઃ
 કારણે સતિ નિર્ગન્ધઃ સદ્ સંલપપ્રપિ નિનાશાં નાતિક્રામતીતિ દર્શયમાદ—

મૂલપ્—ચડહિં ઠાળેહિં ણિગથે ણિગર્થિ આલવમાળે વા સલવમાળે
 વા ણાડકકમડ્, ત જહા પથ પુચ્છમાળે વા ૧, પથં દેસમાળે

શિલાકા ઘર “ચત્તારિ વળસદ્ધા ” ઇત્યાદિ ચાર વળપદ્દ હેં શિલામૂલ્ય
 જેસે હસ સુગ્રકા ધ્યાસ્યાન કરના પાહિયે, જેસા કિ—કોઈ પદ વળપદ્દ
 એસા હોતાહે ઓ—ચામ ટેકા મેકા હોતાહે ઓર વાયુદ્વારા વાઈ ઓર કપાયા
 ગયા—હિલાયા ગયા હોને સે ચામાવર્સવાલા હોતા હે । ૧૧ ૧૬ ઇતી પ્રકાર
 સે પુરુષજાત ઓ ચાર હોતે હે ॥ ૫૧ ॥

“ચત્તારિ વળસદ્ધા ” ઇત્યાદિ—ચિઆસૂત્રના જેવું જ આ સૂત્રનું પણ
 વિવેચન થવું જોઈએ. જેમકે કેઈ એક વળપદ્ (વળપદ) એવો હોય છે કે
 જે વામ (વાંકી) હોય છે, અને વળપ દ્વારા ઘણી વાર કુદેકો હોવાથી
 વામ આવર્તવાગે પણ હોય છે. બાકીના ત્રણ બાંધા બંતે સમજાવેલા । ૧૧ ।
 એજ પ્રમાણે ઘણીવિધ પુરુષના પણ ચાર પ્રકાર સમજાય । ૧૭ । સૂ. ૫૧ ॥

સુધાટીકા સ્થા. ૪૩ ૨૪ ૫૨ કારણેનિર્ગ્રન્થાસદ્ આલાપાદૌસાધોરાચક્ત્વમ્ ૬૬૯

વા ૨, અસળં વા પાળં સ્વાઈમં વા સાઈમં વા દલેમાળે વા ૩,
દલાવમાળે વા ૪ ॥ સૂ. ૫૨ ॥

છાયા—ચતુર્ભિઃસ્થાનૈ નિર્ગ્રન્થો નિર્ગ્રન્થીમાલપન્ વા સંલપન્ વા નાતિક્રા-
મતિ, તથા—પન્થાનં પૃચ્છન્ વા ૧, પન્થાનં દેશયન્ વા ૨, અશનં વા પાનં વા
સ્વાઘં વા સ્વાઘં વા દદદ્ વા ૩, દાપયદ્ વા ૪ ॥ સૂ. ૫૨ ॥

ટીકા—“ ચઢહિં ઠાળેહિં ’ ઇત્યાદિ—

ચતુર્ભિઃ—ચતુઃસંખ્યૈઃ અનુપદં વક્ષ્યમાળૈઃ સ્થાનૈઃ નિર્ગ્રન્થઃ—સાધુઃ, નિર્ગ્રન્થી—
સાધ્વીમ્, આલપન્—નિર્ગ્રન્થ્યા સદૈક્રવારં વાર્તાલાપં કુર્વન્ સંલપન્—અનૈક્રવારં
વાર્તાલાપં કુર્વન્ વા નાતિક્રામતિ—નોલ્લઙ્ઘયતિ જિનાઽઽજ્ઞામ્ । તથા—પન્થાનં—
માર્ગં પૃચ્છન્ નિર્ગ્રન્થો જિનાજ્ઞાં નાતિક્રામતીત્યન્વયઃ તત્ર પ્રવૃત્ત્યસાધર્મિક ગૃહસ્થ
પુરુષાદીનામભાવે આર્યિકાસત્ત્વે તાં પ્રતિ—‘ હે આર્યે । મયાઽમુકગ્રામે કેન માર્ગેન

પુરુષ—અનુકૂલ સ્વભાવવાળે ઓર—અનુકૂલ પ્રવૃત્તિવાળે હોતે હૈં ।
એસા કહા ગયા હૈ, સો અવ સૂત્રકાર યહ પ્રગટ કરતે હૈં—કિ જો એસા
નિર્ગ્રન્થ કારણવશ નિર્ગ્રન્થી કે સાથ વાતચીત કરતા હૈ તો વહ
જિનાજ્ઞા કા અતિક્રમણ નહીં કરતા હૈ—“ ચઢહિં ઠાળેહિં ણિગ્ગંથે
ણિગ્ગંથિ—” ઇત્યાદિ—૫૨

ટીકાર્થ—ચાર કારણોં કો લેકર યદિ નિર્ગ્રન્થ નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી
કે સાથ એક ધાર વાતચીત કરતા હૈ તો વહ જિનાજ્ઞા કા ઉલ્લં-
ઘન નહીં કરતા હૈ । વે ચાર કારણ યે હૈં, યદિ પ્રવૃત્ત્યસાધર્મિક ગૃહસ્થ
પુરુષ આદિક ન હોં ઓર આર્યિકા હી હોં તો વહ (પત્રિક) ડસ આર્યિકા
સે એસા પૂછ સકતા હૈ, હે આર્યે? મુઝે અમુક ગ્રામ જાના હૈ કિસ રાસ્તે

અનુકૂળ સ્વભાવ અને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિવાળા પુરુષો પણ હોય છે. એવા
અનુકૂળ સ્વભાવ અને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિવાળો કોઈ નિર્ગ્રન્થ ને કોઈ નિર્ગ્રન્થી
સાથે કોઈ ઉચિત કારણે વાતચીત કરે તો તે જિનાજ્ઞાનું અતિક્રમણ કરતો
નથી હવે સૂત્રકાર એવા ચાર કારણોનું નિરૂપણ કરે છે.

“ ચઢહિં ઠાળેહિં ણિગ્ગંથે ણિગ્ગંથી ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—નીચે દર્શાવેલાં ચાર કારણોને લીધે ને નિર્ગ્રન્થ (સાધુ) નિર્ગ્રન્થી
(સાધ્વી) સાથે એક વાર અથવા વારંવાર વાતચીત કરે છે, તો તે જિના-
જ્ઞાનું ઉલ્લંઘન કરતો નથી (૧) કોઈ માગે વિહાર કરતી વખતે કોઈ સાધ-
ર્મિક ગૃહસ્થ આદિ પુરુષ રસ્તાપર ન મળે અને તે કારણે કોઈ ગામ તરફ
જવાનો રસ્તો બાંધવાની જરૂર પડે, તો કોઈ નિર્ગ્રન્થીને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન
પૂછવામાં આવે કે ‘ હે આર્યે ! મારે અમુક ગામ જવું છે, તો કયા રસ્તેથી

ગન્તવ્યમ્' ઇતિ માર્ગપ્રશ્ને નિર્ગન્યો જિનાશ્ચાં નોલ્લખ્યતીતિ પર્યવસિતોઽયઃ । ૧ ।
 ઇતિ પ્રથમં સ્થાનમ્ । ૧ । તથા—પાનં વર્જયન્-આર્યો માર્ગે નિર્વિશન્, ઇતિ ત્રીતીય
 સ્થાનમ્ ૨ । તથા—અશ્વન-પાન-સ્નાય સ્નાય વા વદત્, ઇતિ તૃતીયં સ્થાનમ્ ૩ ।
 તથા—દાપયન્-શ્મશ્નકસ્માદ્ ગૃહાદેશતુર્વિધાઽઞ્જારે દાપયન્ નિર્ગન્યો જિનાશ્ચાં
 નાઽતિક્રામતીત્યર્થઃ ૪ । ઇતિ ચતુર્થે સ્થાનમ્ ૫ ॥ સૂ૦ ૫૨ ॥

તથા-નિર્ગન્યઃ 'તમસ્કાર્યં તમ' ઇતિ શબ્દન્ આપાસમિતિ નાતિક્રામતીત્યાર—

મૂઝ્મ-તમુકાયસ્સ ણ ચત્તારિ નામધેજ્જા પળ્લણ્ણત્તા, ત જહા—
 -તમિદ્દ વા તમુકકાણ્ણદ્દ વા અધકારેદ્દ વા મહધકારેદ્દ વા ।

તમુકાયસ્સ ણ ચત્તારિ નામધેજ્જા પળ્લણ્ણત્તા તં જહા—
 લોગધગારેદ્દ વા લોગતમસેદ્દ વા વેયધગારેદ્દ વા વેવતમસેદ્દ વા ।

તમુકાયસ્મ ણ ચત્તારિ નામધેજ્જા, ત જહા—વાયફલિદ્દે
 દ્દ વા વાયફલિહલ્લોમેદ્દ વા વેવરસ્સેદ્દ વા વેવણ્ણુદ્દેદ્દ વા ।

તમુકકાણ્ણ ણં ચત્તારિ કલ્પે આવરિત્તા ચિટ્ઠદ્દ, ત જહા—
 સોહમ્મીસાણ સળ્લકુમારમાહિદ્દ ॥ સૂ૦ ૫૩ ॥

હોકર જાઞ્ઞ ૧ હસ પ્રકારસે પૂજને પર શહ જિનાશ્ચા કા ઉલ્લંઘન કરનેવાલા
 નહીં હોતા હૈ । હસ તરહ શહ સાધુ યદિ આર્યો કો મારગ યતા દેતા હૈ
 (તો મી) જિનાશ્ચા કા ઉલ્લંઘનકર્તા નહીં હોતા હૈ, તથા શહ આર્યિકા
 કે લિયે અશન પાન-સ્નાય-સ્નાયરૂપ આહાર વ દેતા હૈ, તથા અમુક ગૃહસ્થસે
 વિલા દેતા હૈ, તો મી શહ જિનાશ્ચા કા ઉલ્લંઘનકર્તા નહીં હોતા હૈ ॥ સૂ૦ ૫૨ ॥

જી ૨ " આ પ્રકારના પ્રશ્ન સામ્બીને પૂજનાર સાધુ જિનાશ્ચાનું ઉલ્લંઘન કરતા
 નથી (૨) એ જ પ્રકારની પરિસ્થિતિ સામ્બીને માટે જમી થઈ હોય ત્યારે
 સામ્બીજીને માર્ગ બતાવના માટે વાતચીત કરવામાં પણ જિનાશ્ચાનું ઉલ્લંઘન
 થતું નથી. (૩) તે સામ્બીજીને કોઈક તેણે કારણ હોય તો અશન, પાન,
 આવ અને સ્વાચરૂપ આહાર આપી દેવામાં, અને (૪) કોઈ ગૃહસ્થ પાસે
 અપાવી દેવામાં પણ તે જિનાશ્ચાનું ઉલ્લંઘનકર્તા થતા નથી. ॥ સૂ. ૫૨ ॥

છાયા—તમસ્કાયસ્ય સ્વલુ ચત્વારિ નામધેયાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા—તમ ઇતિ વા તમસ્કાય ઇતિ વા અન્ધકાર ઇતિ વા મહાન્ધકાર ઇતિ વા ।

તમસ્કાયસ્ય સ્વલુ ચત્વારિ નામધેયાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા—લોકાન્ધકાર ઇતિ વા લોકતમ ઇતિ વા દેવાન્ધકાર ઇતિ વા દેવતમ ઇતિ વા ।

તમસ્કાયસ્ય સ્વલુ ચત્વારિ નામધેયાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા વાતપરિઘ ઇતિ વા વાતપરિઘ ક્ષોમ ઇતિ વા દેવારણ્યમ્ ઇતિ વા દેવવ્યૂહ ઇતિ વા ।

તમસ્કાયઃ ચતુરઃ કલ્પાન્ આવૃત્ય તિષ્ઠતિ, તદ્યથા—સૌધર્મેશાનં સનત્કુમાર-માહેન્દ્રમ્ ॥ સૂ ૫૩ ।

ટીકા—“ તમુકાયસ્સ ” ઇત્યાદિ

તમઃ—અપ્કાયપરિણામલક્ષણોઽન્ધકારઃ, તસ્ય કાયઃ—સમૂહઃ, તમસ્કાયઃ । સોઽસ્માદ્ મધ્યજમ્બૂદીપાદ્ વહિસ્તિર્યગ્ અસંખ્યેયાન્ દ્વીપસમુદ્રાન્ વ્યતિવ્રજ્ય

અવ સૂત્રકાર યહ પ્રગટ કરતે હૈં કિ નિર્ગ્રન્થ સાધુ તમસ્કાય કો “ તમ ” એસા યદિ કહ દેતા હૈં તો વહ ભાષાસમિતિ કા ઉલ્લંઘન નહીં કરતા હૈં । “ તમુકાયસ્સ ણં ચત્તારિ નામધેજ્ઞા ” ઇત્યાદિ ૫૩

સૂત્રાર્થ—“તમસ્કાયકે ચાર નામ કહે ગયેહૈં, જૈસે-તમ ૧ તમસ્કાય ૨ અન્ધકાર ૩ ઓર મહાન્ધકાર ૪ । પુનશ્ચ તમસ્કાય કે ચાર નામ કહે ગયે હૈં, લોકાન્ધકાર ૧ લોકતમ ૨ દેવાન્ધકાર ૩ ઓર દેવતમ ૪ । પુનશ્ચ તમસ્કાય કે ચાર નામ કહે ગયે હૈં, વાતપરિઘ ૧ વાતપરિઘક્ષોમ ૨ દેવારણ્ય ૩ ઓર દેવવ્યૂહ ૪ । તમસ્કાય ચાર કલ્પોં કો આવૃત કર કે ઠહરતા હૈં, જૈસે-સૌધર્મ ૧ ઈશાન ૨ સનત્કુમાર ૩ માહેન્દ્ર ૪

ભાવાર્થ—ઈસ સવકા સુલાસા અર્થ ઇસ પ્રકારસે હૈં । અપ્કાયકા પરિણામરૂપ

હવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રગટ કરે છે કે કોઈ નિર્ગ્રન્થ સાધુ જે તમસ્કાયને “ તમ ” કહે છે, તે તેના દ્વારા ભાષા સમિતિનું ઉલ્લંઘન થયું ગણ્યું નથી. “ તમુકાયસ્સ ણં ચત્તારિ નામધેજ્ઞા ” ઇત્યાદિ—

તમસ્કાયના આ પ્રમાણે ચાર નામ છે—(૧) તમ, (૨) તમસ્કાય, (૩) અન્ધકાર અને (૪) મહાન્ધકાર. તમસ્કાયના આ પ્રમાણે ચાર નામ પણ કહ્યાં છે—(૧) લોકાન્ધકાર, (૨) લોકતમ, (૩) દેવાન્ધકાર અને (૪) દેવતમ. તમસ્કાયના આ પ્રમાણે ચાર નામ પણ કહ્યાં છે—(૧) વાતપરિઘ, (૨) વાતપરિઘ ક્ષોમ, (૩) દેવારણ્ય અને (૪) દેવવ્યૂહ તમસ્કાય ચાર કલ્પોને આવૃત કરીને (ઘેરીને) રહેલો છે—(૧) સૌધર્મને, (૨) ઈશાનને, (૩) સનત્કુમારને અને (૪) માહેન્દ્રને

આ સૂત્રનો ભાવાર્થ હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—અપ્કાયના પરિણામ રૂપ જે અન્ધકાર છે તેનું નામ ‘ તમ ’ છે, તે તમના સમૂહને તમસ્કાય

‘મરુતવર’ દ્વીપોઽસ્તિ । તસ્ય ષાષ્ઠવેદિકાયાઃ પર્યન્તમાગાદ્ દ્વિવત્પારિશ્વદ્ યોનનસહસ્રાણ્પરુણવરસમુદ્રમથગાદ્ અલોપરિતનતહાર્ધ્યમેઘર્વિશ્વત્યપિકાનિ સ્પષ્ઠદશ્યોમનન્નતાનિ યાત્રત્સમભિષ્પાકારસયા ગત્યા ષલયાકારતિર્યક્ પ્રસરન્ સૌષર્મં ધ્યાનસનત્કુમારમાદેન્દ્રાન્ ચનુરોઽપિ કલ્પાનાદૃત્ય કર્ષ્યમપિ ચ યાગ્વ્ બ્રહ્મનોકે કલ્પે તૃતીયમરિષ્ટિમાનમસ્તરં સંમાપ્તઃ । તસ્ય ચત્સારિ નામધેયાનિ-નામાનિ પ્રજ્ઞાનિ સ્થપા-તમ इति—‘તમ’ इत्याकारकं प्रथमं नाम तमोरूपत्वाद्, अथ ‘इति’ शब्दः शब्दस्वरूपनिर्देशनार्थः, ‘वा’ शब्दो विकल्पर्यः, एवमग्रेऽपि । १।

જો અષ્ટકારદેવસકા નામ તમદેવ, હસ તમ કા સમૂહ તમસ્કાયદેવ । યદ્ તમસ્કાય હસ મસ્ય જમ્બૂદ્વીપ સે યાહિર તિર્યગ્ અસરુપાત દ્વીપસમુદ્રોકો પાર કરકે ષર્તમાન અરુણવરદ્વીપકી ષાષ્ઠવેદિકા કે પર્યન્ત માગસે ૪૨ હજાર યોજન તક અરુણવરસમુદ્રકો અયગાહ કર જલકે ઉપરિતન તલસે કેવે ૧૭૨૧ સતરહમૌણ્ફીસ યોજન તક સમમિત્તિ કે આકારમેં જાકર ષલયાકાર તિર્યક્ ફેલા દુલા હે । તથા સૌધર્મ, ઈશાન, સનત્કુમાર, ખૌર માદેન્દ્ર હન ચારોં મી કલ્પોં કો આદૃત કરકે બ્રહ્મલોક કલ્પ મેં તૃતીય અરિષ્ટ ધિમાન પ્રસ્તર તક ફેલા દુલા હે । હસ અષ્ટકાર રુપ તમસ્કાય કે જો ચાર નામ કહે ગયે હેં ઉનકા તાત્પર્ય પેસા હે । તમ પેસા નામ તમરુપ હોને સે હે ।

હસી પ્રકારસે આગે મી જાનના ચાહિયે ? હસ પ્રકારસે તમ તમસ્કાય અન્ધકાર ઓર મહાન્ધકાર યે ચાર નામ તમસ્કાયકી તમો માત્રરુપતા કે

કહે છે. આ તમસ્કાય આ મધ્ય જ જમ્બુદ્વીપની બહારના તિર્યગ્ (તિર્યગ્દોઠવર્તી) આસન્ધાત દ્વીપ સમુદ્રોને પાર કરવાથી બે અરુણવર દ્વીપ આવે છે તેની બાજુ વેદિકા સુધીના ભાગથી ૪૨ હજાર યોજન પર્યન્ત અરુણવર સમુદ્રને આવશ્યકિત કરીને જળની ઉપરિતન સપાટીથી ૧૭૨૧ સતરસે બેઠવીય મેઘન સુધી સમ દિવા લના આકારના બાહ્ય શરિને ષલયાકારે તિર્યક્ ફેલાયેલો છે તથા સૌધર્મ, ઈશાન, સનત્કુમાર અને માદેન્દ્ર આ ચારે દેવોને આદૃત (આશ્ચર્યકિત) કરીને પ્રજ્ઞાલોક કલ્પના ત્રીજા અરિષ્ટ ધિમાન પ્રસ્તર સુધી ફેલાયેલો છે

આ અન્ધકાર હવ તમના બે ચાર પ્રકાર બતાવવામાં આવ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે—“ તમ ” આ નામ તમોરુપ હોવાને કારણે પડ્યું છે. બે જ પ્રમાણે આમળ પડ્યું સમજવું

આ પ્રકારે તમ તમસ્કાય, અન્ધકાર અને મહાન્ધકાર આ ચાર નામ તમસ્કાયની ત્રીજા માત્ર રૂપતાના જ પ્રતિપાદક છે તથા લોકાન્ધકાર આદિ બે

તમસ્કાય इति वा २, अन्धकार इति वा ३, महान्धकार इति वा ४ । एवं च तमः, तमस्कायः, अन्धकारः, महान्धकारः ' इति चत्वारि नामानि तमस्कायस्य तमोमात्ररूपता प्रतिपादकानि । तथाऽपराणि चत्वारि नामानि लोकान्धकार लोकतमो-देवान्धकार देवतमोरूपाणि तु तमस्कायस्य प्रगाढतमोरूपता प्रतिपादकानि । तत्र लोकान्धकारः-लोके लोकान्धकार एवास्ति नापरस्तादृश इति लोकान्धकारः, लोकतम इति - लोके तमः - लोकतमः देवान्धकार इति, देवानामन्धकारो देवान्धकारः, तथाविधेऽन्धकारे देवानामपि शरीरप्रभायाः प्रसर्तुमसमर्थत्वा-देवान्धकार इत्युच्यते, अत एव देवा बलवतो देवस्य भयेन तत्र तमस्काये तिरोहिता भवन्तीति वृद्धा इति । एवं देवानां तमो देवतम इति चतुर्थं नाम ४ ।

तथा-तमસ્કાયસ્યેતરાણિ ચત્વારિ નામાનિકાર્યાશ્રયાણિ, યથા-વાતપરિઘ ૧ વાતપરિઘક્ષોભ ૨ દેવારણ્યમ્ ૩, દેવવ્યૂહ इति, તत्र વાતપરિઘ:-વાતસ્ય-પવનસ્ય પ્રતિપાદક હૈં । તથા અન્ય જો લોકાન્ધકાર આદિ ચાર નામહૈં વે તમસ્કાય કી પ્રગાઢ તમોરૂપતા કે પ્રતિપાદક હૈં । લોક મેં જો અન્ધકાર હૈ વહ લોકાન્ધકાર હૈ વૈસા દૂસરા કોઈ નહીં હૈ । લોક મેં જો તમ હૈ વહ લોકતમ હૈ, દેવોં કા જો અન્ધકાર હૈ વહ દેવાન્ધકાર હૈ । એસે અન્ધકારોં મેં દેવોં કી બી શરીરપ્રભા ફેલનેમેં અસમર્થ રહતી હૈ । હસી કારણ એસે તમસ્કાય કો દેવાન્ધકાર કહા ગયા હૈ । વૃદ્ધ જન એસા કહતે હૈં કિં હસ દેવાન્ધકાર મેં ચલવાન દેવકે ભયસે અન્ય દેવ તિરોહિત (છુપ) જાતે હૈં । હસ પ્રકાર સે દેવતમ હૈ । તમસ્કાય કે યે વાતપરિઘ આદિ ચાર નામ કાર્યાશ્રય સે હૈં । હન સે તમસ્કાય કા જો વાતપરિઘ નામ હુઆ હૈં ડસકા કારણ એસા હૈં કિં યહ તમસ્કાય વાતકો-પવન કો

ચાર નામ કહ્યાં છે, તે તમસ્કાયની પ્રગાઢ તમોરૂપતાનાં પ્રતિપાદક છે લોકમાં જે અન્ધકાર છે તેને લોકાન્ધકાર કહે છે, એવો બીજો કેઈ અધકાર નથી. લોકમાં જે તમ છે તેનું નામ લોકતમ છે દેવલોકમાં જે અન્ધકાર છે તેનું નામ દેવાન્ધકાર છે એવા અન્ધકારમાં દેવોની શરીર પ્રભા પણ ફેલાઈ શકતી નથી, તે કારણે એવા તમસ્કાયને દેવાન્ધકાર કહ્યો છે.

વૃદ્ધો એવું કહે છે કે આ દેવાન્ધકાર બ્યાપે ત્યારે બળવાન દેવોના ભયથી અન્ય દેવો છુપાઈ જાય છે, એ જ પ્રકારનો દેવતમ પણ હોય છે.

તમસ્કાયના વાતપરિઘ આદિ જે ચાર નામો કહ્યાં છે તે કાર્યને આધારે કહ્યાં છે તમસ્કાયનું જે નામનિરૂપણ છે તેમાંથી નીચે પ્રમાણે છે.

પરિહનનાત્ પરિધઃ—અર્ગલા સ્વરૂપઃ, અથવા—પરિધ—લોહપિષ્ઠઃ, ' પરણ ' इति
 માયામસિદ્ધઃ, સ એવ પરિધ , વાતસ્ય પરિધો વાતપરિધ—પવનપતિરોધક इत्यर्थ
 इति પ્રથમ ૧ । તથા—વાતપરિધક્ષોમઃ—વાત વાયુ પરિધવત્ ક્ષોમપતિ-માગપરિ
 સ્થિતિ કરોમીતિ વાતપરિધક્ષોમ । इति द्वितीयः २ ॥

તથા—દેવરને 'તિ-દેવાનામરણ્યમિથ યલ્લવાન્યેન તિરોધાનસ્થાનત્વાદ્ યા
 સ દેવારણ્ય તમસ્કાય इति તૃતીયः ૩ । તથા—' દેવબ્યૂહ ' इति દેવાનાં બ્યૂહઃ—
 ચક્રશકટાદિ સામ્યુદ્ધામિક બ્યૂહ એવ યો દુરધિગમત્વાત્ સ દેવબ્યૂહતમસ્કાયઃ,
 इति चतुर्थः । ४ ।

તમસ્કાયો વાતસ્ત્રેષ્ઠમાવૃણોતિ તદાહ—“ તત્સુદ્ધાણં ” इत्यादि તમસ્કાયઃ
 સ્વલુ ચતુરા કલ્પાન્-વસ્તુમાખાન્ માવૃત્ય-શ્યાપ્ય તિષ્ઠતિ-વર્તતે, તથા—
 અર્ગલા સ્વરૂપ હૈ, અથવા લોહપિષ્ઠ-પરણ સ્વરૂપ હૈ હસ તરહ સે યહ
 પવનના પ્રતિરોધક હૈ । અતઃ હસકા નામ વાતપરિધ હૈ । પરિધ શબ્દકા
 અર્થ યહાં અર્ગલા યા લોહપિષ્ઠરૂપ પરણ દેસા હૈ । તથા “ વાતપરિધ
 ક્ષોમ ” એસા જો હસકા નામ હૈ વહ યહ વાયુકો પરિધકી તરહ અપને માર્ગસે
 સ્થલિત ફર દેતા હૈ હસ કારણ હૈ । “ દેવારણ્ય ” જો એસા હસકા નામ
 હૈ હસકા કારણ એસા હૈ કિ યલ્લવાન્ દેવોં સે હરે હુવે દેવોં કા યહ
 અરણ્ય કી તરહ તિરોધાન (ઊપનેકા) કા સ્થાન હૈ । તથા “ દેવબ્યૂહ ”
 એસા જો યહ વૌધા નામ હૈ હસકા કારણ એસા હૈ કિ દેવોંકો રયચક્ર
 શકટ આદિ સામ્યુદ્ધામિક બ્યૂહ કી તરહ યહ દુરધિગમ્ય હોતા હૈ । યહ
 તમસ્કાય જિતને ક્ષેત્ર કો આવરણ કરતા હૈ અથ હસ વાતકો સુગ્રકાર

તે તમસ્કાય વાતને માટે અમલા (આમળિયા) સમાન છે અથવા લોહપિષ્ઠ
 એવુ સમાન છે આ પ્રકારે તે પવનને પ્રતિરોધક હોવાથી તેનું નામ
 વાતપરિધ પણ પડ્યું છે પરિધ શબ્દનો અર્થ અહીં અમલા
 સમજવો. તથા તેનું ‘ વાતપરિધક્ષોમ ’ નામ આ કારણે પડ્યું
 છે કે તે વાયુને પરિધરૂપ હોવાના અર્થથી સ્થિતિ કરી દે છે તેનું દેવા
 રણ્ય નામ પડવાનું કારણ આ પ્રમાણે છે—અમળવાનું દેવાથી ભયભીત થયેલા
 દેવાને માટે તે અરણ્યની જેમ હુપાર્થ જવાના સ્થાનની ગરજ સારે છે, તેથી
 તેને દેવઅરણ્ય પણ કહે છે તેનું વાયુ નામ દેવબ્યૂહ પડવાનું કારણ—રય, ચક્ર,
 શકટ, આદિ સમાનની બ્યૂહ રચનાને કોરીને આમળ વધવાનું કામ જેવું
 મુશ્કેલ છે એવું જ આ અ પ્રકારને લેવાનું પણ મુશ્કેલ છે આ રીતે દેવાને
 માટે દુરધિગમ્ય હોવાથી તેને દેવબ્યૂહ કહ્યો છે

સૌધર્મેશાનં ૨ સનત્કુમારમાહેન્દ્રં ૪ । સૌધર્મે-શાન સનત્કુમાર માહેન્દ્રેતિ ચતુરઃ
કલ્પાનાદૃત્ય તમસ્કાયસ્તિષ્ઠતીતિ પર્યવસિતોઽર્થઃ । સ તમસ્કાયઃ અધોભાગે
મલ્લકમૂલસંસ્થાનસંસ્થિતઃ ઊર્ધ્વભાગે ચ કુક્કુટપજ્જરસંસ્થાનસંસ્થિતઃ પ્રતિપાદિતઃ,

ઉક્તञ્ચ—“ તમુક્કાણં મંતે ! કિં સંઠિં પ્ણત્તે ? ગોયમા ! અહે મલ્લગ-
મૂલસંઠિં ઉપિ કુક્કુડપંજરસંઠિં પ્ણત્તે ’ ત્તિ ।

છાયા—તમસ્કાયો મદન્ત ! કિં સંસ્થિતઃ પ્રજ્ઞતઃ ? ગૌતમ ! અધો મલ્લક-
મૂલસંસ્થિતઃ ઉપરિ કુક્કુટપજ્જરસંસ્થિતઃ । ઇતિ, મલ્લકં મૃત્તિકાપાત્રં તસ્ય મૂલં
બુધ્નઃ ગ્રીવા તદ્વત્ સંસ્થિતિર્યસ્ય સઃ, તત્સંસ્થાનસંસ્થિત ઇત્યર્થઃ ॥ સૂ ૫૩ ॥

અનન્તરં વચનપર્યાયૈસ્તમસ્કાયઃ પ્રોક્તઃ, સમ્પ્રત્યર્થપર્યાયૈઃ પુરુષં નિરૂપયિતુમાહ ।

મૂલમ્—ચત્તારિ પુરિસજાયા પ્ણત્તા, તં જહા-સંપાગડપડિ-
સેવી ગામમેગે ૧, પચ્છન્નપડિસેવી ગામમેગે ૨, પહુપન્નનંદી
ગામમેગે ૩, નિસ્સરણણંદી ગામમેગે ૪, ॥ ૧ ॥

ચત્તારિ સેનાઓ પ્ણત્તાઓ, તં જહા—જડતા ગામમેગા
ળો પરાજિણિતા ૧, પરાજિણિતા ગામમેગા ળો જડતા ૨, ણગા

વતાતે હુવે કહતે હૈં “ તમુક્કાણં ” ઇત્યાદિ યહ તમસ્કાય સૌધર્મ
ઈશાન સનત્કુમાર ઔર માહેન્દ્ર ઇન ચાર કલ્પોં કો વ્યાસ કરકે ઠહરા
હુવા હૈ । યહ તમસ્કાય અધોભાગમેં મલ્લકકે મૂલકા આકાર જૈસા હૈ
ઔર ઊર્ધ્વભાગમેં કુક્કુટ કે પજ્જર કા આકાર જૈસા હૈ । ઉક્તञ્ચ—
“ તમુક્કાણં મંતે ૧, કિં સંઠિં પ્ણત્તે ૨ ગોયમા ૧ અહે મલ્લગમૂલસંઠાણ
સંઠિં ઉપિ કુક્કુડપંજરસંઠિં ” ત્તિ । મલ્લક યહ મિટ્ટીકા પાત્ર
હોતા હૈ ઇસકા મૂલ-બુધ્ન ગ્રીવા કા જૈસા આકાર હોના હૈ વૈસા હી
આકાર ઇસકા હૈ ॥ ૫૩ ॥

હવે સૂત્રકાર એ વાતને પ્રકટ કરે છે કે આ તમસ્કાય કેટલા ક્ષેત્રને
આવૃત કરે છે ‘ તમુક્કાણં ’ ઇત્યાદિ-આ તમસ્કાય સૌધર્મ, ઇશાન, સનત્કુમાર
અને માહેન્દ્ર, આ ચાર કલ્પોને આવૃત (ઢિવલોક) કરીને રહેલો છે. તે તમસ્કાય
અધોભાગમાં મલ્લકના મૂળના જેવા આકારનો છે અને ઊર્ધ્વભાગમાં કુક્કુટના
પિંજરાના જેવા આકારનો છે. કહ્યું પણ છે કે-તમુક્કાણ મંતે ! કિં સંઠિં
પ્ણત્તે ? ” ગોયમા ! અહે મલ્લગ-મૂલસંઠાણ સંઠિં, ઉપિ કુક્કુડપંજરસંઠિં ત્તિ ”
મલ્લક એક માટીનું પાત્ર વિશેષ છે. તેના મૂળનો (તળિયાનો) જેવો આકાર
હોય છે, એવો જ તમસ્કાયનો આકાર કહ્યો છે. ॥ સૂ. ૫૩ ॥

જહતાવિ પરાજિણિતાત્રિ ૩, ઇગા નો જહતા નો પરાજિણિતા
૪, ॥૨॥ એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, ત જહા-જહતા
નામમેગે નો પરાજિણિતા ૪ ॥૩॥

ચત્તારિ સેનાઓ પળ્લન્તાઓ, ત જહા જહતા નામમેગા
જયહ ૧, જહતા નામમેગા પરાજિણહ ૨, પરાજિણિતા નામ
મેગા જયહ ૩, પરાજિણિતા નામમેગા પરાજિણહ ૪, ॥૪॥
એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા, ત જહા જહતા
નામમેગે જયહ ॥૫॥

છાયા—ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ તથા—સપ્રકટપ્રતિસેવી નામૈકા ૧,
પ્રચ્છન્નપ્રતિસેવી નામૈક ૨, પ્રત્યુત્પન્નનન્દી નામૈક ૩, નિ સરણનન્દી નામૈક ૪ ॥૧॥

ચત્તાર સેનાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા જેત્રી નામૈકા નો પરાજેત્રી ૧, પરાજેત્રી નામૈકા
નો જેત્રી ૨, એકા જેત્ર્યપિ પરાજેત્ર્યપિ ૩, એકા નો જેત્રી નો પરાજેત્રી ૪, ॥૨॥
એવામેવ ચત્તારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા જેતા નામૈકો નો પરાજેતા ૪, ॥૩॥

તમસ્કોય કા યહ કથનરૂપ પર્યાપસે ક્રિયા ગયા હૈ અથ સૂત્રકાર
અર્થપર્યાયોસે પુરુષકાનિરૂપગ કરસે હૈ—“ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા”
હત્યાદિ ।

પુરુષજાત ચાર કહે ગયે હૈ । જેસે કોઈ એક પુરુષ એમા હોતા
હૈ જો સપ્રકટ પ્રતિસેવી હોતા હૈ ૧ કોઈ ઓર ફનમે એમા હોતા હૈ જો
પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી હોતા હૈ ૨ તથા કોઈ એક એમા હોતા હૈ જો પ્રત્યુત્પન્નનન્દી
હોતા હૈ ૩ તથા કોઈ એક એમા હોતા હૈ જો નિઃસરણનન્દી હોતા હૈ ૪ ।
સેના ચાર કહી ગઈ હૈ એસે એકજેત્રી નો પરાજેત્રી ૧ દુસરી પરાજેત્રી
નો જેત્રી ૨ ત્રીસરી જેત્રી ઓ ઓર પરાજેત્રી ઓ ૩ ચોથી નો જેત્રી નો પરા

તમસ્કોય ઉપયુક્ત કથન વચનરૂપ પર્યાયની મહત્ત્વની કારણમાં આપું
છે આ સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર અર્થપર્યાયો દ્વારા પુરુષોનું નિરૂપણ
કરવા નીચેના સૂત્રોનું કથન કરે છે ‘ ચત્તારિ પુરિસજાયા પળ્લન્તા ’ ઇત્યાદિ—

પુરુષોના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર હતા છે—(૧) કોઈક પુરુષ સપ્રકટ
પ્રતિસેવી હોય છે (૨) કોઈક પુરુષ પ્રચ્છન્ન પ્રતિસેવી હોય છે (૩) કોઈ
એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પ્રત્યુત્પન્નનન્દી હોય છે (૪) કોઈ એક પુરુષ
એવો હોય છે કે જે નિઃસરણનન્દી હોય છે । ૧ ।

ચાર પ્રકારની સેના કહી છે—(૧) જેત્રી-નો પરાજેત્રી, (૨) પરાજેત્રી
નો જેત્રી, (૩) જેત્રી અને પરાજેત્રી, (૪) નો જેત્રી-નો પરાજેત્રી । ૨ ।

ચતસ્રઃ સેનાઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તથથા જેત્રી નામૈકા જયતિ ૧, જેત્રી નામૈકા પરા-
જયતિ ૨, પરાજેત્રી નામૈકા જયતિ ૩, પરાજેત્રી નામૈકા પરાજયતિ ૪, ૧૪। એવમેવ
ચત્વારિ પુરુષજાતાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, તથથા જેતા નામૈકો જયતિ ૦ ૪ ૧૫। સૂ૦ ૫૪।

ટીકા—“ ચત્વારિ ” इत्यादि । सुगमम् , नवरम् एकः कश्चित् पुरुषः साधुः
संप्रकटप्रतिसेवी गुर्वादिसमक्षमकल्प्यभक्तपानादि संप्रकटसेवनशीलो भवति १,
एकः—कश्चिद्गच्छवासी साधुः प्रच्छन्नप्रतिसेवी प्रच्छन्नं गुप्तं यथा स्यात्तथा
अकल्प्यभक्तपानादि प्रतिसेवत इत्येवंशीलः २, एकः अपरः पुरुषस्तु प्रत्युत्पन्न-
न्दी प्रत्युत्पन्नेन लब्धेन वस्त्रपात्रशिष्यादिना नन्दति हृष्यतीत्येवंशीलः=वस्त्रादि
लाभे आनन्दितो भवतीत्यर्थः । ३ ।

तथा एकः कश्चित् पुरुषः निःसरणनन्दी-निःसरणं प्राद्युगशिष्यादीनां स्वस्य
वा गच्छादितो निर्गमनं, तेन नन्दति-हृष्यतीत्येवंशीलस्तथाभूतो भवति ४। १।

જેત્રી ૪। इसी तरह चार पुरुष जात कहे गये हैं । जैसे जेता नो पराजेता
१ इत्यादि ४ (३ पुनश्च—“सेना चार कही गई है, जैसे इनमें एक जेत्री
जयति १ जेत्री पराजयति २ पराजेत्री जयति ३ पराजेत्री पराजयति ४
इस तरह से चार पुरुषजात होते हैं, जैसे एक जेताजयति ० ४।

इस सूत्रका भावार्थ ऐसा है कोई एक साधु पुरुष ऐसा होता है जो प्रतिसेवी
गुरु आदिके समक्ष अकल्प्य भक्तपानादिक का सेवनशील होता है १
कोई एक साधुपुरुष ऐसा होता है जो गच्छमें रह कर प्रच्छन्न प्रतिसेवी
होता है—गुप्त रूपसे अकल्प्य भक्तपानादिकका सेवन करता है २ कोई एक
साधुपुरुष ऐसा होता है जो लब्ध वस्त्र पात्र शिष्य आदिसे हर्षशील
होता है, अर्थात्-वस्त्रादि लाभमें आनन्दित होना है ३ ।

ચાર પ્રકારના પુરુષો કહ્યા છે—(૧) જેતા-નો પરાજેતા, ઇત્યાદિ ચાર પ્રમાણે
ચાર પ્રકાર સમજવા. । ૩ ।

આ પ્રમાણે પણ ચાર પ્રકારની સેના કહી છે—(૧) જેત્રી જયતિ, (૨)
જેત્રી પરાજયતિ, (૩) પરાજેત્રી જયતિ, (૪) પરાજેત્રી પરાજયતિ । ૪ । એ જ
પ્રમાણે “ જેતા જયતિ ” વગેરે ચાર પ્રકારના પુરુષો હોય છે । ૫ ।

ભાવાર્થ—પહેલા સૂત્રના ચાર ભાગાનો ભાવાર્થ—(૧) કોઈ એક સાધુ
એવો હોય છે કે જે શુરની સમક્ષ અકલ્પ્ય આહારાદિનું સેવન કરનારો હોય
છે. (૨) કોઈ એક સાધુ એવો હોય છે કે જે ગચ્છમાં રહેવા છતાં પ્રચ્છન્ન
પ્રતિસેવી હોય છે. શુભ રીતે અકલ્પ્ય આહારાદિનું સેવન કરનારો હોય છે.
(૩) કોઈ એક સાધુ એવો હોય છે કે જે વસ્ત્ર, પાત્ર, શિષ્યાદિની પ્રાપ્તિ

“ચચારિ સેનાઓ” રૂપાદિ-સેનામત્સ્ય પ્રજ્ઞા, તથા-एका-काचित् સેના જેમી-जपतीस्वच्छीला જેમી शत्रुबलपराभवशीला મરતિ, કિન્તુ નો પરા જેમી शत्रुबलपराभवशीला પરાજય પ્રાપ્નોતિ-નો મજના મવતીત્યર્થઃ, અપ પરાજીયત રૂપે શ્ચીલા પરાજેમીતિ કર્મણિ શ્ચીભાર્થે તન્ બાહુલકાદ્ બોધ્ય ૧।

एका-अपरा सेना पराजेत्री-परम्यः पराजयप्राप्तिशीला મરતિ, કિન્તુ નો જેમી-નો બચ્ચીલા મરતિ । ૨ । एका-अया तु जेष्यपि पराजेष्यपीत्युभय स्वभावा भवति ૩। एका-अपरा काचित् नो जेत्री नो पराजेत्री-जय-पराजय भाववर्जितेत्यर्थः ४। २॥

તથા-कोईसाधुपुरुष ऐसा होताहै जो गच्छ आदिसे शिष्यादिकों के या अपनेनिर्गमन से हर्षित होता है ४ “ચચારિ સેનાઓ” રૂપાદિ સૂત્ર દ્વારા સેનાઈ ચાર હૈ, उनका अभिप्राय ऐसा है-जो सना शत्रुके बलको परा भव करती है वह जेत्री है, और शत्रुबलसे पराजित नहीं होती है वह पराजेत्री है तथा च कोई एक सेना ऐसी होती है जो शत्रुबल को पराजित करने का स्वभाववाली होती है किन्तु शत्रुबलसे अपना पराभव करनेवाली नहीं होती है ऐसी सेना प्रथम भक्षमें परिगणित है । तात्पर्य यही है कि शत्रुबलको जीत लेती है किन्तु-शत्रुको पीठ नहीं दिखाती है । दूसरी सेना ऐसी है जो पराजेत्री-शत्रुसे पराजय प्राप्त करनेवाली होती है जयशील नहीं होतीहै-२ तीसरी सेना ऐसी होती है जो-उभय स्वभाववाली होती है । कभी जीतनी-तो कभी हारती है ३ चौथी सेना ऐसी होती है जो नतो शत्रुको जीतती है न उससे हारतीहै-४

શ્રવાથી જ્ઞાતન્વિત થય છે (૪) કોઈ એક સધુ એવો હોય છે કે જે અવજ જ્ઞાતિમાંથી શિષ્યાદિકોનું અથવા પાતળું નિર્ગમન થવાથી હર્ષિત થનારો હોય છે. ‘ચચારિ સેનાઓ’ ઇત્યાદિ—

આ સૂત્રમાં જે ચાર પ્રકારની સેના કહી છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ—જેટી એટલે વિજય પ્રાપ્ત કરનારી પરાજેત્રી એટલે પરાજિત થનારી. (૧) જે સેના શત્રુસૈન્યને પરાજિત કરે છે પણ શત્રુસૈન્ય દ્વારા પરાજિત થતી નથી એવી સેનાને ‘જેત્રી-નો પરાજેત્રી’ કહે છે (૨) કોઈ સેના એવી હોય છે કે જે શત્રુઓ સામે પરાજય પ્રાપ્ત કરનારી હોય છે, વિજય પ્રાપ્ત કરનારી હોતી નથી. (૩) ત્રીજી સેના એવી હોય છે કે જે ઉભય સ્વભાવવાળી હોય ॥ એટલે કોઈવાર વિજય પણ પ્રાપ્ત કરે છે અને કોઈવાર પરાજય પણ પામે છે (૪) ચોથા પ્રકારની સેના એવી હોય છે કે જે શત્રુસૈન્યને પરાજિત પણ કરતી નથી અને શત્રુસેના દ્વારા પરાજય પણ પ્રાપ્ત કરતી નથી.

एवमेव-सेनावदेव पुरुषजातानि चत्वारि प्रज्ञानि, तद्यथा-एकः-कश्चित् पुरुषः जेता-परीषदाणामिन्द्रियनोइन्द्रियाणां वा जयशीलो भवति, किन्तु नो पराजेता-परीषदादिना नो पराजितो भवति, श्री महावीरप्रभुवत् १, एकः-अपरः पुरुषः पराजेता-परीषदादिना पराजितो भवति, किन्तु नो जेता नो परीषदादिजयशीलो भवति कण्डरीकवत् २।

तृतीयः पुरुषः कदाचिज्जेता-परीषदादिजयनशीलः कदाचित् स्वकर्मवशात् पराजेता-परीषदादिना पराजितो भवति, शूलकराजर्षिवत् । ३।

चतुर्थः पुरुषस्तु-नो जेता नो पराजेता-नो परीषदादीनां जेता भवति, नापि च परीषदादिना पराजितो भवति-अनुत्पन्नपरीषदादिरित्यर्थः ४, । ३।

इसी तरह पुरुषजात चार कहे गये हैं उसका स्पष्टीकरण यों हैं— जैसे-कोई एक पुरुष ऐसा होता है जो परीषहों को अथवा —इन्द्रियों को जीतता है लेकिन-उससे स्वयं नहीं जीता जाता है उदाहरण प्रभु महावीरस्वामी १ कोई एक ऐसा होता है जो परीषह आदिसे स्वयं पराजित हो जाता है लेकिन उनको नहीं जीत पाता है २ उदाहरण में कण्डरीक जिनका वर्णन ज्ञातासूत्रमें हैं । कोई ऐसा होता है जो कदाचित् परीषह आदिकों को जीत लेता है । कदाचित्-परीषह आदि द्वारा स्वयं जीत लिया जाता है ३। उदाहरण शूलकराजर्षि जिनका वर्णन ज्ञातासूत्र में हैं । चौथा कोई एक ऐसा होता है जो—परीषह आदिको न जीतता है न उनके द्वारा जीता जाता है ४ । “ चत्वारि सेणाओ ”

એજ પ્રમાણે જે ચાર પુરુષ પ્રકાર કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—(૧) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પરીષદોને તથા ઇન્દ્રિયોને જીતનારો હોય છે, પણ પોતે તેમના દ્વારા પરાજિત થતો નથી. જેમકે મહાવીર પ્રભુ.

(૨) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે જે પરીષદ આદિ દ્વારા પરાજિત થાય છે, પણ પોતે તેમનાપર વિજય પ્રાપ્ત કરતો નથી. હાખલા તરીકે કંડરીક. કે જેમનું વર્ણન જ્ઞાતા સૂત્ર

(૩) કોઈ પુરુષ એવો હોય છે કે કોઈ કોઈવાર પરીષદાદિકોને જીતી લે છે અને કોઈ કોઈવાર પરીષદાદિકો દ્વારા પોતેજ પરાજિત પણ થતો હોય છે જેમકે શૂલક રાજર્ષિ.

(૪) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે પરિષદાદિકોને જીતતો પણ નથી અને પરીષદાદિકો દ્વારા જીતાતો પણ નથી.

તથા-“ ચત્તારિ સજાઓ ” રૂપાદિ-સુગમમ્, એકા સેના એકદા સ્વપ્રવસ
મિત્વા પુનરપિ જયતિ । રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૧। એકા-અપરા તુ પરવસ મિત્વા
પરાજીયતે પરવસેન પરાજિતા મરતિ । રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૨। એકા-અપરા પરાજિત્ય
સ્વપ્રવસેન પરાવસ્ય માત્યાપિ પુનઃ સ્વપ્રવસ્યતિ । રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૩। ચતુર્થી તુ પરા
જિત્ય-એકદા પરાજય માત્યા પુનઃ પરાજીયતે-પરાજિતા મરતિ । રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૪।
રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૫। રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૬। રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૭। રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૮।
રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૯। રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૧૦। રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૧૧। રૂપાદિ-સુગમમ્ મઝ્ઝઃ ૧૨।

રૂપાદિ સુગમમ્ પુનઃ સેના ચાર કહી ગઈ છે, એવું—એક સેના એવી
હોતી છે જો શત્રુવલ્લે જીત કર પુનઃ વસે જીત લેતી છે ૧, બીજી
સેના એવી હોતી છે જો પરકે વલ્લે જીત કર બીજી કોઈ વલ્લે જીત
લી જાતી છે ૨, ત્રીજી એવી હોતી છે જો શત્રુવલ્લે પરાજિત થો
કર બીજી પુનઃ શત્રુઓ જીતતી છે ૩, ચોથી સેના એવી હોતી છે જો
એક વાર હાર કર બીજી પુનઃ હાર જાતી છે ૪, આ સુગમ એવું જો પુરુષ
જાત ચાર કહે ગયે છે, આમાં કોઈ એક પુરુષ એવો હોતો છે જો પરીવહ
આદિકો કો એક વાર જીત કર પુનઃ વહે જીતતા રહતા છે ૧, કોઈ
પુરુષ એવો હોતો છે જો પરીવહ આદિકો કો જીત કર પુનઃ વનસે જીત

“ ચત્તારિ સજાઓ ” ઇત્યદિ—

આ સુત દ્વારા બીજી રીતે પણ સેના ચાર પ્રકારની કહી છે તે આર
પ્રકારના હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

(૧) એવી જયતિ ” કોઈ એક સેના એવી હોય છે કે જે એક શત્રુ
સૈન્યનો પરાભવ કરીને ફરીથી પણ શત્રુસૈન્યને પરાજિત કરનારી હોય છે
(૨) કોઈ એક સેના એવી હોય છે કે જે કોઈ એક શત્રુસૈન્યને પરાજિત
કરનારી હોય છે પણ અન્ય શત્રુસૈન્ય દ્વારા પરાજિત પણ થનારી હોય છે. (૩)
કોઈ એક સેના એવી હોય છે કે જે કોઈ શત્રુસૈન્યથી પરાજિત થઈને અન્ય
શત્રુસૈન્યને પરાજિત કરનારી હોય છે (૪) કોઈ એક સૈન્ય એવું હોય છે કે
જે એક શત્રુસૈન્ય સામે પણ પરાભવ પામે છે અને બીજા શત્રુસૈન્ય સામે
પણ પરાભવ પામે છે

એ જ પ્રમાણે પુરુષોના પણ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) કોઈ એક
પુરુષ એવો હોય છે કે જે પરીવહ આદિ પર કોઈવાર વિજય પ્રાપ્ત કરે છે
છે અને ફરીથી પણ તેના પર વિજય પ્રાપ્ત કરતો રહે છે (૨) કોઈ એક પુરુષ

સુધા ટીકા સ્થા ૦૪૩૦૨ સૂ ૫૫ પર્વે તરાજવાદિદશાન્તેન કષાયસ્વરૂપં, તજ્યથ ૬૮૧

પુરુષઃ પરાજિત્ય=પરીષહાદિભિઃ પરાજયં પ્રાપ્યાપિ પુનઃ પરીષહાદીઞ્-
યતિ । ઇતિ તૃતીયઃ ૩ । તથા-એકઃ પુરુષઃ પરાજિત્ય-એકદા પરાજયં પ્રાપ્ય પુનઃ
પરાજીયતે=પરાજિતો ભવતિ । ઇતિ ચતુર્થો મઙ્ગઃ ૪ । સૂ ૫૪ ।

પૂર્વ જય ઉક્તઃ, સ ચ તત્ત્વતઃ કષાયાણામેવ કર્તવ્ય ઇતિ તત્ત્વરૂપં નિરૂપયતિ-

મૂલ્ય—ચત્તારિ રાઈઓ પળત્તાઓ, તં જહા--પઢવયરાઈ ૧,
પુઢવીરાઈ ૨, વાલુયરાઈ ૩, ઉદગરાઈ ૪ । એવામેવ ચઝવિહે
કોહે પળત્તે, તં જહા--પઢવયરાઈસમાળે ૧, પુઢવિરાઈસમાળે
વાલુયરાઈસમાળે ૩, ઉદગરાઈસમાળે ૪ ।

પઢવયરાઈસમાળં કોહં અણુપ્પવિટ્ટે જીવે કાલં કરેઈ ણેરઈ એસુ
ઉપવજ્જઈ ૧ પુઢવીરાઈસમાળં કોહં અણુપ્પવિટ્ટે જીવે કાલં કરેઈ
તિરિવ્વજોણિ એસુ ઉવવજ્જઈ ૨, વાલુયરાઈસમાળં કોહમણુપ્પવિટ્ટે
જીવે કાલં કરેઈ મણુસ્સેસુ ઉવવજ્જઈ ૩, ઉદગરાઈસમાળં કોહમણુપ્પ-
વિટ્ટે જીવે કાલં કરેઈ દેવેસુ ઉવવજ્જઈ ૪--૧ ।

ચત્તારિ થંમા પળત્તા, તં જહા--સેલથંમે ૧, અટ્ઠિથંમે ૨,
દારુથંમે ૩, તિણિસલયાથંમે ૪ । એવામેવ ચઝવિહે માળે પળત્તે,

લિયા જાતા હૈ ૨ । તૃતીય એક એસા હોતા હૈ જો પરીષહાદિકોં સે પરા-
જિત હો જાને પર મી પુનઃ ઉન્હેં પરાજિત કર દેતા હૈ ૩ ચૌથા એક
સાધુપુરુષ એસા હોતા હૈ જો પરીષહાદિકોં કે એક વાર પરાજિત હોકર
વારવાર પરાજય પાતા રહતા હૈ ૪ ॥ ૫૪ ॥

એવો હોય છે કે જે પરીષહાદિકો પર એકવાર વિજય પ્રાપ્ત કરીને તેમના દ્વારા
પુનઃ પરાજિત થનારો હોય છે (૩) કોઈ એક પુરુષ એવો હોય છે કે જે
એક વાર તો પરીષહાદિ દ્વારા પરાજિત થાય છે પણ પુનઃ તેમને પરાજિત
કરી નાળે છે (૩) કોઈ એક સાધુ એવો હોય છે કે જે પરીષહાદિકો દ્વારા
એક વાર પણ પરાજિત થાય છે અને વારંવાર પણ પરાજિત થતો રહે છે. સૂ. ૫૪

त जहा-सेलथभसमाणे जाव तिणिसलयाथभसमाणे ४, ॥

सेलथभसमाण माण अणुप्पविट्ठे जीवे काल करेइ णेरइ
पसु उववज्जइ १, एव जावतिणिसलयाथभसमाणं माणं अणु
प्पविट्ठ जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ ४ । २ ।

चत्तारि केयणा पण्णत्ता, त जहा वसीमूलकेयणे १, मेंढ
विसाणकेयणे २, गोमुत्तियाकेयणे ३, अवलेहणियाकेयणे ४ ।
एवामेव चतुर्विहा माया पण्णत्ता, त जहा वसीमूलकेयणस
माणा जाव अवलेहणियाकेयणसमाणा ॥४॥

वसीमूलकेयणसमाणा माय अणुप्पविट्ठे जीवे काल करेइ
णेरइपसु उववज्जइ १, मेंढविसाणकेयणसमाणं मायमणुप्पविट्ठे
जीवे काल करेइ तिरिक्खजोणिपसु उववज्जइ २, गोमुत्तियाकेय
णसमाणं माय अणुप्पविट्ठे जीवे काल करेइ मणुस्सेसु उवव
ज्जइ ३, अवलेहणियाकेयणसमाणं मायमणुप्पविट्ठे जीवे काल
करेइ देवेसु उववज्जइ । ४-३ ।

चत्तारि वरथा पण्णत्ता, त जहा-किमिरागरत्ते १, कदम
रागरत्ते २, खजणरागरत्ते ३, हल्लिरागरत्ते ४ । एवामेव चउर्विहे
लोहे पण्णत्ते, त जहा-किमिरागरत्तवत्थसमाणे १, कदमरागरत्तव
त्थसमाणे २, खजणरागरत्तवत्थसमाणे ३, हल्लिरागरत्तवत्थसमाणे

किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुप्पविट्ठे जीवे काल करेइ
णेरइपसु उववज्जइ १, तहेव जाव हल्लिरागरत्तवत्थसमाणं लोभ
मणुप्पविट्ठ जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ ४, ५ सू० ५५

छाया—चतस्रो राजगः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—पर्वतराजिः १, पृथिवीराजिः २, बालुकाराजिः ३, उदकराजिः ४। एवमेव चतुर्विधः क्रोधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—पर्वतराजिसमानः १, पृथिवीराजिसमानः २, बालुकाराजिसमानः ३, उदकराजिसमानः ४।

पर्वतराजिसमानं क्रोधमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति नैरयिकेषूपपद्यते १, पृथिवीराजिसमानं क्रोधमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति तिर्यग्योनिकेषूपपद्यते २, बालुकाराजिसमानं क्रोधमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति मनुष्येषूपपद्यते ३, उदकराजिसमानं क्रोधमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति देवेषूपपद्यते ४। १।

चत्वारः स्तम्भाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—शैलस्तम्भः १, अस्थिस्तम्भः २, दारुस्तम्भः ३, तिनिश्लतास्तम्भः ४। एवमेव चतुर्विधो मानः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—शैलस्तम्भसमानः यावत् तिनिश्लतास्तम्भसमानः ४।

शैलस्तम्भसमानं मानमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति नैरयिकेषूपपद्यते (१) एवं यावत् तिनिश्लतास्तम्भसमानं मानमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति देवेषूपपद्यते ४। ॥ २ ॥।

चत्वारि केतनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—वंशीमूलकेतनं १, मेदूविपाणकेतनं २, गोमूत्रिकाकेतनम् ३, अवलेखनिकाकेतनम् ४। एवमेव चतुर्विधा माया प्रज्ञप्ता, तद्यथा—वंशीमूलकेतनसमाना यावत् अवलेखनिकाकेतनसमाना ४।

वंशीमूलकेतनसमानां मायामनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति नैरयिकेषूपपद्यते १, मेदूविपाणकेतनसमानां मायामनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति तिर्यग्योनिकेषूपपद्यते २, गोमूत्रिकाकेतनसमानां मायामनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति मनुष्येषूपपद्यते ३, अवलेखनिकाकेतनसमानां मायामनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति देवेषूपपद्यते ४, १३।

चत्वारि वस्त्राणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—कृमिरागरक्तं १, कर्दमरागरक्तं २, खज्जनरागरक्तं ३, हरिद्रारागरक्तम् ४। एवमेव चतुर्विधो लोभः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—कृमिरागरक्तवस्त्रसमानः १, कर्दमरागरक्तवस्त्रसमानः २, खज्जनरागरक्तवस्त्रसमानः ३, हरिद्रारागरक्तवस्त्रसमानः ४।

कृमिरागरक्तवस्त्रसमानं लोभमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति नैरयिकेषूपपद्यते १, तथैव यावत् हरिद्रारागरक्तवस्त्रसमानलोभमनुप्रविष्टो जीवः कालं करोति देवेषूपपद्यते ४, १४। सू० ५५ ॥

इस प्रकार से जय के संबंध में कह कर अब सूत्रकार यह कहते हैं कि—जीवको जय वास्तव में कषायों का ही करना चाहिये अतः

आ प्रकारे ज्यतु प्रतियाहन् करीने सूत्रकार हवे जे वातनु निरूप्यु करे छे के लुवाये अरी रीते तो कषायो पर विजय भेजवयो लेधये.

ટીકા—“વષારિ રાઈઓ” ઇત્યાદિ—રાજયઃ—રેલા, તામ્વસ મહાસા, તથા—પર્વતરાજિઃ—પર્વતે રાજિ—પર્વતોલ્લિલિતા રેલેત્પર્ય ૧, પૃથિવીરાજિ—પૃથિવ્યામુલ્લિલિતા રેલા ૨, વાલુકારાજિઃ—વાલુકાયાં નિલિલિતા રેલા ૩, ઉદકરાજિઃ—ઉદકે—નલે કૃતા રેલા ૪। ઇત્ય હૃષ્ટાન્તમુક્ત્વા દાર્ષ્ટાન્તિકમાહ—“પશમેવ” ઇત્યાદિ—પશમેવ—પર્વતાલિરાજિનિવેશ, ક્રોધઃ—કપાયનિશેષ, ચતુર્વિધ મહાસા, તથા—પર્વતરાજિસમાનઃ—પર્વતોલ્લિલિતરેલા તુરયઃ ક્રોધો મવતિ, યથા પર્વતોલ્લિલિતા રેલા દૃઢસ્વાદનપાપિની મવતિ, યથા તત્ત્વસઃ ક્રોધો ઽપિ દૃઢાનુવચ્ચસ્વાદનપાયો મવતિ। અર્થ પાનન્તાનુવચ્ચસ્વરૂપો મવતીતિ ૧। તથા—પૃથિવીરાજિસમાન ક્રોધઃ, યથા—પૃથિવ્યામુલ્લિલિતા રેલા દીનત્વાદરપા-કપાય કા સ્વરૂપ કહા જાતા હૈ—“વષારિ રાઈઓ પળ્ળાસાઓ ત જહા” ઇત્યાદિ। ૫૫

ટીકાર્થ—રાજિયાં (તથા) ચાર કહી ગઈંહેં। જેસે પર્વતરાજિ ૧, પૃથિવીરાજિ ૨, વાલુકારાજિ ૩, ઉદકરાજિ ૪। હસી પ્રકાર સે અનન્તાનુવચ્ચી ૧, અપ્રત્યાખ્યાન ૨, પ્રત્યાખ્યાન ૩, ઓર સંજ્વલન સમ્યચી ક્રોધ મી ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, જેસે ‘અનન્તાનુવચ્ચી ક્રોધ ૧, પર્વતરાજી કે સમાન હોતા હૈ, અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધ ૨, પૃથિવીરાજીકે સમાન હોતા હૈ, પ્રત્યાખ્યાની ક્રોધ ૩, વાલુકારેખા કે સમાન હોતા હૈ, સંજ્વલન અનન્તાનુવચ્ચી ક્રોધ ૪। જલરેલા સમાન હોતા હૈ।

“પઘઈ રાહસમાર્ણ કોઈ અણુ” ઇત્યાદિ।

પર્વતરાજી કે સમાન અનન્તાનુવચ્ચી ક્રોધમેં પ્રવિષ્ટ જુવા જીવ યદિ મરતા હૈ તો વહ નૈરયિકોમેં ઇત્પસ હોતા હૈ, ઘ્રીતીય પૃથિવીરાજી કે સમાન અપ્રત્યાખ્યાન ક્રોધમેં પ્રવિષ્ટ જુવા જીવ યદિ મરતા હૈ તો

તેથી હવે સૂત્રકાર કપાયેના સ્વરૂપનુ નિરૂપણ કરે છે

વષારિ રાઈઓ પળ્ળાસાઓ—તજહા” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—ચાર પ્રકારની રાજિઓ કહી છે તે ચાર પ્રકારે આ પ્રમાણે છે—

(૧) પર્વતરાજિ, (૨) પૃથ્વીરાજિ, (૩) વાલુકારાજિ અને (૪) ઉદકરાજિ

જે જ પ્રમણે ક્રોધના પણ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અનન્તાનુવચ્ચી,

(૨) અપ્રત્યાખ્યાન, (૩) પ્રત્યાખ્યાન અને (૪) સંજ્વલન

અનન્તાનુવચ્ચી ક્રોધ પર્વતરાજિ સમાન છે, અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધ પૃથ્વી રાજિ સમાન છે પ્રત્યાખ્યાની ક્રોધ વાલુકારેખા સમાન છે, અને સંજ્વલન સમ્યચી ક્રોધ જલરેખા સમાન છે

“પઘઈ રાહસમાર્ણ કોઈ અણુ” ઇત્યાદિ—પર્વતરાજિ સમાન અનન્તાનુવચ્ચી ક્રોધમાં પ્રવિષ્ટ થયેલા જીવને મરણી (મરી) બાર છે, તે નરક-

સુષા ટીકા સ્થા ૦૪૩૦૨૨૫૦૪૫ પર્વતરાજ્યાદિદૃષ્ટાન્તેન કપાયસ્વરૂપે, તજયશ્ચ ૬૮૫

SSયાસેનૈવાપનીયતે, તથૈવ યઃ ક્રોધો હીનાનુબન્ધત્વાદપનીયતે સ પૃથિવીરાજિસ માનઃ ક્રોધઃ, અયં ચાSSપ્રત્યાખ્યાનરૂપો ભવતીતિ ૨। તથા વાલુકારાજિસમાનઃ

વહ તિર્યશ્ચગતિમેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, તીસરા વાલુકારાજી કે સમાન પ્રત્યાખ્યાન ક્રોધમેં પ્રવિષ્ટ હુવા જીવ યદિ મરતા હૈં વહ મનુષ્યગતિમેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, ઔર ચૌથા ઉદકરાજી કે સમાન સંજ્વલન ક્રોધ મેં પ્રવિષ્ટ હુવા જીવ યદિ મરજાતા હૈ તો વહ દેવગતિ મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, યહાં રાજી રેલાકા વાચક શબ્દ હૈ, જિસ પ્રકાર પર્વત કે ડુપર ઉત્કીર્ણ (ઉકેરી ગઈ) રેલા દઢ હોકર મિટતી નહીં હૈ, ચિરકાલ તક સ્થાયી રહતી હૈ વૈસે હી જો ક્રોધ દઢાનુબન્ધવાલા હોતા હૈ વહ જલ્દી શાન્ત નહીં હોતા હૈ, કિન્તુ ચિરકાલ તક સ્થાયી રહતા હૈ દીર્ઘ સંસાર કા કારણ હોતા હૈ । ઇસલિયે એસે ક્રોધકો પર્વતરેલાકે સમાન પ્રગટ ક્રિયા ગયા હૈ, દ્વિતીય ક્રોધ કો પૃથિવીરેલાકે સમાન કહા ગયા હૈ ઉસકા કારણ એસા હૈ કિ પૃથિવી પર કી ગઈ રેલા પર્વત પર કી ગઈ રેલા હીન હોની હૈ વહ દીર્ઘકાલ તક સ્થાયી નહીં રહ સકતી હૈ ધીરે ૨ અલ્પ પ્રયાસ સે મિટાઈ જા સકતી હૈ । ઇસી પ્રકાર દ્વિતીય ક્રોધ બી હીનાનુબન્ધ હોને સે દૂર ક્રિયા જા સકતા હૈ ૨, તૃતીય પ્રકાર કા ક્રોધ

ગતિમા ઉત્પન્ન થાય છે અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધમાં પ્રવિષ્ટ થયેલો જીવ જો મરી જાય તો તિર્યગ્ગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે. પ્રત્યાખ્યાની ક્રોધમા પ્રવિષ્ટ થયેલો જીવ જો મૃત્યુ પામે તો મનુષ્યાદિમાં ઉત્પન્ન થાય છે. સંજ્વલન ક્રોધમાં પ્રવિષ્ટ થયેલો જીવ જો મૃત્યુ પામે તો દેવગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે અહીં “ રાજિ ” પદ દેખાતું વાચક છે જેમ પર્વત પર ઉત્કીર્ણ થયેલી રેખા લાંબા સમય સુધી નષ્ટ થતી નથી, એ જ પ્રમાણે જે ક્રોધ દઢાનુબન્ધવાળો હોય છે, તે જલ્દી શાન્ત થતો નથી, પણ દીર્ઘકાળ પર્યન્ત સ્થાયી રહે છે, દીર્ઘ સંસારનું કારણ બને છે, તે કારણે એવા ક્રોધને શૈત્તરેખા સમાન કહ્યો છે. બીજા ક્રોધને (અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધને) પૃથ્વી પર કરેલી રેખાસમાન કહ્યો છે, કારણ કે પૃથ્વી પર કરવામાં આવેલી રેખા શૈત્તરેખા જેટલા દીર્ઘકાળ પર્યન્ત ટકી શકતી નથી-તેને ધીરે ધીરે અલ્પ પ્રયાસથી પણ નષ્ટ કરી શકાય છે. એ જ પ્રમાણે અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધ પણ હીનાનુબન્ધવાળો હોવાને કારણે દૂર કરી શકાય એવો હોય છે. ત્રીજા પ્રકારનો ક્રોધ રેતીપર કરેલી રેખા

ક્રોધ, યથા-વાલુકાયાં કૃતા રેભા હીનત્વાદઋસ્માદુલ્ભિતૈ પચનાદિભિરપની
યતે, તથૈય યઃ ક્રોધો હીનતરાનુપચત્વાદપનીતો ભવતિ, ય ક્રોધો વાલુકારાજિ-
સમાનઃ । અયં ક્રોધ પ્રત્યારૂપાનાઽઽવરમ્ભરૂપોભવતિ ૧ । યથા-ઉદ્ધરાવિસ
માનઃ ક્રોધઃ । યથા-ઉદ્ધે કૃતા રેભા હીનતમત્વાત્ સ્વયમચાપનીતા ભવતિ,
તથૈવ યઃ ક્રોધો હીનતમાનુપચત્વાત્ સ્વયમચાપવાતિ સ ક્રોધ ઉદ્ધરાવિસમાનો
ભવતિ અથ ચ સજ્જલનરૂપો ભવતીતિ ।

इत्थं क्रोधस्य चतुरो भेदानुपदस्य सम्प्रति तत्र प्रविष्टा जीवाः कां गतिं
लभन्त इत्याह—“ पुनरिष्टसमाण कोर ” इत्यादि । तत्र प्रथम भेदः पुनरिष्टो
जीव कालं क्वाति स नैरपिकेपून्यद्यत १, द्वितीय तिर्यग्यानिष्ठेषु २, तृतीय
मनुष्येषु ३, चतुर्थे तु देवेषु ४ ॥

इति क्रोधचतुष्टयानुसंविष्टजीवस्य गतिचतुष्टयनिरूपणम् । १ ।

વાલુકાક ઝપર કી ગઈ રેભા સમાન હોના હૈ, જૈસે-વાલુકા મેં કી ગઈ
રેભા પૃથિવી કે ઝરર કી ગઈ રેભા કે સમાન અપેશાકૂન હીનતર હલકી
હોતી હૈ, અધિક સમય તક સ્થાપા ગઈ રહતી હૈ અઠસ્માત-ઽસ્થિત
વાયુ આદિ કારણો સે ચઢ ઘૂર કી જાતી હૈ, ડસી પ્રકાર તૃતીય ક્રોધ
બા હીનતરાનુપચ હોને સે ગ્રીષ્ઠ દૂર કિયા જા સકના હૈ, ઈસી કારણ
હસે વાલુકારાજિ (રેભા-લકીર) કહા ગયા હૈ, તથા ત્રીયા ક્રોધ જો
કિ જલરેભા સમાન કહા ગયા હૈ ડલ્લકા તાત્પર્ય પેસા હૈ કિ યહ અપન
આપ મિટ જાતા હૈ હસે દટાન મં પ્રયામ નહીં કરના વડના હૈ, જત
રેભા ઘૂલી મેં કી ગઈ રેભાસે હીનતમ-દલ્લી હોતી હૈ, અત પન હીન
તમ અનુપચવાલી હોના હૈ ઈસી કારણ ડોલ્લમત રેભા જૈસે ક્રોધ કો
અનન્તાનુપચી સ્વરૂપ, ઔર પૃથિવીગત રેભા જૈસે ક્રોધ સો અપ્રત્યામગાન

સમાન હોય છે જેમ રેભા તર ઠરેલી રેખા પૃથ્વીપર ઠરેલી રેખા તરમ હીન
તર હોય છે અધિક સમય મુખી સ્થાયી રહે કોઈ હોતી નથી આસ્માન
કોઈ વાયુ આગિને ડાઘડો આવે તો પન તે નહીં યડ બદલ બેઠી હોય છે
જેવળ નમાવે પ્રયામ્યાની ક્રોધ વજુ હીનતરાનુપચવા હોવાથી ગ્રીષ્ઠ દૂર
હરી યાગ્ય બેસા છે, તેથી તેને વાલુકારાજિ સમાન કહ્યો છે સજ્જલન
ક્રોધને અઠસ્માત સમાન કહેવનું વાયુ ધીમે નમાવે છે—

આ ક્રોધ વાગ્યની બને અથા નમડબદ્ધ છે-ડને દૂર હીનાનો નમડ
ડાવે પાતા નથી અઠસ્માત વાલુકારેખા હીનત વજુ હીનતમ-દલ્લી હોય છે
તે વાયુ તે હીનતમ અનુપચવાની હોય છે આ હીનતમ હીનતમ રેખા જેવળ
અનન્તાનુપચી રહીય, પૃથ્વીગત રેખા સમાન ક્રોધને અપ્રત્યામગાન રહ

અથ માનપ્રરૂપણા—

“ ચત્તારિ થંભા ” इत्यादि—स्तम्भाः—प्रसिद्धाः, ते चत्वारः प्रज्ञप्ताः, शैलस्तम्भः—शैल-शिलाया विकारः शैलः—पाषाणमयः, स चासौ स्तम्भश्च शैल-स्तम्भः १, अस्थिस्तम्भः—अस्थि-प्रसिद्धं, तद्रूपस्तम्भः २, दारुस्तम्भः—दारु-काष्ठं, तद्रूपस्तम्भः ३, तिनिशलतास्तम्भः—तिनिशः—तदारुणवृक्षविशेषः ‘वञ्जुल’ इति तत्पर्यायः, तस्य लता तिनिशलता, सा चात्यन्तमृद्वी भवति, तद्रूपस्तम्भः ४।

“ एवामेवे ”—त्यादि—एवमेव—स्तम्भवदेव मानयतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-‘शैलस्तम्भसमान’ इत्यारभ्य ‘यावत्’ तिनिशलतास्तम्भममान इतिपर्यन्तो मानो बोध्यः, एवं च—शैलस्तम्भसमानः १, अस्थिस्तम्भममानः २, दारुस्तम्भ-

રૂપ, ધૂલિગત રેશ્વા જૈસે ક્રોધ કો પ્રત્યાહ્યાતરૂપ, एवं जलगत रेखा जैसे क्रोध को संज्वलनरूप कहा गया है ।

“ ચત્તારિ થંભા પળણત્તા ” इत्यादि । मानकषाय की प्ररूपणा करने के लिये चार स्तम्भों की प्ररूपणा सूत्रकार करते हैं—स्तम्भ चार कहे गये हैं, जैसे—शैलस्तम्भ १, अस्थिस्तम्भ २, दारुस्तम्भ ३ और तिनिशलता (तृण) स्तम्भ ४ । इसी प्रकार से चार प्रकारका मान कहा गया है, जैसे—शैलस्तम्भ समान मान १, यावत्—तिनिशलतास्तम्भ समान मान ४ तात्पर्य इस कथन का ऐसा है—पत्थर से बनाया गया जो स्तम्भ होता है वह शैलस्तम्भ है, यह शैलस्तम्भ चाहे भले टूट जाय लेकिन झुकता नहीं, इसी प्रकार जो जीव शैलस्तम्भ समान मानकषायवाला होता

વાલુકારેખા સમાન ક્રોધને પ્રત્યાહ્યાત રૂપ અને જલરેખા સમાન ક્રોધને સંજવલન રૂપ કહ્યો છે

“ ચત્તારિ થંભા પળણત્તા ” ઇત્યાદિ—

માનકષાયની પ્રરૂપણા કરવા નિમિત્તે સૂત્રકાર ચાર પ્રકારના સ્તંભોની પ્રરૂપણા કરે છે. સ્તંભના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) શૈલસ્તંભ (૨) અસ્થિસ્તંભ, (૩) દારુસ્તંભ અને (૪) તિનિશલતા સ્તંભ એ જ પ્રમાણે માનના પણ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) શૈલસ્તંભ સમાન માન ઇત્યાદિ “તિનિશલતા સ્તંભ સમાન માન” પર્યન્તના ચાર પ્રકાર સમજવા.

આ કથનનો લાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—પત્થરમાંથી બનાવેલા સ્તંભને શૈલસ્તંભ કહે છે. આ શૈલસ્તંભ ભડે ટૂટી જાય પણ ઝૂકતો નથી એ જ પ્રમાણે જે મનુષ્ય શૈલસ્તંભ સમાન માન કષાયવાળો હોય છે, તે કોઈ પણ

સમાન ૩, તિનિશ્ચલતાસ્તમ્યસમાનય ૪ માનો મનતિ । ક્રોધનન્માનોઽપ્યનન્તાનુ
 ધન્ધ્યપ્રત્યાસ્થાનપ્રત્યાસ્થાનાઽપરણસન્વલનરુપઃ ક્રમેણ જ્ઞેયઃ । તથ શૈલાદિસ્ત
 હે વહ કમી મી કિસીમી હાલત મેં છુકતો નહીં હે વસકા સર્વનાશ હી
 કર્યો ન હો જાય । અસ્થિસ્તમ્ય સમાન જો માન હોતા હે વહ-શૈલ-
 નિર્મિત સ્તમ્ય કી અપેક્ષા કમ કયા હોતા હે અધિકતમ આયાસ સે
 કદાપિત્ છુકાયા મો જા સકતા હે, હસી પ્રકાર જો માન અસ્થિનિર્મિત
 સ્તમ્ય જૈસા હોતા હે વહ અધિકાઽધિક આયાસ સે વિનમ્ર ક્રિયા મી
 જા સકતા હે ૨ । દારુ-લકઢી કા જો સ્તમ્ય હોતા હે વહ અસ્થિ
 નિર્મિત સ્તમ્ય કી અપેક્ષા કઢાઈ મેં અધિક હીન હોતા હે વહ અલ્પ
 પ્રયાસ સે વિનમ્ર કર દિયા જાતા હે । હસી પ્રકાર જો માન કાષ્ઠનિ
 મિત શૈલકા જૈસા હોતા હે વહ મી અલ્પ પ્રયાસસે હી વિનમ્ર હો જાતા
 હે । ઓર જો તિનિશ્ચલતા કી લતાસે નિર્મિત સ્તમ્ય હોતા હે વહ કાષ્ઠ
 નિર્મિત સ્તમ્ય કી અપેક્ષા કઢાઈ મેં પિલકુલ હી હીન હોતા હે અતા
 હસે છુકાતે મેં નગણ્ય જૈસા પ્રયાસ કરના પડતા હે વહ વહુત જલ્દી
 છુક જાતા હે । હસી પ્રકાર જો માન તિનિશ્ચલતા નિર્મિત સ્તમ્ય
 જૈસા હોતા હે વહ વહુત હી શીઘ્ર પ્રયાસસે છુકા દિયા જાતા હે । શૈલ

પરિસ્થિતિમાં ચૂકતો નથી, તેનો સવનાશ થઈ જાય તો પણ તે માનક્રયકને
 ત્યાગ કરતો નથી. અસ્થિસ્થલ સમાન જે માન હોય છે, તે શૈલ નિર્મિત
 સ્થલ કરતાં ન્યૂનતર ચીકાશત્વ હોય છે અસ્થિ સ્થલને અધિકતમ પ્રયત્નો
 વડે કપાયેક છુકાવી પણ શકાય છે, જે જ પ્રમાણે જે માન અસ્થિ સ્થલ
 સમાન હોય છે, તેને અધિક અધિક પ્રયાસો દ્વારા વિનમ્ર પણ કરી શકાય
 છે કાષ્ઠ નિર્મિત સ્થલને કાઠસ્થલ કહે છે તે સ્થલ અસ્થિનિર્મિત સ્થલ
 કરતાં પણ કઠિનતાની અપેક્ષાએ અધિક હીન હોય છે જેમ કાષ્ઠનિર્મિત
 સ્થલને અલ્પ પ્રયાસથી પણ ચૂકાવી શકાય છે જે જ પ્રમાણે કાષ્ઠનિર્મિત
 સ્થલ જેવા માનને પણ અલ્પ પ્રયાસથી વિનમ્ર કરી શકાય છે. તિનિશ્ચ
 લતાની લતામાંથી બનાવેલા સ્થલને તિનિશ્ચલતા સ્થલ કહે છે તે કાષ્ઠ
 નિર્મિત સ્થલ કરતાં પણ ન્યૂનતમ કઠિનતાવાળો હોય છે જેમ તેને છુકાવવા
 માટે નહીં જેવા પ્રયાસની જ જરૂર પડે છે, તેમ તિનિશ્ચલતા સમાન માનને
 પણ બહુ જ યુત પ્રયાસથી પણ છુકાવી શકાય છે

અનન્તાનુમ મી માનને શૈલ સ્થલ સમાન, અપ્રત્યાજ્ઞાની માનને અસ્થિ
 નિર્મિત સ્થલ સમાન, પ્રત્યાજ્ઞાની માનને કાષ્ઠ નિર્મિત સ્થલ સમાન અને
 સજ્વલન માનને તિનિશ્ચ લતાવાળા નિર્મિત સ્થલ સમાન કરું છે.

સુધા ટીકા સ્થા ૦૪૩૦૨ સૂ ૦૪૧ પર્વેતરાજ્યાદિદૃષ્ટાન્તેનકપાયસ્વરૂપં તત્ત્વજયશ્ચ ૬૮૧

મમસમાનમાનોદયવર્તિજીવસ્ય ફલ્લાનિ દર્શયતિ—“ સેલયંમસમાણ માણ ” ઇત્યા-
દિના । એતદ્વિવરણં ક્રોધોદયવર્તિજીવફલસૂત્રવદ્ બોધ્યમ્ । ૧૨ ।

“ ચત્તારિ કેયણા ” ઇત્યાદિ—કેતનાનિ—સામાન્યેન વક્રાણિ વસ્તૂનિ,
યદ્વા—પુષ્પકરણ્ડસ્ય વંશાદિલકનિર્મિતમુષ્ટિગ્રહણસ્થાનાનિ, તાનિ ચ વક્રાણિ
ભવન્તિ, પરન્તુવત્ર કેતનપદેન સામાન્યેન વક્રાણિ વસ્તૂનિ ગૃહ્યન્તે, તાનિ ચત્વારિ
મત્રપ્રાપ્તિ તથા—વંશીમૂલકેતન—વંશી—વંશઃ તસ્યા મૂલં વંશીમૂલં, તત્ત્વ તત્કે-

નિર્મિત સ્તમ્ભ જૈસા અનન્તાનુવન્ધીમાન અસ્થિનિર્મિત સ્તમ્ભ જૈસા
અપ્રત્યાલ્લયાનીમાન કાષ્ઠનિર્મિત શૌલ જૈસા પ્રત્યાલ્લયાનીમાન, ઔર તિનિ-
શવૃક્ષલતા જૈસા સંજ્વલનમાન હોતા હૈ । તિનિશવૃક્ષકા પર્યાય ‘વજ્જુલ’
એમા મી હૈ હસકી લતા મૃદ્રી—અતિ કોમલ હોતી હૈ—જલ્દી જુરુ જાતી
હૈ । શૌલનિર્મિત સ્તમ્ભ જૈસા માનવાલા જીવ મર કર નરકગતિ મેં,
અસ્થિનિર્મિત સ્તમ્ભ જૈસા માનયુક્ત જીવ મરકર તિર્યગ્ગતિ મેં, કાષ્ઠ-
નિર્મિત સ્તમ્ભ જૈસા માનશાલી જીવ મરકર મનુષ્યગતિમેં, ઔર તિનિશ
વૃક્ષલતા નિર્મિત સ્તમ્ભ જૈસા માનસંયુક્ત જીવ મરકર દેવગતિમેં જાતા
હૈ । ઔર અવશિષ્ટ કથન ક્રોધોદયવર્તી જીવ ફલસૂત્ર જૈસા જાનના ચાહિયે ।

“ ચત્તારિ કેયણાણિ ” ઇત્યાદિ । ચાર વક્ર—ટેઢી વસ્તુયે કહી
ગઈ હૈ, યહાં—“ કેતન ” શબ્દ સામાન્ય રૂપસે વક્રતાકા વાચક હૈ ।
હસસે જો વક્ર વસ્તુયે હૈં વે ગૃહીત કી ગઈ હૈં । અથવા—પુષ્પકરણ્ડક
(સાજી) કો ઉઠાને મેં જો વાંશ કી ડળટી લગી હૈ વહી વક્રતાકેતન

તિનિશ વૃક્ષને વજ્જુલ પશુ કહે છે તેની લતા મૃદ્રી અને કોમળ હોય
છે, તેથી તે જલ્દી નમી જાય એવી હોય છે. શૌલનિર્મિત સ્તંભ સમાન માન-
વાળો જીવ મરીને નરકગતિમાં, અસ્થિનિર્મિત સ્તંભ સમાન માનવાળો મનુષ્ય
મરીને તિર્યગ્ ગતિમાં, કાષ્ઠ નિર્મિત સ્તંભ સમાન માનવાળો પુરુષ મરીને
મનુષ્ય ગતિમાં અને તિનિશ વૃક્ષલતા નિર્મિત સ્તંભ સમાન માનવાળો
પુરુષ મરીને દેવગતિમાં જાય છે બાકીનું સમસ્ત કથન ક્રોધોદયવર્તી જીવફલ
સૂત્ર અનુસાર સમજવું “ ચત્તારિ કેયણાણિ ” ઇત્યાદિ—

ચાર પ્રકારની વક્ર વસ્તુઓ કહી છે. અહીં “ કેતન ” પદ સામાન્ય રૂપે
વક્રતાનું વાચક છે તેના દ્વારા અહીં વક્ર વસ્તુઓ ગ્રહણ કરવામાં આવી છે,
અથવા કરંડકને—ટોપલીને બનાવવામાં જે વાંસની ચીપો વપરાય છે તેમને
અહીં ‘ વક્રતાકેતન ’ પદ દ્વારા ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે ચાર પ્રકારની

તન ચ વંશીમૂલકેતન-વંશીમૂલરૂપવક્રમિત્યર્થઃ ૧, તથા-મેઢૂવિપાળકેતન-મેઢૂ-
મેપઃ, તસ્ય ત્રિપાળ-શ્ચ મેઢૂવિપાળ, તથા તત્કેતન ચ તથા ૨, ગોમૂત્રિકાકેતન
ગોમૂત્રિકા-મસિદ્ધા, તદ્વૃષ્ણ કેતનમ્ ૩, અવલેખનિકાકેતનમ્-અવલેખનિકા-
પાટયમાનવશ્ચલાકામમૃતેઃ સૂક્ષ્મત્વા (પ્રત્યક્ષી) ત્વક સ્વૃષ્ણ કેતનમ્ ૪।

“પ્રથમેષે”-સ્થાવિ-પ્રવમેષ-કેતનપદેષ, માયા-ક્રિયાવિશેષઃ, ચતુર્વિપા
મણ્ણતા, તથા-વંશીમૂલકેતનસમાના-વંશીમૂલકેતનસદૃશી માયા મયતિ, તથા
તત્સાદૃશ્ય ચ માયાયાં તદ્વસામનાર્જવમેદાત્ । તથાહિ-યથા વંશીમૂલમતિગુણવક્ર
મયતિ, તથા માયાવિનાં માયાઽપિ વક્રવક્રા મયતિ ૧, ‘યાવત્’ વંશીમૂલકેતન
સમાનેત્યારમ્ય ‘અવલેખનિકાકેતનસમાનેતિપર્યન્તા માયા ધોખ્યા, એવ ચ-મેઢૂ

શબ્દ સે યહાં ગૃહીત હૈ । વક્ર ચાર કહે ગયે હૈ, જૈસે-વંશીમૂલકેતન-
(વાંસકી જડરૂપ વક્રતા) ૧ મેપવિપાળકેતન (મેપસીંગરૂપ વક્રતા) ૨
ગોમૂત્રિકા કેતન (ગોમૂત્રકી રેસારૂપ વક્રતા) ૩ ઓર અવલેખનિકા
કેતન (વાંસકી શાલાકા) પૈચકો છોલતે સમય જો વસકા ઉપર-
નીચેકા છોલન નિકલતા હૈ વહ નિપલતે હી વક્ર હોતા હૈ પેસા જો
કેતન હૈ વહ અવલેખનિકા કેતન હૈ ૪ । જૈસે યે કેતન ચાર કહે ગયે
હૈ, હસી પ્રકાર માયારૂપકપાય વિશેષ ખી ચાર કહા ગયા હૈ । इनमें
एक माया ऐसी होती है जो वंशीमूल केतन जैसी होती है । वांसका
मूल भाग पट्टत अधिक अनाजवतावाला (वक्र) होता है । अत-अतिगुष्ठ
वक्रतावाला होने से उसकी वक्रता कटती नहीं है, उसी प्रकार
मायावियों की भी जिस माया कटती नहीं है ऐसी वह वक्र
वक्रमाया वंशीमूलकेतन जैसी कही गई है । मेढूविपाળ केतन के स-

વક્ર વસ્તુઓ કહી છે-એમકે (૧) વંશીમૂલકેતન (વાંસની જડરૂપ વક્રતા)
(૨) મેઢૂ વિપાળ કેતન (મેદાના સીંગ સમાન વક્રતા) (૩) ગોમૂત્રિકા કેતન
(ગોમૂત્રની રેસા રૂપ વક્રતા) (૪) અવલેખનિકા કેતન (વાંસની સળીઓને
છોલતી વખતે તેનો જે છોલ પડે છે તે વક્ર જ દોષ છે એવી તે વક્રતાને
અવલેખનિકાકેતન કહે છે આ કેતનના જેવા ચાર પ્રકાર કહ્યા છે, એવા જ
ચાર પ્રકાર માયારૂપ ક્રિયાવિશેષના પણ કહ્યા છે

(૧) “વાંસમૂલ કેતન સમાન માયા”-વાંસનો મૂળ ભાગ પૂર્ણ જ
અનાજવતાવાળો દોષ છે તે કારણે તે અતિગુસ્થ વક્રતાવાળો દોષ છે, તેથી
તેની વક્રતાની ખબર પણ પડતી નથી. એ જ પ્રમાણે માયાવી પુરુષોની
માયાને કાઢી ચાકતી નથી એવી તે વક્ર-વક્ર માયાને વાંસમૂલ કેતન જેવી

વિષાણકેતનસમાના ૨, ગોમૂત્રિકાકેતનસમાના ૩, અવલેખનિકાકેતનસમાના ૪
 ચ માયા ભવતીતિ પર્યવસિતમ્ । તત્ર મેઢૂવિષાણકેતનસમાના માયિનાં માયા વક્રા
 ભવતિ ૨, ગોમૂત્રિકાકેતનસમાના માયાડલ્પવક્રા ભવતિ ૩, અવલેખનિકાકેતન-
 સમાના માયા તુ અલ્પતરવક્રા ભવતિ ૪। ઇયં ચ ક્રમેણાનન્તાનુબન્ધ્ય ૧ પ્રત્યા-
 ળ્યાન ૨ પ્રત્યાલ્યાનાડડવરણ ૩ સંજ્વલન ૪ રૂપા વોધ્યા અપરે તુ પ્રત્યેકં માયા-
 ડનન્તાનુબન્ધ્યાદિરૂપાડસ્તીત્યાહુઃ, અત એવાનન્તાનુબન્ધિન્યા માયાયા ઉદયેડપિ
 દેવત્વાદિપ્રાપ્તિર્ન વિરુદ્ધયતે । તત્ર ક્રમેણ વંશીમૂલકેતનસમાનાદિ-માયાચતુષ્ટયાનુ-
 પ્રવિષ્ટજીવસ્ય ગતિં દર્શયતિ-“ વંશીમૂલકેતનસમાણં માયં ” ઇત્યાદિના, તત્રા-
 ડડઘાં માયામનુપ્રવિષ્ટો માયોદયવર્તી જીવઃ કાલં કરોતિ ચેદ્ નૈરયિકેષુ-નારકે-

માન વહ માયા હૈ જો કેવલ વક્ર હોતી 'હૈ' । તથા ગોમૂત્રિકાકેતન
 સમાન વહ માયા હૈ, એવં અવલેખનિકા કેતન સમાન વહ માયા હૈ જો
 અલ્પતર વક્રતાવાલી હોતી હૈ । વંશીમૂલ કેતન જૈસી જો માયા હોતી
 હૈ વહ અનન્તાનુબન્ધ સમ્બન્ધી હોતી હૈ । મેઢૂવિષાણ કેતન જૈસી માયા
 અપ્રત્યાલ્યાન કષાય સમ્બન્ધિની હોતી હૈ । ગોમૂત્રિકા કેતન જૈસી માયા
 પ્રત્યાલ્યાન કષાય સમ્બન્ધિની હોતી હૈ ઓર અવલેખનિકા કેતન જૈસી
 માયા સંજ્વલન કષાય સમ્બન્ધિની હોતી હૈ । કોઈ એક એસા કહતે હૈ
 કિ-પ્રત્યેક માયા અનન્તાનુબન્ધી આદિરૂપ હૈ । ઇસીલિયે અનન્તાનુ-
 બન્ધિની માયા કે ઉદય મેં દેવત્વાદિ પદ પ્રાપ્તિ વિરુદ્ધ નહીં હોતી હૈ ।
 “ વંશીમૂલકેતનસમાણં માયં ” ઇત્યાદિ । જો જીવ વંશીમૂલકેતન
 સમાન માયામેં પ્રવિષ્ટ હોતા હૈ માયોદયવાલા હોતા હૈ એસા વહ જીવ
 યદિ કાલવશ હો જાતા હૈ તો વહ નરકોં મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ૧ દ્વિતીય

કહી છે. (૨) “ મેષ વિષાણુ કેતન સમાન માયા ”-જે માયા કેવળ વક્ર જ
 હોય છે તેને આ પ્રકારમાં ગણાવી શકાય છે. (૩) “ ગોમૂત્રિકા કેતન સમાન
 માયા ” જે માયા અલ્પ વક્રતાવાળી હોય છે તેને ગોમૂત્રિકા કેતન સમાન
 માયા કહે છે (૪) “ અવલેખનિકા કેતન સમાન માયા ”-આ માયા અલ્પતર
 વક્રતાવાળી હોય છે અનન્તાનુબન્ધી માયાને વાંસમૂલ કેતન સમાન, અપ્રત્યા-
 ળ્યાન સંબન્ધી માયાને મેષ વિષાણુ કેતન સમાન, પ્રાયાળ્યાત કષાય સંબન્ધી
 માયાને ગોમૂત્રિકા કેતન સમાન અને સંજ્વલન કષાય સંબન્ધી માયાને અવ-
 લેખનિકા કેતન સમાન કહી છે. કોઈ કોઈ સિદ્ધાંતકારો એવું કહે છે કે
 પ્રત્યેક માયા અનન્તાનુબન્ધી આદિ રૂપ છે. તેથી અનન્તાનુબન્ધિની માયાના
 ઉદયમાં પણ દેવત્વ અદિનો સદ્ભાવ સંભવી શકે છે. “ વંશીમૂલકેતન
 સમાણં માયં ” વાસનામૂલ કેતન સમાન માયામાં પ્રવિષ્ટ થયેલ જીવ (માયાના
 ઉદયવાળો જીવ) જે મૃત્યુ પામે છે, તો નરકગતિમા ઉત્પન્ન થાય છે. બીજા

પૂત્યષ્ઠે ૧, ત્રિતીયમાયાનુપવિષ્ટોઝીવસ્તિયદ્ ૨ તૃતીયમાયાઽનુપવિષ્ટો મનુ
પ્યપુ ૩, ચતુર્થમાયાઽનુપવિષ્ટો દેવેપૂત્યષ્ઠે ૪। ઇતિ માયાચતુષ્ટયાનુપવિષ્ટ
ઝીવસ્ય ગતિચતુષ્ટયનિરૂપણમ્ ।

“ ચત્તારિ વરયા ” ઇત્યાદિ-વસ્ત્રાણિ ચત્તારિ પ્રશ્નપ્રાપ્તિ, સપ્તયા-કૃમિરાગ
સ્વતં-કૃમિરાગમુપવિષયે ઇત્ય ઝનમુતિઃ-સ્વવિદેશે મનુષ્યાદિશાણિત મુદીત્વા
કેનાપિ યોગેન યોગ્યપિત્વા માનને સ્થાપ્યતે । તસ્મિન્ પ્રજુરાઃ ક્રમયઃ સમુત્પન્નતે ।
તેન પવનામિલાપિનો મામનચ્છિદ્રેભ્યો નિર્ગત્ય સદાસન પર્યટન્તો લાલામાઝ

માયા મેં અનુપવિષ્ટ હુવા ઝીવ યદિ કાલઘશ હોતા હૈ તો વહ તિર્યજ
ગતિમેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ ૨ તૃતીય માયામેં પ્રવિષ્ટ હુવા ઝીવ યદિ કાલ
ઘશ હો જાતાહૈ તો વહ મનુષ્યગતિમેં ઉત્પન્ન હો જાતાહૈ, ઓર ચૌથી માયા
મેં અનુપવિષ્ટ ઝીવ યદિ કાલઘશ હોતાહૈ તો વહ દેવોમેં ઉત્પન્ન હોતાહૈ ૪ ।

“ ચત્તારિ વરયા ” ઇત્યાદિ । ચત્તાર ચાર પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ,
જેસે કોઈ એક વસ્ત્ર એસા હોતા હૈ જો કૃમિરાગ સે રગા છુવા હોતા હૈ,
ઇસ કૃમિરાગ સૂત્રકે વિષય મેં પેસી ઝનમુતિ સુનને મેં આતી હૈ કિ—
કિસી વેશમેં મનુષ્ય આત્મિકે શોણિતકો છેકર વસમેં કિસી (એક
પદાર્થ) કો યોગકર કિસી પાત્રમેં ઇસે રહ્યા જાતા હૈ, ડસમેં ધીરે ધીરે
કૃમિયાં(કીડે)ઉત્પન્ન હો જાતેહૈ વે જમ પવનાઽમિલાપી હોકર છિદ્રો દ્વારા
વસમેં સે બાહર નિકલ આતે હૈ તમ વે ડસકે આસપાસમેં ઘૂમને ફિરને

પ્રકારની માયાચતુષ્ટય એ બે મુખ્ય પાત્ર છે તે તિર્યચ્છતિમાં ઉત્પન્ન થાય
છે ત્રીજા પ્રકારની માયામાં પ્રવિષ્ટ થયેલા એ બે મનુષ્ય પાત્ર છે તે
મનુષ્યચત્તારમાં ઉત્પન્ન થાય છે અને ચૌથા પ્રકારની માયામાં પ્રવિષ્ટ થયેલા
એ બે મનુષ્ય પાત્ર છે, તે દેવચત્તારમાં ઉત્પન્ન થાય છે

“ ચત્તારિ વરયા ” ઇત્યાદિ—

વસ્ત્રના ચાર પ્રકાર કહ્યાં છે તે ચાર પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે—(૧) કૃમિ
રાગથી (રમથી) રજેતું વસ્ત્ર, (૨) કાંઈ રાગથી રજેતું વસ્ત્ર (૩) બધા
રાગથી રજેતું વસ્ત્ર અને (૪) કાંઈ-કાંઈ રાગથી રજેતું વસ્ત્ર.

કૃમિરાગ સૂત્રના વિષયમાં એવી જનમુતિ (કલકથા) પ્રચલિત છે કે
કેઈ એક દેશમાં મનુષ્ય આદિનું લોહી લઈને તેમાં કોઈ એક પદાર્થનું મિશ્રણ
કરીને તેને કોઈ પાત્રમાં રાખી મૂકવામાં આવે છે તેની બહાર ખીંચે ખીંચે
કૃમિઓ ઉત્પન્ન થવા માંડે છે તેઓ બધારે પવનામિશ્રણી થઈને ઊંડો દાશ
બહાર નીકળી આવે છે ત્યારે તેની આસપાસ જ ભગવાન હરે છે અને પાતાની

પ્રમુચ્ચન્તિ । તાથ કીલકેષુ લગ્નાઃ પરિગૃહ્યન્તે । તત્ કૃમિરાગં પટ્ટમૂત્રમુચ્યતે । તચ રક્તવર્ણકૃમિસમુત્પન્નત્વાત્ સ્વભાવત એવ રક્તં ભવતીતિ કૃમિરાગરક્તમ્ ૧, તથા-કર્દમરાગરક્તં-કર્દમઃ-ગોમાર્ગાદિપટ્ટઃ, તસ્ય રાગઃ-રજ્જકરસઃ કર્દમરાગઃ, તેન રક્તમ્ ૨, તથા-સ્વજ્જનરાગરક્તં 'સ્વજ્જનમિ'તિ દેશીયઃ શબ્દઃ કજ્જલવા-ચકઃ, તસ્ય રાગઃ સ્વજ્જનરાગસ્તેન રક્તમ્ ૩, તથા-હરિદ્રા પ્રસિદ્ધા, તસ્યા રાગો હરિદ્રારાગસ્તેન રક્ત હરિદ્રારાગરક્તમ્ ૪,

લગતે હૈં ઓર અપની લાર છોડને લગતે હૈં । ઇસ તરહ વહ લાલા-લાર કીલકોંમેં લગ જાતી હૈં જો કિ વાદમેં ઉઠા લી જાતી હૈં । એસા કૃમિ-રાગવાલા પટ્ટસૂત્ર કહા જાતા હૈં યહ પટ્ટસૂત્ર રક્તવર્ણવાલે કૃમિયોંસે સમુત્પન્ન હોનેકે કારણ સ્વભાવતઃ હી લાલ હોતા હૈં ।

તથા—કોઈ એક વચ્ચ એસા હોતા હૈં જો કર્દમરાગસે રક્ત હોતા હૈં । ગાય આદિ જીવ જિસ રાસ્તેસે નિકલતે હૈં ડસ માર્ગકા જો પટ્ટ હૈં વહ યહાં કર્દમ શબ્દસે ગૃહીત હુવા હૈં । ઇસ કર્દમકા જો રજ્જકરસ હૈં વહ કર્દમરાગ હૈં, ઇસસે રંગા હુવા જો વચ્ચ હૈં વહ-કર્દમરાગરક્ત વચ્ચહૈં । તથા કોઈ એક વચ્ચ એસા હોતા હૈં જો સ્વજ્જનરાગ સે રક્ત હોતા હૈં । યહાં—“સ્વજ્જન” શબ્દ દેશીય હૈં, ઇસકા અર્થ કજ્જલકે રાગસે રંગા હુવા જો વચ્ચ હૈં વહ સ્વજ્જનરાગરક્ત વચ્ચ હૈં । તથા—કોઈ એક એસા વચ્ચ હોતા હૈં જો હરિદીકે રાગસે રંગા હુવા હોતા હૈં । તો ઇસી તરહ લોભ

લાળ તેના પર છોડવા માટે છે આ લાળ તે છિદ્રો પર જામી જાય છે. તેને ત્યારબાદ એકઠી કરી લેવામાં આવે છે. એવા કૃમી રંગથી રંગેલા વચ્ચને કૃમિ રાગવાળું વચ્ચ કહે છે આ વચ્ચ લાલ રંગવાળા કૃમીઓના લાળરસ પડે રંગેલું હોવાથી સ્વાભાવિક રીતે જ લાલ હોય છે. (૨) કોઈ એક વચ્ચ એવું હોય છે કે જે કર્દમ રાગથી રક્ત ધૂળથી ખરડાયેલું હોય છે. ગાય આદિ પ્રાણીઓ જે માર્ગેથી પસાર થતા હોય છે તે માર્ગોના જે પક એટલે કે કાદવ છે તેને અહીં કર્દમ પદ દ્વારા ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ કર્દમનો જે રંગક રસ છે તેનું નામ કર્દમ રાગ છે, તેનાથી રંગાયેલા વચ્ચને કર્દમ રાગ રક્ત વચ્ચ કહે છે. (૩) કોઈ એક વચ્ચ એવું હોય છે કે જે ખંજન રાગથી રક્ત હોય છે ખંજન એટલે કાજળ. તે કાજળના રંગથી રંગેલા વચ્ચને ખંજન રાગ રક્ત વચ્ચ કહે છે. (૪) કોઈ એક વચ્ચ એવું હોય છે કે જે હળદરના રંગથી રંગેલું હોય છે.

“પ્રવામવે” — ત્યાદિ—પ્રવાસ કૃમિરાગાદિરક્તવસ્ત્રવદેવ, સોમમતુર્ધિવા પ્રવસતઃ, તથા—કૃમિરાગરક્તવસ્ત્રમાન ત્યાદિ । તત્ર કૃમિરાગરક્તવસ્ત્રમાનો સોમો દદાનુષપત્વાદનન્તાનુષન્ધી મવતિ । કર્દમરાગરક્તવસ્ત્રમાનો સોમો હીનાનુષન્ધસ્વાદુ અપ્રત્યાખ્યાનો મવતિ । સ્વજનરાગરક્તવસ્ત્રમાનો સોમો હીનતરાનુષન્ધસ્વાત્ પ્રત્યાખ્યાનાઽઽધરણો મવતિ । હિરિદ્રારાગરક્તવસ્ત્રમાનમ્ સોમો હીનતમાનુષન્ધસ્વાત્ સન્વલનો મવતિ । ત્યાદિ—યથા—કૃમિરાગરત્તં વસ્ત્ર વ્યથમપિ રાગાનુષન્ધં ન ત્યજતિ, તદ્ગસ્મનોઽપિ રક્તસ્વાત્ પ્રવાસમસ્મયત્, તથા યો જીવો મૃતો ઽપિ સોમાનુષન્ધં ન ત્યજતિ તસ્ય સોમઃ કૃમિરાગરક્તવદ્ દદોઽનન્તાનુષન્ધી વ મી આર પ્રકારકા હોતા હૈં ફનમેં—જો લોમ કૃમિરાગરક્ત વસ્ત્રકે સમાન હોતા હૈં વહ—દદાનુષન્ધવાલા હોને સે અનન્તાનુષન્ધ કપાય સમ્બન્ધી હોતા હૈં । કર્દમરાગરક્ત વસ્ત્રકે સમાન જો લોમ હૈં વહ હીનાનુષન્ધવાલા હોનેસે અપ્રત્યાખ્યાન કપાય સમ્બન્ધી હોતા હૈં । સ્વજન રાગરક્ત વસ્ત્રકે સમાન જો લોમ હોતા હૈં વહ હીનતર અનુષન્ધવાલા હોનેસે પ્રત્યાખ્યાન કપાય સમ્બન્ધી હોતા હૈં । તથા—હિરિદ્રારાગસે રક્ત વસ્ત્ર વૈસા જો લોમ હોતા હૈં વહ સન્વલનકપાય સમ્બન્ધી હોતા હૈં । તાત્પર્ય પેસા હૈં—કિ કૃમિરાગવસ્ત્ર આહેં જલ મીં જાય તો મીં અપને પગાનુષન્ધકો વૈસે નહીં છોડતા હૈં । ક્યોં કિ—ઉસકી મસ્મ મીં પ્રવાલ સીં છાલ હીં છાલ રહતી હૈં । હસીં તરહ જો જીવ મર જાને પર મીં સોમાનુષન્ધ કો નહીં છોડતાં હૈં હસકા વહ કૃમિરાગરક્ત કી તરહ દદ્દ હોને સ અનન્તાનુષન્ધ સર્વન્ધી હોતા હૈં । હસીં તરહસે તીમોં લોમકે વિષયમેં મીં સમસ્ટ હેના આહિયેં હસકેં

જે જ પ્રમાણે લોલ પશુ આર પ્રકારનો કહ્યો છે— (૧) કૃમિરાગ રક્ત વસ્ત્ર સમાન લોલ—અનન્તાનુષન્ધ કપાય સબન્ધી જે લોલ છે તેને આ પ્રકારમાં બધાવી શકાય છે (૨) કર્દમરાગ રક્ત વસ્ત્ર સમાન લોલ—અપ્રત્યાખ્યાન કપાય સબન્ધી જે લોલ છે તેને આ પ્રકારમાં બધાવી શકાય છે (૩) સ્વજન રાગ રક્ત વસ્ત્ર સમાન લોલ—પ્રત્યાખ્યાન કપાય સબન્ધી લોલને આ પ્રકારનો લોલ કહે છે (૪) હિરિદ્રારાગ રક્ત વસ્ત્ર સમાન લોલ—સન્વલન કપાય સબન્ધી લોલને આ પ્રકારનો લોલ કહે છે આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

જેમ કૃમિરાગરક્ત વસ્ત્ર બળી બધ તો પશુ પાવાનો રંગ ઢાલતું નથી તેની સાથે પશુ લાલ રંગની જ લોલ છે, જે જ પ્રમાણે જે છાવ પાવાનું મૃત્યુ થઈ બધ તો પશુ લોલ નુષન્ધને છોડતો નથી તેનો તે લોલ કૃમિરાગ રક્ત વસ્ત્રની જેમ દદ્દ લોલથી અનન્તાનુષન્ધી જ લોલ છે. જે જ પ્રમાણે

ભવતીતિ । એવ લોભવિશેષત્રયેપિ વિભાવનીયમ્ । એતત્ફલનિરૂપકસૂત્ર ક્રોધ
ફલસૂત્રવદ્ બોધ્યમ્ । ઇહ કષાયપ્રરૂપણા—

ગાથા:—“ પવ્વઓ પુઢવી રેણુ, દગં ચેત્ર ચઉત્થયં ।

એસિં રાઝિનિમો કોહો, વુત્તોઽસ્સિં જિણસાસણે । ૧ ।

સેલો અટ્ટી ય કટ્ટં ચ, તિણિસસ્સ લયા તથા ।

એસિં થંમસમાણો હિ, માણો વુત્તો જિણાગમે । ૨ ।

વંસીમૂલં મિઢસિંગ, ગોમુત્તી અવલેહિયા ।

એસિં કેયણતુલ્લં તુ, માયમાહુ જિણિસસરા । ૩ ।

કિમી પંકોઽજ્જણં ચાવિ, હાલિદા રાગદવ્વયા ।

એપ્પહિ રંજિયપટ્ટી—તુલ્લો લોહો વિઆહિઓ । ૪ ।

જાવજ્જીવં વરિસં, ચાઉમ્માસં ચ પક્કલ્લયં ।

કમા જીવાણુગામીમે, નારગત્તાદિ સાહગા । ૫ । ”

છાયા—“ પર્વતઃ પૃથિવી રેણુ—રુદ્ધકં ચેત્ર ચતુર્થકમ્ ।

એપાં રાજિનિમઃ ક્રોધ, ઉક્તોઽસ્મિન્નિજિનશાસને । ૧ ।

શૈલઃ અસ્થિ ચ કાપ્ઠં ચ, તિનિશસ્ય લતા તથા ।

એપાં સ્તમ્ભસમાનો હિ, માન ઉક્તો જિનાગમે । ૨ ।

વંશીમૂલં મેઢશૂદ્રં, ગોમૂત્રી અવલેલિકા ।

એપાં કેતનતુલ્યાં તુ, માયામાહુર્જિનેશ્વરા । ૩ ।

કૃમિઃ પક્કોઽજ્જનં ચાપિ, હરિદા રાગદ્રવ્યકાણિ ।

એતૈ રક્ષિતપટ્ટી—તુલ્યો લોભો વ્યાખ્યાતઃ । ૪ ।

યાવજ્જીવં ચ વર્ષ, ચતુર્માસં ચ પક્ષકમ્ ।

ક્રમાવજ્જીવાણુગામિનિ ઇમે, નારકત્વાદિ સાધકાઃ । ૫ । ” ઇતિ । સૂં ૦૫૫ ॥

ફલકા નિરૂપક સૂત્ર ક્રોધફલ નિરૂપક સૂત્રકી તરહસે જાનના ચાહિયે ।

કષાયપ્રરૂપણા ગાથા—“ પવ્વઓ પુઢવી રેણુ ” ઇત્યાદિ ।

હસ જિનશાસનને અનન્તાનુવંધી ક્રોધકો પર્વતકી રાજી દરાર—તડ
કે સમાન કહા હૈ, હસ પ્રકાર અપ્રત્યાખ્યાની ક્રોધકો પૃથિવી અર્થાત્
તલાવ કી પૃથિવી કી દરાર—તડકે સમાન પ્રત્યાખ્યાની ક્રોધકે રેણુ

લોભના બાકીના ત્રણ પ્રકારો વિષે પણ સમજી લેવું તેના ક્ષણતુ નિરૂપણ
કરનાર સૂત્ર પણ ક્રોધક્ષણ નિરૂપક સૂત્ર સમાન જ સમજવું કષાયની પ્રરૂપણા
કરતી ગાથાઓ—“ પવ્વઓ પુઢવી રેણુ ” ઇત્યાદિ.

આ જીન શાસનમાં અનન્તાનુવંધી ક્રોધને પર્વતની રાજી—તડની માફક
કહી છે, એજ રીતે અપ્રત્યાખ્યાન ક્રોધને પૃથિવી અર્થાત્ તળાવની પૃથિવની

“પનામકે”—ત્યાદિ-પચમેષ કુમિરાગાદિરક્તવસ્ત્રવદેવ, લોમમતુર્વિંશઃ મશ્વસઃ, તથાયા-કુમિરાગરક્તવસ્ત્રસમાન इत्यादि । तत्र कुमिरागरक्तवस्त्रसमानो लोमो इवानुबन्धत्वादनन्तानुबन्धी भवति । कर्दमरागरक्तवस्त्रसमानो लोमो हीनानुबन्धत्वाद् अपत्याख्यानो भवति । स्वजनरागरक्तवस्त्रसमानो लोमो हीनतरानुबन्धत्वात् प्रत्याख्यानोऽऽवरणो भवति । हरिद्रारागरक्तवस्त्रसमानश्च लोमो हीनतमानुबन्धत्वात् सन्वलनो भवति । तथाहि—यथा—कुमिरागरक्तं वस्त्रं दृश्यमपि रागा-नुबन्धं न त्यजति, तद्वत्समोऽपि रक्तत्वात् प्रवालमस्मत्, तथा यो जीवो मृतोऽपि लोमानुबन्धं न त्यजति तस्य लोमः कुमिरागरक्तवद् इदोऽनन्तानुबन्धी च

મી ચાર પ્રકારના હોતા હૈં इनमें—जो लोम कुमिरागरक्त वस्त्रके समान होता है वह इवानुबन्धवाला होने से अनन्तानुबन्ध कषाय सम्बन्धी होता है । कर्दमरागरक्त वस्त्रके समान जो लोम है वह हीनानुबन्धवाला होनेसे अपत्याख्यान कषाय सम्बन्धी होता है । स्वजन रागरक्त वस्त्रके समान जो लोम होता है वह हीनतर अनुबन्धवाला होनेसे प्रत्याख्यान कषाय सम्बन्धी होता है । तथा—हरिद्रारागसे रक्त वस्त्र जैसा जो लोम होता है वह संवलनकषाय सम्बन्धी होता है । तात्पर्य ऐसा है—कि कुमिरागवस्त्र बाहे जल भी जाय तो भी अपने पगानुबन्धको जैसे नहीं छोड़ता है । क्योंकि कि—उसकी ‘मरुम’ भी प्रवाल सी छाल ही छाल रहती है । वसी तरह जो जीव मर जाने पर भी लोमानुबन्ध को नहीं छोड़ता है उसका वह कुमिरागरक्त की तरह दृढ़ होने से अनन्तानुबन्ध संबंधी होता है । इसी तरहसे तीनों लोमके विषयमें भी समझ लेना चाहिये इसके

એ જ પ્રમાણે લોભ પણ ચાર પ્રકારનો હશે છે— (૧) કુમિરાગ રક્ત વસ્ત્ર સમાન લોભ—અનન્તાનુબન્ધ કષાય સંબન્ધી એ લોભ છે તેને આ પ્રકારમાં બહુની શકાય છે (૨) કર્દમરાગ રક્ત વસ્ત્ર સમાન લોભ—અપ્રત્યાખ્યાન કષાય સંબન્ધી એ લોભ છે તેને આ પ્રકારમાં બહુની શકાય છે (૩) સ્વજન રાગ રક્ત વસ્ત્ર સમાન લોભ—પ્રત્યાખ્યાન કષાય સંબન્ધી લોભને આ પ્રકારનો લોભ કહે છે (૪) હરિદ્રાર રાગરક્ત વસ્ત્ર સમાન લોભ—સંવલન કષાય સંબન્ધી લોભને આ પ્રકારનો લોભ કહે છે આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

એમ કુમિરાગરક્ત વસ્ત્ર બળી બાક તે પણ પોતાનો રંગ ઓડતું નથી તેની રાખ પણ લાલ રંગની જ હોય છે, એ જ પ્રમાણે એ છત્ર પોતાનું મૂલ્ય ચર્ચ બાક તે પણ લોભનુષ મને ઓડતો નથી, તેનો તે લોભ કુમિરાગ રક્ત વસ્ત્રની જેમ કઠ્ઠા હોવાથી અનન્તાનુબન્ધી જ હોય છે એ જ પ્રમાણે

અનન્તરં કપાયાઃ પ્રરૂપિતાઃ તૈરેવ જીવાનાં સંસારો ભવતીતિ સંસારસ્વરૂપં નિરૂપયિતુમાઢ—

મૂલમ્—ચઙવિહે સંસારે પળળત્તે, તં જહા—ળેરઙયસંસારે જાવ દેવ સંસારો ૪ । ચઙવિહે આઙણ પળળત્તે તં જહા—ળેરઙયઆઙણ જાવ દેવાઙણ ૪। ચઙવિહે ભવે પળળત્તે, તં જહા—ળેરઙયભવે જાવ દેવભવે ૪ ॥૫૬॥

છાયા—ચતુર્વિધઃ સંસારઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—નૈરયિક સંસારઃ યાવત્ દેવસંસારઃ ૪।

ક્રોધાદિર્મે પ્રથમભેદ યાવજ્જીવ તક સાથ રહનેવાલા દૂમરા ભેદ એક વર્ષતક, ત્રીસરા ભેદ ચાર મહીને તક, ચૌથા ભેદ એક પક્ષ તક જીવકે સાથ રહનેવાલા કહા હૈ ।

યહૌ જો યે પાંચવીં ગાથા હૈ ડસસે સૂત્રકારને ઙન ક્રોધાદિકોં કા વાસનાકાલ પ્રકટ કિથા હૈ જીવન પર્યન્ત તક અનન્તાનુબન્ધી ક્રોધ કા, અનન્તાનુબન્ધી માનકા, અનન્તાનુબન્ધી માયા કા, ઔર અનન્તાનુબન્ધી લોભકા વાસનાકાલ કહા ગયા હૈ, ઙસી તરહસે અપ્રત્યાખ્યાન સમ્બન્ધી ક્રોધાદિકોંકા એક વર્ષકા, પ્રત્યાખ્યાન સમ્બન્ધી ક્રોધાદિકોં કા ચાર માસકા ઔર સંજવલન સમ્બન્ધી ક્રોધાદિકોંકા એક પક્ષકા વાસનાકાલ કહા ગયા હૈ ॥ સૂ ૫૫ ॥

ઙન પ્રરૂપિત કષાયોં સે હી જીવોં કા સંસાર પ્રાપ્ત હોતા હૈ, અતઃ—અવ સૂત્રકાર સંસારસ્વરૂપ કી નિરૂપણા કરનેકે નિમિત્ત કહતે હૈ—

ક્રોધાદિર્માં પહેલો લેદ યાવજ્જીવ પર્યન્ત સાથે રહેવાવાળો, બીજા લેદને એક વર્ષ સુધી, ત્રીજા લેદને ચાર મહીના સુધી, ચોથા લેદને એક પખવાડિયા સુધી જીવની સાથે રહેવાવાળો કહ્યો છે.

અહીં જે પાંચમી ગાથા છે તેના દ્વારા સૂત્રકારે આ ક્રોધાદિકોના વાસનાકાળ (સ્થાયી રહેવાનો કાળ) પ્રકટ કર્યો છે. અનન્તાનુબન્ધી ક્રોધનો, અનન્તાનુબન્ધી માનનો, અનન્તાનુબન્ધી માયાનો અને અનન્તાનુબન્ધી લોભનો વાસનાકાળ જીવન પર્યન્તનો કહ્યો છે અપ્રત્યાખ્યાન સંબંધી ક્રોધાદિકોનો એક વર્ષનો વાસનાકાળ કહ્યો છે. પ્રત્યાખ્યાન સંબંધી ક્રોધાદિકોના ચાર માસનો અને સંજવલન સંબંધી ક્રોધાદિકોનો એક પક્ષનો (પખવાડિયાનો) વાસનાકાળ કહ્યો છે ॥ સૂ. ૫૫ ॥

પહેલાના સૂત્રમાં કષાયોની પ્રજ્ઞપણા કરવામાં આવી તે કષાયોને કારણે જ જીવોને સંસારમાં બ્રમણ કરવું પડે છે. આ સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર

અર્થાત્ ચાલુકાકી છકીરકે સમાન ઔર સંજ્વલન કોષકો ઉદક પાની કી છકીરકે સમાન કહા હૈ ॥ ૧ ॥

इसी प्रकार प्रथम मेदवाले मानकी पत्थरके स्तम्भ के समान दूसरे को इड्डीके स्तम्भ समान, तीसरे को काष्टके स्तम्भके समान और चौथे को तिनिश (पेंत) के स्तम्भ समान कहा है ॥ २ ॥

इसी प्रकार प्रथम मेदवाली मायाको घांसकी जड़के समान टेढी कही है, दूसरे मेदवाली मायाको मिढाके सींगके समान, तीसरे मेदवाली मायाके गोमूत्रका-बसते हुये बैलके मूत्रकी छकीरके समान, और चौथे मेदवाली माया अवलेखिका अर्थात् घांसके छिलके समान टेढी कही है ।

इसी प्रकार प्रथम मेदवाले लोमको कृमि-किरमिचरंगके समान रंगवाला कहा है एवं दूसरे मेदवाले लोमको कर्दम कीबड़के समान रंगवाला, तीसरे मेदवाले लोमको अजन (कज्जल) के रंगके समान रंगवाला, और चौथे मेदवाले लोमको हरिद्रा के रंगके समान रंगवाला कहा है ।

ये सब चारों कपाय क्रમपूर्वक एकसे दूसरे उत्तरोत्तर मद् मंदतर मद्‌तम મદાતિમન્દ કહે છે ।

તકની માફક, પ્રત્યાખ્યાની કોષને શુભ અર્થાત્ રીટીની લીટીની સરખી અને અવલન કોષને ઉઠક-પટ્ટીની લીટી બરાબર કહી છે ॥ ૧ ॥

એ જ રીતે પહેલા લેદવાળા માથાને પલ્લવના સ્તંભ સરખો, બીજાને લોકાના સ્તંભ સરખો, ત્રીજાને લોકાના સ્તંભ સરખો અને ચોથાને તિનિશ (નેતર) ના સ્તંભ સરખો કહ્યો છે ॥ ૨ ॥

એ જ રીતે પહેલા લેદવાળી માથાને વાંસના મૂળ સરખી વાંદી કહી છે, બીજા લેદવાળી માથાને ઘેટાના સીંગા જેવી કહી છે. ત્રીજા લેદવાળી માથાને ગોમૂત્રિકા-બલવા બળાના મૂળની લીટી સરખી, અને ચોથા લેદવાળી માથાને અવલેખિકા અર્થાત્ વાંસના છાંયની માફક વાંદી કહી છે

એ જ રીતે પહેલા લેદવાળા લોભને કૃમિ-કિરમની રમના જેવો કહ્યો છે અને બીજા લેદવાળા લોભને કર્દમ-કાઢવાના રમ સરખો, ત્રીજા લેદવાળા લોભને અજન (કજળ) ના રમ જેવા રમવાળો અને ચોથા લેદવાળા લોભને હરિદ્રાના રમ જેવા રમવાળો કહ્યો છે

આ તમામ ચારે કપાય ક્રમપૂર્વક એક એકથી બીજા ઉત્તરોત્તર મદ, મદતર, મદતમ અને મદાતિમદ કહેલ છે.

નૈરયિકઃ સ્વલુ મદન્ત । નૈરયિકેષુ ઉપપદ્યતે અનૈરયિકો નૈરયિકેષુ ઉપપદ્યતે ?, ગૌતમ ! નૈરયિકો નૈરયિકેષુપપદ્યતે નો અનૈરયિકો નૈરયિકેષુપપદ્યતે ” ઇતિ, તસ્ય સંસાર-ઉત્પત્તિદેશગમનમ્, યદ્વાઽવસ્થાન્તરગમન નૈરયિકસંસારઃ, एवं तिर्यग्मनुष्यदेव-संसारा अपि बोध्याः इति संसारचतुष्टयम् ॥

ઉક્તરૂપઃ સંસાર આયુપિ સત્યેવ ભવતીત્યાયુર્નિરૂપયતિ-‘ચરન્વિહે આઉપ’ ઇત્યાદિના, તત્ત્વાઽઽયુઃ-एति-गच्छति प्रतिक्षणमित्यायुः=कर्मविशेषः, तच्चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा-“ नैरयिकायुः ’ इत्यारभ्य ‘ यावत् ’ देवाऽऽयुः पर्यन्तं बोध्यम्

उजह ” इस नैरइकका जो संसार है-उत्पत्तिस्थान पर गमन है वह—नैरयिक संसार है, अथवा—अवस्थान्तर प्राप्तिरूप नैरयिक संसार है । तात्पर्य ऐसा है कि नैरयिक में उत्पन्न होने योग्य आयुकर्मका बन्ध जिस जीवको हो गया है वह जीव नैरयिक कहनेयोग्य हो जाता है, अतः ऐसा ही जीव जब अवस्थान्तररूप नैरयिक पर्याय से युक्त हो जाता है तब वह नैरयिक पर्याय की प्राप्तिकारक नैरयिक संसार है । इसी प्रकारका कथन तिर्यङ् मनुष्य और देव इन संसारों के सम्बन्धमें भी जानना चाहिये । ऐसा यह संसार आयुकर्म का उदय होने पर ही होता है अतः इसी सम्बन्ध को लेकर सूत्रकार अब आयुका निरूपण करनेके लिये “ चरन्विहे आउप ” ऐसा सूत्र कह रहे हैं-जो प्रतिक्षण व्यतीत होती रहती है वह-आयु है, यह-आयु कर्म विशेष है नैरयिक आयु तिर्यञ्चायु-मनुष्यायु-देवायु इस प्रकार से इसके भेद चार कहे

સંસાર છે-ઉત્પત્તિ સ્થાનપર ગમન છે, તે નૈરયિક સંસાર છે. અથવા અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિરૂપ નૈરયિક સંસાર છે. એટલે કે નૈરયિકમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય આયુકર્મના જે બંધ જે જીવે કરી દીધો હોય તે જીવ નૈરયિક કહેવા યોગ્ય બની જાય છે. તેથી એવો જ જીવ જ્યારે અવસ્થાન્તર રૂપ નૈરયિક પર્યાયથી યુક્ત થઈ જાય છે, ત્યારે તે નૈરયિક પર્યાયની પ્રાપ્તિકારક નૈરયિક સંસારનો જીવ કહેવાય છે. આ પ્રકારનું કથન તિર્યગ્, મનુષ્ય અને દેવ, આ ત્રણે સંસારો વિષે પણ અમજવું એવા તે સંસારનો સદ્ભાવ આયુકર્મના ઉદયથી જ સંભવી શકે છે, આ સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર આયુનું નિરૂપણ કરે છે. “ ચરન્વિહે આઉપ ” ઇત્યાદિ—

જે પ્રતિક્ષણ વ્યતીત થતું રહે છે તે આયુ છે. તે આયુ કર્મવિશેષ છે. નૈરયિક આયુ, તિર્યંચાયુ, મનુષ્યાયુ અને દેવાયુ, આ પ્રકારે તેના ચાર ભેદ

પતુર્વિપમાયુ મશ્વપ્તમ્, તથા—નૈરયિકાયુઃ યાવત્ દેવાયુઃ ૪।

ચતુર્વિધો મવઃ મશ્વપ્તઃ, તથા—નૈરયિકમવઃ યાવત્ દેવમવઃ ૪। સૂ ૫૬।

ટીકા—“ ચતુર્વિધે સસારે ” इत्यादि—સમાર—સસરણ સસાર—મનુષ્યા

દિપર્વાયાશારકાદિપર્વાયગમનં, સ ચતુર્વિધઃ મશ્વપ્ત, તથા—નૈરયિકસસારો યાવત્ દેવસસારઃ—યાવત્પદેન—વિર્યક્રસસારો મનુષ્યસસારમ્ ગ્રાહ્યઃ । સત્ર નૈરયિકસસારો—નૈરયિકાદૌડ્યુનામગોત્ર પ્રચલિકર્મોદયે સતિ જીવો નૈરયિકો વ્યવહિયતે, ઉત્ત વ—“ ગેરહપ્ત મંતે ! ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ, અગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ, ગોયમા ! ગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ જો અગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ । ” છાયા—

“ ચતુર્વિધે સસારે પળ્લસે ” इत्यादि ૫૫

સુધાર્પ—સંસાર ચાર પ્રકારકા કહા ગયાહૈ, નૈરયિક સસાર ૧, યાવત્—દેવસસાર ૪। ચાર પ્રકારકા આયુ કર્મ કહા ગયા હૈ, નૈરયિક આયુ—યાવત્—દેવાયુ ૪ મવ ચાર કહા ગયા હૈ, નૈરયિકમવ ૧ યાવત્—દેવમવ ૪ ટીકાર્પ—પરિભ્રમણ કરનેકા નામ સસારહૈ મનુષ્યાદિ પર્વાયસે નારકાદિ પર્વાયોર્મે જાના રૂપ જો સસાર હૈ વહ નૈરયિક સસાર આદિ મેવોસે ચાર પ્રકારકા કહા ગયાહૈ ઉત્તકા સાત્પર્ય એસાહૈ નૈરયિક યોગ્ય આયુ—નામ—ગોત્ર આદિ કર્મો કે ઉદય હોને સે યહ જીવ નૈરયિક હૈ એસા જો વ્યવહાર હોતા હૈ વહ નૈરયિક હૈ ।

ઉત્તવજ્ઞ—‘ ગેરહપ્ત મંતે ! ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ, અગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ ગોયમા ! ગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ જો અગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ ’

સંસારના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે ‘ ચતુર્વિધે સસારે પળ્લસે ’ इत्यादि—સુધાર્પ—સંસારના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) નૈરયિક સંસાર (૨) તિર્થંચોનિક સંસાર, (૩) મનુષ્ય સંસાર અને (૪) દેવ સંસાર ચાર પ્રકારના આયુકર્મ કહ્યા છે—(૧) નૈરયિક આયુથી લઈને દેવાયુ પર્વન્તના ચાર પ્રકાર અહીં સમજાયા. ભવ ચાર કહ્યા છે—નૈરયિક ભવથી લઈને દેવભવ પર્વન્તના ચાર ભવ અહીં પ્રહણ કરવા

વિશેષાર્પ—ગુહી ગુહી ગતિમાં જાણ કરવું તેનું નામ સંસાર છે મનુષ્યાદિ પર્વાયમાંથી નારકાદિ પર્વાયમાં જવા રૂપ સંસારના નૈરયિક સંસાર આદિ ને ચાર લેઈ કહ્યા છે તેનું રૂપચીકરણ નીચે પ્રમાણે છે—નૈરયિકને ચોવ્ય આયુ, નામ, ગોત્ર આદિ કથોના ઉદય થવાથી “ આ છવ નૈરયિક છે ” એવો ને વ્યવહાર થાય છે તેનું નામ નૈરયિક છે કહ્યું પણ છે કે—“ ગેરહપ્ત મંતે ! ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ, અગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ ગોયમા ! ગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ જો અગેરહપ્ત ગેરહપ્તુ ઉત્તવજ્ઞઃ ” આ નૈરયિકને ને

નૈરયિકઃ સ્વલુ ભદન્ત । નૈરયિકેષુ ઉપપન્નતે અનૈરયિકો નૈરયિકેષુ ઉપપદ્યતે ? , ગૌતમ !
 નૈરયિકો નૈરયિકેષુપપદ્યતે નો અનૈરયિકો નૈરયિકેષુપપદ્યતે ” ઇતિ, તસ્ય સંસાર-
 -ઉત્પત્તિદેશગમનમ્, યદ્વાડવસ્થાન્તરગમનં નૈરયિકસંસારઃ, એવં તિર્યગ્મનુષ્યદેવ-
 સંસારા અપિ વોધ્યાઃ ઇતિ સંસારચતુષ્ટયમ્ ॥

ઉક્તરૂપદશ સંસાર આયુષિ સત્યેવ ભવતીત્યાયુર્નિરૂપયતિ-‘ચરન્વિદે આરુ’
 ઇત્યાદિના, તત્રાડયુઃ-અતિ-ગચ્છતિ પ્રતિક્ષણમિત્યાયુઃ=કર્મવિશેષઃ, તચ્ચતુર્વિધં
 પ્રજ્ઞસમ્, તથા-“ નૈરયિકાયુઃ ’ ઇત્યારમ્ય ‘ યાવત્ ’ દેવાડયુઃ પર્યન્તં વોધ્યમ્

ઉજ્જ ” હસ નૈરિકકા જો સંસાર હૈ-ઉત્પત્તિસ્થાન પર ગમન હૈ વહ—
 નૈરયિક સંસાર હૈ, અથવા—અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિરૂપ નૈરયિક સંસાર હૈ ।
 તાત્પર્ય એસા હૈ કિ નૈરયિક મેં ઉત્પન્ન હોને યોગ્ય આયુકર્મકા બન્ધ
 જિસ જીવકો હો ગયા હૈ વહ જીવ નૈરયિક કહનેયોગ્ય હો જાતા હૈ,
 અતઃ એસા હી જીવ જવ અવસ્થાન્તરરૂપ નૈરયિક પર્યાય સે યુક્ત હો
 જાતા હૈ તવ વહ નૈરયિક પર્યાય કી પ્રાપ્તિકારક નૈરયિક સંસાર હૈ ।
 હસી પ્રકારકા કથન તિર્યહ્ મનુષ્ય ઓર દેવ હન સંસારોં કે સમ્બન્ધમેં
 મી જાનના ચાહિયે । એસા યહ સંસાર આયુકર્મ કા ઉદય હોને પર હી
 હોતા હૈ અતઃ હસી સમ્બન્ધ કો લેકર સૂત્રકાર અવ આયુકા નિરૂપણ
 કરનેકે લિપે “ ચરન્વિદે આરુ ” એસા સૂત્ર કહ રહે હૈ—જો પ્રતિક્ષણ
 વ્યતીત હોતી રહતી હૈ વહ—આયુ હૈ, યહ—આયુ કર્મ વિશેષ હૈ નૈરયિક
 આયુ તિર્યચ્ચાયુ-મનુષ્યાયુ-દેવાયુ હસ પ્રકાર સે હસકે ભેદ ચાર કહે

સંસાર છે-ઉત્પત્તિ સ્થાનપર ગમન છે, તે નૈરયિક સંસાર છે. અથવા અવ-
 સ્થાન્તર પ્રાપ્તિરૂપ નૈરયિક સંસાર છે. એટલે કે નૈરયિકમાં ઉત્પન્ન થવાને
 યોગ્ય આયુકર્મનો જે બન્ધ જે ભવે કરી લીધો હોય તે ભવ નૈરયિક કહેવા
 યોગ્ય બની જાય છે તેથી એવો જ ભવ જ્યારે અવસ્થાન્તર રૂપ નૈરયિક
 પર્યાયથી યુક્ત થઈ જાય છે, ત્યારે તે નૈરયિક પર્યાયની પ્રાપ્તિકારક નૈરયિક
 સંસારનો ભવ કહેવાય છે આ પ્રકારનું કથન તિર્યચ્, મનુષ્ય અને દેવ, આ
 ત્રણે સંસારો વિષે પણ સમજવું એવા તે સંસારનો સદ્ભાવ આયુકર્મના
 ઉદયથી જ સંભવી શકે છે, આ સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર આયુનું
 નિરૂપણ કરે છે. “ ચરન્વિદે આરુ ” ઇત્યાદિ—

જે પ્રતિક્ષણ વ્યતીત થતું રહે છે તે આયુ છે. તે આયુ કર્મવિશેષ છે.
 નૈરયિક આયુ, તિર્યચ્ચાયુ, મનુષ્યાયુ અને દેવાયુ તેના ચાર ભેદ

પર્વ ચ-નૈરયિકાઽઽયુઃ ૧, તિર્યગાયુઃ , મનુષ્યાઽઽયુઃ ૧, દેવાઽઽયુઃ ૨, રિત્વિતસ્પ-
તુર્વિષમ્ , તથ યેન નિરયમથે શાષી નિષીયસે તદ્ નૈરયિકાઽઽયુઃ । એવ શ્લેષપદ-
મપિ ધોષ્યમ્ ।

ઉક્તરૂપમાપુર્જીવાન્ મથે સ્થાપયતિ, તતો મર્થ નિરૂપયતિ-“ ચઽઽધિદે મથે”
इत्यादिना, तत्र मथः-मथर्न मथः-उत्पत्तिः , चतुर्विध मथस्तः, तद्यथा-नैर-
यिकमथ इत्यारभ्य ‘ यावत् ’-देवमथपर्यन्तो मथो धोष्यः, तत्र नैरयिकमथ -
निरये-नरके मथो नैरयिकस्तत्र मथः । एवं श्लेषप्रयमपि धोष्यम् ॥ सू० ५६ ॥

પૂર્વે મથ ઉક્ત, તેણે સર્વે આહારવન્તો જીવા મથન્તીત્યાદ્યાર નિરૂપયિતુમાદ-
મૂલ્ય-ચઽધિદે આહારે પળણતે, ત જહા-અસળે ૧, પાળે ૨,
સ્વાદિમે ૩, સાદિમે ૪ । ચઽધિદે આહારે પળણતે, ત જહા-ઉવ
ક્ષ્વરસપન્ને ૧, ઉવક્ષ્વડસપન્ને ૨, સમાવસપન્ને ૩, પરિજુસિય
સપન્ને ૪ ॥ સૂ૦ ૫૭ ॥

છાયા-ચતુર્વિધ આહાર મથસ્તઃ, તપ્યા-મથન ૧, પાન ૨, સ્વાદિર્મ ૩,
સ્વાદિમમ્ ૪।ચતુર્વિધ આહાર મથસ્તઃ, તપ્યા-ઉપસ્કરસપન્નઃ ૧, ઉપસ્કૃતસંપન્નઃ ૨,
મથે હૈં । જો જીવકો નિરયમથર્મે રક્ષતા હૈં બહુ નિરયાત્યુ કર્મ હૈં । હસી
પ્રકારસે અન્ય ત્રીન આયુષોં કે સમ્બંધર્મે મી કથન જાનના ચાહિયે ।
ઉક્ત આયુ જીવોં કો વિવક્ષિત મથર્મે સ્થાપિત કરતા હૈં, હસલે સૂત્ર
કારને “ ચઽધિદે મથે ” એસા સૂત્ર કહા હૈં, મથ નામ ઉત્પત્તિ કા હૈં
નૈરયિક રૂપસે જો જીવકા મથ હૈં બહુ નૈરયિક મથ હૈં । હસી પ્રકાર સે
શ્લેષ મથપ્રય મી સમજના ચાહિયે ॥ સૂ૦ ૫૬ ॥

इन समस्त मथोर्मे आहारवाले जीव होते हैं, अतः अथ सूत्रकार
आहार की प्ररूपणा करते हैं-“ चडधिये आहारे पणगसे ’ इत्यादि

ઉ જે જીવને નિરયમથર્મા શણે છે તે ક્રમને નિરયાયુ કર્મ કહે છે. જે જ
પ્રમાણે આયુષ્ય જાહીના તથા લેહોત્તં પજુ કથન સમજા લેવું ઉક્ત આયુ
જીવને અનુક્રમ ભર્મા સ્થાપિત કરે છે, તેથી કહે સૂત્રકર “ ચઽધિદે મથે ”
ઈત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા ભવત્તં નિરૂપણ કરે છે ભવ જોડે ઉત્પત્તિ. નૈરયિક રૂપ
જીવને જે ભવ છે તેને નૈરયિક ભવ કહે છે જે જ પ્રમાણે જાહીના તથા
ભવ રિયેત્તં કથન પજુ જાતે જ સમજા લેવું ॥ સૂ. ૫૬ ॥

આ સમસ્ત જીવોર્મા આહારવાળા જીવો દેખ છે આ સમખને લખે
કહે સૂત્રકર આહારની પ્રરૂપણા કરે છે “ચઽધિદે આહારે પળગસે” ઇત્યાદિ-

સુધા દ્રોણ સ્થા ૦૪ ૩૦૨ સૂ ૫૭ આહારસ્વરૂપનિરૂપણમ

સ્વભાવસંપન્ન: ૩, પર્યુષિતસંપન્ન: ૪ ॥ સૂ ૫૭ ॥

ટીકા—“ ચરુચ્વિદે આહારે ” इत्यादि-आहार:-आह्रियत इत्याहार:, स चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-अशनम्-अशयते-भुज्यत इत्यशनं-भक्तप्रभृति १, पान-पीयत इति पानं-तन्दुलादि धावनजलम् २, खादिमं-खादनं खादस्तेन निर्वृत्तं खादिमं-द्राक्षादिकम् ३, स्वादिमं-स्वादेन निर्वृत्तं स्वादिमं-लवङ्गचूर्णादिकं मुखवासरूपम् ४ ।

“ ચરુચ્વિદે આહારે ” पुनराहारश्चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-उपस्करसंपन्न:-उपस्कियते-सुवास्यतेऽनेनेत्युपस्करो-हिंयादि, तेन संपन्न:-युक्त उपस्करसंपन्न:-मुद्रसूपादि, इति प्रथमः १ । तथा उपस्कृत:-पाकस्तेन संपन्नः उपस्कृतसंपन्न:-ओदन-कृशरा-करपट्टिकाप्रभृति, इति द्वितीयः २ । तथा-स्वभावसम्पन्न:-

સૂત્રાર્થ-आहार चार प्रकारका कहा गया है, जैसे-अशन १, पान २, खादिम ३ और स्वादिम ४ । पुनश्च-आहार चार प्रकारका कहा गया है, जैसे-उपस्कार सम्पन्न १ उपस्कृत सम्पन्न २, स्वभाव सम्पन्न ३ और पर्युषित सम्पन्न ४ ।

ટીકાર્થ-जीवद्वारा जो आहृत होता है वह-आहार है, यह आहार अशन आदिके भेदसे जो चार प्रकारका कहा गया है उसका भाव ऐसा है-जो खाया जाता है वह भक्त वगैरह अशन है । जो पीया जाता है ऐसा ताण्डुलादि धावन जलपान है, द्राक्षादिक खादिम है, और मुखवास लवङ्गादि चूर्ण स्वादिम है । पुनश्च-उपस्कर संपन्न आहार का तात्पर्य ऐसा है-आहार जिस विशिष्ट द्रव्यसे सुवासित किया जाय वह-हिङ्गु (हींग) आदि उपस्कर है, इस उपस्करसे जो युक्त होता

સૂત્રાર્થ-आहारना नीचे प्रमाणे चार प्रकार कहा है—(१) अशन, (२) पान, (३) खादिम અને (४) स्वादिम બીજી રીતે પણ આહારના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) ઉપસ્કર સંપન્ન, (૨) ઉપસ્કૃત સંપન્ન, (૩) સ્વભાવ સંપન્ન અને (૪) પર્યુષિત સંપન્ન.

વિશેષાર્થ-જીવ દ્વારા જે આહૃત થાય છે, તે આહાર છે તેના અશન આદિ જે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે, તેનું સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે—જે ખાવામાં આવે છે તે લોજનને અશન કહે છે જે પીવામાં આવે છે તે ભાત આદિના ધોવણ જળ વગેરેને પાન કહે છે દ્રાક્ષ વિકને ખાદિમ કહે છે, એલાઇચી, લવીંગ, સોપારી, ધાણાદાળ, ચૂર્ણ વગેરેને સ્વાદિમ કહે છે.

આહારના ઉપસ્કર સંપન્ન આદિ ચાર પ્રકારનાં હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—આહારને જે વિશિષ્ટ દ્રવ્યોથી સુવાસિત કરવામાં આવે છે, એવા હિંગાદિ દ્રવ્યને ઉપસ્કર કહે છે. તે ઉપસ્કરથી યુક્ત મગની દાલ વગેરે આહાર

સ્વભાવેન-પ્રકૃત્યા પાકમન્તરા સમ્પન્નઃ સિદ્ધઃ પક્ષ્વ-સ્વર્ગાદિઃ ।
 इति कृत्वा ३ । पर्युषितसम्पन्नः-पर्युषितं-रात्रिपरिवसनं, तेन सम्पन्न-पर्युषित
 सम्पन्नः 'अलेखी' इति भाषा प्रसिद्धः कुण्डलाकारमधुरादिः । यद्वा-पर्युषित
 सम्पन्नः-काञ्चिकस्थाऽऽम्रकलाविरिति ४ ॥ सू० ५७ ॥

પૃષ્ઠ સંસારમત્રાઽઽદ્વારા ઉક્તા, તે થ વદ્ધકર્મણાં જીવાનાં મળતીતિ કર્મત
 ન્યાદિ નિકપયિત્વમાહ—

મૂલપ-ચડઢિવહે વધે પળળત્તે, ત જહા-પગદ્વવધે, ઢિદ્વધે, ૨,
 અણુભાવવધે ૩, પપ્પસવધે ૪ ।

ચડઢિવહે ઉવવકમે પળળત્તે, ત જહા વધળોવવકમે, ૧, ઉદી
 રળોવવકમે ૨, ઉવસમળોવવકમે ૩, વિપ્પરિણામોવવકમે ૪ ।

વધળોવવકમે ચડઢિવહે પળળત્તે, ત જહા-પગદ્વવધળોવવકમે, ૧,
 ઢિદ્વધળોવવકમે ૨ અણુભાવવધળોવવકમે ૩, પપ્પસવધળોવવકમે ૪ ।

હૈ પેસા મુદ્ગકીલાલ આદિ વપસ્કાર આદિ ઉપસ્કાર આહાર હૈ । પાકસે
 સંપન્ન જો આહાર હોતા હૈ પેસા ઓવન, કુશરા-લિખલી, કરપટ્ટિકા
 રોડી આદિ ઉપસ્કૃત સંપન્ન આહાર હૈ । જો સ્વભાવસે વિના પાકસે
 સંપન્ન હોતા હૈ પેસા પક્ષ-આમ-લજૂર આદિ સ્વભાવ સંપન્ન આહાર
 હૈ ૩ રાતમેં વસાવે સે જો આહાર વિષ્ણુ હોતા હૈ । વહ પર્યુષિત સંપન્ન
 (વાસી) આહાર હૈ જૈસે-જહેપી આદિ । યદ્વા-કાઞ્ચિક આદિમે રલે
 મુલે આમકલ આદિ પર્યુષિતસંપન્ન આહાર હૈ ॥ સૂ० ૫૭ ॥

૨ને ઉપસ્કાર સંપન્ન આહાર કહે છે પક્ષીને (શંખીને) તેપાર કરેલા ભાત,
 ખીચડી, શાટલી આદિ આહારને ઉપસ્કૃત સંપન્ન આહાર કહે છે જે આહાર
 ૨ને પક્ષી વિના જ લેવામાં આવે છે-જે આહાર કુશરી રીતે જ પકવ હોય
 છે તેને ૨૨ભાવસંપન્ન આહાર કહે છે જેમકે પછી કેરી, ખજૂર, કેળાં
 વગેરે (૪) શાન્તિ પદ્ધતિ આપેલા આવવા છત્રને જે આહાર તેપાર વાપ
 છે તેને પર્યુષિત સંપન્ન કહે છે જેમકે જલેબી. અથવા આસલ્લી આદિમા
 શાન્તેલી કેરીને, કળામાં પેક કરેલી અનનાસ વગેરેની ચીથળે પવ પર્યુષિત
 સંપન્ન આહાર કહે છે ॥ સૂ ૫૭ ॥

ઉદીરણોવક્કમે ચઠ્ઠિહે પળણત્તે, તં જહા-પગ્ગઇઉદીરણોવક્કમે ૧
ઠિઙ્ગઉદીરણોવક્કમે ૨, અણુભાવઉદીરણોવક્કમે ૩, પણ્ણસઉદીરણો-
વક્કમે ૪ ।

ઉવસમણોવક્કમે ચઠ્ઠિહે પળણત્તે, તં જહા-પગ્ગઇઉવસ-
મણોવક્કમે ૧, ઠિઙ્ગઉવસમણોવક્કમે ૨, અણુભાવુવસમણો-
વક્કમે ૩, પણ્ણસુવસમણોવક્કમે ૪ ।

વિપ્પરિણામણોવક્કમે ચઠ્ઠિહે પળણત્તે, તં જહા-પગ્ગઇવિ-
પ્પરિણામણોવક્કમે ૧, ઠિઙ્ગવિપ્પરિણામણોવક્કમે ૨, અણુભાવ-
વિપ્પરિણામણોવક્કમે ૩, પણ્ણસવિપ્પરિણામણોવક્કમે ૪ ।

ચઠ્ઠિહે અપ્પાબહુણ પળણત્તે, તં જહા-પગ્ગઇઅપ્પાબહુણ ૧,
ઠિઙ્ગઅપ્પાબહુણ ૨, અણુભાવઅપ્પાબહુણ ૩, પણ્ણસઅપ્પાબહુણ ૪ ।

ચઠ્ઠિહે સંકમે પળણત્તે, તં જહા-પગ્ગઇસંકમે ૧, ઠિઙ્ગસંકમે
૨, અણુભાવસંકમે ૩, પણ્ણસસંકમે ૪ ।

ચઠ્ઠિહે ણિધત્તે પળણત્તે, તં જહા-પગ્ગઇણિધત્તે ૧, ઠિઙ્ગ-
ણિધત્તે ૨, અણુભાવણિધત્તે ૩, પણ્ણસણિધત્તે ૪ ।

ચઠ્ઠિહે ણિકાચિણ પળણત્તે, તં જહા-પગ્ગઇણિકાચિણ ૧,
ઠિઙ્ગણિકાચિણ ૨, અણુભાવણિકાચિણ ૩, પણ્ણસણિકાચિણ ૪ ।

જાયા—ચતુર્વિધો બંધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—પ્રકૃતિબંધઃ ૧, સ્થિતિબંધઃ ૨,
અનુભાવબંધઃ ૩, પ્રદેશબંધઃ ૪ ।

ઉક્ત સંસાર ભવ આહાર આદિ ષટ્કર્મા જીવોંકો હોતા હૈ, અતઃ સૂત્રકાર
કર્મબંધ આદિકા નિરૂપણ કરતે હૈ—“ચઠ્ઠિહે બંધે પળણત્તે” હત્યાદિ ।

સંસાર, ભવ અને આહાર આદિનો સફળાવ ષટ્કર્મા જીવોંકો હોય
છે. તેથી હવે સૂત્રકાર કર્મબંધ આદિનું નિરૂપણ કરે છે.

સ્વમાર્ષન-પ્રજ્જરપા પાકમન્તરા સમ્પન્નઃ સિદ્ધઃ પક્વ ઇત્યર્થઃ, મામ્નસર્જરાદિઃ ।
 इति तृतीयः ३ । પર્યુપિતસમ્પન્નઃ-પર્યુપિત-રાત્રિપરિવસન, તેન સમ્પન્ન-પર્યુપિત
 સમ્પન્નઃ 'જલેલી' ઇતિ માપા પ્રસિદ્ધઃ કુષ્ઠલાકારમધુરાદિઃ । યદ્વા-પર્યુપિત
 સમ્પન્નઃ-કાઝિકસ્પાઽઽમ્નફઞાદિરિતિ ૪ ॥ સુ૦ ૬૭ ॥

પૂર્વ સસારમવાઽઽહારા ઠકા, તે વ ચક્રકર્મણાં જીવાનાં મથન્તીતિ કર્મ
 ન્યાદિ નિકુપયિદુમાદ—

મૂલમ્—ચડઢિહે ઘધે પળળતે, ત જહા—પગડ્ઢધધે, ઠિડ્ઢધધે,
 અળુમાવઢધધે ૩, પપ્સવધધે ૪ ।

ચડઢિહે ઉવઢકકમે પળળતે, ત જહા ઘંધળોવઢકકમે, ઉડી
 રળોવઢકકમે ૨, ઉઢસમળોવઢકકમે, વિપ્પરિળામોવઢકકમે ૪ ।

ઘધળોવઢકકમે ચડઢિહે પળળતે, ત જહા—પગડ્ઢધધળોવઢકકમે,
 ઠિડ્ઢધધળોવઢકકમે, અળુમાવઢધધળોવઢકકમે, પપ્સવઢધધળોવઢકકમે ૪ ।

હૈ પેસા સુવ્ગકી લાલ આદિ વપસ્કાર આદિ વપસ્કાર આહાર હૈ । પાકસે
 સંપન્ન જો આહાર હોતા હૈ પેસા ઓવન, કુશરા-લિચ્છી, કરપટ્ટિકા
 રોડી આદિ વપસ્કુત સંપન્ન આહાર હૈ । જો સ્વમાવસે વિના પાકસે
 સંપન્ન હોના હૈ પેસા પક્વ-પ્રામ-સર્જૂર આદિ સ્વમાવ સમ્પન્ન આહાર
 હૈ ૩ રાત્રમે વસાને-સે જો આહાર લિષ્પન્ન હોતા હૈ । વહ પર્યુપિત સસન્ન
 (વાસી) આહાર હૈ-જેસે-જલેલી આદિ । યદ્વા—કાઝિક આદિમે રસે
 હુધે આમફલ આદિ પર્યુપિતસમ્પન્ન આહાર હૈ ॥ સુ૦ ૬૭ ॥

રને ઉપરજર સ પત્ર આહાર કહે છે પકવીને (શંખીને) તેવાર કરેલા ભાવ,
 ખીચડી, ડાટલી આદિ આહારને ઉપરજર સ પત્ર આહાર કહે છે જે આહાર
 રને પકવ્યા વિના જ લેવામાં આવે છે-જે આહાર કુશરાડી રીડે જ પકવ ઢોલ
 છે તેને સ્વભાવસ પત્ર આહાર કહે છે જેમકે પકી કેરી, ખજૂર, કેળા
 વગેરે (૪) રાત્રિ પચન્ત આયો આવવા ઇધને જે આહાર તેવાર આવ
 છે તેને પર્યુપિત સ પત્ર કહે છે, જેમકે જલેલી. અથવા વાસળી આદિમા
 રાજેલી કેરીને, રાત્રામાં પક કરેલી અન્યાસ વગેરેની યીચને પક્વ પર્યુપિત
 સ પત્ર આહાર કહે છે ॥ સુ. ૫૭ ॥

વિપરિણામનોપક્રમશ્ચતુર્વિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—પ્રકૃતિવિપરિણામનોપક્રમઃ ૧, સ્થિતિવિપરિણામનોપક્રમઃ ૨, અનુભાવવિપરિણામનોપક્રમઃ ૩, પ્રદેશવિપરિણામનોપક્રમઃ ૪ ।

ચતુર્વિધમલ્પવહુત્વં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—પ્રકૃત્યલ્પવહુત્વં ૧, સ્થિત્યલ્પવહુત્વમ્ ૨, અનુભાવાલ્પવહુત્વં ૩, પ્રદેશાલ્પવહુત્વમ્ ૪ ।

ચતુર્વિધઃ સંક્રમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—પ્રકૃતિસંક્રમઃ ૧, સ્થિતિસંક્રમઃ ૨, અનુભાવસંક્રમઃ ૩, પ્રદેશસંક્રમઃ ૪ ।

ચતુર્વિધ નિધત્તં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—પ્રકૃતિનિધત્તં ૧, સ્થિતિનિધત્તમ્ ૨, અનુભાવનિધત્ત ૩, પ્રદેશનિધત્તમ્ ૪ ।

ચતુર્વિધં નિકાચિત્તં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—પ્રકૃતિનિકાચિત્તં ૧, સ્થિતિનિકાચિત્તમ્ ૨, અનુભાવનિકાચિત્તં ૩, પ્રદેશનિકાચિત્તમ્ ૪ ॥ સૂ ૫૮ ॥

પ્રકૃતિ વિપરિણામોપક્રમ ૧ સ્થિતિવિપરિણામોપક્રમ ૨ અનુભાવવિપરિણામોપક્રમ ૩ ઓર પ્રદેશવિપરિણામોપક્રમ ૪ । અલ્પવહુત્વ ચાર પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ, જૈસે—પ્રકૃત્યલ્પવહુત્વ ૧, સ્થિત્યલ્પવહુત્વ ૨, અનુભાવાલ્પવહુત્વ ૩, ઓર પ્રદેશાલ્પવહુત્વ ૪ । સંક્રમ ચાર કહા ગયા હૈ; પ્રકૃતિ સંક્રમ ૧, સ્થિતિસંક્રમ ૨, અનુભાવસંક્રમ ૩, ઓર પ્રદેશસંક્રમ ૪ । નિધત્ત ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે—પ્રકૃતિનિધત્ત ૧, સ્થિતિ નિધત્ત ૨, અનુભાવનિધત્ત ૩, ઓર પ્રદેશનિધત્ત ૪ । નિકાચિત્ત ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, પ્રકૃતિ નિકાચિત્ત ૧, સ્થિતિ નિકાચિત્ત ૨, અનુભાવ નિકાચિત્ત ૩, ઓર પ્રદેશ નિકાચિત્ત ૪ ।

ભોપક્રમ, (૨) સ્થિતિ વિપરિણામોપક્રમ, (૩) અનુભાવ વિપરિણામોપક્રમ અને (૪) પ્રદેશ વિપરિણામોપક્રમ

અલ્પવહુત્વ ચાર પ્રકારનું કહ્યું છે—(૧) પ્રકૃત્યલ્પ બહુત્વ, (૨) સ્થિત્યલ્પ બહુત્વ, (૩) અનુભાવાલ્પ બહુત્વ અને (૪) પ્રદેશાલ્પ બહુત્વ

સંક્રમ ચાર કહ્યા છે—(૧) પ્રકૃતિ સંક્રમ, (૨) સ્થિતિ સંક્રમ, (૩) અનુભાવ સંક્રમ અને (૪) પ્રદેશ સંક્રમ.

નિધત્તના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પ્રકૃતિ નિધત્ત, (૨) સ્થિતિ નિધત્ત, (૩) અનુભાવ નિધત્ત અને (૪) પ્રદેશ નિધત્ત

નિકાચિત્તના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પ્રકૃતિ નિકાચિત્ત, (૨) સ્થિતિ નિકાચિત્ત, (૩) અનુભાવ નિકાચિત્ત અને (૪) પ્રદેશ નિકાચિત્ત.

ચતુર્વિધ ઉપક્રમઃ પ્રશ્નૃત, તથા-વન્ધનોપક્રમઃ ૧, ઉદીરણોપક્રમઃ ૨, ઉપશમનોપક્રમ ૩, વિપરિણામોપક્રમઃ ૪ ।

વન્ધનોપક્રમઃ ચતુર્વિધઃ પ્રશ્નૃત, તથા-પ્રકૃતિપદનોપક્રમ ૧, સ્થિતિવન્ધનોપક્રમઃ ૨, અનુભાવવન્ધનોપક્રમઃ ૩, પ્રવેશવન્ધનોપક્રમઃ ૪ ।

ઉદીરણોપક્રમઃ ચતુર્વિધઃ પ્રશ્નૃત, તથા-પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમઃ ૧, સ્થિત્યુદીરણોપક્રમઃ ૨, અનુભાવોદીરણોપક્રમઃ ૩, પ્રવેશોદીરણોપક્રમઃ ૪ ।

ઉપશમનોપક્રમઃ ચતુર્વિધઃ પ્રશ્નૃત, તથા-પ્રકૃત્યુપશમનોપક્રમઃ ૧, સ્થિત્યુપશમનોપક્રમઃ ૨, અનુભાવોપશમનોપક્રમઃ ૩, પ્રવેશોપશમનોપક્રમઃ ૪ ।

સૂત્રાર્થ-પાંચ ચાર પ્રકારના કહા ગયા છે જે-પ્રકૃતિપાંચ, સ્થિતિપાંચ ૨ અનુભાવપાંચ ૩ અને પ્રવેશપાંચ ૪ । ઉપક્રમ ચાર કહા ગયા છે, જે-પાંચોપક્રમ ૧, ઉદીરણોપક્રમ ૨, ઉપશમનોપક્રમ ૩, અને વિપરિણામોપક્રમ ૪ । પાંચનોપક્રમ ચાર પ્રકારના કહા ગયા છે, પ્રકૃતિપાંચનોપક્રમ ૧, સ્થિતિપાંચનોપક્રમ ૨, અનુભાવપાંચનોપક્રમ ૩ અને-પ્રવેશપાંચનોપક્રમ ૪ । ઉદીરણોપક્રમ ચાર પ્રકારના છે, પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમ ૧, સ્થિત્યુદીરણોપક્રમ ૨ અનુભાવોદીરણોપક્રમ ૩ અને પ્રવેશોદીરણોપક્રમ ૪ । ઉપશમનોપક્રમ ચાર પ્રકારના કહા ગયા છે । પ્રકૃત્યુપશમનોપક્રમ ૧, સ્થિત્યુપશમનોપક્રમ ૨ અનુભાવોપશમનોપક્રમ ૩ અને-પ્રવેશોપશમનોપક્રમ ૪ । વિપરિણામોપક્રમ ચાર પ્રકારના કહા ગયા છે ।

“ ચતુર્વિધે વધે વજ્રતે ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—જ પદના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પ્રકૃતિ જ ૫, (૨) સ્થિતિ જ ૫, (૩) અનુભાવ જ ૫ અને (૪) પ્રવેશ જ ૫

ઉપક્રમના પાંચ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) જ પાંચક્રમ, (૨) ઉદીરણે ૫ ક્રમ, (૩) ઉપશમનોપક્રમ અને (૪) વિપરિણામોપક્રમ.

જ પદનોપક્રમ ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) પ્રકૃતિજ પદનોપક્રમ, (૨) સ્થિતિ જ પદનોપક્રમ, (૩) અનુભાવ જ પદનોપક્રમ અને (૪) પ્રવેશ જ પદનોપક્રમ.

ઉદીરણોપક્રમ પાંચ ચાર પ્રકારનો છે—(૧) પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમ, (૨) સ્થિત્યુદીરણોપક્રમ (૩) અનુભાવોદીરણોપક્રમ અને (૪) પ્રવેશોદીરણોપક્રમ.

ઉપશમનોપક્રમ પાંચ ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) પ્રકૃત્યુપશમનોપક્રમ (૨) સ્થિત્યુપશમનોપક્રમ, (૩) અનુભાવોપશમનોપક્રમ અને (૪) પ્રવેશોપશમનોપક્રમ.

વિપરિણામોપક્રમ પાંચ ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) પ્રકૃતિવિપરિણા

टीका—“ चतुर्विधे षडे ” इत्यादि—

ब-धः—आत्मनिमित्ते शरीरानां कर्मप्रायोग्यपुद्गलानामात्मना सह प्रकृत्या विविशेषितः सम्ब-धः, स चतुर्विधः प्रकृत्यः, तद्यथा—प्रकृतिबन्धः—प्रकृत्यः—ज्ञानाऽऽवरणीयमभ्रवयोऽष्टौ कर्मभेदाः, सासां बन्धः, यथा—प्रकृतिः—प्रकरणं प्रकृतिः—अविशेषितं कर्म, तस्या बन्धः प्रकृतिबन्धः १, तथा—स्थितिज्ञानाऽऽवरणीयादि कर्मभेदाष्टकस्य जघ-यादि भेदरूपेणावस्थानं, तस्या बन्धः—स्थितिबन्धः २, तथा अनुभावबन्धः—अनुभावः—अनुभवमनुभावः—शुभाशुभकर्मप्रकृतीनां प्रयोगकर्माणां पादानां प्रकृतिस्थितिप्रदेशसंज्ञानां तीव्रमन्दारूपेणाऽऽस्वादनं तस्य बन्धोऽनुभावबन्धः ३, तथा—प्रदेशबन्धः—प्रदेशाः—जीवप्रदेशाः, तेष्वनन्तानन्तकर्मप्रदेशा नामैकैकप्रकृतौ मत्तिनियतपरिमाणानां बन्धः—प्रदेशबन्धः । अत्यपरिमाणगुडादि

इस सूत्रका सार इस प्रकार है—आत्मवशे निमित्तसे शरीर कर्मों के प्रायोग्य पुद्गलों का आत्मा के साथ प्रकृति स्थिति आदि रूपसे जो सम्बन्ध है वह षड् है, यह षड् प्रकृतिषड् आदि भेदसे चार प्रकारका कहा गया है । ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मभेदों का जो बन्ध है वह प्रकृतिबन्ध है, अथवा ज्ञानाऽऽवरणादि रूपसे अविशेषित सामान्य कर्मका जो बन्ध है, वह प्रकृतिबन्ध है । ज्ञानावरणीय आदि भेदसे आठ प्रकार के कर्मों का जघ-यादि भेदसे जो रहनेकी मर्यादाका बन्ध है वह स्थितिबन्ध है । प्रकृति-स्थिति और प्रदेशरूप शुभाशुभ कर्म प्रकृतियों का जो तीव्र मंद आदि रूपसे आस्वादन भोगने का जो बन्ध होता है वह अनुभावबन्ध है । जीवके प्रत्येक प्रदेश पर जो अनन्तानन्त कर्म पुद्गलों का सम्बन्ध

विशेषार्थ—आत्मवशे निमित्तसे शरीर कर्मों के प्रायोग्य पुद्गलों के आत्मा के साथ प्रकृति, स्थिति आदि रूप से सम्बन्ध है तेने ज षड् है ते ज घना प्रकृतिबन्ध आदि चार प्रकार के ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों के भेदों के ज षड् है तेने प्रकृतिबन्ध कहें हैं । अथवा—ज्ञानावरणादि रूपसे अविशेषित सामान्य कर्मों के ज षड् है तेने प्रकृतिबन्ध कहें हैं । ज्ञानावरणीय आदि आठ प्रकार के कर्मों के ज षड् है तेने स्थितिबन्ध कहें हैं । प्रकृति, स्थिति और प्रदेशरूप शुभाशुभ प्रकृतियों के मन्द, तीव्र आदि रूपसे आस्वादन (अनुभवन) करवा रूप के ज षड् है तेने अनुभावबन्ध ज षड् है । जिवना प्रत्येक प्रदेश पर के अनन्तानन्त कर्म पुद्गलों के सम्बन्ध है तेने नाम प्रदेशबन्ध कहें हैं ।

હૈ વહ પ્રદેશવન્ધૈ, અર્થાત્ ગ્રહણ કિયે જાને પર ભિન્ન૨ સ્વભાવમેં પરિણત હોનેવાલી કર્મપુદ્ગલરાશિ સ્વભાવાનુસાર અમુક-અમુક પરિણામોં મેં જો વટ જાતી હૈ એસા યહ પરિણામ વિભાગ હી પ્રદેશવન્ધ હૈ । હસ કથનકા સારાંશ એસા હૈ કિ—કર્મપુદ્ગલ જીવ દ્વારા ગ્રહણ કિયે જાને પર કર્મરૂપ પરિણામ કો પ્રાપ્ત હોતે હૈં । અર્થાત્—ઉનમેં ઉસી સમય ચાર અંશોકા નિર્માણ હોતા હૈ યે અંશ હી વન્ધ કે પ્રકાર હૈં પ્રકૃતિવન્ધ-સ્થિતિવન્ધ અનુભાવવન્ધ ઓર પ્રદેશવન્ધ રૂપ હૈં । કર્મપુદ્ગલોં મેં જ્ઞાનકો રોકને કા દર્શનકો રોકનેકા સુખ-દુઃખ આદિકા જો સ્વભાવ વનતા હૈ વહી પ્રકૃતિવન્ધ હૈ । સ્વભાવનિર્માણ કે સાથ હી ઉસ સ્વભાવ સે અમુક સમય તક અલગ ન હોનેકી મર્યાદા બી પુદ્ગલોં મેં નિર્મિત હોતી હૈ કાલમર્યાદા કા નિર્માણ હી સ્થિતિવન્ધ હૈ । સ્વભાવનિર્માણ કે સાથ હી ઉસમેં તીવ્રતા-મન્દતા આદિ રૂપમેં ફલાનુભવ કરાનેવાલી વિશેષતાઈ વંધતી હૈં । એસી વિશેષતા હી અનુભાવવન્ધ હૈ । ગ્રહણ કિયે જાને પર ભિન્ન ભિન્ન સ્વભાવમેં પરિણત હોનેવાલી કર્મપુદ્ગલરાશિકા અમુક અમુક વિભાગમેં વટ જાના પ્રદેશવન્ધ હૈ, યહી વાત ટીકાકારને વૃદ્ધોક્ત મોદક કે દૃષ્ટાન્ત સે સ્પષ્ટ

બાદ ભિન્ન ભિન્ન સ્વભાવે પરિણત થનારી કર્મપુદ્ગલ રાશિ સ્વભાવાનુસાર અમુક અમુક પરિણામોમાં જે વહેંચાઈ ગય છે, તે પરિણામ વિભાગને જ પ્રદેશવન્ધ કહે છે. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

કર્મપુદ્ગલ ન્યારે જીવ દ્વારા ગ્રહણ કરાય છે ત્યારે કર્મરૂપ પરિણામને પ્રાપ્ત કરે છે એટલે કે તેમાં એ જ સમયે ચાર અંશોનું નિર્માણ થાય છે. તે અંશો જ બન્ધના પ્રકાર રૂપ-પ્રકૃતિબન્ધ, સ્થિતિબન્ધ આદિ રૂપ છે. કર્મ પુદ્ગલોમાં જ્ઞાનને રોકવાનો, દર્શનને રોકવાનો, સુખદુઃખાદિનો અનુભવ કરાવવાનો આદિ જે સ્વભાવ બને છે, એ જ પ્રકૃતિબન્ધ રૂપ છે. સ્વભાવનું નિર્માણ થવાની સાથે જ તે સ્વભાવમાં જ અમુક કાળની મર્યાદા સુધી રહેવાનું પણ તે કર્મ પુદ્ગલોને માટે નિર્મિત થાય છે. આ કાળમર્યાદાનું નિર્માણ જ સ્થિતિબન્ધ છે. સ્વભાવ નિર્માણની સાથે સાથે જ તેમાં તીવ્રતા, મન્દતા, આદિ રૂપે ફલાનુભવન કરાવનારી વિશેષતાઓનું પણ નિર્માણ થાય છે, એવી વિશેષતા જ અનુભાવબન્ધ રૂપ છે. ગ્રહણ થયા બાદ જુદા જુદા સ્વભાવમાં પરિણત થનારી કર્મપુદ્ગલ રાશિનું અમુક અમુક વિભાગમાં વિભક્ત થઈ જવું, તેનું નામ પ્રદેશબન્ધ છે

टीका—“ चतुर्विधे वंचे ” इत्यादि—

वन्धः—आत्मनिमित्ते शरीतानां कर्मप्रायोग्यपुद्गलानामात्मना सह प्रकृत्या विविशेषितः सम्बन्धः, स चतुर्विधः प्रकृत्यः, तद्यथा—प्रकृतिवन्धः—प्रकृत्या—ज्ञानाऽऽवरणीयप्रसृतयोऽष्टौ कर्मभेदाः, तासां वन्धः, यद्वा—प्रकृति—प्रकरणं प्रकृतिः—अविशेषित कर्म, तस्या वन्धः प्रकृतिवन्धः १, तथा—स्थितिज्ञानाऽऽवरणीयादि कर्मभेदाष्टकस्य अपन्यादि भेदरूपेणावस्थानं, तस्या वन्धः—स्थितिः वन्धः २, तथा अनुभाववन्धः—अनुभावः—अनुभवमनुभावः—शुभाशुभकर्मप्रकृतीनां प्रयोगकर्मापादानां प्रकृत्यस्थितिप्रवेशसम्बन्धानां तीव्रमन्दादिरूपेणाऽऽस्वादनं तस्य वन्धोऽनुभाववन्धः ३, तथा—प्रवेशवन्धः—प्रवेशः—जीवप्रवेशः, तेज्यनन्तानन्तकर्मप्रवेशानामेकैकप्रकृतौ प्रतिनियतपरिमाणानां वन्धः—प्रवेशवन्धः । अल्पपरिमाणगुहादि

इस सूत्रका सार इस प्रकार है—आत्मवशे निमित्तसे शरीत कर्मों के प्रायोग्य पुद्गलों का आत्मा के साथ प्रकृति स्थिति आदि रूपसे जो सम्बन्ध है वह पंच है, यह पंच प्रकृतिपंच आदि भेदसे चार प्रकारका कहा गया है । ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मभेदों का जो पंच है वह प्रकृतिपंच है, अथवा ज्ञानाऽऽवरणादि रूपसे अविशेषित सामान्य कर्मका जो पंच है, वह प्रकृतिपंच है । ज्ञानावरणीय आदि भेदसे आठ प्रकार के कर्मों का जघन्य आदि भेदसे जो रहनेकी मर्यादाका पंच है वह स्थितिपंच है । प्रकृति-स्थिति और प्रवेशरूप शुभाशुभ कर्म प्रकृतियों का जो तीव्र मंद आदि रूपसे आस्वादन भोगने का जो पंच होता है वह अनुभावपंच है । जीवके प्रत्येक प्रवेश पर जो अनन्तानन्त कर्म पुद्गलों का सम्बन्ध

विशेष—आत्मवशे निमित्तभी शरीत कर्मों का प्रायोग्य पुद्गलों का आत्मा की साथ प्रकृति, स्थिति आदि रूपों के सम्बन्ध है तेने ज पंडे है ते ज पन्ना प्रकृतिवन्ध आदि चार प्रकार है ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों के ज पंडे है तेने प्रकृतिवन्ध पंडे है अथवा—ज्ञानावरणीय आदि अविशेषित सामान्य कर्मों के ज पंडे है तेने प्रकृतिवन्ध पंडे है ज्ञानावरणीय आदि आठ प्रकारका कर्मों के ज पंडे है तेने स्थितिवन्ध पंडे है प्रकृति, स्थिति जने प्रवेशरूप शुभाशुभ प्रकृतिव्याप्त जे मन्द, तीव्र आदि रूप आस्वादन (अनुभाव) करना रूप के ज पंडे है तेने अनुभाव ज पंडे है ज पन्ना प्रत्येक प्रवेशपर जे अनन्तानन्त कर्म पुद्गलों का सम्बन्ध है तेनु नाम प्रवेशवन्ध पंडे जे पञ्च कथा

શુભાશુભતીવ્રમન્દાદિરત્નુભાવવન્ધઃ । તથા તસ્યૈવ મોદકસ્ય યથા—કણિકાદિ દ્રવ્યાણાં પરિમાણત્વં તથા કર્મણોઽપિ પુદ્ગલાનાં પ્રતિનિયતપ્રમાણતા પ્રદેશવન્ધ इति ४

‘ચત્ત્વિહે ઉવક્રમે’—ઇત્યાદિ—ઉપક્રમઃ—ઉપક્રમ્યતે—ક્રિયતેઽનેનેત્યુપક્રમઃ—જીવશક્તિવિશેષઃ, સ ચ કર્મણો વન્ધનોદીરણોપશમનવિપરિણામનારૂપેણ પરિણમને હેતુભૂતઃ, મ એવ જીવશક્તિવિશેષોઽન્યત્ર કરણશબ્દેન રૂઢઃ । યદ્વા—ઉપક્રમઃ—ઉપક્રમણગુપક્રમઃ—વન્ધનપ્રમૃત્તીનાં ચતુર્ણામારમ્ભઃ इत्यर्थः, ઉક્તં ચ—“સ્થાદારમ્ભ ઉપક્રમઃ” इति ।

તીવ્ર રૂપસે મન્દરૂપસે જો ઉસકા ફલ પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ—અનુભાવવન્ધ હૈ । તથા જિસ પ્રકાર સે ઉસ મોદક મેં આટા આદિ દ્રવ્યોં કા પ્રમાણ હોતા હૈ ઉસી પ્રકારસે કર્મોં મેં જો પુદ્ગલોં કા પ્રતિનિયત પ્રમાણ હોતા હૈ વહ પ્રદેશવન્ધ હૈ ।

“ચત્ત્વિહે ઉવક્રમે” જીવકા જો શક્તિ વિશેષ હૈ વહ ઉપક્રમ હૈ, યહ શક્તિ વિશેષરૂપ ઉપક્રમ કર્મોં કે વન્ધમેં ઉદીરણમેં ઉપશમનમેં ઓર વિપરિણામ રૂપસે પરિણમન મેં હેતુભૂત હોતા હૈ । યહી જીવ કા શક્તિ વિશેષરૂપ ઉપક્રમ અન્યત્ર કરણ શબ્દસે રૂઢ હુવા હૈ । અથવા—કર્મોં મેં પ્રકૃતિવન્ધ આદિ ચાર રૂપસે જો પરિણમન હોને કા પ્રારમ્ભ હોતા હૈ વહ ઉપક્રમ હૈ ।

ઉક્તઞ્ચ—“સ્થાદારમ્ભ ઉપક્રમઃ” આરમ્ભકા નામ ઉપક્રમ હૈ । કર્મમાં પણ દેશધાતી, સર્વધાતી રૂપ રસ હોય છે, તથા તીવ્ર, મન્દ આદિ રૂપ તેનું જે ફલ પ્રાપ્ત થાય છે, તેનું નામ અનુભાવવન્ધ છે. તથા જેમ તે લાડુમાં લોટ, ઘી આદિનું અમુક નિયત પ્રમાણ હોય છે, એ જ પ્રમાણે કર્મોમાં પુદ્ગલોનું જ પ્રતિનિયત પ્રમાણ હોય છે, તેનું નામ જ પ્રદેશવન્ધ છે.

“ચત્ત્વિહે ઉવક્રમે” ઇત્યાદિ—

જીવની જે શક્તિવિશેષ હોય છે, તેનું નામ ઉપક્રમ છે. તે શક્તિવિશેષ રૂપ ઉપક્રમ કર્મોના બન્ધમાં, ઉદીરણમાં, ઉપશમનમાં અને વિપરિણામ રૂપે પરિણમનમાં કારણભૂત હોય છે. જીવના શક્તિવિશેષ રૂપ ઉપક્રમને અન્યત્ર કારણ રૂપે પણ ઓળખેલ છે અથવા કર્મોમાં પ્રકૃતિબન્ધ આદિ ચાર રૂપે જે પરિણમન થવાનો પ્રારંભ થાય છે, તેનું નામ જ ઉપક્રમ છે. કેહું પણ છે કે “સ્થાદારમ્ભ ઉપક્રમઃ” આરમ્ભ કરે તેનું નામ ઉપક્રમ છે, અથવા ઉપક્રમ વસ્તુપરિકર્મ (વસ્તુના સંસ્કાર) રૂપ હોય છે. - જો કે

મોદકવદિતિ । અથેવ દુદ્ધોક્તો મોદકઘ્ણાન્તોઽસ્તિ-યથા-મોદકો કષિકા ગુરુત્ત્વ-
 ઘટ્ટ માષ્ટાદિત્રગ્ધવદઃ । સન્ કોઽપિ પિત્તહરઃ, કોઽપિ કફહરઃ, કોઽપિ માષા-
 કોઽપિ શુદ્ધિકરઃ, કોઽપિ વ્યામોહકર, તથા-કર્મપ્રકૃતિઃ કાષિન્મ્હાન્માષ્વોત્તિ-
 કાષિદ્વર્ણન, કાષિત્ સુસુદુ સ્વાદિ વેદનાદ્યુત્પાન્નયતિ । તથા તસ્યેવ મોદકસ્ય
 યથા અભિનાશમાત્રેન કાલનિયમરૂપા સ્થિતિર્ભવતિ, તથા કર્મજોઽપિ અભિના-
 શમાત્રેન નિષ્પત્તકાલાવસ્થાને સ્થિતિર્ભવતિ મયતિ, તથા-તસ્યેવ મોદકસ્ય યથા-
 સ્તિન્ગમમધુરાદિરેકગુણદ્વિગુણાદિમાત્રેન રસો ભવતિ, તથા કર્મજોઽપિ દશમાર્ગ-

કી છે, જાણે—માટા-ગુરુ-છૂત ઓર કટુ આદિ દ્રવ્યકો મિલાકર બાંધ
 ગયા કોઈ એક મોદક બાતહર હોતા છે, કોઈ એક પિત્તહર હોતાઈ, કોઈ
 એક કફહર હોતાઈ, કોઈએક માંણહર હોતાઈ, કોઈએક શુદ્ધિહર હોતાઈ, ઓર
 કોઈએક વ્યામોહકર (મૂછઠીકરનેવાલા) હોતાઈ વસી પ્રકારસે જીવમાત્ર
 ગૃહીત કર્મપુદ્ગલ કર્મમાત્રસે પરિણમિત હોકર કોઈએક કર્મપ્રકૃતિ જ્ઞાન
 કો આપ્ત કરતી છે કોઈએક વર્ણનકો આપ્ત કરતી છે, કોઈએક પ્રકૃતિ
 સુસુદુઃસ્વ આદિક વેદનકો ઉત્પન્ન કરતી છે, કર્મો કા જો રચનાઈ વહી
 પ્રકૃતિભવ છે । તથા વસ મોદકકી જિસ પ્રકાર સે અભિનાશ માત્રકો
 હેકર અમુક કાલ તક રહનેકી મર્યાદા હોતી છે તેસે જી કર્મો કી ખી
 નિયત કાલ તક જો રહનેકી મર્યાદા છે વહી સ્થિતિભવ છે । તથા જિસ
 પ્રકારસે મોદક છઠ્ઠાઈમેં એકગુણ-દોગુણા આદિ રુપસે રસ હોના છે વસી
 પ્રકારસે કર્મ મેં ખી જો વેશાઘાતી-સર્વશાતી રુપસે રસ હોતા છે તથા

એ જ વાતનું ટીકાકારે વૃદ્ધોક્ત મિષ્ટક (લાડુ) ના ક્ષાન્તથી પ્રતિપાદ
 કર્યું છે એમકે કોટ, ખી મોળ અને કઠપા શેથી આદિ દ્રવ્યના મિશ્રણથી
 બનાવેલો કોઈ એક લાડુ વાતહર હોય છે, કોઈ એક લાડુ પિત્તહર હોય
 છે, કોઈ એક લાડુ કફનું યમન કરનારો હોય છે, કોઈ એક પ્રાણહર હોય
 છે, કોઈ એક શુદ્ધિહર હોય છે, અને કોઈ એક વ્યામોહકર હોય છે, એ જ
 પ્રમાણે છવ દાશ ગૃહીત કર્મપુદ્ગલ કર્મોએ પરિણમિત થાય છે ત્યારબાદ
 કોઈ એક કર્મપ્રકૃતિ જ્ઞાનને આપ્ત કરે છે કોઈ એક કર્મપ્રકૃતિ વર્ણનને
 આપ્ત કરે છે અને કોઈ એક પ્રકૃતિ સુખદુઃખાદિ રૂપ વેદનને ઉત્પન્ન કરે
 છે આ પ્રકારનો કર્મોનો જો સરભાવ છે એ જ પ્રકૃતિભવ છે એમ તે લાડુની
 અભિનાશભાવની અપેક્ષાએ અમુક કાળ સુધી રહેવાની મર્યાદા હોય છે, તેમ
 કર્મોની પણ નિષ્પત્ત કાળ સુધી રહેવાની જો મર્યાદા હોય છે તેને સ્થિતિભવ
 કહે છે એમ લાડુમાં એક ગણો, બે ગણો આદિ રૂપ રસ હોય છે, તેમ

તથા—ઉદીરણોપક્રમઃ—ઉદીરણો—અપ્રાપ્તકાલફલાનાં કર્મણામુદયાવલિકાયાં પ્રવેશનમ્, ઉક્તં ચ—

“ જં કરણેણોકઢ્ઠિય, ઉદણ દિજ્જહ ઉદીરણાણસા ।

પગ્ગઈઠિઈ અણુભાવણ્ણસમૂલત્તરવિભાગા ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—યત્ કરણેનાવકૃત્યોદયે દીયત ઉદીરણૈષા ।

પ્રકૃતિસ્થિત્યનુભાવપ્રદેશમૂલોત્તરવિભાગાઃ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તસ્યા ઉપક્રમઃ તદ્ભૂતો વા ઉપક્રમ ઇતિ । ૨ ।

તથા—ઉપશમનોપક્રમઃ—ઉપશમના - ઉદયોદીરણાનિધત્તનિકાચનાકરણા-યોગ્યતયા કર્મણોઽવસ્થાપના, તસ્યા ઉપક્રમઃ ઉપશમનોપક્રમઃ ઉપશમનાયાં ગ્રીણિ કરણાનિ ભવન્તિ, ઉક્તશ્ચ—

જો પરસ્પર મેં સમ્બન્ધનરૂપ બન્ધન હૈં ઉસંકા ઉપક્રમ હોતા હૈં । અર્થાત્ આરમ્ભ હોતા હૈં । તથા વસ્તુપરિકર્મ રૂપ તૃતીયાર્થ પક્ષમેં ઉપક્રમ કાં એસા અર્થ હોના હૈં, કિ—ગૃહીત કર્મવર્ગણાઓં કા બદ્ધાવસ્થારૂપમેં કરના સો-બન્ધનોપક્રમ હૈં । ઉદીરણોપક્રમ—જિન કર્મેં કા ફલ દેનેકા જો સમય નહોં હૈં ઉનકો ઉસ કાલમેં ફલ દેનેયોગ્ય બનાના હસકા નામ ઉદીરણા હૈં, ઉદીરણાસે કર્મેં કો હઠાત્ ઉદયાવલિકામેં સ્વીંચા જાતા હૈં ।

ઉક્તશ્ચ—“ જં કરણેણોકઢ્ઠિય ” ઇત્યાદિ કર્મ કો સ્વીંચ કર ઉદયાવલિકા મેં લાના । હસ ઉદીરણા કા જો ઉપક્રમ હૈં, યા—ઉદીરણારૂપ જો ઉપક્રમ હૈં વહ ઉદીરણોપક્રમ હૈં ૨ ઉદય હોનેમેં કર્મેંકો અયોગ્ય કરના, ઉદીરણાકો અયોગ્ય કરના નિધત્ત કો અયોગ્યકરના નિકાચનાં કો અયોગ્ય કરના હસકા નામ ઉપશમના

જે પરસ્પરના સબંધન (સંયોજન) રૂપ બન્ધન છે, તેનો ઉપક્રમ (આરંભ) થાય છે. જે ઉપક્રમનો વસ્તુપરિકર્મ રૂપ અર્થ લેવામાં આવે, તે બન્ધનો-પક્રમનો આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે—ગૃહીત કર્મવર્ગણાઓને બદ્ધાવસ્થા રૂપ કરવી તેનું નામ બન્ધનોપક્રમ છે.

ઉદીરણોપક્રમનો ભાવાર્થ—જે કર્મોનો ફલ દેવાનો જે સમય ન હોય, તે સમયે તેને ફલ દેવા યોગ્ય બનાવવું તેનું નામ ઉદીરણા છે. ઉદીરણા દ્વારા કર્મોને બળજબરીથી ઉદયાવલિકામાં ખેંચી લેવામાં આવે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ જંકરણેણોકઢ્ઠિય ” ઇત્યાદિ—તે ઉદીરણાનો જે ઉપક્રમ છે અર્થવા ઉદીરણારૂપ જે ઉપક્રમ છે તેનું નામ ઉદીરણોપક્રમ છે.

ઉપશમનોપક્રમનો ભાવાર્થ—કર્મોને ઉદયાવલિકામાં ન આવે એવા કરવા, ઉદીરણાને માટે અયોગ્ય કરવા, નિધત્તને માટે અયોગ્ય કરવા અને નિકાચનને માટે પણ અયોગ્ય કરવા તેનું નામ ઉપશમના છે. તે ઉપશમનાનો જે ઉપક્રમ

અર્થવા—ઉપક્રમ—વસ્તુપરિકર્મરૂપ, યદ્યપ્ય-યત્ર ઉપક્રમશબ્દેન વસ્તુપરિ-
કર્મ વસ્તુવિનાશો ધોક્તો, તથાપ્યત્ર વસ્તુપરિકર્મરૂપ વ્યાપ્યો દુષ્ટો. સ વતુર્વિષ્ણુ-
પ્રકૃત, તથા—વચ્નનોપક્રમ, ઉપક્રમસ્ય ઔષ્ણિકિવિશેષરૂપાર્થપક્ષે વચ્નનોપક્રમ
સ્વાયમર્થ—તથાદિ—વચ્ન—કર્મપુટ્ત્રલોનાં જીવમદેશોનાં ચ પરસ્પરં સમ્બન્ધનમ્,
પરતુવચ્નન ચ સૂત્રવદ્લોહણાલાકાસમ્બન્ધવદ્ ધોષ્યમ્, તસ્ય ઉપક્રમઃ=પરિભામ
નહેતુધૂતો જીવશક્તિવિશેષો વચ્નનોપક્રમઃ। ઉપક્રમસ્ય આરમ્ભાથપક્ષેતુ—પૂર્વોક્તા-
ર્થકસ્ય વચ્નનસ્ય ઉપક્રમઃ=આરમ્ભઃ। વસ્તુપરિકર્મેતિ તૃતીયાધ્યપક્ષેતુ—દૃષ્ટિકર્મ
વર્ગણાયા વદાવસ્વીકરણ વચ્નનમ્, તદુપ ઉપક્રમ=વસ્તુપરિકર્મરૂપ ઇતિ। ૧।

અર્થવા - ઉપક્રમ વસ્તુ પરિકર્મ વસ્તુ કા સંસ્કાર કરને રૂપ
હોતા છે. યદ્યપિ-અન્યત્ર ઉપક્રમ શબ્દસે વસ્તુ પરિકર્મ ઓર વસ્તુ
વિનાશ પે વો કહે ગયે હૈ તો મી પહાં પર ઉપક્રમ શબ્દકા વસ્તુ પરિ-
કર્મ રૂપ હી અર્થદૃષ્ટિત હુવા છે. યહ ઉપક્રમ આર પ્રકાર કા કહા ગયા
છે, જૈસે—વચ્નનોપક્રમ આદિ. જબ ઉપક્રમ શબ્દ કા અર્થ જીવ કા
શક્તિવિશેષ પરક હૈ—હસ પક્ષમે વચ્નનોપક્રમ કા એસા અર્થ હોતા હૈ—
જીવમદેશોં કા ઓર કર્મપુટ્ત્રલોં કા પરસ્પર મેં સમ્બન્ધ હોતા હૈ હસકા
નામ વચ્નન હૈ. જૈસે — સૂત્રવદ્ લોહણાલાકાઓં કા પરસ્પરમે સમ્બન્ધ
(સમ્બદ્ધ) હોતા હૈ, અતાઃ—યહ વચ્નન સૂત્રવદ્ લોહણાલાકાઓંકે સમ્બન્ધકી
નાઈ હોતા હૈ એસા જાનના બાહિયે. હસ વચ્નન કા જો ઉપક્રમ હૈ,
અર્થાત્ હસ વચ્નનકે પરિણમનકા હેતુધૂત જો જીવકા શક્તિવિશેષ હૈ વહ
વચ્નનોપક્રમ હૈ. તથા—જબ ઉપક્રમ શબ્દ આરમ્ભાર્થે પરક લિયા જાતા
છે, તપ્ હસકા અર્થ એસા હોતા હૈ કિ જીવમદેશોં કા ઓર કર્મપુટ્ત્રલોંકા

અન્યત્ર ઉપક્રમ શબ્દ દ્વારા વસ્તુપરિકર્મ અને વસ્તુ વિનાશ, આ બે અર્થ
શબ્દો કરવામાં આવ્યા છે, છતાં અહીં તે વસ્તુપરિકર્મ રૂપ અર્થ જ ગ્રહીત
થયો છે તે ઉપક્રમના બ વચ્નનોપક્રમ આદિ આર પ્રકાર કહ્યા છે તે ઉપક્રમનો
શક્તિવિશેષ રૂપ અર્થ શબ્દો કરવામાં આવે—શક્તિવિશેષ રૂપ ઉપક્રમને શબ્દો
કરવામાં આવે, તે બ વચ્નનોપક્રમનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે—

અવપ્રદેશોનું અને પુટ્ત્રલોનું પરસ્પરની સાથે જે સમ્બન્ધ (સંબંધન)
થાય છે, તેનું નામ વચ્નન છે. દોરી વડે બદ્ધ બેની લોહાની યત્રીઓનો
પરસ્પરમાં જેવો સબંધ હોય છે એવો જ આ સબંધ હોય છે એમ સમજવું
આ વચ્નનનો જે ઉપક્રમ છે, એટલે કે આ વચ્નનના પરિણમનના કારણરૂપ
અવની શક્તિવિશેષ રૂપ જે ઉપક્રમ છે તેને બ વચ્નનોપક્રમ કહે છે.

જે ઉપક્રમ શબ્દનો આરમ્ભ અર્થ અહીં શબ્દો કરવામાં આવે તે
વચ્નનોપક્રમનો આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે—અવપ્રદેશોનું અને કર્મપુટ્ત્રલોનું

વિવિધૈઃ પ્રકારૈઃ કર્મણાં કરણવિગ્રેષેણ પરિણામનાઽવસ્થાન્તરપ્રાપ્તિયા મા તસ્યા ઉપક્રમો વિપરિણામનોપક્રમઃ, યદ્યપિ વિપરિણામના વન્ધનોદીરણોપજામનામુ તથા-તદન્યાપૃથ્વોદીરણાનિધત્તનિકાચનામ્વપિ પતેતે તથાપીહ સામાન્યરૂપત્વાત્ પૃથગુક્તાઃ।

“ વંધણોવક્રમે ચડવિવહે ” ઇત્યાદિ—વન્ધનોપક્રમશ્ચતુર્વિધઃ પ્રજાત, તદ્યથા-પ્રકૃતિવન્ધનોપક્રમઃ ૧, સ્થિતિવન્ધનોપક્રમઃ ૨, અનુભાગવન્ધનોપક્રમઃ ૩, પ્રદેશ-વન્ધનોપક્રમશ્ચેતિ ૪, તત્ર પ્રકૃતિવન્ધન-જ્ઞાનાવરણીયાદિકર્મભેદાદુક્તિર્નિર્વર્તનં, તસ્ય ઉપક્રમ-યોગલક્ષણો જીવપરિણામ, તસ્ય પ્રકૃતિવન્ધનહેતુત્વાત્ ૧ । તથા-સ્થિતિવન્ધનોપક્રમ-સ્થિતિવન્ધનમ્-અત્રૈવ મત્રે પ્રાગુક્તં, તસ્યોપક્રમઃ સ્થિતિવ-

કર્મોની કી વિવિધ પ્રકારસે પરિણામના-અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિયા હોતી હૈ વહ વિપરિણામના હૈ. હસ વિપરિણામનાકા જો ઉપક્રમ હૈ-વહ વિપરિણામનોપક્રમ હૈ । યદ્યપિ - વિપરિણામના વન્ધન-ઉદીરણા, ઉપજામનાં હનમેં, તથા-હનસે અન્ય ઉદય, ઉદીરણા નિધત્ત, ઓર નિકાચનાં હનમેં ભી રહતી હૈ તો ભી યહાં સામાન્ય રૂપ હોનેસે વહ પૃથક્ક કહી ગઈ હૈ । ૪ ।

“ વંધણોવક્રમે ચડવિવહે ” ઇત્યાદિ । વન્ધનોપક્રમ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે—પ્રકૃતિ વન્ધનોપક્રમ ૧ ઇત્યાદિ-જ્ઞાનાવરણીય આદિ ભેદોસે કર્મોની કી આઠ પ્રકૃતિયાં હૈ, હન આઠ પ્રકૃતિરૂપ કર્મકા વન્ધન હોના યહ પ્રકૃતિવન્ધન હૈ । હસ પ્રકૃતિવન્ધનકા જો ઉપક્રમ વહ-પ્રકૃતિ વન્ધનોપક્રમ હૈ, વહ—પ્રકૃતિવન્ધનોપક્રમ જીવકા પરિણામ વિશેષ યોગરૂપ હૈ, ક્યોંકિ—યોગ હી પ્રકૃતિવન્ધનકા હેતુ હોતા હૈ । સ્થિતિ-

ક્ષેત્રાદિ અનુસાર જે પરિણામના (અન્ય અવસ્થાની પ્રાપ્તિ) થાય છે તેને અથવા કારણ વિશેષની અપેક્ષાએ કર્મોત્તુ વિવિધ પ્રકારે જે પરિણામના (અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિ) થાય છે, તેને વિપરિણામના કહે છે તે વિપરિણામનાનો જે ઉપક્રમ છે તેને વિપરિણામનોપક્રમ કહે છે. જે કે વિપરિણામનાનો બન્ધન, ઉદીરણા અને ઉપજામનામાં સદ્ભાવ હોય છે, તથા તે સિવાયના ઉદય, નિધત્ત અને નિકાચનામાં પણ વિપરિણામના રહેતી હોય છે, છતાં પણ સામાન્ય રૂપ હોવાથી અહીં તેનું અલગ રીતે પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે

“ વંધણોવક્રમે ચડવિવહે ” ઇત્યાદિ—

બન્ધને પદ્ધતિ પ્રકૃતિ બન્ધનોપક્રમ આદિ ચાર પ્રકાર છે જ્ઞાનાવરણીય આદિ ભેદથી કર્મની આઠ પ્રકૃતિઓ કહી છે તે આઠ પ્રકૃતિઓ રૂપ કર્મોત્તુ બન્ધન થતુ તેનું નામ પ્રકૃતિબન્ધ છે તે પ્રકૃતિબન્ધનો જે ઉપક્રમ છે તેને પ્રકૃતિબન્ધનોપક્રમ કહે છે તે પ્રકૃતિબન્ધનોપક્રમ જીવના પરિણામ વિશેષ યોગરૂપ છે, કારણ કે યોગ જ પ્રકૃતિબન્ધમાં હેતુભૂત (કારણરૂપ) હોય છે

“ ઓઘટ્ટણ-ઉઘટ્ટણ-સંક્રમણાં ચ તિથિ કરણાઈ ”

છાયા—અપવર્તનોદ્વર્તનસંક્રમણાનિ ચ ત્રીણિ કરણાનિ ” ઇતિ । एतानि त्रीणि करणानि देशोपशमनायां भवन्ति, न तु सर्वोपशमनायां, सर्वोपशमनाया मोहनीय एव सद्भावात् । श्रेषाणां सप्तानां कर्मणां सर्वोपशमना न भवति, देशोपशमना तु सर्वेषां कर्मणां भवतीति पर्यवसितोऽर्थः १ तथा—विपरिणामनोपक्रम—बीति-विविधै प्रकारैः—कर्मणां सप्तोदयस्योपशमनापवर्तनोद्वर्तनादिभिः एतत् रूपतयेत्यर्थः, परिणामना—अवस्थान्तरप्रापणा विपरिणामना, यद्वा—विविधैः प्रकारैः गिरिसरि दुपघोलन न्याय से द्रव्य क्षेत्रादिकभिः कर्मणां परिणामना—अवस्थान्तरप्रापणा । अथवा—

हे इस उपशमना का जो उपक्रम है वह उपशमनोपक्रम है । उपशमना में तीन करण होते हैं । एक तो भी है—“ ओघट्टण-उघट्टण-संक्रमणां च तिन्नि करणाई ” अपवर्तन-उद्वर्तन और संक्रमण च तीन करण देशोपशमना में होते हैं—सर्वोपशमनामें नहीं । मोहनीयमें ही सर्वोपशमनाका सद्भाव होता है । याकी के जो सात कर्म हैं—उनमें सर्वोपशमना नहीं होती है । देशोपशमना ही होती है । तथा—मोहनीय में दोनों प्रकारकी उपशमना होती है—देशोपशमना भी होती है और सर्वोपशमना भी होती है । विपरिणामनोपक्रम—कर्मों की छि-विविध प्रकारों से सत्ता, उदय, क्षयोपशम, अपवर्तन, उद्वर्तन आदि रूपसे जो परिणामना—अवस्थान्तर प्रापणा है, वह अथवा—विविध प्रकारसे जो—गिरि सरिदुपघोलन न्याय से द्रव्य क्षेत्रादिके अनुसार कर्मोंकी परिणामना—अवस्थान्तर प्रापणा होती है वह, अथवा—कारणविशेषको लेकर जो

ॐ તેનું નામ ઉપશમના ઉક્રમ છે ઉપશમનામાં ત્રણ કરણ હોય છે એક પછી છે કે—“ ઓઘટ્ટણ-ઉઘટ્ટણ-સંક્રમણાઈ ચ તિથિ કરણાઈ ” અપવર્તન, ઉદ્વર્તન અને સંક્રમણ આ ત્રણ કરણોનો સદ્ભાવ દેશોપશમનામાં હોય છે સર્વોપશમનામાં હોતો નથી મોહનીયમાં જ સર્વોપશમનાનો સદ્ભાવ હોય છે બાકીના સાત કર્મોમાં સર્વોપશમનાનો સદ્ભાવ હોતો નથી પણ દેશોપશમનાનો જ સદ્ભાવ હોય ॥ તથા મોહનીયમાં બન્ને પ્રકારની ઉપશમનાનો સદ્ભાવ ॥ એટલે કે સર્વોપશમનાનો પણ સદ્ભાવ હોય છે અને દેશોપશમનાનો પણ સદ્ભાવ હોય છે

વિપરિણામોપક્રમનો ભાવાર્થ—કર્મોની જે વિવિધ પ્રકારે સત્તા, ઉદય, ક્ષયોપશમ અપવર્તન, ઉદ્વર્તન આદિ રૂપે જે પરિણામના (અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિ) થાય છે, તેને અથવા વિવિધ પ્રકારે જે—ગિરિ સરિ દુપઘોલન ન્યાય

વિવિધૈઃ પ્રકારૈઃ કર્મણાં કરણવિગ્રહેણ પરિણામનાઽવસ્થાન્તરપ્રાપ્તિના મા. તમ્યા ઉપક્રમો વિપરિણામનોપક્રમઃ, યદ્યપિ વિપરિણામના બંધનોદીરણોપશમનામુ તથા— તદન્યાપૂર્વયોદીરણાનિધત્તનિકાચનાસ્વપિ વર્તતે તથાપીહ સામાન્યરૂપત્વાત પૃથગુક્તાઃ।

“ બંધનોવક્રમે ચડન્વિદે ” ઇત્યાદિ—બંધનોપક્રમશ્ચતુર્વિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદ્યથા— પ્રકૃતિબંધનોપક્રમઃ ૧, સ્થિતિબંધનોપક્રમઃ ૨, અતુભાગબંધનોપક્રમઃ ૩, પ્રદંશ-બંધનોપક્રમશ્ચેતિ ૪, તત્ર પ્રકૃતિબંધન-જ્ઞાનાવરણીયાદિકર્મભેદાદૃક્નિર્વર્તનં, તસ્ય ઉપક્રમ—યોગલક્ષણો જીવપરિણામઃ, તસ્ય પ્રકૃતિબંધનહેતુત્વાત્ ૧। તથા— સ્થિતિબંધનોપક્રમ—સ્થિતિબંધનપૂ—અત્રેવ મૂત્રે પ્રાગુક્તં, તસ્યોપક્રમઃ સ્થિતિવ-

કર્મોંની કી વિવિધ પ્રકારસે પરિણામના—અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિના હોતી હૈ વહ વિપરિણામના હૈ. હમ વિપરિણામનાકા જો ઉપક્રમ હૈ—વહ વિપરિણામનોપક્રમ હૈ। યદ્યપિ—વિપરિણામના બંધન—ઉદીરણા, ઉપશમના. હનપે, તથા—હનસે અન્ય ઉદય, ઉદીરણા નિધત્ત, ઔર નિકાચના હનમેં મી રહતી હૈ તો મી યહાં સામાન્ય રૂપ હોનેસે વહ પૃથક્ કહી ગઈ હૈ। ૪।

“ બંધનોવક્રમે ચડન્વિદે ” ઇત્યાદિ। બંધનોપક્રમ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે—પ્રકૃતિ બંધનોપક્રમ? ઇત્યાદિ—જ્ઞાનાવરણીય આદિ ભેદોંસે કર્મોંની કી આઠ પ્રકૃતિયાં હૈ, હન આઠ પ્રકૃતિરૂપ કર્મકા બંધન હોના યહ પ્રકૃતિબંધન હૈ। હસ પ્રકૃતિબંધનાકા જો ઉપક્રમ વહ—પ્રકૃતિ બંધનોપક્રમ હૈ, યહ—પ્રકૃતિબંધનોપક્રમ જીવકા પરિણામ વિશેષ યોગરૂપ હૈ, ક્યોંકિ—યોગ હી પ્રકૃતિબંધકા હેતુ હોતા હૈ। સ્થિતિ-

ક્ષેત્રાદિ અનુસાર જે પરિણામના (અન્ય અવસ્થાની પ્રાપ્તિ) થાય છે તેને અથવા કારણ વિશેષની અપેક્ષાએ કર્મોંનું વિવિધ પ્રકાર જે પરિણામ (અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તિ) થાય છે, તેને વિપરિણામના કહે છે તે વિપરિણામનાનો જે ઉપક્રમ છે તેને વિપરિણામનોપક્રમ કહે છે. જે કે વિપરિણામનાનો બંધન, ઉદીરણા અને ઉપશમનામા સદ્ભાવ હોય છે, તથા તે સિવાયના ઉદય, નિધત્ત અને નિકાચનામાં પણ વિપરિણામના રહેલી હોય છે, છતાં પણ સામાન્ય રૂપ હોવાથી અહીં તેનું અલગ રીતે પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું છે

“ બંધનોવક્રમે ચડન્વિદે ” ઇત્યાદિ—

બંધને પક્રમના પ્રકૃતિ બંધનોપક્રમ આદિ ચાર પ્રકાર છે જ્ઞાનાવરણીય આદિ લેહથી કર્મની આઠ પ્રકૃતિઓ કહી છે તે આઠ પ્રકૃતિઓ રૂપ કર્મોંનું બંધન થવું તેનું નામ પ્રકૃતિબંધ છે તે પ્રકૃતિબંધનો જે ઉપક્રમ છે તેને પ્રકૃતિબંધનોપક્રમ કહે છે તે પ્રકૃતિબંધનોપક્રમ જીવના પરિણામ વિશેષ યોગરૂપ છે, કારણ કે યોગ જ પ્રકૃતિબંધમા હેતુભૂત (કારણરૂપ) હોય છે

“ધનોપક્રમઃ, સ ચ કપાયસ્કપો જીવ્યપરિણામઃ, સ્થિતૈઃ કપાયદેહકરત્વાત્ ૨। ત્વા-
 અનુભાવય ધનોપક્રમ - અનુભાવય ધનસ્ય - પ્રાણુક્તસ્ય ઉપક્રમઃ, અપમપિ કપાયસ્ક
 ૩। ત્વા-પ્રદેશકન્યનોપક્રમ - પ્રાણુક્તસ્ય પ્રદેશય ધનસ્યોપક્રમ - યોગરૂપોમીયપ
 રિણામ, યત ઉક્તમ્—

“ જોગા પયઙ્ગિપયસ ઠિઠ અણુભાવં કપાયઞો કુણઙ્ગ ”

છાયા—યોગાત્ પ્રકૃતિ-પ્રદેશૌ સ્થિત્યનુભાવૌ કપાયતઃ કરોતિ ” શ્વિ,
 યદ્વા-પ્રકૃતિપ્રમૃતિ ધન્યનાનામુપક્રમાઃ—આસ્માઃ પ્રકૃત્યાદિય ધનોપક્રમા ધોષ્યાઃ
 ઇવમન્યપ્રાપિ । ૪ ।

“ ધનોપક્રમ ” હમી સૂત્રમેં પહેલે સ્થિતિય ધ કહા જા શુકા હૈ મો
 હસકા જો ઉપક્રમ હૈ વહા—સ્થિતિય ધનોપક્રમ હૈ । યહ જીવ્ય કા પરિ
 ણામ વિશેષ જો કપાય હૈ તદ્વપ હૈ । વર્ણે કિ—સ્થિતિય ધના કારણ-
 કપાય હૈ પ્રાણુક્ત લક્ષણવાળા અનુભાવય ધન કા જો ઉપક્રમ હૈ વહ-
 અનુભાવ ધ ધનોપક્રમ હૈ યહ—અનુભાવ ધ ધનોપક્રમ મી કપાયસ્ક હી
 હૈ । ત્વા-પહેલે કથિત પ્રદેશય ધનકા જો ઉપક્રમ હૈ વહ—પ્રદેશય ધ
 નોપક્રમ હૈ યહ—પ્રદેશય ધનોપક્રમ મી યોગરૂપ જીવ્ય પરિણામ વિશેષ
 રૂપ હોતા હૈ ।

ઉક્ત મી હૈ—“ જોગા પયઙ્ગિપયસ ઠિઠ અણુભાવં કપાયઞો કુણઙ્ગ ”
 જીવ્ય યોગસે પ્રકૃતિ ઓર પ્રદેશય ધ જન દોનો ધ ધોંકો કરતા હૈ,
 અર્થાત—પ્રકૃતિય ધ ઓર પ્રદેશ કોઘયોગસે હોતે હૈ, ઓર સ્થિતિય ધ
 ઓર અનુભાવય ધ કપાય સં હોતે હૈ । અથવા—પ્રકૃતિ આદિ ધન્યનોકા

સ્થિતિ જ ધનોપક્રમ—આ સૂત્રમા જ સ્થિતિય ધનો આવાય પહેલા
 જતાવવામાં આવેઃ છે તે સ્થિતિય ધનનો જે ઉપક્રમ છે તેને સ્થિતિ જ ધનો
 પક્રમ કહે છે તે જવના કપાય સ્વરૂપ પરિણામ વિશેષરૂપ છે કારણ કે
 સ્થિતિય ધન કારણ કપાય છે

પહેલા અનુભાવ ધનો આવાય જતાવેઃ છે તે અનુભાવ ધનનો
 જે ઉપક્રમ છે તેને ‘ અનુભાવ જ ધનોપક્રમ ’ કહે છે તે અનુભવ ધનો
 પક્રમ પણ કપાય રૂપ જ છે પૂર્વોક્ત લક્ષણવાળા પ્રદેશ ધનનો જે ઉપક્રમ
 છે તેનું નામ પ્રદેશ ધનોપક્રમ ’ છે તે પ્રદેશ ધનોપક્રમ પણ યોગરૂપ
 જવ પરિણામ વિશેષરૂપ દોષ છે કહ્યું પણ છે કે—‘ જોગા પયઙ્ગિપયસ ઠિઠ
 અણુભાવ કપાયઞો કુણઙ્ગ ’ જીવ્ય યોગ વડે પ્રકૃતિય ધ અને પ્રદેશ ધ કહે
 છે એવે કે પ્રકૃતિય ધ અને પ્રદેશ ધ એ જન્મે જ ધ દોષ દોષથી યાવ
 છે અને સ્થિતિય ધ અને અનુભાવ ધ કપાયને કારણે યાવ છે અથવા પ્રકૃતિ
 આદિ જ ધનોનો જે ઉપક્રમ—પ્રદેશ છે તેને પ્રકૃતિ આદિ જ ધનોપક્રમ કહે
 છે એ જ પ્રમાણે અન્યત્ર પણ સમજવું

“ઉદીરણોવક્કમે ચઽન્વિહે” ઇત્યાદિ — ઉદીરણોપક્રમશ્ચતુર્વિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમઃ—યદ્વા મૂલપ્રકૃતીનામુત્તરપ્રકૃતીનાં વા દલિકં સામર્થ્ય-વિશેષેનાઽઽકૃત્યોદયાવલિકાયાં પ્રવેશ્યતે સા પ્રકૃત્યુદીરણા, તસ્યા ઉપક્રમઃ ૧। તથા—સ્થિત્યુદીરણોપક્રમઃ—આત્મવીર્યદેવોદિતયા સ્થિતયા સાદ્દમપ્રાપ્તોદયસ્થિતે-રનુભવનં સ્થિત્યુદીરણા, તસ્યા ઉપક્રમસ્તથાભૂતઃ ૨। તથા—અનુભવોદીરણોપક્રમઃ—વીર્યવિશેષાદેવોદિતેનાનુભાવેન સહાનુદિતો યોઽનુભવો વેદ્યતે સાઽનુભવોદીરણા, તસ્યા ઉપક્રમઃ ૩। તથા—પ્રદેશોદીરણોપક્રમઃ—પ્રદેશોદીરણાપ્રાપ્તોદયૈર્નિયતપરિમા-ળકર્મપ્રદેશૈઃ સહાઽપ્રાપ્તોદયાનાં નિયતપરિમાણાનાં કર્મપ્રદેશાનાં વેદનમ્, તસ્યા ઉપક્રમઃ ૪। ઇહાઽપિ ઉપક્રમઃ—કપાયયોગરૂપો જીવપરિણામ આરમ્ભો વા ગ્રાહ્યઃ ૫।

જો ઉપક્રમ—પ્રારમ્ભ હૈ વહ પ્રકૃતિ આદિ બંધનોપક્રમ હૈ । હસી પ્રકાર અન્યત્ર ભી જાનના ચાહિયે ૪ । “ઉદીરણોવક્કમે ચઽન્વિહે” ઉદી-રણોપક્રમ ચાર પ્રકારકા હૈ, જૈસે—પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમ ઇત્યાદિ । તપો-વિશેષ આદિસે ઊંચ કર ઉદયાવલિકા મેં મૂલ પ્રકૃતિ કા અથવા ઉત્તર પ્રકૃતિકા દલિકામેં પ્રવેશ કરાના પ્રકૃત્યુદીરણા હૈ, હસ પ્રકૃત્યુદીરણા કા જો ઉપક્રમ વહ પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમ હૈ । આત્મવીર્ય સે હી ઉદિતસ્થિતિકે સાથ અપ્રાપ્તોદયવાલો સ્થિતિકા અનુભવન કરના યહ—સ્થિત્યુદીરણા હૈ. હસ સ્થિત્યુદીરણા કા જો ઉપક્રમ વહ—સ્થિત્યુદીરણોપક્રમ હૈ । વીર્ય-વિશેષ સે હી ઉદિત અનુભાવકે સાથ અનુદિત અનુભાવકા જો વેદનહૈ વહ—અનુભવોદીરણા હૈ, હસ અનુભવોદીરણાકા જો ઉપક્રમ હૈ વહ અનુભવોદીરણોપક્રમ હૈ । તથા—પ્રદેશોદીરણા સે પ્રાપ્ત હૈ ઉદયજિનકા એસે નિયત પરિણામવાલે કર્મપ્રદેશોંકે સાથ અપ્રાપ્ત ઉદયવાલે નિયત પરિ-

“ઉદીરણોવક્કમે ચઽન્વિહે” ઉદીરણોપક્રમના પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમ આદિ ચાર પ્રકર કહ્યા છે. તપોવિશેષ દ્વારા જેનીને મૂલપ્રકૃતિ અથવા ઉત્તરપ્રકૃતિના દલિકેનો ઉદયાવલિકામાં પ્રવેશ કરાવેો તેનું નામ પ્રકૃત્યુદીરણા છે. તે પ્રકૃત્યુ-દીરણાનો જે ઉપક્રમ છે તેને પ્રકૃત્યુદીરણોપક્રમ કહે છે આત્મવીર્યથી જ ઉદિત સ્થિતિની સાથે અપ્રાપ્તોદયવાળી સ્થિતિનું અનુભવન કરવું તેનું નામ સ્થિત્યુ-દીરણા છે તે સ્થિત્યુદીરણાનો જે ઉપક્રમ છે તેને સ્થિત્યુદીરણોપક્રમ કહે છે. વીર્યવિશેષથી જ ઉદિત અનુભાવની સાથે અનુદિત અનુભાવનું જે વેદન થાય છે, તેને અનુભવોદીરણા કહે છે આ અનુભવોદીરણાનો જે ઉપક્રમ છે તેને નિયત પરિણામવાળા કર્મપ્રદેશોની સાથે અપ્રાપ્ત ઉદયવાળા નિયત પરિણામવાળા કર્મપ્રદેશોનું જે વેદન છે તેનું નામ પ્રદેશોદીરણા છે. તે પ્રદેશોદીરણાનો જે

‘ ઉપસમનોપક્રમ ’ ઇત્યાદિ — ઉપસમનોપક્રમચતુર્વિધ પ્રકૃત્ત્વ, તથા-
 પ્રકૃત્યુપસમનોપક્રમઃ ૧, સ્થિત્યુપસમનોપક્રમ ૨, અનુમાયોપસમનોપક્રમઃ ૩,
 પ્રવેશોપસમનોપક્રમ ૪, ઇતિ । ઉપક્રમસ્તિત્વ પુરૂષાના પ્રકૃતિત્વિત્યવનુમાન્યવેશ-
 રૂપેણ પરિણમનસમર્પમાત્મધોર્યમિતિ । “ વિપરિણામનોપક્રમે ” ઇત્યાદિ—
 વિપરિણામનોપક્રમચતુર્વિધઃ પ્રકૃત્ત્વ, તથા-પ્રકૃતિવિપરિણામનોપક્રમ ઇત્યાદિ ।
 ઉપક્રમ શબ્દસ્વાર્થોઽનન્તરગુપ્તોક્તવદ્ ધોષ્યઃ ઇતિ ।

જામ વિધિષ્ટ કર્મપ્રવેશોકા જો પેદનહે, વહ પ્રવેશોદીરણાહે હમ પ્રવેશોદી
 રણા કા જો ઉપક્રમહે, વહ પ્રવેશોદીરણોપક્રમહે । યહાંપરમી ઉપક્રમકો
 જીવકા પરિણામવિશેષ જો કપાય ઓર યોગ હે તદ્વપ છેના બાહિયે, યા
 આરમ્ભાર્થવાલા છેના બાહિયે । “ ઉપસમનોપક્રમે ” ઇત્યાદિ—

ઉપસમનોપક્રમ ચાર પ્રકારકા કહા ગયાહે, જેસે પ્રકૃત્યુપસમનોપક્રમ
 ઇત્યાદિ પુરૂષોંકો પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુમાવ ઓર પ્રવેશ જન ચાર રૂપસે
 પરિણમન કરાનમે સમર્પ જો આત્માકા ધીપ હે વહ ઉપક્રમ શબ્દસે યહાં
 ક્રિયા ગયા હે, આરમ્ભ અર્થવાલા ઉપક્રમ નહીં લિયા ગયા હે ।

“ વિપરિણામનોપક્રમે ” ઇત્યાદિ—વિપરિણામનોપક્રમ ચાર પ્રકાર
 રકા કહા ગયા હે, જેસે—પ્રકૃતિ વિપરિણામનોપક્રમ ઇત્યાદિ યહાં પરમી
 ઉપસમ શબ્દકા અર્થ પૂર્વ સૂચ જૈસાહી જાનના બાહિયે+અન્ય અર્થ
 નહીં । “ ચતુર્વિધે અપ્પાયદુગ ” ઇત્યાદિ અન્ય ઓર યદુકા જો માવ

ઉપક્રમ છે તેને પ્રવેશોદીરણોપક્રમ કહે છે અહીં પણ ઉપક્રમને ક્યામ અને
 ચોમરૂપ છવત્ત પચિણામ વિશેષરૂપ સમજવો જોઇએ અથવા આરમ્ભ અને
 વાળો સમજવો જોઇએ.

‘ ઉપસમનોપક્રમે ’ ઇત્યાદિ—ઉપસમનોપક્રમ ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે
 જેમકે પ્રકૃત્યુપસમનોપક્રમ આદિ ચાર પ્રકાર અહીં સમજવા પુરૂષોંકુ પ્રકૃતિ
 સ્થિતિ, અનુમાવ અને પ્રવેશ આ ચાર રૂપે પરિણમન કરાવવાને સમર્પ
 એવું જે આત્મનીર્વ છે તે અહીં ઉપક્રમ ચળદથી સૂદીન થયુ છે આરમ્ભ
 અથવાળો ઉપક્રમ અહીં અદ્વલ થયેલ નથી

વિપરિણામનોપક્રમે ઇત્યાદિ—વિપરિણામનોપક્રમના નીચે પ્રમાણે ચાર
 પ્રકાર કહ્યા છે—પ્રકૃતિ વિપરિણામનોપક્રમ આદિ ચાર પૂર્વોક્ત પ્રકાર અહીં
 પ્રદલ્ય કરવા અહીં પણ ઉપક્રમ ચળદનો અર્થ પૂવસૂત્રમાં કહ્યાનુસાર સમજવો,
 અન્ય અમ અહીં અદ્વલ કરવો જોઇએ નહીં.

“ચઢવિહે અપ્પાવહુર” ઇત્યાદિ—અલ્પ ચ વહુવાનયોઃ સમાહારોડલ્પ-
વહુ, તસ્ય ભાવોડલ્પવહુત્વમ્, તચ્ચતુર્વિધ પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્યથા—પ્રકૃત્યલ્પવહુત્વં ૧,
સ્થિત્યલ્પવહુત્વમ્ ૨, અનુભવાલ્પવહુત્વં ૩, પ્રદેશલ્પવહુત્વં ૪ ચેતિ તત્ર પ્રકૃત્ય-
લ્પવહુત્વં—પ્રકૃતીનાં — પ્રાગુક્તાનામલ્પત્વં ચ, તચ્ચાલ્પવહુત્વં વન્ધસ્થિત્ય-
નુભાવપ્રદેશાપેક્ષયા વોઘ્યમ્ તત્ર વન્ધાપેક્ષયા યથા—ઉપશાન્તમોહાદિઃ સર્વસ્તોક-
પ્રકૃતિવન્ધકો ભવતિ, તસ્ય જ્ઞાતાવેદનીયરૂપૈકવિધવન્ધકત્વાત્ । તસ્માદ્ ઉપશમકા-
દિસૂક્ષ્મસમ્પરાયો વહુતરવન્ધકો ભવતિ, તસ્ય વેદનીયાયુર્વર્જશેષ પદ્ધવિધવન્ધકત્વાત્,
તસ્માદ્ વહુતરવન્ધકઃ સપ્તવિધવન્ધકસ્તસ્માચ્ચ વહુતરવન્ધકોઽષ્ટવિધવન્ધક ઇતિ । ૧ ।

હૈ વહ અલ્પવહુત્વ હૈ, યહ અલ્પવહુત્વ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ ।
ઉસકા ભાવ એસા હૈ—પૂર્વોક્ત પ્રકૃતિયોંમેં વંધકી, સ્થિતિકી, અનુભાવકી
ઔર પ્રદેશકી અપેક્ષા જો અલ્પવહુત્વ હૈ વહી અલ્પવહુત્વ રૂપસે યહાં
કહા ગયા હૈ, એસા જાનના ચાહિયે । જૈસે—ઉપશાન્ત મોહ આદિવાલા
જીવ સર્વસે ક્રમ પ્રકૃતિયોંકા વન્ધક હોતા હૈ, ક્યોંકિ—વહ એકવિધ
વન્ધક હોતા હૈ । અર્થાત્—એક પ્રકારસેહી કર્મકા જ્ઞાતાવેદનીયકા વંધ
કરનેવાલા હોતા હૈ । ઇસસે નીચેકા જો ઉપશમકાદિ સૂક્ષ્મ સમ્પરાય-
વાલા જીવ હોતા હૈ વહ વહુતર વન્ધક હોતા હૈ, ક્યોંકિ વહ છહ પ્રકાર-
સે કર્મકા વન્ધ કરનેવાલા હોતા હૈ, અર્થાત્ વેદનીય ઔર આયુકર્મકો
છોડકર શેષ છહ કર્મોં કા વન્ધક હોતા હૈ । ઇસસે વહુતર વંધક વહ
હૈ જો સાત પ્રકારસે કર્મોં કા વન્ધક હોતા હૈ ।

ઇસસેમી વહુતર વન્ધક વહ હૈ જો આઠ પ્રકારસે કર્મોંકા વન્ધન
કરનેવાલા હોતા હૈ ૧ । સ્થિતિકી અપેક્ષા અલ્પવહુત્વ ઇસ પ્રકારસે હૈ,

“ચઢવિહે અપ્પાવહુર” ઇત્યાદિ—અલ્પ અને બહુનો જે ભાવ છે
તેનું નામ અલ્પબહુત્વ છે, તે અલ્પબહુત્વ ચાર પ્રકારનું કહ્યું છે. આ ચાર
પ્રકારનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—પૂર્વોક્ત જ્ઞાનાવરણીય આદિ પ્રકૃ-
તિઓમાં બન્ધ, સ્થિતિ, અનુભાવ અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ જે અલ્પબહુત્વ
છે, તેને જ અહીં અલ્પબહુત્વ રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે, જેમ સમજવું.
જેમકે ઉપશાન્ત મોહ આદિવાળો જીવ જોઈએમાં જોઈને કર્મ પ્રકૃતિઓનો
બંધક હોય છે, કારણ કે તે એકવિધ બન્ધક જ હોય છે એટલે કે તે એક
પ્રકારે જ કર્મનો—જ્ઞાતાવેદનીયનો બન્ધક જ હોય છે. તેના કરતાં નીચા શુભ-
સ્થાનવાળો, ઉપશમકાદિ સૂક્ષ્મ સંપરાયવાળો જે જીવ હોય છે તે અધિક કર્મ
પ્રકૃતિઓનો બન્ધક હોય છે, કારણ કે તે છ પ્રકારના કર્મનો બન્ધ કરતો
હોય છે અર્થાત્ વેદનીય અને આયુકર્મને છોડીને બાકીના છ કર્મોનો બન્ધક
થાય છે. તેના કરતાં પણ બહુતર કર્મબન્ધક એ છે કે જે સાત પ્રકારના
કર્મોનો બન્ધક હોય છે. અને તેના કરતાં પણ બહુતર કર્મબન્ધક એ

નાનિ. અસંખ્યેયગુણાનિ, સંખ્યેયગુણવૃદ્ધિસ્થાનાનિ, અસંખ્યેયગુણાનિ, યાવદ્
અનન્તભાગવૃદ્ધિસ્થાનાન્યમંસંખ્યેયગુણાનિ, ઇતિ ।

તથા—પ્રદેશાલ્પવહુત્વં—પ્રદેશાનામલ્પત્વં વહુત્વં ચ, તદ્વથા—“અદ્વિધવંધ-
ગસ્ય ચ આડયભાગો થોત્રો નામગોયાણં તુહો વિસેસાહિઓ નાણદંસળાવરણંતરા
યાણં તુહો વિસેસાહિઓ, મોહસ્ય વિસેસાહિઓ, વેયળીયસ્ય વિસેસાહિઓ ”
છાયા—અદ્વિધવન્ધકસ્યાઽઽયુર્ભાગઃ સ્તોકો નામ — ગોત્રયોસ્તુલ્યો વિશેષાધિકો
જ્ઞાનદર્શનાઽઽવરણાન્તરાયાણાં તુલ્યો વિશેષાધિકો મોહસ્ય વિશેષાધિકો વેદનીયસ્ય
વિશેષાધિકઃ ” ઇતિ । ૪ ।

“ચઙ્ગિવહે સંક્રમે ” ઇત્યાદિ—સંક્રમઃ—જીવો યાં પ્રકૃતિં વધ્નાતિ તદ્વત્તુમા-
વેન—તદાકારેણ પ્રકૃત્યન્તરસ્થદલિકસ્ય ત્રીર્યવિશેષેણ પરિણમનમ્, ઉક્તં ચ—

વૃદ્ધિકા સ્થાન ઇસસે અસંખ્યાતગુણિત હૈ, યાવત્ અનંત ભાગવૃદ્ધિકા
સ્થાન અસંખ્યાતગુણિત હૈ । પ્રદેશોંકી અપેક્ષા અલ્પવહુત્વ ઇસ પ્રકાર હૈ
જેસે—અદ્વિધવંધગસ્ય ચ આડયભાગો થોવો, નામગોયાણં તુહો, વિસે-
સાહિઓ, નાણદંસળાવરણંતરાયાણંતુહો વિસેસાહિઓ મોહસ્ય વિસે-
સાહિઓ, વેયળીયસ્ય વિસેસાહિઓ ” ઇસ કથનાતુસાર આઠ પ્રકારસે
વન્ધક જીવકા આયુકા ભાગસ્તોક હોતા હૈ । નામ—ગોત્રકા ભાગતુલ્ય
હોતા હૈ, પરન્તુ વિશેષાધિક હોતા હૈ । જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ ઓર
અન્નગાયકા ભાગતુલ્ય હોતાહૈ પર વહ વિશેષાધિક હોતાહૈ મોહનીય કર્મ
વિશેષાધિક હોતા હૈ ઓર વેદનીય કર્મકા ભાગ વિશેષાધિક
હોતા હૈ । “ચઙ્ગિવહે સંક્રમે ” ઇત્યાદિ. જીવ જીસ પ્રકૃતિકા વન્ધ

વૃદ્ધિનુ સ્થાન તેના કરતા અસખ્યાતગુણિત છે, (યાવત્) અનંત ભાગ વૃદ્ધિનુ
સ્થાન અસખ્યાતગુણિત છે

પ્રદેશોની અપેક્ષાએ અલ્પબહુત્વ આ પ્રમાણે સમજવું—“અદ્વિધવંધ-
ગસ્ય ચ આડયભાગો થોત્રો, નામગોયાણ તુહો, વિસેસાહિઓ, નાણદંસળાવરણં
તળાયાણં તુહો વિસેસાહિઓ મોહસ્ય વિસેસાહિઓ, વેયળીયસ્ય વિસેસાહિઓ ”
આ કથનાતુસાર આઠ પ્રકારના કર્મના બન્ધક જીવનો આયુનો ભાગ સ્તોક
(અલ્પ) હોય છે, નામ—ગોત્રનો ભાગ તુલ્ય હોય છે, પણ આયુના ભાગ
કરતા વિશેષાધિક હોય છે જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ અને અન્તરાયનો ભાગ
તુલ્ય હોય છે, પરન્તુ નામ—ગોત્રના ભાગ કરતા વિશેષાધિક હોય છે. મોહ-
નીયનો તેના કરતા પણ વિશેષાધિક હોય છે અને વેદનીયનો મોહનીય કરતાં
પણ વિશેષાધિક હોય છે “ચઙ્ગિવહે સંક્રમે ” ઇત્યાદિ—

નાનિ. અસંખ્યેયગુણાનિ, સંખ્યેયગુણવૃદ્ધિસ્થાનાનિ, અસંખ્યેયગુણાનિ, યાવદ્
અનન્તભાગવૃદ્ધિસ્થાનાન્યમસંખ્યેયગુણાનિ. ઇતિ ।

તથા—પ્રદેશાલ્પવહુત્વં—પ્રદેશાનામલ્પત્વં વહુત્વં ચ, તથા—“અદ્વિધવંધ
ગત્સ ય આડયભાગો થોવો નામગોયાણં તુહો વિસેસાહિઓ નાણદંસણાવરણંતરા
યાણં તુહો વિસેસાહિઓ, મોહસ્સ વિસેસાહિઓ, વેયણીયસ્સ વિસેસાહિઓ ”
છાયા—અદ્વિધવન્ધકસ્યાડયુર્ભાગ. સ્તોકો નામ — ગોત્રયોસ્તુલ્યો વિશેષાધિકો
જ્ઞાનદર્શનાડવરણાન્તરાયાણાં તુલ્યો વિશેષાધિકો મોહસ્ય વિશેષાધિકો વેદનીયસ્ય
વિશેષાધિકઃ ” ઇતિ । ૪૧

“ચઙ્ગિવહે સંકમે ” ઇત્યાદિ—સંક્રમઃ—જીવો યાં પ્રકૃતિ વન્નાતિ તદનુભા-
વેન—તદાકારેણ પ્રકૃત્યન્તરસ્થદલિકસ્ય કીર્યવિશેષેણ પરિણમનમ્, ઉક્તં ચ—

વૃદ્ધિકા સ્થાન ઇસસે અસંખ્યાતગુણિન હૈ, યાવત્ અનંત ભાગવૃદ્ધિકા
સ્થાન અસંખ્યાતગુણિન હૈ । પ્રદેશોંકી અપેક્ષા અલ્પવહુત્વ ઇસ પ્રકાર હૈ
જૈસે—અદ્વિધવંધગરસ્ય આડયભાગો થોવો, નામગોયાણં તુહો, વિસે-
સાહિઓ, નાણદંસણાવરણંતરાયાણંતુહો વિસેસાહિઓ મોહસ્સ વિસે-
સાહિઓ, વેયણીયસ્સ વિસેસાહિઓ ” ઇસ કથનાનુસાર આઠ પ્રકારસે
વન્ધક જીવકા આયુકા ભાગસ્તોક હોતા હૈ । નામ—ગોત્રકા ભાગતુલ્ય
હોતા હૈ, પરન્તુ વિશેષાધિક હોતા હૈ । જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ ઓર
અન્નગયકા ભાગતુલ્ય હોતાહૈ પર વહ વિશેષાધિક હોતાહૈ મોહનીય કર્મ
વિશેષાધિક હોતા હૈ ઓર વેદનીય કર્મકા ભાગ વિશેષાધિક
હોતા હૈ । “ચઙ્ગિવહે સંકમે ” ઇત્યાદિ. જીવ જીસ પ્રકૃતિકા વન્ધ

વૃદ્ધિનુ સ્થાન તેના કરતા અસંખ્યાતગુણિત છે, (યાવત્) અનંત ભાગ વૃદ્ધિનુ
સ્થાન અસંખ્યાતગુણિત છે

પ્રદેશોની અપેક્ષાએ અલ્પબહુત્વ આ પ્રમાણે સમજવું—“અદ્વિધવંધ-
ગત્સ ય આડયભાગો થોવો, નામગોયાણં તુહો, વિસેસાહિઓ, નાણદંસણાવરણં
તણાયાણ તુહો વિસેસાહિઓ મોહસ્સ વિસેસાહિઓ, વેયણીયસ્સ વિસેસાહિઓ ”
આ કથનાનુસાર આઠ પ્રકારના કર્મના બન્ધક જીવનો આયુનો ભાગ સ્તોક
(અલ્પ) હોય છે, નામ—ગોત્રનો ભાગ તુલ્ય હોય છે, પણ આયુના ભાગ
કરતા વિશેષાધિક હોય છે જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ અને અન્તરાયનો ભાગ
તુલ્ય હોય છે, પરન્તુ નામ—ગોત્રના ભાગ કરતા વિશેષાધિક હોય છે. મોહ
નીયનો તેના કરતા પણ વિશેષાધિક હોય છે અને વેદનીયનો મોહનીય કરતાં
પણ વિશેષાધિક હોય છે “ચઙ્ગિવહે સંકમે ” ઇત્યાદિ—

“ સો સક્રમોત્તિ મળઈ, જ ધંધણપરિણમો પમોગેળે ।

પયપતરત્યદલિય પરિણામઈ સદણુભાવે જ ॥ ૧ ॥ ”

ઝાયા—“ સ સક્રમ ઇતિ મળ્યસે યદ્ ધન્વનપરિણત પ્રયોગેળ ।

પ્રકૃત્યન્તરસ્થદલિક પરિણમયતિ તદ્વત્તુભાવે (સદાકાર) યત્ ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ

સ પતુર્નિષઃ પ્રદ્વપ્ત, તથા—પ્રકૃતિસક્રમઃ—સક્રમસ્ય સામાન્યસૂક્ષ્ણમતુ
સૂત્ય ધોષ્યઃ ૧, સ્થિતિસક્રમઃ—મૂળપ્રકૃતીનાગુણરપ્રકૃતીનાં યા સ્થિતેસ્ત્કર્પણ
મપર્પણ યા, યદ્વા—મૂળપ્રકૃતીનાગુણરપ્રકૃતીનાં યા પ્રકૃત્યન્તરસ્થિતૌ પ્રાપ્તમ્,
સ્થત ધ—

“ ઠિઈ સંક્રમોતિ ધુવઈ, મૂલુષરપર્માણ ડ જા ઢિ ઠિઈ ।

ઉન્નદિયા ધ મોવદિયા ધ પગઈણિયાવડ્ડન ॥ ૧ ॥

ઝાયા—સ્થિતિસક્રમ ઇત્યુચ્યતે મૂલોત્તરપ્રકૃતીનાં તુ યા ઢિ સ્થિતિઃ ।

ઉદ્વર્તિતા ધ અપર્વર્તિતા ધ પ્રકૃતિ નીતા યાડ્ડન્યામ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ

કરતા હૈ ઉન્ન પ્રકૃતિકે આકારમેં પ્રકૃત્યન્તરકે દલિકકો પરિણમા દેના
પદ સંક્રમ હૈ કહા મી હૈ “ સો સંક્રમોતિ મળિજો ” ઇત્યાદિ
યદ્ સક્રમ આર પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે—પ્રકૃતિ સક્રમ આદિ
પ્રકૃતિ મદમકા સ્વરૂપ—“ સો સક્રમોતિ ” ઇત્યાદિ—ઇત્યાદિ ગાથા
દ્વારા જૈના કહા ગયા હૈ વૈસાહી હૈ । મૂળ પ્રકૃતિયોંકી યા ઉત્તર પ્રકૃ
તિયોંકી સ્થિતિકો ઉત્કર્પણ રૂપમેં કરના યા અગર્પણ રૂપમેં કરના
અથવા મૂળપ્રકૃતિયોંકો યા ઉત્તર પ્રકૃતિયોંકો પ્રકૃત્યન્તરકી સ્થિતિમેં
લાકર પ્રાપ્ત કરા દેના યદ્ સ્થિતિ સક્રમહૈ । કહામીહૈ—“ ઠિઈ સક્રમોતિ
ધુવઈ ” ઇત્યાદિ ઇસી પ્રકારકા કથન અનુભાવ સંપ્રામકે સન્બંધમેં

છવ જે કર્મપ્રકૃતિના અ ધ કરે છે તે કર્મપ્રકૃતિના આકારમાં પ્રકૃ
ત્યન્તર (અન્ય પ્રકૃતિના) રીતિકોને પરિણમિત કરી નાખવા તેનું નામ સક્રમ
છે કહું પણ છે કે— સો સંક્રમોતિ મળિજો ઇત્યાદિ—

આ સક્રમ ચાર પ્રકારનો છે—(૧) પ્રકૃતિ સક્રમ, (૨) સ્થિતિ સક્રમ
(૩) અનુભાવ સક્રમ અને (૪) પ્રદેશ સક્રમ. પ્રકૃતિ સક્રમનું સ્વરૂપ “ સો
સંક્રમોતિ ” ઇત્યાદિ ગાથામાં કહા પ્રમાણે જ સમજવું મૂળ પ્રકૃતિઓની
અથવા ઉત્તર પ્રકૃતિઓની સ્થિતિનું ઉત્કર્ષણ અપર્કર્ષણ કરવું અથવા મૂળ પ્રકૃ
તિઓને અથવા ઉત્તર પ્રકૃતિઓને પ્રકૃત્યન્તરની (અન્ય કોઈ પ્રકૃતિની)
સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરાવી દેવી તેનું નામ સ્થિતિસક્રમ છે કહું પણ છે કે—
“ ઠિઈ સંક્રમોતિ ધુવઈ ઇત્યાદિ જે જ પ્રકારનું કથન અનુભાવ સક્રમ

एवमनुभावसक्रमोऽपि ज्ञेयः, यदाह—

“ जस्मि सक्रमणे उव्वट्ठियओवट्ठिया व अणुभागा ।

अनुभावसंकमो मो अन्नं पगइं व णीया वि । १ । ”

છાયા—યસ્મિન્ સંક્રમણે ઉદ્વર્તિતા અપવર્તિતા વા અનુભાગાઃ ।

अनुभावसंकम एपोऽन्यां प्रकृतिं नीता अपि ॥ १ ॥ ” इति ।

પ્રદેશસંક્રમઃ—અન્યપ્રકૃતિસ્વભાવેન પરિણમ્યમાનં કર્મદ્રવ્યમ્, ઉક્તં ચ—

“ जं दलियमन्नपगइ णिज्जइ सो संकमो पएसस्स ”

છાયા—યદ્દલિકમન્યપ્રકૃતિં નીયતે સ સક્રમ પ્રદેશસ્ય ” ઇતિ ૪ ।

“ चउव्विहे णिधत्ते ” इत्यादि—निधत्त—निधान निहितं वा, भावे कर्मणि वा क्तप्रत्यये निपातनादयं शब्दः, तत्—उद्वर्तनाऽपवर्तनारहितानां शेषकरणानाम-
नर्हत्वेन कर्मणोऽवस्थापनम् । तच्चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा—प्रकृतिनिधत्तं १,
स्थितिनिधत्तम् २, अनुभावनिधत्तं ३ प्रदेशनिधत्तम् ४, इति । एतानि सामान्य-
लक्षणानुसारेण बोध्यानि । ४ ।

भी करना चाहिये । जैसाकि कहा गया है—“ जस्मि सक्रमणे उव्वट्ठिय ”
अन्य प्रकृतिके स्वभावसे परिणतता हुवा जो कर्मद्रव्य है वह प्रदेश
संक्रम है । कहाभी है—“ जं दलियमन्नपगइं ” इत्यादि ।

“ चउव्विहे णिधत्ते ” इत्यादि—निधत्त—निधान अथवा निहित ये
एकार्थक शब्द हैं । निधत्त—शब्दभावमें अथवा कर्ममें “ क्त ” प्रत्यय
करने पर निपातसे बना है । निधत्त बन्ध वह है जो कर्मउद्बन्धना
और अपवर्तनासे रहित शेष करणोंका अयोग्य होना है । यह प्रकृति
निधत्त आदिके भेदसे चार प्रकारका कहा गया है सो इन्हें सामान्य
लक्षणके अनुसारही जानना चाहिये ।

વિષે પણ સમજવું અનુભાવ સક્રમણ સ્વરૂપ “ જસ્મિ સક્રમણે ઉવ્વટ્ઠિય ”
ઈત્યાદિ ગાથા દ્વારા પ્રકટ કર્યું છે અન્ય પ્રકૃતિના સ્વભાવે પરિણમન પામતું
જે કર્મદ્રવ્ય છે, તેનું નામ પ્રદેશ સક્રમ છે કહ્યું પણ છે કે—

“ जं दलियमन्नपगइं ” इत्यादि—

“ चउव्विहे णिधत्ते ” इत्यादि निधत्त, निधान अथवा निहित, ये
त्रણે એકાર્થક શબ્દો છે નિધત્ત—શબ્દ ભાવમાં અથવા કર્મમાં “ ક્ત ” પ્રત્યય
લગાડવાથી નિધાતમાથી અન્યો છે નિધત્તબન્ધ એ છે કે જે કર્મઉદ્બન્ધના
અને અપવર્તના નિવાયના કારણોને માટે અયોગ્ય હોય છે તેના પ્રકૃતિ નિધત્ત
આદિ ચાર પ્રકાર કહ્યા છે. તે પ્રકારોને સામાન્ય લક્ષણ અનુસારજ સમજવા જોઈએ

“ ચતુષ્વિધે ણિકાદિ ” इत्यादि—

નિકાચિત્-નિતરાં વર્ણનં સર્વકરણાનામનર્ત્તેન કર્મણોઽવસ્થાપનમ્ । તત્પત્તિ
વિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા-પ્રકૃતિનિકાચિત્ ૧, સ્થિતિનિકાચિત્ ૨, અનુમાપનિ
કાચિત્ ૩, પ્રવેશનિકાચિત્ ૪ । ચ એવાપિ સામાન્યલક્ષણમનુસરં ગ્રાહ્યાણિ ।
સ્વતંત્રં ચોમવધિપયે—

“ ઉચ્ચદૃશ ઓચદૃશ, કરણગુણ કેવલ નિષ્પત્તિમ્ ।

અન્યકરણાણામાયો નિકાદિ સમ્પ્રકરણાથ ॥૧॥

છાયા—ઉદ્વર્તનાપવર્તનકરણદ્વિકં કેવલં નિષ્પત્તે ।

અન્યકરણાનામયાયો નિકાચિતે સર્વકરણાનામ્ (અમાયઃ) ॥૧॥

યદ્વા-પૂર્વપદ્ધતાં કર્મણાં તત્તસમીક્ષિતધ્વીક્રમાપસમાનં નિષ્પત્તમ્, અત્રક-
ર્મણાં ન્યૂનાધિકકરણસામર્પ્યં વિધતે । તત્તસમીક્ષિતસકુટિતધ્વીક્રમાપસમાનં નિકા

‘ ચતુષ્વિધે ણિકાદિ ’ નિકાચિત્ત ય-ચ ચાર પ્રકારકા કહા ગયા
હે । જો ય-ચ સર્વ કરણોંકા અયોગ્ય હોતા હે વહ નિકાચિત્ત ય-ચ હે ।
યહ પ્રકૃતિ નિકાચિત્ત, સ્થિતિ નિકાચિત્ત, અનુમાય નિકાચિત્ત ઓર
પ્રવેશ નિકાચિત્તકે મેદસે ચાર પ્રકારકા કહા ગયા હે । इन्हेंही सामान्य
लक्षणके अनुसार समझना चाहिये, दोनोंके विषयमें निषत्त निकाचके
विषयमें ऐसा कहा गया है “ उच्यदृश ओचदृश ” इत्यादि—

નિષત્તમે ઉદ્વર્તના ઓર અપવર્તના યે દો કરણ હોતે હે, બાકીકે
અન્ય કરણ નહીં હોતે હે પરંતુ નિકાચિત્તમે તો કોઈમી કરણ નહીં
હોતા હે, સમસ્ત કરણોંકા અમાય રહતા હે । યદ્વા-પૂર્વપદ્ધત્તકર્મોંકો
તપાકર મિલાયે ગયે ધ્વીક્રમાપકે સમાન નિષત્ત હોના હે । નિષત્તમે
કર્મોંકો ન્યૂનાધિક કરનેકી શક્તિ હે । તથા તપાકર મિલાકર કૂટે ગયે

“ ચતુષ્વિધે ણિકાદિ નિકાચિત્ત ય-ચ ચાર પ્રકારનો કહે છે એ બધે
સર્વ કરણોની અપેક્ષાએ અયોગ્ય હોય છે એ બધાએ એક પણ કરણનો
સહાય હોતો નથી તે બધે નિકાચિત્ત ય-ચ કહે છે તેના બાર ભેદ નીચે
પ્રમાણે છે—પ્રકૃતિ નિકાચિત્ત સ્થિતિ નિકાચિત્ત અનુમાય નિકાચિત્ત અને
પ્રવેશ નિકાચિત્ત તેમને પણ સામાન્ય લક્ષણાનુસાર સમજવા હોય છે, નિષત્ત
અને નિકાચિત્તનો તફાવત આ પ્રમાણે છે—“ ઉચ્ચદૃશ ઓચદૃશ ” इत्यादि
निषत्त य-चમાં ઉદ્વર્તના અને અપવર્તના આ બે કરણો સહાય હોય છે
બાકીના કોઈ કરણો સહાય હોતો નથી, પરંતુ નિકાચિત્ત ય-ચ કોઈ પણ
કરણો સહાય હોતો નથી તેમાં સમસ્ત કરણોની અભાવ જ રહે છે અથવા
તથાનીને એક જ રીતે સચીકતાપના (મોર્મીના બ.શી)એ નિષત્ત હોય છે નિષત્તમાં

ચિત્તમ્, અત્ર કર્મણાં પિણ્ડીભૂતત્વેન ન્યૂનાધિકરૂણાસમ્ભવઃ । વિશેષતો વન્ધપ્ર-
થિતિસ્વરૂપં જિજ્ઞાસુના કર્મપ્રકૃતિસંગ્રહણિસ્વલોકનીયેતિ ૪૥ ૫૮

પૂર્વમલ્પવહુત્વમેભિદિતં, તત્રાત્યન્તમલ્પમેકસખ્યં તદતિરિક્તં ત્વપેક્ષયા વહુ
ત્વવાચકાન્ એક-કતિ-સર્વશબ્દાન્ દ્રવ્યાદિભિઃ સહ ચતુર્ભિઃ સ્થાનકૈરાહ—

મૂલમ્—ચત્તારિ એકગા પળ્લણત્તા, તં જહા-દવિય એકકણ
૧, માઉય એકકણ ૨, પજ્જય એકકણ ૩, સંગહ એકકણ ૪ । ૧ ।

ચત્તારિ કર્કે પળ્લણત્તા, તં જહા-દવિયકર્કે ૧, માઉયકર્કે ૨,
પજ્જવકર્કે ૩, સંગહકર્કે ૪ । ૨ ।

ચત્તારિ સઘ્વા પળ્લણત્તા, તં જહા-નામસઘ્વણ ૧, ઠવળસઘ્વણ
૨, આદેસસઘ્વણ ૩, નિરવસેસસઘ્વણ ૪ । ૩ ॥ સૂ૦ ૫૯ ॥

છાયા—ચત્તારિ એકકાનિ પ્રપ્ત્તાનિ, તથા—દ્રવ્યૈરુક ૧, માતૃકૈકકં ૨,
પર્યાયૈરુકઃ ૩, સદ્ગ્રહૈરુકઃ ૪ । ૧ ।

સૂચીકલાપકે સમાન નિકાચિત્ત હોતા હૈ । યર્હા કર્મોંકો પિણ્ડીભૂત હો
જાનેસે ડનમેં ન્યૂનાડધિકતા કરના અસમ્ભવહૈ । વિશેષ રૂપસે વન્ધ આદિકે
સ્વરૂપકો જાનનેવાલેકે લિયે કર્મપ્રકૃતિ સ ગ્રહણી દેખના ચાહિયે ॥ સૂ૦ ૫૮ ॥

કહે ગયે અલ્પ-વહુત્વમેં જો અત્યન્ત અલ્પ હૈ વહ એક સંખ્યાવાલા
હોતા હૈ, ઓર હસસે જો અધિક હોતા હૈ વહ અપેક્ષાસે વહુ હોતા હૈ ।
અવ સૂત્રકાર અલ્પ ઓર વહુત્વ એક-કતિ ઓર સર્વ શબ્દોંકો દ્રવ્યાદિ-
કોંકે સાથ લેકર ચાર સ્થાનકા કથન કરતે હેં ।

“ ચત્તારિ એકગા પળ્લણત્તા ” ઇત્યાદિ—

ભારા) કર્મોંને ન્યૂનાધિક કરવાની શક્તિ હોય છે તથા તપાવીને એકત્ર કર્યા બાદ
ડીપવામાં આવેતા સૂચીકલાપ સમાન નિકાચિત્ત હોય છે. અહીં કર્મોં પિંડીભૂત
થઈ જવાને કારણે તેમાં ન્યૂનાધિકતા કરવાનું અસંભવિત બને છે. બન્ધ આદિના
સ્વરૂપનું વિસ્તારપૂર્વકનું કથન કર્મપ્રકૃતિ સંગ્રહણીમાથી વાંચી લેવું. ॥ સૂ. ૫૮ ॥

આગલા સૂત્રમાં જે અલ્પબહુત્વનું નિરૂપણ કર્યું, તેમાં જે અત્યંત
અલ્પ છે તે એક સંખ્યાવાળું હોય છે, અને તેના કરતાં જે અધિક હોય
છે, તે તેની અપેક્ષાએ બહુ હોય છે હવે સૂત્રકાર અલ્પ-બહુત્વ દર્શક એક
કતિ (કેટલાક) અને સર્વ શબ્દોંને દ્રવ્યાદિકોની સાથે લઇને ચાર સ્થાનકનું
કથન કરે છે “ ચત્તારિ એકગા પળ્લણત્તા ” ઇત્યાદિ—

ચત્વારિ કતિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-દ્રવ્યકતિ ૧, માતૃકાકતિ ૨, પર્યાયકતિ ૨, સર્વપ્રકતિ ૪ । ૨ ।

ચત્વારિ સર્ગાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-નામસર્વક ૧, સ્થાપનાસર્વક ૨, આદેશસર્વક ૩, નિરવશેષસર્વક ૪ ॥૩॥ ૫૨ ॥

ટીકા—“ ચત્વારિ એકગા ” इत्यादि—एककानि-एकान्येवैककानि, स्वार्थे कन्प्रत्ययोऽत्र बोध्यः, चत्वारि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-द्रव्यैकः ४ द्रव्यमेवैककं द्रव्यैककं-सचित्ताचित्तमिभयरूपम् । तत्र-सचित्तमेक पुरुषद्रव्यम्, अचित्तमेकं स्वर्णपिण्डादिद्रव्य, मिभं-कटककुण्डलादिभूषितमेक पुरुषद्रव्यम् । १ ।

તથા—માતૃકૈકક-માતૃકાસંદ્ધોઽત્ર માતૃકાપદપર, તેન માતૃકાપદમેવૈકકં, માતૃકૈકકમ્-૧૬ માતૃકાપદમિત્વર્ણઃ, યદ્વા-મધ્યમપદજોપિસમાસઃ શાકપાર્થિવા

ચાર પ્રકારકે એકક કહે ગયે હૈ, જિસે-દ્રવ્ય એકક ૧, માતૃકા એકક ૨, પર્યાય એકક ૨, ઓર સમ્રહ એકક ૪ । કઈ-ચદ્ ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, જિસે-દ્રવ્ય કઈ ૧, માતૃકા કઈ ૨, પર્યાય કઈ ૨, ઓર સમ્રહ કઈ ૪ । ચાર પ્રકારકે સર્વ કહે ગયે હૈ, જિસે-નામ સર્વક ૧, સ્થાપના સર્વક ૨, આદેશ સર્વક ૩ ઓર નિરવશેષ સર્વક ૪ ।

इस सूत्रका स्पष्टीकरण इस प्रकारसे है—यह द्रव्य एकक आदिके मेदसे चार प्रकारका कहा गया है वस्तुता भाव ऐसा है—द्रवरूप जो एकक है वह द्रव्य एकक है, यह सचित्त अचित्त और मिभयरूप होता है । द्रवरूप पुरुष सचित्त एकक है १, स्वर्ण पिण्डादिरूप अचित्त एकक है २ और कटककुण्डल आदिसे विभूषित द्रवरूप पुरुष मिभ एकक है ३ ।

“ मातृकैककम् ”—यहां मातृका शब्द मातृका पद परक है । अतः

સૂત્રમ્—ચાર પ્રકારના એકક કહ્યા છે—(૧) ૪ ૩ એકક (૨) માતૃકા એકક, (૩) પર્યાય એકક અને (૪) સમ્રહ એકક ચાર પ્રકારના કતિ (કઈ) કહ્યા છે—(૧) દ્રવ્ય કતિ, (૨) માતૃકા કતિ, (૩) પર્યાય કતિ અને (૪) સમ્રહ કતિ ચાર પ્રકારના સર્વ કહ્યા છે—(૧) નામ સર્વક (૨) સ્થાપના સર્વક, (૩) આદેશ સર્વક અને (૪) નિરવશેષ સર્વક

જા સૂત્ર સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે—તેના દ્રવ્ય એકક આદિ ચાર ભેદ કહ્યા છે દ્રવ્યરૂપ જે એકક છે તેને દ્રવ્ય એકક કહે છે તે સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્રરૂપ કહે છે દ્રવ્યરૂપ પુરુષ સચિત્ત એકક છે સુવર્ણ પિંડાદિ રૂપ અચિત્ત એકક છે અને કુળા આદિથી વિભૂષિત દ્રવ્યરૂપ પુરુષ મિશ્ર એકક છે

‘ માતૃકૈકકમ્ ’ અહીં માતૃકા શબ્દ માતૃકા પદપરક છે તેથી માતૃકા પદ

દિત્વાત્, તદ્વથા-“ ઉપ્પન્નેહ વે ”-ત્યાદિ, ઇહ પ્રવચને દષ્ટિવાદે સકલનયવાદ-મૂલભૂતાનિ માતૃકાપદાનિ ભવન્તિ, યથા-“ ઉપ્પન્નેહ વા વિગમેહ વા ધુવેહવેત્તિ, અમૂનિ ચ માતૃકાપદાનીવ ‘ અ. આ ’ ઇત્યેવમાદીનિ સકલશબ્દશાસ્ત્રાર્થવ્યાપાર વ્યાપક્તવાન્માતૃકા પદાની ”-તિ । ૨।

તથા-પર્યાયૈકક:-પર્યાયો ધર્મઃ, સ એવૈકકઃ પર્યાયૈકક:-એકઃ પર્યાયઃ, સ ચાડ્ડદિષ્ટાનાદિષ્ટભેદેન દ્વિવિધઃ, તત્રાડ્ડદિષ્ટઃ કૃષ્ણાદિઃ, અનાદિષ્ટો વર્ણાદિઃ । ‘ પર્યાયો વિશેષો ધર્મઃ ’ ઇત્યેતે સમાનાર્થાઃ । ૩।

માતૃકા પદ રૂપ જો એકક હૈ વહ માતૃકા એકક હૈ । અથવા-“ એક માતૃકાપદ ” ઇતિ માતૃકૈકકમ્-યહાં શાકપાર્થિવાદિ જૈસા મધ્યમપદ લોપી સમાસ હૈ । જૈસે-શાકપ્રિયઃ પાર્થિવઃ શાકપાર્થિવઃ મેં મધ્યમ પદ પ્રિયકા લોપ કરકે શાકપાર્થિવઃ વનતા હૈ, ડસી પ્રકારસે યહાંમી મધ્યમ પદ “ પદ ” કા લોપ કરકે “ માતૃકૈકકમ્ ” વના હૈ । પ્રવચનમેં દ્રષ્ટિ-વાદમેં જૈસે-“ ઉપ્પન્નેહવા, વિગમેહવા, ધુવેહવા, યે માતૃકાપદ હૈ, ડસી પ્રકાર અ-આ આદિ વર્ણ ‘ માતૃકાપદ ’ હૈ । ક્યોંકિ યે માતૃકાપદોંકી તરહ સકલ શાસ્ત્રોંકે અર્થકા વ્યાપારમેં વ્યાપક હેં ૨ ।

“ પર્યાયૈકક ”-પર્યાય નામ ધર્મકા હૈ । પર્યાયરૂપ જો એકક હૈ, વહ પર્યાયૈકકહૈ, યહ પર્યાયૈકક એક પર્યાયરૂપ હૈ । આદિષ્ટ અનાદિષ્ટકે ભેદસે યહ ડો પ્રકારકા હૈ । કૃષ્ણાદિપર્યાય આદિષ્ટ, ઓર વર્ણાદિ પર્યાય અનાદિષ્ટ હૈ । પર્યાય વિશેષ ઓર ધર્મ યે સમાનાર્થક હેં ૩ ।

૩૫ જે એકક છે, તે માતૃકા એકક છે

વર્ણાક્ષર ૩૫ એકકને માતૃકા એકક કહે છે અથવા “ એક માતૃકાપદ્વં ઇતિ માતૃકૈકકમ્ ” એવો પણ માતૃકા એકક શબ્દનો વિશ્લેષ થાય છે. અહીં શાકપાર્થિવાદી જેવો મધ્યમપદ લોપી સમાસ છે જેમકે “ શાકપ્રિયઃ પાર્થિવઃ શાકપાર્થિવ ” શાકપાર્થિવમાં પ્રિય પદનો લોપ કરીને આ સમાસ આપ્યો છે શાક જેને પ્રિય છે એવો પાર્થિવ, તે શાકપાર્થિવ એ જ પ્રમાણે અહીં પણ મધ્યમ પદ “ પદ ” નો લોપ કરીને “ માતૃકૈકકમ્ ” શબ્દ બન્યો છે પ્રવચનમાં-દષ્ટિવાદમાં જેવી રીતે “ ઉપ્પન્નેહ વા વિગમેહ વા, ધુવેહવા ” એ માતૃકા પદ ૩૫ છે, એ જ પ્રમાણે ‘ અ ’, ‘ આ ’ આદિ વર્ણ ‘ માતૃકા પદ ’ છે કારણ કે તેઓ માતૃકાપદોની જેમ સકલ શાસ્ત્રોના અર્થના વ્યાપારમાં વ્યાપક છે

“ પર્યાયૈકકઃ ” પર્યાય એટલે ધર્મ પર્યાય૩૫ જે એકક છે તેને પર્યાયૈકક કહે છે તે પર્યાયૈકક એક પર્યાય૩૫ છે આદિષ્ટ અને અનાદિષ્ટના ભેદથી તે બે પ્રકારનું છે કૃષ્ણાદિ પર્યાય આદિષ્ટ છે અને વર્ણાદિ પર્યાય અનાદિષ્ટ છે. પર્યાય, વિશેષ અને ધર્મ એ સમાનાર્થક છે.

તથા—સદ્ગ્રહૈકકા—સદ્ગ્રહણ સદ્ગ્રહઃ—સમુદાયઃ, સર્વૈકક સદ્ગ્રહૈકકા—
 એકઃસદ્ગ્રહૈકકા—સદ્ગ્રહૈકકા, યથા—એકઃ શાલિરિતિ, શાલિસમુદાયઃસમુદાયોનેક—વચના
 ન્તશાલિરિત્યુચ્યતે પ્રશ્નસિ, તથા—નૈકોઽપિ શાલિઃ શાલિરિત્યુચ્યતે, વહોઽપિ
 શાલયઃ શાલિરિત્યુચ્યતે, લોકે તથાવ્યવહારવર્ણનાત્, લોકે સમ્પન્નઃ શાલિરિતિ
 ક્રમનેન શાલયઃ સમ્પન્ના इत्यर्थः स्फुटति । ૪।

“સંગ્રહૈકક”--સમગ્ર નામ સમુદાયકા હૈ, સંગ્રહરૂપ જો એકક
 હૈ વહ સંગ્રહૈકક હૈ એસ ‘ પદ્માશાલી ”--કહનેસે શાલિ સમુદાયક
 આશયસે એક વચનાન્ત શાલિ શા-રકા પ્રયોગ હોતા હૈ । તથાચ--એકમી
 શાલિ શાલિ કહલાતા હૈ ઓર અનેકમી વયોંકિ લોકવેં એસા વ્યવહાર
 વેચ્ચા જાતા હૈ । એસામી અર્થ સ્ફુટ હોતા હૈ ૪ ।

તાત્પર્ય વહ હૈ કિ-દ્રવ્ય, અ-આ આદિ બક્ષર, મનુષ્ય આદિ પર્ણીય
 ઓર સમુદાય યે સય અનેક હૈ । જીવ અજીવ આદિ દ્રવ્ય હૈ, અ-આ
 આદિ વર્ણમાલાકે બક્ષર હૈ । મનુષ્ય આદિ પર્ણીય હૈ ૨, ઓર અનાજ
 આદિ અનેક વસ્તુ હૈ ૩ । પરન્તુ જીવ અજીવ આદિ એક દ્રવ્ય હૈ । હસ
 લિયે એક એકદ્રવ્યકી અપેક્ષાસે હોતા હૈ, અતઃ વહ દ્રવ્યેકક હૈ । વૃસરા
 એક માતૃકાપદકી અપેક્ષાસે હોતા હૈ । વયોંકિ જિતનેમી વર્ણ હૈ, માતૃ
 કાપદકે અન્તર્ગત હૈ, અતઃ--વહ માતૃકાપદરૂપ એકક હૈ । તીસરા એક,

સંગ્રહૈકક —સંગ્રહ એ હૈ સમુદાય તે સંગ્રહરૂપ એ એક છે તેને
 સંગ્રહૈકક કહે છે એમકે “ એક શાલિ ” આ પ્રમાણે કહેવાથી શાલિ (શાખાની
 એક બાવ) સમુદાયને આધારે એકવચનાન્ત શાલિ થયેલો પ્રયોગ થાય છે.
 અથવા એક શાલીને પણ શાલિ કહે છે અને અને શાલિને--શાલિના વચ્ચાને
 પણ શાલિ જ કહે છે, કારણ કે લોકોમાં આ પ્રકારનો વ્યવહાર એવામાં
 આવે છે લોકોમાં “ સમ્પન્નઃ શાલિ ” આ પ્રમાણે કહેવાથી “ સમ્પન્ના શાલયઃ ”
 આ પ્રકારનો અર્થ પણ સ્ફુટ (પ્રકટ) થાય છે આ સમસ્ત કથનનું તાત્પર્ય
 એ છે કે દ્રવ્ય અ-આ આદિ બક્ષર, મનુષ્ય આદિ પર્ણીય અને સમુદાય
 એ બધાં અનેક છે એવ-એવ આદિ દ્રવ્ય છે અ-આ આદિ પર્ણીયના
 બક્ષરો છે મનુષ્ય આદિ પર્ણીય છે અને અનાજ આદિ અનેક વસ્તુ છે,
 છે, પરન્તુ એવ-એવ આદિ એક દ્રવ્ય છે તેથી એ એકક થાય છે તે એક
 દ્રવ્યની અપેક્ષાએ થાય છે તે કારણે તેને દ્રવ્યેકક કહે છે બીજું એકક
 માતૃકાપદની અપેક્ષાએ થાય છે કારણ કે અ-આ આદિ એટલાં વર્ણ છે,
 તેમનો માતૃકાપદમાં સમાવેશ થયેલ છે તેથી તેને માતૃકાપદ રૂપ એકક

“ ચત્તારિ કઙ ” ઇત્યાદિ—કતિશબ્દઃ સંખ્યાપરિમાણવિશેષવિષયપ્રશ્નવિષયકપદાર્થવાચકો વહુવચનાન્તઃ, સ ચ સામાન્યતયા નપુંસકે પ્રયુક્તઃ, તાનિ કતિ ચત્તારિ પ્રજ્ઞાનિ, તથા—દ્રવ્યકતિ—દ્રવ્યાણ્યેવ દ્રવ્યકતિ—કતિ દ્રવ્યાણીત્યર્થઃ, યદ્વા—દ્રવ્યવિષયઃ કતિશબ્દો દ્રવ્યકતિઃ, એવં માતૃકાદિષ્વપિ વોધ્યમ્ । નવરં—સઙ્ગ્રહાઃ—શાલિયવગોધૂમાઃ, ત એવ કતિ સઙ્ગ્રહકતિ । ૪ ।

પર્યાયકી અપેક્ષાસે હોતા હૈ, ક્યોંકિ પર્યાય સામાન્યકી અપેક્ષા સમસ્ત પર્યાય એક હૈ, અતઃ વહ પર્યાયૈકક હૈ । તથા ચતુર્થ એક સંગ્રહકી અપેક્ષાસે હોતા હૈ અતઃ વહ સંગ્રહૈકક હૈ, યચ્ચપિ—સત્કી અપેક્ષા ‘ સદૈક ’ હસ રૂપસે એકહી એક હો સકતા હૈ પરન્તુ યહાં ચતુઃસ્થાનકે અનુરોધસે હસકા ગ્રહણ નહીં હુવા હૈ ।

“ ચત્તારિ કઙ ” ઇત્યાદિ—કતિ શબ્દ સદા વહુવચનાન્ત હૈ ઔર યહ સંખ્યા એવં પરિમાણવિશેષ વિષયક પ્રશ્ન સમ્બન્ધી પદાર્થકા વાચક હોતા હૈ, યહાં યહ સામાન્યરૂપ હોનેસે નપુંસકલિંગમેં પ્રયુક્ત હુવા હૈ । વૈસે તો કતિ શબ્દ વ્યાકરણમેં પુંલિંગમેં નિર્દિષ્ટ હુવા હૈ, યે કતિ ચાર કહે ગયે હૈં । જૈસે—દ્રવ્ય કતિ આદિ, દ્રવ્યરૂપ જો કતિ શબ્દ હૈ વહ દ્રવ્ય-કતિ હૈ । જૈસે—કતિ દ્રવ્યાણિ, યહાં દ્રવ્યોંકોહી કતિરૂપ માન લિયા ગયા હૈ, અથવા—દ્રવ્યકો વિષય કરનેવાલા જો કતિ શબ્દ હૈ વહ દ્રવ્ય-કતિ હૈ । હસી તરહસે માતૃકા આદિ પદોમેં સમઙ્ગ લેના ચાહિયે,

કહે છે ત્રીજુ એકક પર્યાયની અપેક્ષાએ થાય છે, કારણ કે પર્યાય સામાન્યની અપેક્ષાએ સમસ્ત પર્યાય એક છે, તેથી તે એકકને પર્યાયેકક કહે છે. તથા ચોથુ એકક સંગ્રહ (સમૂહ) ની અપેક્ષાએ થાય છે, તેથી તેને સંગ્રહેકક કહે છે જે કે સત્ની અપેક્ષાએ ‘ સદૈક ’ આ રૂપે એક જ હોઈ શકે છે, પરન્તુ અહીં ચાર સ્થાનનુ પ્રકરણ ચાલતુ હોવાથી તેને ગ્રહણ કરેલ નથી

“ ચત્તારિ કઙ ” ઇત્યાદિ—‘ કતિ ’ શબ્દ હંમેશા બહુવચનમાં વપરાય છે તે સંખ્યા અને પરિણામ વિષયક પ્રશ્ન સંબધી પદાર્થનો વાચક હોય છે. અહીં સામાન્ય રૂપે તેનો પ્રયોગ થયેલો હોવાથી તેને નપુંસકલિંગ (નાન્ય-તર જાતિ) માં વાપરવામાં આવેલ છે—આમ તો કતિ પદ વ્યાકરણમાં પુલ્લિંગ (નર જાતિ) નું કંછુ છે તે કતિ (બહુ) ચાર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) દ્રવ્ય કતિ, (૨) માતૃકા કતિ, (૩) પર્યાય કતિ, (૪) સંગ્રહ કતિ દ્રવ્યરૂપ જે કતિ શબ્દ છે તેને દ્રવ્યકતિ કહે છે. જેમકે “ કતિ દ્રવ્યાણિ ” અહીં દ્રવ્યોને જ કતિરૂપ માની લેવામાં આવેલ છે અથવા દ્રવ્યોનું પ્રતિપાદન કરનારો જે કતિ શબ્દ છે તેનું નામ દ્રવ્યકતિ છે એ જ પ્રમાણે માતૃકા આદિ પદોમાં પણ સમજી લેવું.

તથા—સમ્પ્રદેશકઃ—સમ્પ્રદેશણ સમ્પ્રદેશઃ—સમુદાયઃ, સ પર્યેશકઃ સમ્પ્રદેશકઃ—
 એકઃ સમ્પ્રદેશ ઇત્યર્થઃ, તથા—એકઃ શાલિરિતિ, શાલિસમુદાયોઽભવણેનૈક—વચના
 ન્તશાલિશબ્દોઽપ્ય પ્રવર્તતે, તથા—નૈકોઽપિ શાલિઃ શાલિરિત્યુચ્યતે, મહત્ત્વોઽપિ
 શાલયઃ શાલિરિત્યુચ્યતે, લોકે તથાવ્યવહારદર્શનાત્, લોકે સમ્પન્નઃ શાલિરિતિ
 કષ્ણનેન શાલયઃ સમ્પન્ના ઇત્યર્થઃ સ્ફુટતિ ।૫।

“સમ્પ્રદેશક” —સમ્પ્રદેશ નામ સમુદાયકા છે, સમ્પ્રદેશરૂપ જો એકક
 છે તો સમ્પ્રદેશક છે એમ ‘પ્રતાપશાસ્ત્રીઃ’ —કહેનેસે શાલિ સમુદાયકે
 આશ્રયસે એક વચનાન્ત શાલિ શબ્દકા પ્રયોગ થોતા છે । તથાચ—એકમી
 શાલિ શાલિ કહલાતા છે ઓર અનેકમી વર્ણોલ્લેખે એસા વ્યવહાર
 દેખા જાતા છે । એસામી અર્થ સ્ફુટ થોતા છે ૪ ।

તાત્પર્ય તથા છે કિ—દ્રવ્ય, અ—આ આદિ અક્ષર, મનુષ્ય આદિ પર્વાય
 ઓર સમુદાય એ સર્વ અનેક છે । જીવ અજીવ આદિ દ્રવ્ય છે, અ—આ
 આદિ વર્ણમાલાકે અક્ષર છે ૧ મનુષ્ય આદિ પર્વાય છે ૨, ઓર અનાજ
 આદિ અનેક વસ્તુ છે ૩ । પરન્તુ જીવ અજીવ આદિ એક દ્રવ્ય છે । ઇસ
 લિયે એક એકદ્રવ્યકી અપેક્ષાસે થોતા છે, અતઃ તથા દ્રવ્યેકક છે । દૂસરા
 એક માતૃકાપદકી અપેક્ષાસે થોતા છે । વર્ણોલ્લેખે જિતનેમી વર્ણ છે, માતૃ
 કાપદકે અન્તર્ગત છે, અતઃ—તથા માતૃકાપદરૂપ એકક છે । તીસરા એક,

સમ્પ્રદેશક —સમ્પ્રદેશ એ છે સમુદાય, તે સમ્પ્રદેશક એ એક છે તેને
 સમ્પ્રદેશક કહે છે એમ ‘પ્રતાપશાસ્ત્રીઃ’ આ પ્રમાણે કહેવાથી શાલિ (શાલિની
 એક જાત) સમુદાયને આધારે એકવચનાન્ત શાલિ શબ્દને પ્રયોગ થાય છે
 અથવા એક શાલિને પણ શાલિ કહે છે અને અને શાલિને—શાલિના અવધાને
 પણ શાલિ જ કહે છે, કારણ કે લોકોમાં આ પ્રકારનો વ્યવહાર એવામાં
 આવે છે લોકોમાં “સમ્પન્નઃ શાલિઃ” આ પ્રમાણે કહેવાથી ‘સમ્પન્નાઃ શાલયાઃ’
 આ પ્રકારનો અર્થ પણ સ્ફુટ (પ્રકટ) થાય છે આ સમસ્ત કથનનું તાત્પર્ય
 એ છે કે દ્રવ્ય, અ—આ આદિ અક્ષર, મનુષ્ય આદિ પર્વાય અને સમુદાય
 એ વર્ણો અનેક છે અ—અજીવ આદિ દ્રવ્ય છે અ—આ આદિ વર્ણમાળાના
 અક્ષરો છે મનુષ્ય આદિ પર્વાય છે અને અનાજ આદિ અનેક વસ્તુ છે,
 છે, પરન્તુ અ—અજીવ આદિ એક દ્રવ્ય છે તેથી તે એકક થાય છે તે એક
 દ્રવ્યની અપેક્ષાએ થાય છે તે કારણે તેને દ્રવ્યેકક કહે છે બીજી એકક
 માતૃકાપદની અપેક્ષાએ થાય છે કારણ કે અ—આ આદિ એટલાં વર્ણો છે,
 તેમના માતૃકાપદમાં સમાવેશ થઈ જાય છે તેથી તેને માતૃકાપદ રૂપ એકક

“ ચત્તારિ કઠ ” ઇત્યાદિ—કતિશબ્દઃ સંખ્યાપરિમાણવિશેષવિષયપ્રશ્નવિષયકપદાર્થવાચકો બહુવચનાન્તઃ, સ ચ સામાન્યતયા નપુંસકે પ્રયુક્તઃ, તાનિ કતિ ચત્તારિ પ્રજ્ઞમાનિ, તદ્વથા—દ્રવ્યકતિ—દ્રવ્યાણ્યેવ દ્રવ્યકતિ—કતિ દ્રવ્યાણીત્યર્થઃ, યદ્વા—દ્રવ્યવિષયઃ કતિશબ્દો દ્રવ્યકતિઃ, એવં માતૃકાદિષ્વપિ બોધ્યમ્ । નવરં—સહગ્રહાઃ—શાલિયવગોધૂમાઃ, ત એવ કતિ સહગ્રહકતિ । ૪ ।

પર્યાયકી અપેક્ષાસે હોતા હૈ, ક્યોંકિ પર્યાય સામાન્યકી અપેક્ષા સમસ્ત પર્યાય એક હૈ, અતઃ વહ પર્યાયૈકક હૈ । તથા ચતુર્થ એક સંગ્રહકી અપેક્ષાસે હોતા હૈ અતઃ વહ સંગ્રહૈકક હૈ, યદ્યપિ—સત્કી અપેક્ષા ‘ સદૈક ’ ઇસ રૂપસે એકહી એક હો સકતા હૈ પરન્તુ યહાં ચતુઃસ્થાનકે અનુરોધસે ઇસકા ગ્રહણ નહીં હુવા હૈ ।

“ ચત્તારિ કઠ ” ઇત્યાદિ—કતિ શબ્દ સદા બહુવચનાન્ત હૈ ઓર યહ સંખ્યા એવં પરિમાણવિશેષ વિષયક પ્રશ્ન સમ્યન્ધી પદાર્થકા વાચક હોતા હૈ, યહાં યહ સામાન્યરૂપ હોનેસે નપુંસકલિંગમેં પ્રયુક્ત હુવા હૈ । વૈસે તો કતિ શબ્દ વ્યાકરણમેં પુંલિંગમેં નિર્દિષ્ટ હુવા હૈ, યે કતિ ચાર કહેં ગયે હૈ । જૈસે—દ્રવ્ય કતિ આદિ, દ્રવ્યરૂપ જો કતિ શબ્દ હૈ વહ દ્રવ્ય-કતિ હૈ । જૈસે—કતિ દ્રવ્યાણિ, યહાં દ્રવ્યોંકોહી કતિરૂપ માન લિયા ગયા હૈ, અથવા—દ્રવ્યકો વિષય કરનેવાલા જો કતિ શબ્દ હૈ વહ દ્રવ્ય-કતિ હૈ । ઇસી તરહસે માતૃકા આદિ પદોમેં સમજા લેના ચાહિયે,

કહે છે ત્રીજુ એકક પર્યાયની અપેક્ષાએ થાય છે, કારણ કે પર્યાય સામાન્યની અપેક્ષાએ સમસ્ત પર્યાય એક છે, તેથી તે એકકને પર્યાયૈકક કહે છે તથા ચોથુ એકક સંગ્રહ (સમૂહ) ની અપેક્ષાએ થાય છે, તેથી તેને સંગ્રહેકક કહે છે જે કે સત્ની અપેક્ષાએ ‘ સદૈક ’ આ રૂપે એક જ હોઈ શકે છે, પરન્તુ અહીં ચાર સ્થાનનું પ્રકરણ ચાલતુ હોવાથી તેને ગ્રહણ કરેલ નથી

“ ચત્તારિ કઠ ” ઇત્યાદિ—‘ કતિ ’ શબ્દ હંમેશા બહુવચનમાં વપરાય છે તે સંખ્યા અને પરિણામ વિષયક પ્રશ્ન સંબંધી પદાર્થનો વાચક હોય છે. અહીં સામાન્ય રૂપે તેનો પ્રયોગ થયેલો હોવાથી તેને નપુંસકલિંગ (નાન્ય-તર જતિ) માં વાપરવામાં આવેલ છે—આમ તો કતિ પદ વ્યાકરણમાં પુલ્લિંગ (નર જતિ) તુ કંહુ છે તે કતિ (બહુ) ચાર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) દ્રવ્ય કતિ, (૨) માતૃકા કતિ, (૩) પર્યાય કતિ, (૪) સંગ્રહ કતિ દ્રવ્યરૂપ જે કતિ શબ્દ છે તેને દ્રવ્યકતિ કહે છે. જેમકે “ કતિ દ્રવ્યાણિ ” અહીં દ્રવ્યોને જ કતિરૂપ માની લેવામાં આવેલ છે અથવા દ્રવ્યોતુ પ્રતિપાદન કરનારો જે કતિ શબ્દ છે તેનું નામ દ્રવ્યકતિ છે એ જ પ્રમાણે માતૃકા આદિ પદોમાં પણ સમજ લેવું.

“ ચત્તારિ સઘ્વા ” કથાત્—સર્વાણિ ચત્તારિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—નામમ સર્વકં—નામ ચ તત્ સર્વં ચ નામ સર્વક—સર્વં નામેત્યર્થઃ, યદ્વા—સચેતનાદેર્યસ્ય વસ્તુન સર્વમિતિ નામ તત્ નામસર્વકમિતિ, યદ્વા—નામ્ના સર્વક નામસર્વકમ્ । ૧ ।

વિશેષ—શાલિ, યથ, ગોષૂમ-ગેહુ આદિ યદ્વા સંગ્રહ શબ્દસે લિપ્તે ગયે હૈ, इन समग्ररूप जो कति है वह संग्रहकति है । तात्पर्य ऐसा है कि कति शब्द बहुवचनान्त होनेसे बहुत्वार्थका वाचक होता है । अत्र द्व्यणोको अनेक होनेसे इनकीही बहुताका साधर्म्य वाचक कति शब्द कह दिया गया है । इसी तरह मातृका पदोमें भी अनेकता बहुत्व होनेसे उन्हें कति मान लिया गया है । पर्यायोंको भी इसी हेतुसे कतिरूप मान लिया गया है । तथा—संग्रह समुदायभी भिन्न-२ होते हैं, अतः—अनेकताके साधर्म्यसे समग्ररूप समुदायको भी कतिरूप मान लिया गया है ।

“ चत्तारि सઘ્વા ”—સર્વમી ચાર પ્રકારકે કહે ગયે હૈ, जैसे—नाम सर्व आदि इनमें नाम रूप जो सर्व है वह नामसर्वक है, अर्थात् सर्व ऐसा जो नाम है वह नामसर्वक है । नाय यह है कि सचेतन आदि वस्तुका “ सर्वम् ” ऐसा लोकव्यवहार चलानेके लिये नाम रत्न लिया जाता है वह नामसर्वक है । यही भाव=यद्वा नाम्ना सर्वकम् इस कथ-

વિશેષ—શાલિ જવ યદ્વા આદિ અહીં સંગ્રહ શબ્દથી ગૃહીત થયેલ છે એ સંગ્રહરૂપ એ કતિ છે તેને ‘ સંગ્રહ કતિ ’ કહે છે આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે કતિ શબ્દ બહુવચનનું પણ હોવાથી બહુત્વવચક હોય છે । એથી અનેકતા હોવાથી તેમની જ બહુતાના સાધર્મ્ય વાચક કતિ શબ્દને કહેવામાં આવ્યો છે એ જ પ્રમાણે માતૃકાપદોમાં (વર્ણાક્ષરોમાં) પણ અનેકતાનો સૂચક હોવાથી તેમને પણ કતિ (બહુ) માની લેવામાં આવેલ છે । પર્યાયને પણ એ જ કારણે કતિરૂપ માનવામાં આવેલ છે તથા સંગ્રહ સમુદાય પણ ભિન્ન ભિન્ન હોય છે તેથી અનેકતાના સાધર્મ્યથી સંગ્રહ રૂપ સમુદાયને પણ કતિ રૂપ માની લેવામાં આવ્યો છે ।

“ ચત્તારિ સઘ્વા ” સર્વં પણ ચાર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) નામ સર્વક (૨) સ્થાપના સર્વક (૩) આદેશ સર્વક અને (૪) નિશ્ચયેષ સર્વક નામરૂપ એ સર્વ છે તેને નામસર્વક કહે છે એટલે કે સર્વ એનું નામ છે તે નામસર્વક છે આ કથનનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—લોકવ્યવહાર વ્યસાવશ માટે સચેતનાદિ વસ્તુનું “ સર્વમ્ ” એનું નામ રાખવામાં આવે છે તેને નામ સર્વક કહે છે ‘ યદ્વા માતૃકાં વચકમ્ ’ આ કથનનો પણ એ જ ભાવ છે ।

સ્થાપનાસર્વકમ્-સ્થાપનયા - સર્વમેતદિતિ કલ્પનયા સર્વં સ્થાપનાસર્વકમ્-
અક્ષાદિ સર્વં દ્રવ્યમ્ । ૨ ।

આદેશસર્વકમ્-આદેશનમાદેશ:-વ્યવહાર, તસ્માત્ સર્વં તદેવ, વ્યવહારસર્વ
મિત્યર્થઃ, આદેશમર્વતા ચ વહુતરે પ્રધાને વા મવતિ, દૃશ્યતે ચ લોકે યથા-
પરિગૃહીતમક્તમધ્યાદ્ વહુતરે મુક્તેડલ્પે ચાવશિષ્ટે સર્વમક્ત મુક્તમિતિ, ગ્રામપ્રધાનેષુ
પુરુષેષુ ગતેષુ અપ્રધાનેષુ ચાવસ્થિતેષુ 'સર્વો ગ્રામો ગત' ઇતિ ચ વ્યવહારઃ । ૩ ।

નકામી હૈ । “ સ્થાપના સર્વકમ્ ” જિસ કિસી પદાર્થમેં “ સર્વ ” એસી
જો સ્થાપના આરોપ કર લી જાતી હૈ વહ સ્થાપના સર્વક હૈ, જૈસે-અક્ષા
દિકોમેં “ સર્વ ” એસી સ્થાપના કરલી જાતી હૈ ।

“ આદેશ સર્વક ”--આદેશ નામ વ્યવહારકા હૈ, હસ વ્યવહારસે
જો સર્વ માન લિયા જાતા હૈ વહ આદેશસર્વક હૈ । યહ આદેશ સર્વતા
વહુતરમેં, યા પ્રધાનમેં હોતી હૈ । જૈસે-લોકમેં જય કિ મોજ્યપદ્ધતિમેં અધિક
આદમી જીમ જાતે હૈં ઓર થોડેલે વચે રહતે હૈં, તય લોગ કહ દિયા
કરતે હૈં કિ સવ જીમ ગયે । અથવા--જિનના મોજન તૈયાર કિયા ગયા
હૈ ઉસમેંસે જય અધિકતર મોજન खरच લિયા જાતા હૈ ઓર થોડા
વાકી વચા રહતા હૈ । તો એસા વ્યવહાર દેખા જાતા હૈ કિ સવ મોજન
લા લિયા ગયા હૈ યહ આદેશકી અપેક્ષા સર્વતા હૈ ।

એસે હી જય ગ્રામકે પ્રધાન પુરુષ ચલે જાતે હૈં ઓર અપ્રધાન પુરુષ
રહમી જાતે હૈં, તોમી સવ ગ્રામ ચલા ગયા એસા વ્યવહાર હોતા હૈ,
યહ પ્રધાનકી અપેક્ષા સર્વતા હૈ ૩ ।

“ સ્થાપનાસર્વકમ્ ” જે કેઈ પદાર્થમા “ સર્વ ” એવી જે સ્થાપના આરોપણા
કરવામાં આવે છે, તેને ‘ સ્થાપના સર્વક ’ કહે છે જેમકે અક્ષાદિકેમાં ‘ સર્વ ’
એવી સ્થાપના કરવામાં આવે છે “ આદેશસર્વક ” આદેશ એટલે વ્યવહાર
તે વ્યવહારની અપેક્ષાએ જેને ‘ સર્વ ’ માની લેવામાં આવે છે તેને ‘ આદેશ
સર્વક ’ કહે છે આ આદેશમર્વતા બહુતરમા અથવા પ્રધાન (મુખ્ય) મા
હોય છે જેમકે કોઈ ભોજન સમારભમાં અધિક માણસોએ જમી લીધું હોય
અને થોડાને જ જમવાનું બકી હોય ત્યારે એવું કહેવામાં આવે છે કે સર્વ
લોકો જમી ગયા છે અથવા જેટલું ભોજન તૈયાર કરાવ્યું હોય તેના અધિ-
કતર ભાગ વપરાઈ ગયો હોય અને ઘણો થોડો ભાગ વધ્યો હોય, ત્યારે એમ
કહેવામાં આવે છે કે મધળી રસોઈ ખવાઈ ગઈ છે આ પ્રકારની સર્વતાને
આદેશની અપેક્ષાએ સર્વતા કહે છે એ જ પ્રમાણે કોઈ સભામાંથી મુખ્ય
મુખ્ય માણસો આલ્યા નાચ અને સામાન્ય માણસો જ બાકી રહે ત્યારે પણ એવું
કહેવામાં આવે છે કે “ સૌ આલ્યા ગયા ” આ પ્રધાનની અપેક્ષાએ (સર્વતા) છે

निरवशेषसर्वकम्—अवशेषः—शेषः, सस्माभिर्गत निरवशेषं, तच्च सर्वं च निरवशेषसर्वं, तदेव निरवशेषसर्वकम्—अवशिष्ट-यक्तिमनाभित्य सर्वम्, यथा—‘सर्वे देवा अनिमिषाः’ अत्र निमेषराहित्यं सर्वेषु देवेषु न तु कामपि देवव्यक्तिं पिश्या वशिष्ठीषि । सर्वेषु भक्षेषु स्वार्थिक ककारो बोध्याः ॥४॥ सू० ५९ ॥

पूर्वं सर्वं निरूपितं, सत्प्रस्तावात्साम्प्रतं सर्वमनुष्यक्षेत्रपर्यन्तगते पर्यते पूर्वादिषु विष्टु कृतानि निरूपयितुमाह—

मूषम्—माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउहिंसि चत्तारि कूडा पणत्ता, तज्जहा-रयणे१, रयणुच्चय२, सव्वरयणे३, रयणसंखये४ ॥ सू० ६० ॥

“निरवशेष सर्वकम्”—जो किसी भी एक व्यक्तिके रहनेसे बाकी न बचे, अर्थात् समस्त व्यक्तियोंमें रहे वह निरवशेष सर्व है । जैसे “सर्वे देवाः—अनिमिषाः” समस्त देव निमेष रहित हैं यहां निमेष राहित्य किसीभी देव व्यक्तिको छोड़कर नहीं रहता है । अथवा—समस्त पदार्थ सत् स्वरूप हैं, यहां सत्स्वरूपता किसीभी पदार्थको छोड़कर नहीं रहती है, इस प्रकारसे यह निरवशेषसर्वक है । यहां सर्वत्र भक्षोंमें स्वार्थिक ककार हुआ है ॥ सू० ५९ ॥

सर्वका निरूपण करके अब सूत्रकार सर्वके प्रस्तावको लेकर सर्व मनुष्यक्षेत्रपर्यन्तगतपर्वतके पूर्वादि दिशाओंमें कूटोंकी निरूपणा करते हैं । “माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउहिंसि चत्तारि” इत्यादि

आदेश सर्वानुं ध्यान्तुं छे “निरवशेषसर्वकम्” के सवणी व्यष्टिजाने लायू पड़ी छे—जोके पक्ष व्यष्टिजाने अपवाद न रहे जेवा सर्वने निरवशेष सर्वके’ छे छे जेभके “सर्वे देवा अनिमिषाः” सर्वे (अथा) देवे अनिमिष (भट्ट) केव छे जेही निमेष रहितत्वाने शुद्ध ईश्वर देवने लायू पडे छे—जोके पक्ष देव तेमा अपवादइय नथी, जेवना समस्त पदार्थ ‘सत्’ रूप छे, जेही सत्स्वरूपत्वाने जोके पक्ष पदार्थमा जभाव नथी, जेभ समस्त पदार्थ छे निरवशेष सर्वकेनुं आ प्रसारतुं स्वइय छे जेही आजाजोमा सर्वत्र स्वार्थिक ‘क’ लायौ छे ॥ सू० ५९ ॥

सर्वानुं निश्चय करीने हवे सूत्रकार सर्व मनुष्य क्षेत्रगत पर्वताना पूर्वादि दिशाज्याना कूटानुं निश्चय करे छे—

‘माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउहिंसि चत्तारि’ इत्यादि—

છાયા—માનુષોત્તરસ્ય ચલુ પર્વતસ્ય ચતુર્દિશિ ચત્વારિ કૂટાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—રત્નં ૧, રત્નોચ્ચયં ૨, સર્વરત્નં ૩, રત્નસંચયમ્ ૪ । સૂં ૬૦ ॥

ટીકા—“ માણુસુત્તરસ્સે ” ત્યાદિ—

માનુષોત્તરસ્ય ચલુ પર્વતસ્ય ચતુર્દિશિ ચત્તસ્રાં દિશાં સમાહારશ્ચતુર્દિક્ તસ્મિન્-શ્ચતુર્દિશિ, સૂત્રે પ્રાકૃતત્વાદનુસ્વારઃ ચત્તસ્રુ દક્ષિણપૂર્વાદિષુ દિક્ષુ ચત્વારિ કૂટાનિ-શિખરાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, इह दिग्ग्रहणे विदिशां ग्रहणं, ચતુર્ધુ કોણેષ્વિત્યર્થઃ । તાનિ કૂટાનિ દક્ષિણપૂર્વાદિક્રમેણ નિરૂપયન્નાહ—તથ્યેતિ, રત્નં તદાલ્યં કૂટં રત્નકૂટમિત્યર્થઃ, તચ્ચ દક્ષિણપૂર્વસ્યાં દિશિ—અગ્નિકોણે દક્ષિણદિગ્વર્તિ સુપર્ણકુમારેન્દ્રસ્ય વેણુદેવસ્ય નિવાસસ્થાનમ્ ૧,

તથા—દક્ષિણપશ્ચિમદિગ્ગન્તરાલે—નૈર્ઋતકોણે રત્નોચ્ચયં—તદાલ્યં કૂટં રત્નોચ્ચયકૂટમિત્યર્થઃ, તચ્ચ વેલમ્બં સુલ્લદમિતિ નામાન્તરમપિ ભજતે, તત્કૂટં વેલમ્બસ્ય દક્ષિણદિગ્વર્તિ વાયુકુમારેન્દ્રસ્ય વર્તતે ૨,

તથા—પૂર્વોત્તરસ્યાં દિશિ—ઈશાનકોણે—સર્વરત્નં—સર્વરત્નકૂટં, તચ્ચ ઉત્તરદિગ્વર્તિનો વેણુદાલિનામકસુપર્ણકુમારેન્દ્રસ્ય વોધ્યમ્ ૩,

ટીકાર્થ—પુષ્કરાદ્દક્ષેત્રમે માનુષોત્તર પર્વતકે ચારોં દિશાઓં ચાર કૂટહૈં, યહાં દિશાપદસે પૂર્વાદિ ચાર દિશાં ભીલી ગઈ હૈં । હત્તી તરહસે ચારોં દિશાઓં ઓર વિદિશાઓં ચે ચાર કૂટ ફૈલે હુવે હૈં । રત્નકૂટ દક્ષિણ પૂર્વદિશામેં અગ્નિકોણમેં હૈ । યહ દક્ષિણ દિગ્વર્તી સુપર્ણકુમારેન્દ્ર વેણુ-દેવકા નિવાસસ્થાન હૈ ૧, તથા દક્ષિણ-પશ્ચિમમેં-નૈર્ઋતકોણમેં રત્નોચ્ચય-કૂટ હૈ । ઇસકા—“ વેલમ્બસુલ્લદ ” ભી નામ હૈ, યહ કૂટ દક્ષિણ દિગ્વર્તી વાયુકુમારેન્દ્ર વેલમ્બકા હૈ ૨, તથા-પૂર્વોત્તરમેં-ઈશાનકોણમેં સર્વરત્ન-કૂટ હૈ, યહ ઉત્તરદિગ્વર્તી વેણુદાલિક સુપર્ણકુમારેન્દ્રકા હૈ ૩, પશ્ચિમો-

ટીકાર્થ—પુષ્કરાદ્દક્ષેત્રમાં માનુષોત્તર પર્વતની ચારે દિશાઓમાં ચાર કૂટ છે. અહીં દિશાપદ દ્વારા પૂર્વાદિ ચાર દિશાઓ અને વિદિશાઓ પણ ગૃહીત થઈ છે આ રીતે ચાર દિશાઓ અને વિદિશાઓમાં તે ચાર કૂટ ફેલાયેલા છે દક્ષિણ-પૂર્વ દિશામાં (અગ્નિકોણમાં) રત્નકૂટ આવેલું છે તે દક્ષિણ દિશાવર્તી સુપર્ણકુમારેન્દ્ર વેણુદેવતુ નિવાસસ્થાન છે દક્ષિણ-પશ્ચિમમાં (નૈઋત્યકોણમાં) રત્નોચ્ચય કૂટ આવેલું છે તેતુ બીજુ નામ “વેલમ્બસુલ્લદ” છે. આ કૂટ દક્ષિણ દિશાવર્તી વાયુકુમારેન્દ્ર વેલમ્બતુ નિવાસસ્થાન છે પૂર્વોત્તરમાં (ઈશાન કોણમાં) સર્વરત્નકૂટ આવેલું છે. તે ઉત્તરદિગ્વર્તી વેણુદાલિક નામના સુપર્ણકુમારેન્દ્રતુ નિવાસસ્થાન છે. પશ્ચિમોત્તરે (પ્રાયઃકોણમાં) રત્નસંચય કૂટ

તથા—પશ્ચિમોત્તરમ્યાં દિશિ—વાયુકોળે રત્નસચય—રત્નમચયકૂટ, સથ ‘પ્રમ-
જન’ નામ્નાઽપિ પ્રસિદ્ધ, તત્કૂટમુખરદિગર્ષિનઃ પ્રમજનનામકવાયુકુમારેન્દ્રસ્ય
ધોષ્યમ્ । સ્ફુટઃ—

“ દક્ષિણપુષ્કેણ રયણ, —કૂટ ગરુહસ્ત વેણુદેવસ્ત ।
દક્ષિણપચ્છિમ રયણ, —અથ ચ વેસંઘદેવસ્ત ॥ ૧ ॥
પુષ્કુત્તરેણ સઘ્ન, —રયણં દેવસ્ત વેણુદાલિસ્ત ।
પચ્છિમ ઉત્તર રયણ, —સચય કૂટ પમજસ્ત ॥ ૨ ॥

છાયા—દક્ષિણપૂર્વે રત્નકૂટ ગરુહસ્ત વેણુદેવસ્ત ।
દક્ષિણ પશ્ચિમે રત્નોચય ચ વેસંઘદેવસ્ત ॥ ૧ ॥
પૂર્વોત્તરે સર્વરત્નં વેવસ્ત વેણુદાલેઃ ।
પશ્ચિમોત્તરે રત્નસચયકૂટ પ્રમજસ્ત (પ્રમજનસ્ત) ॥ ૨ ॥

૬૬ ઘટુ સ્થાનકાલુરોવેન કૂટઘટુપ્રયમેવાક્તમ્, તદ્વિતરિક્તાન્યપિ દ્વાદશ
કૂટાનિ સન્તિ, તત્ર શ્રીણિ શ્રીણિ પૂર્વશ્ચિમપશ્ચિમોત્તરામ્ દ્વાદશાપ્યેકૈકદેવાધિ
ષ્ઠિતાનિ સન્તિ, ।

ઉક્ત ચ —

“ પુષ્કેણ તિષ્ઠિ કૂટા દારિણમો તિણિ તિણિ મધરેણ ।
ઉત્તરમો તિષ્ઠિ મધે ષષ્ઠિસિ માણુમનગસ્ત ॥ ૧ ॥ ”
છાયા—પૂર્વસ્થાં (દિશિ) શ્રીણિ કૂટાનિ દક્ષિણતઃ શ્રીણિ શ્રીણ્યપરેણ ।
ઉત્તરતક્ષીણિ મધેયુધતુર્દિશિ માણુપનગસ્ત ॥ ૧ ॥

અર્થ દિગ્વિદિગાભયણ ઘટુ સર્વાણિ પોઢશ કૂટાનિ મયન્તીતિ ॥ ૬૦ ૬૦ ॥

સાર વાયુકોળમે રત્નસંચયકૂટ હૈ । યહ પ્રમજનમી કહા જાતા હૈ, યહ
ઉત્તરદિગ્ધર્મી પ્રમજન વાયુકુમારેન્દ્રકા નિવાસસ્થાન હૈ ૧ । કહામી હૈ—
“ દક્ષિણપુષ્કેણ રયણકૂટ ” હસ્ત્યાદિ યદાં ચતુઃસ્થાનકે અનુરોપસે
ચાર કહે ગય હૈ, इनसे अनिरिक्त औरमी चारह कूट हॆ । ये कूट पूर्व
दक्षिण पश्चिम उत्तरमें तीन तीन हॆ और प्रत्येक एक एक देवाधिष्ठित हॆ ।
कहामी हॆ—पुष्केण तिसि कूटा ” हस्त्यादि । यो दिशा चिदिशाके आश्र
यसे सय कूट मोल्ह दोते हॆ ॥ ६० ॥

આવેશુ છે, તેને પ્રમજન પણ કહે છે તે ઉત્તરદિગ્ધર્મી પ્રમજન નામના
વાયુકુમારેન્દ્રનુ નિવાસસ્થાન છે કહ્યું પણ છે કે— “ દક્ષિણપુષ્કેણ રયણકૂટ ”
ઈત્યાદિ અર્થો આર સ્થાનનો અધિકાર આણતો દેવાધી ચાર કૂટની જ વાત
કરી છે પણ એ સિવાય બીજા બરફ પણ છે તે કૂટ પૂર્વ-દક્ષિણ-પશ્ચિમ
અને ઉત્તરમાં ત્રણ ત્રણ છે અને પ્રત્યેક કૂટપર એક એક દેવ વસે છે કહ્યું
પણ છે કે—“ પુષ્કેણ તિષ્ઠિ કૂટા ” ઇત્યાદિ આ રીતે દિશાઓ અને વિદિ
શાઓમાં કુલ ૧૬ કૂટ છે ॥ સુ ૧૦ ॥

પૂર્વ માનુષોત્તરે પર્વતે કૂટાનિ નિરૂપિતાનિ, સમ્પ્રતિ તેનાડડટૃતક્ષેત્રાણિ નિરૂપયિતુમાહ —

મૂલમ્—જંબુદ્વીવે દીવે ભરહેરવણસુ વાસેસુ ત્રીયાણ ઉસસપ્પિણીણ સુસમસુસમાણ સમાણ ચત્તારિ સાગરોવમકોડાકોડીઓ કાલો હુત્થા, જંબુદ્વીવે દીવે ભરહેરવણસુ વાસેસુ ઇમીસે ઓસપ્પિણીણ સુસમસુસમાણ સમાણ ચત્તારિ સાગરોવમકોડાકોડીઓ કાલો હુત્થા જંબુદ્વીવે દીવે ભરહેરવણસુ વાસેસુ આગમેસ્સાણ ઉસસપ્પિણીણ સુસમસુસમાણ સમાણ ચત્તારિ સાગરોવમકોડાકોડીઓ કાલો ભવિસ્સહ ॥ સૂ૦ ૬૧ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભરતૈરવતયોર્વર્ષયોરત્રીતાયામુત્સર્પિણ્યાં સુસમસુપમાયાં સમાયાં ચતસ્રઃ સાગરોપમકોટાકોટયઃ કાલોડભૂત્. જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભરતૈરવતયોર્વર્ષયોરસ્યામવસર્પિણ્યાં સુપમસુપમાયાં સમાયાં ચતસ્રઃ સાગરોપમકોટાકોટયઃ

અબ સૂત્રકાર ઇન કૂટોસે આવૃત્ત ક્ષેત્રોંકી પ્રરૂપણા સૂત્ર કહતે હૈં

“ જંબુદ્વીવે દીવે ભરહેરવણસુ ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—જમ્બૂદ્વીપમેં ભરત ઓર ઈરવત ક્ષેત્રોંમેં અતીત ઉત્સર્પિણીમેં સુપમ સુપમાકાલમેં ચાર સાગરોપમ કોડાકોડીકા કાલ થા । જમ્બૂદ્વીપમેં ભરત ઓર ઈરવત ક્ષેત્રમેં ઇસ વર્તમાન અવસર્પિણીમેં સુપમ સુપમાકાલમેં આરકમેં ચાર કોટાકોટિ સાગરોપમ કાલ હુવા થા । ઇસ જમ્બૂદ્વીપ

હવે સૂત્રકાર એ કૂટોવડે આવૃત ક્ષેત્રોની પ્રરૂપણા કરે છે.

“ જંબુદ્વીવે દીવે ભરહેરવણસુ ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—જંબૂદ્વીપના ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રોમાં અતીત ઉત્સર્પિણીમાં સુપમ સુપમાકાળમાં ચાર સાગરોપમ કોડાકોડીનો કાળ હતો.

જંબૂદ્વીપના ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રમાં વર્તમાન અવસર્પિણીમાં પણ સુપમ સુપમા આરો ચાર કોટાકોટી સાગરોપમ પ્રમાણકાળનો હતો. આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપના ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રમાં ભવિષ્યની ઉત્સર્પિણીમાં

कासोऽसूत जम्बूद्वीपे द्वीपे भरतैरवतयो र्वर्षयोरागमिष्यन्त्यासुत्सर्पिणां सुपमसु-
पमायां समायां चतस्रः सागरोपमकोटाकोटयः कासो भविष्यति । सू० ६१ ।

टीका—“ जम्बूद्वीपे ” इत्यादि-व्याख्या स्पष्टा । सू० ६१ ॥

क्षेत्रनिरूपणमहात् क्षेत्रविक्षेपनिरूपणामाह—

मूलम्—जम्बूद्वीपे दीवे देशकुरु उत्तरकुरु वज्रजाओ चत्तारि
अकम्ममृमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—हेमवण१, परस्रवण२,
हरिवासे३, रम्मगवासे ४,

चत्तारि बह्वेयद्वपव्वआ पण्णत्ता, तं जहा—सहवार्ह १,
वियडावार्ह२, गन्धावार्ह३, मालवतपरियाय४।१ तत्थ णं चत्तारि
देवा महिङ्गिया जाव पलिओवमट्टिहया परिवसति, त जहा—
साई १, पभासे२, अरुणे३, पडमे ४ ।

जम्बूद्वीपे दीवे महाविदेहवासे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा
पुव्वविदेहे१, अवरविदेहे२, देशकुरा३, उत्तरकुरा ४ ।

सव्वेऽवि णं णिसव्वणीलवतवासहरपव्वया चत्तारि जोय
णसयाइ उड्ड उव्वत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइ उव्वेहेणं पण्णत्ता ।

जम्बूद्वीपे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरस्थिमेणं सीयाए महा
नईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, त जहा चित्त
कूडे १, पम्हकूडे२, णालिणकूडे३, एगसेले ४ ।

जम्बूद्वीपे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरस्थिमेणं सीयाए महा
नईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, त जहा—
तिकूडे१, वेसमणकूडे२, अजणे३, मायजणे४ ।

नामके द्वीपमें स्थित भरतक्षेत्र और पेरवत क्षेत्रमें आगामी उत्सर्पि
णीमें सुपम सुपमा चार कोटाकोटि सागरोपमका काल होगा,
सुपकी व्याख्या स्पष्ट है ॥ सू० ६१ ॥

यस्य सुपम सुपमा आशने। हाण आर डेटाडेटा आशपमने। ६१ ॥ सू. ५४ ॥

जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं सीओदाए महानईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पणत्ता, तं जहा—
अंकावई१, पम्हावई२, आसिविसे३, सुहावहे४ ।

जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं सीओदाए महानईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पणत्ता, तं जहा—
चंदपव्वए१, सूरपव्वए२, देवपव्वए३, णागपव्वए ४ ।

जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पणत्ता, तं जहा—सोमणसे१, विज्जुप्पमे२, गन्ध-
मायणे ३, मालवंते ४ ।

जंबुद्वीवे दीवे महाविदेहे वासे जहन्नपए चत्तारि अरहंता चत्तारि चक्कवट्ठी चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा ।

जंबुद्वीवे दीवे मंदरपव्वए चत्तारि वणा पणत्ता, तं जहा—
भइसालवणे१, नंदणवणे२, सोमणसवणे३, पंडगवणे४ ।

जंबुद्वीवे दीवे मंदरेपव्वए पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ पणत्ताओ, तं जहा—पंडुकंबलसिला१, अइपंडुकंबलसिला २,
रत्तकंबलसिला३, अइरत्तकंबलसिला ४ ।

मंदरचूलिया णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पणत्ता । एवं धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धेवि कालं आदिं करेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति । एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति—जंबुद्वीवगआवस्सगं तु कालाओ चूलिया जाव ।
धायइसंडे पुक्खरवरे य पुवावरे पासे ।१॥सू० ६२॥

જાયા-જમ્બુદ્વીપે દ્વીપે દેવકુરુત્તરકુરુજામતસઃ અકર્મ મૂમયઃ પ્રજ્ઞપ્તા, તથા-
હેમવતમ્ ૧, પરણ્યવતં ૨, હરિનર્પ ૩, રમ્યકર્ણમ્ ૪।

અત્વારો વૃત્તવૈતાદયપર્વતા પ્રજ્ઞપ્તા, તથા-અન્દાપાતી ૧, ચિકટાપાતી ૨
ગન્ધાપાતી ૩, માલ્યવત્પર્ણા ૪। તથા સ્વસ્થા રો દેવા મહર્દિકા યાવત્ પદ્મો
પમસ્થિતિકાઃ પરિવસન્તિ, તથા-સ્વાસિઃ ૧, પ્રમાસ ૨, અરુણઃ ૩, પદ્મઃ ૪।

જમ્બુદ્વીપે દ્વીપે મહાવિદેહવર્ષે અર્ધવિષ્વં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા-પૂર્વવિદેહ ૧ અપર
વિદેહઃ ૨, દેવકુરુઃ ૩, ઉત્તરકુરુઃ ૪,

સર્વેઽપિ સ્વસ્થ નિપત્નીલઘ્વત્તરપર્વતામત્વારિ યોજનસંતાનિ ઈર્ષ્યમુચ્ચત્વેન
અત્વારિ ગમ્યુત્થાનિ ઉદ્દેષેન પ્રજ્ઞપ્તાઃ,

ક્ષેત્ર નિરૂપણકે પ્રમજ્જસે સૂત્રકાર અથ ક્ષેત્ર વિશેષકી નિરૂપણા
કરતે હૈં । “ જમ્બુદ્વીપે દ્વીપે દેવકુરુ ઉત્તરકુરુ જામતો ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ-જમ્બુદ્વીપ નામકે હસ દ્વીપમેં દેવકુરુ ઓર ઉત્તરકુરુકો ઓઢકર
ચાર અકર્મ મૂમિયાં કહી ગઈ હૈં, જેસે—હેમવત ૧, પરણ્યવત ૨, હરિ
વર્ષ ૩, ઓર રમ્યકર્ણ ૪ । ચાર વૃત્તવૈતાદય પર્વત કહે ગયે હૈં, જેસે—
અન્દાપાતી ૧, ચિકટાપાતી ૨, ગન્ધાપાતી ૩, માલ્યવત્પર્ણા ૪ । જહાં
ચાર મહર્દિક દેવ યાવત્ પદ્મોપમકો સ્થિતિચાલે સ્વાતી ૧, પ્રમાસ ૨,
અરુણ ૩ ઓર પદ્મ ૪ રહતેહૈં । જમ્બુદ્વીપમેં મહાવિદેહ ક્ષેત્ર ચાર પ્રકારકા
કહા ગયા હૈ, પૂર્વવિદેહ ૧, અપરવિદેહ ૨, દેવકુરુ ૩, ઉત્તરકુરુ ૪ ।
સમસ્ત નિપત્ત ઓર નીલઘન્ત વર્ષવર પર્વત ચારસો યોજન ઈર્ષ્યે હૈં
ઓર ઉદ્દેષસે મૂમિમેં ચારસો ગમ્યુત્થિપ્રમાણ હૈં । જમ્બુદ્વીપમેં જો મન્દર

ક્ષેત્રનિરૂપણના સળધની અપેક્ષાએ હવે સુત્રકાર ક્ષેત્રવિશેષની પ્રજ્ઞપ્તા
કરે છે । “ જમ્બુદ્વીપે દ્વીપે દેવકુરુઉત્તરકુરુજામતો ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—જમ્બુદ્વીપ નામના આ દ્વીપમાં દેવકુરુ અને ઉત્તરકુરુ સિવાયના આ
ચાર ક્ષેત્રોને અકર્મભૂમિઓ કહી છે, તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) હેમવત
(૨) પેરણ્યવત, (૩) હરિવર્ષ અને (૪) રમ્યકર્ણ

ચાર વૃત્તવૈતાદય પર્વત કહ્યાં છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧)
અન્દાપાતી, (૨) ચિકટાપાતી (૩) ગન્ધાપાતી અને (૪) માલ્યવત્પર્ણા ત્યાં
પદ્મોપમની સ્થિતિવાળા ચાર મહર્દિક આદિ વિશેષલેખાળા દેવો રહે છે તે
દેવોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) સ્વાતી, (૨) પ્રમાસ, (૩) અરુણ અને
(૪) પદ્મ । જમ્બુદ્વીપમાં મહાવિદેહ ક્ષેત્ર ચાર પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) પૂર્વ
વિદેહ, (૨) અપર વિદેહ (૩) દેવકુરુ અને (૪) ઉત્તરકુરુ સમસ્ત નિપત્ત
અને નીલઘન્ત વર્ષવર પર્વત ચારસો યોજન ઊંચા છે, અને તેમને ઉદ્દેષ

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય પૌરસ્ત્યેન શીતાયા મહાનદ્યા ઉત્તરે કૂલે
ચત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-ચિત્રકૂટઃ ૧, પદ્મકૂટઃ ૨, નલિનકૂટઃ
૩, એકશૈલઃ ૪।

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય પાશ્ચાત્યે શીતાયા મહાનદ્યા દક્ષિણકૂલે
ચત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-ત્રિકૂટઃ ૧, વૈશ્રવણકૂટઃ ૨, અંજનઃ
૩, માતંજનઃ ૪।

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય પાશ્ચાત્યે શીતોદાયા મહાનદ્યા દક્ષિણકૂલે
ચત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-અઙ્કાવતી ૧, પદ્માવતી ૨, આશી-
વિષઃ ૩, સુસ્વાવહઃ ૪।

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય પાશ્ચાત્યે શીતોદાયા મહાનદ્યા ઉત્તરકૂલે
ચત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-ચન્દ્રપર્વતઃ ૧, સૂર્યપર્વતઃ ૨, દેવપર્વતઃ
૩, નાગપર્વતઃ ૪।

પર્વત હૈ, ઉસકી પૂર્વ દિશામેં સ્થિત સીમા મહા નદીકે ઉત્તરકૂલપર ચાર
વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં જૈસે-ચિત્રકૂટ ૧, પદ્મકૂટ ૨, નલિનકૂટ ૩ એકશૈલ ૪

જમ્બૂદ્વીપમેં મન્દર પર્વતકી પશ્ચિમ દિશામેં શીતા મહા નદીકે
દક્ષિણ તટપર ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત કહે ગયે હૈં, ત્રિકૂટ ૧, વૈશ્ર-
વણકૂટ ૨, અંજન ૩, માતંજન ૪ । જમ્બૂદ્વીપકે મન્દર પર્વતકી પશ્ચિમ
દિશામેં શીતોદા મહાનદીકે તટપર ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં, અઙ્કાવતી,
પદ્માવતી, આશીવિષ ઓર સુસ્વાવહ ૪ । હસી શીતોદા મહાનદીકે ઉત્તર
તટપર ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં उनके नम-चन्द्र पर्वत १, सूर्य पर्वत २, देव
पर्वत ३, नाग पर्वत ४ हॆं । जम्बूद्वीपके मन्दर पर्वतकी चारों विदिशामें चार

(ભૂમિગત વિસ્તાર) ચારસો ગવ્યૂતિ (કોસ) પ્રમાણુ છે જ'બૂદ્વીપમાં જે મન્દર પર્વત
છે તેની પૂર્વ દિશામાં આવેલી શીતા નદીને ઉત્તર કિનારે ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતો
છે, તેમના નામ આ પ્રમાણુ છે—(૧) ચિત્રકૂટ, (૨) પદ્મકૂટ, (૩) નલિનકૂટ
અને (૪) એક શૈલ જ'બૂદ્વીપમાં મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં શીતા મહાનદીના
દક્ષિણ કિનારા પર આ ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતો છે—(૧) ત્રિકૂટ, (૨)
વૈશ્રવણ કૂટ, (૩) અંજન અને (૪) માતંજન જ'બૂદ્વીપમાં મન્દર પર્વતની
પશ્ચિમ દિશામાં જે શીતોદા નામની મહાનદી છે તેના દક્ષિણ તટપર ચાર
વક્ષસ્કાર પર્વતો આવેલા છે—(૧) અઙ્કાવતી, (૨) પદ્માવતી, (૩) આશીવિષ
અને (૪) સુસ્વાવહ એ જ શીતોદા નદીના ઉત્તર તટપર નીચે પ્રમાણુ ચાર
વક્ષસ્કાર પર્વતો છે તેના નામો—(૧) ચન્દ્ર પર્વત, (૨) સૂર્ય પર્વત, (૩) દેવ પર્વત

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પથસ્ય પતસ્યુ વિવિધુ ચત્વારો વક્ત્રસ્કારપર્વતાઃ
મગ્ધા, તથા-સૌમનસઃ ૧, વિષ્ણુત્રયમઃ ૨, ગન્ધમાદનઃ ૩, માત્યવાન ૪।

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મહાચિદેહે ધર્મે જગન્યપથે ચત્વારોઽર્જન્ત, ચત્વારધક્રવર્તિનઃ,
ચત્વારો યલદેવા, ચત્વારો વાસુદેવા ઉત્પદ્યન્ત યા ઉત્પદ્યન્તે ચા ।

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરપર્વતે ચત્વારિ વનानि મહાપ્તાનિ, તથા-મદ્રશાલવન
૧, નન્દનવન ૨, સૌમનસવન ૩, પન્થકવનમ્ ૪।

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરે પર્વતે પન્થકવને ચત્સોઽમિપેકશિલાઃ મહાતાઃ, તથા-
પાણ્ડુકમ્બલશિલા ૧, અતિપાણ્ડુકમ્બલશિલા ૨, રક્તકમ્બલશિલા, ૩, અતિરક્ત
કમ્બલશિલા ૪।

મન્દરચૂલિકા સ્વહ ઉપર ચત્વારિ યોજનાનિ ચિષ્કન્મેષ મહાપ્તા, એ વાત
કીલ્પદ્વીપપૌરસ્થપાદ્ધેઽપિ કાલમાર્ગિ કૃત્વા યાવત્ મન્દરચૂલિકેતિ । એ વાત
વક્ત્રસ્કાર પર્વત સૌમનસ ૧, વિષ્ણુત્રયમ ૨, ગન્ધમાદન ૩, માત્યવાન ૪।
જમ્બૂદ્વીપમે મહાચિદેહ ક્ષેત્રમે જગન્ય પર્વમે ચાર અર્જન્ત, ચાર ધક્રવર્તી,
ચાર-યલદેવ, ચાર વાસુદેવ ઉત્પદ્ય હોતે હૈં ઓર આગેમી ઉત્પદ્ય હોગે ।
જમ્બૂદ્વીપકે મન્દર પર્વતપર ચાર વન હૈં, મદ્રશાલવન ૧, નન્દનવન ૨,
સૌમનસવન ૩, પન્થકવન ૪ । જમ્બૂદ્વીપમે મન્દર પર્વતપર સ્થિત
પન્થકવનમે ચાર અમિપેક શિલાએ હૈં । પાણ્ડુ કમ્બલશિલા ૧, અતિ
પાણ્ડુકમ્બલશિલા ૨, રક્ત કમ્બલશિલા ૩, અતિરક્તકમ્બલશિલા ૪ ।
મન્દરકી ચૂલિકા ચિષ્કન્મસે ઉપરમે ચાર યોજનકી કહી ગઈ હૈં । હસી
તરહસે વાતકી પન્થક દ્વીપકે પૌરસ્થપાર્થમે મી કાલસે હેકર યાવત્
મન્દરચૂલિકા તકકા મય પાઠ કહના ચાહિયે, હસી તરહ યાવત્ પુસ્ક
રવર દ્વીપકે પાષ્ઠાર્થમે મી જમ્બૂદ્વીપકાવઠયક કાલસે હેકર ચૂલિકા તક

અને (૪) નામ પવત જ જૂદીપના મંદર પવતની ચાર વિદિશાએમાં
સૌમનસ, વિષ્ણુત્રય, ગન્ધમાદન અને માત્યવાન નામના ચાર વક્ત્રસ્કાર પર્વતો છે
જ જૂદીપના મહાચિદેહ ક્ષેત્રમાં જગન્યની અપેક્ષાએ ચાર અર્જન્ત ચાર
ધક્રવર્તી, ચાર યલદેવ અને ચાર વાસુદેવ ઉત્પદ્ય થાય છે અને અવિભક્તમાં
પણ ઉત્પદ્ય થશે જ જૂદીપના મન્દર પર્વત પર ચાર વન છે— (૧) મદ્રશાલ
વન (૨) નન્દનવન (૩) સૌમનસવન અને (૪) પન્થકવન જ જૂદીપમાં મન્દર પર્વત
પર આવેલા પન્થકવનમાં ચાર અમિપેક શિલાઓ છે તેમનાં નામ અ પ્રમાણે છે
(૧) પાંડુકમ્બલશિલા (૨) અતિપાંડુકમ્બલશિલા, (૩) રક્તકમ્બલશિલા
અને (૪) અતિરક્તકમ્બલશિલા એ જ પ્રમાણે પુણ્યવર્ણદ્વીપના અપરાધ
પદ્ધતિના વિષયમાં પણ જ જૂદીપના જેવું જ કાળથી હાલે ચૂલિકા પર્વતનું

પુષ્કરવરદ્વીપપાશ્વાત્યાર્દ્ધે યાવત્ મન્દરચૂલિકેતિ—

જમ્બૂદ્વીપકાવશ્યકં તુ કાલાત્ ચૂલિકાં યાવત્ ।

ધાતકીચ્છળે પુષ્કરવરે ચ પૂર્વાપરે પાર્થે । ૧ । મૃ ૦ ૬૨ ।

ટીકા—“ જંબુદીવે દીવે ” ઇત્યાદિ—જમ્બૂદ્વીપનામકે દ્વીપે દેવકુરુત્તર-કુરુવર્જાઃ=દેવકુરુત્તરકુરુન્ વર્જયિત્વા ચતસ્રઃ અકર્મભૂમયઃ—કર્માણિ—કૃષિવાણિ-જ્યાદીનિ તાનિ ન સન્તિ યાસુ તથાભૂતા ભૂમયઃ, પ્રજ્ઞપ્તાઃ=કથિતાઃ, તથા-હૈમવતમિત્યાદિ ।

કા કહના ચાહિયે । તાત્પર્યં યહ હૈ કિ ધાતકીચ્છળમેં પુષ્કરવરાર્ધમેં ઓર इनके पूर्व अपर पार्श्वमें भी पूर्वोक्त सप्त कथन कह लेना चाहिये । ટીકાર્થ—કૃષિ-વાણિજ્ય આદિ કર્મ જિન ભૂમિયોમેં હો, વે કર્મભૂમિયાં હૈ ઓર इनसे भिन्न भूमि अकर्मभूमि है । ભરત-હૈમવત-હરિવર્ષ-વિદેહ, રમ્યક-ઐરણ્યવત-ઐરવત इन सात क्षेत्रोंमेंसे हैमवत, हरिवर्ष, रम्यक ये तीन अकर्मभूमि क्षेत्र हैं । इन सात क्षेत्रोंमें भरतक्षेत्र दक्षिणकी ओर अवस्थित है । ભરતસે ઉત્તરમેં હૈમવત, હસકે ઉત્તરમેં હરિવર્ષ, હસસે ઉત્તરમેં વિદેહ, હસકે ઉત્તરમેં રમ્યક, હસકે ઉત્તરમેં ઐરણ્યવત, હસકે ઉત્તરમેં ઐરવત ક્ષેત્ર હૈ । વ્યવહાર સિદ્ધિ દિશાકે નિયમાનુસાર મેરુ પર્વત સાતોં ક્ષેત્રોંકે ઉત્તર ભાગમેં અર્વાસ્થત હૈ ।

દેવકુરુ ઓર ઉત્તરકુરુકો છોડકર જો અકર્મભૂમિકે ક્ષેત્ર ચાર કહે ગયે હૈં ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ યે દો ક્ષેત્ર મહાવિદેહકે હી

કથન સમજવું એટલે કે ધાતકીચ્છળમાં, પુષ્કરવરાર્ધમાં અને તેના પૂર્વ અને પશ્ચિમ વિભાગોમાં પણ ઉપર મુજબનું સમસ્ત કથન થવું જોઈએ.

ટીકાર્થ—કૃષિ, વાણિજ્ય આદિ કર્મના જે ભૂમિઓમાં સદ્ભાવ હોય છે, તે ભૂમિઓને કર્મભૂમિઓ કહે છે, પણ જ્યાં તેમનો અભાવ છે એવી ભૂમિઓને અકર્મભૂમિઓ કહે છે ભરત, હૈમવત, હરિવર્ષ, વિદેહ, રમ્યક, ઐરણ્યવત, અને ઐરવત, આ સાત ક્ષેત્રોમાંથી હૈમવત, હરિવર્ષ અને રમ્યક, આ ત્રણ અકર્મભૂમિક્ષેત્રો છે. આ સાત ક્ષેત્રોમાંનું ભરતક્ષેત્ર દક્ષિણમાં અવસ્થિત છે ભરતની ઉત્તરે હૈમવત, હૈમવતની ઉત્તરે હરિવર્ષ, હરિવર્ષની ઉત્તરે વિદેહ, વિદેહની ઉત્તરે રમ્યક, રમ્યકની ઉત્તરે ઐરણ્યવત અને ઐરણ્યવતની ઉત્તરે ઐરવત ક્ષેત્ર છે વ્યવહાર સિદ્ધિ દિશાના નિયમાનુસાર મેરુ પર્વત સાતે ક્ષેત્રોના ઉત્તર ભાગમાં આવેલો છે અકર્મભૂમિના ચાર ક્ષેત્ર કહ્યા છે તેમાં દેવકુરુ અને ઉત્તરકુરુનો સમાવેશ નહીં કરવાનું કારણ એ છે કે—તે બંને મહાવિદેહ-

તથા—વૃષવૈતાઢ્યપર્વતા—ચતુર્લાઙ્કારવૈતાઢ્યનામકા ગિરયઃ સન્નાપાતિ-
વિકટાપાતિ—ગન્નાપાતિ—મારયવત્પર્યાયામિવેયામસાર સન્તિ । તૃતૈકૈકસ્મિન્
પર્વતે ક્રમેણ સ્વાતિ—પ્રમાસા—ડરુણ—પદ્મનામકામત્વારો દેવા સન્તિ । તે ચ
મહર્દિકા યાવત્ પર્યોપમસ્થિતિકા ષોઘ્યા ।

તથા—જમ્બૂદ્વીપાન્તર્ગત યમહાવિદહક્ષેત્ર તથા પૂર્વવિદેહાપરવિદેહ—દેવકુરુ
ઉત્તરકુરુનામકાનિ ચત્વારિ ચપૌણિ—ક્ષેત્રાણિ ત્રિજ્ઞેયાનિ । તથા—નિપદનામકા નીલ-
વશામકાથા પે વર્ષધરપર્વતાઃ સન્તિ તે સર્વેઽપિ ઋષ્યશ્ચત્વેન ચતુર્થોઽનનસતપમાથા,
ઉદ્દેધેન ધૂમી ચ ચતુર્ગવ્યૂત્ક્રમમાણા વિજ્ઞેયાઃ । અથ ગવ્યૂત્ક્રમઃ ક્રોશચાચકા ।

માગ હૈં, પરન્તુ હનમેંની યુગલિકોંની વસ્તી હૈ, હસલિયે—સાત ક્ષેત્રોમેં
હસકી સ્વતન્ત્ર રૂપસે ગણના નહીં કી ગઈ હૈ । અથવા ચતુઃસ્થાનકે
અનુરોધસે યહા હ હૈં નહીં લિયા ગયા હૈ ।

ચતુર્લ આકારવાળે હોનેસે વિકટાપાતિ—ગન્નાપાતિ આદિ પર્વતોંકો
વૃષવૈતાઢ્ય પર્વત કહા ગયા હૈ । હન ચાર વૃષવૈતાઢ્ય પર્વતોમેં ક્રમશઃ
એક—૨ વૃષવૈતાઢ્ય પર્વત પર એક ૨ મહર્દિક સ્વાતી, પ્રમાસ
આદિ નામવાળે દેવ રહસે હૈં, હન પ્રત્યેકકી એક પર્યોપમ સ્થિતિ હૈ ।
જમ્બૂદ્વીપકે અન્તર્ગત જો મહાવિદેહ ક્ષેત્ર હૈ, હસમેં પૂર્વવિદેહ, અપર
વિદેહ, દેવકુરુ, ઓર ઉત્તરકુરુ પે ચાર ક્ષેત્ર હૈ । વિદેહક્ષેત્રમેં—નિપથ,
નીલ પે દો પર્વત હૈં । હનસે હી ઉત્તરકુરુ ઓર દેવકુરુકી સીમા નિશ્ચિત
હોતી હૈ । હન દોનોં પર્વતોંકી લંબાઈ ચારસો યોજનકી હૈ તથા લઘ્વે
ધૂમિકે અન્દર ચારસો કોસ તક હૈ । યહાં ગવ્યૂતિ શબ્દસે ૧ કોસ
લિયા ગયા હૈ ।

હન ૪ જાગે છે પરન્તુ તે જાગેમાં પણ યુગલિકોંની વસ્તી છે તેથી સાત
ક્ષેત્રોમાં પણ તેમની સ્વતન્ત્ર રૂપે ગણના કરી નથી અથવા ચાર સ્થાનને
અધિકાર બાલતો હોવાથી તેમને અહીં ગણાવવામાં આવેલ નથી.

વિકટાપાતી ૪ પાપાતી આદિ ૧૧ તો ચતુર્લાઙ્કારના કોવાથી તેમને વૃષવૈતાઢ્ય
પર્વતો કહ્યા છે તે પ્રત્યેક વૃષવૈતાઢ્ય પર્વત પર્વતોંકે એક મહર્દિક આદિ વિશેષ
હોવાનો અને એક એક પશ્ચોપમની સ્થિતિનાનો દેવ વસે છે તેમની નામ
સ્વાતિ, પ્રમાસ, ઋતુષ અને પથ છે જમ્બૂદ્વીપમાં જે મહાવિદેહ ક્ષેત્ર છે
તેમાં પૂર્વવિદેહ અપર વિદેહ, દેવકુરુ અને ઉત્તરકુરુ આ ચાર ક્ષેત્ર છે વિદેહ
ક્ષેત્રમાં નિપથ અને નીલ નામના બે પર્વત છે તે પર્વતોંની મહાધી ૪ ઉત્તર
કુરુ અને દેવકુરુની સીમા નિશ્ચિત થાય છે આ બે પર્વતોંની લંબાઈ ચારસો
યોજનની છે તથા લઘ્વે—ધૂમિકી અંદરનો તેમનો વિસ્તાર ૪૦૦ ગવ્યૂતિપ્રમાણ
કરો છે અહીં ગવ્યૂતિ ૫૬૦૦ અથવા એકકોસ (૫૬૩) થાય છે

સમ્પ્રતિ જમ્બૂદ્વીપસ્થ મન્દરપર્વતસ્ય પૂર્વપશ્ચિમદિશોર્વિદિક્ષુ ચ યાવન્તો યન્નામ કાશ્વ વક્ષસ્કારપર્વતાઃ સન્તિ તાનાહ—“જંબુદ્વીવે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ ’ ઇત્યાદિના । અસ્ય સન્દર્ભસ્યાયમભિપ્રાયઃ—જમ્બૂદ્વીપસ્થ મન્દરપર્વતસ્ય પૂર્વસ્યાં દિશિ શીતાયા મહાનદ્યા ઉત્તરે તટે ચિત્રકૂટ-પદ્મકૂટ-નલિનકૂટૈ-ફશૈલનામ-કાશ્વત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ સન્તિ । તથા—મન્દરપર્વતસ્ય પૂર્વસ્યાં દિશિ શીતોદા મહાનદ્યા દક્ષિણે તટે ચિત્રકૂટ-વૈશ્રવણકૂટા-ઽઙ્ગન માતઙ્ગનનામકાશ્વત્વારો વક્ષસ્કાર-પર્વતાઃ સન્તિ । તથા—મન્દરપર્વતસ્ય પશ્ચિમાયા દિશિ શીતોદામહાનદ્યા દક્ષિણે તટે—અઙ્ગાવતી-પદ્માવત્યાશીવિપ — સુખાવહનામકાશ્વત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ સન્તિ । તથા—મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય પશ્ચિમાયાં દિશિ શીતોદા મહાનદ્યા ઉત્તરે તટે—ચન્દ્રપર્વત-સૂર્યપર્વત-દેવપર્વત — નાગપર્વત નામકાશ્વત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ સન્તિ । તથા—મન્દરપર્વતસ્ય ઐશાન્યાદિષુ ચતસ્રષુ વિદિક્ષુ-કોણેષુ-ક્રમેણ સૌમ-નસ-વિશ્વત્પ્રભ-ગન્ધમાદન — માલ્યવદભિધ્રેયાશ્વત્વારો વક્ષસ્કારપર્વતાઃ સન્તિ ।

જમ્બૂદ્વીપકે મન્દર પર્વતકી પૂર્વ દિશામેં શીતા મહાનદીકે ઉત્તર તટપર ચિત્રકૂટ આદિ વક્ષસ્કાર પર્વત ચાર હેં । દક્ષિણ તટપર ચિત્રકૂટ વૈશ્રવણ, અઙ્ગન, માતઙ્ગન યે ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત હેં । તથા—મન્દર પર્વ-તકી પશ્ચિમ દિશામેં શીતોદા મહાનદીકે દક્ષિણ તટપર અઙ્ગાવતી, પદ્માવતી, આશીવિષ ઓર સુખાવહ નામકે ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત હેં ।

તથા—ઉત્તર તટપર ચન્દ્ર પર્વત, સૂર્ય પર્વત દેવ પર્વત, નાગ પર્વત યે ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત હેં । તથા—મન્દર પર્વતકી ઈશાન આદિ ચારોં દિશાઓમેં ક્રમશઃ—સૌમન, વિશ્વત્પ્રભ, ગન્ધમાદન, માલ્યવાન્ યે ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત હેં । તાત્પર્ય એસા હૈ—મન્દર પર્વતકી પૂર્વ દિશામેં શીતા નદીકે ઉત્તર તટપર ચાર, દક્ષિણ તટપર મી ચાર, મન્દર પર્વતકી પશ્ચિમ દિશામેં શીતોદા

જંબુદ્વીપના મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં શીતા નામની મહાનદીના ઉત્તર તટપર ચિત્રકૂટ આદિ ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતો આવેલા છે, અને દક્ષિણ તટપર ચિત્રકૂટ, વૈશ્રવણકૂટ, અઙ્ગન અને માતઙ્ગન, એ ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતો છે. મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં શીતોદા મહાનદીના દક્ષિણ તટપર અઙ્ગાવતી, પદ્માવતી, આશીવિષ અને સુખાવહ નામના ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતો છે, તથા ઉત્તર તટપર (૧) ચંદ્ર પર્વત, (૨) સૂર્ય પર્વત, (૩) દેવ પર્વત અને (૪) નાગ પર્વત, એ ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતો છે. મન્દર પર્વતની ઈશા નાદિ ચાર વિદિશાઓમાં અનુક્રમે સૌમન, વિશ્વત્પ્રભ, ગન્ધમાદન અને માલ્ય-વાન્, એ ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતો છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે મન્દર

મયં માસઃ —

મન્દરપર્વતસ્ય પૂર્વસ્પાં દિશિ શ્રીતામહાનઘા ઉત્તરતટે ચત્વાર ૪ એવ
દક્ષિણતટેપિ ચત્વાર ૪। મન્દરપર્વતસ્ય પશ્ચિમાયાં દિશિ શ્રીતોદા મહાનઘા
દક્ષિણતટે ચત્વારઃ ૪। એવમુત્તરતટેપિ ચત્વાર ૪। મન્દરપર્વતસ્ય એશ્વાન્યાદિષુ
ચતુર્ણાં કોણેષુ પ્રત્યેકપેકેકસ્ત્રવેન ચત્વારઃ ૪।

તથા—જમ્બૂદ્વીપસ્ય મહાવિદેહવર્ષે જઘન્યપદે-પદ્મત=ગમ્યતે રૂપિ પદ્મ=
સહ્યાસ્પાનં, જઘન્ય=તર્વણીનં ચ યત્ પદ્મ તત્ જઘન્યપદં તસ્મિન્, = નાતિન્યૂન
સંહ્યાયાં ચત્વારોઽર્જન્તઃ ચત્વારઃકવચર્તિના, ચત્વારો ચલદેવા, ચત્વારો ચામુદે
વામ્ ઉત્પન્ના, ઉત્પદ્યન્તે, ઉત્પસ્યન્તે ચેતિ ।

તથા—જમ્બૂદ્વીપસ્ય મન્દરપર્વત મદ્રશાલવન-નન્દનવન-સૌમનસવન-પણ્ડ
કવનામિત્રેયાનિ ચત્વારિ વનानિ સન્તિ । તત્ર મદ્રશાલવનં ભૂમી, નન્દનવન-સૌમ
નસવને મેલઠા યુગલે, પળ્ડકવનં ચ શિવર । ઉક્તાધાત્ર ગાથાઃ—

મહા નદીકે ઉત્તર તટપર ૪ દક્ષિણ તટપર ૪, મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ
દિશામે શ્રીતોદા મહાનદીકે દક્ષિણ તટપર ૪, ઉત્તર તટપર ૪ ચાર,
ઔર મન્દર પર્વતની રૂંદાન આદિ ચાર કોણોપર પ્રત્યેક કોણમે ૨
હસ પ્રકારસે ૪ ચક્ષસ્કાર હૈ ।

જમ્બૂદ્વીપકે મહાવિદેહ વર્ષમે જઘન્યપદમે ન્યૂનાઽતિન્યૂન સહ્યામે
કમસે કમ ચાર અર્જન્ત, ચાર ચક્રવર્તી, ચાર ચામુદેવ હુવે હૈ, ઔર
હોંગે । તથા-જમ્બૂદ્વીપમે મન્દર પર્વતપર મદ્રશાલવન, નન્દનવન, સૌમ
નસવન, ઔર પળ્ડકવન યે ચાર વન હૈ । इनमे मद्रशालवन जमीनपर
मन्दनवन और सौमनसवन मेखला युगलपर एव पण्डकवन शिवरपर
है । यहाँ इस प्रकारसे गाथाए कही गई हैं ।

૧૧૮૧ની પૂર્વ દિશામાં વહેલી શીના નદીના ઉત્તર તટપર ૪, દક્ષિણ તટપર
૪ મન્દર ૧૧૮૧ની પશ્ચિમ દિશામાં શીનોદા નામની મહાનદીના ઉત્તર
તટપર ૪ અને દક્ષિણ તટપર ૪ ચક્ષસ્કાર પર્વતો છે મન્દર ૧૧૮૧ની
ધ્યાન, અગ્નિ, નૈરુત્ય અને વાયવ્યમાં એક એક એટલે કે ચારે ખૂણાઓમાં કુલ
૪ ચક્ષસ્કાર પર્વતો છે ।

જમ્બૂદ્વીપના મહાવિદેહ રાજ્યા જઘન્યની અપેક્ષાએ—ન્યૂનાતિન્યૂન
સહ્યામાં જોછામાં જોછા ચાર અર્જન્ત ચાર ચક્રવર્તી અને ચાર ચામુદેવ
દેવતા થયા છે અને ઉત્પત્ત થયે પશુ ઋષિ તથા જમ્બૂદ્વીપમાં મન્દર ૧૧૮
૫૨ મદ્રશાલવન, નન્દનવન, સૌમનસવન અને પળ્ડકવન, એ ચાર વન છે
તેમાંનું મદ્રશાલવન ભૂમલ થયે, નન્દનવન અને સૌમનસવન પ્રેમશા મુગલ
૫૨ અને પળ્ડકવન શિવશિવર છે અહીં આ પ્રમાણે ગાથાઓ કહી છે—

“ વાવીસ સહસ્તાઇ, પુન્નાવરમેરુમદમાલવણં ।

અણ્ણાહ્જસયા ડળ, દાહિણપાસે ય ઉત્તરઓ ॥ ૧ ॥

પંચેવ જોયણમણ, ડહું ગંતૂણ પંચસયપિહુલં ।

નંદણવણં સુમેરુ, પરિવિલવિત્તા ઠિયં રમ્મં ॥ ૨ ॥

વાસદ્ધિ સહસ્સાઈ પંચેવ સયાઈ નંદણવણાઓ ।

ડહું ગંતૂણ વણં, મોમણસ નંદણવણસરિચ્છં ॥ ૩ ॥

સોમણસાઓ તીસં, છચ્ચ સહસ્સે વિલગ્ગિહ્ણ ગિરિં ।

વિમલજલકુંડગહણં, ઢવહ વણં પંડયં સિહરે ॥ ૪ ॥

ચત્તારિ જોયણસયા ચડળડયા ચક્રવાલઓ રુંદં ।

ઇગતીસ જોયણસયા વાસદ્ધી પરિઓ તસ્સ ॥ ૫ ॥ ”

છાયા—દ્વાવિંશતિસહસ્રાણિ પૂર્વાપરમેરૌ મદ્રશાલવનમ્ ।

અર્દ્ધવૃત્તીયશતાનિ પુનઃ દક્ષિણપાશ્વે ચ ઉત્તરતઃ ॥ ૧ ॥

પશ્ચૈવ યોજનશતાનિ ઊર્ધ્વં ગત્વા પશ્ચર્ષ્પથુલમ્ ।

નન્દનવનં સુમેરું પરિક્ષિપ્ય સ્થિતં રમ્યમ્ ॥ ૨ ॥

દ્વાપદ્ધિસહસ્રાણિ પશ્ચૈવ શતાનિ નન્દનવનાત્ ।

ઊર્ધ્વં ગત્વા વનં સૌમનસં નન્દનવનસદૃશમ્ ॥ ૩ ॥

સૌમનસાત્ ત્રિંશત્ પદ્ ચ સહસ્રાણિ વિલગ્ગ્યગિરિમ્ ।

વિમલજલકુંડગહનં ભવતિ વન પંડકં શિખરે ॥ ૪ ॥

ચત્વારિં યોજનશતાનિ ચતુર્નવતિ ચક્રવાલતો વિસ્તારઃ ।

અર્ધત્રિંશદ્યોજનશતાનિ દ્વિપદ્ધિ પરિચક્ષ્ય ॥ ૫ ॥

તથા—જમ્બૂદ્વીપગતમન્દરપર્વતસ્ય પંડકવને અભિષેકશિલા—તીર્થહ્રારાણા-

મભિષેકાર્યાઃ શિલા અભિષેકશિલાઃ, યત્ર તીર્થહ્રારાણામભિષેકો ભવતિ, તાશ્ચતસ્રઃ-

પાણ્ડુકમ્બલાદયઃ શિલા મન્દરચૂલિકાયાઃ પૂર્વદક્ષિણપશ્ચિમોત્તરાસુ દિક્ષુ ક્રમેણ

“ વાવીસસહસ્સાઈ ” ઇત્યાદિ । તથા—જમ્બૂદ્વીપગત મન્દર પર્વત

પર જો પંડકવન હૈ ઉત્તરમેં જિનપર તિર્થહ્રારોંકા શુભાભિષેક હોતા હૈ

એસી ચાર શિલાએંહેં । इनके नाम—पाण्डुकम्बल आदिहैं । ये शिलाएं मन्दर

चूलिकाकी पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशामें क्रमशः हैं । मन्दर-

“ વાવીસસહસ્સાઈ ” ઇત્યાદિ

જમ્બૂદ્વીપના મન્દર પર્વત પર જે પંડકવન છે તેમાં ચાર અભિષેક

શિલાઓ છે, જે શિલાઓ પર તિર્થહ્રારોંકા શુભાભિષેક થાય છે. તે અભિષેક

શિલાઓનાં નામ આ પ્રમાણે છે—પાંડુકમ્બલ શિલા આદિ ચાર નામ સૂચા

ષોષ્યાઃ । મન્દરચૂલિકા-મન્દરગિરિશિખર સ્વલ્લ ઉપરિ ઋષે ચિષ્કમ્ભેળ વિસ્તારેન
વત્સારિ યોજનાનિ-ચતુર્થોજનવિસ્તીર્ણોપરિતનમાગાઃ પ્રગ્નતા ।

इतं जम्बूद्वीपस्य वस्तुजातमभिधाय सम्प्रति पातकीखण्डद्वीप-पुष्करवर
द्वीपयोः मत्पक्षं पौरस्स्यार्द्धपाशास्याद्गो र्वस्तुजातमभिधातुमाह—‘ एवं धाय
संखदीवपुरस्थिमदे वि ’ इत्यादि ।

एवम्—अनेन प्रकारेण—जम्बूद्वीपाभापकप्रकारेण पातकीखण्डद्वीपपौरस्स्या
र्द्धेऽपि कालम् = तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए ’ इति पूर्वोक्तं
कालम् आदि कृत्वा = गारम्य यावत् मन्दरचूलिकेति = ‘ मन्दरचूलियाण उवर्णि
वत्तारि जोपणाइ विक्खमण पण्णात्ता ’ इत्यन्ताः सर्व आलापका बाध्याः ।
अथ माध—‘ धायइमखदीवपुरस्थिमदे मरहेरवसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसम
सुसमाए समाए ’ इत्यारम्य ‘ मन्दरचूलिपार्ग उवर्णि वत्तारि जोपणाइ विक्ख-
गिरिसे शिखरका नाम मन्दरचूलिका है । इसके आगे भागका विस्तार
पार योजनका है, अर्थात् इसका जो उपरितन भाग है वह चार योजन
विस्तृत है । इस प्रकारसे जम्बूद्वीपमें वस्तु जातका कथन करके अब
सूत्रकार घातकीखण्ड, एव पुष्करवर द्वीपके पौरस्स्यार्ध और पाशा
स्यार्धमें वस्तुजातका कथन करनेके लिये “ एवं धायइसंखदीवपुरस्थि
मदे वि ” इत्यादि रूपसे कथन करते हैं, वे कहते हैं कि जैसा यह
आलाप प्रकार जम्बूद्वीपके सम्बन्धमें कहा गया है, वैसाही आलाप
प्रकार घातकीखण्ड द्वीपके पौरस्स्यार्धमें भी कालसे लगाकर मन्दर
चूलिका तकका कह लेना चाहिये । अर्थात्—“ धायइसंखदीवपुरस्थि
मदे मरहेरवसु यासेसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए ”

અર્થા આપણા અનુસાર સમજવા તે શિલાઓ અનુક્રમે મન્દર પથ્થરની પૂર્વ
દક્ષિણ પશ્ચિમ અને ઉત્તર દિશામાં છે મન્દર પથ્થરના શિખરનું નામ મન્દર
ચૂલિકા છે તેના સૌથી ઉપરના ભાગનો વિસ્તાર ચાર યોજનનો ॥ આ
પ્રમાણે જમ્બૂદીપના પશ્ચાદ્યોનું કથન કરીને કહે સૂત્રકાર ઘાતકીખંડ દ્વીપ અને
પુષ્કરવર દ્વીપના પૂર્વાર્ધ અને પશ્ચિમાર્ધના પશ્ચાદ્યોનું ચાર સ્થાનને અનુલક્ષીને
કથન કરે છે ‘ એવ ધાયઈસંખદીવપુરસ્થિમદે વિ ’ ઇત્યાદિ—

આ સૂત્રપઠ દ્વારા સૂત્રકાર એવું સૂચન કરે છે કે કાળથી લઇને મન્દર
ચૂલિકા પથ્થરનું જેવું કથન જમ્બૂદીપના વિષયમાં કરવામાં આવ્યું છે એવું જ
કથન ઘાતકીખંડ દ્વીપના પૂર્વાર્ધવિષે પણ સમજી લેવું એ તે કે—
‘ ધાયઈસંખદીવપુરસ્થિમદે મરહેરવસુ યાસેસુ તીયાए उस्सप्पिणीए सुसम
सुसमाए समाए ’ અર્થાથી શરૂ કરીને “ મન્દરચૂલિયાણ ઉવર્ણિ વત્તારિ જોખ-

મેળં પળ્ળતા ' ઇત્યન્તા આલાપકાઃ અન્ વોધ્યા ઇતિ । એવમ્=અનેન પ્રકારેણેવ
' જાવ ' -યાવત્પદેન-ધાતકીચ્છન્ડદ્વીપપાશ્ચાત્યાર્દ્ધ - પુષ્કરવરદ્વીપપૌરસ્ત્યાર્દ્ધયો-
ર્ગ્રહણમ્ । તત્તથ-ધાતકીચ્છન્ડદ્વીપપાશ્ચાત્યાર્દ્ધ-પુષ્કરવરદ્વીપપૌરસ્ત્યાર્દ્ધે પુષ્કરવર-
દ્વીપપાશ્ચાત્યાર્દ્ધે ચ ઉત્ત વા તદનન્તર પ્રત્યેકત્ર ' ભરતૈરવમ્ વાસેસુ તીયાણ
ઉત્સર્પિણીણ સુષમસુષમાણ સમાણ ' ઇત્યેવં પ્રકારેણ યાવત્ મન્દરચૂલિકેતિ=
' મન્દરચૂલિયાણં ઉવરિચત્તારિ જોયણાઈ વિક્કલંમેળં પળ્ળતા ' ઇત્યન્તા આલાપકા
વક્તવ્યા ઇતિ ।

અમુમેવાર્થ દ્રઢયિતું સંગ્રહગાથામુપન્યસ્યતિ-“ જંબુદ્વીવગ ' ઇત્યાદિ જમ્બૂદ્વી-
પાવશ્યક-જમ્બૂદ્વીપસ્યેદં જમ્બૂદ્વીપકં તત્ત્વ તદાવશ્યકમ્ અવશ્યમાવિત્વાદ્વાડવશ્યવા-

યહાંસે લગાકર “ જંદરચૂલિયાણં ઉવરિ ચત્તારિ જોયણાઈ વિક્કલંમેળં
પળ્ળતા ” યહાં તત્ત્વકા કથન યહાં કહા ગયા હૈ, ઇસી પ્રકાર યાવત્તદગ્રાહ્ય
ધાતકીચ્છન્ડ દ્વીપ પાશ્ચાત્યાર્દ્ધ-એવં પુષ્કરવર દ્વીપ પૌરસ્ત્યાર્દ્ધ, ઔર
પુષ્કરવર દ્વીપ પાશ્ચાત્યાર્દ્ધમેં ઔ કથન કરના ચાહિયે । ઔર
હસકે વાદ વહાંકે ભરતક્ષેત્ર, એવં ઈરવત ક્ષેત્રમેં અતીત ઉત્સર્પિણીકે
સુષમ સુષમા આરામેં ૪ કોટાકોટિ સાગરોપમકા કાલ થા । ઇત્યાદિ
પૂર્વોક્ત સર્વ પાઠ-મન્દરચૂલિયાણં ઉવરિ ચત્તારિ જોયણાઈ વિક્કલંમેળં
પળ્ળતા) હસ પાઠાન્ત તક કથન યહાં ઔ કહા ગયા હૈ । એસા સમજ
હેના ચાહિયે તાત્પર્ય કેવલ યહી હૈ કિ જમ્બૂદ્વીપકે ભરત ઔર ઈરવત
ક્ષેત્રકી જેસી વ્યવસ્થા સિદ્ધાન્ત શાસ્ત્રમેં પ્રગટકી ગઈહૈ વૈસી હી વ્યવસ્થા
ધાતકીચ્છન્ડ ઔર પુષ્કરાર્ધ દ્વીપમેં ઔ હૈ ।

- હસી અર્થકો દ્રઢ કરનેકે લિયે હમ “ જંબુદ્વીવગ ” ગાથાકા ઉત્તલેખ
કિયા ગયા હૈ, હસ ગાથામેં યહ પુટ કિયા ગયા હૈ કિ-જમ્બૂદ્વીપાડવશ્યક

ગાઈ વિક્કલંમેળ પળ્ળતા ” આ સૂત્રપાઠ પર્યન્તનું કથન ધાતકીખંડ દ્વીપના
પૂર્વાર્ધ વિષે પણ સમજવું, એવું જ કથન ધાતકીખંડ દ્વીપના પશ્ચિમાર્ધ,
પુષ્કરવરદ્વીપના પૂર્વાર્ધ અને પુષ્કરવર દ્વીપના અપરાર્ધ વિષે પણ સમજ
લેવું એટલે કે ત્યાંના ભરતક્ષેત્ર, અને ઈરવતક્ષેત્રમાં અતીત (ભૂતકાળની)
ઉત્સર્પિણીનો સુષમસુષમા આરો ૪ કોટાકોટિ સાગરોપમકાળનો હતો, ઇત્યાદિ
સંપૂર્ણ સૂત્રપાઠ અહીં પણ ગ્રહણ થવો જોઈએ “ મન્દર ચૂલિકાનો સૌથી
ઉપરનો ભાગ ચાર ચોજતના વિસ્તારનો છે ” આ સૂત્રપાઠ પર્યન્તનું કથન
અહીં પણ સમજ લેવું આ કથનનું તાત્પર્ય એટલું જ છે કે જંબુદ્વીપના
ભરત અને ઈરવતના જેવી જ વ્યવસ્થા ધાતકીખંડ અને પુષ્કરાર્ધ દ્વીપમાં પણ
હોય છે એ જ વાતનું સમર્થન કરવા માટે “ જંબુદ્વીવગ ” ઇત્યાદિ ગાથા
આપવામાં આવેલ છે તે ગાથામાં એ વાતને પ્રતિપાદન કરવામાં આવી છે
કે જંબુદ્વીપાવશ્યક (જંબુદ્વીપમાં જેનું કથન કરાયું છે તે) સમસ્ત વસ્તુ-

મેળં પળ્લન્તા ' इत्यन्ता आलापकाः अन बोध्या इति । एवम्=अनेन प्रकारेणैव ' जाव '-यावत्पदेन-धातुकीखण्डद्वीपपाश्चात्यार्द्ध - पुष्करवरद्वीपपौरस्त्यार्द्धयो-
ग्रहणम् । ततश्च-धातुकीखण्डद्वीपपाश्चात्यार्द्ध-पुष्करवरद्वीपपौरस्त्यार्द्ध पुष्करवर-
द्वीपपाश्चात्यार्द्ध च उक्त वा तदनन्तर प्रत्येकत्र ' भरहेरवणसु वासेसु तीयाए
उत्सर्पिणीए सुषमसुषमाए समाए ' इत्येवं प्रकारेण यावत् मन्दरचूलिकेति=
' मंदरचूलियाणं उवरिचत्तारि जोयणाइ विक्खंभेणं पणत्ता ' इत्यन्ता आलापका
वक्तव्या इति ।

અમુમેવાર્થ દ્રઢયિતું સંગ્રહગાથામુપન્યસ્યતિ-“ જંબુદ્વીવગ ’ ઇત્યાદિ જમ્બૂદ્વી-
પાવશ્યકં-જમ્બૂદ્વીપસ્યેદં જમ્બૂદ્વીપકં તચ્ચ તદાવશ્યકમ્ અવશ્યંભાવિત્વાદ્વાડવશ્યંવા-
યહાંસે લગાકર “ મંદરચૂલિયાણં ઉવરિ ચત્તારિ જોયણાઈ વિક્કંભેણં
પળ્લન્તા ” યહાં તરુકા કથન યહાં કહા ગયા હૈ, હસી પ્રકાર યાવત્તદગ્રાહ્ય
ધાતુકીખણ્ડ દ્વીપ પાશ્ચાત્યાર્દ્ધ-એવં પુષ્કરવર દ્વીપ પૌરસ્ત્યાર્દ્ધ, ઔર
પુષ્કરવર દ્વીપ પાશ્ચાત્યાર્દ્ધમેં ખી કથન કરના ચાહિયે । ઔર
હસકે વાદ વહાંકે ભરતક્ષેત્ર, એવં ઈરવત ક્ષેત્રમેં અતીત ઉત્સર્પિનીકે
સુષમ સુષમા આરામેં ૪ કોટાકોટિ સાગરોપમકા કાલ થા । ઇત્યાદિ
પૂર્વોક્ત સર્વ પાઠ-મંદરચૂલિયાણં ઉવરિ ચત્તારિ જોયણાઈ વિક્કંભેણં
પળ્લન્તા) હસ પાઠાન્ત તક કથન યહાં ખી કહા ગયા હૈ । એસા સમજ
લેના ચાહિયે તાત્પર્ય કેવલ યહી હૈ કિ જમ્બૂદ્વીપકે ભરત ઔર ઈરવત
ક્ષેત્રકી જૈસી વ્યવસ્થા સિદ્ધાન્ત શાસ્ત્રમેં પ્રગટકી ગઈહૈ વૈસી હી વ્યવસ્થા
ધાતુકીખણ્ડ ઔર પુષ્કરાર્ધ દ્વીપમેં ખી હૈ ।

હસી અર્થકો દ્રઢ કરનેકે લિયે હમ “ જંબુદ્વીવગ ” ગાથાકા ઉલ્લેખ
કિયા ગયા હૈ, હસ ગાથામેં યહ પુટ કિયા ગયા હૈ કિ-જમ્બૂદ્વીપાડવશ્યક

ણાઈ વિક્કંભેણ પળ્લન્તા ” આ સૂત્રપાઠ પર્યન્તનું કથન ધાતુકીખડ દ્વીપના
પૂર્વાર્ધ વિષે પણ સમજવું, એવું જ કથન ધાતુકીખડ દ્વીપના પશ્ચિમાર્ધ,
પુષ્કરવરદ્વીપના પૂર્વાર્ધ અને પુષ્કરવર દ્વીપના અપરાર્ધ વિષે પણ સમજ
લેવું એટલે કે ત્યાંના ભરતક્ષેત્ર, અને ઈરવતક્ષેત્રમાં અતીત (ભૂતકાળની)
ઉત્સર્પિણીનો સુષમસુષમા આરો ૪ કોટાકોટિ સાગરોપમકાળનો હતો, ઇત્યાદિ
સંપૂર્ણ સૂત્રપાઠ અહીં પણ ગ્રહણ થવો જોઈએ “ મંદર ચૂલિકાનો સૌથી
ઉપરનો ભાગ ચાર ચોજનના વિસ્તારનો છે ” આ સૂત્રપાઠ પર્યન્તનું કથન
અહીં પણ સમજ લેવું આ કથનનું તાત્પર્ય એટલું જ છે કે જંબૂદ્વીપના
ભરત અને ઈરવતના જેવી જ વ્યવસ્થા ધાતુકીખડ અને પુષ્કરાર્ધ દ્વીપમાં પણ
હોય છે. એ જ વાતનું સમર્થન કરવા માટે “ જંબુદ્વીવગ ” ઇત્યાદિ ગાથા
આપવામાં આવેલ છે તે ગાથામાં એ વાતને પ્રતિપાદન કરવામાં આવી છે
કે જંબૂદ્વીપાવશ્યક (જંબૂદ્વીપમાં જેનું કથન કરાયું છે તે) સમસ્ત વસ્તુ

અપસ્વાદ, इति जम्बूद्वीपावश्यकम्, यद्वा-‘जम्बूद्वीपगभावस्तर्गं’ इत्यस्य ‘जम्बू
द्वीपगभावश्यकमि’-तिष्ठत्याया, तत्पक्षे-जम्बूद्वीपं गच्छतीति जम्बूद्वीपग-जम्बूद्वी
पगत, तद्यतश्चावश्यक वस्तुजातं जम्बूद्वीपगावश्यकमित्यर्थः, इह तु शब्दः पादपर
गार्थः, कुत भारभ्य क्रियत्यर्थेन जम्बूद्वीपका (गा) यदर्थकं मजनीयमित्यपेक्षाया
माह-“फालाभो वृक्षिया जाव”-ति-फालादारभ्य वृक्षिकां यावत्-सुपमसुपमा
रूपकामालापकादारभ्य वृक्षिका-मन्दरवृक्षिकामापकपर्यन्तं यद्वस्तुजातमुक्त
तत् घातकीवण्डे पुष्करवरे च द्वीपे “पुष्पावरे” पूर्वापरे-पूर्वचापरचेत्यनयोः
समाहारः पूर्वापरं तस्मिन् पूर्वापरे पूर्वे पश्चिमे च ‘पासे’ पार्श्वे-भागे, यद्वा-
घातकीवण्ड-पुष्करवच्छीपयोः मध्येक पूर्वापरेषु पौरस्त्यपाभात्येषु वर्षेषु वा
क्षेत्रेषु समसम्पत्कं घोष्य न तु न्यूनाधिकमिति भावः ॥ सू० ६२ ॥

पूर्वं जम्बूद्वीपे कूटाऽऽवृतक्षेत्राणि निरूपितानि, सम्प्रति जम्बूद्वीपस्य द्वाराणि
निरूपयितुमाह—

मृक्षम्—जम्बूद्वीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, त
जहा-विजये १, वेजयते २, जयते ३, अपराजिण ४ । ते णं
दारा चत्तारि जोयणाइ विक्खमेण तावइय चेव पवेसेण पण्णत्ता ।
तस्य णं चत्तारि देवा महिद्धिया जाव पलिओवमन्टिइआ परिव
सति-विजण १, वेजयत २, जयते ३, अपराजिण ४ ॥ सू० ६३ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપસ્ય સ્વલ્લ દ્વીપસ્ય ચત્તારિ દારાભિ મદ્ગત્તાનિ, તથા—
વિજય ૧, વેજયન્ત ૨, અપરાજિત ૩, અપરાજિત ૪। યાનિ સ્વલ્લ દારાભિ ચત્તારિ
જમ્બૂદ્વીપમં કથિત સમસ્ત વસ્તુજાત જો કિં યદ્વાં સુપમ સુપમા કાલસે
લેકર મન્દરવૃક્ષિકા તક પ્રગટ કિયા ગયા હે, ઘાતકીવણ્ડકે પૂર્વાર્ધ
ઔર પશ્ચિમાર્ધમે, ઔર પુષ્કરાર્ધકે પૂર્વાર્ધ તથ-પશ્ચિમાર્ધમે યથાવત્
કહના આદિયે ॥ સૂ૦ ૬૦ ॥

“જમ્બૂદ્વીવસ્સ ણં દીવસ્સ ચત્તારિ દારા પણ્ણત્તા” इत्यादि—
जम्बूद्वीपके चार द्वार कहे गये हैं । विजय १, वेजयन्त २,

બાવના એટલે કે મુખ મુખમાહાગથી લઇને મ હર વૃક્ષિકા પરન્તના કપમુક્ત
કપનમાં જેના જેના નિદેશ થયો છે તે વસ્તુઓના-ઘાતકીવણના પૂર્વાર્ધમાં
અને પશ્ચિમાર્ધમાં તથા પુષ્કરવર દ્વીપાર્ધના પૂર્વાર્ધ અને પશ્ચિમાર્ધમાં પણ
સૂચાય છે એમ સમજવું ॥ સૂ ૬૦ ॥

જમ્બૂદ્વીપમાં કુટુબા ક્ષેત્રોનું નિર્ણય કરીને હરે સૂચાત જમ્બૂદ્વીપના

યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ તાવન્ત્યેવ પ્રવેશેન પ્રજ્ઞપ્તાનિ । તત્ર ચત્વારો દેવા મહર્દ્ધિકાઃ યાવત્ પલ્યોપમસ્થિતિકાઃ પરિવસન્તિ-વિજયઃ ૧, વૈજયન્તઃ ૨, જયન્તઃ ૩, અપરાજિતઃ ૪ ॥ સુ૦ ૬૩ ॥

ટીકા—‘ જંબુદ્વીવસ્સ ણં ’ इत्यादि—जम्बूद्वीपस्य विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितनामकानि चत्वारि द्वाराणि सन्ति । तानि च द्वाराणि विष्कम्भेण-द्वारोभयभागस्थितकुडयान्तरालभागविस्तारेण चत्वारि योजनानि तथा-प्रवेशेन=प्रवेशस्थानप्रमाणेन-कुडयस्थौल्येन तावन्त्येव=चत्वारि योजनान्येव प्रज्ञप्तानि । उच्चत्वं चाष्ट योजनानीति, उक्तञ्च—“ चउजोयणवित्थिन्ना, अट्टेव य जोयणाणि उव्विद्धा ”—छाया-चतुर्योजनविस्तीर्णानि अपट्टैव च योजनानि उद्विद्धानि-उद्धानि ॥ इति । तथा-तत्र-तेषु विजयादिषु द्वारेषु चत्वारो देवाः महर्द्विकाः=विशालकृद्धिशालिनः ’ ‘ जाव ’ यावत्-अत्र यावच्छब्देन-महाद्युतिकाः, महाबलाः, महायशसः, महासौख्याः, इति ग्राह्यम् अर्थः स्पष्ट एव । पल्योपम-

जयन्त ३, अपराजित ४ । ये द्वार विष्कम्भकी अपेक्षा चार योजन प्रमाण और प्रवेशकी अपेक्षा भी इतनेही कहे गये हैं । इनमें चार महर्द्धिक देव यावत् एक पल्योपम स्थितिवाले रहते हैं ।

દ્વારકી દોનો ઓરકી દોનો દીવાલોં કે અન્તરાલોં કા વિષ્કમ્ભ [વિસ્તાર] ચાર યોજનકા હૈ, તથા-ભીતોંકી સ્થૂલતારૂપ જો પ્રવેશ હૈ વહ્ની ચાર યોજનપ્રમાણ હૈ । કહામી હૈ—“ ચउजोयणवित्थिन्ना ” ચાર યોજનકે વિસ્તાર इत्यादि

તથા—આઠ યોજન તક યે ઝંચે હૈ । “ મહર્દ્ધિકા યાવત્ પલ્યોપમ સ્થિતિકાઃ ” મેં જો યાવત્ પદ આયા હૈ ઉસસે યહાં “ મહાદ્યુતિકાઃ,

દ્વારોની પ્રપણા કરે છે—“ જબુદ્વીવસ્સ ણં દ્વીવસ્સ ચત્તારિ દારા પણ્ણસા ” ઇત્યાદિ—

જ ખૂ નામના દ્વીપને ચાર દ્વાર કહ્યાં છે, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે. (૧) વિજય, (૨) વૈજયન્ત, (૩) જયન્ત અને (૪) અપરાજિત. તે દ્વારોનો વિષ્કંભ (પહોળાઈ) ચાર યોજનપ્રમાણ છે અને પ્રવેશની અપેક્ષાએ પણ તેમને ચાર યોજનપ્રમાણ જ કહ્યા છે તેમાં મહર્દ્ધિક આદિ વિશેષણવાળા ચાર દેવ રહે છે, તેમની એક પલ્યોપમની સ્થિતિ કહી છે દ્વારની બન્ને તરફની દીવાલોના અન્તરાલનો વિષ્કંભ (વિસ્તાર) ચાર યોજનનો છે તથા દીવાલોની સ્થૂલતા રૂપે પ્રવેશ છે તે પણ ચાર યોજનપ્રમાણ છે કહ્યું પણ છે કે—“ ચउजोयणवित्थिन्ना ” ઇત્યાદિ ચાર યોજનના વિસ્તારવાળા તે દ્વારો આઠ યોજન પર્યંત ઊંચા છે “ મહર્દ્ધિકા યાવત્ પલ્યોપમસ્થિતિકા ” આ સૂત્રપાઠમાં બે “ યાવત્ ” પદ છે, તેના દ્વારો મહાદ્યુતિ સપત્ર, મહાબલ સપત્ર, મહાયશ સપત્ર અને મહાસુખ

સ્થિતિકા = પર્યોપમકાલપર્યન્તસ્થાયિનો દ્વારનામસદ્શ્વનામકા પરિવસન્તિ, તેષ
 ધિનયઃ ૧, યૈનયન્તઃ ૨, જયન્તઃ ૩, અપરાજિતઃ ૪, इति,
 उक्तं च—“ पलिश्रोषमद्विहया, सुरगणपरिवारिणा सदेवीया ।

एषु द्वारनामा, वसन्ति देवा मद्भिर्द्वीया ॥ ૧ ॥ ”

જાયા—“ પર્યોપમસ્થિતિકાઃ સુરગણપરિવૃતાઃ સદેવીકા ।

एतेषु द्वारनामानो वसन्ति देवा मद्भिर्द्वीकाः ॥ ૧ ॥ ” इति । सू० ६१

અનન્તરં જન્મ્બુદ્વીપસ્ય દ્વારાણિ નિરૂપિતાનિ, સમ્પ્રતિ જન્મ્બુદ્વીપસ્થાન્ અન્તર
 દ્વીપાન્ નિરૂપયિતુમાહ—

मूम्—जबुद्वीवे दीवे मंदरस्त पष्यस्त दाहिणेणं बुद्ध-
 हिमवतस्त वासहरपष्यन्त चउसु विदिसासु लवणसमुद तिस्रि
 तिस्रि जोयणसयाइ ओगाहिता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा
 पण्णत्ता, त जहा—एगूरुयदीवे१, आभासियदीवे२, वेसाणियदीवे
 ३, णंगोलियदीवे४ । तेसु णं दीवेसु चउविहा मणुस्ता परिवसन्ति,
 त जहा—एगूरुआ१, आभासिआ२, वेसाणिया३, णंगोलिया४ ।
 तेसिणं दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद चत्तारि१, जोय
 णसयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता, त

મહાપલાઃ, મહાયશસાઃ, મહાસૌષણઃ ” इमपाठका संग्रह हुआ है । इन
 चार द्वारोंपर जो चार देव रहते हैं उनके नाम द्वारके नामानुसार हैं ।
 इस तरह उन देवोंके नाम क्रमशः विजय-वैजयन्त-जयन्त और अप
 राजित हैं । कहाभी है—“ पलिश्रोषमद्विहया ” इत्यादि, ये देव पर्यो
 पमकी स्थिति वाले हैं द्वारमें रहने वाला प्रत्येक देव सुरगणोंसे सदा
 परिवृत रहता है और अपनी—२ देवियोंसे युक्त पत्नी रहता है ॥ सू० ६१ ॥

સ પત્ની આ ચાર વિશેષજ્ઞા શક્તિ કરના એકજો. તે ચાર દ્વાર પર જે ચાર
 દેવો રહે છે તેમનાં નામ પણ દ્વારોનાં નામાનુસાર છે એવો કે વિજય,
 વૈજય ૩, જયન્ત અને અપરાજિત છે કહ્યું પણ છે કે “ પલિશ્રોષમદ્વિહયા ”
 ઇત્યાદિ એક પર્યોપમની સ્થિતિ છે તે દેવો સદા સુરગજ્ઞો અને દેવીજ્ઞાના
 પરિવારથી પરિવૃત્ત રહે છે ॥ સૂ. ૬૩ ॥

जहा-हयकन्नदीवे१, गयकन्नदीवे२, गोकन्नदीवे३, संकुलिकन्न-
दीवे४। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तं जहा-
हयकन्ना १, गयकन्ना २, गोकन्ना ३, संकुलिकन्ना ४। तेसिणं
दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुदं पंच २, जोयणसयाइं
ओगाहिता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पणत्ता, तं जहा—
आयंसमुहदीवे १, मेढमुहदीवे२, अओसुहदीवे ३, गोसुहदीवे४।
तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा। तेसि णं
दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुदं छज्जोयणसयाइं ओगा-
हेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पणत्ता, तं जहा-आसमुह-
दीवे १, हत्थिसुहदीवे २, सीहमुहदीवे३, वग्घमुहदीवे ४।
तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा। तेसि णं दीवाणं चउसु
विदिसासु लवणसमुदं सत्त सत्त जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ
णं चत्तारि अंतरदीवा पणत्ता, तं जहा-आसकन्नदीवे १,
हत्थिकन्नदीवे २, अकन्नदीवे ३, कन्नपाउरणदीवे ४। तेसु णं
दीवेसु मणुया भाणियव्वा। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु
लवणसमुदं अट्ठु जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि
अंतरदीवा पणत्ता, तं जहा-उक्कामुहदीवे१, मेहमुहदीवे२,
विज्जुमुहदीवे३, विज्जुदंतदीवे४। तेसु णं दीवेसु मणुस्सा
भाणियव्वा। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुदं
णव णव जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा
पणत्ता, तं जहा-घणदंतदीवे१, लट्ठदंतदीवे२, गूढदंतदीवे३,

સુદ્ધદતદીવેઃ । તેસુ ણ દીવેસુ ચઽઽવિહા મણુસ્સા પરિવસતિ,
ત જહા—ઘણદતા૧, લઠ્ઠદતા૨, ગૂઢદતા૩, સુદ્ધદતા૪,

જબુદીવે દીવે મદરસ્સ પઘ્વયસ્સ ઉત્તરેણ સિહરિસ્સ વાસ
હરપઘ્વયસ્સ ચઽસુ વિદિસાસુ લવણસમુદ્ધં તિન્નિ તિન્નિ જોયણસયાઙ્
ઓગાહેત્તા પરથ ણ ચત્તારિ અતરદીવા પણ્ણત્તા, ત જહા—
પગૂરુયદીવે, સેસ તદેવ નિરવસેસ માણિયઘ્વ જાવ સુદ્ધદતા ॥સૂ૦૬૪

છાયા—જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય દક્ષિણેન કુદ્રહિમવતો વર્ષષરર્ષતસ્ય ચત
સ્યુ વિવિદ્ધ લવણસમુદ્રં ત્રીણિ ત્રીણિ યોજનશ્ચતાનિ અવગાહ્ય અત્ર સ્થલ ચત્વારો
ઽન્તરદ્વીપાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—પકોરુકદ્વીપઃ ૧, આમાપિકદ્વીપઃ ૨, વૈપાણિકદ્વીપઃ
૩, લાઙ્ગૂલિકદ્વીપઃ ૪। તેષુ સ્થલ દ્વીપેષુ ચતુર્વિધા મનુષ્યાઃ પરિવસન્તિ તથા—
પકોરુકાઃ ૧, આમાપિકાઃ ૨, વૈપાણિકા ૩, લાઙ્ગૂલિકા ૪। તેષાં સ્થલ

इस तरह जम्बूद्वीपके द्वारोंका निरूपण करके अब सूत्रकार जम्बू
द्वीपस्य अन्तरद्वीपोंका निरूपण करते हैं ।

“ जम्बुद्वीपे द्वीपे मंदरस्त पर्वतस्त ” इत्यादि—

‘ જમ્બૂદ્વીપ નામકે દ્વીપમેં સુમેરુ પર્વતની દક્ષિણ દિશામેં કુદ્રહિમવાદ
નામકા વર્ષવર પર્વત છે । મસકી ચારો વિદિશાઓમેં લવણ સમુદ્રકો
ત્રીન ત્રીન સૌ યોજન તક અવગાહિત કરક ચાર અન્તરદ્વીપ કહે ગયે
હैं । ણનેકે નામ હસ પ્રકારસે હैं । પકોરુક દ્વીપ, આમાપિક દ્વીપ, વૈપા
ણિક દ્વીપ ઓર લાઙ્ગૂલિક દ્વીપ, હન દ્વીપોમેં ચાર પ્રકારકે મનુષ્ય રહતે
હैं । જેસે—પક ઝરુવાલે પકોરુક ૧, આમાપિક ૨, વૈપાણિક ૩ ઓર

આ રીતે જમ્બૂદ્વીપના દ્વારોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર જમ્બૂદ્વીપસ્ય
અ ઽન્તરદ્વીપાનું નિરૂપણ કરે છે—

“ જંબુદ્વીપે દ્વીપે મદરસ્સ પર્વતસ્સ ” ઇત્યાદિ—

જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં સુમેરુ (મ ૬૧) પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં
કુદ્રહિમવાદ નામનો વર્ષવર પર્વત છે તેની ચારે દિશાઓમાં સ્થલ સમુદ્રને
૩૦૦-૩૦૦ યોજન પાર કરવાથી ચાર અન્તરદ્વીપ આવે છે તેમના નામ
આ પ્રમાણે છે—(૧) પકોરુક દ્વીપ, (૨) આમાપિક દ્વીપ (૩) વૈપાણિક દ્વીપ
અને (૪) લાઙ્ગૂલિક દ્વીપ તે દ્વીપોમાં ચાર પ્રકારના મનુષ્યો રહે છે એમ

દ્વીપાનાં ચતસ્રષુ વિદિક્ષુ લવણસમુદ્રં ચત્વારિ યોજનશતાનિ અવગાહ્ય અત્ર સ્ત્રલુ
ચત્વારોઽન્તરદ્વીપાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—હયકર્ણદ્વીપઃ ૧, ગજકર્ણદ્વીપઃ ૨, ગોકર્ણ-
દ્વીપ ૩, શંકુલિકર્ણદ્વીપઃ ૪। તેષુ દ્વીપેષુ ચતુર્વિધા મનુષ્યાઃ પરિવસન્તિ, તથા—
હયકર્ણાઃ ૧, ગજકર્ણાઃ ૨, ગોકર્ણાઃ ૩, શંકુલિકર્ણાઃ ૪। તેષાં સ્ત્રલુ દ્વીપાનાં
ચતસ્રષુ વિદિક્ષુ લવણસમુદ્રં પશ્ચ ૨ યોજનશતાનિ અવગાહ્ય અત્ર સ્ત્રલુ ચત્વારોઽન્તર-
દ્વીપાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—આદર્શમુખદ્વીપઃ ૧, મેદૂમુખદ્વીપઃ ૨, અયોમુખદ્વીપઃ ૩,
ગોમુખદ્વીપઃ ૪। તેષુ સ્ત્રલુ દ્વીપેષુ ચતુર્વિધા મનુષ્યા ભણિતવ્યાઃ। તેષાં સ્ત્રલુ દ્વીપાનાં

લાઙ્ગૂલિક ૪, ફન દ્વીપોંકી ચારોં વિદિક્ષાઓંમેં લવણ સમુદ્રકો ચાર-૨
સૌ યોજન તક અવગાહિત કરકે દૂસરે ઔર ચાર અન્તરદ્વીપ કહે ગયે
હેં। ઉનકે નામ હસ પ્રકાર હેં—હયકર્ણ દ્વીપ, ગજકર્ણ દ્વીપ, ગોકર્ણ દ્વીપ
ઔર શંકુલિકર્ણ દ્વીપ ૪। ફન દ્વીપોંમેં ચાર પ્રકારકે મનુષ્ય રહતે હેં,
હયકર્ણ ૧ ગજકર્ણ ૨ ગોકર્ણ ૩ શંકુલિકર્ણ ૪। ફન દ્વીપોંકી ચારોં
વિદિક્ષાઓંમેં લવણસમુદ્રકો પાંચ પાંચસૌ યોજન તક અવગાહિત
કરકે ઔર ચાર દ્વીપ હેં।

આદર્શ મુખદ્વીપ ૧, મેદૂ મુખદ્વીપ ૨, આયોમુખ દ્વીપ ૩, ઔર
ગોમુખ દ્વીપ, ફનમેં ચાર પ્રકારકે મનુષ્ય રહતે હેં જૈસે—આદર્શમુખ ૧,
મેદૂમુખ ૨, અયોમુખ ૩ ગોમુખ ૪। ઉન દ્વીપોંકી ચારોં વિદિક્ષાઓંમેં
ભી લવણ સમુદ્રકો અવગાહન કરકે છહસૌ છહસૌ — યોજન તક ઔર
ચાર અન્તરદ્વીપ હેં। ઉનકે નામ હસ પ્રકારકે હૈ—અદ્વમુખ
૧, હસ્તિમુખ ૨, સિંહમુખ ૩, વ્યાગ્રમુખ દ્વીપ ૪। ફનમેં ફન

કે. એક ઉરવાળા એકોરુક, આલાપિક, વૈષાણિક અને લાગલિક તે દ્વીપોની
ચારે વિદિક્ષાઓમા લવણ સમુદ્રને ચારસો—ચારસો યોજન અવગાહિત (પાર)
કરવાથી બીજા ચાર અન્તરદ્વીપો આવે છે. તેમના નામ આ પ્રમાણે છે—
(૧) હયકર્ણ દ્વીપ, (૨) ગજકર્ણ દ્વીપ, (૩) ગોકર્ણ દ્વીપ અને (૪) શંકુલિ
કર્ણ દ્વીપ. તે દ્વીપોમા ચાર પ્રકારના મનુષ્યો રહે છે—(૧) હયકર્ણ, (૨)
ગજકર્ણ, (૩) ગોકર્ણ અને (૪) શંકુલીકર્ણ. તે દ્વીપોની
ચારે વિદિક્ષાઓમા, લવણ સમુદ્રને ૫૦૦-૫૦૦ યોજન અવગાહિત કરવાથી
બીજા ચાર દ્વીપો આવે છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) આદર્શમુખ
દ્વીપ, (૨) મેદૂમુખ દ્વીપ, (૩) અયોમુખ દ્વીપ અને (૪) ગોમુખ દ્વીપ તેમાં
ચાર પ્રકારના મનુષ્યો રહે છે—(૧) આદર્શમુખ, (૨) મેદૂમુખ, (૩)
અયમુખ અને (૪) ગોમુખ

તે દ્વીપોની ચારે વિદિક્ષાઓમા લવણ સમુદ્રને ૬૦૦-૬૦૦ યોજન
અવગાહિત કરવાથી બીજા ચાર અન્તરદ્વીપો આવે છે, તેમનાં નામ આ
પ્રમાણે છે—(૧) અશ્વમુખ, (૨) હસ્તિમુખ, (૩) સિંહમુખ અને (૪)

સુદ્ધદત્તદીવેઃ । તેસુ ણ દીવેસુ ચઙ્ગિહા મણુસ્સા પરિવસતિ,
ત જહા—ઘણદના ૧, લઢ્ઢદતા ૨, ચૂઢદતા ૩, સુદ્ધદતા ૪,

જંબુદ્વીવે દીવે મદરસ્સ પબ્બયસ્સ ઉત્તરેણ સિહરિસ્સ ઘાસ
હરપથયસ્સ ચઙ્ગુ વિદિસાસુ લલ્લણસમુદ્ધ તિન્નિ તિન્નિ જોયણસયાઈ
ઓગાહેત્તા પથ્થ ણ ચત્તારિ અત્તરદીવા પળ્લણ્ણા, ત જહા—
પંગૂરુયદીવે, સેસ તહેવ નિરવસેસ ભાણિયલ્લ જાવ સુદ્ધદતા ॥સૂ. ૦૬૪

છાયા—જમ્બુદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્સ પર્વતસ્સ દક્ષિણેન કુદ્રહિમવત્તો વર્ષ ધરપર્વતસ્સ ચત્ત
સ્યુ વિવિધુ લલ્લણસમુદ્ધ ધીણિ ધીણિ યોજનસંતાનિ અઘગાલ્લ અઞ્જ લલ્લ ઘલ્લારો
ડન્તરૂપાઃ મહતાઃ, તથા—एकोरुक्कीपः ૧, આમાપિક્કદ્વીપા ૨, વૈપાણિક્કદ્વીપઃ
૩, લાઙ્ગુલિક્કદ્વીપ ૪। તેપુ સલ્લ દ્વીપયુ ચતુર્વિધા મનુપ્પ્યાઃ પરિવસન્તિ તથા—
एकोरुक्का ૧, આમાપિક્કાઃ ૨, વૈપાણિકા ૩, લાઙ્ગુલિકા ૪। તેપાં સલ્લ

इस तरह जम्बूद्वीपके द्वारोंका निरूपण करके अब सूत्रकार जम्बू
द्वीपस्य अन्तरद्वीपोंका निरूपण करते हैं ।

“ जम्बुद्वीवे दीवे मंदरस्स पब्वयस्स ” इत्यादि—

जम्बूद्वीप नामके द्वीपमें सुमेरु पर्वतकी दक्षिण दिशामें कुद्रेहिमवान्
नामका वर्षधर पर्वत है । उसकी चारों विदिशाओंमें लल्लण समुद्रको
तीन तीन सौ योजन तक अघगाहित करके चार अन्तरद्वीप कहे गये
हैं । उनके नाम इस प्रकारसे हैं । एकोरुक् द्वीप, आमापिक द्वीप, वैपा
णिक द्वीप और लाङ्गुलिक द्वीप, इन द्वीपोंमें चार प्रकारके मनुष्य रहते
हैं । जैसे—एक उरुवाले एकोरुक् १, आमापिक २, वैपाणिक ३ और

આ રીતે જમ્બુદ્વીપના દ્વારોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર જમ્બુદ્વીપસ્ય
અન્તરદ્વીપોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ જંબુદ્વીવે દીવે મન્દરસ્સ પબ્બયસ્સ ” ઇત્યાદિ—

જમ્બુદ્વીપ નામના દ્વીપમાં સુમેરુ (મ. ૬૨) પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં
કુદ્રહિમવાનુ નામનો વર્ષધર પર્વત છે તેની ચારે દિશાઓમાં લલ્લણ સમુદ્રને
૩૦૦-૩૦૦ યોજન ચાર કરવાથી ચાર અન્તરદ્વીપ આવે છે તેમના નામ
આ પ્રમાણે છે—(૧) એકોરુક દ્વીપ (૨) આમાપિક દ્વીપ (૩) વૈપાણિક દ્વીપ
અને (૪) લાંગુલિક દ્વીપ. તે દ્વીપોમાં ચાર પ્રકારના મનુષ્યો રહે છે જેમ

દ્વીપાનાં ચતસ્રષુ વિદિક્ષુ લવણસમુદ્રં ચત્વારિ યોજનશતાનિ અવગાહ્ય અત્ર સ્ત્રલુ
ચત્વારોઽન્તરદ્વીપાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-હયકર્ણદ્વીપઃ ૧, ગજકર્ણદ્વીપઃ ૨, ગોકર્ણ-
દ્વીપઃ ૩, શબ્કુલિકર્ણદ્વીપઃ ૪। તેષુ દ્વીપેષુ ચતુર્વિધા મનુષ્યાઃ પરિવસન્તિ, તદ્વથા-
હયકર્ણાઃ ૧, ગજકર્ણાઃ ૨, ગોકર્ણાઃ ૩, શબ્કુલિકર્ણાઃ ૪। તેષાં સ્ત્રલુ દ્વીપાનાં
ચતસ્રષુ વિદિક્ષુ લવણસમુદ્રં પશ્ચ ૨ યોજનશતાનિ અવગાહ્ય અત્ર સ્ત્રલુ ચત્વારોઽન્તર-
દ્વીપાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-આદર્શમુખદ્વીપઃ ૧, મેદૂમુખદ્વીપઃ ૨, અયોમુખદ્વીપઃ ૩,
ગોમુખદ્વીપઃ ૪। તેષુ સ્ત્રલુ દ્વીપેષુ ચતુર્વિધા મનુષ્યા મણિતવ્યાઃ। તેષાં સ્ત્રલુ દ્વીપાનાં

લાઙ્ગુલિક ૪, इन द्वीपोंकी चारों विदिशाओंमें लवण समुद्रको चार-२
सौ योजन तक अवगाहित करके दूसरे और चार अन्तरद्वीप कहे गये
हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं-हयकर्ण द्वीप, गजकर्ण द्वीप, गोकर्ण द्वीप
और शबकुलिकर्ण द्वीप ४। इन द्वीपोंमें चार प्रकारके मनुष्य रहते हैं,
हयकर्ण १ गजकर्ण २ गोकर्ण ३ शबकुलिकर्ण ४। इन द्वीपोंकी चारों
विदिशाओंमें लवणसमुद्रको पांच पाँचसौ योजन तक अवगाहित
करके और चार द्वीप हैं।

આદર્શ મુખદ્વીપ ૧, મેદૂ મુખદ્વીપ ૨, આયોમુખ દ્વીપ ૩, ઓર
ગોમુખ દ્વીપ, इनमें चार प्रकारके मनुष्य रहते हैं जैसे-आदर्शमुख १,
मेदूमुख २, अयोमुख ३ गोमुख ४। उन द्वीपोंकी चारों विदिशाओंमें
भी लवण समुद्रको अवगाहन करके छहसौ छहसौ - योजन तक और
चार अन्तरद्वीप हैं। उनके नाम इस प्रकारके हैं-अश्वमुख
१, हस्तिमुख २, सिंहमुख ३, व्याघ्रमुख द्वीप ४। इनमें इन

કે. એક કરવાળા એકારક, આભાષિક, વૈષાણિક અને લાગલિક તે દ્વીપોની
ચારે વિદિશાઓમાં લવણ સમુદ્રને ચારસો-ચારસો યોજન અવગાહિત (પાર)
કરવાથી બીજા ચાર અન્તરદ્વીપો આવે છે. તેમના નામ આ પ્રમાણે છે—
(૧) હયકર્ણ દ્વીપ, (૨) ગજકર્ણ દ્વીપ, (૩) ગોકર્ણ દ્વીપ અને (૪) શબ્કુલિ-
કર્ણ દ્વીપ તે દ્વીપોમાં ચાર પ્રકારના મનુષ્યો રહે છે—(૧) હયકર્ણ, (૨)
ગજકર્ણ, (૩) ગોકર્ણ અને (૪) શબ્કુલીકર્ણ. તે દ્વીપોની
ચારે વિદિશાઓમાં, લવણ સમુદ્રને ૫૦૦-૫૦૦ યોજન અવગાહિત કરવાથી
બીજા ચાર દ્વીપો આવે છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) આદર્શમુખ
દ્વીપ, (૨) મેદૂમુખ દ્વીપ, (૩) અયોમુખ દ્વીપ અને (૪) ગોમુખ દ્વીપ તેમાં
ચાર પ્રકારના મનુષ્યો રહે છે—(૧) આદર્શમુખ, (૨) મેદૂમુખ, (૩)
અયોમુખ અને (૪) ગોમુખ.

તે દ્વીપોની ચારે વિદિશાઓમાં લવણ સમુદ્રને ૬૦૦-૬૦૦ યોજન
અવગાહિત કરવાથી બીજા ચાર અન્તરદ્વીપો આવે છે, તેમનાં નામ આ
પ્રમાણે છે—(૧) અશ્વમુખ, (૨) હસ્તિમુખ, (૩) સિંહમુખ અને (૪)

चतसृषु विदिष्टु लवणसमुद्र पट्टपद्म योजनशतानि अवगाह्य अत्र स्खलु चत्वारोऽन्तर
द्वीपाः प्रकृताः, तद्यथा—अम्बमुम्बद्वीप १, इस्तिर्गुम्बद्वीप २, सिङ्गुम्बद्वीपः ३,
व्याघ्रमुम्बद्वीपः ४। तेषु स्खलु द्वीपेषु मनुष्या मणितव्याः। तेषां स्खलु द्वीपानां
चतसृषु विदिष्टु लवणसमुद्र सप्त सप्त योजनशतानि अवगाह्य अत्र स्खलु चत्वारोऽन्तर
द्वीपाः प्रकृताः, तद्यथा—अम्बकर्णद्वीपः १, इस्तिर्गुम्बद्वीपः २, अम्बकर्णद्वीपः ३,
कर्णमावरणद्वीप ४ तेषु स्खलु द्वीपेषु मनुष्या मणितव्याः। तेषां स्खलु द्वीपानां
चतसृषु विदिष्टु लवणसमुद्रमहाप्रयोजनशतानि अवगाह्य अत्र स्खलु चत्वारोऽन्तर
द्वीपाः प्रकृताः, तद्यथा—उरकासुम्बद्वीप १, मेघसुम्बद्वीपः २, विष्णु-मुम्बद्वीपः ३,

प्रत्येक द्वीप के नामानुगुणवाले मनुष्य रहा करते हैं। उन द्वीपोंकी
भी चारों विदिशाओंमें सात-सातसौ योजन तक लवण समुद्रको
अवगाहन करके और चार अन्तरद्वीप हैं। अम्बकर्ण १, इस्तिर्गुम्ब २,
अम्बकर्ण ३, कर्णमावरण द्वीप ४ हैं। यहाँभी द्वीपके नाम जैसे गुणवाले
मनुष्य रहते हैं। इन द्वीपोंकी चार विदिशाओंमें लवण समुद्रको आठसौ
आठसौ योजन तक अवगाहन करके चार अन्तरद्वीप और
कहे गये हैं—ये चारके नाम इस प्रकार हैं उरकासुम्बद्वीप, मेघसुम्बद्वीप,
विष्णु-मुम्ब द्वीप, विष्णुदन्त द्वीप ४ इनमें मनुष्य कहे
लेना चाहिये। इन द्वीपोंकी चारोंही विदिशाओंमें लवणसमुद्रको नौसौ
नौसौ योजन तक अवगाहन करके चार अन्तरद्वीप और हैं। जैसे—
घनदन्त द्वीप १, लट्टदन्त द्वीप २ गूढदन्त द्वीप ३ और चौथा शुद्धदन्त
४। इन द्वीपोंमें चार प्रकारके मनुष्य होतेहैं। घनदन्त १ लट्टदन्त २, गूढ

व्याघ्रमुम्ब द्वीप ते प्रत्येक द्वीपोंमें तेमनां नाम प्रभावे शुक्लवाणा मनुष्यो रहते
छे ते चार द्वीपोंकी विदिशाओंमें लवण समुद्रने ७००-७०० योजन अव
भाहित करवायी लीज और अन्तरद्वीपों आवे छे तेमनां नाम आ प्रभावे
छे—(१) अम्बकर्ण (२) इस्तिर्गुम्ब, (३) अम्बकर्ण अने (४) लवण प्रवरण द्वीप
ते चार द्वीपोंमें पक्ष ते द्वीपना नाम प्रभावे शुक्लवाणा मनुष्यो रहते छे।
ते चार द्वीपोंकी विदिशाओंमें लवण समुद्रने ८००-८०० योजन अवभाहित
करवायी लीज और अन्तरद्वीपों आवे छे—(१) उरकासुम्ब द्वीप, (२) मेघसुम्ब
द्वीप (३) विष्णु मुम्ब द्वीप अने (४) विष्णुदन्त द्वीप तेमों पक्ष मनुष्यों
उपर अनुगत समान समान ते चार अन्तरद्वीपोंकी चार विदिशाओंमें,
लवण समुद्रने ६००-६०० योजन अवभाहित करवायी लीज और अन्तरद्वीप
आवे छे तेमनां नाम आ प्रभावे छे—(१) घनदन्त द्वीप, (२) लट्टदन्त द्वीप

વિષ્ણુદન્તદ્વીપઃ ૪, તેષુ સ્વલુ દ્વીપેષુ મનુષ્યા મણિતવ્યાઃ । તેષાં સ્વલુ દ્વીપાનાં ચત્-
સ્રષ્ઠુ વિદિષુ લવણસમુદ્રં નન નવ યોજનશતાનિ અવગાહ્ય અત્ર સ્વલુ ચત્વારોઽન્તર-
દ્વીપાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથથા-ધનદન્તદ્વીપઃ ૧, લઘુદન્તદ્વીપઃ ૨, ગૂઢદન્તદ્વીપઃ ૩,
શુદ્ધદન્તદ્વીપઃ ૪ । તેષુ સ્વલુ દ્વીપેષુ ચતુર્વિધા મનુષ્યાઃ પરિવસન્તિ, તથથા-ધન-
દન્તાઃ ૧, લઘુદન્તાઃ ૨, ગૂઢદન્તાઃ ૩, શુદ્ધદન્તાઃ ૪ ।

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય ઉત્તરેણ શિખરિણો વર્ષધરપર્વતસ્ય ચતસ્રષ્ઠુ
વિદિશ્વ લવણસમુદ્રં ત્રીણિ ત્રીણિ યોજનશતાનિ અવગાહ્ય અત્ર સ્વલુ ચત્વારોઽન્તર-
દ્વીપાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથથા-एकोरुद्वीपः शेषं तथैव निरवशेषं मणितव्यं यावत् शुद्ध-
दन्ता । સૂ ૦ ૬૩ ।

ટીકા—“ જમ્બૂદ્વીપે ૨ ” ઇત્યાદિ—સ્પષ્ટમ્, નવરં-ચુલ્લહિમવંતસ્ય વાસહ
રપવ્યરસે—” તિ-ક્ષુદ્રદિમવતો-મહાહિમવદપેક્ષયા લઘુહિમવતો વર્ષધરપર્વતસ્ય,
તસ્ય હિ પૂર્વભાગ-પશ્ચિમભાગયોઃ પ્રત્યેકં શાખાદ્વયં વિચિત્ર ઇતિ વૃદ્ધાઃ ।

દન્ત૩, શુદ્ધદન્ત ૪ । જમ્બૂદ્વીપનામકે દ્વીપમેં મન્દર પર્વતકી ઉત્તર દિશામેં
વર્તમાન શિખરી વર્ષધર પર્વતકી ચાર વિદિશાઓમેં લવણસમુદ્રકો
અવગાહન કરકે ત્રીનસૌ ત્રીનસૌ યોજન તક ચાર અન્તરદ્વીપ કહે ગયે હેં
જેસે-एकोरुद्वीप आदि बाकीका और सब कथन शुद्धदन्त तक ऊपर
का जैसा जानना चाहिये ।

ટીકાર્થ—હિમવાન્મેં મહાહિમવાન્કો અપેક્ષાસે ‘ ક્ષુદ્ર ’ વિશેષણ
હેં । ગહ-ક્ષુદ્રહિમવાન્ પર્વત ભરતક્ષેત્રકી સીમાપર હૈ, હસકે દોનોં છોર
પૂર્વ-પશ્ચિમ લવણ સમુદ્રમેં ફેલે હેં । એસે હી એરવત ક્ષેત્રકી સીમાપર
સ્થિત શિખરી પર્વતકે દોનોં છોર મી લવણ સમુદ્રમેં ફેલે હુવે હૈ ।

(૪) ગૂઢદન્ત દ્વીપ અને (૪) શુદ્ધદન્ત દ્વીપ તે દ્વીપોમા ક્રમશઃ ચાર પ્રકારના
મનુષ્યો વસે છે—(૧) ધનદન્ત, (૨) લઘુદન્ત, (૩) ગૂઢદન્ત, અને (૪) શુદ્ધદન્ત.

જ ખૂદ્વીપ નામના દ્વીપના મન્દર પર્વતની ઉત્તર દિશામાં જે શિખરિ
વર્ષધર પર્વત આવેલો છે, તેની ચારે વિદિશાઓમાં લવણ સમુદ્રને ૩૦૦-
૩૦૦ યોજન પાર કરવાથી ચાર અન્તરદ્વીપો આવે છે તેમનાં નામ આ
પ્રમાણે છે—(૧) એકોરુદ્ દ્વીપ, આદિ બાકીનું સમસ્ત કથન એટલે કે શુદ્ધ-
દન્ત પર્યન્તનું કથન ઉપર મુજબ જ સમજવું.

વિશેષાર્થ—મહાહિમવાન્ કરતાં નાનો હોવાને કારણે ક્ષુદ્રહિમવાનને
ક્ષુદ્ર વિશેષણ લગાડયું છે તે ક્ષુદ્રહિમવાન્ પર્વત ભરતક્ષેત્રની સીમાપર છે, તેના
બન્ને છેડા પૂર્વ-પશ્ચિમ લવણ સમુદ્ર સુધી વિસ્તરેલા છે. એ જ પ્રમાણે
એરવત ક્ષેત્ર સીમાપર આવેલા શિખરી પર્વતના બન્ને છેડા પણ લવણ સમુદ્ર

“चउसु विदिशासु” इत्यादि—समुद्रस्य विविध पूर्वोक्तादिषु लक्षणसमुद्रं
 वीणि वीणि योजनक्षतानि अषाढा—अभिप्राय्य ये शाखाविभागः सन्ति, ‘पत्य’
 इति—अथ—शाखाविभागेषु लक्ष्य चत्वारः—अन्तरद्वीपा—अन्तर—मध्ये द्वीपा अन्तर
 द्वीपाः—समुद्रमध्यवर्तिद्वीपा, मध्यमाः—कदिताः, यद्वा ‘अन्तरद्वीपाः’ इत्यस्या
 यमर्थः—अन्तरं—परस्परनिर्गताः, तत्प्रधाना द्वीपा अन्तरद्वीपाः, मध्यमपदलोपि-
 समासोऽवधारणः । तत्र पूर्वोत्तरदिशि ईशानकोणे एकोरुक्तनामा योजनशतत्रयाऽऽ-
 धामविष्कम्भोऽन्तरद्वीपोऽस्ति । अनेन प्रकारेण आग्नेयी—नैर्ऋती—वायव्यासु
 विदिशु क्रमेणाऽऽमापिकवैषाणिक—लाङ्गुलिकश्चपारयोऽन्तरद्वीपा अपि बोध्याः ।
 प्रत्येक छोर दो दो भागोंमें विभक्त हैं, ये दोनोंके आठों भाग लक्षण
 समुद्रमें फैले हैं । यही बात यहाँ—“पूर्वभाग—पश्चिमभागयोः प्रत्येक
 शाखाद्वयं विद्यते” इतिवृत्ता—पूर्वभाग और पश्चिम भाग में प्रत्येक
 में दो दो शाखा हैं इस बातसे प्रदर्शित की गई है ।

“चउसु विदिशासु” इत्यादि—

तीनसौ तीनसौ योजनप्रमाण लक्षण समुद्रका वल्लंघन करके पूर्वोत्तर
 विदिशाओंकी ओर जो शाखाविभाग—छोर—हैं, उन शाखाविभागोंपर
 चार अन्तरद्वीप हैं, समुद्रके मध्यमें जो द्वीप हैं वे अन्तरद्वीप हैं, अथवा
 परस्परमें विभागप्रधानद्वीप अन्तरद्वीप हैं । ईशान कोणमें तीनसौ
 योजन प्रमाण आयाम विष्कम्भवाला एकोरुक्त है नामका अन्तरद्वीप हैं,
 इसी प्रकारसे आग्नेयी—नैर्ऋती और वायवी विदिशाओंमें क्रमसे
 जामापिक वैषाणिक लाङ्गुलिक नामके तीन अन्तरद्वीप और भी हैं । ऐसे

सुभी विदिशासु ॥ प्रत्येक छोर भागोंमें विभक्त कियेले छोरवाली अने
 चत्वारः भागोंमें कुल आठ भागों (छेकः) समुद्र समुद्र सुभी व्यापका ॥
 अथ वात अर्द्धा सूत्रपठ द्वारा व्याख्या यत् ॥ “पूर्वभाग—पश्चिम भागयोः
 प्रत्येक शाखाद्वयं विद्यते इतिवृत्ताः” पूर्व भाग अने पश्चिम भागमें दशभागों
 अने शाखाओं ॥

“चउसु विदिशासु” इत्यादि—समुद्र समुद्रमां ३००—३०० योजन प्रमाण
 अन्तर व्यापकवाणी, ईशान आदि चार विदिशाओंमें ने शाखाविभाग रूप
 छोर ॥ ते शाखाविभाग रूप छोर पर चार अन्तरद्वीपा ॥ (समुद्रनी
 मध्यमा छोर अने द्वीपाने अन्तरद्वीपा कहे छे अथवा परस्परभा विभाग
 प्रधान द्वीपने अन्तरद्वीप कहे छे) ईशान कोणमां ३०० योजन प्रमाण
 लक्ष्य पदोक्त छोरवाली कोरुक्त नामने अन्तरद्वीप ॥ अथ प्रमाणे अग्नि,
 नैऋत्य अने वायव्यद्वीपमां अनुक्रमे व्यापकिक, वैषाणिक अने ताम्रिक

ઇત્યં દ્યુદ્રહિમવતશ્ચતસૃષુ વિદિશુ एकोरुकादयश्चत्वारोऽन्तरद्वीपा भवन्ति, इति ।
તેષુ ચતુર્વિધા મનુષ્યા વસન્તિ, સૂત્રે ‘ ચતુર્વિધા ’ इति बहुवचनेन निर्देशस्तु
દ્વીપસમુદાયગતવહુત્વાપેક્ષયા ન તુ પ્રતિદ્વીપમપેક્ષયેતિ, અતઃ ક્રમેણ તેऽન્તરદ્વીપેષુ
યોજનીયાઃ, તત્રસ્થા મનુષ્યા एकोरुकादिद्वीपसमानामान एव भवन्ति । ते च
પુરુષા દર્શને સ્વરૂપતો મનોહરાઃ સુન્દરાઙ્ગોપાઙ્ગા ભવન્તિ । ૧।

इति प्रथमद्वीपनिरूपणा १।

अथ द्वितीयद्वीपनिरूपणा २—

“ તેસિ ણં દીવાણં ” इत्यादि—तेषाम्—एकोरुकादीनां द्वीपानां चतसृषु
વિદિશુ—પેશાન્યાગ્નેયીનૈઋતીવાયવ્યાસુ પ્રતિવિદિશ્ઞ લવણસમુદ્રં ચત્વારિ યોજન-
શતાન્તુલઙ્ગચ ચતુર્યોજનશતાઽઽયામવિસ્તારા હયકર્ણાદયશ્ચત્વારોઽન્તરદ્વીપાસ્તન્ના-
માન એવ તત્ર મનુષ્યા અપિ પરિવસન્તિ, इति बोध्यम् । एवं चेपां द्वीपानां याव-
ચે ચાર અન્તરદ્વીપ હિમવાન્ પર્વતકો ચાર વિદિશાઓમેં હેં । इन अन्तर-
द्वीपोंमें चार प्रकारके मनुष्य रहते हैं ।

यहां जिन जिन नामोंके अन्तरद्वीप कहे गये हैं । वहां उन्हीं नामोंसे
प्रसिद्ध मनुष्य रहते हैं, ये देखनेमें मनोहर होते हैं और रूपसेभी मनो-
हर होते हैं । इनके अङ्ग-उपाङ्ग सुन्दर होते हैं १ इन एकोरुक आदि
द्वीपोंकी चारों विदिशाओंमें ईशान, अग्नि, नैऋती, वायव्या कोन इनमेंसे
प्रत्येक विदिशामें लवण समुद्रको चारसौ योजन उलंघन करके चारसौ
योजनके आयाम विस्तारवाले हयकर्ण आदिक चार अन्तरद्वीप हैं,
इनमें—इन्हींके जैसे नामवाले मनुष्य रहते हैं । इस प्रकारसे द्वितीय

નામના ખીલ ત્રણ અંતરદ્વીપો છે. એવા તે ચાર અંતરદ્વીપો હિમવાન્ પર્વ-
તની ચાર વિદિશાઓમાં (ઈશાનાદિ ચૂણાઓમાં) છે. તે અંતરદ્વીપોમાં ચાર
પ્રકારના મનુષ્યો વસે છે. “ ચતુર્વિધા ” આ બહુવચનનું પદ પ્રત્યેક દ્વીપગત
મનુષ્યોની અપેક્ષાએ વપરાયું નથી, પણ ચારે દ્વીપોના સમુદાયના મનુષ્યો
માટે વપરાયું છે. ત્યાં જે નામના દ્વીપો કહ્યા છે, એ જ નામથી ઓળખાતા
મનુષ્યો રહે છે તેમનો ઢેળાવ મનોહર હોય છે, તેઓ મનોહર રૂપસંપન્ન
અને અંગોપાંગની સુદરતાવાળા હોય છે

એકોરુક આદિ ચાર અંતરદ્વીપોની વિદિશાઓમાં ઈશાન, અગ્નિ, નૈઋત્ય
અને વાયવ્યમાં, લવણ સમુદ્રને ૪૦૦—૪૦૦ યોજન પાર કરીને આગળ જવાથી
૪૦૦—૪૦૦ યોજનની લંબાઈ પહોળાઈવાળા હયકર્ણ આદિ ચાર અંતરદ્વીપો
આવે છે. તે અંતરદ્વીપોમાં તેમના જેવા જ નામવાળા મનુષ્યો રહે છે. આ

દન્તરં તેષા તાનદેવાઃ-યામવિસ્તારપ્રમાણ યાયત્સસમાનાં નવશ્વતાન્યન્તર તાવપેષ
 ચ સ્તપ્પમાણમિતિ, -પતે સકલિતાઃ સર્વેઽપ્યષ્ટાવિમસિર્દ્વીપા મવન્તિ । અથ મનુ
 ધ્યાસ્તુ યુગ્મજાતાઃ પર્યોપમાસસ્થેપમાગાઃપ્રયુપોઽષ્ટવન્નુશ્વતોમતાઃ । તથા-પેશ
 વતણેપ્રવિમાનકસ્ય શિસ્તરિપર્વતસ્વાપ્યેવમેષ પૂર્વોચરાદિવિદિષ્ટ ક્રમેષૈવમામકા
 પવાન્તરદ્વીપા અષ્ટાવિમસિર્વિષોધ્યાઃ,

પ્રકારકે ચાર અન્તરદ્વીપોંકા યહ ઘર્ણન હૈ । તાત્પર્ય એસા હૈ કિ પહલે
 જો હિમવાન ઓર શિસ્તરી પર્વતકે આઠોં છોર લયણ સમુદ્રમેં ફેલે હુલે
 કહે ગયે હૈં, ઝનમેં એક એક છોર પર ૭-૭ અન્તરદ્વીપ હૈં, હસ પ્રકાર
 ફુલ અન્તરદ્વીપ ૫૬ હૈં । હનમેં પ્રથમ ઓર વિત્તીય નમ્બરકે અન્તર
 દ્વીપોંકા યહ ઘર્ણન પૂર્વોક્ત પ્રકારસે એસા કિયા ગયાહૈં, હસસે હમ જાનતે
 હૈં કિ જિન દ્વીપોંકા જિતના અન્તર હૈ ઇતનાહી ઇનકા આપામ (લમ્બાઈ)
 ઓર વિસ્તાર હૈ । એસે સાતથે નમ્બરકે જો ચાર અન્તરદ્વીપ હૈ, ઇનકા
 અન્તર નૌસૌ યોજનકા હૈ, ઓર ઇતનાહી ઇનકા આપામ ઓર વિસ્તાર
 હૈ, હસ તરહ યે અન્તરદ્વીપ ૨૮ હૈં । યહાં મનુષ્ય યુગ્મજાતા હૈં, હનકી
 આયુ પલ્યોપમકે અસઘવાતથે માગપ્રમાણ હોતી હૈ તથા-૮૦૦ ઘનુપ
 પ્રમાણ શારીરિક ઝંબાઈ હનકી હોતી હૈ તથા પેરવત દોઝકા વિભાગ
 કરનેવાલા શિસ્તરી પર્વતકી વિવિશાઓમેં શ્રી હસી નામકે અન્તરદ્વીપ

રીતે બીજા ન જરૂરના ચાર અન્તરદ્વીપોનું આ વચ્ચે ન થયું છે આ કથનનું તાત્પર્ય
 આ પ્રમાણે છે—પહેલાં બેમ કહેવામાં આવ્યું છે કે હિમવાન અને શિશરી
 પર્વતના આઠે છેડા લવણ સમુદ્રમાં વિસ્તરેલા છે તે પ્રત્યેક છેડા પર સાત સાત
 અન્તરદ્વીપ છે આ રીતે કુલ ૫૬ અન્તરદ્વીપ છે તેમાંથી પહેલા અને બીજા
 ન જરૂરના ચાર ચાર અન્તરદ્વીપોનું વચ્ચે ન તો ઉપર મુજબ સમજવું બેઈએ
 બે દ્વીપોનું કેટલું અંતર છે બે-દો-૪ તેમનો આપામ અને વિશ્કલ છે,
 આ વાત આગળ પણ પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે આ રીતે સાતમાં ન જરૂરના
 બે ચાર અન્તરદ્વીપો છે, તેમનું છઠ્ઠા ન જરૂરના દ્વીપોથી ૬૦૦-૬૦૦ ચોજનનું
 અંતર છે અને તેમની લંબાઈ-પહોળાઈ પણ ૬૦૦-૬૦૦ ચોજનપ્રમાણ ૪ છે
 કુલ હિમવાનની વિવિશાઓમાં કુલ ૨૮ અન્તરદ્વીપો છે ત્યાં મુત્તરિકો વમે
 છે. તેમના શરીરની લંબાઈ ૮૦૦ ચોજનપ્રમાણ હોય છે, અને તેમનું આયુષ્ય
 ૫મ્બોપમના અઘ જ્ઞાતમાં આઠપ્રમાણ છે તથા ઐશ્વતથેરના વિધાને ૪૧
 નાથ શિશરી પર્વતની વિવિશાઓમાં ૫૪ બે-૪ કમે અને બે-૪ નામવાળા

अन्तरद्वीपस्फुटीकरणार्थं सङ्ग्रहगाथाः—

“ चुल्लहिमवंतपुन्यावरेण विदिरासु सागरं तिस्रः ।
 गंतूणंतरदीवा, तिन्नि सए हांति वित्तिन्ना । १ ।
 अउणावन्न नवसए, किंचूणे परिहि तेसिमे नामा ।
 एगूरुग आभासिय, वेसाणी चैव नंगूली । २ ।
 एएसि दीवाणं, परओ चत्तारि जोजणसयाइं ।
 ओगाहूणं लवणं, सपडिदिसि चउसयपमाणा । ३ ।
 चत्तारंतरदीवा, हयनयशोकन्नसंकुलीकणा ।
 एवं पंचसयाइं, छसजजटेव नव चैव । ४ ।
 ओगाहिऊण लवणं, विस्संभोगाहसरिसया थणिया ।
 चउरोचउरो दीवा, इमेहि णामेहि णेयन्वा । ५ ।
 आयंसगमेंहमुहा, अओमुहा गोमुहा य चउरेते ।
 अस्समुहा इत्थिमुहा, सीहमुहा चैव वग्गमुहा । ६ ।
 तओ अ अस्सकप्पा, इत्थिकप्पा अ कन्नपाउरणा ।
 एक्कागुहमेहमुहा, विज्जुमुहा विज्जुदंता य । ७ ।
 घणदंतलहुदता, निगूढदंता य सुद्धदता य ।
 दासहरे सिहरिमिदि, एवंदेव अट्टवीसावि । ८ ।
 अंतरदीवेसु नरा, धणुसय अट्टुसिया मुइया ।
 पालिति मिहुणधम्मं, पल्लस्स असंखमागाऊ । ९ ।
 चउसट्ठि पिट्ठिकरंडयाणि मणुयाणस्वच्चपालया ।

अउणासीइ तु दिणा, चउत्थमत्तेज आहारो । १ । ” इति,

छाया—“ चुल्लहिमवत्पूर्वापरयोर्विदिक्षु सागरं त्रिशतीम् ।

गत्वाऽन्तरद्वीपास्त्रोणि शतानि भवन्ति विस्तीर्णा । १ ।

एकोनपञ्चाशन्नवशतं किञ्चिदूनं परिविस्तेषामिमानि नामानि ।

एकोरुक् आभाषिको विषाणी चैव लाङ्गूली । २ ।

एतेषां द्वीपानां परतथत्वारि योजनशतानि ।

अवगाह्य लवणं स प्रतिदिक् चतुःशतप्रमाणाः । ३ ।

है और वे भी २८ हैं । अन्तरद्वीपोंको स्पष्ट करनेके लिये ये संग्रह-गाथाएं हैं । “ चुल्लहिमवंत ” इत्यादि १० ॥ सू० ६४ ॥

२८ अंतरद्वीपो आवेता छे अंतरद्वीपान्ती स्पष्टता करनारी संग्रहगाथा आ भभाछे छे—“ चुल्लहिमवंत ” इत्यादि ॥ अ ८४ ॥

વત્તારોઽન્તરગ્રીવા કયગગગોરુણેષ્ઠુલીકર્ણોઃ ।

પયં પદ્મપ્રતાનિ પદ્મસપ્તાદ નય ચૈત્ર । ૪ ।

અત્રગાદ્ય-લક્ષણં વિષ્ણુમાયગામસદ્દશા મળિતાઃ ।

વત્તારમત્તારો દ્વીપા ભૃગિર્નામમિદ્વાતલ્પ્યા । ૫ ।

આદર્શકમેદ્મુત્ત્વા મયોમુત્ત્વા ગોમુત્ત્વાથ વત્તાર પતે ।

અથમુત્ત્વા હસ્તિમુત્ત્વાઃ સિદ્ધમુત્ત્વાથેવ વ્યાપ્તમુત્ત્વાઃ । ૬ ।

સત્ત્વાશ્વત્ત્વા હસ્તિવૃક્ષાથ કર્ણપ્રાપરણાઃ ।

ઉત્ત્વામુત્ત્વમેષમુત્ત્વા વિદ્યુમુત્ત્વા વિદ્યુવન્તાથ । ૭ ।

મનદન્ત-સપ્તદન્તા નિયુદ્ધદન્તાથ શુદ્ધદન્તાથ ।

વર્ષપરે ક્ષિત્તરિષ્પિ દ્વનમેષ મદ્વાર્ષિષ્પિરિષ્પિ । ૮ ।

મત્તરદ્વીપષુ નરા ષત્તુઃષ્ણાદ્કોચ્છિન્નાઃ સદા મુદિતા ।

પાલયન્તિ મિથુનમર્મે પરપત્ય મસુરુચેયમાગાયુપઃ । ૯ ।

ષત્તુપદિષ્ટિષ્ઠકરણકાનિ મનુષ્યાણામપત્યપાલનતા ।

एकोनाडीति तु दिनानि चतुर्थमश्तेन आहार । १० ।" इति सूत्र ६४॥

અનન્તરસૂત્રે જમ્બૂદ્વીપમન્તરવસિનાદિ દિગાધયજ્ઞેન લઘ્વસમુદ્રાવગાહનયા ડ્વન્તરદ્વીપા ઉક્તાઃ સમ્મતિ જમ્બૂદ્વીપસ્ય વાષ્ણવેદિકામાભિત્ય સ્વપ્નસમુદ્રાવમાદ નયા મહાપાતાઠાદીસ્તરસ્યાન્ દેવાંથ તથા લઘ્વસ્ય પ્રસ્તુતસ્વાક્ષરમાસિનમન્ત્રોસ્ત સાપિનઃ સૂર્પાંથ, તસ્ય લઘ્વસમુદ્રસ્ય દ્વારાણિ દ્વારસ્યાન્ દેવાંથ પ્રસ્પયિતુમાઃ-

મૂલ્ય-—જમ્બૂદ્વીવસ્ત્ત ણ દીવસ્ત્ત ઘાહિરિલ્લાઓ વેદ્યતાઓ ઘડશિર્તિ લઘ્વસમુદ્ર પચાણઉદ્ જોયણસદ્સ્તાદ ઓગાહેષા પ્તથ ણ મહદ્મહાલયા મહાલિંજરસઠાણસઠિયા ચત્તારિ મહા પાયાલા, પળ્ણત્તા, ત જદ્દા-ઘલયામુદ્ ૧, કેડપ્ ૨, જૂવપ્ ૩,

इस प्रकार अन्तरग्रीवोंका और अन्तरग्रीपस्थ मनुष्योंका वर्णन करके अब सूत्रकार जम्बूद्वीपकी पाञ्चवदिकाको लेकर लघ्वण समुद्रको कहाँ तक उल्लंघन करके पातालफलदा कहा है, इस बातका तथा पाताल-फलदास्पद्योंका और लघ्वणसमुद्रको प्रमासित करने वाले यन्त्रोंको

આ પ્રમાણે અન્તરગ્રીવોનું અને અન્તરગ્રીપસ્થ મનુષ્યોનું કથન પૂરું થયું છે તે સુત્રગારે એ પાત્ર પ્રકરે દે છે કે જમ્બૂદ્વીપની વાષ્ણવેદિકાથી થાર કરીને વચ્ચે સમુદ્રને ક્યાં સુધી ઓળંગવાથી પાતાળકળયા આવે છે તથા પાતાળ કળાય કેવોનું, વચ્ચે સમુદ્રને પ્રમાસિત કરવાના યન્ત્રોનું, અને તેમાં તપ્તા

ईसरे४ । एतथ णं चत्तारि देवा महिद्धिया जाव पलिओवमट्टिइया परिवसंति, तं जहा—काले१, महाकाले२, वैलंबे३, पभंजणे४ ।

जंबूद्वीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउ-
दिसिं लवणसमुद्र वायालीसं २, जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एतथ
णं चउण्हं वैलंधरनागराईणं चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता तं,
जहा—गोथूमे१, उदयभासे२, संखे३, दगसीमे४ । ततथ णं चत्तारि
देवा महिद्धिया जाव पलिओवमट्टिइया परिवसंति, तं जहा—
गोथूमे१, सिवए२, संखे ३, मणोसिलए ४ ।

जंबूद्वीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु
विदिसासु लवणसमूहं वायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता
अतथ णं चउण्हं अणुवैलंधरनागराईणं चत्तारि आवासपव्वया
पण्णत्ता, तं जहा—कक्कोडए१, विज्जुप्पभे२, केलासे३, अरुणप्पभे
४ । ततथ णं चत्तारि देवा महिद्धिया जाव पलिओवमट्टिइया परि-
वसंति, तं जहा—कक्कोडए १, कइसए २, केलासे ३, अरुणप्पभे४ ।
लवणे णं समइे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभा-
सिस्संति वा । चत्तारि सूरिया तविंसु वा तवंति वा तविस्संति
वा चत्तारि कत्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ, चत्तारि अग्गी जाव
चत्तारि जम्मा, चत्तारि अंगारा जाव चत्तारि भावकेऊ ।

लवणस्स णं समुद्रस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—
विजए १, वेजयंते २, जयंते ३, अपराजिए ४ । ते णं दारा
चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइया चेव पवेसेणं पण्णत्ता ।

तत्थ णं चत्तारि देवा महिषिया जाय पलिओवमट्टिया परिव
सति—विजय १, वेजयसे २, जयते ३, अपराजित ४ ॥ सू० ६५ ॥

छाया—अन्यद्वीपस्य खलु द्वीपस्य बाह्याद् वेदिकान्तास्तुर्दिशि अक्षयसमुद्र पञ्च
नवति २ योजनसहस्राणि अवगाह्य अत्र खलु महाविमहन्तो महाछिन्नरसस्थान-
संस्थितायत्नारो महापावालाः प्रवृत्ताः तद्यथा—पञ्चनागस्यः १, केतुकाः २, वृ-
षकाः ३, ईश्वराः ४। अत्र खलु चत्वारो देवा महर्दिका यावत् पश्योपमस्वितिकाः
परिवसन्ति, तद्यथा—कालः १, महाकालः २, वेळम्बः ३, प्रमज्जनः ४,

जम्बूद्वीपस्य खलु द्वीपस्य बाह्याद् वेदिकान्तास्तुर्दिशि लक्ष्मणसमुद्रं द्विचत्वारि-
ंशद्वयोमनसहस्राणि अवगाह्य अत्र खलु चतुर्णां वेष्मन्चरनागरानानां चत्वार
भाषासपर्वताः प्रवृत्ताः, तद्यथा—गोस्तूपः १, उदकमासः २, शङ्खः ३, दक्षसीमा
४। तत्र खलु चत्वारो देवा महर्दिका यावत् पश्योपमस्वितिकाः परिवसन्ति,
तद्यथा—गोस्तूप १, शिवका २, शङ्खः ३, मनास्त्रिलका ४,

जम्बूद्वीपस्य खलु द्वीपस्य बाह्याद् वेदिकान्तास्तुर्दिशि विविध स्वयसमुद्र
द्विचत्वारिंशद् २ योजनसहस्राणि अवगाह्य अत्र खलु चतुर्णामनुवेष्मन्चरनागरानानां
चत्वार भाषासपर्वताः प्रवृत्ताः, तद्यथा—कूर्कोटक १, विद्युत्प्रम २, कैलासः ३,
अरुणप्रमः ४। तत्र खलु चत्वारो देवा महर्दिका यावत् पश्योपमस्वितिकाः परि-
वसन्ति तद्यथा—कूर्कोटकः १, पर्वमक २, कैलास ३, अरुणप्रमः ४।

अत्रणे खलु समुद्रे चत्वारिअन्ध्राः प्रमासत्त वा प्रमासत्ते वा प्रमासिष्णत्ते वा।
चत्वारः सूर्या अपपन् वा तपन्ति वा तप्स्यन्ति वा। चतस्रः कृषिकाः यावत् चतस्रो
भरण्या, चत्वारोऽग्नयाः यावत् चत्वारो यमाः, चत्वारोऽहाराः यावत् चत्वारो
भाषकेसवः।

अक्षयस्य खलु समुद्रस्य चत्वारि द्वाराणि प्रवृत्तानि, तद्यथा—विमय १, वैज-
यन्त २, जयन्तम् ३, अपराजितम् ४, तानि खलु द्वाराणि चत्वारि योजनानि
विष्कम्भेण, तानन्त्येष प्रवेशेन प्रवृत्तानि। तत्र खलु चत्वारो देवा महर्दिका यावत्
पश्योपमस्वितिकाः परिवसन्ति—विमय १, वैजयन्तः २, जयन्तः ३, अपराजितः
४ ॥ सू० ६५ ॥

सावित करनेवाले सूर्योका लवण समुद्रके शरीरका और दारस्यदेवोका
प्ररुण करते हैं। “जमुदीयस्त णं दीयस्त पाहिरिह्माओ” इत्यादि—

सूर्या, लवण समुद्रनां शरीरान् अने दारस्य देवान् पलु एवं शरीर-
निष्पन्न ६१ ३—“जमुदीयस्त णं दीयस्त पाहिरिह्माओ” इत्यादि—

टीका—‘ जंघदीनस्स णं ’ इत्यादि-चपटम्,

“ एतं पं ” इति-अत्र-मध्यमेषु दशमु योजनसहस्रेषु चत्वारः-चतुसंख्यकाः महातिमहान्तः-महाविशालाः महाऽलिङ्गसंस्थानसंस्थिताः-महाश्वासौ अलिङ्गरो-जलघटो महाऽलिङ्गरो-वृहज्जलघटः, तरय संस्थानेन-आकारेण संस्थिताः महा-ऽलिङ्गसंस्थानसंस्थिताः=महाजलकुम्भाऽऽकाराः महापातालाः-पातालवद्गाध-त्वात् पातालव्यनस्थितत्वाद्वा पातालाः, महान्तश्च ते पातालाश्चेति तथा, पाताळ-कलशाः चत्वारः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-चडवामुखः १, केतुकः २, गूपकः ३, ईश्वरः ४, अथेति । एते क्रमेण पूर्वादिदिक्चतुष्टये बोध्याः । मुखे-गूले चैते दशयोजनसह-स्राणि विस्तीर्णाः, मध्ये च तद्भयोजनपरिमाणाः, एषामुपरितनभागे केवलं जलं, मध्यभागे पञ्चजलोभयम्, शूले वायुरेव, एतेषु वायुकुमाराः कालप्रभृतयो देवा निवसन्ति, अत्र गाथाः—

“पणनउइ सहस्साइं, ओगाहिताण चउद्धिसिं लवणं ।

चउरोऽलिंजरसंठाणसंठिया ह्येति पायाला । १ ।

टीकार्थ—जम्बूद्वीप नामके द्वीपकी वायव्यवेदिकान्तसे चारों दिशाओंमें लवण समुद्रको ९५-९५ हजार योजन प्रमाण लांबकर आगत स्थानपर अवि-
काधिक चार पातालकलश हैं, ये पातालकलश एक बहुविस्तृत घड़ेके
जैसे आकारवाले हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं—वडवामुख १, केतुक
२, यूपक ३ और ईश्वर ४। ये चार पातालकलश क्रमशः पूर्वादि चार
दिशाओंमें हैं। इनका मुख और मूल भागका विस्तार दस हजार योज-
नका है, मध्य भागका विस्तार एक लाख योजनका है। इनके ऊपर
के भागमें केवल जल है, मध्य भाग में पवन और जल ये दोनों हैं।
मूल भागमें केवल वायुही हैं। इनमें काल प्रभृति वायुकुमारदेव
रहते हैं। उक्त भी है—“पणनउह सहस्ताहं” इत्यादि।

જળદ્રીપ નામના દ્રીપની બાહ્યવેદિકાના અન્ત ભાગથી ચારે દિશાઓમાં લવણ સમુદ્રને દપ-દપ હઝાર યોજનપ્રમાણે ઉલ્લઘિત (પાર) કરવાથી જે સ્થાન આવે છે, તે સ્થાન પર ચાર ઘૂબ જ ત્રિશાળ પાત જકળશ છે તેમનો આકાર વિસ્તૃત ઘડાના આકાર જેવો છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) વડવામુખ, (૨) કેતુક, (૩) ચૂપક અને (૪) ઈશ્વર તે ચાર કળશ અનુક્રમે પૂર્વાદિ ચાર દિશાઓમાં છે. તેમના મુખ અને મૂળભાગનો વિસ્તાર દશ હઝાર યોજનનો છે, અને મધ્યભાગનો વિસ્તાર એક લાખ યોજનનો છે. તેમના મૂળભાગમાં માત્ર વાયુ જ છે. તેમાં કાલપ્રભૃતિ વાયુકુમાર દેવોનો નિવાસ છે, કહ્યું પણ છે કે “પળનઝહ સહસ્ત્રાઈ” ઇત્યાદિ—

मलयामुह केऊण, जूयग सह इस्सरे य वोढब्बे ।

सम्भवरामया णे कुट्टा एएसिं यससइया । २ ।

ओयणमहस्सवसग मूछे उपरिं च होति विस्तिग्गा ।

मग्गे य सयसइस्से, ऊत्तियमत्त च ओगाढा । ३ ।

पलिगोवमहिईया, एएसिं महिई सुरा इणमो ।

काळे य महाफाले, वेल्ल पर्ममणे वेव । ४ ।

अन्नेवि य पायाळा, सुहाळिजरसठिया सवणे ।

अद्दसया जुलसीया, सत्त सइस्सा य सन्नेवेवि । ५ ।

ओयणसपवित्तिळा मूलवरिं दस सयाणि मय्झमि ।

ओगाढा य सइस्स, दस ओयणिया य सिं कुट्टा । ६ ।

पायाळाण विमागा, सव्वाचवि तिभिं विन्नि वोद्धया ।

हेट्ठिममाणे नाळ, मग्गे वाळ य उदयं च । ७ ।

उपरिं उदगं मणिर्यं, पढमगयीएसु वाउ ससुमिमो ।

घामे उदगं चेण य, परिवव्वुइ जलनिही खुदिमो । ८ ।

परिसठियमि पवणे, पुणरवे उदयं सयेव सठारणं ।

पच्चेइ सण उदो परिहायइ जुम्भमयेव । ९ ।" इति,

छाया—“ पञ्चनवर्तिं सहस्राणि अवगाह्य चतुर्दिशि ज्वनम् ।

चत्वारोऽभिजित्तस्यानसस्थिता भवन्ति पातालाः । १ ।

वडवाहुर्यः केतुः शूषकस्तथा ईशारम वोद्धव्यः ।

सर्वे वज्रमया सन्तु कुट्टयानि एतेषां दशशतानि । २ ।

योजनसहस्रशतकं मूले उपरि च भवन्ति विस्तीर्णा ।

मध्ये च द्रुतसदृशं तावन्मात्रं चावगाढाः । ३ ।

पद्मोपमस्थितिका एतेषामपि परिगुरा इमे ।

काञ्चन महाकायो वेद्धव्यः यमज्जनधैर । ४ ।

अत्रापि च पात्राणां मुद्राभिन्नरूपमस्थिता छत्रणे ।

अनुशतानि चतुरशीति सप्त सहस्राणि च सर्वेऽपि । ५ ।

योजनशतविस्तीर्णा मूलोपरि दश शतानि मध्ये ।

शरणागता महत्त दश योजनानि तेषां शृङ्गानि । ६ ।

पातालाणां त्रिणागा सर्वेषामपि प्रपश्यतो बोध्याः ।

आस्तनमागं वायुः शब्दे वायुन उदर्कं च । ७ ।

उपरि उदरं नाति प्रथमक-द्वितीययो वायु मंजुभिः ।

यमवि उदकं तन च परिवर्पत तमनिधिं सुह्यः । ८ ।

પરિસંસ્થિતે પવને પુનરપિ ઉદકં તદેવ સંસ્થાનમ્ ।

વ્રજતિ તેન ઉદધિઃ પરિહીયતેઽનુક્રમેણૈવમ્ । ૧ । ” ઇતિ,

આસાં ગાથાનામયમર્થઃ—

લવણસમુદ્રં ચતુર્દિશિ પશ્ચનવતિસહસ્રાણિ પશ્ચનવતિસહસ્રાણિ યોજનાનિ
અવગાહ્ય મધ્યે અલિઞ્જસંસ્થાનસંસ્થિતાશ્ચત્વારઃ પાતાલાઃ=પાતાલકલશા ભવન્તિ
। ૧ । એતેષાં પાતાલકલશાનાં નામાનિ વડવામુત્રઃકેતુકઃયૂપકઃઈશ્વરશ્ચેતિ વોધ્યાનિ ।
એતે ચ ક્રમેણ પૂર્વાદિદિવચતુષ્ટયે ભવન્તિ । એતે સર્વેઽપિ વજ્રમયા વોધ્યાઃ । એતેષાં
કુડ્યાનિ=મિત્તયશ્ચ દશશતયોજનપ્રમાણાનિ શ્વન્તિ ॥ ૨ ॥ એતે પાતાલકલશા
મૂલભાગે ઉપરિભાગે ચ દશસહસ્રયોજનાનિ વિસ્તોર્ણા ભવન્તિ, મધ્યભાગે તુ શ્વત-
સદ્વક્ત્રયોજનાનિ=લક્ષયોજનાનિ વિસ્તીર્ણા ભવન્તિ । તથા ચૈતે લક્ષયોજનાનિ અવ-
ગાઢાઃ લક્ષયોજનાઞ્ચગાઢાઃ સમતલાદધોધાગે ભવન્તિ । ૩ । એતેષાં વડવામુત્રાદીનામ્
અધિપતિમુરારાઃ પલ્યોપમસ્થિતિકા ભવન્તિ । તે ચેમે વોધ્યાઃ, તથાહિ—કાલો
૧ મહાકાલો ૨ વેલમ્બઃ ૩ પ્રમજ્જનઃ ૪, ઇતિ ॥ ૪ ॥ પૂર્વોક્તાઃ પાતાલકલશા

હસ ગાથાઓંકા અર્થ હસ પ્રકારસે હૈં—ચારોં દિશાઓંકી ઓર લવણ
સમુદ્રમેં ૯૫-૯૫ હજાર યોજન આગે જાકર યીચમેં ઘટકે જૈસે આકાર-
વાલે ચાર પાતાલકલશા હૈં । इनके नाम-वलद्यमुख, केतुक, यूपक, ईश्वर
हैं, ये क्रमशः पूर्वादि चार दिशाओंमें हैं । ये सब वज्रमय हैं, इनकी
दिवालें एक हजार योजनप्रमाण हैं । ये पातालकलश मूल भागमें और
ऊपरके भागमें दश दश हजार योजन विस्तृत हैं । मध्यभागमें इनका
विस्तार एक २ लाख योजनका है, और अवगाहना भी एक लाख २ योजन
है । इन कलशों के अधिपति देव १-१ पल्योपम की स्थितिवाले होते
हैं । इन देवोंके नाम-काल, महाकाल, वेलम्ब, और प्रमज्जनहैं, ये पूर्वोक्त

આ ગાથાઓંનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—જ ખૂદીપના બાહ્યવેદિકાન્તથી-
આરે દિશા તરફ લવણ સમુદ્રમાં ૯૫-૯૫ હજાર યોજનનું અંતર કાપવાથી
લવણ સમુદ્રની વચ્ચે ઘડાના જેવા આકારના ચાર પાતાળકળશ આવે છે.
તેમનાં નામ—વલયમુખ, કેતુક, યૂપક અને ઈશ્વર છે. તેઓ ક્રમશઃ પૂર્વ,
દક્ષિણ, પશ્ચિમ અને ઉત્તરમાં છે તેઓ વજ્રનિર્મિત છે, તેમની દિવાલો એક
હજાર યોજનપ્રમાણ જાયી છે. તે પાતાળકળશોના મૂળભાગ (તળિયું) અને
મુખભાગનો વિસ્તાર ૧૦-૧૦ હજાર યોજનનો છે અને મધ્યભાગનો વિસ્તાર
એક લાખ યોજનનો છે, અને અવગાહના પણ એક એક લાખ યોજનની છે
તે કળશોના અધિપતિ દેવોનાં નામ કાળ, મહાકાળ, વેલમ્બ અને પ્રમજ્જન
છે. તેમની સ્થિતિ એક પલ્યોપમની છે. આ પાતાળ કળશો ખૂબ જ વિસ્તાર-

મહાહિઝરસસ્થાનસંસ્થિતાઃ । તથોઽન્યેઽપિ ક્ષુદ્રાહિઝરસસ્થાનસંસ્થિતાઃ પાતાલ
 કલશા લવણસમુદ્રે ષોધ્યાઃ । एते सर्वे तु राससहस्राणि अष्टशतानि चतुरशीतिषु
 सम्यया पोष्याઃ ॥ ૫ ॥ મૂલમાગે ઉપરિમાગે વૈષ્ણે જાતયોજનાનિ વિસ્તીર્ણા,
 મધ્યે ચ દશસતયોજનાનિ વિસ્તીર્ણાઃ, અવગાઢાયેતે સદસ્યયોજનાનિ । દશપો-
 જનપ્રમાણાનિ ત્વેષાં કુલ્યાણિ વિજ્ઞેયાનિ ॥ ૬ ॥ સર્વેષાં પાતાલમાનો પ્રપલ્લયો
 વિમાગા ષોદશ્યા । તપ્રાપસ્તને માગે વાયુસ્તિષ્ઠતિ, મધ્યે વાયુરુદકં ચ તિષ્ઠતિ ।
 ॥ ૭ ॥ ઉપરિમાગે પુનરુદકં તિષ્ઠતિ । તપ્ર મયમ-દ્વિતીયમાગયોઃ સંશ્રુમિતો વાયુ
 રુદક ધમતિ । તેનોદકધમનેઽયમ્ ક્ષુદ્રો જલનિધિઃ પરિવર્ધતે=વૃદ્ધિ યાતિ ॥ ૮ ॥
 તત્ત્વં વચને પરિસંસ્થિતે=સોમાવસ્થાં પરિત્યજ્ય પૂર્વસ્થિતિં ગતે સતિ રુદકમપિ
 પુનઃ તદેવ સસ્થાને=સ્વપૂર્વસ્થિતિં પ્રગતિ=ગच्छति । તેન હેતુના ઉદ્ધિ એવમ્
 અનુકર્મેણ પરિધીયતે=શાન્તિ ગच्छतीति ॥ ૯ ॥

પાતાલકલશ વિશાલ આકારવાળે છે । યદા દનસે અતિરિક્ત ઔર મી
 છોટે-છોટે કલશકે જેસે આકારવાળે પાતાલકલશ છે । એ સપ ૭ હજાર
 ૮ સૌ ચૌરાસી છે । મૂલ માગમે ઔર કપરકે માગમે સૌ યોજન વિસ્તાર
 વાળે એ છે । મધ્યમે એક હજાર યોજન વિસ્તાર વાળે છે ।

इनकी अवगाहना एक हजार योजनकी है, तथा दश योजन प्रमा
 णकी दीयाले हैं । समस्त पानालोके तीन तीम विभाग हैं । नीचेके
 भागमें वायु रहता है, मध्यभागमें वायु और उदक दोनों रहते हैं,
 और ऊपरके भागमें उदकरहता है । प्रथम द्वितीय भाग में संश्रुमित
 वायु उदकको उठालता है, इस उदकके उछलनसे क्षुब्ध जलधि धृत्विको
 प्राप्त होता है, तथा जय वायु अपना क्षुब्ध अवस्थाका परिप्रागपर पूर्व

વાળા છે. ત્યાં આ ચાર મહાકળયો ઉપરાંત બીજા પાંચ ૭૮૦૦ નાના મિટા
 પાતાલકળયો છે તેમના મૂળ ભાગ અને મુખભાગનો વિસ્તાર ૧૦૦૦ યોજન
 નો છે તેમની અવગાહના પાંચ ૧૦૦૦ યોજનની છે અને તેમની દીરાત
 ૧૦ યોજન પ્રમાણ ડીથી છે જ્યાં પાતાલકળયોના વલુ-વલુ વિભાગ પડે
 છે નીચેના ભાગમાં વાયુ રહે છે વચ્ચેના ભાગમાં વાયુ અને પાણી રહે છે
 નીચેના અને માથેના ભાગમાં રહેલો કુખ્ય વાયુ પાણીને ઉઠાડે છે, આ રીતે
 પાણી ઉછળવાથી કુખ્ય ધરેલા સમરના પાણી પ્રેરતિ યાય છે, અને અચર
 વાયુ કુખ્યધરણ્યને પરિત્યાગ કરીને પાતાલી પૂરવિધિમાં આવી બધે છે,

“ एत्थ णं चउण्हं वेलंधरनागराईणं ” इत्यादि—अत्र खलु चतुर्णां वेलन्धर-
नागराजानां=वेलां-लवणसमुद्रजिखामन्तः प्रविशन्तीं वहिर्वा निःसरन्तीमग्रशिखां
च धारयन्तीति वेलन्धराः ‘ संज्ञात्वादयं साधुः, ते च ते नागराजाश्च वेलन्धर-
नागराजाः=वेलन्धरनागकुमारा इत्यर्थः, तेषाम् आवासपर्वताः=निवासस्थानरूपाः
पर्वताः चत्वारः प्रज्ञाताः, ते यथा-गोस्तूपः १, उदकभासः २, शङ्खः ३, उदक-
सीमा ४, एते क्रमेण पूर्वादिदिक्चतुष्टये बोध्याः । तत्र क्रमेण गोस्तूप-शिवक-
शङ्ख मनः शिलक नामानो महद्भिक्षा यावत्पल्योपमस्थितिकाश्चत्वारो देवा वसन्तीति ।

स्थितिमें आजाता है-तब जल भी अपनी पूर्वस्थितिमें आजाता है, इस
कारण उदधिमें उबार-भाटा शान्त होजाता है ॥ १ । ९ ॥

“ एत्थणं चउण्हं ” इत्यादि—

લવણ સમુદ્રકી શિખાકો, ખીતર-ચાહિર નિકલતી હુઈ અગ્રશિ-
ખાકો જો ધારણ કરતે હૈં વે વેલન્ધર હૈં । યહાં-હસ વ્યુત્પત્તિકે અનુસાર
“ વેલાન્ધર ” એસા પદ હોના ચાહિયે થા પર એસા ન હોકર જો વેલન્ધર
એસા પ્રયોગ હુવા હૈં ઉસકા કારણ હસકા શબ્દહોના હૈં । યે વેલન્ધર
નાગરાજ હૈં । એસે હન વેલન્ધર નાગકુમારોંકે આવાસ પર્વત નિવાસ
સ્થાનરૂપ પર્વત ચાર કહે ગયે હૈં, જૈસે-ગોસ્તૂપ ૧, ઉદકભાસ ૨, શંખ
૩ ઓર ઉદકસીમા ૪ યે ચારોં આવાસ પર્વત ક્રમશઃ પૂર્વાદિ ચાર દિશામેં
હૈં હન આવાસ પર્વતોંપર ક્રમશઃ-ગોસ્તૂપ, શિવક, શંખ ઓર મનઃશિ-
લક, હન નામોંકે ચાર મહદ્ભિક્ષિક યાવત્ પલ્યોપમ સ્થિતિવાલે દેવ રહતે

ત્યારે પાણી પણ પોતાની પૂર્વસ્થિતિમાં આવી જાય છે. તે કારણે સમુદ્રમાં
આવેલી લરતી શમી જાય છે. ॥ સૂ ૧ થી ૯ ।

“ एत्थणं चउण्हं ” इत्यादि—

લવણ સમુદ્રની અંદર અને બહાર નીકળતી એવી વેલાને (અગ્રશિખાને)
જેઓ ધારણ કરે છે, તેમને વેલન્ધર કહે છે. આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર
“ વેલાન્ધર ” પદ બનવું જોઈએ, પણ એવું ન થતાં જે ‘ વેલન્ધર ’ પદ
બન્યું છે, તેનું કારણ એ છે કે તેમનું નામ જ વેલન્ધર છે

તે વેલન્ધર નાગરાજ છે એવાં તે વેલન્ધર નાગકુમારોના નિવાસસ્થાન
રૂપ આવાસ પર્વતો ચાર કહ્યા છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) ગોસ્તૂપ,
(૨) ઉદકભાસ, (૩) શંખ અને (૪) ઉદકસીમા તે ચારે આવાસ પર્વતો
અનુક્રમે પૂર્વાદિ દિશાઓમાં છે તે આવાસપર્વતો પર અનુક્રમે ગોસ્તૂપ, શિવક,
શંખ અને મન શિલક નામના ચાર મહદ્ભિક્ષિક આદિ વિશેષણોવાળા અને એક
પલ્યોપમની સ્થિતિવાળા દેવો રહે છે.

પુન્યાઈઅણુક્રમસો, ગોથુમદગભાસસંસ્વદગસીમા ।

ગોથુમ-સિવણ-સંસ્વે મળોસિલે નાગરાયાળો । ૫ ।

છાયા—“ દશયોજનસહસ્રાણિ લવણશિલા ચક્રવાલતો વિસ્તીર્ણા ।

પોડશસહસ્રોચ્ચા સહસ્રમેકં ત્વચગાઢાઃ । ૧ ।

દેશોનમર્દ્યયોજનં લવણશિલોપરિ દકં તુ કાલદ્વિકે ।

અતિરેકમતિરેકં પરિવર્ધતે હીયતે વાઽપિ । ૨ ।

આભ્યન્તરિકીં વેલાં ધારયન્તિ લવણોદધેઃ નાગનામ્ ।

દ્વાચત્વારિંશત્સહસ્રાણિ દ્વાસપ્તતિસહસ્રાણિ વાહ્યામ્ । ૩ ।

પટ્ટિર્નાગસહસ્રાણિ ધારયન્ત્યગ્રોદકં સમુદ્રમ્ ।

વેલન્ધરાઽઽવાસા લવણે ચ ચતુર્દિશિ ચત્વારઃ । ૪ ।

પૂર્વાઘનુક્રમશઃ ગોસ્તૂપ-દકભાસ-શઙ્ખ-દક્ષીમાઃ ।

ગોસ્તૂપઃ શિવકઃ શઙ્ખો મનઃશિલો નાગરાજાઃ । ૫ । ” ઇતિ,

અયમર્થઃ—લવણશિલા-લવણસમુદ્રસ્ય અગ્રભાગઃ ચક્રવાલતો મળ્ડલાકારેણ દશસહસ્રયોજનાનિ વિસ્તીર્ણા, પોડશસહસ્રયોજનોચ્ચા, સમશૂમિભાગાપેક્ષ્યા, એક-સહસ્રયોજનપ્રમાણાઽવગાઢા ચ-વોધ્યા । ૧ । લવણશિલાયા ઉપરિ કાલદ્વિકે= દિવસે રાત્રીં ચ દેશોનાર્દ્યયોજનપ્રમાણં દકં-જલમ્ અતિરેકમ્ અતિરેકમ્=અધિક-મધિકં પરિવર્ધતે હીયતેઽપિવા । ૨ । નાગકુમારાણાં દ્વાચત્વારિંશત્સહસ્રાણિ લવ-ણોદધેઃ આભ્યન્તરિકીય્=અન્તર્વિશન્તીં વેલાં ધારયન્તિ, તથા-તેષાં નાગકુમા-રાણાં દ્વિસપ્તતિ સહસ્રાણિ વાહ્યાં=વહિર્ગચ્છન્તીં વેલાં ધારયન્તિ । ૩ । પટ્ટિસહસ્ર-સંખ્યકા નાગકુમારાઃ સમુદ્રસ્ય=લવણસમુદ્રસ્ય અગ્રોદકં=શિલાગ્રં ધારયન્તિ । તત્ર

યોજન કંચાહૈ તથા સમતલસે એક હજાર યોજન અવગાહનવાલાહૈ । જલશિ-લાકે ઉપર દિન રાત કુછ કમ અર્ધયોજન પ્રમાણસે જલ વઢતા ઘટના રહતા હૈ । લવણોદધિકી આભ્યન્તર વેલાકો ૪૨ હજાર નાગકુમાર ઓર બાહ્ય વેલાકો ૭૨ હજાર નાગકુમાર ધારણ કરતે હૈ, એવં ૬૦ હજાર નાગ-કુમાર લવણસમુદ્ર શિલાકે અગ્રભાગકો ધારણ કરતે હૈ । ઉક્ત લવણ

મહાકારે ૬૫ હજાર યોજનની છે, ૧૬ હજાર યોજન ઊંચી છે, તથા સમ-તલથી હજાર યોજનની અવગાહનાવાળી છે જલશિખા પર (સપાટી પર) દિવસે અને રાત્રે અર્ધયોજન કરતાં કંઈક ન્યૂન પ્રમાણમાં પાણીની સપાટીમાં વૃદ્ધિ અને હાનિ થતી રહે છે

-લવણ-સમુદ્રની આભ્યન્તર વેલાને (પાણીની વૃદ્ધિને) ૪૨ હજાર નાગકુમારો અને બાહ્યવેલાને ૭૨ હજાર નાગકુમારો-ધારણ કરે છે, અને ૬૦ હજાર નાગકુમારો લવણસમુદ્ર શિખાના (વેલાને) અગ્રભાગને ધારણ કરે

“जमुदीवस्त न” इत्यादि—स्पष्टम्, नवर-विदिशु-गेशान्यादिकोणेषु अनुवेल-परनागराजानां-वेलन्धराणां पश्चात्स्पापिनोऽनुनायकस्येन ये सन्ति तेऽनुवेल-पराः, ते च ते नागरानाम्, उद्याभूतानाम्, वेस-धरवक्तव्यतागायाः—

“दसजोयणसहस्ता, सवणसिद्धा चक्रवालभो रुद्रा ।

सोलससहस्तउद्या, सहस्तमेगं तु ओगाडा । १ ।

देमृणमदजोयण, लवणसिरोवरि दग तु फालदूगे ।

अर्रेग अर्रेगं, परिवदुद हायप बाधि । २ ।

अरिभउरियं चल, धरे ते लवणाद्विस्त नागार्ण ।

पायालोससहस्ता, दुवचरि सहस्त बाहिरिय । ३ ”

सहि नागसहस्ता, चरिंति अमोदगं रामहरस ।

वेसधरमावासा, लवणे य चउदिसि चउरो । ४ ।

हैं। ‘जमुदीवस्त न’ इत्यादि स्पष्ट है, अर्थात् जम्बूद्वीपकी पाछवेदि-
काके अन्तसे चारों विदिशाओंमें ४२-४२ हजार योजन लवणसमुद्रको
चलघन करके आगत स्थानपर चार अनुवेलन्धर नागराजोंके कर्कोटक^१
विष्णुप्रभ २, कैलास ३ और अरुणप्रभ ४ नामके चार आवास पर्वत हैं।
इनमें चार महर्द्धिकदेव यावत् २ पत्योपमकी स्थितिपाछे रहते हैं। उनके
नाम इस प्रकारसे हैं—कर्कोटक^१, कर्दमक २, कैलास ३, और अरुणप्रभ :
४—ये अनुवेलन्धर नागराज वेस-धरनागराजों के पीछे रहते हैं। इसलिये
अनुनायकके रूपमें होनेके कारण अनुवेलन्धर कहे गये हैं। वेस-धर
वक्तव्यता गाथाएं यों हैं—

“दस जोयणसहस्ता” आदि इन गाथाओंका अर्थ—लवणसमुद्रका
अप्रमाण मण्डलाकारसे दस हजार योजनका बिस्तारवाला है, १९ हजार

“जमुदीवस्त न” इत्यादि—जम्बूद्वीपकी पाछवेदिशि आ-
विदिशाओंमें ४२-४२ हजार योजनप्रमाण उत्तर-लवण समुद्रमें उत्तम
बासी के स्थान आवे हैं। चार अनुवेलन्धर नागराजोंमें (१) कर्कोटक, (२)
विष्णुप्रभ, (३) कैलास और (४) अरुणप्रभ नामका आर आवास पर्वतों के
तेमों के पश्चोपमकी स्थितिपाछा और महर्द्धिक आदि कर्कोटक कर्दमक,
कैलास और अरुणप्रभ नामका आर देवा निवास करे हैं अनुनायक कोषाने
कारणें ४ अनुवेलन्धर नागराजों वेस-धर नागराजोंनी पाछा रहते हैं

वेस धरनु प्रतिपादन, करती आवाजों आ प्रभावे हैं—‘दस जोयण
सहस्ता’ इत्यादि तेमों आ प्रभावे हैं—लवण समुद्रनी अप्रमाण

વિદ્યુત્પ્રભ-કૈલાસાઽરુણપ્રભનામાનથત્વારોઽનુવેલન્ધરાવાસાઃ સન્તિ ।૧। તેષુ
ક્રમેણ કર્કોટક-કર્દમ-કૈલાસાઽરુણપ્રભનામાનથત્વારો નાગરાજા નિવસન્તિ ।
એતે સર્વેઽપ્યાગ્રજા લવણસમુદ્રે દ્વિચત્વારિંતસદ્ભાણિ યોજનાનિ ગત્વા સન્તિ
।૨। તત્ર ચૈતે ચત્વારિ યોજનશતાનિ ત્રિંશતં ક્રોશાંશ્ચાભિવ્યાપ્ય ભૂમિમ્ ઉદ્ભતાઃ=
ભૂમૌ વ્યવસ્થિતાઃ । તથા-તે સર્વે પદ્મવિંશત્યધિકમસદગશતયોજનાનિ ઉન્નિષ્ઠતાઃ=
ઉચ્ચા બોધ્યાઃ । ૩ । ઇતિ ।

“ લવણે સમુદ્રે ણ ” इत्यदि—लवणे समुद्रे चत्वारश्चन्द्राः प्राभासन्त वा
प्रभासन्ते वा प्रभासिष्यन्ते । तथा-लवणसमुद्रे चत्वारः सूर्या अतपन् वा तपन्ति
वा तपस्यन्ति वा, चन्द्राणां शीतलकिरणत्वेन सौम्यदीप्तिरुत्पाद्य वस्तुप्रभासनं प्रोक्तं
सूर्याणां तु प्रचण्डकिरणत्वात्सौम्यदीप्तिरन्यमिति तेषां न तदुक्तम्,

चन्द्राणां चतु-च तत्परिवारस्यापि नक्षत्रादेश्चतुष्टमेवेत्याह-चत्वारि कत्ति-
याओ ” इत्यादि-चतस्रः कृत्तिकाः, अत्र चतुष्टयं च नक्षत्रापेक्षया नतु तारकापे-

આદિવિદિશાઓમેં ક્રમસે કર્કોટક, વિદ્યુત્પ્રભ, કૈલાસ, અરુણપ્રભ એ અનુ-
વેલન્ધર આવાસ હેં, इनमें कर्कोटक १, कर्दम २, कैलास ३, अरुणप्रभ ४
नाला चार नागराज रहतेहैं । ये आवास पर्वत लवण समुद्रमें ४२ हजार
योजन जा करके हैं । ये ४०० योजन और ३० कोशानक भूमिको घेर
कर स्थित हैं । १७२१ योजन ऊंचे हैं । लवण समुद्रमें चार चन्द्रमा हैं,
वे लवण समुद्रमें प्रकाशित हुवे हैं होते है और होंगे ।

तथा-चार सूर्य यहां तपे है अत्र भी तपतेहैं और आगे आगे तपेगे ।
चन्द्र शीतल, और सूर्यप्रखर किरणवाले होते हैं । इसलिये यहां वे चन्द्र
वस्तुका प्रकाशन करते हैं, ऐसा कहा है तथा-सूर्य प्रचण्ड किरणके
कारण तपते हैं ऐसा कहा गया है । चन्द्र चतुष्टयके परिवार नक्षत्रादि
भी यहां चार रूपमें हैं, इसी बातको सूत्रकारने “ चत्वारि कत्तियाओ ”

લવણ સમુદ્રમાં ઇશાન આદિ વિદિશાઓમાં અનુક્રમે કર્કોટક, વિદ્યુત્પ્રભ,
કૈલાસ અને અરુણપ્રભ નામના નાગરાજ રહે છે. તે આવાસ પર્વતો લવણ
સમુદ્રમાં ૪૨ હજાર યોજન દૂર જવાથી આવે છે. તેઓ ૪૦૦ યોજન અને
૩૦ કોસ જેટલી ભૂમિને ઘેરીને બિભા છે તેમની બિંબાઈ ૧૭૨૧ યોજન છે.

લવણસમુદ્રમાં ચાર ચન્દ્રમા છે તેઓ ભૂતકાળમાં તેને પ્રકાશ દેતા
હતા, વર્તમાનમાં પણ દે છે અને ભવિષ્યમાં પણ દેશે. ત્યાં ચાર સૂર્ય તપતાં
હતાં, તપે છે અને તપશે ચન્દ્ર શીતલ કિરણોવાળો અને સૂર્ય ઉષ્ણ કિરણો-
વાળો હોય છે. તેથી અહીં એવું કહ્યું છે કે ચન્દ્રો પ્રકાશ આપે છે અને સૂર્યો
પ્રચંડ કિરણોને કારણે તાપ આપે છે. ચાર ચન્દ્રના પરિવાર ૩૫ નક્ષત્રાદિ

છવળસમુદ્રે વતુર્દિશિ ચત્વારો વેલન્યરાડ્ડશાસાઃ સન્તિ । ૪ । તે હિ પૂષાવનુક
મણાઃ=પૂર્વાદિદિગનુક્રમેષ ગોસ્તૂપ-દક્ષમાસ - શસ્ત્ર-દક્ષીમનામાનો વોધ્યાઃ ।
તેપુક્રમેષ ગોસ્તૂપ શિવક ઘટ્ટ મનઃશિલનામાનયન્ધારો વેલન્યરરાજા વસન્તીતિ ॥૫॥

“ હંયુદીવસ્ય ધં ” હયાદિ—સ્વપ્ત્મ । નથર વિદિષ્ટુ=વેશાન્યાદિકોણેપુ
અનુવેલન્યરનાગરાજાના=વેશ-પરાણાં પથારસ્થાયિનોડનુનાયકત્વેન યે સઠિ તેડ
અનુવેલન્યરા, તે ચ તે નાગરાજાશ્ચ તેષાં સયાશ્રુતાનામિતિ ॥

અનુવેલન્યરનાગરાજાશ્ચક્રવ્યતાગાયાસ્તુ—

“ અનુવેલન્યરવાસા, છવળે વિદિષાસુ સંઠિયા વડોરો ।

કકોટે ચિન્નુપ્પમે, કેલાસેડ્ડપ્પમ વેષ । ૧ ।

કકોટ ય કદમપ, કેલાસડ્ડપ્પમે ય રાયાળો ।

વાયાલીસસદસ્સે, ગદુ ઉરદિમિ સવ્વે ચિ । ૨ ।

ચવારિ જોયણસપ, તીસે કોસે ચ ટગયા ધૂમિ ।

સવરસવોયણસપ, હગધીસે કસિયા સવ્વ । ૩ । ”

છાયા—“ અનુવેલન્યરવાસા છવળે વિદિષ્ટુ સસિયામત્વારઃ ।

કકોટો ચિયુત્તમઃ વેશાસોડ્ડપ્પમમથેષ । ૧ ।

કકોટકઃ કદમકઃ કેલાસોડ્ડપ્પમમથ રમાનઃ ।

દિવત્તારિશ્વત્તુ સદ્દસાપિ ગત્વા ઉરપો સર્વેડ્ડપિ । ૨ ।

ચત્વારિ યોમનશ્વતાનિ ત્રિશ્વત્ત કોલાંશ્ચ ઉરત્તાધૂમિમ્ ।

સપ્તદશ યોમનશ્વતાનિ વક્રવિશ્વતિશ્ચિહ્નિતાઃ સર્વે । ૩ । ” इति

અવમર્થઃ—લવળસમુદ્રે વિદિષ્ટુ=વેશાન્યાદિગુ ક્રમગ સસિયાઃ કકોટક-

સમુદ્રમે ચારો દિશાઃખોમે પૂર્વાદિ ક્રમસે ચાર વેલન્યરાવાસ ગોસ્તૂપ ૧,
દક્ષમાસ ૨ શસ્ત્ર ૩, દક્ષીમ ૪ હિ, જિનમે-ગોસ્તૂપ, શિવક, શસ્ત્ર
મન શિલ ચાર નામકે વેલન્યરરાજા રહસે હિ-૫ ।

અનુવેલન્યર નાગરાજા ચક્રવ્યતા વિપયિણી ગાધાર્પ—“ અનુવેલ
ન્યરવાસા ” હયાદિ જન ગાધાઓકે અર્થ—છવળ સમુદ્રમે હિશાન

છે આ છવળ સમુદ્રની ચારે દિશાઓમાં પૂર્વાદિ ક્રમથી ચાર વેલ ન્યરવાસ
આવેલા છે તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) ગોસ્તૂપ (૨) કકલાષ, (૩)
શંખ અને (૪) કક્ષીમ તેમાં અનુક્રમે ગોસ્તૂપ શિવક શંખ અને મનાસિલ
નામના વેલન્યરરાજા નિવાસ કરે છે અનુવેલ ન્યર નાગરાજાની વચ્ચાશ્વતાનું
નિરૂપણ કરતી ગાધાએ—“ અનુવેલન્યરવાસા ” ઇત્યાદિ—આ ગાધાઓને
ગાધાર્પ નીચે પ્રમાણે છે—

વિદ્યુત્પ્રભ-કૈલાસ-અરુણપ્રભનામાનશત્વારોઽનુવેલન્ધરાવાસાઃ સન્તિ ।૧। તેષુ ક્રમેણ કર્કોટક-કર્દમ-કૈલાસ-અરુણપ્રભનામાનશત્વારો નાગરાજા નિવસન્તિ । એતે સર્વેઽપ્યાવાસા લવણસમુદ્રે દ્વિચત્વારિંશત્સદ્સ્રાણિ યોજનાનિ ગત્વા સન્તિ ।૨। તત્ર ચૈતે ચત્વારિ યોજનગતાનિ ત્રિંગતં ક્રોશાંશ્ચાભિવ્યાપ્ય ભૂમિમ્ ઉદ્ગતાઃ= ભૂમૌ વ્યવસ્થિતાઃ । તથા-તે સર્વે એકવિંશત્યધિકમસદ્ગશતયોજનાનિ ઉન્નિષ્ટાઃ= ઉચ્ચા યોધ્યાઃ । ૩ । ઇતિ ।

“લવણે સમુદ્રે ણ” ઇત્યદિ—લવણે સમુદ્રે ચત્વારચન્દ્રાઃ પ્રભાસન્ત વા પ્રભાસન્તે વા પ્રભાસિપ્યન્તે । તથા-લવણસમુદ્રે ચત્વારઃ સૂર્યા અતપન્ વા તપન્તિ વા તપ્સ્યન્તિ વા, ચન્દ્રાણાં શીતલકિરણત્વેન સૌમ્યદીપ્તિકત્વાદ્ વસ્તુપ્રભાસનં પોક્તં સૂર્યાણાં તુ પ્રચण्डકિરણત્વાન્નસૌમ્યદીપ્તિકત્વમિતિ તેષા ન તદુક્તમ્,

ચન્દ્રાણાં ચતુર્વ તત્પરિવારસ્થાપિ નક્ષત્રાદેશ્ચતુષ્ટમેવેત્યાહ-ચત્તારિ કત્તિ-યાઓ” ઇત્યાદિ-ચતસ્રઃ કૃત્તિકાઃ, અત્ર ચતુષ્ઠં ચ નક્ષત્રાપેક્ષયા નતુ તારકાપે-

આદિવિદિશાઓમેં ક્રમસે કર્કોટક, વિદ્યુત્પ્રભ, કૈલાસ, અરુણપ્રભ એ અનુ-વેલન્ધર આવાસ હેં, इनमें કર્કોટક ૧, કર્દમ ૨, કૈલાસ ૩, અરુણપ્રભ ૪ નાસા ચારનાગરાજ રહેતેહેં । ये आवास पर्वत लवण समुद्रमें ४२ हजार योजन जा करके हैं । ये ४०० योजन और ३० कोशतक भूमिको घेर कर स्थित हैं । १७२१ योजन ऊंचे हैं । लवण समुद्रमें चार चन्द्रमा हैं, वे लवण समुद्रमें प्रकाशित हुवे हैं होते हैं और होंगे ।

તથા-ચાર સૂર્ય વહાં તપે હે અત્ર મી તપતેહેં ઓર આગે આગે તપેગે । ચન્દ્ર શીતલ, ઓર સૂર્યમંથર કિરણવાળે હોતે હેં । इसलिये यहां वे चन्द्र वस्तुका प्रकाशन करते हैं, ऐसा कहा है तथा-सूर्य प्रचण्ड किरणके कारण तपते हैं ऐसा कहा गया है । चन्द्र चतुष्टयके परिवार नक्षत्रादि भी यहां चार रूपमें हैं, इसी बातको सूत्रकारने “चत्तारि कत्तियाओ”

લવણ સમુદ્રમા ઇશાન આદિ વિદિશાઓમાં અનુક્રમે કર્કોટક, વિદ્યુત્પ્રભ, કૈલાસ અને અરુણપ્રભ નામના નાગરાજ રહે છે તે આવાસ પર્વતો લવણ સમુદ્રમા ૪૨ હજાર યોજન દૂર જવાથી આવે છે. તેઓ ૪૦૦ યોજન અને ૩૦ કોસ જેટલી ભૂમિને ઘેરીને ઊભા છે તેમની ઊંચાઈ ૧૭૨૧ યોજન છે.

લવણસમુદ્રમાં ચાર ચન્દ્રમા છે તેઓ ભૂતકાળમાં તેને પ્રકાશ દેતા હતા, વર્તમાનમાં પણ દે છે અને લવિષ્યમા પણ દેશે ત્યાં ચાર સૂર્ય તપતાં હતાં, તપે છે અને તપશે ચન્દ્ર શીતલ કિરણોવાળો અને સૂર્ય ઉષ્ણ કિરણોવાળો હોય છે. તેથી અહીં એવું કહ્યું છે કે ચન્દ્રો પ્રકાશ આપે છે અને સૂર્યો પ્રચંડ કિરણોને કારણે તાપ આપે છે. ચાર ચન્દ્રના પરિવાર ૩૫ નક્ષત્રાદિ

સપેતિ, एवं रोहिण्यादि मरण्यतानामपि नक्षत्रापेक्षयैव चतुष्ट विज्ञेयम्, 'यावत्'—पदेन रोहिण्यादि मरण्यतानि अष्टाविंशति नक्षत्राणि प्राप्ताणि ।

“ चत्वारि अग्री ” इत्यादि—કૃત્તિકાદિ મરણ્યન્તાનામષ્ટાવિંશતિનક્ષત્રાણાં દેવતાઃ ક્રમેણ અગ્નિમારમ્ય યમપર્યન્તા અષ્ટાવિંશતિસંખ્યકા યોધ્યાઃ । તાસુ પ્રત્યેક દેવતા ચતુ સ્થાનકાનુરાધેન ચતુર્વિધા યોધ્યા ।

सम्प्रति सत्रणसमुद्राक्षास्त्यक्तानां प्रज्ञाणां मध्ये एकैकस्या—चतुष्टयमत्रापि सुमाह—“ चत्वारि अगारा ” इत्यादि । एष अद्भारः प्रथमो ग्रहः, माषकेतुस्तु अष्टाशीतिसप्तमः । नक्षत्र दैवताग्रज्ञाणां नामानि द्वितीयस्थानकस्य पतुस्त्रिंशत्तमे सूत्रेऽवलोकीयानि ।

इत्यादि सूत्र द्वारा प्रगट किया है—यहां चार २ कृत्तिकाए हैं, यहां जो चतुष्टयता है वह नक्षत्रोंकी अपेक्षासे है, नारकोंकी अपेक्षासे नहीं । इसी तरह—रोहिणीसे भरणीतकमें नक्षत्रोंकी अपेक्षासेही चारचार जानना चाहिये ।

यहां यावत् पदसे रोहिणीसे लेकर भरणी तकके २८ नक्षत्र ग्रहण कहे गये हैं । “ चत्वारि अग्री ” इत्यादि—

कृत्तिकासे लेकर भरणी तकके जो २८ नक्षत्र हैं, उनके देवता क्रमशः अग्निसे लेकर यम तक २८ हैं । इनमें प्रत्येक देवता चतु-स्थानकके अनुरोधसे चार प्रकारके हैं ऐसा समझना चाहिये ।

अब सूत्रकार लघन समुद्रके अयत्ताधामें स्थित ग्रहोंके मध्यमें एक एक ग्रहमें चारचार प्रकार दिग्वानेके लिये “चत्वारिअगारा” इत्यादि सूत्र कहते हैं । इनमें अद्भार प्रथम ग्रहहैं और माषकेतु ८८ वा ग्रहहैं । नक्षत्र, देवता,

પણ ત્યાં આર ચાર ૩૫ છે એ જ વાત સૂત્રકારે “ ચત્તારિ કૃત્તિકાગ્રી ” ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કરી છે ત્યાં જે ચતુષ્ટયતા છે તે નક્ષત્રોની અપેક્ષાએ છે, નારકોની અપેક્ષાએ નથી. એમકે ૨૪૧ આર કૃત્તિકાગ્રી છે, એ જ પ્રમાણે શકિલીથી લઇને ભરણી પર્વન્તનાં નક્ષત્રોમાં પણ ચતુષ્ટયતા સમજવી. અહીં યાવત્ (યાવન્ત) પદથી શકિલીથી લઇને ભરણી સુધીના ૨૮ નક્ષત્રો પ્રકટ કરવામાં આવ્યાં છે

“ ચત્તારિ અગ્રી ” ઇત્યાદિ—કૃત્તિકાથી શરૂ કરીને ભરણી સુધીના ૨૮ નક્ષત્રો છે અનુક્રમે અગ્નિથી લઇને યમ પર્વન્તના તેમના ૨૮ દેવતાઓ છે તેમના પ્રત્યેકનો દેવતા ચતુ સ્થાનકના અનુરોધથી ચાર પ્રકારનો છે, એમ સમજવું હવે સૂત્રકાર લઘવુ સમુદ્રના અવકાશમાં જે જે ઘડો પડેલા છે, તે પ્રત્યેક ઘડમાં ચતુષ્ટયતાનુ પ્રતિષ્ઠાવન કરવા નિમિત્તે “ ચત્તારિ અગારા ” ઇત્યાદિ સૂત્ર કહે છે—અ.મ.૨૪ (મ.ગ.૧) પદોએ પ્રકટ છે અને યાવતેતુ ૮૮

“લવણસ્ત ણં સમુદ્રસ્ત” ઇત્યાદિ—લવણસ્ય સમુદ્રસ્ય ચત્વારિ દ્વારાણિ પ્રજ્ઞતાનિ, તાનિ યથા—વિજયાદીનિ ૪, ઇત્યાદિ સર્વે જમ્બૂદ્વીપદ્વારાદિવદવસેય-મિતિ । સૂ. ૬૫ ॥

દ્વીપપ્રકરણાદ્ ધાતકીલ્પડ્વીપસ્ય વલયપ્રમાણાદિ નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલમ્--ધાયદ્વસંદે દીવે ચત્તારિ જોયણસયસહસ્તાઈ ચક્રવા-લવિક્ષ્મભેણં પળણત્તે જંબુદ્વીવસ્સ ણં દીવસ્સ વાહિરિયા ચત્તારિ ભરહાઈ, ચત્તારિ ઇરવથાઈ, એવં જહા--સદુદ્દેસણ તહેવ નિરવસેસં ભાણિયવં જાવ ચત્તારિ મંદરા ચત્તારિ મંદરચૂલિયાઓ । સૂ. ૬૬ ॥

છાયા—ધાતકીલ્પડો દ્વીપશ્ચત્વારિ યોજનશતસહસ્રાણિ ચક્રવાલવિક્ષમ્ભેણ પ્રજ્ઞન્તઃ, જમ્બુદ્વીપસ્ય ચલુ દ્વીપસ્ય વહિઃ ચત્વારિ ભરતાનિ, ચત્વારિ ઇરવતાનિ, એવં યથા શબ્દોદ્દેશકે તથૈવ નિરવશેષં મણિતવ્યં યાવત્ ચત્વારો મન્દરાઃ, ચત્ત્વો મન્દરચૂલિકાઃ । સૂ. ૬૬ ॥

ટીકા—“ધાયદ્વસંદ” ઇત્યાદિ—ચક્રવાલવિક્ષમ્ભેણ-ચક્રવાલઃ=મણ્ડલં-

પ્રહ્લવકે નામ દ્વિતીય સ્થાનકકે ૩૪ વે સૂત્રમેં કહે ગયેહૈં, અતઃ-વહાંસે દેખ લેનાં ચાહિયે । “લવણસ્ત ણં સમુદ્રસ્ત” ઇત્યાદિ લવણ સમુદ્રકે દ્વાર ચાર કહે ગયે હૈં જૈસે-વિજય ૨, વૈજયન્ત ૨, જયન્ત ૩ ઓર અપરજિત ૪ । દ્વાર સમ્બન્ધી ઓર સર્વ કથન જમ્બૂદ્વીપ દ્વારોંની તરહ જાનના । સૂ. ૬૬

દ્વીપપ્રકરણકો લેકર અર્થ સૂત્રકાર ધાતકીલ્પડ દ્વીપકે વલય પ્રમાણ આદિ વક્તવ્યતાકા નિરૂપણ કરનેકે લિયે સૂત્ર કહતે હૈં ।

“ધાયદ્વસંદે દીવે ચત્તારિ” ઇત્યાદિ—

ધાતકીલ્પડ દ્વીપ ચક્રવાલ વિક્ષમ્ભકી અપેક્ષા ચાર લાખ યોજ-

ના ગ્રહ છે નક્ષત્ર, દેવતા અને ગ્રહોનાં નામ દ્વિતીય સ્થાનકના ૩૪ માં સૂત્રમાં આપ્યાં છે, તે ત્યાંથી વાંચી લેવા.

“લવણસ્ત ણં સમુદ્રસ્ત” ઇત્યાદિ—

લવણ સમુદ્રના ચાર દ્વાર છે—(૧) વિજય, (૨) વૈજયન્ત, (૩) જયન્ત અને (૪) અપરજિત દ્વાર વિષેનું બાકીનું સમસ્ત કથન જમ્બૂદ્વીપના દ્વારોના કથન અનુસાર સમજવું. ॥ સૂ. ૬૫ ॥

દ્વીપ પ્રકરણના સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર ધાતકીલ્પડ દ્વીપના વલયપ્રમાણ આદિનું નિરૂપણ કરે છે. “ધાયદ્વસંદે દીવે ચત્તારિ” ઇત્યાદિ—

पलय इत्यर्थः, तस्य विष्कम्भः—विस्तारश्चकवाच्चविष्कम्भस्तेन चत्वारि योजनानि
वसरत्नाभि—षड्गुलस्योन्नतपरिमितो घातकीखण्डनामा द्वीपः मङ्गलः ।

“ जम्बूद्वीपस्य ऋ ” इत्यादि—जम्बूद्वीपस्य खलु द्वीपस्य परिः—पट्टिः प्रवेशे
स्थितयो—घातकीखण्ड—पुष्करार्द्धयोर्द्वीपयोश्चत्वारि भरतानि पेरपतानि च
सन्तीति बोध्यम् । “ एष जम्बू ”—इत्यादि—एषम्—अनेन प्रकारेण, यथा—यथा
रीत्या, अन्तर्देशके—अन्तर्द्वीपसंज्ञितः—भरतैरवतादिष्वन्तर्द्वीपसंज्ञितः उद्देशकः अन्तर्
देशकः—द्वितीयस्थानकस्य तृतीयोद्देशकः, तत्र भरतैरवतादि—मन्दरचूषिकान्तानां
द्विस्थानकत्वेन वर्णनं कृतं, तथैव—भरतादिमन्दरचूषिकान्तं निरवक्षेपं—सर्वं चतुः
स्थानकत्वेन मभितव्यम् । तत् किमिदं चिन्तयित्वाह सूत्रकारः—“ त्रार
चत्वारि मदरा ” इत्यादि—“ भरतारो मन्दरावतसो मन्दरचूषिका ” इतिप
न्तमिस्थयः । सू० ६६ ।

नका विस्तारवाला कहा गया है । यह जम्बूद्वीपके बाहर प्रदेशमें स्थित
है, अर्थात्—सबसे प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है, इसको चारों ओरसे लवण
समुद्र घेछित कर रक्खा है । जम्बूद्वीपसे दुगुना विस्तार लवण समुद्रका
और लवणसमुद्रसे दुगुना घातकीखण्ड द्वीप है, इसके चारों ओर
समुद्र है । इसके बाद पुष्करपरद्वीप है । जम्बूद्वीपमें एक भरतक्षेत्र,
एक पेरवत क्षेत्र आदि क्षेत्र हैं । घातकीखण्डमें दो—भरत दो पेरवत
आदि क्षेत्र हैं, इसी प्रकार पुष्करार्धमें दो भरत आदि क्षेत्र हैं । इस
तरह वैसा फयन भरत, पेरवत आदिका प्रतीय स्थानकके तृतीय
उद्देशमें मन्दरचूषिका तक है, वैसाही चतुःस्थान रूपसे यहाँ कहना

घातकीखण्ड द्वीपको चकवाच विष्कम्भ (परिध—परिमित) चार भाग
धोचलनो कह्यो है ते जम्बूद्वीपको लहारा प्रदेशमा आवेद्यो है अन्तर्देश
श्रीमा पडेद्यो जम्बूद्वीप है तेनी चारे तरफ वीटगाछने रडेद्यो लवण समुद्र
है जम्बूद्वीप भरता लवण समुद्रको विस्तार लभ्यो है अने लवणसमुद्र
भरता घातकीखण्डद्वीपको विस्तार लभ्यो है तेनी चारे जानु पक्ष समुद्र
आवेद्यो है त्वाराह पुष्करपरद्वीप आवे है जम्बूद्वीपमा भरत पेरवत आदि
क्षेत्र को को है, पक्ष घातकी खण्डमा भरत, पेरवत आदि क्षेत्रो लभ्यो है
को ज प्रभाक्षे पुष्करार्धमा पक्ष भरत आदि क्षेत्रो लभ्यो है श्रीम स्थानकना
त्रीन उद्देशमा भरत, पेरवत आदि क्षेत्रोनु मन्दर चूषिका पश्चात्तु वेत्तु
अन भरतामा आभ्यु है, कोनु ज अथन चतु स्थान द्वीप अर्द्धा पक्ष चतु

पूर्व मनुष्यक्षेत्रवस्तूनां चतुःस्थानकत्वमुक्तं, साम्प्रतं क्षेत्रसाधर्म्यान्नन्दीश्वर-
द्वीपवस्तूनि चतुःस्थानकत्वेन निरूपयितुमाह—

॥ अथ नन्दीश्वरद्वीपविचारः ॥

मूलम्-पां दीसरवरस्त पां दीवस्त चक्रवालविक्रंभस्त बहु-
मज्जदेसभागे चउद्दिशिं चत्तारि अंजणगपवया पणत्ता, ते जहा-
पुरत्थिमिल्ले अंजणगपवए, दाहिणिल्ले अंजणगपवए, पच्छि-
मिल्ले अंजणगपवए उत्तरिल्ले अंजणगपवए ४। ते पां
अंजणगपवया चउगासाइ चउरासोइ जोयणसहस्साइं
उड्डु उच्चत्तेणं, एणं एणं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दस
दस जोयणसहस्साइं विक्रंभेणं । तयणंतरं च पां सायाए २
परिहाएमाणा ३ उवरिभेणं एणं जोयणसहस्सं विक्रंभेणं । मूले
इक्कतीसं २ जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे छच्च तेवीसे जोयणसए
परिक्खेवेणं उपरिं तिन्नि २ जोयणसहस्साइं एणं च छावट्टं एणं
च छावट्टं जोयणसयं परिक्खेवेणं । मूलेवित्थिण्णा मज्जे संखित्ता,
उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्वंजणमया अच्छा सण्हा
सण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निप्पंका निक्कंङ्कडच्छाया सप्पभा सम-
रीइया सउज्जोया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ।
तेसि पां अंजणगपवयाणं उवरिं बहुससरमणिज्जभूमिभागा
पणत्ता । तेसि पां बहुससरमणिज्जा भूमिभागाणं बहुमज्जदे-
सभागे चत्तारि सिद्धाययणा पणत्ता, ते पां सिद्धाययणा एणं
चाहिये । यही बात—“ जाव चत्तारि मंदरा ” इत्यादि सूत्रपाठ द्वारा
व्यक्त है । इसका टीकार्थ स्पष्ट है ॥ सू० ६६ ॥

नोटिंगे. ओ ४ वात “ जाव चत्तारि मंदरा इत्यादि सूत्रपाठ द्वारा व्यक्त थर्ड
छे. आ सूत्र सुगम होवाथी विशेषार्थ आप्थो नथी. सू ६६ ॥

जोयणसय आयामेणं पणत्ता, पण्णासं जोयणाइ विक्खमेणं,
 षोडशरि जोयणाइ उइ उच्चत्तेणं । तेसिं सिद्धाययणाणं चउ
 हिंसिं चत्तारि दारा पणत्ता, न जहा देवदारे १, असुरदारे २,
 णागदारे ३, सुवण्णदारे ४, तेसु णं दारेसु चउत्तिहा देवा परि
 वसति, त जहा-देवा १ असुरा २ नागा ३ सुवण्णा ४ । तेसिं णं
 दाराणं पुरओ चत्तारि मुहमढवा पणत्ता । तेसिं णं मुहमढवाणं
 पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमढवा पणत्ता । तेसिं णं पेच्छाघरमढ
 वाण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाढगा पणत्ता ।
 तेसिं वइरामयाण अक्खाढगाण बहुमज्झदेसभागे चत्तारिमणि
 पेढियाओ पणत्ताओ । तासिं ण मणिपेढियाण उवरिं चत्तारि
 सीहासणा पणत्ता । तेसिं ण सीहासणाण उवरिं चत्तारि विजय
 दूसा पणत्ता । तेसिं विजयदूसाण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि
 वइरामया अकुसा पणत्ता । तेसु ण वइरामपसु अकुसेसु चत्तारि
 कुभिका मुत्तादामा पणत्ताओ । ते ण कुभिका मुत्तादामा पत्तेय
 २ अग्नेहिं तदद्धवच्चपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुभिकेहिं मुत्ता
 दामेहिं सव्वओ समता सपरिक्खत्ता । तेसिं ण पेच्छाघरमढ-
 वाण पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पणत्ताओ, तासिं ण मणि
 पेढियाण उवरिं चत्तारि २ चेइयथूमा पणत्ता । तेसिं ण चेइय-
 थूमाण पत्तेय २ चउहिंसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पणत्ताओ ।
 तासिं ण मणिपेढियाण उवरिं चत्तारि जिणपढिमाओ सव्व
 रयणामईओ सपलियकणिसत्ताओ थूमाभिमुहाओ चिट्ठति त
 जहा-रिसभा १, षट्ठमाणा २, चदाणणा ३, पारिसेणा ४,

तेसि णं चेइयथूक्भाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढिआओ पणत्ताओ ।
 तासि णं मणिपेढिआणं उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा पणत्ता । तेसि
 णं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढिआओ पणत्ताओ ।
 तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया पणत्ता ।
 तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरओ चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ
 पणत्ताओ । तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं २ चडादिसिं चत्तारि
 वणसंडा पणत्ता, तं जहा--पुरत्थिसेणं दाहिणेणं पच्चत्थिसेणं
 उत्तरेणं--

“ पुव्वेणं असोगवणं दाहिणओ होइ सत्तवणवणं ।

अवरेणं चंपगवणं चूयवणं उत्तरे पासे । १ ।। ६७ ।।

छाया-नन्दीश्वरवरस्य खलु द्वीपस्य चक्रवालविष्कम्भस्य बहुमध्यदेशभागे चतुर्दिशि
 चत्वारोऽञ्जनकपर्वताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पौरस्यः अञ्जनकर्वतः दाक्षिणात्यः अञ्जनकप-
 र्वतः २, पाश्चात्यः अञ्जनकपर्वतः ३, औत्तराहः अञ्जनकपर्वतः ४ । ते खलु अञ्जनकप-
 र्वताः चतुरशीति चतुरशीति योजनसहस्राणि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन, एकमेकं योजनसह-
 स्रमुद्वेधेन, मूले दश दश योजनसहस्राणि विष्कम्भेण । तदनन्तरं च खलु मात्रया
 २ परिहीयमाणा २ उपरि एकमेकं योजनसहस्रं विष्कम्भेण मूले एकत्रिंशदेकत्रिंशद्
 योजनसहस्राणि पट्च त्रयोविंशति पट्च त्रयोविंशति योजनशतानि परिक्षेपेण, उपरि
 त्रीणि २ योजनसहस्राणि एकच पट्षष्टिम् एकच पट्षष्टिम् योजनशतानि परिक्षे-
 पेण । मूले त्रिंतीर्णा मध्ये संक्षिप्ताः, उपरि तनुकाः गोपुच्छसंस्थानसंस्थिताः
 सर्वाञ्जनमयाः अच्छाः श्लक्ष्णाः श्लक्ष्णाः घृष्टाः घृष्टाः नीरजसः निष्पङ्काः
 निष्कट्टच्छाया सप्रभाः समरीचिकाः सोद्द्योताः प्रासादीयाः दर्शनीया अभि-
 रूपाः प्रतिरूपाः । तेषां खलु अञ्जनकपर्वतानामुपरि बहुसमरमणीयभूमिभागाः
 प्रज्ञप्ताः, तेषां खलु बहुसमरमणीयभूमिभागानां बहुमध्यदेशभागे चत्वारि सिद्धा-
 यतनानि प्रज्ञप्तानि, तानि खलु सिद्धायतनानि एकं योजनशतम् आयामेन प्रज्ञप्तानि,

पञ्चाशत् योजनानि विष्णुमेण, द्वासप्ततिं योजनानि ऊर्ध्वमुच्चतेन, तेषां सिद्धा-
 यतनानां चतुर्दिशि चत्वारि द्वाराणि प्रकृतानि, तथ्या-देशद्वारम् १, असुरद्वार २
 नागद्वारं ३, सुवर्णद्वारम् ४। तेषु खलु द्वारेषु चतुर्विधा देवाः परिषसन्ति,
 तथ्या-देशाः १, असुराः २, नागाः ३, सुवर्णा ४। तेषां खलु द्वाराणां पुरतः
 चत्वारो मुख्यमण्डपाः प्रकृताः । तेषां खलु मुख्यमण्डपानां पुरतः चत्वारः प्रेक्षागृ-
 हमण्डपाः प्रकृताः । तेषां खलु प्रेक्षागृहमण्डपानां बहुमध्यदेशभागे चत्वारो
 वज्रमया भस्मघाटकाः प्रकृताः । तेषां खलु वज्रमयानामस्रघाटकानां बहुमध्यदे-
 शभागे चतस्रो मणिपीठिकाः प्रकृताः । तासां खलु मणिपीठिकानामुपरि चत्वारि
 सिंहासनानि प्रकृतानि । तेषां खलु सिंहासनानामुपरि चत्वारि विजयदृष्याणि
 प्रकृतानि । तेषां खलु विजयदृष्याणां बहुमध्यदेशभागे चत्वारो वज्रमया
 अङ्कुराः प्रकृताः । तेषां खलु वज्रमयेषु अङ्कुरेषु चत्वारि कुम्भिकानि मुक्ता-
 दामानि प्रकृतानि, तानि खलु कुम्भिकानि मुक्तादामानि प्रत्येकं प्रत्येकमन्यैस्त्वद्-
 द्वाँष्ट्वप्रमाणमात्रैश्चतुर्भिर्दक्षकुम्भिकैर्मुक्तादामभिः सर्वतः समन्तात् सपरिसिप्तानि ।
 तेषां खलु प्रेक्षागृहमण्डपानां पुरतश्चतस्रो मणिपीठिकाः प्रकृताः । तेषां खलु मणिपी-
 ठिकानामुपरि चत्वारश्चत्वारश्चेत्यष्टौ प्रकृताः । तेषां खलु चैत्यस्तूपानां प्रत्येकं
 २ चतुर्दिशि चतस्रो मणिपीठिकाः प्रकृताः । तासां खलु मणिपीठिकानामुपरि
 चतस्रो जिनप्रतिमाः सर्वैरत्नमय्यः संपत्यङ्गनिपण्णाः स्तूपाभिस्तुल्यस्थितिष्ठन्ति,
 तथ्या श्यामा १, वर्दमाना २ चित्रानना ३, वारिसेना ४, तेषां खलु चैत्यस्तू-
 पानां पुरतश्चतस्रो मणिपीठिकाः प्रकृताः । तासां खलु मणिपीठिकानामुपरि
 चत्वारश्चेत्यष्टौ प्रकृताः । तेषां खलु चैत्यस्तूपाणां पुरतश्चतस्रो मणिपीठिकाः
 प्रकृताः । तासां खलु मणिपीठिकानामुपरि चत्वारो महन्द्रश्चमाः प्रकृताः । तेषां
 खलु महन्द्रश्चमानां पुरतश्चतस्रो नन्दा पुष्करिण्याः प्रकृताः । तासां खलु पुष्क-
 रिणीनां प्रत्येकं चतुर्दिशि चत्वारो वनखण्डाः प्रकृताः, तथ्या-पौररत्ने १, दासि-
 णात्प २, पाश्चात्य ३ उधर—

“ पूर्णै-अशोरुनं, दशिणतो-भवति सप्तर्षिजनम् ।

अपरेण चम्पकवनं, चूतवनमुधरे पार्श्वे ॥ १ ॥ इति ॥ सू० ६७ ॥

इमं प्रकारं मनुष्य क्षेत्रगतं यस्तुओंमें अतुःस्थामकता कहकर अब
 सूत्रकार क्षेत्र साधर्म्यको लेकर आठवें नन्दीद्वर कीपके यस्तुओंकी

आ सीने मनुष्य क्षेत्रगत यस्तुओंकी अतुःस्थानकतानुं कथन करीने दवे
 सूत्रकार क्षेत्रसाधर्म्यकी अपेक्षासे आठवां नन्दीद्वर कीपकी यस्तुओंकी अतुः

ટીકા—“ જંદીસરવરસ્સ ણં ” ઇત્યાદિ—

દ્વીપસમુદ્રાણાં ક્રમસ્ત્વેવમુક્તઃ, તથાદિ—

“ જંબુદ્વીવે લવણો, ધાયડ કાલોયપુસ્કરે વરુણે ।

સ્વીર-વય-સ્વૌઅ-નન્દી-અરુણવરે કુડલે રુચ્યે ॥૧॥ ઇતિ ।

છાયા—જમ્બુદ્વીપો લવણો ધાતકી કાલોદઃ પુષ્કરઃ વરુણઃ ।

ક્ષીર-ઘૃત-ક્ષોદ-નન્દી-અરુણવરઃ કુણ્ડલો રુચકઃ ॥૧॥ ” ઇતિ,

ચતુઃસ્થાનકતાકા નિરૂપણ કરતે હૈં ।

“ જંદીસરવરસ્સણં દીવસ્સ ચક્કવાલવિકલ્લંભસ્સ ” ઇત્યાદિ—

ચક્કવાલ વિષ્કમ્ભવાલે નન્દીશ્વર દ્વીપકે બીચ ચાર દિશાઓમેં ચાર અજ્ઞનગિરિ પર્વત હૈં, જૈસે—પૌરસ્થ અજ્ઞનક પર્વત ૧, દાક્ષિણાસ્થ અજ્ઞનક પર્વત ૨, પાશ્ચાત્ય અજ્ઞનક પર્વત ૩, ઔર ઔદીચ્ય અજ્ઞનક પર્વત ૪ । યે ચારોં ૮૪-૮૪ હજાર ઝંચાઈવાલે હૈં । ઉનકા ઉદ્દેધ એક હજાર યોજન હૈ, સૂલમેં ઇનકા વિષ્કમ્ભ દસ હજાર યોજન હૈ, તથા માત્રા માત્રાસે ઘટતે-૨ ડુપરમેં ઇનકા વિષ્કમ્ભ એક હજાર યોજનકા હૈ ।

દ્વીપ સમુદ્રોંકા ક્રમ—“ જંબુદ્વીવે લવણે ” ઇત્યાદિ । સર્વ દ્વીપ સમુદ્રોંકે મધ્યમેં પહલા જમ્બુદ્વીપ હૈ, યહ લવણ સમુદ્રસે વેષ્ટિત હૈ ૧ । ઇસકે બાદ ધાતકીખણ્ડ દ્વીપ જો કિ ચારોં ઓર કાલોદસમુદ્રસે ઘિરા હૈ ૨ । ઇસકે બાદ-પુષ્કરદ્વીપ, પુષ્કર સમુદ્રસે ઘિરા હૈ ૩ । ઇસકે બાદ

સ્થાનકતાની અપેક્ષાએ નિરૂપણ કરે છે—

‘ જંદીસરવરસ્સ ણં દીવસ્સ ચક્કવાલવિકલ્લંભસ્સ ’ ઇત્યાદિ—

ચક્કવાલ વિષ્કલવાળા નન્દીશ્વર દ્વીપમાં ચાર દિશામાં ચાર અજ્ઞનગિરિ આવેલા છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—પૂર્વનો અજ્ઞનક પર્વત, દક્ષિણનો અજ્ઞનક પર્વત, પશ્ચિમનો અજ્ઞનક પર્વત અને ઉત્તરનો અજ્ઞનક પર્વત. તે પ્રત્યેકની ઊંચાઈ ૮૪-૮૪ હજાર યોજનની છે અને તેમનો ઉદ્દેધ (ઉંડાઈ) એક હજાર યોજનનો છે. મૂળ ભાગમાં તેમનો વિસ્તાર દસ હજાર યોજનનો છે, અને જેમ ઊંચે જઈએ તેમ તે વિસ્તાર ઘટતો ઘટતો એક હજાર યોજન થઈ જાય છે.

દ્વીપ સમુદ્રોનો ક્રમઃ “ જંબુદ્વીવે લવણે ” ઇત્યાદિ—અર્થાત્ દ્વીપ સમુદ્રોની વચ્ચે જમ્બુદ્વીપ આવેલો છે. તે લવણસમુદ્રથી વીંટળાયેલો છે. ૧ । ૧ । ત્યાર બાદ ધાતકીખણ્ડ દ્વીપ છે તે કાલોદસમુદ્રથી ઘેરાયેલો છે । ૨ । ત્યારબાદ પુષ્કરદ્વીપ છે, તે પુષ્કર સમુદ્રથી ઘેરાયેલો છે. ૩ । ત્યારબાદ વરુણદ્વીપ અને વરુણ

“ તેસટ્ટં કોડિસયં, ચતરાસીઈંચ સયસહસ્સાઈં ।
નન્દીસરવરદીવે, વિકલંભો ચક્રવાલેન ॥૧૧” ઇતિ ।

છાયા—ત્રિપટ્ટિ કોડિશતં ચતુરશીતિ ચ શતસહસ્રાણિ ।

નન્દીશ્વરદ્વીપે વિષ્ણુમ્મશ્ચક્રવાલેન ॥ ૧ ॥

એવંવિધપ્રમાણસ્ય તસ્ય बहुमध्यदेशभागे चतुर्दिशि=चतसृष्टु दिक्षु पौर-
स्त्य-दाक्षिणात्य-पाश्चात्यौ-त्तराहभेदेन चत्वारोऽञ्जनकपर्वताः—अञ्जनकनामानः
कृष्णवर्णीः पर्वताः प्रज्ञप्ताः । तेषु अञ्जनकपर्वतेषु प्रत्येकं पर्वत उच्चत्वेन चतुरशीति
सहस्रयोजनप्रमाणः, उद्वेधेन-भूम्यन्तः स्थितभागत्वेनैकसहस्रयोजनप्रमाणः,
मूलप्रदेशविष्णुम्भेण च दशसहस्रयोजनप्रमाणः । तदनन्तरं च खलु मात्रया
मात्रया परिहीयमाणेषु एतेषु पर्वतेषु प्रत्येकं पर्वत उपरितनभागे विष्णुम्भेण
एकसहस्रयोजनप्रमाणः । तथा-मूलप्रदेशे परिक्षेपेण=परिधिना त्रयोविंशत्यधि-
कषट्शताधिकैकत्रिंशद् (३१६२३) योजनसहस्रप्रमाणः । उपरिप्रदेशे पुनरयं
परिधिना षट्षष्ट्यधिकैकशताधिकत्रिसहस्र (३१६६) योजनप्रमाणः । तथा

इस नन्दीश्वर द्वीपके बहुत मध्यभागमें एक एक अञ्जनक पर्वत हैं ।
इस तरहसे ये चार अञ्जनक पर्वत हैं, अञ्जनका काला वर्ण होनेसे
अञ्जनक पर्वतमें प्रत्येक अञ्जनक पर्वत ८४-८४ हजार योजन ऊंचा है ।
श्रुतिके भीतर इनका प्रत्येक मूल भाग एक एक हजार योजन है तथा इन
सबके प्रत्येक मूल भागका विष्णुम्भ १० हजार योजनका है, सो यह
सब विषय ऊपरमें प्रकट कर दिया है । प्रत्येक पर्वत उपरितन भागमें
मात्रासे घटता हुआ एक हजार योजनका विष्णुम्भवाला हो गया है,
मूल प्रदेशमें प्रत्येक पर्वत परिधिका विस्तार ३१६२३ योजनका है ।
तथा ऊपरी भागमें प्रत्येककी परिधि ३१६६ योजन प्रमाण है, इस तरहसे

તે નન્દીશ્વર દ્વીપના ગરાબર મધ્ય ભાગમાં, ચારે દિશાઓમાં એક એક
અંજનક પર્વત છે તે ચારે અંજનક પર્વતો આંજણુ (અંજન) ના જેવાં
ઠાળા વર્ણના હોવાથી તેમને અંજનક પર્વતો કહે છે. તે પ્રત્યેક અંજનક
પર્વતની ૮૪ હજાર યોજનની ઊંચાઈ છે તે પ્રત્યેકનો ઉદ્વેધ (જમીનની
અંદરનો વિસ્તાર) એક હજાર યોજનનો છે અને મૂળ ભાગનો વિસ્તાર
૬૬ હજાર યોજનનો અને ટોચનો વિસ્તાર એક હજાર યોજનનો છે
તે પ્રત્યેક અંજનક પર્વતના મૂળ ભાગનો પરિધિ ૩૧૬૨૩ યોજન પ્રમાણ
અને ઉપરના ભાગનો પરિધિ ૩૧૬૬ યોજન પ્રમાણ કહ્યો છે. આ રીતે આ

ધુષ્ટિતપટવત્ ચિક્કણાઃ, તથા-મૃષ્ટાઃ=મૃષ્ટા ઇવ મૃષ્ટાઃ સ્વરતર-શાળયા મૃષ્ટશિ-
લાવત્, તથા-મૃષ્ટાઃ-કૃતસમ્માર્જના ઇવ કોમલશાળયા પરિશોધિતશિલાવત્,
યદ્વા-મૃષ્ટાઃ પ્રમાર્જનિકયા શોધિતા ઇવ કચવરાદિ રહિતાઃ, અત એવ-નીરજસઃ-
ધૂલિરહિતાઃ-નિર્મલા इत्यर्थः, કઠિન્મલાભાવાત્ ધૌતવસ્ત્રવદ્વા, તથા-નિષ્કલ્પઃ-
પદ્મરહિતાઃ આર્દ્રમલાભાવાત્ યદ્વા-કલદ્ગ્રહિતાઃ, તથા-નિષ્કલ્પઃ-કલ્પ-
-કવચમ્-આવરણમુપચારાત્ તસ્માન્નિષ્કાન્તા નિષ્કલ્પઃ નિરાવરણા સા છાયા-
શોમા યેષાં તે તથા, નિષ્કલ્પઃ શોમા इत्यर्थः, તથા-સપ્રમા=દેવાનન્દજનકપ્રમા-
સમ્પન્નાઃ, યદ્વા-સ્વપ્રમા=સ્વતઃપ્રમાસનશીલા ન પરતઃ, તથા-સમરીચિકાઃ-
કિરણયુક્તાઃ, અતએવ-સોદ્યોતાઃ-પરપ્રકાશકાઃ, પ્રાસાદીયાઃ=દર્શકાનાં ચિત્ત
પ્રસાદજનકત્વાત્પ્રમોદજનકાઃ, અભિરૂપાઃ=મનોહ્રાઽઽકૃતિકાઃ પ્રતિરૂપાઃ=અપૂર્વચ-

જેસા પાલીસદાર ચમકીલે હૈં, એવ-સ્વરતરશાળસે મૃષ્ટ શિલા જેસા હૈં,
મૃષ્ટાઃ-કોમલશાળસે પરિશોધિત, સંમાર્જિત શિલા જેસા હૈં, અથવા
પ્રમાર્જનિકાસે શોધિત જગહસા કૂડાકરકટસે રહિતહૈં, એવ-‘નીરજસઃ’
ધૂલી રહીત નિર્મલ હૈં, કઠોર કલવાલા વસ્ત્રસા સ્વચ્છ હૈં । એવ-આર્દ્ર-
મલકે અભાવસે પદ્મરહિત હૈં । યદ્વા કલદ્ગ્રહિત હૈં, “નિષ્કલ્પઃ-છાયા”
આવરણ રહિત શોભાવાલે હૈં । “સપ્રમા” દેવોંકે આનન્દજનક પ્રમા
સંપન્ન હૈં, અથવા સ્વતઃ પ્રકાશનશીલ હૈં, પરતઃ પ્રમાસમાન નહીં હૈં ।
“સમરીચિકાઃ” કિરણયુક્ત હૈં, અતએવ “સોદ્યોતાઃ” પરપ્રકાશક
હૈં, “પ્રાસાદીયાઃ” દર્શકજનોંકે ચિત્તમૈં પ્રસાદ-પ્રમોદોત્પાદક હૈં,
“અભિરૂપાઃ” મનોહ્ર આકૃતિવાલે હૈં, “પ્રતિરૂપાઃ” અપૂર્વ ચમત્કારી
એવં સ્વાભાવિક રમણીય અદ્વિતીય રૂપવાલે હૈં । “તેસિર્ણ” इत्यादि ।

“इलक्षणा.” ધુષ્ટિત વસ્ત્ર સમાન પાલીસદાર અને ચળકતાં છે, કઠણુમાં કઠણુ
શાણુ (સરાણુ) વડે ધસેલી શીલા સમાન છે, “મૃષ્ટાઃ” કોમલ સરાણુથી
પરિશોધિત (સંમાર્જિત) શિલાસમાન છે અથવા સાવરણી વડે વાળીખૂડીને
સારૂ કચેલી જગ્યા જેવા નિર્મળ છે, “નીરજસઃ” ધૂળથી રહિત છે, કઠોર
મળ રહિત વસ્ત્ર સમાન સ્વચ્છ છે, અને આર્દ્ર મળનો અભાવ હોવાથી કાદવ
રહિત છે-અથવા કલકે રહિત છે, “નિષ્કલ્પઃ-છાયા” આવરણુ રહિત
શોભાવાળાં છે, “સપ્રમા.” દેવાને આનન્દજનક પ્રભાસ પન્ન છે અથવા તેઓ
સ્વપ્રકાશિત છે, પરપ્રકાશિત નથી. “સમરીચિકા” તેઓ કિરણોથી યુક્ત છે,
“સોદ્યોતાઃ” અને તે કારણે અન્યને પ્રકાશિત કરનારા છે, “પ્રાસાદીયા”
દર્શનીય છે, દર્શકોના ચિત્તમાં પ્રમોદજનક છે, “અભિરૂપા” મનોહ્ર આકૃતિ-
વાળા છે, “પ્રતિરૂપાઃ” અપૂર્વ ચમત્કારી અને સ્વાભાવિક રમણીય-અનુપમ

પૈતે પર્વતા મૂલે વિસ્તીર્ણાઃ=વિસ્તારવન્ત, મધ્યે સંક્ષિપ્તા, ઉપરિમાગે ચ તનુકાઃ=મત્કાઃ અત્ત એવ ગોપુષ્ઠાસસ્થાનસંસ્થિતાઃ યયા ગોપુષ્ઠો મૂલે સ્પૃષ્ઠાઃ, અન્તેષ તનુકસ્તયા તેડ્યપ્પજનકપર્વતા મૂલ સ્પૃષ્ઠાઃ ક્ષિત્વરે તનુકા ઇતિ ગોપુષ્ઠાસસ્થાનસંસ્થિતાઃ=ગોપુષ્ઠાડકારવદવસ્થિતાઃ, સર્વાંજનમયા-અજન-કૃષ્ણરત્નવિશેષઃ તદેવ સન્મયા અજનમયાઃ, સર્વેષાનન્યમયત્વેન સર્વેષાંજનમયાઃ સર્વાંજનમયાઃ=પરમકૃષ્ણવર્મા ઇતિ માવા, ઉક્તં ચ—

“ મિગગરુહ કઞ્જલ ઍગ્નયવાઠસરિસા વિરાપતિ ।

ગગનવલમખુલિર્હતા અગ્નયવા પથ્થયા રમ્મા ॥૧૧ ॥ ”

છાયા—મુદ્ગાક્ષરચિરકન્મલાઅનવાતુ સદશા વિરામતે ।

ગગનવલમખુલિસ્તોડઅનકા પર્વતા રમ્માઃ ॥૧૧ ॥ ” ઇતિ,

કૃષ્ણવર્ગત્વેન મુદ્ગાક્ષ સદશા ચિરકન્મલસદશા અગ્નયવાતુસદશાદૈવે રમનીયાઃ અજનકપર્વતા ઠક્ત્વેનાડકાર સ્પૃષ્ઠાન્તો વિરામન્તે । ઇતિ માવઃ ॥૧૧ ॥ પુનસ્તેકીદશા ઇત્યાદિ—‘અચ્ચ’-સ્વચ્છાઃ આકાશસ્ફટિકશ્ચ તયા-સ્રક્ષ્ણાઃ=સ્રક્ષ્ણપરમાણુસ્કપનિર્મિતાઃ સ્રક્ષ્ણસૂત્રનિર્મિતવસ્ત્રવત્ તયા સ્રક્ષ્ણાઃ

પર્વત મૂલમેં વિસ્તીર્ણ મધ્યમેં સક્ષિપ્ત, ઔર ઉપરમેં તનુક (પતલે) હૈં । અત્ત એવ ગોપુષ્ઠાડકાર જેસે પ્રતીત હોતે હૈં । જેસે કિ ગોપુષ્ઠ મૂલમેં મોટી, અન્તમેં પતલી, મધ્યમેં સમચર્તુલ સક્ષિપ્ત ક્રુવા કરતી હૈં વેસા દુનૈં જાનના, ઇસીસે ઇનકો લક્ષ્યકર “ગોપુષ્ઠાડકારવદ્વાડવસ્થિતા” ગોપુષ્ઠા કારસંસ્થાનયાલાં એસા કહા હૈં યે સય પર્વત સર્વભાવસે કૃષ્ણરત્ન વિશેષતા અજનમય હૈં । કદામી હૈં । “મિગગરુહલ કઞ્જલ” ઇત્યાદિ । કૃષ્ણતાસે મુદ્ગાક્ષ (અમરકે અગ) સદશા, ચિરકન્મલ સદશા, અજનપુજા વાતુ સદશા હૈં, ફિરમી રમનીય હૈં । યે કવા હૈંસે ગગનચુમ્બી, અચ્ચાઃ આકાશસ્ફટિકા હૈં, સ્રક્ષ્ણાઃ—સુદીત ક્રુવે વજ્ર

પર્વતો મૂળ ભાગમાં વિસ્તીર્ણ, મધ્ય ભાગે સક્ષિપ્ત અને ટેવ પાસે તનુક (અતિ સક્ષિપ્ત) છે તે કન્મે તેઓનો આકાર ગાળના પૂછડા જેવો થાય છે જેમ ગાળતું પૂછડું મૂળ ભાગમાં જડું છેડે પાવડું અને મધ્યમાં સમ ચર્તુળ સક્ષિપ્ત હોય છે જેવો જ આ પર્વતોનો આકાર સમજવો.

જે જ પાવ સૂત્રકારે “ગોપુષ્ઠાડકારવદ્વાડવસ્થિતા” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરી છે આ આદિ પર્વતો કૃષ્ણરત્ન (કાલારે) વિશેષ સમાન અવનમાય છે કહ્યું પણ છે કે—“મિગગરુહકઞ્જલ ક્ત્યાદિ તે પર્વતોનો વર્ણ બૃહાત સમાન (અમરજોતી જાગે સમાન) ચિરકાળ સમાન, અને અજન પુજા વાતુ સમાન રથામ હોવા છતાં પણ તેઓ રમણીય લાગે છે તેઓ એવાઈની અપેક્ષાએ અજનચુમ્બી થાય છે ‘અચ્ચા’ આકાશ સમાન સ્વચ્છ

યોજનાનિ । તેષાં મિદ્ધાયતનાના ચતુર્દિશિ=પૂર્વાદિપુ ચતસ્રુષુ દિશુ ચત્વારિ દ્વારાણિ, તથા-દેવદ્વાર ૧, અસુરદ્વાર ૨, નાગદ્વાર ૩, સુપર્ણદ્વાર ૪, એતાનિ સાર્થકનામાનિ । તેષુ ચલુ દ્વારેષુ ચતુર્વિધાઃ=ચતુષ્પત્તારાઃ દેવાઃ પરિવસન્તિ, તથા-ક્રમેણ દેવાઃ ૧, અસુરાઃ ૨, નાગાઃ ૩, સુપર્ણાશ્ચ ૪ । તેષાં ચલુ દ્વારાણાં પુરતઃ અગ્રે ચત્વારો મુખમણ્ડપાઃ મુખે-અગ્રિમદ્વારે મણ્ડપાઃ તેષાં । તેષાં ચલુ મણ્ડપાનાં પુરતઃ અગ્રે ચત્વારઃ પ્રેક્ષાગૃહમણ્ડપાઃ--પ્રેક્ષાયૈ-પ્રેક્ષણાય-દર્શનાય ગૃહમણ્ડપાઃ ગૃહાણ્યેવ મણ્ડપાસ્તથા પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તેષાં પ્રેક્ષાગૃહમણ્ડપાનાં વહુમધ્ય-દેશભાગે ચત્વારો વજ્રમયા અક્ષવાટકાઃ='અલાઢા' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ સન્તિ । તેષાં ચલુ વહુમધ્યદેશભાગે ચત્સો મણિપીઠિકાઃ મણિવેદિકાઃ સન્તિ । તાસાં ચલુ મણિપીઠિકાનામુપરિ ચત્વારિ સિંહાસનાનિ । તેષાં ચલુ સિંહાસનાનામુપરિ ચત્વારિ વિજયદૂષ્યાણિ-વિતાનરૂપાણિ વસ્ત્રાણિ તેષાં ચલુ વહુમધ્યભાગે ચત્વારો વજ્રમયા અંકુશાઃ, અવલમ્બનાર્થ કીલકાનિ । તેષુ ચલુ ચત્વારિ કુમ્ભિકમુક્તા-દામાનિ, કુમ્ભિકાનિ મુક્તાપરિમાણવિશેષાઃ તત્પરિમિતા મુક્તાઃ-મૌક્તિકાનિ

દ્વાર ૨, નાગદ્વાર ૩, સુપર્ણદ્વાર ૪ એ સાર્થક હૈં । ઇન દ્વારોંકે પ્રથમ દ્વારમેં દેવ, દ્વિતીયમેં અસુર, તૃતીયમેં નાગ, ચતુર્થમેં સુપર્ણ એ ચાર પ્રકારકે દેવ રહતે હૈં । ઇન દ્વારોંકે સામને-આગે ચાર મુખમણ્ડપ હૈં, ઇન મણ્ડપોંકે આગે ચાર પ્રેક્ષાગૃહ મણ્ડપ હૈં । ઇનમેં બેઠકર દેવ યદાંકી વસ્તુઓંકો દેખતે હૈં । ઇન પ્રેક્ષાગૃહોંકે વહુ મધ્યદેશ ભાગમેં ચાર મણિપીઠિકાં હૈં, ડનકે ડપર ચાર સિંહાસન હૈં, ડનકે ડપર ચાર વિજયદૂષ્ય હૈં-વિતાન રૂપ વસ્ત્ર હૈં । ડનકે વહુમધ્યદેશ ચાર અંકુશ લટકાનેકે લિયે વજ્રમય કીલિકાં હૈં, ડનમેં ચાર કુમ્ભિક મુક્તાઓંકી માલાં લટકતી હૈં, કુમ્ભિક મુક્તાઓંકા ઇક પ્રકાર પરિમાણ વિશેષ હોતા હૈ, ઇસ પરિમાણ

દારેનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) દેવદ્વાર, (૨) અસુરદ્વાર, (૩) નાગદ્વાર અને સુપર્ણદ્વાર. આ ચારે નામો સાર્થક છે પ્રથમ દ્વારમાં દેવો, બીજામાં અસુરો, ત્રીજામાં નાગકુમારો અને ચોથામાં સુપર્ણકુમારો રહે છે તે દારેન્દ્ર સામે આગળના ભાગમાં ચાર મુખમંડપ છે, તે મંડપોની આગળ ચાર પ્રેક્ષા-ગૃહ મંડપ છે તેમાં બેસીને દેવો ત્યાંની વસ્તુઓને નિહાળે છે તે પ્રેક્ષા-ગૃહોના બહુમધ્યપ્રદેશ ભાગમાં ચાર મણિપીઠિકાઓ છે, તેમના ઉપર ચાર સિંહાસન છે, તેમના ઉપર ચાર વિજયદૂષ્ય (આશ્ચર્યકિત વસ્ત્ર) છે તેમના બહુ મધ્યદેશ ભાગમાં ચાર અંકુશ લટકાવવાને માટે વજ્રમય ખીલીઓ છે, તેમાં કુલિક મોતીઓની ચાર માળાઓ લટકે છે. કુલિક મોતીઓનો એક

मत्तारम्भाकृतिरमणीयत्वनाद्वितीयरूपाय । 'तेसि नं' इत्यादि-तेषां सत्त्व
अज्ञानपर्यवसानम् उपरि=ऊर्ध्वं बहुमणीयभूमिभागाः चरु=प्रभूता अति
शुचिषा सना=निम्नोत्पत्त्यरहितत्वेन सुखा रमणीया सुन्दराय भूमिभागा
महताः, तेषां सत्त्व बहुसमरमणीयभूमिभागानां बहुमध्यदशभागे यत्तारि
मिद्विषयकानि सिद्धान्तानि-देवविशेषाणामागतनानि-स्थानानि, उक्तं च ऐमे—

"सिद्धा व्याप्तादिके देवयानौ निष्पन्न-मुक्तयो । नित्यं प्रसिद्धे" इति,
यदा सिद्धान्ति-नित्यानि धाम्नानि च ताभ्यामपत्तनानि-स्थानानि च तथा अत्र
प्रागुक्त प्रमाणम् । तानि सत्त्व सिद्धापत्तनानि ७१ योजनशतमाधामेन महानि,
विष्णुभग=विस्तारय तु यथासत् योजनानि ५०, ऊर्ध्वमुत्पत्तेन तु द्वाभ्यां ७

इन अज्ञानक पर्यवर्तके ऊपर बहुसमरमणीयभूमिभाग बहे गये
हैं । बहुसमरमणीय-इमलिये बहे गये हैं कि ये अतिशुचित हैं, तथा
निम्नमा ग्य-उत्पत्तासे रहित होनेसे सुख हैं और सुन्दर होनेसे
रमणीय हैं । इन बहुमनरमणीयभूमिभागोंके बहु मध्यदेशमें चार
सिद्धापत्तन कहे गये हैं । देवविशेषोंके स्थान बहे गये हैं, हेमकोशमें
"सिद्धशब्द" देव विशेषवाचक कहा गया है, जैसे—"सिद्धो व्याप्ता
दिके देवयानौ निष्पन्न मुक्तयो । नित्यं प्रसिद्धे" इत्यादि

अथवा—"सिद्धान्ति नित्यानि च-शादपत्तनानि, ताभ्यामपत्तनानि"
इत विषयके अनुसार नित्य आगमनही सिद्धापत्तन बहे गये हैं । ये
सिद्धापत्तन आगमकी अपेक्षा एक सौ योजन लम्बे हैं और विष्णुभ
की अपेक्षा ५० योजन चौड़े हैं । ७२ योजन ऊँचे हैं । इन सिद्धापत्तनों
के चारों दिशाओंमें चार चार द्वार हैं इनके नाम-१ देवद्वार १, भुव

સત્તપ્તસિયા સ્વધા અળતા પળ્લતા । સત્તપ્તસોગાઢા પોગ્ગલા
જાત્ર સરાગુળ્લમ્ભા પોગ્ગલા અળતા પળ્લતા ॥ સૂ૦ ૫૩ ॥

॥ સત્તમ ઠાળ સમત્ત ॥

છાયા--જીવા સહ સપ્તસ્થાનનિર્વર્તિતાન્ પુત્રતાન્ પાપકર્મતપા અવિશ્વ
વા, ચિન્નન્તિ વા ચેવ્યન્તિ વા, તથા-નૈરપિકનિર્વર્તિતાન્ યાવત્ દવનિર્વર્તિ
તાન્ । એવં ચયો યાવપ્રિર્જરા ચૈવ । સપ્તપદેશિકાઃ સ્કન્ધા -મનન્તાઃ પ્રવ્રન્તાઃ સપ્ત
પ્રવેશાગાઢા પુત્રતા યાવત્ સપ્ત ગુણ સ્થાઃ પુત્રતા અનન્તાઃ પ્રવ્રન્તાઃ ॥ સૂ૦ ૫૩ ॥

જીવ ક્ષીન્નિયાદિક પર્વાગયાલે કર્મપુત્રલ અયાદિ હોને પર હી
હોતે હે અતઃ અપ સૂત્રકાર અયાદિકા "જીવાળ સસદ્ગાળ" હયાદિ
સૂત્ર દ્વારા કથન કરતે હે--

જીવોને સાત સ્થાનોસે નિર્વર્તિત પુત્રલોકા પાપકર્મ રૂપસે અપ
ક્રિયા હે, અપ કરતે હે ઓર અપ કરેને-જૈસે-નૈરપિક રૂપ સ્થાનસે
નિર્વર્તિત હુપ યાવત્ દેવસ્થાનસે નિર્વર્તિત હુપ પુત્રલોકા અન્હોને પાપ
કર્મ રૂપસે અપ ક્રિયા હે, યર્નમાનમેં એ ઉનકા ઉસ રૂપસે અપ કરતે
હે, ઓર આમેં મી એ ઉનકા ઉસ રૂપસે અપ કરેને અપસી તરહ યાવત્
નિર્જરાકા મી ત્રિકાલ રૂપસે કથન કર લેના આહિયે ।

સાત પ્રવેશોવાલે સ્કન્ધ અનન્ત કહે ગયે હે, સાત પ્રવેશોમેં અપ
ગાઢ હુપ પુત્રલ યાવત્ સાત સ્થાન હસ પ્રકારસે હે--

કર્મપુત્રલોનો અમાદિક યાવ ત્યારે જ છત્ર ક્ષીન્નિયાદિક અર્થમાળા સામ
છે તેથી હવે સૂત્રકાર 'જીવાળ સસદ્ગાળ' હયાદિ સૂત્ર દ્વારા અમાદિકું
કથન કરે છે-- 'જીવાળ સસદ્ગાળ' હયાદિ-- સૂ ૫૩) ૭

છોનો સાત સ્થાનોમાંથી નિર્વર્તિત પુત્રલોનો પાપકર્મ' રૂપે અપ કર્યો
છે અપ કરે છે અને અપ કર્યો એમ કે નૈરપિક રૂપ સ્થાનમાંથી નિર્વર્તિત
અપેલા પુત્રલોનો તેમજ દેવસ્થાન પદન્તના સ્થાનોમાં નિર્વર્તિત અપેલા પુત્ર
લોનો તેમજ પાપકર્મ રૂપે ભૂતકાળમાં અપ કર્યો છે વર્તમાન કાળે તેમજ
તેમનો તે રૂપે અપ કર્યો અપની એમ જ નિર્જરા પદન્તના વિષયોતું પપ
મજ કાળની અપેલાએ ઉપર પ્રમાણે જ કથન કરવું એઇએ

સાત પ્રવેશોવાળા સ્કન્ધ અનન્ત કહ્યા છે સાત સ્થાનમાં અમાદિક
અપેલા પુત્રલો અનન્ત છે તે સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે--(૧) નારક, (૨)

ટીકા—‘ જીવાણં ’ इत्यादि—

વ્યાख्या પૂર્વે ૩૬ વોધ્યા । નવરં—સપ્તસ્થાનનિર્વર્તિતાન્—સપ્તસુ સ્થાનેપુ-
નારક-તિર્યક્-તિરચ્છી-મનુષ્ય-માનુષી-દેવ-દેવી રૂપેષુ મિથ્યાત્વાદિમિર્યે નિર્વ-
ર્તિતાઃ—સામાન્યેનોપાર્જિતા વક્ષ્યમાણસ્થાનપટ્ટકયોગ્યીકૃતાઃ, તાન્, યદ્વા-
સપ્તસુ પૂર્વોક્તેષુ સ્થાનેષુ નિવૃત્તિર્યેવાં તે તથા તાન્ સપ્તસ્થાનનિવૃત્તિકાન્,
इति ॥ સૂ. ૫૩ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचर-पञ्चदशभाषा-कलितललितक-

लापालापक परिशुद्धगद्यपद्यनैरुग्रग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक श्री शाहू

छत्रपति - कोल्हापुरराजप्रदत्त-जैनशास्त्राचार्य-पदभूषित-कोल्हापुर

राजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य - जैनधर्मदिवाकर-पूज्य

श्री घासीलालव्रति-विरचितायां स्थानाङ्गसૂत्रस्य

सुधाख्यायां व्याख्यायां सप्तमं स्थान

सम्पूर्णम् ॥ ७ ॥

નારક ૧, તિર્યંચ ૨, તિરચ્છી ૩, મનુષ્ય ૪, માનુષી ૫, દેવ ૬,
એવં દેવી ૭, इन स्थानोंमें जीवोंने रहकर मिथ्यात्व आदि द्वारा जिन
कर्म पुद्गलोंका सामान्य रूपसे उपार्जन किया है—वक्ष्यमाण स्थानषट्कके
योग्य किया है—यद्वा—इन उक्त सात स्थानोंमें जिनकी निवृत्ति हुई है,
ऐसे उन कर्मपुद्गलोंका जीवोंने पाप कर्म रूपसे त्रिकाण संबन्धी चयादि
किया है । इस सूत्रकी व्याख्या पूर्वके समान जाननी चाहिये ॥सू० ५३॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ
કૃત “ સ્થાનાંગ સૂત્ર ” કી સુધા નામકી વ્યાખ્યા કે સાતવાં સ્થાન
સમાપ્ત ॥ ૭ ॥

તિર્યંચ, (૩) તિર્યંચણી, (૪) મનુષ્ય (૫) મનુષ્ય જાતિની સ્ત્રી, (૬)
દેવ અને (૭) દેવી આ સ્થાનોમાં રહીને જીવોએ મિથ્યાત્વ આદિ દ્વારા જે
કર્મપુદ્ગલોનું સામાન્ય રીતે ઉપાર્જન કર્યું છે—અથ, ઉપચય આદિ નિર્જરા
પર્યંતના ૬ સ્થાનને યોગ્ય કરેલ છે અથવા—કેપયુક્ત સાત સ્થાનમાં જેમની
નિવૃત્તિ થઈ છે એવાં તે કર્મપુદ્ગલોનો જીવોએ પાપકર્મ રૂપે ત્રિકાળ સંબંધી
ચયાદિ કર્યો છે. આ સૂત્રની વ્યાખ્યા પૂર્વે સ્થાનમાં આપ્યા પ્રમાણે
સમજવી. ॥ સૂ. ૫૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય—જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“સ્થાનાંગ સૂત્ર” ની સુધા નામની વ્યાખ્યાનું સાતમું સ્થાન
સમાપ્ત ॥ ૭ ॥

